CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और गिल्टियाँ?

...ड़न? सूजन?

...म पाने के लिए

...*

...स्टर

...ीर के रासायनिक संतुलन के लि...
... उपस्थित हो गया है। उसके ...
... के लिए इंजेक्शनों द्वारा ...
...र्बोनेट रक्त में पहुंचाया ...
... प्राण अवश्य बचा लि...
...संकट को पूरी तरह ...
...लंबी मंजिल तय कर...
... यंत्र द्वारा ग्राफ पर ...
...चारक के ...
...च दी हैं ...
...हृदय के ...
...लिए एक ...

जॉन्स... बेलाडोना प्लास्टर को आप आसानी से ज्यों का त्यों इस्तेमाल कर सकते हैं — न इसे गरम करने की झंझट और न पट्टी तैयार करने वगैरह की उलझन। और ..., इसे लगाने के लिए कोई खास चतुराई या योग्यता की भी जरूरत नहीं। बस, प्लास्टर के ऊपर से प्लास्टि... परत हटाइए और दर्दवाले हिस्से पर प्लास्टर लगा दीजिए। प्लास्टर में बने छेद... कारण चमड़ी को काफ़ी हवा मिलती है जिससे दर्दवाले हिस्से में ज्यादा आराम महसूस होता है।

घर में जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर हमेशा रखिए!

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६

* ट्रेडमार्क

JWT-JJ-3747

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने मृदु
कितने ताजे
कितने उल

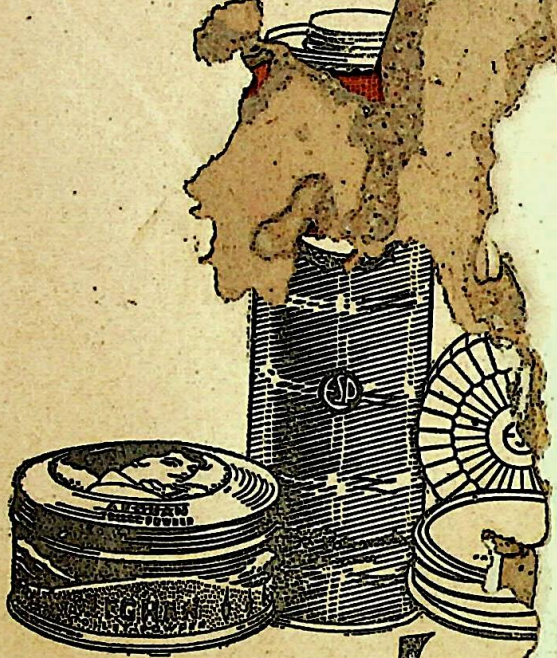

powders

* जादुई नुस्खे से बने
* * भीनी सुगंधवाले
* * * सुघड़, सुंदर पैकिंग में बंद

मुंह-हाथ धोने या नहाने के बाद छिड़क लीजिये। उमस के इन दिनों में ये आपको शीतल रखेंगे, घाम व पित्ती से बचायेंगे और ये जिस्म पर पपड़ी की तरह जमते नहीं। इनसे त्वचा शोभित रहती है, मनपसंद महक आपको मिलती है, कपड़े पहनने में सुविधा होती है।

अपार अनुभव, सुदीर्घ समय और परिश्रम ने पाटनवाला की इस सफल सृष्टि को संभव बनाया है

अफगान स्नो

सौंदर्य-प्रसाधन

ई. एस. पाटनवाला, बंबई–७७ (भारत)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९ घर बुला रहा है
जे० पी० वास्वानी

२१ दिल धड़कने लगा
श्यामसरन 'विक्रम'

२४ कटल दैत्य का आलिंगन
सर आर्थर ग्रिवल

२८ राजनेता लुई अर्माद

... ...

३३ खरगोशों का महाप्रलय
कमला ग० वाघ

३६ एक अप्रतिम कलागु
सत्यकाम विद्यालंकार

३९ कान का मैल मुसीबत बन सकता है
रामप्रकाश

४२ जब नेहरूजी ने दरी बिछायी
रंगनाथ रा० दिवाकर

४३ सब विधानों से ऊपर
गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

४४ हीर तो इनका है !
डा० एम० एस० वंत

४७ भट्टजी की मैना
मधुकर भट्ट

शोभना
चित्रकार : जुमलदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४८ पथ के प्रदीप
४९ कृषि के लिए आशा-किरण
५० प्रेरणा और संतोष
५२ पवित्र अग्नि, पावन स्मृतियां
५६ अमरीकी प्रेसिडेंट की हत्या क
६१ गंजापन : अब समस्या नहीं
६४ अमान के बद्दू
६९ क्या आप भी शिकार हैं अपन
७२ भीतर का टापू
७३ मेरी कल्पना का सुख
७६ वे आवाजें
७७ मेरा इष्ट (कविता)
७९ दिमाग की धार पैनी करें
८१ दुनिया की दौलत पांच आदमियों की मुट्ठी में
८४ ये हैं दुनिया के दस आश्चर्य
९१ मनुष्य-स्वभाव
९३ तरक्की की दौड़ में कहां से कहां !
९५ सिकंदर का जहाजी बेड़ा
९६ पदक (रूमानियन कहानी)
१०० भगवान का फैसला
१०१ सूरज-किरण और सुर्ख गुलाब (हिन्दी कहानी)
१०५ समझौता (उर्दू कहानी)
११३ किम (पुस्तक-संक्षेप)
१४१ मेरा चांद (कविता)
१४५ वार्ता-विलास
१५५ खूब थे वे लोग

रवी
वि०
फ्रांसिस
...
निरं
...
...
...
यूसेबिड कैमिलस
हरीश प्रसाद
विमल वेद
अनवर ख्वाजा
रुडयार्ड किप्लिंग
दीवानसिंह कालेपानी
... ...
... ...

चित्रसज्जा :

असित हलदर, वीरेन, दे, [illegible]ने, कांतिलाल पटेल, शणै

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बम्बई—३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बक रोड, बंबई-४ में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[...दी डाइजेस्ट]

जुलाई १९६५

...ीर के रासायनिक संतुलन के लि...
... उपस्थित हो गया है। उसके ...
... के लिए इंजेक्शनों द्वारा ...
...र्बोनेट रक्त में पहुंचाया ...
... प्राण अवश्य बचा लि...
...संकट को पूरी तरह ...
...लंबी मंजिल तय कर ...
... यंत्र द्वारा ग्राफ पर ...
... विचारक के ...
... च दी है ...
... रे ...
... दो ...
... रण
... देख
... हृदय के ...ों से
उतर लिए एक ...
सौ-सौ ... ।
एक धारा गीत गाती
जगाती नवप्रात
जन-जन में--सभी दिशाओं में;
दूसरी चुपचाप खो जाती
खेत-खलिहानों में
झुलसाये अंकुरों को सहलाती,
सूनी घाटियों में खिली
कलियों को गुदगुदाती
एक धारा मदमाती
करती किल्लोल
समा जाती सागर की बांहों में।

—सोमपायी

गंगामैया
शिल्पी : कांतिलाल पटेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतज्ञ

स्नेह और सौजन्य

जाबालि

मेरा एक मित्र पक्का नास्तिक था। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण वह विज्ञान-सम्मत वस्तु को ही स्वीकार करता था। इसलिए उसे श्रद्धा रखने की सलाह नहीं दी जा सकती थी। तर्क करते-करते जब मैं थक गया, मैंने उससे एक बात ऐसी कही, जिससे वह चुप होकर लगभग वैसा ही व्यवहार करने लगा, जैसा श्रद्धालु और आस्तिक व्यक्ति करते हैं।

मैंने कहा—"तुम ईश्वर की सत्ता मानो या न मानो; मगर यह तो स्वीकार करोगे कि कोई ऐसी दयालु सत्ता है, जिसने तुम्हें जीवन दिया है और तुम्हारी जीवन-रक्षा के लिए अग्नि, वायु, जल की मंगलमयी शक्तियों का वरदान दिया है।"

उसने कहा—"मैं इन शक्तियों की सत्ता मानता हूं।"

मैंने पूछा—"सत्ता ही मानते हो, या इनका उपकार भी मानते हो?"

थोड़ा सोचकर वह बोला—"इस पहेली पर मैंने कभी विचार नहीं किया।"

"तो अब करना।"

उस दिन की वह बात वहीं खत्म हो गयी। कुछ दिन बाद जब फिर उस मित्र से मेरी भेंट हुई, तो मैंने देखा, उसकी मनोदशा [illegible] की ओर लगा हूं।"

"उपकार में [illegible] ज्ञता का भाव [illegible] चाहिये।"

"इसकी क्या [illegible] उसने पूछा।

"आवश्यक [illegible], परंतु यह मन की स्वाभाविक [illegible] है। वह इंसान नहीं, जो भलाई करनेवाले के प्रति कृतज्ञता का भाव भी हृदय में न रखे। भलाई के बदले भलाई करना तो कष्टप्रद हो सकता है; मगर भला करनेवाले के लिए दिल में कृतज्ञता अनुभव न करना इंसानियत नहीं है।"

मेरा मित्र धर्म-श्रद्धा और ईश्वर आदि बातों पर विश्वास नहीं रखता था। किंतु व्यावहारिक सदाचार के नियमों का बड़ा पाबंद था। कृतज्ञता प्रकट करना उसकी दृष्टि में सामाजिक सदाचार-पालन की पहली शर्त थी। इसलिए वह इन सभी मंगलकारी देव-शक्तियों के प्रति कृतज्ञ-भाव रखना मान गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

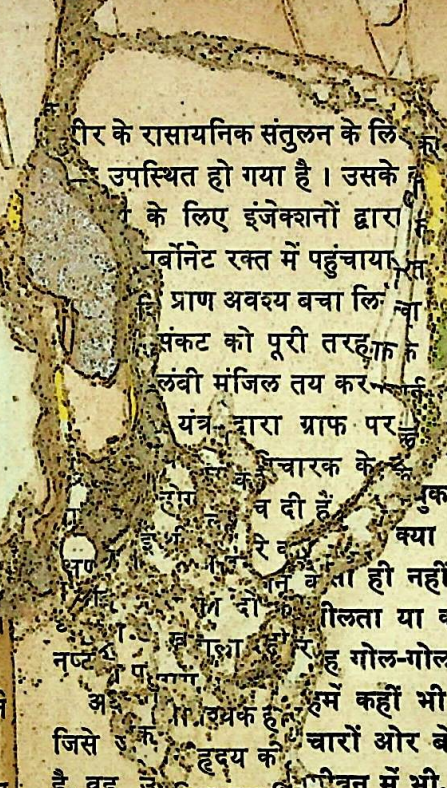

घर से बाहर, अपने कार्य-क्षेत्र में उन्हें जो भी सफलताएं मिलती हैं, उसके बारे में भी वे यही मान्यता रखते हैं कि वे उन्हें अपने बाहुबल से प्राप्त हुई हैं। न तो वे अपने शिक्षक का कोई उपकार मानते हैं और न किसी हमदर्द का, जिसने उन्हें अच्छी नौकरी दिलवायी हो या व्यापारिक लेन-देन में कोई सहायता की हो।

किसी के भी प्रति कृतज्ञ न होने का स्वभाव मनुष्य को सब मानवीय गुणों से वंचित कर देता है। उससे मनुष्य अनुशासनहीन, अविनीत, स्वार्थी, दुराग्रही और कलहप्रिय बन जाता है। उसके मुख पर शिकायतों के सिवा कुछ नहीं रहता। सबके लिए अमंगल चाहना उसके स्वभाव का अंग बन जाता है। उसके मन से संतोष और शांति के भाव तब तक के लिए मिट जाते हैं, जब तक वह पुनः कृतज्ञ होने तथा कृतज्ञ-भाव को खुले दिल से प्रकट करने का

रहा है

एक बच्चे को लट्टू
टू कुछ देर तक गोल-
रह और फिर गिर गया,
कां हो। मैं अपने आप से
क्या आदमी का जीवन लट्टू
ता ही नहीं है ? जिसे हम क्रिया-
ीलता या काम कहते हैं, क्या प्रायः
ह गोल-गोल घूमने जैसा नहीं हैं, जो
हमें कहीं भी नहीं पहुंचाता। हमारे
चारों ओर बेचैनी है – व्यक्तियों के
जीवन में भी, राष्ट्रों के जीवन में भी।
वों की कठोर क्रियाशीलता के पश्चात्
एक दिन जैसे निरभ्र आकाश से वज्र
गिरा हो, इस तरह मृत्यु का बुलावा आ
पहुंचता है और आंखों में आंसू और
हृदय में भय लिये हम अज्ञात दूर देश
को रवाना हो जाते हैं। सो मुझे चेत
जाना है और तुरंत तैयारी शुरू कर
देनी है– अपने घर जाने की तैयारी
शुरू कर देनी है। मेरा घर मुझे बुला
रहा है।"

—जे० पी० वास्वानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकल्प नहीं करता।

कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य के संस्कार-शील होने का सबसे बड़ा सबूत है। अपने स्वभाव में इस संस्कार की जड़ें मजबूत करने के लिए हमें सदा जागरूक रहना चाहिये और प्रत्येक उपकारी के प्रति—चाहे उसका उपकार कितना ही तुच्छ हो—विनम्र भाव से कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिये। कृतज्ञता के बिना कोई मित्र नहीं बनता। दो मनुष्यों का स्नेह तभी फूलता-फलता है, जब वे एक दूसरे के उपकार को मानें।

उपकार की यह स्वीकृति सहज और सच्चे हृदय से होनी चाहिये। बनावटी ढंग से दिया गया धन्यवाद छिपता नहीं है। दिल की बात चेहरे पर आ ही जाती है। इसलिए केवल शाब्दिक कृतज्ञता प्रकाशन अनुकूल प्रभाव पैदा नहीं करेगा।

कृतज्ञता इतने सहज भाव से प्रकट होनी चाहिये कि वह बिलकुल स्वाभाविक लगे। और यह तभी संभव है, जब कृतज्ञता मनुष्य के स्वभाव का अंग बन जाये और उसके चरित्र में विनय इतनी गहरी उतर जाये कि छोटे-से भी उपकार के बदले उसका सिर अपने आप झुक जाये। व्यवहार में ही नहीं, भावना में भी विनय का रंग मिलना चाहिये। तभी बिना प्रयास के कोई कृतज्ञता प्रकट कर सकता है।

हम प्रायः ... होते हैं और उसे ... यह स्वाभाविक ... हमारा आलोचक ... है। वह हमारी कम... हमारा ध्यान उ... सुधरने का अव... धन्यवाद के योग्य ... आलोचना या निंदा सुनकर जो बुरी तरह विचलित हो जाते हैं, वे अपनी भूलों को सुधारने का अवसर नहीं पाते।

कृतज्ञ-स्वभाव का व्यक्ति ही जीवन की प्रत्येक दिशा में आगे बढ़ सकता है। वही अच्छा मित्र, विश्वास-पात्र कर्मचारी और ईश्वर का सच्चा भक्त बनकर विकास की पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

जब हम प्रेम को अपने पर केंद्रित न रखकर, दूसरे व्यक्तियों, वस्तुओं और ध्येयों पर केंद्रित करने लगते हैं, हमारे सुख और सफलता में वृद्धि होती है। जब हम खुले हाथों प्रेम बांटने लगते हैं, तभी वह हमारे लिए भरपूर बचता है।

—टामस ड्रीयर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन लगा

चार मिनिट के महाभारत की कहानी

'विक्रम'

न्यूयार्क के सेंट विंसेंट अस्पताल ने आठ वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया था। और तब से अब तक ५२ रोगियों को यमराज के फंदे से छुड़ाने का श्रेय इस अस्पताल को मिल चुका है। प्राण-रक्षा के इस आयोजन को अस्पताली भाषा में 'कोड ९९' कहा जाता है। शायद निन्यानवे के फेर के मर्म को समझकर ही सेंट विंसेंट अस्पताल ने इसका यह नाम रखा है। 'कोड ९९' कैसे काम करता है, इसकी झांकी लीजिये।

अस्पताल के पलंग पर पड़े रोगी को एकाएक दिल के दौरे ने धर दबाया। उसी क्षण निकट खड़ी नर्स ने माइक्रोफोन पर

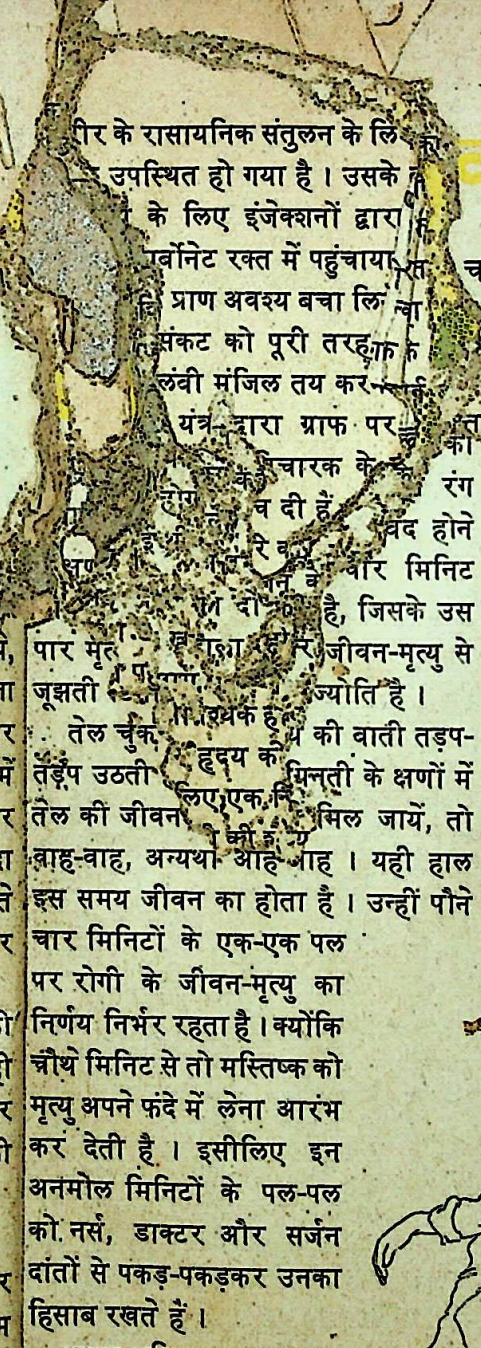

हृदय के रासायनिक संतुलन के लि[ए] उपस्थित हो गया है। उसके [लि]ए इंजेक्शनों द्वारा [बो]र्बोनेट रक्त में पहुंचाया [जा] प्राण अवश्य बचा लि[ये] संकट को पूरी तरह [टा]लंबी मंजिल तय कर [ली] यंत्र द्वारा ग्राफ पर [अं]चारक के [रं]च दी हैं [वि]रे [चा]र मिनिट [है], जिसके उस पार मृ[त्यु] जीवन-मृत्यु से जूझती [ज्यो]ति है।

तेल चुक[ने] की वाती तड़प-तड़प उठती [है]। हृदय की मिन्नती के क्षणों में [ए]क तेल की जीवन [मि]ल जायें, तो वाह-वाह, अन्यथा आह-आह। यही हाल इस समय जीवन का होता है। उन्हीं पौने चार मिनिटों के एक-एक पल पर रोगी के जीवन-मृत्यु का निर्णय निर्भर रहता है। क्योंकि चौथे मिनिट से तो मस्तिष्क को मृत्यु अपने फंदे में लेना आरंभ कर देती है। इसीलिए इन अनमोल मिनिटों के पल-पल को नर्स, डाक्टर और सर्जन दांतों से पकड़-पकड़कर उनका हिसाब रखते हैं।

इसका अति उत्तम उदाहरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुकारा—"हेलो कोड ९९, कृपया सावधान, तुरंत आइये, कोड ९९....." और कोड ९९ में वह चेतना दौड़ गयी, जो फायर ब्रिगेडवालों को भी शरमिंदा कर दे। नर्सों, सर्जनों और परिचारकों के दल जहां-तहां से उस रोगी के कमरे की ओर दौड़ लगाये चले आते हैं। हृदय-परीक्षण-यंत्र ई-के-जी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ) तथा तरह-तरह के यंत्रों की भी ट्रालियां दौड़ी चली आती हैं। इससे पहले दो डाक्टर रोगी की शैय्या तक पहुंच चुके होते हैं। शेष साधन जुटने तक प्राथमिक चिकित्सा द्वारा रोगी को बचाये रखते हैं। चेष्टा यही की जाती है कि फेफड़ों को ताजा आक्सिजन और मस्तिष्क को नया रक्त हृदय से बराबर मिलता रहे।

इसके लिए उन दो में से एक चिकित्सक रोगी के मुंह से एक फुंकनी लगाकर, उस पर अपना मुंह रखकर जोर से फूंक लगाता है, ताकि फेफड़े अपना कार्य बंद न करें। दो-चार फूंक लगने के बीच ही नर्स एक यांत्रिक प्रश्वासक ले आती है, जो रोगी के मुंह पर बैठा दिया जाता है। इससे फूंक मारनेवाले चिकित्सक को अन्य कार्य देखने का अवकाश मिल जाता है।

दूसरा चिकित्सक रोगी के हृदय को कृत्रिम धड़कन देता रहता है, ताकि हृदय का रक्त मस्तिष्क को पहुंचता रहे। इसके लिए वह अपनी दोनों हथेलियां उसके सीने पर टिकाकर, पसलियों को दबाता हुआ मालिश करता है। मालिश की इस क्रिया

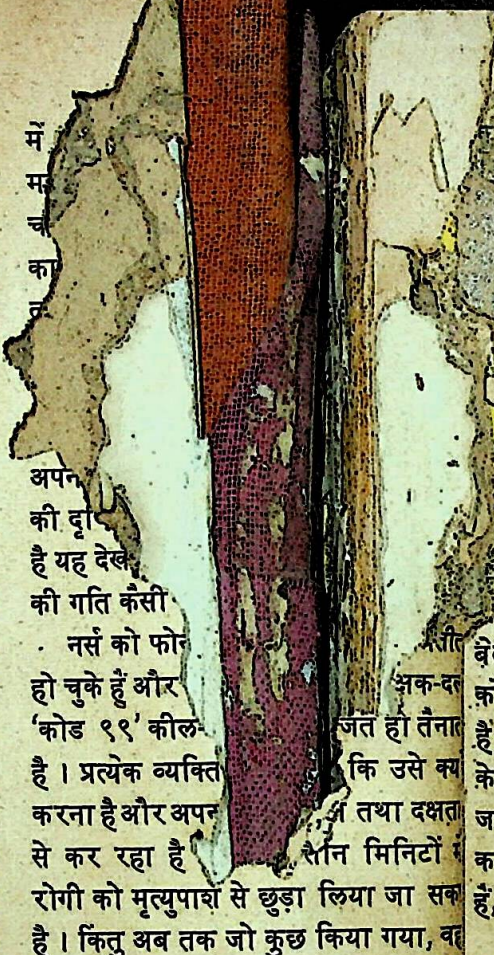

में
म
च
का
त
अपन
की दृ
है यह देख
की गति कैसी
नर्स को फो
हो चुके हैं और
'कोड ९९' कील
है। प्रत्येक व्यक्ति
करना है और अपन
से कर रहा है
रोगी को मृत्युपाश से छुड़ा लिया जा सक
है। किंतु अब तक जो कुछ किया गया, व
तो केवल प्राथमिक उपचार था। मुख्य परि
चर्या तो अब आरंभ होती है।

मुख्य चिकित्सक की कुशल देख-रेख
सिरहाने खड़ी हुई नर्स रोगी की अचेत
अवस्था पर नियंत्रण रखे रहती है। दूसर
चिकित्सक हृदय की मालिश किये जाता है
दो चिकित्सक ई-के-जी यंत्र को देखते रह
है। चौथा चिकित्सक ई-के-जी से एक नर्
टेप लेकर रोगी की कलाई से बांधता है

इसी बीच ज्ञात होता है कि रक्त क
अम्लता (एसिडिटी) के एकाएक बढ़ जाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible]रीर के रासायनिक संतुलन के लि[illegible]कट [illegible] उपस्थित हो गया है। उसके [illegible]ल [illegible] के लिए इंजेक्शनों द्वारा [illegible]ड- [illegible]र्बोनेट रक्त में पहुंचाया [illegible]हा [illegible] प्राण अवश्य बचा लि[illegible] [illegible]संकट को पूरी तरह [illegible] [illegible]लंबी मंजिल तय कर [illegible] [illegible] यंत्र द्वारा ग्राफ पर [illegible] [illegible]चारक के [illegible] पर [illegible]च दी हैं [illegible]ह देख- [illegible] हृदय अब [illegible] घोड़े की तरह बेतहाशा [illegible] है और मस्तिष्क को रक्त प[illegible] में बाधा डालता है। अब यह आ[illegible]श्यक हो गया है कि बिजली के झटके देकर हृदय को ठिकाने पर लाया जाये। इसके लिए एक चिकित्सक को छोड़कर शेष सब रोगी की शैय्या से दूर हट जाते हैं, ताकि उन्हें झटका न लगे।

शेष एक चिकित्सक भी इस प्रकार खड़ा हो जाता है कि रोगी अथवा उसकी शैय्या से उसका स्पर्श न हो। अब वह एक-एक विद्युदग्र (इलेक्ट्रोड) एक-एक हाथ में थामकर रोगी के सीने और पसली से टिकाता हुआ एक सेकेंड के दसवें भाग के लिए करेंट खोल देता है। यह झटका रोगी के हाथ-पांव को ऐंठता हुआ, उसके शरीर को भी धनुषाकार में झुका देता है। उसी क्षण करेंट बंद कर दिया जाता है और वहां खड़ा प्रत्येक व्यक्ति यह देखकर आश्वस्त हो उठता है कि अब हृदय की धड़कन ई-के-जी ग्राफ पर संतोषजनक रूप में अंकित होने लगी है।

'सावधान, कोड ९९' का संदेश जब नर्स ने माइक्रोफोन पर दिया था, तब से चौदहवां मिनिट गुजर रहा है और 'कोड ९९' अपना कार्य समाप्त कर चुका है। रोगी बचा लिया गया है—हो सकता है एक वर्ष के लिए, या शायद एक दिन के ही लिए। किंतु अभी तो प्राण-संकट टाला जा चुका है। सभी के चेहरों पर संतोष की मुस्कान है; क्योंकि जब स्वाभाविक गति से रोगी का दिल धड़कने लगा, तो परिचारकों के भी दिल की कली खिल गयी।

मोजार्ट ने आठ साल की उम्र तक एक सिम्फोनी की रचना कर डाली थी और चौदह के होते-होते वे बीस सिम्फोनियों और संगीत-नाटकों के रचियता बन चुके थे। हैंडेल केवल सात साल की अवस्था में ही गिरजे की प्रार्थना के लिए प्रति सप्ताह एक नये गीत की स्वर-रचना कर लाते थे। चौदह साल की उम्र में ही लीब्नित्स तर्कशास्त्र और दर्शन पर गंभीर निबंध लिखने लगे थे। बर्न्स ने उसी उम्र में अपनी कई अतिसुंदर कविताएं और गीत रचे। अठारहवें वर्ष में कदम रखते समय तक माइकलेंजेलो इटली के सबसे बड़े मूर्तिकार बन चुके थे। लियोनार्दी द विंची तेरह की उम्र में ही गजब के चित्रकार, संगीतज्ञ और गणितज्ञ थे। सत्रह साल की उम्र में पास्कल गणितज्ञ के नाते प्रसिद्धि के शिखर पर चढ़ चुके थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटल दैत्य क

सर आर्थर ग्रिबल का एक

आक्टोपस का भय बचपन में ही मेरे मन में बैठ गया था। चौदह साल की आयु थी, जब मैंने विक्टर ह्यूगो की पुस्तक 'समुद्र के यात्री' में एक मछुए और दैत्याकार कटल मछली की लड़ाई का वर्णन पढ़ा था। (कटल मछली आक्टोपस की चचेरी बहन है।) तभी से मैं अक्सर सोचा करता था कि अगर वैसे ही किसी दैत्यकाय, भौंडे और घिनौने जानवर से पाला पड़ जाये, तो क्या मैं हिम्मत से लड़ सकूंगा?

उन दिनों अक्सर मैं सपने में देखता कि आक्टोपस जैसी कोई भयंकर मूर्ति मेरे पीछे खड़ी है; मुझे उसकी ओर मुड़ने का साहस नहीं हो रहा है और डर के मारे मेरे हाथ-पैर ऐसे अकड़ गये हैं कि मैं भाग भी नहीं सकता। काल्पनिक भय का वह जमाना मेरे लड़कपन के जाने के साथ ही गुजर गया। मगर बहुत वर्ष बाद जब उप-

वह
वहन कट
मुख्य अंतर
भुजाएं होती हैं,
बर्ट टापू की व
लंबी होती है।
कम डरावनी नहीं होती। अपनी खून चूसने-वाली लंबी चोंचों और मटमैले गोल सिर में से बाहर को निकलती हुई सी आंखों के कारण वह पिशाच जैसी दिखाई पड़ती है।

इसकी आठ छोटी और दो लंबी भुजाओं के अग्रभाग में पंजे होते हैं। इन पंजों को पत्थरों में गड़ाकर यह किसी अंधेरे कोने में पानी की सतह से कुछ फुट नीचे छिपी रहती है और किसी अंधेरी खोह में बैठी-बैठी इंतजार करती रहती है कि कब कोई भूला-भटका शिकार इसके दायरे में पहुंचे और कब यह अपनी लंबी बांहों में उसे कस ले। बिजली की तेजी से लपकनेवाली इसकी एक बांह भी शिकार को जकड़ने के लिए काफी है। चाहे तो यह एक साथ दसों भुजाओं से हमला कर सकती है। इसकी पकड़ में आकर छूट जाना मुश्किल है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

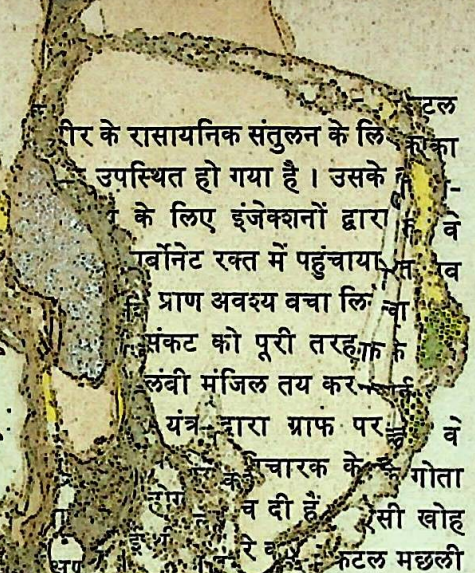

[illegible] कटल
[illegible]ीर के रासायनिक संतुलन के लि[illegible] का
[illegible] उपस्थित हो गया है। उसके [illegible]-
[illegible] के लिए इंजेक्शनों द्वारा [illegible] वे
[illegible]र्बोनेट रक्त में पहुंचाया [illegible] व
[illegible] प्राण अवश्य बचा लि[illegible]
[illegible] संकट को पूरी तरह [illegible]
[illegible]लंबी मंजिल तय कर [illegible]
[illegible] यंत्र द्वारा ग्राफ पर [illegible] वे
[illegible] विचारक के [illegible] गोता
[illegible] च दी हैं [illegible] ऐसी खोह
[illegible] कटल मछली
[illegible] रही हो। कटल
मछली ऐसी [illegible] रहती है। किसी
भी जीव के पास पहुंचने [illegible] उसके पंजों में
हरकत आने लगती है, जिससे शिकारी को
कटल के वहां होने का निश्चय हो जाता है।

तब एक शिकारी खोह के ऊपर चट्टान पर खड़ा हो जाता है और दूसरा गोता लगाकर जानवर के आस-पास तैरने और उसे लुभाने लगता है। पहले वह उसकी बांह की पकड़ के दायरे से कुछ हटकर हलचल करता है, जिससे जानवर चौकन्ना हो जाये। फिर सीधा कटल के मुख की ओर बढ़ता है, मानो उसके बाहुपाश में बंध जाने को उतावला हो। कई बार बहुत नजदीक पहुंचने पर भी खनी कटल अलसायी-सी लेटी रहती है। मगर अक्सर ज्यों ही आदमी नजदीक पहुंचता है, हमला कर देती है।

शिला पर खड़ा हुआ शिकारी चौकन्ना होकर इसी क्षण की प्रतीक्षा किया करता है। उसका एकमात्र हथियार है—उसके दांत। और ये तभी काम कर सकते हैं, जब वह अपने आपको कटल की दस बांहों के शिकंजे से बचाये रखे। अतः उसे तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जब तक कटल उसके साथी को अपनी बांहों में जकड़कर खोह के मुंह तक न खींच ले और अपना कांटेदार मुंह उसके शरीर से सटा न ले। यह काम ३० सेकेंड में हो जाता है और इसके बाद कटल को शिकार के सिवा कुछ नजर नहीं आता।

इसी समय चट्टान पर बैठा शिकारी पानी में कूद पड़ता है और जानवर की पकड़ में फंसे हुए अपने साथी को इतना जोरदार झटका देता है कि जानवर की जो भुजाएं शिला की दरारों में अटकी हुई हों, वे भी छूट जायें। उसी क्षण पंजों में फंसा हुआ आदमी भी पैर का झटका देकर पानी की सतह पर आ जाता है और उसके साथ ही उससे चिपकी हुई कटल मछली भी। अब वह दम रोककर पीठ के बल तैरने लगता है, जिससे जानवर का सिर पानी के ऊपर उठा रहे।

इसी मौके की ताक में रहनेवाला दूसरा शिकारी जानवर पर हमला कर देता है। दोनों हाथों से वह कटल के सिर को पकड़कर अपनी ओर खींचता है और पूरी ताकत से अपने दांत उसकी दोनों आंखों के बीचों-बीच गड़ा देता है। कुछ ही क्षणों में कटल के प्राण कूच कर जाते हैं—पंजे ढीले पड़ जाते हैं, चोंच नीचे लटक जाती है। और शिकारी हंसते हुए बाहर निकल आते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन मैं तरावा की खाड़ी की जेटी पर खड़ा था कि मैंने देखा, दो जवान चले आ रहे हैं; दोनों ने एक बल्ला एक-एक सिरे से पकड़ रखा है और उस पर कई कटल मछलियां लटक रही हैं। मैं उनकी ओर चला। मगर मैं उन्हें आवाज दे सकूं, इसके पहले ही वे फिर पानी में उतर गये थे। मैंने उन्हें शिकार करते देखा। मेरे देखते-ही-देखते वे एक और कटल मछली मार लाये।

जब मैंने पूछा कि इतने जबर्दस्त शिकार को वे इस तरह आनन-फानन में कैसे खत्म कर देते हैं, तो वे हंसते हुए बोले—"यह तो बहुत आसान है।" उन्होंने बताया कि डुबकी लगानेवाले को एक बात याद रखनी चाहिये। उसे जानवर के वार के दायरे में जाते हुए अपनी आंखों को हाथों से ढंक लेना चाहिये, जिससे कटल के पंजे आंखों में न चुभ जायें। नहीं तो वह अंधा हो जायेगा।

बाद में पता चला कि डर अंधा होने का उतना नहीं है, जितना इसका कि पंजा आंख पर पड़ते ही गोताखोर की सांस टूट जाये और वह सांस लेते हुए समुद्र का पानी निगल ले। इससे उसकी हिम्मत टूट जाती है और वह पैर का झटका देकर सतह पर नहीं आ सकता।

हां तो वे दोनों युवा मछुए क्षण-भर अपनी भाषा में आपस में बातें करते रहे, फिर मुझसे बोले—"आइये, आप भी हमारे साथ शिकार खेलिये।"

मेरे कौतूहल ने मुझे उनके जाल में फंसा दिया था। मुझे हां या न कहने का मौका

दिये [illegible]
ही [illegible]
कट[illegible]
है।[illegible]
नहीं[illegible]
य[illegible]
पीठ[illegible]
भी तो[illegible]
साबित हो[illegible]
किस लहजे में[illegible]
ही मैंने तय कर[illegible] की साम[illegible]
करूंगा, गोगा क[illegible]ह

मैंने खाकी पत[illegible]न पहनी थी। पांव में कैनवास के जूते थे और ऊपर आधी बांह की कमीज। जूते-कमीज तो मैंने उतार दिये; मगर पतलून उतारने को मन न माना।

मैं महसूस कर रहा था, मेरा चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया है। मेरी जीभ तो तालू से चिपक ही गयी थी। मैं जी कड़ा करके पानी में कूद पड़ा। "अपनी आंखों को हाथ से ढंकना न भूलना"—ये शब्द मुझे ऐसे सुनाई दिये, मानो कोई हजारों मील दूर से बोल रहा हो।

कटल मछली की आंखें अंधेरे में नहीं चमकतीं। वैसे भी उस समय खाड़ी शांत थी और पानी की छः फुट मोटी परत के नीचे पूरा उजाला था। मगर भगवान की कसम, जब मैं उस पिशाच की ओर चला, तो उसकी आंखें यों चमक रही थीं, जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] चमक
[illegible]रीर के रासायनिक संतुलन के लि[illegible] लीं
[illegible] उपस्थित हो गया है। उसके [illegible]
[illegible] के लिए इंजेक्शनों द्वारा [illegible] कोई
[illegible]र्बोनेट रक्त में पहुंचाया [illegible]त-
[illegible] प्राण अवश्य बचा लि[illegible]
[illegible] संकट को पूरी तरह [illegible]
[illegible] लंबी मंजिल तय कर [illegible] और
[illegible] यंत्र द्वारा ग्राफ पर [illegible] और
[illegible] चारक के [illegible] भीतर
[illegible] च दी हैं [illegible] में आया
[illegible] र उसकी बांह
[illegible] मेरी पसी[illegible] थीं।

संकट के स[illegible] बड़ी स्पष्टता से काम करता है। यद्यपि यह संकट वैसा भयावह था भी नहीं; क्योंकि मुझे यह ज्ञात था कि मेरी रक्षा के लिए दो शिकारी मुस्तैद बैठे हैं। फिर भी बचपन का भय जाग उठा।

तभी जानवर की बांहों ने मेरे सिर और कंधे को झटके के साथ चट्टान की ओर खींच लिया। मेरी चेतना में अंधेरा छा गया। मुझे अनुभव होने लगा कि उसका मुंह मेरे गले के नीचे की हड्डी के पास आकर चिपक गया है। अब मुझे यह भी याद नहीं रहा कि कोई मेरी रक्षा करनेवाला भी है। किंतु इस संकट में भी मैंने सांस न टूटने दी।

क्षण-भर की उस मूर्छा से मैं तब जागा, जब किसी के मजबूत हाथ मेरे कंधे पर पड़े और उन्होंने तेज झटके से मुझे ऊपर खींच लिया। जिन कांटेदार तारों ने मेरे शरीर को जकड़ रखा था, वे और भी कस गये। मैंने पैर का झटका दिया, सतह पर आकर पीठ के बल पानी पर पड़ गया। मेरी छाती पर अब भी वह कटल मछली चिपकी हुई थी। उसका सिर मेरे गले पर से हवा में ऐसे उठा हुआ था, जैसे कोई ट्यूमर निकला हो। उसकी चोंचें गर्म शलाकाओं की तरह मेरी चमड़ी को काट रही थीं। यह स्थिति दो ही सेकेंड रही होगी; लेकिन मुझे ऐसा लगा, जैसे सदियों तक यह नरक भुगता हो।

उसी समय शिकारी जवान टूट पड़ा। दांतों से काटकर उसने जानवर की जान ले ली। शिकार खत्म हो गया था; मगर मुझे राहत नहीं मिली। कटल दैत्य की बांहों का बंधन अचानक ही ढीला हो गया, जिससे मेरी सांस टूट गयी और मैं एकदम पानी में गोता खा गया। बड़ी मुश्किल से उन्होंने मुझे बाहर निकाला।

देर तक मुझे खांसी आती रही, दम फूला रहा, मेरी घबराहट न गयी। मगर मेरे मित्र नौजवान मछुए मृत कटल को कंधे पर लादे खुशी से नाच रहे थे और मुझे भी उनके साथ नाच में हिस्सा लेना पड़ा। तभी मैंने यह भी देखा कि वह कटल मछली बीस-बाईस नहीं, महज आठ-नौ फुट की थी। मेरा रहा-सहा गर्व भी काफूर हो गया।

बाद में समुद्र का खारा पानी पेट से निकालते हुए एक बार सोचा कि क्यों न सचमुच एक बड़ी कटल के शिकार का मजा लिया जाये। मगर अंदर से आवाज आयी—"नहीं, कभी नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजनीति-मुक्त राजनेता
लुई अर्मांद

टेक्नीशियन कलियुग के असली दिक्पाल हैं—युद्ध [illegible] फ्रांस के नवनिर्माण में महान योगदान करनेवाले एक इंजीनियर राजनेता का जीवन-परिचय बी० बी० सी० के एक भाषण के आधार पर। पोर्ट्रेट बी० एन० ओके।

कुछ समय पूर्व फ्रांस में हुए एक जनमत-संग्रह में लोगों से पूछा गया था कि द गोल के बाद वे किसे राष्ट्रपति बनाना पसंद करेंगे। दो व्यक्तियों के नाम बार-बार लिये गये। एक थे—समाजवादी पार्टी की ओर से राष्ट्रपति-पद का चुनाव लड़नेवाले गास्तों दे फेरे। दूसरे थे—लुई अर्मांद।

किसी 'सिनिक' ने राजनीतिज्ञ और राजनेता शब्दों की परिभाषा करते हुए कहा है—जिसकी नीति से हम सहमत हों, वह राजनेता; जिसकी नीति से हम सहमत न हों, वह राजनीतिज्ञ। किंतु इस ओछे अर्थ में नहीं, अपितु सच्चे अर्थ में, लुई अर्मांद आज फ्रांस के सर्वमान्य राजनेता हैं और इ स सम्मान का कारण है तकनीकी क्षेत्र में लुई अर्मांद की जबर्दस्त राष्ट्रसेवा।

फ्रांस को आज यह गर्व करने का अधिकार है कि उसकी रेल-व्यवस्था यूरोप में ही क्या, तमाम संसार में सबसे अधिक आधुनिक है। वहां आज ५,५०० मील रेल-मार्ग पर बिजली की रेलें दौड़ती हैं। युद्ध से पहले की तुलना में आज फ्रेंच रेलवे में डेढ़ लाख कर्मचारी कम हैं; फिर भी [illegible] पहले से २० प्रतिश[illegible]धिक य[illegible] ७० प्रतिशत अधिक म[illegible] होती [illegible] का सारा श्रेय है इंजीनिय[illegible] को।

किंतु अर्मांद [illegible] वि[illegible] सिर्फ रेल की पटरी पर नहीं दौड़ा है। सहारा की रेत के नीचे फ्रांस ने तेल का विशाल खजाना जो खोज निकाला, उसमें अर्मांद का हाथ था। अणुशक्ति के सृजनात्मक उपयोग के लिए पश्चिमी यूरोप में स्थापित यूरेटम संघटन अर्मांद ही की कल्पना की उपज थी। इंग्लिश चैनल के नीचे सुरंग खोदकर फ्रांस व ब्रिटेन को स्थल-मार्ग से जोड़ने के लिए फ्रांस में जो कंपनी बनायी गयी है, उसके भी अध्यक्ष अर्मांद हैं।

सेवाय प्रांत के एक छोटे गांव में वे जन्मे। माता-पिता दोनों ही अध्यापक थे—न धनी, न गरीब; किंतु सुशिक्षित। बालक लुई को शुरू से ही गणित में कमाल हासिल था। वैज्ञानिक प्रयोगों में उसका मन खूब रमता था। माता-पिता ने भी उसे बढ़ावा दिया।

बारह बरस के लुई ने अपने पड़ोसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

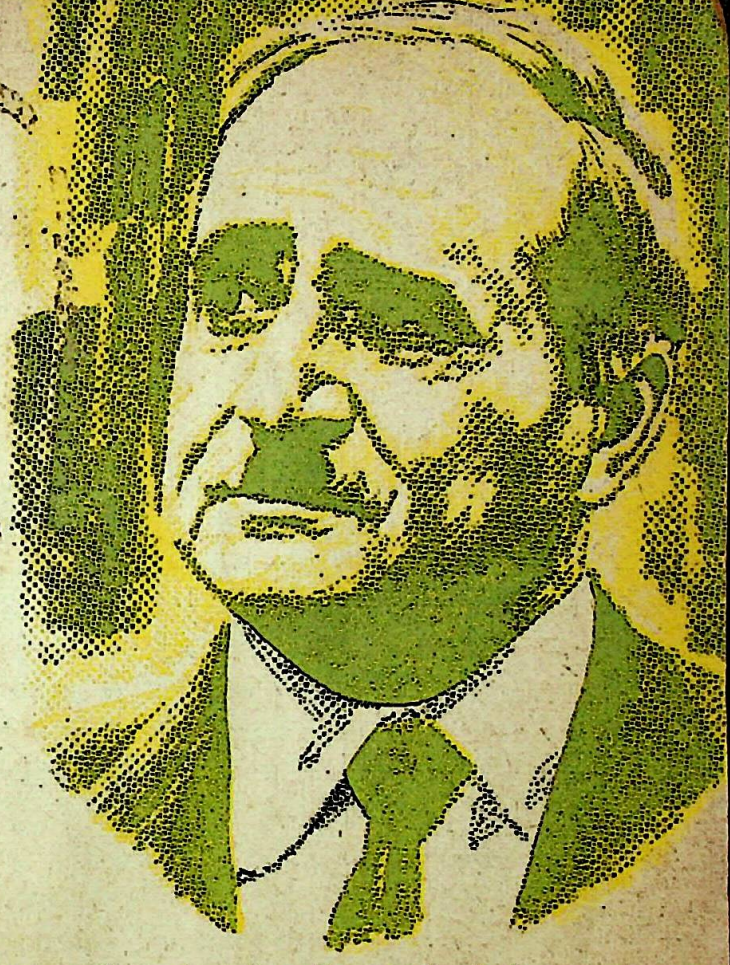

दवाफरोश से फोटोग्राफी सीखी। उसने अपने ही हाथों से एक कैमरा तैयार कर लिया। यही नहीं, मुहल्ले के कसाई की दुकान से हड्डियां लाकर उन्हें उबालकर जिलेटिन निकाली और उससे फोटोग्राफ[illegible] की प्लेटें बनायीं। [illegible]ल के पास लगे जंग[illegible]लों के रस में से ए[illegible] उसमें चांदी का दो [illegible] का सिक्का डाला और प्लेटें 'डेवलप' कर लीं।

प्रकृति का निरीक्षण वह इतनी बारीकी से करता था कि बारह साल की अवस्था में ही फफूंद की पूरी एक सौ किस्में पहचान सकता था। उसे कुकरमुत्ते की सैकड़ों जातियां ज्ञात थीं और यह भी कि उनमें से कौन-सी खाने योग्य हैं, कौन-सी विषैली।

गांव के स्कूल के बाद लुई ने एनेसी और लियोन के विद्यालयों में पढ़ाई जारी रखी और अंत में पेरिस के विख्यात एकोल पालिटेक्नीक में प्रवेश किया। फ्रांस के प्रत्येक मेधावी छात्र की तमन्ना होती है कि वह इस विद्यालय में भर्ती हो।

एकोल से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होकर लुई अर्मांद खनिज इंजीनियरी के महाविद्यालय में दाखिल हुए। वहां विशेषतः भूमि की स्तर-रचना का अध्ययन किया। स्नातक-परीक्षा में सर्वप्रथम आये। इच्छा तो यही थी कि वहीं पढ़ाया करें; किंतु कोई पद खाली नहीं था। अतः क्लेरमोंत फेरांद में वैज्ञानिक शोधकर्ता की नौकरी कर ली। उनका काम था वहां के चश्मों का अध्ययन करना। इन चश्मों का रासायनिक तत्वों से मिश्रित पानी स्वास्थ्य-सुधार के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे फ्रांस में पिया जाता है।

अर्मांद ने इसका विशेष अध्ययन किया कि रक्तक्षीणता से पीड़ित चूहों और मेंढ़कों पर इस पानी का क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के परिणाम इतने महत्वपूर्ण थे कि फ्रांस की चिकित्साशास्त्र अकादमी ने उन्हें अपना सदस्य बना लिया, हालांकि वे डाक्टर नहीं, इंजिनियर हैं।

कई वर्ष बाद उन्होंने रेलवे की नौकरी कर ली। यहां भी एक जटिल समस्या उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। इंजिनों के बायलर में जम जानेवाले लवणों की परत को खुरचना बड़ा कष्ट का काम है। अर्मांद ने एक ऐसी चीज खोज निकाली, जिसे पानी में मिला देने से बायलर में लवणों की परत जमा नहीं होती। इससे खुरचने की आवश्यकता तो समाप्त हो ही गयी, बायलर भी पहले से दुगने समय तक काम देने लगे और रेलवे का काम पहले की तुलना में ५० प्रतिशत कम इंजिनों से चलने लगा।

जब १९३८ में फ्रांस में रेलों का राष्ट्रीयकरण हुआ, लुई अर्मांद उन चंद ऊंचे कर्मचारियों में से थे, जिन्होंने उस नये कदम का उत्साह से स्वागत किया। तेजी से उनकी पदवृद्धि होने लगी। किंतु तभी विश्वयुद्ध आ पहुंचा। जर्मनी फ्रांस पर कब्जा जमाकर बैठ गया और उसकी साधन-संपत्ति का उपयोग तमाम यूरोप की आजादी के अपहरण के लिए करने लगा। देशभक्त फ्रांसीसी तोड़फोड़ की कार्रवाइयों द्वारा जर्मन सेना और शस्त्रास्त्रों के यातायात में बाधा डालने लगे। और इस काम में उनके सबसे बड़े सहायक थे—रेलवे के प्रधान इंजीनियर लुई अर्मांद।

इस रहस्य का पता लगाने में जर्मनी की दक्ष खुफिया पुलिस गेस्टापो को पूरे चार साल लग गये। अंत में जून १९४४ में अर्मांद पकड़े गये। उनका कोर्ट मार्शल हुआ। मृत्युदंड का फैसला सुनाकर उन्हें फ्रेस्ने जेल की कालकोठरी में बंद कर दिया गया।

मृत्यु सिर पर मंडरा रही [illegible] लेकिन दार्शनिक अर्मांद शांत मन से [illegible] रहे थे कि जीवन क्या है, इसका [illegible] क्या है, उसका सार्थक्य किस चीज में है? गहरे चिंतन से वे इस निर्णय पर पहुंचे कि अपने तकनीकी ज्ञान और अनुभव का मानवमात्र को लाभ पहुंचाना ही उनके जीवन का लक्ष्य हो सकता है। साथ ही उन्होंने फ्रांस की तमाम रेलों को बिजली से चलाने की एक योजना भी तैयार कर डाली।

आखिर फ्रांस विमुक्त हुआ और अर्मांद पुनः प्रधान इंजीनियर बनाये गये। क्षतविक्षत रेलवे को, जिसके ८२ प्रतिशत इंजिन, ८० प्रतिशत यात्री-डिब्बे, ६४ प्रतिशत माल-डिब्बे और अधिकांश कारखाने एवं यार्ड नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे, पुनः व्यवस्थित करने का काम उन पर आ पड़ा।

अर्मांद ने दूसरे प्रश्न तो दक्षतापूर्वक सुलझाये ही, बिजली की रेलों की योजना भी सरकार के सामने रखी। परीक्षण के लिए एनेसी की लाइन का विद्युतीकरण किया गया। दूसरी लाइनों की तरह यहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हल्की वोल्ट के करेंट का नहीं; बल्कि २५,००० वोल्ट के औद्योगिक करेंट का उपयोग किया गया। अर्माद ने एक ऐसी विधि निकाली, जिससे रेल के इंजिन में ही ए-सी करेंट डी-सी में बदल जाये। इससे खर्चा बहुत घट गया। आज सारा संसार इस विधि का लाभ उठा रहा है। एनेसी परीक्षण खूब सफल रहा और अन्य अनेक रेलवे लाइनों का विद्युतीकरण शुरू कर दिया गया।

कुछ [illegible] बाद अर्माद रेलवे के डाइरेक्टर जनरल और बाद में अध्यक्ष बनाये गये। उन्होंने कई महत्वपूर्ण कदम उठाये। तीसरे दर्जे को समाप्त कर दिया। रेलों की रफ्तार बढ़ायी और २०६ मील प्रति घंटे का नया रेकार्ड कायम किया। एक विशाल रेलवे शोध-प्रयोगशाला खोली, जिसकी खोजों का लाभ संसार का कोई भी देश बिना शुल्क दिये उठा सकता है।

उन्होंने पश्चिम यूरोप के राष्ट्रों को इस चीज के लिए तैयार कर लिया कि रेल द्वारा माल विदेश भेजते समय हर देश की सीमा पर माल को एक देश के वैगनों से दूसरे देश के वैगनों में भरने के बजाय, उन्हीं वैगनों में जाने दिया जाये। इससे वैगनों का पूर्ण उपयोग होने लगा और माल के यातायात के मामले में पश्चिम यूरोप का एकीकरण हो गया। उन्होंने रेलवे में सिग्नल-व्यवस्था आदि के लिए कंप्यूटरों का बड़े पैमाने पर उपयोग शुरू कराया।

मगर यह न समझिये कि लुई अर्माद हरदम मशीनों की ही उधेड़बुन में लगे रहते हैं। मशीनों को वे महत्व जरूर देते हैं; लेकिन मनुष्य को सुख पहुंचानेवाले साधन के रूप में ही। उनका विचार है कि अब तक युद्ध जीतने या धन कमाने की चाह ने आविष्कारकों को प्रेरणा दी है; किंतु अब मानव-मात्र का हित-साधन विज्ञान का आधार होना चाहिये।

इंजीनियरों से वे कहा करते हैं—"किसी भी योजना पर विचार करते समय केवल यह मत सोचो कि क्या वह तकनीकी दृष्टि से संभव और आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद है? बल्कि यह भी पूछो कि उससे औसत आदमी को कितना लाभ पहुंचेगा?"

औसत आदमी की चिंता उनके मन में तरह-तरह की योजनाओं को जन्म देती रहती है। प्रायः शहरों में टैक्सियां एक ही सवार को बैठाकर दौड़ती हैं, शेष सीटें खाली पड़ी रहती हैं—यह अपव्यय कैसे रुके? मिलें और कारखाने लगातार धुआं उगलते व वातावरण को दूषित करते रहते हैं—इसकी रोकथाम कैसे हो? राकेट-युग में भी शहरों की सड़कों की सफाई मनुष्य को हाथों से करनी पड़ती है—इस उपहासास्पद स्थिति को कैसे बदला जाये? इन सब प्रश्नों का व्यावहारिक समाधान वे खोजते रहते हैं।

किंतु छोटे प्रश्न बड़े प्रश्नों को ढंक नहीं लेते। फ्रेंच सरकार के तेल-विशेषज्ञ अल्जीरिया में तेल की खोज करवा रहे थे। भूस्तर-रचना के जानकार अर्माद ने सरकार पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोर डाला कि अल्जीरिया के बजाय सहारा में खोज कराये। विशेषज्ञों ने विरोध किया। किंतु सरकार अमाँद की बात मान गयी; और शीघ्र ही तेल का विशाल भंडार उसके हाथ लग गया। देश ने अमाँद को आंखों पर बैठा लिया।

किंतु अमाँद तब तक यूरेटम-योजना में डूब गये थे। मुख्यतः अमाँद के ही प्रयत्न से पश्चिम यूरोप के देशों ने १९५८ में इस योजना पर स्वीकृति की मोहर लगायी और अणुशक्ति के औद्योगिक विनियोग के लिए मिलकर काम शुरू किया। अमाँद ही यूरेटम के प्रथम डाइरेक्टर बनाये गये।

आजकल वे इंग्लिश-चैनल सुरंग की योजना को सफल बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनका कहना है कि सारे यूरोप को इसमें हाथ बंटाना चाहिये; क्योंकि सारे यूरोप को इस सुरंग से लाभ पहुंचेगा। वैसे भी उनका कहना है – अब यूरोपीय राष्ट्रों को अपनी-अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना छोड़कर यातायात, उद्योग आदि के प्रश्नों पर सामूहिक रूपसे सोचना चाहिये; तभी वे अमरीका और रूस के मुकाबले टिक सकेंगे।

तमाम यूरोप की चिंता सिर पर ढोते हुए भी अमाँद आदर्श गृहस्थ हैं—आदर्श पति, चार संतानों के स्नेही पिता। अपनी पत्नी को वे तब से जानते हैं, जब डेढ़ वर्ष के थे। वे कहा करते हैं कि जीवन में हर बड़ा कार्य उन्होंने पत्नी की सलाह और सहयोग से ही किया है।

साहित्यकार न होते हुए भी लुई अमाँद फ्रांस की विश्वविख्यात साहित्य अकादमी के सदस्य चुने गये हैं। कार[illegible] उनका आदर्शवादी जीवन-दर्शन एवं [illegible]ता की नजरों में उनका ऊंचा स्थान।

विस्मय की बात है कि इतनी प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और क्षमता का बल रहते हुए भी उन्होंने राजनीति में उतरने की तत्परता नहीं दिखायी है। किंतु उनके काम इतने ठोस हैं कि उनका नाम आज के अधिकांश फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों से ज्यादा समय तक याद किया जायेगा। अगर कभी यूरोप का संघराज्य स्थापित हुआ, तो निस्संदेह लुई अमाँद उसकी नींव डालनेवालों में गिने जायेंगे।

चर्चा एक प्रकार की बौद्धिक शराब है। शराब का एक प्याला पीने के बाद पक्का शराबी जिस तरह एक के बाद एक प्याले अपने गले में उडेलता जाता है, उसी तरह चर्चा के पिष्ट-पेषण की शृंखला निरंतर बढ़ती जाती है। शराबी जिस तरह अंत में बेहोश हो जाता है, उसी तरह ये चर्चा के शौकीन व्यक्ति भी कुछ भी निष्पत्ति न करके अंत में बेहोश हो जाते हैं। जिस तरह शराबी चेतना प्राप्त करने के बाद पुनः मदिरा-पान करता है और पुनः उसी तरह अचेत हो जाता है, उसी तरह इन चर्चाप्रिय व्यक्तियों की भी स्थिति है।

प्रेषक– अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

–मामा वरेरकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खरगोशों का महाप्रलय

कमला ग० वाघ

जनवरी १९५२ की एक सुबह डा० पाल अर्माद डिलाइल नामक एक वृद्ध फ्रांसीसी डाक्टर को डाकिये ने एक छोटा-सा पार्सल लाकर दिया। भयंकर अणुशस्त्र में भी वह शक्ति न होगी, जो उस छोटे-से पार्सल में छिपी हुई थी।

सेवा से निवृत्त होने के बाद डा० डिलाइल शार्त्री के निकट अपने फार्म पर रहने लगे थे। बगीचा लगाना, चित्र बनाना-जैसे मनपसंद कामों में वे दिन गुजारा करते। परंतु निवृत्त जीवन की इस शांति में खलल डालनेवाला एक दुश्मन पैदा हो गया था। और वह था खरगोश। इस भोले और लुभावने प्राणी के प्रति डाक्टर के मन में तीव्र घृणा भरती जा रही थी। प्रतिवर्ष वसंत ऋतु में डाक्टर के बगीचे की तमाम कीमती वनस्पतियों को खरगोश नष्ट कर डालते थे।

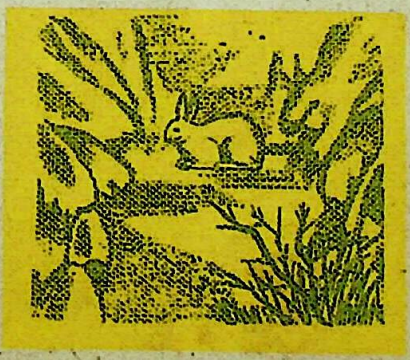

इस शत्रु का नाश कैसे किया जाये, इसकी चिंता में डाक्टर के कितने ही दिन गुजर गये। फिर एक दिन उन्होंने एक समाचार पढ़ा और उनकी आंखें चमक उठीं। समूचा आस्ट्रेलिया भी खरगोशों से परेशान हो उठा था और वहां की सरकार ने अंत में 'मिक्जामेटोसिस' नाम का रोग इन प्राणियों को लगा दिया था। दो साल के भीतर करोड़ों खरगोश यमलोक पहुंच गये और आस्ट्रेलिया ने राहत पायी। समाचार के अंत में यह उपयोगी सूचना भी थी कि 'मिक्जामेटोसिस' के इंजेक्शन स्विटजरलैंड में बिकते हैं।

उसी समय डाक्टर ने स्विट्जरलैंड के एक दवाफरोश को पत्र लिखा; और एक दिन सुबह एक छोटा-सा पार्सल उन्हें मिला। डाक्टर ने चूहेदानी में खरगोशों की एक जोड़ी पकड़ी; उनके शरीर में इंजेक्शन द्वारा रोग के कीटाणु प्रवेश कराकर अपने बगीचे में छोड़ दिया। उनका अंदाज था कि इससे उनके बगीचे के खरगोश ही खत्म होंगे। परंतु हुआ कुछ और ही। उनके इस इंजेक्शन ने सारे फ्रांस के, बल्कि सारे यूरोप के खरगोशों पर कहर बरसा दिया।

खरगोश का फ्रांस में काफी महत्वपूर्ण स्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। प्रतिवर्ष फ्रांस के १,८५,००० नागरिक खरगोश का शिकार करने का लाइसेन्स प्राप्त करते थे। एक लाइसेन्स का शुल्क था १,५०० फ्रैंक। राम्बुय्ये नामक स्थान पर एक शिकारगाह था। वहां फ्रांस के राष्ट्रपति बड़े चाव से खरगोश का शिकार करते थे। उतने ही चाव से फ्रांस का गरीब-से-गरीब किसान अपने खेत में खरगोश का शिकार करता। हर साल फ्रांस में २० लाख से अधिक खरगोश बंदूक की गोलियों का निशाना बनते और फ्रांस के रसोइये खरगोश के मांस के स्वादिष्ट व्यंजन जमाते थे।

फ्रांस में जितने छर्रे तैयार होते, उनमें ८० प्रतिशत छर्रे खरगोश मारने के काम आते थे। एक छर्रे की कीमत केवल २५ पैसे होती थी। फिर भी छर्रा-निर्माण उद्योग से हजारों की रोजी चलती थी।

जंगली खरगोशों का इतना महत्व था, तो पालतू खरगोशों की महिमा का पूछना ही क्या। गांवों में प्रायः हर व्यक्ति खरगोश पालता था। इसके लिए उसे खास खर्चा नहीं करना पड़ता था। हरी नरम घास व कोंपलें खरगोश का मुख्य आहार हैं। इस पर पले खरगोश से सात-आठ महीने में सात-आठ पौंड बढ़िया मांस मिल जाता है।

पिछले महायुद्ध में खरगोशों ने ही फ्रांस को भुखमरी से बचाया। गायें व भेड़ बकरियां ही नहीं, कुत्ते तक नाजियों ने मांस के लिए अपने अधिकार में कर लिये थे। सामान्य नागरिकों को इन प्राणियों का मांस देखने को भी न नसीब होता था। युद्ध के बाद भी पालतू खरगोश गरीबों का बहुत बड़ा सहारा थे। प्रतिवर्ष ८५ लाख पालतू खरगोश खाने के लिए मारे जाते थे।

खरगोश की खाल का व्यापार भी फ्रांस में बड़े पैमाने पर चलता था। प्रतिवर्ष ३३ लाख खालें विदेशों को भेजी जाती थीं, जिससे फ्रांस को २० करोड़ फ्रैंक की आमदनी होती थी। विदेशों के फेल्ट हट के कारखानों से लाखों खालों की मांग आती रहती।

तो भी डाक्टर डिलाइल जैसे खरगोश-द्वेषी भी फ्रांस में थे; क्योंकि खेतों व बगीचों को खरगोशों से बहुत हानि होती थी। खरगोश पौधों को कुतर डालते। वन-विभाग को भी उनसे सख्त शिकायत थी।

डा० डिलाइल ने जिन दो खरगोशों को इंजेक्शन देकर अपने बगीचे में छोड़ा था, उनकी भौंहों और नाक पर एक-दो दिन में सूजन आ गयी और उससे पानी रिसने लगा। कुछ समय बाद उसके सारे शरीर पर वरम आ गया। उनके चेहरे की चिकनाहट दूर होकर खुरदरापन छा गया। उनके पैर डगमगाने लगे और उछलना असंभव हो गया। फिर वे एकदम बहरे और अंधे हो गये। अंततः इंजेक्शन देने के लगभग छठे दिन उनकी मृत्यु हो गयी।

इन रोगी खरगोशों के संसर्ग का असर दूसरे खरगोशों पर तेजी से पड़ा। उन्हें भी बीमारी की छूत लग गयी और उनमें से ९९ प्रतिशत मर गये। रोग के सबसे दक्ष दलाल थे—मक्खियां तथा मच्छर।

यह 'मिक्जामेटोसिस' रोग दो वर्ष में ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे आस्ट्रेलिया में फैल गया था और उस महाद्वीप के ९० प्रतिशत खरगोश इसके शिकार हो गये थे। डा० डिलाइल ने जब दो खरगोशों को इस रोग के कीटाणुओं का इंजेक्शन दिया, उसके बाद थोड़े ही समय में फ्रांस में भी वैसी परिस्थिति पैदा हो गयी। गर्मियों में मच्छरों तथा मक्खियों ने रोग को तेजी से फैलाया।

डा० डिलाइल की तरह खरगोशों से नफरत करनेवाले कुछ किसानों ने शार्त्री जिला बोर्ड से रोगी खरगोशों को लाकर अपने खेतों में छोड़ा और जान-बूझकर रोग के फैलने में मदद की। कहीं-कहीं तो रोगी खरगोशों का चोर-बाजार भी हुआ और रोगी खरगोश पंद्रह-पंद्रह रुपये में बिके।

अक्टूबर १९५२ तक फ्रांस के जिले-जिले में 'मिक्जामेटोसिस' ने पैर जमा लिये थे। तीन वर्गमील के एक इलाके में २०,००० खरगोश इस रोग से मरे पाये गये। जंगलों में मरे हुए खरगोशों की पांतें बिछ गयी।

रोगी खरगोश गांवों की गलियों में मार्ग टटोलते हुए घूमने लगे। उन्हें बचाकर चलना मोटरों के लिए दुश्वार हो गया। मोटर के नीचे आ जानेवाले खरगोश के कीटाणु टायर के द्वारा दूर तक पहुंच जाते। रोग से आक्रांत क्षेत्र की घेराबंदी करके तमाम रोगग्रस्त खरगोशों को मारकर जला डालने—जैसे अनेक उपाय कृषि-विभाग ने अपनाये; पर सभी निष्फल सिद्ध हुए।

अंत में सरकार ने विख्यात पाश्चर इंस्टिट्यूट से प्रार्थना की कि वह इस रोग का टीका तैयार करे, ताकि खरगोशों को समूल नाश से बचाया जा सके; और डा० प्येर लेपें जो पोलियों के संबंध में महत्वपूर्ण शोध कर रहे थे, अंत में वैक्सीन तैयार करने में सफल हो गये।

खरगोश को इसका टीका देने के बाद उसे 'मिक्जामेटोसिस' का खतरा न रहता। परंतु वैक्सीन को सब जगह भेजना मुश्किल था; क्योंकि उसे रेफ्रिजरेटर में रखना पड़ता है। दूसरी बात यह थी कि सिर्फ पालतू खरगोशों को उसका लाभ मिलना संभव था—उनमें से भी उन्हीं को, जो पशु-वैद्यशालाओं के समीप हों। जंगली खरगोशों को पकड़कर टीका देना असंभव था।

सन १९५३ में 'मिक्जामेटोसिस' सारे फ्रांस में फैल चुका था। जंगल के खरगोशों के बचने की आशा पूर्ण रूप से नष्ट हो चुकी थी। पाश्चर इंस्टिट्यूट ने तय किया कि जितने भी पालतू खरगोश बचाये जा सकें, बचाये जायें। उसके कार्यकर्ताओं ने दिन-रात मेहनत करके अगस्त १९५३ के अंत-तक चार लाख खरगोशों को 'एंटीमिक्जा-मेटोसिस' का टीका दिया।

किंतु उसी साल गर्मियों में रोग ने फ्रांस की सीमा पार कर बेल्जियम व लग्जेंबर्ग में प्रवेश किया। फिर इन दोनों देशों के खरगोशों का खात्मा करके राइन नदी को लांघकर यह रोग जर्मनी में पैठ गया। पशु-चिकित्सक और जंगलात-विभाग के अधिकारी चिंतित हैं कि यह रोग यूरोप से एशिया भी न पहुंच जाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अप्रतिम कलागुरु

सत्यकाम विद्यालंकार

चित्रकला में भारतीय चेतना का पुनः प्रतिष्ठापन आचार्य अवनींद्र ठाकुर द्वारा हुआ। उनके मुख्य प्रतिभावान शिष्यों में से प्रथम स्थान नंदलाल बोस का है, दूसरा असित कुमार हलदर का। दोनों एक ही गुरु के शिष्य हैं; किंतु दोनों की कलात्मक प्रतिभा भारतीय चेतना से प्रेरित होते हुए भी जुदा-जुदा रूपों-रंगों में व्यक्त हुई है।

श्री हलदर ने कलकत्ता के एक अत्यंत पुरोगामी परिवार में १८९० में जन्म लिया। कृतित्व की पहली प्रेरणा उन्हें अपने पितामह श्री राखालदास हलदर तथा पिता सुकुमार हलदर से मिली। बचपन में ही वे डाक्टर अवनींद्रनाथ ठाकुर के शिष्य बने। उनके साथ श्री सुरेंद्रनाथ गांगुली और श्री नंदलाल बोस भी कला की शिक्षा ले रहे थे। इन तीनों कलाकारों की शैली में भारतीय कला के नव-जागरण ने विकास पाया। इसीलिए प्रसिद्ध इतिहास-लेखक विसेंट स्मिथ और डाक्टर आनंद कुमारस्वामी के कला ग्रंथों में असित कुमार हलदर की अनेक कलाकृतियों का संकलन मिलता है।

हलदर ने कला के क्षेत्र में कई प्रयोग किये। किसी भी परंपरागत शैली में बंधना उन्हें प्रिय नहीं था। प्रारंभ से ही उन्होंने अपनी काव्य-कल्पना को चित्रों में उतारना शुरू कर दिया था। भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों का चित्रण करना उन्हें विशेष रुचिकर था। बारह वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने 'द्रोणाचार्य द्वारा अर्जुन को धनुर्विद्याभ्यास' का चित्र बनाया।

बाद में भी उन्होंने अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों के कलाचित्र बनाये, जिनमें से कुछ की स्मृति भारतीय चित्रकला के इतिहास में अमर हो गयी है। 'अशोक वन में सीता', 'रामलीला,' 'दमयंती', 'कृष्ण और यशोदा', 'बुद्ध-जीवन के तीस चित्र' आदि सबमें हलदर के भारतीय-संस्कृति-प्रेमी हृदय का प्रतिबिंब मिलता है।

यशोदा-नंदन
[तैलचित्र—सन १९५८]

इन चित्रों में केवल रूप और रंगों का खेल नहीं है, न ही केवल रुचिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेखाओं का अंकन है। इनमें कलाकार के कल्पना-प्रिय कवि-हृदय की भावना का भी चित्रण हुआ है। ये चित्र भारतीय आत्मा को रूप और रंग में उतारते हैं।

कलाकार हलदर ने केवल पौराणिक विषयों के माध्यम से ही अपनी कला-भावना को व्यक्त नहीं किया। उन्होंने ऐसे विविध विषयों को अपनाया, जो व्यापक कल्पना से ही बन सकते थे। उनके ऐसे भावचित्रों में कुछ हैं—सुरेर अग्नि (स्वरज्वाला), रहस्यमयी प्रकृति, मोह-भंग, प्रणाम, बहुमूल्य भेंट, वंदी राजकुमार, आलिंगन, मेघकन्या आदि।

इन चित्रों के अंकन में कलाकार हलदर ने काव्यमयी भावनाओं की ऊंची उड़ान ली है। कई बार तो महाकवि रवींद्रनाथ भी इन चित्रों के सुकुमार सौंदर्य से प्रेरणा लेते थे। विशेषतः इन चित्रों में अंकित ग्राम-सुषुमा से वे इतने प्रभावित थे कि इनसे नवीन प्रेरणा पाने की चर्चा प्रायः किया करते थे।

असित कुमार हलदर की कल्पनाशीलता का कोई अंत नहीं। किसी भी भाव को अनुरूप रेखाओं और रंगों में उतारने की कला में उनकी प्रतिभा विलक्षण रही है। अपनी कला को उन्होंने किसी भी खास स्कूल या शैली के सांचे में बंद नहीं किया। इसीलिए उनकी मौलिकता पर कभी आंच नहीं आयी।

शैली में भी विषयानुरूप परिवर्तन करते रहे हैं। उनका विश्वास है, कला नवीनता के अभाव में निष्प्राण हो जाती है। जैसे जीवन की लय को प्रवहमान रखने के लिए नवीन वातावरण अनिवार्य होता है, वैसे ही कला में गति और प्रवाह रखने के लिए नये प्रयोग अनिवार्य होते हैं।

नवीनता की प्रेरणा वे अपने अंदर से ही पाते हैं। अजंता अथवा पश्चिम के आधुनिक कलाकारों से प्रभावित होकर उन्होंने किसी शैली का अंधानुकरण नहीं किया।

जगाई-मधाई और नित्यानंद

[भित्तिचित्र : लखनऊ राजकीय कला महाविद्यालय
रचना-काल १९२९]

सन १९१४ में भगिनी निवेदिता और आनंद कुमारस्वामी ने 'मिथ्स आफ हिन्दूज एंड बुद्धिस्ट्स' नाम की पुस्तक लिखी। लंदन के एक पत्र ने उसकी समीक्षा करते हुए पुस्तक में प्रकाशित हलदर के चित्रों के विषय में लिखा—"हमारी दृष्टि पुस्तक के अंतर्गत अवनींद्रनाथ ठाकुर, के० वेंकटप्पा, के० एन० मजूमदार और असित कुमार हलदर की कलाकृतियों पर भी गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वरूप
[रचना-काल : १९२९]

ये चित्र कलकत्ता की नवीन चित्र-शैली के प्रतिनिधि हैं। ठाकुर कृत 'बुद्ध-विजय' चित्र असफल नहीं है। किंतु उसकी अपेक्षा हमें श्री हलदर का 'ध्रुव' शीर्षक चित्र सादगी और गहराई के कारण अधिक श्रेष्ठ लगा।"

प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी असित कुमार हलदर चित्रकार ही नहीं. प्रतिभावान मूर्तिशिल्पी भी हैं। उन्होंने रविबाबू के चित्र पर से उनकी एक प्रतिमा बनायी। अपनी ही मूर्ति की सराहना गुरुदेव ने इन शब्दों में की थी—"यह आपकी ही आत्मा का स्वतंत्र विलास है कि आपने अपनी चेतना से मिट्टी में प्राण डाल दिये, अपनी श्रद्धाज्वाला से मूर्ति की अंधेरी रेखाओं में ज्वलंत प्रकाश भर दिया। आपकी आंखों में जीवन का जादू-भरा प्रकाश है। इसलिए आपका स्वप्न ऐसी कलाकृति में साकार हो उठा, जिसमें रूप तो मेरा है, आनंद आपका है।"

रवींद्र ने हलदर को एक पत्र में लिखा था—"आप केवल चित्रकार नहीं, कवि भी हैं। इसीलिए आपकी तूलिका से दोनों रसों का प्रवाह होता है। और जब कवि को चित्र की आवश्यकता होती है, तो उसे आपकी शरण जाना पड़ता है।"

हलदर वस्तुतः कवि और गीतकार हैं। उन्होंने कई एकांकी नाटक लिखे हैं तथा कला और दर्शन पर विवेचनात्मक निबंधों का सृजन भी किया है। वे संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं। मेघदूत और ऋतुसंहार का बंगला में अनुवाद करके अपनी विद्वत्ता से सबको चकित कर चुके हैं। वे संस्कृत में सुंदर श्लोक भी लिखा करते हैं।

शांति-निकेतन के प्रसिद्ध कला-भवन का विकास श्री हलदर के पथ-प्रदर्शन में ही हुआ। कला-शिक्षण के कार्य में उन्होंने सदा गहरी दिलचस्पी ली है। जयपुर और लखनऊ की कलाशालाओं के आप वर्षों प्रिंसिपल रहे। इलाहाबाद के म्यूजियम में हलदर-कक्ष की प्रतिष्ठा करके उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें सम्मानित किया है।

इस बुजुर्ग भारतीय कलाकार के प्रशंसक विदेशों में भी हैं। विदेशों में अनेक बार उनकी कलाकृतियों का प्रदर्शन हुआ है। कला-समीक्षकों ने उनकी शैली और उनकी भावभूमि की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

आचार्य अवनींद्रनाथ ठाकुर की शैली पर चीन और ईरान की कलाकृतियों का प्रभाव था और विषय-वस्तु के चुनाव में उनका झुकाव मुगल काल की ओर था। नंदलाल बोस क्लासिकी प्रसंगों के चित्रण में विशेष प्रवीणता दिखाते हैं। मगर असित कुमार हलदर ने अपने चित्रों के लिए किसी विशेष काल का पक्षपात नहीं किया है। उनकी प्रतिभा ने सभी दिशाओं में ऊंची उड़ान भरी है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान का मैल मुसीबत बन सकता है

रामप्रकाश

तीस वर्ष की उम्र के एक कारीगर के सामने एक कठिनाई आ खड़ी हुई। वह एक बड़े कारखाने में सांचे बनाने का काम करता था। हाथ में सफाई थी, काम खासा अच्छा होता था उसका। पर अचानक उसे कम सुनाई देने लगा। फोरमैन उससे कुछ कहता और वह बना लाता कुछ और। नतीजा यह हुआ कि उसके हाथों कई महत्वपूर्ण काम खराब हो गये।

आखिर पत्नी के कहने पर वह कारखाने के डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने उसके कानों को ध्यान से देखा और बताया कि उसे श्रवण-यंत्र लगाने की कोई जरूरत नहीं है। उसके कान में बहुत-सा मैल भरा हुआ है और मैल की ठेंठी सूखकर कड़ी हो गयी है, जिससे श्रवण-मार्ग में डट्टे-से लग गये हैं।

डाक्टर ने पहले तो कानों में नमक के पानी की पिचकारी लगायी। उसके बाद सावधानी के साथ एक औजार द्वारा कान से ये डट्टे बाहर निकाल दिये। रोगी की श्रवण-शक्ति वापस आ गयी।

कान में बहुत-सा मैल जम जाने के ऐसे मामले बहुत होते हैं। पर आम लोग इस ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। हमारे देश में इसके आंकड़े नहीं रखे जाते। लेकिन अमरीका में कान के डाक्टरों को ऐसे २० लाख रोगी प्रतिवर्ष देखने पड़ते हैं। वहां एक सर्वेक्षण भी किया गया था। १,००० स्वस्थ व्यक्तियों का निरीक्षण करने पर पता चला कि २२ से ३० प्रतिशत लोगों के कानों के परदे मैल से एकदम ढंक गये होते हैं।

दरअसल बहुत कम लोग जानते हैं कि कान में मैल जमा होकर मुसीबत खड़ी कर सकता है। इससे न सिर्फ बहरापन, बल्कि खुजली, दर्द, पीब भरना, सिर में चक्कर तथा ऐसे ही और कई कम-ज्यादा खतरनाक रोग पैदा हो सकते हैं।

कान में मैल इकट्ठा होने के अनेक लक्षण हैं। बहुधा कान बजने लगते हैं। रोगी को अपनी ही आवाज बेहद जोर की, टूटी-फूटी-सी या भिनभिनाती-सी सुनाई पड़ती है। यह बड़ी ही कष्टकर चीज है।

यदि श्रवण-मार्ग पूरा रुक गया हो, या मैल का डट्टा कान के परदे पर जमा हुआ हो, तो सुनने की शक्ति को बहुत हानि पहुंच सकती है। कान में जमी हुई मैल की ठेंठी बहरेपन का एक आम कारण है। नहाने या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कान धोने के बाद का अस्थायी बहरापन मैल जमा होने का संकेत है। नमी पाकर मैल फूलता है और उससे श्रवण-मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

कान की भीतरी त्वचा पर चिपका हुआ मैल जब जमकर कड़ा होने लगता है, तो कान में तेज खुजली मचती है। इस पर लोग अक्सर उंगली या कोई नुकीली वस्तु कान में डालकर खुजलाते हैं। इससे भीतर की चमड़ी पर खरोंचें पड़ जाती हैं और खुजली और बढ़ जाती है। प्रायः घाव होकर उनमें मवाद भरने लगती है।

पुराना जमा हुआ मैल कीटाणुओं और फफूंद के फलने-फूलने के लिए बड़ा आराम-देह अड्डा होता है।

मैल के जमाव के कारण अचानक सिर चकराने या मतली की सख्त शिकायत भी हो सकती है। हमारे शारीरिक संतुलन की चेतना एक नाजुक यंत्र पर निर्भर है और यह यंत्र हमारे दोनों कानों के भीतर के चक्करदार रंध्रों में अवस्थित है। तापमान के जरा-से परिवर्तन का भी इस यंत्र को पता लग जाता है।

एक कान में मैल जम जाये, तो उस कान का भीतरी यंत्र तापमान के हेरफेर की ठीक सूचना नहीं दे पाता। लेकिन दूसरा कान जैसा तापमान होता है, वैसी सूचना देता है। इस प्रकार अलग-अलग सूचनाएं गड़बड़ी पैदा करती हैं। इससे बहुधा कर्णघुमरी रोग हो जाता है, जिसमें ऐसा लगता है कि सब चीजें तेजी से चक्कर काट रही हैं।

चिकित्सा-साहित्य में ऐसे बहुत-से उदाहरण मौजूद हैं कि अच्छे-अच्छे तैराक कान में मैल जम जाने के कारण तैरते समय संतुलन गंवा बैठे और घबराहट में मौत के द्वार पर पहुंच गये।

कान में जमे हुए डट्टे को चिमटी या पिन जैसे तेज, नुकीले औजार से निकालना बेवकूफी है, खतरे को खुद बुलाना है। एक बार एक आदमी ने कान खुजाने के लिए सीधी पिन काम में ली। दुर्भाग्य से पिन कान के परदे में घुस गयी।

कान के भीतर जब थोड़ा-सा ही मैल जमा हुआ हो, तो उसे सामान्य विधि से साफ किया जा सकता है। कान के भीतरी और बाहरी भाग को गुनगुने पानी और जलन न पैदा करनेवाले साबुन से धो देना काफी होता है।

लेकिन सख्त जमे हुए मैल को छुड़ाने के लिए यह विधि खतरनाक हो सकती है। उसे छुड़ाना हमारा-आपका काम नहीं है। उसके लिए डाक्टर के पास जाना चाहिये। असाधारण अवस्थाओं में शल्यक्रिया भी आवश्यक हो सकती है।

★

लोग चिंताओं का बोझ लिये सिनेमा में आते हैं, और मैं उनकी चिंताएं भुला देता हूं। मैं नहीं समझता कि कोई भी राजनीतिज्ञ ऐसा करके दिखा सकता है।

—कैरी ग्रांट

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संजीवनी और नश्तर :

सत्रह साल की कच्ची उम्र में मोर्चे पर उस सैनिक ने कलम-तराश से अपने प्रिय मित्र का सीना चीरकर गोली निकाली और मित्र को मौत के मुंह से उबार लिया। उसी क्षण संकल्प किया—अब से मैं लोगों के प्राण लूंगा नहीं, बचाऊंगा... सर्जन बनकर। मगर सर्जन बनने के लिए दस वर्ष तक उसे कितना संघर्ष करना पड़ा, कितने कड़वे-मीठे घूंट पीने पड़े !

जार्ज सावा का आत्मवृत्त

★

टोब्या :

एक तरुणी के प्रेम और उसके पिता व भाई की दोस्ती ने वहशियों के सम्राट् का हृदय जीत लिया और एक असंस्कृत जाति को सभ्यता का ज्योतिदीप दिया।

इथियोपियाई उपन्यास

पुस्तक संक्षेप विशेषांक अगस्त १९६५

मरीचिकाओं का सागर

पर्ल बक की एक मर्मस्पर्शी कहानी

और

रोचक स्थायी स्तंभ

बाहुबली :

कन्नड के प्रथम महा-कवि पंप (दसवीं सदी) के महाकाव्य 'आदि पुराण' में से जैनों के आराध्य श्री गोम्मटेश्वर एवं उनके अग्रज व भारत के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट् भरत का आख्यान।

★

वनदेवता के पुत्र :

शहरों में रहनेवालों के लिए शेर, हाथी, हिरन ये सब केवल जातिवाचक संज्ञाएं हैं। किंतु जो जंगल की आत्मा को पहचानते हैं, उनके लिए वन का प्रत्येक जीव एक व्यक्ति है, जिसकी अपनी जीवन-कहानी है। उस कहानी में वन के एक-एक पेड़-पौधे का स्थान है और वनदेवताओं की गहरी दिलचस्पी है। अफ्रीका के पशुजीवन और लोकविश्वासों से गुंथी एक कवित्वपूर्ण कहानी, जिसके लेखक हैं—

एच० आर० फेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब नेहरूजी ने दरी बिछायी

रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर

बहुत पहले की बात है। नियंत्रण करने में न आये ऐसी भीड़ और सांस उखड़ जाये ऐसा वेग, तब पंडितजी की यात्राओं के लक्षण नहीं बने थे। कर्नाटक का पहला दौरा उन्होंने शायद १९२७ में किया। तब वे कांग्रेस के महामंत्री और भारत के संविधान की रूपरेखा बनाने के लिए स्थापित सर्वदलीय समिति के मंत्री थे। मोतीलाल नेहरू समिति के अध्यक्ष थे और इसकी रिपोर्ट 'नेहरू-रिपोर्ट' कहलायी। १९२८ में होनेवाले सर्वदलीय सम्मेलन में रिपोर्ट पर विचार किया जा सके, इसके लिए उसे पर्याप्त पहले ही प्रकाशित किया गया था।

उन दिनों मैं कर्नाटक प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का मंत्री था। उसका केंद्रीय कार्यालय धारवाड में था। मैंने घोषणा करायी कि कपास के एक गोदाम में सार्वजनिक सभा होगी और पंडितजी भाषण देंगे। हैंडबिल और अखबारों द्वारा सूचना सबको दी जा चुकी थी। पंडितजी को उसी दिन शाम को आगे रवाना हो जाना था; इसलिए सभा ५ बजे बुलायी गयी थी।

सभा के निश्चित समय से थोड़ा पहले मैं सब तैयारी पूरी हो गयी है या नहीं, यह देखने आया और सब कुछ अस्तव्यस्त पड़ा देखकर एकदम निराश हो गया। सभा-स्थान को बुहारकर पानी का छिड़काव भर किया गया था, ताकि धूल न उड़े। कुछ कनात लायी गयी थी और उसे बिछाने की तैयारी हो रही थी। पास की किसी दुकान से एक पुरानी मेज और दो कुर्सियां उधार लायी गयी थीं।

और उन दिनों यह सब अजीब भी नहीं लगता था। मैदान में सभा करना आसान तो था; लेकिन अपराह्न की पांच बजे की धूप में ऐसा करना संभव नहीं था। श्रोता भी इतने नहीं जुटे थे कि देखकर उत्साह पैदा

उन दिनों नेहरू ऐसे सभाशूर नहीं थे
[चित्र : बीरेन दे; इलस्ट्रेटेड वीकली से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो । एक-एक, दो-दो करके लोग आ रहे थे । किंतु मेरी चिंता का कारण कुछ और ही था । मैं यह सोचकर घबरा रहा था कि अगर अचानक पंडितजी आ गये, तो क्या होगा?

और वह क्षण भी दूर नहीं था । आखिर पंडितजी आ ही पहुंचे । हमारी तैयारी अभी पूरी नहीं हुई थी । उन्होंने हालत देखी और जो दो-तीन कनातें अभी बिछानी बाकी थीं, उन्हें बिछाने में हाथ बंटाने लगे । उनकी इस सरलता से हम लोग, जो आराम से खड़े-खड़े दूसरों को कनात बिछाते देख रहे थे, लज्जित से हो गये ।

कुछ ही मिनिटों में सारी व्यवस्था पूरी हो गयी और हम मेज के पास पहुंचे । लगभग दो सौ श्रोता आये थे । इलाहाबाद में होनेवाले सर्वदलीय सम्मेलन में निरूपित होनेवाले स्वराज्य-संविधान के संबंध में उन्होंने भाषण दिया । उन्होंने समझाया कि भारत का संविधान भारतीयों का ही बनाया हुआ हो, यह क्यों जरूरी है ।

['कस्तूरी' से साभार]

★

सब विधानों से ऊपर

ओरछेश श्री वीरसिंह देवज्यू (द्वितीय) को गद्दी पर बैठे अभी एक वर्ष हुआ था । उनके हुजूर-दरबार में जतारा की एक विधवा ने एक आवेदन-पत्र भेजा । उसका उत्तर उसे मिला—"जाब्ते की कार्रवाई की जाये ।" बात यह थी कि विधवा के मकान में तहसील का दफ्तर था ; किंतु राज्य ने कितने ही वर्षों से किराया नहीं दिया था । मियाद निकल जाने के कारण वह निराश हो चुकी थी । मगर दरबार से यह उत्तर पाकर विधवा को कुछ आशा बंधी और उसने राज्य पर दावा कर दिया । मगर ऊपर बताये कानूनी कारण से वह बराबर हारती चली गयी । यहां तक कि उन दिनों के दीवान रावराजा श्यामबिहारी मिश्र ने भी उसे पराजित घोषित कर दिया ।

विधवा ने ओरछेश को पुनः आवेदन-पत्र भेजकर अपनी दीन-दशा की याद दिलायी । फलस्वरूप ओरछेश ने पूरी मिसल मंगायी और पढ़कर आवेदन-पत्र पर इस आशय का आदेश लिखा :

"मानव-निर्मित विधान के अनुसार विधवा का कोई अधिकार नहीं कि वह राज्य से आर्थिक सहायता प्राप्त कर सके । किंतु सब विधानों से ऊपर भी एक विधान होता है, जिसे 'ईश्वरीय विधान' कहा जाता है । उसके अनुसार यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि विधवा की जायदाद राज्यने ले ली है, जो अनुचित है । राज्य के कोष से प्रतिमास...रुपये विधवा को मिलते रहने की आज्ञा दी जाती है ।"

आज भी जब श्री वीरसिंह देवज्यू (द्वितीय) की चर्चा चलती है, ओरछा के पुराने लोग उनके इस न्याय को याद करते हैं ।

—गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर तो इनका है!

डा० एम० एस० वंत

कश्मीर प्राकृतिक सौंदर्य की तरह ही पौराणिक कथाओं का भी खजाना है। वहां कोई पहाड़, नदी या झरना नहीं, जिसके साथ कोई-न-कोई पुराण न जुड़ा हो। वहां के उत्तुंग पर्वतों पर भूत-प्रेत सुंदर स्त्रियों का वेश बनाकर रहते हैं। ये मोहिनियां उधर से गुजरनेवाले यात्रियों को मधुर गीतों से लुभाती हैं और फिर उन पर बर्फ की चट्टानें ढहाकर उनके प्राण हर लेती हैं। जोगिला पर आज भी इन मायाविनियों को प्रसन्न रखने के लिए भेंट चढ़ायी जाती है।

नदियों के साथ भी दंतकथाएं गुंथी हुई हैं। ऐसी भी कई विशाल नदियां हैं, जो पहाड़ों के पेट में ही बहती रहती हैं। उनकी गूंज-गरज तो सुनाई देती है, पर वे स्वयं कभी दिखाई नहीं देतीं!

कहते हैं, युगों पहले पिंगलीश इलाके को लिद्दर नदी से आनेवाली एक गुप्त-गामिनी धारा जमीन के भीतर से सींचा करती थी। लेकिन अब वह सूख गयी है; क्योंकि पिंगलीश के लोगों ने नदी-देवता को चढ़ावा चढ़ाने में लापरवाही दिखायी।

पहाड़ों की अधित्यकाओं पर विकराल सर्पदैत्य विचरते हैं, जिनकी फुंफकार से आग की ज्वाला निकला करती है। कोंजा-नाग में भीमाकार राक्षस रहते हैं और बेखबर मुसाफिरों को पकड़कर झील में डुबा देते हैं!

कश्मीर की घाटी परियों और गंधर्व-कन्याओं की मनपसंद विहार-भूमि है। आज भी यहां ऐसे घरों की कोई कमी नहीं, जिनमें भूत-प्रेतों का निवास है। वैश-नाग आदि शीतल-स्वच्छ जल के सोते नाग देवताओं के घर हैं। प्राचीन काल में इनकी बड़ी पूजा होती थी।

यूनान की तरह कश्मीर में भी हर पौधे और प्राणी के साथ कोई-न-कोई यक्ष, गंधर्व या देवता जुड़ा हुआ है। किंतु यूनानियों की भांति कश्मीरी कलाकारों ने इनके आख्यान मूर्तिबद्ध नहीं किये हैं। फिर भी काव्यतत्व में ये आख्यान यूनानी पुराण-कथाओं से किसी प्रकार कम नहीं है।

कश्मीर के पौराणिक उपाख्यानों और दंतकथाओं का सबसे पुराना संकलन है 'नीलमत-पुराण'। कवि कल्हण ने इस पुराण से काफी सामग्री ली है। दूसरा प्रमुख ग्रंथ है कवि जयद्रथ का 'हरचरितचिंतामणि'। इनके अलावा अनेक 'माहात्म्य ग्रंथ' भी हैं। प्रोफेसर बुहलर पहले विद्वान थे, जिन्होंने प्राचीन कश्मीर की भौगोलिक जानकारी के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'माहात्म्यों' की उपयोगिता को पहचाना।

कल्हण की 'राजतरंगिणी', अबुल फजल की 'आईने-अकबरी' और प्रो० बुहलर की 'टूर इन सर्च आफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स' में भी कश्मीर की पुराण-कथाओं तथा लोकगाथाओं का सुंदर वर्णन है। कई कथाएं यूनानी कथाओं के साथ मेल खाती हैं। उदाहरण के लिए दामोदर की कथा को लीजिये। दामोदर शापग्रस्त होकर सर्प बन जाता है। उसका शाप तभी दूर हो सकता है, जब वह एक ही दिन में पूरी रामायण सुन ले। इसी तरह शाप से अंधा हुआ यूनानी कवि स्टैसीकोरस 'मिस्री हेलन' की पौराणिक कथा का सृजन कर शापमुक्त हो जाता है।

कश्मीर की घाटी के चश्मों और सोतों से संबद्ध पौराणिक आख्यानों और लोकगाथाओं का अध्ययन शोधकर्ताओं के लिए अच्छा विषय होगा। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि कश्मीर दूसरे देशों से अधिक शक्तिशाली इसलिए है कि एक नाग उसकी रक्षा करता है।

सबसे महत्वपूर्ण लोकगाथा वह है, जिसके अनुसार सारा कश्मीर आरंभ में एक झील था। झील का नाम था सतीसर। सती (दुर्गा) का यह सरोवर कल्प के आरंभ से ही विद्यमान था। सातवें मनु के शासन-काल में इस सरोवर में रहनेवाले जलोद्भव नामक राक्षस ने आस-पास के देशों को सताना शुरू किया।

नागों के पिता कश्यप मुनि जब उत्तर भारत के तीर्थों की यात्रा कर रहे थे, उन्होंने अपने पुत्र नील से, जो कश्मीरी नागों का नरेश था, जलोद्भव के अत्याचारों की कथा सुनी। मुनि ने वचन दिया कि वे जलोद्भव को अवश्य दंड देंगे और इसके लिए वे ब्रह्मा के पास पहुंचे। ब्रह्मा ने उनकी प्रार्थना मानकर समस्त देवताओं को आदेश दिया और वे क्रमसर (कोनसर) के ऊपर नौबंधतीर्थ की चोटियों पर मोर्चाबंदी करके बैठ गये।

परंतु जलोद्भव असुर जल में अजेय था और सरोवर के बाहर वह आता न था। अतः विष्णु ने अपने भाई बलभद्र से कहा कि वे सरोवर का पानी बहाकर बाहर

वैराग्य और उपादान

असार संसार से विरक्त एक व्यक्ति पारसी संत आजर कैवान के पास आया और बोला—"हजरत, मैंने कसम खायी है कि फानी दुनिया के सारे ऐशो-इशरत छोड़ दूंगा, इस फंदे को तोड़ दूंगा।" संत ने गंभीर स्वर में कहा—"तुमने ठीक सोचा है।" वही व्यक्ति कुछ दिन बाद संत के पास आया और कहने लगा—"मैं अभी गुदड़ी और फकीरी पोशाक बनवा रहा हूं। सारे सामान तैयार होते ही मैं फकीर हो जाऊंगा।" संत जोर से हंस पड़े—"भाई, सरोसामान छोड़ने के लिए ही कोई दरवेश होता है, और तू उसी को जुटाने के लिए परेशान है। अपनी दुनिया में लौट जा। तू अभी फकीरी के काबिल नहीं है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकाल दें । वलभद्र ने इसके लिए अपने महास्त्र हल से पहाड़ों को चीर डाला । सरोवर के सूख जाने पर विष्णु ने जलोद्भव पर आक्रमण किया । बड़ी घमासान लड़ाई हुई । अंत में असुर मारा गया ।

सरोवर के सूखने से जो भूमि प्राप्त हुई, कश्यप मुनि उस पर आ बसे । पर कठोर शीत के कारण साल के छः महीने वहां रहना कठिन था । चार युग ऐसे ही बीत गये । अंत में चंद्रदेव ब्राह्मण ने यज्ञ-अनुष्ठान करके इस भूमि को बारहों महीने रहने योग्य बना दिया । ह्वेन-सांग ने भी इस लोककथा का वर्णन किया है; पर उसमें बौद्ध प्रभाव अधिक है ।

शायद इसी लोककथा ने यूरोपीय यात्रियों का ध्यान इस तथ्य की ओर खींचा कि सारा ही कश्मीर या उसका कुछ अंश कुछ समय पूर्व जलमग्न था ।

इतनी ही महत्वपूर्ण कथा है वितस्ता (जेहलम नदी) की । यह नीलमत पुराण में मिलती है; बाद में 'हरचरितचिंतामणि' में भी उद्धृत हुई है । इसके अनुसार वितस्ता पार्वती का दूसरा रूप है । कश्मीर की उत्पत्ति के पश्चात कश्यपजी की प्रार्थना पर शिव ने पार्वती से कहा कि वे इस भूमि में नदी-रूप में अवतार लें और पिशाचों के संपर्क के कारण अपवित्र हुए यहां के निवासियों को पवित्र करें ।

पार्वतीजी नदी बन गयीं और शिवजी से बोलीं कि कोई ऐसा स्थान बतायें, जहां से वे धरती पर फूट निकलें । इस पर शिवजी ने नीलनाग के निवास-स्थान के निकट पृथ्वी पर त्रिशूल का प्रहार किया ।

त्रिशूल से धरती पर जो दरार बनी, वह एक वितस्ति (बालिश्त) चौड़ी थी । इसीलिए उसमें से जो धारा निकली, उसका नाम वितस्ता पड़ा । यही वितस्ता बिगड़ते-बिगड़ते 'व्यथ' हो गयी । उसी को कश्मीर के बाहर जेहलम कहा जाता है ।

कथा यहीं समाप्त नहीं होती । पापियों के स्पर्श के डर से वितस्ता-रूपी पार्वतीजी अदृश्य हो जाती हैं और कश्यपजी की प्रार्थना पर पंचहस्त के 'नाग' से प्रकट होती हैं । इस क्षेत्र में आज भी पंजथ नामक गांव है ।

पापियों के स्पर्श से बचने को पार्वतीजी एक बार फिर अदृश्य हो जाती हैं और तीसरी बार प्रकट होती हैं विथ वुतूर के छोटे-से चश्मे से । यह छोटा-सा गांव वेरनाग से लगभग एक मील उत्तर-पश्चिम है ।

वोलूर झील के साथ भी कुछ एक गाथाएं जुड़ी हुई हैं । यह सरोवर महापद्म नाग का निवास-स्थान कैसे बना, इसका वर्णन नीलमत पुराण में मिलता है ।

आरंभ में इस पर सदनगुल का अधिकार था । यह दुष्ट नाग उस प्रदेश की महिलाओं को उड़ा ले जाता था । नागों के राजा नील ने सदनगुल को देशनिकाला दे दिया ।

उसके जाने पर जो सूखी धरती निकली, वहां राजा विश्वगस्य ने चंद्रपुर नगर बसाया । मुनि दुर्वासा एक बार इस नगर में आये और समुचित आदर-सत्कार न पाकर शाप दे बैठे कि चंद्रपुर पानी में डूबकर नष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जायेगा ।

बाद में जब महापद्म नाग ने कश्मीर में शरण ली और नील से अपने रहने के लिए उपयुक्त स्थान की प्रार्थना की, तो नील ने उसे चंद्रपुर में रहने की अनुमति दी ।

महापद्म नाग बूढ़े ब्राह्मण का वेश धरकर राजा विश्वगस्य के पास पहुंचा और उनसे चंद्रपुर में सपरिवार बसने की अनुमति मांगी । जब राजा ने स्वीकृति दे दी, तो महापद्म ने छद्मवेश हटाकर अपना असली स्वरूप दिखाया और राजा को बताया कि नगर अब डूबने ही वाला है । इसके बाद महापद्म नाग ने नगर को सरोवर में बदल दिया ।

कल्हण ने एक और कहानी भी विस्तार से दी है, जो राजा जयापीड के राज्यकाल से संबंधित है ।

महापद्म नाग को एक द्राविड जादूगर ने धमकी दी कि वह उसे सुखा देगा । महापद्म ने स्वप्न में प्रकट होकर राजा जयापीड से रक्षा की प्रार्थना की और बदले में सोने की खान का पता बताने का वादा किया।

जयापीड राजी तो हो गया; लेकिन द्राविड जादूगर का इंद्रजाल देखने के कुतूहल में पड़कर उसने कुछ किया नहीं । इंद्रजाल के जोर से सरोवर सूखने लगा । महापद्म और उसके प्रजाजन, जिनके धड़ सांपों के और सिर मनुष्यों के थे, बिलबिलाते निकल आये । तब जयापीड ने हस्तक्षेप किया और सरोवर को सूखने से बचाया।

किंतु महापद्म नाग इस खिलवाड़ से बुरी तरह नाराज हो गया और उसने जयापीड को सोने के बजाय तांबे की खान दिखा दी । ['आकाशवाणी' से साभार]

★

अप्रैल १९०८ की घटना है । पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय दुष्काल-पीड़ितों की सहायता के लिए अपने कुछ स्वयंसेवकों के साथ प्रयाग आये और सदा की भांति पंडित बालकृष्ण भट्ट से मिलने उनके अहियापुर स्थित निवास-स्थान पर गये । दोनों कर्मठ नेता बातचीत करने में व्यस्त थे । किसी गंभीर विषय की चर्चा चल रही थी कि तभी भट्टजी की मैना, जो पास ही पिंजरे में थी, बोल पड़ी—" वंदे मातरम् . . . स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है . . . लाला लाजपतराय की जय . . . लोकमान्य तिलक की जय ! " आदि-आदि ।

लालाजी मैना के ये बोल सुनकर बड़े प्रभावित हुए और भट्टजी से बोले—"पंडितजी ! आपकी मैना इस तरह खुले आम सबको राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाती है, कहीं गिरफ्तार न कर ली जाये।" भट्टजी ने अपनी घरेलू भाषा के शब्दों में ही कहा—" का करी भैया ! मुनिया (भट्टजी के तृतीय पुत्र श्री लक्ष्मीकांत भट्ट) और महादेव (भट्टजी के द्वितीय पुत्र) को तोता-मैना पाले की बड़ी सौख है, वही ई सब झगड़ा वाली बात पढ़ाये हैं । निबौहरिया पढ़ा करत है ।"

लाजपतरायजी मैना की प्रशंसा करने लगे, बोले—"पंडितजी ! जिस घर के पशु-पक्षी इतने क्रांतिकारी है, वहां के रहनेवाले और भी भयंकर होंगे ।" —मधुकर भट्ट

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ के प्रदीप

जे० कृष्णमूर्ति

अनुशासित मन स्वतंत्र मन नहीं है; और न ही कामनाओं को कुचलनेवाला मन कभी स्वतंत्र हो सकता है। कामनाओं की प्रकृति और प्रक्रिया को पूरी तरह समझ लेने पर ही मन स्वतंत्र हो सकता है। अनुशासन मन की गतिविधियों को किसी खास विचारधारा या विश्वास के चौखटे में सीमित कर देता है—है न? ऐसे मन को समझदार बनने की छूट मिल ही नहीं पाती।

अनुशासन हमें सत्ता और शास्त्र-प्रमाण के आगे झुकाता है। वह हमें यह क्षमता तो देता है कि हम काम-काजी दक्षता का ही तकाजा करनेवाले इस समाज के चौखटे में अपना काज-काज चला सकें; किंतु वह हममें बुद्धिमत्ता नहीं जगाता, जिसकी अपनी ही क्षमताएं होती हैं।

वह मन, जिसने केवल स्मरण-शक्ति पर अवलंबित क्षमताओं को विकसित किया है, आजकल के बिजली के कंप्यूटर की भांति है, जो काम तो गजब की योग्यता और शुद्धता से करता है; मगर रहता है मशीन ही।

सत्ता और शास्त्र-प्रमाण हमें किसी एक खास ढर्रे पर सोचने के लिए फुसलाते हैं। किंतु किसी के निर्देशन में, किसी खास ढर्रे पर, किसी बने-बनाये निर्णय पर पहुंचने के लिए सोचना, वस्तुतः सोचना नहीं है। वह तो खाती-पीती मशीन के जैसे काम करना है। उससे विचारशून्य असंतोष जन्म लेता है, निराशा व दूसरे दुःख उपजते हैं। ['लाइफ एहेड' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकिरण
कृषि के लिए आशा-किरण

लेखक नयी दिल्ली की भारतीय कृषि अनुसंधानशाला में वनस्पति-विभाग के अध्यक्ष हैं और रेडियो-विकिरण द्वारा फसलों की नयी किस्मों का विकास करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

डा० एम० एस० स्वामिनाथन

वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं है, जब परमाणु-ऊर्जा से प्राप्त शक्ति का उपयोग कृषि तथा ग्राम-विकास का एक प्रमुख साधन बन जायेगा; क्योंकि आज के कृषि-अनुसंधान को परमाणु-ऊर्जा ने एक नयी दिशा दी है। अनेक रेडियो-समस्थानिकों (रेडियो-आइसोटोप) द्वारा प्राप्त विकिरण की सहायता से कृषि-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में बड़ी तरक्की की जा रही है। ये समस्थानिक उन परमाणु-भट्ठियों में तैयार किये जाते हैं, जैसी कि बंबई में ट्रांबे पर है।

कार्बन, फास्फोरस और गंधक आदि तत्वों के रेडियो-समस्थानिक पौधों के भीतर चलनेवाली रासायनिक क्रियाओं की जांच-पड़ताल के काम में लाये जा रहे हैं। पौधों की ये अंदरूनी क्रियाएं ही हमारे लिए भोज्य पदार्थों का निर्माण करती हैं। ये ही गेहूं में दाना डालती हैं, आम पर फल लगाती हैं और शकरकंद की जड़ को मोटा और खाने योग्य बनाती हैं।

जो पौधे हमें भोजन देते हैं, उनके पोषण का प्रबंध तो हमें ही करना पड़ेगा। मिट्टी में फसल के लिए आवश्यक सब पोषक पदार्थ हैं या नहीं, इसकी जानकारी भी रेडियो-समस्थानिकों की सहायता से प्राप्त की जाती है। कितनी गहराई पर खाद देनी चाहिये और किस पौधे को किस समय रोपना चाहिये, ये बातें भी समस्थानिकों की सहायता से जानी जा सकती हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधानशाला (आई० ए०आर०आई०) द्वारा की गयी खोजों से पता चला है कि भारत की जिस भूमि को हम शस्य-श्यामला कहते हैं, उसकी ५० प्रतिशत मिट्टियों में फास्फोरस की कमी है। इसलिए यदि नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का पूरा-पूरा फायदा उठाना है, तो हमें फास्फोरसयुक्त खादें भी इस्तेमाल करनी पड़ेंगी।

खेत में कितनी गहराई पर कौन-सी खाद लगायी जाये, इसके नियम गेहूं और चने के लिए ही नहीं, बल्कि गेहूं की विभिन्न किस्मों के लिए भी अलग-अलग हैं। धान की कुछ किस्में मिट्टी की ऊपरी सतह पर परोसी गयी खाद को पसंद करती हैं, जबकि गेहूं को दो इंच गहराई पर रखा हुआ उर्वरक अधिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेरणा और संतोष

वह कौन-सी चीज है, जो वैज्ञानिक शोध-कर्ता को प्रेरणा देती है ?...निश्चय ही मानवीय ज्ञान के मानचित्र की सूनी-सफेद जगहें उसे आकृष्ट करती होंगी, जैसे अफ्रीका के नक्शे की सूनी-सफेद जगहों ने लिविंग्स्टन को आकृष्ट किया था। लेकिन विज्ञान में तो सही समस्या उठाना और सही सवाल पूछना ही मानो आधा मैदान सर कर लेना है। और इसके अलावा, सृजनशील वैज्ञानिक को किसी नयी चीज का सृजन करने में संतोष भी मिलता है, चाहे वह नयी चीज कितनी ही छोटी और कितनी ही मामूली क्यों न हो। —अल्बर्ट सेंट-ज्योर्जी

रुचिकर है। पौधों की भी खान-पान की अपनी आदतें होती हैं, जिनकी परख समस्थानिकों की सहायता से की जाती है।

खान-पान का स्वास्थ्य से निकट संबंध है। रोगी पौधों की बीमारी का निदान करने और उनके इलाज में भी समस्थानिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

नयी-नयी किस्में:

परमाणु-शक्ति से आदमी को यह खतरा रहा है कि भावी पीढ़ियां लंगड़ी-लूली या रोगी पैदा होंगी। लेकिन कृषि-विज्ञान ने इस खतरे का भी सदुपयोग कर लिया है। रेडियो - समस्थानिकों से निकलनेवाली रेडियो - किरणें कोशिकाओं के आर-पार होती हुई भीतर तक पहुंच जाती हैं और वे 'जीनों' को, जोकि माता-पिता के गुणों को संतान में लाती हैं, बदलकर रख देती हैं। अर्थात् विकिरण द्वारा जीवों के आनुवंशिक तत्वों में परिवर्तन किये जा सकते हैं।

आज से तीन दशक से भी पहले अमरीकी आनुवंशिकीविज्ञ प्रो० ए० जे० मुलर ने इन परिवर्तनों की खोज की थी, और इन्हें उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) नाम दिया था। पौधों में इन परिवर्तनों को खतरनाक मोड़ लेने से रोका जा सकता है और फसलों की अधिक उपजवाली, रोग और कीटाणु को मार भगानेवाली सशक्त तथा पोषक किस्में पैदा की जा सकती हैं।

फसलों की नयी किस्में पैदा करने में कुदरत को हजारों साल लगे हैं; जबकि आज के विज्ञान ने विकास की धारा को आनन-फानन में मोड़ दिया है।

गामा-गार्डन :

कोबाल्ट धातु के रेडियो-समस्थानिक कोबाल्ट-६० से निकलनेवाली गामा-किरणों का २०० क्यूरी की शक्तिवाला एक यंत्र भारतीय कृषि अनुसंधानशाला में 'गामा-गार्डन' के नाम से स्थापित किया गया है। इस यंत्र की सहायता से अनेक फसलों की बढ़िया किस्में पैदा की जा चुकी हैं।

गेहूं की एन० पी० ८३६ किस्म आजकल बिहार राज्य में पहले से १० गुनी उपज दे रही है। एक सीकुरहीन किस्म को परमाणु-विकिरण से प्रभावित करके यह सीकुरदार किस्म पैदा की गयी है। 'जैसिड' नाम के कीटाणु कपास को बहुत नुक्सान पहुंचाते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकिरण द्वारा कपास की घने बाल और लंबे फूलवाली एक किस्म पैदा की गयी है, जो 'जैसिड' कीटों से अपना बचाव कर लेती है। बिना दाग-धब्बोंवाले और अधिक उपजवाले लाल टमाटर की भी एक किस्म विकिरण द्वारा पैदा की गयी है।

गेहूं, जौ, तंबाकू, सरसों और तिल की बहुत-सी उपयोगी उत्परिवर्तनों (म्यूटेशन) वाली किस्में छांटी गयी हैं। ट्रांबे के परमाणु-ऊर्जा संस्थान में धान की अधिक उपजवाली किस्म भी पैदा की गयी है।

संपूर्ण भारत में फसलों की नवीन किस्में पैदा करने में लगे हुए शोधकर्त्ताओं के लिए 'गामा-गार्डन' में विकिरण देकर हजारों किस्म के बीज आदि तैयार किये गये हैं।

फसलों की नयी नस्लों के लिए परस्पर संकरण करने में आनेवाली कठिनाइयां भी विकिरण के द्वारा हल की जा सकती हैं। विकिरण दिये गये पराग के प्रयोग से जूट, तंबाकू और टमाटर में संकरण करने में काफी सफलता मिली है।

कीटाणुओं में परिवार-नियोजन :

बहुत-से कीड़े-मकौड़े हर साल हमारी फसलों का एक अच्छा-खासा भाग सफाचट कर जाते हैं। विकिरण द्वारा पौधों की रोग-

कृषक-कन्या

चित्र : असित कुमार हलदार

निरोधी किस्में पैदा करके तो इन कीटाणुओं से बचाव किया ही जा रहा है, साथ ही कीड़ों पर भी नियंत्रण किया जा रहा है। इसके लिए नर कीटों को परमाणु-विकिरण द्वारा बधिया बना देना बड़ा कारगर साबित हुआ है। अमरीका में तो इस तरकीब से काफी फायदा उठाया जा चुका है। अब हिन्दुस्तान में भी इसकी आजमाइश की जा रही है।

इस प्रकार भारतीय कृषि के विकास में परमाणु-विकिरण के प्रयोग से आशा की एक नवीन किरण झलक रही है।

अनुवाद : रमेशदत्त शर्मा

★

अच्छी स्मरण-शक्ति प्रायः प्रतिभा की संगिनी होती है; किंतु सदा नहीं। माइकेल फैराडे ने एक बार छः हफ्ते कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों में बिताये, जो असफल रहे। उन्होंने इन सबकी प्रक्रिया और परिणाम अपनी एक नोटबुक में विस्तार से लिख डाले। उसके बाद यों ही नोटबुक के पन्ने पलटने लगे, तो पाया कि वे सबके सब प्रयोग वे पहले भी करके असफल हो चुके थे और उनके बारे में अपनी नोटबुक में विस्तार से लिखा भी था, ताकि भूल न जायें।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीलू जंगलवाला

जब मैं पहली बार मंदिर गयी, तब मैं आठ साल की थी। हाल में ही मेरा 'नवजोत' (नवजन्म) संस्कार हुआ था, जिससे मैं जरतुस्ती धर्म में दीक्षित हुई थी। नवजोत के दिन मैंने सुदरेह (सदरा) पहना था, जो शुभ प्रसंगों पर धारण किया जाता है और कमर में 'कुस्ती' (पारसी यज्ञोपवीत) लपेट रखी थी, जो भेड़ की ऊन के ७२ धागों से बंटी गयी होती है। ये ७२ धागे हमारी प्रार्थना-पुस्तक 'यासना' के ७२ अध्यायों के प्रतीक होते हैं।

हां, तो तब मैं आठ साल की थी और माता-पिता मुझे भारत में पारसियों की सबसे पुरानी अग्यारी (अग्निमंदिर) ले गये। यह अग्यारी बंबई से सौ मील दूर उदवाडा में है और 'आतश बहेराम' कहलाती है।

धूलभरी ट्रेन से उदवाडा स्टेशन पर उतरते ही पिताजी तांगा करके हमें अपने एक मित्र के यहां ले गये। इन सज्जन का एक छोटा आम का बगीचा था। मैंने स्नान किया और नये वस्त्र पहने। याद आता है कि मैंने झिलमिलाती लाल सुरती छाप की साटिन का पाजामा पहना था, जिसकी मोहरी पर सफेद रेशम की कढ़ाई की हुई थी। पाजामे के ऊपर मैंने रेशमी ब्लाउज पहना था। सिर पर बड़े एहतियात से काले मनकोंवाली प्रार्थना की टोपी पहनी थी।

पिताजी ने एरवद कांगा की 'खोर्देह अवस्ता' की प्रति मेरे हाथों में रखते हुए कहा था—"अपना धर्म गंवाने से अपनी जान गंवाना कहीं अच्छा है। बेटी, यह वह खजाना है, जो हमेशा तुम्हारे काम आयेगा; बाकी सब कुछ चला जाये, तब भी यह तुम्हारा साथ देगा।"

फिर मां मुझे बगीचे में ले गयी और आम के पेड़ की छाया में बैठाकर उसने मुझे संक्षेप में पारसियों का इतिहास बताया।

आज से सैकड़ों साल पहले की बात। सन ६५० ई० में आखिरी सासानी नरेश यजदेजर्द द्वितीय पर्सिपोलिस के युद्ध में हार गये और ईरान पर अरबों का आधिपत्य हो गया। उस समय मुट्ठी-भर लोग दक्षिण ईरान के फारस या पर्स इलाके से छिछली किश्तियों में सवार होकर पनाह के लिए भारत की ओर भाग निकले। इस दल में एक पुरोहित था, कई औरतें थीं, बच्चे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हट्टे-कट्टे नौजवान थे। लेकिन यात्रा लंबी थी और कष्टसाध्य। सो सालसेट द्वीप के संजाना गांव तक पहुंचते-पहुंचते उनमें से कई मर चुके थे। तब अभी बंबई शहर बसा नहीं था।

जब खस्ता-हाल शरणार्थी भारत के किनारे लगे, तब उनके साथ पवित्र आतश (अग्नि) थी, जिसे वे ईरान से सही-सलामत ले आये थे। यही वह अग्नि थी, जिसे आगे चलकर उदवाडा में प्रतिष्ठित किया गया।

"चलो, अब पवित्र आतश बहेराम चलें। हर पारसी की तमन्ना रहती है कि वह जिंदगी में कम-से-कम एक बार वहां जरूर हो आये।" मां ने कहा और हम अग्यारी की ओर रवाना हो गये। मंदिर के बाहरी दरवाजे पर हमने चंदन की लकड़ी खरीदी और उस छोटे-से मकान की ओर बढ़े, जो कुएं के पास है। पुजारी नित्य इस कुएं से पानी खींचते हैं और उसे अभिमंत्रित करके चांदी के एक बड़े बर्तन में रखते हैं। तीर्थ-यात्री इस पवित्र जल से हाथ-मुंह धोते हैं। हमने भी हाथ-मुंह धोया और फिर पूर्व की ओर, सूर्य की दिशा में मुंह करके 'कुस्ती' प्रार्थना की।

प्रार्थना के पश्चात हम अग्यारी में प्रविष्ट हुए। जूते हमने बाहर आंगन में उतार दिये। फिर मैं माता-पिता के साथ गैलरी में गयी, जहां जरतुस्ती धर्म के विद्वानों और दस्तूरों के चित्र टंगे थे। बीचों-बीच पैगंबर जरतुस्त का बड़ा भव्य चित्र था। उनके दायीं ओर नरयोसंग का चित्र था। ये १९ वीं सदी के बहुत बड़े पारसी विद्वान थे और इन्होंने हमारे धर्मग्रंथ 'अवस्ता' का संस्कृत में अनुवाद किया। पैगंबर जरतुस्त के बायीं ओर प्रसिद्ध विद्वान दस्तूर दोराब संजाना का चित्र टंगा था। पारसियों के बड़े पुजारी 'दस्तूर' कहलाते हैं।

अगला चित्र था दस्तूर होर्मजदियार का। दक्षिण के पारसी पुजारी इन्हीं के उत्तराधिकारी हैं। इनके आगे था के०आर० कामा का सौम्य मुखड़ा, जिन्होंने बंबई के कामा ओरियंट इंस्टिट्यूट की स्थापना की। गैलरी के कोने में एक ऐतिहासिक चित्र अंकित है। इसमें सासानी युग के प्रकांड विद्वान और पुजारी आर्देशिर पापाकान 'अवस्ता' से कुछ अंश लिखा रहे हैं और पास बैठे लिपिक उसे गोचर्म की पट्टियों पर सुनहरे अक्षरों में लिख रहे हैं।

अब हम भीतरी कक्ष में प्रविष्ट हुए। इसके केंद्र में एक छोटा-सा गर्भगृह है, जो चारों तरफ से खुला है। इसके बीचों-बीच चांदी के एक विशाल पात्र (अफर्घान) में वह पवित्र अग्नि है, जिसे हमारे पूर्वपुरुष फारस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृद्ध पुरोहित

से लाये थे। अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित थी। समय-समय पर पुजारी उसमें चंदन और लोबान की आहुति देते थे। गर्भ-गृह की तीन तरफ की दीवारों पर प्राचीन तलवार, ढाल, खंजर, भाला, जिरहबख्तर तथा अन्य अवशेष थे, जिन्हें हमारे पुरखे अपने साथ भारत लाये थे।

उस समय मेरा शीश श्रद्धा से झुक गया, गुजरात के राणाओं के प्रति। ये राणा स्वयं अच्छे घुड़सवार थे और भाला व तलवार चलाने में बेजोड़ थे। उन्होंने शरणार्थियों को फारस से भारत तक की अपनी लंबी, कष्ट-भरी साहस-यात्रा के स्मारक के रूप में, अपने हथियार अपने पास रखने की उदार अनुमति दे दी।

गर्भगृह के द्वार पर संगमरमर का दहलीज है। यात्री इससे आगे नहीं जा सकते। प्रधान पुजारी के अतिरिक्त और किसी को गर्भगृह में जाने की अनुमति नहीं है। रिवाज के अनुसार हमने घुटनों के बल बैठकर संगमरमर पर माथा टेका और प्रार्थना की। इसके बाद हम सब पवित्र अग्नि के सामने बैठे और प्रार्थना-पुस्तक से प्रार्थना करने लगे। थोड़ी देर में एक पुजारीजी आये। लंबे हत्थेवाला एक चमचा उनके हाथ में था, जिसमें पवित्र आग की भस्म थी। हम सबने उसमें से एक-एक चुटकी राख ली और उसे माथे और गले पर लगाया। रस्म दो बातों का प्रतीक है। एक तो यह हमारी देह एक दिन इसी तरह खाक जायेगी। दूसरे, यह बताती है कि भगवान घर में राजा और रंक सब बराबर हैं।

मैं बच्ची थी, मुझे ज्यादा प्रार्थनाएं न आती थीं। अतः मेरी प्रार्थना जल्दी समा हो गयी। लेकिन माता-पिता की प्रार्थ अभी एक घंटा और चलनेवाली थी। सो हाथ जोड़े चुपचाप बैठी रही और गर्भगृह अफघान से उठती अग्नि-शिखाओं देखती रही। उन्हें देखते-देखते मैं एक दि स्वप्न में खो गयी। मेरी आंखों में पारसि के भारत आगमन की कहानी साकार हो घूमने लगी।

पवित्र अग्नि मेरी आंखों के सामने ओझल हो गयी। मुझे एक हरा-भरा मैद दिखाई देने लगा। सैकड़ों लोग खड़े हैं सामने एक चबूतरा है, जिस पर सोने सिंहासन रखा है। उस पर स्वर्ण-जड़े और किमखाब का साफा एवं जरी के का वाली काली मखमली चप्पलें पहने राजा बैठा हुआ है। इर्द-गिर्द हथियारों लैस रौबीले घुड़सवार खड़े हैं।

सिंहासन से कुछ ही गज की दूरी एक श्रद्धास्पद वृद्ध पुजारी खड़े हैं। उन सफेद दाढ़ी हवा में लहरा रही है और उ हाथ में एक छोटा-सा अफघान (अग्नि पात्र) है, जिसमें से धुआं उठ रहा है। घेरे खड़ा है निराश्रित लुटे-पिटे ब औरतों व मर्दों का एक समूह। पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़िया कपड़े पहने एक व्यापारी है। उसके हाथ में चमड़े की एक पट्टी और कलम है, जिससे प्रकट होता है कि वह लिपिक और दुभाषिये का काम करता है।

एक दूत शंख फूंकता है और सन्नाटा छा जाता है। सिंहासन पर आसीन व्यक्ति कुछ पूछता है और दुभाषिया उसका अनुवाद करता है :

"दूर देश से आनेवाले परदेसियो, तुम क्या चाहते हो ?"

"धर्म-कर्म की स्वतंत्रता, श्रीमन्।" बूढ़ा पुजारी उत्तर देता है।

"स्वीकार है। और क्या चाहिये तुम्हें?"

"अपना पेट हम भर सकें, इसके लिए थोड़ी-सी जमीन।"

"अच्छा..... और कुछ ?"

"इस बात की स्वतंत्रता कि हम अपने पूर्वजों के धर्म और देश के रीति-रिवाजों की शिक्षा अपने बच्चों को दे सकें।"

"मंजूर...लेकिन बदले में तुम लोग इस देश के लिए क्या करोगे ?"

उत्तर में बूढ़े पुजारी ने दूध से भरा एक प्याला मंगवाया। जब प्याला आ गया, तो उसने कहा कि उसमें एक चम्मच शक्कर मिला दी जाये। दूध में शक्कर मिला दी गयी। बूढ़े पुजारी ने अपने कांपते हाथों से वह प्याला उठाया और कहा—"श्रीमन्, यह है मेरा विनम्र उत्तर। आपकी कृपा के दूध में हम लोग इस शक्कर की तरह घुलकर रहेंगे। हमारा और हमारी आगामी पीढ़ियों का जीवन इसी प्रयास में बीतेगा कि हम अपने उपकारियों के जीवन में मिठास घोल सकें।"

उपस्थिति ने हर्षध्वनि की। बूढ़े पुजारी ने अब एक सोने की अंगूठी मंगवायी और उसे दूध के प्याले में डाल दिया और अपने कांपते हाथों में पुनः प्याला उठाकर कहा—"श्रीमन्, क्या कोई आदमी इस प्याले में डूबी हुई अंगूठी को देख सकता है ?"

सबने नकारात्मक सिर हिलाया।

पुजारी ने कहा—"हमारे सत्कर्म भी इसी तरह गुप्त रहेंगे, जैसे आपकी कृपा रूपी दूध में यह सोने की अंगूठी छिपी हुई है।"

लोगों ने फिर हर्षध्वनि की।

तब पुजारी ने प्रार्थना करने और प्रभु को धन्यवाद देने की आज्ञा मांगी। उसके इशारे पर सब शरणार्थी—बच्चे, बूढ़े, युवा—धरती पर लेट गये। उनकी आंखों से प्रेमाश्रु बहते जाते थे। भारत की पुनीत मिट्टी को उन्होंने अपने सिर-माथे पर लगाया। फिर वे उठे। पुजारी ने उन्हें हाथ-मुंह धोने का आदेश दिया। हाथ-मुंह धोने के बाद सबने सूर्याभिमुख होकर भावभीनी 'कुस्ती' प्रार्थना की।.....मैं स्वयं भी भावविभोर होकर उस स्वप्नमय प्रार्थना में शामिल हो गयी।

एकाएक मां ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा—"चलो बेटी, अब चलें।" मेरी आंखों से वह दृश्य लुप्त हो गया। मैं धीरे-से उठी, संगमरमर के दहलीज पर माथा टेका और अंतिम प्रार्थना-श्लोक 'अशेम वहू' बोलकर माता-पिता के साथ 'आतश बहेराम' से चली आयी। ['आकाशवाणी'से]

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीकी प्रेसिडेंट की हत्या

एक पहेली

रोपट फ्रैंक्स

लड़ाई के चार साल बाद फोर्ड थियेटर में स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में एक ड्रामा स्टेज किया जा रहा था। यह १४ अप्रैल १८६५ की रात की घटना है। अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ड्रामा देखने में संलग्न थे कि मशहूर ऐक्टर जान विल्क्स बूथ ने उन्हें गोली का निशाना बनाया। सरकारी तौर पर एलान किया गया कि बूथ २६ अप्रैल को वर्जीनिया के ग्रेट्स फार्म में खुफिया पुलिस के हाथों मार डाला गया है।

एक लंबे अर्से तक अमरीका के तमाम मेलों में एक मम्मी (मुर्दा शरीर) की नुमाइश की जाती रही और उसे बूथ की लाश बताया जाता रहा। इतिहास में भी इस घटना को इसी अंदाज में अंकित किया गया है। लेकिन पिछली सदी के आखिर से कुछ ऐसी किताबें सामने आ रही हैं, जिनसे यह साबित होता है कि लिंकन की हत्या एक षड्यंत्र का नतीजा था; बूथ की पुलिस ने हत्या नहीं की, बल्कि कुछ लोग हत्या के कई वर्ष बाद तक भी उसे शरण देते रहे। अब हम उन घटनाओं की चर्चा करते हैं, जिनसे यह पुष्टि होती है कि लिंकन की हत्या बहुत ही ऊंचे व्यक्तियों का हाथ था।

जिस समय लिंकन अपनी पत्नी मेरी राथबोर्न और मिस हैरिस के साथ थियेटर बाक्स में बैठे थे, बूथ ने एकाएक चोर दरवाजे से प्रवेश किया, गोली चलायी और भाग निकला। बाहर एक घोड़ा पहले से मौजूद था; लेकिन उसका पांव उन झंडियों में उलझ गया, जिनसे बाक्स को सजाया गया था। वह गिर पड़ा और उसकी एक टांग की हड्डी टूट गयी। फिर भी वह पिछले दरवाजे से फरार होने में कामयाब हो गया।

हत्यारा दक्षिणी रियासतों के बारे में लिंकन की नीति से मतभेद रखता था। उसने बार-बार राष्ट्रपति को गायब करने और हत्या करने का षड्यंत्र किया; लेकिन उसे पागल समझकर छोड़ दिया जाता रहा।

यही नहीं, राष्ट्रपति ने जब थियेटर जाने का प्रोग्राम बनाया, तो यह तय पाया गया कि जनरल ग्रांट, जिसे 'विजयी जनरल' कहते थे, लिंकन के साथ जायेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनरल वक्त की पावंदी और कर्त्तव्य-पालन के लिए बहुत मशहूर था; लेकिन वह इस रात नहीं आया और केवल यह संदेश भिजवा दिया कि वह अपने बच्चों से मिलने के लिए जा रहा है। ऐसे अहम मौके पर उसका न आना बहुत ही अजीब बात थी। उससे भी ज्यादा अजीब बात यह थी कि जिस सिपाही को राष्ट्रपति की रक्षा के लिए तैनात किया गया था, वह हमले से कुछ मिनिट पहले वहां से खिसक चुका था।

हत्या की घटना के फौरन बाद तार के पूरे कारोबार पर रोक लगा दी गयी। सरकारी तौर पर यह एलान किया गया कि तार की मशीनरी खराब है, हालांकि वह खराब नहीं थी। उसके साथ ही समाचार-पत्रों पर रोक लगा दी गयी कि वे हत्यारे का नाम न छापें, हालांकि वाशिंग्टन का बच्चा-बच्चा हत्यारे के नाम से परिचित हो चुका था। इस तरीके से कातिल का नाम पांच घंटे देर से छपा और कातिल को फरार होने में मदद दी गयी।

बात सिर्फ यहीं खत्म नहीं होती। शहर से बाहर जानेवाले तमाम रास्तों पर फौजी पहरा बैठाया गया; लेकिन उस रास्ते को छोड़ दिया गया, जो दक्षिण को जाता था। यद्यपि इस रास्ते पर पहले से फौजी सिपाही मौजूद थे; लेकिन सात घंटे बीत जाने तक उन्हें कोई आज्ञा नहीं दी गयी। उस रास्ते पर एक नेवी-पुल बना हुआ था, उस पर से गुजरनेवालों के नाम और हस्ताक्षर सुरक्षित कर लिये जाते थे। बूथ वहां पहुंचा, उसने अपना असली नाम बताया और अपने सही हस्ताक्षर किये। परंतु चूंकि वहां के अधिकारी को कोई खबर नहीं दी गयी थी, इसलिए उन्होंने बूथ को नहीं रोका।

इतिहास का पुनरावर्तन

प्रेसिडेंट केनेडी और प्रेसिडेंट लिंकन की हत्याओं में कई अद्‌भुत समताएं हैं, जिनकी कोई व्याख्या करना बहुत कठिन है।

लिंकन १८६० में राष्ट्रपति चुने गये, केनेडी १९६० में। दोनों की हत्या उनकी पत्नियों की उपस्थिति में शुक्रवार के रोज हुई। दोनों पर पीठ पीछे से सिर पर गोली दागी गयी।

दोनों ही के उत्तराधिकारियों का नाम जान्सन है। दोनों दक्षिणी डेमोक्रैट और उपराष्ट्रपति थे। एंड्रू जान्सन १८०८ में जन्मे थे और लिंडन जान्सन १९०८ में।

लिंकन का हत्यारा जान विल्क्स बूथ १८३९ में जन्मा था; केनेडी का हत्यारा ली हार्वे ओस्वाल्ड १९३९ में।

लिंकन के एक मंत्री केनेडी थे, जिन्होंने प्रेसिडेंट को उस समारोह में जाने से मना किया था, जहां हत्या हुई। केनेडी के एक मंत्री लिंकन थे; उन्होंने प्रेसिडेंट को डलास न जाने की सलाह दी थी।

बूथ थियेटर में लिंकन पर गोली चलाकर एक दुकान में घुस गया था। ओस्वाल्ड एक दुकान में से केनेडी पर गोली चलाकर एक थियेटर में भाग गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हत्यारे को फरार होने के लिए मुनासिब वक्त देने के बाद उसकी तलाश में छः फौजी टोलियां रवाना की गयीं। ये फौजी टोलियां दक्षिण दिशा की ओर भेजी गयीं। उन्होंने आपस में मेल नहीं किया, पग-पग पर नोक-झोंक हुई। हर टोली यह चाहती थी कि हत्यारे को गिरफ्तार करके वह उस बड़े इनाम को हासिल करे, जिसका राज्य ने एलान किया था।

बूथ चूंकि घायल होने के कारण अधिक देर तक सफर नहीं कर सकता था, इसलिए वह डाक्टर मड के घर गया। डाक्टर मड से वह एक बार पहले भी मिल चुका था। डाक्टर ने हाकिमों को इत्तिला दी कि उसके घर में दो अजनबी ठहरे हुए हैं। हाकिमों ने उस रिपोर्ट पर कोई ध्यान नहीं दिया। १८ अप्रैल के बाद लेफ्टिनेंट बेकर के साथ सिपाहियों का एक दस्ता रवाना किया गया। अभी यह दस्ता ज्यादा दूर नहीं गया था कि उसके साथ पचीस सिपाही और आ मिले और तमाम सिपाहियों की कमान कर्नल कंडोर को सौंप दी गयी।

बूथ २२ अप्रैल को वर्जीनिया में प्रवेश कर चुका था। यहां उसे तीन हमखयाल सिपाही मिले, जो उसे ग्रेटेस फार्म में ले आये। यहां आकर बूथ ने तंबाकू के शेड में शरण ली। इधर से लेफ्टिनेंट बेकर और कर्नल कंडोर इस फार्म तक पहुंच गये। उन्हें बताया गया कि बूथ इस फार्म में शरण लिये हुए है। शेड में पनाह लेनेवालों से कहा गया कि वे अपने आपको सेना के हवाले कर दें। इस एलान के जवाब में का साथी हेराल्ड बाहर आया और एलान किया कि बूथ अंदर ही है। ये बातें हो रही थीं कि कर्नल कंडोर शेड पिछली ओर गया और उसे आग लगा साथ ही एक फायर भी दाग दिया। बाद सिपाही शेड के अंदर दाखिल हुए उन्होंने एक व्यक्ति को मरा हुआ पा जिसके सिर में गोली लगी थी। साथ सार्जेंट कोबट ने यह एलान किया कि को उसने गोली मारी है, क्योंकि वह दीवा के सूराख से अंदर की तरफ देख रहा था यह तमाम विवरण हुकूमत की तरफ प्रकाशित हुआ था।

लेफ्टिनेंट बेकर ने एक विशेष मुलाक में बताया कि उसकी समझ में नहीं आया उस व्यक्ति पर गोली क्यों चलायी ग जबकि वे उसे आसानी से गिरफ्तार सकते थे। उस लाश की पहचान एक फो ग्राफर ने की थी। लेकिन वे सिपाही, वहां मौजूद थे, उनमें से बहुतों का खयाल था कि वह बूथ की लाश नहीं किसी-किसी ने यह भी बयान दिया कि की बगल में एक दरवाजा था और बूथ में से फरार होकर जंगल में छिप गया जहां से वह घोड़े पर सवार होकर निकल गया होगा।

शेड से बूथ की डायरी मिली। लेफ्टिनेंट बेकर ने वह डायरी अपने कमां स्टेशन को दे दी। उस डायरी को पर्दे में गया। जब कर्नल बेकर को नौकरी से हटा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया, तो उसने इस रहस्य को खोल दिया। उस समय तक उस डायरी के अठारह पृष्ठ फाड़े जा चुके थे। कर्नल बेकर ने इस राज पर से भी पर्दा उठाया कि जब उन्होंने युद्ध-मंत्री के सामने यह कहा कि हमने बूथ पर काबू पा लिया है, तो उसकी हालत पीली पड़ गयी, आवाज उसके गले में अटक गयी; लेकिन बाद में जब कहा गया कि बूथ मर चुका है, तब उसकी जान में जान आयी।

जिस अंदाज में उस लाश को जमीन के सुपुर्द किया गया, वह भी आश्चर्यजनक तौर पर दिलचस्प है। जिस व्यक्ति पर फार्म में गोली चलायी गयी थी, वह फौजी वर्दी में था, जबकि बूथ को चार दिन पहले काले सूट में देखा गया। और चार साल के बाद जब बूथ की लाश उसके परिवार के हवाले की गयी, तो उस समय भी वह काले सूट में था। इसके अलावा, मरनेवाले के बाल लाल थे और जो लाश वाशिंग्टन लायी गयी, उसके बाल काले थे।

जब लाश को वाशिंग्टन लाया गया, तो उसे जंगी जहाज की छत पर रख दिया गया और उसकी पहचान के लिए विशेष आज्ञा जारी हुई। एक डाक्टर ने परीक्षा करके बताया कि उस लाश और बूथ में कोई मेल नहीं है। उसने जनरल बारंस से साफ कहा—"मैंने बूथ को कई बार देखा है और मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह बूथ की लाश नहीं हो सकती।" इस घोषणा के थोड़ी देर बाद उस डाक्टर ने अपनी राय बदल दी। कौन जानता है क्यों?

उस लाश को एक बार वाशिंग्टन की आर्सनेल इमारत की कोठरी में गाड़ दिया गया। चार साल बाद यह लाश बथ के संबंधियों को दी गयी। मोक्स्ले जो फोर्ड थियेटर में बूथ के साथ काम करता था और जो इस लाश की गड़ाई में शरीक रहा था, कहता है—"मैंने आज तक इस बयान की सच्चाई के बारे में कुछ कहने की जरूरत अनुभव नहीं की कि बूथ को ग्रीन माउंट में दफन किया गया है। हकीकत यह है कि जिस वक्त हम उस लाश को मिट्टी दे रहे थे, उसी समय हममें से कइयों को यह संदेह था कि राष्ट्रपति लिंकन का हत्यारा पकड़ा ही नहीं गया है। यह बात मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि बूथ की लाश इस शहर में नहीं दफनायी गयी। मैं उस लाश को उठानेवालों में से था। उस लाश और बूथ में कुछ भी समानता न थी।"

जनरल बेरने का बयान भी विशेष उल्लेखनीय है। जनरल ने बूथ के बारे में बड़े दिलचस्प भेद खोले हैं। उसने १९०७ में एक बयान देते हुए कहा—"मैं आपको कुछ ऐसी बातें बताता हूं, जो आज तक छिपी हुई हैं। यह सच्चाई आपको रिकार्ड में नहीं मिलेगी और न कोई और उनकी तरफ इशारा करेगा। फार्म में दो के बजाय तीन आदमी थे, जिनमें से एक फरार होने में कामयाब हो गया था। मुझसे मत पूछिये कि फरार होनेवाला कौन था। मैं आपको यह नहीं बताऊंगा। रिकार्ड में इस बात का कहीं जिक्र नहीं है कि उस शेड से बाहर निकलने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दरवाजा और भी था। असली दरवाजा तालाबंद था और यह सब कुछ इसलिए किया गया था कि आनेवाले का ध्यान केवल ताला पड़े दरवाजे तक ही सीमित रहे। बाहर निकलने का छोटा-सा दरवाजा जरा नीचे की तरफ था। अब आप स्वयं नतीजा समझ सकते हैं। हमसे शपथ ली गयी थी कि इस बात को रहस्य के पर्दे में रखेंगे।"

बूथ के बारे में निहायत ही दिलचस्प खुलासा एफ० एल० स्टीवेन ने किया। सन १९१० ई० में उसने एक किताब लिखी, जिसका नाम था—'बूथ का फरार होना और आत्महत्या'। इस किताब में उसने यह दावा किया कि बूथ ने १९०२ में जहर खाकर आत्महत्या की। फरार होने के बाद उसने अपना नाम डेविड ई० जार्ज रख लिया था। और जो लाश कौमी मेलों में दिखायी जाती रही वह वास्तव में डेविड ई० जार्ज की थी।

आइजन शमल ने १९३७ में 'लिंकन क्यों मारा गया ?' के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की थी। उसमें साबित किया गया है कि लिंकन की हत्या में युद्धमंत्री का हाथ था। इस किताब के अलावा एक और किताब सबके सामने आयी है, जो बूथ की नातिन ने लिखी है। उसने निहायत ही दिलचस्प जिक्र किया है। एजोला फारेस्टर लिखती है—"बूथ १८७९ तक जिंदा रहा, उसने १८५९ में मेरी एजोला मार्था मिल्ज से शादी की और उस शादी को गुप्त रखा। उसके पेट से एक लड़की हुई और यही लड़की मेरी मां बनी। मिसेज बूथ ने १८६८ में अपने एक निजी संबंधी जान स्टीवेंसन के साथ फोनिया का सफर किया और उस व्यक्ति ने मिसेज बूथ को सान डयागो के मुकाम पर बूथ तक पहुंचा दिया। उसके बाद बूथ अपनी पत्नी के साथ सान फ्रांसिस्को चला गया। यहां बूथ का छोटा भाई ब्रूट्स एक थियेटर का मैनेजर था। बूथ भी उसमें सम्मिलित हो गया।

मिसेज बूथ के यहां १८६९ में एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम हेनरी स्टीवेंसन रखा गया। उस लड़के की तस्वीर देखने से यह मालूम होता है कि यह बूथ की जीती-जागती तस्वीर है। स्टीवेंसन ने मृत्यु शैय्या पर इस बात का इकरार भी किया कि वह बूथ का ही लड़का था।

इसी बीच मिसेस बूथ का एक बयान भी विशेष महत्व रखता है। उसने अपनी एक प्यारी सहेली से कहा—"मेरा पति बड़े लोगों का साथी बन गया था। मुझसे बूथ के एक साथी ने कहा कि बूथ मुझे भी अपने साथ मिलाना चाहता था। मैंने पकड़े जाने का भय बताया, तो उस पर बूथ ने कहा—इस मामले में किसी घबराहट की जरूरत नहीं, दूसरी पार्टी हमारी हर मुमकिन मदद के लिए तैयार है।"

इन सबके अलावा, सरकार ने बूथ के जितने भी साथियों को गिरफ्तार किया उनमें से डाक्टर मड के सिवा और किसी पर मुकदमा नहीं चलाया गया।

आज तक अमरीका में बूथ की पहेली को हल नहीं किया जा सका है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंजापन : अब समस्या नहीं

सरोज मित्तल

आनेवाली पीढ़ी के चालीस प्रतिशत लोग तीस साल की उम्र तक गंज के शिकार हो जायेंगे। यह किसी ज्योतिषी की भविष्य-वाणी नहीं है, वरन वैज्ञानिकों ने गंज के वर्तमान भयंकर रूप को देखकर यह अनुमान लगाया है।

वैज्ञानिक बताते हैं कि सिर में हर रोज़ पुराने बाल झड़ते रहते हैं और उनकी जगह नये बाल निकलते रहते हैं। पुराने बालों का झड़ना खास चिंता का कारण तब बनता है, जब उसी अनुपात में नये बाल उगने बंद हो जाते हैं। और तभी से गंज की शुरूआत मानी जा सकती है।

यों बालों का, और खास तौर से सिर के बालों का, जिस्म के लिए कोई बहुत बड़ा महत्व नहीं है। हां, आपकी खूबसूरती पर इसका जरूर कुछ असर पड़ सकता है। वैज्ञानिकों ने बाल का रासायनिक विश्लेषण करके पता लगाया है कि उसमें ५० प्रतिशत कार्बन, २१ प्रतिशत आक्सिजन, १८ प्रतिशत नाइट्रोजन, ६.७ प्रतिशत हाइड्रोजन और बाकी गंधक आदि का मिश्रण होता है। दरअसल बाल एक बेजान संरचना है, जो केराटिन नामक एक विशेष प्रकार की कोशिकाओं से बनती है। ये कोशिकाएं बालों के अलावा खाल, नाखून और दांतों में भी मुख्य रूप से पायी जाती हैं।

आदमी के सिर में औसतन एक लाख बीस हजार बाल होते हैं। अर्थात एक वर्ग इंच में करीब एक हजार बाल। तंदुरुस्त आदमी के बाल बड़ी तेजी से बढ़ते हैं। अगर आप कभी गंजे न हों, तो पूरी ज़िंदगी में आपके सिर पर उगे बालों का वजन करीब १५ पौंड होगा।

अब असली विषय पर आयें। वैज्ञानिकों ने अनेक खोजों के बाद यह पता लगाया है कि गंज के तीन प्रमुख कारण होते हैं— वंशानुक्रम, वृद्धावस्था, और अधिक संभोग या अन्य किसी वजह से शरीर का बहुत कमजोर हो जाना। अगर आपके परिवार के किसी बुजुर्ग को यह रोग रहा है, तो इस बात की बहुत ज्यादा संभावना है कि अगली पीढ़ी में भी किसी-न-किसी को गंज हो जाये।

वृद्धावस्था या कमजोरी के कारण भी अक्सर लोग गंज के शिकार हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि ऐसी हालत में बालों के कोश नष्ट हो जाते हैं और इस तरह उनमें नये बाल उगाने की क्षमता नहीं रहती। इसके अलावा नशीली चीजों के बेहद सेवन, यांत्रिक दबाव, चमड़ी की बीमारी, रगड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और विकिरण आदि की वजह से भी आदमी गंजा होने लगता है।

लेकिन इन सब बातों को सुनकर परेशान होने की जरूरत नहीं। अव्वल, सिर पर बाल होने या न होने से तंदुरुस्ती में कोई फर्क नहीं पड़ता है। रही बात फैशन और खूबसूरती की। सो संभव है, जब ज्यादातर लोगों के सिर पर बाल होंगे ही नहीं, तो गंजा होना ही खूबसूरती की निशानी और फैशन बन जाये।

आपरेशन के पहले आपरेशन के बाद

इन आश्वासनों के बावजूद आप अगर अपने बालों को क़ायम रखने को बेचैन हों, तो विज्ञान आपको नाउम्मीद नहीं करेगा। हाल की खोजों ने जहां गंज के इलाज के लिए तरह-तरह की दवाइयां ईजाद कर ली हैं, वहीं सिर में बाल प्रतिरोपित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रयोग चल रहे हैं।

यह बात नहीं है कि पुराने जमाने में गंज का कोई इलाज ही नहीं था। चार हजार साल पहले लिखित एक वैज्ञानिक प्रबंध 'ऐबर्स पेपीरस' में गंज दूर करने का एक बहुत ही मजेदार नुस्खा मिलता है।

शेर, सांप, भेड़िये, मगर और रीछ की चर्बी बराबर-बराबर लेकर खूब अच्छी तरह मिला लीजिये और फिर सिर पर मलिये। फिर देखिये इसका चमत्कार। आपके सिर पर इन जानवरों की तरह ही बहुत घने और लंबे-लंबे बाल तेजी से उग आयेंगे।

अब जरा विज्ञान के नये करिश्मे की बात भी सुन लीजिये। अब आपके गंजे सिर में किसी और आदमी के बाल भी प्रतिरोपित किये जा सकेंगे। अमरीका के सैकड़ों गंजे लोग शल्य-चिकित्सा की इस विधि का फायदा उठा चुके हैं। अनेक दवाइयों के इस्तेमाल से जो लोग बिलकुल निराश हो चुके थे, उनके लिए बालों का प्रतिरोपण एक चमत्कारी क्रिया सिद्ध हुई। कुछ ही दिनों में उनके सिर में घने बाल उग आये।

बालों के प्रतिरोपण में सफलता प्राप्त करने का श्रेय न्यूयार्क यूनिवर्सिटी मेडिकल कालेज के प्रोफेसर नार्मन ओरेंट्रिच को दिया जा सकता है। आज से करीब आठ साल पहले डाक्टर ओरेंट्रिच के दिमाग में यह बात उठी कि क्या गंजे सिर में बालों का प्रतिरोपण नहीं किया जा सकता ? और उनके सतत प्रयत्नों तथा प्रयोगों का ही आज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह परिणाम है कि बहुत-से व्यक्ति हमेशा के लिए गंज से मुक्ति पा चुके हैं।

डाक्टर ओरेंट्रिच अभी तक करीब एक हजार लोगों के सिरों में सफलतापूर्वक बालों का प्रतिरोपण कर चुके हैं। उनसे प्रेरणा पाकर अमरीका के और भी बहुत-से चिकित्सक इस विधि का सफल कर प्रयोग रहे हैं।

आपरेशन करने से पहले रोगी को सामान्य विधि से बेहोश कर दिया जाता है। सामान्यतया एक व्यक्ति के सिर में २०० बाल प्रतिरोपित करने पड़ते हैं; लेकिन अभी एक बार में ४० बालों से ज्यादा प्रतिरोपित नहीं किये जा सकते। इसलिए कई आपरेशन करने पड़ते हैं। दो आपरेशनों के बीच कम-से-कम एक हफ्ते का अंतर होना चाहिये। इसलिए प्रायः एक व्यक्ति के सिर में बाल प्रतिरोपित करने की क्रिया में छः हफ्ते का समय लग जाता है।

जिस जगह बाल रोपने हों, वहां पर एक यंत्र की मदद से छोटे-छोटे छेद कर दिये जाते हैं। इन छेदों में बाल रोपे जाते हैं। रोपने के बाद टांके लगाने की जरूरत नहीं होती। उस जगह पर चिपकनेवाला प्लास्टर लगा दिया जाता है और बाद में वह जगह अपने आप भर जाती है। इस तरह रोपे गये बाल कुछ दिनों बाद गिर जाते हैं और नये बाल निकल आते हैं।

डा० ओरेंट्रिच की प्रयोगशाला में ऐसे बहुत से लोगों के चित्र टंगे हुए हैं, जिनके सिर में आपरेशन से पहले एक भी बाल नहीं था, लेकिन तीन महीने के अंदर जिनका सारा सिर बालों से भर गया। बाल रोपने के करीब सात महीने बाद तो सिर में इतने घने तथा लंबे बाल आ जाते हैं कि विश्वास नहीं होता कि वह व्यक्ति कभी गंजा था।

बाल रोपने के मार्ग में दो छोटी-छोटी समस्याएं भी हैं, लेकिन उनके हल भी खोज निकाले गये हैं। किसी-किसी व्यक्ति के सिर की खाल आपरेशन के बाद पक जाती है और घाव जल्दी नहीं भरता। ऐसे व्यक्तियों के सिर में प्रतिरोपण खतरनाक साबित हो सकता है। दूसरे, किसी-किसी व्यक्ति के सिर में बालों का क्षेत्र बहुत कम होता है। ऐसे लोगों के सिरों में नाइलान के बाल रोपने के प्रयोग चल रहे हैं।

यह प्रयोग भी चल रहा है कि सिर्फ सिर के अगले हिस्से में ही बाल रोपे जायें और ये बाल इतने लंबे हों कि पीछे को बाने से पूरे सिर को ढंक लें। इस तरह पीछे के हिस्से में बाल रोपने की जरूरत ही नहीं रहेगी।

साथ ही ऐसी दवाइयों की खोज भी जारी है, जिनसे गंज का इलाज हो सके और आपरेशन से बचा जा सके। डाक्टर ओरेंट्रिच के प्रयोगों ने सिद्ध कर दिया है कि गंज नर-हारमोन के अत्यधिक उत्पादन से होता है और हारमोन की गंज पैदा करने की क्रिया वंशानुगत होती है। अगर कोई ऐसी तरकीब निकल आये, जिससे हारमोन की अन्य क्रियाओं में बाधा डाले बिना उसकी गंज पैदा करनेवाली क्रिया रोकी जा सके, तो बिना आपरेशन के भी गंज दूर किया जा सकेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमान के अड्डू

जो उदारता व क्रूरता दोनों में बिलकुल बेजोड़ हैं।

हरीश कृष्ण

सभ्य संसार की दृष्टि में अरब स्थित अमान के समुद्री इलाके से ज्यादा अनजाना प्रदेश शायद ही कोई और हो। मुद्दत से यह इलाका समुद्री डाकुओं का अड्डा रहा है। यहां अरब सागर से फारस की खाड़ी की तरफ सफर करते हुए समुद्री जहाज आन-की-आन में लूट लिये जाते हैं।

कभी-कभी तो ये लुटेरे अपने बजरों में किनारे के साथ-साथ सफर करते हुए मस्कत के उत्तर तक पहुंच जाते और हिन्दुस्तान से आने वाले जहाजों पर हमला कर देते थे। तमाम माल और असबाब लूट लिया जाता और मुसाफिरों को गुलाम बनाकर अरब के बाजारों में बेच दिया जाता।

ये लोग सिर्फ मल्लाहों की कद्र करते थे। इन्हें जंजीरों से बांधकर शहरी बस्तियों में ले जाते। वहां मछुए और समुद्र से मोती निकालनेवाले गोताखोर इन्हें भारी दामों में खरीद लेते।

अठारहवीं सदी में जब ईस्ट इंडिया कंपनी के तिजारती सामान से भरे हुए बीसियों जहाज इन लुटेरों की नजर हो गये, तो हिन्दुस्तान और बर्तानिया में खलबली मच गयी। मद्रास से एक समुद्री बेड़ा अमान की तरफ रवाना हुआ। गोरे सिपाही बड़े-बड़े हथियारों से लैस थे। लुटेरे जान तोड़कर लड़े। लेकिन बर्तानवी समुद्री बेड़े के सामने इनकी एक न चली।

गोरों ने न सिर्फ लुटेरों का खात्मा कर दिया, बल्कि अमन-पसंद बाशिंदों पर भी जी भरकर जुल्म ढाये। बस्तियां जला दी गयीं। खजूर के बाग उजाड़ दिये गये और बेशुमार बच्चों और बूढ़ों को मौत के घाट उतार दिया गया। नौजवान या तो लड़ाई में काम आ गये या फिर रेगिस्तान की तरफ भाग गये।

यह इलाका कई कबीलों के लोगों से बसा था। हर कबीले के मुखिया को शेख कहा जाता। १८५३ में बर्तानवी हुकूमत और अमान के शेख के बीच एक सुलहनामे पर दस्तखत किये गये, जिसमें शेख ने फारस की खाड़ी से गुजरनेवाले बर्तानवी जहाजों की हिफाजत का जिम्मा लिया।

तटवर्ती अमान सात छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ है, जिसकी कुल आबादी ८० हजार के लगभग है। दबई तिजारती बंदरगाह और मशहूर शहर है। इसकी आबादी १५ हजार है। इसके बाजारों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत भीड़ रहती है। रेगिस्तानी इलाके से लोग खरीद-फरोख्त के लिए यहां आते हैं।

ये लोग काफिलों की सूरत में शहर पहुंचते हैं। ऊंट से उतरते ही, हर आदमी सिर से कपड़ा उतारता है और ऊंट की एक टांग दोहरी करके बांध देता है। फिर सबके-सब किसी कहवाखाने में घुस जाते हैं। लकड़ी के बखचों पर बैठकर कहवा पिया जाता है।

ये लोग बड़े ही अक्खड़ और तेज मिजाज के होते हैं। बुलंद आवाज में बहस करते हैं और बात-बेबात में लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। फिर भी यह तेजमिजाजी सिर्फ लड़ाई के लिए होती है। बूढ़ों, बच्चों और कमजोरों के साथ बहुत ही नरमी का बर्ताव किया जाता है। बड़ी-से-बड़ी मुसीबत में कोई किसी के सामने हाथ फैलाना पसंद नहीं करता। लेकिन अगर उससे मदद की दरख्वास्त की जाये, तो दूसरों के लिए जान तक कुर्बान कर देता है।

रेगिस्तानी इलाके में सफर करते हुए एक बूढ़े आदमी की कहानी है। सख्त गर्मी में वह पैदल चल रहा था। रेत बुरी तरह तप रही थी। उसके पांव में जूता तक न था। ऊंटनी पर सवार एक नौजवान ने करीब से गुजरते हुए पूछा—"बड़े मियां, क्या हाल है?"

"खुदा का शुक्र है।"

"आओ, मेरे साथ बैठ जाओ।"

"अभी मेरे हाथ-पांव सलामत हैं।"

शहर का एक मछुआ किसी काम से सेहरा की तरफ गया। वापसी पर सख्त गर्मी की

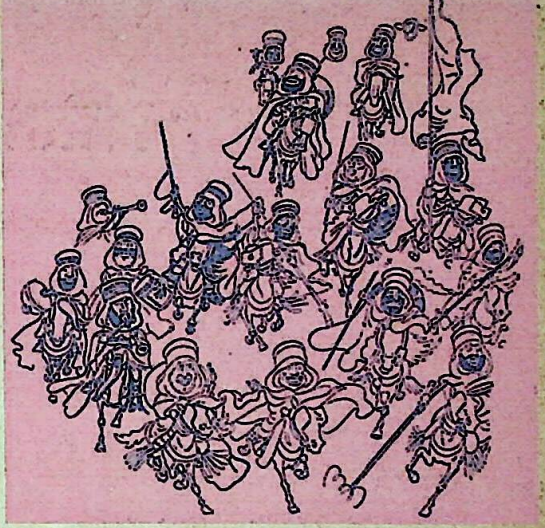

वजह से उसकी ताकत जवाब दे गयी। उसी समय एक बद्दू देहाती अपनी बीवी को मरियल-से ऊंट पर बैठाये जा रहा था। मछुए ने उससे दरख्वास्त की वह ऊंट पर बैठा ले। बद्दू खुद पैदल चल रहा था; क्योंकि ऊंट दो आदमियों का बोझ सहने काबिल न था। उसने अपनी बीवी को नीचे उतरने का हुक्म दिया और मछुए को ऊंट पर बैठा दिया।

बद्दू की बीवी के बच्चा होनेवाला था और बद्दू उसे हकीम के पास ले जा रहा था। उसे मालूम था कि उसकी बीवी एक कदम भी पैदल नहीं चल सकती। लेकिन एक बेबस की दरख्वास्त ठुकरा देना उसे मंजूर न था। कुछ दूर तक वह अपनी बीवी को पीठ पर उठाये पैदल चलता रहा। मछुआ ऊंट पर सवार बहुत आगे निकल गया था।

अंत में थककर बद्दू ने औरत को नीचे उतार दिया और चंद कदम पैदल चलने को कहा। गरीब औरत इतनी तकलीफ बर्दाश्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न कर सकी और बेहोश होकर तपती हुई रेत पर गिर पड़ी। जब बद्दू ने उसे उठाया, तो वह हमेशा के लिए ठंडी हो चुकी थी।

बद्दू लोग कंधे पर राइफल लटकाये बाजार में खरीद-फरोख्त करते हुए नजर आते हैं। हर आदमी की कमर में एक खंजर लटका रहता है। यह यहां का कौमी हथियार है। खंजर से ललकारना लड़ाई का एलान समझा जाता है।

कभी-कभी बाजार में चलते-चलते भी एक बद्दू दूसरे को खंजर दिखाता है। जवाब में खंजर नजर आये, तो समझ लीजिये, दोनों जंग के लिए तैयार हैं। अब वे खामोशी से एक-दूसरे के पीछे किसी वीरान जगह की ओर चल देंगे, जहां पहुंचकर लड़ाई शुरू हो जायेगी।

दबई के बाजारों में अरबों के अलावा बलोची, हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी बाशिंदे भी नजर आते हैं, जो छोटी-मोटी दुकानों के दरवाजों में चौकड़ी मारे बैठे रहते हैं। जिनके पास दुकान नहीं, वे फर्श पर ही सामान सजा देते हैं। हजारों रुपये की मालियत की गठरियां, रेशमी कपड़ा और दूसरा सामान रेत पर फैलाये दुकानदार कारोबार में लगे हुए हैं। जगह-जगह कहवा-खाने हैं, जहां बद्दू कहवा पीते और ऊंची आवाज में बातें करते दिखाई देते हैं। ऐसी दुकानों में खूब भीड़ रहती है।

थोड़ी-थोड़ी देर बाद यहां बंदूक चलने की आवाज आती रहती है। बंदूक खरीदने से पहले उसे चलाकर देखा जाता है। दुकान-दार रेत के बड़े-बड़े बोरे भरकर दुकान के सामने रखवा देते हैं, ताकि ग्राहक अपने शौक पूरा कर सकें। बद्दू गजब का निशाना बांधते हैं। निशानेबाजी के मुकाबले भी होते हैं।

दो बद्दू एक दूसरे से कुछ फासले पर खड़े हो जाते हैं। सीटी की पहली आवाज सुनते ही एक बद्दू अपनी बंदूक का रुख आसमान की तरफ कर देता है। दूसरा इस रुख के मुताबिक बंदूक उठाता है। दूसरी सीटी बजते ही दोनों बंदूक चलाते हैं। बहुत कम ऐसा होता है कि दोनों गोलियां एक दूसरे से टकरा न गयी हों।

ये लोग हथियार के बड़े शौकीन होते हैं। उम्दा हथियार देखते ही इनका शौक भड़क उठता है। अगर उसे खरीदने के लिए रकम न हो, तो वे अपनी सवारी तक बेच देते हैं। और तब उन्हें बाजार से पैदल ही घर जाना पड़ता है।

अमान की औरतें बड़ी सख्ती से पर्दा करती हैं। इसके लिए एक लबादा इस्तेमाल किया जाता है, जिसे औरतें अपने कपड़ों के ऊपर पहन लेती हैं। आम तौर पर इसका रंग काला होता है। चेहरा ढंकने के लिए नकाब इस्तेमाल की जाती है। औरतें जेवरात और जवाहरात से लदी रहती हैं। परदे का चलन इस कदर है कि कहवाखानों और नाच-घरों में नाचनेवाली औरतें भी चेहरे पर नकाब पहनती हैं। आम तौर पर यहां की औरतें मर्दों की तरह कठिन मेहनती होती हैं। इसका अंदाजा इस बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सांप की दुम से आंख की सफाई

से हो सकता है कि काफले में जिस औरत के बच्चा होनेवाला हो, उसे किसी सहेली के साथ पीछे छोड़ दिया जाता है। पानी की मश्क के साथ कुछ खाने-पीने का सामान भी पास रख देते हैं। काफला अपनी राह लेता है। एक-दो दिन बाद औरत नये बच्चे को लिये ऊंट पर सवार काफले से आ मिलती है।

अरब बेहद मेहमांनवाज होते हैं। मेहमानों को खुदा की रहमत मानते हैं। आप गरीब-से-गरीब के घर जाइये, आपकी खूब आव-भगत होगी। रस्मी तौर पर हालचाल पूछने के बाद घरवाला बुलंद आवाज से कहवा लाने का हुक्म देगा। अगले ही मिनिट कोई गुलाम या बांदी एक हाथ में तांबे की केतली और दूसरे हाथ में कुछ प्याले पकड़े हुए आ जायेगी।

प्याला पकड़ते वक्त अगर मेहमान दायां हाथ इस्तेमाल करे, तो इसका मतलब यह समझा जाता है कि उसे ज्यादा कहवे की जरूरत नहीं। और अगर बायें हाथ से प्याला पकड़े तो इससे दूसरा अर्थ लिया जाता है।

एक बार एक अंग्रेज के साथ बड़ी दिलचस्प बात हुई। वह एक शेख के घर ठहरा। कहवा लाया गया। अंग्रेज ने, बायें हाथ से प्याला पकड़ा। कहवा खत्म करके उसने मेज पर रखा ही था कि एक गुलाम ने, जिसकी कमर से खंजर लटक रहा था, दोबारा प्याले को मुंह तक भर दिया। अंग्रेज ने मजबूरन उसे उठाया और बड़ी ही मुश्किल से खत्म किया। गुलाम ने फिर उसे भर दिया। अंग्रेज ने बहुत इन्कार किया; लेकिन घरवाले ने उसके इन्कार को तकल्लुफ समझा। वह तीसरा प्याला पीकर उठने को था कि उसे फिर भर दिया गया। उसने इसे बिना देखे बातों में लगा जाना चाहा। लेकिन घरवाले ने कहवे की तरफ इशारा करते हुए कहा—"जनाब, पहले अपना कहवा खत्म कर लीजिये, फिर बातें करेंगे।"

गरीब अंग्रेज अजीब मुश्किल में था। उसके सिर पर खूंख्वार गुलाम कहवे का बरतन लिये खड़ा था। उससे गलती यह हो रही थी कि हर बार वह उलटे हाथ से पकड़ता। और उसे कहवा और पीना पड़ता। इस प्रकार छठे प्याले को तिपाई पर रखते ही उसकी हिम्मत जवाब दे गयी। गुलाम फिर उसे कहवे से भरने लगा। अंग्रेज ने अपना बैग उठाया और रेगिस्तान की तरफ भाग गया।

घरवाले हैरान थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि मेहमान को क्या हुआ। आखिर एक बूढ़े ने यह नतीजा निकाला—"चूंकि मेहमान कहवे का बहुत शौकीन था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसलिए वह छः प्याले भी पी गया। अभी वह और पीना चाहता था; लेकिन हम सब उसकी तरफ हैरान नजरों से देख रहे थे। बेचारा शरमा गया और भाग गया।"

अमान के रेगिस्तान में सांप बहुत पाये जाते हैं। इनका रंग प्रायः सफेद होता है। बद्दू इन्हें हाथ से पकड़ लेते हैं। आम तौर पर यही ख़याल किया जाता है कि इनमें जहर नहीं होता। यहां रेत बहुत उड़ती है। इसके कण उड़कर आंखों में पड़ जाते हैं। बद्दू आंखें साफ करने के लिए सांप की दुम इस्तेमाल करते हैं। राह चलते किसी सांप को पकड़ लिया, एक हाथ से सांप का मुंह काबू में करके, दूसरे से दुम पकड़कर आंख साफ कर ली।

अरबों के मेले भी देखने लायक होते हैं। हर मेले में तलवारबाजी, नेजाबाजी और निशानेबाजी के मुकाबले होते हैं। इनके अलावा ऊंटों की दौड़ और तरह-तरह के जंगली नाच भी पेश किये जाते हैं। अरबों का सबसे मशहूर नाच हरबिया कहलाता है। तपती हुई रेत पर नाचनेवाले खड़े हो जाते हैं। हाथों में बंदूकें पकड़ ली जाती हैं। अब इन्हें आसमान की तरफ फेंकते हैं। जब वह नीचे गिरने लगती हैं, लपककर दबोच लेते हैं। इस नाच की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें ताल देने के लिए ढोल वगैरह नहीं इस्तेमाल किये जाते।

अमान का यह इलाका टिड्डी दलों के लिए भी मशहूर है। गर्मी के मौसम में यहां से लाखों-करोड़ों टिड्डियों के दल उड़कर चारों और फैल जाते हैं। इनसे बागों की रक्षा के लिए अरब किसान जगह-जगह ढोल पीटने का बंदोबस्त रखते हैं। ज्यों ही टिड्डी दल दिखाई दिया, लोग अंधा-धुंध ढोल पीटने लगते हैं।

अमान के लोग बड़े बहादुर होते हैं। छः-सात साल की उम्र में बीसियों मील तक अकेले निकल जाते हैं। जब भूख या प्यास लगी, ऊंटनी का दूध दुहा और लकड़ी के चमड़े के प्याले में डाल कर पी गये। आस पास खजूर के पेड़ मिले, तो खजूर खा ली। यही इनकी खुराक होती है।

इनके घर में बहुत कम सामान होता है। घर की बनावट भी बहुत सादी होती है। दो-तीन लकड़ियों को रेत में गाड़ कर खजूर के पत्तों से छत डाल ली जाती है। घर में सिर्फ बरतन, बंदूक-पिस्तौल, कुछ कपड़े, एक मशक, रस्सी—यही सामान होता है।

अमान के गोताखोर भी मशहूर हैं। नाक में लकड़ी या हड्डी का टुकड़ा दबाकर पानी में सौ-डेढ़ सौ फुट तक नीचे उतर जाते हैं। समुद्री मछलियां कभी-कभी इन पर हमला कर देती हैं। उनसे बचने के लिए यह सफेद रंग का एक वस्त्र पहनते हैं, जो मोमी कपड़े से बना होता है।

आज के जमाने में अमान का इलाका बड़ी तेजी से तरक्की कर रहा है। जगह-जगह तेल खोजनेवाली कंपनियां पेट्रोल की तलाश में लगी हैं। अगर यहां पेट्रोल का खजाना मिल गया, तो अमान के रहनेवालों की दुनिया ही बदल जायेगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी उलझनें

पिछले दिनों अपनी उलझनों का बयान करनेवाले जो पत्र हमें मिले हैं, उनमें दो-तीन पत्र ऐसे हैं, जिनका समाधान इस एक ही जवाब में हो जायेगा। अतः उन सबका सारांश यहां एक साथ दिया जा रहा है।

१. आज मैं फिर दफ्तर में आध घंटा देर से पहुंचा। घर में एक मेहमान ठीक पूजा के समय आ गये थे। उन्हें टाला नहीं जा सकता था। पूजा किये बिना बाहर चला जाता, तो मेरा मन सारा दिन बेचैन रहता। हर समय कोई-न-कोई दुर्घटना होने या अफसर की डांट पड़ने की आशंका बनी रहती। मुझे विश्वास हो गया है कि यदि पूंजा में पूरा समय न दूं, तो कोई-न-कोई संकट अवश्य आता है। संकटों से बचने के लिए मैं पूजा का समय भी बढ़ाता जाता हूं। लेकिन दफ्तर पहुंचने में जरा भी देर हो जाये, तो नौकरी जाने का खतरा भी रहता है। कृपया सलाह दीजिये कि इन दोनों को एक साथ कैसे निभाया जा सकता है। —किशोर

०००

२. मैं अपनी मां के हर जन्मदिन पर फूलों का गुलदस्ता भेजती थी। पिछले वर्ष कुछ ऐसी मजबूरियां आ गयीं कि मैं रोग-शैया पर बीमार पड़ी मां के पास गुलदस्ता न भेज सकी। कुछ दिन बाद मां ने प्राण छोड़ दिये। उसी दिन से मैं बहुत परेशान हूं। मुझे लगता है कि जन्म-दिन पर मेरा गुलदस्ता न मिलने से ही मां इतनी निराश हो गयी कि उसने और अधिक दिन जीने की इच्छा छोड़ दी। मेरा मन मुझे बार-बार धिक्कारता है कि तेरी उपेक्षा ने ही मां की जान ले ली। यह अपराध मुझे अंदर-ही-अंदर खा रहा है। सूखकर कांटा हो गयी हूं। डाक्टरों ने खून की कमी बतायी है; पोषक दवाइयां भी दी हैं। किंतु रोग की जड़ तो मेरे अपराध में है। आप ही बताइये, क्या कभी मैं इस अपराध से मुक्ति पा सकती हूं? —किरणवती

०००

३. मैं पिछले कई महीनों से बहुत ही परेशान हूं। एक साल पहले मेरे घर मेरी चाची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयी थी। मैंने उसे अपने हाथों खाना बनाकर खिलाया था। यहां से जाने के बाद उसके पेट में भयंकर दर्द उठा, जो कई दिन रहा। डाक्टरों की कोई दवा कारगर न हुई। चाची ने प्राण छोड़ दिये। तभी से मैं अपने को अपराधिनी मान रही हूं। मेरी इच्छा होती है कि मैं थाने में जाकर यह कह दूं कि चाची की मृत्यु अनजाने में मुझसे हुई। मेरा मन कहता है—"पाप की सजा भुगते बिना तेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी।" कृपया सलाह दीजिये कि क्या मुझे अपराध-स्वीकृति के लिए स्वयं को पेश कर देना चाहिये। —सरोजिनी

ये तीन पत्र जुदा-जुदा व्यक्तियों के हैं; किंतु तीनों की उलझन मूल रूप से एक ही है। ये तीन ही नहीं, बल्कि हजारों-लाखों आदमी इसी उलझन में फंसे हुए हैं। उलझानेवाली सब रस्सियों का बाह्य रूप भले ही अलग-अलग हो; मगर रस्सियों में जकड़े जाने का मूल कारण सबका एक है।

उस कारण की जड़ खोजने के लिए यदि हम उनके जीवन की गहराई में उतरें, तो मालूम होगा कि ऐसी अपराध-भावना से दबे हुए या पूजा-पाठ में ही सदा अनुरक्त सभी आदमी बचपन में मां-बाप का पूरा प्रेम नहीं ले पाते। मातृ-प्रेम से वंचित होकर वे अरक्षित अनुभव करते हैं। और इस भावनात्मक असुरक्षा की पूर्ति के लिए वे अन्य किसी भी वस्तु में 'मां' की कल्पना करके उसकी गोद में बठे रहने एवं उसके प्रति समर्पित होकर अत्यंत विनय-भावना से उसके ही दासानुदास बनकर जीने के अभिनय में संतोष पाते हैं।

अपनी असली मां के व्यवहार में उन्हें जब प्रेम का पूरा अंश नहीं मिलता, तो वे किसी अन्य प्रतीक में मां की कल्पना कर लेते हैं। प्रथम पत्र ऐसे ही व्यक्ति का है। उसने अपने घर या मंदिर में प्रतिष्ठापित मूर्ति को मां मान लिया है। उसकी पूजा में ही उसका हृदय शांति पाता है। उसे मां मानकर वह उम्र-भर बच्चा बने रहने का यत्न करता है। अपनी चेष्टाओं को ईश्वर-भक्ति का नाम देकर वह अपनी कमजोरी को झूठा गौरव देना चाहता है। वास्तविक ईश्वर-भक्ति ईश्वर के नियमों का स्वस्थ मन से पालन करने, सबमें ईश्वर का अंश मानते हुए सबको सहोदर भाई के समान मानकर सबसे प्रेम करने और विधाता के अनंत दानों के प्रति कृतज्ञ होने में है, न कि अपने मन की कल्पना से कोई मूर्ति बनाकर हर समय उसके सामने सिर झुकाये बैठे रहने में है। ऐसे व्यक्ति अपने कर्तव्य-पालन में संतोष पाने का यत्न छोड़कर पूजा-पाठ में खो जाते हैं। प्रथम पत्र के प्रेषक को मैं सलाह दूंगा कि आप अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने के लिए नियमित समय पर दफ्तर जाने पर ध्यान दीजिये। ईश्वर-भक्ति और नौकरी दोनों का निभाव तभी होगा, जब आप अपने घर-बाहर के कर्तव्य-कार्यों को पूरा करने में सच्चा संतोष पायेंगे।

दूसरा और तीसरा पत्र भी ऐसे व्यक्तियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के हैं, जिन्हें बचपन में मां के प्रेम की पूरी मात्रा नहीं मिली। इसमें दोष मां का भी हो सकता है। आजकल की शिक्षा में पली लड़कियां मां बनकर भी मां नहीं बनतीं; अल्हड़ लड़की ही बनी रहने का यत्न करती रहती हैं। अथवा तितलियां बनकर हवा में उड़ने की चेष्टा में लगी रहती हैं। वे न तो अपने मन में मातृत्व का संतोष पा सकती हैं और न ही अपने बच्चों को मां की निर्व्याज ममता दे पाती हैं। ऐसी माताओं के बच्चे सारी उम्र अपनी कल्पित झूठी मां के आगे या तो सिर पटकते रहते हैं, अथवा मां का प्रेम न पा सकने के लिए अपने को अपराधी मानकर छोटी-मोटी त्रुटियों को भयंकर पाप समझ लेते हैं। उस कल्पित पाप की अग्नि में उनका मन झुलसता रहता है।

स्वयं को अपराधी मानने का उनका आग्रह इतना प्रबल हो जाता है कि उनकी विवेक-बुद्धि नष्ट हो जाती है। दूसरे-तीसरे पत्रों की लेखिकाएं यदि अपराध-भावना से मुक्त होकर स्वस्थ मन से सोचें, तो उन्हें पता लग जायेगा कि उनके कार्यों से मां या चाची की मृत्यु कदापि नहीं हुई। यह केवल अकस्मात् संयोग बन गया कि उनके तथाकथित कार्यों के बाद मृत्यु हुई; किंतु उनके कार्यों के परिणाम में मृत्यु होना किसी भी प्रकार प्रमाणित नहीं होता।

मैं इन तीनों पत्र-प्रेषकों को यही सलाह दूंगा कि आप अपना ध्यान उपयोगी कार्य करने में लगायें। तभी आपका जीवन सार्थक होगा। अपनी निर्बलताओं को व्यर्थ के कामों से ढंकने अथवा स्वयं को अपराधी मानकर आत्मपीड़न करना मूर्खता और दुराग्रह है। हमारा मन जब किसी अयुक्तियुक्त और अनुपयोगी कार्य में इतना अनुरक्त हो जाये कि हम विवेक भूल जायें, तो हम अपनी इस निर्बलता के शिकार बनते हैं। तब हम अपना भावनात्मक संतुलन खो बैठते हैं। बिना वास्तविक कारण के जब हम अपना तिरस्कार करने लगते हैं, तो अपने को अपराधी मान लेते हैं। यह विनय नहीं, अपितु पराजय के डर से प्रेरित नितांत कायरतापूर्ण दब्बूपन है।

हमारे अंतर्मन में दबा हुआ अहंकार ही कई बार विनम्रता का चोला पहनकर हमारे सामने आता है। किसी दुर्गुण को छिपाने के लिए हम प्रायः ऐसे सद्गुणों का झूठा आवरण ओढ़ लेते हैं। इस मिथ्याचरण की तह में छिपे कारणों को आत्मनिरीक्षण द्वारा दूर करके जीवन में प्रेम, उपकार, सेवा आदि निर्माण-प्रधान प्रवृत्तियों को प्रमुख होने का अवसर दीजिये—यही मेरी सलाह है।

★

पत्नी : अगर आपमें इस कदर पीने की लत न होती, तो अब तक जनरल मैनेजर बन गये होते।

पति : तो क्या हुआ। अब भी जब मैं एक जाम पी लेता हूं, तो मैनेजिंग डाइरेक्टर बन जाता हूं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीतर का टापू

अभी कल मैं बंबई के एक विशाल राजमार्ग के मध्य खड़ा था। मेरे चारों ओर मानव-प्रवाह उतावली से बहता चला जा रहा था। वाहनों की अपार भीड़ थी, वातावरण में प्रचंड कोलाहल मचा था। दूर से आती हुई बस झटके के साथ आगे बढ़ गयी। पीछे से एक कार आयी, तेजी से मोड़ लेकर फर्राटे से निकल गयी और अंदर बैठी हुई सुंदरी की सुगंध बिखरा गयी। अनेक छोटे-छोटे स्कूली बच्चे चुलबुलाते हुए पास से गुजरे।

मैं सबके बीच शांत खड़ा था – सबसे अलिप्त, अछूता। विशाल राजमार्ग के बीचों-बीच 'ट्रैफिक आइलैंड' पर मैं जलकमलवत् खड़ा सब कुछ देखता जा रहा था।

ट्रैफिक आइलैंड! अनेक गति-प्रवाहों से धड़कते हुए राजमार्ग के बीच शांति और स्वस्थता का स्थान। यहां खड़े होकर मानव-प्रवाह में बहे बिना उसे निहारा जा सकता है। सबके बीच रहते हुए भी यहां आप दो क्षण अपने आप से बातें कर सकते हैं।

मैं सोचने लगा–प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर एक 'आइलैंड'का, एक द्वीप का निर्माण करना चाहिये। जीवन का व्यापार विषम है, अटपटा है। त्रिविध ताप मनुष्य की चेतना को मार डालते हैं। आर्थिक और सामाजिक प्रश्न, व्यक्तिगत सुख-दुःख, काबू के बाहर के संयोग–ये अच्छे-से-अच्छे आदमी की हिम्मत तोड़ डालते हैं। मनुष्य व्यग्र हो उठता है, दिशा भूल जाता है। सो अपने दिल में एक कोठरी हो, जहां बाहर की विषैली हवा प्रवेश न कर सके, जहां शांति और प्रसन्नता का अखूट झरना झरा करता हो, तो कितना अच्छा रहे! तब हमारे भी हृदय में एक ट्रैफिक आइलैंड–एक टापू–होगा, जहां हम दुनिया की भाग-दौड़ से अछूते रहकर शांति प्राप्त कर सकेंगे।

हर एक को अपने भीतर कोई शांतिस्रोत खोजना चाहिये, या उसका निर्माण करना चाहिये। कला-प्रवृत्ति, वाचन, प्रकृति-दर्शन, फुलवाड़ी–किसी में अपने को डुबा दीजिये। जब आप उसमें से बाहर निकलेंगे, अपने को और अपनी दुनिया को बदला हुआ पायेंगे।

मेरी बूढ़ी दादी-अम्मा रोज लड़खड़ाती, लठिया टेककर चलती हुई मंदिर के आंगन में जा बैठती थी। मुझसे वह कहा करती–"बेटा, रामजी मेरे सामने देखकर बड़ी मीठी हंसी हंसा करते हैं। जी करता है, बस यहीं बैठी रहूं।"..... दादी-मां अपनी दोनों आंखें मोतिया-बिंद में गंवा चुकी थी; इसलिए बच्चा होते हुए भी मैं उसकी इन बातों को महज मूर्खता समझा करता था। लेकिन आज समझ रहा हूं, दादी-अम्मा का राम बाहर नहीं था। वह तो उसके भीतर था ..... एक ट्रैफिक आइलैंड था ..... जहां से झरते हुए मधुर हास में नहायी हुई दादी-अम्मा अपंग होते हुए भी सुखी थी।

–इ० म०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

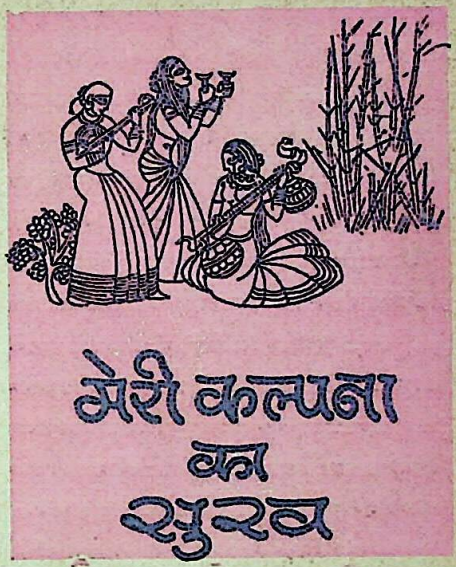

मैं जहां भी रहूं, जैसे भी रहूं, कर्म और मौन में मेरी आस्था अटूट रहे। अनुशासन मेरा संबल हो। अवकाश के समय मुझे अच्छी पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध होती रहें। —हरिप्रसाद खेमानी

०००

मेरी कल्पना का सुख है अपनी जन्म-भूमि में बसकर आखिरी वक्त तक जनता-जनार्दन की निःस्वार्थ सेवा में रत रहना, ग्राम-पंचायत में भाग लेकर उसे गुटबंदी से मुक्त कराना, गोसेवा करना, हरिजनों को निःशुल्क पढ़ाना और एक सत्संग-भवन का निर्माण करवाना। —पूर्णेंदु मालचंदका

०००

मेरी धर्मपत्नी का नाम 'कल्पना' है। उसका सुख ही मेरी कल्पना का सुख है। —जगदीश शर्मा

०००

जीवन के आवश्यक कार्य-कलापों के अलावा मैं अपना समय तीन बातों में लगाना चाहता हूं—मित्रों से मिलना-जुलना, संगीत सुनना और साहित्य का अध्ययन करना। —कालू 'किशोर'

०००

मैंने आदर्श नारियों और विभिन्न कहानी-नायिकाओं के चरित्रों से भारतीय संस्कृति की प्रतीक एक आदर्श नारी की सृजना की है; और मैं उसका प्रतिरूप बनना चाहती हूं। —मीना खंडेलवाल

०००

क्या यह संभव नहीं हो सकता कि मैं समस्त मानव-जाति के अभावों को दूर कर सकूं और जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता हो, उसे तत्काल उपलब्ध करा दूं। यदि हो सके तो मानवता के बीच से दुःख-दैन्य मिट सकेगा—फिर न कोई बड़ा होगा, न छोटा। —देवीप्रसाद शर्मा

०००

मैं वह माली हूं, जिसे पौधा लगाना तो आता है; लेकिन सींचना नहीं।..... मैंने अब तक जीवन में जो कुछ पाया है, वह बदले की भावना से। लेकिन अब मैं उस ज्ञान का भूखा हूं, जिसमें दुःख, भूख और प्यास तो हमेशा हो, लेकिन सुख रत्ती-भर भी न हो। —गिरीश च० श०

०००

आस्तिक एक सर्वोच्च दैवी शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करता है; लेकिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नास्तिक उसे अंधविश्वास के रूप में मानता है। मैं इस पहेली को सुलझा सकूं—यही मेरी कल्पना का सुख है। —उत्तमचंद छल्लानी

०००

मैं एक ऐसी कक्षा में शिक्षिका के रूप में खड़ी होऊं, जो प्रकृति की गोद में हो और जहां विहंसते हुए भारत मां के नौनिहाल बैठे हों। दूध की तरह धुला हृष्ट-पुष्ट उनका शरीर हो, नेत्रों में जिज्ञासा हो, चेहरे पर अपनत्व की रेखाएं उभरी हों। मेरे शब्द उनके हृदय की गहराइयों में उतरते जायें, एक नये जोश, एक नये उत्साह का संचार होता जाये और वे नौनिहाल भारत मां के अश्रु पोंछने बढ़ चलें, जहां-जहां जायें, वहां ज्ञान का दीप जलाते जायें—ज्ञान का ऐसा अखंड दीप, जो तूफानों में भी प्रज्वलित रहे और युगों-युगों तक भटकते मानव को राह दिखाता रहे। —कांता बंसल

०००

मैं अपने वर्तमान जीवन में संतुष्ट रहूं और आज के भयंकर भौतिकतावादी युग में भी अतीत की अध्यात्मिकता की उपेक्षा न करूं। जो कुछ पाया है, उसे दूसरों को सहस्र बार सहर्ष दे सकूं। —लक्ष्मीचंद्र 'सरोज'

०००

अपने गांव के पास हरियाले वृक्षों तले भारतीय संस्कृति का प्रतीक रूप एक ऐसा आश्रम बनाऊं, जो शांति-निकेतन, अरविंद-आश्रम और वनस्थली विद्यापीठ से भी बड़ा हो। —फकीरचंद त्यागी

०००

मैं ऐसे जीवन में सुख की कल्पना करता हूं कि मेरे देहांत की खबर सुनकर कम-से-कम एक हजार लोग शोकमग्न हों, एक सौ से ज्यादा लोग मेरी अंतिम-यात्रा में भाग लें और आपस में मेरी चर्चा करें, तो कहें कि एक गुणवान व्यक्ति संसार से उठ गया। —हरिहर दुरैस्वामी

०००

मैं चाहता हूं कि मेरे पास इतना अधिक कार्य रहे कि मुझे भोजन तथा विश्राम के लिए भी कठिनाई से अवकाश मिले और श्रीमतीजी मेरी वह व्यस्तता देखकर झुंझलायें। —उपदेश बहादुर माथुर

०००

सुबह चार बजे। वसंत की मीठी बयार और मैं पत्नी की बंद आंखों को देख रहा हूं, बड़ी अच्छी लग रही है इस समय। मैं खो जाता हूं ..... "गोपा, तुम्हें छोड़कर सिद्धार्थ को जाना ही होगा। तुम्हारे प्यार के बदले मैं तुम्हें कष्ट ही दे पाऊंगा।..... दूर वन-प्रांत में पहुंच जाता हूं। समझ में नहीं आता, यहां इतने नर-कंकाल कैसे आ गये? ठीक तभी यशोधरा भी उपस्थित होती है मेरे सामने। सूनी सेज पर रोती-बिलखती, चुपचाप! उन नर-कंकालों के बीच मैं भी आ गया हूं, मगर मेरे हाथ में सिद्धि के नाम पर क्षार मात्र है। गिड़गिड़ाता हूं—"प्रभु, मुझे एक बार फिर से उस जीवन में वापस भेज दो। मेरा तो योग-भोग दोनों ही नष्ट हो गया। न मैं सिद्धि पा सका, न जीवन को ही भोग सका। मुझे इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिशंकु की स्थिति से बाहर करो। मेरा लोक और परलोक दोनों ही मुझसे मत छीनो मेरे प्रभु! .....और फिर आवेश में पत्नी को, जो कब से जगकर मुझे एकटक देख रही थी, बांहों में भर लेता हूं। वह डांटती है—"पागल हुए हैं क्या?" मेरी तंद्रा टूट जाती है। —सूर्यनाथ गोप

०००

मैं कब इस लायक होऊं, जब सदा मुसीबतों में मुसीबतें सहकर भी मुझे उच्च-से-उच्च शिक्षा दिलवाने में प्रयत्नशील अपनी ममतामयी मां और विशाल-हृदय पिता की कुछ सेवा कर सकूं। —राजकुमार

०००

मेरी कल्पना के भारत में साहित्यकारों और स्वतंत्रता-संग्राम के क्रांतिकारियों के योगदान का उचित मूल्यांकन होगा। सावरकर, सुभाष, बिस्मिल, भगतसिंह और चंद्रशेखर आजाद आदि को वही सम्मान दिया जायेगा, जो गांधी-नेहरू को मिला है। —गिरीशचंद्र प्रसाद

०००

सभी लोग हंसकर, एक दूसरे की पीड़ा बांटकर और एक परिवार के सदस्य के समान सुख से जियें, तो क्या आपत्ति है? क्या मानवता से भी बढ़कर कोई पुनीत नाता है? न जाने 'वसुधैव कुटुंबकम्' कब चरितार्थ होगा? —रामचंद्र ठाकरान

★

मनुहार गीत

उठे थिरकते मादल के स्वर मीठी मनुहारों के गीत
मन के तानपुरे पर जागा तेरी सांसों का संगीत ।।
तू जिसके शहतूती अधरों पर मिठास की मोहक हलचल
गदरायी अंबिया-सी देही, आषाढ़ी मेघों - से कुंतल
पुतली के पलने में सपने-खिले कपोलों में पलाश-वन
गुलमोहर यादों की टहनी, चहकी सोनचिरैया प्रीत,
मन के तानपुरे पर जागा तेरी सांसों का संगीत ।।
स्निग्ध धूप-सी जार्जेट पर मखमल के बूटों-से बादल
ओढ़े अगहन की दोपहरी तेरी याद दिलाती प्रतिपल
पहनाये बीती घड़ियों को संझाने सुधियों के कंगन
मन के तुलसी-चौरे कोई जला गया नन्हा-सा दीप ।
उठे थिरकते मादल के स्वर मीठी मनुहारों के गीत ।।

—रामविलास शर्मा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहमद गुलजार

मेरी बच्ची अरजुमंद स्कूल से बहुत पहले आ गयी। उस दिन मेरे दफ्तर में छुट्टी थी और मैं अपने कमरे में बैठा कुछ किताबें देख रहा था। उसे यों अचानक लौटते देखकर मैं जल्दी से बरामदे में पहुंचा और पूछने लगा—"क्यों बेटी, इतनी जल्दी आने का कारण...?"

इतना पूछना था कि अरजुमंद की आंखों से टपटप आंसू बहने लगे और वह भागती हुई अपने कमरे की तरफ चली गयी। मेरी बीवी को मरे पूरे दस साल हो चुके हैं। चूंकि मां बीच में नहीं है, इसलिए मेरी बच्ची अब सयानी होकर मुझसे दूर हो गयी है। यों जब वह अपने कमरे में भाग गयी, तो मैंने उसका पीछा करना ठीक न समझा और उसकी फूफी के कमरे में चला गया। वह सी रही थी। मुझे देखकर कुछ चकित-सी हुई।

"क्यों! क्या बात है? कुछ घबराये हुए से लगते हो!"

"अरजुमंद स्कूल से आ गयी है।"

"हैं!" वह मशीन छोड़ते हुए बोली—"इस वक्त? वजह क्या है?"

"मुझे तो देखते ही वह अपने कमरे में भाग गयी। आप जाकर जरा मालूम करें। यही कहने आया था।"

मेरी बहन जल्दी से उठी और अरजुमंद के कमरे में चली गयी। थोड़ी देर के बाद जब वह बाहर निकली, तो उसका रंग उड़ा हुआ था और वह बहुत डरी हुई सी दिखाई देती थी।

"भाई जान, जरा अंदर तशरीफ लायें।"

मैं अंदर चला गया। अरजुमंद लगातार रोये जा रही थी। मैंने धीरे से पूछा—"क्या बात है, बेटी?"

लेकिन उस पर रोने का ऐसा दौरा था कि मुझे जवाब तो क्या देती, उलटा और सिसकियां भरकर रोने लगी।

मेरी बहन ने बहुत धीरे-से कहा—"स्कूल में अरजुमंद के साथ एक अजीब घटना हुई है आज।"

"क्या?"

"यह क्लास में थी कि एकदम इसके सिर से आवाजें आने लगीं।"

"आवाजें! कैसी आवाजें?" मैंने हैरानी से पूछा।

"जैसे कोई छाती पीटता है। जैसे किसी की कमर पर धमूके पड़ रहे हों।" मेरी बहन ने जवाब दिया।

"किसी लड़की की शरारत होगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मेरी बहन की आवाज में डर-सा पैदा हो गया—"नहीं भाई, मैंने भी आवाज सुनी है। बड़ी डरावनी-सी आवाज आती है, जैसे कोई किसी को मार रहा हो।"

मैं कुछ देर वहां बैठा रहा। लेकिन मुझे ऐसी कोई आवाज सुनाई नहीं दी। अरजुमंद अब भी रो रही थी। मैंने इसे भी हिस्टीरिया की किस्म समझा और अपने कमरे में चला आया। अभी मुझे वापस आये थोड़ी ही देर गुजरी थी कि मेरी बहन भागी-भागी आयी। साठ साला औरत के लिए यों भागते हुए आना एक अजीब-सी बात थी।

"आओ-आओ, देखो, अब फिर आवाज आ रही है।"

मैं भी दौड़ता हुआ अरजुमंद के कमरे में पहुंचा। सचमुच अरजुमंद में से बड़ी भयानक आवाजें आ रही थीं, जैसे कोई छाती पीट रहा हो। मैं उसके पास जाते हुए घबराता था; लेकिन बच्ची को रोती देखकर मैं उसके पास गया। यह आवाज यकीनन उसके सिर से आ रही थी।

अब तो मैं वाकई घबरा गया। यह आवाज इतनी खतरनाक और तकलीफदेह थी कि अगर मैं बाप न होता, तो घर छोड़-कर भाग जाता। लेकिन मुश्किल यह थी कि अरजुमंद को इस हालत में छोड़कर जाना मेरे लिए मुमकिन न था। मुझे और तो कुछ न सूझा, जल्दी से अपने कमरे में पहुंचकर अपने दोस्त अरशद को फोन किया। जिस वक्त मैंने चोगा उठाया, उस वक्त यह बात मेरे ध्यान में भी न थी कि अरशद डाक्टर

मेरा इष्ट

कोयल ने पुकारा,
मैं न बोला।
थक-हारकर,
कोयल चुप हो गयी—
रूठ गयी।

तब, हल्के बुद-बुद स्वर
मैंने कहा :
सुनो कोयल,
मैं कांटा हूं,
ऊपर से नीचे तक
तीखा-नुकीला कांटा।

कोयल मुस्कायी
लजायी
टहनी की ओट ले फिर बोली :
तभी तो
तुमको पुकारती हूं मैं,
कांटे से कांटा निकालना ही
इष्ट मेरा! — रवींद्र अमर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी है और उससे मशविरा कारआमद साबित हो सकता है। मेरी बात सुनकर वह कहने लगा—"फिक्र न करो, कई बार ऐसे 'कास्मिक' शोर आते हैं और इन्सान को महसूस होता है कि वह किसी चीज़ से आ रहे हैं।"

अब मैंने कहा—"लेकिन यह शोर तो अरजुमंद के सिर से आता है।"

अरशद ने चिंता तो जाहिर न की; लेकिन फौरन पहुंचने का वादा कर लिया।

थोड़ी देर में वह अपना बैग संभाले आ गया। उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी।

मुझे देखकर कहने लगा—"यार, तुम तो बड़े वहमी हो चले हो। अब तुम्हें चीजों से आवाजें भी आने लगी हैं। मेरा मशविरा है, शादी कर लो, तो यह सारा वहम का दफ्तर बंद हो जायेगा।"

मैंने किसी बात का जवाब नहीं दिया और उसे खामोशी के साथ अरजुमंद के कमरे में ले गया। वह अब भी रोये जा रही थी; लेकिन अब उसके सिर से वे आवाजें नहीं आ रही थीं।

अरशद उससे बोला—"कहो बेटी, क्या बात है?"

अरजुमंद ने इस दौरान कोई बात न की थी। अब अचानक वह बोली—"जी, मेरे सिर में बड़ा दर्द है।"

अरशद ने मुझसे धीरे से कहा—"देखो, मैं इसे नींद की गोलियां दे रहा हूं। तुम और आपाजान इसके पास बैठे रहना। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है।"

अरशद तो दवा देकर चला गया; लेकिन मेरी परेशानी बढ़ती गयी। अरजुमंद सो चुकी थी; लेकिन उसकी आंखों से लगातार आंसू रिस रहे थे, और वह हल्की-हल्की सिसकियां भर रही थी। अभी उसे सोये थोड़ी ही देर हुई थी कि फिर से वही आवाजें आना शुरू हो गयीं। मैंने घबराकर उसे छुआ; लेकिन वह बड़ी गहरी नींद सो रही थी। सांस भी ठीक चल रही थी। सीने को देखकर भी एहसास न होता कि वह जाग रही है।

मैंने उसकी आंखों को देखा। वे खुश्क थीं।

थोड़ी देर में ये आवाजें बहुत ऊंची हो गयीं। मैं और आपा डरकर भागने ही वाले थे कि एकदम अरजुमंद ने कहा—"ठहरो!"

मैं व आपा मानो जमीन में धंस गये।

यह आवाज मेरी मरहूम (स्वर्गीय) बीवी की थी।

अरजुमंद गहरी नींद सो रही थी। उसके होंठ बिना हिले कह रहे थे—"सुबह बहुत देर हो गयी है, बहुत ज्यादा। नजीर की रकम लौटा दो, वरना मैं आराम से नहीं सो सकूंगी।"

मैंने डर के बावजूद कहना चाहा, आवाज आयी—"मैं कुछ नहीं सुनूंगी। रकम तुम्हें लौटानी ही होगी। उनके हाथ ठीक नहीं हैं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिमाग की धार पैनी करें

चुस्त दिमाग जीवन में बहुत बड़ी नियामत है। और यहां हम दिमाग को चुस्त बनाने के चंद दिलचस्प तरीके बताते हैं।

१. डायरी रखियेः—डायरी लिखने के लिए दिन में दस-पंद्रह मिनिट अलग रख छोड़िये। विस्तार से लिखिये और बोल-बोलकर लिखिये। दिन में हुई घटनाओं का, संपर्क में आये मनुष्यों का कुछ ब्योरा लिखिये। आप पायेंगे कि आप ज्यादा बारीकी से देखने लगे हैं।

पहले देखी चीजों को फिर से दिमागी आंखों के सामने खड़ा करने की कोशिश कीजिये। इससे आपकी याददाश्त बढ़ेगी।

२. जीवन-चरित्र पढ़ियेः—जीवन-चरित्र अक्सर उन्हीं लोगों के लिखे जाते हैं, जो जमाने पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं। उनके अनुभव, कार्य, विचार और भावनाओं से हम अपने को समृद्ध बना सकते हैं।

३. हर साल एक नये विषय का अध्ययन कीजियेः—मैं एक बड़े विद्वान को जानता था, जिनका यही नियम था। वे हर रोज एक घंटा नये विषय की पढ़ाई करते थे। साल के अंत में उसके वे अच्छे जानकार बन जाते थे। उनके दिमाग की सजगता ने भी मुझे बहुत प्रभावित किया। वे बड़े हाजिरजवाब थे; हर प्रसंग में कोई नयी और उपयोगी बात विनोदपूर्ण ढंग से कह सकते थे।

शायद हममें से सब पूरा एक घंटा निकाल न सकें। लेकिन आधा घंटा भी कम नहीं।

४. नयी डिग्री प्राप्त करने की कोशिश कीजियेः— किसी ऐसे विषय में, जो आपको पसंद हो और जिसे पढ़ने से आपकी योग्यता बढ़ती हो, डिग्री या डिप्लोमा लेने का संकल्प कीजिये। अगर यह विषय आपके पेशे से जरा हटकर हो और इसलिए सिर्फ वेतन बढ़ने का लालच सामने न हो, तो और अच्छा।

ऐसा संकल्प करना मानो अपने आपको चुनौती देना है। और इसका असर यह होगा कि आपका दिमाग ज्यादा चुस्त हो जायेगा।

५. किसी कला में दिलचस्पी लीजियेः— यह दिमाग को चुस्त बनाने के सबसे आनंददायी उपायों में से है। इससे आपकी सारी जिंदगी खुशबू से भर जायेगी।

सोचकर देखिये कि कौन-सी कला आप को सबसे ज्यादा रुचती है—संगीत, साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला, नाटक या नृत्य?

मान लीजिये, आपने चित्रकला चुनी है। लेकिन चित्रकला तो एक समुद्र है! कहां से तैरना शुरू कीजियेगा? कितना तैरियेगा?

अच्छा यह है कि जो आपके मन को मोह ले, ऐसी कोई एक शैली चुन लीजिये। बेहतर होगा कि उस शैली में भी किसी एक नामी कलाकार को चुन लें। वे नंदबाबू, हेब्बार और बेंद्रे जैसे जीवित स्वदेशी कला-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ार भी हो सकते हैं, रेंब्रांट और वानगाफ ही तरह विदेशी और पुराने भी।

पुस्तकालयों में इन पर जितनी किताबें मिलें, पढ़िये। इनके चित्रों के जितने संकलन मिल सकें, ध्यान से देखिये—बार-बार आनंद लेकर देखिये। उनके चित्रों की आपके शहर में या उसके आस-पास कहीं प्रदर्शिनी लगे, तो जाकर देखिये।

कई बार तो एक-एक चित्र भी एक महाकाव्य बन जाता है। उसकी खूबियों को पहचानिये। उससे झरते हुए रस को छककर पीजिये। आपका चित्त मंजेगा, दिमाग निखरेगा। आप पायेंगे कि कला किस तरह बंधे-बंधाये कगार तोड़कर नया पाट खोजती है और सुंदरता की नयी दुनिया सृजती है।

६. अपनी नौकरी या व्यापार में दिलचस्पी लीजिये :— अपने रोजमर्रा के काम-काज में आप जितनी ही दिलचस्पी लेंगे, वह उतना ही दिलचस्प लगेगा। किये बिना चारा नहीं, यह सोचकर काम मत कीजिये।

अपनी नौकरी, अपने दफ्तर या फर्म के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी हासिल कीजिये। कोई चीज अमुक ढंग से ही क्यों की जाती है, इसके कारण का पता लगाइये। सोचकर देखिये कि क्या वही चीज दूसरे किसी ढंग से कम खर्च में, ज्यादा आसानी से व अच्छी तरह से की जा सकती है?

इस तरह रोजगार आपके लिए एक अनिवार्य झंझट न रहकर अपनी क्षमताओं को बढ़ाने का सुंदर साधन बन जायेगा।

७. बातचीत में रस लीजिये:— बहुत से लोग बातचीत से कतराते हैं। चार लोग में बैठते ही उनकी जबान जकड़ जाती है। कोशिश करके देखिये, जबान खुल जायेगी। जरूरत है, आत्मविश्वास की।

यकीन मानिये, आपको भी बोलने का उतना ही हक है, जितना कि दूसरों को। और कोई जरूरी नहीं कि आप जो कुछ बोलें, वे अमर सूक्तियां ही हों।

सहज रहिये। जो आप सोचते हैं, महसूस करते हैं, दूसरों के सामने रखिये—ईमानदारी से। हो सकता है, दूसरे आपसे सहमत न हों। कोई बात नहीं। हर मामले में सबका सहमत होना लाजिमी या संभव नहीं है।

अगर आप सहजता से, बिना शब्दाडंबर के अपने विचार पेश करेंगे, तो सुननेवाले आपकी कद्र करेंगे, आपको अपनी गोष्ठी का आदमी समझेंगे। आपको भी उनकी बातें सुनने और उनसे सीखने का मौका मिलेगा। बतरस षड्रसों से भी ज्यादा स्वादिष्ट होता है। परंतु हां, उसमें परनिंदा का विष न घोलिये।

८. किसी कौशल या खेल में माहिर बनिये, 'हाबी' का विकास कीजिये:— किसी खेल, हुनर या 'हाबी' में दक्षता पाने के लिए अनुशासन, मेहनत और दिमागी व शारीरिक मेहनत जरूरी है। और यह दिमाग को तेज बनाने का अच्छा व्यायाम है।

इन उपायों की आजमाइश करके देखिये, आप पायेंगे कि दिमागी चुस्ती में आप अपने किसी भी बुद्धिमान दोस्त या सहोद्योगी से कम नहीं हैं।

—वि० प्र०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया की दौलत पांच आदमियों की मुट्ठी में

फ्रांसिस कूपर

लंदन शहर में पांच व्यापारी एक दफ्तर में आकर बैठते हैं। छुट्टी का दिन छोड़कर उनकी यह बैठक रोज होती है। पांचों अपनी-अपनी कुर्सी पर जमे हैं। हर एक की डेक्स पर है एक टेलिफोन और एक चूल-छल्लेवाला स्टैंड, जिस पर इंग्लैंड का राष्ट्र-ध्वज छोटा-सा यूनियन जैक लगा है। ये लोग बातचीत कर रहे हैं कि इतने में किसी का फोन आता है। जिसका फोन है, वह फोन उठाता है, बाकी लोगों की आंखें उसके सामने के यूनियन जैक पर लगी हैं। चाहे वह झंडा ऊंचा करे या झुकाये, उसकी प्रतिक्रिया फौरन होगी—मिनिटों के भीतर अंतर्राष्ट्रीय अर्थ-स्थिति पर या तो बादल छा जायेंगे या उस पर चमक आ जायेगी।

बात यह है कि ये लोग सोने का भाव तय कर रहे हैं। यह इनका रोजमर्रा का काम है और इसे ये बंधे हुए नियमों के अनुसार और पारंगत पुजारियों के-से ठाट-बाट के साथ करते हैं। ये लोग संसार के उन सर्वशक्तिशाली व्यक्तियों में हैं, जिनके हाथ में विश्व की आर्थिक गतिविधि की बागडोर है। संसार का स्वर्ण-व्यापार इनके हाथों की कठपुतली है, यही उसको मार्ग दिखाते हैं। फिर भी मजे की बात यह है कि इनमें से कोई भी सरकारी अधिकारी या प्रतिनिधि कतई नहीं है।

आज विश्व के अधिकांश देशों में नागरिकों को सोना खरीदने, बेचने या संग्रह करने की मनाही है। सिर्फ गहनों या स्वर्ण-मुद्रा के रूप में ही इसे खरीदने की छूट है। पर यदि आप इसे पिघलाते हैं, तो कानून तोड़ते हैं।

संजीदा वस्त्रधारी ये पांचों व्यक्ति लंदन की पांच सबसे बड़ी स्वर्ण-व्यापारी फर्मों के प्रतिनिधि (दलाल) हैं। प्रतिदिन ये लोग साढ़े दस बजे इस दफ्तर में आकर बैठते हैं। कभी-कभी ये लोग गुप्त बैठक भी करते हैं, अगर हालत का तकाजा हो, जैसा कि १९६० में था। सोने का भाव आसमान को जा रहा था। स्वर्ण-व्यापारियों के शब्दों में, उन दिनों सोने के लिए रेल-पेल मची हुई थी।

देखा जाये तो व्यावसायिक तौर पर ऐसा नहीं होता कि जो भाव इनकी बैठक में तय होते हों, वही सुदृढ़ रहते हों। ये लोग तो बेचना शुरू करने का भाव तय करते हैं और यह पिछले दिन के आंकड़ों पर आधारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है । जैसे ही ये पांचों अपना पारस्परिक व्यापार पूरा करते हैं, बाजार में विनिमय शुरू हो जाता है ।

इन लोगों के पारस्परिक विनियम संबंधी निर्णयों में पांचों झंडे प्रथानुसार हाथ बंटाते हैं । एक दलाल जब अपना झंडा झुकाता है, तो इसका अर्थ होता है कि वह खरीदने या बेचने को तैयार है । जब उसका झंडा ऊंचा उठा हुआ होता है, तब उसके सामने यह अवसर होता है कि वह खरीद-फरोख्त के बारे में सोच-विचार और अपनी फर्म से पूछताछ कर ले ।

हालांकि खुले बाजार में यहां से भी बड़े-बड़े सौदे होते हैं; पर भाव तय करना बहुत महत्वपूर्ण है । इससे बाजार को एक माप-दंड मिल जाता है । इन पांच व्यक्तियों में से एक बैंक आफ इंग्लैंड का प्रतिनिधि है । क्योंकि यह बैंक सोने का प्रमुख पूर्तिकर्ता है, नियत भाव पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है ।

लंदन का भाव और स्थानों के भावों की अपेक्षा संभवतः सबसे ज्यादा महत्व का होता है । कारण, संसार के सारे मुक्त स्वर्ण-व्यापार का तीन-चौथाई लेन-देन लंदन शहर में होता है । दूसरे सक्रिय बाजार हैं—पेरिस ज्यूरिच, फ्रैंकफर्ट, मेक्सिको सिटी और हांगकांग ।

न्यूयार्क स्वर्ण-विनिमय की दृष्टि से संसार का प्रमुख सरकारी बाजार है । वहां विदेशी मुद्रा-अधिकारी, यथा—सरकारें और केंद्रीय बैंकों का लेन-देन होता है ।

लेकिन ब्रिटेन में विश्व का ७५ प्रतिशत सोना लगातार गतिशील रहता है, सोना राष्ट्रमंडलीय देशों में आता है । इस प्रकार ब्रिटेन संसार का सबसे बड़ा पूर्ति कर्ता है ।

लंदन न केवल केंद्रीय बैंकों के साथ व्यापार करता है, बल्कि निजी संस्थाओं और व्यक्तियों से भी उसका लेन-देन चलता है । यद्यपि अधिकांश देशों में सोना इकट्ठा करने के व्यक्तिगत अधिकार सीमित हैं, फिर भी लोग कानूनों के बावजूद राह निकाल ही लेते हैं, और सोने का तस्कर व्यापार और संग्रह चलता ही रहता है ।

संयुक्त राज्य का ही उदाहरण लीजिए । वहां सोना खरीदना या इकट्ठा करना अवैध है; पर यदि अमरीकी विदेशों में ऐसा करें, तो इसे रोकने के लिए अमरीकी कानून में कोई व्यवस्था नहीं है ।

सोना जमा करना, किसी देश-विशेष का ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय सिरदर्द है । अनुमानतः १५,००० टन अर्थात ५७,५० लाख पौंड मूल्य का सोना दुनिया के लोगों ने अपने घरों या बैंकों में जमा करके छिपा रखा है । इसकी उपयोगिता भी कुछ नहीं है । कारण अवैध, रूप से छिपाया हुआ होने के कारण इसे खुले रूप में अच्छी कीमत लेकर कभी नहीं बेचा जा सकता । मगर हिसाब लगाकर देखें, तो बेल्जियम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, कैनेडा, स्विट्जरलैंड और स्पेन की सरकारों के पास कुल मिलाकर जितना सोना है, संसार में अवैध और छिपे सोने की राशि उससे ज्यादा है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवैध संग्रह को रोकने के लिए, बेचे हुए सोने के हर औंस का हिसाब लिया जाता है। सर्राफों और सुनारों द्वारा काम में लाये हुए सोने की राशि पर कड़ी निगरानी रखी जाती है। दांत के डाक्टर से भी सोने का हिसाब लिया जाता है।

लंदन विश्व का प्रमुख स्वर्ण-बाजार है, फिर भी वहां ज्यादा सोना वास्तव में संगृहीत नहीं रहता। संसार का सबसे बड़ा स्वर्ण-भंडार जमीन के ८० फुट नीचे है न्यूयार्क के मैनहैटन में। वहां लोग फेडरल रिजर्व बैंक के तहखानों (वाल्ट) में लगभग ४ अरब १७ करोड़ ८५ लाख पौंड के सोने की छड़ें रबर-टायरवाले ट्रकों में लादकर इधर से उधर लुढ़काते रहते हैं। यह सोना ७० से भी ज्यादा देशों का है। नित्य एक देश की तिजोरी से दूसरे देश की तिजोरी में सोना पहुंचाने का काम देखने में तो बहुत सीधा-सादा है; पर वस्तुतः यह अंतर्राष्ट्रीय अर्थस्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है।

होता यह है, यदि एक देश किसी दूसरे देश के साथ अपना व्यापारिक देना-पावना चुकता करना चाहता है, तो इसके लिए बैंक को आदेश दे दिये जाते हैं कि वह सोने की छड़ों की अमुक संख्या अमुक देश के भंडार में जमा करा दे। बैंक तदनुसार सोने की छड़ें देनदार देश के तहखाने से लेनदार देश के तहखाने में पहुंचा देता है।

हर देश के तहखाने का दरवाजा ९० टन का, शंकु के आकार का और इस्पात का बना हुआ है। हर दरवाजे पर कई पेचीदे ताले जड़े रहते हैं। किसी एक व्यक्ति को तमाम तालों के खुलने का राज मालूम नहीं होता। सुरक्षा-व्यवस्था का तो यहां कोई अंत ही नहीं है। फिर भी जिस तरह आप अपने बैंक-मैनेजर से अपने पड़ोसी का 'बेलेंस' मालूम कर सकते हैं, उसी तरह यहां भी यह पता लगा सकने की संभावना रह जाती है कि फेडरल रिजर्व बैंक में ब्रिटेन, या फ्रांस या किसी अन्य देश का कितना सोना जमा है।

★

हफीज जालंधरी के सिर पर बाल नहीं थे। किसी खुशमिजाज दोस्त ने उनसे पूछा—"हफीज साहब! सिर पर बाल न होने से कोई तकलीफ तो नहीं होती?"

"तकलीफ क्या होनी है!" हफीज ने जवाब दिया,—"अलबत्ता वजू करते वक्त यह मालूम नहीं होता कि मुंह को कहां तक धोना है।"

★

शाहजहांपुरी नूह नारवी के स्वागत में आयोजित मुशायरा जब हो चुका, तो नूह साहब को उनके मुकाम पर पहुंचाने के लिए सवारी के आने में कुछ विलंब हो गया। नूह साहब की परेशानी देखकर उनके एक प्रशंसक ने कहा—"घबराइये नहीं, किबला। जहां फरमायेंगे, अपने सिर पर बैठाकर आपको छोड़ आऊंगा।" नूह साहब ने घबराकर पूछा—"क्या मैं भी गुनाहों की गठरी हूं।"

—केदार उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये हैं दुनिया के दस आश्चर्य

'कैथलिक डाइजेस्ट' में प्रकाशित एक लेख का दामोदर शर्मा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

ईसा पूर्व दूसरी सदी में सिडोन के निवासी एंटिपैटर ने पुरानी दुनिया के सात आश्च गिनाये थे। ये सातों ही वास्तुशिल्प के चमत्कार थे। लेकिन आधुनिक विश्व आश्चर्य चिंतन के चमत्कार हैं, जैसे—कोई समीकरण, या गणित का कोई सिद्धांत आदि और सामान्य आदमी तो इन आश्चर्यों को बहुधा पहचान भी नहीं पाते।

दुनिया को नया रूप देने में निरत कई अमरीकी वैज्ञानिकों और तंत्रज्ञों ने क ऐसी दस चीजों का वर्णन किया है, जिन्हें वे आज की दुनिया के दस आश्चर्य मानते हैं

१. क्रांतिकारी समीकरण :— मेरी कल्पना का सबसे बड़ा वैज्ञानिक चमत्क है—वे चार समीकरण, जिन्हें पहले-पहल १८६४ में जेम्स क्लार्क मैक्सवेल ने लिखा था

वैज्ञानिकों ने पिछले सौ वर्षों में इन संकेतों में कितने चमत्कार देखे हैं, और अ भी वे कितने चमत्कार देखेंगे— यह सोचकर मैं अक्सर चकरा जाता हूं। इन समीकरणों

$$\left(\frac{\partial s}{\partial v}\right)_T = \left(\frac{\partial p}{\partial T}\right)_v,$$

$$\left(\frac{\partial s}{\partial p}\right)_T = -\left(\frac{\partial v}{\partial T}\right)_p,$$

$$\left(\frac{\partial s}{\partial v}\right)_p = \left(\frac{\partial p}{\partial T}\right)_s,$$

$$\left(\frac{\partial s}{\partial p}\right)_v = -\left(\frac{\partial v}{\partial T}\right)_s,$$

मैक्सवेल क य चमत्कारी समीकरण इंजीनियरी में 'चार मक्सवैल' कहलाते हैं।

मैक्सवेल को बिजली और अन्य ऊर्जाओं की गति का र दिखाई दिया, जिसके आधार पर उन्होंने विद्युत-चुंबक तरंगों के अस्तित्व की भविष्यवाणी की। बाद में हाइनरी हर्ट्ज ने १८८४ में विद्युत-चुंबकीय तरंगों का अस्तित्व सि कर दिखाया।

मार्कोनी को इन समीकरणों में रेडियो दिखाई दि दूसरों को इनमें टेलिविजन, राडार, माइक्रोवेव तथा इल रेड संवाद-प्रेषण विधियां, लेजर और मेजर तथा आ आकाशयानों को चलानेवाले कितने ही यंत्र दिखाई दिये।

ये चमत्कारी विद्युत-चुंबकीय तरंगें शून्य अवकाश भी—जहां कुछ भी नहीं है—भरी हुई हैं और इसलिए मनुष्य के भेजे हुए संदेशों को सारे ब्रह्मांड में पहुंचा सक हैं। ये मानव-शरीर में भी व्याप्त हैं और हमारे हृदय ह नाड़ी-तंत्र की संचालक शक्तियां हैं। चिंतन-प्रक्रिया में मस्तिष्क की विद्युत-चुंबकीय तरंगों का हाथ है।

आज ब्रह्मांड के भौतिकीय स्वरूप के विषय में वैज्ञानिकों को जो भी ज्ञान है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब इन विद्युत-चुंबकीय तरंगों पर निर्भर है। और इन तरंगों का सिद्धांत निहित है मैक्स-वेल के समीकरणों में।

— डा० अर्न्स्ट वेबर

(अध्यक्ष, पालीटेक्नीक इंस्टिटचूट, ब्रुकलिन, न्यूयार्क)

२. इलेक्ट्रान-खुर्दबीन :— जर्मनी के डा० अर्न्स्ट रस्का और अमरीका के डा० जेम्स हिलीयर की प्रतिभा की कृपा से मानव-जाति को इलेक्ट्रान-खुर्दबीन प्राप्त हुई है, जो रोगों तथा जीवन के रहस्यों के अध्ययन का सबसे सशक्त साधन है। इसका निर्माण पहले-पहल १९३७ में किया गया। यह चीजों को दो लाख गुना बड़ा करके दिखा सकती है, जबकि सामान्य खुर्दबीन अधिक-से-अधिक दो हजार गुना ही बड़ा करके दिखाती है।

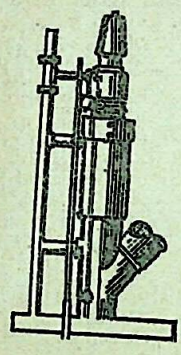

इस खुर्दबीन के नीचे वाल शहतीर जितना बड़ा दिखाई देता है।

इसकी सहायता से वैज्ञानिक अब तक नहीं देखे गये अनेक प्रकार के विषाणुओं को देख सके हैं, कितने ही पदार्थों की संरचना और आनुवंशिक गुणों (हेरिडिटी) के संक्रमण की रीति का परिचय पा सके हैं। इसके द्वारा कैन्सरीय कोश और स्वस्थ कोश की तुलना की जा रही है, कैन्सर और विषाणुओं के आपसी संबंध को समझा जा रहा है। वैज्ञानिक इसकी मदद से एक इंच के दो करोड़वें भाग जितनी सूक्ष्म दूरी पर रखे हुए दो कणों को साफ अलग-अलग देख सकते हैं। इसके नीचे वाल भी चीड़ के तने के बराबर दिखाई देता है। इलेक्ट्रान खुर्दबीन प्रकाश के बदले इलेक्ट्रान-धारा का और सामान्य लेन्स के स्थान पर विद्युत-चुंबकीय लेन्स का उपयोग करती है।

—डा० व्लादीमीर के० ज्वोरिकिन

(इलेक्ट्रान-खुर्दबीन के प्रमुख विकासकर्ताओं में से एक)

३. पालोमार दूरबीन :— मनुष्य के अंतरिक्ष-यात्रा आरंभ करने के एक दशक पूर्व अमरीका की पालोमार वेधशाला की २०० इंची हेल दूरबीन ने अंतरिक्ष की थाह लेना शुरू किया और पहली बार हमें इसका विश्वसनीय अंदाजा मिला कि ब्रह्मांड कितना विस्तृत और कितना पुराना है।

पालोमार वेधशाला की हेल दूरबीन

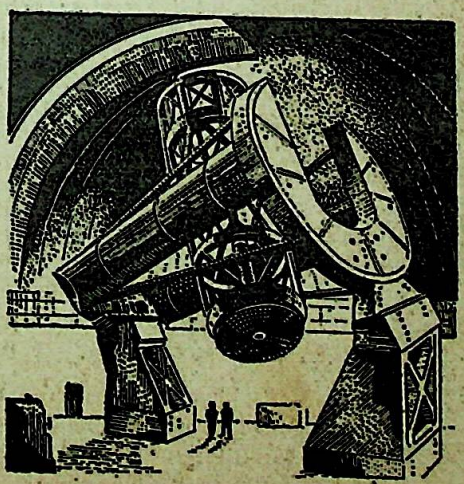

पालोमार दूरबीन ने सिद्ध किया कि नीहारिकाएं, हमारी जैसी धारणा थी, उससे कहीं अधिक बड़ी और कहीं अधिक दूर हैं। ब्रह्मांड के जिस खंड का हम निरी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षण कर सकते हैं, उसका व्यास हमारे अंदाज से दस गुना बड़ा है, और आयतन एक हजार गुना बड़ा। इससे यह भी पता चला कि हमारी आकाशगंगा और कई नक्षत्रपुंज १० अरब साल से भी पुराने हैं। हेल दूरबीन में प्रकाश को केंद्रित करने की जबर्दस्त शक्ति है। इसलिए इसका विशेष उपयोग अत्यंत धुंधली और दूरस्थ चीजों के अध्ययन के लिए किया जाता है। १९६० में इसने वैज्ञानिकों को ५ खरब प्रकाश-वर्ष दूर स्थित एक ऐसी नीहारिका दिखायी, जिससे पृथ्वी पर रेडियो-संकेत आ रहे हैं। ब्रह्मांड का यह सबसे दूर स्थित पिंड है।

—डा० इरा बाबे

(अध्यक्ष, विल्सन और पालोमार वेधशाला)

४. परमाणु-शक्ति की कुंजी :— डा० आइंस्टाइन ने सिद्ध किया कि द्रव्य और ऊर्जा परस्पर एक दूसरे में बदली जा सकती हैं; और वैज्ञानिक जगत में क्रांति की मशाल जल उठी। द्रव्य को ऊर्जा में बदलने का काम अणुभट्ठी करती है। उसमें युरेनियम-जैसी वस्तु ऊर्जा में बदल जाती है।

१९४२ में एनरिको फर्मी और उनके सहयोगियों ने शिकागो विश्वविद्यालय में प्रथम बार आणविक चेन-रीएक्शन उत्पन्न किया। ग्यारह साल बाद इडाहो रेगिस्तान के किनारे पहला अणुशक्ति-चालित इंजन चालू किया गया। इंजन अमरीकी जलसेना की पनडुब्बी 'नाटिलस' के लिए तैयार किया गया था। इसके द्वारा मनुष्य ने पहली बार अणु से मानव-नियंत्रित अणुशक्ति पर्याप्त मात्र में प्राप्त की।

आज बिजलीघर टूटते हुए अणुओं के ताप से बिजली उत्पन्न कर रहे हैं। चिकित्सा शास्त्र में रेडियो-ऐक्टिव समस्थानिक (आइसोटोप) कैन्सर से जूझने और अन्य बीमारियों के निदान में मदद कर रहे हैं। 'ट्रेसर तत्व' उद्योग और खेती में तरह-तरह की समस्याएं सुलझा रहे हैं। और जब पहला यात्री-दल पृथ्वी से मंगल या शुक्र को रवाना होगा, उसका राकेट-यान भी अणुशक्ति से ही संचालित होगा।

—चार्ल्स एच० वीव

(उपाध्यक्ष, वेस्टिंग हाउस इलेक्ट्रिक कार्पोरेशन)

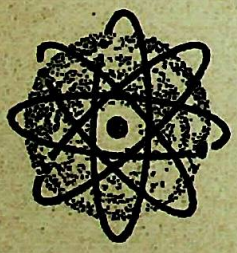

अणुशक्ति

आरंभ में हमें अणु के तीन ही कणों का ज्ञान था — इलेक्ट्रान, प्रोटान और न्यूट्रान। अब हम मेसान, न्यूट्रिनो, हाइपेरान और तीस से भी अधिक प्रकार के कणों और 'एंटीपार्टिकलों' से परिचित हैं। इस नयी नन्ही दुनिया का अन्वेषण करने के लिए हम संसार के कई विशालतम और जटिलतम यंत्रों का उपयोग कर रहे हैं। इसका उदाहरण है, ब्रूकहेवन स्थित ३०-बी० ई० वी० एक्सेलेरेटर यंत्र। अब उससे भी अधिक शक्तिशाली एक्सेलेरेटर यंत्र अमरीकी अणुशक्ति आयोग के खर्चे से स्टैनफर्ड में बनाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जा रहा है, जो दो मील लंबा होगा। इसे बनकर तैयार होने में चार वर्ष लगेंगे। परंतु दूसरे देशों के वैज्ञानिक इससे भी बड़े यंत्र की बात सोचने लगे हैं। —**प्रो० वोल्फगैंग पोनोफ्स्की**
(निर्देशक, लीनियर एक्सेलरेटर केंद्र, स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय)

५. लेजर यंत्र :— नया आविष्कार लेजर, प्रकाश द्वारा संवाद-प्रेषण के क्षेत्र में सबसे क्रांतिकारी कदम सिद्ध हो सकता है। लेजर नये प्रकार का प्रकाश उत्पन्न करता है, जिसे 'कोहियरेंट' प्रकाश कहा जाता है। दीपक आदि प्रकाश-स्रोतों से निकलनेवाले प्रकाश की तुलना स्कूली बच्चों के झुंड से की जा सकती है। छुट्टी की घंटी बजी कि वे सबके सब एक साथ बेतरतीब निकल पड़ते हैं कक्षा के दरवाजे से। 'कोहियरेंट' प्रकाश कतार बांधकर कदम मिलाकर चलनेवाले फौजी दस्ते की तरह है।

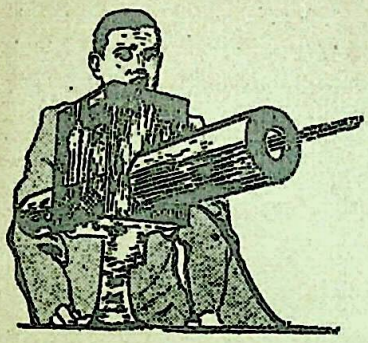
लेजर-यंत्र

'कोहियरेंट' प्रकाश कुछ-कुछ उन विद्युत-चुंबकीय लहरों के समान है, जिनके द्वारा हम रेडियो और टेलिविजन कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। पर एक महत्वपूर्ण अंतर है। लेजर से उत्पन्न प्रकाश की 'फ्रीक्वेंसी' बहुत ऊंची होती है। इसलिए एक रेडियो-चैनल पर जितनी सूचना प्रसारित की जा सकती है, उसकी तुलना में हजारों गुना अधिक सूचनाएं एक ही लेजर-किरण पर भेजी जा सकती हैं। यहां तक कहा जाता है कि इस क्षण संसार के तमाम रेडियो और टेलिविजन स्टेशन जितने भी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, वे सबके-सब कार्यक्रम एक ही लेजर-किरण द्वारा प्रसारित किये जा सकते हैं। —**डा० सी० गाइ**
(निर्देशक, जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी)

६. पिद्दीनुमा दैत्य ट्रांसिस्टर :— चौदह साल पहले बेल टेलिफोन कंपनी ने ट्रांसिस्टर के आविष्कार की घोषणा की। तब से उसके आविष्कारक को नोबेल-पुरस्कार मिल चुका है और ट्रांसिस्टर इलेक्ट्रानिक युग का पिद्दीनुमा दैत्य कहलाने लगा है।

ट्रांसिस्टर-आधारित टेलस्टार

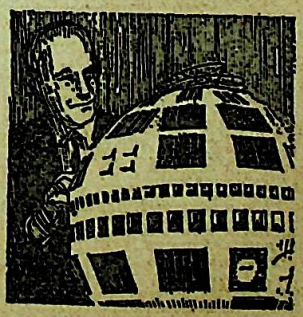

ट्रांसिस्टर एक नन्हा-सा साधन है, जो परंपरागत 'वैक्युअम' नली के बजाय, ठोस वस्तु के द्वारा बिजली के संकेतों को उत्पन्न, नियंत्रित और कई गुना प्रवर्धित कर सकता है। यह कम जगह घेरता है, कम शक्ति खपाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेलिफोन, प्रक्षेपास्त्र, उपग्रह, कंप्यूटर आदि कितने ही व्यापारिक, औद्योगिक और सैनिक इलेक्ट्रानिक यंत्रों में ट्रांसिस्टर प्रयुक्त होने लगा है। बहुत-से जटिल इलेक्ट्रानिक यंत्र, जो अब तक असंभव समझे जाते थे, ट्रांसिस्टर की मदद से संभव हो गये हैं। उदाहरण के लिए, बेल कंपनी द्वारा निर्मित 'टेलस्टार' उपग्रह में केवल एक इलेक्ट्रान नलिका १,०६४ ट्रांसिस्टर, १,४६४ डायोड और ३,६०० सोलार सेल हैं। — जैक ए० मार्टि

(उपाध्यक्ष, बेल टेलिफोन लैबोरेटरी

७. कंप्यूटरों की दुनिया :—कंप्युटर के चमत्कार पर सहसा विश्वास नहीं होता है उसने मनुष्य को अंतरिक्ष की राह दिखायी है, और वही उसे चंद्रलोक का मार्ग दरसायेगा आज कंप्यूटर आपके वेतन का हिसाब लगाते हैं, बीमे की किस्त का कार्ड तैयार करते हैं, आयकर की रकम निकालते हैं—सब कुछ पलक झपकाने जितनी देर में। बैंकों में उपयोग किये जानेवाले कंप्यूटर घंटे में ७० हजार चेक छांटते हैं, प्रति मिनिट २० लाइनों की रफ्तार से ग्राहकों के खाते का हिसाब निकालते हैं।

अब तो केक में विभिन्न पदार्थों का अनुपात तय करने, आगे उठनेवाली आंधी का मार्ग पता लगाने और अंतरिक्षगामी प्रक्षेपास्त्रों पर पड़नेवाले दबाव का हिसाब लगाने में कंप्यूटरों का उपयोग होने लगा है।

वैसे वे अभी न्यूरान कोशों से निर्मित मानव-मस्तिष्क जितने जटिल तो नहीं हो पाये हैं; लेकिन अब भी ऐसे कंप्यूटर मौजूद हैं, जो अपनी गलती आप सुधार लेते हैं और अपनी भूलों से नसीहत भी लेते हैं। अब ऐसे कंप्यूटरों की कल्पना की जा रही है, जो स्वयं नये कंप्यूटरों की कल्पना, रचना, इस्तेमाल और मरम्मत कर सकेंगे। तब शायद आदमी की आवश्यकता नहीं रह जायेगी। उस युग के कंप्यूटर भी शायद इलेक्ट्रानिक नहीं, बल्कि रासायनिक उपकरण होंगे। लेकिन मैं उस दिन की कल्पना नहीं कर सकता।

कंप्यूटर मनुष्य ने बनाये हैं—मनुष्य की सेवा करने के लिए। वे मनुष्य की बुद्धि और कल्पना की सृष्टि हैं। उनकी क्षमता की बस यही सीमा है। —डा० राबर्ट आर० जान्स

(प्रबंधक, कंप्यूटर विभाग, जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी

चमत्कारों का चमत्कार यह है कि कंप्यूटर स्वयं निर्णय कर सकते हैं। इनकी मदद से मनुष्य ऐसे सवाल हल कर सकता है, जो अब तक उसके बूते से बाहर थे। मार्टिन न्यूटमैन प्रक्षेपास्त्र में कंप्यूटर यंत्र स्वयं हिसाब लगाकर दिशा और गति का नियंत्रण करता है।

अब तो शीघ्र ही ऐसे कंप्यूटरों के निर्माण की आशा की जा रही है, जो हस्तलिपि इबारत स्वयं पढ़ लेंगे, शहरों में वाहनों की आवा-गमन का नियंत्रण करेंगे, आकाश और बादलों के फोटोग्राफों का अध्ययन कर जलवायु की पूर्व सूचना पा लेंगे। इन सबसे बढ़कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुवाद भी कंप्यूटर करने लगेंगे। और आप जानते हैं, मानसशास्त्री अनुवाद को सर्वोच्च प्रकार की बौद्धिक क्रियाओं में गिनते हैं।

—जान सी० ट्रूब्वसाल

(प्राध्यापक, पालिटेक्नीक इंस्टिटचूट, ब्रुकलिन, न्यूयार्क)

८. रोगियों की सेवा में इलेक्ट्रानिक्स :— अंतरिक्ष-युग के साथ-साथ ही 'बायो-इलेक्ट्रानिक्स' का भी तेजी से विकास हो रहा है। ठीक से काम न करनेवाले शरीरावयवों का इलेक्ट्रानिक साधनों द्वारा संचालन करने की विद्या का नाम 'बायो इलेक्ट्रानिक्स' है।

हृदय में रक्तावरोध उत्पन्न हो जाने पर, संभव है, हृदय की धड़कन गड़बड़ा जाये या कुछ क्षणों के लिए रुक भी जाये। यदि उसे तुरंत ठीक न किया जाये, तो रोगी की मृत्यु हो जाती है। अब 'इलेक्ट्रो-कार्डियेक-पेसमेकर' नामक यंत्र के बन जाने से ऐसे रोगियों के लिए नयी आशा पैदा हो गयी है।

यह छोटा-सा यंत्र रोगी के पेट में त्वचा के नीचे सी दिया जाता है। इससे निकले अतिसूक्ष्म तार रोगी के हृदय की मांसपेशियों में प्रवेश करते हैं। इनके द्वारा हृदय की मांसपेशियों को यंत्र से उद्दीपन (स्टिम्युलेशन) मिलता रहता है और धड़कन ठीक रफ्तार से होती रहती है। अनुमान है, यंत्र की बैटरियां पांच साल तक बदलनी नहीं पड़ेंगी।

अब तो डाक्टर और इंजीनियर मिलकर यह कोशिश कर रहे हैं कि हृद्रोगियों को दैहिक हृदय के स्थान पर यांत्रिक हृदय दिये जा सकें।

—एड्रियन कांट्रोवित्स

(हृदय-शल्यचिकित्सा निर्देशक, मेमोनिड्स अस्पताल, ब्रुकलिन, न्यूयार्क)

९. जीवन का रासायनिक सूत्र :— जीव-रसायनशास्त्र (बायोकेमिस्ट्री) का जन्म और विकास पिछले तीस वर्ष की कहानी है। अब हम ऐसी हजारों रासायनिक प्रक्रियाएं जानते हैं, जिन पर जीवन का दारोमदार है। ये प्रक्रियाएं परस्पर संबद्ध हैं और हमारे शरीर के रासायनिक तत्वों को निरंतर एक से दूसरी चीज में परिवर्तित करती रहती हैं। ये क्रियाएं भोजन से आरंभ होती हैं और कोश, हारमोन तथा अन्य तत्वों के निर्माण में परिसमाप्त होती हैं।

विटामिनों का उदाहरण लीजिये। अब हमें लगभग सभी विटामिन पता चल गये हैं और उनके कार्य भी। इसी का यह परिणाम है कि आज ऐसे लाखों रोगियों को स्वस्थ बनाया जा सकता है, जो शायद पुराने जमाने में विटामिनों के अभाव में मर ही गये होते।

जीव-रसायनशास्त्र की विजय का दूसरा उदाहरण है नयी दवाइयों और एंटीबायोटिक तत्वों का विकास। ऐसी हजारों रासायनिक दवाइयां बनायी गयी हैं, जो किसी खास प्रकार के पौधों, पशुओं और कीटाणुओं को ही मारती हैं। पेनिसिलीन इसका सर्वोत्तम विख्यात उदाहरण है।

—डा० आर्थर बी० पार्डी

(निर्देशक, जीव-रासायनिक कार्यक्रम, प्रिंस्टन विश्वविद्यालय)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकृति के सबसे गुप्त रहस्यों में से एक यह है कि डी-एन-ए से युक्त क्रोमोसोम आनु वंशिकता (हेरिडिटी) का नियंत्रण कैसे करते हैं ? पिछले वर्षों में इस रहस्य के उद्घाट का बहुत काम हुआ है और एक अमरीकी तथा दो ब्रिटिश वैज्ञानिकों को हाल में इस प नोबेल-पुरस्कार भी मिला है।

डी-एन-ए (डिआक्सिरिबोन्यूक्लीइक एसिड) जीवन का बीज है। कीटाणु, वन स्पति और प्राणी आदि प्रत्येक जीवंत वस्तु का रूप और व्यवहार अपने पूर्वजों-जैसा होत है। उसका कारण है, उसे विरासत में मिली हुई डी-एन-ए। डी-एन-ए में छिपी हुई सूचना ही भ्रूणावस्था से शरीर को इस प्रकार घड़ती हैं कि वह अपनी नस्ल के अनुरूप ही बनता है

यदि मनुष्य अपने शरीर के डी-एन-ए सूत्रों पर नियंत्रण पा ले, तो कल्पनातीत शक्ति उसके हाथ लग जायेगी। और इतिहास बताता है कि मनुष्य उस शक्ति का विवेक पूर्वक ही उपयोग करेगा—ऐसा हम मान नहीं सकते। —डा० आल्फ्रेड एलमस

(राकफेलर इंस्टिटचूट, न्यूयार्क

१०. मनुष्य का भविष्य :—आधुनिक विश्व के असली आश्चर्य यंत्र या कलपु नहीं हैं, चाहे वे कितने ही चमत्कारी क्यों न हों। हमारे युग का चिरस्थायी आश्चर्य कतिपय संभावनाओं का प्रादुर्भाव—उदाहरणार्थ, ज्ञान के संचय और मानव-कल्याण लिए उसके विनियोग की संभावना। और इसी से संबद्ध है, समताश्रित प्रजातंत्रीय समा की स्थापना की संभावना।

दूसरा आश्चर्य है, शस्त्रास्त्र-नियंत्रण और निःशस्त्रीकरण की संभावना। शस्त्रमुक्त संसार की स्थापना की तकनीकी संभावना पैदा हो चुकी है। अब उसे ठोस रूप देने प्रतीक्षा है। और इन आक्रामक शस्त्रास्त्रों को विनष्ट किये बिना हम इतने दिन तक सके हैं, यह भी शायद एक परमाश्चर्य माना जायेगा। — डा० जेराल्ड होल्ट

(प्राध्यापक, हारवर्ड विश्वविद्यालय

★

जर्मनी के राजा चार्ल्स चतुर्थ (१३१६-१३८७) को संख्या चार से बहुत प्रेम था प्रतिदिन वह चार बार भोजन करता था और भोजन भी चार तरह का होता था। क शराब भी चार तरह की पीता था। वह एक साथ चार महलों में रहता था और प्रत्ये महल में चार फानूस, चार कमरे, चार दरवाजे, चार मेजें आदि थीं। वह चार रंगों के व पहनता था। उसके मुकुट की शाखाएं भी चार थीं। उसने जर्मनी को भी चार प्रांतों में विभाजि किया था। उसके यहां चार तरह की सेना थी। उसके राज्य में चार डचूक, चार गर्वनर, चा जनरल थे। जब वह मृत्युशैय्या पर पड़ा था, तो चार चिकित्सकों ने उसकी चिकित्सा और उसने सायं चार बजकर चार मिनिट पर अंतिम सांस ली। — रमेश खुराना 'स्वप्न'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य स्वभाव

निरंकार

शरीर और शक्ति दोनों से ही वह दूसरे वंदरों की अपेक्षा अधिक वड़ा है, लोगों ने उसे मोहन कहना शुरू कर दिया है। बंदरों जैसा उसका स्वभाव भी नहीं। साथ ही वह अब वंदरों के गिरोह से अलग ही रहता है। वैसे तो सभी वंदर बहुत चालाक और समझदार होते हैं; किंतु उसके स्वभाव को देखकर आश्चर्य होता है। ऐसा लगता है कोई महान आत्मा भटककर उस वानर शरीर में प्रवेश कर गयी है। चित्रकूट की उस पावन भूमि में रहनेवालों को धीरे-धीरे विश्वास हो गया है कि वह हनुमानजी का अवतार है।

कितने ही लोगों ने उसे प्रातःकाल सूर्य निकलने के पहले गंगाजी में स्नान करते देखा है। इतना ही नहीं स्नान करने के बाद पल-भर के लिए वह पूर्व की ओर मुंह करके सूर्य भगवान की ओर एकटक देखता रहता है—मानो स्नान के बाद ध्यान करता हो।

यात्री जब कभी उसे भुने हुए चने अथवा अन्य कुछ खाने को देते हैं, तो वह खाता कुछ भी नहीं—मुट्ठी में भरकर ले अवश्य जाता है। कितनी ही बार लोगों ने उसे छोटे-छोटे बच्चों के साथ खेलते भी देखा। बच्चों के बीच वह खेलते हुए उन्हीं बालकों के समान दिखाई देता। जब कभी वह पेड़ पर चढ़ जाता और एकत्र किये चने इत्यादि लाकर बच्चों को देता, वे प्रसन्न होकर खाते और मोहन को अपना अंतरंग मित्र समझते।

वानर स्वभाव से शरारती होते हैं और अवसर पाते ही यात्रियों की गठरी पर टूट पड़ते हैं। कुछ वानर तो इतने चालाक कि अपने मौके की ताक में बैठे रहते हैं—जैसे ही यात्री नहाने के लिए गंगाजी में उतरते हैं, बंदर उनके कपड़े लेकर ऊपर चढ़ जाते हैं और तब तक नहीं उतरते, जब तक उन्हें चने लेकर न खिलायें।

बंदर उन जानवरों में से हैं, जो समूह में रहते हैं और अपराध करनेवाले को अपने समूह से निकाल देते हैं। साथ ही वे समूह से अलग रहनेवाले को अपना नहीं समझते। मोहन उनके समूह में से एक है—उसे किसी अपराध के कारण निकाला नहीं गया, वह स्वयं ही अपने स्वभाव की विषमता के कारण अलग-अलग रहता है। तो भी उसने अपने आपको कभी भी उनसे अलग नहीं समझा। अन्य बंदरों की शैतानियों को वह सहन नहीं कर पाता है, जब तब उनकी हरकतों पर डांटडपट और दंड भी दे बैठता है। मोहन की इस प्रकार की नसीहतों से बाकी बंदर असंतुष्ट रहते हैं। प्रकट रूप से वे सब मोहन का विरोध नहीं करते; किंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन-ही-मन उसे अपना शत्रु समझते हैं।

द्वार-द्वार और गली-गली भीख मांगने-वाला भिखारी भी एक दिन गंगा स्नान के लिए आया। फटे-मैले चिथड़े से बंधी हुई एक छोटी-सी गठरी भी उसके साथ थी। उसने यह गठरी बड़े जतन से सीढ़ी के कोने में रख दी और अपने उतारे हुए कपड़ों से ढांककर गंगाजी में नहाने के लिए उतरा ही था कि एक बंदर ने गठरी संभाली और उछलता हुआ मंदिर की मुंडेरी पर जा बैठा।

बूढ़ा भिखारी चीख मारता हुआ पानी से निकला; लेकिन सिवा शोर मचाने के और कुछ न कर सका। उसकी चीखने की आवाज सुनकर छोटे-बड़े दर्जनों लड़के तमाशा देखने के लिए इकट्ठा हो गये।

बंदर ने दो-चार मिनिट प्रतीक्षा की और फिर दांतों से गठरी फाड़नी शुरू कर दी। बुड्ढा अब चीखने के साथ रोने भी लगा। गठरी खोल लेने के बाद भी जब बंदर को उसके अंदर कुछ खाने-पीने का सामान न मिला, तो वह खीझ उठा। दूसरे ही क्षण उसे पैसों की पोटली दिखाई दी। बंदर ने पैसे मुंडेरी से ही सड़क पर बिखेर दिये।

बच्चों के लिए तमाशा तो पहले से ही था। अब उन्होंने सड़क पर बिखरे हुए पैसों की लूट मचा दी। रोते-चिल्लाते बूढ़े ने यह नजारा देखा, तो सड़क पर सिर पटकने लगा।

इसी समय कहीं से उछलता-कूदता मोहन वहां आ गया। उसने एक नजर में ही सब कुछ समझ लिया। यद्यपि मोहन पर नजर पड़ते ही वह बंदर भागने लगा; लेकिन मोहन से बचकर निकल भागना आसान न था। मोहन ने एक ही छलांग में उसे पकड़ लिया और फिर ऐसी पिटाई की कि वह बंदर चीखने-चिल्लाने लगा। देखते-ही-देखते उसके गिरोह के दस-बीस बंदर और इकट्ठे हो गये। उन्होंने इधर-उधर दूर से ही मोहन को घुड़कना चाहा। किंतु मोहन अन्य बंदरों से डरा नहीं। साथ ही उनका इस प्रकार का विरोध उसे अनुशासन-हीनता मालूम हुई। देखते-ही-देखते मोहन ने कुछ ऐसा रौद्र रूप धारण किया कि बंदर तो बंदर, आस-पास के तमाशबीनों का भी दिल दहल उठा। दहशत खाये हुए सभी बंदर इधर-उधर भाग खड़े हुए। मोहन भी गंभीर-सा एक ओर चल दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल गंगाजी के घाट किनारे मोहन स्नान करके निकला और सूर्य की ओर ध्यान लगाने बैठा ही था कि सैकड़ों बंदर उसके ऊपर टूट पड़े। और देखते-देखते बुरी तरह घायल कर दिया। अंतिम सांस निकलते ही बंदरों ने विजय-सूचक शोर मचाया और फिर कुछ बंदरों ने आकर उसे घसीटते हुए गंगाजी की लहरों में फेंक दिया।

मोहन की माया कितनी ही बार मैंने अपनी आंखों से देखी है। उसका अंत भी मैंने इन्हीं आंखों से देखा है। और अब सोच रहा हूं — मनुष्य-स्वभाव में भी कभी-कभी ऐसी ही प्रवृत्ति पायी जाती है। सुकरात, ईसा, लिंकन, गांधी और कैनेडी ऐसी ही प्रवृत्ति के तो शिकार हुए थे!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तश्तरी की दौड़ में कहाँ से कहाँ

वय से प्रौढ़ा होते हुए भी बिजली-सी फुर्तीली सुंदरी मार्जरी हर्स्ट ब्रिटेन की सर्वाधिक सफल व्यवसायी महिला कही जाती हैं। हाल ही में वे ब्रिटेन के लखपतियों की श्रेणी में आयी हैं।

वे एक एजेंसी का सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं, जिसे इसी साल फरवरी में पब्लिक लिमिटेड कंपनी का रूप दिया गया है। इसमें लगभग डेढ़ करोड़ रुपया लगा हुआ है।

यह एजेंसी ब्रिटेन, अमरीका और आस्ट्रेलिया में कार्यालयों को अस्थायी सेक्रेटरी और टाइपिस्ट मुहैया करती है।

तीन देशों में फैला हुआ यह विशाल कारोबार श्रीमती हर्स्ट की कार्य-प्रतिभा का प्रमाण है। एक टाइपिस्ट से बढ़ते-बढ़ते वे उन्नति के इतने ऊंचे शिखर पर आ पहुंची हैं। और इसमें उन्हें उन्नीस वर्ष लगे हैं—संघर्ष और कठोर परिश्रम के उन्नीस वर्ष।

वे १९४६ में प्रादेशिक सहायक सेना के जन-कल्याण अधिकारी के पद से सेवा-मुक्त हुई। उसके तुरंत बाद उन्होंने अपना स्वतंत्र कारोबार शुरू किया। उस समय उनकी कुल साधन-संपत्ति थी—एक कमरा, एक टाइपराइटर और ७०० रुपये।

आरंभ में उनके स्टाफ में बस वे स्वयं ही थीं। जब कोई कार्यालय उनकी एजेंसी से टाइपिस्ट भेजने को कहता, वे स्वयं 'मिस स्मिथ' के रूप में वहां काम करने पहुंच जातीं। वे बहुत अच्छी स्टेनो और टाइपिस्ट थीं, और दिन में अठारह घंटे और सप्ताह में छः दिन जमकर काम कर करती थीं।

आज भी उनके काम के घंटे कम नहीं हुए हैं; परंतु स्टाफ बढ़ते-बढ़ते ५,००० लड़कियों तक पहुंच गया है। किसी भी समय उनके रजिस्टरों पर इतनी लड़कियों के नाम देखे जा सकते हैं। उनका एक कमरे का दफ्तर अब बढ़ते-बढ़ते विशाल आधुनिक भवन में फैल चुका है। ब्रिटेन, अमरीका और आस्ट्रेलिया में मिलाकर लगभग पचास शाखाएं हैं।

दुनिया में यह अपने ढंग की सबसे बड़ी एजेंसी है। और हर साल ३,२५,००० के लगभग अस्थायी काम दिलाती है। इसकी वार्षिक आय लाखों में कूती जाती है। कार्यालयों को कर्मचारियों के बीमार पड़ने पर, छुट्टी लेने पर अथवा अचानक अधिक काम पड़ने पर अस्थायी टाइपिस्टों और सेक्रेटरियों की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। और अब तो ऐसे अस्थायी कर्मचारी रखना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शान की चीज समझी जाने लगी है। श्रीमती हर्स्ट इन कार्यालयों की सबसे बड़ी मददगार हैं।

कभी-कभी कार्यालयों से इतनी लड़कियों की मांग आ जाती है कि स्थानीय लड़कियों से उसकी पूर्ति करना संभव नहीं होता। ऐसे ही एक मौके पर श्रीमती हर्स्ट विमान से आस्ट्रेलिया जा पहुंची और वहां से लड़कियों को भर्ती कर लायीं। अब तो वहां उनका स्थायी भर्ती दफ्तर है।

जो लड़कियां श्रीमती हर्स्ट की एजेंसी में भर्ती होती हैं, उन्हें वे कई अन्य सुविधाएं भी दिलवाती है। ऐसी ही सुविधाएं उन अंग्रेज लड़कियों को दी जाती हैं, जो उनकी अमरीका-स्थित एजेंसियों में काम करने जाती हैं। इस तरह अब अमरीकी कार्यालयों में अंग्रेज लड़कियों को सेक्रेटरी रखने का रिवाज तेजी से बढ़ रहा है।

एक बार अमरीकी एजेंसियों में वेतन की दरों को लेकर गड़बड़ी हुई, तो वे फौरन दौड़ी-दौड़ी अमरीका पहुंची और मामला सुलझाया। उनकी इस व्यावसायिक तत्परता के कारण ही हर समस्या का समाधान होता चला जाता है।

दो वर्ष पूर्व श्रीमती हर्स्ट को प्रिन्स अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार ब्रिटेन और अमरीका के बीच व्यापारिक समझ-बूझ को विकसित करने के उपलक्ष्य में दिया जाता है और श्रीमती हर्स्ट इसे पानेवाली पहली व्यावसायिक महिला हैं।

उनका काम का ढंग एकदम सीधा है- "जो जिस काम के लिए उपयुक्त है, हम उसे वही काम देते हैं। मैं काम को बढ़िया से- बढ़िया ढंग से पूरा करना पसंद करती हूं।"

श्रीमती हर्स्ट के अनुसार अच्छे सेक्रेटरी के लक्षण ये हैं—"चुस्त दिमाग, १२० शब्द प्रति मिनिट आशुलिपि, टाइप करने में निपुणता और लोगों के साथ सौजन्यपूर्ण व्यवहार।"

गौर वर्ण, देखने में आकर्षक, श्रीमती हर्स्ट दिखतीं ४१ की हैं, जबकि वस्तुतः ५० की हो चुकी हैं। अब वे नयी पब्लिक लिमिटेड कंपनी में मैनेजिंग डायरेक्टर की हैसियत से काम करेंगी। वे जितनी सफल हैं, उतनी ही लोकप्रिय भी हैं— केवल दफ्तर में ही नहीं बाहर भी। उनके बैरिस्टर पति एरिक हर्स्ट अभी तक संस्था के संयुक्त मैनेजिंग डाइरेक्टर थे, अब अध्यक्ष बन जायेंगे।

संस्था के ५,३०,००० सामान्य शेयर आम जनता में बेच दिये गये हैं। हर शेयर की कीमत सात रुपये के लगभग है। इन शेयर बेच देने के बाद भी कंपनी की कुल लागत पूंजी का ७५ प्रतिशत हर्स्ट-दंपती के अधिकार में है।

और कोई होता, तो इस खुशहाली के साथ आराम से चुप बैठ जाता। लेकिन श्रीमती हर्स्ट को आराम हराम है। वे तो कहने लगी हैं कि व्यवसाय को और फैलाना है, पूरे विश्व में १०० शाखा खोलनी है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिकंदर का लड़ाकी बेड़ा

सिकंदर महान के जिस जहाजी बेड़े ने ३०० ई० पू० के आसपास टायर नगर की नाकेबंदी की थी; लगता है, वह लेबनान के दक्षिणी तट के निकट भूमध्य सागर में पड़ा हुआ है। इन प्राचीन जहाजों का सुराग महज संयोग से लगा। कृषि-मंत्रालय के विशेषज्ञ वहां समुद्री-जीवन की खोजबीन कर रहे थे।

लेकिन पुरातत्वज्ञों के लिए यह खोज बड़े मार्के की है। इससे उन फीनीशियन लोगों के अवशेष प्राप्त हो गये हैं, जो नौ-विद्या में बड़े ही निपुण थे। प्राचीन टायर नगर उन्हीं का बसाया हुआ था।

पुरावशेष विभाग ने जलमग्न बेड़े के फोटो लिये हैं और अध्ययन के लिए उन्हें जापान भेजा है। बेड़े का पता राडारों ने दिया था। गोताखोरों ने यह भी देखा है कि जहाजों पर प्राचीन सेना के हथियार भी मौजूद हैं। विशेषज्ञों को विश्वास हो गया हे कि ये जहाज सिकंदर के बेड़े के ही हैं। इस अनुमान का आधार यह है कि दूसरे किसी बेड़े ने टायर शहर की नाकेबंदी कभी की ही नहीं।

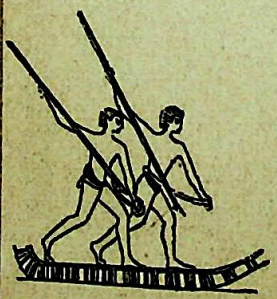

अनुमान है कि सिकंदर की जो नौ-सेना टायर की नाकेबंदी के समय डूब गयी थी, उसमें विविध आकार-प्रकार के १०० जहाज रहे होंगे। इस विशाल बेड़े से नगर को घेर-कर, उस पर आक्रमण ३०० ई० पू० के आस-पास किया गया था। नगरवासियों ने आक्रमण का जोरदार प्रतिरोध किया था। नाकेबंदी छः माह तक रही थी।

समुद्र पर से नगर पर कब्जा करने में सिकंदर को सफलता नहीं मिली। परिणाम-स्वरूप उसने बेड़े और समुद्र-तट को जोड़ने-वाला एक पुल तैयार करवाया। आज भी उसके अवशेष तट पाये जाते हैं।

इस खोज के संबंध में लेबनानी विश्व-विद्यालय के इतिहास के प्रोफेसर श्री मोह-म्मद अली मक्की का मत कुछ और ही है। उनके विचार से ये जहाज बायजेंटाइन-काल के होने चाहिये। संभवतः अरबों ने इन्हें डुबोया होगा।

लेबनान की सरकार इस खोज को बड़ा महत्व दे रही है। यदि इस बेड़े को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए आवश्यक रुपयों का इंतजाम सरकार स्वयं जल्दी ही न कर सकी, तो राष्ट्रसंघ से प्रार्थना करेगी। लेबनान का पुरातत्व विभाग अवशेषों के उद्धार की व्यवस्था करने में लगा हुआ है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूमानियन कहानी :

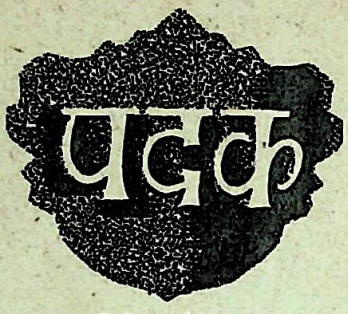

यूसेबिड कैमिलर

खंभों की अनंत कतार आकाश की धुंधली घाटी से चली प्रतीत होती थी। वे खंभे नदियों को लांघ रहे थे, पहाड़ों पर चढ़ रहे थे, मैदानों में उतर रहे थे। उनकी बारीक पंक्ति सुई के धागे की तरह गांवों से गुजर रही थी, जो दुसड़के पर तीखा मोड़ काटती हुई गर्व के साथ फिर सीधी रेखा का रूप ले रही थी। और फिर दूसरे पर्वतों का आरोहण कर रही थी—धूमिल शिखरोंवाले पर्वतों का !

माता इलिन्का ने खंभों की कतार का यही रूप देखा था। इतने लंबे तार के लिए इतना अधिक तांबा इन्हें कहां से मिल जाता है। वह चकित हो रही थी।

उसने इन खंभों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया था; किंतु एक दिन एक खंभा उसी के आंगन में गाड़ दिया गया। तब उसने अपने आपसे कहा—"संभवतः यह उन लोगों के लिए है, जो तार के माध्यम से बात-चीत करते हैं। एक आदमी तार के एक सिरे पर खड़ा हो जाता है और दूसरा दूसरे पर। और वे लोग तब तक चीखते-चिल्लाते रह हैं, जब तक एक दूसरे की बात सुन नहीं लें

लेकिन जब उसने देखा कि मकान त तार खींचकर छत की कड़ी में एक शीश सा जोड़कर तथा छोटा-सा बटन दबाक रोशनी की जा सकती है, तो माता इलिन मूर्खों की तरह देखती ही रह गयी।

अंत में जब प्रकाश से उसका अपना क भी झलमला उठा और ड्योढ़ी पर बैठा मु अतिथियों की सूचना देने लगा, तो मा इलिन्का ने हड़बड़ाकर झाड़ू संभाला त साफ-सफ़ाई पर जुट गयी, ताकि कहीं उस घर की गंदगी पकड़ न ली जाये।

तभी एक आदमी आ गया। यह वह लाइनमैन था, जिसने खंभा गाड़कर तार खींचा था। उसने अंदर आकर पीले प्रका को देखा और देखा माता इलिन्का झुर्रियों-भरे चेहरे को। तब वह बोला—"अ ठीक हो गया। जिस सूरज की शुरुआ आग की डिबिया से हुई थी, वही सूर तुम्हारी छत से लटक रहा है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और माता इलिन्का समझ नहीं सकी कि उस नवयुवक के स्वर में इतना आवेश क्यों है।

झल-झल करती रोशनी के साये में अनेक सुखी दिनों की कामना करता हुआ वह नीचे झुक गया और बुढ़िया का हाथ चूम लिया। माता इलिन्का इसका अर्थ भी नहीं समझ सकी। सूरज का प्रकाश देकर उसके हाथ का चुंबन ले लिया.....वह केवल इतना बड़बड़ाकर रह गयी—"तुम तो बिलकुल मेरे आदमी दोर्मिदों-जैसे लगते हो। वह भी इसी तरह लजाया करता था—जवान छोकरी की तरह।"

बाद में जब लाइनमैन चला गया, तो वह कमरे के बीचों-बीच खड़ी हो गयी और खुद ही हंसने लगी।

तभी अचानक वह इस व्यथा से अभिभूत हो उठी कि वह इतनी बूढ़ी है कि प्रसन्नता का यह पर्व उसे अकेले ही मनाना होगा।

उसका विवाहित जीवन अत्यंत अल्प रहा था। केवल तीन वर्ष! जिन दिनों जीवन का सुख भोगने का अवसर आया था, उन्हीं दिनों बादशाह लोग एक दूसरे को घुड़की देने लगे। बात घुड़कियों से संकल्पों पर आयी और संकल्पों से तलवारों पर। परिणाम यह निकला कि जनता आकंठ रक्त में डूब गयी। उसके आदमी ने भी तले हुए गूदे का कुछ अंश थैले में रखा तथा ड्योढ़ी पर निकलकर बोला—"इलिन्का, शायद फिर मिलेंगे हम लोग।" और फिर उदासी को घूंटता हुआ फाटक पर कहने

लगा—"फिर भी अगर मैं वापस न लौटूं, तो तुम दूसरा विवाह कर लेना।"

वह चला गया और फिर कभी नहीं लौटा।

अनेक वर्षों के बाद जब बादशाह लोग लहू में लथपथा गये, तो उन्होंने अंधों-अपाहिजों, कब्रिस्तानों तथा भस्मीभूत गांवों के ऊपर मित्रता के हाथ मिला लिये। जब वे लोग खा-पीकर फिर स्वस्थ हो गये, तो एक दिन माता इलिन्का मेयर के दफ्तर में बुलायी गयी।

एक सेवक उठा और उसने एक सुनहरे किरणोंवाली तस्वीर माता इलिन्का को थमा दी। ओह!..... उस कागज पर अपने ही पति की तस्वीर देखकर वह कितनी विचलित हुई थी। सफेद घोड़े पर सवार, फौजी वर्दी में सजा-बजा वह योद्धा तल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार से हवा को काटता हुआ एक विशाल दुर्ग की ओर बढ़ा जा रहा था।

"पैदल-सेनानायक—दोर्मिदों।" उसने पढ़ा।

इसके बाद सेवक ने उसे एक ताम्र-पदक दिया, जिस पर एक गिद्ध की तस्वीर खुदी हुई थी। गिद्ध ने चोंच में तलवार पकड़ी हुई थी और बड़े-बड़े बाजू पसारे तेज हवा के विरुद्ध उड़ रहा था।

"चित्र और पदक दोनों ही सुंदर हैं," इलिन्का फुसफुसायी—"पर मुझे तो अपना आदमी पाकर ही खुशी होती।"

"अब जाने दो.....छोड़ो.....वह मर गया....."

"बादशाहों की ऐशोइशरत के लिए बेचारा दोर्मिदों। काश वह अपने देश की सीमा की सुरक्षा में मर जाता।"

यह बहुत वर्षों पहले की बात है। तब इलिन्का नवयुवती ही थी और उसके मन में यह बात बैठ गयी थी कि उसका पति युगों-युगों तक एक विशाल अज्ञात दुर्ग की ओर घोड़ा दौड़ाता रहेगा। घोड़े पर सवार, तलवार हाथ में थामे दूर खड़ी बुर्जियों की ओर हवा में उड़ते हुए उसे फोटोग्राफर ने कैसे तस्वीर में बांध लिया—यह बात उसकी कल्पना से परे की थी। और इस प्रकार दोर्मिदों दस वर्षों तक, बीस वर्षों तक, तीस-तीस वर्षों तक घोड़े पर उड़ता रहा; गंतव्य तक नहीं पहुंच सका।

ऐसी ही मनोहर भ्रांति में इलिन्का ने पति के निधन की पीड़ा को दबा दिया। उधर कलाकार समय उसके हृदय पर अपना कार्य करता रहा।

चित्र के किनारों का सोना अब उड़ गया था और समय के साथ कागज पीला पड़ गया था। बादशाह के दुर्ग की ओर दौड़ते हुए दोर्मिदों की तस्वीर में तलवार का कुछ अंश, भुजा का एक टुकड़ा और उड़ते घोड़े की रेशमी पूंछ—यही कुछ शेष रह गया था। हां, पदक ज्यों-का-त्यों दीवार पर लगा हुआ अपने ही स्थान पर; और गिद्ध के विशाल पंख अभी भी हवा को मथ रहे थे।

उस सांझ माता इलिन्का ने कील से पदक निकाला और तब तक रगड़ती रही, जब तक वह आलोक में झिलमिला नहीं उठा।

उसने कांसे के कटोरे इत्यादि भी मांजे, क्योंकि यह तो बड़ी लज्जा की बात थी कि रोशनी से जगमगाते हुए घर में वे शीशे की तरह न चमकें।

माता इलिन्का ने मोमी दीपक उठाया और उस पर दृष्टि गड़ाती हुई बोली, जैसे उसे अंतिम विदा दे रही हो—"एक समय था, जब तुम सम्मानित स्थान पर सितारे के समान चमका करते थे।"

ज्यों ही वह दीपक को चूल्हे के पीछे डालने लगी, तो उसका हाथ आग की डिबिया से टकरा गया और उसे लाइनमैन के ये शब्द याद आ गये—"अब ठीक हो गया। जिस सूरज की शुरूआत आग की डिबिया से हुई थी, वही सूरज तुम्हारी छत से लटक रहा है।"

रात को देर तक वह इसी विषय में सोच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार करती रही; मगर एक बात नहीं समझ सकी; घर-घर सूरज की रोशनी लानेवाले इंजीनियरों को इतना तांबा कहां से मिला कि उसके तारों की पंक्तियां समूचे देश के आर-पार फैलायी जा सकीं ?

उसने पदक की ओर देखा तथा उसके मन में एक विचार उठा, जिसे उसने तुरंत दबा दिया। उसका हाथ माथे पर चला गया, जैसे कोई मधुमक्खी उड़ा रही हो।

"अगर हर आदमी सहायता करे..... हर आदमी.....जितना भी जिसके पास हो ....." और उसने फिर वह विचार मन से खदेड़ दिया।

"कितनी मूर्ख हूं मैं ! इस बुढ़ापे में उपहास की पात्र बनूंगी क्या ? फिर भी प्रयत्न करने में क्या हानि है ?" वह थोड़े-थोड़े समय बाद अपने आपको कोचती रही।

अगले दिन उसने तांबे के पदक को फिर भलीभांति झाड़ा-पोंछा। तब उसने पति के चित्र की ओर देखा। उसका मन दुःख से छलछला उठा। उसको लगा, जैसे पदक को घर से निकालने के साथ वह पति की स्मृति को ही तिलांजलि दे रही है। परंतु अपने स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थी वह। यदि उसने निर्णय को तुरंत कार्यान्वित न किया, तो संभवतः उसका मन बदल जायेगा।

उसने पदक को रुमाल में लपेटा और तेजी से बाहर निकल गयी।

सवेता वाव्रोई का घर ज्योति में नहाया खड़ा था। मेज के आगे लाइनमैन बैठा था। माता इलिन्का ने देखा कि उसके आगे रकाबियों के बीच सिक्कों का अंबार लगा हुआ है। तभी घंटी टनटनाती हुई इलीना ने प्रवेश किया। अपने स्वभाव के अनुसार वह चीख-चीखकर कह रही थी—"ओह, कितनी तलाश की.....कितनी तलाश ! मैंने समझा था कि शैतान बच्चों ने इसे भी खो दिया है.....मगर नहीं यह रही घंटी। इसे ले लो। यह उसी खरे तांबे की बनी हुई है, जिससे बड़े-बड़े घड़ियाल बनाये जाते हैं। समझ गये न महोदय ! आपको सारे देश में तांबे के तार फैलाने हैं। थोड़ा तांबा मुझसे ले लीजिये .....थोड़ा और किसी से..... थोड़ा....."

"फूहड़ कहीं की !" माता इलिन्का बोल पड़ीं—"बहुत देखे हैं तांबे के सिक्के और घंटियां।"

"लेकिन चमड़े की पेटी पर तांबे के बटन।" एक पुरुष ने उसकी बात काटी। उसने चमड़े की चौड़ी पेटी उठायी तथा एक ओर रख दी और मुट्ठी-भर बटन मेज पर डाल दिये।

"इनके बारे में क्या विचार है आप लोगों का ?" माता इलिन्का ने गर्व से कहा— "आपने कभी तांबे का पदक भी देखा है ? महोदय, ले लीजिये इस ताम्र-पदक को। इसे वहां ले जाइये, जहां मेडल गलाये जाते हैं और गलानेवाले पात्र में डाल दीजिये। इससे गज-सवा गज तार तो मिल ही जायेगा।"

सिक्कों और बटनों पर पड़े हुए उस पदक को सभी ने देखा। ऐसा लगता था, जैसे गिद्ध उन सबको पंजों में दबोचकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाश में उड़ जाने को तैयार हो।

"यह तो सचमुच ही बहुत सुंदर है।" किसी ने कहा।

"बेशक!" माता इलिन्का ने गौरवपूर्ण स्वर में कहा—"सिक्के और बटन—ये सब तो साधारण चीजें हैं; किंतु ताम्र-पदक सामान्य वस्तु नहीं है।"

"इतना स्नेह!" लाइनमैन ने कानों तक लाल होकर कहा—"दिलों से छलकता स्नेह! आप लोग यह सब सोच कैसे सके। लगता है आप सबने कहीं इकट्ठे बैठकर मंत्रणा की है।"

"यही कुछ है हमारे पास।" उस घर के व्यक्ति ने कहा—"क्या चंद बटनों से सूरज की रोशनी का मूल्य चुकाया जा सकता है? मैं तो इस विषय में बहुत समय से सोच रहा था।"

तांबे का पदक चमचमा रहा था और उसके पंखों के नीचे सिक्के व बटन पड़े थे।

तब से जब कभी कोई खंभा मार्ग इलिन्का के मार्ग में पड़ता है, तो वह उसके सौभाग्य की कामना करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि शीघ्र से शीघ्र उनका प्रसार सारे देश में हो जाये।

वह नहीं जानती कि उसके पदक के तांबे से तार के कौन-से टुकड़े का निर्माण हुआ है इसीलिए उसका विश्वास है कि वह सब जगह है—जहां-जहां भी तार खिंचे हैं और रात का सूरज जगमगा रहा है, वह सब जगह है। —रूपांतरकार : कैलाश भारद्वाज

★

भगवान का फैसला

जंगल में सारा दिन तपस्या करने के उपरांत एक साधु अपनी कुटिया की ओर वापस लौट रहे थे कि रास्ते पर पड़ी कराहती हुई एक सुंदर युवती पर उनकी नजर अटक गयी। वे क्षण भर के लिए ठिठके और फिर रास्ता काटकर आगे बढ़ गये। आधी रात में स्वप्न में भगवान आये और उन्होंने उनसे पूछा—"तुमने उस कराहती हुई यवती के लिए क्या किया?"

"मैं कुछ भी नहीं कर सका भगवान!" साधु ने विनम्र हो उत्तर दिया।

"क्यों?"

"मैं उसे कुटिया में लाना चाहता तो था; परंतु वह इतनी सुंदर थी कि मुझे अपने मन के विचलित हो जाने का भय हो गया था।"

"जिन लोगों का अपने मन पर इतना भी नियंत्रण नहीं, जिनका हृदय तड़पते प्राणियों को देखकर भी कठोर बना रहता है तथा जिनकी आत्मा ऐसे अवसर पर सहायता करने के बजाय, एकांत में तपस्या करने के लिए प्रेरित कर सकती है, ऐसे व्यक्ति अपने साथ छल करते हैं, भक्ति तथा तपस्या के नाम पर अपना समय नष्ट करते हैं। ऐसी भक्ति का कोई लाभ नहीं, जरा भी नहीं।" और भगवान अदृश्य हो गये। —हरीश प्रसाद

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूरज किरण और सुर्ख गुलाब

विमल वेद

लान की क्यारियों में खिले हुए सुर्ख गुलाबों की रंगत आंखों में घुलते-घुलते एकदम खो जाती है और उस खोयी हुई रंगीनी में हर बार एक चेहरा उभर आता है, थका-थका, मुरझाया हुआ, आंखों के कोनों पर सलों से भरा हुआ। उस चेहरे के दो सूखे हुए ओंठ धीरे-धीरे खुलते जाते हैं, फिर उनसे निकला स्वर वंदना के कानों में भरता चला जाता है।

"अपनी हैसियत मैं जानता हूं वंदना, उसे जानते हुए भी मैं यदि यह भूल करूं, तो सोचो मेरा अपना मन मुझे कितना कोसेगा। तुम अपनी जिद छोड़ दो, अपने परिवार का इस तरह विरोध करके मेरा दुःख न बांटो।"

वह स्वर भी कहीं खो जाता है और गुलाबों की सुर्ख रंगत फिर आंखों में घुलने लगती है। वैसी ही सुर्ख डोरों से तनी आंखों से पिता ने उससे कहा था—"बेवकूफ लड़की वह अभागा सुधीर, बेहैसियत ही नहीं है, एक बच्ची का बाप भी है। तू क्या सोचकर उससे विवाह करना चाहती है। मेरी पोजीशन का तुझे ध्यान नहीं है, समाज की परवाह नहीं है; पर कम-से-कम अपनी ओर तो देख। क्या वह देगा तुझे ? भूख, गरीबी के साथ-साथ बेमां की एक बच्ची का बोझ ही न ! इतना सब सह भी सकेगी तू ?"

वंदना उन गुलाबों की ओर से आंखें हटाकर बैठ गयी है। पिता की बात ठीक है; यह भी मानने को तैयार है कि शायद बाद में उसे भूख और गरीबी के सिवा कुछ न भी मिले। पर एक चीज उसे अवश्य मिलेगी—अपने मन का संतोष, सुधीर के दुःख का हिस्सा और उस बच्ची का भविष्य, जो आज गहरे अंधकार से भरा हुआ है। आज के अंधकार में कल का प्रकाश छिपा हुआ है। उसी एक जरा-सी किरण के लिए वह तरस - तरसकर रह जाती है। वह किरण, उस पर उसका हक है, उस हक को वह किसी को भी नहीं छीनने देगी।

"वंदी !"

खिड़की पर से हाथ हटाकर वंदना ने देखा, कमरे के दरवाजे पर बड़े भैया खड़े हुए थे।

"पिताजी बुला रहे हैं।"

"आती हूं।"

बड़े भैया के जाने के बाद वंदना कुछ पल के लिए स्थिर खड़ी रह गयी। पिताजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पुकार का अर्थ वह जानती थी । वे आजकल केवल एक ही प्रश्न उससे कहते हैं–" तू अपनी जिद छोड़ेगी या नहीं ।"

और वह इसका उत्तर केवल अपने मौन से देती है । थोड़ी देर बाद वह पिता के सामने जाकर खड़ी हो गयी ।

वे कुछ पत्र देख रहे थे । वंदना को देखकर और दिनों के समान उन्होंने कड़वे स्वर में उससे बात नहीं की, बल्कि बड़े मीठे स्वर में उसे बुलाया–" आ वंदी ।"

पिता के इस परिवर्तित रुख पर वंदना बड़ी चकित हुई । उनके मुख की मिठास उसके लिए कब से खो गयी थी । इसीलिए इस मिठास को वह सहसा गले के नीचे नहीं उतार पायी, शंकित नेत्रों से उनकी ओर देखती हुई वह पास की कुर्सी पर बैठ गयी ।

पिताजी ने दो चित्र उसके सामने रख दिये, बोले–"वंदी, यह लड़का कैसा लगा तुझे? यह डाक्टर है, और यह इंजीनियर। दोनों ही काफी अच्छा कमाते हैं और हैं भी खानदानी। जरा देखकर तो बता तुझे कैसे लगे ये ।"

वंदना के कानों में घंटियां बजने लगीं । पिताजी के उस मीठे स्वर का यह रहस्य था । वे उसे बांधना चाहते थे । व्यक्ति के पद और खानदान के मोह में उससे अपने हृदय को धोखा दिलवाना चाहते थे । उसने दृष्टि झुकाकर दोनों चित्रों को देखा, तो अवश्य; पर उन चित्रों के बीच में एक और चेहरा उभर आया, वह चेहरा जो इसके सारे सोच, सारे हृदय को जकड़कर बै हुआ था ।

उस दिन ही तो सुधीर ने उसे अप आत्मकथा सुनायी थी, कहा था–" मैं कभी किसी को नहीं बताया वंदना कि के मेरा खून नहीं है । उसकी मां मेरी फ अवश्य थी; पर उसे मैंने उस समय फ बनाया था, जब वह यह भूल कर चुकी और समाज व परिवार के भय से आत्महत्या करने के लिए घर से भागी अपने परिवार के विरोध के फलस्वरू इस त्यक्त स्थिति में आ पड़ा हूं । व्यक्ति तभी तक अपने को अपने परिवार में सम्म नित रख सकता है, जब तक वह परिव वालों की इच्छा को स्वीकार करता च जाता है । विरोध उसे सबसे दूर ले जा पटक देते हैं । मैंने अच्छा किया या बु इसका निर्णय तो कदाचित भगवान करेगा; लेकिन एक भूल जो मैंने प परिवार को नाराज करके की है, उसे मैं अनुभव करता हूं । दुःख में कोई मेरे स नहीं होगा; मेरी खुशी में कोई हिस्सा न बंटायेगा । वंदना, यह एक ऐसी टीस जिससे मुझे कभी छुटकारा नहीं मिलता उसी भूल को तुम भी दोहराओ, यह हरगिज नहीं चाहूंगा ।"

वंदना ने उस समय बस यही क था–" अपना अधिकार बिना विरोध कि कोई किसी को देता नहीं सुधीर ।"

सुधीर उस समय गहरी सांस भर रह गया और वह गहरी सांस ही अभी त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूफानी सीटी की तरह वंदना के कानों में बजती रही थी। सबसे टूटे, दूसरे की अमानत की सांसों में अपने प्राण भरते हुए सुधीर के उस थके, व्यथित चेहरे में दोनों चित्र डूबकर न जाने कहां खो गये। वंदना के हृदय में सुधीर की साथी-रहित जिंदगी के प्रति एक आकर्षण निरंतर बढ़ता ही चला गया। वह उसके चेहरे के थके सलों को मिटा देना चाहती थी, अपनी जिंदगी उसे देकर उसके रीते जीवन को पूर्ण बना देना चाहती थी, उसे इस संसार में जकड़कर रखना चाहती थी।

"लड़के तो दोनों अच्छे हैं; पर डाक्टर का खानदान इसके खानदान से ऊंचा भी है, और धनवान भी। इसी को बुला लें; क्यों वंदी?"

सुधीर का चेहरा खो गया। मेज पर रखे चित्रों के स्थान पर उसे सुर्ख गुलाबों की खूनी रंगत दिखाई दी और उस खून में उसके मन का संपूर्ण डर समाता चला गया। वंदना ने आंखें तो नहीं उठायीं; पर दृढ़ स्वर में कह दिया –"मैं नहीं चाहती पिताजी!"

"क्या नहीं चाहती?"

"इन दोनों लड़कों में से एक से भी मैं विवाह नही करूंगी।"

पिताजी का चेहरा मारे क्रोध के लाल हो उठा। जोर से टेबल पर मुक्का मारकर वे बोले–"बेवकूफ लड़की, तू अभी तक उस भुखमरे के पीछे पड़ी हुई है। वंदी, जरा समझ से काम ले। जो खुद अकेला है, उससे तुझे क्या मिलनेवाला है? उसके लिए अपने मां-बाप, भाई-बहन तक का तुझे खयाल नहीं, कोई विचार नहीं?"

सुधीर ने भी तो यही कहा था–"परिवारवालों से विरोध करके मैं तुझे नहीं लूंगा वंदना। मैं यह नहीं चाहता कि कभी मैं न रहूं, तो तू किसी के आगे आंख से आंसू भी न गिरा सके। तू आ, पर सबको प्रसन्न करके, सबका आशीर्वाद लेकर।"

और वंदना ने मन में कहा था – "इस असंभव को मैं अपने बीच में कभी नहीं आने दूंगी सुधीर।"

बड़े भैया अभी तक चुप थे, इस बार बोले–"बचपन और भावुकता! तू अभी तक इन्हीं को आगे किये हुए है वंदी, जरा सोचेगी तो तुझे खुद पता लग जायेगा कि तेरा निर्णय गलत है।"

वंदना ने झुकी हुई दृष्टि उठाकर सीधे उनकी आंखों में देखा, दृढ़ कंठ से बोली–

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मेरे इस निर्णय में न बचपन है और न भावुकता बड़े भैया ! मैं जो कुछ कर रही हूं, सोच-समझकर कर रही हूं।"

पिताजी चिल्ला पड़े—"कौन-सी अक्लमंदी कर रही है तू।"

वंदना के ओंठों के कोनों पर मुस्कराहट आ गयी और उसकी आंखों में धूप में चमकते, लजीले सूरजमुखी के फूलों की पंखुड़ियां समा गयीं; बोली—"यही पिताजी कि मैंने व्यक्ति के पद और परिवार की गुरुता को नहीं, उसके चरित्र और त्याग की महानता को स्वीकार करना सीख लिया है। सुधीर ऊंचे पद पर न सही, परिवार से त्यक्त सही; पर व्यक्ति के चरित्र की दृढ़ता का वह इतना बड़ा मालिक है कि उस गुरुता को छू सकना ही मेरे लिए सबसे बड़ा संतोष है, मैं निर्जीव को नहीं, सजीव फूल को अर्घ्य चढ़ाना चाहती हूं पिताजी।"

पिताजी मारे क्रोध के बोल ही नहीं पाये और बड़े भैया यह कहकर कि "शब्दों के मोह में फंसकर पागलपन मत कर, जरा ठीक से समझ ले।" वहां से चले गये।

वंदना की आंखों में सुर्ख गुलाबों की रंगत समाती चली गयी और उस रंग ने उसके हृदय में एक अनोखा साहस उत्पन्न कर दिया। वह मुस्करा दी, बोली—"पिताजी देखे ही इस तरह निर्णय न लीजिये पिताजी, इसलिए मेरा विरोध मत कीजिये कि मैं आपका विरोध कर रही हूं, आप एक बार सुधीर से मिलिये तो सही, उसके उस बड़े साहस की बात सुनिये तो सही।"

"मैं नहीं सुनना चाहता, नहीं सुनना चाहता। चली जा यहां से।" मारे क्रोध के पिताजी अधिक नहीं बोल पाये और वंदना उनके आदेश पर कमरे से बाहर निकल आयी। लान के पेड़ों पर सूरज की किरणें नाच रही थीं, उन किरणों की चमक में वंदना के मन में गहरे तक बैठा अपने प्रति विश्वास समाता जा रहा था।

वह मुस्कराकर वहां से हट गयी।

★

सिर के ऊपर

इन्स्पेक्टर साहब एक स्कूल का मुआयना कर रहे थे। उन्होंने एक छोटे लड़के से पूछा—"तुम सड़क पर अपने सिर के ऊपर क्या देखते हो ?" लड़के ने जवाब दिया—"आसमान, सर !"

इन्स्पेक्टर—"और जब आसमान बादलों से घिरा होता है, तब क्या देखते हो ?" लड़के ने अपना छाता उठाकर उत्तर दिया—"अपना छाता, सर !"

योग्यता

पत्नी तुनक कर बोली—"हाय ! मेरे तो करम फूट गये, जो तुम जैसा निकम्मा पल्ले पड़ा। मुझे तो बहुत से वर मिल रहे थे, जो तुमसे ज्यादा योग्य थे।"

पति गंभीरता से बोला—"बेशक योग्य थे, तभी तो अपनी योग्यता के कारण तुम्हें चंगुल से निकल भागे !"

— एन० सी० ला

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्दू कहानी :

समझौता

अनवर ख्वाजा

नज्मा ने गुसलखाने से बरामदे की तरफ देखा, नरम-नरम सुनहरी धूप आंगन की दीवार से उतरकर बरामदे में बिछी हुई आरामकुर्सी पर चमक रही थी, धूप की गर्मी और तपिश में अच्छी लगनेवाली कशिश थी।

वह कशिश से चूर-चूर थी और सोचने लगी कि अगर थोड़ी देर के लिए इस नरम गुदाज कुर्सी पर सुस्ताये—लेकिन अभी तो बहुत-सा काम बाकी था। सुबह छः बजे वह जागी थी और अभी नौ बज रहे थे और उसे एक मिनिट की भी फुर्सत नहीं मिली थी। नन्हे के छोटे कपड़े धोने थे। एजाज और अपने शौहर के कपड़े धोबी को भिजवाने थे, दोपहर का भोजन तैयार करना था, कमरों को झाड़ना था, उसके सिवा न जाने कितने बेशुमार छोटे-छोटे काम थे। हर दस मिनिट के बाद वह खिड़की झांकती कि कहीं एजाज खेलते हुए दूर सड़क पर न निकल जाये।

रात और सुबह के ढेर सारे बर्तन आखिर उसने धो डाले! झुके-झुके उसकी कमर में टीस उठने लगी थी। गुसलखाने की दीवार के साथ टेक लगाकर उसने आंखें मूंद लीं। नींद एक नशे की तरह उसकी नस-नस में घुसी जा रही थी, एक गुबार की तरह उस पर छाने लगी। वह सोचने लगी, माई (नौकरानी) कम्बख्त को आज ही छुट्टी लेनी थी। कम-से-कम बर्तन धो डालती, तो थोड़ी देर आराम तो कर लेती। नींद में उसका हाथ बर्तनों से टकराया, तांबे की थाली गिरी, छनाका हुआ और वह घबराकर उठ बैठी, शुक्र है कोई चीनी का बर्तन नहीं टूटा। उसने बर्तन उठाये और बावर्चीखाने की अल्मारी में जाकर तरतीब से रख दिये।

ठंडे गुसलखाने में देर तक बैठने से उसके पांव सुन्न हो गये, उसकी टांगों में सर्दी की लहरें रेंग रही थीं। अब उसमें काम करने की शक्ति बाकी नहीं थी। नरम आंच-वाली धूप और गद्देदार आरामकुर्सी उसे बुला रही थी, वह आरामकुर्सी पर आकर लेट गयी।

पिछली कई रातों से नन्ही ने उसकी नींद हराम कर रखी थी और उस रात तो एक पल के लिए भी उसकी आंख नहीं झपकी थी। रात-भर नन्ही को सीने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगाकर टहलती रही; लेकिन उसके शौहर की नींद में जरा भी फर्क नहीं आया, वह मजे से खर्राटे भरता रहा। नज्मा को अपने शौहर की खुदगर्जी पर बेहद गुस्सा आया, क्या वह बहरा हो गया है, उसके कान में नन्ही की चीखों की आवाज नहीं जाती— यह मर्दों की जात होती ही खुदगर्ज है, औरतों को दुःख में फंसाकर खुद किस मजे से सो रहे हैं।

सुबह नाश्ते पर हफीज ने उसकी लाल अंगारा सूजी हुई आंखों और सुस्त तबीयत को जरा भी महसूस न किया, वह मजे से चाय की चुस्कियां लेता और अखबार पढ़ता रहा। एजाज ने दो बार अपने आप पर चाय गिरायी, एक बार मुन्नी का बिस्कुट छीनने की कोशिश की; लेकिन उसके शौहर ने अखबार से नजरें नहीं हटायीं।

नन्ही की पैदाइश के बाद एजाज पर वह बहुत कम ध्यान दे रही थी, इस बात को वह खूब महसूस कर रहा था, इसलिए वह बेहद जिद्दीऔर चिड़चिड़ा हो गया था और जान बूझकर ऐसी हरकतें करता, जिनसे उसकी अम्मी को गुस्सा आये।

नज्मा ने चाय की प्याली हाथ से रख दी। नींद के झोंके आ रहे थे, उसका जी चाहता था कि यहां से भाग जाये, किसी अंधेरी कोठरी में छिप जाये, सब चीजों से बेखबर और बेपरवाह होकर।

हफीज ने नाश्ता करके कोट पहना, टाई की गिरह दुरुस्त की, बच्चों को प्यार किया और उन्हें थपथपाया। "अच्छा बेगम साहब आदाब—हम चले, शाम को मिलेंगे

उसने अपनी पुरानी साइकिल उठा और गली में चला गया, वह उसे खिड़की से देखने लगी। शादी के बाद वह कुछ मोटा-ताजा हो गया था, करीब से वह कुछ लगने लगा था, शादी से पहले वह बांका जवान था।

जब वह गली के नुक्कड़ पर नजरों ओझल हो गया, तो गुस्से के साथ एक मुब्बत की लहर भी उसके दिल में उभरी जो तमाम काले और नफरत के भावों हावी हो गयी। वह एक मर्द की हैसियत तमाम चीजें महसूस भी तो नहीं कर सकता जो वह एक औरत की हैसियत से महसूस करती है। औरत बीज को दामन फैला कर संभालती है, उसे नर्मी, नमी और हरारत देती है। उसकी नाजुक-नाजुक डालों और कोंपलों को इस तरह फैलाती और संवारती है कि कोई कोमल कोंपल घायल न हो जाये। सृजन का यह गहरा भाव सिर्फ धरती का सीना और औरत का पेट ही अनुभव कर सकता है।

आरामकुर्सी पर वह गहरी नींद में डूबी पड़ी थी कि किसी ने दरवाजा खटखटाया उसकी आंख खुल गयी।

धूप कमरों तक पहुंच चुकी थी। उसने लपककर दरवाजा खोला, भंगिन को देखकर उसे बड़ा गुस्सा आया; लेकिन वह चुप रही। अगर भंगिन न आती, तो शायद वह दोपहर तक इसी तरह सोती रहती और सारे काम धरे रह जाते। उसने खिड़की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गली में झांका, एजाज ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर तस्वीरवाली मासिक पत्रिका लिये उदास बैठा उसके पन्ने उलट रहा था। उसे अपने बेटे पर एकदम प्यार आया, वह बेइख्तियार होकर उसे बुलाने लगी थी कि फिर रुक गयी, वह अंदर आ गया, तो फिर कोई काम न करने देगा।

बावर्चीखाने में जाकर उसने खाना पकाया, और अपने शौहर को भिजवाया और फिर नन्ही और मुन्ने को दूध पिलाकर सुला दिया और आरामकुर्सी पर लंबी हो गयी। उसने खुद भी खाना खा लिया। अब नींद का खुमार फिर चढ़ने लगा। वह एजाज का इंतजार करने लगी, वह आकर खाना खाले और वह फिर आरामकुर्सी पर लेट जाये। उसने तीन-चार बार उसे बुलाया; मगर वह आता ही नहीं था—खुदा-खुदा करके अंदर आया, अब खाने में उसने नखरे शुरू कर दिये, उसके बाद बाहर जाने लगा।

"देखो, अब बाहर न जाओ, मेरी मानो तो अब अंदर लिहाफ ओढ़कर सो रहो।"

"नहीं-नहीं मैं जाता हूं, छमू के घर जाता हूं।"

"शाम को चले जाना—बाहर सड़क पर भीड़ है।"

"नहीं, मैं अभी जाऊंगा।"

"जिद न करो मेरी जान, अच्छे बच्चे जिद नहीं करते।"

नज्मा ने उसे गले लगाकर प्यार किया। वह गुस्सा और मुहब्बत की मिली-जुली नजरों से अपनी मां को देखने लगा। नज्मा ने उसे दोबारा अपने सीने से भींचा और बाजुओं में लेकर बिस्तर पर डालकर लिहाफ ओढ़ा दिया।

जब वह आरामकुर्सी पर दोबारा आकर बैठी, तो धूप की गरम-गरम किरणें उसे थपकियां देने लगीं और यों लगा कि वह सफेद-सफेद रुई के गालों-जैसे बादलों में उड़ती चली जा रही है, और उसके चारों तरफ एक मदहोश खुशबू फैली हुई है, उस पर एक अनजानी और लजीज-सी गुनूदगी तारी हो रही है।

अचानक किसी ने उसकी कमीज खींची। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। एजाज उसकी कुर्सी के साथ लगा खड़ा था, उसकी आंखों में खौफ और गुस्से के भाव से थे।

"अम्मी मुझे वह बिस्कुट दो, जो अब्बा लाये थे।"

"जाओ दफा हो जाओ—अब्बा की अलमारी से ले लो। जरा भी आराम नहीं करने देते।"

उसकी पलकें एक धारे की तरह आंखों पर गिरने लगीं—थोड़ी देर बाद उसे फिर किसी ने झिंझोड़ा, उसने आंखें खोल दीं और गुस्से से चीखी—"कौन है?"

एजाज सहमा हुआ उसके सामने खड़ा था, उसके कपड़े मिट्टी से भरे हुए थे और हाथ और मुंह पर बिस्कुट की चिकनाई थुपी हुई थी।

"अब क्या चाहते हो?"

"अम्मी मुझे कहानी सुनाओ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यह कोई कहानी सुनाने का वक्त है? दफा हो जाओ यहां से—दूर हो जाओ, खुदा तुम्हें गारत करे।"

उसने एजाज के गाल पर एक जोरदार चपत रसीद कर दिया। एजाज रोता-बिसूरता बाहर निकल गया और नज्मा ने फिर आंखें बंद कर लीं। एजाज की आंखों में दो मोटे-मोटे आंसू चमक रहे थे। यह दर्दनाक दृश्य उसकी मां न देख सकी—उस पर नींद का एक दीवाना नशा छाया हुआ था।

वह गली में धीरे-धीरे चलने लगा, एक आवाज आहनी-हथौड़े की तरह उसके नन्हे से दिमाग से टकरा रही थी—"निकल जाओ—दूर हो जाओ—किसी को तुम्हारी परवाह नहीं है, कोई तुम्हारा खयाल तक दिल में नहीं लाता"—यह सोचते हुए वह सड़क पर निकल गया।

जब से नन्ही पैदा हुई थी, नज्मा की नींद हराम हो गयी थी। अब नन्ही तीन महीने की उम्र को पहुंच चुकी थी; लेकिन उन तीन महीनों की रातों में एक रात भी ऐसी न आयी कि जब उसने तमाम रात सोकर गुजारी हो—उसे यों लगता था कि वह सदियों से जाग रही है और नींद की तलाश भटक रही है और अब तो उसके बदन का बंद-बंद टूट चुका है, फना हो चुका है।

आरामकुर्सी पर दोबारा लेटते हुए नज्मा को नींद तो आ रही थी; मगर अब उसके नशे में तुंदी और सरकशी गायब हो चुकी थी। एक हल्की-हल्की गुनूदगी—एक टूटा हुआ नशा—एक अंधेरे उजाले की कैफियत... फिर हर तरफ धीरे-धीरे धुंध छा गयी। धूप की आंच यों लग थी, जैसे कोई उसे धुनकी हुई रुई के गो में दफन कर रहा हो। उसके दिमाग में अलाव-सा रोशन हो गया था—पांच सा दिन और रातें एक फिल्म की तरह च लगीं।

गद्देदार आरामकुर्सी पर बेसुध जिस्म अब कुछ ढल रहा था, उसका जव तवाना बदन परेशानियों के बोझ तले कर कितनी जल्दी कमजोरी की तरफ रहा था; लेकिन वह अपने जिस्म अनहतात से बेखबर थी। उसके दिमाग एक तूफान खौल रहा था—उसे यों महसू होता था कि उसकी जिंदगी एकदम बे कसद और बेकार है—इस वक्त भी वह अप उस बेजारकुन और बेमसरफ जिंदगी बारे में सोच रही थी—हालांकि उसका नींद के गलबे के नीचे दबा हुआ श लेकिन परेशानियों की लहरें बराबर रही थीं।

अचानक एक गुबार उठा, आंधी आ और तड़तड़ गोलियां चलने लगीं। घबराकर उठी बैठी। कोई जोर-जोर उसके दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। उ दरवाजा खोला। एक जवान शख्स खून लथपथ एजाज को बाजुओं में उठाये खड़ा था। नज्मा ने चीख मारी और बेहो हो गयी।

× × ×

नज्मा और हफीज ने अपने माता-पि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मर्जी के खिलाफ शादी की थी। चंद महीनों बाद ही वे अपनी जिंदगी में एक सूनापन-सा महसूस करने लगे थे। दोनों ने अनफरादी तौर पर एक बेजारी और उकताहट महसूस करनी शुरू कर दी। वे हैरान थे कि ऐसा क्यों हो रहा है, अब शादी के जमाने के जोश-खरोश का कोई नाम व निशान नहीं था और आखिर यह तूफान किधर को चला गया था। क्या जिंदगी की वह कगार, जो इनको उस वक्त इतनी अजीम नजर आ रही थी, सिर्फ चंद मुलाकातों में फना हो गयी ? बहरहाल उनसे कोई-न-कोई गलती जरूर हुई है।

हफीज अपनी बेजारी को दुनियावी झगड़ों में गर्क कर दिया करता था; लेकिन नज्मा की तनहाई और उदासीनता उसे जहर की तरह काटती, कोई तेज नश्तर सीने में उतरता चला जाता। हफीज ने नज्मा को बहलाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें कीं; लेकिन कोई फायदा न हुआ।

एक दिन नज्मा ने उसे खुशखबरी सुनायी कि वह बाप होनेवाला है। खुशी के मारे वह नाचने लगा।

नज्मा के यहां चांद-सा लड़का पैदा हुआ। हफीज खुशी से फूला न समाया।

नज्मा की तनहाई और उदासीनता का इलाज तो हो गया, उसकी अपनी तनहाई में इजाफा हो गया, वह अब अपने आपको इस घर में अजनबी महसूस करता। नज्मा बच्चे को पाकर उसे बिलकुल भूल गयी थी। उसे शौहर की जरूरतों का कोई एहसास ही न रहा था।

हफीज अब दफ्तर के बाद ज्यादा घर नहीं आता, शाम का वक्त दोस्तों-यारों के साथ घूम-फिरकर गुजारता।

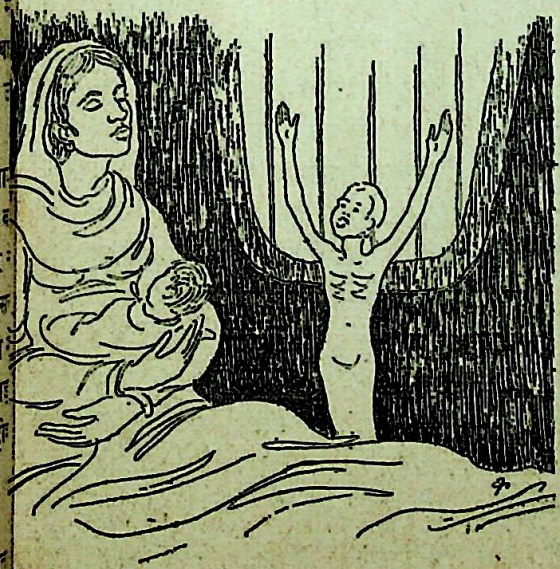

मुन्ना एजाज अभी एक साल का नहीं हुआ था कि नज्मा ने उसे एक खुशखबरी और सुनायी। वह सख्त झुंझलाया।

"यह क्या हिमाकत शुरू कर दी तुमने ?"

"हिमाकत की क्या बात है इसमें ?"

"हां, तुम तो इस मामले में अक्ल से काम लेना कुफ्र समझती हो।"

"तो फिर क्या करूं ?"

"इलाज कराओ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"वाह, इलाज कराना जैसे मजाक है—चार महीने तो गुजर चुके हैं।"

"तो पहले बतातीं, तो कुछ किया भी जाता।"

"मुझे डर था कि तुम उस वक्त भी यही मशवरा दोगे।"

"देखो नज्मा, तुम पढ़ी-लिखी होकर भी कई बार ऐसी बेतुकी बातों पर अमल करती हो कि तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई पर दुःख होता है—बच्चे ज्यादा हो जायें, तो न उनको अच्छी तरह तालीम दे सको, न उनको समाज के लिए उपयोगी बना सको। सोचने का यह अंदाज गलत है, हमें जमाने के साथ चलना होगा।"

"तो क्या मैं जमाने के साथ नहीं चल रही ?"

"जमाने के साथ चलती तो हो; मगर बददिली से अब बताओ कि तुम मुन्ने को संभालोगी या इस मुन्नी बला को—दोनों पर पूरा ध्यान न दे सकोगी, नतीजा तकलीफ और बेआरामी के सिवा कुछ और नहीं निकलेगा।"

"तकलीफ होगी तो मुझे होगी—आप को क्या है ?"

"हां ठीक है; लेकिन मेरी जिंदगी भी तो हराम हो जायेगी।"

"अच्छा बाबा माफ कर दो, तुम तो हाथ धोकर पीछे पड़ गये हो।"

नज्मा के यहां दूसरा बेटा पैदा हुआ, फिर एक लड़की। हफीज ने एक-दो बार कोशिश की; लेकिन जब नज्मा उससे सहयोग न करती, तो वह बेबस था।

हफीज नज्मा को बेहद चाहते हुए उसकी दकियानूसियत से सख्त बेजार वह इतनी पढ़ी-लिखी होकर भी तवी गंडों और जिन्न-परियों पर ईमान रख अब उसकी हिमाकत और जिद के का तीन-चार बच्चे ऊपर-तले पैदा हो गये जिनकी पूरी तरह देखभाल नहीं हो रही उनकी सेहत का भी सत्यानाश हो था। घर की हालत सख्त खराब रहती

बड़ा लड़का एजाज अब बहुत चिड़ा हो गया था। बात-बात पर करता और चीख-चीखकर सारा सिर पर उठा लेता। यह इस बात का सबूत था कि मां उस पर पूरा ध्यान नहीं रही है। उसके छोटे भाई और नन्ही की वजह से उसकी अहमियत बिलकुल होकर रह गयी थी।

हफीज अक्सर घर देर से आता, खा खाते ही उसकी आंखें मुंदने लगतीं, थो देर में खर्राटे लेने लगता। नज्मा नन्ही वजह से देर तक जागती रहती। कई नन्ही रोने लगती, तो किसी तरह चुप होती। वह अपने कंधे से लगाकर थ करती; लेकिन वह रोये जाती। हफीज के खर्राटों में जरा भी फर्क न पड़ा नज्मा का जी चाहता कि उस चीख गुड़िया को उस पर दे मारे, ताकि उ खर्राटों की यह मनहूस आवाज बंद हो जा

पिछले तीन-चार महीने तो बस ज घुम में गुजरे थे। स्कूल में पढ़ाते उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आने लगती। जब ऊंची कुर्सी पर बैठकर वह कुर्सी के साथ सिर लगाती, तो खुद-बखुद उसकी आंखें बंद होने लगतीं। लड़कियों के चेहरे धुंधला जाते, ब्लैक-बोर्ड पर हर्फ मद्धम पड़ जाते और वह खुमार के तालाब में डूबती जाती कि लड़कियों का बढ़ता हुआ शोर उसे चौंका देता और वह उन्हें डांटने-डपटने लगती।

फिर वह सोचती कि मुलाजिम-पेशा औरतों को शादी नहीं करनी चाहिये। शुक्र कि हफीज उसकी तकलीफ को देखकर एक बूढ़ी माई को घर के कामकाज करने के लिए ले आया था। फिर एक मनहूस दिन जब उसे छुट्टी थी और माई अपने किसी काम से गांव गयी हुई थी, वह भयंकर दुर्घटना घटी और एजाज हमेशा के लिए उससे जुदा हो गया।

एजाज की मौत ने नज्मा को एक लंबी चुप लगा दी थी, उसने इतना बड़ा सदमा कभी बर्दाश्त नहीं किया था। वह हैरान थी कि वह किस तरह जिंदा बच गयी, उसका दिल इतना कमजोर था कि वह एजाज की मामूली तकलीफ से भी तड़प उठती थी; लेकिन अब उसकी मौत के बाद भी जिंदा थी—एजाज की मौत की वह खुद जिम्मेदार थी।

एक साल और गुजर गया। उनके घर में अब एक स्थायी उदासी और सूनापन छाया रहता। हफीज अक्सर देर से आता और कभी-कभी खाना खाये बगैर ही पलंग पर लेट जाता। थोड़ी देर बाद उसके खर्राटों की आवाज से मालूम होता कि वह सो गया है। सुबह के वक्त तो उनकी गाहे-बगाहे ही मुलाकात होती। वह सुबह उठकर स्कूल चली जाती, माई बच्चों को संभालती और हफीज के लिए चाय वगैरह बनाती।

उसे अब ऐसा मालूम होता था कि उसे हफीज से शादी नहीं करनी चाहिये थी। जब इश्क एक गुब्बार बनकर उड़ जाता है और तल्ख हकीकतें मुंहफाड़े सामने आ जाती हैं, तो उन चीजों पर सिर्फ औरत-मर्द के हार्दिक मिलाप के जरिये ही काबू पाया जा सकता है। यह उसके शौहर की फिक्र का निचोड़ था।

और यह हार्दिक मिलाप कोई असंभव चीज नहीं—हम दोनों मिलकर उसे पैदा कर सकते हैं। उसके शौहर ने उसे समझाया।

"किस तरह ?"

"अरे भई। सीधी-सी बात है, जब तुम अपनी बेजा तरफदारी कुर्बान करो, तो कुछ मैं भी कुर्बानी करूं—इस तरह आपस में हार्दिक मिलाप पैदा हो सकता है।"

"लेकिन बेजा तरफदारी से आपका क्या मतलब है ?"

"यह एक ऐसी चीज है, जो हमारी किसी योजना को सफल नहीं होने देती।"

"भई, मेरी समझ में कुछ नहीं आता, तौबा, आपसे कौन बहसे।"

अब वह फिर उम्मीद से थी; लेकिन गिरने से मामला खराब हो गया। उसने रो-रोकर बुरा हाल कर दिया और हफीज को कसूरवार गर्दानने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन वह घर वापस आया, तो नज्मा रो रही थी।

"आखिर कब तक शोक मनाओगी प्यारी, इस तरह जिंदगी नहीं गुजर सकती।"

"हाय आपको इससे क्या, दुःख तो मुझे हुआ है।"

"खुदा के लिए अब इस झगड़े को छोड़ो, इसके बगैर भी जिंदगी गुजर सकती है। तुम्हारी इस हिमाकत से पहले ही एक भयंकर दुर्घटना हो चुकी है, अपना नहीं तो मुन्ने और मुन्नी का खयाल करो—अभी तो उन्होंने अच्छी तरह चलना-फिरना भी नहीं सीखा है।"

"आपको तो बच्चे अच्छे नहीं लगते।"

"बच्चे अच्छे लगने का मतलब यह नहीं कि एक फौज पैदा कर दो — न उनकी देख-भाल हो सके, न उनका पेट भर सके—यह कहां की अक्लमंदी है भला।"

"आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।"

"पांच साल से समझा रहा हूं, तुम समझने की कोशिश ही नहीं करती हो—सारा घर जहन्नुम-सा लगता है।"

"चलिये, आपका नुस्खा आजमाते हैं, हार्दिक मिलापवाला नुस्खा!"

"लेकिन किस तरह आजमायें?"

"कुछ आप अपने आबाई तअस्सुब (पात की बातें) कुर्बान करें और कुछ करती हूं।"

"मेरे आबाई तअस्सुब कौन से हैं

"मसलन देर से घर न आयें, उन दो कियों से संबंध-विच्छेद कर लें, जि आपने धोखे में रखा हुआ है कि आप शादी करेंगे — हालांकि नये शादी-कानू आप मेरी जिंदगी में ऐसा नहीं कर सकते

हफीज ने कहकहा लगाया — "मंजूर! अब कहो—तुम कौन से आबाई स्सुब कुर्बान करोगी?"

"वह जो आपने कहे हैं।"

"मसलन?"

"भई, मुझे शर्म आती है।"

यानी मन्सूबाबंदी (परिवार-नियोज करोगी?"

"मंजूर।"

"खूब!" और हफीज ने नज्मा के ह पर हाथ मारा और दोनों हंसने लगे

रूपांतरकार : गुरुप्रसाद अब

★

धन्यवाद

एक दावत में एक नौजवान लड़के की मुलाकात एक डाक्टर से हुई। लड़के मुस्कराकर कहा—"डाक्टर साहब, आपके इलाज से मुझे वास्तव में बड़ा लाभ मिला आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।"

डाक्टर ने आश्चर्य से कहा—"लेकिन आपका तो मैंने कभी इलाज किया नहीं।

लड़का बोला—"मेरा इलाज नहीं किया तो क्या हुआ। आपने मेरे चाचा का इलाज किया था। अब मैं उन्हीं की जायदाद का उत्तराधिकारी हूं।"— एम० आर० गु

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किम

—रुडयार्ड किप्लिंग

एक साहसी व चतुर बालक की अद्भुत रम्य कथा—अमर आंग्ल साहित्य-शिल्पी रुडयार्ड किप्लिंग की कलम से।

रूपांतरकार : श्रीसत्य

किम किम्बालओ' हारा का लड़का था। किम्बालओ' हारा भारत में अवस्थित आइरिश रेजिमेंट में सार्जेंट था। किम के माता-पिता उसकी छोटी उम्र में ही गुजर गये। पता नहीं किस तरह वह अपने आप ही पल-पुस गया, लाहौर की गलियों में। तपती दोपहरियों में घूमते-घूमते उसका रंग गेहुंआ हो गया था और बजाय अंग्रेजी के वह हिन्दुस्तानी बोलता था—वह भी बड़ी खूबी के साथ बोल लेता था। साधु और फकीरों की तरह वह मांगकर खा लेता और दिन-भर खेलता-कूदता और घूमता-फिरता रहता। लोग उसे 'विश्वमित्र' कहा करते। तेरह साल तक वह बड़ी आजादी के साथ, बिना कुछ किये-धरे आवारा लड़के की तरह भटकता रहा।

एक दिन वह लाहौर के म्यूजियम के सामने पड़ी तोप पर शाही शान के साथ बैठा खेल रहा था। इसी समय एक दूसरा लड़का भी आकर उसी तोप पर बैठ गया। किम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को यह बात कुछ विशेष पसंद नहीं आयी। बोला—"अरे ओ, तोप के ऊपर बैठा है? तेरी मां रोने लगेगी। जा भाग जा।"

इसी समय उसने ीत वस्त्रों से सुसज्जित एक लंबे-चौड़े कद्दावर तिब्बती लामा को अपनी ओर आते देखा। यह आदमी उसे कुछ अजीब-सा लगा। इस तरह की वेश-भूषा इस देश में तो होती नहीं। कुतूहल के मारे अपने राजसिंहासन को छोड़कर किम उस आदमी के पास दौड़कर चला गया। आगंतुक लामा ने किम से पूछा—"बेटे, यह जो सामने बड़ा सा मकान दिखाई देता है, वहां क्या है?"

किम ने दर्प के साथ कहा—" आपको नहीं मालूम? यह अजायबघर है। अजीब-अजीब चीजें यहां इकट्ठी करके रखी गयी हैं। देखने लायक!"

"क्या कोई भी अंदर जाकर वहां रखी हुई चीजों को देख सकता है?"

"जी हां, कोई भी अंदर जाकर देख सकता है। मैं तो रोज अंदर आता-जाता रहता हूं। मैं कोई पैसेवाला थोड़े ही हूं? अच्छा बाबा, आप कौन हैं और कहां से आ रहे हैं?"

आगंतुक ने जवाब दिया—"मैं यहां से बहुत दूर तिब्बत से आ रहा हूं। मैं लामा हूं। बूढ़ा हो गया हूं। मरने से पहले मैं बौद्ध तीर्थों की यात्रा करना चाहता हूं।"

किम ने परिचय दिया—"मेरा नाम किम है। लोग मुझे 'विश्वमित्र' भी कहते हैं। मैं सबका दोस्त हूं, इसलिए।"

"अच्छा!" लामा ने कहा—"यह तो अच्छी बात है। तुम सारे संसार के मित्र हो अच्छा, सुना है, इस अजायबघर में भगव बुद्ध की अनेक मूर्तियां रखी हुई हैं।"

"जी हां, बहुत सारी। आइये, मेरे आइये। मैं आपको दिखा लाता हूं।"

दोनों अजायबघर में चले गये। किम लकड़ी के बने एक कमरे की ओर इश करते हुए बताया—"उस कमरे में इस अ यबघर को चलानेवाले साहब रहते हैं।

तभी म्यूजियम के क्युरेटर महोदय आ गये। उन्होंने लामा को बड़े आदर साथ ग्रहण किया। अपने कमरे में बुल गये। बड़ी उत्सुकता के साथ उन्होंने पूछ "तिब्बत के क्या हाल-चाल हैं?"

जब लामा क्युरेटर के साथ उस ल के बने कैबिन में चले गये, तो किम ब बैठकर एक सेंध में से अंदर की बातें की चेष्टा करने लगा। काफी देर तक में धर्म और तीर्थों की बातचीत चलती लामा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते कहा—"तीर्थयात्रा करने के लिए जरू कि आदमी उसके लायक हो। खैर, दरअसल यह है कि जब भगवान बुद्ध थे, तब उन्होंने अपने धनुष से एक तीर था, और वह नजरों से ओझल हो जहां जाकर वह तीर गिरा, वहां एक निकल आयी। हमारे धार्मिक ग्रंथों में गया है कि इस नदी में नहाने से तमाम नष्ट हो जाते हैं और असीम पुण्य होता है। एक सपने में मुझे आदेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि मैं तीर द्वारा उत्पन्न उस पुण्यसलिला नदी का पता लगाकर उसमें स्नान करूं, ताकि मेरे समस्त पाप नष्ट हो सकें। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता, वह नदी है कहां?"

"सपने में कही गयी बात का पता लगाना तो बड़ा मुश्किल है।"

"अच्छा, तो मैं इसी खोज में चलता हूं। भगवान की कृपा हुई, तो एक-न-एक दिन मुझे उस पतित-पावनी नदी का पता जरूर चल जायेगा। अच्छा नमस्कार।"

× × ×

अजायबघर से निकलने के बाद लामा ने देखा कि परछाईं की तरह किम उसके पीछे-पीछे चला आ रहा है। किम ने पूछा—"अब आप क्या करेंगे?"

लामा ने जवाब दिया —"यहां से बनारस जाऊंगा। लेकिन अभी तो मुझे बड़ी भूख लगी है।"

किम ने फौरन जवाब दिया—"लाइये, अपना भिक्षा-पात्र मुझे दीजिये। मैं इसे भोजन से भर लाऊंगा। यह काम मैं बड़ी खूबी से कर सकता हूं।"

लामा का भिक्षा-पात्र लेकर किम एक बुढ़िया के पास पहुंचा। वह खाना पका रही थी। किम ने कहा—"मांजी, बहुत दूर से एक पहुंचे हुए संत आये हैं, भूखे हैं। कुछ दो। यह लो इसमें डाल दो।"

बूढ़ी मैया ने भिक्षा-पात्र हाथ में लेकर कहा—"इतना बड़ा भिक्षा-पात्र! इतनी बड़ी तो तेरी खोपड़ी भी नहीं है रे! ले।"

भोजन लेकर किम लामा के पास लौट आया। चौराहे के एक किनारे लामा किम का इंतजार कर रहे थे। दोनों ने मिलकर पेट-भर खाना खाया। लामा ने किम से कहा—"ऐसा लगता है, भगवान ने ही तुम्हें मेरे पास भेज दिया है। शायद उनकी इच्छा है कि मैं तुम्हें भगवान के मार्ग में दीक्षित करूं। यह भी संभव है कि उन्होंने तुम्हें इसलिए भेजा हो कि मैं परम तीर्थ गुप्त-गंगा का पता लगा सकूं। चलोगे तुम मेरे साथ?"

किम फौरन राजी हो गया। बोला—"जरूर चलूंगा। बाबा मुझे तो आप-जैसा बढ़िया आदमी आज तक मिला ही नहीं। लेकिन यह नदी कहां है, यह तो मुझे भी नहीं मालूम। सच बात तो यह है कि मैं भी इसी तरह एक जगह की खोज में हूं। मेरे पिताजी मुझे बता गये थे कि किसी दिन मैं एक लाल सांड़ को हरी घास पर देखूंगा। वह लाल सांड़ मेरी मदद करेगा।"

"किस तरह की मदद बेटा?"

"यह तो मुझे नहीं मालूम बाबा। भगवान ही जाने। मुझे तो इतना ही मालूम है कि पिताजी ऐसा कहा करते थे। मैं आपके साथ चलता हूं। अगर भाग्य ने साथ दिया, तो आपको गुप्त नदी का पता चल जायेगा और शायद मुझे हरी घास पर लाल सांड़ मिल जाये।"

"अच्छी बात है। तुम मेरे साथ ही बनारस चलो। आज ही रात को रवाना हो जायें।"

किम ने समझदार आदमी की तरह जवाब दिया —"रात को यात्रा करना ठीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं । रास्ता खतरनाक है । चोर-लुटेरों की भरमार है। मेरे साथ चले चलिये। उस चौराहे पर घोड़ों का एक तबेला है । वहां रहने-ठहरने का बंदोबस्त हो जायेगा । रात-भर वहीं आराम करेंगे और सुबह रवाना हो जायेंगे ।"

संध्या होने आयी थी। बाजार की दूकानों पर बत्तियां जल उठीं । सड़क पार करके वे घोड़ों के एक व्यापारी महबूब अली के तबेले में पहुंच गये । किम ने आवाज दी –"ओहे, महबूब अली !"

अंदर से आवाज आयी –"कौन ? किम विश्वमित्र ! ...अरे आओ, क्या बात है ? कैसे आये ?"

किम ने पुलकित स्वर में जवाब दिया– "मैं तिब्बत के इन लामाजी का चेला हो गया हूं महबूब अली ! हां, हम दोनों कल बनारस के लिए रवाना हो जायेंगे । इस लाहौर से पेट भर गया मेरा ! जी ऊबने लगा है । देश-विदेश घूमूंगा । तरह-तरह की चीजें देखूंगा । हवा-पानी बदल जायेगा ।"

महबूब अली ने इस तेजस्वी बालक की बातों का संक्षिप्त-सा जवाब दिया–"तो भैया, बता तेरी क्या मदद कर सकता हूं ?"

"वाह, तुम नहीं मदद कर सकोगे, तो और कौन कर सकता है ? मैं और जाऊं भी किसके पास ? मेरे पास एक भी पैसा नहीं है । और सफर में आदमी के पास पैसा जरूर होना चाहिये; नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाती है ।"

न "अच्छा !" महबूब अली ने हंसकर कहा–"ठीक है, ठीक है । तुम एक काम पैसों का बंदोबस्त हो जायेगा । रास्ते अंबाला पड़ेगा । वहां मेरा एक संदेश जाओ । वहां के अंग्रेज अफसर के पास जाना । उनका नाम है –कर्नल क्राफ्ट उनसे जाकर कहना, घोड़ी की नस्ल ऊंची है । लेकिन यह बात किसी और मालूम नहीं होनी चाहिये ।"

तभी एक छाया पिछले हिस्से में झलक दिखाकर गायब हो गयी । नाट ढंग से महबूब अली चिल्लाया –"दुनि भर के भिखमंगों का क्या मैंने ही ठेक रखा है ? तुम लोगों को मरने के लिए जगह नहीं मिलती, जो सब लोग यहीं आते हो ? अच्छी बात है, लो यह रोटी भागो यहां से ।"

किम रोटी लेकर चुपचाप चला बाहर लामा उसका इंतजार कर रहे रोटी तोड़ते ही किम को मालूम हो गय इसमें रुपये रखे हुए हैं और एक कागज टुकड़ा भी । इस छोटे-से काम के लिए यह मजदूरी मिल रही है, यह सोचकर बड़ा खुश था । लेकिन उसे यह भी लग था कि केवल किसी घोड़ी की वंश की खबर पहुंचाने के लिए इतना पैसा दिया जा सकता ।

दोनों अस्तबल के एक कोने में सोये थे । आधी रात के समय किम की नींद गयी और उसने देखा, महबूब अली के मदे में एक आदमी छिपकर चढ़ आ उसने झांककर देखा । एक हाथ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिये वह कुछ ढूंढ़ रहा था। किम को लगा कि शायद यह आदमी उस कागज की तलाश में है, जो महबूब अली ने उसे दिया है। उसने फौरन फैसला कर लिया कि जो आदमी छुरा लेकर थैलों की तलाशी ले सकता है, वह पेट फाड़कर भी उस कागज को ढूंढ़ने की कोशिश करेगा ही; इसलिए उसे लामा के साथ फौरन रवाना हो जाना चाहिये। चांदनी रात थी। रास्ता अच्छी तरह से नजर आ जायेगा। स्टेशन पहुंच जायेंगे।

लामा गहरी नींद में सो रहे थे। सारी हकीकत किम ने जगाकर दबी जबान से सुनायी, तो घबरा गये। फौरन चलने को राजी हो गये। स्टेशन पर आकर दोनों ने अंबाला का टिकिट लिया। गाड़ी में बैठे। गाड़ी चल दी। धीमी चलनेवाली इस रेल-गाड़ी में बैठे-बैठे दोनों ऊब रहे थे, झपकियां ले रहे थे। चार-छः घंटे गुजर जाने के बाद किम ने लामा से कहा—"हम लोग अंबाला उतर जायेंगे। महबूब अली का संदेश देने के बाद पैदल चलेंगे, ताकि जिस तीर्थ की खोज में आप निकले हैं, वह छूट न जाये। आप गुप्त नदी का पता लगायें। और अगर कहीं मुझे भी हरी घास पर लाल सांड़ मिल गया, तो फिर क्या बात है! मेरे पिताजी कहा करते थे, वह लाल सांड़ मेरी बड़ी मदद करेगा।"

× × ×

अंबाला पहुंचने के बाद किम लामा को छोड़कर संदेश पहुंचाने चला गया। कुछ ही देर में उसने अंग्रेज अफसर क्राइटन का पता लगा लिया। काफी देर के बाद एक साहब बाहर निकल आये। उसने चहारदीवारी के

किप्लिंग

पीछे से कहा—"गरीबनिवाज! महबूब अली ने कहा है कि घोड़ी की नस्ल ऊंची है।"

साहब वहीं खड़े हो गये। पूछा—"सबूत?"

किम ने महबूब अली का दिया हुआ कागज निकालकर एक पत्थर में लपेटा, उसे साहब की ओर फेंकते हुए उसने कहा—"यह रहा।"

पत्थर का टुकड़ा मय कागज के साहब के पांवों के ठीक सामने आ गिरा। साहब ने यह संदेश उठा लिया और वे अंदर चले गये। किम भी साहब के मकान का चक्कर लगाकर एक खिड़की के पास आकर खड़ा हो गया। तभी एक बग्घी इस मकान के सामने आकर खड़ी हो गयी। क्राइटन साहब ने आगंतुक को सादर ग्रहण किया। धीरे से, मगर उतावली के साथ उन्होंने आगंतुक से कहा—"यदि आपको समय हो, तो एक घोड़ी के बारे में मैं आपसे सलाह करना चाहता हूं। अंदर जाकर उन्होंने किम का दिया हुआ कागज इस नवागंतुक के हाथों में दिया। उन्होंने संदेश पढ़ा। बोले—"मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी का इंतजार कर रहा था।"

"इसका मतलब हुआ," कर्नल क्राइटन ने पूछा—"लड़ाई।"

"नहीं। इसे सिर्फ सजा देना ही कहा जा सकता है। यहां के पांच देशी रजवाड़ों ने बरतानिया सल्तनत के खिलाफ सिर उठाया है। वे तैयारी कर सकें, इससे पहले ही हमें उनका सिर कुचल देना है। फौरन दो ब्रिगेड बुलायी जायें। आठ हजार सिपाही काफी होंगे।"

इसके आगे किम कुछ सुन नहीं सका। वह सोचता रहा, यह दूसरा साहब कौन था?

थोड़ी देर बाद वह क्राइटन साहब के रसोईघर के सामने जाकर खड़ा हो गया। रसोइये से उसने प्रार्थना की—"मैंने तीन दिनों से खाना नहीं खाया है। बर्तन मांजने का काम मिल जाये, तो कर सकता हूं। भूखा हूं। खाने को चाहिये।"

इस फटेहाल लड़के को इस तरह अपने सामने देखकर देसी रसोइया विलायती मालिक की शान के साथ बोला—"क्या समझ रखा है तुमने? क्राइटन साहब के यहां कोई ऐरा-गैरा आदमी काम कर सकता है? खासकर जब कि वे आज सेना के कमांडर-इन-चीफ को दावत दे रहे हैं! भाग जाओ यहां से।"

इतना सुनना ही किम के लिए काफी था। वह तत्काल वहां से भाग खड़ा हुआ। वह समझ गया कि यह जो लंबा-चौड़ा आदमी था, वही कमांडर-इन-चीफ है। किसी को सजा देने के लिए वह आठ हजार आदमियों की बलि चढ़ा देगा।

किम जब लामा के पास पहुंचा, तो उसके पास उसने एक ब्राह्मण ज्योतिषी को देखा। लामा ने ब्राह्मण का परिचय देते हुए किम को बताया कि ये यहां के बहुत बड़े ज्योतिषी हैं। बड़ी सिद्धि है इनकी। ये बड़े विद्वान हैं।

किम ने उत्सुकता के साथ पूछा—"अब बताइये, हरी घास के मैदान में क्या लाल सांड़ मिल जायेगा?"

ज्योतिषी ने पूछा—"तुम अपनी जन्म तिथि जानते हो?"

किम ने बताया—"मई की एक तारीख और सन था—जिस साल श्रीनगर में भूकंप आया था।"

थोड़ी देर तक ज्योतिषी महोदय जमीन पर उंगली से लिखकर कुछ गिनती करते रहे। फिर किम की ओर उन्होंने आदर के साथ देखा और बोले—"यदि नक्षत्रों की भाषा सही है, तो तीन दिन के भीतर ही आदमी आकर तैयारी कर जायेंगे। इसके बाद लाल सांड़ आयेगा। लेकिन इसका मतलब होगा—युद्ध, लड़ाई। यही होगा। मैं गलत नहीं बोलते।"

फिर लामा की ओर देखते हुए उसने पूछा—"मेरी समझ में एक बात नहीं आती कि जिसके सितारे उसे युद्ध की ओर ढकेल कर ले जा रहे हों, वह एक धार्मिक व्यक्ति के साथ क्यों घूमता-फिरता है?"

किम ने जवाब दिया—"इसलिए कि आज तक ऐसा पवित्र आदमी देखा नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे...एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG. 35 H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

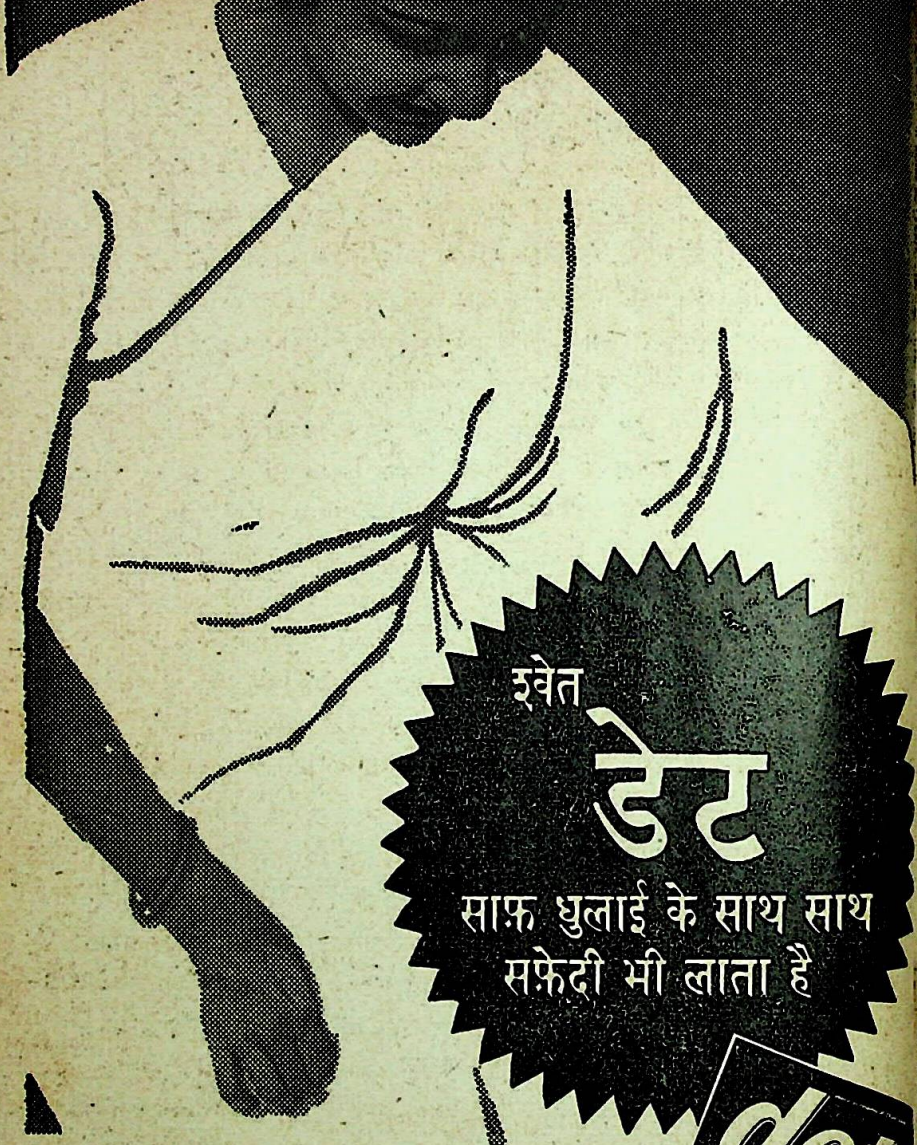

श्वेत

डेट

साफ़ धुलाई के साथ साथ
सफ़ेदी भी लाता है

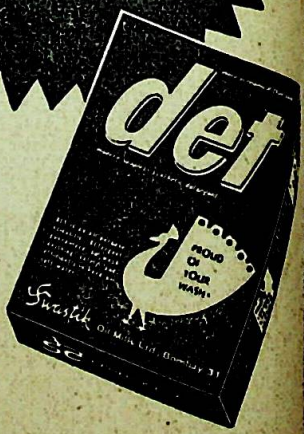

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है। केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से...और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना...कर सकता है

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन लामा और उसका शिष्य किम एक साथ चल दिये। एक को किसी गुप्त नदी का पता लगाना था और दूसरे को उत्सुकता थी उस लाल सांड़ के बारे में, जो हरी घास पर खड़ा होगा। दिन-भर वे चलते रहे। दूसरे दिन संध्या के समय उन्होंने आराम करने के लिए एक धर्मशाला के सामने डेरा डाला। यहीं उनकी मुलाकात एक धनी विधवा से हुई। इस तेजस्वी बच्चे को देखकर उसने किम को अपने पास बुलाया। उसे मालूम हुआ कि यह किसी साधु का शिष्य है। अपनी गाड़ी में से परदा हटाकर महिला ने किम से पूछा—"सुना है, तुम किसी महात्मा के सत्संग में यात्रा कर रहे हो। महात्मा से मेरी ओर से हाथ जोड़कर निवेदन करना कि मेरी लड़की के दूसरा भी लड़का ही हो।"

अब तक किम पक्का चेला हो गया था। उसने जवाब दिया—" लामा को अष्ट-सिद्धि प्राप्त है माताजी। मैं उनसे कहूंगा कि वे आपसे बातचीत करें।"

लामा ने इस महिला से काफी देर तक बातचीत की। विषय धार्मिक ही रहा। लौटकर उन्होंने किम को बताया कि ये देवीजी भी दक्षिण की ओर जा रही हैं और उनका यह आग्रह है कि हम लोग उनके साथ ही यात्रा करें।

किम की समझ में एक ही बात आयी। महिला धनवान है; रास्ते में खाने-पीने की कोई असुविधा नहीं होगी।

लामा ने कहा—"लगता है, भाग्य हम लोगों पर प्रसन्न है।"

"बाबा, मुझे सिर्फ आपके आराम की फिक्र है।"

"मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूं किम। आज तक मैं अनेक लोगों से मिला हूं। लेकिन मुझे इतना मोह कभी नहीं हुआ, जितना कि तुम्हारे प्रति हो गया है।"

दूसरे दिन सुबह ही यह काफिला अपनी यात्रा पर चल दिया। शाम के समय उन्होंने एक अच्छा स्थान देखकर पड़ाव डाला। लामा के साथ किम यों ही भटकने के लिए चल दिया। गांव की सरहद से कुछ दूर किम ने देखा कि सामने से दो सैनिक चले आ रहे हैं। लामा के साथ किम एक पेड़ की आड़ में छिप गया। सामने एक हरी घास से भरा हुआ लंबा-चौड़ा मैदान था। उन दो सैनिकों में से एक ने एक झंडा इस मैदान के ठीक मध्य भाग में गाड़ दिया। कुछ देर तक दोनों कुछ बातचीत करते रहे। इसके बाद वे चले गये।

किम ने लामा से कहा —"शायद ये लोग यहां पड़ाव डालनेवाले हैं। अरे देखो, इस हरे झंडे में लाल सांड़ का निशान है। ज्योतिषी ने यही कहा था, पहले दो आदमी आकर तैयारी कर जायेंगे; इसके बाद मुझे लाल सांड़ हरी घासवाली जगह पर दिखाई देगा। देखो, लगभग दस फुट दूर वह रहा लाल सांड़, जो मेरा भविष्य बदलनेवाला है। देखें, आगे क्या होता है?"

किम की खुशी से खुश होकर लामा ने मुस्कराकर कहा —" ठीक है, तुम्हें तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई—५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी खोज का फल मिल गया बेटे ! देखना यह है कि आगे क्या होता है।"

तभी उन्होंने देखा कि उसी ओर फौज के सिपाही चले आ रहे हैं। लामा और किम पेड़ के तने की आड़ में खड़े होकर चुपचाप देखने लगे। देखते-देखते रेजिमेंट ने अपने तंबू गाड़ दिये। चंद मिनिटों में ही वहां एक फौज की टुकड़ी ने डेरा डाल दिया।

किम ने कहा—"चलो बाबा, हम लोग यहां से चल दें। रात में जब अंधेरा हो जायेगा, तब लौट आयेंगे। देखना है, वहां आगे क्या होनेवाला है।"

उस समय तो लामा और किम चले आये। लेकिन रात के लगभग दस बजे वे वापस लौट भी आये। लामा को एक पेड़ के नीचे छोड़कर किम दबे कदम कैंप की ओर बढ़ा। एक कैंप में रोशनी जल रही थी। एक टेबल पर खाने का सामान सजा हुआ था और ठीक बीच में एक हरी गद्दी पर लाल सांड़ की मूर्ति क्रुद्धावस्था में खड़ी थी।

किम को विश्वास हो गया, यही वह लाल सांड़ है।

कैंप के अंदर बैठे लोगों की बातचीत तो उसे स्पष्ट सुनाई नहीं दी, न वह उन लोगों के कार्य-कलाप की माया ही समझ सका। लेकिन यह सब देखने में वह इतना तल्लीन था कि उसे अपना भी भान नहीं रहा, और न उसे यही पता चला कि उस बैठक में उपस्थित रेजिमेंट का पादरी कब उठा और ठीक उसके सामने आकर खड़ा हो गया। किम घबराकर उठ खड़ा हुआ। लेकिन उसकी भागने की सारी कोशिश बेकार गयी। पादरी ने उसे दोनों बाजुओं में इस तरह जकड़ रखा था कि उसका हाथ-पांव मारना बिलकुल बेकार हो गया। पादरी ने पूछा—"क्यों रे, चोरी करता है?"

किम करुण स्वर में बोला—"नहीं, नहीं। मैं चोर नहीं हूं हुजूर।"

किम के अपने को छुड़ाने के प्रयत्नों में उसके गले में लटका हुआ तावीज पादरी के हाथ आ गया। एक हाथ से किम का गला पकड़े हुए पादरी ने तावीज देखते हुए पूछा—"यह क्या है?"

"ये मेरे कागज हैं हुजूर। इसे मत लीजिये मालिक। मरते हुए मेरे बाप ने मुझे कहा था कि इसे अपने से कभी अलग न करना।"

किम का हाथ पकड़े पादरी वापस तंबू में चला गया। वहां उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उसने कहा—"फादर विक्टर, यहां मैंने एक हिन्दू लड़के को पकड़ रखा है। एक अजीब-सा तावीज इसके गले में है। इस तावीज में ये कागज बरामद हुए हैं। भरोसा नहीं होता, क्या ये सब सही हो सकते हैं।"

दूसरे पादरी ने भी आकर उस तावीज के कागजों को देखा। तावीज में एक था किम के जन्म का सर्टिफिकेट और दूसरे थे रेजिमेंटल कागजात, जो किम के पिता से संबंधित थे। फादर विक्टर ने चश्मे को झुकाकर कागजात को अच्छी तरह पढ़ने की चेष्टा करते हुए कहा—"दिये तले अंधेरा! क्या यह मुमकिन है कि यह लड़का किम्बाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरदर्द में

पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है – सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-जुकाम व इन्फ्लूएंजे का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओ'हारा का लड़का हो ? क्यों रे लड़के तेरा नाम क्या है ?"

"किम ।"

"अपने बारे में तू और क्या-क्या बता सकता है ?"

"बस इतना ही कि मेरे माता-पिता जब मैं बहुत छोटा था, तभी गुजर गये थे । इससे ज्यादा मुझे कुछ मालूम नहीं । इस समय मैं एक तिब्बती महात्मा लामा का शिष्य हूं और उनके साथ ही हूं । वे बाहर मेरा इंतजार कर रहे होंगे । मुझे जाने दीजिये ।"

"मैं उन्हें यहीं बुलवा लेता हूं ।"

× × ×

बिना किसी तरह के संशय या झिझक के, शाही शान के साथ लामा तंबू में सैनिकों के साथ चले आये । किम लामा को देखते ही खुश हो गया । बोला—"बाबा, मुझे लाल सांड़ मिल गया । लेकिन अभी तक यह पता नहीं चला कि आगे क्या होनेवाला है ।"

फादर विक्टर ने लामा से पूछा—"यह लड़का तुम्हारे साथ है ? अच्छी बात है । हम लोग चाहते हैं कि इसे स्कूल में भर्ती करवा दिया जाये ।"

लामा ने दुःखित और घबराये हुए स्वर में कहा—"लेकिन यह तो मेरा शिष्य है और हम दोनों तीर्थयात्रा पर निकले हैं । हमें एक पवित्र गुप्त नदी की तलाश है । मैं अपने बच्चे को इस तरह नहीं छोड़ सकता ।"

विक्टर ने किम के कंधों पर हाथ रखकर प्यार के साथ मुलायम स्वर में कहा—"किम एक बहादुर सिपाही का बेटा है । यह तो महज ईश्वरीय चमत्कार और संयोग की बात है कि वह ठीक अपने पिता की रेजिमेंट में लौट आया है । हम इसकी पूरी देख-भाल रखेंगे । आप किसी तरह की फिक्र न करें ।"

किम से बिछुड़ने की बात से लामा दुःखित हो उठे । बोले—"मुझसे तुम्हारा बिछुड़ना सहा नहीं जायेगा बेटे । मुझे तुमसे मोह हो गया था । इसी की सजा भगवान ने दी है कि तुमसे बिछुड़ जाऊं ।"

किम ने जवाब दिया—"नहीं बाबा, रोओ मत । मैं यहां नहीं रहूंगा । भागकर आपके पास चला आऊंगा ।"

"नहीं बेटे, तुम एक साहब के लड़के हो, आगे चलकर तुम्हें भी साहब ही बनना है—साधु-फकीर नहीं । लेकिन मैं यह जरूर जानना चाहता हूं कि वे तुम्हें किस तरह की शिक्षा देंगे ? तुम्हारी क्या व्यवस्था करेंगे ?"

फादर विक्टर ने जवाब दिया—"सेना के अनाथ बच्चों के लिए एक स्कूल की व्यवस्था है । हालांकि लखनऊ का सेंट जेवियर स्कूल सबसे बढ़िया है; लेकिन वहां का खर्च....."

"कितना होगा ?"

"यही लगभग दो या तीन सौ रुपये सालाना ।"

"एक कागज पर मुझे स्कूल का नाम और पता लिख दीजिये । आप अपना नाम और पता भी लिख दें । इस स्कूल के लिए मैं आपको रुपये भेज दूंगा ।"

"लेकिन इतनी रकम आपको कहां से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

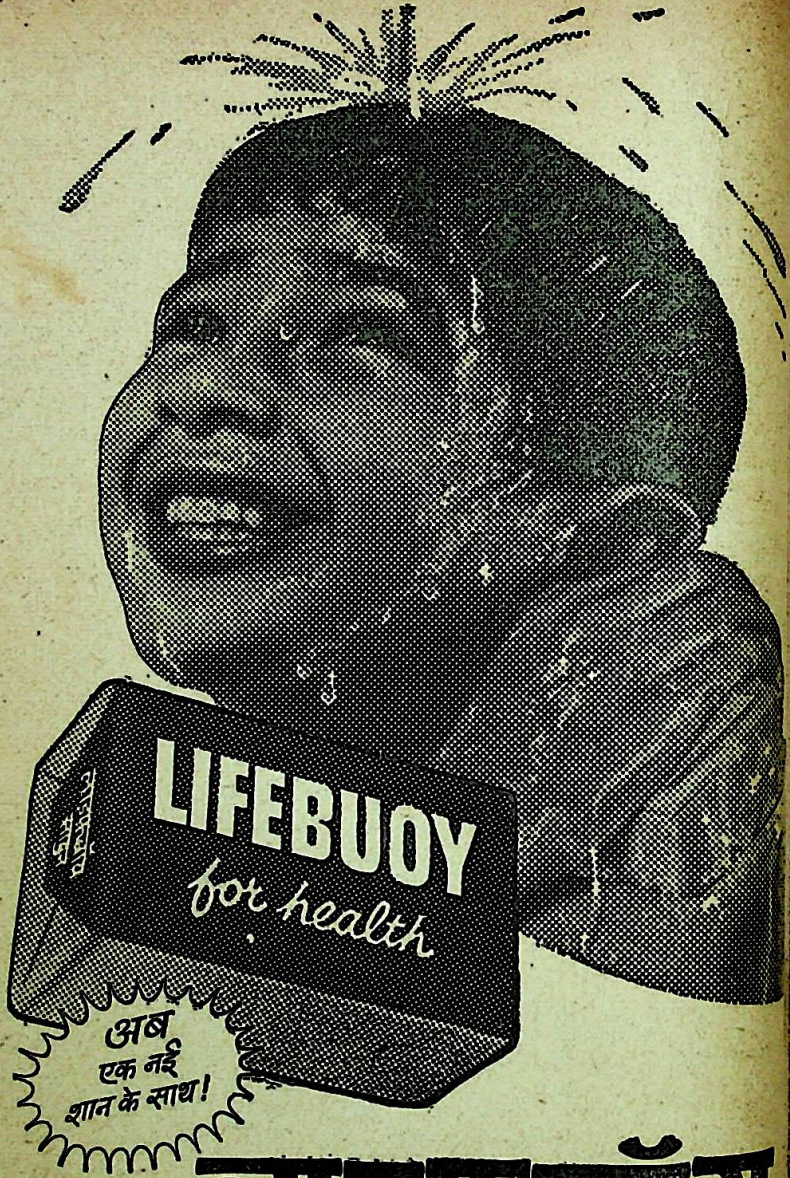

लाइफ़बॉय

है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

L. 47-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलेगी ?"

"तिब्बत में मेरी काफी प्रतिष्ठा है। जो कुछ भी मुझे चाहिये, वहां से मिल जाता है।"

लेकिन किम लामा को छोड़ने को राजी नहीं था। वह लामा के गले से लगकर रोने लगा। लामा ने कहा—"रोओ मत बेटे! अभी तक मेरी यात्रा पूरी कहां हुई? मेरी खोज तो अभी बाकी है, अधूरी है। अच्छा, विदा, मेरे दोस्त और सारे संसार के दोस्त—विश्वमित्र किम!"

किम अज्ञात भविष्य के अजीबोगरीब रंग देखने की उत्सुकता से रोमांचित था, साथ ही तिब्बती लामा से बिछुड़ने के दुःख से दुःखित भी। उसने सिसकते हुए स्वर में इतना कहा—"बाबा, उस धनी महिला के साथ ही रहना। वह तुम्हारी खूब देखभाल करेगी और मुझे भूलना मत। देखना, मैं एक दिन भागकर तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा।"

आंसू पोंछते हुए लामा चले गये।

× × ×

फादर विक्टर ने किम को एक सार्जेंट के सुपुर्द करते हुए कहा—"इसका खयाल रखना। देखना, कहीं भाग न जाये। कम-से-कम सनावर पहुंचने तक इसकी जिम्मेदारी तुम्हारी रहेगी।"

किम बीच में बोल पड़ा—"आपमें से कोई भी सनावर तक नहीं पहुंच सकेगा। इससे पहले आपको लड़ाई के लिए तैयार होना पड़ेगा।"

"कैसी लड़ाई? तुम भी क्या भविष्य-वाणी करनेवाले फकीर हो?"

"हां, मेरी बात याद रखना, जब आप अंबाला पहुंचेंगे, आप लोगों को लड़ने के लिए जाना पड़ेगा। यह आठ हजार आदमियों की लड़ाई है।"

फादर विक्टर ने गुस्से में आकर सार्जेंट को संबोधित करते हुए कहा—"इसे यहां से ले जाओ। क्या जाने हिन्दुस्तानी चमत्कार की कहानियां सच हों। आज जो कुछ गुजर चुका है, मेरा दिमाग चाटने के लिए वही काफी है।"

दूसरे दिन सुबह ही यह रेजिमेंट अंबाला की ओर रवाना हो गयी। लेकिन कुछ ही देर में उन्हें नया हुक्म मिल गया। उन सबको लड़ाई के लिए तैयार हो जाना चाहिये। विक्टर किम से बोला—"यह सच है कि कल हम लड़ने के लिए चल देंगे। लेकिन इस बात का पता तुम्हें कैसे चला?"

"छोड़िये इस बात को, जाने दीजिये। अब तो मेहरबानी करके मुझे अपने बाबा के पास जाने दीजिये। मेरे बिना वे मर जायेंगे। एक मिनिट के लिए भी वे मुझे नहीं छोड़ सकते।"

"नहीं बेटे, अब हम लोग तुम्हारा ध्यान रखेंगे। पढ़ा-लिखाकर तुम्हें बड़ा आदमी बनायेंगे।"

दूसरे दिन जब रेजिमेंट मोर्चे पर जाने की तैयारी कर रही थी, तो किम को अपाहिज, बीमार सैनिकों तथा औरतों और बच्चों के साथ रख दिया गया। मौका देखकर किम भाग निकला। वह जानता था कि वह कितना ही तेज भागे, उसे पकड़नेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार ज्यादा फायदे!

हमारे विशेष क्रेडिट ट्रांस्फर सिस्टम के अंतर्गत

१ मई, १९६५ से

१. किसी भी एक खाते से अब २५०० रु. तक भेजे जा सकते हैं।

२. यही पद्धति आप के अन्य निजी खातों के लिये भी है, जैसे कि फ़िक्स्ड डिपाज़िट्स, कम मुद्दती डिपाज़िट, मांग ऋण और सेफ डिपाज़िट्स।

३. आप के लिए बैंक में हाजिर रहना जरूरी नहीं। आप का प्रतिनिधि रकम भिजवा सकता है।

४. यदि एक ही व्यक्ति के दो निजी खाते हैं, या ज्वाइंट अकाउंट होने पर कम से कम एक खातेदार का दूसरे खाते में भी नाम है तो इस तरह दो खातों के बीच रकम ट्रांसफर की जाती है।

अब १००० के बजाय २५०० रु. तक भेज सकता हूं! लेकिन अपने ताडपल्लीगुडम के एजेंट से कहें कि वह मेरी श्रीमती को न बताये!

देश में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के किसी भी दफ्तर में निजी खाता खोलकर आप भी विशेष क्रेडिट ट्रांसफर सिस्टम के अंतर्गत अब ये लाभ पा सकते हैं।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया भारत का सबसे बड़ा बैंक

Aiyars SB. 2100 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उससे बहुत ज्यादा ताकतवर हैं। फिर भी इस स्वर्णिम मौके को वह छोड़ना नहीं चाहता था।

डेरे से बाहर निकलकर वह एक चिट्ठी-नवीस के पास पहुंचा। बोला—"मुझे एक चिट्ठी लिख दो। लाहौर में मेरे एक मेहरबान बुजुर्ग हैं, घोड़ों के सौदागर महबूब अली। उन्हें प्रणाम लिखने के बाद लिखो, मैंने आपका संदेश यथासमय यथास्थान पहुंचा दिया था। लेकिन इसके बाद लाल सांड़वाली रेजिमेंट द्वारा मैं पकड़ लिया गया। मुझे इन लोगों के साथ रहना बिलकुल पसंद नहीं। इसलिए जैसे बने, आकर मुझे छुड़ा लें।"

आज भागने का प्रोग्राम रद करके किम वापस डेरे पर लौट आया। मालूम हुआ कि फादर विक्टर ने उसे बुलाया है। फादर के कमरे में हाजिर होने पर उसे बताया गया कि उन्हें किम के लामा बाबा के समाचार मिले हैं।

उत्सुकता के साथ किम ने पूछा—"बाबा आंजकल कहां है? कैसे हैं?"

"तुम्हें उनसे बड़ा प्यार और लगाव है?"

"जी हां, मैं उन्हें बहुत चाहता हूं। वे मुझे बहुत प्यार करते थे।"

"सही बात है। उनका पत्र आया है। लिखा है, वे सालाना तीन सौ रुपया भेज देंगे। लिहाजा तुम्हारा बंदोबस्त लखनऊ के सेंट जेवियर स्कूल में अच्छी तरह से हो जायेगा। हम लोग तुम्हें अगले हफ्ते लखनऊ भेज देंगे।"

किम ने फादर विक्टर की बात का जवाब नहीं दिया। उसे लगा कि सारी दुनिया उसकी आजादी के खिलाफ षड्यंत्र कर रही है। तीन दिन तक वह विरक्ति के साथ उस चहारदीवारी की अनुशासित जिंदगी का दुःख भोगता रहा। चौथे दिन सुबह वह मौका देखकर भाग खड़ा हुआ। कुछ ही दूर उसे रास्ते पर घोड़े पर सवार महबूब अली आता दिखाई दिया। उसे लगा कि भाग्य उसके अनुकूल है। दौड़कर वह महबूब अली के पास पहुंचा। महबूब अली ने किम का हाथ पकड़कर उसे अपनी गोद में बैठा लिया। किम ने कहा—"मुझे यहां से ले चलो।"

"यह कैसे हो सकता है, विश्वमित्र! वे मुझे पकड़कर जेल में डाल देंगे। धीरज रखो, जब तुम बड़े हो जाओगे, तो शायद तुम इसके लिए खुदा का लाख-लाख शुक्रिया अदा करोगे कि तुम अपने आदमियों के बीच पहुंचकर आदमी बन गये।"

इसी समय एक दूसरा घुड़सवार तेजी से घोड़ा भगाता हुआ महबूब अली के पास आ गया। रुकने का आदेश मिलते ही महबूब अली ने अपने घोड़े की चाल धीमी कर दी। किम ने देखा, यह वही आदमी है, जिसे उसने महबूब अली का संदेश अंबाला में पहुंचाया था। साहब बोले—"इस शैतान को कहां से पकड़ लाये?"

"लड़का है, ऐसे ही घुमाने ले आया था। बड़ा होशियार लड़का है। इसी ने घोड़ी की वंशावली के बारे में एक संदेश आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक पहुंचाया था।"

"लेकिन इसे ले कहां जा रहे हो?"

"उसी रेजिमेंट में, जिसने इसे पकड़ रखा है।"

अंग्रेज साहब ने डेरे पर पहुंचकर फादर विक्टर को दरवाजे पर खड़े देखा। महबूब अली के साथ किम भी घोड़े से उतर रहा था। साहब बोले—"फादर, आपका यह लड़का बड़ा कुतूहलप्रिय है।"

"सही कहा आपने! इस लड़के के बारे में बहुत कुछ अजीब हकीकतें हैं। आइये, मैं आपको बताता हूं।"

दोनों अंदर चले गये। किम बाहर महबूब अली के पास ही खड़ा रह गया। मारे गुस्से के किम को रोना आ रहा था। बोला—"और मैंने तो सोचा था कि तुम मेरी मदद करोगे।"

"भरोसा रखो बेटे! मैं तो तुम लोगों का गुलाम हूं। मैं तुम्हारा भला ही चाहता हूं। साहब से कहूंगा कि वे तुम्हारी अच्छी तरह देखभाल करें। और जब तुम बड़े हो जाओ, तब तुम्हें अच्छा ओहदा भी दिलायें।"

"नहीं, मुझे यह सब नहीं चाहिये। मैं यहां से चला जाना चाहता हूं। और जिस तरह भी हो, अपने बाबा-लामा से मिलना चाहता हूं।"

इसी समय कर्नल वापस लौट आये। किम से बोले—"मैंने तुम्हारे लखनऊ जाने का सारा इंतजाम कर दिया है। तीन दिन तक चुपचाप बैठे रहो। कोई शैतानी मत करना। इसके बाद एक बार तुमसे फिर मिलूंगा।"

कर्नल के जाने के बाद महबूब अली ने पास खड़े साहब से कहा—"हुजूर, मेरी राय तो यही है कि रेस के घोड़े को भारी बोझ की गाड़ी में जोतना बहुत बड़ी गलती होगी।"

"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया, महबूब अली। खूब अच्छी तरह से समझ गया। रेस के घोड़े को भारी बोझवाली गाड़ी में नहीं जोता जायेगा। तुम निश्चित रहो।"

× × ×

तीन दिन बाद किम एक कर्नल के साथ लखनऊ रवाना हो गया। सेंट जेवियर स्कूल में उसके सर्वेयर का काम सीखने की व्यवस्था कर दी गयी। उससे कहा गया था कि यदि वह मेहनत और मनोयोग से पढ़ाई करे, तो उसे अच्छी नौकरी भी मिल जायेगी। पहले तो किम का मन विद्रोह करता रहा। लेकिन इसके बाद रास्तों के नक्शे बनाने, नदी और पहाड़ों में भटकने की बात से कुछ-कुछ तसल्ली भी मिली। उसका घुमक्कड़ मन जल्द-से-जल्द सर्वेयर बनकर नदी-नालों, पहाड़ों और अनजान रास्तों पर स्वतंत्र पक्षी की तरह घूमने-चहकने के लिए व्याकुल हो उठा। लेकिन साथ ही एक बात उसकी समझ में आ गयी। उसकी सारी शिक्षा का, इस सारी व्यवस्था का एक ही लक्ष्य है— महबूब अली की तरह किसी गुप्त काम के लिए उसका इस्तेमाल करना।

लखनऊ पहुंचने पर उसे विदा करते हुए कर्नल क्राइटन ने कहा था—"देखो किम! कुछ ही दिनों बाद मैं तुमसे मिलने आऊंगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बढ़िया **सनलाइट** से हर बार

आप के कपड़े ज़्यादा चमकदार धुलते हैं

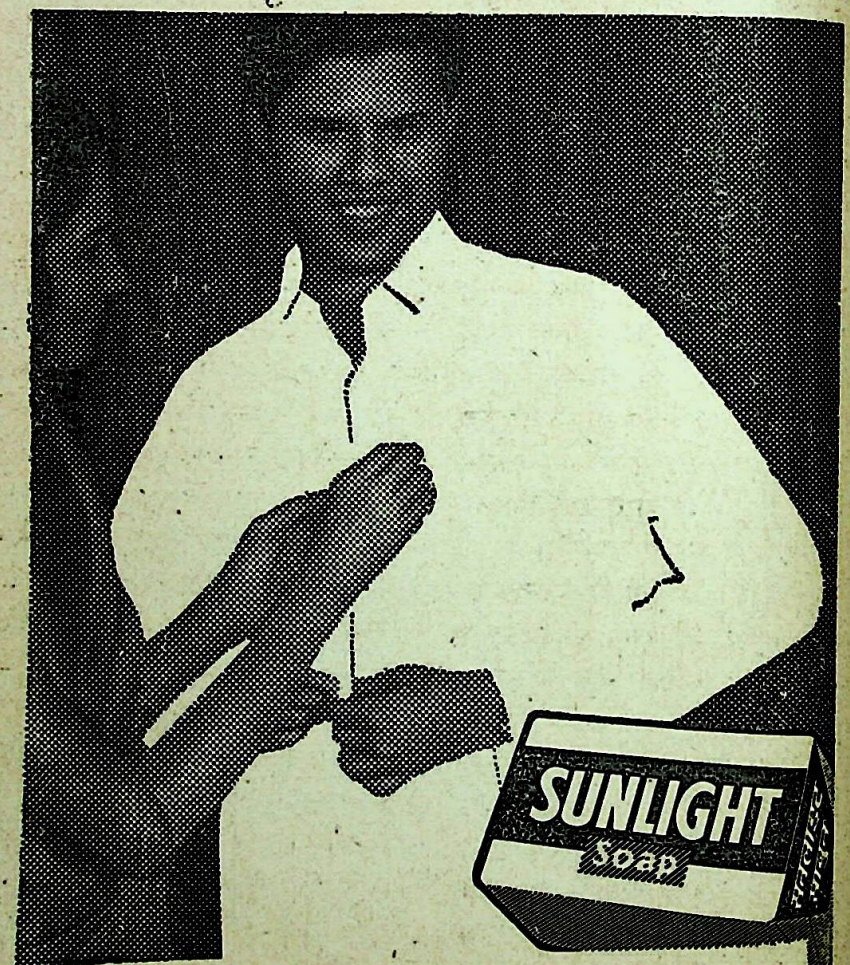

अपने रोज़ पहनने के कपड़े
नये बढ़िया **सनलाइट** से धोइये

लिंटास-SS-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा लड़का बनने की कोशिश करना। जी लगाकर पढ़ना। मुझे भरोसा है कि तुम एक दिन महत्वपूर्ण आदमी बन सकोगे। उसके लिए कोशिश करना।"

किम ने पूछा – "आपको याद है, घोड़ी का संदेश मैंने ही आपको पहुंचाया था। मेरे बारे में क्या वह सर्टिफिकेट काफी नहीं है?"

"उस संदेश से हमें काफी लाभ पहुंचा है। उस बात को बिलकुल भूल जाओ। अच्छा, अलविदा।"

तीन महीने तक किम सेंट जेवियर स्कूल में पढ़ता रहा। गर्मियों की छुट्टियां आ गयीं। सब बच्चे अपने-अपने घर चले गये। किम स्कूल के होस्टल में अकेला रह गया। एक दिन प्रिंसिपल ने किम को बुलाकर कहा– "अगस्त से अक्टूबर तक की छुट्टियों में तुम्हें अंबाला की बैरक-स्कूल में भेजने का मुझे हुक्म मिला है। जल्दी ही तुम्हारे अंबाला भेजने की व्यवस्था कर दी जायेगी।"

उसके साथ ये बड़े लोग जिस तरह का खेल खेल रहे थे, वह किम को बिलकुल पसंद नहीं था। लिहाजा रात के समय मौका देखकर वह स्कूल से बाहर निकल आया। उसका खयाल था कि स्कूल की छुट्टियां हैं और यह उसकी मर्जी की बात है कि चाहे जिस तरह छुट्टियां बिताये। काफी देर तक वह लखनऊ शहर की गलियों में इधर-उधर भटकता रहा। इसके बाद एक दुकान में जाकर उसने एक धोती और एक मलमल का कुर्त्ता खरीदा। ये कपड़े पहन-कर वह इतना खुश हुआ कि बस। उसे लगा कि लाहौर के पुराने दिन लौट आये हैं। इस समय उसे एक ही आदमी की याद बार-बार आ रही थी–बाबा लामा की। काश, वे इस समय किसी तरह मिल जाते।

लामा तो नहीं मिले। सामने से घोड़े पर सवार महबूब अली जरूर उसे दिखाई दिया। वह अपनी वर्तमान अवस्था भूल गया। उसने चिल्लाकर महबूब अली को पुकारा। उसने अपना घोड़ा रोक दिया। पूछा–"कहां जा रहे हो विश्वमित्र–किम?"

"इधर-से-उधर, उधर-से-इधर।"

"अच्छा! बड़ी खुशी की बात है। तुम्हें एक और खुशखबरी सुनाता हूं; क्राइट साहब ने मेरे साथ तुम्हारे लिए एक संदेश भेजा है। इन छुट्टियों में तुम्हें लर्गन साहबन के पास भेज दिया जायेगा। ये एक जौहरी हैं। इनकी जवाहरात की दुकान है। शिमला में रहते हैं। वहां तुम्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। इसके बाद एक बहुत बड़े शिकार का खेल शुरू हो जायेगा।"

किम को सारी बातों में एक ही बात पसंद आयी। लखनऊ से निकलकर शिमला की पहाड़ियों में घूमने का उसे मौका मिलेगा। वह फौरन इसके लिए राजी हो गया।

शिमला में लर्गन साहब की दुकान में किम ने बहुत-सी नयी बातें सीखीं। कुछ ही दिनों में वह जवाहरात की विभिन्न किस्मों तथा उनके मूल्यों से वाकिफ हो गया। लर्गन साहब ने याददाश्त तेज करने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिन्नी का डी ३१८ स्कूल की पोशाक के लिये बना

बिन्नी का डी ३१८ एक बेहद टिकाऊ कपड़ा है जो स्कूल की पोशाक के लिये बिलकुल ठीक है। विभिन्न स्कूल की पोशाकों के लिये तरह तरह के चित्ताकर्षक रंगों में मिलता है। आपके बच्चे इस कपड़े की बनी पोशाक में गर्व का अनुभव करेंगे और आप खुद इसकी टिकाऊपन को देखकर प्रभावित हो जायेंगे।

अपनी ज़रूरत के बिन्नी कपड़े नियंत्रित मूल्य में के अधिकार प्राप्त स्टाकि से खरीदिये जिनकी दु में यह साइनबोर्ड लगा

दि बकिंघम ऐण्ड कर्णाटक कंपनी लिमिटेड, बिन्नी ऐण्ड कं० लिमिटेड, मद्रास की सहायता प्राप्त

JWT/BY 3124A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किम को अच्छी शिक्षा दी। वह दिन-भर दुकान के पिछले हिस्से में परदे की ओट में बैठा रहता। शाम को लर्गन साहब पूछते—"आज आये हुए तमाम लोगों और उनकी बातचीत के बारे में सुनाओ।" किम बड़े मजे में पूरी बातें विस्तार से सुना दिया करता था।

किम को रोज तरह-तरह के कपड़े पहनाकर, नये-नये खेल खेलने का भी शौक था लर्गन साहब को। जैसे किसी दिन साधु का वेश बना दिया, किसी दिन नाई का, किसी दिन धोबी का। इन तमाम खेलों में किम बड़ी दिलचस्प लेता। उसे इस सारे कारोबार में धीरे-धीरे आनंद भी आने लगा।

एक दिन लर्गन साहब ने किम से कहा—"तुम सब काम बड़ी होशियारी से कर लेते हो। लगता है, अब वक्त आ गया है कि तुम्हें बड़े शिकार के लिए भेज दिया जाये। देखो किम, समय-समय पर भगवान विशेष प्रतिभा के साथ कुछ आदमियों को इस धरती पर भेजता है, जो अपने देश की सीमाओं से बाहर जाकर, अपनी जान हथेली पर रखकर दूसरे देशों की खबरें ले आते हैं। तुम उनमें से एक हो।"

किम ने जवाब दिया—"लेकिन वह सब करने में तो बड़ी देर है। अभी तक लोग मुझे लड़का ही समझते और कहते हैं। पता नहीं, पूरा आदमी बनने में कितने दिन और लग जायेंगे।"

लर्गन साहब बोले—"थोड़ा धीरज रखो किम! अब छुट्टियां पूरी होने आयीं। तुम अब स्कूल लौट जाओ। जी लगाकर मेहनत करो, पढ़ाई करो। एक बहुत बड़े खेल में अपना पार्ट अदा करने के लिए तुम अपने आपको तैयार कर लो। भाग्य तुम्हारी राह देख रहा है।"

लर्गन साहब के एक और मित्र थे हरिबाबू। इन्हीं के साथ किम को शिमला से वापस सेंट जेवियर्स स्कूल में पढ़ने के लिए लखनऊ वापस भेजा गया। हरिबाबू ने ट्रेन में एक बार उससे कहा था—"जब तुम्हारी पढ़ाई खत्म हो जायेगी किम, और तुम बहुत बड़े अफसर हो जाओगे, तब मुझे उम्मीद है कि सरकारी तौर पर तुम्हारे करीब रहने में बड़ा मजा आयेगा।"

× × ×

सेंट जेवियर्स स्कूल में किम गणित तथा नक्शे बनाने की कला में पारंगत हो गया। एक दिन उसे अचानक उसके लामा-बाबा मिल गये। बड़ा खुश हुआ वह। सब कुछ भूलकर वह फिर लामा के साथ उसी तरह भटकने के लिए चल देने को राजी हो गया। लेकिन लामा को किम के भविष्य में ज्यादा दिलचस्पी थी। वे बोले—"अभी तक वक्त नहीं आया विश्वमित्र। पहले तुम अपनी पढ़ाई खत्म कर लो। इसके बाद इस बारे में विचार करेंगे।"

जब किम तीसरे वर्ष में पढ़ रहा था, एक दिन कर्नल क्राइटन और महबूब अली शिमला की लर्गन साहब की दुकान पर मिले। महबूब अली ने अपनी बात कही—"घुड़दौड़ के लिए रेस का घोड़ा तैयार हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियमित रूप से की हुई छोटी-सी बचत भी आश्चर्यजनक ढंग से बढती है!

बचत की रक़म चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो, अगर उसे बैंक में नियमित रूप से जमा किया जाय तो वह निरन्तर बढ़ती रहती है। और यह बिल्कुल स्वाभाविक ही है।

जो पैसा घर में रहता है वह किसी न किसी तरह खर्च हो ही जाता है, या फिर वह खो जा सकता है या चुराया जा सकता है।

लेकिन बैंक ऑफ़ बरोडा में जमा किया हुआ पैसा सुरक्षित तो रहता ही है, साथ ही उसमें ४% ब्याज जुड़ कर वह बढ़ता भी जाता है।

और ज्यों-ज्यों पास बुक में दर्ज रक़म बढ़ती जाती है पैसा बचाने का चाव भी बढ़ता है!

क्या आप जानते हैं कि बैंक ऑफ़ बरोडा में खाता खोलने के लिए कितनी रक़म चाहिए? सिर्फ एक रुपया! और फिर बिना नोटिस दिये आप अपने खाते से हफ़्ते में दो बार कितनी भी रक़म निकाल सकते हैं।

नियमित रूप से बचत कीजिए

दि
बैंक ऑफ़ बरोडा लिमिटेड
(संस्थापित : सन् १९०८)
प्रधान कार्यालय : बड़ौदा

हमारी सभी सेवाओं की पूरी जानकारी देनेवाली, पुस्तिका "आइए, हम आपकी मदद करें..." मुफ़्त मिलती है। आज ही मँगवाइए।

JWT-BB-3401

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया है हुजूर, अब उसकी रास ढीली कर दी जाये, उसे छोड़ दिया जाये। हमें अब उसकी जरूरत है।"

क्राइटन साहब ने चिंतित स्वर में जवाब दिया—"लेकिन अभी तक तो वह लड़का ही है। मुश्किल से उसकी उम्र होगी सोलह साल।"

"मालूम है मुझे। इसीलिए कहता हूं कि शुरू-शुरू में अधिक बोझ ढोने की उसे जरूरत नहीं। यों कीजिये, कुछ दिनों तक उसे उसके लामा के साथ रहने दीजिये। यदि छः महीने तक वह लामा के साथ रह गया, तो उसे काफी अनुभव हो जायेगा। और यह अनुभव हम लोगों के लिए बड़ा उपयोगी साबित होगा।"

"अच्छी बात है। हरिबाबू उस पर नजर रखेंगे।"

इस निर्णय का नतीजा यह हुआ कि लामा के साथ जाने की इजाजत किम को आसानी से मिल गयी। अपने पुराने बाबा के साथ लामा के शिष्य के वस्त्र धारण करने में किम को बड़ी खुशी हो रही थी। स्कूल की चहारदीवारी से निकलकर स्वतंत्र वातावरण में, मुक्त आकाश के नीचे साधारण आदमी की तरह सांस लेने में उसे चरम मुक्ति का बोध हो रहा था। लामा ने मुस्कराकर कहा—"विश्वमित्र, अब तुम बच्चे नहीं रहे। पूरे आदमी हो गये हो—ज्ञान से, बुद्धि से, अनुभव से। तुम्हें इस रूप में, इतना बड़ा देखकर मैं कितना खुश हूं, यह कह नहीं सकता।"

किम ने जवाब नहीं दिया; वह जानता था, यह सारी शिक्षा-दीक्षा बूढ़े लामा-बाबा के कारण ही संभव हो सकी है। तीन साल तक वह इसी लामा का नमक खाता रहा है।

लामा ने आगे कहा—"जो कुछ हुआ, अच्छा ही हुआ। अब हम दोनों मिलकर उस नदी की खोज में चल देंगे, जिसमें स्नान करके मुझे अपने तमाम पापों का प्रायश्चित्त करना है। मेरे बच्चे, भगवान की कृपा से हम एक बार फिर मिल गये। चलो, यहां से उत्तर की ओर सहारनपुर की ओर चलें। बहुत ही बढ़िया जगह है।"

सहारनपुर पहुंचकर लामा ने कहा—"यहीं वह धनाढ्य विधवा रहती है, जिसने हमें पिछली यात्रा में पूरी मदद की थी।"

सहारनपुर की इस गृहिणी के यहां उनका बड़ा स्वागत-सत्कार हुआ। इन लोगों के खाने-पीने और आराम की पूरी व्यवस्था कर दी गयी। कुछ दिन आराम से गुजर गये। एक दिन गृहिणी ने लामा से निवेदन किया—"मुझे अपने नाती के लिए एक तावीज चाहिये। मुझे दवाओं से ज्यादा विश्वास आपके आशीर्वाद पर है। जो काम हकीम नहीं कर सकता, आपके आशीर्वाद से आसानी से पूरा हो सकता है।"

"आप किस हकीम की बात कह रही हैं?" किम ने गृहिणी से पूछा।

"एक हकीम साहब हैं। आपकी ही तरह घुमक्कड़ प्रकृति के। पिछले चार दिनों से वे यहीं हैं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किम ने ज्यादा पूछताछ नहीं की। लेकिन उसे मालूम हो गया कि कोई उसका लगातार पीछा कर रहा है। शाम के समय जब वह आराम से बैठा हुआ बौद्ध मंत्र का जाप कर रहा था, हरिबाबू सामने आकर खड़े हो गये। बोले—"मेरी दवा किसी भी तंत्र-मंत्र से ज्यादा कारगर है किम साहब।"

"तुम्हारे पास कौन-सी दवा है?"

"सर्वोत्तम दवा। मि० ओ'हारा उर्फ किम उर्फ विश्वमित्र, तुम्हें यहां देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई।"

किम पहचान गया। बोला—"हरिबाबू, मेरी समझ में एक ही बात नहीं आ रही है, आप यहां कैसे?"

"बस यों ही। मुझे मालूम हुआ कि लामा के साथ आप सहारनपुर में हैं आजकल। इधर से गुजर रहा था। सोचा, आप लोगों से मिलता चलूं और चला आया।"

"लेकिन क्यों? क्या यही तो बड़े शिकार की भूमिका नहीं है? यदि ऐसा है और मैं उसमें काम आ सकता हूं, तो मैं तैयार हूं।"

"अच्छा तो सुनो। मालूम हुआ है कि दो अजनबी परदेशी हमारी सीमा के पास उत्तरी पहाड़ों के निचले भाग में शिकार के बहाने से चले आये हैं। बंदूकें तो खैर उनके पास हैं ही। साथ ही उनके पास जमीन नापने के यंत्र आदि भी हैं। घाटियों के ऊपर, घाटियों के नीचे, वे दिन-रात एक करके अपने काम में लगे हुए हैं।"

"किसलिए?"

"वे सीमा पार के देश के लोग हैं। नीयत अच्छी नहीं मालूम होती। इसलिए मुझे हुक्म मिला है कि मैं उत्तर की ओर जाऊं और इन अजनबी परदेशियों पर निगाह बनाये रखूं।"

"लेकिन इसमें मैं किस तरह मदद कर सकता हूं?"

"तुम अपने बूढ़े बाबा को कहकर उत्तर की यात्रा पर चल दो, ताकि जरूरत पड़ने पर तुम मेरी मदद कर सको।"

किम ने हां भर ली। हरिबाबू पहले ही रवाना हो चुके थे। दूसरे दिन लामा के साथ किम भी हिमालय की तराई की ओर चल पड़ा। लामा प्रकृति की इस विचित्र शोभा पर मुग्ध थे। किम को समझा रहे थे—"ये हवाएं तिब्बत से आ रही हैं। कितनी ठंडी, कितनी शीतल! ये हवाएं आदमी के बुढ़ापे में से बीस साल धो-पोंछकर अपने साथ उड़ा ले जाती हैं।"

× × ×

दिन-पर-दिन गुजरते गये। हिमालय की ऊंची-नीची घाटियों के अंतर्भाग में वे घुसते ही चले गये। किम और लामा के आगे चल रहे थे हरिबाबू। उन्हें आखिर एक दिन सीमा पार के विदेशियों के तंबू दिखाई देने लगे। उस दिन बड़ी जोर की आंधी थी। मूसलाधार पानी बरस रहा था। बर्फ से ढंके उस मैदान में तूफान, आंधी और पानी का यह प्रकोप! ठीक ऐसे ही मौके की तलाश में थे हरिबाबू। वे फौरन सीमा पार के विदेशी जासूसों के तंबू पर जा पहुंचे। बोले—"मैं रामपुर के महाराजा का खास आदमी हूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महाराजा ने मुझे आपकी सेवा में भजा है। मेरे लायक यदि कोई सेवा हो तो बतायें।"

सर्दी से कांपते हुए एक फिरंगी बाहर निकल आया। बोला—" आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। लगता है, तूफान थमेगा नहीं। हो सकता है, बारिश का जोर भी बढ़ जाये। इसलिए संभव हो, तो कुछ पहाड़ी मजदूरों का इंतजाम कर दें, ताकि हमारा सामान इस खेमे से हटाया जा सके।"

हरिबाबू ने विनम्रता से जवाब दिया— "मजदूरों का प्रबंध भी हो जायेगा हुजूर। जो थोड़ा-बहुत सामान ले जाया जा सकता है, मैं खुद उठा लेता हूं।"

एक टोकरी पर लाल रंग का मोमिया कपड़ा लिपटा हुआ था। हरिबाबू ने उसे ही उठा लिया। दो ही कदम चलने के बाद वे एक पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़े। उन्होंने माफी मांगी। साथ ही एक बात से आश्वस्त हो गये, जरूरी कागजात की टोकरी यही है। जल्दी से तमाम बिखरा हुआ सामान बटोरकर उन्होंने वापस उसी टोकरी में डाल दिया। तभी उन्होंने देखा, इन विदेशियों के पास तो काफी पहाड़ी मजदूर मौजूद हैं। हरिबाबू ने उनसे पूछा कि वे अपना सामान लेकर नीचे क्यों नहीं उतर आते ?

मालूम हुआ कि वे इस तूफान और वर्षा से बेहद घबरा गये हैं। हरिबाबू ने फौरन जेब से चांदी के कुछ सिक्के निकाले। उन मजदूरों के हाथ में रख दिये। बोले—"डर की कोई बात नहीं। मैं खुद तुम लोगों के साथ हूं। चलो, चलें।"

तभी एक फिरंगी की निगाह सामने एक चट्टान के नीचे बैठे लामा और शिष्य किम पर पड़ी। उसने हरिबाबू पूछा—"ये कौन हैं ?"

हरिबाबू ने जवाब दिया—" यहां के सिद्ध लामा हैं ये। इनके साथ जो लड़का वह इनका शिष्य है।"

बाबा-लामा किम को एक कागज दीक्षा-मंत्र लिखकर समझा रहे थे। फि उनके करीब जाकर देखने लगे। किम ध्यान उस ओर नहीं था। लामा ने उठाकर देखा, तो अपने को भीड़ से हुआ पाया।

तभी हरिबाबू ने किम के कान में "यही हैं वे लोग, जिनकी तलाश मुझे लाल रंग की टोकरी में इनके तमाम जात और यंत्र हैं। ध्यान में रखना तमाम कागजात कहां हैं ?"

तभी एक परदेशी जासूस ने लामा पूछा—"मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ यह कागज मुझे दो। देखूं इसमें क्या है

"इस कागज को कोई हाथ भी नहीं सकता। ये हमारे धार्मिक कागजात है

पर फिरंगी को इतना धीरज कहां! झपटकर वह कागज छीन लिया।

लामा कभी जोर से नहीं बोलते लेकिन इस बार उनका भी धीरज छूट वे एकदम चीखकर बोले—"तुमने धर्म हाथ उठाया है ! इसका नतीजा तुम्हें तना पड़ेगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लामा की इस बात का जवाब दिया एक विदेशी ने उनके मुंह पर कसकर मुक्का जमाकर। लामा के मुंह से खून निकलने लगा। किम से यह देखा नहीं गया। वह उछलकर उस फिरंगी पर सवार हो गया।

पहाड़ी मजदूरों ने मिलकर एक तरह से जबर्दस्ती लामा को वहां से हटा दिया। खुद भाग खड़े हुए। तभी एक दूसरे फिरंगी ने पिस्तौल निकाली। इस बार हरिबाबू बीच में पड़े। बोले—"जाने दीजिये। गोली चलाने का मतलब होगा, लोगों को खामख्वाह शक में डालना। मैं मामला सुलझाता हूं।"

हरिबाबू ने जाकर किम को पकड़ लिया। चुपके से बोले—"तुम लड़ना छोड़कर पहाड़ी मजदूरों के साथ चले जाओ। लाल रंग के मोमिये कपड़े से ढंकी हुई टोकरी में से कागजात निकाल लो। जाओ।" इतना कहकर एक तरह से जबर्दस्ती धक्का देकर किम को अलग भेज दिया।

थोड़ी दूर पर ही एक पहाड़ी चट्टान में उन्हें लामा बैठे हुए मिल गये। किम ने उतावली के साथ पूछा—" आपको ज्यादा चोट तो नहीं आयी ?"

"मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है। चलो, पहाड़ी मज़दूरों के गांव की ओर लौट चलें।"

गांव में पहुंचते ही लामा की उचित देखरेख की व्यवस्था बड़ी आसानी से हो गयी। गांववालों ने खड़े आदर-सम्मान के साथ इस धार्मिक गुरु के प्रति अपना शिष्टाचार प्रदर्शित किया।

किम पहाड़ी मजदूरों के पास पहुंचा।

मेरा चांद

दीवानसिंह कालेपानी

रात आधी थी, मैं ऊंघता हुआ
उठा और एक तरफ को चल दिया
पहुंचा एक भरे हुए तालाब के किनारे।
सुंदर समय, सुहावना दृश्य
पूर्ण, प्रकाशमय, शीतल मीठा चांद
देखा इस तालाब के अंदर।
परंतु यह पूर्ण चांद हिलता हुआ, कांपता
हुआ, तिलमिलता हुआ क्यों है !
इतने पूर्ण, इतने प्रकाशमय, इतने मीठे
चांद को अचलता क्यों नहीं नसीब हुई?
कोई आया
गर्दन मेरी पकड़कर उसने ऊपर उठायी
नजर गयी मेरी तालाब से आकाश की
ओर।
आकाश में देखा,
चमकता हुआ चांद अडोल—
तालाब में परछाईं हिलती
आकाश में चांद अचल
धन्य हो तुम
ओ गर्दन उठानेवाले, नजर उठानेवाले!

[पंजाबी से अनुवाद : सुखबीर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किस्तनी लाजवाब धुलाई! जगमगाती सफ़ेद! बेदाग़ साफ़! अत्यंत आसान धुलाई! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है और ढेरों झाग! अपनी सारी धुलाई, बच्चों के वस्त्र, कमीजें, साड़ियाँ, सभी कपड़े सर्फ़ से धोइए। जी हाँ, घर में धोइए, सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 45-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछा–"साहब लोगों का सामान तुम लोगों के पास है ?"

एक ने जवाब दिया–"हां, सारा सामान अच्छी तरह से पहुंच गया है। लेकिन एक टोकरी में क्या है, यह नहीं मालूम।"

"वही तो है लाल कपड़े से ढंकी हुई टोकरी। उसमें बड़ा कीमती सामान है और उसे किसी बेवकूफ के हाथ में मत दे देना। वह टोकरी मेरे पास रहेगी।"

उसे बड़ी आसानी से लाल रंग के कपड़े से ढंकी हुई, सर्वेयर के यंत्रों तथा कागजों-वाली टोकरी मिल गयी। अंदर के कमरे में जाकर उसने तमाम कागज देख डाले। जरूरी कागजात उसने अपने कपड़ों के भीतरी भाग में छिपाकर रख लिये। निश्चय किया कि जो कुछ हो चुका है, उसकी सूचना उसे हरिबाबू के पास भेज देनी चाहिये और यह पूछना चाहिये कि आगे क्या करना है।

इसी समय किम ने देखा, एक पहाड़ी मजदूरन उसके कमरे के बाहर खड़ी है। उसने उससे पूछा–"फिरंगियों के साथ जो बाबू है, उसके पास मेरा एक संदेशा ले जा सकती हो ?"

स्त्री ने सहज ही हां भर ली। किम ने एक कागज पर लिखा –"मेरे पास सब कुछ है। आगे क्या करना है, बताओ–किम।"

थोड़ी देर में वही स्त्री हरिबाबू का जवाब ले आयी। लिखा था–"जिस रास्ते से आये हो, उसी रास्ते से लौट जाओ। रास्ते में मिलूंगा। इन लोगों को छोड़कर फिलहाल आ नहीं सकता।"

लेकिन लामा की तबीयत अभी तक ठीक नहीं थी। फिर भी किम के कंधे का सहारा लेकर लामा सहारनपुर की ओर लौट पड़े। रास्ते में किम ने चिंतित स्वर में कहा–"बाबा, आपकी तबीयत ठीक नहीं है; कुछ देर के लिए आराम कर लें।"

बाबा ने जवाब दिया–"मेरी खोज पूरी नहीं हुई बेटे, और फिर इस बूढ़ी अवस्था में वक्त ही कहां रह गया है ? चले चलो।"

किम बूढ़े बाबा का बोझ ढोते हुए धीरे-धीरे पहाड़ी रास्ता पार कर रहा था। बाबा बोले–"सुनो विश्वमित्र ! संसार में आज तक किसी गुरु को इससे अधिक वफादार शिष्य नहीं मिला होगा। लेकिन देखो तो मेरा अन्याय कि इसके बदले में मैं तुम्हारी सारी शक्ति को अपने बुढ़ापे के बोझ के नीचे कुचले डाल रहा हूं। अच्छा किम, सच बताओ, तुम कभी मुझे छोड़ोगे तो नहीं ?"

"नहीं बाबा, कभी नहीं। बाबा, आपने ही तो मुझे प्यार करना सिखाया। आदमी बनाया। अब मैं जानवर तो हूं नहीं कि फिर भी काटता फिरूं।"

आखिर रास्ते की बाधा पार करके वे सहारनपुर पहुंच गये। वही धनाढ्य विधवा गृहिणी उनका स्वागत करने के लिए हमेशा की तरह मौजूद थी। बाबा ने गृहलक्ष्मी से कहा–"यह विश्वमित्र बहुत थक गया है। शायद इसे बुखार भी आने लगा है। इसकी देखभाल करो मां, जिससे यह जल्द ही अच्छा हो जाये।"

किम ने एक बक्स मंगवाया और चुराये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए कागजात को उसमें बंद करके ताला जड़ दिया। उसे ठीक होने में कई दिन लग गये। एक दिन उसने पूछा—"बाबा कहां हैं?"

"ठीक हैं। दो दिन से बिना कुछ खाये-पिये वे यहां पहाड़ियों में भटक रहे थे। एक पहाड़ी से लुढ़ककर गिर पड़े। डूब ही जाते। अच्छा हुआ कि उसी वक्त वहां हरिबाबू पहुंच गये। उन्होंने उन्हें बचा लिया।"

"हरिबाबू यहां है?"

"कुछ ही दिनों पहले वे यहां आये थे। उन्हें भी तुम्हारी तबीयत की बड़ी फिक्र है।"

"मांजी, एक बार हकीम साहब को मेरे पास भेज दीजिये।"

थोड़ी देर में हरिबाबू आ गये। बोले—"वाह, अब तो तुम्हारी तबीयत ठीक मालूम होती है किम साहब!"

"ठीक ही है। वे कागजात, जो मैं उन फिरंगियों के बक्से में से चुरा लाया था, एक संदूक में बंद पड़े हैं। यह रही उनकी चाबी। आप ले लीजिये।"

"शाबाश!" हरिबाबू ने कहा। उन्होंने फौरन संदूक मंगवाया, खोला और अंदर के कागजात देखने लगे।

किम ने पूछा—"और फिरंगी कहां गये?"

"उनके शिकार का सारा कार्यक्रम गड़-बड़ा गया; इसलिए वे अपने देश की ओर लौट गये।"

"चलो अच्छा हुआ। मैं बहुत थक गया हूं। मुझे नींद आ रही है। अब सोऊंगा।"

शाम के समय महबूब अली खां के साथ लामा किम के कमरे में चले आये। बोले—"हमारे तमाम पाप धुल गये। अब हम जायेंगे। धर्म की सेवा करेंगे। लोगों धर्मशिक्षा देंगे।"

महबूब अली ने नम्रता से कहा—"लेकि सरकार को किम की जरूरत है बाबा।"

"अच्छी बात है। किम ने मेरी खोज मदद की और मैंने उसकी खोज में। दोनों अपनी-अपनी मंजिल तक पहुंच गये वह सरकार की सेवा करे। मेरे और किम संबंधों पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा।"

महबूब अली चला गया। किम की आं खुल गयी। वह उठ बैठा। बाबा को साम देखकर खुश हुआ। पूछा—"बाबा, आपकी तबीयत कैसी है?"

"बिलकुल अच्छी। और देखो किम मेरी खोज पूरी हो गयी। यहां लौटने बाद मैंने खाना-पीना छोड़ दिया। मुक्त पं की तरह मेरी आत्मा उन्मुक्त स्वरूप हल्की होकर चारों ओर विचरण कर लगी। तभी भटकते-भटकते देखा कि भग वान बुद्ध के तीर से जहां नदी उत्पन्न हुई थी वह तो ठीक मेरे चरणों के नीचे है। मैं भगवान की कृपा का चरणोदक लिया, और किम, मेरे तमाम पापों का नाश हो गया इस तीर्थ से प्राप्त पुण्य के तुम भी भागीदा हो किम। इसलिए तुम्हारे भी तमाम पा धुल गये।"

इतना कहकर लामा मुस्कराये—ठी उसी तरह, जिस तरह मोक्ष प्राप्त कर वाले महात्मा परम तृप्ति और चरम आन के साथ मुस्कराते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्ता विलास

अमरीका की एक प्रयोगशाला ने ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है, जो किसी भी धातु या वस्तु में कितने सोने की मिलावट है या कितना सोना छिपा है, इसकी सूचना दे देता है। इस यंत्र का निर्माण अमरीकी अणुशक्ति-आयोग ने चुंगी-विभाग के लिए किया है। जिस वस्तु में स्वर्ण की मात्रा का पता लगाना हो, उसे इस यंत्र के पास रख दिया जाता है। उस धातु में अगर सोने का एक कण भी होगा, तो इस यंत्र से आवाज निकलेगी। सोने की मात्रा जितनी अधिक होगी, आवाज भी उतनी ही तेज होगी। स्वर्णकारों के लिए भी यह यंत्र बड़ा उपयोगी है। इसके प्रयोग से सोने के तस्कर-व्यापारियों पर भी रोकथाम हो सकती है। वे किसी भी वस्तु में सोना छिपाकर नहीं ला सकेंगे। सोने की गंध पाते ही यह यंत्र बोल पड़ता है। और गंध पाने की इसकी क्षमता असाधारण है।

०००

राष्ट्रसंघ के एक कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में बतलाया है कि १९६३ में यूरोप के ८० हजार आदमी सड़क पर मोटर-दुर्घटनाओं में मारे गये। अमरीका में यूरोप की अपेक्षा दुगुनी मोटरें उतने ही लंबे रास्ते पर दौड़ती हैं। मगर वहां एक वर्ष में मोटर-दुर्घटनाओं में ४३,४०० आदमी ही मरते हैं। हमारे देश में भी मोटरों और मरनेवालों का अनुपात निकाला जाये, तो शायद अमरीका से भी अधिक निकले। यहां तो शायद मोटरों से अधिक संख्या मोटर-दुर्घटनाओं में मरनेवालों की होगी।

०००

अमरीका के 'फ़ाग' आर्ट-म्यूजियम में ईसा मसीह का एक कलात्मक चित्र मिला है, जिसके मालिकों का यह दावा है कि वह प्रसिद्ध डच चित्रकार रेंब्राट का बनाया हुआ है। रेंब्राट के चित्रों की कीमत आजकल २२,००० रुपये प्रति वर्ग इंच है। इस हिसाब से इस चित्र का मूल्य २० लाख रुपये होता है – बशर्ते यह प्रमाणित हो जाय कि चित्र रेंब्राट का ही बनाया हुआ है। एक प्रसिद्ध कला-समीक्षक की राय में इस चित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें ईसा के चेहरे के दायें पार्श्व पर मृत्यु की छाया है और बायें पार्श्व पर जीवन का

२२,००० रुपये वर्ग इंच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ की ममता सर्वोत्तम की कसौटी है...

ममता की कसौटी पर खरा डालडा

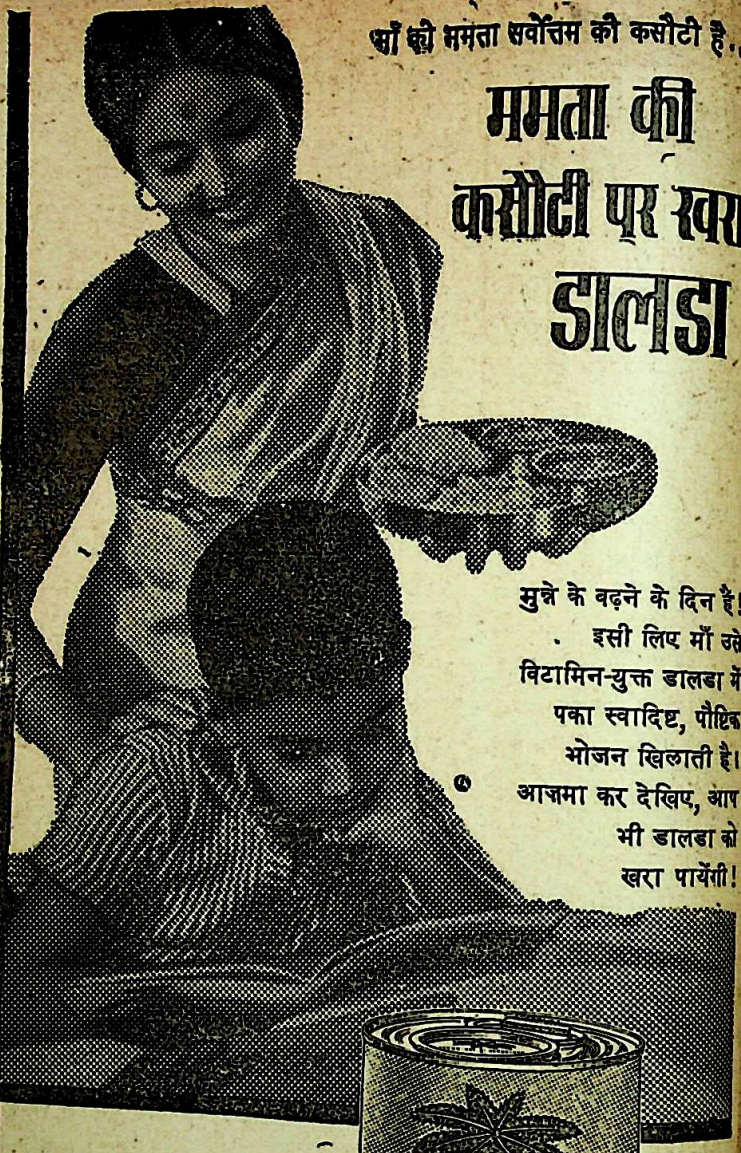

मुन्ने के बढ़ने के दिन हैं!
इसी लिए माँ उसे
विटामिन-युक्त डालडा में
पका स्वादिष्ट, पौष्टिक
भोजन खिलाती है।
आजमा कर देखिए, आप
भी डालडा को
खरा पायेंगी!

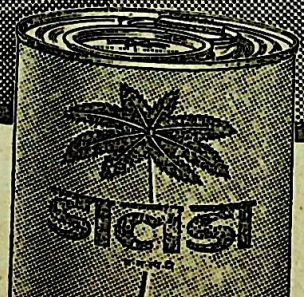

डालडा
वनस्पति-
एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

DL. 112-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश है। इसकी आंखें अंतर्मुख हैं, यद्यपि वे बाहर की ओर देख रही हैं।

०००

इस वर्ष मक्का-मदीना के हाजियों की संख्या १२ लाख से कम नहीं थी। हज करने-वालों में मलयेशिया के राजा-रानी भी थे। हज के दिनों मक्का के प्रवेश-द्वार जेद्दा के हवाई अड्डे पर प्रति १० मिनिट बाद हाजियों से भरा एक हवाई जहाज उतरता था। साधारणतया दिन-भर में वहां केवल दस हवाई जहाजों का आना-जाना होता है। अफ्रीका के बहुत से प्रदेशों के आजाद होने के बाद, अब हाजियों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। अफ्रीका और एशिया में इस समय ३५ देश ऐसे हैं, जहां इस्लाम के अनुयायियों का बहुमत है। धर्म के नाम पर एक होने-वाले देश यदि कभी राजनीतिक स्वार्थों के नाम पर भी एक हो गये, तो एशिया के इतर धर्मानुयायियों के लिए कठिन समय आ जायेगा।

०००

हिन्दी-विरोधी द्राविड नेता श्री राम-स्वामी नाइक्कर ने अपने पत्र 'तेनरल तरै' के १२ फरवरी के अंक में एक अजीब घटना लिखी थी—

"एक बार आर्काट के नवाब ने घोषणा की कि यदि कोई महिला सर्वथा निर्वसन होकर मेरे सम्मुख आये और उसी स्थिति में दौड़ लगाये, तो एक दौड़ में जितना दायरा पूरा करेगी, उतने दायरे की जमीन उसे इनाम में दूंगा। उस समय और तो कोई सामने न आयी; मगर एक ब्राह्मण महिला ने यह साहस किया। नवाब ने इस महिला को वह जमीन दे दी। यह महिला श्री राज-गोपालाचारी की दादी थी।"

द्राविड नेता ने यह कहानी श्री राज-गोपालाचारी के खानदान को बदनाम करने के लिए ही लिखी है। ऐसे अनर्गल आक्षेपों से केवल विद्वेष बढ़ता है। नेता ही जब ऐसे ओछे हथियारों से लड़ने लगेंगे, तो जनता जो भी करे, कम है।

०००

हिटलर के गहरे मित्र डा० रोहर्स ने हिटलर की जीवनी लिखते हुए इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि ईवा ब्राउन से शादी करके हिटलर ने दो बच्चों को जन्म दिया था। पहली संतान १९४१ में हुई। उस समय ईवा ब्राउन बावेरिया में आल्प्स पर्वत के किसी सुनसान इलाके में रखी गयी थी। वहां उसने एक कन्या को जन्म दिया। दो साल बाद इसी एकांत स्थान पर एक बालक भी ईवा के गर्भ से उत्पन्न हुआ।

हिटलर के फोटोग्राफर हर ह्यूगो जैगर को विश्वास है कि हिटलर का लड़का आस्ट्रिया के किसी एकांत भाग में रहता है। कहते हैं कि उस लड़के ने हिटलर की बहन पाउला की शवयात्रा में भाग लिया था। पाउला ने कुछ ही साल पहले प्राण छोड़े हैं। हिटलर की लड़की का निवास-स्थान अभी तक सबसे छिपा है।

डा० रोहर्स ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि शुरू से ही हिटलर का ईवा ब्राउन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नौका विहार का मज़ा अनोखा है

अरविंद

ये बढ़िया कपड़े फ़ैशन में
जान फूंकते हैं

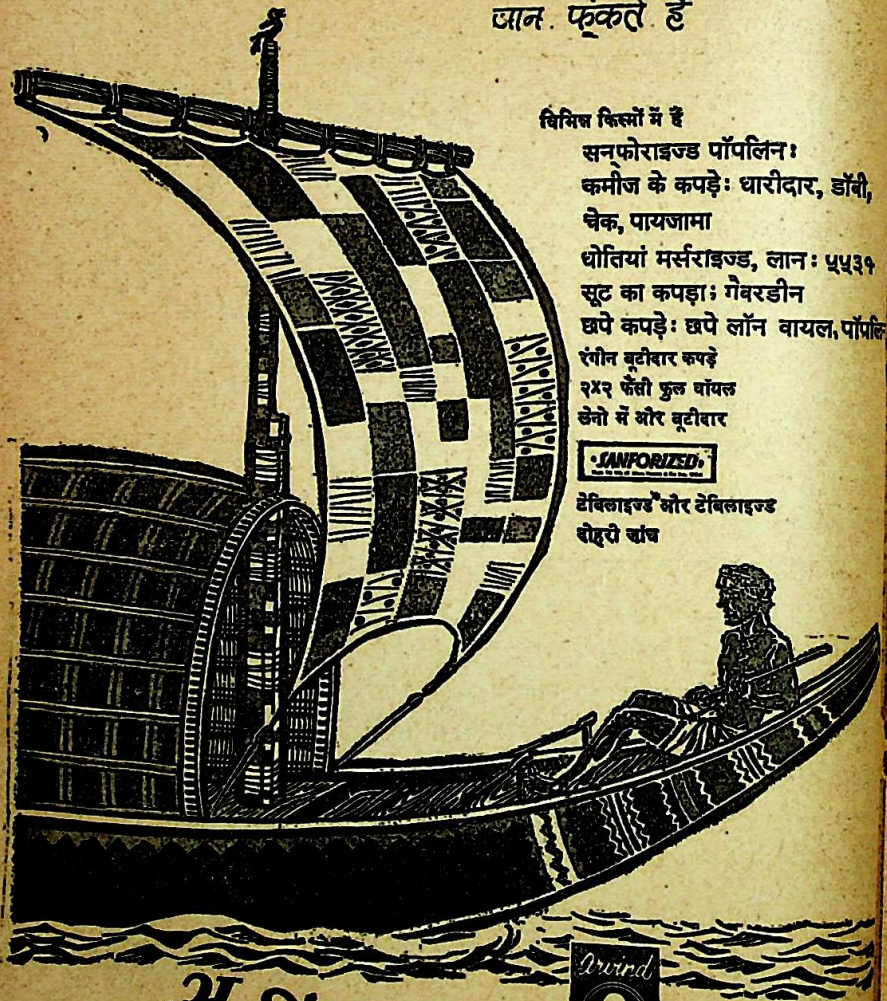

विभिन्न किस्मों में हैं
सनफ़ोराइज्ड पॉपलिन:
कमीज के कपड़े: धारीदार, डॉबी,
चेक, पायजामा
धोतियां मर्सराइज्ड, लान: ५५३१
सूट का कपड़ा: गैबरडीन
छपे कपड़े: छपे लॉन बायल, पॉपलि
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल वॉयल
डेनो में और बूटीदार

SANFORIZED

टेबिलाइज्ड और टेबिलाइज्ड
शीहरी जांच

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

Arvind Quality

रजिस्टर्ड यूजर

अब हमारी रिटेल दुकानों में प्राप्त:- प्रीमियर फर्निशिंग एंड डेकोरेटिंग प्रा० लि०
७, ब्रेबोर्न स्टेडियम, वीर नरीमन रोड, बंबई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ वही संबंध था, जो किसी पुरुष का अपनी प्रेयसी के साथ होता है। मगर नाजी सरकार के प्रचार-मंत्री डा० गोयबल्स ने हिटलर के निजी जीवन को जनता की नजरों में बहुत ऊंचा रखने का निश्चय किया। इससे हिटलर का पारिवारिक जीवन प्रकाश में न आ सका। डा० रोहर्स के अनुसार हिटलर ने अपने जीवन में बहुत विरेचक दवाइयां खायीं। भावावेशों के उपशमन के लिए भी हिटलर को गोलियां खानी पड़ती थीं। इन गोलियों में स्ट्रिक्नीन की मात्रा काफी होती थी, जिससे बुढ़ापा आने से पहले ही हिटलर शिथिल हो गया था।

०००

अरबी घोड़े ही नहीं, अरबी नवाब भी आजकल यूरोप के अखबारों में चर्चा का विषय बन रहे हैं। हाल में शाह सऊद जब ग्रीस गये, तो एथेंस के सबसे महंगे होटल में ठहरे। होटल के ७२ कक्षों में से १२ पर उनका पूरा कब्जा उन दिनों था। वे लगभग १,६६,५०० रुपये खर्च कर रहे थे। सऊद के ४७ लड़कों में से, छः इस प्रवास में उनके साथ आये थे। उनकी कैडिलैक, ब्यूक आदि बड़ी गाड़ियां जब भी सड़क पर निकलती थीं, तो दो-चार पैदल चलनेवालों को धकेलती-कुचलती, बसों से टकराती और लैंप के खंबों से भिड़ जाती थीं। वे जितना भी पेट्रोल जलाते, उतना ही उनका मुनाफा होता था। इसलिए परवाह करने की उन्हें जरूरत ही नहीं थी।

०००

सच्चे कलाकार को यश की भूख नहीं होती; अपने आनंद से ही वह संगीत की रचना करता है। इसका प्रमाण अमरीका के प्रसिद्ध स्वरकार चार्ल्स आइव्स का जीवन है। उसकी रचनाएं अभी तक प्रकाश में नहीं आयीं। जब भी कोई प्रकाशक या व्यापारी उससे रचनाएं मांगता है, वह टाल देता है। १९४७ में उसे सर्वश्रेष्ठ स्वरकार होने का पुलित्जर-पुरस्कार मिला था। पुरस्कार मिलने की सूचना उसे दी गयी, तो उसने बेपरवाही से कहा—"पुरस्कार? छिः! यह तो मामूली कलाकारों की शोभा है। असली कलाकार यह चिंता नहीं करते कि उनकी रचना स्वीकृत हुई या अस्वीकृत।" कला का सांसारिक मूल्य भी तभी लगता है, जब वह व्यापारी के हाथ पड़ जाये।

पुरस्कार?...छिः!

०००

दुनिया में सौंदर्य का मूल्य कैसे बदलता रहता है, यह जानना हो, तो १९६४ की सौंदर्य-प्रतियोगिता में इजराइल की ओर से भाग लेनेवाली मिस रोनिट रिनाट का भाग्य देखिये। जब वह १८ वर्ष की थी, तो 'मिस इजराइल' बनी और उसने 'मिस यूनिवर्स' के चुनाव में भाग लिया। उसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संभल कर पाँव रखिये—'एवरेडी' टॉर्च ही इस्तेमाल कीजिये

◀ एवरेडी
टाइप नं० ४५४१
(नीचे से मरा जाने वाला)
सिर्फ रु० ३.७५ पै०
५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक।
कर अलग से

जब आपकी सलामती बहुत हद तक टॉर्च पर निर्भर करती है तो निश्चय कर लीजिये कि आपके पास एक ऐसा टॉर्च है जो आपको कभी धोखा नहीं देगा

* सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' खरीदिये।
* और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।
* इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसी धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
* 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।
* विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये जो चमचम रोशनी देती हैं और सबसे अधिक टिकती हैं।
* आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये

UNION CARBIDE यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ीसरे नंबर पर आयी । मगर एक साल बाद १९६५ में वह एक मामूली लड़की की तरह काम की खोज करने लगी । उसे एक फौजी दस्ते के साथ रसोईदारिन बनकर आलू छीलने का काम करना पड़ा । आज भी वह इसी काम से अपना खर्च चला रही है । सुंदरता जब ईमानदार हो जाये, तो दुनिया उसका मूल्य नहीं लगाती ।

०००

मनोरंजन के लिए जैसे फ्रांस के मामूली लोग 'काफे' में जाते हैं, ब्रिटेन के लोगों के लिए 'पब्स' हैं, उसी प्रकार जापान के आम लोग 'सैंटो' (सार्वजनिक स्नानघर, जहां सब नंगे नहाते हैं) में जाकर सर्द-गरम पानी में नहाने का आनंद लेते हैं । टोकियो के १६ लाख मर्द-औरत मजदूरों को रोज शाम को यह मनोरंजन मिलता है । शहर के २,६०८ सार्वजनिक स्नानघरों में नहाने का प्रबंध है । शहर के ८० प्रतिशत मजदूरों के घरों में नहाने का कोई बंदोबस्त नहीं है । पिछले दिनों इन सार्वजनिक तालाबों में नहाने का खर्च ६.३ से ८.८ येन कर दिया गया, तो मालिकों ने तालाब बंद कर दिये । इस हड़ताल से सारे टोकियो में जितना असंतोष फैला, उतना युद्ध के दिनों में भी शायद नहीं फैला था । अखबारों में इसे 'जन्मसिद्ध अधिकारों पर आघात' कहा गया । बंबई में भी सार्वजनिक जलाशयों की बहुत आवश्यकता है ।

०००

पैटरसन बार्क्सिग में दो बार अपने प्रतिस्पर्धी को हराकर चैंपियन बन चुका है । दो दफा वह इस मुकाबले में हारा भी था । जब वह घर से बाहर निकलता है और भीड़ में जाता है, तो चेहरे पर नकली नाक और नकली मूछें चिपका लेता है । आटोग्राफ मांगने वालों से बचने का उसने यह नया तरीका निकाला है। इस बनावटी चेहरे से वह पादरी—सा मालूम होता है । हमारे फिल्मी कलाकार भी अगर चाहें, तो जनता की नजरों से बच सकते हैं । मगर वे तो नजरों से बचना नहीं, बल्कि नजरों में गड़ना चाहते हैं ।

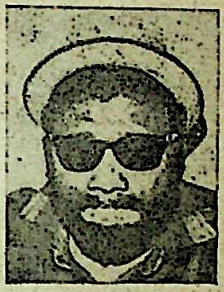

बनावटी चेहरा

०००

औद्योगिक उत्पादन की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन करनेवालों के सामने एक नयी समस्या खड़ी हो गयी है । केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस की नयी इमारत नवीन भवन-निर्माण कला का नमूना होने से बहुत सुंदर व स्वच्छ है और आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित भी । किंतु अब यह स्वच्छता और सजधज ही उत्पादन में रुकावट डाल रही है । वहां बाहर का कोई शोर नहीं आता, तापमान ६८ डिग्री रहता है । स्थान-स्थान पर फूलों के गुलदस्ते सजे हुए हैं । सारी इमारत में भीनी-भीनी खुशबू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीड़ा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमड़ी भरने, मस्सों के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पड़े।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

BJ DOL 2A HIN

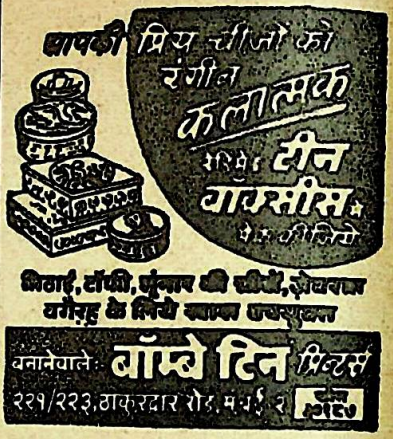

३ वर्ष का चंदा भेजनेवालों को सुंदर भेंट

यदि आप तीन वर्ष का चंदा एक-साथ भेज दें, तो नवनीत मिलने के साथ ही आपको और भी दो लाभ होंगे।

१. तीन वर्ष के चंदे के लिए ३० के स्थान पर केवल २५) देने होंगे।

२. ८०० पृष्ठ की पुस्तक 'कविता-कौमुदी' (उर्दू शायरी), मूल्य ८), भेंट-स्वरूप दी जायेगी।

हमें विश्वास है कि लौटती डाक से आप २५) भेजकर तीन वर्ष के ग्राहक बनेंगे और सुंदर भेंट का लाभ उठायेंगे।

नवनीत प्रकाशन,
३४१ तारदेव बम्बई-३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समायी रहती है।

फिर भी वहां के एक बीस साल पुराने कर्मचारी का कहना है कि काम करनेवालों का मन इस नये मकान में काम में नहीं लगता। वे उस पुराने मकान को ही पसंद करते हैं, जहां उन्हें भीड़-भाड़ में काम करना पड़ता था। पुरानी जगह पर वे जब चाहते, आपस में गपशप लगा लेते थे। यहां उन्हें कैद महसूस होती है। इस नीरवता को, श्मशान-सी चुप्पी को वे पसंद नहीं करते।

मनोवैज्ञानिकों का खयाल है कि मनुष्य को जब कोलाहल और भली-बुरी परिस्थितियों की आदत पड़ जाती है, वैसे ही हालात में वह पूरे मन से काम कर सकता है। इसके अलावा यह बात भी है कि परिस्थितियों पर हम जितना काबू पाते हैं, उतना ही ज्यादा हमें चौकन्ना रहना पड़ता है। लोग कुरदत से पैदा हुई सर्दी-गरमी और तकलीफों को तो चुपचाप सह लेते हैं; लेकिन इन्सान की बनायी सर्दी-गरमी को नहीं सहना चाहते। जरा-सी तकलीफ पर उनका मन बगावत करने लगता है।

०००

चार्ली चैपलिन ने विदूषक बनकर दुनिया का कितना उपकार किया, यह लंदन के पत्र 'संडे टाइम्स' को एक पाठक द्वारा भेजे गये इस पत्र से पता लगता है :

"प्रिय महोदय, मेरी सारी उम्र लिवरपूल की मजदूर-बस्ती में गुजरी है। यहां मैं एक स्कूल का अध्यापक हूं। एक दिन मैं होमर सिनेमा के सामने से गुजर रहा था। फरवरी के महीने की बर्फीली रात थी। सिनेमा के दरवाजों के सामने लैंप के नीचे दो बच्चे – एक आठ साल की लड़की और उसके साथ पांच साल का लड़का – खड़े थे। दोनों के तन चिथड़ों से ढंके हुए थे, पैरों में जूते भी न थे। सर्दी से उनके हाथ कांप रहे थे और मालूम होता था कि उन्हें कभी पेट-भर खाना नहीं मिला। सिनेमा के बाहर चार्ली चैपलिन का कट-आउट पोस्टर लगा था। लड़की अपने भाई का हाथ पकड़कर पोस्टर के पास ले गयी। चैपलिन की तस्वीर के बेंतवाले हाथ पर उंगलियां फिराती हुई मुस्कराकर बोली–'चार्ली, सचमुच तुम हमें खूब हंसाते हो। बड़े अच्छे हो तुम।'

चार्ली बड़े अच्छे हो तुम

"गरीब बच्चों की जिंदगी में खुशी लानेवाला सदा खुश रहे, मेरी यही इच्छा है। मेरी शुभकामना चार्ली तक पहुंचा देंगे, तो कृपा होगी।

–वी० हूले, ऐस्थम, चेशायर।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'टेबिलाइज्ड' और मैफिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलतें है।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाहना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • ससून बम्बई • ससून
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूब थे वे लोग!

बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि भारतीय राजनीति के पितामह दादाभाई नवरोजी ने कुछ समय व्यापार भी किया था। राजनीति में उतरने से पहले वे बंबई की एक प्रसिद्ध पारसी व्यापार-संस्था के भागीदार के रूप में इंग्लैंड में रहे थे।

उन्हीं दिनों बंबई के एक ग्राहक के लिए उनकी संस्था ने धागे की रीलें खरीदीं। रीलों पर लिखा था—१०० गज। किंतु दादाभाई को कुछ रीलें पतली लगीं। उन्होंने रात को बैठकर अनेक रीलों को खोला और नापकर देखा, तो कई में ८० गज भी धागा नहीं था। उन्होंने अपने साथी भागीदार को यह बात बतायी और सौदा रद्द कर देने का सुझाव दिया।

आदर्श पर अडिग

साथी बोले—"ऐसे तो व्यापार चलने से रहा। रीलें बंबई भेज देते हैं। ग्राहक शिकायत करेगा, तो जिसने हमें रीलें बेची हैं, उससे हरजाना लेकर दे देंगे।" दादाभाई ने हेडआफिस को लिखा। जब वहां से भी यही उत्तर आया, वे बड़े दुःखी हुए।

उनकी संस्था अफीम और शराब का भी आयात-निर्यात करती थी। उन्होंने भागीदारों को लिखा कि इन दोनों चीजों के व्यापार से जो लाभ हो, उसका हिस्सा उन्हें न दिया जाये। भागीदारों ने समझाने की कोशिश की— "सरकार भी इन चीजों पर टैक्स लगाकर अपना खजाना भरती है; और बंबई के एलफिंस्टन कालेज के प्रोफेसर रहते हुए तुम सरकारी खजाने से तनख्वाह लेते भी रहे हो।"

लेकिन दादाभाई पर इस दलील का कोई असर नहीं पड़ा और कंट्राक्ट की मियाद पूरी होते ही उन्होंने संस्था से संबंध तोड़ लिया। वे नहीं चाहते थे कि जिन वस्तुओं को वे मनुष्य के लिए हानिकारक समझते थे, उनके व्यापार से किसी भी प्रकार का संबंध रखें।

०००

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री :

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने सभी प्रकार के अभावों को स्वाभिमान और संतोष के साथ झेलते हुए सरस्वती की उपासना की।

बिहार के एक गरीब घर में जन्म लिया। बचपन में नटखट रहे; मगर जब विद्यानुराग जागा, तो संस्कृत के उद्भट विद्वान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन गये। काशी में पढ़ते समय कभी घर से कोई सहायता न मांगी। कई बार भूखे रहना पड़ा। जाड़े में भी धोती की जगह अंगोछा लपेटे, नंगे बदन, कंबल ओढ़े रह जाते।

पर किसी दशा में उन्होंने कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारा। अभावों और कठिनाइयों को वे ईश्वर की देन कहा करते थे। हर हालत में सदैव प्रसन्न रहना उनका सहज स्वभाव था।

शास्त्रीजी ने कभी धन कमाने और जोड़ने पर ध्यान नहीं दिया। त्याग और तप ही उनका असली बाना था।

एक बार उन्हें रोगशैय्या पर देखने के लिए स्वामी सत्यदेव परिव्राजक आये और चुपके से कुछ अशर्फियां उनके सिरहाने तकिये के नीचे रख गये। शास्त्रीजी को पता चला, तो तुरंत अशर्फियां स्वामीजी के पास सधन्यवाद वापस भेज दीं। अपने अभावों को पूरा करने के लिए उन्होंने कभी किसी मित्र से पैसा नहीं मांगा।

अनथक परिश्रम करके उन्होंने बहुत-सी पुस्तकें लिखीं। कई विश्वविद्यालयों में संस्कृत की उच्चतम परीक्षाओं के परीक्षक रहे। उन्होंने रामायण-महाभारत की टीकाएं भी सुबोध भाषा में लिखीं।

इतने परम संतोषी, स्वाभिमानी, सात्विक प्रकृति के विद्वान आज कहां हैं?

०००

कवि गोल्डस्मिथ :

अंग्रेजी के महान कवि व उपन्यासकार ओलिवर गोल्डस्मिथ का काव्य बहुत ही सधा हुआ और संतुलित है। किंतु उनके व्यक्तित्व में जितना अधिक असंतुलन था, उतना हिन्दी के महाकवि निराला में ही देखने को मिला है।

असंतुलित

किसी की भी कष्ट-कथा को सुनकर उनका कवि-हृदय करुणा से भर जाता था। मशहूर था कि वे जितना पैसा पास होता था, उससे अधिक दे डालते थे और अंत में उनके पास दर्ज़ी व धोबी के बिल चुकाने का भी पैसा नहीं रह जाता था। देते समय पात्र-कुपात्र का कभी ध्यान नहीं रखते थे।

मगर अपने प्रकाशकों से व्यवहार करने में वे इतनी सरलता नहीं दिखाते थे। उनसे पेशगी लेकर और नियत समय पर पुस्तक लिखने का वादा करके भी इतने लापरवाह हो जाते कि वर्षों उस पुस्तक का लिखना प्रारंभ न करते।

उनकी कविता के पाठक उन्हें अनुपम प्रतिभाशाली जानकर बातचीत के लिए बुलाते और आश्चर्य में पड़ जाते कि जिसकी लेखनी इतनी समृद्ध और सधी हुई है, वह वाणी से इतना दरिद्र कैसे हो सकता है! बोलते हुए गोल्डस्मिथ प्रायः मूर्खतापूर्ण बातें कह जाते और हंसी का पात्र बनते।

कवि का व्यक्तित्व ऐसा था कि स्नेह तो उनसे सभी करते थे; मगर सम्मान के पात्र वे कभी नहीं बने। वे हृदय के कवि थे, मस्तिष्क के नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

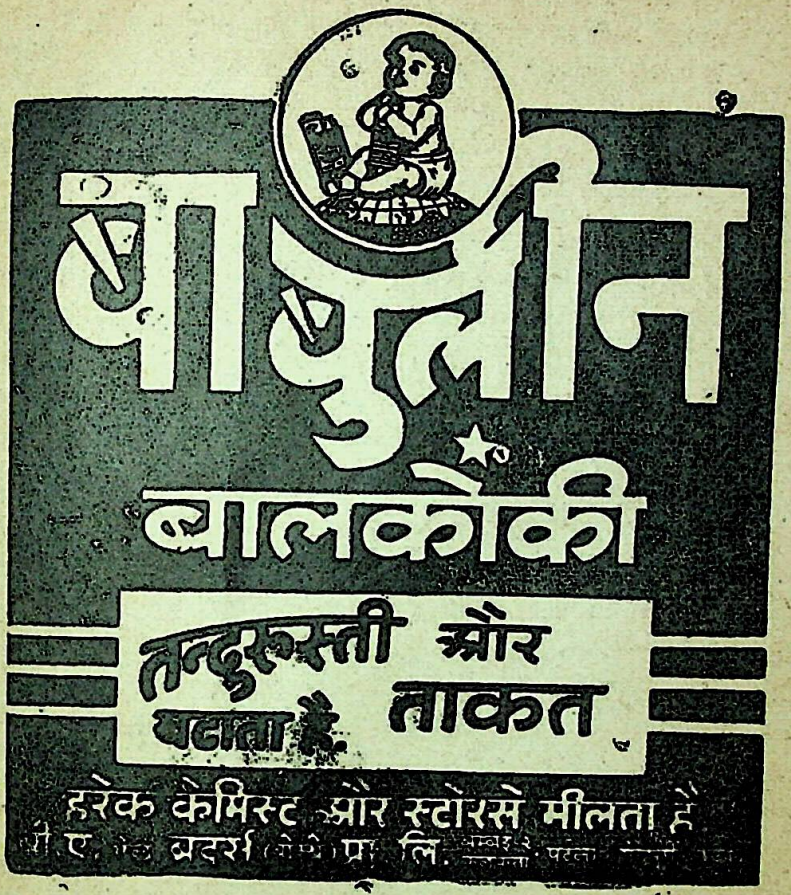

बी० ए० एंड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०

कलकत्ता, पटना और गोहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

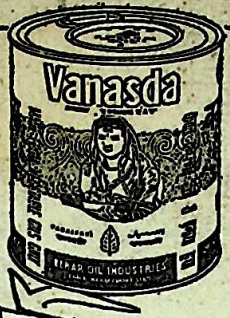

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविद्या में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविद्या का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति

(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज अकोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ गुना मज़बूत !!!

मेसर्स केटिन फब्रिकेन, आस्लो नार्वे के टेक्निकल कोलैबोरेशन में बनायी हुई केलिब्रेटेड सांकलें २½ टन तक वजन उठाने के लिए, बनायी जाती हैं। परीक्षण से सिद्ध होता है कि ये सांकल १६ टन वजन तक उठाने पर भी नहीं टूटती – वजन उठाने की निर्दिष्ट क्षमता से ६ गुना। निश्चित रूप से मजबूती की यह गारंटी है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें :

द इंडियन लिंक चेन मैन्युफेक्चरर्स लिमिटेड

बम्बई-आग्रा रोड, भांडुप
बम्बई–७८

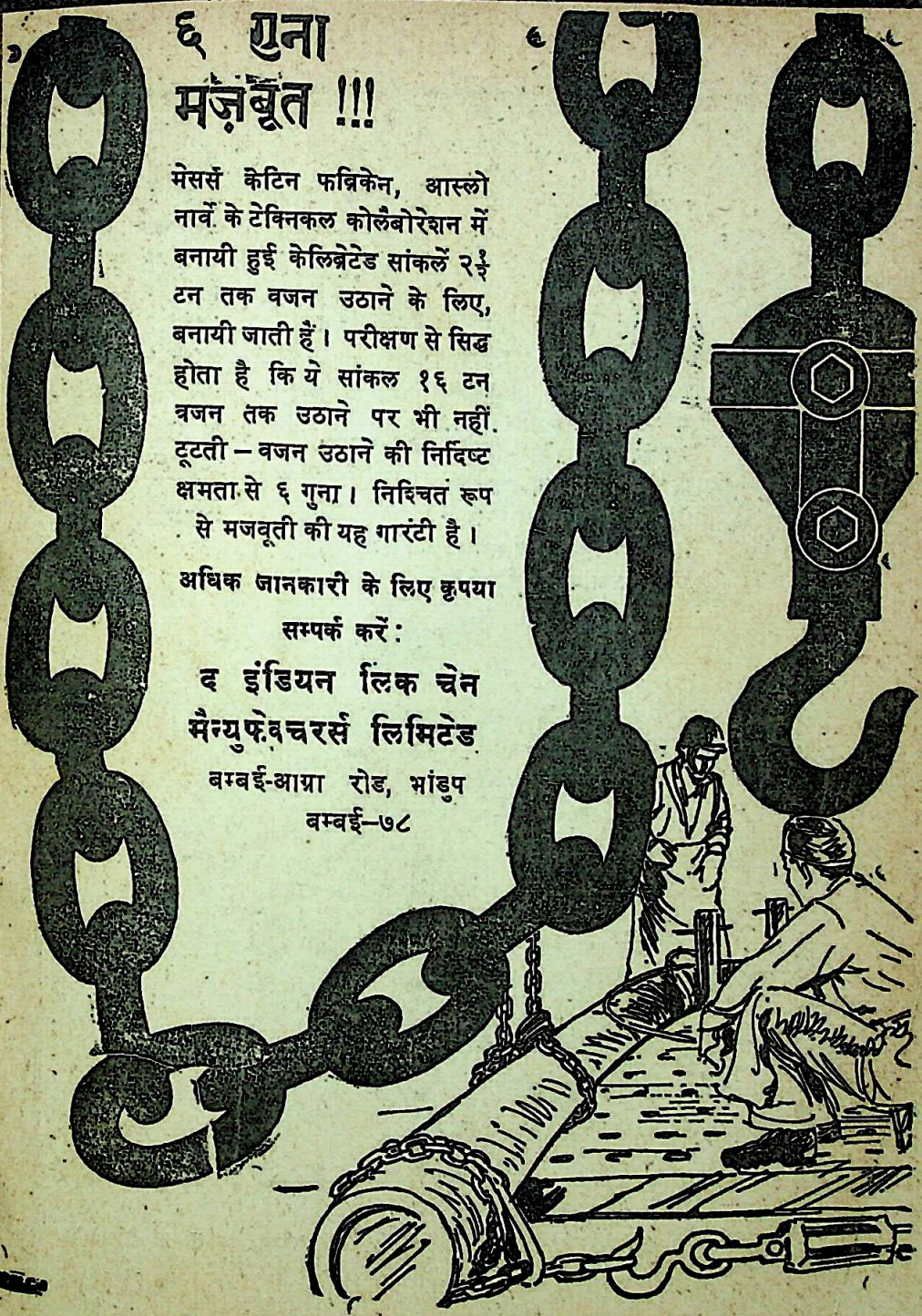

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काश्मीर

आपका स्वागत करता है...

...यहां आकर अपनी छुट्टियां अविस्मरणीय बनाइए। डल की सतह पर हाउस बोटों या शिकारों में जल-विहार का आनन्द लीजिए। पास ही नगीन झील में स्नान और जलक्रीड़ा की बहार। जी चाहे तो प्रसिद्ध मुगल उद्यानों के हरे-भरे मैदानों में मस्ती-भरा आराम कीजिए। चांदी की तरह झिलमिलाते फर और नीले धुंध में लिपटे देवदारों के बीच गुलमर्ग में आपका पड़ाव। वर्णनातीत दृश्यावलियों और उद्दीपक अभियानों की जगह पहलगाम है। लिद्दर नदी में बेहतरीन ट्राउट मछलियों का शिकार.....

३१ अक्तूबर तक रेल और मोटर किराये में रियायत। दिल्ली और श्रीनगर के बीच नित्य दो वाइकाउण्ट उड़ानें—जिनमें से एक बम्बई—दिल्ली कैरावेल के यात्रियों को लेता है। हाउस बोटों में रहने का खर्च उतना नहीं है, जितना आप समझते हैं। जम्मू व काश्मीर, श्रीनगर के पर्यटक निर्देशक आपको छुट्टियों की योजना बनाने में सहर्ष मदद देंगे।

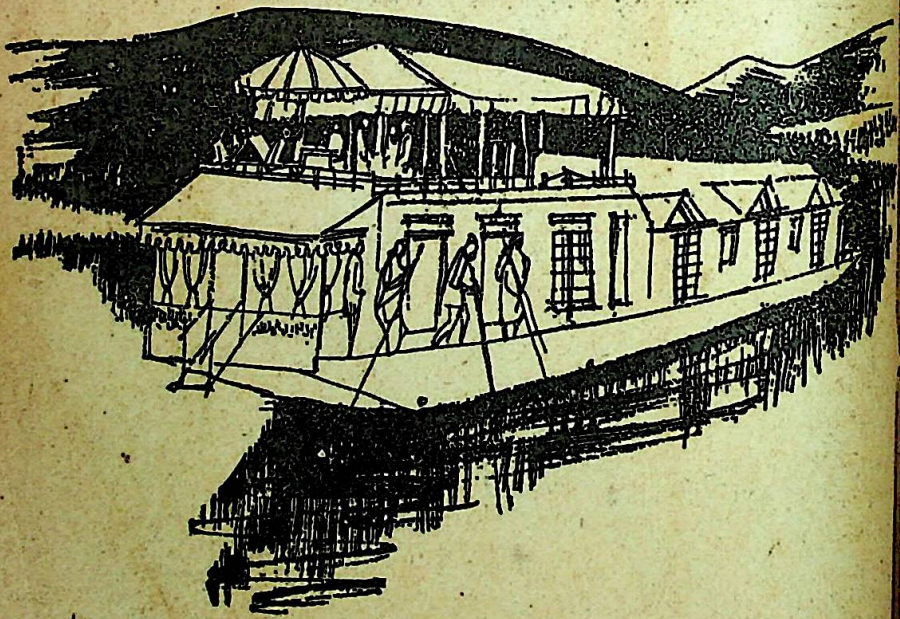

पर्यटन विभाग, भारत सरकार

डीए ६५/१०५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

मलिये

और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। अमृतांजन की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2817A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप भी फूल जैसी खिलें

रमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

अगस्त १९६५

पुस्तक-संक्षेप विशेषांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया ! धारीदार टूथपेस्ट !

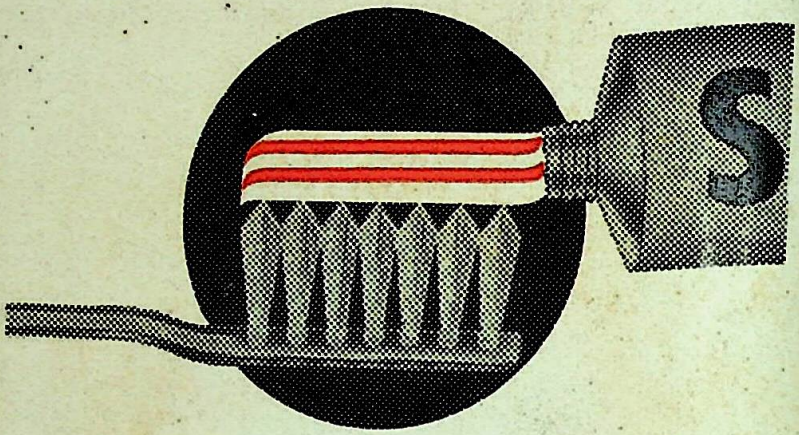

कीटाणु-रोधक लाल धारियों वाला*

सिग्नल

आप के सारे मुँह को साफ़ रखता है !

❶ दाँत साफ़ करता है ❷ सांस को ताज़ा रखता है

* लाल धारियों में हैक्साक्लोरोफ़ीन है।

दांतों की सफ़ाई में एक नई सूझ ! कीटाणु-रोधक लाल धारियोंवाला सिग्नल टूथपेस्ट आप के सारे मुंह को साफ़ रखता है। इधर सिग्नल आप के दांत साफ़ करता है, उधर लाल धारियों में मिला हैक्साक्लोरोफ़ीन आप के सांस में ताज़गी ले आता है...क्योंकि हैक्साक्लोरोफ़ीन एक ऐसा संरक्षक तत्व है, जो दुर्गंधकारक कीटाणुओं को फ़ौरन नष्ट कर देता है। और यूं सिग्नल से आप का सारा मुंह साफ़ रहता है। लाल धारियों, बुलबुलों भरे झाग, स्पिअरमिंट के ताज़ा स्वाद और सारे मुंह में सफ़ाई के अनोखे अनुभव के कारण सिग्नल आप के सारे परिवार के मन भा जाएगा। आज ही सिग्नल ख़रीदिये।

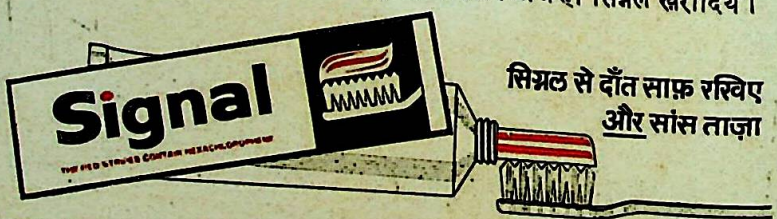

सिग्नल से दाँत साफ़ रखिए
और सांस ताज़ा

लिंटास—SG. 3A-77 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पादन

मुखपृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंदमय जीवन के लिये बचत. **देना बैंक** को आपकी मदद करने दीजिये

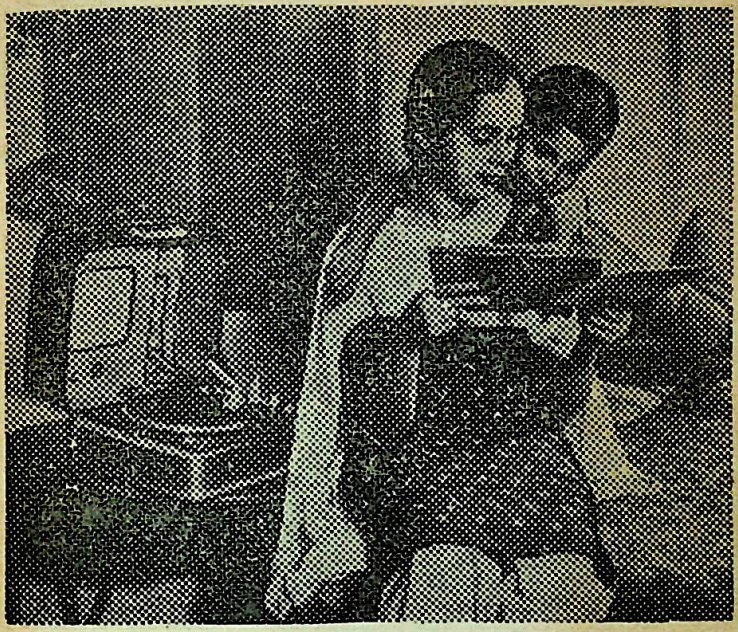

सेविंग्ज एकाऊण्ट – व्याज ४%
अल्पवयस्क बचत योजना – व्याज ४%
फ़िक्स्ड डिपॉज़िट – व्याज ६% से ७½%

देना बैंक

देवकरण नानजी बैंकिंग कंपनी लिमिटेड
रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज़, १७, हॉर्निमेन सर्कल बम्बई-१.
१४५ से अधिक ऑफ़िस तथा ४५ सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट
प्रवीणचंद्र व. गांधी मॅनेजिंग डाइरेक्टर

DB/H/169 – A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

मलिये और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। अमृतांजन की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

IWT/AM 2819A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फायरस्टोन

का एक और सेहरा

मशहूर 'रैप-अराउंड' ट्रैड

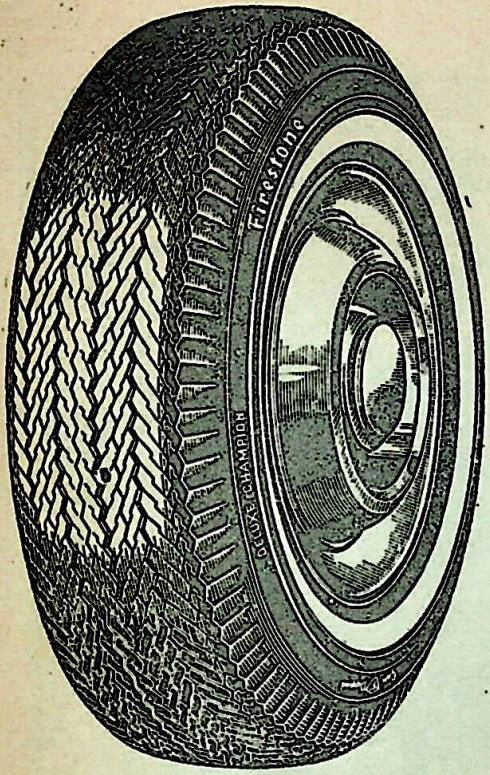

और यह रहा वह, मोटर-कार टायर में महान विकास के रूप में विश्वभर में नामचीन–'रैप अराउंड' ट्रैड से अब फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन टायर सुशोभित है। इस लाजवाब टायर का राज है क्रांति कारी ट्रैड। पांच बड़ी और टायर के किनारों पर दो–ऐसी सात रिब्स वाला यह टायर स्थिरता, सुरक्षा व किफायत की नयी कहानी है। नये 'रैप-अराउंड' ट्रैड के कारण सड़क पर रबड़ का हिस्सा ज्यादा बना रहता है, वह सड़क से ही लगा रहता है ताकि टायर जमीन को ज्यादा मजबूती से पकड़े, अच्छा चले, सुरक्षापूर्वक मुड़े और ज्यादा अर्से तक चले। फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन परिपूर्ण टायर है, अधिक सुरक्षा के लिए गोल किनारे और सुरक्षा में नया प्रतीक-टायरों का सिरताज।

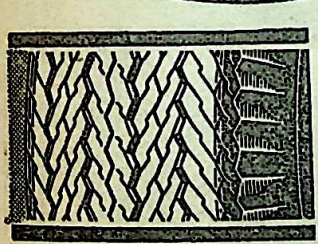

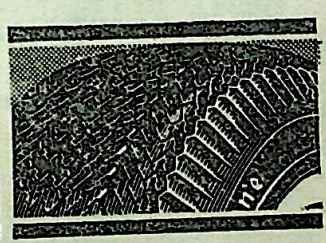

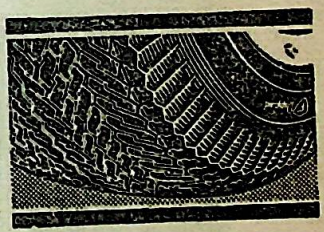

१ ज्यादा काम करनेवाले सेफ्टी ट्रैड

डिलक्स चैम्पियन ट्रैड पॅटर्न वैज्ञानिक निधि से बना है ताकि सवारी सुखद रहे। किसी भी मौसम में, किसी भी सड़क पर फिसलने का भी खतरा कम, क्योंकि इस टायर में सूक्ष्म विधि से हजारों सुरक्षात्मक कोण है।

२ ज्यादा चौड़ा 'रैप-अराउंड' ट्रैड डिजाइन

मजबूत टायर वाड़ी पर नये चौड़े 'रैप-अराउंड' ट्रैड से सड़क पर ज्यादा रबड़ बनी रहती है, जिससे गाड़ी ज्यादा स्थिर चलती है, खास करके मोड़ों व कोनों पर अतिरिक्त संचालन सुविधा, पहले से ज्यादा सुरक्षा रहती है।

३ 'सुपर-टफ'-आश्चर्यजनक रबड़

निःसंदेह, फायरस्टोन की नयी आश्चर्यजनक रबड़ सुपर-टफ से बने डिलक्स चैम्पियन से अतिरिक्त खर्च के बिना आप हजारों मील ज्यादा तय कर सकते हैं। डिलक्स चैम्पियन आपके पैसे का अच्छा सौदा है, इसकी एक वजह यह भी है।

जहां पहियों का चलन-वहां फायरस्टोन बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आपका प्रिय प्रतीक

आधुनिक डिजाइन-लाजवाब काम Firestone

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिन्नी का डी ३१८ कपड़े की कहानी, माँ और बच्चों की ज़बानी

माँ की ज़बानी :

डी ३१८ बहुत टिकनेवाला बड़े काम का कपड़ा है —स्कूल की वर्दी के लिये इससे अच्छा कोई नहीं— लड़कों की धींगा-मस्ती का इस पर असर नहीं पड़ता।

बच्चों की ज़बानी :

वर्दी पहने हुए भी जब हम खेल-कूद मचाते हैं तो माँ दुरा नहीं मानतीं—वे जानती हैं कि यह बराबर टिकी रहेगी।

याद रखिये कि डी ३१८ सारे देश के स्कूलों की जरूरतों को पूरा करने के लिये खासकर चुने तरह तरह के रंगों में मिलता है।

अपनी जरूरत के बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्यों में अधिकार प्राप्त बिन्नी स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनकी दुकान पर यह साइन बोर्ड है।

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कंपनी लिमिटेड, बिन्नी ऐण्ड कंपनी लिमिटेड, मद्रास की सहायता प्राप्त

JWT/BY 3127A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके घर में एक 'एवरेडी' टॉर्च रखना चाहिये

एवरेडी बैटरी ७५ वाँ वर्ष

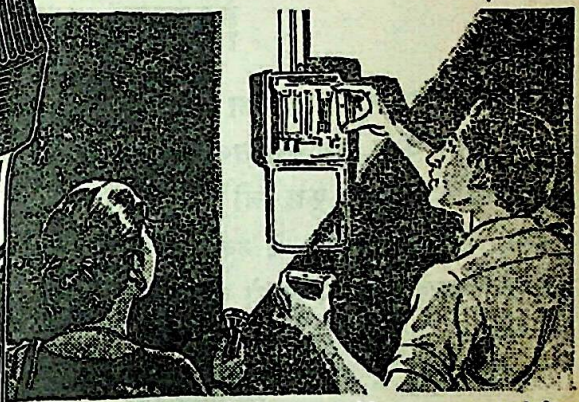

◄ एवरेडी
टाइप नं० ४५४१
(नीचे से भरा जाने वाला)
सिर्फ रु० ३.७५ पैसे

९५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक।
कर अलग से

ऐसे सैकड़ों अवसर आयेंगे जब आपका 'एवरेडी' टॉर्च आपके काम आयेगा। इसलिये इसे अपने करीब ही रखिये, कौन जाने कब ज़रूरत पड़ जाये।

★ सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।

★ और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।

★ इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।

★ 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।

★ विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे जगमग रोशनी देती हैं और सब से अधिक टिकती हैं।

★ आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

UNION CARBIDE

JMTUC 2:3B

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप चाहे कुछ भी काम क्यों न करते हों...

आपका काम
देश के लिए
किया गया काम है

आप, आपका काम, आपका जीवन सभी कुछ उस भारत के अभिन्न अंग हैं जो आज कुशलता तथा शक्ति बढ़ाने में जी जान से जुटा है। आपका काम चाहे कुछ भी क्यों न हो, वह पूरी मुस्तैदी व दक्षता से होना चाहिए। काम में रुकावट या देर न होने दें। विजय आप सरीखे लाखों-करोड़ों लोगों की कठोर मेहनत का ही फल होती है।

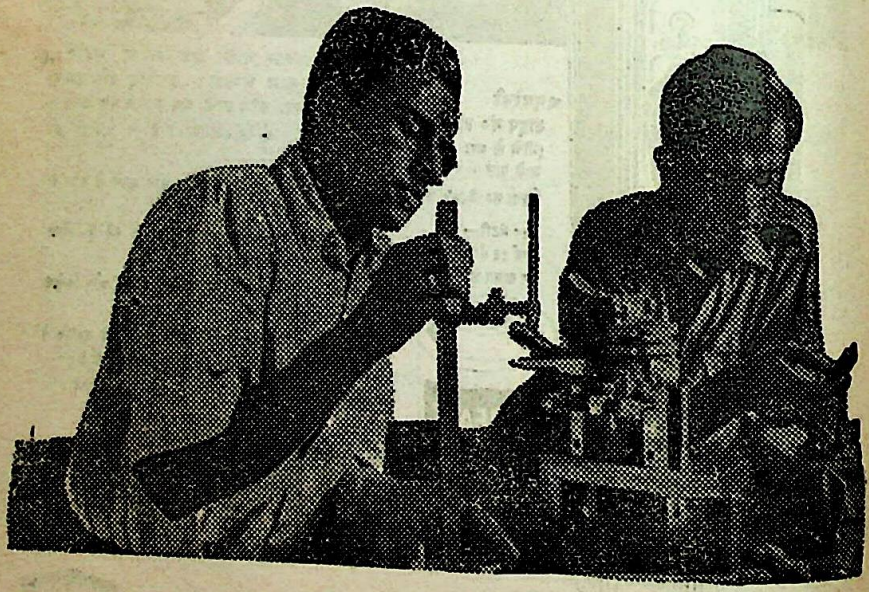

जी तोड़ मेहनत करें

भारत के विकास और देश की रक्षा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छपते छपते

हिन्दुस्तान मशीन टूल्स वॉच फैक्टरी का अद्वितीय रिकॉर्ड!

बंगलोर, ६ अप्रैल: पिछले वर्ष में एच एम टी वॉच फ़ैक्टरी ने १.८ करोड़ रुपयों के मूल्य की १,६५,०४८ घड़ियों का उत्पादन करके इस क्षेत्र में एक नया रिकार्ड कायम किया है। ठीक समय देने वाली इन घड़ियों का यंत्रकौशल्य दोष- रहित है और क़ीमत एक सौ रुपये से भी कम। हर मॉडल में १७ ज्वेल्स हैं, पूरा लीवर है, न टूटनेवाली मुख्य कमानी (मेनस्प्रिंग) है और चुंबक के आकर्षण का इन पर कोई असर नहीं होता।

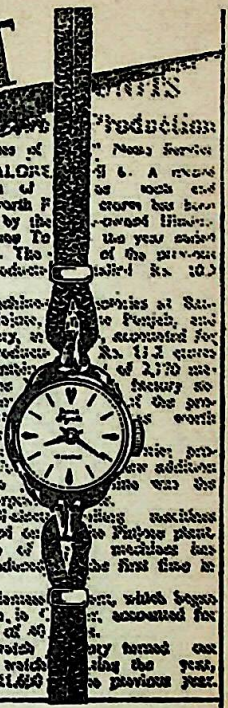

पुरुषों के लिए सिटिज़न -
सर्वत्र मिल रही है। गोल्ड प्लेटेड, स्टेनलेस स्टील बेक, १४½ लिग्नेस केस। सेण्टर सैकण्ड। पारा शॉक। धूलमिट्टी के प्रति सुरक्षित।
(रु. ६४.०० तथा स्थानीय टैक्स)

जनता ल्युमिनस और जनता
(दोनों जुलाई से मिलने लगेंगी) सारा स्टेनलेस स्टील, १४ लिग्नेस केस। सेण्टर सैकण्ड। पारा शॉक। जल के प्रति सुरक्षित। (रु. ६५.०० और रु. ८६.०० क्रमशः, तथा स्थानीय टैक्स)

स्त्रियों के लिए सुजाता-
गोल्ड प्लेटेड (सुनहले ज़ोल चढ़ी) ८ लिग्नेस केस, स्टेनलेस स्टील बेक, धूल मिट्टी के प्रति सुरक्षित
(रु. ६६.०० तथा स्थानीय टैक्स)-

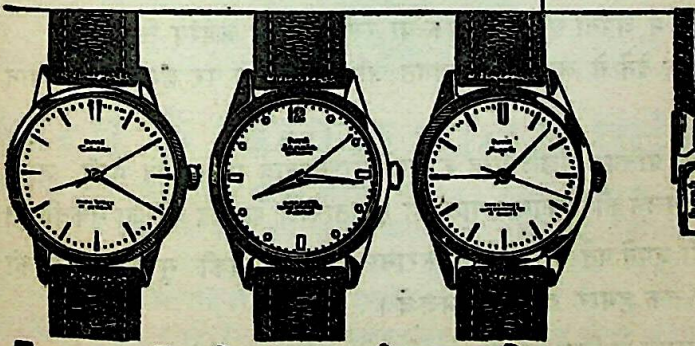

HMT हिन्दुस्तान मशीन टूल्स लि.

एचएमटी सेल्स सेंटरोंसे भारत भरमें प्राप्त :
डाकद्वारा भेजने के लिए (१०% बिक्री-कर और ज़ोड़िए तथा रु. १.१५ के डाक- टिकिट सहित)
यहाँ से प्राप्त कीजिए हिन्दुस्तान मशीन टूल्स वॉच फ़ैक्टरी जलाहली, बंगलोर-१३

HMT-4908 HIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप थके हों,

उदास हों,

तंग हों, तो

नये उत्साह,

नयी उमंग

के लिये

पढ़िय

एक : अंक

५० पैसे

वार्षिक :

पांच रुपये

५० पैसे

हास्य व्यंग से भरपूर रंगीला मासिक

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें ।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे ।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे । अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे ।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

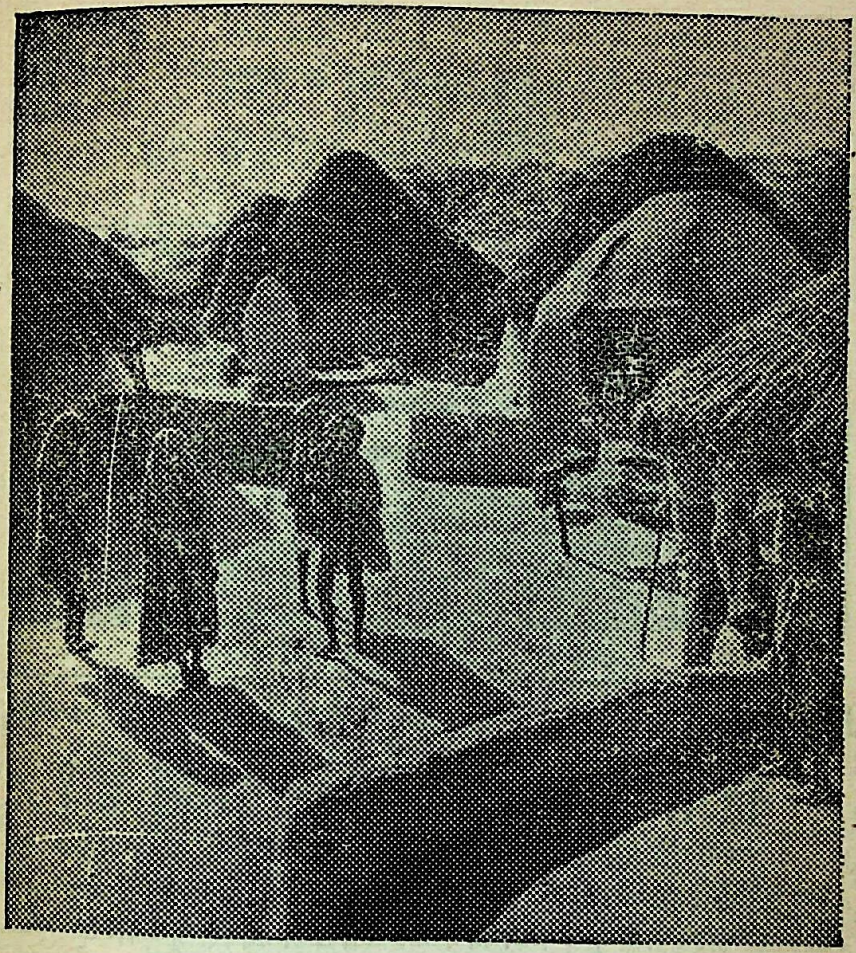

भारत के बिल्कुल भीतरी प्रदेश में

दस साल बीते...तब हमने पहला कदम रखा था। मगर लगता है जैसे कि बात कल की है। इस अवधि में हम काफी व्यस्त रहे, लोगों की, विभिन्न लोगों की मदद करते रहे। शहरों, गांवों, मैदानी इलाकों और वन-क्षेत्रों में...ऊंची अटारियों व झुकी झोंपड़ियों में हमने इनसे सम्पर्क स्थापित किया। अपने सहायक बैंकों के साथ हम अपने १८०० से ज्यादा दफ्तरों के जरिए लोगों की सेवा करते हैं। फिर भी, हमारे काम का यह श्रीगणेश ही है। आगे सारा युग पड़ा है। और आज स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के हम सभी लोग एक बार पुनः जनता व अपने देश की सेवा का संकल्प करते हैं।

बेहतरीन सेवा के लिये स्टेट बैंक

LPE-Alvars S 1 H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

A ZANDU Product

खायें या न खायें?

अवश्य खाइये और
जी भर कर खाइये
झन्डू की

अभयासन

टॅब्लेट

आपकी रक्षा करेगी

वायु, अपचन, अजीर्ण, अमलत्व तथा पेट के अन्य रोगों के लिए।

अपने घर में
हर समय
एक ट्यूब तैयार रखिये

ओवोयुटोलिन

गर्भाशय के रोगों के लिए टॉनिक

स्केबिजन

खाज व खुजली के लिए तुरन्त आराम पहुंचाने वाली दवा

झन्डू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि. बम्बई-२८

'नवनीत' के पुराने अंक चाहते हैं?

नवनीत के पाठक—खासकर वाचनालय और शिक्षण संस्थाएं—नवनीत के पुराने अंकों की फाइल रखना चाहते हैं। इसी विचार से हमने नवनीत के पुराने अंकों की फाइल सस्ते मूल्य में देने की योजना बनायी है। जनवरी-जून और जुलाई-दिसंबर के ६-६ अंकों की विषयानुसार सूची के साथ जिल्दें बना दी गयी हैं।

हमारे पास निम्नलिखित फाइलें हैं—१९५४ से १९५७ तथा १९६०, १९६१-६२ की पूरे वर्ष की फाइलें।

प्रत्येक छमाही जिल्द का मूल्य २.५० रुपये और पोस्टेज (रजिस्ट्री) १.५० रुपये इसके अलावा। ६ जिल्दे मंगवानेपर रेलवे पार्सलद्वारा भेजने का व्यय कार्यालय उठायेगा।

— नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ तारदेव, बंबई ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कच्चे फोड़े और गिल्टियाँ?

पुट्ठों में जकड़न? सूजन?

दर्द में जल्द आराम पाने के लिए

जॉन्सन्स*

बेलाडोना प्लास्टर

इस्तेमाल कीजिए!

जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर को आप आसानी से ज्यों का त्यों इस्तेमाल कर सकते हैं—न इसे गरम करने की झंझट और न पट्टी तैयार करने वगैरह की उलझन। और फिर, इसे लगाने के लिए कोई ख़ास चतुराई या योग्यता की भी ज़रूरत नहीं। बस, प्लास्टर के ऊपर से प्लास्टिक की परत हटाइए और दर्दवाले हिस्से पर प्लास्टर लगा दीजिए। प्लास्टर में बने छेदों के कारण चमड़ी को काफ़ी हवा मिलती है जिससे दर्दवाले हिस्से में ज्यादा आराम महसूस होता है।

घर में जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर हमेशा रखिए!

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ्रॉजेट स्ट्रीट, बम्बई-२६

* ट्रेडमार्क

JWT-JJ-3747

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप स्वप्न-सी लगती हैं-
आप स्वप्न-सी समझती हैं-

आप अपने को शक्ति सिल्क को मनोहरता से सजाईंये, और आपके स्वप्न सच हो जायेंगे। शक्ति सिल्क, जिसके डिज़ाइन इतने रंगबिरंगे और रचना इतनी शानदार है, जो आप ही को मोहित करने के लिये तैयार किये गये हैं। अपने आप को देखिये, शक्ति सिल्क में आप कैसी सुंदर और विचित्र लगती हैं।

Shakti Silks

पोदार उत्पादन

क्रेप, टेफेटा, साटीन, ब्रोकेड्स, निलोन और रेयान, सूटों और कमीजों के लिये "टेरिन", सूटों के लिये रेयान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

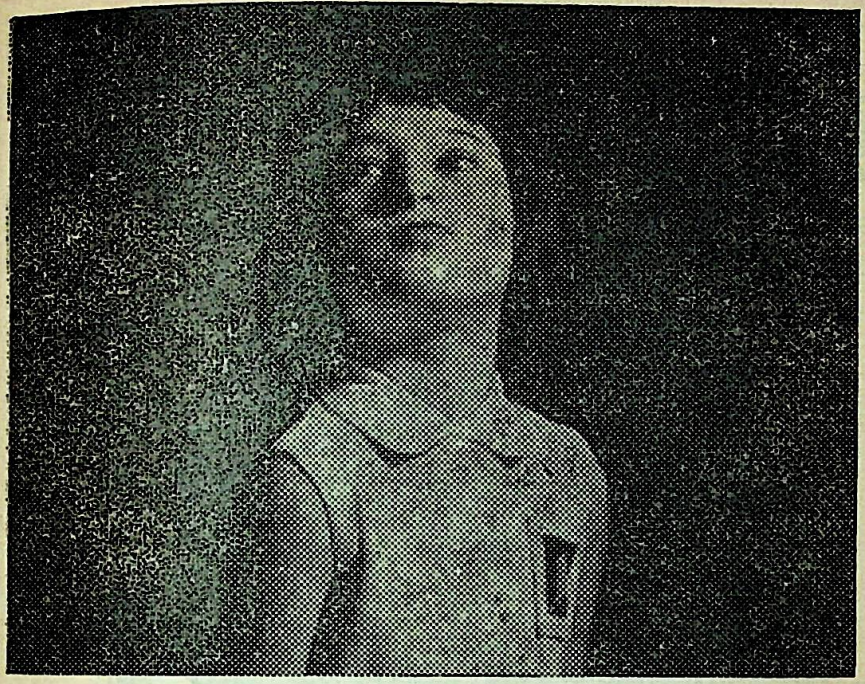

"मम्मी-डैडी अक्सर ग़लत काम करते हैं, लेकिन..."

"...इस बार उन्होंने जो किया सो बिल्कुल ठीक किया। दोनों ने बैंक ऑफ़ बरोडा में अपना-अपना खाता खुलवाया है। इतना ही नहीं, मुझे भी कहा है कि जब मैं १४ साल की हो जाऊँगी तो मेरे नाम का भी 'नाबालिगों का खाता' खुलवा देंगे! यह खाता मैं खुद चलाऊँगी और इसमें मुझे ४% के हिसाब से ब्याज भी मिलेगा। तब तक मैं अपने पैसे अपनी छोटी-सी डिबिया में भरती रहूँगी..."

"आजकल, जीवन के हर क्षेत्र के लोग बैंक ऑफ़ बरोडा में अपना खाता खोलते हैं क्योंकि इस बैंक का हर काम बढ़िया होता है। यहाँ लोग बड़े मिलनसार हैं; जो सलाह और मदद माँगिए, बड़ी खुशी से देते हैं। वे तो मुझ जैसी मामूली खातेदार की भी बड़ी क़द्र करते हैं!"

नाबालिगों का खाता

दि
बैंक ऑफ़ बरोडा लिमिटेड
(संस्थापित: सन् १९०८)
प्रधान कार्यालय: बड़ौदा

हमारी सभी सेवाओं की पूरी जानकारी देनेवाली पुस्तिका 'आइए, हम आपकी मदद करें...' मुफ़्त मिलती है। आज ही मँगवाइए।

IWT-BB-3602

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद है तो कोलगेट ट्रूथ पाउडर में भी वे सभी लाभ मिलेंगे...एक बिल्कुल नवीनतम वस्तु है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और लाल तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के टूथ क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG. 35 HCC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगस्त
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

पुनर्मिलन
कुंवर संग्रामसिंहजी के निजी संग्रह से
फोटो : एसए०च०एच०रिजवी

इस अंक में

१७ अंतर्मन के नाग
जाबालि
१८ सुशिक्षित की परख
ग्रेसन कर्क
२१ बाहुबली (पुस्तक-संक्षेप)
३७ लेखनीधारी योद्धा एहरेनबुर्ग
४१ पथ के प्रदीप
स्वामी शिवानंद
४२ इस चख-चख से कैसे बचूं ?
४४ टोव्या (पुस्तक-संक्षेप)
६० मेरी कल्पना का सुख
६१ मरीचिकाओं का सागर (अंग्रेजी कहानी)
पर्ल बक
८० संजीवनी और नश्तर (पुस्तक-संक्षेप)
जार्ज सावा
१०२ अब खाइये खुंभी का आटा
१०५ सूर्य का परिवार
१०९ विश्वशांति के अग्रदूत
११३ वनदेवता के पुत्र (पुस्तक-संक्षेप)
आर० एच० फेरी
१२९ वहशी ये कि हम ?
जवाहरलाल नेहरू
१४१ मुगलिया चांद की उतरती कला
अयोध्याप्रसाद गोयलीय
१५३ पुनर्जन्म की घटनाएं
सुरेशव्रत राय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगह की बचत
पैसे की बचत

स्टील ट्यूब का बना
फोल्डिंग फर्नीचर

निर्माता : क्रोमेलाइट (इण्डिया) प्रा० लि०
पी–३५, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगस्त

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९६५

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासि

अंतर्मन के नाग

हम सबके मन की तलैया में
न जाने कितने विषधर नाग
पलते हैं छिपकर
जो पाकर अवसर चुपचाप
डस लेते हैं;
जीवन में कितनी ही बार
हम मर लेते हैं।
बचते हैं केवल तभी
जब सुनकर पुकार
प्रभु स्वयं लेते हैं अवतार
आस्था बनकर
मन की गहराई में;
और संस्कारों की शत-शत परतों में
छिपे हुए पापों का,
विषधर सांपों का
करते हैं मर्दन
अंतर्मन की गहरी तलैया में।

—जाबालि

कालिय-मर्दन
एक दक्षिण भारतीय कांस्य प्रतिमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुशिक्षित की परख

कोलंबिया विश्वविद्यालय (अमरीका) के कुलपति ग्रेसन कर्क का एक विचारोत्तेजक लेख

शिक्षित व्यक्ति की पहली जिम्मेदारी मैं यह समझता हूं—उसका प्रयत्न होना चाहिये कि वह जो कुछ भी बोले या लिखे, वह स्पष्ट और सुनिश्चित हो।

विचार-प्रक्रिया का अभिव्यक्ति से बड़ा घनिष्ठ संबंध है। स्पष्ट विचार और स्पष्ट अभिव्यक्ति, इन दोनों का दामन-चोली का साथ है—दोनों हमसफर हैं।

प्रायः विद्यार्थी अभिव्यक्ति की समुचित शिक्षा पाये बिना ही कालेज की डिग्रियां हासिल कर लेते हैं। अभिव्यक्ति का अनुशासन शिक्षित मनुष्य का पहला हथियार है। जो स्नातक अपनी मातृभाषा को सौष्ठव, शुद्धता और स्पष्टता के साथ बोल-लिख न सके, वह स्नातक उपाधि का अधिकारी नहीं है। मेरे खयाल से वह शिक्षित व्यक्ति नहीं है।

अशिक्षित आदमी आम तौर पर बातचीत में लापरवाह होता है। यदि उससे किसी वस्तु का वर्णन करने को कहा जाये, तो वह कहेगा—"शायद वह कुछ नीली-सी है।" इस तरह वह बता रहा होता है कि उसने उस वस्तु को ठीक ध्यान से नहीं देखा है। प्रायः वह "कुछ-कुछ ऐसा" अथवा "मेरा मतलब आप जानते ही हैं" आदि मुहावरों से काम चलाता है। शब्दों की यह अस्पष्टता विचारों और निरीक्षण की अनिश्चितता की द्योतक है।

शुद्धता और पंडिताऊपन एक ही चीज नहीं हैं। बोलचाल की भाषा के नाम पर आजकल लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापनों में जिस प्रकार की बेमुहावरा, ग्राम्य और फूहड़ भाषा लिखी जा रही है, उसके चक्कर में न पड़ना हमें सीखना चाहिये। बल्कि हमें भाषा की शब्द-समृद्धि पर गर्व होना चाहिये और उससे श्रेष्ठ शब्द-रत्न लेकर अपनी भाषा का शृंगार करना चाहिये।

किंतु हमें यह भी जान लेना चाहिये कि एकदम पांडित्यपूर्ण भाषा भी एक तरह की जंगली बोली है। साथी विद्वानों के आक्षेपों से बचने के लिए प्रायः अनेक विद्वान अपने वक्तव्य को 'अगर-मगर' से इस तरह ढंक देते हैं कि उसमें सत्य का कोई कण सचमुच हो, तो भी वह भूसे के ढेर में पड़ी सुई की तरह खो जाता है।

[२]

उच्च शिक्षा तभी सार्थक है, जब मनुष्य को उससे कुछ आदर्श व आस्थाएं प्राप्त हों और उनके लिए लड़ने का साहस मिले। आस्थाएं व्यक्ति में तभी पनपती हैं, जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसमें सही और गलत, तुच्छ और महत्व-पूर्ण, सुंदर और असुंदर को समझने का विवेक पैदा हो जाये। दूसरे शब्दों में, शिक्षित व्यक्ति परिपक्व और परिमार्जित सुरुचि से संपन्न होता है; और नैतिक, सामाजिक एवं सौंदर्यसंबंधी निर्णय करते समय सुरुचि ही उसका मापदंड होती है।

पुराने जमाने में रीति-रिवाज, परंपराएं अथवा धर्मग्रंथों के वचन मापदंड का काम देते थे। समाज में क्या चीज मान्य है और क्या वर्जित, यह सीखकर लड़के आम तौर पर उसी लकीर पर चल पड़ते थे। परंतु आज हवा बदल चुकी है।

परिवार और धर्म, जो कभी सामाजिक और नैतिक शिक्षा के परंपरागत साधन थे, आज नयी पीढ़ी को पहले-जैसे प्रभावित नहीं करते हैं। और अगर यह सच है, तो स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ती है। किंतु परिवार और धर्म के बजाय, स्कूल और विश्वविद्यालय चरित्रनिर्माण की शिक्षा दें, यह अटपटा भी है, अप्रिय भी।

अब तो अधिकांश विद्यालय सत्य की खोज को शिक्षा का लक्ष्य मानते हैं। वे कहते हैं कि आदिम युग से आज तक की मानव-जाति की आस्थाओं और विचारों को विद्यार्थी के सामने रख देना उनका काम है; उनमें से सत्य की खोज विद्यार्थी स्वयं करें। इस तरह नैतिक निर्णय की जिम्मेदारी जान-बूझकर विद्यार्थी पर ही छोड़ दी जाती है।

मगर शिक्षणालय इतना तो बता ही सकते हैं—और यह उनका फर्ज भी है—कि सभ्य समाज ने कुछ विशेष सामाजिक और नैतिक आस्थाएं क्यों ग्रहण कीं? यों भी हर समाज में व्यक्ति के आचरण पर कुछ तो प्रतिबंध होते ही हैं।

अतः उन्हें चाहिये कि वे विद्यार्थी में उस भावना का विकास करें, जिसे मैंने 'परिपक्व सुरुचि' कहा है। इससे वे सामाजिक और नैतिक आचरण के नियमों का पालन स्वेच्छापूर्वक और जिम्मेदारी के साथ करेंगे।

यदि शिक्षणालय इसमें सफल हुए, तो आज की नैतिक व सामाजिक अव्यवस्था दूर हो जायेगी। यदि वे सफल नहीं हुए, तो फिर परमात्मा ही मालिक है। कारण, आदर्शहीन समाज अनुशासनहीन और अराजकतापूर्ण समाज होगा; और वह अन्य अनुशासनबद्ध और संगठित समुदायों के साथ जीवन-संघर्ष में टिक नहीं सकेगा।

[३]

शिक्षित व्यक्ति का तीसरा गुण यह है कि वह अपने समाज के स्वरूप और समस्याओं को समझने की कोशिश ईमानदारी और खुले दिल से करता है। यही नहीं, वह सद्भावपूर्वक यह भी समझने का यत्न करता है कि दूसरे समाज किन-किन बातों में उसके समाज से भिन्न हैं।

राष्ट्रभक्ति हममें अपनी हर चीज को श्रेष्ठ समझने और दूसरों को दयनीय व तुच्छ समझने की आदत डालती है। अशिक्षित आदमी समझता है कि उसी का समाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वश्रेष्ठ है और संसार की उन्नति तभी संभव है, जब बाकी सब समाज उसके समाज की प्रथाओं व पद्धतियों को अपना लें। यह बात कभी उसके दिमाग में पैठती ही नहीं कि हर समाज का विकास अपनी भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुसार होता है और सामाजिक परिवर्तन आनन-फानन में नहीं हो जाते, उनकी गति बड़ी धीमी होती है। शिक्षित आदमी ये सब बातें जानता-समझता है।

[४]

शिक्षित आदमी की चौथी विशेषता यह है कि वह दुनिया की समस्याओं का साहस और आशा के साथ सामना करता है; निराश होकर मुंह नहीं मोड़ लेता।

आज हम चारों तरफ यह चर्चा सुनते हैं कि हमारी नयी पीढ़ी भयग्रस्त है। लोग कहते हैं कि परीक्षा में चोरी, बढ़ती हुई यौन-उच्छृंखलता और अपराध-वृत्ति—ये सब इसी भय के परिणाम हैं। क्यों तो कोई 'कैरियर' बनाने की योजना बनाये और क्यों उस पर चले और क्यों नैतिकता की परंपराओं को माने, जबकि कल मानव-सभ्यता अणुबम से ध्वस्त हो जानेवाली है?

सामाजिक मनोविज्ञानवेत्ताओं से ऐसी व्याख्याएं मैं बहुत सुन चुका हूं। ऐसी बहुत-सी गंभीर किताबें भी पढ़ चुका हूं, जिनमें बताया गया है कि किस प्रकार इस यंत्र-युग में मनुष्य रोबो (यंत्रमानव) बन गया है।

बेशक हमारी पीढ़ी ही पहली पीढ़ी है, जिसे इतने व्यापक विनाश के खतरे का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन मनुष्य सदा भय का सामना करते हुए जिया है, पर उसने भय के आगे कभी घुटने नहीं टेके। अणुबम का भय वस्तुतः भय उतना नहीं, जितना कि बहाना। इसका उपयोग वही करते हैं, जो अन्य कारणों से जीवन की समस्याओं से लोहा नहीं लेना चाहते।

यंत्र-युग की विभीषिका के संबंध में भी मेरे विचार लगभग यही हैं। भौतिक दृष्टि से आज मनुष्य पिछले युगों की तुलना में बेहतर हालत में है। भौतिक दृष्टि से पीछे हटकर देखें, तो भी आज के लोग पिछले जमाने के लोगों से अधिक संपन्न हैं। आज संस्कृति की निधियां आम आदमी को घर-द्वार पर हासिल हैं। रेकार्डों के रूप में संगीत की अमूल्य संपदा, इतने सस्ते दामों में अच्छी-अच्छी किताबें, यात्रा और मनोरंजन की ऐसी सुविधाएं, संसार के घटना-चक्र और गतिविधियों की ऐसी जानकारी, हमारे पिताओं को सुलभ नहीं थी। इसे जो लोग मशीन की गुलामी कहते हैं, उन्हें अतीत की असलियत का ज्ञान नहीं है।

अतः आज हर शिक्षित व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि वह इस दुनिया को और भी अच्छा बनाने की कोशिश करे, आधुनिक जीवन के खतरों और दोषों को कम करने का प्रयत्न करे। (खतरे और दोष तो हर युग में रहेंगे।) और उसे अधिकार है कि आधुनिक सभ्यता की उपलब्धियों पर उचित गर्व करे और साहस एवं दृढ़ निश्चय के साथ आशावान होकर दुनिया में जिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहुबली

कन्नड के आदिकवि पंप के महाकाव्य 'आदिपुराण' का एक खंड

CC-0. Bhavan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदितीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भगवान बाहुबली अथवा गोम्मटेश्वर, जिनकी श्रवणबेलगोल-स्थित ५६ फुट ऊंची प्रस्तर-प्रतिमा भारतीय शिल्प-कला की शक्ति और भव्यता का बेजोड़ उदाहरण है, जैनों के त्रेसठ शलाका-पुरुषों में से एक हैं। इससे भी बढ़कर, वे इस महान आध्यात्मिक सत्य के संदेशवाहक हैं कि वैराग्य अपूर्ण आशाओं से मन मसोसकर मुंह मोड़ना नहीं है, अपितु कामनापूर्ति के समस्त साधनों की उपस्थिति में उनकी तुच्छता को अनुभव कर लेना वैराग्य है।..... भगवान बाहुबली की यह पुण्यकथा महाकवि पंप के 'आदिपुराण' के आधार पर कन्नड के विख्यात विद्वान प्रा० एल० गुंडप्पा ने प्रस्तुत की है।

परम श्रेष्ठ जिन-वाणी ही सरस्वती है—उससे भिन्न कोई स्त्रीरूप सरस्वती नहीं है। जो जिन-वाणी को श्रद्धापूर्वक पढ़ते, सुनते और पूजते हैं, उन्हें वह निरंतर सुख प्रदान करती है। मैं उसी जिन-वाणी रूप सरस्वती से प्रार्थना करता हूं – "हे मां, मेरी वाणी में सौंदर्य भर दो।"

–'आदिपुराण' का मंगलश्लोक

इस अवसर्पिणी के आरंभ होने के पूर्व, इस संसार में सर्वत्र सुख का साम्राज्य था। मनुष्यों को किसी भी वस्तु के लिए परिश्रम नहीं करना पड़ता था। प्रकाश, निवास, अन्न-वस्त्र, बर्तन-आभूषण आदि सब वस्तुएं सबको चाहने मात्र से कल्पवृक्षों से प्राप्त हो जाती थीं। लोग बड़े आनंद से रहते थे।

फिर काल ने पलटा खाया। अधर्म बढ़ता गया। एक-एक करके कल्पवृक्ष लोप होते गये। संसार की दशा बिगड़ने लगी, चिंता और व्याकुलता बढ़ने लगी। तब समय-समय पर कुछ महापुरुष उत्पन्न हुए। ये जन-सामान्य को अपने सदुपदेशों द्वारा सुखप्राप्ति का मार्ग बताकर उसकी चिंता और विकलता को कम किया करते थे। ये महापुरुष 'मनु' कहलाये। ये संख्या में चौदह थे।

नाभिराज चौदहवें मनु थे। वे अयोध्या में राज्य करते थे। मरुदेवी उनकी महारानी थी। इस दंपति के पुण्योदय से आदि तीर्थंकर उनके घर पुत्र रूप में जन्मे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दिव्य शिशु के जन्म लेते ही देवलोक में इंद्रासन डोल उठा; समस्त देवी-देवताओं के सिर अपने आप झुक गये। परम प्रभु के अवतीर्ण होने की बात देवताओं को अपने दिव्य ज्ञान द्वारा मालूम हो गयी। परम आनंद में भरकर इंद्र के नेतृत्व में वे अयोध्या में उतरे।

शचीदेवी अदृश्य होकर सौरगृह में प्रविष्ट हुई। उसने मरुदेवी को मायानिद्रा में सुला दिया और एक मायाशिशु को उसकी बगल में लिटाकर शिशु तीर्थंकर को ले आयी। इंद्रादि देवता उस दिव्य शिशु को ऐरावत पर बैठाकर मंदर पर्वत ले गये और क्षीर-सागर से स्वर्ण-कलशों में लाये गये दूध से उसे स्नान कराया। फिर उसे वापस लाकर अयोध्या के राजप्रासाद में उसकी मां की बगल में सुला दिया।

परम प्रभु को अपने पुत्र के रूप में जन्मा हुआ जानकर नाभिराज और मरुदेवी धन्य हो उठे। इंद्र की सम्मति से उन्होंने बच्चे का नाम 'ऋषभ' रखा। उसका दूसरा नाम पड़ा – 'पुरुदेव'। नामकरण उत्सव के बाद देवताओं ने बच्चे के साथ खेलने के लिए कुछ देवकुमारों को राजमहल में छोड़कर स्वर्ग को प्रस्थान किया।

देवताओं का आनंदोत्सव

देव-कुमारों के संग हंसते, खेलते-कूदते ऋषभ ने क्रमेण बाल्यकाल और किशोरावस्था को लांघकर यौवन में प्रवेश किया। उसका रूप अलौकिक था, सबको मुग्ध कर लेनेवाला था। किंतु उसका मन सदा मुक्ति-साधना में ही रमता था; संसार और उसके सुख-भोगों में उसकी तनिक भी आसक्ति नहीं थी। इसलिए उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखते हुए पिता नाभिराज को बहुत संकोच हुआ। अनासक्त होते हुए भी, माता-पिता का मन रखने तथा लोकानुग्रह के विचार से ही ऋषभ ने विवाह-सूत्र में बंधना स्वीकार किया।

यशस्वती और सुनंदा नामक दो कन्याओं के साथ ऋषभ का विवाह संपन्न हुआ। रूप, वय, गुण, शील सभी में ये दोनों अपने पति के सर्वथा अनुरूप पत्नियां थीं। अपने प्रेम और विमल चरित्र से उन्होंने ऋषभ का मन जीत लिया। उनका गृह-जीवन समस्त संसार के लिए आदर्श बन गया।

इस तरह अनेक सुखमय वर्ष बीत जाने पर, एक रात यशस्वती ने स्वप्न में सूर्य, चंद्र, मेरु पर्वत, समुद्र और कमलासीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी को देखा। जब उसने ऋषभदेव को इस स्वप्न की बात बतायी, तो वे बोले– "रानी, समस्त भारतभूमि पर एकच्छत्र शासन करनेवाला पुत्र तुम्हें उत्पन्न होगा। दूसरी भी अनेक पुण्यशाली संतानों की तुम मां बनोगी।"

यशस्वती के आनंद का ओर-छोर नहीं था। कालक्रम से उसने गर्भ धारण किया। अब उसे प्रासाद के प्रमद-वनों की अपेक्षा हिमवान और विजयार्ध पर्वतों पर विहार करने की इच्छा होती थी; स्नान-कुंडों में नहीं, महासागरों में जलक्रीड़ा करने की कामना होती थी। अब उसका मन सरस-ललित कथाओं से उचटकर, अप्रतिम शूर-वीरों की साहस गाथाओं में रमता था। पिंजरे के तोता-मैना से मुंह मोड़कर, अब वह सिंहशावक मंगाकर उनका खेल चाव से देखा करती थी; गीत-वाद्यों के स्थान पर धनुष की टंकार सुना करती थी। अद्भुत थीं उसकी दोहद-कामनाएं!

नौ मास पूरे हुए। शुभ नक्षत्र और शुभ मुहूर्त में यशस्वती ने मनुकुल के तिलक-सदृश एक सुंदर बालक को जन्म दिया। उस समय चारों ओर शीतल पवन बहने लगी। आकाश यों चमक उठा, जैसे दूध से धोया गया हो। दिशाएं आनंद से मुस्कराने लगीं। राजमहल में तो हर्ष और संभ्रम की कोई सीमा ही न थी। रंग-बिरंगी पताकाएं हवा में नाच रही थीं। रत्न-जटित तोरणों की कांति नेत्रों को चुंधिया रही थी। भेरी की गंभीर ध्वनि से दिशाएं गूंज रही थीं। नाभिराज तथा अन्य कुलवृद्धों ने जातकर्म आदि संस्कार यथाविधि संपन्न कराये। बच्चे का नाम रखा गया – भरत।

कितना कांतिमय था नन्हे भरत का मुखड़ा! उसकी मुस्कान पर दादा-दादी और माता-पिता लुट-लुट जाते थे। उसे गोद में लेने और खिलाने के लिए अंत:पुर की औरतों में होड़-सी लगी रहती थी। हर क्षण उसे उठाने के लिए दो नयी बाहें फैली रहती थीं, जैसे हर पग पर नदी का आलिंगन करने के लिए दो नये कगार आगे आ जाते हैं। उसकी मुस्कान, उसकी किलकारी, उसकी तोतली बोली, उसकी डगमगाती चाल–यही अंत:पुर में सबकी चर्चा के विषय थे।

समय बीतता गया। यथाकाल अन्नप्राशन, चूडाकर्म, अक्षराभ्यास और उपनयन आदि संपन्न हुए। बच्चा दस-ग्यारह वर्ष का हो गया। निपट निराले होते थे उसके खेल। किसी नौकर को हाथी बनाकर वह उसकी पीठ पर चढ़ बैठता और तर्जनी-रूपी अंकुश से उसे हांकता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमद-वन में प्रवेश कर, वहां बने हुए क्रीड़ा-पर्वत पर चढ़ाई कर देता, जैसे वह कोई अजेय गिरिदुर्ग हो ; घने कदली-कुंजों को विकट वनदुर्ग मानकर उजाड़ डालता; कमल-मंडित छिछली पुष्करिणियों को अगाध जलदुर्ग समझकर पैरों से मथ देता।

वह श्वेतकमलों को राजछत्र की तरह अपने सिर पर छवाकर आनंदित होता था; अशोक के कोमल लाल पत्तों को पताका की तरह फहराकर प्रमुदित होता था; हम-जोलियों से अपनी जय बुलवाता हुआ लता-मंडप के शिलासन पर ठाट से बैठकर "लो तुम्हें यह प्रदेश दिया; लो तुम्हें यह राज्य दिया" कहते हुए, समस्त भूमंडल को अपने मित्रों के बीच बांटा करता था।

इन्हीं खेलों में बचपन बीत गया और तारुण्य ने भरत के शरीर में शरण ली। पिता जैसा ही रूप, पिता जैसी ही चाल व हाव-भाव, पिता जैसी ही मीठी बोली, पिता जैसी ही तीव्र बुद्धि और विमल शील-संपदा—जैसे पिता के ही सांचे में ढालकर उसका निर्माण किया गया था!

× × ×

भरत के जन्म के कुछ समय पश्चात् छोटी राजवधू सुनंदा भी गर्भवती हुई। तब उसे दिग्गजों से होड़ करनेवाले मदगजों की भिड़ंत और विश्वविख्यात पहलवानों के दंगल देखने का दोहद होता था। ये लक्षण बताते थे कि उसके गर्भ में स्थित बालक अप्रतिम बलशाली होगा।

दिन पूरे होते ही जैसे मनुवंश के यश और जय का युगपत् उदय हुआ हो, इस तरह एक स्वस्थ-सुंदर बालक ने जन्म लिया। राजप्रासाद में तो शहनाइयां बजीं ही, आकाश में भी दिव्य मंगल-वाद्य मुखरित हो उठे। नगरवासियों ने तो तोरण और बंदनवारों से साकेत नगर को सजाया ही, देवलोक से भी सुमन-वृष्टि हुई।

बच्चे का नाम 'बाहुबली' रखा गया; और बहुत छोटी उम्र में ही बालक ने सिद्ध कर दिया कि उसका नाम सर्वथा अन्वर्थक है। साथी बालकों से वह खूब मल्लयुद्ध किया करता था; राजमहल के अखाड़े के पहलवानों को ताल ठोंककर कुश्ती के लिए ललकारता रहता था। बाहुबल प्रदर्शित करने में बहुत आनंद आता था उसे।

तरुणाई फूटने के साथ बाहुबली के रूप ने भी पराक्रम दिखाना शुरू कर दिया। खिले कमल-सा प्रफुल्लित मुखड़ा, कमल-दल-सी कमनीय दीर्घायत आंखें, मेघ की सी मंद्र-गंभीर कंठध्वनि, काले घने बाल, विशाल वक्षस्थल, घुटनों तक लटकती हुई लंबी भुजाएं, चिकनी गोल-गोल जंघाएं, भरा हुआ गठीला शरीर, कुल-पर्वतों जैसा कद—बाहुबली के रूप-वैभव को जो भी एक बार देख लेता था, स्वप्न में भी उसकी आंखों के सामने वही धीर-मनोहर मूर्ति छायी रहती थी। और इसमें आश्चर्य भी क्या! बाहुबली उस युग का कामदेव था न! *

भरत के बाद, यशस्वती ने और निन्या-

* जैन पुराणों के अनुसार चौबीस कामदेव हुए हैं। बाहुबली इनमें प्रथम थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मी बेटों तथा एक बेटी को जन्म दिया। बाहुबली के पश्चात् सुनंदा के केवल एक बेटी हुई। यशस्वती की बेटी थी ब्राह्मी और सुनंदा की सौंदरी। पिता ऋषभ का प्यार इन बच्चों पर उमड़ पड़ा। उन्होंने अपनी ही कल्पना से सब पुत्र-पुत्रियों के लिए उनके रूप एवं स्वभाव के अनुसार सुंदर-सुंदर आभूषण रचे, जिन्हें धारण कर वे बच्चे ऐसे दमक उठे, जैसे ज्योति-कणों से निर्माण किये गये हों।

बच्चों के विद्याध्ययन की भी ऋषभ को चिंता हुई। उन्होंने बड़ी बेटी ब्राह्मी को लिपियां और छोटी बेटी सौंदरी को गणित सिखाया; साथ ही समस्त वाङ्मय और कलाओं का मर्मज्ञ भी बनाया। इस तरह पहले पुत्रियों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध कर, बाद में उन्होंने पुत्रों के विद्याभ्यास पर ध्यान दिया।

अप्सरा नीलांजना की नृत्यभंगिमा

भरत को उन्होंने अर्थ-शास्त्र और भरत-नाट्यशास्त्र पढ़ाया। बाहुबली को काम-तंत्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, हस्ति-तंत्र, अश्वतंत्र और रत्न-परीक्षा में पारंगत बनाया। शेष पुत्रों को गांधर्वशास्त्र, चित्रांकन आदि ललित कलाओं तथा वास्तुशिल्प आदि जीवनोपयोगी विद्याओं का उपदेश दिया। मनुवंश के इन विनय-संपन्न कुमारों की बुद्धियों में बसकर ये विद्या चमक उठीं।

तब तक वह 'भोगभूमि' अवस्था समाप्त हो चुकी थी, जिसमें बिना श्रम किये ही आजीविका चल सकती थी। पसीना बहाकर कमाने-खाने की 'कर्मभूमि' अवस्था में पहुंची थी। अपने आप उगकर भरपूर फल और फल देनेवाली वनस्पतियां क्षीणशक्ति हो गयी थीं। रोग भी प्रकट होने लगे थे। सब प्रजाजन अपनी कष्ट-कथा सुनाने के लिए नाभिराज की सलाह से ऋषभदेव के पास आये।

ऋषभ ने उन्हें अभयदान दिया। इसके बाद उन्होंने जलवायु और मिट्टी के गुण-दोषों के अनुसार धरती को कई भागों में बांटा और उन प्रदेशों में जीवन-यापन के लिए क्या-क्या किया जा सकता है, यह समझाया। इसी उद्देश्य से उन्होंने राज्य-शासन, कर-संचय और लोक-हित-साधन की नीतियों का भी उपदेश किया और जनता की आजीविका के लिए लेखन, कृषिकर्म, वाणिज्य, व्यवसाय, हस्त-कौशल, पशुपालन, सेवा-वृत्ति आदि पेशों की सृष्टि की। समस्त प्रजा को उन्होंने क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन वर्गों में बांटा और उनके कर्तव्य निश्चित करके उनसे कहा कि यदि यह सब व्यवस्था यथानियम चलती रहे, तो अवनति के इस काल में भी सुख से जिया जा सकता है। इस प्रकार ऋषभ द्वारा नियम-व्यवस्था की जाने के कारण ही वह युग 'कृतयुग' कहलाया।

तभी नाभिराज ने अपने पुत्र ऋषभ का राजतिलक करके स्वयं राज्य-भार से मुक्ति पायी। राजा ऋषभ ने अपनी बनायी हुई व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने एवं नियम-भंग करनेवालों को दंड देने के लिए विभिन्न भूभागों में अलग-अलग राजकुलों की स्थापना की। इस सुव्यवस्था और सुशासन के कारण सर्वत्र शांति थी, सुभिक्ष था। और ऋषभ ने प्राणप्यारी पत्नियों, विद्या-विनय-संपन्न संतान और अनुरक्त एवं तृप्त प्रजा-जनों को देखकर आनंदित होते हुए अनेक वर्ष तक राज्य किया।

एक दिन वे दरबार में बैठे हुए थे कि देवताओं समेत इंद्र वहां आ पहुंचा। अप्सराओं के नृत्य द्वारा परम प्रभु ऋषभ को आनंदित करने की इच्छा उसने अभिव्यक्त की। समस्त कामनाओं से अतीत होते हुए भी, इंद्र का मनोरथ पूर्ण करने के लिए ही ऋषभदेव ने अनुमति दे दी। दिव्य वाद्यों और देवस्त्रियों के सुमधुर संगीत के बीच नीलांजना नाम की अप्सरा का नृत्य आरंभ हुआ। उसके रूप लावण्य, विलास-विभ्रम, अंग-विन्यास और भावाभिनय पर राजसभा चमत्कृत रह गयी। सर्वथा निःसंग-

ऋषभ का पंचमुष्टि लोच

निर्लेप ऋषभ भी मुग्ध होकर देखते रहे।

तभी नीलांजना का आयुष्य समाप्त हो गया और वह बिजली की तरह अकस्मात् अदृश्य हो गयी। रसभंग न हो जाये, इस आशंका से इंद्र ने तत्क्षण सर्वथा नीलांजना के जैसी ही दूसरी नर्तकी की सृष्टि करके नृत्य को जारी रखा। वहां एकत्र सुर, नर, गंधर्व कोई इस भेद को न जान सके।

किंतु ऋषभदेव से यह बात छिपी न रही। वे सोचने लगे—"काया भी कैसी अनित्य वस्तु है!" संसार की अनित्यता की उन्हें तीव्र अनुभूति हुई। "मुझे ये भोग-सुख नहीं चाहिये," यह निश्चय कर, वे मोक्ष साधने का संकल्प लिये तपोवन जाने को तत्पर हुए।

भरत को बुलाकर उन्होंने उसका राजतिलक किया और उसे राज-पदवी दी। बाहुबली को युवराज-पद पर बैठाया; और यह व्यवस्था की कि भरत अयोध्या में तथा बाहुबली पौदनपुर में राज्य करें। दूसरे पुत्रों को भी पृथ्वी के विभिन्न राज्य बांटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और समस्त बंधु-बांधवों और सेवक-परिचारकों को समुचित उपहार व पुरस्कार देकर माता-पिता की आज्ञा ले तप के लिए चल पड़े।

देवताओं ने आकर उन्हें मंगल-स्नान कराया और एक रत्न-जटित पालकी में बैठाया। मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजाओं ने सात पग तक यह पालकी अपने कंधों पर ढोयी। फिर देवता उसे उठाकर आकाश-मार्ग से चलकर राजधानी के बाहर एक उपवन में पहुंचे, जहां ऋषभदेव ने शास्त्रीय विधि से दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने जो केश काटकर फेंके, देवताओं ने उन्हें ले जाकर क्षीर-सागर में डाला।

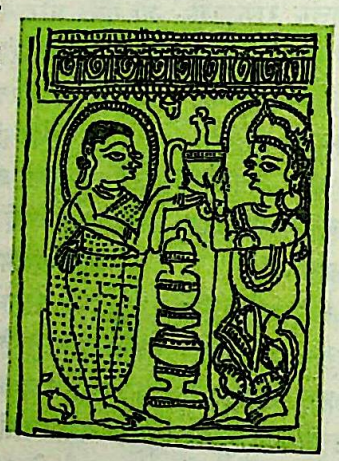

राजा श्रेयांस ने ऋषभ को इक्षुरस समर्पित किया

ऋषभदेव ने मौन और अनशन आरंभ किया। फिर छः मास तक हाथ ऊपर न उठाने का संकल्प करव प्रतिमायोग में खड़े रहे। बड़े-बड़े विघ्न आये; किंतु उनका ध्यान न टूटा। उनके तप की वृद्धि होने के साथ-साथ वन के समस्त जीव-जंतु अपना सहज वर-भाव छोड़कर परस्पर प्रेमपूर्वक रहने लगे।

छः महीने का उग्र तप पूरा करके जब ऋषभ 'चर्या' के लिए निकले, तो लोगों को सूझा नहीं कि परम प्रभु को वे कौन-सी वस्तु अर्पित करें। वे उत्तमोत्तम वस्त्र और भोज्य पदार्थ लेकर आये। किंतु ऋषभ ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया और आगे बढ़ गये। अंत में हस्तिनावती के राजा श्रेयांस ने भक्तिपूर्वक ताजा गन्ने का रस उन्हें अर्पित किया। ऋषभ रस को पीकर तृप्त हुए।

कई वर्ष तक घूमकर अंत में वे पुरिमतालपुर नगर के बाहर एक उद्यान में घोर तप में प्रवृत्त हुए। तप से उनके समस्त कर्मबीज दग्ध हो गये; जन्म-मरण के चक्र से उन्हें बांधनेवाली रस्सियां टूट गयीं। उन्हें मुक्त आत्मा को 'केवल-ज्ञान' हुआ। ऋषभदेव 'जिन' हो गये, आदि तीर्थंकर बन गये।

देवताओं ने स्वर्ग से भूलोक आकर आनंदोत्सव मनाया। इंद्र की आज्ञा से कुवेर ने जिन के धर्मोपदेश के लिए समवसरण मंडप तैयार किया, जिसमें देव-दानव ही नहीं, समस्त पशु-पक्षी आदि प्राणियों के बैठने की व्यवस्था थी। तीर्थंकर के वचनामृत का पान करने के लिए समस्त जीव उस विशाल मंडप में एकत्र हुए।

परिमतालपुर का राजा वृषभसेन भी अर्हंत की पूजा करने के लिए वहां आया और भगवान के मंगलमय मुख-मंडल को देखते ही उसके मन में वैराग्य जाग उठा। तत्काल उसने दीक्षा ले ली और वह पहला गणधर बना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उधर अयोध्या में भरत राजसभा में बैठा हुआ था कि राजपुरोहित ने आकर भगवान ऋषभ को 'केवल-ज्ञान' होने का शुभ समाचार दिया। तभी शस्त्राध्यक्ष ने आकर बताया कि शस्त्रागार में 'चक्ररत्न' और अन्य तेरह रत्न प्रकट हुए हैं। उसी समय अंत:पुर से कंचुकी ने आकर पटरानी के पुत्र उत्पन्न होने की सुखद सूचना दी।

क्षण-भर के लिए भरत सोच में पड़ गया कि इन तीन शुभ समाचारों में से किस समाचार पर पहले आनंदोत्सव मनाया जाये। सोच-विचारकर वह इस निर्णय पर पहुंचा कि धर्म, अर्थ, काम इन तीन पुरुषार्थों में धर्म ही प्रधान है, धर्म का फल अर्थ है और उस फल का रस काम है; अत: सर्वप्रथम अर्हत की पूजा करनी चाहिये। सो समस्त राजचिह्नों को दूर ही छोड़कर बंधु-परिवार समेत, नंगे पांव समवसरण मंडप में पहुंचा और तीन बार प्रदक्षिणा करके भगवान ऋषभ के सम्मुख सिर नवाकर खड़ा हुआ।

उसी समय भगवान का धर्मोपदेश आरंभ हुआ। समवसरण मंडप में उपस्थित समस्त देव, मानव, तिर्यक, पक्षी, सरीसृप आदि को भगवान का उपदेश अपनी-अपनी भाषा में सुनाई दे रहा था। जिन-वाणी से धर्म-बोध पाकर कितने ही नर-नारियों ने वहीं दीक्षा ग्रहण कर ली। भरत की बहनें ब्रह्मी और सौंदरी भी दीक्षा लेकर गणिनी-गण की प्रमुख बन गयीं। भरत और बाहुबली भगवान के चरणों की वंदना करके अपने-अपने नगरों को वापस आये।

अयोध्या लौटते ही भरत ने शस्त्रागार जाकर 'चक्ररत्न' की पूजा की और तत्पश्चात् राजमहल में अपने पुत्र का जातकर्म संपन्न किया।

जिस राजा के शस्त्रागार में 'चक्ररत्न' प्रकट होता है, वही चक्रवर्ती बनने का अधिकारी होता है। (भरत इस अवसर्पिणी का सर्वप्रथम चक्रवर्ती सम्राट् था।) और समस्त राजाओं को अपने अधीन किये बिना कोई चक्रवर्ती सम्राट् नहीं हो सकता। अत: भरत ने दिग्विजय की तैयारी आरंभ की।

तभी मानो उसे उत्साहित करने के लिए मार्गों को निष्पंक और नदियों को तरणीय बनाती हुई शरद् ऋतु आ पहुंची। पुरोहित द्वारा निर्धारित शुभ मुहूर्त में सेना के कूच का डंका बजा। पुरोहित का आशीर्वाद लेकर राजा भरत 'अजितंजय' नामक युद्ध-रथ पर सवार हुआ। नगाड़ों और नर-सिंघों के समर-संगीत, सैनिकों के युद्धघोष, सुहागिनों के मंगल-गीत, वंदियों के स्तुति-पाठ और गुरुजनों के आशीर्वाद के मिले-जुले शोर के बीच विजय-यात्रा आरंभ हुई।

आगे-आगे सूर्य की भांति चमकता हुआ 'चक्ररत्न' चल रहा था। उसके साथ 'दंड-रत्न' सामने पड़नेवाले टीलों व पहाड़ों को काटकर सेना के लिए राह बनाता जा रहा था। उसके पीछे अश्व, गज, रथ और पदाति दल चल रहे थे। इनके साथ दिविज और खेचरों की टुकड़ियों के भी आ मिलने से भरत की सेना 'चतुरंगिणी' के बजाय 'षडंगिनी' होकर भूमि और आकाश दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

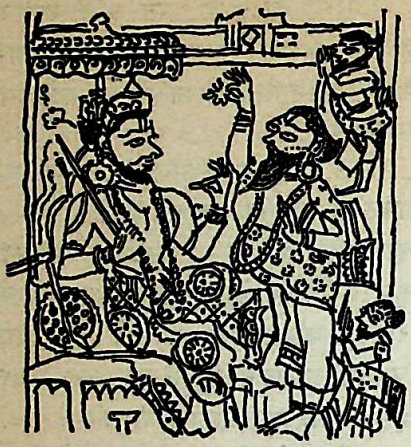

राजपुरोहित ने आकर ऋषभ को केवल-ज्ञान होने का शुभ समाचार भरत को सुनाया।

को एक साथ व्याप कर चल रही थी।

गंगा के साथ-साथ चलती हुई यह सैन्य-वाहिनी दूसरी गंगा-सी प्रतीत होती थी। जिस-जिस प्रदेश में वह पहुंचती थी, वहां के राजा नजराना लेकर भरत की सेवा में उपस्थित होते और उसके चरणों में सिर झुकाते थे। इस तरह बेरोकटोक बढ़ते हुए भरत ने पूर्व-सागर के तट पर पहुंचकर गंगाद्वार पर छावनी डाली।

पूर्व-सागर के मध्य, मागध नामक एक व्यंतर-देवता राज्य करता था। उसने अकड़ दिखायी। तब भरत ने तीन दिन, तीन रात उपवास किया और चौथे दिन दिव्य वस्त्राभूषण पहन, रथारूढ़ होकर समुद्र पर चढ़ाई कर दी। रथ के चक्र पानी में नहीं डूबे, नही घोड़ों के खुर पानी में भीगे। रथ मागध की राजधानी के समीप पहुंच गया। यह चमत्कार देखकर मंत्रियों के बहुत कहने से मागध ने भरत की अधीनता स्वीकार कर ली।

समुद्र-तीर के सब राजाओं को अपना सामंत बनाकर भरत दक्षिण को मुड़ा और पूर्व-सागर एवं पश्चिम-सागर के बीच के भूभाग को पदाक्रांत कर, सिंधु नदी के साथ-साथ विजयार्ध पर्वत पर पहुंचा। पूर्व एवं पश्चिम के समुद्रों को एक-एक कोर से छूता हुआ जो पर्वत भारत के बीचोंबीच फैला हुआ है और उत्तर व दक्षिण भारत को पृथक् करता है, वही विजयार्ध पर्वत है। वह सर्वथा अलंघ्य है।

उत्तर की दिग्विजय के लिए विजयार्ध के उस पार पहुंचना अनिवार्य था और यह 'तमिस्र' गुफा के मार्ग से ही संभव था। किंतु तमिस्र गुफा का द्वार वज्र की अरगला से बंद था। भरत चिंता में पड़ गया। तभी वहां के निवासी कृतमाल नामक देवता ने द्वार खुलवाने का उपाय उसे बताया।

अश्वरत्न पर बैठकर सेनापति ने 'दंड-रत्न' से गुफा के द्वार पर आघात किया। वज्र की अरगला खिसक गयी, द्वार खुल गया और आग की एक ऊंची लपट बाहर निकली। किंतु सेनापति निर्भय भीतर घुसकर उस पार चला गया और समस्त पश्चिम खंड के म्लेच्छ देशों को जीतकर उनके राजाओं को साथ लिये भरत की सेवा में उपस्थित हुआ।

तब तक छः मास बीत चुके थे। तमिस्र गुफा की आग भी ठंडी पड़ चुकी थी। भरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने विजयार्ध के उस पार पहुंचने के लिए सेनाओं को गुफा में प्रवेश करने का आदेश दिया। किंतु बारह योजन लंबी व आठ योजन ऊंची उस गुफा में घोर अंधकार छाया हुआ था। सैनिक उससे भयभीत होकर लौट आये। तब पुरोहित ने 'काकिणी-रत्न' की सहायता से प्रत्येक योजन पर एक-एक सूर्य-चंद्र बनाकर लगा दिया। तब सेना आगे बढ़ी।

किंतु आधी राह जाने पर एक और अड़चन आयी। गुफा की दोनों भित्तियों से दो जलधाराएं निकलकर सिंधु नदी से मिलती थीं और गुफा के उत्तर-द्वार को रोके हुए थीं। उनमें से एक जलधारा में नीचे से रेत ऊपर को उछल रही थी; दूसरी में तिनका भी गिर पड़े, तो डूब जाता था। सब इससे चकित थे। भरत के स्थपति ने जांच करके कहा कि यह सब हवा के प्रवाह की करामात है। उसने अमानुषारण्य से लकड़ी मंगवायी और उससे दोनों नदियों पर पुल बना दिये, जिनके द्वारा सेना-सहित भरत उत्तर भारत पहुंचा।

भरत ने समस्त पश्चिम-खंड और मध्य-खंड को जीता। किंतु इसके लिए उसे अनेक भयंकर युद्ध लड़ने पड़े। फिर वह सिंधुमूल एवं हिमालय के मध्य-शिखर पर पहुंचा। सिंधुदेवी ने उसका अभिषेक और हिमवत्-कुमार ने उसका सत्कार किया। वहां से वह वृषभाचल गया। यहां अपनी विजय-प्रशस्ति खुदवाने की उसकी इच्छा हुई। किंतु वृषभाचल के सबके सब शिला-खंड पूर्ववर्ती चक्रवर्ती सम्राटों की प्रशस्तियों से भर चुके थे; उन पर अब एक अक्षर के लिए भी जगह शेष न थी। यह देखकर भरत का पराक्रम-गर्व गलित हो गया। फिर भी अभिमानवश उसने किसी पुराने चक्रवर्ती की प्रशस्ति मिटवाकर, अपनी प्रशस्ति वहां अंकित करायी।

तदनंतर भरत गंगामूल पहुंचा और वहां से गंगा के साथ-साथ दक्षिणाभिमुख चला। 'कांडक-प्रपात' गुफा के मार्ग से विजयार्ध पर्वत को पुनः पार कर, उसने समस्त पूर्व-खंड के म्लेच्छ देशों को जीता। इस प्रकार उसकी दिग्विजय-यात्रा पूर्ण हुई। तब उसने कैलास पर्वत जाकर पुनः भगवान ऋषभ के दर्शन किये और आनंद से राजधानी की राह पकड़ी।

किंतु अयोध्या के नगर-द्वार पर आकर उसका दिग्विजयी 'चक्ररत्न', जो अब तक अबाधित गति से चल रहा था, हठात् रुक गया। यह समाचार सुनकर भरत स्तंभित रह गया। पुरोहित से पूछा, तो उसने कहा—"राजन्, इसका अर्थ यह है कि अभी भी आपके शत्रु शेष हैं। आपने विदेश तो सब वश में कर लिये; किंतु अभी स्वदेश में कुछ काम शेष है। आपके अनुजों का कहना है कि पिता पुरुदेव ने जैसे आपको राज्य दिया, वैसे ही उन्हें भी दिया है, सो वे आपकी अधीनता क्यों मानें? और बाहुबली के दर्प का तो कोई अंत ही नहीं।..... किंतु राजन्, राजपद के वास्तविक अधिकारी आप ही हैं। आपके अनुज या तो आपके चरणों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिर झुकायें और वशवर्ती होकर राज्य करें, अथवा भगवान ऋषभदेव के चरण छूकर तप करें। कोई तीसरा मार्ग नहीं है।"

भरत ने अपने निन्यान्नबे सगे भाइयों के पास तुरंत इस आशय का संदेश भिजवाया। उसे सुनकर वे सब बहुत दुःखी हुए। उन्होंने सोचा—"अभी तक तो अग्रज और पितृतुल्य मानकर हम भरत के चरण छूते थे। किंतु अब से हमारा संबंध भाई-भाई का नहीं, अपितु शासक-शासित का होगा। इंद्र जिनके चरणों की वंदना करता है, ऐसे महामहिम ऋषभदेव से प्राप्त राज्य का उपभोग करने के लिए हमें किसी की कृपा-भिक्षा मांगनी पड़े, यह कैसी बात है!" और उन सबने भगवान ऋषभदेव की शरण में जाकर दीक्षा ग्रहण कर ली।

भाइयों के इस व्यवहार से भरत आश्चर्य-विमूढ़ रह गया। उसने सोचा कि जब एक ही मां के जाये भाइयों ने मेरी अधीनता स्वीकार करने में अपमान अनुभव किया, तो सौतेला भाई, महापराक्रमी बाहुबली भला क्यों मेरी आज्ञा मानेगा? इसलिए सामनीति से काम लेना चाहिये। मंत्रियों को भी यह राय जंची और एक ऊंचे राज-कर्मचारी को राजदूत बनाकर पौदनपुर भेजा गया।

राजदूत अयोध्या से प्रस्थान कर कुछ दिनों में पौदनपुर पहुंचा और बाहुबली के दरबार में उपस्थित हुआ। जैसे ब्रह्मा ने नीलम के पहाड़ को तराशकर जीती-जागती प्रतिमा घड़ी हो, या जैसे क्षात्रधर्म ने देह धारण किया हो, इस तरह तेजः दमकते हुए उस सुंदर युवक को देखकर रा दूत ने मन-ही-मन सोचा—"इतना तेजस्व तो हमारा सम्राट् भी नहीं है!" नमस्का करके उसने भरत की भेजी हुई रत्न-मंजू बाहुबली को समर्पित की।

मोहर तोड़कर भरत ने मंजूषा खोली उसमें उपहार-स्वरूप रखे हुए रत्नाभूषण कोशाध्यक्ष को सौंपकर भरत का पत्र रा दूत को पढ़ने के लिए दिया। पत्र में लिख था—"स्वस्ति। समस्त लोकों के अधिपति पुरुदेव के चरण-कमल की वंदना क 'चक्ररत्न' की कांति से समस्त दिग्-दिगंत को जीतनेवाला चक्रवर्ती भरतेश्वर अपने प्रिय अनुज कुमार बाहुबली को आशीर्वाद-पूर्वक आलिंगन कर ....."

अभी राजदूत इतना ही पढ़ पाया था कि बाहुबली बोल उठा—"रुको हे राजदूत! अग्रज का संदेश बाद में सुनेंगे। पहले यह बताओ कि अयोध्या में वे सुख से तो हैं? इतनी व्यस्तताओं के बीच भी उन्होंने हमें स्मरण किया! विजय-यात्रा कैसी रही? समस्त राजलोक भैया का शरणागत हुआ है और समस्त दिशाएं भैया के प्रताप से कंपित हो उठी हैं, यह सुनकर हमें परम आनंद हुआ है। संपूर्ण दिग्विजय की कथा हमें विस्तार से सुनाओ।"

राजदूत ने 'चक्ररत्न' के प्रकट होने की घटना से आरंभ कर, अयोध्या लौटने तक का सब वृत्तांत सुनाया और अंत में कहा—"कुमार! राजधानी में लौटने के पश्चात्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके अग्रज ने अनुभव किया कि आप-जैसे प्रिय अनुज के बिना सारा साम्राज्य सूना है और आप जब तक उनके चरणों में प्रणाम न करें, उनका चक्रवर्ती-पद अधूरा ही है। अतः उन्होंने आपको बुलाने के लिए मुझे भेजा है। विनय के दो रूप हैं—सहज और कृत्रिम। विवेकी इन दोनों का यथोचित उपयोग करते हैं। और आपमें ये दोनों हैं।"

विजय-यात्रा की कथा सुनते समय बाहुबली का जो मुखड़ा उत्साह, आनंद और कुतूहल से कमल की तरह खिला हुआ था, वही दूत के अंतिम वाक्यों को सुनकर क्रोध से तमतमा उठा। फिर भी अपने को संयत कर, उसने पहले तो भरत की विजय-यात्रा पर व्यंग्य कसे; फिर मुस्कराते हुए कहा :

"हे दूत, प्रेमपूर्वक अग्रज के चरण छूने में अपमान नहीं, बल्कि गौरव है। किंतु यदि कोई गर्दन पर तलवार रखकर हमसे प्रणाम कराना चाहे, तो उसके आगे सिर नवाना कायरता होगी। जब तक परस्पर प्रेम है, तभी तक विनय की शोभा है। किंतु अब तो मैं भरत की आंखों में कांटे की तरह खटक रहा हूं। उसे सिर नंवाकर मैं अपनी जग-हंसाई नहीं कराऊंगा। ..... भरत के चक्रवर्तित्व की वैभव-गाथा सुनकर हम यहीं आनंद मना लेंगे। किसी के समीप रहकर जी-हुजूरी करने की हमारी प्रवृत्ति नहीं है।

"हमारे पिता ऋषभदेव ने हम दोनों को राज्य दिया, दोनों को राजा की पदवी दी। अब भरत अपने आपको 'राजाधिराज' कहता है! भले ही उसके यहां चक्र-

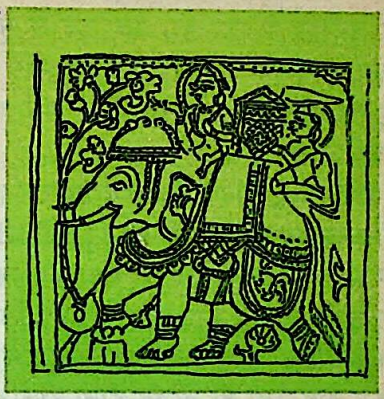

भरत की दिग्विजय-यात्रा

रत्न प्रकट हुआ हो; किंतु इतने मात्र से उसे मुझ पर आक्रमण करने का अधिकार प्राप्त नहीं हो जाता।..... और सुनो, भरत और बाहुबली दोनों ही ऋषभपुत्र हैं। दोनों में से कौन अधिक पराक्रमी है और कौन कम, इसे तोलने की तराजू एक ही है। वह है—मेरी ये भुजाएं।

"षट्खंड भूमंडल का विजेता, अखंड-प्रतापी तुम्हारा चक्रवर्ती सम्राट् भरत चाहे तो आ जाये मेरे सामने—जीवन, पत्नी, पुत्र, धन-संपदा का मोह छोड़कर आये। तुम देख लोगे कि हम दोनों में कौन बढ़कर है!"

राजदूत ने अयोध्या लौटकर यह सब वृत्तांत भरत को सुनाया और साथ ही यह भी कहा—"सम्राट्! आप भूमंडल के चक्रवर्ती हैं। उस घमंडी को छेड़ने से क्या लाभ? उसे जैसा है, वैसा रहने दीजिये। इसी में आपका बड़प्पन भी है।"

किंतु भरत बोला—"दिग्विज का यह अंतिम चरण शेष है। जब हमारा ही दायाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें चुनौती दे रहा हो, तब युद्ध से मुंह मोड़ना अनुचित है। ठीक है, बाहुबली के बाहुबल की परीक्षा हम करेंगे!" और वह दरबार से उठ गया। *

दोनों ओर सैनिक तैयारियां आरंभ हो गयीं। सम्राट् की सेना ने पौदनपुर की ओर कूच कर दिया। बाहुबली की सेना ने उसकी राह रोकी। दोनों भाई हाथ में धनुष लिये आमने-सामने आकर खड़े हो गये। युद्ध आरंभ होनेवाला ही था कि दोनों राजाओं के प्रधान मंत्रियों ने सोचा—"दोनों भाई चरमदेह-धारी हैं। यदि ये लड़ने लग गये, तो दोनों पक्षों के समस्त सैनिकों की मृत्यु निश्चित है। ऐसा संहारकारी युद्ध हो, यह ठीक नहीं। दोनों धर्मयुद्ध करें।"

दोनों प्रधान मंत्री मिलकर पहले भरत के पास गये और बोले—"प्रभु! दृष्टियुद्ध, जलयुद्ध और मल्लयुद्ध द्वारा आप लोग हार-जीत का निर्णय करें। सर्वसंहारकारी युद्ध से क्या लाभ? उससे आप अधर्म और अपयश के भागी होंगे। अतः धर्मयुद्ध कीजिये।" भरत ने उनकी बात मान ली।

किंतु बाहुबली को मनाना इतना सरल नहीं था। उसने कहा—"तुम्हारे सम्राट् को अपनी चतुरंगिणी सेना पर बड़ा गर्व है। पहले तनिक उस गर्व की गरिमा तोल लूं। फिर होगा धर्मयुद्ध।"

दोनों मंत्री बोले—"युवराज, यह दुराग्रह न कीजिये। हम बूढ़ों की बात मान लीजिये।" और किसी प्रकार उन्होंने बाहुबली को भी धर्मयुद्ध के लिए तैयार कर लिया।

दोनों सेनाओं ने राहत की सांस ली। पांच सौ धनुष ऊंचा भरत और सवा पांच सौ धनुष ऊंचा बाहुबली आमने-सामने खड़े हो गये।

पहले दृष्टियुद्ध हुआ। दोनों अपलक एक दूसरे को देखते रहे। बाहुबली भरत को इस तरह एकटक घूर रहा था, जैसे उसे आंखों से पी ही डालेगा। उसकी नेत्रज्योति की उग्रता को भरत सह न सका और उसकी पलकें झपक गयीं।

तदनंतर जलयुद्ध आरंभ हुआ। मत्त हाथियों की तरह जलाशय में पैठकर दोनों भाई एक दूसरे पर पानी की बौछार करने लगे। बाहुबली ने भरत के मुंह पर पानी के ऐसे थपेड़े दिये कि उसकी क्रोधाग्नि ठंडी हो जाये। किंतु भरत जो पानी फेंकता था, वह बाहुबली की छाती को ही छू पाता था। हाथी की सूंड़ की भांति बाहुबली की दोनों भुजाएं निरंतर जल की बौछार कर रही थीं, जिनके आगे भरत बहुत देर टिक न सका और उसने मुंह तिरछा कर लिया।

अंत में मल्लयुद्ध की बारी आयी। उनकी कुश्ती देखकर सुर, नर, गंधर्व और विद्याधर सभी चमत्कृत रह गये। अंत में बाहुबली ने भरत को दोनों हाथों में खिलौने की तरह ऊंचा उठाकर एक बार चारों ओर घुमाया। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे नीलम के पहाड़ के शिखर पर सोने का पहाड़ रख

* जैन पुराणों के अनुसार पूर्व काल में मनुष्यों के कद, आयु सभी आज की अपेक्षा बहुत अधिक होते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया गया हो। भरत को सिर के ऊपर उठाये-उठाये ही बाहुबली ने घोषणा की– "ये समस्त भारतभूमि के स्वामी हैं, मेरे बड़े भाई हैं; इसलिए पूज्य हैं। ऐसे महिमाशाली मनुष्य को मिट्टी में पटककर मानभंग करना उचित नहीं।" और धीरे-से भरत को जमीन पर उतार दिया।

बाहुबली की सेना हर्ष से उछल पड़ी और जयकारों से आकाश को गुंजाने लगी। भरत की सेना धरती में गड़ी जा रही थी। दोनों सेनाओं के समक्ष, समस्त सामंत राजाओं के सम्मुख हुए इस अपमान से भरत जल-भुन गया। उसने 'चक्ररत्न' का ध्यान करके उसे बाहुबली को रौंद डालने की आज्ञा दी। किंतु 'चक्ररत्न' बाहुबली के चारों ओर तीन बार परिक्रमा करके, उसकी दायीं भुजा के पास खड़ा हो गया।

आकाश में दिव्य वाद्य बज उठे; देवपत्नियों ने मंगल-गीत गाये; देवों ने आनंद वाष्प से भीगे हुए पुष्प बरसाये। सब कहने लगे–" सम्राट् ने बिना सोचे-समझे अपने सामर्थ्य से बाहर का काम करने की ठानी; और फल यह निकला!" यह सुनकर भरत का सिर लज्जा से झुक गया।

किंतु बाहुबली के हृदय में भी दुःख का शूल गड़ गया। वह सोचने लगा– "भरत ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? ओह, राज्यमोह बहुत प्रबल होता है। वह भाइयों को लड़ाता है, पिता-पुत्र में मनोमालिन्य पैदा कर देता है। जब उसने मनुवंश के तिलक-स्वरूप मनस्वी भरत की भी

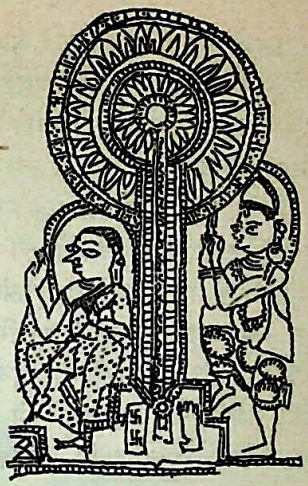

बाहुबली धर्मचक्र का स्पर्श करते हुए

मति फेर दी, तो दूसरे लोगों की तो बात ही क्या!" उसका मन गहरे सोच में पड़ गया! अंत में उसने निर्णय किया–"विकारी राजपद, विकारी राज-पाट ये मुझे नहीं चाहिये।" उसने दीक्षा लेने का संकल्प कर लिया।

फिर भरत को संबोधित करके कहा– "हे भरतेश्वर, लज्जा छोड़ो! क्रोध तजो! अनुज पर अनुग्रह करो! राज्यलक्ष्मी तुम्हारे ही वक्षस्थल पर विराजमान रहे। पिता की दी हुई भूमि मैं तुम्हें देता हूं। तुम्हारी चाही हुई भूमि की मैं कामना करूं, तो यह तुम्हारी मनचाही स्त्री पर ललचायी दृष्टि डालने जैसी बात होगी। भैया, अविचारपूर्वक मैंने तुम्हारे साथ बड़ी अविनय की। कृपया मुझे क्षमा करो। मैं भी तपश्चर्या द्वारा प्रायश्चित्त करूंगा।"

बाहुबली के तपोवन जाने के संकल्प को सुनकर भरत का सारा क्रोध एकदम बुझ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया। उसकी आंखों से अविरल अश्रु बरसने लगे। भाई के प्रति अपने व्यवहार को स्मरण कर उसे घोर पश्चात्ताप होने लगा। वह बोला–"बाहुबली, तुम तप करने मत जाओ। ले-देकर तुम्हीं तो मेरे एक भाई रह गये हो! तुम भी चले जाओगे, तो मैं यह साम्राज्य का बोझ किसके लिए ढोऊंगा?" भरत के आंसू बाहुबली के पैरों पर गिर रहे थे। बाहुबली की आंखों से भी अश्रुधारा निकलकर भरत के मस्तक को सींच रही थी–मानो ज्येष्ठता के अनुक्रम से प्राप्त राज- पदपर उसे पुनः अभिषिक्त कर रही हो।

जैसे-तैसे भरत को मनाकर और पौदनपुर की गद्दी अपने पुत्र को देकर बाहुबली समवसरण मंडप पहुंचा। आदि तीर्थंकर को साष्टांग प्रणाम कर उनसे निवेदन किया–"हे प्रभु! आपने पहले संसार का युवराज-पद मुझे दिया था। अब कृपया वैराग्य-मार्ग का युवराज-पद दीजिये।"

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव से दीक्षा लेकर बाहुबली मुनि बने। गुरुओं से विविध शास्त्रों का अध्ययन करते हुए वे व्रताचरणों में निरत हो गये। तदनंतर उन्होंने वर्ष-भर प्रतिमायोग में स्थिर होकर तप किया। उनके पैरों के पास वांबियां बन गयी। लताएं उगकर उनके सारे शरीर पर फैल गयीं। वांबियों से निकलकर विषधर सर्प उनके सारे शरीर पर घूमा करते थे–मानो उनकी उग्र तपोवह्नि की धूम-रेखाएं हों।

किंतु ऐसा उग्र तप करने पर भी उन्हें 'केवल-ज्ञान' प्राप्त नहीं हुआ। तब चक्रवर्ती भरत को चिंता हुई और उसने भगवान ऋषभदेव के पास जाकर इसका कारण पूछा। भगवान ने कहा –"बाहुबली के मन में अब भी यह संकोच है कि मैं भरत की भूमि पर खड़ा होकर तप कर रहा हूं। मेरे तेरे का यह अभिमान भी जाना चाहिये।"

यह सुनकर भरत राजपरिवार समेत बाहुबली के समीप गया और विविध उनकी पूजा करके बोला –"हे मुनिराज, यह धरती आपकी है। आपने ही यह मुझे प्रदान की। इसे मेरी क्यों समझते हैं! केवल अपनी आत्मा का ध्यान कीजिये। अन्य किसी वस्तु को स्मरण न कीजिये।"

बाहुबली के मन का रहा-सहा अहंकार भी गलकर बह गया और उन्हें प्रकाश-स्वरूप 'केवल-ज्ञान' प्राप्त हो गया। बाहुबली जिन हो गये, केवली हो गये। देवताओं ने आकर उनके चरणों की पूजा की। नाना देशों में विचरण करके अंत में भगवान बाहुबली कैलास पर समवसरण मंडप में रहने लगे।

उधर अयोध्या में भरत ने भी सम्राट् पद ग्रहण किया। हिमवत् पर्वत से लवण-सागर पर्यंत षट्खंड भूमंडल उसका शासन मानता था। उसके धर्मप्रेम की कीर्ति दिग्दिगंत में व्याप्त थी। प्रजा भी राजा की भांति धर्म में अनुरक्त थी। भरत इस देश का प्रथम चक्रवर्ती सम्राट् हुआ; इसीलिए आज भी यह देश 'भारत' कहलाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाज के निर्माण एवं संरक्षण के लिए अपनी सशक्त कलम समर्पित करनेवाले एक रूसी साहित्यकार का संक्षिप्त जीवन-परिचय

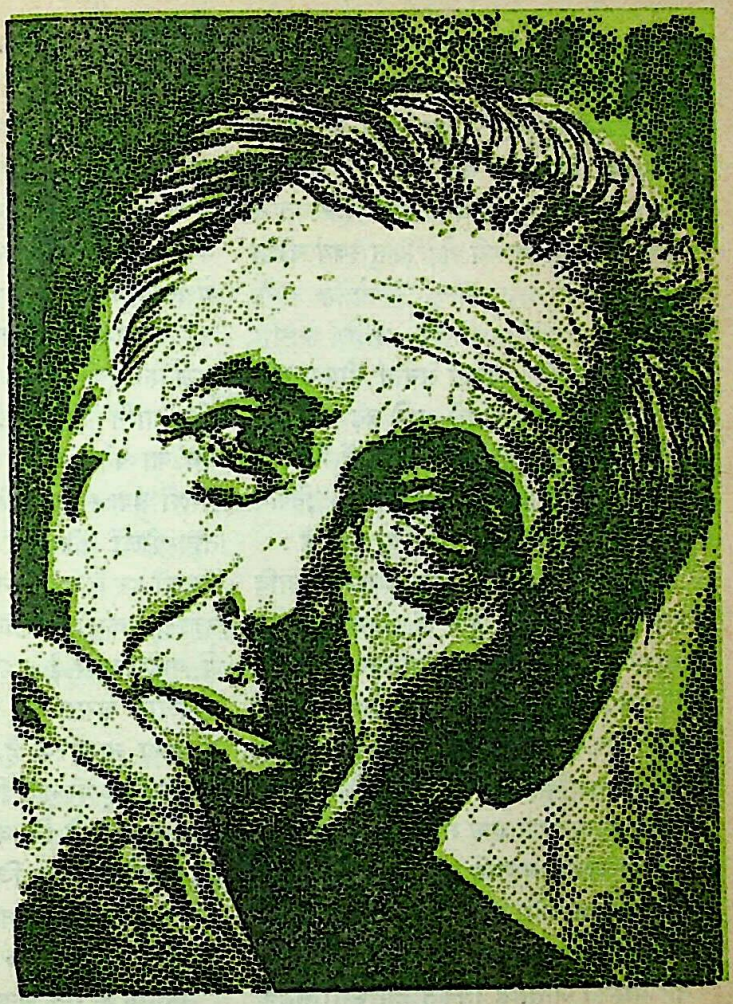

पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके

लेखनीधारी योद्धा एहरेनबुर्ग

सन १९३७ । स्पेन का गृहयुद्ध खूब जोरों पर है । रिपब्लिकन सैनिकों व स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी आगे बढ़ती जा रही है । उसके साथ नागरिक वेश में एक आदमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, जिसके हाथ में छोटी-सी झंडी है। झंडी पर लिखा है –"स्वातंत्र्य-सैनिकों की टोली, इल्या एहरेनबुर्ग।" इस दृश्य की फोटो आज भी देखी जा सकती है। एहरेनबुर्ग 'इजवेस्तिया' के संवाददाता की हैसियत से स्पेन के मोर्चे पर गये थे; किंतु स्वयं योद्धा बन गये।

०००

सन १९४१। नाजी सेनाएं भीषण गति से रूस को रौंदती हुई आगे बढ़ रही हैं। रूसी अखबारों में बड़ी-सी सुर्खी के साथ लेख प्रकाशित होता है। शीर्षक है–"विजय हमारी ही होगी।" उसमें कहा गया है :

"कीएव, व्यान्स्क और व्याज्मा आदि नगर पराजित हो चुके हैं.....मास्को पर चढ़ाई करने के लिए शत्रु उतावला हो उठा है। हमारी राजधानी का भविष्य टैंकों पर नहीं, एक-एक रूसी सैनिक की शूरता और सहनशक्ति पर निर्भर है। धीरता और शूरता के बल पर एक मामूली पहाड़ी नाले को भी अजेय बनाया जा सकता है। हर एक सैनिक का हृदय एक किला हो। फासिस्ट जिस सड़क से आगे बढ़ रहे हैं, वह मास्को जाता है। किंतु हमें उसी सड़क से उन्हें यमलोक की राह दिखानी है।"

रूसी नागरिकों और सैनिकों के राष्ट्र-रक्षा-संकल्प को बल देनेवाला यह लेख निकला था, इल्या एहरेनबुर्ग की कलम से।

०००

अपने मूर्धन्य बुजुर्ग साहित्यकार इल्या एहरेनबुर्ग को रूस एक अप्रतिम स्वातंत्र्य-प्रेमी के रूप में जानता है। एक विशेषण प्रायः उनके नाम के साथ जोड़ा जाता है, वह है –"अजेय-हृदय लेखक"। हाल में उनके पचहत्तरवें जन्मदिवस पर विख्यात रूसी साहित्य-सेवी कोन्स्तेंतीन सियोमोव ने एक संस्मरणात्मक लेख में उनके विषय में लिखा था :

"कीचड़ से लथपथ एक जीप में अधेड़ उम्र का एक आदमी नागरिक वेश में बैठा हुआ शांति से सिगरेट पी रहा है। भद्दे भूरे रंग का कोट और फरटोप पहनकर वह मीलों तक सैनिकों के साथ चल रहा है। तोप-गोलों की मार से टूटी हुई कच्ची सड़कों पर से वह सैनिकों के पीछे यात्रा कर रहा है। कंधों को ढीला बनाकर वह खंदक में कूद जाता है। शांतिपूर्वक सैनिकों से बातचीत करता है। खुद वह सौ फी सदी सामान्य नागरिक है, यह बात वह क्षण-भर के लिए भी नहीं छिपाता। मगर संपूर्ण सेना जानती है कि वह सच्चा लड़ाकू है। एहरेनबुर्ग के लेख जिसने न पढ़े हों, ऐसा सैनिक रूस में ढूंढ़े नहीं मिलेगा।"

०००

कीएव के एक यहूदी मुंशी के घर इल्या का जन्म २७ जनवरी १८९१ को हुआ। जब वे कुछ ही महीने के थे, सारा परिवार मास्को चला आया। बालक इल्या को पढ़ने का बहुत शौक था; पशु-पक्षी और पेड़-पौधों के बारे में जानकारी जुटाने और इतिहास की पुस्तकें पढ़ने में उसे आनंद आता था। किंतु उसकी पढ़ाई पूरी न हो सकी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन १९०५ में देश में क्रांति का डंका बजा और किशोर इल्या किताबें फेंककर सड़क पर पहुंच गया और जार के सैनिकों को शहर में गश्त लगाने से रोकने के लिए सड़कों पर अड़चनें (बैरिकेड) खड़ी करने में मजदूरों के साथ जुट गया। उस समय तक वह स्कूल में एक हस्तलिखित पत्रिका 'नयी किरण' का संपादन करने लगा था। इस तरह उसके जीवन का मार्ग मानो तय हो गया था—लिखना और आजादी के लिए जी-जान से लड़ना।

अगले साल पंद्रह वर्ष की उम्र में इल्या बोल्शेविक पार्टी में शामिल होकर सक्रिय कार्यकर्ता बन गया। दो वर्ष बाद १९०८ की जनवरी में वह कैद कर लिया गया। उसके घर की तलाशी ली गयी, तो वहां पार्टी की कुछ सामग्री मिली थी। पुलिस के लिए यह प्रमाण पर्याप्त था। उसे जेल में ठूंस दिया गया। आठ महीने वहां रहने के बाद उसे जमानत पर रिहा किया गया। मगर पाबंदियों में बंधकर रहना उसे मंजूर न था। वह पुलिस की नजर से बचकर रूस की सीमा पार करके पेरिस चला आया, जो स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व के नारे की ही नहीं, बल्कि कला से लेकर कपड़ों तक सब क्षेत्रों में नये फैशन की भी जन्मस्थली है।

किंतु रंग और रौनक की उस राजधानी में भी इल्या को अपनी मातृभूमि की याद सताती रही। १९०९ में मास्को की एक पत्रिका में इस तरुण क्रांतिकारी की पहली कविता छपी। १९११ से १९१४ तक उसने अनेक कविताएं लिखीं। प्रायः ये सब ऐतिहासिक अथवा पौराणिक विषयों पर थीं। युवा कवि चकित था कि दुनिया में फैले दुःख और दौर्जन्य का मूल कारण क्या है? मातृभूमि का वियोग भी उसे तीव्र व्यथा पहुंचा रहा था।

०००

१९२७ में जारशाही खत्म हुई। एहरेनबुर्ग रूस लौट आये। अक्टूबर क्रांति के बाद सरकार के कला-विभाग में काम करने लगे। अनेक प्रतीकात्मक रचनाएं उन्होंने लिखीं। उन्हीं दिनों एहरेनबुर्ग ने लिखा था—"जो जायेगा, निश्चय ही लौटेगा; लेकिन उसके पैर धूल से सने होंगे।" अब तक सामाजिक सत्य की उन्हें काफी गहरी अनुभूति हो चुकी थी।

सोवियत संवाददाता के नाते १९२१ में एहरेनबुर्ग को दीर्घ काल तक परदेश-

स्तबक

मेरे अश्रु मेरे अपने हैं; मेरा हास्य जिन किन्हीं से भी मैं मिलता हूं, उन सबकी संपत्ति है।

* * *

हम अपनी क्षुद्रता से विराटता को निरंतर चोट पहुंचाते रहते हैं।

* * *

निद्रा दो जागृतियों को जोड़नेवाला सुनहरा सेतु है। मनुष्य दो शून्यों—जन्म और मृत्यु—के बीच का सेतु है।

—हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास करना पड़ा। राजनीतिक प्रचार के आरोप में पेरिस में उन्हें गिरफ्तार करके बेल्जियम भेज दिया गया, जहां उन्होंने केवल एक महीने में अपना पहला उपन्यास 'जोलियो जुरेनितो' लिख डाला।

अगले वर्ष 'यूरोप के भवितव्य की कथा' छपी, जो अखबारी रिपोर्ट की भाषा एवं पत्रों की शैली में है। इसमें पूंजीवादी दुनिया के 'कल' की कल्पना की गयी है। किंतु उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली फ्रेंच और जर्मन सेना के पहरेदारों की मार्मिक कथा '१३ चिलमें' से। और पेरिस के कम्यून की कथा पर आधारित उनकी रचना 'कम्यूनवालों की मलिका' का तो देखते-ही-देखते यूरोप की तमाम भाषाओं में अनुवाद हो गया।

सोवियत रूस लौटने के बाद एहरेनबुर्ग ने साम्यवादी समाज और व्यक्ति के जीवन को केंद्र बनाकर बहुत कुछ लिखा। सूक्ष्म मनोविश्लेषण उनकी विशेषता है।

अपने आधी सदी के लेखक-जीवन में एहरेनबुर्ग ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें मुख्य हैं—'दि फाल आफ पेरिस' (१९४१), 'दि स्टार्म' (१९४८), 'दि नाइन्थ वेव' (१९५२), 'दि थॉ' (१९५४) और 'दि स्प्रिंग' (१९५६)।

स्टालिन की मृत्यु के बाद की उनकी रचनाओं की सारे संसार के साहित्यिक और बौद्धिक क्षेत्रों में काफी चर्चा हुई है। उनकी आत्मकथा 'पीपुल, इयर्स एंड लाइफ' ने, जिसका तीसरा खंड अभी हाल में प्रकाशित हुआ है, सोवियत जीवन और राजनीति में दिलचस्पी रखनेवालों का ध्यान विशेष रूप से खींचा है। बात यह है, एहरेनबुर्ग ने इस आत्मवृत्तांत में स्टालिन-कालीन अत्याचारों का विश्लेषण किया है और बाद के नेताओं पर आक्षेप लगाया है कि वे चुपचाप इन अत्याचारों को देखते रहे। (वस्तुतः यह आक्षेप लेखक पर भी उतना ही लागू होता है।) उन्होंने यह भी कहा है कि अब भी उस जमाने की बहुत-सी बातों के विषय में सचाई से लिखना संभव नहीं है।

इस विवाद से इतना परिणाम निकालना काफी है कि साहित्यकार एहरेनबुर्ग में राजनीतिक चतुरता काफी मात्रा में है। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि वे सिद्धांतहीन हैं। जब ख्रुश्चोव ने नये लेखकों और नये कलाकारों की काफी उग्र आलोचना की, एहरेनबुर्ग नवसाहित्य और नवकला के समर्थन में आगे आये।

राजनीति से अलग करके देखें, तो एहरेनबुर्ग इस युग के एक विशिष्ट साहित्यकार हैं। आज उनके जितनी विश्वजनीन दृष्टि-वाला रूसी साहित्यकार दूसरा शायद ही होगा। उनके एक उपन्यास का नायक कहता है—"कला केवल अतीत पर नज़र नहीं डालती। यदि वह केवल स्मरण-शक्ति के कमाल पर आधारित न हो, तो वह भविष्य पर भी नजर डालती है।" और एहरेनबुर्ग उस भविष्य में प्रबल विश्वास रखते हैं, जिसमें आर्थिक व सामाजिक विषमता और युद्ध की विभीषिका मनुष्य के विकास को कुंठित नहीं कर रही होगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ के प्रदीप

स्वामी शिवानंद

हिमालय की कंदराओं में ध्यान करनेवाले को संसार में काम करना कठिन हो जाता है। वह शहर के बीच, मकान के दुमंजिले पर बैठकर ध्यान नहीं कर सकता। बिलकुल इसी प्रकार संसार में काम करनेवाले व्यक्ति को किसी एकांत स्थान में बैठना कठिन लगता है। दोनों का चित्त संतुलित या समत्वयुक्त नहीं है। दोनों अपूर्ण हैं। दोनों का एकांगी विकास हुआ है। जो व्यक्ति छः महीने एकांत स्थल में रहकर ध्यान कर सके और फिर छः महीने संसार में संपूर्ण हृदय से सेवा-कार्य कर सक, वही सच्चा कर्मयोगी है। वह वास्तव में बलशाली है। उसका विकास सर्वांगीण है।

वेदांत की गपशप, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों की शुष्क वार्ता—ये जीवन के ऐक्य का अनुभव करने में मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते। साधक के लिए अद्वैत-चेतना की एकता—सर्वं खल्विदं ब्रह्म, अर्थात् यह सारा ब्रह्म ही है—की अनुभूति करने की तब तक कोई आशा नहीं है, जब तक कि वह निर्ममतापूर्वक अपने भीतर स्थित घृणा, द्वेष, संकीर्णता, असूया, क्रोध, अहंकार आदि, मनुष्य को मनुष्य से अलग करनेवाले अवरोधों को दिव्य भाव से दीर्घ काल तक की गयी मानव-सेवा द्वारा नष्ट नहीं कर देता।

मानवता में ईश्वर की सेवा करना, संसार में रहते हुए विभिन्न क्रिया-कलापों के बीच ईश्वर का चिंतन करना गुहा-जीवन से श्रेष्ठ है। निःस्वार्थ कर्म ही योग है। कर्म ही आत्मपूजा है। ['कर्मयोग-साधना' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी समस्याएं :

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी ऐसी ही कोई समस्या संक्षेप लिखकर भेज सकते हैं । —संपादक

इस चख-चख से कैसे बचूं ?

"पंद्रह वर्ष शादी हुए बीत गये, चार बच्चे हैं, मैं ४० वर्ष का हो गया; मगर अभी मेरे और पत्नी के बीच अनुकूलता नहीं आयी । हम एक-दूसरे को समझ नहीं सके । ठीक कि वह बहुत विश्वासयोग्य है, परिश्रमी है । बच्चों पर जान देती है । उनके आराम के अपना सब कुर्बान करने को तैयार रहती है । किसी भी बात में वह मुझसे सहमत नहीं हो मित्रों के सामने भली-बुरी सुना देती है । नतीजा यह है कि मुझे किसी को घर बुलाने हिम्मत नहीं होती । कोई दोस्त दोस्त नहीं रह पाता । इसके लिए भी हम एक दूसरे पर लगाते रहते हैं । चख-चख चलती ही रहती है । ईश्वर जाने कब तक यह संग्राम चलेगा मैं तो सोचता हूं, घर छोड़कर चला जाऊं, तलाक ले लूं । इस बारे में आप कोई हल सुझा तो कृपया बताइये ।

—प्रेमशंकर वर्मा

आपकी समस्या हजारों घरों की समस्या है । इसका समाधान कठिन जरूर है; मगर नामुमकिन नहीं । क्योंकि इतनी चख-चख के बाद भी आप अपनी पत्नी में कुछ तो अच्छे गुण देखते ही हैं । अब भी आपके मन में उसके लिए हमदर्दी है, आप उससे प्रेम करते हैं । आपको उससे शिकायतें जरूर हैं, जैसे कि मित्रों के सामने आपका अपमान कर देती है, आपका मेल-जोल नहीं बढ़ पाता, आपके सामाजिक जीवन में बाधा पहुंचती है आदि । आपका खयाल है कि उसे जबान पर संयम रखना चाहिये और अपनी शिकायतों को मन में दबाकर रखते चुप रहना चाहिये । शायद यह बात भी जानती है । मगर उसके बहुत कोशिश करते हुए भी दिल की बात जबान तक जाती है ।

वस्तुतः बहुत कम स्त्रियां इतनी होती हैं कि अंदर का भाव छिपा सकें आपकी पत्नी भी साधारण स्त्री है, धारण नहीं । उसके मन में आपके हार के प्रति जो असंतोष का धुआं चुका है, वह कटु वाक्यों के रूप में आ ही जाता है । उसका लक्ष्य आपका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मान करना नहीं; बल्कि अपना मन हल्का करना होता है। अपनी शिकायत जाहिर करने का उसने यही एक उपाय अपना लिया है। केवल आपके सामने वह जवान खोल नहीं सकती; इसलिए मित्रों की उपस्थिति में अपने को अधिक सुरक्षित मानकर वह थोड़ा-बहुत कह डालती है।

यदि वह ऐसा न करे, तो अंदर-ही-अंदर राख हो जाये। तनाव कम होने के बाद ही वह अधिक स्वस्थ होकर गृहिणी के कर्तव्यों का पालन कर सकती है।

उसे ही दोष देने के स्थान पर आप अपने व्यवहार को सुधारेंगे, तो उसमें स्वयं सुधार हो जायेगा। अपने विवाहित जीवन के १५ वर्षों में आप चार बच्चों के बाप तो बने; मगर आपने उनके भरण-पोषण में उनकी मां को पूरा सहयोग नहीं दिया। मां अपने बच्चों के लिए जान की बाजी लगा देती है। उसकी पूरी शक्ति बच्चों पर खर्च हो जाती है। चार बच्चों को पालते-पोसते आपकी पत्नी भी मन-शरीर दोनों से थक गयी है। थकावट की इस दशा में उसे आपका पूरा सहारा न मिले, तो उसका खीजना, चिड़चिड़ा हो जाना, शिकायतों पर उतर आना स्वाभाविक ही है। यह मत भूलिये कि १५ वर्ष तक बच्चों का पालन-करते हुए उसे आपकी सुख-सुविधाओं का भी ध्यान रखना पड़ा है। आपने केवल पैसा कमाकर ला देने में ही अपने कर्तव्यों का अंत समझ लिया। यह आपकी भूल है। आपको अपनी परिश्रांत पत्नी को पूरा सहारा देना है; उसके थके-मांदे मन को अपने प्रेम से आश्वस्त करना है।

आपने अपने मन में शायद यह कल्पना कर ली है कि पति का काम केवल आजीविका-योग्य धन लाकर पत्नी को दे देना है; और बच्चों के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी मां की है। यह आपकी भूल है। घर के प्रत्येक कार्य में आपकी भागीदारी है। वह केवल बच्चों का ही नहीं, आपका भी ध्यान रखती है। आपकी सेवा-शुश्रूषा में भी उसने दिन-रात एक किये हैं।

अब वह उतनी जवान नहीं रही, उसकी जिंदगी ढलान पर है। इस ढलती हालत में अगर उसके मुख से शिकायत के दो शब्द बाहर आ जाते हों, या मित्रों के सामने वह आपका वैसा श्रद्धापूर्ण सम्मान न कर पाती हो, जैसा आप अपने दफ्तर के मातहत कर्मचारियों से पाते हैं, तो इससे आपको असंतुष्ट नहीं होना चाहिये। आप उतने थके नहीं हैं। आप पुरुष हैं; भावना नहीं, विवेक से काम लेते हैं। आपको तो संयम-समझदारी से काम लेना चाहिये। पुरुष होने के नाते आप अपने गर्वित मन को बाहर की प्रशंसाओं से भी संतोष दे सकते हैं; मगर आपकी पत्नी का मन केवल आपकी सराहना से पनपेगा। आपकी स्नेह-सहानुभूति ही उसके थके जीवन को प्राण दे सकेगी।

ऐसी हालत में तलाक या 'विच्छेद' की बात सोचना भी पाप है। आपको इन शब्दों के हृदय में आने या कभी जबान तक आने पर भी लज्जित होना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टौलया

इथियोपियाई उपन्यास

एक तरुणी के प्रेम और उसके भ
व भाई की दोस्ती ने वहशियों
सम्राट का हृदय जीत लिया
एक असंस्कृत जाति को सभ्यता
ज्योतिदीप दिया।

★

लगभग दो हजार वर्ष पू
अफ्रीका में ख्रिस्तानी सेना
ने हब्शियों के देश पर हमला कि
उन्हें लूटा-खसोटा और बरबाद
दिया। बाद में हब्शी लोगों ने
फौज बनायी। लाखों की तादाद
जमा होकर ख्रिस्तानी बस्तियों
तबाह किया। ख्रिस्ती लोगों
पास हथियार अच्छे थे, उन
सेनाएं भी सुसंगठित थीं; किंतु ह
टिड्डी-दल की तरह उमड़ते थे।

एक बार हब्शियों के ऐसे ही
हमले में ख्रिस्तानी सेना के
सेनापतियों में से दो लड़ाई में
आ गये। तीसरा युद्धभूमि में पक
गया। और बादशाह ने हार
खबर सुनकर अपने महल में
प्राण छोड़ दिये।

जिस ख्रिस्तानी जनरल
गिरफ्तार किया गया था,
गुलामों के बाजार में बेचा गया
भारी रकम देकर एक रईस ह
ने उसे खरीद लिया। जनरल श
से हट्टा-कट्टा था, इसलिए उसे क
से-कड़ी मेहनत का काम दिया ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिससे कुछ ही दिनों में उसके हाथों में छाले पड़ गये, हड्डियां दर्द करने लगीं। कोड़े खाकर भी उसका खून से लथपथ शरीर पूरा काम न कर पाता। तब एक दिन उसके मालिक हब्शी ने जनरल को बुलाकर कहा—"काफिर ! मैंने भारी रकम देकर तुझे खरीदा है। मगर तू मेरे कोई काम नहीं आ रहा। अब तू जाना ही चाहता है, तो मेरी रकम देकर चला जा। अपने परिवार को पैगाम भेजकर मुझे एक लाख वाकेट (इथियोपिया का पौंड) मंगा दे। मैं तुझे रिहा कर दूंगा।"

जनरल के परिवार में उसकी पत्नी और दो बच्चों के सिवा कोई न था। बच्चे दोनों जुड़वां भाई-बहन थे। दोनों की सूरत इतनी मिलती थी कि कौन भाई है, कौन बहन, यह पहचानना भी नामुमकिन था। भाई का नाम था वाहिद, बहन का टोब्या।

उनके पास जब यह पैगाम पहुंचा कि वे अपने बाप को १ लाख मुहरें देकर गुलामी से आजाद करा सकते हैं, तो तीनों ने खून-पसीना एक करके यह रकम जमा करने की ठानी।

वाहिद अच्छी नौकरी की तलाश में एक बड़े शहर की तरफ गया। वहां उसे एक व्यापारी मिला, जो हाथीदांत, काफी वगैरह लेकर काफिले के साथ मिस्र जा रहा था।

व्यापारी बहुत नेक आदमी था। वाहिद की पूरी कहानी सुनकर उसका दिल पसीज गया। उसकी जेब में उस समय जितनी रकम थी, वह सब उसने वाहिद के हाथों में दे दी। उसके बाप का नाम पूछा और उसके खरीददार हब्शी रईस का नाम-पता भी पूछ लिया।

वाहिद वह रकम लेकर भागता हुआ घर लौटा। उसकी मां और बहन इतनी जल्दी कुछ रकम पाकर बड़े खुश हुए। मगर गिनने पर वह रकम तो केवल ४० मुहरें ही बनी। उन्हें तो १ लाख मुहरों की जरूरत थी। तीनों ने फिर कड़ी मेहनत शुरू कर दी।

कुछ दिन इसी तरह गुजर गये। बाद में एक दिन जब वे अपनी कुटिया में बैठे खाना खा रहे थे, धीरे से दरवाजा खुला। तीनों ने एकटक दरवाजे की ओर देखा। आश्चर्य और खुशी से उनकी आंखें खुली रह गयीं। आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। मुख से शब्द नहीं निकले। क्षण-भर पत्थर की मूर्ति बने बैठे रहे, जैसे कोई सपना देखा हो। तीनों चुप थे। यह तो उनका पिता ही था। उसे अपनी ओर आते देखकर उन्हें विश्वास हुआ कि वह सपना नहीं था।

वाहिद और टोब्या दौड़कर बाप से लिपट गये। आंखों से खुशी के आंसू टपकाते वाहिद ने पूछा—"अब्बा ! तुम्हें एक लाख मुहरें कहां से मिलीं, गुलामी से रिहाई कैसे मिल गयी ?"

अब्बा को स्वयं आश्चर्य था। अपने मुक्तिदाता का नाम उसे स्वयं

खिस्तानी जनरल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं मालूम था।

वाहिद ने कुछ देर सोचकर कहा—"मुझे पता लग गया। यह उसी व्यापारी का काम है, जिसने मुझे चालीस अशर्फियां दी थीं।"

वाहिद की बातें सुनकर उसके पिता जनरल ने कहा—"जब तक मैं उस फरिश्ते से नहीं मिलूंगा, मुझे चैन न आयेगा। उसकी तलाश करना मेरा पहला फर्ज है।"

मगर उसका नाम-धाम कुछ भी तो उसे पता न था। वाहिद फिर भी सूरत से उसे पहचान सकता था, इसलिए यही तय कर पाया कि वाहिद ही उस व्यापारी की खोज में जाये।

वाहिद उसी समय चल पड़ा। पहले वह उस स्थान पर गया, जहां व्यापारी से उसकी भेंट हुई थी। मगर वहां से तो खेमा उठ चुका था। वाहिद अकेला आगे चल पड़ा। आगे जाकर रास्ता पहाड़ी टीलों में लुप्त हो गया था। पगडंडी के निशान भी धुंधले पड़ गये थे। वाहिद फिर भी आगे बढ़ता गया। थकान से पैर भारी हो गये, भूख-प्यास से ओंठ सूख गये। दूर तक कोई बस्ती दिखाई नहीं देती थी। घाटियों में अंधेरा छाने लगा। वाहिद के कदम आगे-ही-आगे बढ़ते गये।

रात का अंधेरा घना हो गया, तो उसे चारों ओर से जंगली जानवरों की आवाजें आने लगीं। वह एक वृक्ष पर चढ़ गया। वृक्ष की मोटी शाखा पर बैठे-बैठे ही उसने रात काट दी।

अगले दिन कुछ आगे बढ़ने पर उसे एक नदी मिल गयी। उसने पानी से प्यास बुझायी। नदी-पार दूर पर उसे धुआं दिखाई दिया। वह समझ गया, हो यही वह काफिला है, जिसकी उसे है। उसकी नजर एक खच्चर पर पड़ी पानी पीने नदी पर आ गया था। उसके पीछे चल पड़ा। खेमों के सदर वाजे पर पहुंचते ही खेमे के पहरेदार पर टूट पड़े। रस्सियों से बांधकर पर पटक दिया। रात-भर उसकी होती रही। जो भी संतरी आता, घूंसे से ठुकाई कर जाता। दूसरे दिन के सब पहरेदारों ने यही समझा कि चोर है। कोड़ों की मार से अधमरा उसे वहीं छोड़ दिया। काफिला आगे मगर वह वहीं पड़ा रहा।

थोड़ी देर में एक बुढ़िया सूखी लकड़ी की तलाश में उधर से गुजरी, तो उसे आ गयी। घर से दूध का एक (प्याला) लाकर वाहिद को पिलाया अपनी इन्किब (टोकरी) उसने वाहिद सिरहाने रख दी। वाहिद ने उसे बनाया। थोड़ी देर में बुढ़िया का भी वहां आ गया। दोनों उसके जख्मी को उठाकर झोंपड़ी में ले गये।

वहां बुढ़िया ने कहा—"हमारे भी जवान लड़का था। उसे हब्शी उठा ले तब से हम अकेले ही यहां रहते हैं।"

उनकी इच्छा थी कि वाहिद उनके रह जाये; मगर वाहिद तो एक खास सद से निकला था। कुछ दिन झोंपड़ी आराम करने के बाद वह आगे बढ़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दस मील दूर आगे जाने पर उसे एक शहर मिला। शहर की बस्ती के कुछ बाहर एक घर के दरवाजे को उसने खटखटाया और रात-भर वहां ठहरने की प्रार्थना की। तभी कुछ गांववालों ने उसे घेर लिया। वे उसे पकड़कर एक आलीशान मकान में ले गये। वहां उसकी खूब आवभगत की गयी। बढ़िया भोजन मिला। सोने को नरम गदेले मिले। दूसरे दिन उसके सारे शरीर पर चंदन-मिले घी की मालिश की गयी।

दो-तीन दिन उसे खूब चमकाकर गांववाले बस्ती से कुछ दूर पुराने मंदिर में ले गये। वहां के खंडहरों में बड़े-बड़े पत्थरों का एक ऊंचा मंच बना हुआ था। मंच के चारों ओर कांटेदार झाड़ियों की ऊंची बाड़ बनी थी, जिससे कोई बचकर भाग नहीं सकता था। वाहिद को गांववाले उसी मंच पर ले गये। वह मंच ही गुलामों की बिक्री का मुख्य केंद्र था।

थोड़ी देर में वहां एक आबनूस-सा काला, ठिगना आदमी आया। उसकी छाती चट्टान-सी चौड़ी थी, आंखों में धधकते शोलों की लाली थी और नाक ऐसी चपटी थी, जैसे किसी ने हथौड़ों से पीटकर गालों पर चिपकायी हो। हाथी के पैरों-जैसी गोल बांहों पर उसने बड़े-बड़े गहने बांध रखे थे। गले में उसने एक पट्टा पहन रखा था, जिसमें चार फलकोंवाली एक तलवार भी लटक रही थी। देखने में वह राक्षस से कम नहीं था।

थोड़ी देर में गुलामों का मुख्य व्यापारी वहां आया। उसने मंच पर आये गुलामों का मुआइना किया, जिससे उसे अपने माल की कीमत का कुछ अंदाजा हो सके।

वाहिद ने वहां सब गुलामों के साथ अपनी नीलामी का नजारा भी देखा। जिस व्यापारी ने उसे खरीदा था, वह राक्षस नहीं, रहमदिल था। उसने वाहिद को अपने बच्चों की देखरेख के लिए रख लिया। वहां वाहिद की भेंट ऐसे कई खिस्ती लोगों से हुई, जो इसी प्रकार बिककर हब्शी व्यापारियों के पास गुलामी कर रहे थे। यहीं उसे वह जवान भी मिला, जिसके मां-बाप ने वाहिद की दवा-दारू की थी।

× × ×

वाहिद को उस जगह गुलामी करते नौ महीने हो गये। घर से विदा हुए, तो उसे एक वर्ष हो गया था। उधर जब एक वर्ष तक वाहिद के पिता और बहन टोब्या को उसकी कोई खबर न मिली, तो वे बेचैन हो गये। पिता ने खुद बाहर निकलकर वाहिद को खोज निकालने का इरादा कर लिया। लेकिन टोब्या अपने बाप को मीलों तक फैले रेगिस्तानों और सूखी पहाड़ियों में भटकने के लिए नहीं जाने देती थी। टोब्या की हठ थी कि अगर बाप गया, तो वह भी साथ जायेगी। अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से आंसू ढरकाते हुए उसने कहा—"मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूंगी अब्बा। कभी नहीं। वहां कौन तुम्हें खाना देगा? कौन तुम्हारी सेवा करेगा? इतना लंबा सफर तुम अकेले नहीं कर सकोगे अब्बा। मैं भी साथ जाऊंगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टोब्या हठी थी, तो बाप भी काफी हठी था। आखिर खिस्तानी फौज का वह जनरल रह चुका था। आवाज में कठोरता लाते हुए उसने कहा—"नहीं टोब्या, तुम्हें यहीं रहकर मां की सेवा करनी होगी। तुम्हारे बिना मां की देखभाल कौन करेगा ? वह बेटे को खोकर पहले ही परेशान है। तुम्हें भी न पाकर पागल हो जायेगी। उसके पास रहना तुम्हारा फर्ज है।"

मां, जो अभी तक चुप थी, बोली—"मैं तो घर बैठी हूं। पास-पड़ोस में बहुत-से अपने लोग हैं। मेरी फिक्र न करो। मेरे भाग्य में जो होगा, भोग लूंगी। मगर तुम अकेले जंगलों में भटकते रहो, यह मुझसे न सहा जायेगा।"

इस तरह टोब्या को मां से इजाजत मिल गयी; मगर बाप ने कहा—"तुम लड़का नहीं लड़की हो, टोब्या ! तुम साथ रहोगी, तो मेरी चिंताएं दुगुनी हो जायेंगी। तुम लड़का होती, तो मैं जरूर तुम्हें साथ ले चलता।"

"तो, मैं लड़का बनकर ही तुम्हारे साथ जाऊंगी अब्बा।" कहकर टोब्या झटपट अंदर गयी। उसने अपने रेशमी बाल काट दिये। मर्दाना भेस पहन लिया और बोली—"अब तो मैं तुम्हारे साथ जा सकूंगी न ? मुझमें और वाहिद में अब कोई भेद नहीं।"

सचमुच वाहिद और टोब्या में अब फर्क न रहा था। दोनों की शक्ल-सूरत सी थी ही। भेस भी एक-सा हो गया।

टोब्या के साथ उसके बाप ने वाहिद तलाश में यात्रा शुरू कर दी। दोनों बाहर निकल पड़े। वे ऐसे शहर की में थे, जहां से गुजरकर इथियोपि व्यापारियों के काफिले मिस्र जाते वे वापस आते हुए पड़ाव करते थे। इच्छा थी कि उस शहर में वे उस व्यापारी को खोज निकालें, कि तलाश में वाहिद घर से निकला था। खयाल था कि वाहिद भी उसी व्यापारी साथ मिस्र चला गया होगा।

लेकिन उस शहर की तलाश में कामयाबी नहीं हुई। जिस रास्ते पर वे वह उन्हें पहले तो व्या डेगा ले गया, कोलाडेगा। पहले कई घाटियों में भट पड़ा, बाद में कई पहाड़ियों में वे भट रहे। आखिर वे को डेगा पहुंचे, जो बड़ा सब्ज इलाका था। के मौसम के साथ ओर के खेत लहलहा टोब्या कभी पहाड़ की चोटी पर चढ़ती, कभी दूसरी पर। समय उसने अजेटाबाब (घुटनों तक

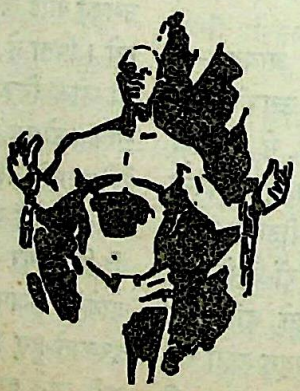

गलामी से मुक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंगरखा) और शम्मा (चूड़ीदार पजामा) पहन रखे थे। इस चुस्त पोशाक में वह बहुत सुंदर लग रही थी। जिस बस्ती में वे पहुंच जाते, लोग टोव्या की ओर देखते रह जाते। युवक के भेस में भी वह सबका दिल मोह लेती थी।

एक दिन थके-हारे, जब वे एक गांव में पहुंचे, तो गांव के मुखिया ने उन्हें अपना मेहमान बनाया। कुछ देर तो वे वहां बड़े चैन से रहे; मगर थोड़ी देर में घर की औरतों ने रोना-धोना शुरू कर दिया। उसे सुनकर पड़ोस की औरतें भी आ गयीं। उन्होंने भी चीख-चीखकर रोना शुरू किया। थोड़ी देर में गांव-का-गांव मुखिया के घर-आंगन में जमा हो गया।

टोव्या के पूछने पर मुखिया ने बताया – "अभी एक आदमी हमलावर हब्शी फौज के आने की खबर लाया है। यह फौज जहां भी जाती है, टिड्डी-दल की तरह सब कुछ तबाह कर देती है। फौजी सबका माल-असबाब लूट लेते हैं; बहू-बेटियों को गुलाम बना लेते हैं। कत्लेआम करते हुए यह राज-सी सेना जिधर से निकल जाये, वहां खून के दरिया बह जाते हैं। गांव की औरतें अपना अंधकारमय भविष्य सोचकर रो रही हैं। अगर यह काली घटा इधर उमड़ पड़ी, तो इन खेतों में पानी की जगह खून बहेगा और ये घर ही हमारी चिता का काम करेंगे।"

सारी रात गांव में मातम छाया रहा। दूसरे दिन सुबह ही टोव्या अपने बाप के साथ आगे चल पड़ी।

गांव के बाहर वे अभी कुछ कदम ही गये होंगे कि उन्होंने दूर काले बादलों की रेखा-सी उमड़ती देखी। उन्होंने देखा, घने धुएं का घटाटोप आसमान पर छाता जा रहा है। थोड़ी दूर और चलने पर उन्हें काले धुएं के बीच लाल लपलपाती आग की लपटें भी दिखाई देने लगीं। उन्हें लगा, दूर पहाड़ी पर सारा जंगल जल रहा है। तब उन्हें गांव के मुखिया की बात याद आ गयी। यह खूनी हब्शियों की फौज थी, जो साक्षात् प्रलय ला रही थी।

टोव्या और उसका बाप कांप उठे। अब क्या होगा? उस प्रलय से बच निकलने का कोई मार्ग नहीं था। कुछ क्षण बाद ही उन्हें इस नारकीय अग्नि में भस्म होना होगा। टोव्या के बाप को अपनी चिंता नहीं थी। उसने कई युद्धों में नररक्त बहता देखा था। युद्ध करते प्राण छोड़ देने की कल्पना से भी उसे सुख ही मिलता था; मगर टोव्या का क्या होगा, यह सोचकर उसका कलेजा मुंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को आता था। लड़के के भेस में रहनेवाली टोब्या का रहस्य जब उन राक्षसों को पता लगेगा, तो उस पर क्या बीतेगी, यह सोचकर उसके रोंगटे खड़े हो गये।

एक बार तो उसने यह भी सोचा कि उस भीषण दशा से बचने के लिए वे स्वयं एक-दूसरे का गला काट लें। मगर टोब्या ने समझाया—"मैं दुश्मन के हाथ आने से पहले अपना गला खुद काट लूंगी। मगर इतनी जल्दी मायूस न होकर बचने का उपाय करना चाहिये।"

उन्हें बचाव का एक ही उपाय सूझा। नजदीक ही एक पहाड़ी टीला था। उन्होंने सोचा, गांव की ओर बढ़ती हुई हब्शी फौज इस टीले पर नजर नहीं डालेगी। टीले के दूसरी ओर वृक्षों की आड़ में वे अपनी जान बचा सकेंगे और जब वह ववंडर विध्वंस-लीला समाप्त कर आगे निकल जायेगा, तो आगे चल पड़ेंगे।

यही सोचकर उन्होंने अपने घोड़ों का रुख पहाड़ी टीले की ओर मोड़ दिया। शिखर तक पहुंचते-पहुंचते सारी पगडंडियों के निशान कटीले झाड़-झंखाड़ में खो चुके थे।

चोटी पर चढ़कर उन्होंने चारों ओर नजर दौड़ायी। दूर तक काली फौज का फैलाव था। फौजी दस्तों की संख्या अनगिनत थी। सैकड़ों पंक्तियां एक के पीछे एक उमड़ती चली आ रही थीं। जब वे दस्ते पहाड़ की तराई में पहुंचे, तो एक दस्ता पहाड़ के दायें हाथ की ओर मुड़ जाता था, दूसरा बायीं ओर। दोनों ओर से आगे बढ़ कर वे बस्तियों को घेर लेते, मकानों में आग लगा देते, माल-असबाब लूट लेते, औरतों को पकड़कर गुलाम बना लेते और जो भी हथियार उठाने की कोशिश करते उनके खून की नदियां बहा देते। लाखों की संख्या में आनेवाले इन खूनी भेड़ियों से कोई बचकर नहीं निकल सकता था।

टोब्या और उसके पिता को यह देखकर कुछ राहत मिली कि उन काले पिशाच नर-भक्षकों की नजर पहाड़ की ओर नहीं गयी है। पहाड़ की तराई से ही वे गांव की ओर मुड़ जाते थे। टोब्या ने सोचा, यहां एक रात गुजारकर कल आगे चल देंगे।

मगर अभी वे चैन की पूरी सांस भी न ले पाये थे कि उन्होंने पश्चिम में फिर घटाटोप काली फौज उमड़ती देखी। उसे देखकर उनका दिल फिर कांप उठा। काली फौज का यह जत्था अभी तक गुजरे जत्थों से भी बड़ा था। इसके आगे बादशाह की सवारी चल रही थी। सवारी के साथ सैकड़ों नगाड़े आसमान को थर्रा देनेवाली आवाज से बज रहे थे। बादशाह स्वर्णाभूषणों से सजे एक सफेद घोड़े पर सवार था। घोड़े की जीन बेशकीमती हीरे-जवाहरात से मढ़ी थी।

टोब्या ने सोचा, यह शाही दस्ता भी पहाड़ की तराई में दायीं या बायीं ओर मुड़कर आगे बढ़ जायेगा। मगर ऐसा न हुआ। सूरज डूबने के साथ ही बादशाह ने वहीं रात गुजारने का एलान कर दिया। पहाड़ की तराई में कैंप गड़ने शुरू हो गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर में सैकड़ों तंबुओं की छावनी पड़ गयी। थोड़ी देर पहले जो जगह कंटीली झाड़ियों से भरी थी, अब शाही चहल-पहल से गूंज उठी।

मगर टोब्या और उसके अब्बा का दिल कांप उठा। वे हर पल मौत की इंतजारी का गुजार रहे थे। कभी भी कोई नजर उनकी ओर उठकर मृत्यु का आदेश सुना सकती थी।

जिस बात से वे डरते थे, वही हुई। उन्होंने देखा, बादशाह अपने थोड़े-से अंगरक्षकों के साथ सामनेवाले टीले पर चढ़ रहा था।

चोटी पर पहुंचकर बादशाह ने सामने देखा, तो टोब्या और उसके पिता एक वृक्ष की आड़ में छिपे नजर आ रहे थे। बादशाह के एक इशारे पर उसके दैत्यकाय अंगरक्षकों ने बरछी-भालों से हमला कर दिया। लेकिन बादशाह ने हुक्म दिया—"ठहरो! इन्हें मारो मत, गिरफ्तार कर लो।"

पास पहुंचकर बादशाह ने पूछा—"इस पहाड़ी पर तुम दोनों क्यों आये? तुम कौन हो?"

"हम यहां अपनी जान बचाने के लिए छिपे थे। परदेशी हैं हम। आसपास किसी को नहीं जानते।"

इस बीच बादशाह का विदूषक सामने आ गया और टोब्या से छेड़खानी करने लगा। टोब्या के बाप को विदूषक पर बहुत गुस्सा आया; मगर वह शांत रहा।

हजारों बेकसूर इंसानों का खून करनेवाले बादशाह के दिल में टोब्या की भोली-भाली सूरत देखकर न जाने क्यों रहम आ गया। उसने न केवल दोनों की जान बख्शी, बल्कि उन्हें इज्जत के साथ अपने खेमे पर ले जाने का हुक्म दिया।

उनका तंबू बादशाही तंबू के नजदीक ही गाड़ दिया गया। आश्चर्य था कि लाखों हब्शियों की फौज का वह बादशाह केवल बाईस वर्ष की उम्र का था। टोब्या, जो इस समय युवक के भेस में थी, उसकी आयु भी बीस वर्ष से अधिक नहीं थी।

रात-भर टोब्या और उसका पिता बड़ी बेचैनी से करवटें बदलते रहे। टोब्या के पिता को यही डर था कि अगर टोब्या के लड़की होने का रहस्य जाहिर हो गया, तो इन जंगली लोगों के हाथों उसकी कैसी दुर्दशा होगी।

टोब्या ने यकीन दिलाया कि अगर उसकी अस्मत पर आंच आने लगेगी, तो वह उसी क्षण कलेजे में खंजर भोंक लेगी और जिंदा उन इंसानी भेड़ियों के हाथ नहीं आयेगी। फिर भी उसका बाप डरावने खयालों में डूबा रहा।

सुबह बादशाह अपने खेमे के बाहर आया और उसने टोब्या को बुलाकर कंधे पर हाथ रखते हुए दिलासा दिलाया—"डरो मत दोस्त। तुम्हारा कोई बाल भी बांका न करेगा।"

बादशाह ने दोनों की सवारी के लिए अपने अस्तबल से दो सुंदर घोड़े उन्हें दिये। उन पर चढ़कर टोब्या और उसके पिता ने पहाड़ी के इर्द-गिर्द चक्कर काटा। एक बार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो उनकी यह इच्छा हुई कि वे घोड़े की लगाम ढीली कर दें और उस कैद से बच निकलें । लेकिन मीलों तक फैले हुए उस टिड्डी-दल में से बचकर भाग निकलना मुमकिन नहीं था । बादशाह के जासूस उन पर कड़ी नजर रखते थे। शाम ढलने पर शाही खेमे के चारों ओर ढोल बजने शुरू हो गये। हजारों आदमी जुलूस बनाकर शाही तख्त के सामने दिल-बहलाव के करतब दिखाते हुए गुजरने लगे। अफ्रीकी भाट और चारणों ने बादशाह की तारीफ की नज्में सुनानी शुरू कीं ।

इस बाईस वर्ष के युवक बादशाह की भी अपनी कहानी है । बचपन में ही इसके मां-बाप लड़ाई में मारे गये थे । तभी से वह अपने खानदान में अकेला था । न उसके कोई भाई था, न बहन । उसके चाचा ने ही पाल-पोसकर उसे बड़ा किया था । चाचा की एक लड़की थी, जो उसकी हमउम्र थी । वे एक-दूसरे को भाई-बहन कहते थे । आपस में उनकी इतनी मुहब्बत थी कि लड़ाई के मैदान में भी चाचा की लड़की अपने भाई के साथ रहती थी । उसका तंबू भी उसके भाई के तंबू के पास ही गाड़ा जाता था ।

शाही खेमे में पांच तंबू गाड़े गये थे जिनकी हिफाजत फौज के सबसे अधिक जांबाज पांच हजार सिपाही हर समय करते थे । टोब्या और उसके पिता का तंबू भी उन्हीं तंबुओं के बीच गाड़ा गया था ।

उस दिन एलान किया गया कि बादशाह सलामत एक बड़ी दावत दे रहे हैं । शाही फौज के सब कमांडर उस दावत में शरीक हुए । खाना खाने और नाच-गाने के बाद बादशाह ने जो एलान किया, उसमें कहा- "मैं इस देश में तबाही के लिए नहीं आया; बल्कि एक कौम बनाने के लिए आया हूं। मैंने तय किया है कि युद्ध के मैदान में गिरफ्तार हुए सनिकों पर जुल्म न किया जाये । मैंने यह हुक्म दिया है कि ऐसे सब बंदी रिहा कर दिये जायें, जो अपने देश की खातिर लड़ रहे थे, अथवा जिन्हें सिर्फ ड्यूटी होने के कारण गिरफ्तार किया गया है। हर आदमी को अपने वसूलों के मुताबिक जिंदा रहने का हक है । आगे से हम किसी गैर मजहबवाले पर कोई जुल्म नहीं करेंगे। हमारी सल्तनत में हर मजहब को इज्जत से देखा जायेगा । हम किसी का पक्ष-पात नहीं करेंगे और सबके साथ न्याय का व्यवहार किया जायेगा । "

इस एलान के बाद बादशाह ने वहीं अपने राज्य की राजधानी बसाने का संकल्प कर लिया । कोई यह नहीं कह सकता था कि बादशाह के इरादों में ऐसी तब्दीली कैसे आयी ? मगर यह सब जानते थे कि जब से बादशाह और टोब्या की दोस्ती हुई, तब से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसका दिल बदल गया है।

निर्मम हत्याओं से खुश होनेवाला बादशाह अब अपनी फौज के हर आदमी को रहम की नजर से देखता था। सब लोग इसका श्रेय टोब्या को देते थे। टोब्या बादशाह के लिए फरिश्ता बनकर आयी थी।

एक दिन बादशाह ने टोब्या और उसके पिता को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया। उसके आने पर बादशाह ने कहा—"देखो नौजवान, मैं तुम्हें अपने सब राजकीय कार्यों में पूरी साझेदारी देना चाहता हूं। तुम मेरी फौज के ही हाकिम नहीं होगे, बल्कि मेरे दोस्त और सच्चे साथी बनकर रहोगे।"

टोब्या ने इसका कोई जवाब नहीं दिया। वह अपने बाप की ओर देखती रही। बाप ने बात टालने के लिए कहा—"हम दरबारी रस्मोरिवाज से बिलकुल वाकिफ नहीं हैं। इसलिए हमें माफी दी जाये। आप हम पर इतने रहमदिल हैं, तो मेहरबानी करके हमें अपने देश वापस जाने की इजाजत दें।"

बादशाह ने कहा—" अगर आप और आपके लड़के टोब्या को हमारे साथ रहना मंजूर न होगा, तो हम जरूर आपको अपने मुल्क में बाहिफाजत वापस भिजवा देंगे। मगर मुझे खुशी होगी, अगर टोब्या मेरे साथ रहे।"

टोब्या के बाप ने कहा—"मेरा दूसरा लड़का वाहिद एक साल पहले इसी मुल्क में कहीं खो गया है। वह भी टोब्या की ही उम्र का था। हम उसी की तलाश म आये हैं। अगर आप हम पर रहम करना चाहते हैं, तो उसकी तलाश में मदद कीजिये। उसके बाद आप जैसा कहेंगे, हम खुशी से मंजूर करेंगे।"

× × ×

बादशाह की चचेरी बहन ने जब से टोब्या को देखा था, तभी से उसके मन में टोब्या के लिए गहरा प्रेम पैदा हो गया था। टोब्या के सामने आने पर वह अपलक उसे देखा करती और उसके जाने के बाद बादशाह से कहती—"टोब्या बहुत ही सुंदर जवान है। काश वह काफिर न होता।"

उसे यह न मालूम था कि टोब्या भी लड़के के भेस में लड़की ही है। दरबार के दूसरे आदमियों की नजर से बादशाह की बहन का यह प्रेम छिप न सका। उन्होंने ऐसी साजिश की कि टोब्या बादशाह की बहन से न मिल सके।

बादशाह का विदूषक टोब्या के पास पहुंचा और बोला—"बादशाह सलामत तुम्हें बुला रहे हैं।"

टोब्या जब बादशाह के तंबू में पहुंची, तो बादशाह का चाचा वहां आ गया और उसने सरे दरबार में यह मशहूर कर दिया कि टोब्या राजकुमारी के तंबू में नाजायज तरीके से घुसा हुआ था। बादशाह के चाचा ने बादशाह को मजबूर किया कि वह टोब्या को इस गुनाह की सजा दे। इसकी सजा केवल मौत हो सकती थी।

टोब्या जब बादशाह के पास पहुंची, तो उससे सवाल पूछा गया—"तुम राजकुमारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के तंबू में कैसे पहुंचे ?"

टोब्या राजकुमारी को बेदाग रखना चाहती थी; इसलिए वह चुप रही। बादशाह गुस्से से लाल हो गया। मगर इस बीच टोब्या का बाप आ गया और उसने दरख्वास्त की—"हमें बादशाह से तनहाई में मिलने की इजाजत दी जाये।"

बादशाह के हुक्म से सब दरबारी बाहर चले गये। तब टोब्या के बाप ने कहा—"इस गुनाह की सफाई तब तक नहीं हो सकती, जब तक आप पूरी कहानी न सुन लें। मगर उससे पहले हम आपसे दरखास्त करेंगे कि अगर कहानी के दौरान कोई गुस्ताखी की बात कही जाये, तो माफी दी जाये।"

बादशाह ने वचन दिया कि उनका राज जाहिर नहीं किया जायेगा। बादशाह से अभय पाकर टोब्या के पिता ने सारी कहानी शुरू से आखिर तक सुना दी, जिससे यह भी जाहिर हो गया कि टोब्या लड़का नहीं, लड़की है।

टोब्या की बहादुरी जानकर बादशाह बहुत खुश हुआ। मगर दरबारियों पर यह जाहिर करने के लिए कि वह टोब्या के गुनाहों की सजा दे रहा है, उसने टोब्या और उसके बाप की नजरबंदी का हुक्म दे दिया और कहा कि इन पर कड़ा पहरा रखा जाये। इन्हें अपने खेमे से बाहर एक कदम भी न जाने दिया जाये।

लेकिन टोब्या के बाप को अलग बुलाकर उसने अनगिनत अशर्फियां दीं और वचन दिया कि उन पर कोई आंच नहीं आयेगी। खेमे के अंदर वे बड़े चैन से रह सकेंगे।

बादशाह की चचेरी बहन को जब टोब्या की नजरबंदी का हाल मालूम हुआ तो वह बहुत रोयी। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। दिन-रात वह टोब्या की याद में आहें भरती रहती।

इसी तरह बहुत दिन बीत गये। बादशाह को अपना वचन याद था। वह टोब्या के भाई की तलाश में अपने दूत भेज चुका था। उसने एलान कर दिया था कि किसी से आनेवाला हर काफिला उसके तंबू के सामने से गुजारा जाये, जिससे टोब्या का बाप को वाहिद की शिनाख्त करने का मौका मिल जाये।

बहुत दिन बीतने पर भी जब किसी काफिले में वाहिद की सूरत नजर न आयी तो टोब्या और उसके बाप बड़े मायूस हुए। लेकिन मायूसी के ये बादल भी एक दिन छंट गये। उस दिन मिस्र से वापस आता हुआ एक काफिला बादशाह के तंबू के सामने से गुजर रहा था। उस काफिले में टोब्या ने अपने भाई को पहचान लिया। उसे अपनी आंखों पर यकीन न आया। मगर दिल ने गवाही दी और वह बेबस दौड़ती हुई वाहिद के गले से लिपट गयी। बाप ने भी बेटे को पहचान लिया। वाहिद बाप के कदमों से लिपट गया। तीनों की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली।

बादशाह ने दूरबीन से देखा, तो वह भी टोब्या और उसके बाप के साथ वाहिद का मिलन देखकर खुश हुआ। उसने हुक्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया कि वाहिद और टोब्या को उसके सामने पेश किया जाये। जिस व्यापारी के साथ वाहिद आया था, उसे बादशाह ने भरपूर इनाम दिया।

वाहिद को बादशाह ने कहा—"तुम मेरे साथ हमेशा के लिए मेरे महल में रहो। मैं तुम्हें बड़े आराम से रखूंगा।"

वाहिद ने जवाब दिया—"मैं आपकी मदद के लिए शुक्रगुजार हूं। मगर मेरा मकसद अभी पूरा नहीं हुआ। जिस व्यापारी ने एक लाख अशर्फियां देकर मेरे बाप को गुलामी से छुड़वाया था, वह अभी तक लापता है। मैं उसकी खोज करने के बाद ही चैन से बैठ सकूंगा। आप उसकी तलाश में मेरी मदद करें, तो मैं उम्र-भर आपका गुलाम बन जाऊंगा।"

बादशाह ने ढिंढोरा पिटवा दिया—"मेरी सल्तनत में जितने भी व्यापारी हों, वे सब मेरे सामने हाजिर किये जायें। मैं उनके लुटे हुए सब माल-असबाब को वापस कर दूंगा। और उन्हें आने-जाने की सारी सहूलियतें दी जायेंगी।"

बादशाह की बहन को वाहिद के आने की कोई खबर नहीं थी। एक दिन बादशाह खुद अपनी बहन के पास गया और बोला—"अगर तुम टोब्या से प्रेम करती हो, तो मैं फिर उसे शाही नौकरी में रख लूंगा और उसके गुनाहों की माफी दे दी जायेगी।"

बहन यह सुनकर बड़ी खुश हुई। उसने कहा—"मुझे अपनी जिंदगी में कोई जवान इतना अच्छा नहीं लगा, जितना टोब्या। मेरे साथ ही उसकी शादी कर दी जाये, तो मुझे कुछ और नहीं चाहिये। मैं उसके बिना चैन से न जी सकूंगी।"

बादशाह को खुद टोब्या से प्यार था। अपनी खूंख्वार जिंदगी में कभी किसी से प्रेम किया था, तो केवल टोब्या से। टोब्या ने बादशाह की जिंदगी को नया मोड़ दिया था। जब से वह आयी थी, तब से बादशाह की जिंदगी बदल गयी। अपने खून के प्यासे बर्बर साथियों के साथ रहते-रहते वह भी खूंख्वार जानवरों की तरह खून का प्यासा हो गया था। मगर टोब्या को देखकर उसके इंसानी जज्बात जाग उठे थे।

जब वह सामने होती थी, तो बादशाह के दिल में रहम, हमदर्दी और मुहब्बत के जज्बात खिल उठते थे। बिलकुल वैसे ही, जैसे सूखे पहाड़ की काली चट्टान की गोद में कोई रंगीन फूल खिल उठता है। टोब्या उसकी अंधेरी दुनिया का चिराग थी। वह उसे अपनी रानी बनाना चाहता था। लेकिन अब वह अपने दरबारियों के डर से टोब्या से खुलकर नहीं मिल सकता था। उसके सामने टोब्या का यह राज भी खुल चुका था कि टोब्या युवक नहीं, युवती है।

टोब्या से भेंट न होने पर वह प्रायः रोज उसका हाल वाहिद से ही पूछ लिया करता था। इस बीच बादशाह के हुक्म से हजारों व्यापारी शाही खेमे के सामने पेश किये जाते रहे। बादशाह ने वाहिद को खेमे के दरवाजे पर ही बैठा दिया था, जिससे वह आनेवाले व्यापारियों में से अपने पिता को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छुड़ानेवाले रहमदिल व्यापारी की शिनाख्त कर सके। वाहिद वहां बहुत दिन बैठा रहा, हजारों व्यापारी उसकी नजर के सामने से गुजर गये; मगर जिसकी उसे तलाश थी, वह न आया।

× × ×

एक दिन जब वह बिलकुल निराश हो चुका था, उसने देखा कि कुछ दूर एक आदमी फटे चीथड़ों में बैठा है। भूख और प्यास से उसके ओंठ सूख गये थे, चेहरे पर झुर्रियां लटक आयी थीं। वाहिद उसके पास गया। नजदीक पहुंचने पर उसे कुछ शक हुआ कि उसका चेहरा बिलकुल वैसा था, जैसा दो साल पहले उस व्यापारी का, जिसने उसकी मुट्ठी में चालीस अशर्फियां रख दी थीं। लेकिन वह तो बड़े भारी काफिले का सरदार था। मुमकिन है, यह उसका भाई हो। इसी सोच-विचार में उलझे हुए वाहिद ने उससे पूछ लिया—"तुम कौन हो? कहां से आये हो?"

वाहिद को सामने देखकर उस बूढ़े आदमी की आंखों से आंसू टपक पड़े। उसने वाहिद को पहचानकर गले लगा लिया और बोला—"बेटा, मैं जब पहली बार तुम्हें मिला था, तो लाखों अशर्फियों का मालिक था। मगर इस काली फौज के खूंखार लुटेरों ने मेरा सब कुछ लूट लिया और मुझे नंगा करके इन सूखी पहाड़ियों में भटकने को छोड़ दिया। अब मैं बिलकुल बेसहारा और बेघरबार आदमी हूं।" वाहिद ने जैसे ही उसे पहचाना, उसके पैर पकड़ लिये। वाहिद की खुशी का ठिकाना न रहा। मगर अपने मुक्तिदाता को ऐसी हालत में देखकर उसका दिल बैठ गया। मन-ही-मन उसने संकल्प कर लिया कि वह उसका सहारा बनकर रहेगा। उसने कहा दिया—"फिक्र न करो, मेरे उपकारी व्यापारी! मैं तुम्हारी सारी खोयी हुई दौलत लौटवाकर दी दम लूंगा। तुमने मेरे बाप को गुलामी से छुटकारा दिलाया है। मुझ पर तुम्हारा इतना बड़ा कर्ज है कि मैं जान देकर भी उसे उतार नहीं सकूंगा। आओ, मेरे साथ चलो। मैं इस मुल्क के बादशाह को जानता हूं, जिसके सैनिकों ने तुम्हारी दौलत लूटी। मुझे पूरा भरोसा है कि बादशाह तुम्हारे साथ न्याय करेगा।

वाहिद के साथ वह व्यापारी बादशाह के सामने पेश हुआ। बादशाह ने पूछा—"तुम्हारे लूटे हुए माल की क्या कीमत थी?" व्यापारी ने ठीक-ठीक कीमत का अंदाजा बता दिया। वह स्वप्न में भी यह नहीं सोच सकता था कि बादशाह उसके लूटे हुए माल की कीमत अदा करवा देगा। मगर बादशाह का हुक्म सुनकर वह हैरान रह गया। खजाने से उसकी एक-एक पाई अदा कर दी गयी।

व्यापारी को लाखों अशर्फियां देने के बाद बादशाह ने वाहिद को बुलाकर कहा—"मैंने तुम्हारी सारी मुरादें पूरी कर दीं। अब तुम्हारी बारी है। मैं भी तुमसे एक मांग करूंगा। क्या उसे पूरी करोगे?"

वाहिद और उसके बाप ने कहा—"बाद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाह सलामत, हम आपकी मांग पूरी करने-वाले कौन होते हैं ? आप हमारे बिना भी दुनिया की हर चीज हासिल कर सकते हैं।"

बादशाह ने कहा—"मैं ताकत से दुनिया की हर चीज हासिल कर सकता हूं। लेकिन जो चीज मैं मांग रहा हूं, वह ताकत से नहीं मुहब्बत से मिलती है। और मुहब्बत के लिए किसी को मजबूर नहीं किया जा सकता।"

टोब्या के बाप ने कहा—" आप हमें शर्मिंदा न करें। हम आपके अहसान कभी न भूलेंगे। मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूं, आप जो भी चाहें, ले लीजिये।"

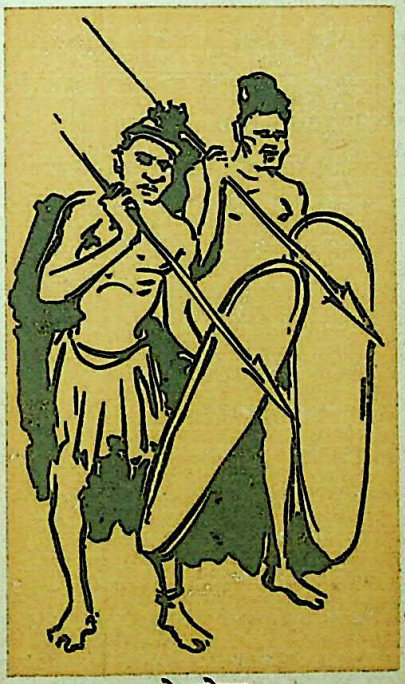

दो योद्धा

बादशाह बोला—"मेरी जिंदगी की यह सबसे बड़ी ख्वाहिश है कि टोब्या मेरी मलिका बनकर रहे और वाहिद मेरी बहन से शादी करके खुशी की जिंदगी गुजारे। मेरी बहन से जो शादी करेगा, वही इस सल्तनत का वारिसदार होगा। जब तक मैं जीता रहूंगा, तब तक वह मेरा दायां हाथ रहेगा।"

वाहिद बादशाह की तजवीज सुनकर हक्का-बक्का रह गया। राजकुमारी से अभी तक उसका कोई परिचय भी न हुआ था। उसकी बहन टोब्या को पुरुष-वेश में देखकर ही राजकुमारी उस पर मुग्ध हो गयी थी। टोब्या और वाहिद शक्ल-सूरत से एक-जैसे थे; मगर दोनों का मन तो जुदा-जुदा था। उनके विचार, स्वभाव, संस्कार सभी एक दूसरे से भिन्न थे। कहीं समानता और अनुकूलता न थी।

टोब्या भी बादशाह के प्रति वैसी अनुरक्त न थी कि शादी की बात सोचे। बादशाह जवान था, सुंदर था; मगर उसके संस्कार बिलकुल जुदा थे। उसका धर्म भी अलग था। धर्म पर उसका विश्वास ही न था। किसी एक ईश्वर को मानना उसके लिए नयी और अजीब बात थी। उसके खानदान के पुरखे अपने को ही ईश्वर मानना पसंद करते थे। ऐसे नास्तिक व्यक्ति से टोब्या जैसी धर्मभीरु लड़की कैसे शादी कर सकती थी? फिर भी वह एकदम इंकार न कर सकी। बादशाह के अहसानों से वे इतना दबे हुए थे कि इस तरह इन्कार करना क्रूर कृतघ्नता होती। स्वभाव से ही वह नरमदिल और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहसान माननेवाली लड़की थी। उसकी जुबान पर 'हां' और 'ना' दोनों एक साथ आते थे। मगर पूरे दिल से वह कुछ भी कह न पाती थी।

अपने बाप से उसने सलाह-ली, तो उसने आमने-सामने कुछ भी कहने के बजाय चिट्ठी लिखकर इन्कार कर देने का उपाय सुझाया।

अपने अब्बा के कहने पर टोब्या ने बादशाह को जो पत्र लिखा, उसमें साफ ही लिख दिया –" मैं आपकी उदारता, सहृदयता और अनुकंपा के लिए सदा कृतज्ञ रहूंगी। आपका प्रेम मेरे जीवन की सबसे मूल्यवान निधि है। किंतु मैं इतने बड़े गौरव की अधिकारिणी नहीं हूं। मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया, जो मुझे इस महान पुरस्कार के योग्य बना सके। उपकार सब आपने ही किये हैं। हम उसके बदले में कुछ भी नहीं दे पाये हैं और न ही कभी दे पायेंगे। हमारी हैसियत ही क्या है? आप बादशाह हैं और हम बिलकुल मामूली इंसान! मैं आपकी मलका बनने लायक कभी नहीं हो सकूंगी। न तो मैं राजमहलों के तौर-तरीकों से वाकिफ हूं और न राजघरानों के सलीकों की मुझे जानकारी है। और सबसे बड़ी बात यह है कि मैं ईसू मसीह पर विश्वास करनेवाले से ही शादी कर सकती हूं। यह विश्वास मेरी सांस-सांस में रमा हुआ है। अविश्वास की एक चिनगारी भी मुझे भस्म कर देगी। उसके विषैले धुएं में एक क्षण भी जिंदा नहीं रह सकूंगी।..... आपकी मुझ पर कृपा है, तो मेहरबानी करके हमें अपने जाने की इजाजत दीजिये। मैं आपके उपकार को कभी नहीं भूलूंगी। मेरे में आपके लिए अपार श्रद्धा है। उसे रखिये। यही प्रार्थना है मेरी।'

टोब्या ने खत लिखकर वाहिद को दिया और ताकीद करा दी कि बादशाह बिलकुल अकेले हों, तभी दिया जाये।

खत पढ़कर बादशाह का चेहरा गया। उदासी-भरे दिल से उसने लंबी सांस ली। टोब्या की विदाई का खयाल भी तड़पा देता था। खत पाने के बाद उसकी जिंदगी बदल गयी। न उसे दरबार में दिलचस्पी रही, न राजपाट में। उसने सब प्रकार के जश्न बंद करवा दिये। शराब की महफिलों पर ताले पड़ गये। दरबार में चेमेगोइयां शुरू हो गयीं। फौजी कवायद बंद हो गयी। आगे कूच करने का खयाल काफूर हो गया। वजीरों में बगावत की हवा फैलने लगी।

बादशाह को उसके चाचा ने समझाया, मगर उसका दिल काबू से बाहर हो चुका था। टोब्या के बिना उसकी दुनिया सूनी हो गयी थी। सांस लेना भी दूभर हो गया था।

आखिर उसने वाहिद को कह दिया– "मैं टोब्या के बिना जिंदा नहीं रहूंगा। मेरा धर्म-कर्म सब टोब्या पर निछावर है। मुझे उसकी सब शर्तें मंजूर हैं–जिस देवता के आगे उसका माथा झुकेगा, वही मेरा खुदा होगा। मैं ईसू मसीह को पैगंबर मानने को तैयार हूं। जब मैं उसका हो गया, तो उसका धर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा धर्म हो गया।"

वाहिद से कहकर उसने एक पादरी बुलाया, जो बादशाह को बाइबल की तालीम देने लगा, ख्रिस्तानी धर्म के बुनियादी उसूल बताने लगा। टोब्या को जब बादशाह के ख्रिस्तान बन जाने की खबर मिली, तो उसका दिल पसीज गया। बादशाह की कुर्बानी ने टोब्या का दिल जीत लिया। टोब्या ने वाहिद के हाथों शादी मंजूर करने का पैगाम भेज दिया।

शादी से पहले ही बादशाह ने एलान कर दिया कि आगे से किसी ईसाई को गुलाम नहीं बनाया जायेगा।

शादी का दिन मुकर्रर होने पर शाही खेमे के नजदीक एक मैदान में लंबा-चौड़ा शामियाना गाड़ा गया। शाही दावत के लिए सैकड़ों मन 'वाट' तैयार हुआ। एक लाख 'शांखिल्ला' (नीग्रो सिपाही) सिर पर लाल 'नटर्बूश' बांधकर और हाथों में चमकती तलवारें लेकर जुलूस में चले।

बादशाह ने तय किया कि उसकी शादी टोब्या से और वाहिद की शादी बादशाह की बहन से एक दिन ही की जाये। अभी तक बादशाह ने अपनी बहन के सामने टोब्या के भेस बदलने का राज नहीं खोला था। वाहिद को टोब्या कहकर जब उसके सामने लाया गया, तो उसने इतना ही कहा—"टोब्या अब पहले से अधिक मजबूत और ताकतवर मर्द दिखाई देता है, बादशाह।" बादशाह अपनी बहन के भोलेपन पर मुस्कराता हुआ बोला—"अब यह टोब्या नहीं, वाहिद नाम से पुकारा जायेगा। मैंने इसे नया नाम दिया है। क्योंकि 'वाहिद' का का मतलब है 'एक' या इतना संयुक्त कि अनेक होकर भी 'एक' दिखाई दे। मैंने उसे यह नाम इसलिए भी दिया है कि अब हमारे मुल्क इथियोपिया में ईसाई और हब्शी मुसलमान भी 'एक' सी जिंदगी बितायेंगे। वे अब जुदा-जुदा मजहबों के रहते हुए भी 'एक' रहेंगे।

★

पुरुष और स्त्री

दांपत्य मनुष्य की सबसे स्वाभाविक स्थिति है; इसलिए मनुष्य के सच्चा सुख पाने की सबसे अधिक संभावना इसी स्थिति में है।

पुरुष और स्त्री मिलकर परिपूर्ण मनुष्य बनते हैं। अलग रहते हुए, स्त्री में पुरुष के शारीरिक बल और तर्क-शक्ति का अभाव होता है; पुरुष में स्त्री की मृदुता, संवेदनशीलता और सूक्ष्म विवेक की कमी रहती है।

अविवाहित मनुष्य की उतनी कीमत नहीं, जो कि दांपत्य में होती है। वह अपूर्ण प्राणी है। वह कैंची के अकेले फाले की तरह है।

अगर आपको समझदार, स्वस्थ पत्नी मिल जाये, तो उसकी किफायतशारी की कृपा से उद्योग-धंधों में आपका परिश्रम ही बहुत बड़ी पूंजी बन जायेगा। —बेंजामिन फ्रैंकलिन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी कल्पना का सुख

जीवन के अत्यधिक दुःखी क्षणों में अनायास ही मुखर हुआ—जीवन में सुख कहां? कि जब स्वस्थ क्षणों में सुख के स्वरूप की कल्पना करने बैठा, तो निराकार ब्रह्म की तरह उसका स्वरूप इतना विराट होता चला गया कि भयभीत होकर मैं अपनी छोटी-सी दुनिया में भाग आया।

मेरी दृष्टि भौतिक उपलब्धियों से पूर्ण उन सामंतों, पूंजीपतियों और उत्तरदायित्व से अधिक अधिकारों में मत्त अफसरों के वैभवसंपन्न जीवन के चारों ओर घूमी, तो ईर्ष्या के भोलेपन को रखते हुए भी उन्मुक्त होकर बोली—इन्हें जिन वस्तुओं का अभाव खटक रहा है, उनकी कल्पना करना भी तुम्हारी कल्पना से परे है। ये अपनी उपलब्धियों को भोगने में उतने सक्रिय नहीं हैं, जितने उसके स्रोत को विस्तृत करने में।

मैंने फिर अपनी कल्पना के सुख की व्याख्या ढूंढ़ी, तो मेरी दृष्टि अभावों की दुनिया में पलनेवालों की ओर, शहरों से गांवों तक पहुंची और उनके चारों ओर विषाक्त वातावरण को देखते हुए भी उसने देखा कि वे अपने बहुत से क्षणों में संपन्नों से कहीं अधिक उन्मुक्त सुख का आनंद लेते हैं। खेतों में प्रतिध्वनित होते हुए ऊंचे स्वर के बिरहे, प्रकृति से प्राप्त लोक-नृत्य और श्रद्धा से भरे श्रमिक बस्तियों के बीच भजन और कीर्तन जो सुख बांट देते हैं, वे 'पिकनिक' के क्षेत्रों में यहां-वहां रखे हुए कीमती ट्रांजिस्टर और कोठियों पर आयोजित फिल्मी सितारों की महफिल भी नहीं बांट पातीं।

मैंने अपनी कल्पना के सुख का जब अंतिम स्वरूप ढूंढ़ा, तो मुझे लगा कि मैं कहूं-सुख किसी विशेष उपलब्धि से प्राप्त होनेवाली वस्तु नहीं, वरन वह तो किसी विशेष मनःस्थिति के बीच प्राप्त होनेवाली वस्तु है।

हम अपने चारों ओर बिखरी परिस्थिति को जिस रूप से ग्रहण करते हैं, वस्तुतः उसी रूप में हमें सुख अथवा दुःख का अनुभव होता है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये, तो सुख और दुःख अपने में कुछ भी नहीं हैं, भेद तो उसके ग्रहण करने में है। संपन्नता में भी दुःख व्याप्त हो सकता है और विपन्नता में सुख की अनुभूति हो सकती है।

इसी प्रकार सुख केवल अपने सुख में नहीं, पराये सुख को देखकर भी सुख मिलता है। इसलिए मेरी कल्पना का सुख तभी उदित हो सकता है, जब हमारे घर, मोहल्ले, नगर, प्रदेश और देश में जन-जन के लिए भोजन, वस्त्र, आवास और शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था हो जाये, क्योंकि नितांत दार्शनिक बनकर चलने से भी तो सुख की वास्तविक उपलब्धि नहीं होती।

—कैलाश कल्पित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मरीचिकाओं का आगर

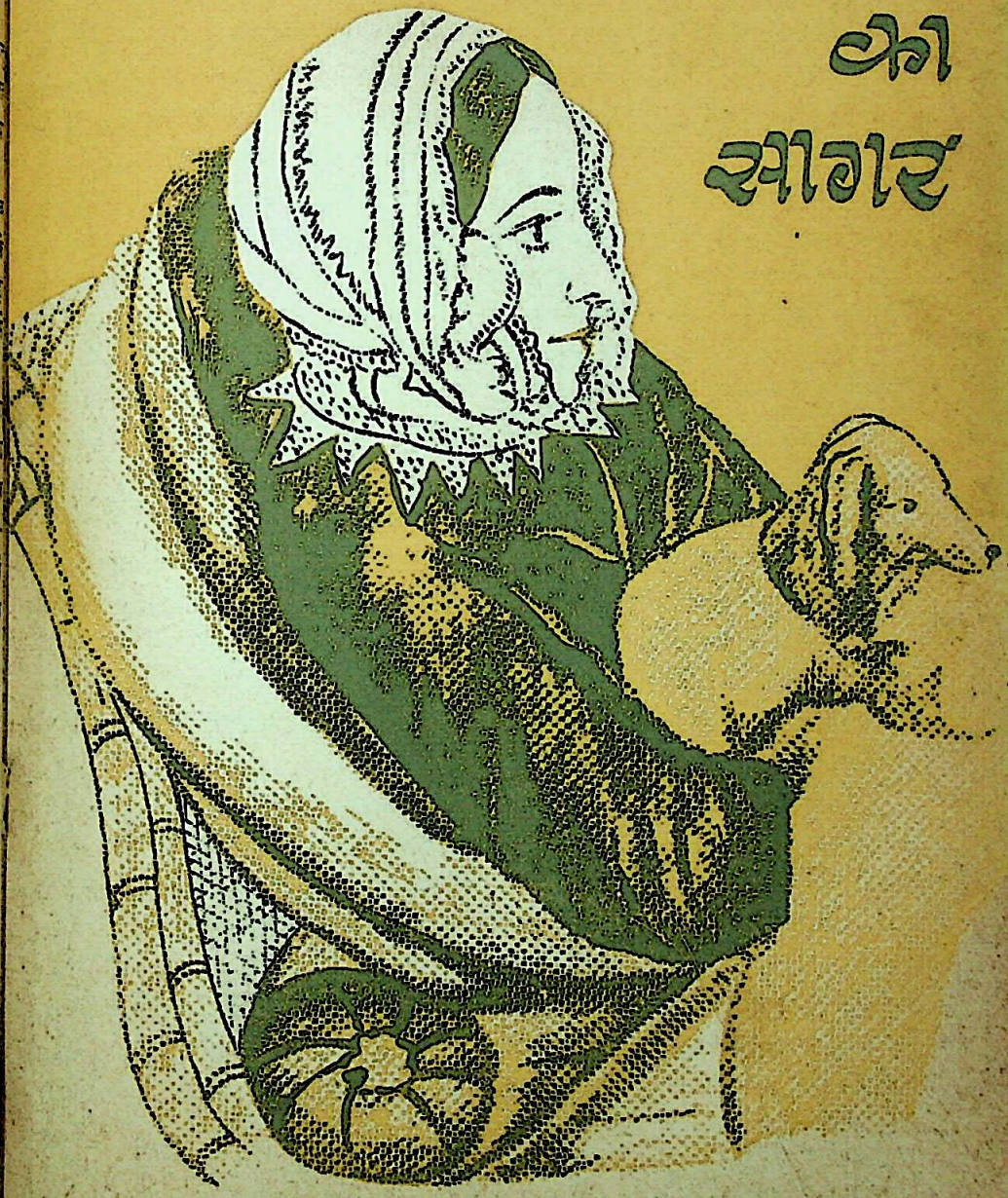

पर्ल बक की एक मर्मस्पर्शी कहानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंगन का दरवाजा खोलने से पहले मिस एमी जरा रुकी। जाड़ों की सूखी, ठंडी हवाओं से वह बहुत डरती थी।

दरवाजे में लगे शीशे से झांकते हुए वह बोली—"मई और जून के महीने भी तो मुझे अच्छे नहीं लगते।"

आंगन में हल्की पीली रोशनी फैली हुई थी। उसका कद इतना छोटा था कि पैर के पंजों पर खड़े होकर भी आंगन में लगे चीड़ के पेड़ को देख नहीं सकती थी। आज का तूफान पीकिंग में नवंबर के महीने में आने-वाले तूफान से भी ज्यादा भयानक था। लकड़ी के सीखचों पर हाथ रखकर, वह बोली—"मुझे आज अवश्य जाना चाहिये।"

फिर उसके चेहरे पर परेशानी की रेखाएं खिंच गयीं। वह धूल में दौड़ती हुई जाये और खपरैलों से चोट खाने का खतरा मोल ले, या बरामदे से होकर धीरे-धीरे जाये? वह आज दौड़कर जाना नहीं चाहती थी। लेकिन जाना तो उसे था ही। स्कूल की घंटी बजी और उसने आंगन में लड़कियों को आते देखा।

धीरे से वह बोली—"हे भगवान, कृपया..."

यह प्रार्थना का शुरू का पद था, जिसे आजकल वह रोज गाती थी; पर कभी खत्म नहीं कर पाती थी। वह प्रार्थना बराबर करती थी और भगवान के आगे सब-कुछ कह डालती थी। लेकिन आज उसने शुरू के पदों के अतिरिक्त और कुछ नहीं गाया। वह किसी को पुकारना चाहती थी; पर वहां उसके अलावा और कोई था ही नहीं। उस बात को तो वह भगवान से भी नहीं कह सकती थी। स्कूल और मिशन का काम भी तो ईश्वर का ही था।

तूफान का वेग बढ़ता जा रहा था। धूल अंदर आ रही थी। बालू उसके फेंफड़ों में पहुंच रही थी। उसने सांस रोककर, दर-वाजा ठीक से बंद कर दिया। यहां कुछ अच्छा था। उसने रूमाल से अपनी आंखें पोंछी। आठ लड़कियां बैठीं, उसका इंत-जार कर रही थीं। वे मिशन स्कूल का दिया हुआ नीचा सूती कोट पहने थीं। वे सब उसे देखने लगीं। उनकी आंखों में चमक नहीं थी। वह फिर कुछ घबरा गयी। वह 'सी' कक्षा को पिछले सोलह वर्षों से बाइ-बिल पढ़ा रही थी, फिर भी वह छात्राओं से डरती थी। उनमें से कोई भी उस विषय में दिलचस्पी नहीं लेती थी।

वह मेज के पीछे बैठ गयी। उसकी मेज कुछ ऊंची थी। बाइबिल खोलकर, वह बोली—"आज हमें ईश्वर के दस आदेश पढ़ने हैं।"

दिन-भर वह यहां बैठी रहती थी। एक के बाद दूसरी कक्षा की लड़कियां यहां आकर उससे पढ़ती थीं। कमरा बहुत ठंडा हो चला था। हवा परदों को फाड़-फाड़कर अंदर घुसने का प्रयत्न कर रही थी, और दरवाजों में धूल भर रही थी। मेज पर बालू की मोटी तह जम गयी थी। उसके हाथ ठंड से फटे जा रहे थे। किताब के पन्ने भी बाजू से खुरदरे हो चले थे। दरवाजे के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीशे से सूरज साफ दिख रहा था, धूमिल-सा पीले आकाश में।

दोपहर के समय उसे फिर आंगन से होकर खाने के कमरे में जाना पड़ेगा। मिस बेन्टन के साथ खाना खायेगी। खाने में कंकड़ पड़े होंगे। बेन्टन खाते समय चुप ही रहती थीं। यदि वे कभी बातें करती भी थीं, तो केवल लकड़ी के दाम के बारे में, या इस संबंध में कि खाने का खर्चा कैसे कम किया जाये, या किस प्रकार बावर्ची ज्यादा पैसे लेना चाहता है, या किस प्रकार सरकार धर्म की शिक्षा के विरुद्ध कानन बना रही है। और एमी फौरन बोल पड़ती थी—"हे भगवान, कृपया..."

उस दिन पहली बार एमी ने गंभीरतापूर्वक मिस्टर जोन्स के बारे में सोचा था। बेन्टन से बात करते समय, यह देखकर कि वे भद्दी हैं, उसे मिस्टर जोन्स का खयाल आया था। वे बड़ी कुरूप थीं। उनके सिर के थोड़े-से बाल भी सफेद हो चले थे। उनकी त्वचा काली हो गयी थी। इस हवा और बालू में वे अपने जीवन के चालीस वर्ष काट चुकी थीं। एमी ने दुःखित होकर, सोचा—"बीस वर्ष बाद मैं भी ऐसी ही दिखने लगूंगी।"

उसे याद आया कि आजकल भी उसे कोल्डक्रीम लगाने में कम मेहनत नहीं करनी पड़ती। वह रात में कितनी थकी होती थी, फिर भी उसे कोल्डक्रीम लगानी पड़ती ही थी। पर इतना करने पर भी उससे मिलने के लिए शायद ही कोई आता हो। कभी-कभी तो वह सोचती थी कि प्रार्थना करने से कोल्डक्रीम लगाना कहीं अच्छा है। पर वह प्रार्थना करना कभी छोड़ नहीं सकी। किसी भी समय वह अपने आपको बेन्टन-जैसी देखना नहीं चाहती थी। जोन्स भी मुश्किल से दिन में तीन बार ही उसकी तरफ देखते थे।

उसने सोचा—"मैं भी शायद ..."

और इस तरह उसे मिस्टर जोन्स का ध्यान आना शुरू होता।

वह अक्सर उनके बारे में दोपहर के बाद स्कूल में सोचा करती थी। वह सोचती थी कि अब मिस्टर जोन्स अपनी कोठी में लायब्रेरी में बैठे पढ़ रहे होंगे। उस कोठी में वे एक लंबे अर्से से मिसेज जोन्स के साथ रहते थे। मिजेस जोन्स की मृत्यु पिछले महीने हुई थी।

मिस्टर जोन्स ने जब एमी को पत्र लिखा था, वह अपने कमरे में बैठी पढ़ रही थी। उस किताब को वह गुप्त रूप से पढ़ती थी। और पढ़कर उसे रसोईघर में छिपा देती, ताकि बेन्टन उसे देख न सकें। जब वह पढ़ने बैठती थी, तो अंदर से दरवाजा बंद कर लेती थी, क्योंकि बेन्टन की आदत बिना पूछे अंदर चले आने की थी। इसी कारण एक बार एमी को झूठ भी बोलना पड़ा था।

बेन्टन ने पूछा था—"अंदर से दरवाजा क्यों बंद कर रखा है?" और एमी ने उत्तर दिया था—"मैं कपड़े बदल रही थी।"

वास्तव में वह कपड़े नहीं बदल रही थी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल्कि वही किताब पढ़ रही थी।

उस किताब में एलिजाबेथ बैरेट ब्राउनिंग के कुछ गीत थे। यह किताब बहुत-सी दूसरी पुरानी किताबों के साथ अमरीका से आयी थी। उनको छांटते समय बेन्टन ने इस किताब को देखकर कहा था—"यहां रद्दी किताबों की जरूरत नहीं।" एमी ने तब इसे उठाकर अलग रख दिया था। बाद में इस किताब को वह अपने कमरे में उठा ले गयी थी। उस किताब में एलिजाबेथ और राबर्ट ब्राउनिंग की तस्वीरें थीं। वह उन्हें ध्यानपूर्वक देखा करती थी; क्योंकि अपने नगर ओहियो के एक हाई स्कूल में अंग्रेजी के एक अध्यापक ने उससे कहा था कि वह बिलकुल एलिजाबेथ ब्राउनिंग की तरह दिखती है। अभी तक उसने एलिजाबेथ ब्राउनिंग की तस्वीर नहीं देखी थी। उसके घुंघराले बालों से घिरे चेहरे को वह बराबर देखा करती थी, यद्यपि उसकी शक्ल अच्छी नहीं थी। उन कविताओं को पढ़ने के बाद वह सचमुच अपने को एलिजाबेथ ब्राउनिंग जैसी समझने लगी थी। पर वह राबर्ट ब्राउनिंग की तस्वीर को ज्यादा ध्यान से देखती थी। एक दिन जब उसे यकीन हो गया कि बेन्टन सो गयी होंगी, तो वह शीशे के सामने आकर अपने बालों को उंगलियों में लपेटकर घुंघराले करने का प्रयत्न करने लगी। उस तरह के घुंघराले बालों में वह सचमुच एलिजाबेथ ब्राउनिंग की तरह ही दिखती थी। क्षण-भर बाद ही बालों में फिर कंघी करके, वह जाकर बिस्तर पर सो रही थी।

× × ×

जब मिस्टर जोन्स का पत्र आया था तब वह वही किताब पढ़ रही थी। यह कारण था कि वह पत्र इतना महत्वपूर्ण हो गया था। वह उस किताब को कई बार पढ़ चुकी थी, फिर भी उसका मन उसे पढ़ने से ऊबता नहीं था। खाना खाने के बाद वह अपने कमरे में गयी और दो बजे तक वह किताब पढ़ती रही। बहुधा सोने के पहले भी वह उस किताब को थोड़ी देर तक पढ़ा करती थी। वह किताब मधुर थी—प्रेम की तरह! वह उस किताब की पंक्तियों में उन युगल प्रेमियों को देख सकती थी—राबर्ट लंबा और सुंदर; एलिजाबेथ, नाटी और घुंघराले बालोंवाली। उस जैसे ही एक लंबे स्वस्थ युवक की प्रेमिका बनने में कितना आनंद प्राप्त होगा! किसी ऐसे ही व्यक्ति के साथ वह आनंदपूर्वक रह सकेगी।

परंतु उसका तो किसी पुरुष से परिचय ही न था। पीकिंग में पुरुषों की कमी न थी; पर वह किसी को नहीं जानती थी। यदि कोई सड़कों पर निकल जाये, तो बहुत से पुरुष घूमते-फिरते नजर आते। और जिस गिरजाघर में वह प्रार्थना करने जाती थी, वहां भी थोड़े-से अंग्रेज पुरुष आते ही थे। वह हमेशा अंग्रेजी गिरजाघर ही जाती थी। उसे प्रायः अकेले ही जाना पड़ता था, क्योंकि बेन्टन तीन इतवारों को चीनी गिरजाघर में जाती थीं। उनकी समझ में अंग्रेजी गिरजाघर का कोई महत्व नहीं था; क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे तो चीनी लोगों की रक्षा करने आयी थीं। परंतु एमी अवश्य जाती थी; क्योंकि इस प्रकार उसे गोरों के बीच हफ्ते में एक बार बैठने का मौका मिल जाता था। और वह अपने को अपने घरवालों के बीच महसूस करती थी।

हां, यह बात अवश्य थी कि वहां उससे कोई बोलता नहीं था, उसकी ओर कोई आकर्षित नहीं होता था। पर इसकी तो उसे आशा भी न थी। क्योंकि जब उसे स्त्रियां तक नहीं जानती थीं, तो पुरुषों की तो बात ही क्या? और किसी पुरुष को आकर्षित करने लायक उसमें कुछ था भी नहीं। इसके अतिरिक्त उसका स्कूल शहर से दूर देहात में था। वहां तक जाने में कम-से-कम आध घंटा लगता था। और चीनी पुरुष आम तौर पर विवाहित होते थे। केवल बुड्ढा पादरी साल-भर में एक बार उन लोगों से मिलने आया करता था। और वह उससे कहा करता था—"एमी, तुम बड़ी भाग्यवान हो कि तुम्हें मिस बेन्टन-जैसी साध्वी स्त्री के साथ काम करने का अवसर मिला है। कितने थोड़े धन से वह इतना बड़ा स्कूल चला रही है। जब वह चली जायेगी, तो तुम्ही इसकी अधिकारी होगी। कितना अच्छा अवसर मिला है तुम्हें!"

और एमी मुस्कराकर उसका समर्थन करती थी। बुड्ढे पादरी के शब्दों से उसकी केवल इतनी तृप्ति होती थी कि वह उसे अब भी युवती समझता था। उसकी अवस्था अड़तीस वर्ष की हो गयी थी; पर वह सोचती थी कि पादरी उससे भी ज्यादा बुड्ढा है। अड़तीस वर्ष की अवस्था किसी स्त्री के युवती रहने की परिचायक नहीं। स्कूल की लड़कियों के बीच वह घोर एकाकीपन अनुभव करती थी। वह उनके प्रति बड़ी कृपालु रहती थी, और वे सब भी उसे बहुत चाहती थीं। पर वह अकेली तो थी ही। उनके प्रेमियों की तस्वीरें देखकर ही वह संतुष्ट हो लेती थी। खाना खाने के बाद अपने कमरे में जाना इसीलिए उसे आवश्यक हो जाता था।

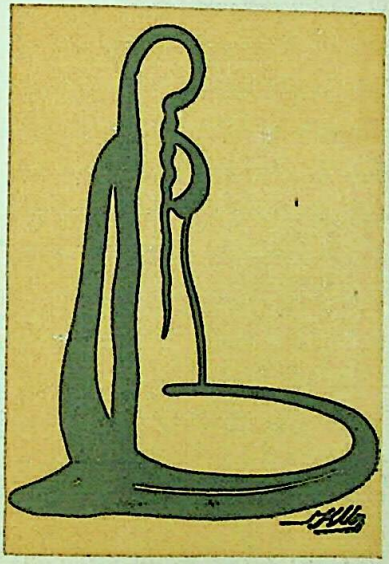

प्रतीक्षा
चित्रकार : शर्ण

मिस्टर जोन्स को उसने अब तक पुरुष समझकर कभी नहीं देखा था। पिछले कितने ही वर्षों से वह मिसेज जोन्स को जानती थी। उनकी उपस्थिति में वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर जोन्स को ध्यान में भी नहीं ला सकती थी। उनकी और बेन्टन की गाढ़ी मैत्री थी। जब वे चारों साथ बैठते थे, तो आम तौर पर बेन्टन और मिसेज जोन्स में बातें होती थीं। और एमी और मिस्टर जोन्स श्रोता होते थे। वे दुबले-पतले नाटे आदमी थे। उनके सिर पर बाल नहीं थे, चेहरे और असाधारण रूप से लंबे हाथों पर दाग थे। मिसेज जोन्स उनके लिए प्रार्थनाएं तैयार कर देती थीं, जिसे वे बिना किसी उतार-चढ़ाव के एक स्वर में घंटे-भर दूसरों के सामने पढ़ते थे। मिस्टर जोन्स बहुत स्वस्थ और मजबूत नहीं थे। इसके लिए मिसेज जोन्स उन्हें फटकारती थीं। वे पति-पत्नी जब बेन्टन के यहां खाना खाने आते थे, तो खाना शुरू होने के पहले मिसेज जोन्स कहती थीं—"देखो आर्की, तुम गरम रोटी न खाना। एमी, इनका मेदा इतना कमजोर है कि कुछ भी नहीं पचा पाते। तुम नहीं जानती कि इनके कारण मुझे कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है।"

मिस्टर जोन्स आज्ञाकारी बालक की भांति गरम रोटी को हाथ न लगाते।

मिसेज जोन्स बेन्टन से कहती—"इनके लिए एक खूब सेंका हुआ टोस्ट बना दो।"

मिस्टर जोन्स के हमेशा बीमार रहने और खुद सदैव स्वस्थ रहने के बावजूद मिसेज जोन्स की ही मृत्यु पहले हुई। वे टाइफाइड ज्वर से पीड़ित होकर एकाएक चल बसीं।

एमी के ध्यान में मिस्टर जोन्स जमते न थे। वस्तुतः मिस्टर जोन्स की बगल बैठनेवाली भारी-भरकम मिसेज जोन्स भुलाने के लिए वर्षों की आवश्यकता थी। अपने घर में उसे अब भी उनके भारी चाप कभी-कभी सुनाई पड़ जाते थे। फिर एमी तो आजकल मन में एक लंबे, पुरुष की आराधना कर रही थी, जिसकी चौड़ी छाती पर अपना सिर टिकाकर संतुष्टि की सांस ले सकेगी।

अतः मिस्टर जोन्स का पत्र उसके लि आठवां आश्चर्य ही था। उन्होंने भी बक ढूंढ़कर यह पत्र भेजा था। उन्हें मालूम कि उस समय मिस बेन्टन क्लास में होंगी यदि वे वहां होतीं, तो सारा मजा किरकि हो जाता।

पर मिस बेन्टन वहां नहीं थीं। वे में पढ़ा रही थीं। एमी ने दरवाजा बंद कर ब्राउनिंग की किताब खोली और पढ़ा—" तुम्हें कितना प्यार करती हूं—कितने-कि प्रकार से!"

और तभी किसी ने दरवाजा खटखटाय उसने फौरन किताब छिपाकर पूछा—"क है?"

नौकर ने उत्तर दिया—"एक पत्र है।

उसने दरवाजा खोलकर पत्र ले लि और आंखें फाड़कर उसे देखने लगी। उस पास पत्र कभी नहीं आते थे। उसने पढ़ा, तो उसे गश-सा आ गया। आज त किसी ने उससे ब्याह का प्रस्ताव न किया था।

बाहर नौकर खड़ा था। उसने पूछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कोई उत्तर दीजियेगा ?"

उसने भौंचक्की-सी होकर उसकी ओर देखा। कहा –"कह देना, जवाब बाद में भेजेंगी।"

उसने दरवाजा बंद करके चिटकनी चढ़ा दी। उसने फिर पत्र पढ़ा :

"प्रिय एमी,

इस बात का बुरा न मानना कि मैं अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद इतना शीघ्र ही तुम्हें पत्र लिख रहा हूं। उसे खोकर मैं अकेला हो गया हूं। यह पत्र लिखते समय मुझे तुम्हारे अतिरिक्त अन्य का ध्यान नहीं है। हम दोनों एक दूसरे को काफी समय से जानते हैं। हम दोनों ही एक पवित्र काम में लगे हैं। और अब मैं उसमें अपना प्यार भी जोड़ता हूं। प्रिय एमी, क्या तुम मेरी इस भावना की कद्र करोगी और मुझे अपने योग्य समझोगी ?

तुम्हारे निर्णय की प्रतीक्षा में,

–जोन्स"

उसने पत्र बार-बार पढ़ा। फिर उसकी आंखें किताब पर जा पड़ीं। उसे उसने मेज पर ही छोड़ दिया था। वह उसे फिर पढ़ने लगी। पत्र हाथ से छूटकर फर्श पर जा गिरा। वह किताब पर सिर रखकर धीरे-धीरे रोने लगी।

इन तीन दिनों में वह मिस्टर जोन्स से मिलने में बराबर कतराती रही। आंधी इसमें उसकी सहायक थी। मिस्टर जोन्स को दमे की शिकायत थी; इसलिए जब रेगिस्तानी हवाएं चलती थीं, तो वे कमरा बंद कर, नाक पर गीला कपड़ा रखकर लेटे रहते थे। मिसेज जोन्स उनकी इस अवस्था का इतना सजीव वर्णन करती थीं कि इस समय वह दृश्य एमी की आंखों के सामने साफ-साफ नाच रहा था। मिस्टर जोन्स अकेले पड़े होंगे, उसने सोचा। उसे मिस्टर जोन्स पर दया आ गयी। पर इस समय न तो वह ही, न मिस बेन्टन ही वहां जा सकती थीं। मिस्टर जोन्स अकेले थे। वे पुरुष थे, और मिसेज जोन्स की मृत्यु के बाद तो वे केवल पुरुष रह गये थे।

× × ×

शनिवार की शाम खाली थी। उस वक्त कोई क्लास नहीं होती थी। अपने कमरे में जाकर उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। वह पत्र खोलकर पढ़ने लगी। वह वास्तव में विवाह का प्रस्ताव था। वह खिड़की के बाहर आकाश में देखने लगी। आकाश शुष्क था; और उसका रंग भी जमीन पर फैली बालू-जैसा हो चला था। उसने सोचा, यही एक प्रस्ताव मेरे सामने है। भविष्य में भी शायद ही कोई दूसरा प्रस्ताव मेरे सामने आये। मिस्टर जोन्स के अतिरिक्त और कोई मुझसे शादी करना न चाहेगा।

शनिवार की संध्या थी। अतः एमी ने लोहे के फाटक के समीप आग जलायी, मेज पर मिट्टी के तेल का लैंप रखकर जला दिया। हल्की पीली रोशनी में कमरा निखर उठा। उसने परदे हटा दिये और आराम-कुर्सी पर बैठकर, उस किताब के पन्ने उल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टने-पुलटने लगी। वह उसे पढ़ते-पढ़ते सपने देखने लगी। मेज पर पड़ा मिस्टर जोन्स का पत्र उस शांत वातावरण में सजीव होकर, उसकी आंखों के सामने नाचने लगा। क्या वह अब नहीं जानती थी कि पुरुष का प्यार क्या होता है? यदि वह चाहे, तो पत्र का उत्तर दे दे, और उसका प्रेमी उसके पास आ जाये। वह सोचने लगी कि उसे मिस्टर जोन्स को क्या उत्तर देना चाहिये। किताब उसकी गोद में थी, और दृष्टि उसकी आग की लपटों पर जमी थी। वह मिस्टर जोन्स का ध्यान न कर, पत्र का उत्तर सोच रही थी—ऐसा उत्तर जो उन कविताओं जैसा हो।

अच्छा ही हुआ कि उसने कोई उत्तर नहीं दिया; क्योंकि दूसरे ही दिन एक अनहोनी घटना हो गयी। वह उस पत्र के बारे में सोचती हुई, प्रसन्नचित्त सोने के लिए गयी। उत्तर देना उसने रविवार की शाम के लिए स्थगित कर दिया था।

रविवार की सुबह को क्लास में वह बराबर पत्र के उत्तर के बारे में ही सोचती रही। सोचते-सोचते वह कुछ परेशान भी हो उठी। वे उत्तर पाकर क्या सोचेंगे? स्तंभित हो जायेंगे, उसे स्त्री-सुलभ लज्जा के विरुद्ध समझेंगे। करीब घंटे-भर तक उसने अपने को स्कूल के कामों में व्यस्त रखा।

जैसे-जैसे दिन बीतने लगा, पत्र का उत्तर देने की चिंता तीव्र होती गयी। धूल के कारण मिस बेन्टन की तबीयत कुछ खराब हो गयी थी, और एमी ने जो कुछ किया, वह उन्हें संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं था। मिस बेन्टन सिर में एक फलालैन टुकड़ा लपेटकर, सोने चली गयीं और बड़ाने लगीं—"अभी तक एमी ने ठीक पानी गरम करना भी नहीं सीखा। न एस्प्रीन की टिकियां कहां रख देती है?"

एमी परेशान होकर, इधर-उधर रही थी—"हे भगवान, कृपया...।" निश्च ही मिस्टर जोन्स इनसे बुरे तो नहीं हो सक गिरजाघर जाने को उसे देर हो रही वह वहां जाती भी न, यदि मिस बेन्टन दूर रहने का यही उपाय न होता।

वहीं वह घटना हुई, जिस पर उ अपनी सारी आशाएं लगा रखी थीं। गिरज घर से निकलते ही, किसी ने उससे क करना शुरू कर दिया। वह दरवाजे से बाह निकल ही रही थी कि उसने एक लंबे, सुं युवक को अपना इंतजार करते देखा। प्रार्थ के समय उसके पैरों में थोड़ा दर्द होने ल था। गिरजाघर का वातावरण नीरस और शुष्क था। डाक्टर हेनरी प्रार्थना पढ़ रहे थे। उसकी आत्मा कुंठित-सी हो गयी। न उसने उन्हें अपना नीरस, शुष्क भाषण पू करते देखा—"भाइयो, इस बुरे समय जब लोग पवित्र बाइबिल की सीखें भू गये हैं....."

वह सिर घुमाकर, खिड़की के बाह देखने लगी। पीले आकाश के अलावा और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। कितनी मेह नत उसे आज करनी पड़ी थी! अपना क भी करना पड़ा था, मिस बेन्टन का भी डाक्टर हेनरी की प्रार्थना सुनने के बजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अपने ही विचारों में खोयी हुई थी। और प्रार्थना खत्म होने तक तो वह बेहोश-सी हो गयी थी।

प्रार्थना समाप्त होने के बाद प्रतिदिन की भांति वह सिर झुकाये हुए बाहर जाने लगी और तभी उसने किसी को अपना नाम पुकारते सुना। उसने सिर उठाकर देखा। एक युवक खड़ा था।

वह मुस्कराकर बोला—"मुझे क्षमा कीजियेगा। मैं आपसे घर जाने के पहले ही मिल लेना चाहता था। आप जानती हैं कि स्थानीय नाटक संघ 'विपोल स्ट्रीट' नामक नाटक प्रस्तुत करना चाहता है। परंतु एलिजाबेथ की भूमिका के लिए कोई उपयुक्त स्त्री नहीं मिल रही है। जूली बार्ने एक दिन गिरजाघर आयी थीं। उन्हें आपकी आकृति एलिजाबेथ से मिलती-जुलती लगी। इसलिए उन्होंने मुझे आपसे यह अनुरोध करने को भेजा कि आप एलिजाबेथ का पार्ट करना स्वीकार कर लें। मुझे राबर्ट की भूमिका में पार्ट करना पड़ेगा।"

एमी स्तंभित हो गयी। उसका मुंह खुला रह गया। उसके ओंठ कांपने लगे।

युवक ने प्रश्न किया—"आपकी तबीयत कुछ खराब है क्या?"

उसने अपना सिर हिलाकर उत्तर दिया—"नहीं तो।" फिर गला साफ किया। उसकी हालत अजीब-सी हो रही थी। वह धीरे से बोली—"मुझसे यह न हो सकेगा। मेरे लिए यह संभव नहीं है। मैंने कभी भी नाटकों में भाग नहीं लिया, मैं तो मिशन स्कूल की एक अध्यापिका हूं।"

वह बोला—"देखिये मिस एमी, इतनी जल्दी इन्कार न कीजिये। आप सोचिये तो जरा कि कितनी परेशानी से हम उपयुक्त पात्र ढूंढ़ सके हैं। और फिर प्रश्न करने के लिए यह उपयुक्त स्थान भी नहीं है। आप गिरजाघर के अलावा और कहीं दिखाई भी तो नहीं देतीं। मैं कल फिर आऊंगा। तब तक आप सोच लीजियेगा। और हो सके, तो इन्कार न कर दीजियेगा। कल चाय के समय आऊंगा।" और वह नमस्कार करके मुस्कराता हुआ चला गया।

उसने देखा, लगभग सभी लोग जा चुके

मेरे लघु स्वप्न

मैं अपने लघु स्वप्न समेट लेती हूं अब
आज रात अपने स्पंदित मानस के अंदर
और प्रार्थना करती हूं विस्मृत हो जाये
उनके दर्शन से उपजी वेदना प्राणहर।
क्योंकि काल की कुशल उंगलियां
लिखती जातीं
अविरत, निर्मम, कुछ मेरी भौंहों के ऊपर
मैं अपने लघु स्वप्न समेट लेती हूं अब
आज रात अपने स्पंदित मानस के अंदर।

—जार्जिया ड० जान्सन

रूपांतर : इंदुकांत शुक्ल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। वह भी गिरजाघर के अहाते से बाहर निकली और एक रिक्शा लेकर घर की ओर चली। आज की घटना पर विश्वास कर पाना उसके लिए असंभव हो रहा था। वह रिक्शा में गुम-सुम बैठी थी। सड़क की भीड़-भाड़ में उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने कोई नाटक देखा भी न था। वह स्कूल के फाटक पर उतरी। रिक्शावाले की अधिक पैसों के लिए चीख-पुकार पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। तीस सेन्ट उचित किराया था; पर रिक्शावाले के गिड़गिड़ाने पर वह कुछ अधिक भी दे दिया करती थी। लेकिन आज उसने रिक्शावाले की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। धीरे से वह घर के भीतर दाखिल हुई।

मिस बेन्टन ने पूछा—"कौन है? एमी?"

एक क्षण के लिए एमी रुकी। सोचा, कह दे कि उसे स्वयं भी मालूम नहीं। आज वह रोजवाली एमी नहीं है। लेकिन तब मिस बेन्टन उसे पागल समझेंगी। अतः उसने मिस बेन्टन के कमरे में जाकर बहुत शिष्टतापूर्वक पूछा—"क्या आपकी बोतल में गरम पानी भर दूं?"

और जब मिस बेन्टन ने भुनभुनाते हुए, बोतल उसे दे दी, तो वह बोली—"इस बार मैं पानी ठीक से गरम करूंगी।"

दूसरे दिन चाय के समय तक उसके मन में यह निश्चय हो चुका था कि वह नाटक में भाग न ले सकेगी। कदाचित यह उसकी मूर्खता थी कि शाम को उसने सोचा, संभव है वह पार्ट कर सके। कितना अच्छा होता, यदि वह कर सकती! उसने सारी रा उसी किताब पर ऊंघने और सपने देखने बिता दी। उसने देखा कि वह राबर्ट से बा कर रही है और किताबवाले शब्द ही दोहरा रही है।

जब वह बिस्तर पर जाने के लिए उ तो किताब में से कोई वस्तु गिर पड़ी। मिस्टर जोन्स का पत्र था। यह इस किताब में कैसे आ गया? अवश्य ही उसने स्वयं रख होगा। पर उसका इन कविताओं के बीच में रहना अशोभनीय है और उसने उ निकालकर, मेज की दराज में रख दिया।

पर नाटक में वह कैसे काम करेगी? सोमवार की सुबह को उसे फिर वस्तुस्थिति का ज्ञान हुआ। कल्पना-लोक से वह वापस लौट आयी। स्कूल का घंटा, कक्षा, बाइबिल का पुस्तक, मिस बेन्टन का जुकाम, उनका बड़बड़ाना—सब कुछ उसके सामने होने लगा। उस सबमें केवल एक ही बात अच्छी थी कि मिस बेन्टन अभी चारपाई नहीं छोड़ सकी थीं। इसका मतलब यह था कि वह उस युवक से एकांत में मिल सकेगी और कह सकेगी कि वह नाटक में भाग लेने में असमर्थ है। वह उस निमंत्रण के लिए भी आभारी है; पर उसे स्वीकार करने में असमर्थ है।

लेकिन बला इतनी आसानी से टलने-वाली न थी। युवक चाय पी रहा था। बाली केक सामने रखा था। वह उसके आने की खुशी में इतनी पागल हो उठी थी कि ताजे केक मंगाना भी भूल गयी थी। वह बराबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एमी की बात सुन रहा था। मुस्कराते हुए बोला –"आपको पहला रिहर्सल भी मेरे साथ करना पड़ेगा; आपकी आकृति एलिजाबेथ से बिलकुल मिलती-जुलती है। मैं चाहता हूं कि पहला रिहर्सल तो कम-से-कम आप देखें। मैं राबर्ट ब्राउनिंग का पार्ट करूंगा। मैं आपका इन्कार न मानूंगा।"

उसके जीवन में यह पहला मौका था, जब कोई उस पर हावी हो रहा था। पहले कभी कोई इस प्रकार उससे अनुरोध नहीं कर सका। यहां तक कि मिस बेन्टन भी कभी उससे इच्छा के विरुद्ध काम नहीं करा सकीं। वह हंस रहा था और उसे कुछ कहने का अवसर ही नहीं दे रहा था। और जब वह उठकर जाने लगी, तो उसने उसे पकड़ लिया, और जाने नहीं दिया। वह उसके आगे उसके ऊपर झुकी, गुम-सुम खड़ी थी। वह बहुत थकी हुई थी। उसकी आंखें उसके चेहरे पर स्थिर थीं। पर वह अपना चेहरा न घुमा सकी।

वह बोला –"मुझे तुम्हारे बाल एलिजाबेथ जैसे बनाने दो। ये घुंघराले हैं, सरलता से बन जायेंगे।"

उसने चुपचाप उसकी बात मान ली। यदि कोई नौकर या लड़की आ गयी, तो क्या होगा? वे हमें पागल समझेंगे। युवक की उंगलियां तेजी से अपना काम कर रही थीं। वह उसके बाल संवार रहा था। बाल संवारते-संवारते वह बोला–"आप इसी क्षण मेरे साथ चल रही हैं। मैं अब आपको तब तक नहीं छोड़ूंगा, जब तक कि सबको दिखा न दूंगा। हमारा पहला रिहर्सल छः बजे शुरू होगा। उसके बाद मैं आपको यहां पहुंचा दूंगा। जाइये, अपना हैट और कोट ले आइये। मैं इंतजार कर रहा हूं।"

एमी ने पहले के समान चुपचाप उसकी आज्ञा मान ली। अब तक वह पूर्ण आत्म-समर्पण कर चुकी थी। वह मिस बेन्टन के दरवाजे के सामने से होकर ऊपर गयी। उसने अपने बाल ठीक किये, भूरा कोट पहना, अपना हैट लिया और फिर धीरे-धीरे नीचे आ गयी। रिक्शे में वह एकटक उस युवक को देखती रही। उसे ज्ञान नहीं था कि वह कहां जा रही है।

वह एक बड़े कमरे में पहुंची, जहां बहुत से लोग बैठे उत्सुकता से उसका इंतजार कर रहे थे। वे एकाएक ही बोल उठे – "वाह टेड, वाह! कितनी मिलती हैं ये एलिजाबेथ से! आइये मिस एलिजाबेथ, हम सब आपका स्वागत करते हैं।" कहते हुए सब प्रसन्न मुद्रा में खड़े हो गये।

एमी घबरा-सी गयी। उसे लगा मानो बेहोश हो जायेगी वह। पर गिरने से पहले उसके ओंठ फड़फड़ाये–"हे भगवान, कृपया .....!" उसकी आंखों के सामने अंधकार छाता जा रहा था। उसने घबराकर एक कुर्सी पकड़ ली। तभी शीघ्रता से एक लड़की उसके समीप आयी, बोली–"आप देख नहीं रहे हैं, इन्हें डर लग रहा है? ये कितनी पीली पड़ गयी हैं। आप शांतिपूर्वक बैठ जाइये। ये चाय पीकर स्वस्थ हो जायेंगी। हो सके, तो कृपया आप कुछ समय के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतने प्यार से मत देख

तू मुझे इतने प्यार से मत देख
तेरी पलकों के नरम साये में
धूप भी चांदनी-सी लगती है
और मुझे कितनी दूर जाना है
रेत है गरम, पांव के छाले
यों दहकते हैं जैसे अंगारे
प्यार की यह नज़र रहे न रहे
कौन दश्ते-वफ़ा में जलता है
तेरे दिल को ख़बर रहे न रहे
तू मुझे इतने प्यार से मत देख।।

['एक ख्वाब और' से]—सरदार जाफरी

बाहर चले जाइये।"

कुछ ही क्षण में कमरा खाली हो गया। एक लड़की चाय बना लायी। चाय पीकर वह कुछ स्वस्थ हुई। उस लड़की की ओर देखते हुए बोली —"लो, मैं भी कितनी बेवकूफ हूं! मालूम नहीं, मुझे क्या हो गया था।"

वह लड़की बोली—"मैं समझ रही हूं। आप इतने शांत वातावरण से आयी हैं और यहां हम सब चिल्लाने और शोर मचाने लगे। आपका परेशान हो जाना स्वाभाविक ही था। कितना मजा आयेगा। मैं हैनरीटा बनूंगी। आप एलिजाबेथ की भूमिका के लिए बहुत उपयुक्त हैं। और टेड भी राबर्ट बनने योग्य है। मिसेज हावेट हमारी निर्देशिका हैं।"

उस लड़की का व्यवहार अत्यंत मृदु और शिष्ट था। एमी कुछ ही क्षण में सब कुछ भूलकर उससे लिपट गयी। अब वह पूर्ण स्वस्थ थी। लड़की बाहर जाकर सबको बुला लायी। एक - के - बाद - एक सबसे उसका परिचय कराया।

मिसेज हावेट उससे हाथ मिलाते हुए बोलीं—"मैं जानती हूं, आप बहुत व्यस्त रहती हैं। फिर भी हम लोगों के लिए आपको कुछ समय निकालना ही होगा तभी हमारा खेल सफल रहेगा।"

मिसेज हावेट ने सबके पार्ट बांट दिये। एमी को भी उसका पार्ट मिला। वह इतने सब कैसे याद करेगी! उसके सब पढ़ डालने के पहले ही लोग उससे प्रश्न करने लगे। एलिजाबेथ भूरा या कत्थई गाउन पहनेंगी? कोच कहां पर होना चाहिये? वह उन पन्नों को उलट-पलटकर बड़ी आसानी से उत्तर देने लगी, और अपने खयाल से बिलकुल ही ठीक! उसे खुद अपने ऊपर आश्चर्य होने लगा। वह गर्व अनुभव करने लगी। सब प्रसन्न थे, सभी उसका समर्थन कर रहे थे। उसने सोचा—"कोई हर्ज नहीं। यदि कुछ देर से लौटने पर मिस बेन्टन नाराज भी हो जायें, तो क्या हो जायेगा!"

रिहर्सल खत्म हो गया। सब लोग अपने-अपने घर जाने लगे।

कमरे में अब चार व्यक्ति रह गये—मिसेज हावेट, जिनका मकान था, टेड और वह लड़की जूली। एमी धीरे से बोली—"अब मुझे जाना चाहिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेड ने कहा–"मैं आपके साथ चलूंगा," फिर जूली की ओर देखकर बोला–"तुम इतने में तैयार हो जाओ। काकटेल में जाने का वक्त हो गया।"

एमी बोली–"नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। मैं चली जाऊंगी।"

जूली ने कहा–"अच्छा होगा, अगर ये आपको छोड़ आयें।"

"नहीं, कोई आवश्यकता नहीं, मैं अकेले जाने की आदी हूं। और फिर आपको भी तो पार्टी के लिए देर हो रही है!"

टेड बोला–"जैसी आपकी इच्छा।"

बाहर आकर टेड ने उसे रिक्शा में बैठा दिया। मुस्कराकर बोला–"गुड नाइट, एलिजाबेथ!"

और वह भी हिम्मत करके बोली–"गुड नाइट, राबर्ट!"

रिक्शा के चलने के बाद उसने मुड़कर देखा। टेड सीढ़ियां चढ़ रहा था। दरवाजा खोलकर जूली बाहर आयी और अंधेरे में दोनों की परछाइयां एक होती दिखाई दीं। फिर दरवाजा बंद हो गया।

× × ×

द्वार पर आहट हुई। मिस बेन्टन

कैसे-कैसे लोग!

अपनी परंपरा के अनुसार हम 'नवनीत' के दिवाली-अंक से एक बहुत ही रोचक चर्चा शुरू कर रहे हैं, जिसका शीर्षक होगा–'कैसे-कैसे लोग!'

हमारे बीच कैसे-कैसे विलक्षण स्वभाव के व्यक्ति रहते हैं और वे कैसे विचित्र व्यवहार करते हैं – यह कहना, सुनना और मनुष्य-प्रकृति के रहस्यमय रूपों से परिचय पाना ही इस चर्चा का उद्देश्य है। ऐसे कई व्यक्ति असाधारण प्रतिभाशाली, अन्यतम परिश्रमी और अतिशय शिवसंकल्पी भी होते हैं। आपके संपर्क में यदि कोई ऐसा व्यक्ति आया हो, तो आप उसकी स्वानुभवपूर्ण कथा (५०० शब्दों तक) शीघ्र भेजने का कष्ट करें। –संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिल्लायीं—"अभी तक तुम कहां थीं, एमी?"

एमी ने यह ठीक समझा कि वह सच-सच बता दे। मिस बेन्टन के समीप पहुंचकर बोली—"मैं एक नाटक में भाग ले रही हूं। उसका नाम 'बैरेट्स आव विम्पोल स्ट्रीट' है। मुझे एलिजाबेथ का पार्ट करना होगा। उन लोगों ने मुझे ही यह पार्ट दिया है, क्योंकि मैं एलिजाबेथ-जैसी दिखती हूं।"

उसका जी धक-धक करने लगा। लेकिन कोई भयानक बात नहीं हुई। उस बात से मिस बेन्टन स्वयं परेशान हो उठीं। उन्होंने पूछा—"कभी ऐसा भी हुआ है?"

एमी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

मिस बेन्टन फिर बोलीं—"पादरी इसके बारे में क्या कहेंगे?"

एमी अपने को पहले से अधिक स्वस्थ और ताकतवार महसूस कर रही थी। बोली—"उस नाटक में केवल तीन सप्ताह लगेंगे, और पादरी बड़े दिन के पहले नहीं आयेंगे। उन्हें मालूम भी न हो पायेगा। और मैं विश्वास दिलाती हूं कि इससे मेरे काम में कोई अंतर नहीं पड़ेगा। नाटक और रिहर्सल सब रात में होंगे।"

"पर स्कूल की बदनामी तो होगी।"

"मैं किसी से इसका जिक्र न करूंगी, मिस बेन्टन! मैं उनसे वादा कर चुकी हूं।" और मिस बेन्टन के उत्तर का इंतजार किये बिना ही वह अपने कमरे में चली गयी।

रात के खाने के बाद वह अपना पार्ट याद करने बैठी। उसने पहले किताब आद्योपांत पढ़ डाली और अपने मन में एलिजाबेथ की भावनाएं सजीव होने उठने दीं। तब उसने टाइप किये हुए काग़ उठाये और देखा कि उसे सब याद है। कब सो गयी, उसे स्वयं मालूम न हुआ वह जब तक जागती रही, प्रसन्नचित्त रही उसका छोटा-सा कमरा प्रेम का क्रीड़ास्थल बन गया था।

उन तीन हफ्तों में वह शायद ही किसी से बोली हो। वह किसी-न-किसी प्रकार दिन का काम खत्म कर, रात में रिहर्सल के लिए तैयार हो जाती। दिन में तीन बार उसकी बातचीत मिस बेन्टन से होती थी पर नाटक का कोई जिक्र नहीं आता था खाना खाने के बाद मिस बेन्टन एमी की कोई फिक्र नहीं रखती थीं।

एक दिन नाश्ते के समय वे बोलीं—"फूफी मिस्टर जोन्स पर बड़ी दया आती है। नौकरों का कहना है कि उन्हें इतने जोर का दर्द है कि वे घर से बाहर भी नहीं निकल सकते। उन्हें मिसेज जोन्स की अनुपस्थिति बहुत अखरती है। वे उनकी फिक्र किसी डाक्टर से ज्यादा करती थीं।"

परंतु एमी ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह उस पत्र की बात लगभग भूल चुकी थी।

मिस बेन्टन के अपने कमरे में चले जाने के पश्चात, वह रिहर्सल के लिए चल देती थी। ठंड बढ़ती ही जा रही थी और सभी हाथों के ठिठुरने और दांतों के किटकिटाने की शिकायत करते थे। लेकिन एमी को कभी ठंड नहीं लगती थी। वह समय पर आ जाती और अपने स्थान पर शांत और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंभीर मुद्रा में तैयार होकर बैठ जाती। वह उस किताब को लेकर जाती, और रिहर्सल के बीच भी पढ़ती। इससे नाटक के अंदर स्वाभाविकता का पुट आ जाता।

उसे अपना पार्ट शीघ्र ही याद हो गया। पहले हफ्ते में ही सारे संवाद उसके ओंठों पर खेलने लगे। वह अपना पार्ट खटखट कह देती थी, जबकि दूसरे सभी भूल जाते, या रुक-रुककर कहते। जब उसकी कमर में हाथ डालकर रावर्ट अपनी बात कहता, तो वह भी धीरे-धीरे बोलने लगती। जब वह उसके सीने पर सिर टेक देती, तो राबर्ट उसके घंघराले बालों के नीचे कानों में कहता—"आप तो कमाल कर रही हैं।"

लेकिन उसे यह पसंद नहीं था। वह उस वातावरण में खो जाना चाहती थी। वह उस समय एमी नहीं थी। वह थी एलिजाबेथ और रावर्ट था उसका प्रेमी। वह टेड से नजरें चुराती थी। जब वह स्टेज पर हंसने या नाचने लगता, तो मुंह घुमाकर अपना पार्ट याद करने लग जाती। वह राबर्ट था सिर्फ राबर्ट, और कुछ नहीं। जब मिसेज हावेट उन सबको यथास्थान खड़ा करतीं, तो वह राबर्ट का उत्सुक मन से स्वागत करती। तब से वे एलिजाबेथ और राबर्ट हो जाते। सारा नाटक उन्हीं दोनों के इर्द-गिर्द केंद्रित था। बाकी तमाम अभिनेता कहानी को लंबी करने के लिए थे।

अब वह सारा दिन एलिजाबेथ बनी रहने लगी। सुबह जब वह उठती, तो एलिजाबेथ ही होती। दिन-भर वह सपने देखती रहती। वह एलिजाबेथ की भांति ही चलती और बातें करती। वह अपनी जलती हुई आंखों से दूसरों को देखकर, फौरन नजर नीची कर लेती। उसने अपने कपड़े बदल डाले थे, बाल भी ढीले करके बांधती थी।

रिहर्सल के समय अपनी तारीफ सुनने की वह आदी हो गयी थी, यद्यपि उससे उसे कोई विशेष प्रेरणा नहीं मिलती थी। जब लोग कहते कि "आप आश्चर्यजनक अभिनय करती हैं," तो वह केवल मुस्करा देती। जब मिसेज हावेट कहतीं—"अब मुझे कुछ बताना बाकी नहीं रहा, कोई पेशेवर अभिनेत्री भी आपसे ज्यादा अच्छा नहीं कर सकती थी," तो वह केवल चुप रह जाती। अन्य कोई उससे अच्छा अभिनय कर भी कैसे सकती थी, एलिजाबेथ तो वह थी ही!

और वह रोज रात को प्रसन्नचित्त सोती। वह, जो जीवन-भर भूखी और अतृप्त रही थी, प्रेम-सागर में डूब रही थी। वह राबर्ट से चिपट जाती थी। वह शर्मीली थी। उसे विश्वास हो चला था कि वह वास्तव में राबर्ट को प्यार करती है। रात में एहसास होता कि पुरुष के सीने पर सिर टेकने में कितना आनंद आता है, तब कौन-सी भावनाएं अंदर से जागृत होने लगती हैं! वह अब जान गयी थी कि पुरुष के प्यार की भिक्षा मांगने से हृदय के किस कोने में कसक उठती है।

वह रजाई में दुबके-दुबके ही तकिये को भींचकर बांहों में भर लेती। उसे सपनों तथा जागृत-अवस्था में दूर क्षितिज के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के ही दृश्य दिखाई पड़ते। वह अपने स्वप्नों को टूटने नहीं देना चाहती थी। वह यह भी नहीं चाहती थी कि राबर्ट दूसरों से बातें करे। वह रात-भर अपने में ही खोयी रहती थी और किसी को अपनी तन्मयता में विघ्न नहीं डालने देना चाहती थी।

× × ×

सब-कुछ ठीक था; पर नाटक में एक स्थान पर वह ठीक अभिनय नहीं कर पा रही थी। एक दृश्य में राबर्ट के आने के पहले उसे रोना पड़ता था। शुरू के दिनों में वह कुछ ठीक करती थी। वह न जाने कितनी रातों को रोयी होगी। रोना उसके लिए बहुत स्वाभाविक था। पर बाद में उसे मुश्किल लगने लगा। उसे मालूम था कि दूसरे दृश्य में ही राबर्ट उसे मिलेगा। तो फिर वह कैसे रोती?

मिसेज हावेट की परेशानी बढ़ गयी। वे बोलीं—"आप अभिनय तो आश्चर्यजनक करती हैं; पर एक स्थान पर थोड़ी कमजोरी रह जाती है। आप उस दृश्य में रो क्यों नहीं पातीं? न हो, घर पर थोड़ा अभ्यास कर लिया कीजिये।"

लेकिन अब तो वह घर पर भी रोने में असमर्थ थी। अब उसे कोई रुला नहीं सकता था। पहले वह आसानी से रो देती थी; पर अब तो बड़ी मुश्किल से ही रो पाती थी।

लेकिन एक घटना ऐसी हुई, जिससे उसे बड़ी सहायता मिली। नाटक प्रस्तुत होने के पहले दिन, रात में ग्रैंड रिहर्सल की कुल तैयारी हो चुकी थी। उस रात को भी वह बिलकुल रो नहीं सकी। उसके रो सकने की संभावना अब बहुत कम थी। उसे [illegible] देखकर, जूली दौड़ी-दौड़ी उसके पास आयी और बोली—"तुम अद्वितीय हो, एलिजाबेथ। इतना स्वाभाविक अभिनय करने के बाद यह कैसे संभव है कि तुम टेड को प्यार न करने लगो?" और फिर उसने टेड से कहा—"यह कैसे संभव है टेड कि तुम एलिजाबेथ को न प्यार करने लगो?"

टेड कमरे में घुस ही रहा था। एमी मुस्करा दी। उसके विरोध प्रकट करने के पहले ही दोनों जा चुके थे।

फिर जब वह ड्रेसिंग-चेयर पर बैठने ही वाली थी, उसने राबर्ट को जूली से कहते सुना—"जूली, मैं मजाक में भी तुम्हारा यह कहना बर्दाश्त नहीं कर सकता। केवल तुम्हें प्यार करता हूं, केवल तुम्हें।"

सर्वत्र शांति थी। एमी चुपचाप बाहर और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। तब वह शीशे के सामने बैठ गयी। एलिजाबेथ वहां बिलकुल अकेली थी।

एक क्षण बाद ही मिसेज हावेट अंदर आयीं, और घबरायी हुई-सी बोलीं—"मैं आपकी आलोचना करते हुए दुःख होता है; पर..."

उनकी बात काटकर एमी बोली—"मैं जानती हूं, आप क्या कहना चाहती हैं मिसेज हावेट। रोने के बारे में न? आप निश्चिंत रहिये। अब ठीक रहेगा।"

× × ×

दूसरे दिन जब रात में नाटक खेला गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो एमी का अभिनय सबसे सुंदर और स्वाभाविक था। रोने का दृश्य भी उसने बखूबी किया। सैकड़ों व्यक्ति बैठे नाटक देख रहे थे। उसने सोचा था कि शायद वह घबरा जायेगी; पर वह तनिक भी नहीं घबरायी। वह उन लोगों को नहीं जानती थी। अतः उनसे डर कैसा ? नाटक के आखिरी दृश्य में उसने स्टेज की वत्ती वुझवा दी, और अकेली वैठकर, खिड़की से चांद को देखने लगी। वह अव सोच रही थी, जो अव तक उसने नहीं सोचा था। अव वह केवल एमी थी और रावर्ट टेड था, जो जूली से प्रेम करता था, जो युवती और सुंदरी थी।

आज रात के वाद सब खत्म था। वह अपने घर लौट जायेगी। यह केवल नाटक था। उसकी आंखों से बुरी तरह आंसू वह चले। उसने अव तक अपने को स्वप्नों की दुनिया में खोया हुआ था। अब एमी रो रही थी। वह जी-भरकर रोयी। कमरे में शांति थी। केवल उसकी सिसकियों की आवाज आ रही थी।

तालियों की गड़गड़ाहट हुई, और स्टेज का परदा गिर गया।

वह उठी। मिसेज हावेट दौड़ी-दौड़ी अंदर आयीं और बोलीं—"प्रिय एमी; आपने तो कमाल कर दिया, कमाल !"

लेकिन एमी ने उनकी बात नहीं सुनी। वह डरी हुई-सी ड्रेसिंग रूम में घुस गयी। एलिजाबेथ मर चुकी थी। अब वह एलिजाबेथ नहीं थी। वह केवल एमी थी। नाटक अब आगे नहीं चल सकता था। उसने ड्रेसिंग रूम का दरवाजा वंद कर दिया, और हाथ मल-मलकर रोने लगी। अब उसे कुछ भी याद नहीं था। उसे केवल रावर्ट की यह बात याद थी—"मैं तुम्हें प्यार करता हूं, सिर्फ तुम्हें !"

किसी ने दरवाजा खटखटाया। फिर एक आवाज आयी—"सिर्फ पांच मिनिट के लिए एमी।"

उसने उत्तर नहीं दिया। वह बैठी रही। तब उसने वह किताब देखी। वह उसे घर ले जाना भी भूल गयी थी। वह उसकी ड्रेसिंग टेबल पर रखी थी, खुली हुई, जिस तरह छोड़ गयी थी। उसने उसे उठा लिया। अब उसमें भी कोई माधुर्य, कोई जीवन नहीं था।

परंतु एकाएक उसमें जीवन आ गया। एक ही क्षण में उसे वह किताब वैसी ही

आओ सखि बात करें
चित्र : श्यामलता तिवारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कवि राबर्ट ब्राउनिंग

दिखने लगी, जैसी नाटक होने के पहले थी। उसे वह कंठाग्र थी। वह उसे पढ़ने लगी। प्रेम अब भी उसमें अजर-अमर था। यह अर्थहीन था कि टेड किससे क्या कहता है। अब वह जानती भी नहीं थी कि टेड कौन है। वह केवल राबर्ट को जानती थी, जिसने वे गीत लिखे थे। कितनी मूर्ख थी वह! वह रात्रि तो उसके लिए मधुरतम थी!

एक आवाज आयी—"एलिजाबेथ, परदा उठनेवाला है।"

वह बोली—"मैं भी तैयार हूं।"

वह भूल गयी कि अभी एमी कैसे रो रही थी। वह प्यार का स्वप्न खत्म करने के लिए स्टेज पर चली गयी।

वह जानती थी कि नाटक बहुत सफल हुआ था। लोगों के भीड़ लगाकर उसे बताने की आवश्यकता नहीं थी कि उसने सर्वश्रेष्ठ अभिनय किया था। सबके मु अपनी तारीफ सुनकर वह केवल मुस्करा

तब जूली आयी और उससे लिपट और बोली—"आपका काम अद्वितीय में आपको सबसे पहले बताना चाहती मेरी और टेड की शादी होने जा रही आपको उसके साथ अभिनय करते दे मुझे विश्वास हो गया कि मैं उसे प्र करती हूं।"

और वह भी वहीं खड़ा था। पर वह राबर्ट नहीं था। राबर्ट तो उसके हृ में सुरक्षित था। वह टेड था। यौवन-सु चपलता से वह बोला—"आपके का सभी का पार्ट बड़ा स्वाभाविक रहा।"

एमी केवल मुस्करा दी। बोली—"मु भी खुशी है।"

फिर वह हट गयी; और टेड और जू हाथ में हाथ डालकर दूसरी ओर चले ग

इस भांति चुपचाप खिसक जाना बु साधारण था; क्योंकि सभी इसके आदी चुके थे। फिर जूली और टेड के एलाव वातावरण में एक नयी गर्मी आ गयी थी एमी अपना कोट ले, रिक्शे पर बैठ चुपच घर चली गयी।

× × ×

वह अब अपने पहलेवाले जीवन में लि लौट आयी थी। जूली और टेड से उसे एक दो पत्र भी अवश्य मिले, जिनमें मिलने लिए प्रार्थना की गयी थी। दिन बीतते गये पर वह मिलने नहीं गयी। उन तीन सुख सप्ताहों के स्मृतिस्वरूप उसके पास नाट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की हस्तलिपि थी।

दिन अपनी पुरानी रफ्तार से बीतने लगे। सारे काम उसी पुराने ढंग से होने लगे।

परंतु सब चीजें बिलकुल पुराने ढर्रे पर ही नहीं थीं। एक दिन शाम को आग जलाने के बाद जब उसने मेज की दराज खोली, तो उसमें मिस्टर जोन्स का पुराना, चिर-परिचित पत्र मिला। वह उसे करीब-करीब भूल गयी थी। उसने पत्र निकालकर पढ़ा। वह उसे नया-सा लगा। यह सचमुच शादी का प्रस्ताव था। उस उम्र में शादी का प्रस्ताव मिलना काफी अजीब बात थी। कभी शादी न करना और विवाहित जीवन का आनंद न जानना, बड़े दुःख की बात है। उसे पत्र का उत्तर पहले ही भेज देना चाहिये था। अब भी ज्यादा देर नहीं हुई थी। वह उसे अब भी उत्तर भेज सकती थी।

पर अब उसे यह भी मालूम था कि वह मिस्टर जोन्स के पत्र का उत्तर क्यों नहीं दे सकी थी। ऐसा पत्र वह केवल राबर्ट को लिख सकती थी। राबर्ट, उस पुस्तक का प्रधान पात्र, जिसने उसे प्यार सिखाया था। उसी को वह अपना प्यार दे सकती थी, किसी अन्य को नहीं। वह राबर्ट को याद कर मुस्करा उठी। उससे शादी होना या न होना अनावश्यक बात थी। प्यार गौण था। वह जानती थी कि मिस्टर जोन्स को पत्र लिखकर वह उनके सहवास का सुख भोग सकती है; लेकिन प्यार-भरा पत्र राबर्ट के अलावा वह किसी और को नहीं लिख सकती। उसने उस पत्र को आग की लपटों के हवाले कर दिया। जब वह जल गया, तो फिर मुस्करा दी।

खाने के समय उसकी भेंट मिस बेन्टन से हुई। वे उसकी ओर घूर-घूरकर देख रही थीं। वे अवश्य कुछ पूछना चाहती होंगी। एमी ने पूछा—"क्या बात है, मिस बेन्टन ?"

उन्होंने कहा—"नाटक तो खत्म हो गया न ? मैंने अखबारों में देखा था।"

एमी ने कहा—"हां, खत्म हो गया।"

मिस बेन्टन बोलीं—"मिशन की अध्यापिकाओं का नाटक में भाग लेना अजीब बात है। फिर भी यदि तुम्हें संतोष है, तो ठीक ही है।"

एमी ने कहा—"मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हूं, मिस बेन्टन।"

★

चाय या काफी

उन दिनों पंजाबी सूबे का आंदोलन जोरों पर था। प्रधान मंत्री नेहरू पंजाबी सूबे की मांग स्वीकार करेंगे या नहीं— इस बारे में प्रश्न करते हुए एक संवाददाता ने पूछा—"अगर मास्टर तारासिंह आपसे मिलने आयें, तो आप उन्हें क्या देंगे ?" नेहरूजी ने तत्काल उत्तर दिया—"चाय या काफी, जो भी उन्हें पसंद होगी, दूंगा !"

—हुस्न जमाल छीपा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संजीवनी और नश्तर

जीवन में कोई हार आखिरी हार नहीं,
कोई जीत आखिरी जीत नहीं।

–जार्ज सावा

रूपांतर : प्रकाश खन्ना

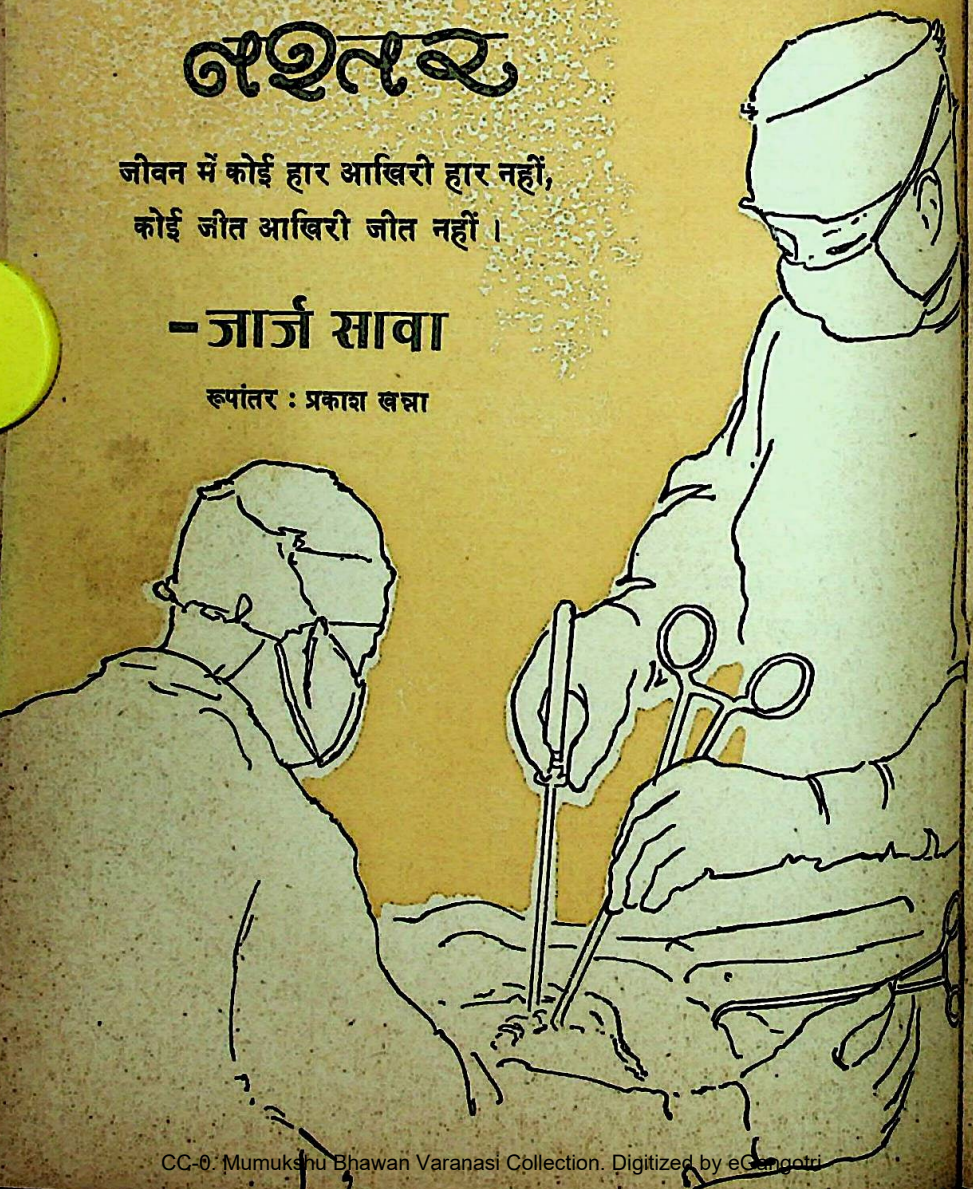

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे पिता एक संपन्न रूसी सामंत थे और अपने को तैमूर लंग का वंशज बताते थे। मैं उनका तीसरा पुत्र था। मैं रूस की नौ-सेना में अफसर बनने की ट्रेनिंग ले रहा था कि पहला महायुद्ध छिड़ गया। उसके बाद ही हुई रूस की राज्यक्रांति, जिसने हमें बेघरबार और पैसे-पैसे को मोहताज कर दिया। मेरे भाई मारे गये। उस भयावह क्रांति का उल्लेख करना मेरे लिए आज भी संभव नहीं है। अतः मैं अपने अंतिम युद्ध से ही इस कथा को प्रारंभ करूंगा। इस युद्ध ने मेरे जीवन को नया मोड़ दिया, मेहनत करके आजीविका कमाने की महिमा एवं आवश्यकता मुझे हृदयंगम करायी और मार्ग की बाधाओं तथा कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दी।

कैस्पियन तट के बोल्शेविक अड्डे अस्त्राखान में लगभग एक लाख लाल रूसी सैनिक थे। दस हजार सफेद रूसी सैनिकों ने उनसे लोहा लिया था। इन्हीं में से सौ सैनिकों की एक टुकड़ी मेरे अधीन थी। उस समय मेरी आयु १७ वर्ष की थी। इस लड़ाई में हमारी हार तो निश्चित ही थी। सुबह से अपराह्न तक के युद्ध में हमारे दो तिहाई सैनिक काम आ गये थे और मेरी टुकड़ी में तो कोई २० सैनिक बचे थे।

घायल होकर रणभूमि में गिर जाने-वालों में मेरा एक अभिन्न मित्र था लेफ्टि-नेंट गोरिजिन। मैदान से पीछे हटते हुए मैं किसी तरह उसे अपने कंधे पर डालकर अड्डे पर वापस ले आया। मेरा मित्र मौत की पीड़ा से छटपटा रहा था; मगर वहां केवल दो नर्सें थीं, डाक्टर एक भी नहीं था। नर्सों ने बताया कि गोरिजिन के सीने में गोली लगी है और दो पसलियों के बीच फंस गयी है; गोली तुरंत निकाल न दी गयी, तो मृत्यु अवश्यंभावी है।

डाक्टर के अभाव में मैंने स्वयं ही गोली निकालने का फैसला किया। एक नर्स ने बताया कि गोली कहां है और चीरा कहां लगाना होगा—यह वह दिखा सकती है। आपरेशन करने के औजार भी हमारे पास नहीं थे। सो मैंने अपने बड़े-से चाकू को आग में खूब तपाकर, गरम चाकू से ही नर्स के बताने के अनुसार गोरिजिन के सीने को चीरकर गोली निकाल डाली। यह एक चमत्कार था, जो मेरे हाथ से हुआ। उसी दिन मैंने निश्चय किया कि अब से मैं लोगों की जान लेने के बजाय, डाक्टर बनकर लोगों की जीवन-रक्षा करूंगा। इस निश्चय से मेरे पीड़ाक्रांत मस्तिष्क को जो अपूर्व शांति मिली, वह आज भी मुझे ताजगी और तसल्ली दे रही है।

कुछ ही दिन बाद मुझे कुछ युद्धबंदियों को गोली से मार देने की आज्ञा मिली। यह मेरे निश्चय की परीक्षा थी। मैंने अपने सेनापति से साफ-साफ कह दिया कि मैं इस आज्ञा का पालन नहीं कर सकूंगा। सेना-पति स्तब्ध रह गया। कुछ मिनिट तक मुझे घूरता रहा। मैंने समझा, इस हुक्मउदूली के लिए मुझे गोली मार दी जायेगी। परंतु सेनापति ने मेरे दृष्टिकोण को समझा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद वह स्वयं भी इस व्यर्थ की मार-काट से ऊब गया था। सो उसने मुझे ही नहीं, कुछ दिन बाद उन बंदियों को भी छोड़ दिया। यह मेरी पहली सफलता थी।

०००

अस्त्राखान का मैदान तो हम हार ही चुके थे। कुछ दिन बाद हमें अपने हवाई जहाज और गोला-बारूद नष्ट करके जल-पोतों के द्वारा पीट्रोव्स्क से प्रस्थान करने की आज्ञा मिली। किसी तरह, जितने हो सकते थे, उतने सैनिक जहाजों में सवार हुए। उन्होंने नगर में काफी मार-काट भी की। बहुत कठिनाई के बाद जब हमारा जहाज रवाना हुआ, तभी तट पर स्थित शस्त्रागार में भयंकर विस्फोट हुआ। पलीता हमने ही लगाया था; क्योंकि हम दुश्मनों के हाथ में शस्त्र नहीं देना चाहते थे। मगर जहाज सही-सलामत बच गया।

सामने पहाड़ियों से लाल सैनिक नगर में प्रवेश कर रहे थे और हम नगर छोड़-कर भाग रहे थे। दोनों ही दल अंधाधुंध गोलियां चला रहे थे; और शिकार हो रहे थे निर्दोष नागरिक। यह था गृहयुद्ध की भीषणता का दिल हिला देनेवाला एक उदाहरण। लड़ते हैं दो राजनीतिक दल; और क्षति निर्दोष लोगों की होती है, जिनके हित के नाम पर संघर्ष छेड़ा जाता है।

पीट्रोव्स्क से चलने के बाद दस दिन तक हम लक्ष्यहीन इधर-उधर घूमते रहे। किसी भी देश के बंदरगाह में हमें लंगर नहीं डालने दिया गया। अंत में एंजेली-स्थित ब्रिटिश सेनाओं के सेनापति कर्नल क्रि के प्रयत्नों से ईरान सरकार ने अपने बंदरगाह का द्वार हमारे लिए खोल

जहाज पर जो कुछ संपत्ति और सा थी, अफसरों और सैनिकों को बांटकर के वर्खास्त किये जाने की घोषणा कर गयी। मुझे एक लाख रूबल मिले। डाक बनने की मेरी योजना की पूर्ति के लिए राशि काफी से ज्यादा थी। मुझे जहाज एक कैमरा भी मिला था। एक और आद को आपरेशन के औजारों से भरा बक्स मिला था। मैंने कैमरा उसे देकर उससे औजार ले लिये।

एंजेली के बाजार में मालूम हुआ कि मेरे एक लाख रूबल की असली कीम केवल पांच शिलिंग रह गयी है। वहां हमा भूखों मरने की नौबत आ गयी। ब्रिटि और ईरानी अधिकारियों ने हमारी सह यता की और भोजन दिया। वहां से मैं एक यात्री-दल के साथ दो सौ मील दूर तेहरान को रवाना हुआ। रास्ते में मैंने अपने अल्प ज्ञान के द्वारा सैकड़ों आदमियों की मामूली चोटों का इलाज किया।

किसी तरह गिरते-पड़ते तेहरान पहुंचे। लेकिन वहां भी कोई सहारा न था। अत: कुस्तुंतुनिया जाने का फैसला किया। अनेक असफल प्रयासों के बाद एक व्यापारी के ऊंटों के कारवां में मुझे नौकर की जगह मिल गयी और हम सात दिन में ३५० मील दूर तबरेज पहुंचे। इसी काम से मैंने जीवन में पहली बार मेहनत करके रोजी कमायी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी व्यापारी की सिफारिश पर एक कारवां के साथ बगदाद जाने की व्यवस्था हो गयी। तीन सप्ताह में हम बगदाद पहुंचे। बहुत ही गंदा और बदसूरत शहर निकला 'अरेबियन नाइट्स' का बगदाद। वहां मैंने कई दूतावासों के दरवाजे खटखटाये। लेकिन कहीं से कुस्तुंतुनिया जाने के लिए सहायता नहीं मिली। अंत में तुर्की के वाणिज्य-दूत ने मुझे कुस्तुंतुनिया जाने के लिए आज्ञा-पत्र दिया और रेल-यात्रा के लिए सैनिक पास भी। रूस के मित्र देशों ने मुझ रूसी शरणार्थी की कोई सहायता नहीं की; सहायता की तुर्की ने, जो रूस का परंपरागत शत्रु था।

नर्स
स्केच : आइसेंस्टाइन

ग्यारह दिन की यात्रा के बाद हम कुस्तुंतुनिया पहुंचे। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। जीवन में पहली बार मुझे अपने स्वतंत्र होने का भान हुआ। परंतु मेरे पास बाकायदा पासपोर्ट न होने के कारण इटालियन अधिकारियों ने मुझे बंदीगृह में डाल दिया। मैंने बीस दिन उस जेल में गुजारे। इस अवधि में मैंने अनेक बंदियों का छोटा-मोटा उपचार किया। जेल में मैंने महसूस किया कि अब मेरे दिन फिरेंगे। मैं रिहा किया गया, तो मैं दुनिया से जूझने और अपने पसीने की कमाई से जीवन-यापन करने को तैयार था। जेल के वे तीन हफ्ते मेरे जीवन के सबसे आनंदमय समय में शामिल हैं।

०००

जेल से छूटने के बाद मैं अस्पतालों में कोई काम खोजने लगा। मेरी मुलाकात एक गरीब किसान हसन से हुई। उसके सीने पर एग्जिमा का बड़ा-सा घाव था। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे अपने साथ अस्पताल चलने को राजी किया। हम शुरू में जिन अस्पतालों में गये, वहां की लापरवाही और अव्यवस्था देखकर हसन और भी ज्यादा डर गया। तब मैं उसे एक ब्रिटिश अस्पताल में ले गया।

वहां एक नर्स और अंग्रेज डाक्टर ने सहानुभूति और सहृदयता के साथ उसके सीने के घाव को साफ करके मरहम-पट्टी की तथा घर पर रोज पट्टी बदलने के लिए दवाइयां दीं। चलते वक्त डाक्टर ने दो तुर्की पौंड भी हसन के हाथ पर रखे। हसन उन्हें दुआएं देता हुआ अपने गांव चला गया। अंग्रेज डाक्टर की सहृदयता ने मुझे बहुत प्रभावित किया और मैंने फैसला किया कि मैं इंग्लैंड जाकर डाक्टरी पढ़ूंगा और इंग्लैंड का नागरिक बनूंगा।

मगर इस निश्चय के पूरा होने में अभी बहुत समय था। उस वक्त तो मेरे सामने दूसरी बहुत-सी समस्याएं थीं। मुझे हमीद की याद आयी, जिससे जेल में मेरी भेंट हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। मैं उसके घर पहुंचा और वह मुझे अली बे नामक प्रतिष्ठित और मालदार तुर्क के यहां ले गया। वहां सबसे पहले मेरे नहाने की व्यवस्था की गयी और मुझे नयी मुसलमानी पोशाक पहनायी गयी। फिर मैं अली बे के सामने पेश किया गया। उसने मुझे एक पुराने साथी की तरह अपनी मित्र-मंडली में बैठाकर भोजन कराया।

भोजन के उपरांत नौसेना तथा युद्ध-कला की चर्चा चल पड़ी। इन विषयों का मुझे पर्याप्त अनुभव था और अली बे मेरे विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। उसने मुझे तुर्की नौसेना में कप्तान के पद पर नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा। किंतु मैंने तो डाक्टर बनकर लोगों की प्राणरक्षा करने का निश्चय किया था। सो यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।

अली बे की कोठी पर हुई चर्चाओं से स्पष्ट था कि वे लोग अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने का षड्यंत्र कर रहे थे। ऐसी हालत में मेरी अस्वीकृति का यह अर्थ लगाया जा सकता था कि शायद मैं पुलिस को खबर करके अली बे और उसके साथियों को पकड़वा दूं। परंतु उदारमना अली बे ने मित्र मानकर मुझ पर विश्वास किया। उसने मुझे कोठी से सुरक्षित लौटने तो दिया ही; बल्कि नगर के एक बढ़िया होटल में मेरे रहने की व्यवस्था भी कर दी। होटल में मैं उसके अतिथि के रूप में रहा। कुस्तुंतुनिया से प्रस्थान करते समय अली बे ने मेरे लिए एक सूट और पांच तुर्की पौंड भी भेजे। बाद में यह अली बे कमाल अतातुर्क की सरकार में मंत्री बना।

इस बार भी रूस के एक परंपरागत पुराने शत्रु देश से मदद मिली। बल्गारिया के वाणिज्य-दूत ने सोफिया जाने के लिए मुझे रेल-यात्रा का सैनिक पास दिया और कुस्तुंतुनिया से प्रस्थान करने तक वहां सरायाई होस्टल में मेरे रहने की व्यवस्था की। कुछ दिन बाद मैं सोफिया को रवाना हो गया।

०००

सोफिया में मेरे रिश्तेदारों की कोई कमी नहीं थी; मगर उन सबने मेरी ओर से आंखें फेर लीं। किसी तरह शक्कर के एक कारखाने में दो शिलिंग रोज के वेतन पर मेकैनिक का काम मिल गया। सुबह से रात के ८ बजे तक मैं कारखाने में काम करता था और बाद में मोमबत्ती की रोशनी में डाक्टरी की परीक्षा के लिए अध्ययन। कारखाने के अधिकांश श्रमिक कम्यूनिस्ट थे। उन्हें किसी तरह पता लग गया कि मैं रूस के एक संभ्रांत सामंत-परिवार का सदस्य हूं। फिर तो उन्होंने मेरा जीना हराम कर दिया। मार-पीट तो होती रहती थी; उसके अलावा चार बार मुझ पर गोलियों से हमला किया गया। आखिर मैंने इस्तीफा दे दिया और अपनी शिक्षा की उपाधि सार्वजनिक रूप से त्याग दी।

बहुत दौड़-धूप के बाद मुझे एक अन्य ताल में भट्ठी में कोयला झोंकने का काम मिला। सुबह ७ से रात के १० बजे तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी ड्यूटी रहती थी। परंतु काम के बीच छिपकर मैं यह भी देखा करता था कि विद्यार्थियों के सामने डाक्टर मुर्दों की चीर-फाड़ कैसे करते हैं। चीर-फाड़ को ठीक तरह समझने के लिए मैं एनाटमी और हिस्टोलाजी की पुस्तकें खरीदकर उनका भी अध्ययन करने लगा। फिर मैं रात को चोरी-चोरी मुर्दाघर में जाकर चिरे हुए मुर्दों की मांसपेशियों और स्नायुओं की चीर-फाड़ भी करने लगा। मोमबत्ती की टिम-टिमाती मंद रोशनी में चीर-फाड़ करते हुए मुझे आंखों के बजाय उंगलियों पर अधिक निर्भर रहना पड़ता था। इससे मुझे स्नायुओं और मांसपेशियों की अवस्थिति और स्वरूप का बहुत पक्का ज्ञान हो गया। इस बीच मैं प्रवेशिका परीक्षा सम्मान-सहित पास कर चुका था।

किंतु रात को मेरे चोरी-चोरी शवच्छेद करने का भेद आखिर एक दिन खुल गया और प्रोफेसर ने मुझे बुलाकर बहुत डांटा। मैंने अपने अभ्यास की बात उन्हें बतायीं। इससे उनका क्रोध सहानुभूति में बदल गया और वे मुझसे सवाल पर सवाल पूछने लगे। वे मेरी जानकारी की कठिन परीक्षा ले रहे थे। अंत में उन्होंने कहा—"तुमने कोयला झोंकनेवाले के काम को ठीक तरह अंजाम नहीं दिया है; इसलिए तुम्हें बरखास्त किया जाता है।" मेरी आंखों में आंसू आ गये। प्रोफेसर साहब कुछ क्षण रुककर फिर बोले – "परंतु हिस्टोलाजी और एनाटमी का तुम्हारा ज्ञान देखकर मैं तुम्हें

जब जहाज तूफान में हो

क. बाहर से यथासंभव प्रसन्न और शांत बने रहिये। अप्रिय प्रसंगों को हास्य का पुट देकर हल्का कर लीजिये – भले ही वह दिमागी हास्य हो।

ख. अपनी बदकिस्मती का बेसुरा राग ग्रामोफोन के रेकार्ड की तरह मन में बजाते न रहिये। अपने को उद्विग्न, चिड़चिड़ा और आवेश में पागल न होने दीजिये। सबसे बड़ी बात – अपने आप पर तरस न खाइये।

ग. हर एक हार को जीत में कैसे बदला जाये, यह सोचिये। याद रखिये, आपकी सबसे बड़ी जीत यह है कि आपने साहस, समचित्तता और जिंदादिली गंवायी नहीं। सब लोग इसके लिए आपकी प्रशंसा करेंगे।

घ. ये छः झंडियां अपने जहाज के मस्तूल पर फहरा दीजिये और उन्हें निरंतर उड़ती रखिये :

१. समचित्तता; २. समर्पण-भाव; ३. साहस ४. दृढ़ता; ५. प्रसन्नता; ६. जिंदादिली।

—डा० जान ए० श्नाँडलर

('हाउ टु लिव ३६५ डेज् ए इयर' से)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डिमांस्ट्रेटर नियुक्त करता हूं।"

उन्नति की राह पर यह मेरा पहला कदम था। उस दिन मैंने अपने दो दिन की कमाई खर्च करके सिनेमा देखा और भर-पेट भोजन किया।

अपनी मेहनत से मैंने यह सम्माननीय स्थान प्राप्त किया था। परंतु छोटा काम करने में भी मुझे कोई संकोच न था। प्रोफेसर का तो मैं इतना आभारी था कि सदा उनकी सेवा करने के अवसर खोजा करता था। एक बहुत अच्छा अवसर मुझे मिला भी। जर्मनी से नयी एक्स-रे मशीन आयी थी। उसके निर्माता मशीन को अस्पताल में बैठाने के ५०० पौंड अतिरिक्त मांगते थे। परंतु अस्पताल के पास पैसा नहीं था।

मैंने मशीन के साथ आयी हुई विवरण-पुस्तिकाओं और नक्शों का अध्ययन करके तीन हफ्ते में मशीन लगा दी। तब मशीन-कंपनी के एक विशेषज्ञ को निरीक्षण के लिए बुलाया गया और मेरा काम सोलह आने ठीक निकला। मशीन ठाट से चलायी गयी। इस तरह अस्पताल को ४५० पौंड की बचत हुई।

मुझ पर प्रोफेसर का विश्वास बढ़ता गया। मैं आपरेशनों के समय उनके पास रहता था। परंतु उनका हाथ बंटाने की छूट नहीं थी। आपरेशन के दौरान निरीक्षण के लिए नमूने आदि तैयार करने तक ही मेरा काम सीमित था। इसमें मुझसे कभी गलती नहीं हुई। एक दिन प्रोफेसर एक रोगी का आपरेशन कर रहे थे कि एकाएक उसकी सांस बंद हो गयी। कृत्रिम श्वास-प्रक्रि के द्वारा रोगी की सांस लौटाने में मुझे क देनी पड़ी। रोगी अच्छा हो गया और इ बाद में आपरेशनों में अनधिकृत रू सहायता देने लगा।

एक दिन एक स्त्री आयी, जिसने कि अधकचरे कंपाउंडर से गर्भपात करा लि था। उसका पति बेहद गरीब था और च बच्चे उनके पहले ही थे। पांचवें बच्चे क बोझ उठाना उनके लिए संभव न था। इ लिए उस स्त्री ने पति को बताये बिना गर्भपात का खतरा उठाया था। मगर कंप उंडर के अनाड़ीपन से मामला बिगड़ गया

हम उस औरत को बचाने में असफ रहे। परंतु इस प्रसंग से मेरी यह धारण बनी कि प्रत्येक देश की सरकार को अवि यहां विवाहित और अविवाहित सभ माताओं तथा उनके बच्चों के पालन-पोष की व्यवस्था करनी चाहिये। मैंने फैसल किया कि मैं भविष्य में ऐसी संस्थाएं खोलूंग जिनमें ऐसी माताओं और बच्चों की देख भाल की जायेगी।

अपने प्रोफेसर के व्यवहार को देखक यह शिक्षा भी मैंने गांठ बांधी कि आपरेशन करनेवाले डाक्टर को अपना पूरा ध्यान अपने काम पर केंद्रित रखना चाहिये, चाहे रोगी दम ही क्यों न तोड़ रहा हो। मैंने यह भी सीखा कि मौत और जिंदगी का फासला बहुत कम होता है; अतः रोगी को बचाने के लिए आपरेशन एकदम शास्त्रीय तरीके से और फुर्ती के साथ करना चाहिये। एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बात जो मैंने सीखी, वह यह है कि डाक्टर को रोगी के साथ भावुकता का संबंध नहीं जोड़ना चाहिये। क्योंकि यदि वह रोगी को बचा न पाया, तो भावुकता उसके लिए भयानक मानसिक पीड़ा का कारण बन जाती है।

इन्हीं दिनों मैं एक लड़की से प्रेम करने लगा था। परंतु मैं इस प्रसंग की उतनी ही चर्चा करूंगा, जितनी यहां अनिवार्य है।

०००

प्रोफेसर की कृपा के बावजूद सोफिया में छात्र के रूप में नियमित अध्ययन की व्यवस्था न हो सकी। सो मैंने पेरिस जाने का निश्चय किया। मेरी प्रेमिका पहले ही उच्च शिक्षा के लिए पेरिस जा चुकी थी। मेरे पास टिकिट के लिए भी पैसे न थे। अतः बिना टिकिट ही जाने का फैसला किया। सामान के नाम पर मेरे पास केवल आपरेशन के औजारों का डिब्बा था। दिन में टिकिट-बाबुओं से बचना संभव न था; इसलिए रात को ग्यारह बजे की गाड़ी के आखिरी डिब्बे के बफर पर बैठकर मैंने अपनी यात्रा शुरू की।

चार घंटे बाद पहला स्टेशन आया इस्क्रेट्ज। चार घंटे के धक्कों और हिचकोलों से मेरी रग-रग दुख गयी थी और इस्क्रेट्ज के वेटिंग रूम में मैं घोड़े बेचकर सोया। जब आंख खुली, तो पांव हिलाना भी मुश्किल था और शक्ल भूत की सी हो रही थी। वहां से फिर रात की गाड़ी से वैसे ही बफर पर बैठकर युगोस्लाविया की ओर चल दिया। सीमांत के स्टेशन कैरिब्राड में चुंगीवालों की जांच पूरे तीन घंटे चली। यह समय मैंने गाड़ी की छत पर छिपकर गुजारा।

गाड़ी जब बेलग्रेड को रवाना हो गयी, तब मैंने फिर बफर पर उतरने की कोशिश की; लेकिन असफल रहा। सो अधिकांश यात्रा गाड़ी की छत पर ही तय करनी पड़ी। रास्ते में कई सुरंगें पड़ीं। एक सुरंग की दीवार से तो सिर टकराते-टकराते बचा। रास्ते में औजारों का डिब्बा भी कहीं गिर गया। बेलग्रेड में मैंने डेढ़ दिन बहुत कठिनाई में गुजारा। मुसीबतें आगे भी उठायीं और पेरिस तक की सारी यात्रा बफर पर ही बैठकर की। पेरिस में टिकिट-बाबू ने मुझे पकड़ा; लेकिन दया करके छोड़ दिया।

पेरिस में रूसी शरणार्थियों की सहायता करनेवाली समिति से मुझे कोई सहायता न मिली। बहुत ढूंढने पर भी कोई काम नहीं मिला। एक रात भूखा-प्यासा एक मूर्ति के नीचे सो गया। जब सवेरे नींद खुली, तो देखा कि दो फटेहाल अधेड़ औरतें मुझसे सटकर सो रही हैं। मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा, तो एक औरत बोल उठी—"नखरे क्यों करते हो? सटकर सो जाओ न! दोनों गरम रहेंगे।"

दिन निकलने के पूर्व वे दोनों उठ बैठीं। रात को होटलों से जो बचा-खुचा खाना बटोरकर लायी थीं, उसमें से उन्होंने मुझे भरपेट भोजन कराया। टीन के डब्बे में काफी बनाकर पिलायी। गरीबों की दिली हमदर्दी का मुझे उस रोज वास्तविक अनु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भव हुआ। वे जहां रहती थीं, उसी इमारत में उन्होंने मकान-मालिकिन से कहकर एक कमरा मुझे काफी सस्ते में किराये पर दिलवा दिया।

बचपन में मेरी आया मुझे हस्तरेखाएं देखना सिखाया करती थी। मुझे अब उसकी सिर्फ याद बाकी थी। न जाने क्यों, मकान-मालकिन को मुझे अपनी हथेली दिखाने की सूझी। कुछ मिनिट तक मैं उसे कुछ भी बता नहीं सका। फिर एका-एक मेरा मस्तिष्क बहुत स्पष्ट हो गया और मैंने मकान-मालकिन के अतीत जीवन की कुछ बातें बतायीं, जो सही थीं। अंत में मैंने कहा कि एक मुकद्दमे में वह जीतेगी।

चार दिन बाद मेरी बात सच हो गयी। जायदाद को लेकर अपने पति से उसका जो कानूनी झगड़ा चल रहा था, उसमें वह जीत गयी। इस पर मेरी बहुत खातिर हुई। मेरा खयाल है कि हाथ देखने में यह सफलता मुझे टेलिपैथी या हिप्नाटिज्म जैसी किसी विलक्षण चीज के कारण ही मिली होगी।

मेरी सफलता की बात मकान-मालकिन से एक संभ्रांत फ्रांसीसी बैरोनेस के कानों तक पहुंची और उसने मुझे बुलवाया। उसने मुझसे एक रहस्य को हल करने में मदद मांगी। उसकी हथेली देखते-देखते मेरे सामने एक चित्र खिंच गया। एक बुढ़िया उसे 'ब्लैकमेल' करने की कोशिश कर रही थी। मैंने उसे सारी बात बतायी; तो वह हैरान रह गयी। कारण जिस बात के बल पर 'ब्लैकमेल' की कोशिश की जा रही थी, वह बात बैरोनेस के अतिरिक्त किसी को मालूम न थी।

बात यह थी कि जब यह महिला किशोरी थी, एक युवक उससे प्रेम करने लगा था। जब इसने युवक का विवाह-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया, उसने आत्महत्या कर ली। घर की एक बूढ़ी नौकरानी ने इस संबंध में कुछ शब्द सुन लिये और भंडाफोड़ करने की धमकी देकर हजारों रुपये ऐंठने की कोशिश शुरू कर दी। मैंने बैरोनेस को आश्वासन दिया कि बुढ़िया को सारी बात मालूम नहीं है और मेरी ही मदद से बैरोनेस ने बुढ़िया से उसका कसूर कबूल करवाया।

नर्तकी

स्केच : आइसेंस्टाइन

बैरोनेस ने मुझे ५,००० फ्रैंक देने चाहे, परंतु मैंने केवल दो हजार फ्रैंक उससे लिये, वह भी ऋण के रूप में, ताकि मैं मेडिकल कालेज में भर्ती होने की फीस दे सकूं। साथ ही उस संभ्रांत स्त्री की कृपापूर्ण मित्रता भी मुझे मिली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ ही दिनों में मुझे एक होटल में फर्श साफ करने और जूठी रकाबियां उठाने का काम मिल गया। कुछ दिनों में तरक्की हुई और मैं वेटर बन गया। अपनी असलियत मैंने यहां सब लोगों से छिपाकर रखी थी और मैं वैसा ही बोलता-चालता तथा आचरण करता था, जैसा कि इस स्तर के लोग किया करते हैं।

वेटर का काम ऐसा है कि आदमी के स्वभाव में दार्शनिकों की-सी तटस्थता आ जाती है और लोग अपनी खानगी बातें भी उसके सामने करने से डरते नहीं। हमारे होटल में एक बार तीन नर्तकियां ठहरी हुई थीं। एक दिन सुबह मैं उनका नाश्ता लेकर गया और दरवाजा खटखटाकर जवाब का इंतजार किये बिना ही अंदर चला गया। वे तीनों निर्वसन होकर नाच का अभ्यास कर रही थीं; सो एकाएक मुझे आया देख-कर चीख पड़ीं—"आदमी!" मैंने तुरंत जवाब दिया—"मैं आदमी नहीं, वेटर हूं।" और हंसी के फव्वारों के बीच हमारी परे-शानी और झेंप स्वयं ही तिरोहित हो गयी।

कोपनहेगन संग्रहालय के निर्देशक भी उस होटल में ठहरा करते थे। वे कुछ बातों-बातों में मेरी असलियत को पहचान गये और मुझे कबूल करना पड़ा कि मैं डाक्टर बनने के लिए अध्ययन कर रहा हूं। उन्होंने मुझे पुस्तकें खरीदने के लिए ४०० फ्रैंक प्रदान किये।

एक दिन मेरी मित्र बैरोनेस ने मुझे एक पार्टी में आमंत्रित किया। इस बात से उसे कोई संकोच नहीं था कि मैं वेटर का काम करता हूं। फ्रांस के कई बड़े-बड़े उपाधि-धारी सज्जनों और बड़े परिवारों से उस पार्टी में भेंट हुई और रात के दो बजे तक का समय बहुत आनंद से बीता।

अगले दिन की बात है। होटल में एक आदमी अपनी दो महिला मित्रों के साथ भोजन करने आया और उसने बहुत जल्दी मचायी—यहां तक कि वह मुझे पीटने पर उतारू हो गया। तब तक मैं कालेज में भर्ती हो चुका था। मैं उसके साथ अकड़ से पेश आया, जैसाकि वेटर नहीं किया करते हैं। मामला किसी तरह निपट गया और मुझ पर कोई आपत्ति भी नहीं आयी; क्योंकि दूसरे लोगों ने मुझे निर्दोष बताया था। परंतु मुझे विश्वास हो गया कि बड़े आदमियों की पार्टी में जाने के फलस्वरूप मैं अपनी वेटर की हैसियत भूल गया था। अतः मैंने एक पत्र लिखकर बैरोनेस से क्षमा मांगी कि जब तक मैं अपनी आर्थिक हैसियत न सुधार लूं, तब तक उसके यहां नहीं आ सकूंगा।

इस झगड़े का एक बुरा परिणाम यह हुआ कि होटल के कर्मचारियों को मालूम हो गया कि मैं वास्तव में रूसी शरणार्थी और मेडिकल कालेज का छात्र हूं। इसके बाद वे लोग मुझसे चिढ़ने और दूर रहने लगे और मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी।

०००

इस बार मुझे काम मिला उन्हीं तीन नर्तकियों की नृत्य-मंडली में, जिनके कमरे में मैंने उस दिन सवेरे प्रवेश किया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे कार्यक्रम के समय बिजली की बत्तियों के नियंत्रण का काम सौंपा गया। वेतन था १५० फ्रैंक प्रति सप्ताह। मेरे जीवन की कुछ अत्यंत सुखद स्मृतियां इस मंडली के साथ जुड़ी हुई हैं। ये नर्तकियां मंच पर चाहे जैसे नृत्य पेश करती हों; परंतु उनका अपना नैतिक मापदंड होता है, जो बहुत ऊंचा होता है। उन्हें दुश्चरित्र समझ लेना बहुत बड़ी भूल है।

इनमें से ज्यादातर लड़कियां अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए ही नर्तकी का पेशा अपनाती हैं और इनमें बलिदान की बहुत सबल भावना मैंने देखी है। ये अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं में कटौती करके दूसरों की जरूरतें पूरी करती हैं। एक नर्तकी अपने परिवार को पर्याप्त पैसा भेजने के लिए इतना कम भोजन करती थी कि एक दिन नाच के दौरान बेहोश होकर मंच पर गिर पड़ी।

इसी तरह एक दिन मैंने एक नर्तकी को नाच के दौरान रुकते और झुकते देखा, जिससे मैं पहचान गया, वह दर्द से पीड़ित है। मैंने समझा कि शायद उसके गर्भ रह गया होगा। मैंने उससे कहा भी कि वह अपनी तकलीफ मुझे बता दे, तो मैं मेडिकल छात्र होने के कारण उसकी कुछ सहायता कर सकूंगा। थोड़ी देर तक उसके चेहरे और शरीर की ऐंठन को देखता रहा। तब मेरी समझ में आया कि वह तीव्र एपेंडिसाइटिस से पीड़ित थी। मैंने मंडली के मालिक से इजाजत लेकर उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया। यह पहला मौका था कि मैंने स्वतंत्र रूप से किसी के रोग का निदान किया था; और वह सही निकला।

मैंने उसका आपरेशन भी देखा। मुझे निश्चय हो गया कि इतना बड़ा निशान बेचारी के पेट पर रह जायेगा कि वह फिर कभी रंगमंच पर नाच नहीं सकेगी। मैंने तय किया कि जब मैं सर्जन बनूंगा, तो एपेंडिसाइटिस के आपरेशनों में मैं चीरे की लंबाई कम-से-कम रखने के यत्न करूंगा।

यह नर्तकी ओल्गा अपनी कमाई से अपनी मां और भाई का भरण-पोषण करती थी। उसे चिंता थी कि अब उसकी मां और छोटे भाई का क्या होगा? परंतु उसे चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। मंडली की सब नर्तकियों ने स्वयं यह निर्णय किया कि जब तक ओल्गा काम करने लायक नहीं हो जायेगी, उसकी मां और भाई के भरण-पोषण की जिम्मेदारी वे सब मिलकर उठा-

चिकित्सकों से

आपको सदा विद्यार्थी बने रहना होगा; जीवन के आखिरी दिन तक सीखने और नये ज्ञान की रोशनी में पुराने सीखे हुए को भुलाने में तत्पर रहना होगा। सज्जनो, अगर आप अपने पेशे में इस स्पिरिट से काम करने को तैयार नहीं हैं, तो मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि चिकित्सकों के समाज से विदा ले लें और कोई घटिया पेशा अपना लें।

—लार्ड लिस्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येंगी । ऐसी सहृदयता मैंने तथाकथित कुलीन लोगों में बहुत कम देखी है । बीमारी से उठने के बाद ओल्गा को उसी मंडली में सेक्रेटरी का काम दे दिया गया और बाद में एक अमरीकी सज्जन से उसका विवाह हुआ ।

इस मंडली के साथ मैंने रंगमंच पर नृत्य भी किया । मंडली ने नया रूसी जिप्सी नृत्य तैयार किया था कि तभी एक महत्वपूर्ण कलाकार बीमार पड़ गया । अपने साथियों को कठिनाई से बचाने के लिए दो सप्ताह तक मैंने उस नर्तक की जगह काम किया । मंडली जब दौरे पर जाने लगी, तब मैं उससे अलग हुआ । उन चंद महीनों की ऐसी मीठी याद मेरे मन में बसी हुई है कि मैं आज भी इस पेशे के लोगों की भरसक सेवा-सहायता किया करता हूं ।

नृत्य-मंडली के वेतन से मेरे पास कुछ धन बच गया था; इसलिए मैंने तसल्ली के साथ नये काम की तलाश की और 'होटल कांटिनेंटल' में वेटर हो गया । यहां इंग्लैंड की दो महिलाओं से मेरी जान-पहचान हो गयी, जिन्होंने बड़ी चतुरता से भांप लिया कि मैं छात्र हूं । जाते समय उन्होंने मुझे दो पौंड भेंट किये और फिर इंग्लैंड से स्त्री-रोगों के संबंध में एक श्रेष्ठ पुस्तक मुझे भेजी । बाद में भी समय-समय पर वे मेरी सहायता करती रहीं ।

०००

इस बीच आर्थिक कठिनाइयों के कारण मेरी मंगेतर नाडया की पढ़ाई में रुकावट आ गयी । तब मैंने एक साल के लिए पढ़ना छोड़कर अपनी कमाई का पैसा उसे देने का निश्चय किया । परंतु घर पर मैं पुस्तकों से अध्ययन करता रहा । १९२३ में २१ वर्ष की आयु में मैं भौतिकी, रसायनशास्त्र और जीवशास्त्र की परीक्षा पास कर ही चुका था । मगर १९२४ में मेरा सपनों का संसार ढह गया । जिस प्रेमिका के लिए मैंने पढ़ाई रोकी, उसने मेरे साथ विश्वासघात किया ।

मैंने नाडया को एक लाकेट भेंट किया था, जो मेरी पैतृक संपत्ति में से बची हुई एकमात्र यादगार थी । नाडया ने एक दिन बताया कि वह लाकेट खो गया है । मुझे दुःख तो हुआ; लेकिन मैंने इस बात को ज्यादा महत्व नहीं दिया । फिर एक दिन मैं उसके घर गया, तो वह मौजूद नहीं थी और मैं उसकी प्रतीक्षा में वहां बैठ गया । मेज पर एक पुस्तक रखी थी । सेक्स-संबंधी वह गंदी किताब देखकर मुझे धक्का लगा । उसी पुस्तक में एक पत्र भी था, जिससे मुझे पता चला कि अर्मांद नामक किसी युवक से नाडया ने शारीरिक संबंध जोड़ लिया है ।

जब वह आयी, मैंने उससे सफाई मांगी । वह अपने असली रंग में आ गयी । उसने मुझे 'नीच वेटर' तक कह डाला, जबकि वेटर की कमाई से ही वह खूब मौज-मजा कर रही थी । उसने मुझसे मार-पीट करने की कोशिश भी की और पुलिस को बुलाने की धमकी दी । आखिर मैं उसे छोड़कर, भगवान से यह मनाता हुआ चला आया कि जीवन में फिर कभी उससे भेंट न हो ।

पेरिस मेरे लिए नरक बन गया और मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

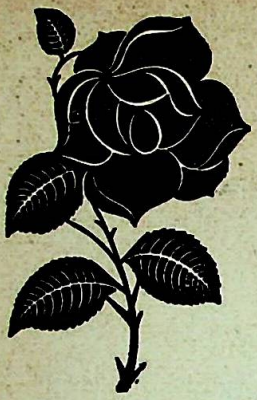

सुख के साथी

सुख के संगी-साथी
दुःख में भी साथ रहें
चाहे टूटे नभ
दीवारें खड़ी रहें ।
कैसी आत्मीयता से
हाथों से हाथ मिले
सीपी में एक साथ
कितने मोती जुड़े !
आखिरी सांस तक
हाथों में रहें हाथ ।
आसमान की ईंटें
गिननेवाले वे श्रेष्ठ नर,
यहां तक चला आया
उनके आश्वासन पर ।
ईंट पर झुका हो माथ
किंतु हाथ चरण गहें,
सुख के संगी साथी
दुःख में भी साथ रहें ।।

—म० म० देशपांडे

[मराठी से रूपांतरः दिनकर सोनवलकर]

फ्लोरेंस आ गया । एक मोची की सहा से मुझे रहने के लिए सस्ता कमरा मि गया । मैंने विश्वविद्यालय में डाक्टरी तीसरे वर्ष में नाम भी लिखा लिया । क नवंबर से शुरू होनेवाली थीं । सो मैं खोजने लगा; परंतु सफल नहीं हुआ । अ बर में ऐसी स्थिति आ गयी कि दो दि तक मुझे भोजन नहीं मिला । आत्मह करने का विचार मन में आया । घो निराशा की स्थिति थी । कैरियर मेरे सा था, सफलता की समुचित संभावनाएं थीं । परंतु परिस्थितियां प्रतिकूल थीं । मे मस्तिष्क शून्य हो गया था ।

उसी हालत में न जाने कैसे मैं वहां प्रसिद्ध कला-अकादमी में जा पहुंचा । क एक प्रोफेसर ने मेरी हालत को समझ मुझे माडल का काम दिया और उस दि १५ लीरा मुझे मेहनताने के रूप में मिले मैं तुरंत एक भोजन-गृह में पहुंचा और भी भोजन आया, निगल गया । इतना भू था मैं ! और परिणाम यह हुआ कि ब हज्मी हो गयी । और भी कई कठिनाइ मेरे सामने आयीं; परंतु फिर कभी मुझे भू नहीं रहना पड़ा । अकादमी में मैं मिट्टी और प्लास्टर से माडल बनाने का अभ्यास भी करता रहा, जो बाद में डाक्टरी में मेरे बहुत काम आया ।

किंतु माडल का काम स्थायी न था; अतः मुझे किसी और काम की तलाश थी। आखिर 'एक्विला डी ओरो' नामक होटल में वेटर का काम मिल गया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोलोना के एक बैंक के डाइरेक्टर अपनी पत्नी के साथ यहां ठहरे हुए थे। एक दिन मुझे उन दोनों को परोसने का अवसर मिला। उन्हें जरा जल्दी थी। मैं उनके लिए 'सूप' लेकर आया और परोस ही रहा था कि एक बूढ़े वेटर का हाथ मेरी कोहनी से टकरा गया। परिणामतः 'सूप' बैंकर महोदय की पत्नी के कपड़ों पर गिर गया। यह देख होटल-मालिक बिगड़ उठा और बोला कि आज से तुम्हें तश्तरियां धोनी होंगी। परंतु बैंकर महोदय बीच में बोल पड़े कि 'सूप' तो उनकी पत्नी के अचानक हिलने के कारण गिरा था, और उसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। अतः मुझे क्षमा कर दिया गया। उस बूढ़े वेटर ने मेरा आभार माना।

दो वर्ष बाद वही बैंकर साहब फिर एक बार हमारे होटल में आकर ठहरे। तब उन्होंने मुझे बताया कि 'सूप' बूढ़े वेटर के कारण गिरा था, यह उन्होंने भी देख लिया था। उस बूढ़े को बचाने के लिए सारा दोष मुझे अपने ऊपर लेते देखकर उनसे नहीं रहा गया और उन्होंने अपनी पत्नी की गलती कहकर मुझे बचाया। डाक्टरी की एक अत्यंत महंगी और श्रेष्ठ पुस्तक तो वे इसके पहले ही मुझे भेज चुके थे।

एक रात को मैं होटल में 'बार' पर तैनात था। नवयुवकों का एक दल वहां उपस्थित था—युवतियां भी उसमें थीं। दो बजे होटल बंद होता था; परंतु वे लोग जाने को तैयार न थे। मैंने ढाई बजे जब उन्हें समय की याद दिलायी, तो मारिया नाम की एक युवती बिगड़ पड़ी और बोली—हम तो सारी रात यहीं रहेंगे; क्या कर लोगे तुम हमारा? और सचमुच वे लोग सुबह साढ़े छः बजे तक वहीं जमे रहे।

कुछ हफ्ते बाद जब मैं सालाना परीक्षा देने गया, तो वह लड़की भी मेरे साथ परीक्षा-कक्ष में उपस्थित थी। मुझे देखकर बेचारी इतनी सकपका गयी कि उससे कोई प्रश्न हल करते नहीं बना। चालाकी से मैंने उसकी सहायता की। मैंने तो सम्मानपूर्वक परीक्षा पास की ही, वह भी उत्तीर्ण हो गयी।

अब अस्पताल में काम करने की बारी थी। मेरी सफलता से होटल के प्रमुख वेटर को ईर्ष्या हो गयी थी। परिणाम यह हुआ कि मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी। परंतु सौभाग्य से नगर के सबसे बड़े होटल 'सेवोइया' में काम मिल गया।

अस्पताल में काम करने के दौरान मैंने प्रो० बुर्साइ को एक आपरेशन करते देखा। उन्होंने एक युवती का पेट चीरकर, अंतड़ियों को काटकर कुछ हिस्सा निकाला और उससे पित्तरस के बहाव के लिए गाल-ब्लडर तक नयी नाली बना दी। यानी प्रोफेसर ने एक प्रकार से एक नया अंग ही बना दिया। सर्जरी का एक चमत्कार था यह। वह युवती तीन सप्ताह में ठीक होकर घर चली गयी। तब मुझे इतनी खुशी हुई, मानो मेरी ही कोई निकट की रिश्तेदार मौत के मुंह से लौट आयी हो।

सोफिया में गर्भपात की वह दुर्घटना देखने के बाद से मुझे विश्वास हो गया था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि गर्भवती स्त्रियों और जच्चा व बच्चे की देख-भाल का भार सरकार को अपने जिम्मे ले लेना चाहिये । और फ्लारेंस के अस्पताल में प्रो० फेरोनी का एक आपरेशन देखकर यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

एक औरत के गर्भ में बच्चे की स्थिति गलत थी। प्रोफेसर हाथ से बच्चे को निकाल रहे थे । मगर नितंब की हड्डियों के बीच जगह कम होने के कारण बच्चे का सिर अटक गया । तुरंत उन्होंने हड्डी को काटने का फैसला किया और यह आपरेशन करके बच्चे और माता दोनों को बचा लिया।

ऐसा बहुत बार होता है कि आपरेशन शुरू तो होता है किसी रूप में; परंतु नयी कठिनाइयां उपस्थित हो जाने के कारण आनन-फानन में दूसरे ढंग का आपरेशन करना पड़ जाता है । इसीलिए प्रसूति के मामलों में कई तरह के विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है और उनकी सेवाएं सरकारी अस्पतालों में ही सबको मिल सकती हैं।

मैं बदहज्मी से पीड़ित होने का ऊपर उल्लेख कर चुका हूं । उसके दुष्प्रभाव से मुझे अभी पूरी तरह छुटकारा नहीं मिला था । रह-रहकर मेरे पेट में दर्द उठा करता था । परंतु पढ़ाई जारी रखने की धुन में मैंने उसकी परवाह नहीं की । सुबह से रात के दो बजे तक मैं अस्पताल और होटल के काम में व्यस्त रहता था । फिर दो घंटे पढ़ता था । इस कठोर जीवन का परिणाम यह हुआ कि मैं एक दिन होटल में काम करते करते बेहोश होकर गिर पड़ा । जब होश आया, तो मैं अस्पताल में था । पता चला कि मेरे पेट में रक्त-स्रावी अल्सर हो गया है । मुझे बोलने की भी मनाई कर दी गयी । पीने को मुझे पानी भी नहीं दिया जाता था।

सबसे अधिक दिया

और येसु ने ऊपर आंखें उठायीं, तो देखा कि धनवान (मंदिर के) खजाने में अपना-अपना दान डाल रहे हैं। किसी कंगाल विधवा को वहां दो अधेले डालते हुए देखकर येसु बोल उठे –"सच पूछो तो इस निर्धन विधवा ने सबसे अधिक दिया है । क्योंकि इन सबने तो अपनी बचत में से ईश्वर के लिए दिया है; परंतु इस विधवा ने अपनी तंगी में से, जो कुछ इसके पास है, वह सब, अपनी समस्त जीविका दे दी है।—बाइबल, लूक २१,१-३

प्रो० फ्रुगोनी ने मेरी हालत को समझा और इलाज करके मुझे बचा लिया। परंतु यह बात निश्चित थी कि पढ़ाई जारी रखने के लिए वेटर का काम करके धनार्जन करना अब मेरे लिए असंभव था । लगभग दो महीने बाद जब अस्पताल से छुट्टी मिली, तो प्रो० बुर्साइ और प्रो० फ्रुगोनी ने मुझे इसकी अनुमति दिला दी कि डाक्टरी की उच्च कक्षा के छात्रों के लिए इटली सरकार द्वारा दी जानेवाली तीन बड़ी छात्रवृत्तियों में से एक के लिए मैं परीक्षा दे सकूं। ये छात्र-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृत्तियां केवल इटालियन लोगों के लिए सुरक्षित थीं। मैं पहला विदेशी था, जिसे इस के लिए परीक्षा देने की इजाजत दी गयी।

परीक्षा देने के लिए मैं रोम को रवाना होने लगा, तो प्रो० बुर्साइ ने प्रधान परीक्षक के नाम मुझे एक पत्र दिया। साथ ही उन्होंने मुझे यह भी बता दिया कि प्रधान परीक्षक से उनके संबंध बहुत अच्छे नहीं हैं। सो मुझे शक हुआ कि यह पत्र पेश करने से मुझे लाभ के बजाय नुक्सान ही होगा। दूसरी चिंता मुझे स्वास्थ्य की थी। पेट का दर्द पूरी तरह गया नहीं था।

रोम में पता चला कि परीक्षा पूर्णतया निष्पक्ष होती है। इससे मैं कुछ आश्वस्त हुआ। पहली परीक्षा अत्यंत कठिन विषय में हुई। मेरा सोफिया अस्पताल का अनुभव और परिश्रम इस वक्त बहुत काम का सिद्ध हुआ और पहली परीक्षा में मैं सफल हुआ। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ और अंतिम परीक्षा के लिए हम केवल २५ उम्मीदवार रह गये थे। अंतिम परीक्षा मेरे प्रिय विषय सर्ज़री की थी। लिखित और मौखिक दोनों ही परीक्षाओं में सफल हुआ। तब मुझे प्रधान परीक्षक ने बुलवा भेजा।

मैंने समझा कि यह भेंट औपचारिक होगी। परंतु पहले दो-एक प्रश्नों के बाद ही उन्होंने एक ऐसा प्रश्न पूछा, जिसका उत्तर कोई साधारण विद्यार्थी कभी नहीं दे पाता। परंतु सोफिया के अस्पताल का अनुभव यहां भी काम दे गया। प्रधान परीक्षक के प्रश्न कठिन से कठिनतर होते गये। मैंने समझा कि विदेशी हूं, इसलिए जान-बूझकर मुझे उलझाया जा रहा है। मुझे अफसोस हुआ कि प्रो० बुर्साइ का पत्र पहले ही क्यों न दे दिया। किंतु मौका निकल चुका था। एक घंटे बाद जब वह अग्नि-परीक्षा समाप्त हुई, तो परीक्षक के चेहरे के हाव-भाव से ऐसा लगा, मानो मुझे पराजित न कर पाने का उन्हें अफसोस है।

शाम को परीक्षा-फल देखने के लिए जब मैं विश्वविद्यालय पहुंचा, तो मेरी ही पुकार मची हुई थी। मुझे तुरंत प्रधान परीक्षक के सामने पेश होना पड़ा। उन्होंने मुझे मुबारकबाद दी। मैं छात्रवृत्ति के लिए चुन लिया गया था। उनके पूछने पर मैंने प्रो० बुर्साइ का पत्र उन्हें दिया। पढ़कर उन्होंने पत्र वापस मेरे हाथ में दिया और कहा—"पढ़ो।" उसमें लिखा था—"इस विद्यार्थी से जो चाहें, वह पूछें। आप इसे मात नहीं दे सकेंगे।" अच्छा ही हुआ, जो मैंने यह पत्र परीक्षा से पहले उन्हें नहीं दिया। मैंने वहां से लौटकर तुरंत प्रो० बुर्साइ को अपनी सफलता का तार भेजा।

फ्लोरेंस लौटने पर प्रो० बुर्साइ और प्रो० फ्रुगोनी ने मेरा ऐसे स्वागत किया, जैसे मैं उनका ही पुत्र होऊं। उन्होंने मुझे ३०० लीरा माहवार पर प्रो० बेची के साथ डेमांस्ट्रेटर भी नियुक्त करा दिया। अब मुझे पढ़ाई के लिए पैसा कमाने की कोई आवश्यकता नहीं थी और मेरा सारा समय अध्ययन में बीतने लगा। कुछ ही महीनों में मैंने चौथे वर्ष की परीक्षा पास की। पांचवें वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में छात्रों को आपरेशन में हाथ बंटाने का भी अवसर मिलता था। मेरे जिम्मे ऐसे केस ढूंढ़ निकालने का काम था, जिनमें डाक्टरों द्वारा रोग का गलत निदान व इलाज किये जाने के कारण रोगी को प्राण गंवाने पड़े। प्रो० वेची इनके आधार पर छात्रों को समझाते थे कि उन गलतियों से कैसे बचा जाये।

कक्षा में प्रोफेसर छात्रों से कठिन-से-कठिन प्रश्न किया करते थे। फिर मैं ठहरा छात्र-वृत्ति पानेवाला विद्यार्थी; अतः मुझसे और भी कठिन प्रश्न किये जाते थे।

एक दिन प्रो० बुर्साइ ने एक रोगी दिखाया, जिसके मस्तिष्क में गांठ थी। इस कारण उसकी वाणी अस्पष्ट हो गयी थी और शरीर के बायें पार्श्व में लकवा हो गया था। प्रोफेसर साहब का खयाल था कि आपरेशन करने पर भी रोगी बचनेवाला नहीं है; अतः उन्होंने आपरेशन न करने का फैसला किया। मैंने महसूस किया कि यदि रोगी के बचने की नाममात्र की भी संभावना हो, तो उससे फायदा उठाना चाहिये। प्रोफसर साहब को भी मेरी दलील जंची। आपरेशन किया गया। रोगी की खोपड़ी को खोला गया। प्रोफेसर ने सब औजार छोड़कर, अपनी उंगलियों से बहुत ही सावधानी के साथ, धीरे-धीरे मस्तिष्क में से गांठ निकालने लगे। वे कह रहे थे—इस आपरेशन में शीघ्रता नहीं करनी है; बल्कि बहुत ही सावधानी के साथ गांठ को धीरे-धीरे अलग करना है, ताकि मस्तिष्क को कोई चोट न पहुंचे।

भग्नहृदया
एक कांस्य मूर्ति

चार घंटे में आपरेशन समाप्त हुआ। प्रोफेसर ने कहा—"मैं कोई भगवान नहीं हूं। सो कह नहीं सकता कि रोगी बचेगा या नहीं। परंतु आपरेशन बिलकुल ठीक हुआ है।" और सचमुच कुछ ही सप्ताह में रोगी ठीक-ठीक बोलने लगा और उसका लकवा भी दूर हो गया। प्रोफेसर बुर्साई ने रोगी को सचमुच मौत के मुंह से निकाल लिया था।

छठे वर्ष में हमारे अध्ययन का क्षेत्र और विस्तृत हो गया। मैं पागलपन और मनोरोगों के प्रख्यात विशेषज्ञ प्रो० तांजी की क्लासों में जाने लगा। एक दिन उन्होंने एक आदमी को कक्षा में पेश किया। आदमी देखने में बड़ा प्रभावशाली और बातचीत में बड़ा प्रगल्भ था। उसने अच्छा-खासा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषण दे डाला। इसमें उसने बताया कि प्रो० तांजी ने उसके मस्तिष्क का चमत्कारपूर्ण इलाज किया था, जिससे उसकी मेधाशक्ति बहुत बढ़ गयी और वह आनन-फानन में हर मसले को सुलझाने लगा। उसने यह भी बताया कि प्रथम महायुद्ध के दौरान उसी की सलाह पर अमल करके मित्रराष्ट्रों ने कई मोर्चों पर विजय पायी थी। हम सब बहुत प्रभावित हुए।

लेकिन जब वह भाषण समाप्त कर प्रो० तांजी को धन्यवाद देकर चला गया, तब प्रोफेसर ने बताया कि पूरे एक घंटे तक हमने जो कुछ सुना, वह सब एक पागल का प्रलाप था। उन्होंने बताया कि यह एक खास मनोरोग का लक्षण है। बाद में प्रो० तांजी ने उस आदमी का इलाज किया और उसका दिमाग ठिकाने आया। वह किसी गांव में मामूली अध्यापक था और ठीक होकर अपने स्कूल वापस चला गया।

प्रो० तांजी की सबसे बड़ी सीख यह थी कि पागलों का इलाज करने के लिए डाक्टर में असीम धैर्य होना चाहिये। साथ ही वे यह भी मानते थे कि पागलों का आपरेशन करके उनकी प्रजनन-शक्ति समाप्त कर दी जानी चाहिये; क्योंकि पागलपन का कोई अचूक इलाज किसी डाक्टर के पास नहीं है। जब तक ऐसा कोई इलाज न निकल जाये, तब तक भावी मानव-संतति को पागलपन से छुटकारा दिलवाने का यही एक उपाय है। कुछ सरकारों ने प्रो० तांजी के जीवन-काल में ही इस उपाय को अपनाया; परंतु अधिकांश देश इस दिशा में अपना कर्तव्य पूरा करने में असफल रहे हैं।

अध्ययन के अंतिम वर्ष में मुझे डाक्टरेट के लिए शोध-निबंध लिखना था। इसके लिए मैंने प्रो० वेली की सलाह से सेक्स-हारमोनों पर प्रयोग शुरू किये। मेरे प्रयोगों से यह परिणाम निकला कि सेक्स-हारमोन शरीर में रोगों की रोक-थाम करने में बहुत सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त, यदि एक जाति के प्राणी की सेक्स-ग्रंथियां दूसरी जाति के प्राणी में लगायी जायें, तो वे इतनी प्रभावशाली नहीं रहतीं।

शोध-निबंध प्रस्तुत करने का समय निकट था। अतः मैं बड़ी तत्परता से उसे लिख रहा था कि एक दिन आधी रात को मेरे एक सहपाठी ने दरवाजा खटखटाया और मुझे एक रोगिणी को देखने बुलाया। रोगिणी पर नजर डालते ही लगा कि उसका गर्भपात कराने का प्रयत्न किया गया है। इस बीभत्स केस में हाथ बंटाने को मैं कतई तैयार नहीं था। परंतु युवती की करुण प्रार्थना ने मेरा दिल हिला दिया। मैंने तुरंत प्रो० बुर्साइ को टेलिफोन किया। मामले की गंभीरता को समझते हुए भी वे आपरेशन करने को तैयार हो गये। युवती के पेट से बुनाई की सलाई निकली और वह बच गयी।

बाद में प्रोफेसर ने उस छात्र को इस भयंकर अपराध के लिए बहुत लथाड़ा। लेकिन उनके आचरण से मैंने यह सीख ली कि हर हालत में डाक्टर का पहला कर्तव्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है कि रोगी के प्राण बचाने की पूरी कोशिश करे।

इस रोगिणी की देख-भाल में मेरा बहुत समय नष्ट हुआ। फिर भी मैंने अपना शोध-निबंध समय पर पेश कर दिया। मेरा खयाल था कि समय की कमी के कारण मैं बहुत बढ़िया नहीं लिख पाया हूं और उत्तीर्ण-भर हो जाऊंगा। मगर मेरी थीसिस उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ थीसिस मानी गयी। मुझे पुरस्कार मिला और मैं प्रोफेसर पलागी का सहायक सर्जन भी नियुक्त किया गया। उस रात स्नातक होनेवाले छात्रों की ओर से प्रोफेसरों को जो भोज दिया गया, उसमें मैंने वेटर की पोशाक पहनकर भोजन परोसा। मेरे लिए वह बड़े गर्व का दिन था।

मेरा एक कलाकार मित्र था साल्विएती। उसकी पत्नी का नाम मार्गरीटा था। दोनों एक-दूसरे पर जान देते थे। बीच में बहुत समय तक मेरा उनसे मिलना नहीं हुआ। एक दिन मार्गरीटा अपनी जांच कराने मेरे पास आयी। उसे क्षय हो गया था और उस वक्त रोग आखिरी दौर में था। उसके बचने की कोई उम्मीद न थी। मेरे पूछने पर उसने यह भी बताया कि किसी रोगसे साल्विएती की नाक की शक्ल इतनी बिगड़ गयी है कि अब वह किसी को मुंह नहीं दिखाता और बहुत चिड़चिड़ा भी हो गया है। मैंने घर पर आकर उनसे मिलने का वादा करके मार्गरीटा को विदा किया।

मगर उसी शाम को मार्गरीटा ने मुझे तुरंत बुलवाया। उसे खून की उलटी हो रही थी और वह मेरे देखते-देखते मर गयी। मैं मिलने आनेवाला हूं, यह सुनकर साल्विएती दोपहर को ही कहीं चला गया था। उसके नाम चिट्ठी लिखकर चला आया।

कुछ दिन बाद साल्विएती लौटा। चिट्ठी देखकर उसने मुझे रात को बुलवाया। मेरे आने पर उसने कमरे में रोशनी न जलायी, ताकि मैं उसकी भोंडी नाक न देख सकूं। किंतु मैं कम नहीं था। मैंने चालाकी से उसे बेहोशी की दवा पिलाकर उसकी जांच की। फिर जब वह होश में आया, तो किसी तरह समझा-बुझाकर नाक का ऑपरेशन कराने को राजी किया।

मैंने पढ़ा था कि प्राचीन भारत में गाय का मांस लगाकर भोंड़ी नाकें सुडौल बनायी जाती थीं। पंद्रहवीं शदाब्दी में इटली में भी गाय का मांस लगाकर नाक सुधारने के प्रयत्न किये गये थे। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में भी इस दिशा में कई डाक्टरों ने कार्य किया था। साल्विएती की नयी नाक के लिए मैंने बांह से गोश्त काटकर उसकी नाक में लगाया। मांस तथा नयी त्वचा के जमकर दृढ होने तक बांह को नाक से जोड़कर रखा गया। चौदह दिन बाद साल्विएती के चेहरे पर अत्यंत सुंदर नाक थी। इस परिवर्तन से उसका स्वभाव और भविष्य दोनों सुधर गये।

०००

मनुष्य गलतियां करता है, और डाक्टर भी आखिर मनुष्य हैं। एक बार कैंसर-पीड़ित एक स्त्री हमारे पास लायी गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके बचने की कोई उम्मीद न थी ; परंतु जब तक मृत्यु न हो जाये, तब तक उसे भयंकर पीड़ा से छटपटाते रहना पड़ता। इस पर कक्षा में बहस छिड़ गयी कि क्या ऐसे रोगियों को उनकी इच्छा के अनुसार मृत्यु प्रदान करके असहनीय पीड़ा से छुटकारा देना अधिक मानवीय न होगा। मैं इस उपाय का समर्थक था। दो छात्रों ने इसका विरोध किया। कुछ समय बाद मुझे भी यही लगा कि डाक्टर से भी गलती हो सकती है; अतः उसे रोगी को इस प्रकार मारने का कोई हक नहीं है। उसे तो रोगी की पीड़ा कम करने का ही प्रयत्न करना चाहिये।

प्रोफेसर बुर्साइ ने मुझे उस रोगिणी का उपचार करने की अनुमति दे दी। दो सप्ताह बाद वह स्त्री मर गयी; परंतु मैंने दवाइयों द्वारा उसकी दर्द की अनुभूति हर ली थी। और उसे यह भी विश्वास हो गया था कि उसका बहुत अच्छा इलाज हो रहा है। अतः जब वह मरी, तो उसके मन में शांति थी।

मनुष्य से कैसे गलती हो जाया करती है, इसका अनुभव कई वर्ष बाद अपने घर पर ही हुआ। मैं तब इंग्लैंड में प्रैक्टिस करने लगा था और मेरे माता-पिता फ्लोरेंस में रहते थे। मेरी मां बीमार पड़ीं। डाक्टरों ने बताया कि उनकी बच्चेदानी में कैंसर हो गया है और उन्हें किसी तरह बचाया नहीं जा सकता। जांचने पर मुझे भी यही महसूस हुआ। अतः हमने उनका आपरेशन करना व्यर्थ समझा। दो वर्ष बाद उनकी हालत बहुत बिगड़ गयी और मैंने अपने एक मित्र से आपरेशन करवाया, तो उनके पेट में मामूली गांठ निकली। दरअसल उन्हें कैंसर नहीं था। वे फिर ठीक हो गयीं।

०००

जब मैं छठे वर्ष में अध्ययन कर रहा था, तब एक नवयुवती रोगिणी को रक्त की आवश्यकता हुई। वह बड़े घर की लड़की थी। नाम था एलिनोरा। उपयुक्त जाति का रक्त किसी भी अस्पताल से मिल नहीं रहा था। सो मैंने डाक्टर को मजबूर किया कि मेरा रक्त उसे दिया जाये। वैसे मैं खुद काफी कमजोर था। सौभाग्य से मेरा रक्त उसकी ही जाति का था। रक्त तो दे दिया; परंतु मैं बेहोश हो गया। कई दिन बाद ठीक हुआ, तो एलिनोरा के माता-पिता ने मुझे स्वास्थ्य-लाभ के लिए अपने यहां बुलाया।

वहां जाने पर मुझे महसूस हुआ कि मैं एलिनोरा से मन-ही-मन प्रेम करने लगा हूं। परंतु उससे विवाह की बात तो मैं सोच भी नहीं सकता था। और जब मैं वहां से लौटने लगा, तो एलिनोरा रो पड़ी। तो वह भी मुझसे प्रेम करती थी ! फिर भी मैंने एलिनोरा के माता-पिता से क्षमा मांगकर वहां से चल देना ही उचित समझा; क्योंकि मुझे यह आशा न थी कि एलिनोरा का मुझसे विवाह करना उन्हें पसंद होगा।

परंतु मेरा खयाल गलत निकला। वे तो बस अपनी लड़की को सुखी देखना चाहते और उसकी मनःस्थिति को जानते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मैंने छठे वर्ष की परीक्षा पास की, तब हमारी सगाई की घोषणा की गयी और मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

तभी एक दिन मेरे घर नाडया आ पहुंची, जिसे मैं बिलकुल भूल चुका था। उसने मुझे धमकाया कि अगर मैं धन देकर उसे चुप नहीं करूंगा, तो वह मेरी मंगेतर से कह देगी कि मैंने पेरिस में उसका शील-भंग किया था और फिर उसे छोड़ दिया था। मैंने इस धमकी की परवाह न करके उसे घर से निकाल दिया।

अगले दिन एलिनोरा के पिता ने मुझे अपने यहां बुलवाकर बताया कि नाडया यहां आकर एलिनोरा को बहका गयी है। मैंने जब उन्हें सारी बात बतायी, तो उन्हें मेरे निर्दोष होने का पूरा विश्वास हो गया। परंतु एलिनोरा यही कहती रही कि तुमने यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बतायी? उसने कहा कि पुरुषों पर से उसका विश्वास उठ गया है और वह किसी मठ में संन्यासिनी बनकर रहेगी। और यही उसने किया।

मैंने फैसला किया कि मैं आत्महत्या कर लूंगा। परंतु एलिनोरा ने मेरी मनःस्थिति को समझकर मुझसे आत्महत्या न करने का वचन ले लिया। एलिनोरा के माता-पिता का खयाल था कि कुछ महीनों में उनकी लड़की का चित्त शांत हो जायेगा और वह सांसारिक जीवन बिताने घर लौट आयेगी।

परंतु मैं छब्बीस वर्ष का नवयुवक अब सब ओर से निराश हो चुका था। अपने कैरियर की मुझे परवाह न रह गयी थी। मैं फ्लोरेंस से चल पड़ा। ज्यूरिच, फि आदि कई जगह भटकता फिरा, जिसकी ठीक तरह सुधि भी नहीं थी। आखिर चलते एक जगह मैं बेहोश होकर गिर जब होश आया, तो मैं जिप्सियों के एक में था। उन्होंने मुझे मौत से बचाया

मैं उनके साथ रहने लगा। जिस ने मेरी देख-भाल की थी, उसका ल एक दिन सख्त बीमार पड़ गया। जब बदोशों का कोई देसी उपचार कारग हुआ, तो उस औरत ने मुझसे सह मांगी, यद्यपि उसे मालूम नहीं था कि डाक्टर हूं।

मैंने लड़के को देखा और उसके टां का आपरेशन करने की तैयारी की। उस्तरा इसके लिए काम में लिया। गड़ छेद करके उसमें सिगरेट पीने की मिट्टी की नली लगा दी। फिर दैनिक योग की कामचलाऊ चाकू-कैंची से ही ब रेशन कर डाला। मैंने एक आदमी को भेजकर एक दवा भी मंगा ली थी। ठीक हो गया। कुछ दिन और मैं लोगों के बीच रहा। यह बात स्पेन की

स्पेन की पुलिस को मुझ पर जासूस का संदेह हो गया। तब उन जिप्सियों मुझे छिपाकर फ्रांस पहुंचा दिया। वहां मैं म्यूनिख गया। जाने से पहले मैंने कोशिश की कि मुझे इंग्लैंड में नौकरी जाये; परंतु सफलता नहीं मिली।

०००

म्यूनिख के जर्मन अस्पताल में मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यक सर्जन नियुक्त किया गया और जर्मनी की डाक्टरी डिग्री प्राप्त करने की आज्ञा दी गयी। मेरी कुशलता देखकर प्रोफेसर मुझे आपरेशनों में भाग लेने देते थे; परंतु था यह नियम-विरुद्ध। एक दिन जर्मनी का प्रख्यात एथलीट रुडोल्फ श्वार्ज घायल अवस्था में अस्पताल लाया गया। उसकी रीढ़ की तीन हड्डियां टूट गयी थीं। मेरे प्रोफेसर ने उसका आपरेशन करने से इन्कार कर दिया। उनका मत था कि श्वार्ज को बचाया नहीं जा सकता। मैं जानता था कि सफलता की उम्मीद दशमलव एक प्रतिशत भी नहीं है। फिर भी मैंने आपरेशन के लिए जोर दिया। इस पर प्रोफेसर ने मुझे डांट दिया। मगर मैंने श्वार्ज के पिता से जाकर कहा कि वे आपरेशन के लिए जोर दें।

श्वार्ज के पिता की बात प्रोफेसर को माननी पड़ी; परंतु आपरेशन की जिम्मेदारी उन्होंने मुझ पर ही रखी। मैंने अपना सब कुछ दाव पर लगा दिया। सौभाग्य से आपरेशन सफल रहा और कुछ हफ्तों के बाद श्वार्ज अपने पैरों चलकर घर गया।

इस सफलता के फलस्वरूप मुझे तुरंत डाक्टरी की जर्मन डिग्री की परीक्षा देने की अनुमति मिल गयी। इस तरह दस वर्ष की मेहनत से मैंने इंग्लैंड में प्रैक्टिस करने की योग्यता आखिर प्राप्त कर ही ली।

एक दिन प्रोफेसर ने मुझे बुलाकर सूचना दी कि मुझे मेरे काम से हटा दिया गया है। मैं समझ गया कि श्वार्ज-प्रकरण का मुझसे यह बदला लिया जा रहा है। कुछ मिनिट प्रोफेसर साहब गंभीर मुंह बनाकर बैठे रहे; फिर मुस्कराते हुए उन्होंने कहा—"और तुम्हें अब 'सीनियर हाउस सर्जन' बना दिया गया है।" तब मैं समझ पाया कि उन्होंने मेरे लिए कितना कुछ किया था।

चार वर्ष मैं इस पद पर रहा और इस अवधि में और भी कई उतार-चढ़ाव मैंने देखे। परंतु अंत में मेरी इच्छा पूर्ण हुई और मैं इंग्लैंड जा पहुंचा। यही मेरा लक्ष्य था।

दस वर्ष के संघर्ष ने मुझे सिखा दिया था कि कोई हार अंतिम हार और कोई जीत अंतिम जीत नहीं होती।

★

विजेतव्या लंका चरणतरणीयो जलनिधिः, विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः।
पदातिर्मत्यों ऽसौ सकलमवधीद् राक्षसकुलं, क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे ।।

—अजेय लंका को जीतना है। बीच में दुर्लंघ्य सागर फैला हुआ है, जिसे पैदल पार करना है; क्योंकि दूसरे साधन नहीं हैं। शत्रु है महापराक्रमी रावण—कोई मामूली आदमी नहीं। सहायक हैं बंदर, जो चंचल-बुद्धि होते हैं। इस प्रकार साधन-विहीन होते हुए भी महामानव राम ने लंका पर चढ़ाई की और समस्त राक्षसों को समाप्त कर दिया। वस्तुतः बात यह है, महापुरुष साधनों के बल पर नहीं, अपने बल-पराक्रम द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं।

—वागीश्वर का नीतिश्लोक

प्रेषक : शौरिराजन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब खाइये

खुंभी का आटा

सुरेंद्र कुमार

तपोवन-वासी हमारे ऋषि-मुनि कंद-मूल फल खाते थे और हृष्ट-पुष्ट रहते थे। अन्न-समस्या की विकटता उनके सामने कभी नहीं आयी। किंतु आज दुनिया में यह समस्या विकटतर होती जा रही है। सन १९२४ से विश्व की जनसंख्या ४०% बढ़ गयी है और १०० व्यक्ति प्रति मिनिट की गति से बढ़ती जा रही है। यदि यह इसी गति से निरंतर बढ़ती रही, तो सन २००० तक जाते-जाते आज से दुगनी हो जायेगी। जबकि इस समय ३ अरब की आबादी को पूरा भोजन देना भारी पड़ रहा है, उस समय ६ अरब लोगों के पेट भरना सर्वथा असंभव हो जायेगा।

कुछ ही देश ऐसे हैं, जो अपनी जरूरत से ज्यादा या आवश्यकता के अनुरूप भोजन-पूर्ति पर पाते हैं। अधिकांश देश तो ऐसे हैं, जहां पोषक भोजन का बिलकुल अभाव है।

इस अभाव और भावी पीढ़ियों की भोजन-समस्या को हल करने की दिशा में वैज्ञानिकों का एक महत्वपूर्ण सुझाव है—खुंभी को अन्न का स्थानापन्न बनाया जाये। संसार के अनेक वैज्ञानिक इस प्रयास में दिन-रात एक कर रहे हैं कि प्रोटीनों से भरपूर खुंभी को बड़े पैमाने पर उगाया जाये, जब वह दिन आये कि प्राकृतिक [illegible] पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो, तो [illegible] का आटा विश्व की भोजन-समस्या को [illegible] करने के लिए तैयार रहे।

पश्चिम में अब शीघ्र ही खुंभी से [illegible] डबल रोटियां और केक मिलने लगेंगे, [illegible] ये लाखों की भूख मिटाने में मदद करें।

ओहियो राज्य विश्वविद्यालय में [illegible] स्पति-विज्ञान के प्रोफेसर डा० विल्फ्रे ग्रे और मास्को के प्रयोगात्मक केंद्र नं० तीन के डा० फ़ेरेंक कपित्सा का कहना है कि खुंभी की कई नस्लों में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में मौजूद है। शरीर-निर्माण का प्रमुख आवश्यक तत्व प्रोटीन हमें खुंभी से पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो सकता है।

घास आदि पौधों में एक हरा पदार्थ होता है क्लोरोफिल। ये पौधे इसकी मदद से धूप से शक्ति प्राप्त कर बढ़ते-पनपते हैं। खुंभी में क्लोरोफिल नहीं होता, अतः उसे अपने भोजन के लिए अन्य पौधों पर निर्भर रहना पड़ता है।

खुंभी सड़े-गले कूड़े के ढेर पर जन्म लेती है और अपना कुनबा बसाती है। यह जीवित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पौधों का भोजन तो खाती है; पर जीवित पदार्थों को नहीं। इस प्रकार यह परान्नजीवी तो है; किंतु पैरासाइट नहीं।

धरती पर वनस्पतियों के उगने में खुंभी काफी हाथ बंटाती है। यह हवा में कार्बन डाइआक्साइड गैस छोड़ती रहती है। इससे उगते हुए पौधों को कार्बो-हाइड्रेट बनाने में सहायता मिलती है। खुंभी, बढ़वार के लिए आवश्यक नाइट्रोजन को दूसरे हरे पौधों की तरह सीधे नहीं ले सकती। धरती से वह अमोनियम नाइट्रेट चूसती है और उससे नाइट्रोजन प्राप्त करती है।

प्रोटीन के प्रमुख स्रोत के रूप में यदि विश्व खुंभी को काम में लेने लग जाये, तो खाद-कारखानों को अपना उत्पादन काफी बढ़ाना पड़ेगा।

खुंभी की नस्लों की लिस्ट लंबी है। एक लाख जातियों की विस्तृत सूची तैयार हो चुकी है। सबसे ज्यादा उपयोगी किस्मों पर दुनिया-भर की प्रयोगशालाओं में परीक्षण जारी हैं।

इसमें तरह-तरह के पौधों को परीक्षण-नलिकाओं और फ्लास्कों में बोया जाता है, इसके बाद उन्हें बड़े बर्तनों में उगाया जाता है। इन बर्तनों में पोषक शक्कर या शीरे का घोल तथा नाइट्रोजन और फास्फोरस की खाद दी जाती है। इससे फसल बहुत जल्दी तैयार हो जाती है—पौध रोपने के चार दिन बाद ही आप फसल काट सकते हैं।

जब प्रारंभिक परीक्षण पूरे हो जायें और उत्पादन का विस्तार करने के लिए परिस्थितियां अनुकूल हों, तो पौध को हौज-तालाबों में स्थानांतरित करना चाहिये।

खुंभी हमें कितनी प्रचुर मात्रा में प्रोटीन दे सकती है? वैज्ञानिकों का कहना है कि एक एकड़ जमीन में औसतन ६० बुशल (एक बुशल=२९ सेर) खुंभी पैदा होगी—कट-छटकर जो असल खुंभी बच रहेगी, उसका वजन होगा लगभग ३,२०० पौंड।

इससे २६० पौंड प्रोटीन और २००० पौंड निशास्ता हासिल हो सकता है। गाय या बैल को चारा खिलाकर उससे केवल ७० पौंड मांस-प्रोटीन ही प्राप्त होता है।

इसका कारण यही है कि पशुओं में प्रोटीन-उत्पादन की क्षमता कम है। पशु को अपनी काफी शक्ति अनाज के प्रोटीन को शारीरिक रसायनों में बदलने में खर्च करनी पड़ती है। शारीरिक रसायन से उन्हें मांस-प्रोटीन बनाना पड़ता है।

लगभग आधा प्रोटीन तो पशु की देह से बिना पचे ही, मल के रूप में बाहर चला जाता है। और इसे बाहर निकालने में भी उसकी अतिरिक्त शक्ति खर्च होती है।

लेकिन खुंभी की खेती करके भारी तादाद में प्रोटीन पैदा की जा सकती है। वैज्ञानिक इस बात का समर्थन करते हैं।

खुंभी को पालने-पोसने के लिए पानी की काफी जरूरत रहती है। परीक्षणों से पता चलता है कि खुंभी समुद्र के जल में भी खूब फलती-फूलती है।

जर्मनी, अमरीका और जापान में काफी लंबा-चौड़ा भूक्षेत्र खुंभी की खेती के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलग रखा जाता है। इस क्षेत्र में खुंभी की फसलें उगायी और काटी जाती हैं। यों अभी खुंभी-उत्पादन थोड़ी मात्रा में ही हो रहा है—हर साल कुछ लाख पौंड। मगर वैज्ञानिक इसकी खेती के मामले में बहुत कुछ कर रहे हैं। वे खुंभी को कूटकर सुखाकर इसका आटा बनाते हैं। यह आटा सोयाबीन के आटे से मिलता-जुलता है। बचे हुए पदार्थ, जैसे—डंठल तने और छिलके, खाद बना लिये जाते हैं, और ये खुंभी की अगली फसल उगाने में काम आते हैं।

खुंभी के आटे में नमक और मिलायी जाती है। आधुनिक भंडार इसे महीनों रखा जा सकता है—सारसंभाल की भी जरूरत नहीं। नमी और सीलन से बचाकर इसे शुष्क वरण में रखा जाना चाहिये। तापमान डिग्री फारहाइट के आस-पास चाहिये।

यह आटा हमारे लगभग सभी पदार्थों में मजे से मिलाया जा सकता है।

★

अमरीका के प्रेसिडेंट थियोडोर रूजवेल्ट की एक आदत से उनका प्राइवेट सेक्रेटरी बड़ा परेशान था। उनकी चिट्ठियां टाइप करने में वह कितनी भी सावधानी बरते, हस्ताक्षर करते समय, अपने हाथ से कुछ-न-कुछ संशोधन करते या कुछ शब्द और जोड़ते।

एक बार सेक्रेटरी ने एक पत्र को दुबारा टाइप कर दिया और उसमें वह वाक्य बढ़ा दिया, जो रूजवेल्ट ने अपने हाथ से लिखा था। हस्ताक्षर के लिए यह पत्र जब उनके पास गया, तो उन्हें यह बात अच्छी न लगी। और उन्होंने शांत-भाव से उसे समझाया—"नौजवान दोस्त, मैं अपने प्रत्येक पत्र में कुछ शब्द अपने हाथ से इसलिए लिखा करता हूं कि उससे पत्र अधिक सौहार्दपूर्ण बन जाता है!"

★

एक मुसलमान फकीर रोज पांच बार नमाज पढ़ता था। थकावट के कारण एक दिन वह सो गया और नमाज के समय नहीं उठा। तभी किसी ने उसे जगाया।

"भाई, तुमने मुझ पर बड़ा एहसान किया। मेरी बंदगी रह जाती, तो बड़ी हानि होती। क्या मुझे अपना शुभ नाम बताओगे?"

"शैतान!" उत्तर मिला!

"शैतान!" फकीर ने बड़े आश्चर्य से पूछा—"पर तुम्हारा काम तो लोगों को बंदगी करने से रोकना है। फिर तुमने मुझे नमाज के लिए क्यों जगाया?"

शैतान ने कहा—"एक बार तुम नमाज के समय सोते रह गये थे। तब मैं बहुत प्रसन्न हुआ था। पर बाद में तुमने रो-रोकर इतना पश्चात्ताप किया कि नमाज न पढ़ने का पाप तुम्हारे आंसुओं में बह गया और तुम खुदा के अधिक प्यारे हो गये। मैंने सोचा, फिर ऐसा हुआ, तो तुम खुदा के और प्यारे हो जाओगे! इसलिए जगा दिया।" —शिवराम

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य का परिवार

विद्यार्थियों के लिए एक सरल वैज्ञानिक लेख 'सायंस डाइजेस्ट' से संकलित ।

सूर्य का परिवार है—ग्रह (तारे नहीं), धूमकेतु व अन्य समूह, जो सूर्याकर्षण से प्रभावित सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। इस परिवार का विधायक सूर्य स्वयं बड़ा विशाल है, अपने सारे पारिवारिक जनों के मिले वजन से भी ७५० गुना अधिक ।

सूर्य-परिवार के प्रमुख नौ सदस्य हैं । ये नवग्रह हैं, सूर्य से अपनी दूरी के अनुसार क्रमशः बुध (मर्क्युरी), शुक्र (वीनस), पृथ्वी, मंगल (मार्स), बृहस्पति (जुपिटर), शनि (सैटर्न), युरेनस, वरुण (नेप्चून), यम (प्लूटो)। बुध सूर्य के सर्वाधिक समीप है, तो प्लूटो सर्वाधिक दूर । नाप-तोल में बुध सबसे छोटा है, अपनी इस पृथ्वी के एक तिहाई व्यास जितना ही । और सबसे बड़ा बृहस्पति है, जिसका व्यास अपनी पृथ्वी से ११ गुना अधिक है । शनि का व्यास उससे थोड़ा कम अर्थात् पृथ्वी से साढ़े नौ गुना बड़ा है; पर उस डेढ़ गुने बड़ेपन के कारण ही बृहस्पति इतना विशाल है कि उसमें बाकी आठों ग्रह समा जायें ।

बुध और शुक्र प्रायः अंतर्ग्रह कहलाते हैं । कारण कि वे पृथ्वी से भी सूर्य के समीप हैं । अन्य ग्रह बहिर्ग्रह कहलाते हैं, क्योंकि उनकी सूर्य-परिक्रमा का पथ पृथ्वी के पथ से भी बाहर है। बृहस्पति, शनि, युरेनस और वरुण विशाल ग्रह कहलाते हैं, कारण कि वे पृथ्वी से ६४ गुने बड़े हैं ।

बुध सूर्य की परिक्रमा पूरी करता है हमारे ८८ दिन में, और वह सूर्य से औसत ३ करोड़ ६० लाख मील दूर रहता है, अर्थात् पृथ्वी व सूर्य की दूरी का एक तिहाई ! सूर्य की इस समीपता के कारण बुध हमारी पृथ्वी से ९ गुना अधिक गरम होगा। इसका वही एक भाग सदैव सूर्य के सम्मुख रहता है । अर्थात् सम्मुखीन भाग भयानक गरम और पृष्ठभाग भयानक ठंडा । तापमान को प्रभावित करने के लिए पृथ्वी की भांति बुध के चारों ओर वायु-मंडल का सर्वथा अभाव है ।

शुक्र सूर्य से औसतन ६ करोड़ ७० लाख मील दूर है और हमारी पृथ्वी से सर्वाधिक समीप । यह घने बादलों के भरपूर वातावरण से आवृत है । इसकी सतह को कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूरज में ऐसे तूफान उठते रहते हैं।

कभी नहीं देख पाया है। फिर भी रेडियो-ज्योतिष के द्वारा यह अनुमान किया गया है कि वह अपनी धुरी पर अपने एक वर्ष अर्थात् हमारे २२५ दिन में एक बार घूमता है। यह पृथ्वी से थोड़ा-सा ही छोटा है, इसलिए ये दोनों भाई-बहन कहलाते हैं। वहां की तेज गरमी के कारण प्राणियों के लिए प्राण-वायु (आक्सिजन) व जलमय बाष्प है या नहीं, इसके संबंध में ज्योतिषियों व वैज्ञानिकों में दो मत हैं। जिस घने वातावरण से यह आवृत है, उससे अनुमान किया जाता है, गर्द के भयंकर तूफानों से उसकी सतह प्रताड़ित हो रही होगी।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में पूरी करती है, औसत ९ करोड़ ३० लाख मील की दूरी से। यों यह अपनी धुरी पर एक बार घूम लेती है एक दिन-रात—२४ घंटे—में। तीन सौ पैंसठ दिन से तनिक कम समय में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है, और यह समय है इसका एक वर्ष। वर्ष को

पूरे दिनों का
के लिए हर चौथे
फरवरी मास में
दिन बढ़ाया जाता
फिर भी
काल में चौथाई
पूरा नहीं
इसलिए उन
वर्षों में, जिनमें
का भाग नहीं
(जैसे १७००, १
१९०० में) वह एक दिन नहीं
जाता। फिर भी हिसाब सही नहीं
अतएव ४०० से विभाजित हो सकने
भी २००० की सन में एक दिन
जायेगा।

पृथ्वी पत्थर की एक गेंद के समान
जिसके भीतर पिघली धातुएं समाविष्ट
इसका सात बटा दस भाग पानी से
है। इसका वायुमंडल पूरित है नाइट्रोज
आक्सिजन, जलमय बाष्प, आरगोन,
बन डाइआक्साइड व अन्य गैसों से। ज्यों-
पृथ्वी से दूर होते जाइये, यह वायुमं
पतला होता जायेगा। आकाश में
गये राकेटों से पता लगा है कि दो हज
मील की दूरी पर भी इस वायुमंडल
यत्किंचित् लक्षण वर्तमान हैं।

पृथ्वी का अपना उपग्रह भी है—चंद्रमा
चंद्रमा के जन्म का पता नहीं। यह मान्य
रही है कि चंद्रमा पृथ्वी-पुत्र है—आदिम
में उसमें से निकलकर अलग बना हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपग्रह। कुछ ज्योतिषी यह मानते हैं कि यह एक अलग छोटा-सा ग्रह है, जो पांच करोड़ वर्ष पहले भटक गया और अपने भ्रमण में पृथ्वी के आकर्षण में पड़कर उसके चारों ओर घूमने लगा।

मंगल पृथ्वी के पश्चात् है, वह ६८७ दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है, १४ करोड़ २० लाख मील की औसत दूरी से। इस नक्षत्र का व्यास पृथ्वी से आधे से भी थोड़ा कम है। यह अपनी धुरी पर साढ़े चौबीस घंटे में एक चक्कर लगाता है। पृथ्वी से ११ मील ऊंचाई पर जितना पतला वायु-मंडल है, अनुमान किया जाता है, उतने पतले वायुमंडल से मंगल आवृत है। उसके वातावरण में आक्सिजन व जलयुक्त बाष्प होने का अनुमान लगाया गया है। वहां के आकाश में यदा-कदा बादल भी दिखाई देते हैं। अन्यथा वहां का आकाश सर्वांशतः सर्वदा स्वच्छ रहता है, जिससे वहां की सतह दिखाई देती रहती है।

मंगल की सतह रंग में ललाई लिये है, बीच-बीच में भूरे व हरे रंग के भाग भी दिखाई देते हैं, जो वहां की 'ऋतु' के अनुसार छोटे-बड़े होते हैं। इससे अनुमान किया जाता है, वह वहां की वनस्पति की हरियाली है। मंगल के दोनों ध्रुव रंग में सफेद हैं; पर उस ग्रह पर पानी का जितना अभाव है, उससे वह सफेदी बर्फ नहीं हो सकती। फिर भी यह सफेदी सर्दियों में अधिक गरमियों में कम होती देखी गयी है; इसलिए ज्योतिषियों का मत है कि वह 'पाला' होना चाहिये।

मंगल पर ऐसे भी भाग हैं, जिन्हें आपस में जोड़ती सीधी, कभी टेढ़ी पतली काली रेखाएं दिखाई दी हैं। इन्हें 'नहर' कहा जाता है। पर वे जलवाहिनी नहरें नहीं हो सकतीं; क्योंकि मंगल पर जल का अभाव है। वे लकीरें ऐसी प्राकृतिक दरारें होंगी, जैसी हमारी पृथ्वी पर नहीं देखने में आतीं। इस ग्रह के दो नन्हे उपग्रह—चंद्रमा—भी हैं।

बृहस्पति मंगल से परे दूसरा विशालकाय ग्रह है। ४८ करोड़ ४० लाख मील की औसत दूरी से सूर्य की परिक्रमा में इसे १२ वर्ष लगते हैं। इतना बृहद्काय होकर भी यह ग्रह अपनी धुरी पर दस घंटे में एक चक्कर लगा लेता है। इस चक्कर के कारण मध्यरेखा के समीप यह फूले पेट के समान और ध्रुवों पर चपटा हो गया है। इसके वातावरण में भी बादल दिखते हैं; पर वे भी जल-विहीन हैं। बृहस्पति का तापमान हिमांक से २०० डिग्री कम है, इसलिए वे बादल अमोनिया के कणों से बने होंगे। उन बादलों के बीच एक लाल रंग का विस्तृत अंडाकार भाग है। वह क्या है, इसका कोई अनुमान नहीं लगया जा सका है।

बृहस्पति का वायुमंडल अधिकांशतः गीले गैस व अमोनिया से पूरित होना चाहिये। वह आठ हजार मील ऊंचाई तक आच्छादित है। उसके नीचे शायद सत्रह हजार मील मोटी बर्फ का रेगिस्तान है और उसके नीचे पत्थर का उसका भीतरी भाग। और वह होगा ३७ हजार मील व्यास का, अपनी पृथ्वी के व्यास से पांच गुना अधिक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बृहस्पति की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति इतनी प्रबल है कि पृथ्वी पर का १८ पौंड का वजन उस ग्रह पर ४२० पौंड वजन होगा। बृहस्पति के १२ उपग्रह हैं।

बृहस्पति के पश्चात् दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है शनि। उसे सूर्य की परिक्रमा में साढ़े उनतीस वर्ष लगते हैं और वह सूर्य से औसतन ८८ करोड़ ७० लाख मील दूर रहता है। अपनी धुरी पर यह साढ़े दस घंटे में एक चक्कर लगा लेता है। इसके ध्रुव बृहस्पति की अपेक्षा भी अधिक चपटे हैं। यह बहुत ही ठंडा ग्रह है। बृहस्पति की भांति इसका वायुमंडल भी विषाक्त गैसपूर्ण बादलों से पूरित है।

सबसे महत्वपूर्ण अचरज की बात है इस ग्रह के चारों ओर के छल्ले। एक के भीतर एक तीन चपटे छल्ले शनि ग्रह की मध्यरेखा के वृत्त के चारों ओर घूमते रहते हैं। अनुमान किया जाता है कि वे छल्ले अनगिनत छोटे पत्थरों, रजकणों या बर्फ के टुकड़ों से बने हैं, जो नन्हे-नन्हे उपग्रहों की भांति छल्लों के रूप में शनि की परिक्रमा करते रहते हैं। सबसे बड़े छल्ले का व्यास १ लाख ७० हजार मील है; छल्ले २० मील से ज्यादा मोटे नहीं। छल्लों के अतिरिक्त शनि के ९ उपग्रह जिनमें से एक—टाइटन—बुध से भी बड़ा

युरेनस सूर्य की परिक्रमा ८४ वर्ष में करता है—१ अरब ७८ करोड़ ३० मील की दूरी से। युरेनस के भी ५ उपग्रह

वरुण १६५ वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है २ अरब ८० करोड़ मील दूरी से। इसके भी २ उपग्रह हैं।

प्लूटो बहुत ही छोटा ग्रह है, पृथ्वी आधे से भी छोटा। यह सूर्य-परिवार ग्रहों में सबसे बाहर की ओर है; पर इसकी परिक्रमा का मार्ग इतना अंडाकार है अधिकांशतः सूर्य से दूरी इसकी ३ अरब करोड़ मील होने पर भी यह वरुण से सूर्य के नजदीक चला जाता है। इसे परिक्रमा करने में २४८ ½ वर्ष लगते हैं

सब ग्रह अपनी धुरियों पर चक्कर लगाते हैं और सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इन ग्रहों के अतिरिक्त सूर्य ३ हजार क्षुद्र (एस्टरायड) और कई हजार धूमकेतु उल्का-समूहों का नियंत्रण भी करता है

★

सिकंदर ने एक बार एक बड़े भोज का आयोजन किया, जिसमें देश के सभी दार्शनिक कवि तथा विद्वान निमंत्रित थे। वहां एक दार्शनिक कीचड़ से भरे हुए जूतों समेत आया और उसने कीमती कालीनों को खराब कर दिया। सम्राट् ने दार्शनिक से कहा—"आपका यह कार्य सभा के मान के विपरीत है!"

"मेरे जूते तुम्हारे अभिमान को रौंद रहे हैं!" दार्शनिक बोला।

"बेशक आप अभिमान को रौंद रहे हैं," नम्र स्वर में सिकंदर बोला—"किंतु अभिमान के साथ!"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

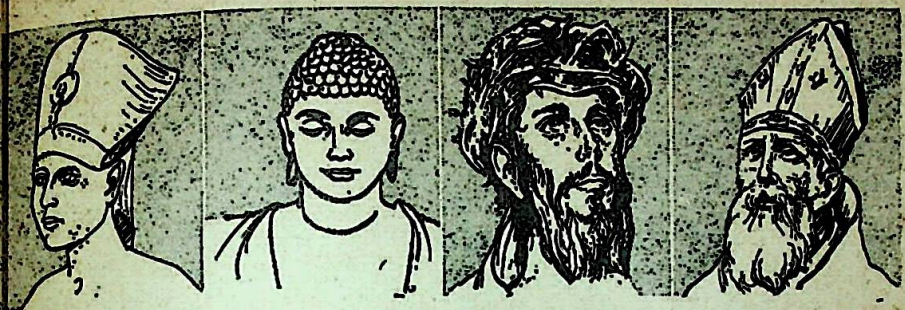

कैंसर के रूप में आकर मृत्युदूत उनका द्वार खटखटा रहा था; किंतु लेखक ब्रैडफोर्ड स्मिथ जीवन के वे आखिरी दिन 'विश्वशांति के अग्रदूत' (मेन आफ पीस) नामक पुस्तक की रचना में बिता रहे थे। उसी पुस्तक के आधार पर तैयार किया गया यह लेख 'रोटेरियन' से साभार उद्धृत किया गया है।

विश्वशांति के अग्रदूत

शांति के पंद्रह अग्रदूतों में से प्रत्येक के उपदेशों का सार एक-एक वाक्य में यों समाहित किया जा सकता है :

अखनातन:—संसार एक है, तब क्या मनुष्य अपने आप से लड़ सकता है ?

बुद्ध:—कामनाओं पर विजय पाकर ही शांति प्राप्त की जा सकती है।

अशोक:—नेक आचरण से ही अहिंसा की प्राप्ति होती है।

ईसा:—अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करो।

संत आगस्टिन:—सच्ची शांति भगवान के नगर में ही मिलती है।

संत फ्रांसिस:— किंतु, हम उसे अपने आपमें भी पा सकते हैं, प्यार-भरी सेवा के द्वारा।

विलियम पेन:—ताकत से दबाया जा सकता है; पर जीता जा सकता है प्रेम से ही। जो सदुद्देश्य तुम्हारे में हैं, उन्हें दूसरों में भी मानो।

थोरो:—बुराई और अन्याय का विरोध करो—भले ही वे कानून-सम्मत हों।

टालस्टाय:—संघर्ष-सुलभ अधिकारों का त्याग करो; बुराई का बुराई से विरोध मत करो।

नोबेल:—आक्रमण को रोकने के लिए

अखनातन (१३८५-१३५४ ई० पू०); बुद्ध (५६३-४८३ ई० पू०); ईसा (६-३९ ई०); संत आगस्टिन (३५४-४३० ई०)।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संत फ्रांसि
(११८२-१२
विलियम पे
(१६४४-१७
हेनरी कॉ
(१८१७-१८

एक बनो; अधिकाधिक विचारशीलों को शांति-कार्य के निमित्त उत्साहित करो।

कार्नेगी:—शिक्षित बनाओ, आपस में निपटाओ, संघ स्थापित करो, तर्क और युक्ति-संगत आचरण करो।

एंजल:—इस सत्य को स्वीकार करो कि लड़ाई कोई कभी जीतता नहीं।

विल्सन:—आक्रमणकारी को रोकने के लिए संघटित बनो, आत्मनिर्णय के अधिकार और संसार में प्रजातंत्र की स्थापना में योगदान दो।

गांधी:—अपने विरोधी के गुणों को काम में लो, अहिंसक बनो।

हैमरशोल्ड:—न्याय की दृढ़ भूमि पर खड़े होओ; किंतु देशों के प्रचलित न्या से भी ऊपर शांतिवाद के न्याय के प्र में यथाशक्य अग्रसर होओ।

हमारे इस युग में निराशा और भय बहुत से कारण समुपस्थित हैं। फिर भी संस्थाओं और मान्यताओं को स्था करने में हमने सफलता प्राप्त की है, शांति के अग्रदूत का काम कर रही हैं आगे भी करती रहेंगी।

राष्ट्रसंघ ही को लीजिये। पारस्प विरोध युद्ध में परिणत हो जाये, न पहले ही दिलों के गुब्बार निकालने का अ सर देकर शांति बनाये रखने में यह सं काफी समर्थ हुई है। तकनीकी सहायता

लियो टालस्ट
(१८२८-१९१
आल्फ्रेड नोबे
(१८३३-१८९
एंड्रू कार्नेग
(१८३५-१९१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नार्मन एंजल
(१८७४-)
वुडरो विल्सन
(१८५६-१९२४)
डैग हैमरशोल्ड
(१९०५-१९६१)

सहारे शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कृषि में उन्नति कराकर उसने राष्ट्र-समाज के कितने गलितांगों को अपना रोग फैलाने से बचाया है।

धनी राष्ट्रों के द्वारा गरीब देशों की मदद भी इस युग की अपनी बात है। आज से पहले धनी देशों को अपनी इस नैतिक जवाबदारी का भान भी नहीं था कि वे अपनी संपन्नता में विदेशों को भी भागी बनायें।

राष्ट्रीयता परम प्रशंसनीय मानी जाती थी, है भी। परंतु उसमें निहित संकीर्णता का भान अब होने लगा है। इसलिए राष्ट्रों के संगठन बन रहे हैं, राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं को मिल-जुलकर तय किया जाने लगा है। यूरोप का साझा बाजार (कामन मार्केट) इस एकीकरण की दिशा में एक कदम है।

आज राष्ट्रों के बीच कितना अधिक आवागमन है! शिक्षा व संस्कृति के क्षेत्रों में कितना आदान-प्रदान है! लंबे अर्से के लिए विदेश जाकर बसने और विदेशियों से घुल-मिल जानेवालों की अभी कमी है। पर वह दिन दूर नहीं, जब एक नहीं हजारों की संख्या में किसान, श्रमिक, अध्यापक अपने कामों से लंबी छुट्टी लेकर विदेश जाकर वहां पर किसी हमपेशा परिवार के साथ महीनों रहेंगे। उनका यह काम शांति का वास्तविक आधार होगा।

विनाश की नृशंस लीला के इतने भयानक शस्त्र अब बन गये हैं कि कोई चाहे या न चाहे, उसे इस विषय में चौकन्ना और प्रयत्नशील रहना ही होगा कि कहीं युद्ध न छिड़ जाये।

सभी शांति-प्रतिपादक स्वीकार करते हैं कि मनुष्य के अपने परिवर्तन के आधार पर ही शांति अक्षुण्ण बनी रह सकेगी। उस परिवर्तन को उन्हें अपने जीवन में, अपने चरित्र में प्रकट करना होगा। पर यह परिवर्तन बिना प्रयास, बिना अनुशासन, बिना निष्ठा

प्रियदर्शी अशोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांधीजी

और त्याग के संभव नहीं।

हमें अपने देश की ओर ही देखने की अपेक्षा, अन्य देशों की ओर देखने में अधिक तत्पर रहना होगा। राष्ट्रसंघ को हमें और अधिक आदर देना होगा, संसार की संपन्नता की वृद्धि तथा शांति की स्थापना में उसके महत्व को समझना होगा।

वाणिज्य, व्यवसाय व अर्थ के द्वारा हमें अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को दृढ़ बनाना होगा। इस विषय में कार्यरत सभी छोटी से लेकर बड़ी संस्थाओं को और भी अधिक कर्मठ होना होगा।

मनुष्य संकीर्ण मनोवृत्ति से छूटकर अंतर्राष्ट्रीय ऐक्य व मैत्री की भावना से कैसे प्रेरित हो ? हमें इसके लिए बहुत अधिक सोचना, विचारना व शिक्षित होना होगा।

शांति के जिन अग्रदूतों का प्रारंभ में उल्लेख किया गया है, उन सबके उपदेशों की आधार-शिला धर्म रहा है। प्रत्येक धर्म अपने अनुयायी को निश्चित धारणाओं और कर्तव्यों के लिए प्रेरित करता रहा है। क्या यह परम वांछनीय नहीं है कि सब धर्म मिलकर नैतिक सिद्धांतों की एक संहिता तैयार कर लें, जो अंतर्राष्ट्रीयता की आधार-शिला का काम करे ?

हमें उसी नैतिक आधार की आवश्यकता है, जिसके द्वारा संसार के महान नेता शांति के मूल आधार पर पुनः-पुनः भाषण करते रहे हैं। शांति का मूल क्या सदाचार ही तो है; और वह आधारित आत्मपरिवर्तन पर। लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के आत्मपरिवर्तन के बिना संधि समझौते मात्र कागज के टुकड़े ही रहे।

इसे सीधे-सादे शब्दों में यों कहा जा सकता है—हमें 'शक्ति के प्रेम' की बजाय 'प्रेम की शक्ति' को अपनाना होगा। तभी हम सर्वजयी शक्ति को समझ सकेंगे, जो गांधी ने समझा था।

आज हम एक दहलीज पर खड़े हैं। उसके एक ओर है अणुबमों की वर्षा, कीटाणु व रासायनिक युद्ध और संस्कृति व सभ्यता का विनाश; दूसरी ओर है, राष्ट्रीयता की संकीर्णता एवं उसमें निहित भय और घृणा के पाशों से छुड़वाकर मनुष्य-जाति को विश्व-भ्रातृत्व की ओर ले जानेवाला राजमार्ग।

"शांति का कोई मार्ग नहीं, शांति ही एकमात्र मार्ग है।" इस एक वाक्य में सब कुछ सार समाहित है। अनेक उत्तेजनाओं और अनेक निराशाओं के बावजूद प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक रीति से शांति का अवलंबन करते हुए त्याग की सबल प्रवृत्ति के द्वारा ही हम शाश्वत शांति स्थापित कर सकेंगे।

"हम देखें तो सही कि प्यार क्या कर सकता है। जब मनुष्य देखेगा कि उसे प्यार किया जाता है, तो वह दूसरे को हानि पहुंचायेगा ही नहीं।" विलियम पेन ने ढाई सौ वर्ष पहले कहा था। शांति की इससे दृढ़ आधार-शिला नहीं मिल सकती।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वनदेवता के पुत्र

शेर, हाथी और भैंसा—ये केवल जातिवाचक संज्ञाएं नहीं हैं; और न ही विविध गुणों के प्रतीक मात्र हैं। जंगल का हर जीव एक व्यक्ति है, जिसकी जिंदगी में वनदेवताओं की दिलचस्पी है।

आर० एच० फेरी

रूपांतर : सुखबीर

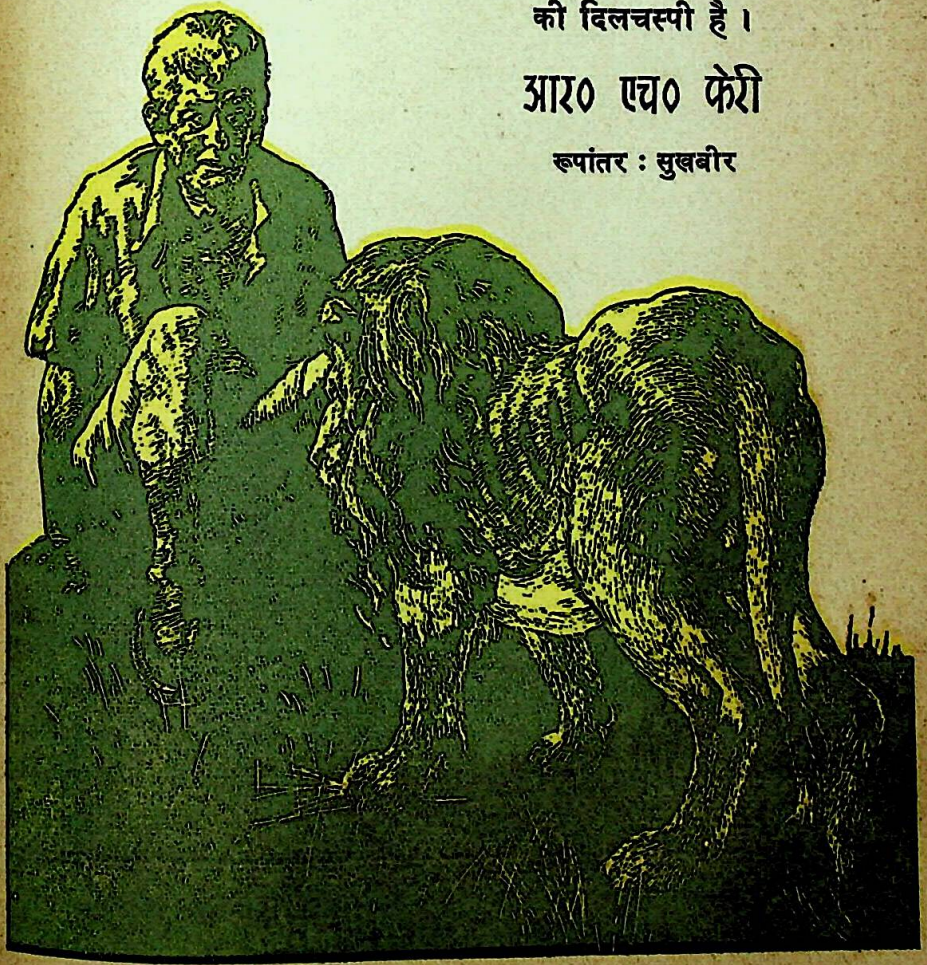

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैमिश मैकडानल्ड लेटा हुआ था और ऊपर आसमान की ओर देख रहा था। सूरज 'नीले पहाड़ों' के उस पार डूब रहा था। आसमान पर रंगों की मनमोहक छटा बिखर गयी थी। अभी कुछ ही देर में अंधकार पूरे अफ्रीका को निगल जानेवाला है। मनुष्य के लिए दिन खत्म हो जायेगा और जानवरों के लिए रात शुरू हो जायेगी, जिसमें वे अपनी गतिविधियों में लग जायेंगे।

हैमिश अफ्रीका की इस घाटी में न खेती करने आया था, न पशु पालने, और न ही शिकार खेलने। वह आया था, ताकि यहां की धरती से अपना रिश्ता जोड़कर जिये, खाये और सोये।

जिस घाटी में हैमिश रहता था, वह मनुष्यों की बस्ती से चार सौ मील दूर थी—उन मनुष्यों से चार सौ मील दूर, जिन्होंने तरह-तरह के कानून बनाये हैं, जिन्होंने एटम-बम और लालच, घृणा और संदेह को जन्म दिया है—और जो चांद तक पहुंचना चाहते हैं।

हैमिश के चारों ओर मैदानी और पहाड़ी इलाकों में, कई तरह के छोटे-बड़े पशु-पक्षियों की बस्ती थी। उनमें शेर और चीते जैसे कुछ हत्यारे जानवर थे; और बाकी सब ऐसे प्राणी थे, जो उन हत्यारों के शिकार हुआ करते हैं, जो जितना ही तेज दौड़ते हैं, उतने ही कम अक्लमंद होते हैं।

उस बस्ती में सबसे कमजोर जीव था बंदूक-रहित आदमी, और वहां उसका जिंदा रह पाना मुश्किल था।

मगर हैमिश बड़े सुख और संतोष से रहा था। वह चाहता था कि खुद भी और दूसरों को भी जीने दे। जंगली जानवरों ने भी जैसे उसे स्वीकार कर लिया

हेंड्रिक नाम का एक लड़का हैमिश साथ रहता था। वह उसका खाना बना था और दूसरे छोटे-मोटे काम करता दो और जवान लड़के भी साथ में रहते इनकी दो-दो पत्नियां थीं और ये मक्का खेती करते और पशु पालते थे।

हैमिश खुद बढ़ई था, खुद ही राज लोहार। कोई ऐसा काम नहीं था, जो न कर सकता हो। उसने कुत्ते पाल रखे जिनकी बदौलत वह जंगली जानवरों अपने आपको सुरक्षित समझता था।

उस घाटी में बहुत-सी गुफाएं थीं कुछ अरसे से वहां शेर रहने आ गये एक दिन हैमिश अपने कुत्तों को झोंपड़ी बाहर बांधकर शेरों का पता लगाने निक गया। उसे अंदाजा था कि शेर किस में रहते हैं। वह बिना किसी किस्म आहट किये, बहुत सावधानी से वहां पहुंच खड्ड के निकट पहुंचकर उसके किनारे लेट गया। कुछ ही देर में उसे एक साथ शेर दिखाई दे गये। सूरज की रोशनी उनका भूरा रंग एकदम सुनहरा हो उठा उनमें पांच शेरनियां थीं और एक काले अयालवाला ऊंचा-लंबा, तगड़ा शेर था हैमिश ने अंदाज लगाया कि जंगल का राजा बूढ़ा नहीं हो सकता। सचमुच लगभग चार साल का था और भरपू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवानी में था।

उस शेर–सिंबाला–को हैमिश की गंध तो नहीं आयी थी; पर जैसे उसके अस्तित्व का एहसास हो गया था। उसी समय किसी झाड़ी में से दो चिड़ियां चहकती हुई उड़ीं। सिंबाला को नजदीक की चीज जितनी साफ दिखाई देती थी, दूर की चीज उतनी ही धुंधली दिखती थी। हैमिश की उपस्थिति का उसे जो आभास हुआ था, वह चिड़ियों के उड़ने से और पक्का हो गया। यों कोई खतरा नहीं था, फिर भी सचेत रहने की जरूरत थी। सिंबाला का दिमाग केवल उसी समय तेजी से काम करता था, जब उसे किसी को मारने की योजना बनानी पड़ती थी। वरना उसका दिमाग बहुत सुस्त था।

सूरज डूबने लगा था। खड्ड में अंधेरा छाने लगा। अब शेर हैमिश को साफ तौर से दिखाई नहीं दे रहे थे। तभी हवा का रुख बदला और शेरों को जैसे हैमिश की गंध आ गयी। वे उलझन में पड़ गये; क्योंकि वैसी गंध उन्होंने पहले कभी सूंघी नहीं थी–गोरे आदमी की गंध। अंधेरा बढ़ने पर जब शेरों का दिखना बिलकुल बंद हो गया, तो हैमिश वहां से उठा और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दिया, जो वहां से दो मील दूर थी।

शेर ज्यादातर खड्ड में ही रहते थे। वे कभी हैमिश की झोंपड़ी की ओर नहीं आते थे। तीन-चार दिन में एक बार रात के समय वे खड्ड में से निकलकर मैदानी इलाके की ओर जाते, कोई जानवर मारते, भूख मिटाते और फिर खड्ड में आ जाते।

जिस रात वे किसी जानवर को मारते थे, सिंबाला दहाड़ मारता और उसकी आवाज तारों-भरे आसमान की नीरवता को भर देती। कभी शेरों को हैमिश की गंध आती और जब कभी वह उनके सामने आ जाता, तो वे हैरानी-भरी नजरें उस पर डालते हुए अपने खड्ड की ओर चले जाते।

०००

बौस एक बूढ़ा इक्कड़ भैंसा था, जो अपने रेवड़ से छूटकर उस इलाके में अकेला ही घूमता और घास चरा करता था। बड़ा चालाक और खतरनाक भैंसा था वह। एक दिन हैमिश चांदनी में उसे चरते हुए देख रहा था कि कहीं पास ही में उसे शेरों की गंध महसूस हुई। वह समझ गया कि उस रात शेरों ने बूढ़े बौस को अपना शिकार चुना है।

कब किस जानवर का शिकार करना है और किस तरह करना है, यह सब योजना सदा सिंबाला बनाया करता था; और उस योजना पर अमल करने का काम उसकी शेरनियों में से किसी एक पर आ पड़ता था। सिंबाला सब शेरनियों से ज्यादा तगड़ा तो था, पर उतना फुर्तीला नहीं था। और शिकार में तो कुछ ही सेकेंड की देरी हो जाने से भी बनी-बनायी बात बिगड़ जाती है।

सिंबाला जानता था कि बौस बहुत तगड़ा होते हुए भी कुछ सुस्त किस्म का जानवर है। सो उसने बड़ी चतुराई से इस प्रकार उसे घेरा था कि घास चरते-चरते बौस उसकी ओर बढ़ने लगा। फिर बौस चौंका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

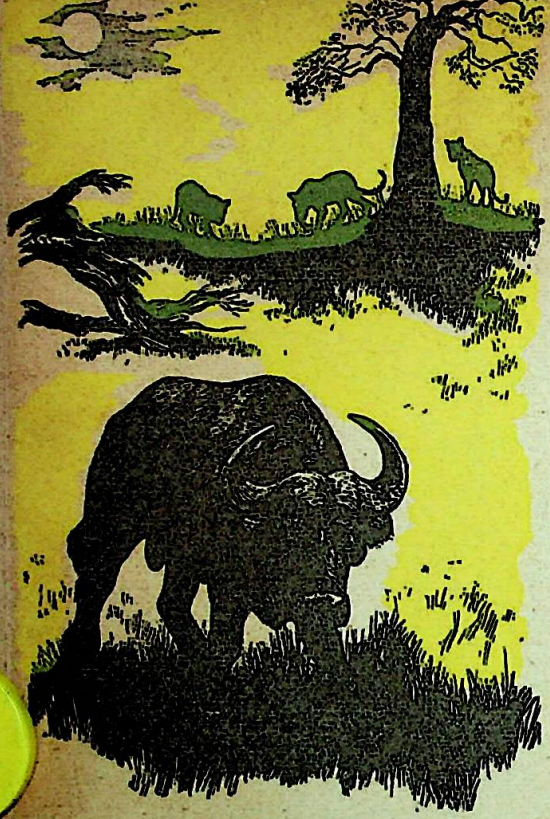

उस रात उन्होंने बौस को शिकार चुना था।

अचानक उसने अपने आपको दो गंधों के बीच में घिरा पाया।

उसी समय सिंबाला, जो एक जगह से घात लगाये बौस को देख रहा था, बिजली की तेजी से बीस फुट लंबी छलांग लगाकर, उस पर झपटा और उसकी पीठ पर चढ़ बैठा। उसका बौस की पीठ पर बैठना था कि पांचों में से एक शेरनी झपटी और उसने एक पंजे से बौस की नाक को पकड़कर इतने जोर से खींचा कि तड़ाक से उसकी गर्दन के टूटने की आवाज आयी। दूसरे ही क्षण बौस नीचे गिर पड़ा।

सिंबाला ने उसके पास खड़े होकर गर्व से अपनी पूंछ हिलायी और दहाड़ फिर उसने बौस का मांस खाने के लिए नियों को बुलाया।

जब वे मांस खा रहे थे, तो कुछ लक बग्घे वहां से कुछ दूर बैठकर उन्हें देख थे। थोड़ी देर बाद जब चांद बादल की में हुआ, तो एक लकड़बग्घा भैंसे पर झप और कुछ मांस लेकर भाग खड़ा हुआ। काम खतरे से खाली नहीं था; फिर भी अपने को रोक नहीं सका था। आम पर जब जंगल का राजा और रानियां खाकर चले जाते हैं, तभी लकड़बग्घे खुचे मांस से अपना पेट भरते हैं।

सिंबाला को मालूम था कि कुछ ही पर लालची लकड़बग्घे बैठे हुए हैं। पर प्रायः उन पर हमला नहीं करते; क्यों उनका मांस खाने में तल्ख और कड़वा है। फिर शेरों को इसमें गर्व भी महसू होता है कि वे मजे से खा रहे हों और लक बग्घे भूखी नजरों से उन्हें देखा करें।

हैमिश बिना हिले-डुले बैठा कुछ देर सब देखता रहा। फिर उठा और बड़ी शा धानी से खतरे से बचता हुआ अपनी झोंप की ओर चल दिया।

जिंदगी आसान नहीं थी। हरदम मौ का खतरा था। अचानक ही भयानक मौ आ धमक सकती थी।

०००

भैंसे का मांस खाकर शेरनियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में गरमी आयी । यह उनके गर्भाधान का मौसम था । उनमें एक अजीब घबराहट और तल्खी थी, एक दूसरी के प्रति चिड़-चिड़ापन था । वे बार-बार पेशाब करने लगी थीं और इससे खड्ड में से अमोनिया की तीखी गंध उठ रही थी । जब सिंबाला लेटा हुआ होता, तो शेरनियां कोशिश करतीं कि उससे एकदम सटकर, उसके पेट को छूती हुई लेट जायें और उसे संभोग के लिए उकसायें । पर सिंवाला गरजकर उन्हें पीछे हटा देता ।

सिंबाला को किसी शेरनी का पीछा करने की उतावली नहीं थी । वह उनमें से किसी को भी चाहे जब चुन सकता था । बहुत पहले एक बार किसी शेरनी के लिए उसकी एक शेर से भयानक लड़ाई हुई थी और आज भी उसकी छाती के दोनों ओर जख्मों के गहरे निशान देखे जा सकते थे। वहां अब बाल नहीं उगते थे ।

शेरनी उत्सुक हो तो भी उसके साथ संभोग करना शेर के लिए आसान नहीं होता । काफी लड़ाई और छीना-झपटी के बाद कहीं जाकर शेरनी काबू में आती है ।

अगर गर्भाधान की इच्छा होते ही शेरनी किसी शेर के साथ समागम कर ले, तो बच्चों की संख्या बहुत बढ़ जाये और नतीजा यह हो कि शेरनियों की शक्ति कम हो जाये, दूध की मात्रा घट जाये और उनके बच्चे सूखा रोग से मर जायें ।

भैंसे की मौत के छठे दिन सिंबाला किसी शेरनी को चुननेवाला था; मगर एक ऐसी घटना घटी कि उनका समागम न हो सका। सारी रात इधर-उधर भटककर भी कोई शिकार न पाकर, जब वह शेरनियों के साथ सुबह खड्ड में लौटा, तो उसने वहां आदमी के पैरों के निशान देखे । तुरंत वह उन निशानों को सूंघता हुआ उनके पीछे-पीछे चल पड़ा । नदी के पास जाकर वे निशान गायब हो गये । वहां पानी कम था । सिंबाला पानी में चल दिया और दूसरे किनारे पर जाकर उसने फिर उन निशानों की गंध पकड़ ली । तभी उसे दूर कहीं बजते हुए ढोल की मद्धिम-सी आवाज सुनाई दी । यह आवाज उसने इधर कुछ महीनों से सुनी नहीं थी । वह जानता था कि आदमी शेर का शिकार करने के पहले ऐसी आवाज किया करते हैं ।

जब नदी में पानी घट जाये, उसके बाद खड्ड में रहना सुरक्षित नहीं था ।

सिंबाला को पता चल गया था कि नदी के इस पार कुछ लोग आकर रहने लगे हैं। पर वह यह नहीं जानता था कि उन लोगों का नेता एक गोरा शिकारी है, जो उसके परिवार का पता लगा चुका है और अब उसका शिकार करना चाहता है ।

गोरे शिकारी का नाम था – सेलाक मेंडोजा । वह पुर्तगाली था ।

मेंडोजा एक अवैध शिकारी था – बड़ा जालिम । जंगली जानवरों के लिए उसके मन में न आदर था, न प्यार । अपनी जवानी में वह अफ्रीका के सबसे बढ़िया शिकारियों में से समझा जाता था ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंबाला ने खतरा देखा, तो वह रहने के लिए कोई नयी जगह खोजने निकल पड़ा। उसे पचास मील दूर की वह पहाड़ी याद आयी, जहां उसका जन्म हुआ था। वह अकेला ही उस ओर चल दिया। धूप तीखी थी, फिर भी रास्ते में उसने कहीं विश्राम नहीं किया। आखिर शाम हो गयी और वह उस पहाड़ी पर पहुंच ही गया।

उसी दिन सुबह जब मेंडोजा ने खड्ड में झांककर देखा, तो सिंबाला वहां से गायब था। गुस्से में लाल-पीला होकर वह अपने नौकरों पर बिगड़ा कि उनकी गलती से इतना बड़ा शेर हाथ से निकल गया। और उसने धमकी दी कि अगर शेर न मिला, तो वह सजा के तौर पर उनकी पत्नियों को दो महीने तक अपने पास रख लेगा। पर नौकर हिम्मत हारनेवाले नहीं थे। आखिर उन्होंने शेर के पंजों के निशान ढूंढ़ ही निकाले।

उधर सिंबाला ने अपने जन्मस्थान पर एक गुफा ढूंढ़ ली थी। गुफा में दाखिल होकर उसे बड़ा संतोष हुआ और लगा कि खड्ड की अपेक्षा यहां अधिक सुरक्षित रहा जा सकता है। इस निर्जन और नीरव स्थान में शिकारी के कदमों की हल्की आहट भी बहुत जोरदार होकर सुनाई दे जाती है। सो अब वह शेरनियों को यहां ले आयेगा।

सिंबाला गुफा की शीतल निस्तब्धता में लेटा हुआ था कि उसे तांबे के सिक्के जैसा सूरज क्षितिज पर टिका हुआ दिखाई दिया, जहां पर कि अफ्रीका की सीमा खत्म होती थी और एक नयी दुनिया की शुरू होती थी। तभी उसने एक पक्षी तीखी आवाज सुनी, जो मानो कह रहा "चले जाओ.....चले जाओ!"

जब पक्षी ने तीसरी बार "चले जाओ कहा, तो सिंबाला का सारा शरीर तन और उसने सचेत होकर गुफा के मुंह ओर देखा। पर उसे कहीं खतरा महसूस हुआ। न किसी के कदमों की आहट मिली न कोई पत्थर लुढ़का। कुछ ही देर में सू डूब गया और गुफा में अंधेरा छा गया।

गुफा में लेटा हुआ सिंबाला दूसरा जानवर था। अब फिर उसमें पहले की गर्व था और पहले जैसी शान थी। जोर-जोर से अपनी पूंछ हिला रहा था और जब वह डकारता था, तो वह आवा ऐसी लगती थी, जैसे बादलों की गरज हो

सिंबाला चौंक उठा। उसने देखा, ए शेरनी—सालो—उसके पास खड़ी है। पांच में से यह एक शेरनी उसका पीछा करत हुई वहां आ पहुंची थी।

सालो सुंदर नहीं थी। उसकी लंबी लंबी टांगें बेढंगी लगती थीं। बचपन में उसे सूखे की बीमारी हो गयी थी और बाद में कभी उसका शरीर पूरी तरह से भर नहीं पाया था। सालो को सिंबाला ने नहीं चुन था, वह खुद ही उसके साथ जुड़ गयी थी और बाकी शेरनियों के साथ उसके हरम में रहने लगी थी। सिंबाला ने कभी उसकी ओर खास ध्यान नहीं दिया था। मगर आज सुबह सालो ने सिंबाला को खड्ड में से निक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

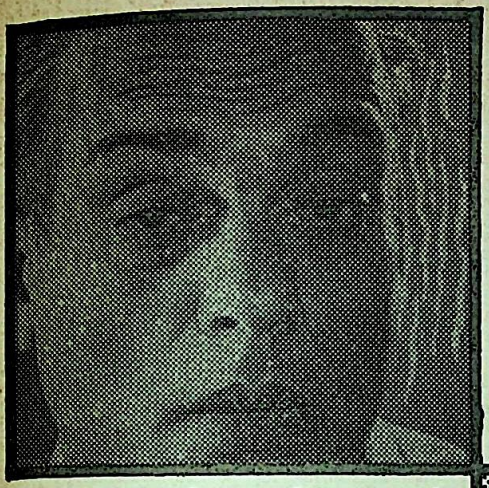

सर्दी-ज़ुकाम के बुखार में पक्का आराम पाइये

'एनासिन' इसलिए इतनी असरदार है कि उस में डाक्टर के नुस्खे की तरह कई दवाइयां हैं — इसी कारण वह फौरन और पूरा आराम देती है।

- 'एनासिन' में तत्वों का अनोखा मेल है, इसलिए दर्द में फौरन आराम मिलता है।
- 'एनासिन' घबराहट दूर करती है — सिरदर्द अक्सर इसी से होता है।
- 'एनासिन' सर्दी-ज़ुकाम व इन्फ्लूएंज़ा का बुखार घटाती है।
- 'एनासिन' दर्द में अक्सर महसूस होनेवाली बेचैनी व थकावट को मिटाती है।

दो टिकियों का दाम सिर्फ १३ नये पैसे

RRR HIN

एनासिन

बेहतर है क्योंकि इसके ४ फायदे हैं

Registered User:
GEOFFREY MANNERS & CO. LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा

आपको
आख़िरी कश तक
मज़ा देती है।

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई-५१
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लते हुए देखा, तो उसके पीछे चल पड़ी। अकेले में वह उसे अपनी ओर आकर्षित कर सकती थी।

"चले जाओ!.....चले जाओ!" फिर उस पक्षी की आवाज आयी।

सिंवाला गुफा में से निकला। सालो पहले ही बाहर जा चुकी थी। सिंवाला को देखते ही वह समर्पण की मुद्रा में खड़ी हो गयी। पहले सिंवाला ने उसकी ओर ध्यान न देने का दिखावा किया। फिर एकाएक उसके पास जाकर खड़ा हो गया। आधे घंटे उनकी कामक्रीड़ा हुई और उसके बाद सिंबाला खड्ड की ओर चल पड़ा।

तभी गोली की आवाज आयी। अचानक मौत ने सिंवाला को दबोच लिया था।

मेंडोजा का निशाना एकदम ठीक बैठा था। इतने बड़े शेर के काफी पैसे मिलेंगे! उसने अपने अफ्रीकी नौकरों को उसकी खाल उतारने के लिए कहा और खुद शराब पीने बैठ गया।

सालो ने अपने स्वामी को गिरते हुए देखा था। उसके मन में अंधेरा भर गया। जीवन में पहली बार उसके मन में अतीव घृणा और तल्खी जागी—आदमी के प्रति, गोरे आदमी के प्रति।

०००

कई महीने बाद उसी गुफा में सालो व्यायी। प्रसव में बहुत कष्ट हुआ; क्योंकि उसकी कोख बहुत तंग थी। बच्चा मरा हुआ निकला। सालो ने उसे उठाया, गुफा के बाहर कुछ दूर जाकर पिछली टांगों से

सालो और 'काली अयाल'

जमीन खोदी और मरा बच्चा उसमें डालकर ऊपर से मिट्टी ढंक दी। लौटते हुए एक बार फिर जोर से दर्द उठा और उसकी टांगों के बीच से एक और बच्चे का सिर निकल आया।

हूबहू सिंबाला जैसा था बच्चा – बड़ा सिर, बड़े-बड़े पंजे और काली अयाल। स्पष्ट लगता था कि वह सिंबाला से भी बड़ा शेर बनेगा।

जब शेर के बच्चे नौ महीने के हो जाते हैं, तो अपने माता-पिता के साथ शिकार करने निकलते हैं। पर सिंबाला का बच्चा—काली अयाल—जब एक साल का हो गया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बढ़िया

सनलाइट

से हर बार

आप के कपड़े ज़्यादा चमकदार धुलते हैं

अपने रोज़ पहनने के कपड़े
नये बढ़िया सनलाइट से धोइये

लिंटास-S.58-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो अपनी बीमार मां को छोड़कर अकेला ही शिकार करने जाने लगा। उसके अंदर तल्ख खून था। उसे विरसे में घृणा मिली थी। पर वह जान नहीं पाता था कि वह घृणा किसके प्रति है। आदमी के प्रति ? किंतु अभी तक उसने कोई आदमी देखा ही नहीं था।

०००

मपौला भूरे रंग की हथिनी थी, जो जवानी की ओर अग्रसर हो रही थी।

मेंडोजा ने उसे पकड़ने के लिए गड्ढे खुदवाये थे। हाथी पकड़ने का यह सबसे आसान और सस्ता तरीका है। मपौला एक गड्ढे में गिरकर फंस गयी। मेंडोजा हाथी-दांत का व्यापार करता था; पर मपौला हाथ आ जाये, तो उसे किसी सर्कस में बेचा जा सकता था। इससे हाथीदांत बेचने की तुलना में कहीं ज्यादा फायदा हो सकता था।

मेंडोजा कई बार गैरकानूनी तौर पर शिकार किया करता था। पर वह अधिकारियों के हाथ गरम कर देता था। सो उसके खिलाफ आवाज नहीं उठायी जा सकती थी।

हथिनी के फंसने की खबर मेंडोजा से पहले हैमिश को मिल गयी थी। तुरंत वह गड्ढे की ओर गया। वह जानता था कि मेंडोजा शिकार खेलने वहां से दूर किसी दूसरे इलाके में गया हुआ है और उसके आने में कुछ दिन लगनेवाले हैं। सो उसने मपौला को वहां से छुड़ाना चाहा। गड्ढे में से एक तरफ को रास्ता खोदा गया। फिर हैमिश का साथी हेंड्रिक मपौला पर बैठ गया और उसके कानों के पीछे पांव गड़ाकर उसे बाहर निकालने लगा।

बाहर निकलकर मपौला अचल खड़ी हो गयी। फिर बड़ी ही नरमी से अपनी सूंड़ हिलाने लगी।

हैमिश और उसके साथी मपौला को देखते रहे। वे सोच रहे थे कि शायद वह जंगल की ओर भाग खड़ी होगी। पर मपौला वहीं जमी रही। फिर वह हैमिश की ओर बढ़ी और अपनी सूंड़ से उसकी बांह को सहलाने लगी और जब हैमिश चलने लगा, उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। अपनी झोंपड़ी पर पहुंचकर हैमिश ने उसे गन्ने खिलाये। मपौला उसकी पालतू हथिनी बन गयी। रात के समय हैमिश उसकी एक टांग में सांकल बांध देता, ताकि मेंडोजा का कोई आदमी उसे चुरा न ले जाये।

०००

नदी के उस पार मेंडोजा को हाथियों के एक बहुत बड़े झुंड का पता लगा था। उसमें एक बहुत ही विशाल हाथी था, जो उस झुंड का नेता था। उसका नाम था टोंबा।

टोंबा बड़ा सचेत और अक्लमंद हाथी था। उसने दस साल तक अपने साथियों को खतरे से बचाया था। उसी की बदौलत वह झुंड शिकारियों की गोलियों व उनके बिछाये फंदों से बचा रह सका था।

मगर टोंबा अब बूढ़ा हो चला था और जवान हाथी उसे पीछे हटाकर खुद उस झुंड के नेता बनना चाहते थे। हथिनियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंसी की टेर निराली

अरविंद

ये रंग-रंगीले मनमोहक डिज़ाइन के बढ़िया कपड़े हैं

विभिन्न किस्मों में हैं

सन्फोराइज्ड पॉपलिन: कमीज के कपड़े: धारीदार, डॉबी, चेक, पायजामा

धोतियां
मर्सराइज्ड, लान: ५५३१
सूट का कपड़ा: गैबरडीन
छपे कपड़े: छपे लॉन
वायल, पॉपलिन
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल वॉयल
लेनो में और बूटीदार

·SANFORIZED·

टेविलाइज्ड और टेविलाइज्ड
बोहरी ग्रांच

Registered user

Arvind Quality

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

अब हमारी रिटेल दुकानों में प्राप्त:—प्रीमियर फर्निशिंग एंड डेकोरेटिंग प्रा० लि०
७, ब्रेवोर्न स्टेडियम, वीर नरीमन रोड, बंबई—१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी कई बार उसका कहना मानने से इन्कार कर देती थीं।

जब मेंडोजा ने उस झुंड को फंसाना चाहा, तो सिर्फ टोंबा उसके फंदे से बच सका। मौका पाकर वह भाग निकला। यह पहला मौका था कि बाकी हाथियों ने उसका कहना नहीं माना था। उसने खतरा महसूस कर लिया था; क्योंकि पास ही में उसे जलती हुई लकड़ियों की महक आयी थी। आस-पास कोई गांव नहीं था, फिर भी लकड़ियां जल रही थीं! स्पष्ट था कि पास ही कहीं आदमी हैं। यानी खतरा नजदीक था। सो उसने अपने साथियों को चेताया, उन्हें वहां से चल देने के लिए कहा; पर उन्होंने उसकी एक नहीं सुनी और अंत में फंस ही गये। पर टोंबा होशियारी से बच निकला था।

सूरज डूबने तक वह वहां से कई मील दूर जा चुका था और खतरा बहुत पीछे जंगल में छूट गया था। वहां पहाड़ी पर खड़े होकर उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा। अंधेरे में उसे बहुत-सी ज्वालाएं दिखाई दीं। तभी गोलियां चलीं और ढोल बजने लगे। जंगल का मौन टूट गया। फिर भयानक चीखें और चिंघाड़ने की आवाजें सुनाई दीं। शोर होने लगा। आखिर घेरा डालनेवाले आदिमियों के हाथों में जलती हुई मशालें आगे बढ़ने लगीं। ऐसा लग रहा था, जैसे काले आसमान से बहुत-से तारे टूटकर जंगल में गिर पड़े हों।

टोंबा बचकर भाग तो आया, पर अब

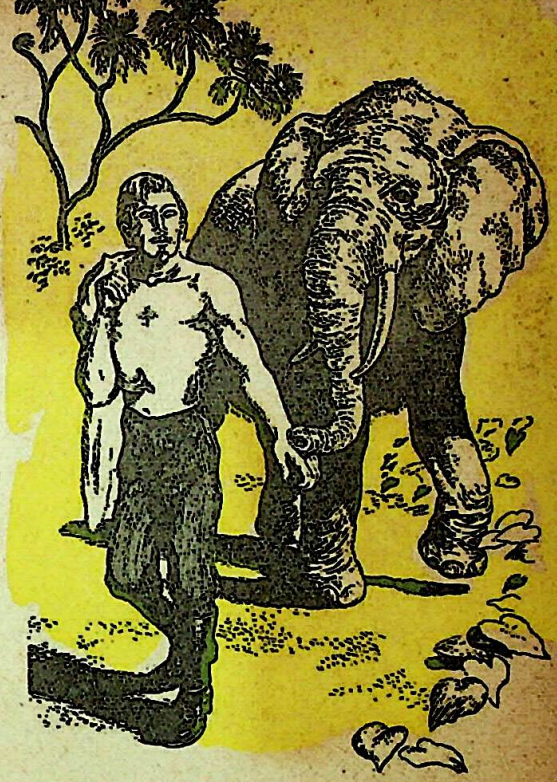

मपौला ने धीमे से हैमिश का हाथ छुआ

उसे बेहद अकेलापन महसूस होने लगा। उसे लगा कि अब वह हमेशा अकेला ही रहेगा। वह बूढ़ा हो चला है और अब दूसरा कोई झुंड उसे नेता के रूप में स्वीकार नहीं करेगा। एकाएक उसके दिमाग में धुंध छाने लगी। वह एक पेड़ की ओर बढ़ा। उसे सूंड़ में पकड़कर एक ही झटके में जड़ से उखाड़ डाला और एक तरफ फेंक दिया।

टोंबा के मन में बेहद बेचैनी थी, बेहद गुस्सा था, और वह जरा-जरा-सी बात पर झल्ला उठता था। कभी उसे दौरा पड़ता, तो किसी गांव की ओर भागता और झोंप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ममता की कसौटी पर खरा-डालडा

ममता भरी मां अपने लाड़ले को बढ़िया से बढ़िया भोजन खिलाती है। इस भोजन में रस है माँ के अपार स्नेह का और पौष्टिकता है सर्वोत्तम सामग्री की...डालडा वनस्पति की...जो बढ़ते हुए बच्चों के लिए गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं और यह केवल मुहरबन्द डिब्बों में सदा शुद्ध, सदा ताज़ा मिलता है। डालडा में बनी सब चीज़ें परिवार भर को अत्यन्त प्रिय हैं। आप भी आज से अपने लाड़लों को डालडा वनस्पति में पके स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन खिलाइए। डालडा आप की ममता की कसौटी पर खरा उतरेगा।

डालडा वनस्पति...एक विशेष शुद्ध चिकनाई

लिटास—DL 116-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हड्डियों को पैरों तल रौंद डालता, बगीचों में घुसकर तबाही मचा देता। लोग उसे पागल हाथी समझने लगे। रात के समय लोग गांव के गिर्द पहरा बैठाकर सोते थ, ताकि टोंबा आ रहा हो, तो सूचना मिल जाये और वे गांव से भागकर अपनी जान बचा सकें।

एक रात टोंबा उस इलाके में चला गया, जहां हैमिश रहता था। आसमान में चांद खिला हुआ था और टोंबा नदी के किनारे बड़ी शान से खड़ा था। एकाएक उसे बेहद अकेलापन महसूस हुआ। वह कान खड़े करके चिंघाड़ा।

उसकी आवाज सुनकर मपौला नींद से जाग उठी। उसने नदी की ओर नजर डाली। टोंबा की चिंघाड़ और चारों ओर फैली हुई दूधिया चांदनी ने उसके अंदर बेचैनी पैदा कर दी। वह चुपचाप नदी की ओर बढ़ी; नदी पार करके दूसरी ओर चली गयी। कुछ आगे जाने पर उसे जंगल में अपनी ही नस्ल के जानवर की गंध आयी। वह जान गयी कि आगे कोई हाथी खड़ा है।

टोंबा की पागलों जैसी हालत थी। मपौला को देखते ही वह उसकी ओर बढ़ा, उसके पास आया और सूंड़ से उसके सिर को छुआ। उस समय वह बहुत विशाल लग रहा था और चांदनी में सफेद-सा प्रतीत होता था। मपौला उसके पास ही बैठ गयी। टोंबा घूमकर उसके पीछे हो गया। दोनों की वह मिलन-यामिनी थी।

जब पौ फटी, टोंबा बदला हुआ जीव था। आज वह बहुत शांत था। उसका सारा पागलपन दूर हो चुका था। वहां से वह एक गांव की ओर बढ़ा। दिन के समय उसे गांव की ओर आते हुए देखकर लड़के-बच्चे डर के मारे इधर-उधर भागने लगे। पर टोंबा अब तबाही मचाना नहीं चाहता था। वह आगे बढ़ा और उसकी नजर एक तरफ धूल में बैठे एक भयभीत बच्चे पर पड़ी। उसने उसे सूंड में पकड़कर उठा लिया और सिर के ऊपर ले जाकर बड़े प्यार से इधर-उधर झुलाने लगा, मानो लोरी दे रहा हो। कुछ देर के बाद जब गांव से बहुत-से लोग वहां आये, तो उन्होंने देखा कि टोंबा एक पेड़ की छाया में सोया हुआ है और वह लड़का उसके पांवों के पास खेल रहा है।

उस दिन से लोग टोंबा को 'बच्चों का दोस्त' कहकर बुलाने लगे।

०००

हैमिश अब वहां पूरी तरह से बस गया था। उसके तीनों नौकरों और उनकी पत्नियों व बच्चों की रौनक लगी रहती थी। तीनों नौकर खेती-बाड़ी का काम करते थे। साथ में उसने बकरियां भी पाल रखी थीं। वहां ऐसी स्वतंत्रता थी कि आदमी अपने आपको सभ्यता का भी गुलाम नहीं समझता था।

उधर शराब व औरतों ने मेंडोजा की सारी शक्ति अपहरण कर ली थी। वह भोग-विलास में दिन बताता था। कभी शिकार की धुन सवार होती, तो जंगल की ओर चल देता। उसके बहुत-से नौकर-चाकर उसे छोड़कर जा चुके थे; क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह उन्हें खाने के लिए पर्याप्त मांस नहीं दे पाता था, जिसकी उन्हें आदत पड़ गयी थी।

दोनों गोरे आदमियों के बीच में नदी बहती थी। वे आपस में बहुत कम मिलते थे। मेंडोजा कभी-कभी हैमिश के पास मक्का, शक्कर, नमक, शराब आदि उधार लेने आया करता था। मुलाकात होने पर वे बहुत कम बातें करते।

०००

मपौला गर्भवती हो गयी थी। आखिर उसने एक बच्चे को जन्म दिया। वह बिलकुल सफेद था। लोगों ने उसे देखा, तो चकित रह गये। आखिर यह बच्चा, यह सफेद हाथी, किसकी औलाद है?

वे सोचने लगे। मपौला तो झोंपड़ी के अहाते के बाहर कभी गयी ही नहीं थी। रोज रात को उसे सांकल से बांध दिया जाता था; और कोई हाथी भी उसके पास नहीं आया था। फिर उसके गर्भ कैसे रह गया? यह बच्चा कहां से आ गया? और वह भी सफेद बच्चा!

हैमिश भी इस बारे में हेंड्रिक से पूछता। पर हेंड्रिक कह देता कि उसे कुछ पता नहीं है। वह आश्चर्य प्रकट करता और इसे देवताओं की करामात बताता।

तो फिर सफेद हाथी आ कहां से गया? हर कोई यही पूछता! पर किसी को भी टोंबा के बारे में पता नहीं था; न कोई यह जानता था कि सफेद हाथी टोंबा का बच्चा है। बच्चे का नाम 'एमकौला' रखा गया। वह देवलोक का हाथी समझा जाने लगा।

मशहूर हो गया कि एक दिन वह सभी हाथियों का राजा होगा।

जब वह चलने-फिरने लगा, तो पता गया कि उसकी आगे की एक टांग लंगड़ी है। उसे वह पूरी तरह से जमीन पर नहीं रख सकता था।

इस सफेद हाथी की खबर आखिरकार नदी के उस पार मेंडोजा तक भी पहुंच गयी। उसने सोचा कि किसी तरह यह हाथी हाथ लग जाये, तो आसानी से एक हजार पौंड कमाये जा सकते हैं। वह उसे हथियाने की योजनाएं बनाने लगा। अब वह हाथियों को पकड़ने में असमर्थ था, क्योंकि उसके सभी साथी उसे छोड़कर चले गये थे। केवल दो लड़के अब उसके पास रह गये थे। आखिर मेंडोजा ने निश्चय किया कि कभी सफेद हाथी नदी के इस पार आये, तो वह उसे गोली मारकर जख्मी कर देगा और पकड़ लेगा।

एक दिन वह मौका भी आ ही गया। मेंडोजा को पता लगा कि सफेद हाथी और मपौला जंगल में घूम रहे हैं। उसने उनका पीछा किया। जब वे उसे दिखाई दिये, तो सूरज डूबनेवाला था। मेंडोजा ने जल्दी की और निशाना बांधकर गोली चलायी। मपौला अपने बेटे की रक्षा करने के लिए आगे बढ़ी। उसी समय दूसरी गोली चली, जो उसके कान के पीछे आकर लगी। मपौला गिर पड़ी और गिरते ही मर गयी। तुरंत मेंडोजा ने सफेद हाथी पर गोली चलायी। वह उसकी टांग में लगी। सफेद हाथी भागा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह चारों टांगों पर भार डालता हुआ भाग रहा था। उसकी लंगड़ी टांग अब लंगड़ा नहीं रही थी। मानो जंगल के देवता ने, जिसे लोग उनका पिता मानते थे, उसकी टांग ठीक कर दी थी।

जब सफेद हाथी जंगलों में से भागा जा रहा था, एकाएक उसे बड़ा ही अकेलापन महसूस हुआ। उसकी इच्छा हुई कि वह हाथियों के किसी झुंड में जाकर मिल जाये। पर हाथियों का झुंड कहां मिलेगा? फिर उसे अपनी टांग का खयाल आया, जिसमें से खून बह रहा था और जोर से दर्द हो रहा था। वह आगे बढ़ता गया। फिर एक जगह जाकर रुका। वहां गरम पानी के चश्मे थे। उन चश्मों में गंधकवाला कीचड़ था, जो उसके जख्म को ठीक कर सकता था। हाथी के अंदर जो सहज ज्ञान होता है, उसी ने उसे यह इलाज बताया था।

इसके बाद वह नदी की ओर बढ़ा। अब खतरा बहुत पीछे छूट गया था। वह और आगे बढ़ा। उसे आभास हो रहा था कि आगे हाथियों का कोई झुंड है। आखिर जब

वहशी ये कि हम ?

जंगली जीव! यही तो हम कहते हैं जंगल के जानवरों को और जिंदगी में रंग व रौनक भरनेवाले सुंदर-सुंदर परिंदों को! कई बार सोचने लगता हूं—ये जानवर और परिंदे इंसान के बारे में क्या सोचा करते होंगे और अगर ये इंसान का वर्णन कर सकें, तो कैसा वर्णन करेंगे? इसमें मुझे काफी शक है कि उनका वर्णन ऐसा होगा कि इंसान को उसे पढ़कर खुशी हो। आखिर क्या यह सच नहीं कि अपनी तमाम तहजीब और तरक्की के बावजूद बहुत मामलों में इंसान आज भी जंगली ही नहीं है, बल्कि जंगली कहे जानेवाले जानवरों से भी ज्यादा खतरनाक है।

कहते हैं, कुदरत के दांत व पंजे लहू से लाल हैं, और जंगल में जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। वहां ताकतवर कमजोर को खत्म कर डालता है और कमजोर छल-छिपाव के तरीके विकसित कर लेता है अपने बचाव के लिए। लेकिन जंगल के इस दस्तूर की वजह है—खाने की तलाश। इंसान इंसान को नहीं खाता, पर दूसरी चीजों के लिए वह इंसान का खात्मा कर डालता है, और जब जान से नहीं मारता तब भी उसकी रूह को तो मार ही डालता है।

अजीब खिचड़ी हैं हम इंसान अच्छाई और बुराई के, सभ्यता और वहशियत के, दिव्यता और ओछेपन के। हम बोलते कोई जबान हैं और करते कुछ और ही हैं। हम आदर्शों के झंडे फहराते हैं; लेकिन अपने सलूक से उन्हें झुठला देते हैं। हम शांति की बात भी कहते हैं तो हमलावर और लड़ाकू लहजे में!

—जवाहरलाल नेहरू

[ई० पी० गी की पुस्तक 'वाइल्ड लाइफ इन इंडिया' की भूमिका में से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

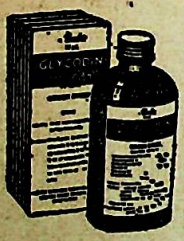

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने जंगल पार किया, तो सचमुच सामने बहुत-से हाथी दिखाई दिये, जो घुटने तक के पानी में खड़े थे ।

सफेद हाथी उन्हें देखकर डरा, और एक जगह अचल बनकर खड़ा हो गया ।

इस झुंड में सभी हथिनियां थीं, हाथी कोई नहीं था। सफेद हाथी आगे बढ़ा, ताकि पूरी तरह से हथिनियों की नजर में आ सके। क्या वे उसका स्वागत करेंगी ? एक सफेद हाथी का ?

जब उसकी गंध हथिनियों ने महसूस की, तो उन्होंने कान खड़े किये और मुंह उसकी ओर मोड़े । फिर वे धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगीं । उनका नेता कुछ समय पहले मर चुका था । सो उन्होंने सफेद हाथी को नये नेता के रूप में देखा । उसका सफेद रंग उन्हें कुछ अजीब जरूर लगा; परंतु उस समय उन्हें नेता की जरूरत थी, किसी बहुत बड़े हाथी की ।

कुछ ही देर में सफेद हाथी हथिनियों से घिर गया । उनकी गंध से उसे बड़ा संतोष हुआ । यह मन को भानेवाली गंध थी । अब हथिनियां उसे अपनी सूंड़ों से छू रही थीं। फिर वे उसे साथ लिये नदी की ओर बढ़ीं । सफेद हाथी पहली बार निश्चिंत भाव से पानी की धारा में लेटा ।

दिन-भर वह वहां लेटा रहा और हथिनियां अपनी सूंड़ों में पानी भर-भरकर उस पर डालती रहीं । फिर जब वह नदी में से निकलकर किनारे पर सो गया, तो हथिनियों ने उसके गिर्द घेरा डाल दिया, जैसे उसकी रक्षा कर रही हों ।

सुबह हुई, तो सभी हाथी एकाएक चौकन्ने हो उठे । सफेद हाथी को दुश्मन की गंध आयी । मेंडोजा सफेद हाथी का पीछा करता हुआ वहां पहुंच गया था । तुरंत हाथियों का झुंड वहां से खिसक गया । मेंडोजा का एक अफ्रीकी नौकर सफेद हाथी की पकड़ में आ गया । हाथी ने उसे सूंड़ में उठाया और जोर से ऊपर उछाल दिया । उसकी बेजान काया झाड़ियों में उलझती-अटकती अंत में धरती पर आ गिरी। वृक्षों पर बैठे बंदर यह दृश्य देखकर हंसने लगे ।

मेंडोजा एक टीले के पीछे छिपा हुआ था । उसने यह देखा, तो वहां से भागा । उसे पता था कि हाथी उस पर भी हमला करेंगे । सो वहां से भागने में ही खैरियत थी। सफेद हाथी को मारना अब संभव नहीं था ।

०००

सिंबाला का बेटा 'काली अयाल' अब तक भरपूर शेर बन चुका था । जन्म से ही उसमें एक असंतोष था और वह दूसरे शेरों से भी खुश नहीं रहता था । वह जानवर मारता; पर इससे तो उसकी पेट की भूख ही शांत होती। उसके अंदर जो घृणा थी—खासकर आदमी के प्रति घृणा—वह शांत नहीं होती थी ।

'काली अयाल' डरपोक नहीं था; फिर भी वह पूरी सावधानी से आदमी को मारता चाहता था । कुछ बातों में वह अन्य शेरों से बिलकुल भिन्न था । कभी-कभी वह उस जगह पानी पीने चला जाता, जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साड़ियाँ, कमीजें, बच्चों के वस्त्र...हर कपड़ा जगमगाता सफ़ेद, बेदाग़ साफ़...इसलिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है। सारी धुलाई घर में सर्फ़ से कीजिये!

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 38-77 HI

CC-0. Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेंडोजा के निवास-स्थान से कुछ ही दूर थी। एक दिन वह पानी पीने गया, तो उसने कुछ दूरी पर आग जलती देखी। उसके साथ ही उसे पकते हुए मांस की गंध आयी। उसके नथुने फड़के। वह और आगे बढ़ा।

आग के पास उसने एक कुत्ते को बैठे देखा। पहले भी एक बार उसने कुत्ते का मांस खाया था और वह उसे बहुत मीठा लगा था। सो उसने उस कुत्ते का शिकार करने की ठानी। आग के पास एक आदमी भी बैठा हुआ था। मगर 'काली अयाल' को आदमी का इतना डर नहीं था, जितना कि आग का, जिसकी लपटें उछल रही थीं, नाच रही थीं। उसने सोचा कि आग की लपटों के मंद पड़ते ही वह कुत्ते पर झपटेगा और उसे दबोचकर भाग निकलेगा। वह कुछ देर तक आग का भड़कना और मंद पड़ना देखता रहा।

उसी समय कुत्ते ने शेर की गंध महसूस की। वह भौंका और वहां से भाग गया। शेर ने उसका पीछा नहीं किया। कुत्ता भाग गया था; पर आदमी अभी वहीं बैठा था। तो आदमी ही सही। वह उस पर झपटा। पर तभी एक साथ तीन कुत्ते उस पर झपट पड़े। वह आदमी को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

इससे पहले 'काली अयाल' ने कभी आदमी के खून का स्वाद नहीं चखा था। अब उसने देखा कि आदमी का खून कुत्ते के खून से कहीं ज्यादा मीठा होता है। सो उस रात के बाद वह नरभक्षी बन गया। एक दिन उसने दो औरतों का शिकार किया, जो नदी पर पानी भर रही थीं। फिर एक दिन जंगल में बकरियां चरा रहे दो लड़कों को मार डाला।

कुछ ही समय में आस-पास के लोगों में यह बात फैल गयी कि 'काली अयाल' नरभक्षी है। सो उसे खत्म करने की बातें होने लगीं।

'काली अयाल' के लिए अब एक ही रास्ता था। वह वहां से दूर, दूसरे जंगल में चला गया।

०००

मेंडोजा शिकार में असफल होकर अपने निवास-स्थान की ओर लौट रहा था। अभी पांच मील का फासला बाकी था। थकावट के कारण एक जगह बैठकर सुस्ताने लगा। 'काली अयाल' ने उसे देख लिया था। जब उसने हमला किया, तो मेंडोजा के लिए संभलने का समय नहीं था।

'काली अयाल' को स्वयं इसका ज्ञान नहीं था, फिर भी जैसे वह अपने पिता सिंबाला की हत्या का बदला ले रहा था। वह मेंडोजा के चेहरे पर गहरे घाव करके भाग गया। मेंडोजा बड़ी मुश्किल से अपने निवास-स्थान पर पहुंचा। जख्म पर नदी का कीचड़ बांध दिया गया, जिसने जख्म में से जहर चूस लिया। मेंडोजा बच गया।

मेंडोजा के चेहरे का जख्म तो भर गया; मगर निशान न गया। बार-बार वह उस निशान पर उंगली फिराता और उसके अंदर बड़ी कटुता जाग जाती। अब वह बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

QUALITY IS OUR CREED

लोकप्रियता का नवीन शिखर

ज्योति वर्टीकल टरबाइन पम्प

* कम से कम बिजली-खर्च में अधिक से अधिक पानी * जंग न लगनेवाले ऊदन शाफ्ट * विशिष्ट प्रकार के यंत्र तथा आधार के उपयोग से कायम रखी जानेवाली कालम-पाइप, शाफ्ट और ट्यूब की समकेन्द्रीयता * शाफ्ट-ट्यूब खुल न जायं, इसके लिए विशिष्ट प्रकार की 'लाकिंग' की व्यवस्था.

आकार: १००T मि.मी. ७५०T तक (१०० मि.मी. के व्यास के कुओं से ७५० मि.मी. के व्यास तक के कुओं के लिए)
कार्यक्षमता: प्रति मिनट ३५,००० लिटर तक
चढ़ाव: १०० मीटर तक

JY-16 HIN EVEREST

ज्योति लिमिटेड, बड़ौदा ३

शाखाएं: बम्बई, नयी दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, जयपुर और सिकंदराबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानवरों का शिकार करने के काबिल नहीं रह गया था; फिर भी मरने के पहले वह 'काली अयाल' को अवश्य खत्म करना चाहता था। दरअसल यही अब उसके जीवन का उद्देश्य रह गया था।

एक दिन उसके अफ्रीकी नौकर ने सूचना दी कि उसने समीप ही एक जगह 'काली अयाल' को फिरते देखा है। सो उसने एक जेब्रा मारा, जिसका मांस शेर को बहुत पसंद होता है। मरे हुए जेब्रा को उसने नदी-किनारे ऐसे स्थान पर रख दिया, जहां 'काली अयाल' पानी पीने आया करता था। सूरज डूबा, तो वह बंदूक लेकर एक जगह छिपकर बैठ गया।

आधी रात को 'काली अयाल' आया, बड़ी शान से जेब्रा की ओर बढ़ा। मेंडोजा ने निशान साधा। आखिर वह मौका आ गया था, जिसकी उसे वर्षों से प्रतीक्षा थी।

'काली अयाल' का मुंह मेंडोजा की ओर था। चांदनी में उसकी लाल-लाल आंखें चमक रही थीं। मेंडोजा गोली दागने ही वाला था कि एकाएक आसमान में काले बादल छा गये और उन्होंने चांद को ढंक लिया। अंधेरा छा गया। दूर कहीं लकड़बग्घा हंसा। फिर और बहुत-से लकड़बग्घों के हंसने की आवाज आयी। आखिर जब बादल उड़कर आगे निकल गये और फिर चांदनी खिल गयी, तो मेंडोजा ने देखा कि 'काली अयाल' अदृश्य हो चुका है।

मेंडोजा अब भी उसे मारने की बातें तो किया करता था; मगर जंगल में घूमना छोड़ चुका था। शराब पीकर अपनी झोंपड़ी में पड़ा रहता था। वह बूढ़ा हो चला था।

उस घटना के छः महीने बाद, एक दिन रात को मेंडोजा का नौकर जोहान्स हैमिश के यहां आया और उसने बताया कि मेंडोजा मर गया है और उसके पास ही 'काली अयाल' भी मरा पड़ा है।

हैमिश और उसका साथी हेंड्रिक दोनों मेंडोजा को देखने चले। घंटे-भर चलकर वे नदी के उस पार मेंडोजा की कुटिया पर पहुंचे। उन्होंने पाया कि मेंडोजा फटी-पुरानी खाकी निकर और कमीज पहने अपनी खटिया पर मरा हुआ पड़ा है; और झोंपड़ी से पचास गज से भी कम दूरी पर शेर भी निर्जीव लेटा है। उसके पंजों पर का सूखा खून जम गया है। ऊपर आसमान में गिद्ध चक्कर काट रहे हैं।

पूरी घटना कैसे घटी होगी, इसकी कल्पना आसानी से की जा सकती थी। क्योंकि अफ्रीका की रेत गूढ़-से-गूढ़ बात भी बता देती है। उस पर अंकित हर निशान पूरी एक कहानी कह देता है।

मेंडोजा ने उस रोज अपने एकमात्र नौकर जोहान्स को शराब लाने भेजा था और स्वयं बुखार और सर्दी से ठिठुरता हुआ वह ढलते सूरज की आखिरी किरणों से गरमी पाने के लिए झोंपड़ी के बाहर आकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गया था। तभी सामने की झाड़ी हिली और 'काली अयाल' उसके सामने आकर खड़ा हो गया। रेत पर शेर के पंजों के निशानों के साथ उसकी पूंछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

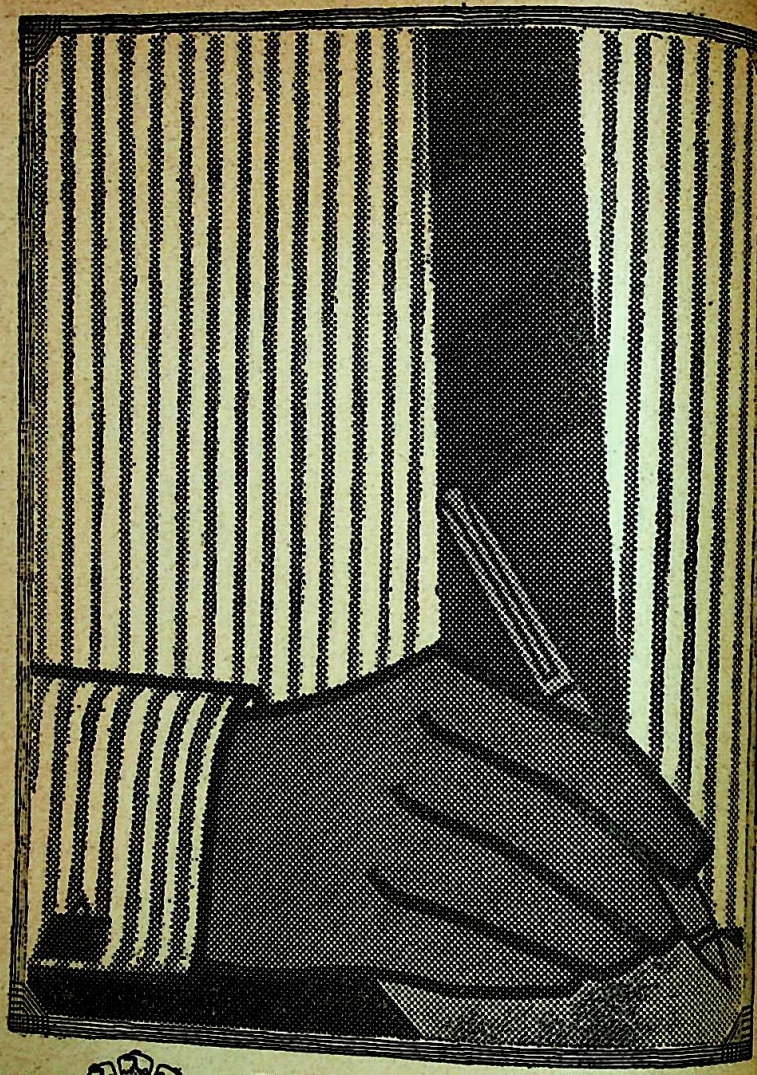

MAFATLAL GROUP

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'रेविनाइज्ड' और मैफिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलतें है।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • सस्न बम्बई • सस्न
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Always MGSP 1838 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का निशान भी था, जो रेत पर घिसटती आयी थी। अब उसमें पूंछ को उठाकर चलने की भी शक्ति नहीं रह गयी थी। वह अब अंतिम दिन गिन रहा था।

वह बहुत बूढ़ा हो गया था .....उसके दांत झड़ गये थे .....दिन लद चुके थे। वह जंगल का राजा नहीं रह गया था.....अब तो वह एक बूढ़ा प्राणी था, जिसे किसी शांत कोने की तलाश थी, जहां दम तोड़ सके।

हैमिश को मेंडोजा की उन आखिरी घड़ियों की कल्पना करने में कठिनाई नहीं हुई। मेंडोजा उसी शेर के बिलकुल सामने बैठा था, जिसने उसका जीवन बरबाद कर दिया था, कटुता से भर दिया था। शेर ऐसे वक्त आ पहुंचा था, जब उसके हाथ में बंदूक नहीं थी, जोकि किसी भी शिकारी के लिए एकदम अक्षम्य अपराध है। सुनिये, मेंडोजा शेर से बातें कर रहा है—बड़े आहिस्ते, बड़ी दृढ़ता से। वह अपलक देख रहा है शेर को..... आंखें मिलाकर ही उसे डराकर भगा देने की कोशिश कर रहा है.....और हिम्मत हो, तो कोई भी आदमी ऐसा कर सकता है।

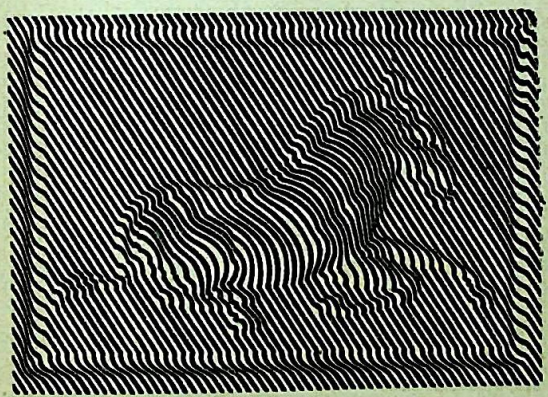

बेचारा जेब्रा

शेर लड़खड़ाता हुआ झाड़ी से निकल आया। अब उसकी चाल में वनराज की शान नहीं रह गयी थी। अब मेंडोजा कुछ ही दूर रह गया था; मगर शेर अपने खाली पेट के बल जमीन पर लेट गया, जैसे कोई बड़ी-सी बिल्ली हो। वह इतना कमजोर हो गया था कि मेंडोजा पर हमला करना उसके बूते से बाहर था और न ही उसकी हमला करने की इच्छा थी।

रेत पर बने हुए मेंडोजा के पैरों के निशानों से पता लगता था कि वह बंदूक लेने के लिए झोंपड़ी की ओर गया था।

और कुछ ही देर के बाद गोली चली थी।

यह मेंडोजा की आखिरी गोली थी। मजबूत हाथों से बंदूक चलायी होगी उसने और निशाना साधते वक्त उसकी आंखें बहुत साफ रही होंगी। इस गोली से उसने एक हिरन मारा था, ताकि बूढ़े और कमजोर 'काली अयाल' के लिए, जो अब स्वयं शिकार कर अपना पेट भरने के काबिल नहीं रहा था, खाने का प्रबंध हो जाये। फिर उसने हिरन के मांस के छोटे-छोटे टुकड़े काटे थे, ताकि 'काली अयाल', जिसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

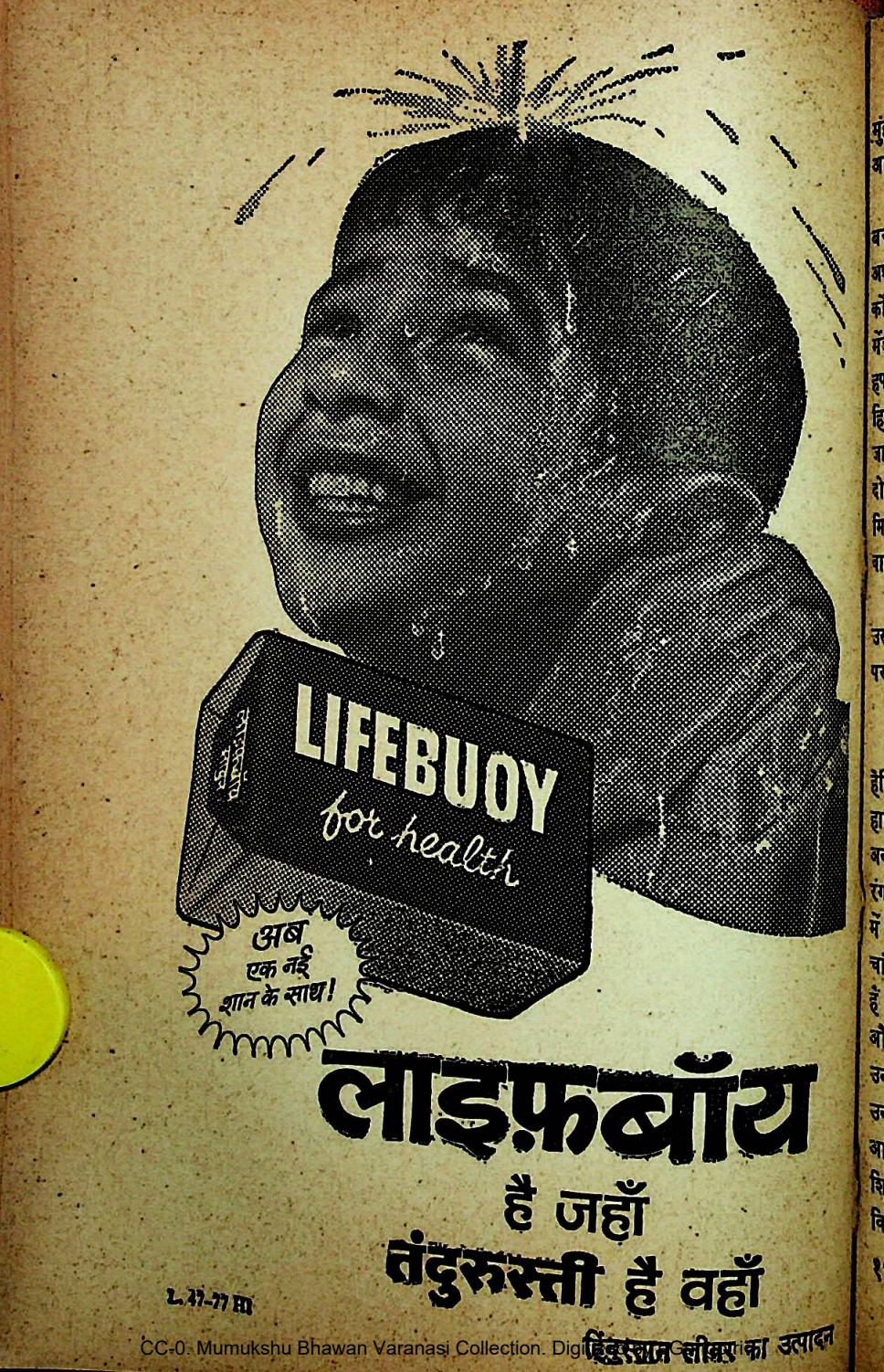

लाइफ़बॉय

है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

L-27-77 HD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

मुंह में एक भी दांत नहीं रह गया था, उन्हें आसानी से खा सके।

आखिरकार अफ्रीका ने लेना-देना बराबर कर दिया था.....वह भी रहस्यमय अफ्रीकी ढंग से! हिरन मारने और मांस को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने की मेहनत मेंडोजा के लिए प्राणांतक सिद्ध हुई; और हफ्तों भूखे रहने के बाद भरपेट खाया गया हिरन का ताजा गरिष्ट मांस बूढ़े शेर की जान ले बैठा। अजीब बात थी, किस्मत ने दो जानी दुश्मनों को अंतिम समय में मिला दिया था। दोनों अफ्रीका के रहनेवाले थे, दोनों शिकारी थे, दोनों हत्यारे थे।

हैमिश ने मेंडोजा को दफना दिया और उसकी कब्र पर एक सलीब गाड़ दी, जिस पर उसका नाम लिख दिया गया।

०००

आज भी अफ्रीका की उस घाटी में, जहां हैमिश और मेंडोजा रहते थे, नदी के पास हाथियों का झुंड देखा जा सकता है। ये हाथी अन्य हाथियों से भिन्न किस्म के हैं। उनका रंग भूरा है—लगभग सफेद। जब आसमान में पूरा चांद चमक रहा होता है, तो उसकी चांदनी में वे हाथी बिलकुल सफेद लगते हैं। ये हाथी अन्य हाथियों की तरह खेतों और बगीचों पर हमले नहीं करते। लोग उन्हें अपना दोस्त समझते हैं। इसीलिए कोई उन्हें मारता या पकड़ता नहीं। बाहर से आनेवाले शिकारियों को भी उनका शिकार करने नहीं दिया जाता। लोगों का विश्वास है, इनकी रक्षा देवता खुद करते हैं।

इन हाथियों के बारे में बहुत-से किस्से प्रचलित हैं, जो उन्होंने अपने बाप-दादों के मुंह से सुने हैं:

"..... एक समय था, जब इन हाथियों का मुखिया एक सफेद हाथी था। उसका नाम एमकौला था। वह इतना बड़ा था कि उसकी सूंड पहाड़ पर खड़े पेड़ों के पत्तों तक पहुंच सकती थी। तीन सौ हथिनियां उसकी पत्नियां थीं। वह जरा लंगड़ाकर चलता था; क्योंकि किसी दुष्ट गोरे शिकारी ने उसे मारने का यत्न किया था....."

कहानी के इस हिस्से पर पहुंचकर सुननेवाले खिलखिलाकर हंस पड़ते। भला कौन मूर्ख ऐसे हाथी को मारना चाहेगा? पर उस सफेद हाथी को मारा नहीं जा सकता था। शिकारी की गोली उसके कलेजे में लगी थी और उसके पांव में से होकर बाहर निकल गयी थी।

"..... उस सफेद हाथी का बाप चांद पर रहनेवाला एक देवता था। कभी-कभी वह देवता किसी नवजात हाथी के बच्चे पर चांद पर से कुछ चांदनी छिड़क देता है, जिससे वह सफेद हाथी बन जाता है।"

हैमिश मैकडानल्ड के बारे में भी कहानियां मशहूर हैं। कहते हैं, वह बहुत अच्छा आदमी था और अब वह स्वर्ग में रहता है, जहां सभी अच्छे आदमियों को जगह मिलती है। और वहीं वे हाथी भी रहते हैं, जिनकी आंखें रात को आसमान में तारों के रूप में चमका करती हैं।

मेंडोजा की कब्र अब पत्थरों का ढेर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मात्र रह गयी है – वह अवैध शिकारी मेंडोजा, जिसने जीवन-भर निर्ममतापूर्वक वन-पशुओं की हत्या की थी; किंतु जीवन की अंतिम संध्या में उस शेर पर उपकार किया था, जिससे वह घृणा करता था, जिसे वह जानी दुश्मन मानता था !

उस घाटी में अब कोई ऐसा शेर दिखाई नहीं देता है, जिसकी अयाल काली हो; क्योंकि 'काली अयाल' ने कभी किसी शेरनी के साथ संभोग नहीं किया। वह अन्य शेरों से अलग-ही-अलग रहा था। अब जो शेर वहां रहते हैं, वे न अतीत के बारे में सोचते हैं, न डूब रहे सूरज के बारे में, न ही भविष्य के बारे में।

मगर हैमिश का नौकर हेंड्रिक अभी तक जिंदा है। अलबत्ता वह बहुत बूढ़ा हो गया है। उसकी आंखें चुंधिया गयी हैं। वह आग जलाकर उसके पास बैठा रहता है और बहुत कम बोलता है। सिर्फ वही एक व्यक्ति है, जिसे 'सफेद हाथी' का रहस्य मालूम है। क्योंकि जिस रात टोंबा चिंघाड़ा था, उस रात वह मपौला की टांग में सांकल बांधना 'भूल' गया था। बस इसी एक मौके पर हेंड्रिक ने अपने मालिक हैमिश की आज्ञा का उल्लंघन किया था। हैमिश की आज्ञा थी कि जब भी उसे कुछ करने को कहा जाये, तो बिना सोचे-विचारे उस पर अमल करना शुरू कर दिया करे। उसे सोचने की जरूरत नहीं थी। सोचना उसका काम नहीं था।

मगर उस रात, टोंबा की चिंघाड़ सुन-कर वह सोचने लगा था कि यह तो कुदरत का नियम है कि हथिनी और हाथी आपस में मिलें। और फिर ऐसी चांदनी रात में दोनों मिल जायें, तो बात ही क्या !

अगर उस रात वे न मिले होते, तो आज उस घाटी में सफेद हाथी कहां से आते !

०००

अफ्रीका प्रश्नचिह्नों से भरा हुआ है। बस एक ही बात निश्चित है और वह यह कि कुछ भी निश्चित नहीं है। हर साल वहां नये आश्चर्य जन्म लेते हैं, हर साल नये-नये परिवर्तन होते हैं – अच्छे और बुरे परिवर्तन। कौन जानता है कि आगे अफ्रीका में क्या होगा ! ..... कोई नहीं। कम-से-कम, आदमी तो हर्गिज नहीं जानता।

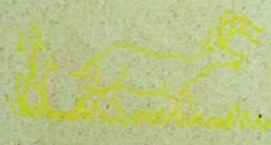

एक शिकारी ने दूसरे शिकारी के सामने डींग हांकी–"मैंने एक ही गोली से रीछ का पंजा और सिर दोनों तोड़ दिये।" दूसरे शिकारी ने आश्चर्य से पूछा–"सिर और पंजा एक गोली से टूटें, यह कैसे हो सकता है ?" फौरन उत्तर मिला–"मैंने गोली उस समय दागी थी जब रीछ पंजे से अपना सिर खुजला रहा था।"

–मेवाराम गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुगलिया चांद की उतरती कला

"मैं तुझको बताता हूं, तक़दीरे-उमम क्या है? शमशीरो-सना अव्वल, ताऊसो-रबाब आख़िर"— पहले तलवार, अंत में संगीत-गोष्ठियां। कवि इकबाल ने साम्राज्यों के उदय-अस्त का सिद्धांत इस एक शेर में कह दिया है। मुगल साम्राज्य के आखिरी दुर्दिनों की झांकी देनेवाला यह लेख, जो अल्लामा नियाज फतहपुरी के एक लेख (निगार, फरवरी ६४) का स्वतंत्र अनुवाद है, इकबाल के सूत्र की दृष्टांतयुक्त व्याख्या है।

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

इतिहास की यह कैसी विचित्र विडंबना है कि मुगलिया सल्तनत जिस वेग से, जितने समय में उन्नति के शिखर पर पहुंची, उसी वेग से, उतने ही समय में पतनोन्मुख होकर समाप्त हो गयी! अकबर के राज्यारोहण (१५५६) से लेकर औरंगजेब की मृत्यु (१७०७) तक पूरे डेढ़ सौ वर्षों में वह उन्नति करती गयी। तत्पश्चात् १७०७ से १८५७ तक उतनी ही अवधि में उसकी बिसात सदा के लिए उलट गयी। यहां मेरा उद्देश्य उस पतन के मुख्य कारण पर प्रकाश डालना है।

बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद से १७१९ ई० में मुहम्मदशाह के शासनारूढ़ होने तक मुगलिया सल्तनत अत्यंत अस्तव्यस्त एवं परेशान रही। शहजादों की परस्पर प्राणघातक लड़ाइयां, वजीरों के षड्यंत्र, सैयद बंधुओं का अनधिकार हस्तक्षेप, ईस्ट इंडिया कंपनी की चालें और मराठों के आक्रमण— इन सबने केवल बारह वर्षों में तैमूर-वंश की भारत में चूलें हिलाकर रख दीं।

यह कोई ऐसा असाध्य रोग नहीं था, जिसका उपचार ही न किया जा सके। किंतु दुर्भाग्यवश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हीं दिनों विलासिता ने भी शाही महलों में अड्डा जमा लिया। प्रवेश तो वह जहांगीर और शाहजहां के शासन-काल में ही पा चुकी थी; किंतु अपनी शैशवावस्था के कारण रंग नहीं जमा सकी थी। अब वह जवान होकर उत्तरोत्तर कयामत ढाने लगी।

औरंगजेब के बाद उसका बेटा मुहम्मद मुअज्जिम (बहादुरशाह) राज्यासीन हुआ और पांच साल तक बड़ी आपाधापी में परेशान रहा। ऐसी परेशानी में भोग-विलास का अवसर ही कैसे मिलता? लेकिन जब उसका बेटा जहांदार राज्यासीन हुआ, तो अल्पवयस्क होते हुए भी केवल नौ माह के शासन में सुरापान एवं दुराचार के ऐसे जघन्य कारनामे छोड़ गया, जिन्हें पढ़कर हैरत होती है। शासन का समस्त भार अपने वजीर जुल्फिकार खां के कंधों पर डालकर स्वंयं लालकुंवर की जुल्फे-पेचां में फंस गया।

लालकुंवर एक वेश्या की लड़की थी—अत्यंत रूपवती, सुरीली और चंचल। उसकी मां उसे 'शीरींलका' कहा करती थी। उसका मकान शहजादों और अमीरों का केंद्र-स्थल था। उसके हुस्न के दीवाने उसके यहां परवानावार मंडराया करते थे। लेकिन उसकी मां मोटे शिकार की खोज में थी। अतः उसने इन हुस्नपरस्तों में से जवांबख्त को चुना, जो बादशाह जहांदार का ममेरा भाई भी था और छैल-छबीला तरहदार भी।

जब जहांदारशाह ने लालकुंवर के रूप-गुण की ख्याति सुनी, तो वह बिना देखे ही उस पर आसक्त हो गया और उसके पिट्ठुओं ने लालकुंवर की मां से सौदा पटा लिया। वह तो इसी मौके के इंतजार में थी। एक बड़ी रकम लेकर लालकुंवर एक रात गुप्त रूप से महल के अंदर पहुंचा दी गयी।

जवांबख्त भी अक्सर रात में ही आता था। उसने आते ही पूछा—"लालकुंवर कहां है?" उसकी मां, जिसने पहले ही सब सोच-समझ लिया था, शोक-तप्त स्वर में बोली—"वह तो पसली के दर्द से कल ही मर गयी। उसे निजामुद्दीन में दफन कर दिया गया है।"

जवांबख्त को सब हाल पहले ही मालूम हो चुके थे। उसने पेशकब्ज निकालकर उसे कत्ल कर दिया। यह खबर आनन-फानन में शहर के कोने-कोने में फैल गयी। लालकुंवर ने बस रोते-रोते अपना बुरा हाल कर लिया।

जहांदारशाह लालकुंवर को शोकाकुल नहीं देख सकता था। लेकिन वह अशक्त एवं सामर्थ्यहीन था, उसका अपने वजीर जुल्फिकार खां पर बस न था। अतः जवांबख्त खां के इस कृत्य को नजर-अंदाज करने के अतिरिक्त और दूसरा उपाय न था। लेकिन चंद दिनों के बाद भुलावे में डालकर उसे विष देकर समाप्त कर दिया।

इसके बाद जहांदारशाह की जीवन-चर्या इसके अतिरिक्त और कुछ न रही कि वह हर समय सुरापान में मदमस्त लालकुंवर की आगोश में पड़ा रहे। परिणाम-स्वरूप दरबार में डोम-मीरासी छा गये। लालकुंवर को 'इम्तियाज महल' की उपाधि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुडकट : कौशल

से गौरवान्वित किया गया और उसके एक भाई खुशमाल खां को सप्तहजारी और दूसरे भाई को पंचहजारी अमीर बना दिया गया। बादशाह पर लालकुंवर के आधिपत्य का हाल एक घटना से मालूम होता है, जिसे 'तजकरए आलम' के लेखक ने इन शब्दों में बयान किया है :

"एक दिन जहांदारशाह अपना सिर शीरींलका के जानू पर रखे पड़ा था। उसकी जवानी की सुर्खी, शराब की झलक, चारों तरफ फूलों के ढेर, इत्र की लपटें, इसी आलमे-सरूरो-निशात (मादकता एवं वासना के क्षण) में शीरींलका ने जहांदारशाह से अर्ज किया कि यों तो जहांपनाह की तमाम नवाजिशें (कृपाएं) मुझे हासिल हैं; लेकिन दो वादे अभी तक पूरे नहीं हुए। बादशाह ने पूछा—"वे वादे क्या हैं, मुझे बताओ; मैं अभी उनको पूरा करूंगा।" लालकुंवर ने कहा—"एक वादा तो यह था कि शाही सिक्के में मेरा नाम दर्ज किया जायेगा और दूसरा यह कि तमाम शहजादों की आंखें निकलवायी जायेंगी। यह सुनकर जहांदारशाह ने उसी वक्त जल्लाद को बुलवाया और रातों-रात तमाम शहजादों की आंखें निकलवा दी गयीं।"

अनूपबाई

जहांदारशाह की ११-१२ बेगमें थीं। उनमें कुछ लौंडी, कुछ पेशेवर औरतें, और कुछ परिचारिकाएं थीं; लेकिन एक कुलीन राजपूतनी भी थी। यह सरदार जयसिंह पंचहजारी अमीर की बेटी थी। इसका नाम अनूपबाई था और उपाधि 'फक्रुलनिसां'। यह एक शरीफ खानदान की लड़की थी और उसे शीरींलका की बेहयाइयां पसंद न थीं। एक दिन जब जहांदारशाह और शीरींलका नशे में मस्त थे, तलवार खींचकर वह उनके समक्ष पहुंच गयी। बादशाह ने घबराकर पूछा—"यह क्या किस्सा है?" अनूपबाई ने जवाब दिया कि किस्सा सिर्फ इतना है कि इस कसबी को आप महल से निकाल दें, वरना मैं इसे जीवित न छोड़ूंगी।"

बादशाह ने भयभीत होकर निकालने का वादा किया, तो अनूपबाई ने कहा—"आपके वादे का एतबार नहीं। मुझे तो इसकी नाक काटकर इसे इतना बदसूरत बना देना है कि आप इसकी तरफ नजर भरकर देखना भी पसंद न करें।" और जहांदार के हस्तक्षेप करने पर भी अनूपबाई ने लालकुंवर (शीरींलका) की चोटी पकड़कर उसकी नाक काट डाली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस घटना के बाद अनूपबाई का महल में रहना असंभव था। अतः वह उसी रात अपने पिता के पास चली गयी।

जहांदारशाह की एक और बेगम महरुन्निसा भी थी, जिसे दस हजार में खरीदा गया था। इसने वजीर से षड्यंत्र करके बादशाह को सिंहासनच्युत कराना चाहा था। किंतु बादशाह को समय से पूर्व इस षड्यंत्र की भनक पड़ गयी। अतः जल्लाद आकर सिर कलम करे, इसके पूर्व ही वह फांसी लगाकर मर गयी।

यह था रंग जहांदारशाह की हुकूमत का, जिसने सबसे पहले मुगलिया खानदान में शराब और बदचलनी का प्रचलन किया। केवल नौ मास हुकूमत करने के बाद अपने भतीजे फरुखसियर द्वारा वह कत्ल कर दिया गया।

फरुखसियर जब सिंहासनारूढ़ हुआ, तो मुगल सल्तनत की आंतरिक स्थिति अत्यंत शोचनीय थी और वे सब उपद्रव, जो औरंगजेब के शासन-काल में प्रस्फुटित हो चुके थे, अब भरपूर जवानी में सीना तानकर खड़े हो गये। राज्याधिकारियों का पारस्परिक मतभेद, गद्दी के दावेदारों के षड्यंत्र, सिक्खों एवं मराठों के विद्रोह, सैयद-बंधुओं का विनाशकारी हस्तक्षेप मुगल शासन की जड़ों को खोखला किये जा रहे थे। किंतु फरुखसियर को इसकी तनिक चिंता नहीं थी। वह बेफिकरा खूब गुलछर्रे उड़ाने में मस्त था।

जहांदारशाह द्वारा भोग-विलास का जो हौज बनाया गया था, उसमें फरुखसियर ने जी भरके गोते लगाये। फलस्वरूप उसका भी जहांदारशाह जैसा ही अंत हुआ। सवा छः साल कुल मौज-मजा कर पाया था कि १७१९ ई० में उसे सैयद हुसैन अली खां ने कत्ल करा दिया।

फरुखसियर की बहुत-सी बेगमें थीं, जिनमें से तीन का उल्लेख यहां किया जा रहा है।

शांतिकुमारी

यह मारवाड़ के किसी अजीतसिंह राजा की पुत्री थी। इस शादी पर बादशाह ने बहुत अधिक दौलत खर्च की। और इसे 'गेतीआरा' (विश्व को संवारनेवाली) की उपाधि देकर सम्मानित किया। यह बहुत आदरणीय एवं योग्य महिला थी। रूपवती होने के अतिरिक्त संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य पर भी अच्छा अधिकार रखती थी। राजपूतनियों जैसी शीलवती, वीरांगना और साहसी थी।

शादी के बाद फरुखसियर इसका गुलाम हो गया और राज-काज भूलकर दिन-रात इसके महलों में पड़ा रहकर मदिरा और रूप-रस का पान करने लगा। शांतिकुमारी के दिन-रात समझाने-बुझाने पर भी उसने न तो कभी राज-काज की तरफ ध्यान दिया और न सुरापान करने, नाच-रंग की महफिलें जमाने से बाज आया। "वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है" के अनुसार इस काले कंबल पर शांतिकुमारी के उपदेश का रंग चढ़ नहीं सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माताजी की सम्मति ही काम आयी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

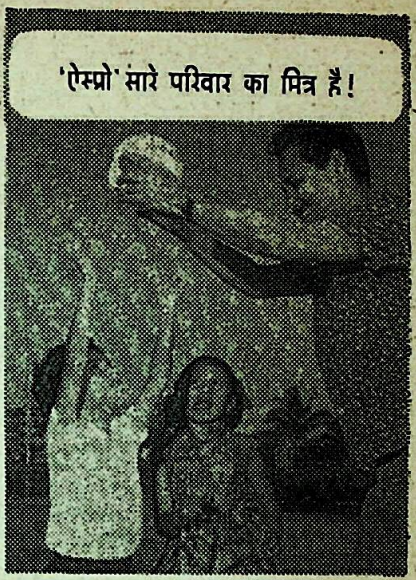

दर्द हमारी समस्या है...और हम आपकी सहायता इस प्रकार कर सकते हैं!

अनुसंधान: "ऐस्प्रो" अनुसंधान इन्स्टीट्यूट के अनुसंधान दलों में से मैं एक दलका प्रमुख हू। और दर्द को दूर करने के उत्तम उपायों की खोज निकालना हमारा कर्तव्य है। हम संसार के प्रमुख इन्स्टीट्यूटों में से एक है जो इस समस्या पर पूरा ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। और अब यह प्रमाणित हो चुका है कि दर्द का सर्वोत्तम आधुनिक उपाय "ऐस्प्रो" फ़ार्मूला है। यही कारण है कि सारी दुनिया के डॉक्टर और अस्पताल इसका ही प्रयोग करते हैं।

दर्द क्या है? जब 'मेटाबोलिक' तत्व तन्तुओं में इतनी तेज़ी से एकत्र होते हैं जितनी तेज़ी से शरीर उन्हे बाहर नहीं निकाल सकता, जिसके कारण प्रच्छन्न सूजन होती है जो स्नायुओं पर दबाव डालती है तब दर्द पैदा होता है।

'ऐस्प्रो' अपना कार्य किस तरह करता है: "ऐस्प्रो" तुरन्त घुल जाता है–सूजन को दूर करता है–स्नायुओं पर पड़े दबाव को कम करता है और दर्द को खींच निकालता है।

'ऐस्प्रो' इन शिकायतों के लिए लीजिये: दर्द • सिरदर्द • शरीर के दर्द • दांत का दर्द • जोड़ों के दर्द • ज्वरयुक्त सर्दी जुकाम • फ़्लू • डेन्गू (बदन तोड़ बुखार)।

खूराक:

प्रौढ़: दो "ऐस्प्रो"–ज़रूरत पड़े तो दो और लीजिये,

बच्चे: एक गोली या अपने डाक्टर की सलाह के अनुसार।

'ऐस्प्रो'

दर्द को खींच निकालता है!

A. G. 9.65 H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन मॉस्को क्यों?
इसलिए कि यह एक अनूठा, सुन्दर और रोमांचक शहर है। और मज़े की बात तो यह कि मॉस्को में रुकने के लिए आपको ज़्यादा किराया भी नहीं देना पड़ता।
हफ़्ते में दो बार

बम्बई – दिल्ली
मॉस्को – लन्दन

एयर-इंडिया
सहयोगी : बी.ओ.ए.सी.
और कैण्टस

मॉस्को होते हुए

IWT-AI-3771

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब फरुखसियर को कातिल पकड़ने आये, तो वह नशे में चूर था। आक्रमणकारियों से लोहा लेने का उसे होश ही कहां था। किंतु वीरांगना शांतिकुमारी दुश्मनों पर टूट पड़ी और अकेले लड़ते हुए पति पर उत्सर्ग हो गयी।

अहमदनिसा बेगम

यह अब्दुल्ला खां की भानजी थी और बहुत सभ्य एवं योग्य थी। अब्दुल्ला ने इसके साथ बादशाह की शादी इस आशा से कर दी थी कि संभव है, इसके सत्संग से फरुखसियर संभल जाये। मगर वहां तो कुएं में भंग पड़ी थी। "वो मुझे लगता है दुश्मन जो मुझें समझाय है" के अनुसार फरुखसियर संभलने के बजाय, उत्तरोत्तर विलासिता की ओर फिसलता चला गया। यहां तक कि अहमदनिसा बेगम की नसीहतों से ऊबकर उसे महल से निकल जाने का हुक्म दे दिया और उस बेचारी ने इस अपमान को सहन करने की अपेक्षा आत्महत्या कर लेना अधिक श्रेयस्कर समझा।

गौहर बेगम

यह एक मामूली सिपाही अजमत खां की बीवी थी। इसे देखकर फरुखसियर फिदा हो गया और अजमत खां को इसे तलाक देने का हुक्म दिया। लेकिन उस स्वाभिमानी ने तलाक देना स्वीकार नहीं किया, तो उसे जेलखाने में ठूंस दिया गया और गौहर को जबरन महल में दाखिल कर दिया गया। इस कुकृत्य से बदनामी बहुत अधिक फैली, तो अजमत खां को तो जेल से रिहा कर दिया गया; परंतु उसकी बीवी तो फरुखसियर के कत्ल के बाद ही अपने पति के पास पहुंच पायी।

फरुखसियर के कत्ल के बाद सैयद-बंधुओं ने मुगलिया सल्तनत की बिसात पर दो शहजादों को क्रमशः बादशाह बनाया; लेकिन यह बादशाहत शतरंज की बादशाहत जैसी थी। संपूर्ण राज्याधिकार सैयद-बंधुओं के हाथ में था। ये तो केवल उनकी इच्छा पर निर्भर थे।

इनमें पहला रफीउद्दरजात बहादुरशाह का पौत्र था और राज्याभिषेक के समय बीस वर्ष का तरुण था। रंगमहल के अमर्यादित भोग-विलास और मदिरापान के कारण इस के फेफड़ों में जख्म हो गये, जिसने क्षय का रूप धारण कर लिया। अतः चार मास की बादशाहत करने पर ही कब्र में लेटने को मजबूर हो गया।

इसका छोटा भाई रफीउद्दौला सिंहासनारूढ़ होने के तीन मास पश्चात् १५ वर्ष की उम्र में ही दफन हो गया। ये हजरत तेरह साल के भी न थे कि सात-आठ बेगमों के शौहर बन चुके थे। इनकी दैनिक चर्या भी नृत्य-संगीत, भोग-विलास और मदिरापान के अतिरिक्त और कुछ न थी।

इसके बाद मुहम्मदशाह राज्यासीन हुआ। यह वही मुहम्मदशाह था, जो अपनी रंगरेलियों की प्रचुरता के कारण 'मुहम्मदशाह रंगीले' के नाम से इतिहास में कलंकित है। इसी के जमाने में नादिरशाह ने दिल्ली में कत्लेआम किया और बेगमों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

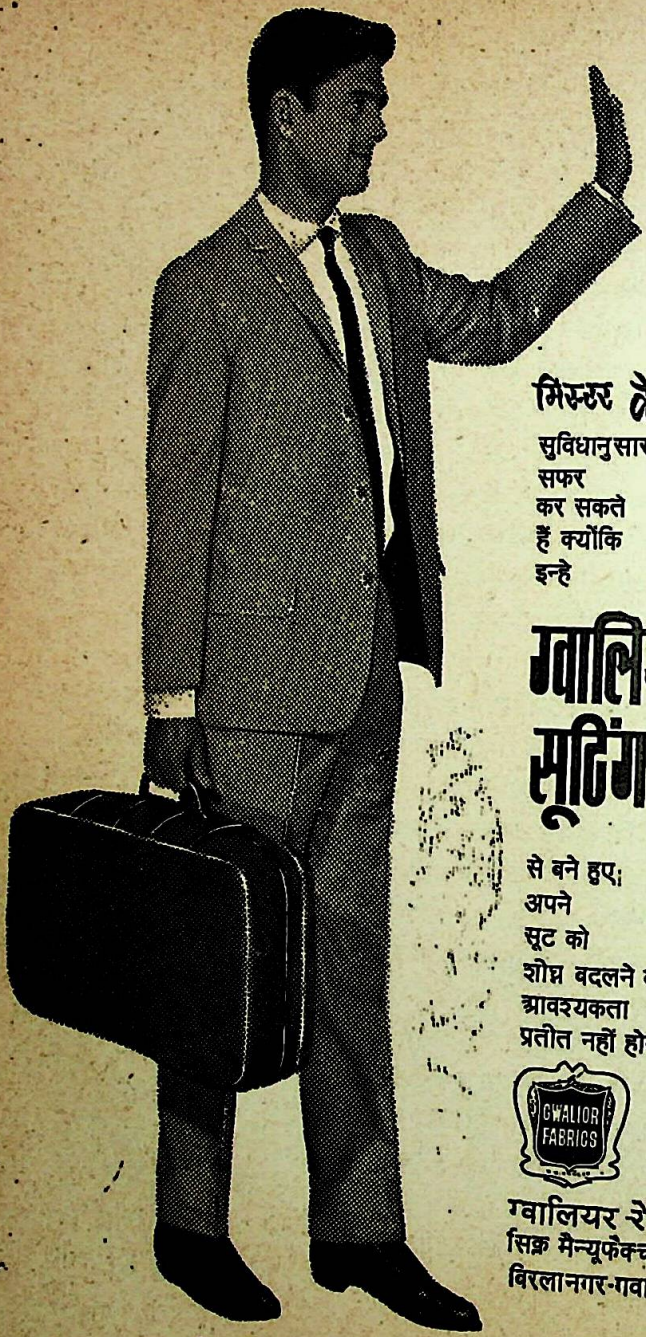

मिस्टर केयर फ्री
सुविधानुसार
सफर
कर सकते
हैं क्योंकि
इन्हे

ग्वालियर सूटिंग

से बने हुए;
अपने
सूट को
शीघ्र बदलने की
आवश्यकता
प्रतीत नहीं होती

GWALIOR FABRICS

ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

देश के सभी स्टोरों में मिलता है

NPS/GR-184

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को नाचने के लिए मजबूर किया था। इसने तीन वर्ष के शासन-काल में इतना भोग-विलास किया कि अपने पूर्ववर्ती मुगल बादशाहों के ऐशो-आराम के सभी रिकार्ड तोड़ दिये।

इससे पूर्व नियम था कि जब कोई व्यापारी शाही महल के लिए बिक्री योग्य वस्तु लाता, तो पहले बादशाह के समक्ष अशर्फियां भेंट करता था। लेकिन इसके शासन-काल में अशर्फियों के बजाय सुंदरियां भेंट होने लगीं। संयोग से उन्हीं दिनों एक व्यापारी अपने साथ एक सुंदर युवती लाया, जिसके रूप-लावण्य पर बादशाह इतना मुग्ध हुआ कि उसे एक लाख अशर्फियों में खरीद लिया और सारी दुनिया को भूलकर उसी में लीन हो गया।

यह बादशाह की ऐसी चहेती थी कि इसकी हर फरमाइश पूरी की जाती थी। एक बार इसने गरमी के दिनों में कुतुब-मीनार देखने की अभिलाषा व्यक्त की। अतः दिल्ली के लाल किले से कुतुब तक (अंदाजन १३ मील) मार्ग के दोनों तरफ खस की टट्टियां लगायी गयीं। रूमी मखमल का फर्श रास्ते में बिछाया गया, इत्र का छिड़काव किया गया।

इस एक ही उदाहरण से मुहम्मदशाह रंगीले की ऐयाशियों का अनुमान किया जा सकता है कि उसने अपने ३० वर्ष के शासन-काल में कितनी बेरहमी से जनता की गाढ़ी कमाई को पानी की तरह बहाया था।

★

मुशायरे की अध्यक्षता कुंवर महेंद्र सिंह बेदी 'सहर' कर रहे थे। संचालन-कार्य में मौलाना फ़ना नियामी कानपुरी उनके सहायक थे। बीच-बीच में दोनों में नोंक-झोंक चल रही थी। जनाबे सहर ने मुस्कराकर एक बार कहा—"हिन्दी में कुछ ऐसे मुहावरे भी हैं, जिन्हें हम (सरदार) लोग इस्तेमाल नहीं कर सकते, जैसे हम यह नहीं कह सकते कि आपने हमारी हजामत बना दी, या सिर मुंड़ाते ही ओले पड़ गये, या हमारा हुक्का-पानी बंद कर दिया गया।"

इन सब कहकहों के बीच मौलाना फ़ना ने अपनी गजल का पहला शेर पढ़ा :

यूं इंतिक़ाम तुझसे फस्ले बहार लेंगे।
फूलों के सामने हम कांटों से प्यार लेंगे॥

इस पर जनाबे सहर ने कहा—"मौलाना, यह धमकी है या वादा?" मौलाना फ़ना ने उत्तर में कहा—"अभी पता लगा जाता है।" और अपनी गजल का एक और शेर पढ़ा :

इस दौरे तशनगी में क्या मैकदे को छोड़ें,
कुछ दिन गुजर गये हैं, कुछ दिन गुजार लेंगे॥

जनाबे सहर ने पूछा—"मौलाना, (हाथी के) दांत खाने के और दिखाने के और होते हैं।" (संभवतः मौलाना शराब नहीं पीते।) मौलाना फ़ना ने तत्काल मुस्कराकर उत्तर दिया—"पर आपके दांत न तो खाने के हैं, न दिखाने के।"

—रमेश खुराना 'स्वप्न'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए !

असहनीय पीड़ा है ? खुजली होती है ? जलन, या खून बहता है ? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुडने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने मे सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद मे ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

83 DOL 2A HIN

आपकी प्रिय चीजों को रंगीन कलात्मक रेडिमेड टीन बाक्सीस में पेक कीजिये

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले :- बॉम्बे टिन मिल्स
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन ३०१८७

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

ओरिएन्टल केमिकल वर्क्स इन्दौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुनर्जन्म की घटनाएं

सुरेशव्रत राय

आत्मा के अमरत्व तथा पुनर्जन्म को अब तक दार्शनिक चर्चा मात्र माना जाता रहा है। वैज्ञानिकों का यही विचार रहा है कि मृत्यु से भयभीत मानव ने आत्मा के अमरत्व की कल्पना आत्मसंतोष के लिए कर ली। जन्म के पूर्व और मृत्यु के उपरांत की स्थिति उपलब्ध वैज्ञानिक उपकरणों की पहुंच से परे है। अतः जो चीज वैज्ञानिक नाप-जोख और भौतिक प्रयोग-परीक्षण की पकड़ में न आये, उसे अंधविश्वास की संज्ञा देना स्वाभाविक है।

परंतु पूर्वजन्म का विस्तृत ब्यौरा देनेवाले व्यक्तियों के इतने प्रामाणिक मामले सामने आ चुके हैं कि वैज्ञानिक व विचारक स्तंभित हैं।

बंगाल के प्रोफेसर प्रणवेंदु पाल इस दिशा में विशेष अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने भारत के विभिन्न भागों में घूमकर पूर्वजन्म की घटनाओं को स्मरण रखनेवाले अनेक व्यक्तियों से भेंट की है तथा उनसे प्राप्त तथ्यों का वे विश्लेषण कर रहे हैं।

[१]

उन्होंने बदायूं जिले के बिसौली नामक ग्राम में प्रमोद शर्मा तथा उसके पूर्वजन्म के माता-पिता से भेंट की। प्रमोद के कथनानुसार उसका पूर्वजन्म मुरादाबाद में हुआ था। जब प्रमोद को उसके पूर्वजन्म के निवास-स्थान, माता-पिता के पास ले जाया गया, तो सबसे पहले उसने अपने पूर्वजन्म की पत्नी को बुलवाया तथा आते ही एक कीमती साड़ी के संबंध में पूछताछ की। इसे वह कलकत्ता से अपनी पत्नी के लिए लाया था; परंतु घर आकर तह खोलने पर उसमें एक छेद मिला, जिसके कारण साड़ी को पहना न जा सका।

उसकी पूर्वजन्म की पत्नी ने न केवल इस तथ्य को स्वीकार किया, बल्कि वह बक्स से साड़ी निकालकर लायी और प्रमोद शर्मा एवं अन्यान्य उपस्थित लोगों को खोलकर दिखलाया भी। साड़ी की तहों में वास्तव में एक बड़ा छेद दृष्टिगोचर हुआ।

२१-वर्षीय प्रमोदकुमार को अपने पूर्वजन्म की सारी बातें अभी तक याद हैं, जो जांच करने पर सही निकली हैं। उसके कथनानुसार पूर्वजन्म में उसका नाम परमानंद था। उसे यह भी याद है कि पेट में अत्यधिक दर्द अथवा शूलपीड़ा होने के कारण उसका देहांत हुआ था।

प्रमोद तथा पूर्वजन्मवाले परिवार तथा संबंधियों के बीच बड़ा प्रेम है। उन्हें एक दूसरे का आना-जाना प्रिय है और वे परस्पर मिलते-जुलते रहते हैं। उसके पूर्वजन्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल
नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानग्रह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफ्रिजरेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

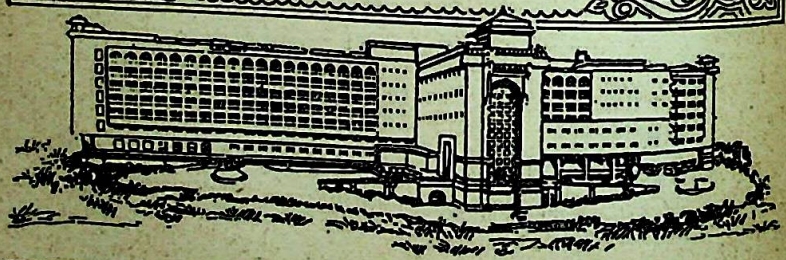

भारत का एकमात्र ★★★★★ डी लक्स होटल

टेलीफोन-७०३११ (४० लाईन) तार का पता-अशोका होटल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आत्मजा अब सयानी हो गयी है तथा संयोगवश बदायूं में ही विद्यालय-निरीक्षिका के पद पर कार्य कर रही है। वह प्रमोद के रूप में उत्पन्न अपने पिता स्व० परमानंद के पास आया-जाया करती है। उनका संबंध पिता-पुत्री जैसा चल रहा है।

प्रायः यह सुना जाता था कि पूर्वजन्म की घटनाएं शैशव-काल में याद रहती हैं तथा आयु बढ़ने के साथ विस्मृत होती चली जाती हैं; यहां तक कि आगे चलकर एकदम भूल जाती हैं। परंतु २१ वर्ष की आयु में भी इतनी विस्तृत स्मृति का प्रमोद शर्मा संबंधी प्रसंग निःसंदेह आश्चर्यजनक और अनोखा है।

[२]

बदायूं जज अदालत के चपरासी रमेश नाई के चार-वर्षीय पुत्र अनिलकुमार का दावा है कि वह पूर्वजन्म में सहसवान के मुख्तार तेजपाल बनिये का पुत्र था। उसका स्वयं का नाम लालाजी था। उसका कहना है कि उसकी वर्तमान जीवन की मां, वस्तुतः मां न होकर उसकी भाभी है तथा वह मां के बजाय भाभी ही कहकर पुकारता है। उसे नाई-पुत्र कहकर पुकारा जाना भी पसंद नहीं है।

अपनी मृत्यु के संबंध में इस बालक का कहना है कि अब से लगभग ४ वर्ष पूर्व, १६ वर्ष की आयु में वह अपने बड़े भाई की पत्नी (भाभी) को लिवाने के लिए एक रिक्शे में सहसवान के आस-पास से होकर जा रहा था। मार्ग में ३३७ नंबर की मोटर से टकरा जाने के कारण रिक्शा दुर्घटनाग्रस्त हो गया तथा इस दुर्घटना में गंभीर चोट लगने के कारण उसकी मृत्यु हो गयी, जिसके बाद उसका जन्म वर्तमान घर में हुआ। संयोगवश बदायूं के सुप्रसिद्ध एडवोकेट श्री एल० पी० माथुर ने इस घटना की पुष्टि की। लगभग चार वर्ष पूर्व हुई उस दुर्घटना के कारण मोटर नं० ३३७ के मालिक और ड्राइवर पर जाब्ता फौजदारी के अंतर्गत मुकद्दमा चल रहा था। श्री माथुर स्वयं इस मुकद्दमे की पैरवी करनेवाले एडवोकेटों में से एक थे।

सहसवान ले जाये जाने पर अनिल ने दोनों चचेरे भाइयों की पत्नियों को पहचाना। बड़े भाई के प्रश्न करने पर कि मैं कौन हूं, अनिल ने कुछ रोष से उत्तर दिया, तुम्हारे ही कारण तो मेरी मृत्यु हुई। (संभवतः वह इसी बड़े भाई की पत्नी को लिवाने के लिए रिक्शा से जा रहा था।) वहां के परिवारवालों ने भी दुर्घटना की पुष्टि की।

तीनों चचेरे भाइयों को पहचानने के साथ उसने बड़े भाई की जूते की दूकान के बारे में भी सही विवरण दिये, जिस पर वह स्वयं भी बैठा करता था। वह इस जन्म में भी उस जूते की दुकान को चलाने के लिए इच्छुक है। परिवारवालों के अतिरिक्त उसने अपने पूर्वजन्म के स्कूल के अध्यापक तथा पिता के एक मित्र को भी पहचाना।

[३]

रिसौली ग्राम के सुंदरलाल नामक एक डाक-विभागीय कर्मचारी की ७-वर्षीय पुत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीरादेवी भी ऐसे आश्चर्यजनक व्यक्तियों में से है। बालिका अपने को बदायूं के सर्राफ लाला सीताराम की पत्नी बताती है। श्रीमती सीताराम का लगभग २३ वर्ष पूर्व देहांत हुआ था।

तीन वर्ष की आयु से ही बालिका मीरा बार-बार कहती है कि पूर्वजन्म में उसके पति के पास कच्चला, बदायूं रोड पर एक बहुत बड़ा कृषि-फार्म था। उसके पास एक बड़ा अच्छा तांगा, काला घोड़ा भी था और उसके पति जौहरी की दुकान चलाया करते थे। उसकी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व पति की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गयी, व्यापार आदि में घाटा हुआ। वह कभी-कभी कहती है कि अपने पूर्वजन्म में घोड़े को प्रतिदिन अपने हाथ से दूध-जलेबी खिलाया करती थी और ये चीजें इस जन्म में उसे स्वयं नसीब नहीं होतीं।

उस बच्ची ने अपने पूर्वजन्म के ५०-वर्षीय पुत्र राममूर्ति को पहचाना। दूसरे पुत्र नंदकिशोर की कुछ वर्ष पूर्व मृत्यु हो चुकी है। वह प्रायः बताती है कि मृत्यु के समय उसके लगभग डेढ़ वर्ष का एक पोता भी था। जांच करने पर ये बातें भी सही निकलीं। लाला सीताराम अभी जीवित हैं तथा उनकी वर्तमान आयु ६८ वर्ष है।

जब मीरा को लाला सीताराम के यहां ले जाया जा रहा था, वह एक गली के पास जिद करने लगी कि गली में ही उसका पूर्व-जन्म का मकान था। उसका कहना सही था; परंतु लाला सीताराम ने कुछ दिनों पूर्व वह मकान बेच दिया था तथा स्वयं [illegible] नये मकान में रहने लगे थे। उस बच्ची [illegible] बड़ी कठिनता से समझाया जा सका कि लाला सीताराम का वर्तमान निवास-स्थान उस गली में नहीं है।

[४]

सुनील दत्त नामक एक अन्य बालक अपने को पूर्वजन्म का सेठ श्रीकृष्ण बताता है। स्व० सेठ श्रीकृष्ण के मित्रों का कहना है कि बालक का आचार-व्यवहार सेठ श्री-कृष्ण जैसा ही है। बालक सुनील दत्त का कहना है कि पूर्वजन्म में वह बदायूं के कलेक्टर श्री जे० डी० शुक्ल (जो इस समय कमिश्नर इलाहाबाद डिविजन हैं) के संपर्क में आया और उनके अनुरोध के फलस्वरूप बदायूं में धर्मशाला, इंटर कालेज और राम-लीला मैदान के फाटक-निर्माण के लिए पर्याप्त दान दिया। एक ग्रुप फोटो में उसने श्री जे० डी० शुक्ल को पहचान भी लिया।

उसकी पूर्वजन्म की विधवा तथा परिवार के सारे लोगों से प्रो० पाल ने पूछताछ की। पुत्र रामप्रकाश अग्रवाल को छोड़कर अन्य सभी लोग उसे सेठ श्रीकृष्ण का अवतार मानने लगे हैं।

इस प्रकार के अनेक मनोरंजक और आश्चर्यजनक प्रसंग सामने आये हैं। यद्यपि इस संबंध में खोज करनेवाले न तो किसी निश्चित निष्कर्ष पर ही पहुंच सके हैं, न वैज्ञानिक सिद्धांतों का ही प्रतिपादन हो सका है; परंतु निरंतर अध्ययन से अनेक [illegible] प्रश्नों का समाधान मिलने की संभावना है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधारण पाउडर से काम नहीं चलेगा...

माता-पिताओं के लिए एक आवश्यक जानकारी

आपके मुन्ने की कोमल, चिकनी त्वचा को ज़रा-ज़रासी बातों से बड़ी तकलीफ़ होती है। गीली चड्डी, पसीने वग़ैरह से तो न जाने कितना कष्ट होता है उसे! इसीलिए उसको पाउडर की ज़रूरत है।

कई माताओं की धारणा है कि किसी भी टाल्कम पाउडर से काम चल सकता है मगर ऐसी बात नहीं। आपके लाड़ले के लिए तो एक ख़ास पाउडर की ज़रूरत है और वह है जॉन्सन्स* बेबी पाउडर!

जॉन्सन्स बेबी पाउडर बहुत ही महीन और मृदुल पदार्थों से एक विशेष विधि द्वारा बनाया जाता है। यह त्वचा के रन्ध्रों को मूँदे बिना पसीने को सोख लेता है और बच्चों को उस जलन से बचाता है जो कि चड्डी की रगड़ से हो जाया करती है। इस पाउडर से आपका बेटा शीतलता और प्रसन्नता अनुभव करेगा और हँसता-खेलता रहेगा।

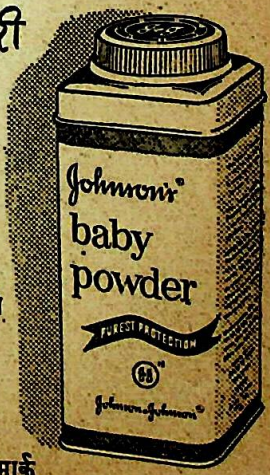

*ट्रेडमार्क

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़्लॉजेंट स्ट्रीट, बम्बई-२६ JWT-JJ-3533 A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

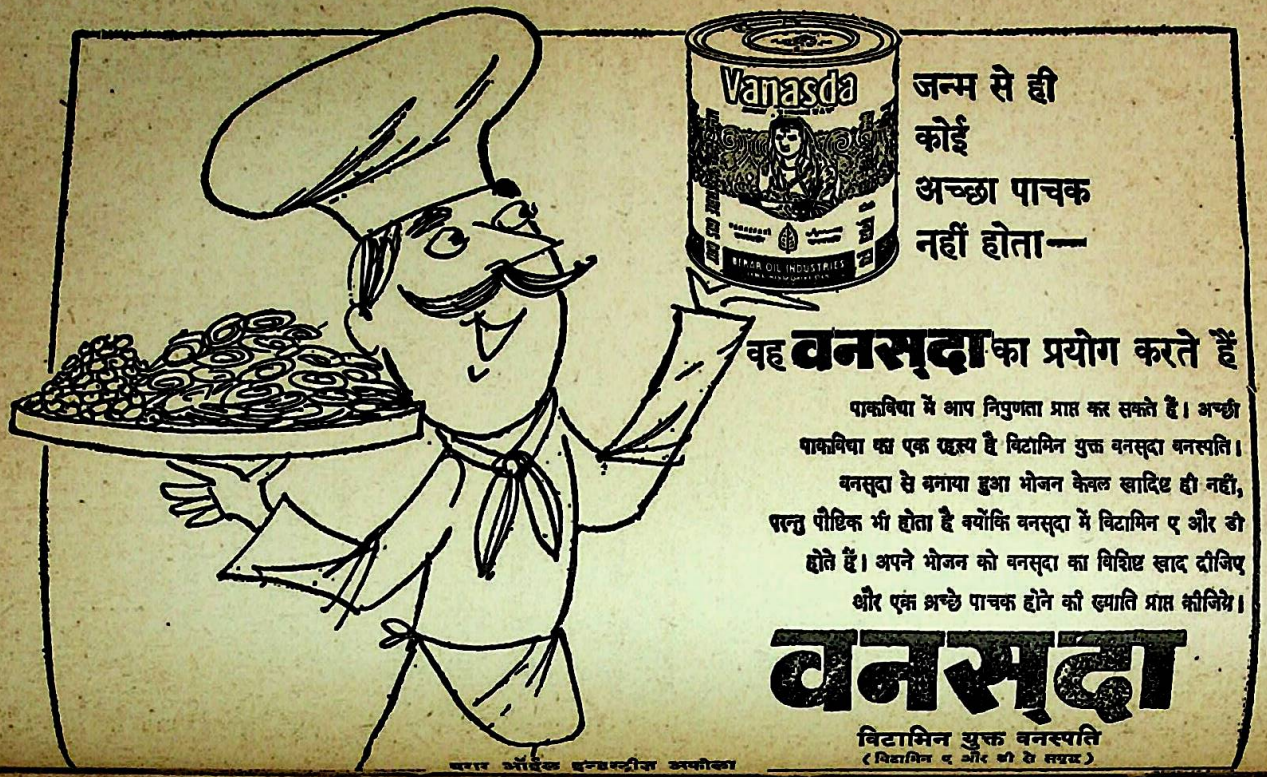

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविधा में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविधा का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालयः १० ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता –१

अधिकृत पूंजी	रु. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,८०,००,०००
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें.....	रु. ३,३७,००,०००

डाइरेक्टर

आई० पी० गोयनका

चेयरमैन

एम० पी० बिड़ला वाइस चेयरमन	मदनमोहन आर० रुइया वाइस चेयरमैन
अनंत चरण ला	मोतीलाल तापड़िया
जी० डी० कोठारी	महादेव एल० दहाणुकर
रंगनाथ बांगड़	टी० एस० राजम
मोहनलाल नोपानी	श्रेणिक करतूरभाई
योगींद्र एन० मफतलाल	एस० टी० सदाशिवन

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट रखता है, स्वीकृत सेक्युरिटियों के एवज में एड्वांस देता है, बिल खरीदता है, ड्राफ्ट और टेलिग्राफिक ट्रान्सफर बेचता है और सब प्रकार का विदेशी मुद्रा का व्यवहार करता है। देश-भर में फैली शाखाओं और विश्वव्यापी व्यापारिक संबंधों द्वारा सब प्रकार की बैंकिंग सेवाएं सुलभ करता है।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

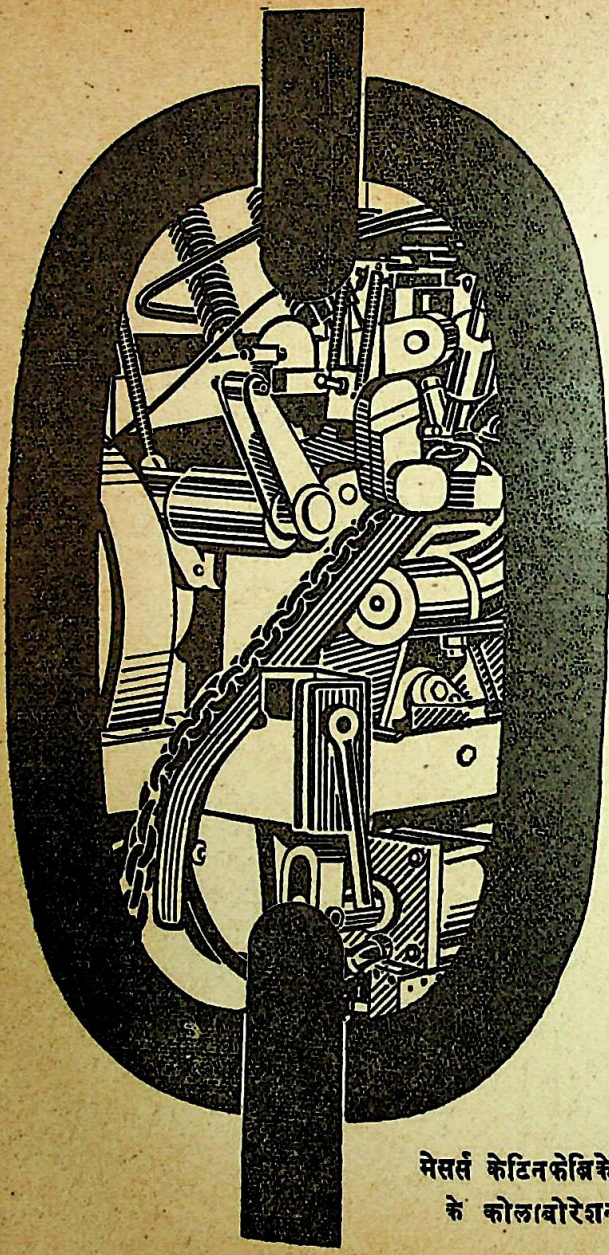

तीव्र परीक्षण के बावजूद ये कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की वेल्डिंग पूर्ण निरीक्षण में की जाती है।

प्रत्येक कड़ी एक ही क्वालिटी की बनती है। इन कड़ियों से बनी सांकल की मजबूती व क्वालिटी की गारंटी है। कैलिब्रेट की हुई सांकल की नाप-तौल एकदम ठीक और विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अल्लो नार्वे के कोलाबोरेशन में निर्मित

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स लि०
बंबई आगरा रोड, भांडुप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

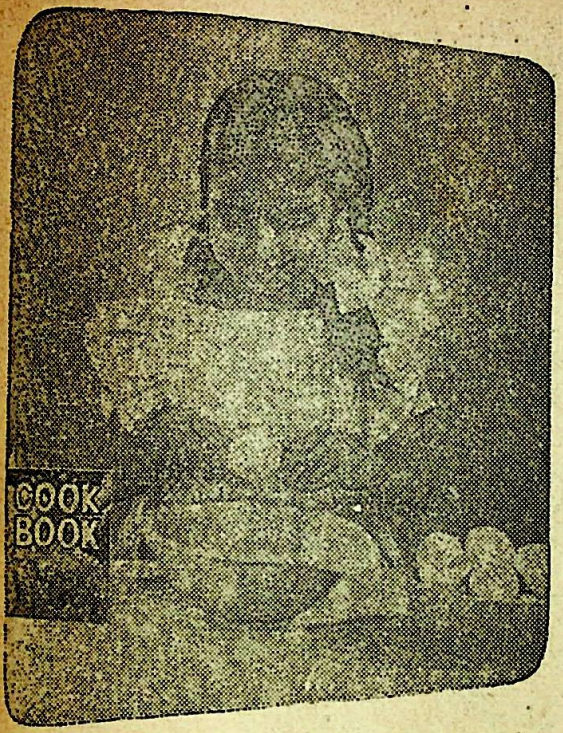

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

एक नन्ही बालिका के लिये खाना पकाना सीखना एक अच्छी महिला बनने की तैयारी है। आपको एक दिन उसे सिखाना ही पड़ेगा — जितना जल्दी सिखायें उतना ही अच्छा है।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूड़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे के बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूड़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया। आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें— उन्हे दांतो व मसूड़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूड़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूड़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई १.

COUPON

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

O.6

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खेत में या घर के पिछवाड़े

अपनी सब्जियां आप ही उगाइए

सब्जियों में खनिज, प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट बड़ी मात्रा में होते हैं। संतुलित आहार के लिए हमें २८० ग्राम सब्जियों की जरूरत होती है। किन्तु भारत में यह मात्रा केवल ७० ग्राम है।

भोजन में सब्जियां अधिक खाइए

* अच्छे स्वास्थ्य के लिए
* सूखे अनाज पर निर्भरता कम करने के लिए
* घर में अधिक सब्जियों के माने हैं, बाजार से उतना ही कम खरीदना
* उगाने में आपको आनन्द आयेगा और खाने में आप पसंद करेंगे।

खाद्य व कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रचा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

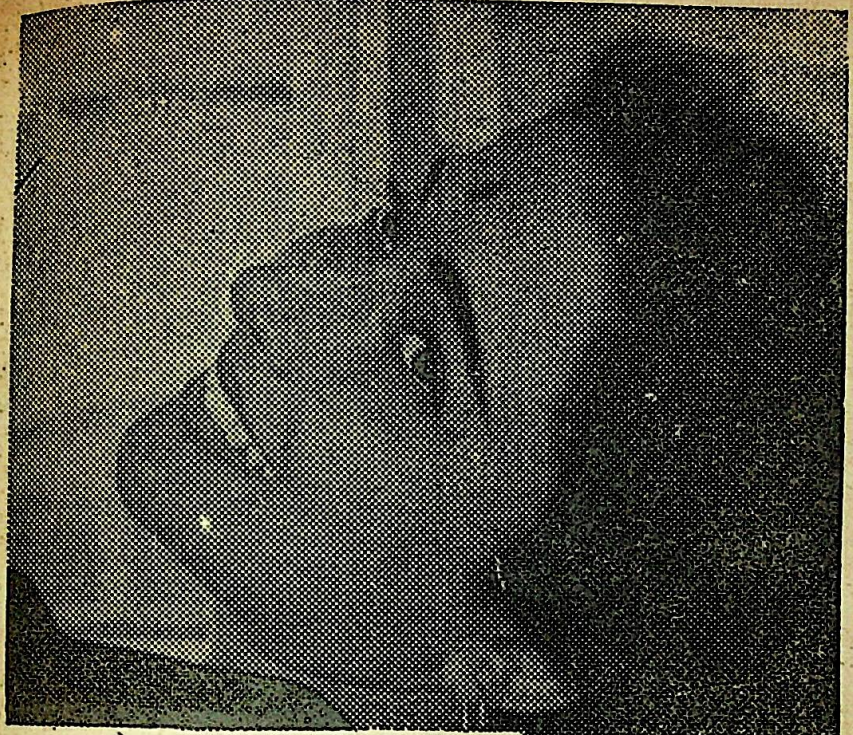

नारी की अनुपम शोभा रेशम जैसे मुलायम केश..

अपने केशों को मुलायम और चिकने बनाए रखने के लिए उन्हें नियम पूर्वक शिकाकाई साबुन से ही धोइए। भारतीय नारियों के केशों की सौन्दर्यवृद्धि के लिए शिकाकाई सैकड़ों वर्षों से वरदान रूप सावित हुआ है। भीनीभीनी सुगंधवाला शिकाकाई सोप शैम्पू आपके केशों को रेशम जैसी मोहकता प्रदान करता है...स्वच्छ और स्वस्थ बनाता है।

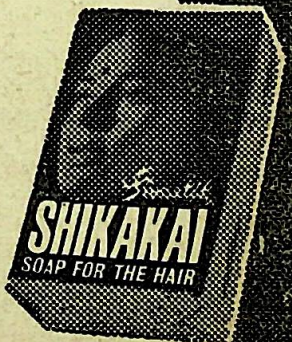

शिकाकाई सोप

नए सौन्दययुक्त रैपर में

स्वस्तिक आइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें

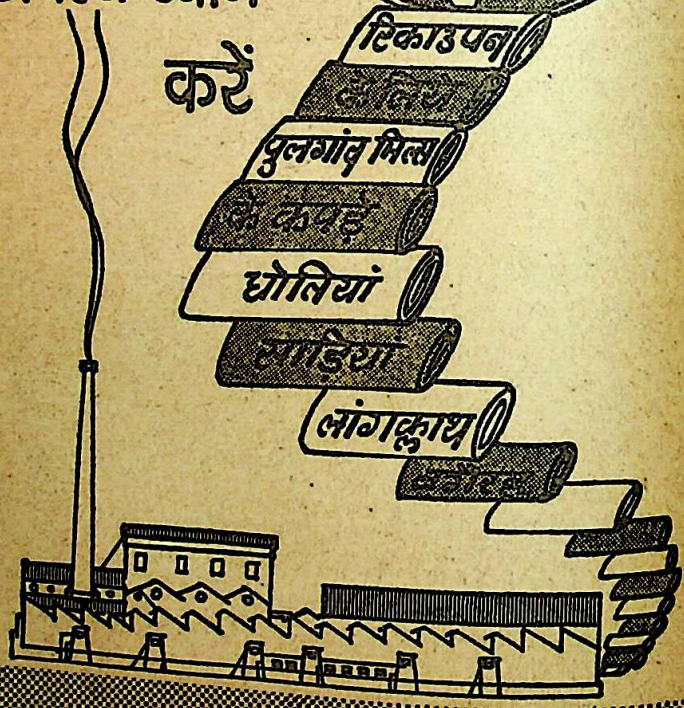

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम का मुक़ाबला करने के लिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

लाल लेबल

लीजिए

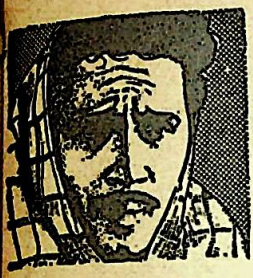

सर्दी-ज़ुकाम को मामूली बात समझा जाता है, लेकिन दरअसल इससे कमज़ोरी आजाती है और शरीर की रोग-निरोधक शक्ति घट जाती है। वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड आराम पहुँचाता है, शक्ति पैदा करता है और बीमारियों का मुक़ाबला करता है। इसके सक्रिय तत्त्व 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' सर्दी-ज़ुकाम में आराम पहुँचाते हैं, लोहा तथा दूसरे बलवर्धक तत्त्व, चूना तथा प्लीहा के सत्त्व भूख बढ़ाते हैं, फिरसे शक्ति पैदा करते हैं तथा शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं।

बारहों महीने रोग-निरोधक शक्ति क़ायम रखने के लिए लाल लेबलवाला वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड नियमित रूप से पीजिए।

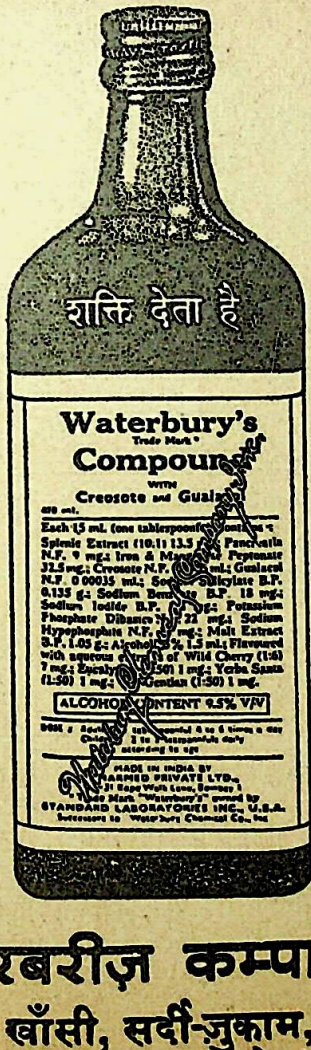

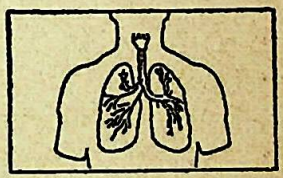

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड में मौजूद 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' श्वास-तंत्र को रोगाणुओं से मुक्त रखते हैं और बलग़म निकालते हैं, फेफड़ों को साफ रखते हैं, खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने में मदद करते हैं और रोगाणुओं को दुबारा फैलने से रोकते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम,
साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का
मुक़ाबला करने की शक्ति देता है

वॉर्नर-हिन्दुस्तान लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके लिए जरूरी है
बंगाल
केमिकल का
कैंथराइडिन
हेअर आयल
आपके लम्बे, काले
मुंलायम और
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

बेंगाल केमिकल
कलकत्ता * बम्बई * कानपुर

प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में पुस्तकों की अनुवाद-प्रकाशन योजना

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा-मंत्रालय) द्वारा कार्यान्वित की जा रही उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत हाल ही में निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:

१. सितारे
२. हवाई जहाज
३. मौसम
४. बिजली
५. हमारा शरीर
६. साहसपूर्ण यात्राएं
७. विज्ञान की बातें
८. आविष्कारों की सच्ची कहानी

योजना के अंतर्गत प्रकाशन के लिए विज्ञान तथा सामान्य ज्ञान संबंधी पुस्तकों के अंग्रेजी से अनुवाद तथा मौलिक कृतियों के प्रस्ताव भेजे जा सकते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली का प्रयोग पुस्तकों में अनिवार्य है।

योजना का पूर्ण विवरण नीचे लिखे पते से प्राप्त किया जा सकता है :

उप-निदेशक (प्रकाशन)
केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
१५।१६, फैज बाजार, दरियागंज, दिल्ली–६

डीए ६५/१३७

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह-तरह के

क्लिअरटोन घरेलू साधन

Clearlone

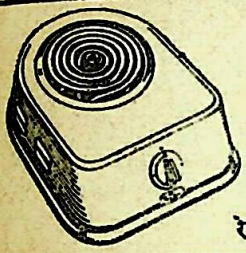

रेडियंट हॉट प्लेट

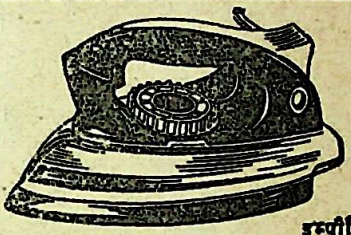

इम्पीरियल इस्त्री

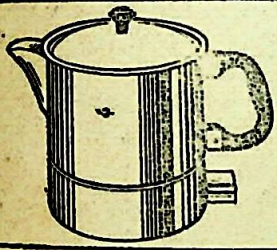

केतली

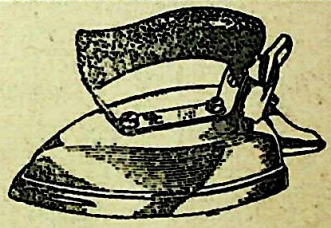

घरेलू इस्त्री

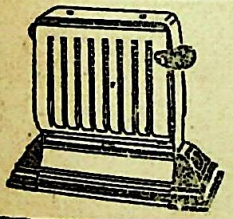

टोस्टर

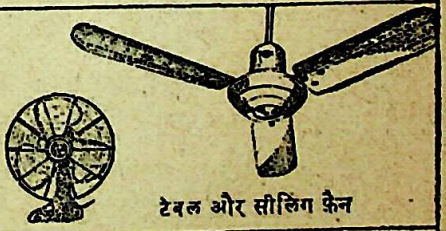

टेबल और सीलिंग फ़ैन

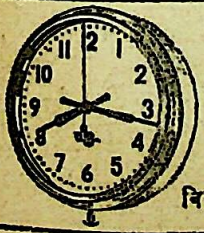

बिजली की घड़ी

फ़ोल्डिंग स्टील फ़र्नीचर

सभी क्लिअरटोन डीलरों व नेशनल-एक्को रेडियो डीलरों के यहाँ तथा इस पते पर मिलते हैं:

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई . कलकत्ता . मद्रास . दिल्ली . बंगलोर . सिकन्दराबाद . पटना

GRA

JWT/GRA 2804

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM/K-9 J HIN

वाह Kolynos ...कोलिनॉस

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, जायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पांचवें पुरुष के लिए मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिए और मुस्कराइए। रोज़ रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए...और रोज़ सुबह तो ऐसा करना ज़रूरी है। मित्रों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा...अधिक आनन्द आएगा!

मधुर मुस्कान...कोलिनॉस मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी: जेफ्री मैनर्स ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५०१ स्पेशल

५०१ स्पेशल से **हर** धुलाई,

स्पेशल धुलाई - *बिना अधिक ख़र्च किए!*

टाटा-उत्पादन

५०१ स्पेशल साबुन के स्पेशल फ़ार्मूला से भरपूर झाग... जिससे सभी कपड़े साफ़, उजले और आसानी से धुलते हैं।

SHBI-501 S-86 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No.

आप भी फूल जैसी खिलें

रमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

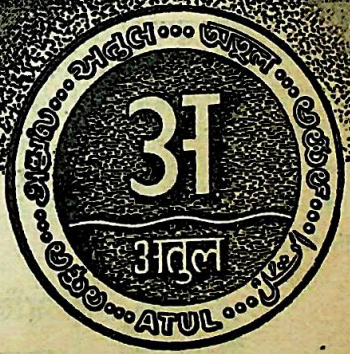

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)

पश्चिम रेलवे.

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्त्रों में उत्कृष्ट कला-कौशल

विभिन्न डिजायनों और रंगों में
उत्कृष्ट कला कौशल के वस्त्र,
देखने में सुन्दर; स्पर्श में कोमल,
ये सारी दुनिया को अलंकृत करते हैं।

—मंदसौर अभिलेख, ईस्वी सन् ४७३

भारत में कपड़ों की बुनाई का काम सदा से ही उत्कृष्ट कला-कौशल से परिपूर्ण सुन्दरता का एक बेमेल हस्त-कौशल माना जाता रहा है। दुनिया में कहीं भी हाथकरघे की इस रचनात्मक देन को इतने बड़े पैमाने पर उपयोग में नहीं लाया गया।

देश के ७० लाख बुनकरों की विरासत के रूप में चली आती इस समृद्ध परम्परा को नए नए डिजायनों और तकनीकों ने और भी अलंकृत किया है ताकि आधुनिक साज-सज्जा की आवश्यकताएं अधूरी न रह जाएं। भारतीय हाथकरघों के कपड़े पहले की तुलना में अब ज्यादा सुन्दर, अधिक डिजायनों में, रंगों में और बेहतरीन नमूनों में उपलब्ध हैं। इनके नए से नए इस्तेमाल निकल रहे हैं और दुनिया के हर कोने में अब इनकी मांग है। पिछले वर्ष भारत ने अकेले हाथकरघे के कपड़ों के निर्यात से १४ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा कमाई।

अखिल भारतीय
हाथ करघा
बोर्ड

डी ए ६५।२२१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया शक्तिशाली

मरफी ट्रांसिस्टर ८

माडेल टी बी ०८१६

मुख्य विशेषतायें

आल-वेव • ३-बैण्ड • ८ ट्रांसिस्टर और एक डायोड • मीडियम वेव के लिए फेराइट रॉड और शार्ट वेव रिसिप्शन के लिए टेलिस्कोपिक एरियल निर्मित • बाहरी एरियल के लिए साकेट • इलिप्टिकल लाऊडस्पीकर और द्विविध ध्वनि नियंत्रण • प्लास्टिक का कैबिनेट और उसके दोनों ओर चढ़ा रेक्सिन आवरण और हाथ में पकड़ने के लिए मोल्डेड हैंडल • बैटरियों को आसानी से बदलने के लिए खिसकनेवाली सिटकनी सहित दरवाजा।

रु. ४१५/- केवल आबकारी कर सहित।
बिक्रीकर और अन्य स्थानीय कर अलावा।
अखिल भारतीय कीमत (महाराष्ट्र को छोड़कर)

murphy radio

मरफी रेडियो घर को आनन्दमय बनाता है

Murphy sets the standard

NAS b347b A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW

तरोताज़ा
रहने के लिए

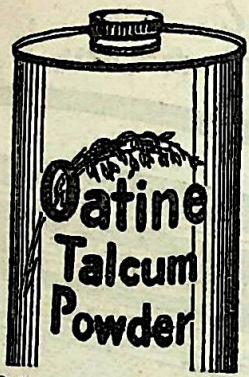

गर्मी और चिपचिपाते पसीने से आराम पाने के लिए ओटीन टैल्कम पाउडर आसान साधन है। इसकी भीनी सुगंध और रेशमी कोमलता तरो-ताजगी के स्वर्ग में पहुंचा देती है।

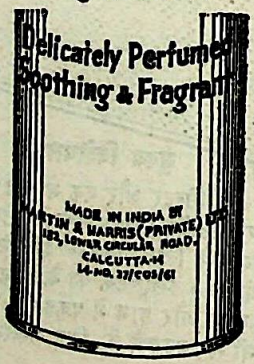

M&H

MARTIN & HARRIS (PVT.) LTD.

Mercantile Buildings, Lall Bazar, Calcutta - 1

OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उल्लासपूर्ण जीवन के लिए बचत **देना बैंक** को आपकी मदद करने दीजिए

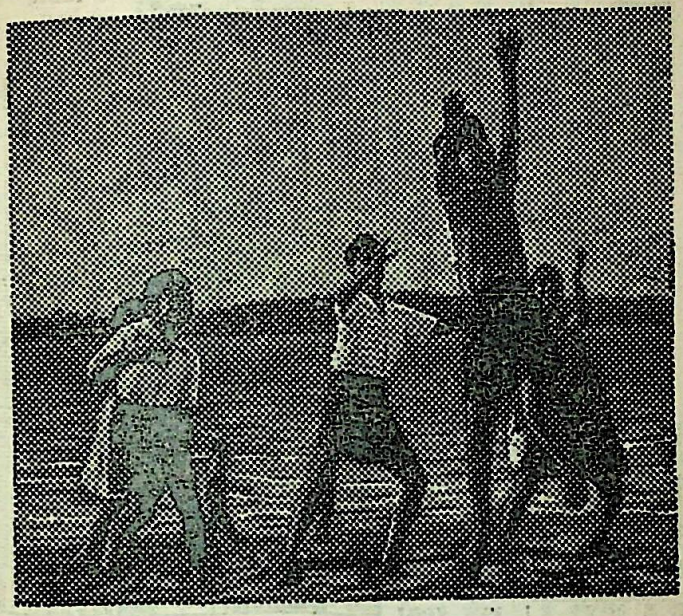

सेविंग्ज एकाऊण्ट – व्याज ४%

अल्पवयस्क बचत योजना – व्याज ४%

फ़िक्स्ड डिपॉज़िट – व्याज ६% से ७½%

देना बैंक

देवकरण नानजी बैंकिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज, १७, हॉर्निमेन सर्कल बम्बई-१.

१५० से अधिक ऑफ़िस तथा ४५ सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट

प्रवीणचंद्र व. गांधी मॅनेजिंग डाइरेक्टर

DB/H/178 - A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया टॅबलेट् से

बदहजमी को तुरन्त

रोकिये

२० पैसे की
४ टिकियाँ

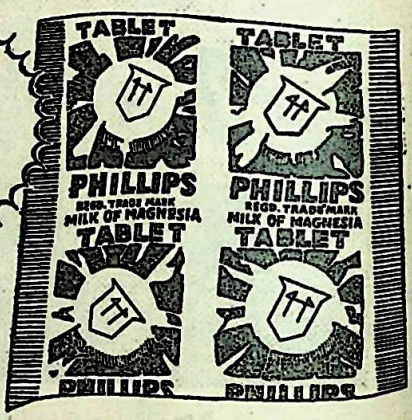

पिपरमेंट की सुगन्धयुक्त फिलिप्स की प्रत्येक टिकिया अपने वजन की १८६ गुना अम्लता को तुरन्त दूर करती है···जो अन्य किसी भी अम्ल-नाशक टिकिया से अधिक है। बच्चे इसकी पिपरमेंट की सुगन्ध को पसन्द करते हैं और विना परेशानी के मिठाई की गोली की तरह खा लेते है। पारिवारिक आवश्यकता के लिये ७५ एवं १५० टिकियाओं की शीशियाँ भी मिलती हैं। इन पैकिंगों में कीमत भी कम पड़ती है। आज ही व्यवहार करें—सभी दवाखानों में मिलती हैं।

फिलिप्स

मिल्क ऑफ मेगनेसिया टॅबलेट्

प्रस्तुतकारक: रजिस्टर्ड यूज़र

दे'ज मेडिकल स्टोर्स (मैनुफैक्चरिंग) प्रा० लि० ६२, बुन्देल रोड, कलकत्ता १६

PXDW-H3

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

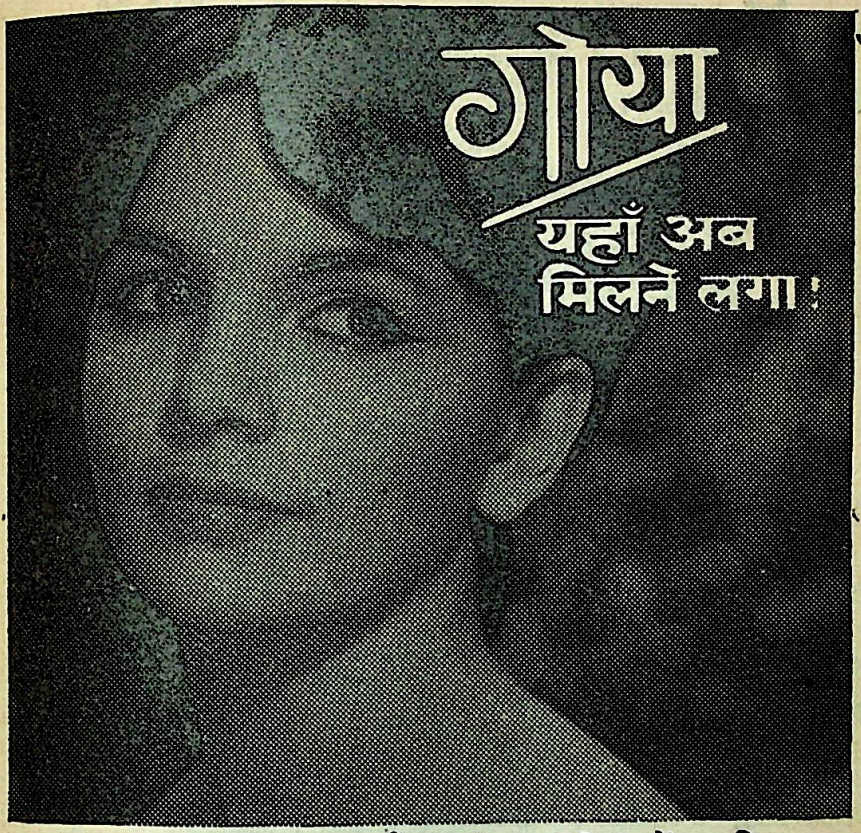

पेरिस, लंदन और न्यू यार्क की मोहक दुनिया में प्रचलित

अब विश्वविख्यात गोया की सुगन्धियाँ इनके रेशम जैसे मुलायम टैल्क के स्वरूप में आपको मिलती हैं। ये उत्तम सुगन्धियाँ— मनभावन ब्लैक रोज़, ताज़े फूलों सी सुवासित गार्डेनिया और मोहक पासपोर्ट — बनायी गयी हैं जिनकी सुगंध बहुत देर तक बनी रहती है। आप इनमें से कोई भी पसन्द कर सकती हैं। ये सुगन्धियाँ दुर्गन्ध को दूर करती और आपको तरोताज़ा तथा अधिक खुशबूदार बनाये रखती हैं।

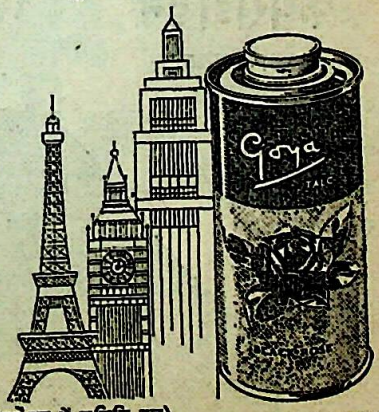

टैल्क सुगन्धियों से युक्त **गोया**

पेरिस
लंदन
न्यू यार्क

अब भारत में बनने लगीं एटलांटिस (ईस्ट) लि० (इंगलैण्ड में समिति बद्ध) AGC-1 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी?

पॅप्स

लीजिये!

पॅप्स की टिकियाँ धीरे धीरे चूसिये, आप शीघ्र ही महसूस करने लगेंगे कि इनकी आश्चर्यकारी शक्ति अपना प्रभाव दिखाने लगी है... ये गले की तकलीफ और छींक की जकड़न में आराम पहुँचाती हैं...खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती हैं। आपको शीघ्र आराम मिलता है!

★ गले की तकलीफ और ब्रॉन्काइटिस में लाभदायक
★ बच्चों को खुशी से दी जा सकती है
★ सभी जनरल स्टोर्स में और केमिस्टों के यहाँ मिलती है

पॅप्स

शीघ्र आराम पहुँचाती है

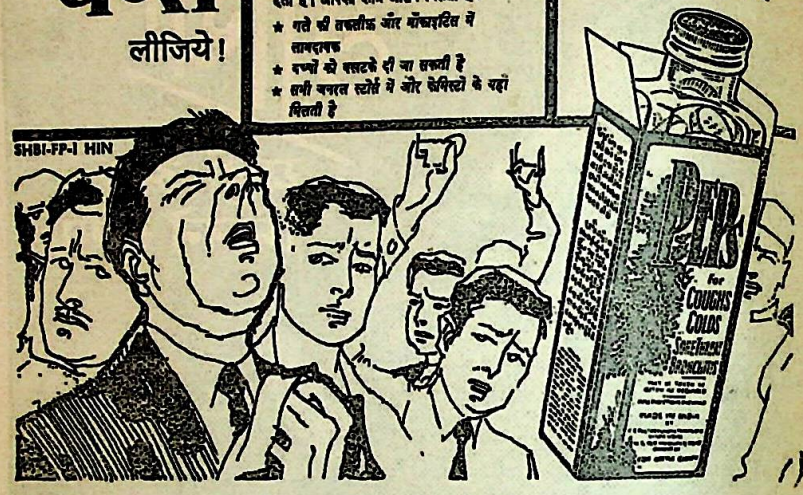

डिस्ट्रीब्यूटर : केम्प एंड कम्पनी लि०, पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई-२८ (डी०डी०)

आपके लिये जरूरी है।

बंगाल

केमिकल का

कैंथराइडिन

हेअर आयल

आपके लम्बे, काले

मुलायम और

घुंघराले बालों की

रक्षा के लिए

बंगाल केमिकल कलकत्ता * बम्बई * नागपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुन्दर वस्तु सदैव आनन्दमयी होती है"

किसी नये स्थान पर जाने का आकर्षण तो सदा ही बना रहता है और फिर अगर आप हकोबा एम्ब्रॉइडर्ड वस्त्रों से सुसज्जित हैं तो बस कहना ही क्या! आपके व्यक्तित्व का आकर्षण और भी बढ़ जाता है — सुन्दरताका एक सुन्दर वातावर्ण में होना ही उसकी सबसे बड़ी प्रशंसा है।

हकोबा
एम्ब्रॉइडर्ड कपड़े

फ्रॅन्सी कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(हकोबा चिकन व एम्ब्रॉइडर्ड कपड़ों के निर्माता) १६, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई — १.

BBFC/HV116

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

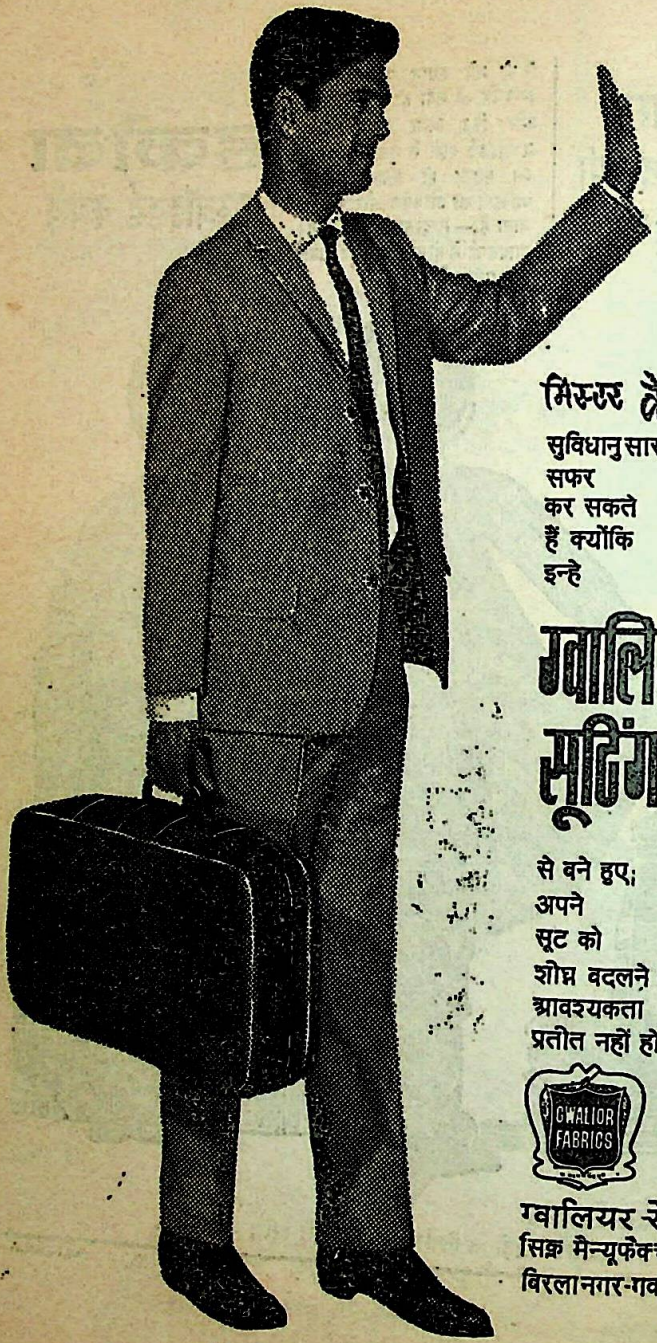

मिस्टर केयर फ्री
सुविधानुसार
सफर
कर सकते
हैं क्योंकि
इन्हे

ग्वालियर सूटिंग

से बने हुए;
अपने
सूट को
शीघ्र बदलने की
आवश्यकता
प्रतीत नहीं होती

GWALIOR FABRICS

ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

देश के सभी स्टोरों में मिलता है।

NPS/GR - 184

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किर्लोस्कर

किर्लोस्कर ऑईल एंजिन्स लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफिस : एलफिंस्टन रोड, पूना-३

फिक्स्ड डिपोजिट्स स्वीकार्य

विवरण एवं आवेदन पत्रों (फारम) के लिए लिखें

निकटतम स्टॉक एक्सचेंज के अधिकृत स्टॉक ब्रोकर्स

या कम्पनीके रजिस्टर्ड आफिस, किर्की, पूना-३

अवधिके लिए	अगस्त १, १९६५ से प्रतिवर्ष ब्याज की दर
१ वर्ष	७ प्रतिशत
२ वर्ष	७½ प्रतिशत
३ वर्ष	८ प्रतिशत
५ वर्ष	८½ प्रतिशत

Tom & Bay/KOEL/H-13/65

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५०१ स्पेशल

५०१ स्पेशल से हर धुलाई, स्पेशल धुलाई - बिना अधिक ख़र्च किए!

५०१ स्पेशल साबुन के स्पेशल फ़ार्मूला से भरपूर झाग ... जिससे सभी कपड़े साफ़, उजले और आसानी से धुलते हैं।

टाटा-उत्पादन

SHBI-501S-85 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजाब नेशनल बैंक

से कारोबार करनेके छः कारण हैं:

आपका धन ऐसी संस्थाकी देखभाल में है जो

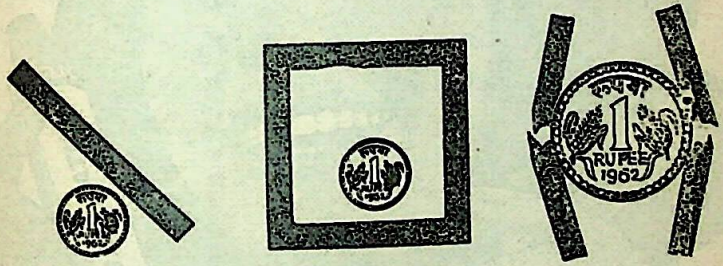

सुरक्षित, सुव्यवस्थित, सुदृढ़,

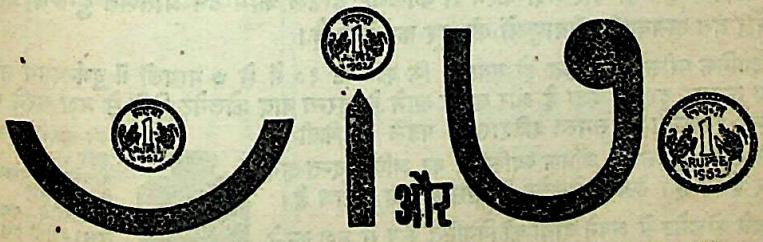

और

सेवाशील, सुप्रवीण साल पुरानी है।

PR 6532/Hin/Ad/5

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे...एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताज़ा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बजाये कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG. 35 H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितंबर
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

गुलाब
फूलों का शहंशाह

इस अंक में

१७ पत्थर की मूर्ति
जावालि
१८ अंधकार का दीपक
रा० वीलिनाथन
२० भागें नहीं, बदलें
ए० भारती
२५ रहस्यमय आत्महत्याएं
जगत गुप्ता
२८ छोटे-से देश का छोटा-सा दिग्गज
प्रकाश खन्ना
३३ पथ के प्रदीप
वाल्टर लिपमन
३५ उपन्यास का खोया हुआ नायक
नरेंद्र नायक
३९ मच्छरों का स्वयंवर
रे स्मिदर्स
४१ दोस्ती का द्वार खुला कैसे रखें
व्योहार राजेंद्रसिंह
४४ दो थानेदार, दो हत्यारे
जान एच० वैरन
४९ लखपति बनेंगे आप ?
लक्ष्मीवल्लभ
५२ मिलिये, मिस्टर हेलिकाप्टर से
आर्थर हर्जोग
५७ मेरी कल्पना का सुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगामी अंक में

उनकी निष्ठा जीवन में थी
काका कालेलकर

जब दवाएं जानलेवा बनीं
आशारानी

भीतर जागा दाता (कविता)
अज्ञेय

पगडंडियां और परांठे
श्रीनिधि सिद्धांतालंकार

आतंक-मुक्ति (कहानी)
शैलेश मटियानी

अक्षम्य अपराध (कहानी)
इस्तयान आरकेली

सत्तर हजार के घेरे में
(पुस्तक-संक्षेप)

★

चित्रसज्जा :
रूबा, पाल क्ली, श्यावक्स
चावडा, ओके, शणै,
श्यामलता तिवारी

★

हमारा पता
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड,
३४१, तारदेव, बंबई–३४;
फोन : ७२८४७

५९ हमारे पड़ोसी पेड़-पौधे
सुरेश वैद्य

६३ नाखून काटने की आदत
प्रोबस

६५ आंखों देखा लाल चीन
एडवर्ड बह्र

७२ प्रसिद्ध दरवाजों पर लिखे कुछ वाक्य
क० ख० ग०

७५ ये दूसरे विवाह
हैरी कूपर

७८ शिकार जो न देखे, न सुने
जफर मिर्जा

८१ चरण-सामुद्रिक
धर्मवीर

८५ हम परेशान हैं
सत्यपाल शर्मा

८७ परिवार को भी समय
सुमित्रा श्रीवास्तव

९१ बीबी करज (बंगला कहानी)
रमापद चौधुरी

९९ चिड़ियाखाना (हिन्दी कहानी)
रमेश बख्शी

१०६ कच और महाभारतकार (कविता)
रामचंद्र चंद्रभूषण

१०७ एक आदमी और मुर्गे
शोलोखोव

११३ अपराधी कौन ? (पुस्तक-संक्षेप)
राबर्ट अलर्टन

१४९ वार्ता-विलास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक ९

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

सितंबर १९६५

विश्व के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

जो पत्थर शिल्पकार की कृपा से
इंसान बन गये
वे भगवान बन गये
उनकी पूजा होती है।
मगर जो इंसान शिल्पकार की कृपा से
पत्थर बन गये
जिनकी सांसों के स्वर थम चुके,
जिनकी रगों का रक्त जम चुका,
जिनकी आंखों के आंसू सूख चुके हैं,
जो न भगवान बने
न शैतान बने
केवल इंसान नहीं,
उससे भी निम्न कुछ बनकर रह गये–
उनका भगवान
वह नहीं, जिसकी पूजा होती है।
कौन शिल्पकार इन पत्थरों को
इंसान बनायेगा ?

–जाबालि

पत्थर की मूर्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंधकार का दीपक

एक प्राचीन तमिल कविता का सरस अनुवाद रा० वलिनाथन् द्वारा प्रस्तुत।

भगवान ने इस धरती की सृष्टि करते हुए सोचा कि कहीं मर्त्यलोक मरुभूमि न रह जाये—सुषमाविहीन, अंधकारपूर्ण गहन गुफा का रूप धारण न कर ले। इसलिए सृष्टि को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए उन्होंने मानव को अपने हाथ की कठपुतली बनाकर नहीं रखा; अपितु सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की। इस प्रकार मानव छोटा स्वयंभू बनकर मर्त्यलोक में आया।

मानव को अपने बीच पाकर, पृथ्वी फूली न समायी। मानव के स्वागत में उसने सौंदर्य-सुषमा का उपवन ही सजा दिया। मनुष्य ने पृथ्वी की इस संपन्नता को देखा, तो मंत्रमुग्ध-सा खड़ा रह गया। उसके हृदय में उठे उत्कंठित उद्‌गारों ने कविता का रूप धारण कर लिया।

मनुष्य महाकवि बना और कवि के मुख से मधुर गान सुनकर रवि उगा, कालदेव अलस निद्रा तजकर कर्म-निरत हो गये।

परम पुनीत हृदय-वीणा में से प्रेम का स्रोत निकलकर संसार को आप्लावित करने लगा। भक्त के प्रार्थना-गीत में प्रेम का स्वर गूंज उठा। बच्चे की तोतली बोली में प्रेम की तान छिड़ी। युवती के मोहक यौवन में प्रेम की पायल झनक उठी।

मनुष्य कवि से चतुर चितेरा बना, इस भूमि पर नरक और स्वर्ग को उतार लाया। नश्वरता और नित्यता को, मृत्यु और अमरत्व को उसने काव्य-चित्र का रूप दिया।

युग बीत गये। संसार-भर में अब जहां देखो, मनुष्य-शक्ति का बोलबाला था। मनुष्य ने देखा कि उसकी बुद्धि-रूपी चाबुक की मार खाकर प्रकृति सकपका गयी है और उसके आगे झुकी खड़ी है। घमंड से वह फूला न समाया और ठहाका मारकर हंस पड़ा—"मानव! कितना महिमाशाली नाम, अहा! मनुष्य-शक्ति से परे कोई चीज नहीं है।"

× × ×

भगवान जो युगों से तपस्या में लीन थे, अपनी बनायी पृथ्वी का निरीक्षण करने के लिए आये। उनके आश्चर्य और आनंद का कोई ठिकाना नहीं रहा। उनके मुंह से निकला—"प्रत्येक मनुष्य मेरी ही तरह भगवान बन गया है!" और भगवान मनुष्य के दर्शन करने चल पड़े।

जब वे मनुष्य के निकट गये, तो देखते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या हैं कि उसके मन में अहंकार का राक्षस आधिपत्य जमाकर बैठा है, अज्ञान का अंधकार छाया हुआ है। परमात्मा बहुत दुःखी हुए। उनकी आंखों से आंसू बरस पड़े और वे उलटे पांव अपने धाम को चल पड़े।

किंतु वहां भी उन्हें शांति नहीं मिली। वे मनुष्य को अज्ञान के मायाजाल से छुड़ाने का उपाय सोचते रहे। इसके लिए उन्होंने मणि-दीप में, स्नेह का तेल डालकर, करुणा की बत्ती लगायी, फिर ज्ञान की ज्योति से उसे जलाकर मनुष्य का अज्ञान-अहंकार दूर करने के लिए धरती पर भेजा।

× × ×

बहुत समय बाद भगवान की इच्छा हुई कि अपने भेजे हुए ज्ञान-दीप की महिमा अपनी आंखों से देखें। सो वे पुनः मनुष्य-लोक में पधारे।

मनुष्य ने भगवान की प्रतिमा तैयार कर एक मंदिर में उसे प्रतिष्ठापित कर रखा था। भगवान उसमें जाकर चुपचाप बैठ गये। उनका भेजा हुआ ज्ञान-दीप प्रकाश फैल रहा था। गर्भगृह में शांति विराज रही थी।

सहसा दीप की बाती सगर्व बोली—"मेरी शक्ति अपार है। मनुष्यों को ज्ञान प्रदान कर उनकी माया का अंधकार मैंने ही दूर किया है। भगवान की यह प्रतिमा भी मेरे द्वारा ही प्रकाश पाती है। यदि मैं न रहूं, तो इस प्रतिमा को कौन प्रकाशित करेगा ? सारी महिमा मेरी ही है।" यह कहते-कहते बाती की दीप्ति निखर गयी।

बाती की बातें सुनकर तेल क्रोध से जल उठा— "बढ़-बढ़कर बातें क्यों बना रही है री ? मेरे बल पर तू खड़ी है। यदि मैं चाहूं, तो तुझे एक क्षण में डूबाकर तेरा मुंह काला कर दूं। मेरी शक्ति और सहायता के बिना तू क्षण-भर भी जीवित नहीं रह सकती।"

इस पर दीपक ने कहकहा लगाया।

"हंसता क्यों है ?" बाती और तेल ने गुर्राकर पूछा।

"हंसूं नहीं तो क्या रोऊं ? कहते हैं कि बुद्धिमान की जीभ हृदय में और मूर्ख का हृदय उसकी जीभ पर होता है। बात सच ही होगी। नहीं तो तुम लोग इस प्रकार अपनी डींग न हांकते। सुनो यदि मैं चाहूं, तो तुम दोनों को एक ही चपेट में निगल जाऊं। मैं ही तो तुम दोनों को आश्रय देता हूं। इस बार मैं क्षमा करता हूं। आगे कभी ऐसी धृष्टता न करना।"

दीपक को अपने सर्वशक्तिमान होने का गर्व हुआ, तो उसके पैर धरती पर ही नहीं पड़े; वह हवा में तिरने लग गया।

भगवान ने, जो इतनी देर से तीनों की बातें सुन रहे थे, एक लंबी सांस छोड़ी। माया का अंधकार दूर करने के लिए उन्होंने जो ज्ञान-दीप संसार में भेजा था, उसी की जब यह हालत हो, तो दूसरों की क्या कहें।

उनके हृदय के अंतराल से जो ठंडी सांस निकली, उसने दीपक को बुझा दिया।

बस सारे गर्भगृह में अंधकार छा गया। उसने भगवान को बड़ी शांति दी और यह सीख भी दी कि कुत्ते की दुम सीधी नहीं की जा सकती।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भागें नहीं, बढ़ें

पूर्व अफ्रीका के भारतीयों की कतिपय समस्याओं का विवेचन।

ए० भारती

अफ्रीका में राजनीतिक जागरण के साथ जो परिवर्तन हो रहे हैं, उनमें वहां के एशियाई प्रवासियों पर भारी दबाव पड़ रहा है। नवोदित अफ्रीकी राष्ट्रों की सरकारें इन प्रवासियों के साथ कठोरता से पेश आ रही हैं और इन लोगों के सामने कई विकट समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं।

पूर्वी अफ्रीका में जो एशियाई हैं, वे सब भारतीय उपमहाद्वीप (भारत और पाकिस्तान) से आकर बसे प्रवासियों की संतान हैं। अतः इस लेख में 'एशियाई' शब्द से हमारा मतलब उन्हीं से है।

जब युगांडा रेलमार्ग बन रहा था, तो बहुत-से एशियाई गिरमिटिया मजदूरों के रूप में यहां काम करने आये थे। इकरारनामे की मियाद पूरी होने पर इनमें से ज्यादातर स्वदेश लौट गये। मगर कुछ यहीं रह गये और छोटा-मोटा व्यवसाय या नौकरी-धंधा करने लगे। इन्होंने पूर्व अफ्रीका को अपना स्थायी घर मान लिया। वहां रहने की सरकारी अनुमति भी उन्हें मिल गयी।

पर इतने से ही तो कोई देश परदेशी का घर नहीं हो जाता। बात तब बनती है, जब उस देश के निवासी भी उसे वहीं का बाशिंदा स्वीकार करें, उसे अपनायें। और पूर्व अफ्रीका के निवासियों ने इन प्रवासियों को कभी यहां का बाशिंदा स्वीकार नहीं किया। आज भी उनकी नजर में एशियाई फुटपाथी बनिया है, जो 'दूका' चलाता है। (गुजराती शब्द 'दुकान' अब स्वाहिली भाषा का 'दूका' बन चुका है।)

अफ्रीकियों की नजर में एशियाई बड़े मूंजी हैं। बात बड़ी हद तक सही है। ये लोग जब अफ्रीका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में बसे, तो इतनी कम कमाई में गुजर-बसर कर लेते थे कि सुनकर विश्वास न होगा। इन्होंने नगरों के बाहर जगह-जगह पंसारी और मनिहारी की मिली-जुली दुकानें खोलीं। सुबह से लेकर बड़ी रात गये तक ये काम में जुटे रहते थे। सिर्फ पूजा या नमाज के लिए दुकान से उठते। ये बहुत ही थोड़े मुनाफे पर व्यापार करते थे।

फिर भी नेता से लेकर देहाती और जंगली तक सभी अफ्रीकियों की यही धारणा है कि 'एशियाई' रुपया जोड़नेवाला, मनहूस-शक्ल, कभी न हंसने-मुस्करानेवाला बनिया है, जो उनका खून चूसने में कोई कोर-कसर नहीं रखता।

एशियाई दुकानदारों ने वहां ऐसे पदार्थ पहुंचाये, जिन्हें अफ्रीकी लोग जानते तक नहीं थे। उन्होंने आम लोगों में नयी रुचियां पैदा कीं। अंग्रेजों के लिए ये खेल के सामान से लेकर शराब-सोडा तक हर जरूरत की चीज़ जुटाते थे। धीरे-धीरे ये चीजें अफ्रीकी भी काम में लाने लगे और स्वयं एशियाई भी इनके आदी हो गये।

आज पूर्व अफ्रीका की ८० प्रतिशत अर्थ-व्यवस्था एशियाइयों के हाथों में है। अभी हाल तक बढ़िया उपजाऊ भूमि गोरों के लिए सुरक्षित थी, कोई अफ्रीकी या एशियाई उसे नहीं खरीद सकता था। परंतु पिछले दो वर्षों में बड़ा परिवर्तन हो गया है। कुछ एशियाई किसानों ने गन्ने और गेहूं की खेती के लिए एल्डोरेट और नैरोबी के बीच वह पठारी जमीन खरीदी है, जो पहले केवल गोरों को मिलती थी। मौसम के लिहाज से यह दुनिया का बेहतरीन इलाका है और एशियाई यहां बड़े ही खुशहाल हैं। मैं तीन एशियाई किसानों के यहां ठहरा, जो तीन-तीन सौ एकड़ बढ़िया जमीन पर गेहूं उपजाते हैं।

तो भी एशियाई किसानों की संख्या बहुत कम है और अफ्रीकियों के लिए एशियाई अब भी 'फुटपाथी बनिया' है।

यहां पर मैं एशियाइयों की राजनीतिक स्थिति की नहीं, केवल सामाजिक स्थिति की चर्चा करूंगा। उनके सामने सबसे बड़ी समस्या यही है कि क्या वे यहां रह सकते हैं? एशियाइयों से यह सवाल पूछा जाये, तो उनका एक स्वर से यही उत्तर होगा कि यों रहने को तो वे रह सकते हैं; पर इज्जत के साथ नहीं।

कोई १० प्रतिशत एशियाई उत्तर देंगे—"चाहे जो हो, हम तो यहीं रहेंगे।" इनमें बहुत ही धनाढ्य लोग हैं—जैसे मंघवानी परिवार। युगांडा के काफी बड़े हिस्से में हर प्रकार का महत्वपूर्ण उद्योग इनके हाथों में है। ऐसे ही हैं टांगानीका के करीमजी। हालांकि पिछले वर्ष जंजीबार में राष्ट्रीयकरण होने से इनकी आधी संपत्ति जाती रही। ऐसे और भी दस परिवार हैं। इनम से ज्यादातर गुजरातीभाषी हैं और केन्या, युगांडा और टांगानीका तीनों में कारोबार करते हैं।

कुछ पंजाबी भी हैं, जो बलात् हटाया जाये, तभी हटेंगे। और भी कुछ लोगों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहीं रहना पड़ेगा। इनमें कुछ तो बहुत गरीब हैं, बाकी 'दूकावाले' हैं, जिनके पास जरा भी पूंजी नहीं है, जिससे वे भारत आकर अपना धंधा कर सकें।

ऐसा शायद ही कोई हो, जो अफ्रीका छोड़कर आना चाहता हो। सब वहीं रहना चाहते हैं; क्योंकि वे पूर्व अफ्रीका को ही अपना घर समझते हैं। इस देश के लिए उनके मन में प्रेम है। परंतु ये अफ्रीकियों को पसंद नहीं करते; क्योंकि एक तो अफ्रीकी इन्हें यहां रहने देना नहीं चाहते; दूसरे इन्हें डर है कि एक दिन इनकी तमाम दौलत व जमीन-जायदाद छीन ली जायेगी।

अपने मूल देश की सरकारों से कुछ भी नैतिक समर्थन न मिलने के कारण ये अपने को और भी असहाय अनुभव करते हैं। भारत और पाकिस्तान से वहां सरकारी प्रतिनिधि आते तो हैं; परंतु केवल इन नवोदित राष्ट्रों के साथ अपने देश का व्यापारिक या राजनीतिक संबंध बढ़ाने के लिए। अपने एशियाई भाइयों की हित-साधना में इनकी कोई दिलचस्पी नहीं होती। अक्सर ये एशियाइयों को अपने मेजबान देश के लोगों के साथ घुल-मिल जाने का उपदेश देते हैं।

लेकिन इस 'घुलमिल जाने' का अर्थ? भारत के एक नेता ने इस पर कहा था कि एशियाई लोग देशी अफ्रीकियों के साथ परस्पर शादी-ब्याह करें। मगर जब इस्माइली मुसलमान किसी सुन्नी मुसलमान से ब्याह नहीं करता और कोई पटेल अपने बराबर हैसियत के सुसंस्कृत लोहाणा घराने में अपनी बेटी देने को तैयार नहीं होता, तो ये अफ्रीकियों से शादी-ब्याह करेंगे, इसकी कल्पना भी कैसे की जा सकती है?

एक बार अफ्रीकी नेता टाम एमबोया और नेहरूजी के बीच वार्तालाप चल रहा था। एमबोया ने कहा—"भारतीय प्रवासी अफ्रीकी कैसे कहला सकते हैं? वे तो हमारे लड़के-लड़कियों से विवाह करने को भी तैयार नहीं!"

इस पर नेहरूजी ने उत्तर दिया था—"मुसीबत यह है कि हम लोग अपने देश की लड़कियों से भी विवाह नहीं करते।" नेहरूजी का इशारा जात-पात की ओर था, जिसकी कट्टर परंपराएं हमें दूसरी जाति में विवाह-संबंध की इजाजत नहीं देतीं।

मैंने यहां के कई सुशिक्षित एशियाइयों से बातचीत की। वे अंतर्जातीय विवाह को स्पृहणीय और जाति-प्रथा को त्याज्य मानते तो हैं; पर इस पर अमल बहुत कम होता है। कुछ हिन्दू, मुसलमान, सिख और जैन लोगों ने जाति से बाहर विवाह किये हैं; परंतु इनकी संख्या हजार के पीछे आठ है।

यों अफ्रीकी, यूरोपियन और एशियाई लोग एक स्तर पर मिला भी करते हैं। इसे 'सांध्य सम्मेलन' कहा जा सकता है। यह मिलन अमरीकियों की 'काकटेल' पार्टियों की तरह का होता है। प्रगतिशील कहे जानेवाले लोग ही इन आयोजनों में भाग लेते हैं। और अफ्रीका में 'प्रगतिशील' उन्हें कहा जाता है, जो मदिरा पीते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसे लोगों में सांस्कृतिक परिवर्तन हुआ तो है। जैसे, महिलाएं यहां कार चलाती हैं, इस्माइली औरतें दिन में पश्चिमी पोशाक पहनती हैं, आदि। परंतु ये परिवर्तन बाहरी हैं।

लोगों के विचारों का आधार अपना-अपना धर्म है। धर्म-निरपेक्षता इनमें विकसित नहीं हुई। बहुत-से एशियाइयों को तो अपनी धर्म-संस्कृति पर इतना गर्व है कि वे नहीं समझते कि कभी अफ्रीकी भी उनके-जैसे सुसंस्कृत हो सकेंगे।

यदि औसत एशियाई से आप अफ्रीकियों के बारे में पूछें, तो वह यही कहेगा—"ये लोग बड़े आरामतलब होते हैं। पैसा कतई नहीं बचाते। शराबखोरी और ऐयाशी में सब कुछ खर्च कर देते हैं। यह सब कितना अनैतिक है!"

जब तक पूर्व अफ्रीका के एशियाइयों की समझ में यह बात नहीं आ जाती कि उन्हें अपना यह आध्यात्मिक घमंड छोड़ना पड़ेगा, तब तक अफ्रीकियों और एशियाइयों में सामंजस्य स्थापित नहीं होगा।

अपने प्रवास के दौरान मैं पचास परिवारों के साथ ठहरा था। मैंने पाया कि हर परिवार ने एक या दो पुरुष (भाई या पिता) भारत या पाकिस्तान भेज दिये हैं। जो बहुत आशावादी हैं, वे कहते हैं, चाहे जो हो, हम तो यहीं डटे रहेंगे। उनकी दलील यह है कि पूर्व अफ्रीका ही उनका घर है।

कुछ लोगों ने अफ्रीकी नेताओं की सलाह पर अफ्रीकी नागरिकता भी ले ली है। मगर अधिकांश एशियाइयों ने इस सलाह को नहीं माना है। कारण, इसमें भी उन्हें कई तरह के भय दिखते हैं।

पहला भय तो यही कि नागरिकता लेने के बाद भी भविष्य में उन्हें नौकरियां मिलने की कोई गारंटी नहीं है। बेशक आज तो यहां की नागरिकता स्वीकार कर लेने पर नौकरी बनी रहती है। परंतु इसका कोई भरोसा नहीं कि आगे चलकर जब इस काम के लिए अफ्रीकी नागरिक मिलने लगेंगे, तो एशियाइयों को हटाकर उनकी जगह देशी नागरिकों को नहीं लगाया जायेगा।

दूसरा भय यह है कि अगर उन्होंने स्थानीय नागरिकता ले ली, तो आगे चलकर कभी वे अफ्रीका छोड़ना चाहें, तो छोड़ नहीं सकेंगे और अपना रुपया-पैसा बाहर नहीं ले जा सकेंगे।

जब शंका और भय की पहली लहर आयी, तो नैरोबी, दारेसलाम और कंपाला स्थित ब्रिटिश उच्चायुक्त के कार्यालय तथा उप-दूतावासों के सामने एशियाई लोगों की लंबी कतारें लग गयीं। इन्होंने ब्रिटिश नागरिकता लेनी चाही। दरअसल बहुतों की यह धारणा है कि ब्रिटिश पासपोर्ट लेकर और अंग्रेजी प्रजा बनकर वे अधिक सुरक्षित रह सकते हैं।

केन्या, युगांडा, टांगानीका इन तीनों देशों ने दो से चार वर्ष की मोहलत दी है, जिसके अंदर-अंदर एशियाइयों को स्थानीय नागरिकता ले लेनी चाहिये। जो इस अवधि में अफ्रीकी नागरिक नहीं बन जायेंगे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें सरकारी तथा सरकार-मान्य संस्थाओं और उद्योगों की नौकरियों से बर्खास्त कर दिया जायेगा।

और भी एक भय है, जो इन सबसे बड़ा है और हाल की ही घटनाओं से उपजा है। जंजीबार में जो कुछ हुआ, शायद वह बहुत कुछ अतिरंजित करके पेश किया गया। पर उसने इन लोगों में बड़ी खलबली मचा दी है। जहां तक मेरी जानकारी है, जंजीबार में एशियाई लूटे ही गये, मारे नहीं गये; जबकि ४,००० अरब मारे डाले गये।

जंजीबार की घटनाओं से एशियाइयों के मन में भारी भय बैठ गया है। उन्हें चिंता हो रही है कि यदि टांगानीका, युगांडा और केन्या में भी वैसी ही हिंसक क्रांति हुई, तो क्या होगा?

एशियाई पूर्व अफ्रीका में बने रहें और सावधानी बरतें, तो अगले दस-बीस वर्ष में जब अफ्रीकियों का भावावेश ठंडा हो लेगा, स्थिति सामान्य हो जायेगी, सहनशीलता भी विकसित हो जायेगी, तो अफ्रीकी समाज एशियाइयों को अपने में मिलाने को उद्यत हो जायेगा।

एक बात सुनिश्चित है। तब एशियाइयों का वह स्थान नहीं होगा, जो आज है। उनका आर्थिक वर्चस्व भी नहीं रहेगा। अच्छा यही है कि एशियाई शुरूआत में कुछ हानि उठाकर भी अफ्रीकियों को स्वेच्छा से अपने कारोबार में भागीदार बना लें।

सारांश यह कि एशियाइयों को अपना आज का दृष्टिकोण बिलकुल बदलना पड़ेगा और अफ्रीकी लोगों के साथ मिल-बैठकर अपनी नैतिक धारणाओं में भी हेरफेर करना होगा।

वैराग्य

सौदागर दरवेश हो गया और उसने चेलों की जमात खड़ी कर ली। एक दिन वह पारसी संत आजर कैवान के पास आया और गर्व से बोला—"जब मैं अमीर था, तब मुझे चोरों का डर सताया करता था कि कहीं वे मुझे लूट न लें। और मैं इसी डर से चैन की नींद सो नहीं पाता था। लेकिन अब इस फकीरी जामे में बेपरवाह नींद सोता हूं।"

संत रहस्य भरी हंसी हंस पड़े—"सौदागर था, तब चोर तुझे लूट सकते थे; फकीर हुआ तो तू रिआया को लूटेगा। फकीरी दुनिया से भागकर चैन की नींद सोने के लिए नहीं है। वह तो खुदा और उसके हर मजलूम बंदे की फिक्र में रात-रात जागने से ही मिलती है।"

—नरेश मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहस्यमय आत्महत्याएं

सांसारिक असफलता इन बहुचर्चित आत्महत्याओं के लिए जिम्मेदार नहीं थी ।

कोई तीन साल पूर्व जब सुप्रसिद्ध अभिनेत्री मेरिलिन मनरो ने नींद की गोलियां खाकर अपने हाथों अपनी मौत को न्योता दिया, तो सारा संसार स्तब्ध रह गया था। उसके पूर्व नोबेल-पुरस्कार विजेता 'ओल्ड मैन एंड द सी' के लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने भी अपनी दुनाली बंदूक की नली मुंह में रखकर उसका घोड़ा दबा दिया था, तो बंदूक के प्राणहारी धड़ाके से केवल उनकी पत्नी ही नहीं, बल्कि दूर-दूर के लोग सन्न रह गये थे । लार्ड बैरीमूर की बेटी डायना बैरीमूर ने जब आत्महत्या की, तो लोग महीनों इसके विश्लेषण में उलझे रहे कि आखिर उसने ऐसा किया क्यों ?

उससे भी ताजा किस्सा है समूचे ब्रिटेन को हिला देनेवाले प्रोफ्यूमो-कीलर कांड के तथाकथित खलनायक डाक्टर वार्ड का । इस पेशेवर चिकित्सक ने न्यायालय के फैसला सुनाने के पूर्व ही मौत को वरण करके एक गरमागरम किस्से पर अकस्मात पटाक्षेप कर दिया, जिसके लिए नित्य सारे संसार में करोड़ों व्यक्ति समाचार-पत्रों का इंतजार किया करते थे ।

यों तो कहा जाता है कि प्रसिद्ध फिल्म निर्माता-निर्देशक-अभिनेता गुरुदत्त ने भी आत्महत्या ही की थी; परंतु इसका कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिला है और यह घटना रहस्यमय बनकर रह गयी ।

हाल ही में न्यूयार्क से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है—'सडन एंडिंग्स', जिसमें लेखक एम० जे० मेकर ने आत्महत्याओं के कारणों पर प्रकाश डाला है ।

विश्लेषण से पाया गया है कि अधिकतर उन्हीं आत्महत्याओं ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, जिनका कोई कारण नजर नहीं आता । मेरिलिन

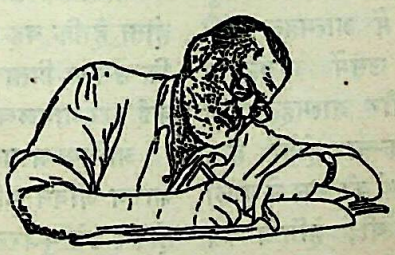

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

भय का सबसे भीषण रूप है—भय का भय, जो व्यक्ति को निरंतर अपनी निर्भीकता की अग्नि-परीक्षा करते रहने को मजबूर करता है । हेमिंग्वे जीवनभर यही तो करते रहे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनरो और अर्नेस्ट हेमिंग्वे संसार-भर में प्रसिद्ध थे। उनके पास रुपये-पैसों की कमी नहीं थी-फिर उन्होंने आत्महत्या क्यों की?

मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि लोग आत्महत्या एकबारगी नहीं कर लेते। उसकी जड़ें बड़ी गहरी होती हैं। वर्षों के निरंतर प्रयास के बाद ही व्यक्ति को आत्म-हत्या करने में सफलता मिलती है। आत्म-हत्या करनेवाला व्यक्ति जीवन में अनेक बार इस विषय पर गंभीर चर्चा कर चुका होता है। कई मामलों में तो यह भी पाया गया है कि यह एक खानदानी रोग है।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे ने अपने कई उपन्यासों में आत्महत्या की विशद चर्चा की है। शिकार, सांड-युद्ध आदि खतरनाक खेलों में उनकी दिलचस्पी भी शायद इसी कारण थी कि किसी दिन वे स्वयं उसके शिकार बन जायेंगे। परंतु अंत में उन्हें बंदूक का सहारा लेना पड़ा। मनोवैज्ञानिक मान्यता के अनु-सार, जिस परिवार में आत्महत्या की परंपरा बन गयी हो, उसमें आत्महत्या करनेवाले की उम्र और आत्महत्या का ढंग करीब-करीब एक-सा होता है। हेमिंग्वे के पिता ने ६७ वर्ष की उम्र में गोली मारकर अपनी जान ली थी; हेमिंग्वे कब्र में जाने के समय ६१ साल के थे।

मेरिलिन मनरो का ही दृष्टांत लीजिये। दौलत की उसके पास कमी नहीं थी। यश भी बराबर बढ़ता जा रहा था। फिर भी उसने आत्महत्या की; क्यों? इसका कारण आज तक अंधकार में ही है। नींद की

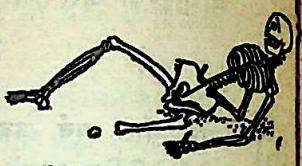

अरे, बचाओ! ..... कोई बचाओ!

गोलियां खाने के पूर्व उसने किसी से टेलि-फोन पर बात की थी; परंतु उसकी मौत के बाद वह व्यक्ति जनता के सामने नहीं आया। पता नहीं क्यों, उसे यह बतलाने में भय हुआ कि टेलिफोन पर मेरि-लिन से उसकी क्या बातें हुई थीं। या मेरि-लिन की आत्महत्या का कारण वही था? जो भी हो, उसकी मृत्यु आज भी रहस्य बनी हुई है।

मेरिलिन के जीवन को पढ़ने से प्रकट होता है कि वह हमेशा इस तलाश में रही कि उसका पिता कहां है? उसकी मां को कई बार पागलखाने जाना पड़ा था।

आर्थिक अभाव और आकर्षक शरीर के कारण जीवन की जिन गंदी गलियों में से होकर उसे गुजरना पड़ा, उसके लिए उसने अपनी गरीबी और दुःखी दिल से गिला तो की; परंतु वह चैन न पा सकी। जीवन में कई बार उसने आत्महत्या की चर्चा की और एक-दो बार असफल प्रयास भी किया।

जिस तरह हेमिंग्वे को उसके माता-पिता ने ठुकरा दिया था, मेरिलिन को भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पग-पग पर ठोकरें खाने को मिली, जिसकी शुरुआत जब वह पांच-छः वर्ष की थी, तभी हो चुकी थी। फिर भी हेमिंग्वे और उसकी मृत्यु में एक बड़ा फर्क था। हेमिंग्वे ने यह लिखकर रख दिया था कि वे अपनी मर्जी से जीवन समाप्त कर रहे हैं, जबकि मेरिलिन ने इस प्रकार की कोई सूचना किसी को नहीं दी।

मेरिलिन की तरह डायना वैरीमूर भी एक आकर्षक युवती थी, । मेरिलिन मरी नींद की गोलियां खाकर ३६ वर्ष की उम्र में; परंतु डायना ने गोलियों के साथ शराब की सहायता ली और ३८ वर्ष की उम्र में अपना खात्मा करने में सफलता पायी । डायना के पिता की मृत्यु भी शराब से ही हुई थी।

जो लोग ऊंची मीनारों से कूदकर, आग में जलकर अथवा इसी तरह के दूसरे उपायों से अपनी मौत बुलाते हैं, वे अपने पद से गिर गये व्यक्ति होते हैं। जब राष्ट्रपति ट्रूमन ने अमरीका के भूतपूर्व सुरक्षा-सचिव जेम्स फारेस्टल से त्यागपत्र की मांग की, तो उन्होंने एक ऊंचे मकान से कूदकर संसार से ही त्यागपत्र दे दिया।

यों उन सभी आत्महत्याओं के कारणों पर लोगों ने अपनी-अपनी दृष्टि से प्रकाश डालने की कोशिश की है। एक मान्यता यह है कि हेमिंग्वे ने अपनी पत्नी से बदला लेने के लिए आत्महत्या की। वे काफी दिनों से बीमार चले आ रहे थे और पत्नी की सेवा से ऐसा महसूस कर रहे थे कि वे लाचार व्यक्ति हैं, उसकी सेवा के बिना एक पल नहीं टिक सकते। लाचारी की इस अनुभूति से छुटकारा पाने के लिए ही वे स्वयं सदा के लिए विदा हो गये।

मेरिलिन मनरो, कहा जाता था कि पितृ-प्रेम की भूखी थी और इसीलिए उसने वैसे लोगों से भी शादी की, जो उससे उम्र में कहीं बड़े थे। पर वह अतृप्त ही रही और जब उसका संताप सहन की सीमा से बाहर हो गया, उसने नींद की गोलियां खा लीं।

डायना अभिजात व संपन्न परिवार की होती हुई भी दिन-ब-दिन गरीब होती जा रही थी, और अपनी संपन्नता मिटती देख उसने खुद को भी मिटा दिया। जेम्स फारेस्टल और डाक्टर वार्ड ने अपनी प्रतिष्ठा लुटती देखी और कोई मार्ग न पाकर आत्महत्या का सहारा लिया।

डा० विलहेम्स स्टेकेल एक मानसोपचारक थे। वे कहा करते थे कि अपना जीवन समाप्त करने का ढंग चुनना भी बड़ी मजेदार चीज है। उन्होंने मौत को गले लगाते हुए अपने मरीजों से इस बात के लिए क्षमा मांगी कि वे उन्हें निराश कर रहे हैं।

आत्महत्या से संबंधित आंकड़े बताते हैं कि आत्महत्या करनेवालों में काफी बड़ी संख्या मनोविज्ञान के डाक्टर, पाठक अथवा वैज्ञानिकों की होती है। स्टेकेल विख्यात मनोविज्ञान-शास्त्री सिग्मन फ्रायड के बड़े निकट मित्र थे। फिर वे रहनेवाले थे आस्ट्रिया के, जो स्वीडन की तरह आत्महत्या के मामले में संसार के अन्य सब देशों से आगे है।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे-से देश का छोटा-सा दिग्गज

कार्लोस रोम्यूलो

सबकी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सदा तत्पर एक एशियाई राजनेता का जीवन-परिचय, वी० एन० ओके-रचित पोर्ट्रेट के साथ।

प्रकाश खन्ना

छोटा इतना कि उसे कुर्सी पर न्यूयार्क की तीन मोटी-मोटी टेलिफोन डाइरेक्टरियां रखकर बैठना पड़ा, ताकि सामने के लोग उसे देख सकें और वह उन्हें देख सके।

लेकिन कुर्सी बहुत बड़ी है, बहुत गौरव और मान है उस कुर्सी का—संयुक्त राष्ट्रसंघ के अध्यक्ष की कुर्सी। १९४९ में उस कुर्सी के लिए चुना जानेवाला वह प्रथम एशियाई प्रतिनिधि था।

वह दिन उसके जीवन की अत्यंत 'गर्वपूर्ण घड़ी' थी, क्योंकि उसे अपने देश की ही नहीं, 'उन सब छोटे देशों की आवाज' बुलंद करने का अवसर मिला था, 'जो अब तक बेआवाज थे।'

ये व्यक्ति हैं फिलिपीन के कार्लोस पेना रोम्यूलो। १४ जनवरी १८९९ को एक छोटे-से नगर कैमिलिड में जन्म लेकर, अमरीका के भूतपूर्व प्रेसिडेंट ट्रूमन के शब्दों में 'संसार के प्रेसिडेंट' के इस पद पर पहुंचने तक रोम्यूलो कई जिंदगियां जिये हैं—संवाददाता, अध्यापक, संपादक, प्रकाशक, लेखक, वक्ता, सैनिक, प्रशासक और कूटनीतिज्ञ की जिंदगियां—और सभी में उन्होंने अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया तथा उच्चतम सम्मान पाया है।

रोम्यूलो के जन्म के नौ दिन बाद उनका देश स्पेन की दासता से मुक्त हुआ; परंतु लगभग बारह दिन की आजादी के बाद ५ फरवरी को अमरीका के कब्जे में आ गया। लगभग तीन वर्ष तक फिलिपीन अमरीका से आजादी के लिए संघर्ष करता रहा। १९०२ में अमरीका के यह आश्वासन देने पर कि भविष्य में फिलिपीन को आजाद कर दिया जायेगा, यह संघर्ष समाप्त हो गया। उस संघर्ष में रोम्यूलो के पिता और पितामह सक्रिय भाग लेते थे। अतः मां के दूध के साथ रोम्यूलो ने आजादी के लिए लड़ने की भावना पायी और दादी ने उनमें अपने देश और देशवासियों के प्रति अभिमान जगाया।

अमरीका-विरोधी संघर्ष के बाद रोम्यूलो के पिता पहले कैमिलिड के मेयर और फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

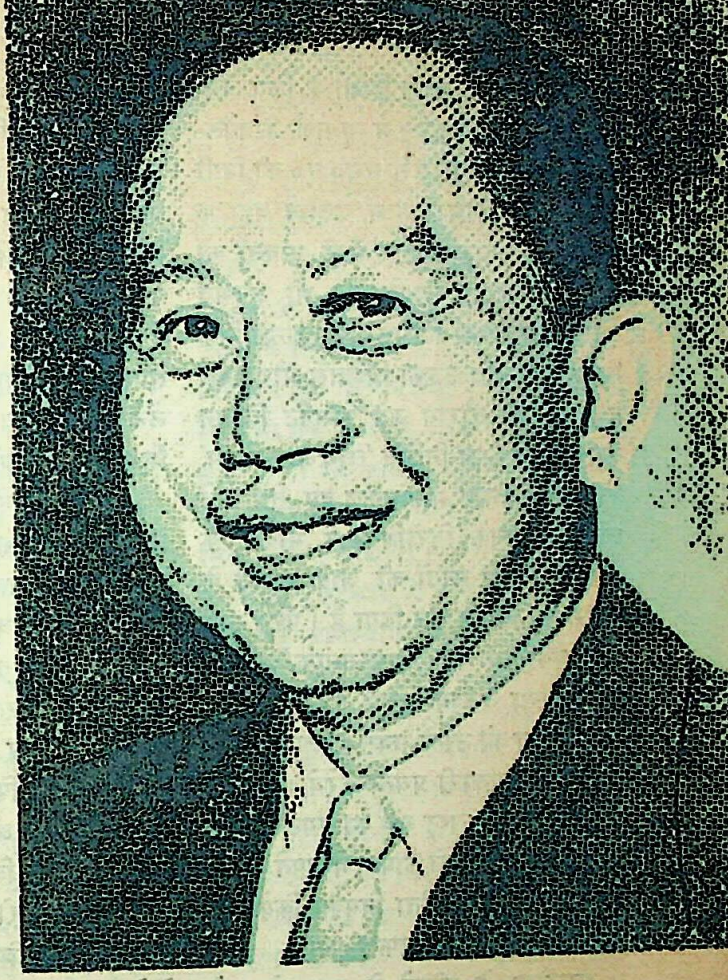

टारलैक के गवर्नर रहे और उसके बाद मनीला में जा बसे। इन्हीं स्थानों में रोम्यूलो की हाई स्कूल तक की शिक्षा हुई। भाषाओं का ज्ञान उन्हें प्रारंभ में उनकी दादी ने और फिर एक अमरीकी सैनिक ने कराया।

मनीला में पढ़ते समय ही उनकी पहली कहानी किशोरों की एक पत्रिका में प्रकाशित और एक कविता पुरस्कृत हो चुकी थी। यहीं उनके पत्रकार, लेखक और वक्ता बनने की बुनियाद पड़ी। अपने हाई स्कूल के दिनों में ही वे पहले 'मनीला टाइम्स' में और फिर 'केबल-न्यूज' में संवाददाता रहे। वे सेनेट की गतिविधियों पर एक कालम भी लिखा करते थे। यह उनके लिए राजनीति के प्रशिक्षण का प्रारंभ था।

उन दिनों मैनुएल कुइजान सेनेट के अध्यक्ष थे और रोम्यूलो उनके अनन्य भक्त। एक दिन जब अन्य सब संवाददाता सेनेट से जा चुके थे, कुइजान ने अपने एक विरोधी के खिलाफ बहुत क्रोधपूर्ण भाषण दिया। रोम्यूलो अकेले संवाददाता वहां उपस्थित थे और उन्होंने वह भाषण ज्यों-का-त्यों अपने पत्र में प्रकाशित किया। उसी दिन से वे कुइजान की निगाह में चढ़ गये। जब वे फिलिपीन विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, तभी कुइजान ने उन्हें अपने नये पत्र 'सिटिजन' में सहायक संपादक नियुक्त किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९१८ में वे उच्च शिक्षा के लिए अमरीका गये और १९२२ में न्यूयार्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से एम० ए० की डिग्री लेकर लौटे। अमरीका में उन्होंने वहां के लोगों की उदारता और मैत्री भावना को निकट से देखा; रंग-भेद का भी अनुभव किया; परंतु वहां के जीवन और जनतांत्रिक विधियों के प्रति उनका विश्वास और प्रबल हुआ। उसी दौरान जब प्रेसिडेंट विल्सन अमरीका को नव-निर्मित 'लीग आफ नेशंस' का सदस्य बनाने में असफल हुए, तब उन्हें लगा कि उनके विरोधियों ने भविष्य के युद्धों से लाखों लोगों की जाने बचाने के प्रयास को विफल कर दिया है। परंतु उन्हें यह विश्वास भी था कि एक-न-एक दिन ऐसी विश्व-संस्था अवश्य बनेगी, जिसमें समस्त राष्ट्र मनुष्य को उसके सबसे बड़े शत्रु युद्ध से बचाने का सहकारी प्रयत्न करेंगे। १९४५ में जब वे संयुक्त राष्ट्र संघ का संगठन करने-वाली सानफ्रांसिस्को कांफ्रेंस में अपने देश के प्रतिनिधि मंडल के नेता नियुक्त किये गये, तब उनका यह सपना सफल हुआ।

अमरीका से लौटने के बाद रोम्यूलो फिलिपीन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के सहायक प्रोफेसर, और कुइजान के निजी सचिव नियुक्त किये गये। लगभग छः महीने बाद ही उन्हें फिलिपीन के पहले अंग्रेजी समाचार-पत्र 'हेराल्ड' में सहायक संपादक भी बनाया गया।

'हेराल्ड' के जमाने में ही उनका वर्जीनिया लामास से विवाह हुआ। १९२८ में आर्थिक परिस्थितियों के कारण 'हेराल्ड' को कुइजान के विरोधियों ने ले लिया। उस समय कुइजान से रोमूल्यो का मतभेद हो गया था। अतः कुइजान के सचिव-पद से त्यागपत्र देकर वे हेराल्ड के संपादक हो गये। परंतु कुछ समय बाद ही जब पुनः कुइजान ने उस पत्र पर अधिकार किया, तो उसने त्यागपत्र दे दिया और राजनीति से संन्यास लेने का निश्चय किया। अब तक विश्व-विद्यालय में वे प्रोफेसर बनाये जा चुके थे।

जब रोसेस ने नया पत्र 'ट्रिब्यून' कायम किया, तो ये उसके संपादक हो गये। यहां उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की नीति अपनायी और विभिन्न विषयों पर अपने विचारानुसार कुइजान का समर्थन भी किया और विरोध भी; परंतु कुइजान के प्रति उनकी भक्ति कभी कम नहीं हुई।

उस समय फिलिपीन के दो अन्य नेता रोक्सास और ओस्मेना का अमरीका से एक समझौते के विषय में कुइजान से विरोध चल रहा था। रोम्यूलो कुइजान के पक्ष में थे और रोसेस विरोध में। ऐसी परिस्थिति में वे वापस 'हेराल्ड' में चले गये और उस संघर्ष में कुइजान की जीत हुई। अमरीकी कांग्रेस ने फिलिपीन को ४ जुलाई १९४६ को स्वतंत्र कर देने का कानून पास कर दिया। कुइजान फिलिपीन के प्रेसिडेंट और ओस्मेना वाइस प्रेसिडेंट बने। १९३७ में कुइजान-समर्थक पत्रों की एक शृंखला स्थापित की गयी और उसमें रोमूल्यो शेयर-होल्डर व प्रकाशक-संपादक बने। १९४१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक वे उसमें रहे। तभी उनके देश को दूसरे महायुद्ध में कूदना पड़ा।

युद्ध से लगभग ढाई महीने पहले रोम्यूलो ने जनतंत्र और साम्राज्यवाद जैसे विषयों पर परतंत्र देशों के विचार जानने के लिए फिलिपीन के निकट के देशों का दौरा किया था। उसके परिणामस्वरूप उन्होंने जो लेख लिखे, उन पर उस वर्ष का पुलित्जर-पुरस्कार उन्हें दिया गया।

लड़ाई छिड़ने पर उन्हें अमरीकी सेना में मेजर के पद पर जनरल मैकआर्थर का समाचार-पत्र सहायक बनाया गया। एक ही वर्ष में वे कर्नल बने और जनरल मैकआर्थर के सचिव हो गये।

१९४२ में उन्हें कुछ सप्ताह के लिए किसी सैनिक कार्य से अमरीका भेजा गया; परंतु वे वहां दो वर्ष से भी अधिक रहे। इस अवधि में उन्होंने अमरीका का दौरा करके जनता को प्रशांत महासागर के युद्ध की वास्तविकता से परिचित कराया।

इस दौरान उन्होंने अमरीका और युद्ध पर पुस्तकें लिखीं। प्रोफेसर रहते हुए वे छात्रों के लिए कई पुस्तकें लिख चुके थे।

युद्ध की समाप्ति और फिलिपीन के स्वतंत्र होने के बीच की अवधि में रोम्यूलो को अपने देश की स्वतंत्रता के विषय में बहुत कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। कई कानून उन्होंने अपने अथक परिश्रम से अमरीकी संसद में स्वीकृत कराये।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के संगठन के सम्मेलनों में उनका सबसे बड़ा योगदान पराधीन देशों को स्वतंत्रता दिलाने का मार्ग प्रशस्त करने के संबंध में था। घोषणा-पत्र में मूल प्रस्ताव 'स्वशासन' का विधान करने का था; रोम्यूलो का मत था कि 'स्वशासन' का नहीं, विधान 'स्वतंत्रता' का होना चाहिये। बड़े साम्राज्यवादी देश इसके विरुद्ध थे। उनका कहना था कि एक शब्द से क्या बनता-बिगड़ता है। परंतु रोम्यूलो का कहना था कि यही एक शब्द है, जिसमें लाखों पराधीन लोगों की आशाएं-आकांक्षाएं निहित हैं। उन्हें एशियाई देशों से पूरा समर्थन मिलने की उम्मीद थी। सम्मेलन में भारत की अंग्रेजी सरकार के प्रतिनिधि-मंडल के नेता सर रामस्वामी मुदलियार थे और वे समर्थन नहीं कर रहे थे। परंतु रोम्यूलो ने हिम्मत नहीं हारी और अथक परिश्रम करके 'स्वशासन या स्वतंत्रता' का विधान कराने में सफल हुए। उन्होंने सुरक्षा-परिषद में पांच स्थायी सदस्यों को निषेधाधिकार देने का भी विरोध किया था, परंतु यह देखकर कि यह अधिकार न मिलने पर अमरीका संघ में शामिल न होगा, उन्होंने अपना विरोध त्याग दिया। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि संयुक्त राष्ट्र संघ की भी वही गति हो, जो लीग आफ नेन्शस की हुई थी।

१९४५ में ओस्मेना ने प्रेसिडेंट-पद के लिए उम्मीदवार होकर रोम्यूलो को वाइस प्रेसिडेंट का उम्मीदवार होने के लिए स्वदेश बुलाया। परंतु उन्होंने यह सोचकर कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बहुत-कुछ करना है, अत्यंत खेद के साथ निमंत्रण को अस्वी-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार कर दिया। उसी समय प्रेसिडेंट-पद के दूसरे उम्मीदवार रोक्सास ने भी उन्हें इसी उम्मीदवारी के लिए बुलाया। रोक्सास की विजय लगभग निश्चित थी। परंतु इसे भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया। लोगों का मत था कि प्रेसिडेंट कोई भी चुना जाये, रोम्यूलो दोनों में से किसी के साथ भी वाइस प्रसिडेंट चुन लिये जायेंगे। परंतु वे अपने निश्चित कर्तव्य-पथ से नहीं डिगे। उन्हें तो फिलिपीन-वासी के रूप में फिलिपीन की सेवा करने की लगन थी। उन्होंने अमरीका में रहकर जो कुछ किया, उस पर उनके देशवासियों ने उनकी कटु आलोचनाएं भी कीं; परंतु उनके मन में कटुता नहीं आयी। उन्हें विश्वास था कि 'आज के बाद जो कल' आयेगा, वह इन आलोचनाओं को धो देगा।

१९५९ के बाद के समय को रोम्यूलो अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल मानते हैं। इस अवधि में उन्होंने विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। अनेक उपाधियां, सम्मान और डिग्रियां उन्हें दी गयीं। संयुक्त राष्ट्र-संघ में रूसी प्रतिनिधि फिलिपीन के प्रतिनिधि को अमरीका का मित्र होने के कारण पसंद नहीं करते थे; परंतु उन्हें भी रोम्यूलो की प्रतिभा का सम्मान करना पड़ा। और अमरीका के मित्र होते हुए भी उन्होंने कभी अमरीकी प्रतिनिधि के साथ पक्षपात नहीं किया। दोनों महादेशों के प्रतिनिधियों का उन्होंने निर्भीकता से सामना किया।

१९५३ में रोम्यूलो अपने देश के प्रेसिडेंट-पद के लिए चुनाव लड़ने को स्वदेश लौटे; परंतु इस समय उन्होंने मैगसेसे के पक्ष में अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली। मैगसेसे ने उन्हें फिर राजदूत बनाकर अमरीका भेजा। स्वदेश में रहने की इच्छा और व्यापारी कंपनियों के अनेक प्रलोभनों को ठुकराकर उन्होंने यह पद स्वीकार किया।

१९६२ में वे राजदूत का पद छोड़कर फिर स्वदेश लौट गये। इस बीच १९५१ में अमरीका के 'फ्रीडम्स फाउंडेशन' ने उन्हें फ्रीडम लीडरशिप पुरस्कार दिया, जो तब तक केवल राज्यों के प्रमुखों को दिया जाता था। रोम्यूलो ने लिखा है कि वह दिन मेरे लिए जीवन का सबसे गर्वपूर्ण दिन था; क्योंकि "नार्वे का नोबेल शांति-पुरस्कार उन लोगों को मिलता है, जो शांति के लिए संघर्ष करते हैं। यह अमरीकी पुरस्कार उनके लिए है, जो स्वतंत्रता के लिए जूझते हैं।"

१९६२ से वे मनीला में फिलिपीन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष हैं। अपने इस पद को वे अत्यंत संतोषजनक मानते हैं। इस उम्र में भी वे दिन में लगभग बारह घंटे काम करते हैं। उन्हीं के शब्दों में—"मैं औसत जिंदगी नहीं जिया हूं। मेरा अंतर अन्याय के विरुद्ध और स्वतंत्रता के प्रेम से कंपायमान है। इन भावनाओं का मैंने बहुत बचपन में अनुभव किया था। स्वतंत्रता के लिए, वह चाहे मेरी हो चाहे दूसरों की, लड़ने को मैं हमेशा तैयार रहा हूं और कभी-कभी तो मरने को भी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पथ के प्रदीप

वाल्टर लिपमन

परिपक्व मनुष्य जीवन में जो कुछ आता है, उसे स्वीकार कर लेता है और भीतर से अविचलित रहता है। कोई काम करते समय वह यही मानता है कि यह एक प्रयोग है; और अगर प्रयोग सफल नहीं होता, तो वह जानता है कि उससे कहीं कुछ गलती हुई है। वह सदा यह जानने और मानने के लिए तैयार रहता है कि उससे भी गलती हो सकती है; क्योंकि उसकी बुद्धि आशाओं के जाल में फंसी नहीं होती। उसके प्रयोगों के विफल होने से उसका जीवन विफल नहीं हो जाता। उसकी आत्मा को जीवन से बांधनेवाली एकमात्र चीज है – जीवन के संबंध में उसकी समझ; और समझदार आदमी के लिए हार भी जीत से कम दिलचस्प नहीं होती।

सहिष्णुता उसके लिए यत्नसाध्य नहीं होती और स्याद्वादी होने में उसे क्षोभ नहीं होता। दुःख का सामना वह धीरज से करता है; क्योंकि दुःख को उसने अपनी आत्मा के गर्भगृह से निकाल दिया है। भय उसे नहीं सताता; क्योंकि कोई चीज हथियाने-हड़पने की गरज उसे नहीं है और न उसे अपने भाग्य की फिक्र है। वह दृढ़ होता है – इसलिए नहीं कि उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है; बल्कि इसलिए कि वह आशाओं के कारण पैदा होनेवाले सब तनावों से मुक्त है।

वह अनासक्त होता है–तो क्या इस कारण उसका जीवन नीरस हो जाता है? ..... वह अपनी ही आशा-आशंकाओं की जेल में बंद रहने के बजाय,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्त विश्व को अपना समझता है; समस्त जीवयोनियों को अपना ही जीवन मानता है। भला ऐसा जीवन नीरस कैसे हो सकता है? (हां, अगर वह अपने साथ नीरसता का बोझ लादकर लाया हो तो और बात है।) वह समस्त सौंदर्य और समस्त ज्ञान में रम सकता है; और ज्ञान व सौंदर्य तो अक्षय और अनंत हैं।

क्या वह निरुद्देश्य सपने भी देखता है? — हां, अगर उसकी यही इच्छा हो। वह सांसारिक काम-काज सहज ही निपटा सकता है—और सो भी सांसारिक लोगों से कहीं ज्यादा दक्षता के साथ। कारण यह है कि वह इन चीजों का कोई शाश्वत महत्व नहीं मानता और अपने आपको किसी भ्रम में नहीं रखता।

क्या वह आशावादी होता है? नहीं — अगर आशावादी होने का मतलब यह समझना हो कि दुनिया उसके अहंभाव के आगे शीघ्र ही सिर नवायेगी। तो फिर क्या वह निराशावादी होगा?..... आशा तो आनेवाली नियामतों की राह देखने का नाम है; जब कि परिपक्व मनुष्य यहीं इसी क्षण आनंद मनाना चाहता है। और क्योंकि संशय, महत्वाकांक्षा, निराशा या भय जैसी कोई चीज उसे भीतर-ही-भीतर खा नहीं रही होती, वह जीवन-पथ पर बड़ी सहजता से डग भरता है। .....और इसलिए जीवन उसे चाहे प्रहसन प्रतीत हुआ हो, या शोकांत नाटक, या नौटंकी — वह यही कहता है कि जीवन जैसा भी है, है — और समझदार आदमी उसका आनंद उठा सकता है।

['प्रिफेस टु मारल्स' से]

श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः। श्रद्धा सत्यं तदित्युत्तमं मिथुनम्।
श्रद्धया सत्येन मिथुनेन स्वर्गाल्लोकान् जयतीति॥

— जीवन-यज्ञ में श्रद्धा मानो पत्नी है और सत्य यजमान है। श्रद्धा (भावनामूलक) और सत्य (बुद्धिमूलक) की उत्तम जोड़ी है। श्रद्धा और सत्य की जोड़ी से मनुष्य दिव्यलोकों को, वास्तविक कल्याण को प्राप्त करता है। — ऐतरेय ब्राह्मण ७-१०

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यास का खोया हुआ पन्ना मिल गया

नरेंद्र नायक

सन १९५८ की गर्मियों में पूर्व जर्मनी में ब्रूनो आपित्स का जर्मन उपन्यास 'भेड़ियों के बीच नंगा' प्रकाशित हुआ। लेखक खुद आठ साल बुखेनवाल्ड के बदनाम नाजी कैदी कैंप में रहे थे।

वाइमार शहर से कुछ दूर बुखेनवाल्ड है। वाइमार विश्व-संस्कृति की श्रीवृद्धि करनेवाले अनेक महापुरुषों की जीवन-स्थली है। १९३७ में हिटलर ने यहां एक कैदी कैंप बनवाया था, जिसमें ३२ राष्ट्रों के २ लाख ३८ हजार आदमी कैद रखे गये थे। इनमें कम्युनिस्ट, सोशियल डेमोक्रैट, यहूदी, ईसाई पादरी, लेखक, कलाकार एवं सोवियत तथा अंग्रेज युद्धकैदी थे।

इन कैदियों से अमानुषिक क्रूरता के साथ काम कराया जाता था। इन्हें भूखे रखा जाता था। सर्दियों में ये लोग ठंड से ठिठुर जाते थे। कमजोरी से बेदम होकर जब तक बेहोश नहीं हो जाते थे, तब तक उन्हें काम करना पड़ता था। जरा-जरा-सी बात पर इन्हें बुरी तरह पीटा जाता था।

हिटलर का कुख्यात एस० एस० (तूफानी दस्ता) कैदियों को परेशान करने के लिए प्रतिदिन नयी-नयी तरकीबें सोचता रहता था। छप्पन हजार कैदियों को इस कैंप में मौत के घाट उतार दिया गया था। जर्मनी के प्रसिद्ध मजदूर नेता ऐर्न्स्ट थेलमान को १९४४ की १८ अगस्त को यहां गोली से उड़ा दिया गया और खबर यह उड़ा दी गयी कि वे अमरीकी बममारी में मारे गये। वस्तुतः अमरीकी बममारी २४ अगस्त को हुई थी।

कैंप का जीवन बड़ा यातनापूर्ण था। कैंप के चारों ओर बिजली के नंगे तार लगे थे और चौबीसों घंटे सख्त पहरा रहता था। इसलिए कैदियों का भागना लगभग असंभव था। परंतु यह सब अत्याचार सँहते हुए भी इन कैदियों का नैतिक बल अटूट था। उन्होंने अपना एक गैरकानूनी संगठन बना लिया था और चोरी-छिपे वे हथियार भी इकट्ठे करते रहते थे।

मार्च १९४५ में जब मित्रराष्ट्रों की सेनाएं हिटलर द्वारा अधिकृत यूरोप पर आक्रमण कर रही थीं, ये कैदी बड़ी उत्सुकता से युद्ध के समाचार सुना करते थे और अपनी मुक्ति की घड़ियां गिना करते थे। कैंप में एक गैरकानूनी मुक्ति-समिति बना ली गयी थी, जिसमें वहां बंद सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि थे। कैंप में उपलब्ध साधनों द्वारा हथियार तैयार किये जाते थे, अथवा जान जोखिम में डाल किसी तरह बाहर से प्राप्त करके कैंप में छिपा दिये जाते थे। उनका उद्देश्य था, एक निश्चित समय पर कैंप को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

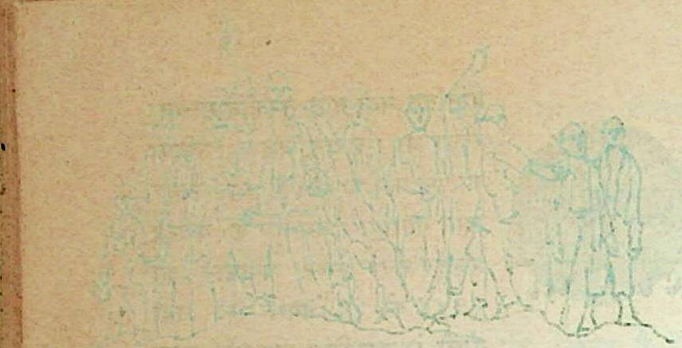

बुखेनवाल्ड के शहीद-मूर्तिकार : क्रेमर

स्वतंत्र करके कैदियों को हिटलर के खूनी एस० एस० से बचाना।

इन्हीं दिनों पूर्व की ओर कोई कैंप खाली किया गया और उससे एक गाड़ी बुखेनवाल्ड के स्टेशन पर आयी। ऐसा तो रोज ही होता रहता था। पर आज की गाड़ी ने कैंप में हलचल मचा दी। हयाफल और पीपिंग नाम के दो राजनीतिक कैदी स्टोररूम में काम करते थे। आज की गाड़ी से उतरे एक पोलैंड-निवासी कैदी के सूटकेस में उन्हें एक जिंदा बालक मिला। यह आदमी इस बच्चे को अनेक यहूदीवासों और बंदी-कैंपों में से किसी तरह बचा लाया था।

नियमानुसार दोनों कैदी पहरेदारों का फर्ज था कि इसकी सूचना वे एस० एस० के अधिकारी को दें। मगर वे जानते थे कि सिपाही जरूर बच्चे को मौत के घाट उतार देंगे। इसलिए उन्होंने उसे कपड़ों के गट्ठर के पीछे छिपा दिया। मगर इतने से इस बच्चे का बचा रहना मुश्किल था। एक-न-एक दिन एस० एस० को इसकी खबर मिल ही जायेगी और फिर बच्चे को छिपाने में हाथ बंटानेवाले मुक्ति-समिति के सदस्यों के प्राण खतरे में पड़ जायेंगे। फिर इन लोगों ने अपने हथियार भी तो इस स्टोररूम में ही छिपा रखे थे।

आखिर एस० एस० को बच्चे की खबर मिल ही गयी। मगर इसके पहले ही बच्चे को क्वारंटीन बैरक में पहुंचा दिया गया, जहां छूत की बीमारियों से पीड़ित कैदी रखे जाते थे। एस० एस० के आदमी रोग की छूत के डर से इस बैरक में जाने की हिम्मत नहीं करते थे।

एस० एस० ने हयाफल और बच्चे को लानेवाले पोलैंड-निवासी कैदी कार्पिंत्स्की को बंकर में डालकर बहुत यातनाएं दीं। मगर उनके मुंह से एक शब्द तक न निकला। अंत में एस० एस० को मालूम हो गया कि बच्चा क्वारंटीन बैरक में है। मगर वे वहां जाकर उसे छीन सकें, इसके पहले ही उसे दूसरी जगह पहुंचा दिया गया।

अब एस० एस० ने बड़ी मुस्तैदी के साथ बच्चे की खोज शुरू कर दी। यों सारे ही कैदियों के लिए खतरा पैदा हो गया था। वे सोच रहे थे कि मुक्ति की घड़ी नजदीक आती देखकर अगर एस० एस० ने कैंप को शस्त्र-रहित करके उनके संगठन को छिन्न-भिन्न कर दिया, तो उनकी अब तक की सारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा। अतः अब संघर्ष बच्चे की रक्षा का ही न रहा। बच्चे को मौत के मुंह से बचाना और गैरकानूनी मुक्ति-संगठन की रक्षा, ये दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे पर्यायवाची बन गये।

एस० एस० और कैदियों के बीच बच्चे को खोजने और छिपाने की होड़ लग गयी। नये-से-नये शस्त्रों से लैस एस० एस० और निहत्थे कैदियों के बीच इस बच्चे के लिए महाभारत छिड़ गया। कैदियों को इसमें बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं; मगर उनके नैतिक साहस के आगे एस० एस० की एक न चली।

ज्यों-ज्यों मुक्ति की घड़ी नजदीक आती गयी, कैदी एस० एस० के आदेश मानने में आनाकानी करने लगे और कैंप को खाली करने में देरी करने लगे। उन्होंने अपने बीच ऐसे ४६ कैदी छिपा रखे थे, एस० एस० जिनकी खोज में था। एस० एस० की नजर में ये मुक्ति-संगठन के कर्णधार थे।

मित्रराष्ट्रों की सेनाओं के नजदीक आने पर इन कैदियों ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया, एस० एस० के सिपासियों को मार भगाया और स्वतंत्र हो गये। कुछ दिनों बाद अमरीकी सेना की पांत्सर टुकड़ियां बुखेनवाल्ड पहुंचीं और बड़े आश्चर्य से उन्होंने देखा कि कैंप के अधिकारी अपने ही कैदियों के कैदी बने हुए हैं।

× × ×

इस मुक्ति के पंद्रह वर्ष बाद १९५८ में 'भेड़ियों के बीच नंगा' नामक सनसनीपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रकाशन के थोड़े ही दिनों में इसकी सब प्रतियां बिक गयीं। जहां देखो, वहीं इसकी चर्चा थी। १९५८ में इसके चार संस्करण और छपे और १९६० तक पांच लाख प्रतियां खप गयीं।

रेडियो-रूपक और ध्वनि-मुद्रिकाओं ने इस पुस्तक को खूब लोकप्रिय बना दिया। उस पर एक फिल्म भी तैयार हुई, जो देश-विदेश में खूब प्रसिद्ध हुई। १९६५ के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में यह फिल्म भारत में भी दिखायी गयी।

फिनलैंड, स्वीडन और फ्रांस के अखबारों में यह उपन्यास धारावाहिक रूप से छपा। अब तक दुनिया की २२ भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। साढ़े आठ लाख प्रतियां तो जर्मन संस्करण की छपी हैं।

इस प्रकार लाखों लोग बुखेनवाल्ड के इस बच्चे से परिचित हो गये। स्वभावतः उनके मन में यह प्रश्न उठा कि कैंप के बर्खास्त किये जाने के बाद उस बालक का क्या हुआ? अनेक पाठकों ने उपन्यास के लेखक को पत्र लिखकर पूछा। पर सबको एक ही जवाब मिलता था—"मुझे मालूम नहीं।" सचमुच, बाद में उस बच्चे का क्या हुआ, यह अज्ञात ही रहा; क्योंकि कैंप की मुक्ति के बाद ३२ राष्ट्रों के कैदी अपने-अपने देशों को चले गये और बालक की बात उनके दिमाग से उतर गयी।

फिर अचानक १९६४ की फरवरी में बर्लिन के एक अखबार 'बी० जेड०' में यह समाचार छपा कि बुखेनवाल्ड के बालक का पता लग गया है। बहुत दिनों से यह अखबार इसकी तलाश में था। इस संबंध में अनेक चित्र और दस्तावेज भी उसने प्रकाशित किये थे।

सर्वप्रथम इस बच्चे के बारे में अखबार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को समाचार मिला सोवियत रूस से। उपन्यास पर बनी फिल्म देखकर वहां से किसी ने लिखा कि इस बच्चे का पिता इजराइल में है।

बुखेनवाल्ड के इस बालक का नाम स्टेफान येर्सी त्स्वाइग है। अप्रैल १९४५ में बुखेनवाल्ड की मुक्ति के समय यह चार साल का था। १९४३ से वह अपने परिवार के साथ पोलैंड के क्रोकोव शहर में एक घेटो (यहूदी-आवास) में रहता था।

जब नात्सियों ने इस घेटो को ध्वस्त कर दिया, तब से परिवार के लोगों का भिन्न-भिन्न कैदी कैंपों में अत्यंत दुःखपूर्ण जीवन शुरू हुआ। १९४४ में सब बिछुड़ गये। लड़के की मां, बड़ी बहन और दादा-दादी को आउश्वित्स भेज दिया गया और वहां गैस-चेंबर में मार डाला गया। पिता-पुत्र १९४४ के अगस्त में बुखेनवाल्ड आये। मुक्ति के बाद पिता-पुत्र ड्रेसडन और प्राग होते हुए क्रोकोव में आये। यहां उनका कोई रिश्तेदार बचा न था। इसलिए पिता ने तेल अवीव में आकर वकालत शुरू कर दी।

१९४६ से १९४९ तक पूर्ण रूप से स्वस्थ होने तक येर्सी त्स्वाइग को एक के बाद दूसरे अस्पताल या आरोग्य-गृह में रहना पड़ा। तीन साल इजराइल की सेना में नौकरी करके येर्सी ने लियों में पढ़ाई शुरू की। यहां उसे अपने पिता से खबर मिली कि उसके भाग्य और बचाव पर एक सुंदर व लोकप्रिय उपन्यास लिखा गया है।

१९६४ की फरवरी में येर्सी त्स्वाइग ने पूर्व जर्मनी की यात्रा की। वहां वह बुखेनवाल्ड के भूतपूर्व कैदियों के संघ का अतिथि बना। सबसे पहले वह वाइमार और बुखनेवाल्ड गया। वहां उसने अपने रक्षकों का व्यक्तिगत परिचय प्राप्त किया। स्टोररूम के वे कैदी, जिन्होंने उसे कपड़ों के गट्ठर के पीछे छिपाया था, वह रसोइया जो उसके लिए एस० एस० के रसोईघर से दूध चुरा लाता था और अन्य कैदी, जिन्होंने उसके बचाव में हाथ बंटाया था—इन सबसे मिला। लेखक ब्रूनो आपित्स का भी परिचय पाया।

स्टेफान त्स्वाइग बुखेनवाल्ड का शिशु

बुखेनवाल्ड के वे स्थान भी उसने देखे, जहां वे उसे छिपा दिया करते थे। इन सुखद स्मृतियों में अनेक दुःखद स्मृतियां भी जुड़ी हुई थीं। वह उन सामूहिक कब्रों पर भी गया, जिसमें हजारों अभागे पोलैंड-निवासी दफन हुए पड़े थे।

येर्सी के दिमाग में अनेक स्मृतियां अमिट रूप से अंकित हो गयी थीं। सेंटा नाम की कुतिया को वह भूला न था। उसने ब्रूनो आपित्स के उपन्यास की वह फिल्म देखी और कहा—"यह फिल्म मनुष्यों के महान संघर्ष का एक गीत है, जिनके पास नंगे जीवन के सिवाय और कुछ न था।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने देखा होगा कि साल में एक खास मौसम में मच्छर झुंड बनाकर उड़ने लगते हैं। एक-एक झुंड में हजारों मच्छर होते हैं और वे एक-दूसरे के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहते हैं। शायद आप नहीं जानते, ऐसा हर झुंड एक बारात है और बारात का हर मच्छर दूल्हा है। अगर आपको कृमि-कीटों की पहचान है, तो आप पायेंगे कि झुंड में सबके सब नर मच्छर हैं, मादा एक भी नहीं; और वे सब नाच-गान कर रहे हैं। बात यह है कि मच्छरों के लिए ये दिन, सहालग के दिन हैं, विवाह का मौसम है।

और इस बारात में से मादा अपना दूल्हा चुनती है। चुनाव की विधि यह है कि मादा इस नाचती-गाती बारात की तरफ आती है। जब वह बारात से कई गज की दूरी पर होती है, तभी कई मच्छर उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं। इस प्रतियोगिता में जो उम्मीदवार सबसे तेज निकलता है, दुल्हन उसी को मिलती है।

जरा गौर कीजिये, मादा अभी कई गज दूर होती है कि नर उसकी उपस्थिति जान जाते हैं। लेकिन कैसे? वर्षों यह प्रश्न वैज्ञानिकों के दिमाग को चक्कर खिलाता रहा है।

परीक्षण करके देखा गया है कि यदि कोई अजनबी नर मच्छर निकट आता है, तो बारात में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती; पर यदि मादा आये, तो फौरन उसे पाने की होड़ लग जाती है। प्रयोगों से यह भी सिद्ध

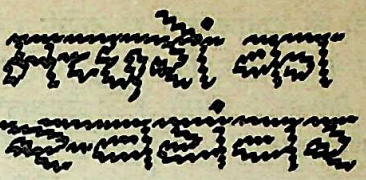

रूप-रंग नहीं, बल्कि संगीत के आधार पर मच्छर अपनी वधू को पहचानते हैं।

रे स्मिदर्स

हो चुका है कि गंध द्वारा मच्छर यह नहीं पहचान सकते कि दूर स्थित मच्छर नर है या मादा।

इसलिए वैज्ञानिकों ने यह परिणाम निकाला कि मच्छर यह जानकारी ध्वनि के द्वारा प्राप्त करते होंगे। और मच्छरों की पंखध्वनि के संबंध में खोज करने पर यह परिणाम खरा साबित हुआ। बात यह है कि नर एक सेकेंड में ५०० बार पंख फड़-फड़ाता है, जबकि मादा केवल ३०० बार पंख फड़फड़ाती है। इस प्रकार दोनों की ध्वनि अलग-अलग होती है। विज्ञान की भाषा में नर की पंखध्वनि ५०० साइकल प्रति सेकेंड होती है और मादा की ३०० साइकल प्रति सेकेंड।

फिर भी बहुत-से जीवशास्त्रियों को इस बात पर संदेह था। झुंड के बीच नाचने में मशगूल नर, दूर खड़ी अकेली मादा की आवाज कैसे सुन सकता है? झुंड के हजारों मच्छरों की पंखध्वनि के बीच अकेली मादा की पंखध्वनि तो नक्कारखाने में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूती की आवाज जैसी हो जायेगी। फिर नर के कानों तक वह कैसे पहुंचती होगी ?

हैनोवर (जर्मनी) के उद्योगतंत्रीय विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रानिक इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर हर्स्ट टिश्नर ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है। उन्होंने प्राणिशास्त्रियों के सामने प्रयोग करके यह सिद्ध किया कि नर के कान मादा की ध्वनि सुनने के लिए ही 'ट्यून' किये हुए होते हैं। इसलिए भिनभिनाते - नाचते मच्छरों के झुंड में भी नर के कान मादा की आवाज सुन लेते हैं।

प्राणिशास्त्रियों को अब भी शक था। उन्होंने दलील दी कि मादा की पंखध्वनि सदा एक-सी नहीं रहती, मौसम और हवा के दबाव के कारण उसमें अंतर आ सकता है। प्रोफेसर टिश्नर ने फिर से प्रयोग किया और साबित कर दिखाया कि मौसम के परिवर्तन का मादा की पंखध्वनि और नर के कान दोनों पर एक-सा प्रभाव पड़ता है; अतः नर के कान हर हालत में मादा की आवाज पहचान सकते हैं।

तो क्या सचमुच मादा की आवाज ही नाच-पार्टी में मस्त मच्छरों को आकर्षित करती है, जो वे उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं? प्रोफेसर टिश्नर ने अंत में एक बड़ा ही लाजवाब सबूत पेश कर इस विषय में संदेह की गुंजाइश सदा के लिए समाप्त कर दी।

उन्होंने बहुत-से वैज्ञानिकों को निमंत्रित किया और अपने एक सहयोगी से कहा कि वह मच्छरों के नाचते हुए झुंड के नीचे खड़ा हो जाये और धीरे-धीरे गुनगुनाना शुरू करे। सहयोगी ने वैसा ही किया और जब उसके मुंह से ३०० साइकल प्रति सेकेंड की ध्वनि निकलने लगी, जो मादा की भिनभिनाहट की आवाज के बराबर होती है, तो मच्छरों का सारा-का-सारा झुंड दौड़कर सीधे उसके मुंह में घुस गया।

★

मां-बाप और बेटा खाना खा रहे थे। बाप ने बेटे से पूछा—"तुमने कालेज में क्या कुछ पढ़ा है?" लड़का बोला—"बहुत कुछ पिताजी! इतिहास, भूगोल, साहित्य और तर्कशास्त्र।"

"तर्कशास्त्र! क्या मतलब ?" मां ने न समझते हुए पूछा। जवाब मिला—"मां, तर्कशास्त्र बड़ी गजब की चीज है। उसकी मदद से कोई भी बात सच साबित की जा सकती है।"

"किस तरह ?" मां ने स्पष्टता चाही।

"यह देखिये, प्लेट में दो चूजे हैं। मैं तर्कशास्त्र के जरिये यह सिद्ध कर सकता हूं कि दो नहीं, तीन हैं।" यह कहकर उसने कांटा उठाया और एक चूजे को उठाकर दूसरी प्लेट में रखते हुए कहा—"यह हुआ एक।" फिर दूसरे चूजे को भी उठाकर उसी प्लेट में रख और कहा—"ये हुए दो, और देखिये एक और दो हो गये तीन। हुए ना तीन चूजे ?"

मां आश्चर्य से बेटे का मुंह ताकने लगी। तभी पिता ने एक चूजा अपनी प्लेट में और दूसरा चूजा मां की प्लेट में रखते हुए बेटे से कहा—"तीसरा तुम खा लो।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोस्ती का द्वार खुला कैसे रखें ?

नवनीत के जून १९६५ अंक में छपे लेख 'दोस्ती का द्वार खुला रखें' के संदर्भ में।

व्योहार राजेंद्रसिंह

दो लाख की बस्ती में अकेला हूं—बिलकुल अकेला। लोग कहते हैं कि तुममें किसी को मित्र बनाने का माद्दा ही नहीं है। कुछ समय के लिए मित्र बना भी लेते हो, तो उन्हें कायम नहीं रख सकते। जो भी मित्र बनते हैं, वे स्वार्थ के लिए।

तुलसीदासजी ने ठीक कहा है—स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती। मगर यह भी कभी सोचा है कि तुमने किसी से निःस्वार्थ प्रेम किया है? तुम कहते हो कि कोई बिना मतलब के मिलने तक नहीं आता। मगर क्या, मैं तुमसे पूछ सकता हूं कि क्या तुम भी बिना मतलब किसी से मिलने जाते हो और निःस्वार्थ-भाव से किसी की सहायता करते हो?

असल बात यह है कि आज लोग अपने-अपने कामों में इतने व्यस्त हैं कि किसी को दूसरे के बारे में सोचने की फुरसत ही नहीं मिलती। बिना काम के हम अपने पड़ोसी से भी मिलने नहीं जाते और काम पड़ने पर लंका के छोर पर जाने को तैयार हो जाते हैं। जब तक कोई काम नहीं होता, तब तक सगे-संबंधियों को भी नहीं पूछते और जिससे काम पड़ता है, उससे निकट का संबंध और पुरानी मित्रता निकाल लेते हैं। यदि निकट संबंध न हो, तो ऐसे लोगों को खोजते हैं, जिनसे उनका निकट संबंध या मित्रता हो।

इस संबंध में एक पुरानी कहानी याद आती है। किसी राजा के दरबार में एक मुसाहिब था। कोई उसे पूछता नहीं था। उसने एक उपाय सोचा। राजा साहब से यह प्रार्थना की कि वे उसे दरबार के समय कान में मुंह लगाकर झूठ-मूठ कुछ कहने की स्वतंत्रता दे दें। राजा साहब सीधे-सादे थे। उन्होंने यह प्रार्थना स्वीकार करने में कोई हानि नहीं समझी। फिर तो मुसाहिब की बन आयी। वह बार-बार दरबार में उठकर बेमतलब राजा साहब के कान में कुछ कहने का भ्रम पैदा करता। बस लोगों ने समझ लिया कि राजा साहब उसकी बात मानते हैं; और लगे उसकी चापलूसी करने इस प्रकार उसने लोगों से बहुत पैसा पैदा किया और अपना स्वार्थ-साधन किया।

आज भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो मंत्रियों और अन्य अधिकारियों के चारों ओर चक्कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

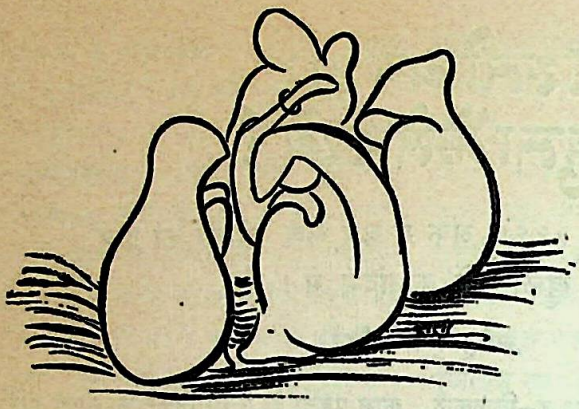

शोक में समभाग – श्यामलता तिवारी

मकानों की समस्या भी बड़ी प्रबल हो रही है। बिना किसी की सिफ़ारिश या प्रभाव-प्रयोग के मकान भी मिलना मुश्किल है। इसमें भी मित्रता या पहचान काम देती है।

मित्रता का सदुपयोग होने के बदले दुरुपयोग ही होता है। यदि किसी जब से आपकी मित्रता हो, तो लोग चाहेंगे कि उन पर चलाया गया मुकद्दमा खारिज हो जाये, या सजा ही कम हो जाये। यदि उन्होंने किसी दूसरे पर मुकद्दमा चलाया है, तो वे चाहेंगे कि वह केवल जुर्माने से ही न छूट जाये, बल्कि उसे अधिक-से-अधिक सजा मिले। यदि आपने उनका काम कर दिया, तो आपको सच्चा मित्र कहेंगे; और यदि अनुचित समझकर वह काम नहीं किया, तो चारों ओर आपकी बदनामी करते हुए हुए कहेंगे—"मैंने उनके बड़े-बड़े काम किये; किंतु उनसे मेरा जरा-सा काम नहीं हुआ। मुझसे बहुत-से अनुचित काम कराये; किंतु मेरे काम के लिए बड़े ईमानदार और सत्यवादी हरिश्चंद्र बन गये।"

लगाते रहते हैं। अपना काम निकालने के अतिरिक्त उनका यह भी उद्देश्य रहता है कि लोग यह समझें कि अधिकारियों से उनकी घनिष्टता है, और उनकी चापलूसी करें। लोग भी अपना काम निकालने के लिए ऐसे लोगों के द्वारा मंत्रियों तक पहुंचना चाहते हैं। लोगों का काम हो, चाहे न हो, किंतु घनिष्टता बतलानेवालों का महत्व तो बढ़ ही जाता है।

आजकल मित्रता बढ़ाने का उद्देश्य आगे-पीछे काम निकालेना ही होता है। ऐसे महत्वपूर्ण लोगों से ही मित्रता या घनिष्टता बढ़ायी जाती है, जो किसी पद पर हों, या जिसके पास धन या प्रभाव हो। इस मित्रता का उपयोग भी अपने स्वार्थ-साधन में ही किया जाता है। जैसे किसी कर्मचारी को तरक्की दिलवाना, तबादला करवाना, चुनाव में सहायता करना, कर्ज दिलवाना, परीक्षा में नंबर बढ़वाना, कहीं नौकरी पर लगवाना आदि-आदि। आजकल नगरों में

असली बात यह है कि आजकल कोई किसी का उपकार नहीं मानता। कृतज्ञता सरीखी चीज अब बहुत कम देखने में आती है। उलटे यह देखने में आता है कि जिसके साथ आपने उपकार किया है, वह उसे बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुच्छ समझता है; और जाने-अनजाने कोई अपकार हो गया, तब तो जन्म-भर के लिए शत्रुता मान बैठता है। एक व्यक्ति बचपन ही से अनाथ होने के कारण मेरे यहां पाला-पोसा गया था। उसने समर्थ होने पर, जरा-सी बात पर मतभेद हो जाने के कारण ऐसा घातक प्रहार किया कि जैसा कोई शत्रु भी नहीं कर सकता था।

एक बार मैंने एक मित्र से शिकायत की कि अमुक व्यक्ति ने मेरा इस प्रकार का अपकार किया है। वे तुरंत बोल उठे—"तो आपने उनके साथ अवश्य ही कोई उपकार किया होगा। आजकल उपकार का बदला अपकार ही से दिया जाता है।"

बात ठीक ही लगती है। आजकल मित्रों ही से झूठ बोलने में, बात छिपाने में या उन्हें धोखा देने में कोई संकोच नहीं किया जाता। लोग सोचते हैं कि हम धोखा तो उसे ही दे सकते हैं, जो हमारी बात पर विश्वास करता है। दुश्मन को हम क्या धोखा देंगे, जो हमसे सदा सतर्क रहता है? इसलिए मित्रों से उधार लिया हुआ रुपया कभी वापस नहीं किया जायेगा; क्योंकि कर्जदार जानता है कि उस पर कार्रवाई नहीं होगी।

अगर उससे रुपयों का तकाजा कीजिये तो कहेंगे —" आपको इतना धीरज नहीं है! क्या मैं आपके रुपये खा जाऊंगा? मेरी परिस्थिति ठीक होते ही मैं आपके रुपये ब्याज सहित फेंक जाऊंगा।" मगर निश्चय मानिये कि वह दिन कभी नहीं आयेगा। रुपये मिलना तो दूर रहा, उस दिन से बोल-चाल भी बंद हो जायेगी। मित्रवर उस रास्ते से निकलना ही छोड़ देंगे।

अंत में मित्रता के दुरुपयोग का एक और उदाहरण। मैं पचमढ़ी से वापस आनेवाला था। इसी समय एक सज्जन मोटर से उतरे, और बड़े प्रेम से मुझसे हाथ मिलाकर बोले—"बहुत दिनों में आपसे भेंट हुई। पचमढ़ी से क्यों वापस जा रहे हैं? यही तो मौका है, यहां की बहार का। चलिये, हम-आप खूब घूमेंगे।" मेरा सामान मोटर पर रखकर वापस ले आये। उसी होटल में फिर दूसरा कमरा लेकर हम वहां जम गये।

विश्राम करने के बाद वे बोले—"चलिये, जरा मंत्रियों से मिला दीजिये। फिर हम लोग निश्चिंत होकर घूमें।" रास्ते में बतलाने लगे कि उनके पिताजी और मेरे पिताजी में बहुत गाढ़ी दोस्ती थी। वे लोग हमारे यहां खेला करते थे। मुझे इन सब बातों की बिलकुल याद न थी। मन में समझ गया कि झूठ-मूठ घनिष्टता बतलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। किंतु सोचा, मुझसे किसी का काम बन जाये, तो क्या हानि है? अतः मंत्रियों से उन्हें मिला लाया।

किंतु ज्यों ही उनका काम निकल गया, उन्होंने मोटरवाले को वापस कर दिया और बोले—"क्षमा कीजिये, मुझे जल्दी वापस डचूटी पर जाना है। आप कुछ दिन और पचमढ़ी की हवा खाइये।" मैंने कहा—"आपने मुझे तो खूब हवा खिलायी।"

अब आप ही बताइये, इस हालत में दोस्ती का द्वार कैसे खुला रखें?

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो थानेदार, दो हत्यारे

जान एच० बैरन

मोंटाना प्रेयरी स्थित उस मकान का दरवाजा मैं लगातार खटखटाता जा रहा था; मगर कोई जबाब नहीं मिल रहा था। बर्फानी तूफान चल रहा था और मुझे उससे बचने के लिए जगह की तलाश थी। मैंने दरवाजे पर जोर का धक्का दिया और वह खुल गया।

अंदर जाकर दरवाजा बंद करके घूमा। घूमते ही मैं स्तब्ध रह गया। फर्श पर वृद्ध जिम ब्रूनो पड़ा था। देखने से ही पता चलता था कि वह मर चुका है। उसके सीने से धीरे-धीरे खून रिस रहा था। स्पष्ट था कि या तो उसे छुरा भोंका गया है या गोली मारी गयी है।

एक धक्का-सा लगा। मैंने कमरे में चारों ओर निगाह घुमायी। वे सारी बातें मुझे याद आने लगीं, जो मैं ब्रूनो के बारे में जानता था। ब्रूनो भविष्यवक्ता था। काफी पैसे इकट्ठा करने के बाद उसने इस मकान में रहना शुरू कर दिया था। मकान उसी का था। अफवाह थी कि उसने मकान में धन छिपाकर रखा है। लेकिन घर की हालत देखने से ऐसा हर्गिज नहीं लगता था कि छिपे धन की तलाश की गयी हो। हत्या का यह कारण तो नहीं लगता था।

पार्टिशन करके यह पुराना मकान दो भागों में बांट दिया गया था। मैंने सावधानी से दूसरे कमरे का दरवाजा खोला। एक आदमी ब्रूनो के बिस्तर पर सो रहा था। मैंने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और पंजों के बल पर चलता हुआ बिस्तर के पास पहुंचा और चादर हटायी। सोनेवाले की बगल में छः फायरवाली एक बंदूक रखी थी। मैंने उसे उठाकर अपने बेल्ट में लगा लिया।

थोड़ा पीछे खिसककर मैंने उस आदमी के एक लात जमायी। वह उठ बैठा। अधेड़ अवस्था, भारी-भरकम शरीर, औसत कद।

"ब्रूनो की हत्या किसने की?"

"क्या चाहते हो?" उसने अपनी बंदूक की तलाश करते हुए रूखे स्वर में पूछा।

"कोई बात नहीं है," मैंने कहा—"हाथ ऊपर उठा लो और बिस्तर से बाहर आओ, इस घर में कत्ल हुआ है।"

"मैं जानता हूं!" वह गुर्राया।

"इसके बारे में तुम और क्या जानते हो?" मैंने पूछा।

"मैं?" उसकी गुर्राहट में तेजी आ गयी—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सिर्फ इतना कि उस बूढ़े को गोली मारी गयी है। संभवतः लूटा भी गया है। और मैं हत्यारे को नहीं पकड़ पाया हूं।"

"क्या मतलब ?" मैंने पूछा।

"यही कि मैं थानेदार जान हर्ली हूं।" वह करीब-करीब चिल्लाया।

"हत्या हो गयी है और आप सो रहे हैं?"

"इस बर्फीली, तूफानी हवा में मैं कर भी क्या सकता हूं ?" उसने गुस्से से पूछा– "जब तक मौसम साफ नहीं हो जाता, मैं यहां फंस गया हूं।"

"मैं भी," मैंने कहा –"लेकिन ब्रूनो की हत्या किसने की ?"

"मैं समझता हूं, हत्यारा कनाडा का रहनेवाला एक अपराधी है, जो अभी-अभी सीमा के पार से आया है। उसने वेतन बांटनेवाले एक क्लर्क को भी लूटा है और तब से फरार है। संभवतः ब्रूनो उसका दूसरा शिकार है।"

"लेकिन, तुम्हें किसने खबर दी ?"

"किसी ने नहीं। मैं इस कनाडावासी अपराधी का पीछा कर रहा था। ठीक उसी समय तूफान आ गया और बचने के लिए मैं नजदीक के इस घर में घुस आया। अब मेरी बंदूक मुझे वापस कर दो !"

मैं हिचकिचाया। यह आदमी सचमुच थानेदार है या चोर-हत्यारा ? मैंने कहा– "पहले अपना बिल्ला और प्रमाण-पत्र दिखाओ।"

"मैं उन सबको जरूरी नहीं समझता," उसने रूखे स्वर में कहा–"लेकिन कुछ

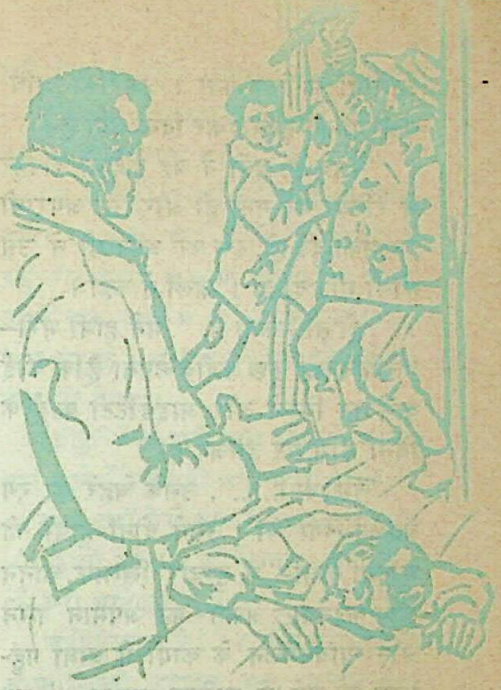

ऐसी चीजें हैं, जो मेरी बातों को सही सिद्ध कर सकेंगी।"

उसने एक अखबार का टुकड़ा दिखाया। मैंने रिवाल्वर उस पर ताने हुए ही अखबार की वह कतरन पढ़ी–"कार्डसन, अलबर्टा, ३० नवंबर। एक बंदूकधारी ने वेतन बांटनेवाले क्लर्क एफ० लूकस को लंबर डिपो की सीमा पर आज रोका और वह ब्रीफ केस, जिसमें वह साप्ताहिक भुगतान के लिए चार हजार डालर ले जा रहा था, लूट लिया। लूकस के बयान के अनुसार, डाकू अधेड़ अवस्था का हृष्टपुष्ट आदमी था और चमड़े का ऊंचा बूट पहने था। प्रेयरी पाइंट तक उसका पीछा किया गया। पर इसके बाद वह मोंटाना में प्रवेश कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आसानी से छिप गया। अमरीकी अधिकारियों को सूचित कर दिया गया है।"

"संभव है, ब्रूनो ने यह कहानी दोपहर में रेडियो पर सुनी हो और उसे अपराधी पर शंका हुई हो, इस पर अपराधी ने उसे गोली मार दी हो।" हर्ली ने कहा।

"हो तो सकता है," मैंने हामी भरी—"लेकिन यह कुछ अजीब लगता है कि कोई थानेदार बिल्ले और आइडेंटिटी कार्ड के बिना काम पर हाजिर हो!"

"तुम क्यों.....", उसके चेहरे का रंग बदलने लगा था। उसने दोनों हाथों की मुट्ठियां बांधी—"मैं तुम्हारे खिलाफ, कानून लागू करनेवाले अफसर का अपमान करने और न्याय-पालन के कार्यों में बाधा पहुंचाने के जुर्म में नालिश करूंगा।" यह कहता हुआ वह घूमकर दूसरे कमरे में चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे वहां पहुंचा। उसने मृत शरीर पर निगाह डाली।

"उस आदमी को मैं जरूर पकड़ूंगा, जो ब्रूनो की हत्या करके भाग गया है।" वह गुस्से से बोला—"लेकिन, एक और भी बात है।" वह कांपता हुआ थोड़ा आगे बढ़ा—"अगर हत्यारा इस तूफान में कहीं नजदीक ही फंसा होगा, तो निश्चित रूप से सिर छुपाने के लिए यहां वापस आयेगा। एक दफा वह हत्या कर चुका है, अतः अपनी गर्दन बचाने के लिए दूसरी दफा कुछ भी करने में नहीं हिचकेगा।"

"लेकिन.....", मैंने शुरू किया ही था कि दरवाजे की खटखटाहट सुनकर रुक गया।

"शर्तिया वही है," उस अजीब थानेदार ने कहा—"भगवान के वास्ते मेरी बंदूक मुझे वापस कर दो!"

"नहीं, उस तरफ दीवार से सटकर खड़े हो जाओ।" मैंने हुक्म दिया।

उसने मेरे हुक्म का पालन किया। मैं भी दरवाजे के आगे से निकलकर दीवार से सटकर खड़ा हो गया। चाबी घुमाकर दरवाजा खोला गया। बर्फ से करीब-करीब ढंका एक आदमी भीतर आया। उसने वैसे ही कपड़े और बूट पहन रखे थे, जैसा लूकस ने अपने बयान में कहा था।

"यही है हत्यारा!" हर्ली चिल्लाया।

मैंने भी महसूस किया कि शायद यही बात हो। मैंने अपना रिवाल्वर उसकी ओर घुमाया और लपककर उसका रिवाल्वर छीन लिया, जिसे वह अभी आधा ही बाहर निकाल पाया था।

"अच्छा स्वागत है!" चारों तरफ देखते हुए विचित्र आगंतुक ने कहा—"लेकिन ऐसा लगता है कि वेतन बांटनेवाले क्लर्क के लुटेरे को तुम पा चुके हो। क्या उसी ने ब्रूनो की हत्या की है? मुझे मेरा रिवाल्वर दे दो और मैं उसकी जिम्मेदारी लेता हूं।"

"न... ऐसा मत करना!" हर्ली जोर से चिल्लाया—"मैं कहता हूं, यही हत्यारा है।"

"तुम गलत कह रहे हो!" आगंतुक ने जोर से कहा—"मैं यहां का थानेदार फिर काउली हूं।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया। लंबाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोटाई और उम्र के हिसाब से वह हर्ली के समान ही था; और दोनों अपने आपको थानेदार बता रहे थे।

"पीछे हटकर खड़े हो जाओ!" मैंने तुरंत हुक्म दिया; चूंकि दोनों ही मुझ पर टूट पड़नेवाले थे। "तुम्हारा बिल्ला और आइडेंटिटी कार्ड कहां है?"

"ओह!" उसने कहा—"जिस समय मुझे सूचना मिली कि कनाडावासी अपराधी भागकर इस तरफ आया है, मैं इतनी जल्दी में चला कि अपना बिल्ला और कार्ड लेना बिलकुल भूल गया।"

"दो थानेदार और दोनों ही बिना बिल्ले और कार्ड के, कमाल है!" मैंने हंसी उड़ाने के इरादे से कहा।

मैं चिंतित था। मेरे पास इसका कोई रास्ता नहीं था कि पुलिस-अफसर और अपराधी की पहचान कर सकूं। मैंने महसूस किया कि उन दोनों में जो भी हत्यारा है, वह समय काटने के लिए यह सब तमाशा रच रहा है।

मैंने उन दोनों को ब्रूनो की लाश को दूसरे कमरे में बिस्तर पर रख आने को कहा। उन्होंने वैसा ही किया और उनके लौट आने पर मैंने उन्हें कपड़े उतारने को कहा। उन्होंने मेरी बात मानी।

मैंने काउली से कहा—"अब तुम हर्ली के कपड़ों की तलाशी लो और वह तुम्हारे कपड़ों की तलाशी लेगा।" तलाशी में दोनों के कपड़ों से करीब-करीब एक ही तरह का सामान निकला—कुछ रेजगारी, तंबाकू और इसी तरह की चीजें। समस्या थी कि अगर उन दोनों में एक अपराधी है, तो लूकस से लूटे गये रुपये कहां गये?

अब यही हो सकता था कि दोनों आदमियों को इसी तरह बंदूक के दायरे में रखूं और तूफान के रुकने का इंतजार करूं; उसके बाद शहर में ले जाकर इनकी पहचान कराऊं। और उन लोगों को मैंने यह बता भी दिया।

"ओह!" काउली बरस पड़ा—"तुम क्या सारे थाने में मेरी हंसी उड़ाना चाहते हो?"

मगर हर्ली मेरी बात से सहमत हो गया और इससे मेरे मन में विश्वास होने लगा कि वही थानेदार है।

"वही हत्यारा है!" हर्ली ने काउली की तरफ उंगली उठाकर कहा—"तुम मुझे अपना कार्य करने में बाधा उपस्थित करके अपने आपको मुसीबत में फंसा रहे हो।"

"याद रखो, मैंने तुम्हें काम के समय सोते हुए पाया है।" मैंने उसे याद दिलाया।

"यह सो रहा था?" काउली उत्तेजना से कांपता हुआ आगे बढ़ा—"डकैती चार दिन पहले हुई और तब से अपराधी इधर-उधर भाग रहा है। उसे कहीं भी सोने की जगह नसीब नहीं हुई।"

यह बड़े महत्व की बात थी।

"और", काउली ने आगे कहा—"तुम कौन हो और यहां कैसे आये?" मैंने उसे अपना नाम बताया और कहा कि मैं बार एम० रैंक कंपनी का भागीदार हूं और उसे चलाता हूं। आज सुबह मैं काम से निकला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि तूफान के कारण रास्ता भटक गया और मुझे इस घर में शरण लेनी पड़ी।

हर्ली और काउली दोनों में से किसी ने कोई सवाल नहीं किया। मौसम का यह हाल था कि बर्फ का गिरना बढ़ता जा रहा था और मैं थकावट महसूस कर रहा था। तूफान को देखकर ऐसा लग रहा था कि सारी रात और अगले सारे दिन यही हालत रहेगी। जब तक तूफान बिलकुल ही थम न जाये, कोई चारा नहीं था। उसके बाद ही यह संभव था कि मैं अपने कैदियों को शहर ले जाऊं, या कोई मेरी तलाश करता हुआ उधर आ निकले।

मैं दो अजनबियों के बीच था, जो मुझ पर झपटने के लिए घात लगाये थे। उनमें से एक निराश हत्यारा था, जो अपनी जान बचाने के लिए निश्चय ही दूसरी हत्या करने में नहीं हिचकेगा। मैं यह सोच रहा था कि सारी रात जग सकूं तो ठीक।

मैंने उन लोगों को सिगड़ी जलाकर खाना बनाने का आदेश दिया। खाना खाते मैं उनसे काफी दूर बैठा और बायें हाथ से ही खाता रहा। दायें हाथ का रिवाल्वर उनकी ओर तना रहा। खाना खाते-खाते मुझे एक उपाय सूझा, जिससे मैं सचाई का पता लगा सकता था, और मैंने निश्चय किया कि उसे काम में लाऊंगा। खाना खत्म होने पर मैंने कागज के दो टुकड़े उन्हें दिये।

मैंने कहा –"इन कागज के टुकड़ों पर अपनी-अपनी पेंसिल से आज की तारीख लिखो। तारीख संख्या में होनी चाहिये, शब्दों में नहीं ....आज १९४८ के दिसंबर की ४ तारीख है।"

वे लोग परेशान हुए। पर मेरा आदेश माना और तारीख लिखी। मैंने उन दोनों के हाथ से वे पुर्जे लेकर उत्सुकतापूर्वक देखा। मेरी चाल सफल रही।

"थानेदार साहब!" काउली से मैंने कहा–"वहां से वह रस्सी का टुकड़ा उठा लीजिये। हम लोग कैदी को बांधेंगे।" काउली ने झटपट रस्सी का टुकड़ा उठा लिया और हमने हर्ली को बांधा। वह भौंचक था।

"लेकिन आपने कैसे .....?" थानेदार काउली ने जानना चाहा।

"बहुत आसानी से," मैंने कहा–"अमरीकी होने के नाते आपने यहां के रिवाज के अनुसार पहले महीना, फिर दिन और अंत में साल इस तरह १२.४.४८ लिखा। हर्ली ने कनाडावासी होने के कारण वहां के ढंग से लिखा–४.१२.४८। इससे सिद्ध हो गया कि यह वही आदमी है, जिसकी तलाश है।"

हर्ली को इस शर्त के साथ कनाडा की पुलिस को सौंप दिया गया कि अगर वह उसे निरपराध घोषित करे, तो उसे तुरंत अमरीकी पुलिस को सौंप दे। उसे बूनो की हत्या की भी तो सजा मिलनी चाहिये।

हर्ली को चौदह साल की कैद की सजा हुई, जिसमें उसने एक ही साल काटा। उसने महसूस किया कि अब वह कभी स्वतंत्र आदमी की तरह जी नहीं सकेगा और उसने जेल की कोठरी में ही रस्सी का फंदा लगाकर मौत को गले लगा लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लखपति बनेंगे आप

लक्ष्मीवल्लभ

यदि आपको सचमुच मौका मिले, तो क्या आप लखपति बनना चाहेंगे? या जैसे हैं, वैसे ही बने रहना अधिक अच्छा समझेंगे? हो सकता है, आप कह उठें—"भला, कौन ऐसा होगा, जिसे अवसर मिले और लखपति न होना चाहे?" लेकिन सच मानिये, संसार में ऐसे भी लोग हैं, जो लखपति नहीं होना चाहते। एक ताजा उदाहरण हम आपके सामने रखते हैं।

इंग्लैंड के एक सज्जन की, देहात में बढ़िया-सी जमीन है ९०० एकड़। भवन-निर्माण योजनावाले पिछले १२ वर्ष से उन्हें मनाने की कोशिश करते आये हैं कि वे अपनी २०० एकड़ भूमि उन्हें बेच दें। उस पर ४,००० मकान बनाये जायेंगे। वे १२,७५० रु० एक एकड़ के हिसाब से दाम चुकाने को तैयार हैं। अपनी एक चौथाई से भी कम जायदाद बेचकर वे सज्जन पूरे १,८५,५०,००० रुपये कमा सकते हैं। पर वे हैं कि इसके लिए तैयार ही नहीं हैं। कारण पूछने पर वे फरमाते हैं—"मेरे लिए मेरा घर, जायदाद ही सब कुछ है। रुपयों के पहाड़ से मेरे लिए यह ज्यादा कीमती है। मानता हूं कि घर बनने चाहिये; लेकिन रुपयों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं। भला शांति और सुंदरता का मोल-भाव कैसे हो सकता है?"

अब बताइये, यदि आपके सामने भी इसी तरह की स्थिति आ जाये, तो आप क्या करेंगे?

लखपति बनने के लिए आपका इरादा कितना पक्का है, आपमें इसके लिए कितनी इच्छा है—इसका पता लगाने के लिए आपके सामने यह मजेदार प्रश्नोत्तरी प्रस्तुत है। जरा इसे आजमाइये। परिणाम देखकर आप दंग रह जायेंगे:

१—क्या आप कभी लाखों कमाने का सपना देखते हैं:

(क) नहीं, कभी नहीं? (ख) कभी-कभी? (ग) अक्सर ही?

२—आप सबसे ज्यादा महत्व इनमें से किसे देते हैं:

(क) सुरक्षा? (ख) मनचाहा करने की आजादी? (ग) भौतिक सुख-सुविधाएं, ऐशो-आराम की चीजें?

३—क्या आपका खयाल है कि लखपति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ग सुखी वर्ग है :

(क) अक्सर चिंता और परेशानियों में फंसे रहते हुए भी वे निश्चय ही सुखी हैं ? (ख) बहुत नहीं ? (ग) बिलकुल नहीं ?

४–जैसे आभूषण नारी के सबसे प्रिय साथी कहे जाते हैं, पुरुष के सबसे प्रिय साथी कौन हैं :

(क) स्टाक और शेयर ? (ख) जायदाद ? (ग) कमाने की शक्ति ?

५–एक मरहूम मित्र मरते समय आपके नाम बहुत बड़ी धनराशि छोड़ गया है, जिसकी आपको कतई आशा न थी । अब क्या आप :

(क) इसे रंगरेलियां मनाने में खर्च करना पसंद करेंगे ? (ख) इसमें से अधिक-से-अधिक धनराशि को बीज की तरह बचाकर रखना चाहेंगे ? (ग) यह धन अपनी पसंद की किसी कमाऊ योजना में लगा देंगे ?

६–अगर आपको अचानक ही कोई बहुत बड़ी दौलत मिलती हो, पर कुछ कारणों से आपका परिवार इसका विरोध करे, तो क्या आप :

(क) परिवार की इच्छा को मान लेंगे? (ख) अपनी इच्छा के अनुसार चलेंगे ? (ग) बीच का रास्ता निकालने की कोशिश करेंगे ?

७–मान लीजिये, आपको लाखों रुपये मिल गये हैं । उस स्थिति में अब बताइये आपको सबसे ज्यादा सुख-संतोष किस बात से होगा :

(क) कि अब काम-धाम नहीं करना पड़ेगा ? (ख) कि अब गुजर आराम से हो रही है ? (ग) कि अब आप खूब खर्च कर सकते हैं ?

८–लखपति हो जाने पर क्या आप :

(क) फिर कोई काम नहीं करेंगे ? (ख) पहले कुछ दिन आराम करेंगे और फिर काम-धाम शुरू कर देंगे ? (ग) पहले कहीं ज्यादा परिश्रम करेंगे, पर काम अपनी पसंद का चुनेंगे ?

९–कहा जाता है कि 'हर आदमी की अपनी कीमत है' । क्या आप इसे सही मानते हैं :

(क) नहीं ? (ख) सोलह आने सच ? (ग) मूलतः सत्य; किंतु सब जगह लागू होनेवाली बात ?

१०–क्या आपकी भी अपनी कीमत है :

(क) सब कुछ परिस्थिति पर निर्भर है ? (ख) शायद नहीं ? (ग) हां, निस्संदेह है ?

११–लाख रुपये आते हों, तो उन्हें लेने की जगह 'ना' कह देना, आपकी राय में क्या है :

(क) बेवकूफी ? (ख) समझदारी ? (ग) हद दर्जे का पागलपन ?

१२–लखपति बनने के अभिलाषी हैं हैसियत से, या लखपति न बनना चाहते हुए भी बताइये कि धन क्यों सुखदायक है :

(क) उससे मिलनेवाली प्रतिष्ठा के कारण ? (ख) साजो-सामान के कारण ? (ग) सत्ता के कारण ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब अपने उत्तर इससे मिलाइये :

१.	(क)	०	(ख)	४	(ग)	१०
२.	(क)	७	(ख)	३	(ग)	१०
३.	(क)	१०	(ख)	५	(ग)	१
४.	(क)	८	(ख)	१०	(ग)	३
५.	(क)	२	(ख)	७	(ग)	१०
६.	(क)	४	(ख)	१०	(ग)	५
७.	(क)	६	(ख)	१०	(ग)	२
८.	(क)	६	(ख)	४	(ग)	१०
९.	(क)	०	(ख)	१०	(ग)	७
१०.	(क)	७	(ख)	२	(ग)	१०
११.	(क)	५	(ख)	१	(ग)	१०
१२.	(क)	५	(ख)	६	(ग)	१०

नंबर एकदम ईमानदारी से दीजिये। ये अंक सही-गलत का फैसला करने के लिए नहीं हैं। ये तो यह पता लगाने के लिए हैं कि आपमें लखपति बनने की कितनी उत्सुकता है।

अच्छा तो बताइये, कितने अंक आये हैं आपके ?

१००, अर्थात् पूर्णांक ? इसमें जरा भी संदेह नहीं कि आपमें लखपति बनने की भरपूर चाह है। आप इसी का सपना देख रहे हैं और मौका आ पहुंचे, तो आप तैयार मिलेंगे और सफल लखपति बन जायेंगे—परिश्रमी और बेरहम !

८० और ९९ के बीच ? जी हां, आप भी लखपति ही हैं; किंतु भ्रूणावस्था में। अवसर मिलने पर लखपति-पद को सफलतापूर्वक निभा ले जायेंगे। बुरा न मानें, आप धन के बारे में बहुत ज्यादा सोचते हैं और यह भी खूब जानते हैं कि उसे कैसे काम में लाया जाये; और दूसरों के हित-अहित की आपको विशेष फिक्र नहीं होगी।

५० और ७९ के बीच ? आप उस सुनहरे अवसर के सपने ही देखते रहते हैं। पर कोरे सपनों से आप कभी कुछ नहीं पायेंगे और कल ही आपकी झोली में लाख रुपये आ जायें, तो आप उन्हें संभाल नहीं पायेंगे।

३० और ४९ के बीच ? जीवन की वास्तविकता आपको हवाई किले बनाने नहीं देती और लाख-करोड़ का आपकी दुनिया में कोई अर्थ नहीं। कृपया अपने रवैये को बदलने की कोशिश न करें। बात यह है, आप आम लोगों से भिन्न नहीं है और न भिन्न हो सकते हैं; और शायद आप उन सब लखपतियों व लखपति बनने के आकांक्षियों से कहीं ज्यादा सुखी हैं।

३० से नीचे ? रुपये-पैसे में आपकी जरा भी रुचि नहीं है, है न ? आप इसे सुख बढ़ाने का या दूसरों का दुःख घटाने का साधन मानने को तैयार नहीं। निस्संदेह आपकी भावना बहुत ऊंची है; पर इसमें यहीं कहीं कुछ कमी भी है।

★

साज-सिंगार कला ही नहीं, बहुत बड़ा व्यापार भी है। विश्वास न हो, तो ब्रिटेन के ही आंकड़े ले लीजिये। वहां की औरतों ने पिछले साल पाउडर, रूज और लिपस्टिक पर ११९ करोड़ रुपये और केशसज्जा पर १३२ करोड़ रुपये खर्च किये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलिये मिस्टर हेलिकाप्टर से

आर्थर हर्जोग

आज से २५ वर्ष पहले जब आइगोर सिकोर्स्की ने स्ट्रैटफोर्ड, कनेक्टीकट (अमरीका) में पहला हेलिकाप्टर उड़ाया, तो इस नयी 'चिड़िया' का बड़ी उत्सुकता के साथ स्वागत किया गया। यह यात्रा-साधनों में क्रांति लानेवाली चीज थी। 'मिस्टर हेलिकाप्टर' उर्फ आइगोर सिकोर्स्की ने कहा कि अब वह दिन दूर नहीं है, जब घरेलू हेलिकाप्टर घरेलू कार की कीमत में मिलने लगेगा और इस तरह हम उस नये 'वायु-युग' में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें हेलिकाप्टर विश्व की खुशहाली में बहुत बड़ा योगदान देगा।

अमरीका में आज १२ हजार हेलिकाप्टर हैं। इनके चार वायुमार्ग हैं—न्यूयार्क, शिकागो, लास एंजेल्स और सानफ्रांसिस्को। नये वायुमार्ग शुरू करने के लिए १७ उम्मीदवारों की अर्जियां पड़ी हुई हैं; पर उन्हें अनुमति नहीं दी जा रही। क्योंकि जो मार्ग अभी चालू हैं, उन पर गौर किया जा रहा है कि वे ठीक से चलें। (अभी चार में से तीन को सरकारी सहायता देनी पड़ती है। वे और अधिक सहायता चाहते हैं, ताकि वह व्यवसाय लाभदायक बन सके।)

भले ही हेलिकाप्टर को बड़ी संख्या में ग्राहक न मिले हों, इसकी खूबियों को दर किनार नहीं किया जा सकता।

सेना ने इसे यातायात और संकट-ग्रस्त लोगों की रक्षा की दृष्टि से बहुत उपयोगी पाया है।

पुलिस इन्हें आवागमन के नियंत्रण कार्य में प्रयुक्त करती है। कभी-कभी भागे हुए अपराधियों को डराकर समर्पण करवाने में हेलिकाप्टर बड़ी मदद देते हैं।

उद्योग और कृषि के क्षेत्र में भी हेलिकाप्टर का प्रयोग हुआ है। उसे फसलों पर दवा छिड़कने तथा दुर्गम स्थानों में यंत्रोपकरण पहुंचाने के काम में लाया जाता है। कुछ लोग इन्हें हवाई टैक्सी के रूप में प्रयुक्त करते हैं।

विमान की अपेक्षा हेलिकाप्टर को अधिक सुरक्षित समझा जाता है। अतः अमरीकी प्रेसिडेंट इसमें नियमित रूप से यात्रा करते हैं।

एक बार मैं इसके भविष्य के संबंध में जानकारी प्राप्त करने 'मि० हेलिकाप्टर' से मिलने गया।

स्ट्रैटफोर्ड में स्थित सिकोर्स्की एयरक्राफ्ट अमरीका के युनाइटेड एयरक्राफ्ट कार्पोरेशन का एक विभाग है। यहां सैकड़ों हेलि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काष्ठर, कतारों में, दैत्यों की तरह जमीन पर पड़े हैं, उन पर तरह-तरह के परीक्षण चल रहे हैं।

आइगोर इवानोविच सिकोर्स्की का जन्म रूस में १८८९ में हुआ था। बचपन से ही वे विमान बनाने और उड़ाने का ख्वाब देखते थे। १२ वर्ष की अवस्था में उन्होंने एक छोटा-सा, उड़नेवाला हेलिकाप्टर का माडल बनाया था, जिसे वे अपनी बैठक में दौड़ाते थे। जब वे २० के हुए, तो उन्होंने असली हेलिकाप्टर बना डाला; मगर अफसोस, वह उड़ा नहीं।

"उड़ने के यंत्र का आविष्कार करना कोई बड़ी बात नहीं है, उसे बना लेने में भी कुछ नहीं है। असल बात तो यह है कि वह उड़े; और यही सब कुछ है।" एक उड्डयन-विशेषज्ञ के शब्द सिकोर्स्की के कानों में गूंजते रहते। आखिर उन्होंने एक दिन सफलता पाकर ही दम लिया। कुछ अरसे बाद सन १९१९ में वे अमरीका आ गये। (रूसी क्रांति में उन्हें कोई खास दिलचस्पी नहीं थी।) यहां बहुत दिन करीब-करीब फाकाकशी में गुजरे। काफी परेशानियों के बाद ही वे चार-इंजिनवाला बममार विमान बनाने में सफल हो पाये। प्रथम विश्वयुद्ध में रूस ने उन्हीं के बनाये बममार विमान काम में लिये थे।

एक रूसी मित्र की आर्थिक सहायता से उन्होंने जुड़वां इंजिनवाला यातायात विमान बना ही लिया। संयोग की बात है कि ऊपर उड़ते हुए उन्होंने पहली बार आकाश में भोजन किया।

सिकोर्स्की पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उभयचर विमान बनाये, जो उड़ते भी थे और समुद्र पर भी चलते थे। इस बीच उनकी कंपनी युनाइटेड एयरक्राफ्ट निगम में विलीन हो गयी और वे हेलिकाप्टर बनाने को उन्मुख हुए।

हेलिकाप्टर पहले भी बनते थे; पर काम के न थे। सिकोर्स्की ने बड़ी सूझबूझ के साथ उपयोगी हेलिकाप्टर बनाया। जब वे उसका परीक्षण करने उड़े, उस समय फेल्ट हैट पहने हुए थे। उड़कर मजे से नीचे उतरे। फेल्ट हैट भी जमीन पर लौटा; पर वह ज्यों-का-त्यों उनके सिर पर विराजमान था।

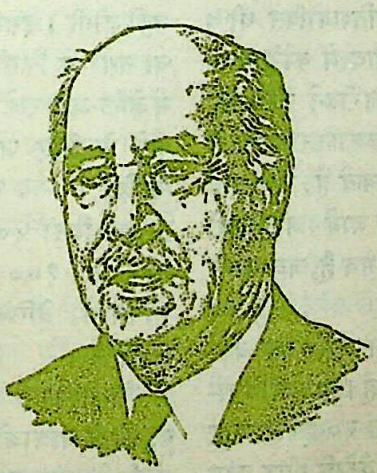

आइगोर सिकोर्स्की

तब से सिकोर्स्की ने अभूतपूर्व सफलता पायी है और अब उनका नाम बड़े-बड़े विमान-विद्या-विशारदों में गिना जाता है। पर उनके स्वभाव में वही विनम्रता और सौजन्य है, जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता से पूर्व उनमें था। उन्हें जिस बात का सचमुच गर्व है, वह यह है कि हेलिकाप्टरों ने असंख्य लोगों की जानें बचायी हैं।

यद्यपि १९५७ में वे सेवा-निवृत्त हो गये थे; लेकिन सक्रिय सलाहकार के रूप में अब भी ५-६ घंटे काम करते हैं। दफ्तर में कभी किसी ने उन्हें जोर से बोलते नहीं सुना। बड़े मिलनसार और आकर्षक व्यवहार-वाले सिकोर्स्की ढाले-ढीले कपड़े पहनते हैं; उनकी पोशाक उड़ाकों की जैसी होती है।

मैंने पूछा—"आपने २५ वर्ष पूर्व, हेलिकाप्टरों के बहुतायत से काम में आने की जो भविष्यवाणी की थी, उसके बारे में अब आप क्या कहते हैं?"

बोले—"१९४० में मैंने जो कुछ कहा था, लगता है, उसमें कुछ अतिशयोक्ति थी। अमरीकी लोग जिस तादाद में कारें आदि खरीदते हैं, हेलिकाप्टर खरीदने को उतने उत्सुक नहीं दिखते। हेलिकाप्टर कारों के बराबर सस्ते तभी बन सकते हैं, जब उन्हें भी बड़ी संख्या में बनाया जाये। और बड़ी संख्या में उत्पादन तभी संभव है, जब उसके अनुसार ग्राहक मिलें।"

सिकोर्स्की की कंपनी ने अभी तक बड़े-बड़े हेलिकाप्टर ही बनाये हैं। चार यात्रियों-वाले हेलिकाप्टर की लागत २० हजार और ४० हजार डालर के बीच बैठेगी। पर लोग निजी हेलिकाप्टर रखने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हुए नहीं दिखते। विमानों की अपेक्षा इन्हें चलाने में न केवल हेलिकाप्टर यंत्र की जानकारी, बल्कि मौसम और वायु-यातायात संबंधी बातों पर बहुत ध्यान देना पड़ता है। इस तरह खासी माथापच्ची है इसमें।

"नगर के मध्य हेलि-अड्डे रखने के संबंध में जो आपत्तियां हैं, उनका आपके पास क्या समाधान है?" मेरे यह पूछने पर उन्होंने कहा—"दरअसल हेलिकाप्टर की विशेषता यह है कि वह पालतू जानवर की तरह है। उसका मिजाज समझना पड़ता है। न्यूयार्क विश्व-मेले के हेलि-अड्डे पर १० हजार बार हेलिकाप्टर उतरे और चढ़े। पर एक भी दुर्घटना नहीं हुई; जबकि उतरने का चबूतरा सिर्फ १२० फुट ऊंचा था। ऊंचे मकान पर भी हेलिकाप्टर मजे से उतारा जा सकता है, गली के लोगों की शांति भंग नहीं होगी। इसलिए मकानों की छतों पर या नगर में किसी अन्य सुविधाजनक स्थान में हेलि-अड्डे रखे जा सकते हैं। और हेलि-अड्डे के लिए जगह भी तो जरा-सी ही चाहिये।"

इन दिनों ५० यात्री-वाहक हेलिकाप्टर मौजूद हैं। १०० या इससे ज्यादा यात्री ले जानेवाले हेलिकाप्टर भी बनाये जा सकते हैं।

सिकोर्स्की ने आगे बताया—"मैं समझता हूं, छोटी यात्राओं में हेलिकाप्टर बड़ा उपयोगी है। उदाहरणतया, न्यूयार्क से वाशिंग्टन जाना हो, तो इससे जल्दी सफर किया जा सकता है। यह १५० मील प्रति घंटे आराम से तय करता है। यदि हेलि-अड्डा नगर के बीच हो, तो सफर और भी जल्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तय होगा। नगर से हवाई-अड्डे तक पहुंचने में काफी वक्त खराब होता है, उसकी बचत होगी। हम ऐसे हेलिकाप्टर बनाने की सोच रहे हैं, जिनमें कई इंजिन हुआ करेंगे और ये २०० से ३०० मील प्रति घंटे की गति से दौड़ेंगे। यदि नगर के बीच हेलि-अड्डे होंगे, तो इससे दूसरा लाभ यह होगा कि छोटी यात्रा पर जानेवालों की जो भीड़ हवाई-अड्डों पर हुआ करती है, वह काफी कम हो जायेगी।"

विकास की आवश्यकताओं के कारण हवाई-अड्डों का नगरों से काफी दूर रखा जाना आवश्यक हो गया है। हेलिकाप्टर इसमें सहायक होंगे। ये यात्रियों को नगर से दूरस्थ हवाई-अड्डों पर तुरंत पहुंचा देंगे।

न्यूयार्क से सानफ्रांसिस्को की सुपरसानिक विमान से यात्रा करने में विमान-यात्रा में उतना समय नहीं लगता, जितना दोनों तरफ नगर से हवाई अड्डे तक आने-जाने में लगता है। हेलिकाप्टर कुछ ही मिनिटों में यात्री को नगर से हवाई-अड्डे पर पहुंचा देगा।

सिकोर्स्की के मस्तिष्क में हेलिकाप्टर से परिवहन में क्रांति लाने की एक और योजना है। वह है क्रेन-हेलिकाप्टर से यात्रियों के आवागमन की योजना। ऐसे हेलिकाप्टर के कैबिन पोर्टेबल हुआ करेंगे। आज ५० से १०० यात्रियों को अपने माल-असबाब सहित हेलिकाप्टर में बैठने-उतरने में कई मिनिट लग जाते हैं। क्रेन-हेलिकाप्टर से पोर्टेबल कैबिन को अलग करने में एक मिनिट से भी कम समय लगेगा। यात्री हेलि-अड्डे के लाउंज से इस कैबिन में बैठेंगे, क्रेन-हेलिकाप्टर इस कैबिन को कुछ ही मिनिट में हवाई-अड्डे पर उतार देगा और यात्री यहां से विमान में जा बैठेंगे। उन्हें मौसम से—धूप या बारिश से कोई वास्ता नहीं पड़ेगा, न उन्हें हवाई-अड्डे पर पहुंचने की हड़बड़ी रहेगी।

इतना ही नहीं, माल ढोनेवाले विमान भारी और बड़े आकार का ऐसा माल-असबाब भी विमान-अड्डों पर ला सकेंगे, जिसे इन दिनों स्थलमार्ग से ढोना असंभव है। क्रेन-हेलिकाप्टर इसे हवाई-अड्डे से उठाकर उन अभीष्ट स्थानों यानी कारखानों, फैक्टरियों या मकानों तक पहुंचा देंगे, जहां अन्यथा पहुंचाना बड़ा कठिन होता।

हवाई-अड्डे से १०० मील के गंतव्य तक और १०० टन या अधिक भार ढोनेवाले क्रेन-हेलिकाप्टर बनाये जा सकेंगे।

मैंने सिकोर्स्की से प्रश्न किया—"हेलिकाप्टर उद्योग का यंत्र-तंत्र जब इतना आगे बढ़ चुका है, तब भी काम इतना कम क्यों हुआ है कि वह आत्मनिर्भर न हो सका।"

उन्होंने उत्तर दिया—"मैं नहीं समझता कि हेलिकाप्टर की प्रगति निराशाजनक है। जब विमान-सेवाएं शुरू हुई थीं, तो वर्षों तक उन्हें सरकारी सहायता की जरूरत पड़ी थी। वे २५ वें वर्ष में जाकर अच्छी स्थिति में आयीं। हेलिकाप्टर को अभी २५ वर्ष नहीं हुए। मैं नहीं समझता कि इसे हमेशा सहायता की जरूरत रहेगी। शायद ५ या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१० वर्ष काफी होंगे।

"मेरे खयाल से हेलिकाप्टर ने लगभग ५० हजार विपदाग्रस्त स्थानों में सहायता-कार्य किया है और एक लाख से भी ज्यादा लोगों की जानें बचायी हैं। यह अमरीका के इस नये-नन्हे उद्योग पर गर्व करने की बात है। कोरिया-युद्ध से पहले, सिर और पेट के घायल सैनिक ८० से ९० प्रतिशत मर जाते थे। कोरिया में यह प्रतिशत १० पर आ गया था—कारण, हेलिकाप्टरों से घायलों को तुरंत अस्पताल ले आया जाता था।"

सिकोर्स्की ने मुझसे पूछा—"क्या आपने कभी हेलिकाप्टर में उड़ान ली है? बड़ा मजा आता है। क्या एक बार आजमाइश करना पसंद करेंगे?"

सच तो यह है कि हममें से बहुतों ने हेलिकाप्टर का आनंद नहीं लिया और इसके बिना ही उसकी नुक्ताचीनी करते हैं। मैं भी ऐसे ही लोगों में था। सिकोर्स्की मुझे जब हेलिकाप्टर की सैर कराने लाये, तो मार्ग में मुझे उन्होंने तरह-तरह के हेलिकाप्टर दिखाये। मैंने सोनार-उपकरणों से लैस एक ऐसा समुद्री हेलिकाप्टर देखा, जिसका नियंत्रण बड़ी नाजुकी के साथ होता है। यह लहरों पर और हवा में बिलकुल गतिहीन भी रह सकता है। एक १०० फुट लंबा क्रेन-हेलिकाप्टर देखा, जो १० टन वजन ढो सकता है। एक हेलिकाप्टर में पोर्टेबल कैबिन को इंजीनियर लोग चलते-फिरते अस्पतालों में बदलने का विचार कर रहे थे। ड्राइंग बोर्डों पर दर्जनों प्रकार के हेलिकाप्टर बनाने के नक्शे बने थे। एक छोटा-सा हेलिकाप्टर ऐसा भी बना है, जो धरती पर स्थित अणु-तरंगों से संचालित होता है।

मैदान में आने पर बोर्ड ने टोका—"सिगरेट बुझाओ। कुर्सी की पट्टी बांध लो।" हम ऊपर चढ़े। जमीन से दो फुट ऊपर हेलिकाप्टर चक्कर लगाने लगा। इससे पहले कि सिर चकराये, वह पीछे लौटा, फिर आगे बढ़ा और यह लो, हम १,५०० फुट ऊपर आ गये। सच ही, हेलिकाप्टर में उड़ना सपने-सा सुहाना है। सब कुछ अपने आप होता है। आप इधर जाना चाहते हैं, इधर जा रहे हैं; आप उधर जाना चाहते हैं, लीजिये, उधर जा रहे हैं। आगे जाना चाहते हैं, आगे जा रहे हैं।

★

हमारी प्रत्येक बौद्धिक क्रिया और सृजनात्मक प्रवृत्ति का संबंध दिमाग के कोशों और उनकी विद्युत्-प्रक्रिया से होता है। हम कोई १०-१२ अरब दिमागी कोश लेकर पैदा होते हैं। जो कोश नष्ट हो जायें, उनकी जगह नये नहीं बनते। ठीक ढंग से काम करने के लिए इन कोशों को रक्तवाहिनियों से लगातार आक्सिजन और कई शारीरिक रसायन मिलते रहने चाहिये। बुढ़ापा आने के साथ-साथ प्रायः आक्सिजन-युक्त रक्त का संचार धीमा पड़ने लगता है और दिमाग के कोश नष्ट होते जाते हैं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

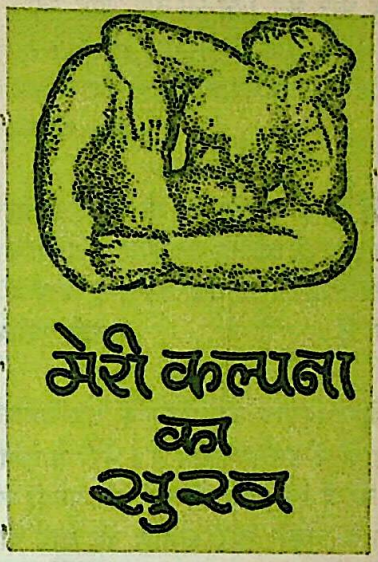

ऐसे सपनों के गांव में रहूं, जहां कांटे न हों; अपितु फूलों की छांह हो। जहां कोई दुःख न हो, गम न हो। जहां कोई मिलकर न बिछुड़े, खुशी के आंसू बहें। जहां प्यार नीलाम न हो और अरमान छोटी उम्र के बच्चों की तरह दफनाये न जायें। जहां विश्वास के खेत में सोने की बालें उगें और उस खेत की मेंढ़ पर खड़ा मैं अपना राष्ट्र-गीत गाता रहूं। —सुरेंद्रकुमार शर्मा

०००

मेरा एकमात्र पुत्र नेहरूजी की भांति सभी गुणों से संपन्न और उनके दोषों से मुक्त होकर देश का ऐसा सच्चा सेवक बने कि मैं उसकी जननी बनने का गौरव अनुभव कर सकूं। —प्रभा पाराशर

०००

वह स्वर्ण-युग, जब इस देश में दूध की नदियां बहा करती थीं, सोने-चांदी के भंडार भरे पड़े थे, नालंदा व तक्षशिला-जैसे विश्वविख्यात शिक्षा-केंद्रों में अध्ययन करने के लिए दूर-दूर से लोग पैदल तक आया करते थे, विद्वानों का सम्मान था, जनता सुखी थी। —आर० स्वामीनाथ

०००

व्यक्ति सभी दृष्टियों से चाहे कितना भी समृद्धिशाली हो जाये; किंतु अगर उसके घर-परिवार से गार्हस्थ्य-रस की पुनीत स्रोतस्विनी सूख चुकी है, तो उसका जीवन भार और अस्तित्व का औपचारिक निर्वाह मात्र रह जायेगा। अतः मेरी कामना है—सुखी-संतुष्ट पारिवारिक जीवन, जिस पर संपूर्ण जीवन की सफलता अवलंबित है। —सत्येंद्र चतुर्वेदी

०००

हमारे देश में ऐसे शिक्षा-संस्थान हों, जिनमें बड़े-बड़े सचिवों से लेकर चपरासियों तक के बच्चे एक साथ पढ़ें। कोई पब्लिक, कान्वेंट, सैनिक या अन्य किसी प्रकार के विशिष्ट स्कूल न हों, ताकि वर्ग-विहीन समाज पनप सके और चारों ओर सुख-शांत फैल सके। —कमला रानी साधना

०००

मेरे घर की हालत ऐसी रही है कि दो वक्त पेट भरने की भी समस्या थी। परिणामस्वरूप मेरी महत्वाकांक्षाओं का रूप भी वैसा ही रहा। मैंने तैसे-जैसे मैट्रिक किया और सौभाग्य से स्कालरशिप मिल गया। आज मैं इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हूं और उस दिन की बाट जोह रहा हूं, जब मैं इंजीनियर बनकर अपने देश के उद्योग-उत्पादन में प्रत्यक्ष हाथ बंटा सकूंगा।

—एन० वीरप्पन

०००

मैं दुःख चाहती हूं, जो बिना प्रतीक्षा किये सुख की कल्पना की तरह अचानक आ जाता है और फिर उसी की तरह चला भी जाता है।

—देवी परीख

०००

मेरा दिमाग सामाजिक व राजनीतिक विचारों में उलझा रहता है। मेरी धारणा तो यह है कि राष्ट्र की बागडोर पुरुषों के हाथ से लेकर नारी-समाज को सौंप दी जाये।

—भंवरलाल चौधरी

०००

सादगी और स्वच्छता के बीच बैठी मैं विभिन्न वाद्य-यंत्रों या संगीत की मधुर ध्वनि सुनती रहूं। मेरे दोनों ओर उच्च कोटि के साहित्य का ढेर हो, सामने महा-प्राण मनस्वी निराला जैसी दृष्टिवाला कोई व्यक्ति हो, जो मेरे भावों को अपने अंत-राल में स्थान दे सके।

—गीता

अपने अध्यवसाय से मैं इतना धन पैदा करूं कि अभावग्रस्तों को देने के बाद भी बच जाये, जिससे मैं सारी दुनिया का चक्कर लगा आऊं—यहां तक कि चंद्रलोक की यात्रा भी कर आऊं।

—नंदलाल परशुरामका

०००

मेरे गांव में इतनी ज्यादा गरीबी है कि देखकर दिल दहल जाता है। आज से दस वर्ष पहले मैंने प्रण किया कि वहां एक फ्री डिस्पेंसरी खुलवाऊंगी, जिसके लिए कुछ अपने पास से दूंगी; कुछ सरकार से मदद मिल जायेगी, तो काम हो जायेगा। लेकिन सरकारी नियमानुसार ४-५ मील के अंदर अस्पताल होने से सरकार से मदद नहीं मिल पायी। हमारे घर से ४-५ मील दूर एक छोटा-सा अस्पताल कुछ दिन पहले खुला है। फिर भी बरसात में इतनी दूर मरीज को बिना सवारी के ले जाना मुश्किल होता है। इसलिए मैं अपने घर का एक हिस्सा भी और कुछ सहायता भी डिस्पेंसरी के लिए देने को तैयार हूं। जिस दिन मेरे गांव में डिस्पेंसरी खुल जायेगी, मुझे बेहद खुशी होगी।

—यशोदा देवी

★

हम यही करते हैं। बहुत भरोसा अपना बांध लेते हैं। ऐसे सच को छोड़ देते हैं, झूठ को ओढ़ लेते हैं। झूठ के तो पैर होते नहीं हैं। वह चल नहीं सकता। चलता है, तो सच के पैरों पर सवार होकर। बुद्धिमानी के जोर पर जब हम उसी को चलाने की जिद करते हैं, जो जिद गिरती है, और लगता है, जैसे हम हारते जा रहे हैं। पर हार वह हमारी नहीं होती, सिर्फ मिथ्या की होती है—वैसे ही जैसे जीत हमारी नहीं होती, सिर्फ सत्य की होती है।

प्रेषिका—निर्मला शर्मा

—जैनेंद्रकुमार (विवर्त)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे पड़ोसी : पेड़-पौधे

सुरेश वैद्य

सन १९४८ में बंबई में एक तूफान आया था, जिसने सड़कों के किनारे खड़े बहुत-से पेड़ उखाड़ फेंके थे। मैंने पेड़ों के गिरने का दृश्य यद्यपि जीवन में पहली बार नहीं देखा था; पर मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गिरे हुए वृक्ष काफी मोटे-तगड़े थे, हर एक का तना कई फुट व्यास का था। यही नहीं, इन वृक्षों को न तो कोई बीमारी थी और न ये पुराने थे।

अपने मित्रों से मैंने इसका कारण जानना चाहा। मैं समझता था कि वृक्ष बहुत मजबूत और लचीले होते हैं। एक मित्र का उत्तर मुझे बड़ा तर्कसंगत लगा। उसने कहा—"जरा इन वृक्षों के थाले पर गौर करो। इनके आस-पास की जमीन को पक्का कर दिया गया है। इनकी जड़ों तक बारिश का पानी पहुंचने के लिए खुली जमीन बिलकुल ही नहीं छोड़ी गयी। यह ठीक है कि ये बड़े हैं; पर बिना भरपूर पानी के ये कैसे जिंदा रह सकते हैं?"

यह घटना एक संयोग मात्र थी; पर इसने मुझे सोचने-विचारने को बाध्य कर दिया और मैं वृक्षों में दिलचस्पी लेने लगा। उनमें मेरी रुचि उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। वृक्षों का संसार मेरे लिए सजीव हो गया। अब मैंने जाना कि पेड़ों की नस्लों की संख्या बहुत बड़ी है। वे चेतन हैं और उनके अपने गुण और अपनी विशेषताएं हैं।

हममें से शायद बहुत-से लोग इस बात से भी बेखबर हैं कि हमारे घरों में फर्नीचर, मकान में लगनेवाला बहुत-सा सामान, फल, जलाने की लकड़ी, यहां तक कि हमारी बहुत-सी दवाइयां भी पेड़-पौधों से ही प्राप्त होती हैं। यही नहीं, वे हमें छाया देते हैं और आंधी-तूफानों को रोकने में भी बहुत कुछ हाथ बंटाते हैं।

उपयोगी होने के अतिरिक्त पेड़-पौधे अपने आपमें भी दिलचस्पी की चीज हैं। वृक्षों की किसी भी जाति को लीजिये। हर जाति के पेड़ की अपनी खूबियां हैं, उसकी पत्तियों का अपना आकार-प्रकार है, फलने-फूलने का अपना मौसम है और उसके फल-फूल भी सबसे अलग-अलग हैं। एक जाति के वृक्ष की विशेषताओं की हूबहू नकल दूसरी और कोई जाति नहीं करती। अकेले भारत में ही वृक्षों की ३४ हजार अलग-अलग जातियां हैं; और हर जाति की अपनी अलग पहचान है।

जलवायु के संबंध में भी वृक्षों की रुचियां अलग-अलग हैं। कुछ को सर्द आबोहवा रास आती है, तो कुछ को गरम। कुछ धूप के बिना जी नहीं सकते, तो कुछ ऐसे हैं, जिन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा-सी ज्यादा धूप लगी कि प्राण-पखेरू उड़ गये। कइयों को खूब-सारा पानी पीने की आदत है, तो कई वृक्ष ऐसे भी हैं, जो बिना पानी के भी काम चला लेते हैं।

भोजन भी उन्हें अपनी पसंद का मिलना चाहिये। मेरे एक मित्र के बाग में संतरे के दो पेड़ थे। वह उनकी बराबर देखभाल करता था, उन्हें पानी और समुचित खाद देता था। इस पर भी उनके फल खट्टे होते थे। एक बार उसने कुछ चूहे मारे और उन्हें संतरे के पेड़ों के पास गाड़ दिया। मजाक तो देखिये कि अगले मौसम में जब इन पेड़ों पर फल लगे, तो वे एकदम मीठे और जायकेदार थे। जाहिर है कि चूहे उन पेड़ों का मनपसंद भोजन थे। तब से उन्हें चूहे खिलाये जाते हैं।

भले ही वृक्षों में मेरी रुचि बहुत बाद में जागृत हुई, उनसे मेरा संपर्क बचपन में ही हो चुका था। मेरी ननिहाल गांव में थी। नानाजी के घर में इमली का पेड़ था। खट्टी-

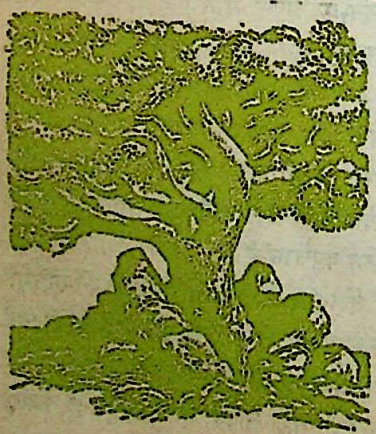

खट्टी इमली के नाम से ही हमारे मुंह में पानी भर आता था। पेड़ काफी बड़ा था। खूब छाया होती थी। दोपहरी में इमली की छांह मेंखाटें बिछाकर आराम करना भी बड़ा ही सुखदायी होता था।

हमारे अपने गांव के घर में भी पेड़ थे। उनमें फलनेवाले पेड़ मुझे आज भी खूब याद हैं। वे थे काजू, कटहल, सीताफल और आम के पेड़। हमारे यहां कोई ५० पेड़ थे आम के। उनमें चूसे जानेवाले आम के पेड़ों की संख्या ज्यादा थी।

हमारे बाग में अलफांजो (हापूस-आम) के भी छः पेड़ थे। वे पेड़ हमारे देसी आमों के पेड़ों से छोटे होते थे; पर उनमें आम बड़े लगते थे और उन्हें तोड़ने में भी बड़ी सावधानी बरती जाती थी। उन्हें पकने से पहले ही तोड़ लिया जाता था और सूखी घास में पकाया जाता था।

दरअसल उन दिनों मेरी दिलचस्पी, पेड़ों से ज्यादा, उनके फलों में थी। आम का पेड़ फल देने के अलावा और भी किसी काम आता है, इस पर मेरा ध्यान बाद में गया। हममें कितने हैं, जो जानते हैं कि आम की लकड़ी दरवाजे, खिड़कियां और चौखटों के काम भी आती है? हालांकि यह लकड़ी ऊंचे दर्जे की नहीं है; पर टिकाऊ और सस्ती होती है। इसकी छाया भी घनी होती है और अमराई में स्थित मकानों में गर्मी में ठंडक रहती है।

बरगद हमारे देश का अनोखा वृक्ष है। इससे भी मेरा परिचय बचपन में ही हो गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। हमारे छोटे-से गांव में बरगद के कई पेड़ थे। इस पेड़ के कई तने होते हैं और ऐसे ही किसी छतनार बरगद के तले घूमते-फिरते हुए ऐसा लगता है, मानो हम किसी बड़े 'हाल' में घूम रहे हैं, जो बहुत-से खंभों पर खड़ा है। हमें इसकी ठंडी छाया व एकांत बहुत भाते थे। चिड़ियों का तो इस पर जम-घट लगा रहता है। गांवों में अक्सर कुछ बरगद भुतहे समझे जाते हैं। पर भूतों को रहने के लिए बरगद ही क्यों रास आते हैं?

वटवृक्ष प्रकृति का विचित्र कौतुक है। इसकी जड़ें इसकी डालियों पर उगती हैं और लटकती-लटकती जमीन पर चढ़ जाती हैं। फिर जमीन को खोदकर उसमें घुस जाती हैं और तने का रूप धारण कर लेती हैं। इस तरह बरगद बढ़ता-फैलता जाता है। कलकत्ता के बोटैनिकल गार्डन में खड़े बरगद महाशय के ५०० तने हैं और अपने सिर पर ये हजरत २००० फुट की परिधिवाला छत्र धारण किये हुए हैं।

बरगद बड़े जीवट का वृक्ष है। यह जल-वायु और जमीन की अच्छाई का मोहताज नहीं—हर जगह उग सकता है। लकड़ी रेशे-दार होती है, अतः ज्यादा काम की नहीं। उसकी पत्तियां भी हाथी के अलावा और किसी को नहीं भातीं।

पास-पड़ोस के मकानों के लिए बरगद मुसीबत बन सकता है। प्रायः यह बढ़ते-फैलते आस-पास के घरों में घुस जाता है और उन्हें तोड़-फोड़कर नष्ट कर देता है। सच तो यह है कि बरगद को कोई नहीं उगाता, सिवा तोतों के। मई में बरगद के फल पकते हैं और तोते उन्हें बड़े चाव से खाते हैं और जगह-जगह बीट करते फिरते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि उनकी बीट में अनपचे बीज किसी पेड़ के तने या डालियों के खांचे में पड़े-पड़े अंकुरित हो जाते हैं। यह नया पौधा अपनी जड़ें जमीन तक फैलाना शुरू करता है। जिस पेड़ पर यह जन्म लेता है, उसे घेर लेता है, धीरे-धीरे उसे खा जाता है और उस स्थान पर फिर सिर्फ बरगद रह जाता है। इस तरह बरगद फैलना-फूलना शुरू करता है और सैकड़ों बरस जीता है।

उत्तर भारत में रहने से नीम के पेड़ की तरफ मेरा ध्यान खास तौर से गया। वैसे नीम देश के बहुत-से भागों में पाया जाता है; पर उत्तर की गरम और शुष्क जलवायु में यह बहुत फलता-फूलता है। हर सड़क, बाग और खेत में आप इसे पायेंगे। यह पेड़ सुंदर सीधा उगता है, पत्तियां छोटी और कटाव-दार होती हैं। यह बारह मास हरा रहता है। अपनी ठंडी छांह के लिए तो यह बहुत मशहूर है।

मुझे भरतपुर की एक घटना याद आती है। गर्मी के दिन थे। दोपहर का समय था। तेज लू हमारे तन-बदन को जला रही थी और ऐसे में देहाती प्रदेश में सफर करना पड़ रहा था। लेकिन जैसे ही हम भरतपुर-जयपुर सड़क पर पहुंचे, जिसके दोनों तरफ नीम के पेड़ों की कतारें हैं, हमें लगा, एक नयी दुनिया में आ गये हैं। सूरज मानो ढांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया गया हो, लू भी बेअसर थी।

नीम की लकड़ी कई घरेलू जरूरतें पूरी करती है। इसकी छाल, गोंद और बौर दवाएं बनाने में उपयोगी हैं। ऊंट को छोड़, और कोई पशु इसकी पत्तियां नहीं खाता। अतः उगते वक्त पशुओं पर निगरानी रखने की भी कोई खास किल्लत नहीं।

बबूल भारत में बहुतायत से पाया जानेवाला वृक्ष है। मुझे इससे हमेशा नफरत रही है, इसके कांटों के कारण। आप इसके निकट गये, तो अपनी गंदी आदत के अनुसार ये देह में चुभकर लहूलुहान कर देंगे। मैं तो इनसे बचकर चलना पसंद करता हूं। देखने में बबूल भद्दा तो दिखता ही है, छाया भी इसकी नहीं के बराबर होती है। पर किसान के लिए यह वरदान है। इसके जिन कांटों से हम डरते हैं, किसान के लिए ये प्रतिरोधक हथियारों का काम देते हैं। वह अपने खेतों और बाग-बगीचों के किनारों पर बाड़ के रूप में इन्हें खड़ा कर देता है और ये प्रतिरक्षा-प्रहरियों की तरह तैनात रह कर उनकी रक्षा करते हैं।

बबूल की लकड़ी कड़ी होती है, यह वह बैलगाड़ी के पहिये बनाने के लिए बहु उम्दा है। इस लकड़ी के बने पहिये ही ऊबड़ खाबड़ और पथरीली जमीन पर चल पाते हैं। और किसी किस्म की लकड़ी में इतना दबाव और झटके सहने का यह दम-खम नहीं पाया जाता।

इसके अलावा बबूल 'हर देश-पसंद' पेड़ है और किसी भी जलवायु में उग सकता है। वर्षा, गर्मी, नमी या सूखा—किसी का इस पर असर नहीं होता। आप उसे उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों के हरे - भरे मैदानों में पायेंगे और रेगिस्तान के वियाबानों में भी। सचाई तो यह है कि यही एक ऐसा पेड़ है, जिसका घर सारा हिन्दुस्तान है।

['आकाशवाणी' से साभार]

★

नेहरूजी सन १९३६ में तमिलनाड की यात्रा के दौरान कोयंबतूर जिले का भ्रमण करके मदुराई के लिए रवाना हो रहे थे। उस समय वहां की जिला कांग्रेस के अध्यक्ष थे श्री टी० एस० अविनाशिलिंगम् चेट्टियार, जो बाद में मद्रास सरकार के शिक्षा-मंत्री भी रहे। नेहरूजी को विदा करते समय उन्होंने देखा कि पंडितजी के दोनों हाथों पर हथेली से लेकर कुहनी तक ताजे नखक्षत बने हुए हैं और कहीं-कहीं खून की बूंदें भी छलक आयी हैं। चेट्टियार घबरा गये। पिछली रात को सैकड़ों ग्रामीण नर-नारियों का समूह उमड़ पड़ा था, जिसने नेहरूजी के हाथों को दबाकर अपना स्नेह और समादर प्रदर्शित किया था। ये नखक्षत उन्हीं के चिह्न थे। चेट्टियार ने खेद प्रकट किया—"हमारे जिले के लोगों ने आपको यह तकलीफ दी; मैं उनकी ओर से माफी चाहता हूं आपसे।"

नेहरूजी मुस्कराकर बोले—"अरे भाई, मुझे तो यह अफसोस है कि खरोंचें जल्दी भर जायेंगी। ये जनता के स्नेह-चिह्न हैं।"

—एस० राजगोपालन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी उलझनें

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी कोई पारिवारिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक समस्या संक्षेप में लिखकर भेज सकते हैं। शारीरिक रोगों के संबंध में कृपया हमें न लिखें। सम्पादक]

नाखून काटने की आदत

मैं २५ वर्ष का नौजवान हूं, जीवन सुस्थिर और सुव्यवस्थित है। मेरे भीतर (जाने कब से) एक बुरी आदत पनप गयी है – अपनी उंगलियां और नाखून काटने की। पिछले कुछ वर्षों में यह आदत इतनी बढ़ गयी है कि अब मैं ज्यादातर अपनी उंगलियों और हथेली की चमड़ी को काटता रहता हूं। फलस्वरूप हथेली पर जगह-जगह खरोंचें हो गयी हैं। बहुत चाहा, बहुत कोशिशें कीं कि ऐसा न करूं, पर इस कुटेव से पीछा नहीं छुड़ा पाया।

जब किसी से नयी मुलाकात होती है, तो मुझे बेहद परेशानी होती है; शर्म के कारण उससे हाथ मिलाने में हिचकता हूं। यों तो हथेली की खरोंचे हर समय खराब नहीं दिखतीं, किंतु स्नान या भोजन के बाद ये बहुत ही भद्दी दिखती हैं। मुझे लगता है, शायद यह साबुन इस्तेमाल करने या दही खाने के कारण होता है। यों स्वभाव से मैं मिलनसार हूं, लोगों से मिलना-जुलना पसंद करता हूं; पर अपनी इस दयनीय स्थिति के कारण लोगों से दूर रहने को विवश हूं। बताइये, मैं क्या करूं।

—अनाम

आपके पत्र से जो थोड़ी-सी जानकारी मिलती है, उसके आधार पर यह पता नहीं लगाया जा सकता कि आपमें यह आदत क्यों पनपी। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से माना जाता है कि इस आदत के पीछे अपने को कष्ट देने और अपने व्यक्तित्व को बिगाड़ने की आत्मविनाशक प्रवृत्तियां काम करती हैं। ऐसा करने के कारण बहुत गहरे और ठोस होते हैं।

५ और ८ वर्ष के बीच की उम्रवाले बच्चों में यह आदत आम होती है; पर समय के साथ, या तो वे इस कुटेव को छोड़ देते हैं या फिर यह उनमें किसी रुचिकर का या तल्लीनता का रूप ले लेती है।

कुछेक मामलों में यह आदत बड़ी उम्र तक चिपकी रहती है। उदाहरण के लिए, बड़ों के साथ अक्सर यह देखने में आता है कि जब वे किसी कठिन परिस्थिति में फंसकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, तो अपने नाखून काटने लगते हैं। बच्चे भी ऐसी परिस्थिति में सामान्यतः यही करते हैं।

उंगली किसी-न-किसी का प्रतीक होती है, वह स्वयं आपका, मां-बाप का या किसी और वस्तु (जैसे पुलिसमैन, अध्यापक या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरकार) का प्रतीक होती है। काटे जाने से इसे पीड़ा या सजा मिलती है और यह कुरूप भी होती है। इस प्रकार यह (उंगली) आक्रमण की शिकार है, जो इस पर होता रहता है (काटने के रूप में) और इनसे यह तनाव कम करने में सहायक होती है।

देखा गया है कि काटने की क्रिया तब होती है, जब आदमी किसी और खयाल में डूबा हुआ होता है। किसी परिस्थिति ने जितना अधिक तनाव उत्पन्न किया है, व्यक्ति उतना ही अधिक नाखून काटने की क्रिया में तल्लीन रहेगा।

जो बच्चे लगातार नाखून काटते रहते हैं, वे मां-बाप का दिल जलाते हैं। इस बात को लाक्षणिक रूप में लीजिये। नाखून, जो सख्त और खुरदरा है, पिता का प्रतीक है। चमड़ी, जो नरम और नाजुक है, मां का प्रतीक है। इस प्रकार नाखून और चमड़ी मिलकर मां-बाप के प्रतीक का काम देते हैं। और इस तरह नाखून और चमड़ी को काटने से उंगली को कष्ट होता है।

सचमुच यह बात एक प्रकार की विडंबना है; क्योंकि मां-बाप जब यह देखते हैं कि उनका बच्चा नाखून काट रहा है, तो वे इससे दुःखी होते हैं, यह सोचकर कि बच्चा उनकी (उनके समझाने की) उपेक्षा कर रहा है। इससे उनमें एक अपराध-भावना उत्पन्न होती है। वे सोचने लगते हैं कि बच्चा उनकी उपेक्षा कर रहा है, तो उन्होंने भी उसकी उपेक्षा अवश्य की होगी।

अपनी उंगली खराब करके और मां-बाप का दिल दुखाकर बच्चा संतुष्ट होता है कि उसका उद्देश्य पूरा हुआ। इस प्रकार यह क्रिया बच्चे के लिए आनंद का हेतु है। निस्संदेह, इस क्रिया के पीछे यही बात है; किंतु इसका पता न तो बच्चे को और न उसके मां-बाप को होता है, वह तो यह क्रिया अचेतन रूप से किये जाता है।

इसके लिए कई उपचार सुझाये जाते हैं। जैसे बच्चों को यह कहा जाता है कि ऐसे काटने पर नाखून कितने भद्दे दिखते हैं, तुम अच्छे प्यारे दिखो, अच्छे बनो और ऐसा न करो; या सजा दी जाती है, यहांतक कि नाखून पर कुनैन लगायी जाती है या पट्टी बांध दी जाती है। पर ये सारे उपचार बेकार साबित हुए हैं। क्योंकि इस क्रिया के पीछे जो कारण या प्रवृत्ति है, उसे जानने की कोशिश नहीं की जाती।

बच्चा जब नाखून काटे, तो उसे कोई रुचिकर या खुश करनेवाली चीज दी जानी चाहिये, न कि उसका मजाक उड़ाया जावे। सबके सामने उसकी इस आदत की बुराई करना, बीमारी को बढ़ावा देना होगा। इससे बच्चे की यह आदत छूटने के बजाय और मजबूत होगी।

जहां तक आपकी समस्या की बात है, यह यदि स्थानीय बाहरी परेशानियों के कारण पैदा नहीं हुई, तो जरूर यह किसी भीतरी गड़बड़ी का लक्षण है। ऐसी स्थिति में आपको मानसोपचारक से मिलना चाहिये। वही तमाम बातों की जानकारी के बाद आपके रोग का सही निदान करेगा। —प्रोबल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आंखों देखा लाल चीन

एडवर्ड बहूर

मैं जिस विमान से शंघाई जा रहा था, उसी से गणराज्य चीन के विदेश मंत्रालय का एक अधिकारी भी यात्रा कर रहा था। वह उसी तरह पेश आ रहा था, जैसे कि लंबी यात्रा पर जानेवाला वचत-क्लास का कोई यात्री हो। 'टाइम' और 'लाइफ' पत्रिकाओं के पन्ने पलटते हुए उसके मुंह पर कोई आवेश नहीं था। जब उसने 'इकनामिस्ट' उठाया, तो तुरंत ही झपकी लेने लगा। विमान में दिखाये जानेवाले चलचित्र को देखने गया, तो पांच मिनिट बाद ही वापस लौट आया। मैं कारण समझ गया। फिल्म अंग्रेजी स्कूल-जीवन पर थी, चीनियों की रुचि से मेल नहीं खाती थी।

विमान जब शंघाई के अड्डे पर उतरा, तो चीनी अधिकारी अपने पूरे रुआब में था। एक शानदार राजनयिक पासपोर्ट दिखाते हुए उसने अपना सामान उठाया और काली लिमूसिन (बंद मोटरकार) में रवाना हो गया।

हम लोग 'लक्सिंग्शे' की चाय-पार्टी में शामिल हुए। 'लक्सिंग्शे' चीनी पर्यटन ब्यूरो को कहते हैं। यह यात्रियों के लिए इंतजाम करने की व्यवस्था भी करता है। 'लक्सिंग्शे' के एक आदमी से हमारा परिचय कराया गया। हम उसके साथ भाप छोड़ती हुई हरी चाय पीने लगे। हमने उसे अपने चीन-भ्रमण का उद्देश्य भी समझाया। हम लोगों में कई देशों के प्रतिनिधि थे। यूरोप के अलावा अफ्रीकी बुद्धिजीवियों की भी काफी बड़ी फौज थी और वे लोग बड़ी बेहयाई से खाने-पीने में जुटे हुए थे। स्कूल-बालाओं ने उनका स्वागत किया, गुलदस्तों के उपहार दिये, फोटो खिंचे और हवाई-अड्डे के कैफेटरिया में लंबे-लंबे भाषण झाड़े। एक दक्षिण अमरीका की साम्यवादी पार्टी का नौजवान था, जो न जाने क्या-क्या सीखने-पढ़ने के मन्सूबे बांधे हुए था। दो आस्ट्रेलियाई वस्त्रनिर्माता थे। इनके साथ सूटकेसों में बच्चों के कपड़े भरे हुए थे। मानो कह रहे हों—"हम चीनियों से सस्ते बना सकते हैं, समझे।" हम सब आपस में वैसे ही सहमे और सकुचे हुए थे, जैसे नये लड़के स्कूल में होते हैं।

शंघाई के बांध पर मेरी दृष्टि गयी। शहर में पानी आने से रोकने के लिए भारी-भारी पत्थरों की यह विशाल पट्टी ४० वर्ष पहले की ही शैली में बनी हुई है। गलियों में इक्की-दुक्की कारें थीं। हां, छोटे बाग-बगीचों के सामने पहले जो पट्टियां लगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहती थीं और जिन पर लिखा होता था– 'कुत्तों और चीनियों का आना मना है' वे अब हटाकर 'उपनिवेशवाद के संग्रहालय' में रख दी गयी हैं।

शंघाई-क्लब अब भी है और संसार का सबसे लंबा मदिरालय भी चालू है; पर अब यह विदेशी नाविकों के ठहरने का स्थान है और नाविक-गृह कहलाता है। क्लब की लाबी में माओ की आठ-फुटी प्रतिमा स्थापित है, जिसके ऊपर एक परदे पर लिखा है –" संसार के श्रमिको, संगठित हो जाओ।"

नाविक-गृह के संचालक श्री ली से मैंने पूछा कि क्या विदेशी नाविक महीनों समुद्र पर रहने के बाद जब शंघाई आते हैं, तो कुछ गड़बड़ी नहीं करते ?

उत्तर मिला–"हमारा अनुभव है कि हमारे ये अधिकांश विदेशी नाविक अतिथि जब भूतल पर आते हैं, तो प्रकृति की छटा देखना चाहते हैं। हम उन्हें बगीचों और चिड़ियाघरों में घुमाने ले जाते हैं।"

"क्या कभी कोई बेहद शराबखोरी नहीं करता ?"

"कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कर्मचारियों के समझाने के उपरांत भी कुछ लोग ज्यादा पी लेते हैं," मिस्टर ली ने बताया–"हम उस हालत में उन्हें बिस्तर पर पहुंचा देते हैं, उनके कपड़े उतार लेते है और उन्हें धुलवाकर सवेरे लौटाते हैं। हम उन्हें यह भी बताते हैं कि पीकर उन्होंने कैसा बरताव किया। इस पर उन्हें ग्लानि होती है।"

"औरतों को लेकर भी कभी कोई बखेड़ा हुआ ?"

प्रश्न सुनकर ली बड़े दुःखी नजर आये, बोले–"मुझे यह बताते हुए बेहद अफसोस है कि कभी-कभी ऐसा भी होता है। कुछ असाम्यवादी देशों के नाविक और कुछ साम्यवादी देशों के भी, यहां इस खयाल से आते हैं कि यहां उन्हें औरतें मिल सकती हैं। एक जर्मन नाविक एक दिन मेरे पास आया और सीधे पूछने लगा कि उसे औरत कहां मिलेगी। मैं उसे अपने दफ्तर में लाया और समझाया कि अब हम उस पुराने समाज में नहीं रहते, जिसमें औरतें संपत्ति की तरह खरीदी या बेची जाती थीं। आज औरत आदमी के बराबर है। यदि आपने अब कोई ऐसी मांग की, तो हमें इसकी पुलिस को खबर करनी पड़ेगी। इसके बाद मैं उसे खेल-क्रीड़ावाले कमरे में लाया और पिंगपांग खेलने का सुझाव दिया। मैंने देखा, तब से वह हर रात खेलने आता रहा।"

पीकिंग में हमें जो पहले-पहल दुभाषिया मिला, वह देखने में १६ का लगता था, पर था २२ बरस का। उसे पीकिंग की कोई जानकारी ही न थी। अंततः हमने 'लिबिसमें' को दूसरा दुभाषिया रखने को कहा और चाहा कि ऐसा करने से हमारे पहले दुभाषिये का दिल न दुखे। पर एक दिन वह हमारे पास आया और बोला–"आप दूसरा दुभाषिया चाहते थे। आपकी प्रार्थना मंजूर हो गयी है। ये हैं मिस्टर वुह।" और वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमसे हाथ मिलाकर चुपचाप चला गया।

वुह के साथ हमारी बोहनी ही खराब हो गयी। वजह मेरी अपनी बेवकूफी थी। जब मैं टैक्सी का द्वार बंद कर रहा था, तो उसका हाथ उसमें पिच गया। एक उंगली से खून बहने लगा। अपनी चीख रोकते हुए उसने कहा—"मेरे भद्देपन के लिए मुझे क्षमा करें।"

एक रात हम एक आपेरा देखने ग । वह नया आपेरा था, परंपरागत और पुराने ढर्रे से हटकर वर्तमान चीनी विचारधारा के अनुसार 'सुधारा' हुआ। परदा उठते ही चीनी स्वयंसेवक नजर आये। दृश्य था कोरिया में युद्ध के दिनों के किसी स्थान का। स्वयंसेवक गाते हैं। वुह ने समझाया—"वे कह रहे हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका ने कोरिया पर हमला कर दिया है, अब हमें चेयरमैन माओ के बताये मार्ग पर चलकर उन्हें मार भगाना है।" इसके बाद एक औरत गाती है, जिसका अर्थ है—कोरिया के लोग बड़ी बेचैनी से चीनी स्वयंसेवकों की बाट जोह रहे थे, अब वे आ गये हैं। इससे वह खुशी के मारे फूली नहीं समा रही। दृश्य बदलता है। अब अमरीकी सिपाही सामने हैं। वर्दी के बटन खुले हुए और सबके सब पीकर धुत हैं। शराब की बोतलें लुढ़का रहे हैं और कोरिया पर हमला करने का हुक्म दे रहे हैं।

आगे के दृश्यों में दिखाया जाता है कि कोरियाई किसानों पर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कैसे-कैसे अत्याचार किये, चीनियों ने अपने गुरिल्ला युद्ध-कौशल से उनके छक्के छुड़ा दिये, अमरीकी कितने कायर होते हैं, चीनी कोरियाई मित्रता अमर है, आदि-आदि।

लेकिन चीनियों के सारे मनोरंजन कार्यक्रम इसी तरह के नहीं होते। कुछ अच्छी फिल्में भी देखने को मिलीं। चैपलिन शैली की एक सुखांत फिल्म बहुत ही अच्छी थी। इसमें एक वेटर की कहानी है, जिसे अपने काम से घृणा है। अंत में वह रास्ते पर आ जाता है और नये समाज में वह भी एक अच्छे क्रांतिकारी की तरह अपना योगदान दे सकता है—इस बात को भली भांति समझ लेता है।

सबसे बढ़िया फिल्म लगी 'फरवरी और वसंतारंभ'। सिने-घरों में इसके लिए इतनी भीड़ थी कि टिकट बड़ी मुश्किल से मिला।

एक नौजवान स्कूल-मास्टर का अपने स्कूल के हेडमास्टर की युवा बहन से प्यार हो जाता है। गांव में एक गरीब विधवा भी रहती है। नौजवान का विचार है कि अपने आस-पास के लोगों की भलाई करके दुनिया को सुधारा जा सकता है। वह विधवा की रुपये-पैसों से सहायता करता है और एक गरीब लकड़हारे के लड़के को मुफ्त पढ़ाता है।

गांव में कानाफूसी शुरू हो जाती है कि स्कूल-मास्टर एक साथ दो-दो औरतों से प्यार करता है—एक इस विधवा से, दूसरे हेडमास्टर की बहन से। विधवा का लड़का मर जाता है। कर्तव्य-भावनावश, स्कूल-मास्टर विधवा से विवाह का प्रस्ताव करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, हालांकि वह प्यार हेडमास्टर की बहन से करता था। विधवा भी इस बात को जानती है और वह स्कूल-मास्टर के भले के लिए आत्महत्या कर लेती है। निराश स्कूल-मास्टर क्रांतिकारी सेना में भर्ती हो जाता है।

फिल्म रंगीन है और इसमें चीन के तीन चोटी के कलाकार हैं। इसका संदेश यह है कि व्यक्ति अकेला दुनिया को नहीं सुधार सकता। वह तभी उपयोगी हो सकता है, जब वह सामूहिक संगठन में मिल-जुलकर काम करे।

साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद यह पहली फिल्म है, जिसमें क्रांति से पहले के चीन के सौजन्य-सभ्यता का सविस्तार चित्रण है। बूढ़े दर्शक इसे देखकर रो पड़ते हैं। इसके संवाद भी बड़े खरे हैं। तीन स्कूल-मास्टर भोजन करने बैठे हैं। एक क्रांतिकारियों की चर्चा छेड़ता है।

"बस-बस, बहुत हो गया समाजवाद और साम्यवाद!" दूसरा कहता है—"छोड़ो यह वादों का चक्कर; आओ, पियें-पिलायें।" दर्शक यह सुनकर चकित रह जाते हैं। उन्हें यह विश्वास ही नहीं होता कि उस जमाने में लोग इस तरह बातें करते थे। नयी पीढ़ी के दर्शक उसके प्रणय-दृश्य देखकर ऐसे मुस्कराते हैं, मानो वे अश्लील दृश्य देख रहे हों।

चीनी अखबारों ने इस फिल्म की कड़ी आलोचना की है। इसे 'पलायनवादी' और 'बुर्जुआ मानवतावादी' फिल्म करार दिया है। जिस निर्देशक ने इसे बनाया है, इसके पूर्व वह तीन प्रचारात्मक और उबानेवाली (किंतु चीनियों की नजर में स्वस्थ परंपरावाली) फिल्में बना चुका है। मैंने एक अधिकारी से जानना चाहा कि अब इस निर्देशक का भविष्य क्या होगा? उत्तर मिला—"वह फिर ऐसी फिल्म बनायेगा, इसकी कोई संभावना नहीं है।"

मैंने दुभाषिये से पूछा कि फिर ऐसी फिल्म इतनी भीड़ को क्यों दिखायी जा रही है? उसने बताया—"चेयरमैन माओ चाहते हैं कि हम खुद देखें कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है, ताकि दोनों का अंतर समझ सकें।"

मगर कुछ भी हो, लोग तो इस फिल्म को देखने को उमड़ पड़े हैं। इसका कारण मुझे यह लगा कि वे ऐसी फिल्म देखने को उत्सुक हैं, जिसमें उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद या चेयरमैन माओ की कहीं कोई चर्चा नहीं है।

चीनी साम्यवादी शासन की १५ वर्षों की अवधि के दौरान चीनी लड़कियों की जो पीढ़ी जवान हुई है, चीन के इतिहास में पहली बार इस पीढ़ी ने यह जाना है कि वह मर्दों के बराबर है। व्यायाम, खेलकूद और पर्याप्त भोजन और यह गर्व कि 'हम अगुआ हैं' और सेना में भी हमारा स्थान है — इन सबने इन युवतियों पर जादू का-सा असर किया है, उनके तन-बदन को बड़े ही सुंदर सांचे में ढाला है। चीनी साम्यवादी सुधारकों ने इन्हें 'यौन-मुक्त' रखने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितने डग आगे—कितने डग पीछे

संपूर्ण चीन पर साम्यवादी शासन स्थापित हुए सोलह साल हो चुके हैं। इस अवधि में चीन के शासकों ने उद्योग और कृषि के उत्पादन में चमत्कारी वृद्धि करने के कितने ही कार्यक्रम अपनाये और छोड़े हैं। इन प्रयत्नों की सफलता-विफलता की माप-जोख तो पूरे आंकड़े मिलने पर ही संभव है; और उनका मिलना संभव नहीं दिखाई देता। किंतु चीन सरकार द्वारा प्रकाशित सूचनाओं तथा ब्रिटिश व अमरीकी विशेषज्ञों द्वारा जुटायी गयी जानकारी पर आधारित ये आंकड़े इसका अंदाज करा सकते हैं कि १९५७ से १९६३ तक चीन ने उत्पादन की कुछ मुख्य मदों में कितनी सफलता या विफलता पायी है :

वस्तु	१९५७	१९६३
लोहा (पिग आयरन)	५९ लाख ४० हजार टन	(आंकड़े अनुपलब्ध)
फौलाद	५३ लाख ५० हजार टन	१ करोड़ टन
कोयला	१३ करोड़ टन	२२ करोड़ टन
बिजली	१९ अरब ३० करोड़ कि० वा० घंटे	३३ अरब कि० वा० घंटे
खनिज तेल (क्रूड)	१४ लाख ६० हजार टन	६० लाख टन
सीमेंट	६८ लाख ६० हजार टन	८० लाख टन
कपास	१६ लाख ४० हजार टन	१० लाख टन
सूती वस्त्र	५ अरब ५ करोड़ मीटर	(अकड़े अनुपलब्ध)
अनाज	१८।। करोड़ टन	१७।। या १९ करोड़ टन
चीनी	८ लाख ६४ हजार टन	२६ लाख ५० हजार टन

मानो बीड़ा उठाया है और उन्हें इसमें इतनी अधिक सफलता मिली है कि कोरे नैतिकवादियों के लिए यह सपना थी।

लड़के-लड़कियां अलग-अलग रहते हैं। अलग-अलग शयनागारों में सोते हैं—विश्व विद्यालयी छात्र के रूप में एक कमरे में चार-चार; और पार्टी के सदस्य उन पर बराबर कड़ी नजर रखते हैं। चीन की आबादी न बढ़े, इसके लिए संतति-निरोध का फिर से प्रचार किया जा रहा है। नौजवानों को यह 'परामर्श' दिया जाता है कि वे जल्दी विवाह न करें। इसका उल्लंघन करनेवालों पर निर्मम कार्रवाई की जाती है। पार्टी की इच्छा के खिलाफ जो लोग जल्दी विवाह कर लेते हैं, उन्हें आनेवाले कई वर्षों तक अलग-अलग रखा जाता है। पति को चीन के किसी एक स्थान पर काम करने के लिए भेज दिया जाता है और पत्नी को उससे सैकड़ों मील

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर किसी दूसरे स्थान पर। इस प्रकार उन्हें शारीरिक रूप से मीलों दूर रखा जाता है। अनिश्चित समय तक का यह अलगाव तलाक के लिए वाजिब कारण नहीं माना जाता।

विवाह-पूर्व यौन-संबंध के लिए बड़ी कड़ी सजाएं हैं। सारे नौजवान चीनी आपस में एक-दूसरे पर लगातार नजर रखते रहते हैं। कोई एकांत स्थान नहीं होता, जहां वे जायें। जो विदेशी विद्यार्थी और अविवाहित टेक्नीशियन चीन में रहते हैं, उन्हें यह बलात् लादा गया ब्रह्मचर्य असह्य लगता है।

फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों और उद्योगपतियों के एक दल में शामिल होकर मुझे माओ त्से-तुंग से मुलाकात करने का अवसर मिला।

एक दिन बड़े तड़के हम लोग हांगचो के लिए रवाना हुए। यह शंघाई के दक्षिण में सरोवर-तट पर बसा कस्बा है। हमें यह तो मालूम था कि माओ से हमारी भेंट हांगचो में होगी; लेकिन कहां और किस समय, इसकी किसी को खबर न थी। जब माओ अतिथियों से भेंट करते हैं, तो उसके समाचार तो अखबारों में हमेशा छपते हैं; पर स्थान-तिथि सदा पीकिंग की ही रहती है। चीनी जनता माओ के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ भी नहीं जान पाती।

सुबह ११ बजे हम हांगचो पहुंच गये। हमें हांगचो होटल में ठहराया गया। लंच के बाद स्वागताधिकारी ने हमें कहा कि हम लोग अपने-अपने कमरों में रहें। एक घंटे पहले चलने की सूचना दी जायेगी। ४ बजे उसने द्वार खटखटाया और कहा "कृपया ५ बजे तैयार रहें।"

हम लोग नियत समय पर तैयार होकर एक एकांत कमरे में प्रतीक्षा करने लगे। घंटे-भर की प्रतीक्षा के बाद वह अधिकारी हमें लेने के लिए आया। हमें कारों में सरोवर के दूसरे किनारे ले जाया गया। हल्के अंधेरे में छः-सात बंगलों की कतार दिखाई दी। सबसे बड़े बंगले में रोशनी हो रही थी। यह छोटा-सा पगोडा था। द्वार-मार्ग पर ही माओ खड़े हुए थे। परिचय और फोटो होने के बाद माओ हमें एक बड़े ड्राइंग रूम में लाये। यहां हम लोग मंडलाकार रखी हुई हत्थेदार कुर्सियों पर बैठे। दीवारें गहरी लाल परदों से सजायी हुई थीं। फर्श पर ऊनी गलीचा बिछा था। सजावट आरामदेह थी; पर इसे शानो-शौकत नहीं कह सकते। लगता था, जैसे किसी मध्यम श्रेणी के यूरोपीय अधिकारी का घर है। एक बात और, मैंने वहां पहली बार ऐसे कमरे में कदम रखा था, जिसकी दीवारों पर माओ का चित्र नहीं था।

माओ सैनिकोंवाला भूरा, बंद गले का चुस्त कोट (टचूनिक) पहने थे और नीचे उससे मेल खाता हुआ पाजामा था। पांवों में बादामी रंग के भारी जूते थे और ऊनी मोजे लगनेवाले सूती मोजे, जो टखनों तक चढ़े हुए थे। कोट कुछ-कुछ मुड़ा-सिकुड़ा-सा। उन पर लटका हुआ लग रहा था और उन्हें पहने हुए वे कुछ दुबले प्रतीत हो रहे थे। बाल सावधानी से पीछे को संवारे हुए और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काले थे—शायद ही कोई सफेद बाल उनमें हो। चेहरे पर झुर्रियां थीं; पर वह भरा हुआ और मांसल था। वे अपनी ७१ की अवस्था से कुछ कम ही दिखते थे और शाम के समय भी उनमें थकान के चिह्न नहीं थे।

फिर भी यह साफ था कि वे स्वस्थ नहीं थे। जब वे हमें बैठक में लाये थे, तो एक सेवक उनकी कुहनी थामकर उन्हें यहां तक लाया था। वे लगातार धूम्रपान किये जा रहे थे और उनके दांत निकोटिन से काले पड़े हुए नजर आते थे। तंबाकू बहुत पीने-वालों को जो खांसी की शिकायत रहती है, उन्हें भी थी; गले में काफी घरघराहट थी।

पश्चिमी दूतावासों में यह अफवाह फैली हुई थी कि माओ मोतियाबिंद से पीड़ित हैं और उन्हें कठिनाई से दिखाई देता है। यह बिलकुल झूठ बात थी। पर हां, वे अपनी दायीं भुजा मुश्किल से हिला-डुला पाते थे।

बातचीत अभी चल रही थी कि माओ ने अपना पेट पकड़ा और कहा—"मैं भूखा हूं। क्या आप लोग भी भूखे हैं? आप मेरा आतिथ्य स्वीकार करेंगे?" और वे उठ खड़े हुए। हमें वहां लाये, जहां परदे के पीछे एक गोल मेज लगी हुई थी। इस पर दस आदमियों के भोजन की जगह थी।

माओ ने स्वादिष्ट चीनी पकवानों में से शायद ही किसी रकाबी को छुआ। सिर्फ दो प्याले सादा चावल खाये। लेमोनेड और हरी चाय पी। भोजन के समय उन्होंने हमें यह बात स्पष्ट कर दी कि हमारी बातचीत रिकार्ड नहीं की जा रही; पर उन्होंने कोई बहुत नयी बात भी तो हमसे नहीं कही।

उनकी बातें सुनते हुए मुझे यह साफ तौर पर महसूस हुआ कि हमारे सामने एक ऐसा व्यक्ति है, जो भूतकाल से बहुत ज्यादा परेशान है और वर्तमान की घटनाओं और संसार के रंगमंच के अभिनेताओं को एक खास मजाकिया अंदाज में और क्षमाशील निंदा की नजर से देखता है। 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' का वह एकदम विरोधी है। वह चीन की आर्थिक सीमाओं की असलियत से अनजान नहीं है।

स्वयं माओ ने हमें विदा लेने का संकेत दिया। वे उठे और द्वार तक पहुंचाने आये। जब हम रवाना हो ग, तो हमने देखा, वे द्वार-मार्ग पर खड़े हमें सैल्यूट कर रहे हैं।

दूसरे दिन मैंने एक चीनी अधिकारी से माओ के परिवार के संबंध में पूछताछ की। उससे पता चला कि उनके दोनों भाई मर चुके हैं। एक लड़का है और दो लड़-कियां—तीनों का विवाह हो चुका है।

मैंने पूछा—"कुछ ऐसी अफवाह थी कि उनका एक लड़का कोरिया-युद्ध में मारा गया था? क्या यह सच है?"

"हां, वह बड़ा लड़का था, जो कोरिया-युद्ध में शहीद हुआ।"

क्या इससे यह बात साफ नहीं हो जाती कि अमरीका के प्रति माओ की घृणा टिकाऊ है, वह मिट नहीं सकती?

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध दरवाजों पर लिखे कुछ वाक्य

क० ख० ग०

घर के मुख्यद्वार पर या बैठक में, प्राय: लोग कोई मनपसंद पद या ध्येयवाक्य लिखवा रखते हैं। ये पद या वाक्य अपने आपमें तो दिलचस्प होते ही हैं, संबंधित व्यक्ति के विचारों और जीवन के उद्देश्य को भी मुखरित करते हैं। ऐसे पद या वाक्य चित्रित करवाने, खुदवाने या लिखवाने का रिवाज काफी लोकप्रिय रहा है। कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के अध्ययन-कक्षों में अंकित वाक्य साहित्य और कलात्मक रुचियों के लोगों को अवश्य ही रुचिकर लगेंगे।

नरक के मुख्यद्वार पर कवि दांते का यह प्रसिद्ध अभिलेख लोगों में अत्यंत चर्चित रहा है – "वे सब, जो इसमें प्रवेश करें, तमाम आशाएं छोड़ दें।"

इस द्वार-वाक्य के समान ही एक दूसरा वाक्य भी प्रसिद्ध है। दांते ने संभवत: स्वप्न में इसे नरक के दूसरे द्वार पर लिखा देखा था –" मुझमें होकर आप खोये हुए लोगों तक पहुंचेंगे।"

ये दोनों वाक्य दांते ने अपनी प्रसिद्ध कविता में प्रयुक्त किये थे।

फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो को इस तरह के वाक्यों का बड़ा शौक था और उनके घर के कई द्वारों पर तरह तरह के वाक्य अंकित थे। उसके काम-काज के कमरे में यह वाक्य था :

"छ: बजे उठना, दस बजे खाना;
छ: बजे ब्यालू, दस बजे सो जाना;
बढ़ती है इस तरह दस गुनी आयु।"

सर वाल्टर स्काट ने भी कई दरवाजों पर विविध वाक्य लिखवा रखे थे, जिनसे उन्हें सबसे प्रिय यह था–"हर काम के लिए समय नियत रखो, और उसमें कोई गड़बड़ न होने दो।"

इस कवि और उपन्यासकार ने जिस प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा है, उसके लिए उसे उतना समय कैसे मिला? संभवत: वह समय उसे उपर्युक्त ध्येय-वाक्य ने ही दिलाया था।

हना मोर से किसी ने आग्रह किया कि वे दास-व्यापार करनेवाले जहाज पर लिखने के लिए कोई उपयुक्त वाक्य सुझायें। हना सोचने बैठीं, तो उन्हें मानव-जाति की इस अभिशप्त प्रथा को गाली देने के लिए उस वाक्य से बढ़कर और कोई वाक्य सूझ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा, जिसे दांते ने नरक के प्रथम द्वार के लिए प्रयुक्त किया था। उसे हम ऊपर दे चुके हैं।

अमरीका के प्रसिद्ध साहित्यकार जान फिस्क ने अपने पुस्तकालय के द्वार पर यह लिख रखा था—"काम इस तरह करो, मानो तुम्हारा जीवन अमर है। जियो इस तरह, मानो तुम कल मरनेवाले हो।" सचमुच यह कितना सुंदर और उपयोगी 'मोटो' है!

प्रसिद्ध अमरीकी निबंधकार एमर्सन ने अपने एक निबंध में कहा है —" अपने दरवाजे के ऊपर मैं 'सनक' शब्द लिखना पसंद करूंगा।"

शायद एमर्सन ने यह कहकर अपनी मनमौजी और 'जब, जैसी धुन आ गयी, वैसा काम करने लगे' वाली प्रकृति का मजाक उड़ाया था। पर हमारे समाज के विविध वर्गों में, और साहित्य-कला के क्षेत्र में ऐसे अनेक व्यक्ति मिलेंगे, जो इस शब्द को अपने दरवाजे पर पूरी सच्चाई के साथ लिखना पसंद करेंगे।

लंदन के एक प्रसिद्ध संपादक ने मिलने आनेवालों के लिए अपने द्वार पर यह चेतावनी लिख रखी थी—"यहां समय बहुत ही कीमती है। यदि वे सब, जो मिलने आते हैं, तीन-तीन मिनिट भी मेरे पास ठहरें, तो मैं अपना काम कुछ भी नहीं कर पाऊंगा।"

जो लोग जानते हैं कि खामख्वाह एक मिनिट के लिए मिलने चले आनेवाले और 'बोर' करनेवाले लोगों से व्यस्त संपादक कितने भयभीत रहा करते हैं, वे इस संपादक की चतुराई पर फौरन दाद देंगे।

यह नहीं कि दरवाजों के जरिये लोगों को उचित परामर्श देने का शानदार मार्ग केवल साहित्यकारों को ही सूझा हो, महान सैनिकों ने भी इसे बखूबी आजमाया था। फ्रांसीसी जनरल गलिफेत के द्वार पर ये पंक्तियां शोभा बढ़ाती थीं :

"एक बार खटखटाओ, दूसरी बार खटखटाओ, इतने से ही कोई बाहर आ जायेगा; अगर तुम्हें तीसरी बार खटखटाना पड़े, तो समझो—मैं अंदर नहीं हूं।"

आयरलैंड कभी ऐसा स्थान था, जहां हर किसी को स्वागत-योग्य और वांछनीय समझा जाता था—सिवा स्वयं आयरिश लोगों के। राजा विलियम तृतीय की सेना ने १६८९ में बैंडन को जीतकर वहां के निवासी कैथोलिकों को आदेश दिया कि वे नगर खाली कर जायें। नगर के एक द्वार पर वह आदेश इन शब्दों में दिया गया था—"कोई तुर्क हो, यहूदी हो, नास्तिक हो—यहां प्रवेश कर सकता है; मगर रोमन कैथोलिक नहीं।"

बैंडन के एक कैथोलिक को यह चेतावनी बहुत खली और उसने बड़ी चतुराई से करारी मात दी। अगली रात उसने उन पंक्तियों के नीचे लिख दिया :

"जिस किसी ने यह लिखा है, बहुत अच्छा किया है। यही शब्द उसे नरक के द्वार पर भी लिखे मिलें!"

प्रसिद्ध पियानो-वादक बुलो ने अपने लंदन के निवास-स्थान के दरवाजे पर यह दस्ती लगायी थी :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"दोपहर से पहले मैं किसी से नहीं मिलता, दोपहर के बाद मैं बाहर रहता हूं।"

कुछ ऐसा ही अभिलेख लंकाशायर के गिरजाघर के एक बड़े पादरी ने अपने घर के सामने लगा रखा था :

"आपसे मिलने में मुझे हमेशा खुशी होती है; पर आज बेहद व्यस्त हूं। कृपया कल पधारें।"

बेशक, इन पंक्तियों का अर्थ इनके व्यवहार में छुपा है और कुछ वैसा ही है, जैसे दुकानदारों की दस्ती पर लिखा रहता है—"आज नकद, कल उधार!"

सिडनी स्मिथ चतुरतापूर्वक उक्तियां रचने में बड़े प्रवीण थे। एक बार वे चर्च से सटे कब्रिस्तान में घूमते हुए, कब्रों पर लिखे अजीबोगरीब वाक्यों का मजा ले रहे थे। चर्च के रेक्टर महोदय, जो साहित्यिक संपर्क में ढली रुचियोंवाले आदमी थे, स्मिथ साहब से कहने लगे कि वे उन्हें कोई बढ़िया पद या वाक्य सुझायें, ताकि उसे वे अपने नये लगे लैच-द्वार पर लिखवा सकें। वाक्य स्थान के उपयुक्त हो।

स्मिथ तपाक से बोले—"अच्छा, आप वैसा वाक्य नहीं चाहते, जैसा आम लोग रखते हैं, है न? अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं तो ये शब्द लिखवाता—हियर लाइ द डेड, एंड हियर द लिविंग लाइ!"

गुस्तेव डोरे ने पेरिस के बाहर एक मकान खरीदा, तो द्वार पर संगीत की यह सरगम चित्रित करवायी—"डो, मी, सि, ला, डो, रे!"

मित्रों के हाथ जब इसका सींग-पूंछ कुछ भी न आया, तो उन्होंने इसे उनकी मूर्खतापूर्ण झख समझकर मजाक उड़ाया। इस पर उन्होंने समझाया कि इसको जोड़कर लिखिये। अर्थ है—डोमिसिला डोरे, अर्थात् डोरे का घर!

गुस्तेव डोरे के बारे में एक और किंवदंती है कि उन्होंने अपने घर के द्वार पर व्यवसायियों को आमंत्रित करने की दृष्टि से यह वाक्य लिखवा रखा था—"जिस डॉक्टर से आप मिलना चाहते हैं, वह यहां है!"

सेंट पाल के भव्य गिरजाघर में उसके महान शिल्पी सर क्रिस्टोफर रेन का नाम प्रवेश-द्वार पर लिखा है। उसके साथ ही जो वाक्य लिखा है, रेन के सम्मान में उससे बढ़कर और कोई बढ़िया वाक्य नहीं हो सकता। उस लैटिन वाक्य का अर्थ है—"यदि आप उनका स्मारक देखना चाहें तो इसे देखें।"

ईटन स्कूल के द्वार पर लैटिन में जो मोटो खुदा हुआ है, वह यह है—"निसि डोमिनस फस्ट्रा।" यह एक प्रसिद्ध गीत से लिया हुआ है, जिसका अर्थ है—"परमात्मा के सिवा कोई घर नहीं बनाता; जो लोग ऐसा कर रहे हैं, वे व्यर्थ परिश्रम कर रहे हैं।"

लेकिन जब एक नवागत से लैटिन मोटो का अभिप्राय पूछा गया, तो उसने इसका यह अनुवाद किया—"केवल लार्ड लोगों के लड़के ही यहां भरती हो सकते हैं, दूसरा कोई नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये दूसरे विवाह!

हैरी कूपर

श्रीमती अल्फ्रेड लिटल्टन ने अपने पति के पहले और दूसरे विवाहों का वर्णन जिस स्नेह-सरसता के साथ किया है, उसका जवाब नहीं।

छः वर्ष विधुर रहने के बाद लिटल्टन पुनः इस योग्य हो गये थे कि पूरी उत्तेजना और गहराई से प्यार कर सकें और इस तरह बीस वर्ष अगली सहचरी के साथ उन्होंने खूब आत्मीयता और सुख से बिताये। न तो इस बीच उन्हें पूर्व-पत्नी के विरह ने व्यथित किया और न किसी प्रथा ने उनकी भावना को क्षीण किया।

वह रूढ़िवादी विचार कि अल्फ्रेड-जैसा मनुष्य, जिसके पीछे अतीत का अनुभव और स्मृतियां हैं, कभी पुनः किसी को प्यार नहीं कर सकता, इस मामले में झूठा साबित हुआ। वह रूढ़िवादी विचार भी झूठा है कि ऐसा आदमी यदि पुनः प्यार करेगा, तो उसी स्थिति में, जब वह अतीत को भूल चुका होगा या स्वयं बदल चुका होगा। अल्फ्रेड न तो अतीत को भूले थे, न बदले ही थे, फिर भी वे किसी और को भरपूर प्यार दे सके।

डेविड कापरफील्ड :

विधुरों अथवा विधवाओं के पुनर्विवाह को लेकर कुछ लोग उलटी-सीधी बातें करते हैं। ये बातें बहुत से प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध व्यक्तियों के उदाहरणों पर आधारित होती हैं; लेकिन डिकन्स के पात्र डेविड कापरफील्ड का उदाहरण लीजिये। उसका अनुभव कोई अपवाद नहीं है। डेविड कापरफील्ड की प्यारी सहचरी उससे दूर हो जाती है; वर्षों का वितान इस पीड़ा को हर लेता है और प्यार पुनः उगता है और दूसरी फसल में लहलहाने लगता है; जैसा कि एग्नेस के मिलने पर डेविड कापरफील्ड के साथ हुआ। उसने यह महसूस किया कि एग्नेस के निर्मल नयनों से उसकी बालपत्नी की आत्मा झांक रही है और उसे देखकर कह रही है—"यह सब ठीक है।"

जान ब्राइट :

प्रथम पत्नी का स्वर्गवास हो जाने पर जान ब्राइट को जो घोर पीड़ा हुई थी, उसका सभी को पता है। संक्षिप्त साहचर्य के बाद जब उनकी युवा सहचरी इस धरती से उठ गयी, तो ब्राइट के पास उस महकते जीवन की यादों के सिवा कुछ न रहा। मगर छः वर्ष बाद ब्राइट ने दूसरा विवाह किया, तो वह पूर्णतया सफल हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्तालाप

चित्रकार : इयावक्स चावडा

जब ब्राइट लोकसभा के अधिवेशनों में लंदन में व्यस्त होते, तब भी पूरे तीस वर्ष के दौरान ऐसा एक दिन भी नहीं गुजरा जिस दिन उन्होंने अपनी दूसरी पत्नी को लंबा पत्र न लिखा हो—"मैं तुमसे दूर रहना बिलकुल पसंद नहीं करता," वे लिखते थे—"सच तो यह है कि अपने आरामदेह घर में जितना ही हम साथ रहते हैं, अलग होने की इच्छा उतनी ही कम होती है।"

पत्नी के जो पत्र आते थे, उनके बारे में वे कहते थे—"तुम्हारे दैनिक पत्र, मेरे लिए दैनिक रोटी की तरह हैं और जिस दिन मुझे पत्र नहीं मिलता, वह दिन ऐसे गुजरता है, जैसे मैं भूखा रहा हूं।"

डिसरायली :

ब्राइट के समय का ही एक और उदाहरण लीजिये। यह उदाहरण हमारे विषय से कुछ हटकर है और एक महिला के द्वितीय विवाह का है।

डिसरायली ने ३५ वर्ष की वय में अपने एक साथी की विधवा से विवाह किया था। इसे पहले वह 'चुलबुली सुंदरी' कहा करता था। पर यह उसके लिए बहुत अच्छी पत्नी सिद्ध हुई। वह उसकी सफलताओं में हाथ बंटाती थी, पराजय में ढाढ़स बंधाती थी। डिसरायली मजाक-मजाक में उसे कहा करता था कि मैंने तुमसे शादी तुम्हारे धन की खातिर की थी। इस पर वह एक ही जवाब देती थी—"मगर प्यारे, तुम्हें अगर मुझसे फिर शादी करनी पड़े, तो तुम फिर की खातिर करोगे।" और यह ऐसा सच था, जिसे डिसरायली हमेशा मुस्कराकर स्वीकार करता था।

जी० एफ० वाट्स :

दूसरा विवाह उन बुद्धिजीवियों का भी सफल हुआ है, जिन्हें प्रसन्न रखना अपेक्षाकृत कठिन होता है। चित्रकार वाट्स ने भी पुनर्विवाह किया था और दूसरे विवाह ने उन्हें बुढ़ापे तक खुशियों में डुबाये रखा। श्रीमती वाट्स ने लिखा है—"विवाह से पहले वे (वाट्स) मुझे लगातार चेतावनी देते रहे कि मैंने जो उन्हें आदर्श पुरुष समझ रखा है, वह वे नहीं हैं। विवाह के डेढ़ साल बाद एक दिन उन्होंने पूछा कि क्या मैं अब भी नहीं देख पायी कि जो उम्मीदें मैंने उनसे बांध रखी थीं, वे उनसे कतई अलग निकले। मैंने कहा—हां, मगर इस माने में कि मैं तुम्हें जितना चिड़चिड़े स्वभाव वाला समझती थी, तुम उसके पासंग भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकले।"

जान मिल्टन :

जान मिल्टन ने, जो वाट्स से भी अधिक विशुद्ध बुद्धिजीवी थे, दूसरे और तीसरे विवाह को सफलतापूर्वक निभाया। वैसे आम धारणा यह है कि मिल्टन का वैवाहिक जीवन दुर्भाग्यपूर्ण था; पर सत्य इसके सर्वथा विपरीत है। द्वितीया-कैथरिन वूडकाक कवि की अंधेरी गृहस्थी में प्रकाश और वरदान तुल्य थी। मृत्यु के बाद कवि उसे बड़े दुःख के साथ याद किया करता था। १५ माह के अल्पकालीन साहचर्य में पति ने वह सब उसमें पाया, जो एक सती और नारी में होताहै। घर में उस गृहिणी ने ऐसी शांति और व्यवस्था स्थापित की, जैसी उसके प्रवेश से पूर्व उस घर में कभी नहीं रही थी।

मिल्टन का तीसरा विवाह भी कम सफल नहीं था। मुलायम और सुनहरे बालोंवाली एलिजावेथ मिन्शल के जिम्मे ५४-वर्षीय अंधे विद्वान पति, और तीन सौतेली बेटियों की सेवा-शुश्रूषा का भार था। जाहिर है कि यह विवाह प्यार-मोहब्बत के लिए नहीं हुआ था—मृत्युशैया पर पड़े-पड़े मिल्टन बार-बार यही कहा करते थे कि उनकी पत्नी कितनी दयालु है, उनका कितना ध्यान रखती है!

सर रिचर्ड स्टील :

कवि मिल्टन के बाद उस युग में भी, जिसमें दूसरे विवाह पर हंसना और फब्तियां कसना अक्लमंदी और फैशन हो चला था, एक बड़े ही प्रमुख व्यक्ति द्वारा द्वितीय विवाह किये जाने और उसकी सफलता का तत्कालीन साहित्य में गुणगान होने का उदाहरण मौजूद है। वे थे नाटककार और प्रबंधकार सर रिचर्ड स्टील—एडीसन के समकालीन, कलम और तलवार दोनों के धनी। उनकी द्वितीय प्रिया थी 'प्रू'—एक वेल्श महिला, जो आदि से अंत तक अपने पति सर रिचर्ड स्टील के हृदय को आह्लादित करती रही।

जान नाक्स :

और अंत में एक और उदाहरण ऐसा लीजिये, जिससे द्वितीय विवाहों के सुखद होने के खिलाफ एक शब्द भी बोलने की गुंजाइश नहीं रह जाती। हमें रूखे और सख्त मिजाज के व्यक्ति जान नाक्स का नाम याद आता है, जो अपने दूसरे 'साहस' में भी पहले की तरह ही, बल्कि सच कहा जाये, तो पहले से भी अधिक सुखी रहे। पहली पत्नी का साहचर्य भी सुखद तो था; किंतु उस सुख पर सास की व्यस्तता हावी हो गयी थी। जान नाक्स ने महिलाओं की भर्त्सना में, तब एक खासी जोरदार किताब लिखी थी। नारी के लिए उसमें बहुत-से खिताब थे. जैसे कमजोर, चंचलमति, अधीरा, मूर्खा आदि! लेकिन मार्गरेट स्टेवर्ट जान नाक्स के लिए सच्ची विश्वासप्रद संगिनी साबित हुई, उसके अशांत जीवन में स्वर्गोपम शांति सिद्ध हुई। बुढ़ापे में मृत्युशैया पर पड़े पति की उसने असीम श्रद्धा और अपूर्व लगन से सेवा की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकार जो न देखे, न सुने

जफर मिर्जा

शिकार इंसान का सबसे पुराना पेशा है, रहन-सहन के तरीकों की तरक्की के साथ-साथ इस पेशे में भी बड़ी तब्दीलियां हुई हैं। शिकार के नित नये तरीके मालूम किये गये और नयी खोजों ने तो शिकार पर काबू पाने के काम को बहुत ही आसान कर दिया। लेकिन इस वैज्ञानिक युग में भी दुनिया के कई हिस्सों में अब भी शिकार के ऐसे तरीके देखने में आते हैं, जिनमें इंसान के पुराने शिकार की झलक पायी जाती है।

क्वेटा में शिकार लोगों का बड़े शौक का काम है। कबायली जवान फुरसत के समय खुश्क और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों पर जाकर पहाड़ी बकरे का शिकार करते हैं। मैदानी इलाकों में खरगोश, हिरन और चकोर का शिकार किया जाता है।

चर्ख का शिकार : क्वेटा के इलाके में चर्ख के शिकार का तरीका बहुत ही दिलचस्प होता है। चर्ख को यहां की जबानों में 'कुफ्तार' और 'कोज' भी कहते हैं। यह जानवर करीब-करीब तमाम इलाकों में मिलता है। उसे पकड़कर शौकीन लोग कुत्तों के साथ लड़ाते हैं। चर्ख के गार का पता लग जाने पर शिकारी रस्से और डंडे लेकर चर्ख की तलाश में निकल पड़ते हैं और यह तसल्ली कर लेने पर कि चर्ख गार के अंदर ही है, एक शिकारी कमर से रस्से का सिरा बांधकर और फालतू रस्सी लेकर गार के अंदर चला जाता है। यह गार इतना तंग होता है कि उसमें मुश्किल से ही रेंगकर दाखिल हुआ जा सकता है। गार में जाने वाला व्यक्ति चर्ख को गार के एक कोने में आराम करते हुए देखकर ही अपनी जबान में जोर-जोर से 'चर्ख नहीं है ढेला है, चर्ख नहीं है ढेला है' की तकरार शुरू कर देता है और वह बेवकूफ जानवर इंसान की चाल में फंसकर या तो अपने आपको गलतफहमी में सचमुच ढेला समझ बैठता है और या यह खयाल करता है कि शिकारी ने उसे देखा ही नहीं। उसकी मूर्खता देखिये कि वह उस वक्त तक खामोश बैठा रहता है जब तक कि शिकारी उसे बांध नहीं लेता। बाहर निकाले जाने पर वह बहुत उछलता-कूदता है; लेकिन वक्त हाथ से निकल चुका होता है और अगर ज्यादा उछल-कूद की तो डंडों से खूब खबर ली जाती है और गांव में लाकर कुत्तों के साथ लड़ाया जाता है।

शिकार का यह तरीका जहां बहुत दिलचस्प है, वहां खतरे से भी खाली नहीं है। कई मौकों पर शिकारी के गार में घुसते ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चर्ख उस पर हमला कर देता है।

चर्ख के शिकार का एक दिलचस्प और कम खतरनाक तरीका भी है। उसमें गांव से बाहर दो-तीन गज गहरा और करीब उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदकर किसी जानवर की लाश रख दी जाती है। रात को चर्ख लालच में गड्ढे के अंदर कूद पड़ता है और पेट भरकर दावत उड़ाने के बाद जब बाहर निकलने की सोचता है, तो उसे मालूम होता है कि वह तो ऊपर कूद नहीं सकता, घबराकर रात-भर दायरे में चक्कर लगाता रहता है। सुबह गांववाले जमा होकर उसे बांध लेते हैं और बाहर निकाल लेते हैं।

× × ×

चकोर की मूर्खता : चकोर का शिकार भी यहां के लोगों का प्रिय शिकार है। उसके शिकार के भी वही आम तरीके हैं, जो दूसरे परिंदों के होते हैं; लेकिन उसमें एक तरीका जरा दिलचस्प होता है। उसमें गीदड़ की खाल से इस किस्म की टोपी बनायी जाती है, जिसे पहनने पर गीदड़ का सिर टोपी की तरह शिकारी के सिर पर रहता है और बाकी खाल से चेहरे को छिपा लिया जाता है। देखने के लिए उसमें सूराख रखे जाते हैं। जहां कहीं चकोर दिखाई दिये, शिकारी झाड़ी या चट्टान के पीछे से सिर ऊपर उठा लेता है। उसे देखते ही चकोर 'कड़-कड़-कड़-कड़' करते हुए एक जगह जमा हो, उसे हैरत से देखने लगते हैं। शिकारी इस मौके से फायदा उठाकर फायर कर देता है।

× × ×

ऊंट की ओट में शिकार : क्वेटा के इलाकों में गरमी के शुरू होते ही एक परिंदा जिसे 'खरगट' कहते हैं, बाहर से आता है। मटियाले रंग का यह परिंदा मुर्गी के बराबर होता है। उसका सिर बहुत ही छोटा होता है। जिस्म पर हाथ लगाने से यों महसूस होता है, जैसे उसका तमाम बदन पत्थर का हो। यह प्रायः मैदानी इलाकों में सभी जगह देखने में आता है। यह परिंदा बहुत ही चालाक होता है, इसलिए फायर करने के लिए उसके करीब जाना बहुत ही मुश्किल होता है। और फिर यह बैठता भी ऐसी जगह है, जहां कोई ओट नहीं होती। उसके शिकार का दिलचस्प तरीका यह है कि शिकारी ऊंट की ओट में धीरे-धीरे पैदल चलता हुआ शिकारी के करीब पहुंचता है और मौका मिलते ही फायर कर देता है। ऊंट से यह परिंदा नहीं डरता। ऊंट अगर करीब भी आ जाए, तो भी वह बैठा रहता है।

× × ×

तलवारों से मछली का शिकार : दर्रा बोलान में 'बती' के करीब 'बीबी नानी' के मुकाम पर मछली के शिकार का बहुत ही दिलचस्प तरीका है। जाल या कांटे से मछली का शिकार तो आपने देखा ही होगा; लेकिन तलवारों से मछली के शिकार का लुत्फ नहीं उठाया होगा और फिर वह भी रात को!

मछली के इस नये शिकारी तरीके के संबंध में काफी सुन चुका था; लेकिन कभी देखने का मौका नहीं हुआ था। आखिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दिन शिकार का प्रोग्राम बन गया हम छः-सात बजे शाम को शिकार के स्थान पर पहुंचे, जहां स्थानीय शिकारियों का पहले ही से प्रबंध किया गया था। रात का खाना खाने के बाद कोई ग्यारह बजे पार्टी ने शिकार करने का नारा लगाया। शिकारियों ने लंगोट कस लिये, और तलवार हाथ में लिये जोर-जोर से दायें-बायें इधर-उधर हरकत देकर हमला करने की तैयारी करने लगे। तैयार होने पर सबने पानी के बहाव का रुख किया और कोई पांच-छः मील नीचे चले गये, जहां पहुंचकर चार-पांच आदमी खजूरों के झुंड से खुश्क शाखों का गट्ठा बांधकर लाये। कुछ खुश्क शाखों को जोड़-कर मशाल बनायी गयी। उसे जलाकर शिकारियों ने हाथ में ले लिया। शिकारी एक हाथ में मशाल और एक में तलवार लिये पानी में कुछ-कुछ फासले पर कतार में खड़े हो गये। उनके पीछे मशाल उठाने-वाले और बाकी लोग पानी में उतर गये।

सबको खामोश रहने को कहा गया। इशारा होते ही सबने पानी में ऊपर की ओर चलना शुरू किया। चारों तरफ घुप अंधेरे में स्याह पहाड़ दैत्य की तरह लेटे हुए थे। शिकारियों की मशालें टिमटिमा रही थीं, जिनकी परछाई पानी में चमक रही थी। अचानक एक शिकारी ने तड़ातड़ पानी में तलवार चलानी शुरू की। शिकारी मशाल हाथ में लिये इधर-उधर तेजी से हमला करता था। तलवार चमक-चमककर पानी में पड़कर पत्थरों से टकराती और अंत में शिकारी के हाथ मछली फंस जाती। रात के अंधेरे में मशाल की रोशनी उसके चेहरे पर भी पड़ रही थी, बदन पानी से भीगा हुआ था और उसकी आंखें कामयाबी से चमक रही थीं। रात-भर मशालें जलती रहीं, तलवारों की पत्थरों से टकराने की आवाज गूंजती रही, शिकारी फिसल-फिसल कर उठते रहे, जंगल में कहकहे बुलंद होते रहे और शिकार की तलाश जारी रही।

कैसे-कैसे लोग !

अपनी परंपरा के अनुसार हम 'नवनीत' के दिवाली-अंक से एक बहुत ही रोचक चर्चा शुरू कर रहे हैं, जिसका शीर्षक होगा—'कैसे-कैसे लोग !'

हमारे बीच कैसे-कैसे विलक्षण स्वभाव के व्यक्ति रहते हैं और वे कैसे विचित्र व्यवहार करते हैं—यह कहना, सुनना और मनुष्य-प्रकृति के रहस्यमय रूपों से परिचय पाना ही इस चर्चा का उद्देश्य है। ऐसे कई व्यक्ति असाधारण प्रतिभाशाली, अन्यतम परिश्रमी और अतिशय शिवसंकल्पी भी होते हैं। आपके संपर्क में यदि कोई ऐसा व्यक्ति आया हो, तो आप उसकी स्वानुभवपूर्ण कथा (५०० शब्दों तक) शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरण सामुद्रिक

पांव की रेखाओं से भी मनुष्य का भाग्य जुड़ा हुआ है ।

धर्मवीर

सुनाम पटियाला का एक अच्छा कस्बा है। कई वर्ष हुए, वहां सूबेदार रामसिंह कंबोज के घर एक दिन कुछ नवयुवक एकत्र हुए। श्री रामसिंह के दोनों लड़कों—तारासिंह और अजितसिंह के अतिरिक्त उनके कुछ मित्र भी थे। इनमें एक ऊधमसिंह था। उसकी दाढ़ी-मूंछ साफ थी और उसने सूट पहन रखा था। हैट उसका एक ओर पड़ा था। यों तो ऊधमसिंह हंसमुख मिजाज का मालिक था; परंतु उस दिन वह किसी विचार में निमग्न था। शायद किसी बात की चिंता थी उसे ।

इन मित्रों को गपशप लड़ाते कुछ देर हो गयी थी। इतने में उधर से कोई ज्योतिषी गुजरा। अजितसिंह ने उसे बैठक में आने का निमंत्रण दिया। जब उसने आना स्वीकार किया, तब उन सबने क्रमशः अपना-अपना हाथ दिखाया। उससे कई प्रकार के प्रश्न पूछे गये। ज्योतिषी के उत्तरों से किसी को संतोष हुआ, किसी को न हुआ, तो भी उनमें से हर एक ने कुछ-न-कुछ पैसे उसे दे दिये।

जब सभी अपने प्रश्न कर चुके, तब तारासिंह ने ऊधमसिंह से कहा—"साहब बहादुर, आप भी पंडितजी को अपना हाथ दिखा दीजिये।"

ऊधमसिंह शायद किसी दूसरे लोक में गया हुआ था। तारासिंह के सुझाव पर वह चौंका और ज्योतिषी के मुंह की ओर जिज्ञासा-भाव से देखने लगा। उसे क्रियात्मक बातों में विश्वास था, न कि ज्योतिष में। इसके अतिरिक्त वह क्रांतिकारी था—उसे अपने प्राणों की रत्ती-भर भी परवाह न थी। उसके लिए इस बात का कोई महत्व न था कि भाग्य-देवता उसके संबंध में क्या विचार करता है और आगे चलकर उसके साथ कैसे व्यवहार की सिफारिश करता है। इसी कारण उसने ज्योतिषी से हंसते हुए कहा—"मैं हाथ तो नहीं दिखाऊंगा। हां, यदि ज्योतिषीजी मेरा पैर देखना चाहें, तो देख सकते हैं।"

सभी मित्र एक-दूसरे के मुख की ओर देखने लगे। यह एक प्रकार से ज्योतिषी का अपमान था। किसी विद्वान ब्राह्मण के हाथ में अपना पांव देना निश्चय ही उसका तथा उसके ज्ञान का निरादर था। परंतु ज्योतिषी की मुख-मुद्रा में कोई अंतर न आया। उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न केवल इसे निरादर न समझा, वरन गंभीरतापूर्वक ऊधमसिंह से बोला—"बहुत अच्छा साहब बहादुर, आप अपना पैर ही दिखाइये। मेरी समझ में जो कुछ आयेगा, वह बता दूंगा।" इस पर ऊधमसिंह ने जूते और जुराबें उतारकर अपने दोनों पैर ज्योतिषी की ओर बढ़ा दिये। उसने पहले दायें पैर को ध्यानपूर्वक देखा, फिर बायें की लकीरों का अध्ययन किया। परंतु न मालूम उसे वहां क्या नजर आया, जो वह ऊधमसिंह के मुख को घूर-घूरकर देखने लगा।

"हां, बताइये, कुछ समझ में आया आपकी?" ऊधमसिंह ने पूछा।

शेष मित्रों ने देखा कि ज्योतिषी गंभीर है—वह सचमुच ही कुछ बतानेवाला है। इस कारण अपनी-अपनी कुर्सी सरकाकर वे सब उसके निकट आ गये और उसकी ओर बड़ी दिलचस्पी से देखने लगे कि देखें वह क्या बताता है।

"बाबू साहब!" ज्योतिषी ने बड़े धीरे-से कहा—"आप बुरा तो न मानेंगे मेरे शब्द सुनकर? मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा है। इस समय आपके पैरों की रेखाओं का ही अध्ययन किया है। इसलिए जो कुछ ये रेखाएं मुझे बताती हैं, वही कह सकता हूं।

"हां, हां, कहो न!" ऊधमसिंह ने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

"बाबू साहब!" विनम्रता की मूर्ति ज्योतिषी के मुख से ये शब्द ऐसे निकले, जैसे जलेबी बनानेवाले हलवाई की छोटी हंडिया के सूराख से घुले मैदे की धार निकलती है—"आपके पांव बताते हैं कि आप विदेश जायेंगे; परंतु वहां से लौटेंगे नहीं। आपके हाथ से किसी मनुष्य का वध होगा और इस कारण आपको फांसी का दंड मिलेगा। आपकी मृत्यु का समाचार पाकर आपके आत्मीय आपसे रिश्ता-नाता तोड़ देंगे।

ऊधमसिंह हंस पड़ा। अन्य साथी चुप रह गये। किसी को उस समय यह बात समझ में न आयी। शायद ऊधमसिंह इसका मतलब जानता था; क्योंकि कुछ समय के पश्चात उसने लंदन जाकर सर माइकल ओड्वायर को अपनी पिस्तौल से गोली मार दी थी।

जब यूरोप का पहला महायुद्ध (१९१४-१८ में) हुआ, तब माइकेल ओड्वायर पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर था। उसने भारत के इस भाग में तब लोहे का सिक्का जमाया था। बड़ा क्रूर था, अत्याचार के सिवा कुछ जानता ही न था। इसी कारण अपने राज्यकाल में वह गर्व से कहा करता था कि उसके समय में पंजाब-जैसा राज-भक्त कोई प्रांत नहीं रहा और पंजाब की सैन्य-भर्ती ने ब्रिटिश साम्राज्य को बचा लिया। एक षड्यंत्र-अभियोग में जब कुछ अपराधियों को मृत्यु-दंड के स्थान में आजीवन कैद की सजा दी गयी, तब इसने भारत सरकार से सिफारिश की थी कि उन्हें फांसी दी जाये।

ऊधमसिंह को प्राणों से हाथ तो धोने पड़े; परंतु इतिहास में उसका नाम अमर हो गया। उस दिन अमृतसर की नगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पालिका ने निश्चय किया कि अमृतसर के हाल-बाजार के अंत में रानी विक्टोरिया की जो मूर्ति खड़ी हुई है, उसे हटाकर वहां एक चौमुखी मूर्ति खड़ी की जाये और चार में से एक मुख ऊधमसिंह का हो।

क्या हस्त-विज्ञान के समान पद-विज्ञान (कार्टेपेडी) भी कोई विश्वसनीय शास्त्र है? इस विषय में मीर मुहम्मद एजाज क्यूम नाम का एक सज्जन हमारी सहायता करता है। वह दस वर्ष तक बंबई में रहकर इस विज्ञान का अभ्यास करता रहा है। आठ वर्ष पूर्व वह लंदन में था—शायद अब भी वहीं हो। उसका कहना है कि इस विज्ञान का श्रीगणेश प्राचीन ईरान से हुआ। उस देश में इसके कई विशेषज्ञों का विकास हुआ। पूर्वीय देशों में इस समय भी इसके कई ज्ञाता हैं।

यों तो स्त्री या पुरुष के मुख को उसके भाग्य का स्रोत कहा जाता है; परंतु पद-विज्ञान के ज्ञाताओं का कहना है कि भाग्य का वृत्त वास्तव में पैर पर ही अंकित होता है। पांव के चिह्नों को देखकर किसी भी स्त्री या पुरुष के भावी भाग्य व अतीत का हाल बताया जा सकता है—चाहे उस व्यक्ति को पद-विज्ञान के ज्ञाता ने अपने जीवन में पहली बार ही देखा हो। पांव के तलवे पर बनी हुई रेखाएं आयु के किसी भाग में परिवर्तित नहीं होतीं। श्री मीर की सम्मति है कि पैर की हर रेखा अपनी कहानी बताती है; क्योंकि जीवन-भर का हाल प्रकृति के महान चित्रकार ने मानव के पैर पर लिख दिया है, जिसे इस विज्ञान की सहायता से पढ़ा जा सकता है।

इस विज्ञान के कारण ही अंग्रेज लड़कियां १९५७ में इस सज्जन के पीछे छाया के समान फिरने लगी थीं। चूंकि अंग्रेज-स्त्रियों को अपने भाग्य के संबंध में जानने की बहुत इच्छा रहती है, इसलिए प्रतिदिन मीर मुहम्मद के मकान पर नवयुवतियों तथा धनी स्त्रियों का जमघट लगा रहता।

एक युवती, चैपली कोरीस ने मीर को अपने यहां आने का निमंत्रण दिया। जलपान के पश्चात लड़की ने पूछा—"क्या यह सत्य है कि आप भाग्य बता सकते हैं?"

"जी हां," उसे उत्तर मिला।

"तब आप मेरे भाग्य का वृत्त बताइये।"

"क्या मैं आपका दायां तलवा देख सकता हूं?" मीर ने पूछा।

"इसे देखकर आप क्या करेंगे?"

"मैं तो पांव देखकर ही भाग्य का वृत्त बताया करता हूं,"

लड़की ने जुराबें उतार दीं और अपने पैर नंगे कर दिये। बायां पांव उठाते हुए वह बोली—"ये लीजिये।"

मीर ने उसका पांव अपने हाथ में लेकर अच्छी प्रकार देखना आरंभ किया।

कुछ मिनिट के पश्चात लड़की बोली—"एक पांव पर खड़े होने से थक गयी हूं।"

"अच्छा, आपके पास लिपस्टिक तो होगी ही?" इस प्रश्न पर उसने कुछ लाज अनुभव की और उसने सवाल किया—"लिपस्टिक? उसे क्या करेंगे आप?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आपके पैर पर लगाऊंगा!" मीर बोला।

चैपली अपने शृंगार-दान से लिपस्टिक निकालकर ले आयी और मीर के हाथ में दे दी। मीर ने उसे युवती के दायें पांव के तलवे पर अच्छी प्रकार से पोत दिया और एक सफ़ेद कागज समतल फर्श पर रखने के बाद उसने कहा—"अब यह पैर आप कागज पर दबाकर रख दें।"

उसने वैसा ही किया, जिससे कागज पर उसके दायें तलवे का नक्शा अंकित हो गया। इसे देखकर विशेषज्ञ अतीत की एक-एक बात बताने लगा, जिन्हें सुनकर चैपली बहुत प्रसन्न हुई। इसका स्पष्ट अर्थ यह था कि वे सत्य थीं।

"आज तक आपने कोई अपराध नहीं किया, इस बात का मुझे विश्वास है।"

यह सुनकर चैपली ने पूछा—"क्या इन रेखाओं से अपराध और अपराधी का भी पता लगाया जा सकता है?"

"निश्चय ही" श्री मीर ने उसे बताया—"बंबई के एक न्यायालय ने मुझे इस प्रयोजन के लिए सरकारी तौर पर नौकर रखा था। अपराधी के पैरों की रेखाएं तथा चिह्न देखकर मैं अपराध की जानकारी दिया करता था। वहां ऐसे कई व्यक्ति हैं, जो भूमि पर लगे पद-चिह्नों के नक्शे देखकर यह बता देते हैं कि इस आदमी की आयु इतनी है, रंग ऐसा है और ऊंचाई इतनी।"

"क्या यह सत्य हो सकता है?"

"क्यों नहीं? मैं आदमी के पैरों की रेखाओं एवं अन्य चिह्नों को देखकर यह बता सकता हूं कि इसने कत्ल किया है सच बात तो यह है कि प्रत्येक अपराध मनुष्य के पैर पर भाग्य की रेखा बना देता है। मैं लोगों के तलवों के चिह्न एवं रेखा देखकर अपराधियों तथा निर्दोष व्यक्तियों पृथक कर सकता हूं। अमरीका में इस समय पुलिस के पास सतहत्तर हजार अपराधि के पद-चिह्न पड़े हैं। गुप्त पुलिस इन अपराधियों की खोज में है।

"तब तो पांव देखकर यह भविष्यवाणी भी की जा सकती है कि व्यक्ति जीवन साथी का भक्त (पति-भक्त या पत्नी भक्त) रहेगा या नहीं।"

इस संबंध में मीर ने एक दिलचस्प बात सुनायी—"एक जर्मन महिला मेरे पास आयी। उसने मुझे अपने पैर दिखाये। उन्हें देखने के पश्चात मैंने बताया कि उसका विवाह एक मुसलमान के साथ होगा। ये शब्द सुनकर वह चकित रह गयी और उसके मुंह से ये शब्द निकले—'भला यह कैसे संभव है? मुझे आपके इस विज्ञान पर कोई विश्वास नहीं है।' धीरे-धीरे मैंने उसे यह विद्या सिखाना आरंभ किया, ताकि बाद में स्वयं उसे इस पर विश्वास हो जाये। वह प्रति दिन मेरे पास आती। इसका एक परिणाम यह निकला कि हम दोनों की एक दूसरे के प्रति एक विशेष प्रकार की भावना बन गयी। स्नेह ने प्रेम का रूप धारण कर लिया। फलस्वरूप आज वह मेरी पत्नी है। उसे मानना पड़ा कि मेरी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम परेशान हैं

दूसरों को खुश देखकर

सत्यपाल शर्मा

सिनेमा के गानों में अक्सर तुकबंदी अधिक और अर्थ-गांभीर्य कम होता है; पर कभी-कभी कोई ऐसी पंक्ति भी आ जाती है, जो बड़ा गंभीर अर्थ लिये होती है और चिंतन की ओर प्रवृत्त करनेवाली होती है। ऐसी ही एक पंक्ति है :

बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना,
ऐसे मनमौजी को मुश्किल है समझाना।

संभवतः सभी सिनेमा-प्रेमी इसके संदर्भ को जानते हैं। एक अल्हड़ नवयुवक एक नवयुवती से प्रेम करता है। एक बार वह नवयुवती उस नवयुवक को चिढ़ाने की गरज से कहती है कि उसकी (नवयुवती की) शादी होनेवाली है। युवती की आशा के विपरीत नवयुवक बड़ी प्रसन्नता दिखाता है। उसका विचार है कि यदि प्रेम-पात्र को प्रसन्नता है, तो उसे भी होनी चाहिये। इस समय युवती उपर्युक्त पंक्तियां गाती है।

इस अल्हड़ नवयुवक के आचरण में उदारता का, सज्जनता का, सदाशयता का जो अंश है, वह आज विरलों में ही दीख पड़ता है। हां, नवयुवती की जो प्रतिक्रिया है, वह खूब दिखाई पड़ती है। यदि महेश प्रसाद ने कपड़े के व्यापार में पैसा कमा लिया है और किराये के मकान की जगह अपना मकान बनवा लिया है, तो मोहल्लेवाले कुछ खिन्न-से दिखाई पड़ते हैं। जिनको महेश प्रसादजी की उन्नति से कोई हानि भी नहीं है, वे भी कहते मिल जाते हैं– "अभी कल तक तो कुछ सलीका नहीं था, अब दो जून रोटी मिलने लगी है।" इसी तरह देवेंद्र स्वरूपजी ने पुस्तकें लिखकर तथा अध्यवसाय से बच्चों को पढ़ाकर यदि अपनी आर्थिक स्थिति कुछ सुधार ली है, तो लोग कुछ इस प्रकार की बात कहते मिल जाते हैं–"क्या हुआ? है तो मास्टर ही।" तात्पर्य यह कि लोग दूसरे की उन्नति को घटाकर ही देखना-दिखाना पसंद करते हैं। दूसरे की खुशी में खुश नहीं होते।

हृदय की यह अनुदारता बहुत ही बुरी चीज है। दूसरे की उन्नति में प्रसन्नता के स्थान पर जलन अनुभव करना व्यक्ति के अपने जीवन में तीव्र विष का काम करता है। ऐसे व्यक्ति में दूसरे की उन्नति देखकर यह प्रतिक्रिया तो कभी होती ही नहीं कि वह भी जी-जान से जुटकर आगे बढ़े। उसमें तो जलन ही होती है, जो निष्क्रियता और ओछेपन की ओर प्रवृत्त करती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे चलकर यह जलन समाज-जीवन के लिए भी विष का काम करने लगती है। जो अपने सद्‌गुणों और परिश्रम से आगे बढ़ गये हैं, उनको पीछे घसीटने के उपक्रम किये जाते हैं। बहुत से महापुरुषों का विरोध होने का एक कारण यह प्रवृत्ति भी है। सुकरात के साथ क्या हुआ ? अपने को विद्वान समझनेवाले लोग सुकरात द्वारा उठाये गये प्रश्नों का जब कोई समाधानकारक उत्तर न दे सके, तो उन्होंने सुकरात का विरोध करना शुरू कर दिया, जिसकी परिणति उस महात्मा के प्राणांत में हुई। इस प्रकार के अनेक उदाहरण बिना किसी विशेष प्रयास के मिल जायेंगे। इन अंध-विरोधियों में यदि दूसरे की उन्नति में प्रसन्नता अनुभव करने का मौलिक गुण होता, तो उनमें डाह, द्वेष, कुटिलता और निर्ममता आदि न जाने कितने अवगुण कभी पैदा ही न हुए होते। इतिहास में मंथराएं न होतीं, और साहित्य में इयागो (शेक्सपियर के नाटक 'ओथेलो' का खलनायक) न होते।

दूसरे के सुख में सुखी होना यदि सहानुभूति का एक पहलू है, तो दूसरे के दुःख में दुःखी होना दूसरा पहलू है। परदुःखकातरता ने इस संसार में सदा श्रेष्ठ कार्यों की प्रेरणा दी है। गौतम गौतम ही रह जाते, बुद्ध न होते, यदि उनमें परदुःखकातरता न होती। इस प्रसंग में अब्राहम लिंकन से अच्छा उदाहरण हाल के विश्व-इतिहास में दूसरा शायद ही मिले। जब उन्होंने नीग्रो और म्युलैटो समाज पर गोरों द्वारा अमानुषिक अत्याचार होते देखे, उनका हृदय कांप उठा और उन्होंने निश्चय किया कि वे दास-प्रथा की कलंक-कालिमा को धो डालेंगे। इसके लिए उन्हें भीषण गृहयुद्ध की विभीषिका में से भी होकर गुजरना पड़ा; फिर भी वे दासता को गैरकानूनी घोषित करवाकर ही रहे।

परदुःख-कातरता का अर्थ दुःख अनुभव करना और प्रकट करना मात्र ही नहीं है। इतना भी कोई करे, तो अच्छा है; बशर्ते वह कोरा दिखावा ही न हो। पर इतना ही काफी नहीं है। लिंकन को ही लें। उनकी क्या विशेषता थी ? दुःख तो काफी लोगों ने अनुभव किया होगा। कुछ लोगों ने उसको प्रकट भी किया होगा; पर दुःख के कारण को मिटाने के लिए प्राण-पण से जुटे केवल लिंकन ही। यही उनकी महानता सिद्ध हुई।

आश्चर्य तो यह है कि इतनी सीधी-सी बात हमारी समझ और आचरण में नहीं आ पाती। इस पर तुर्रा यह है कि स्वयं कष्ट उठाकर परहित करनेवालों को लौकिक दृष्टि से कुछ नासमझ समझा जाता है। जो हो, ऐसे लोगों के प्रति सामान्य प्रतिक्रिया वही है, जो नवयुवती के इन शब्दों में प्रकट होती है—ऐसे मनमौजी को मुश्किल है समझाना।

काश कि दुनिया यह मानना ही छोड़ दे कि ऐसे मनमौजियों को समझाना आवश्यक है। काश कि उनको समझाना मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव होता और ऐसे मनमौजियों की संख्या संसार में कम न होती।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार को समय दीजिए

सुमित्रा श्रीवास्तव

क्या आपने अपने बच्चों के लिए कोई समय नियत कर रखा है ? अपने पारिवारिक जीवन की उन्नति के लिए आप क्या कर रहे हैं ? हो सकता है, आपको इन दोनों प्रश्नों के बीच कोई तारतम्य न मालूम हो; पर यदि गहराई से सोचें, तो यह बात साफ हो जायेगी कि मां-बाप का अपने बच्चों के साथ नित्य कुछ समय बिताने का परिणाम कितना सुंदर हो सकता है और उनका यह कार्य परिवार की प्रसन्नता और उन्नति में कितना हाथ बंटाता है।

दरअसल आज के युग के बहुत-से माता-पिताओं की प्रवृत्ति यह है कि वे बच्चों की भौतिक आवश्यकताओं का जुगाड़ करते रहने-भर की फिक्र करते हैं, उन्हें स्कूल भेज देते हैं और बाकी सब उन्हीं पर छोड़ देते हैं। एक पांच बच्चों की मां ने कहा—"भगवान जानता है, बच्चों के लिए हम क्या नहीं करते ! कोई समय नियत करके या नियमित कार्यक्रम बनाकर हम उनके साथ नहीं रहते, तो इससे क्या फर्क पड़ता है ? स्कूल तो जाते ही हैं, वहां पढ़ना, खेलना-कूदना सब कुछ तो होता है।.....फिर पास-पड़ोस है, दूसरे बच्चे हैं, इनका उनमें मिलना-बैठना होता ही है। आप खुद देख लें, हमें इतना समय कहां मिलता है कि बच्चों के साथ बैठें-खेलें ?"

मां-बाप व्यस्त हो सकते हैं; पर अपनी औलाद को बनाने में उनकी जो जिम्मेदारी है, उससे मुकर नहीं सकते। स्कूल आदि बाहरी संस्थाएं भी उनके निर्माण में काफी योग देती हैं; फिर भी वे माता-पिता का स्थान नहीं ले सकतीं।

सच तो यह है कि आप अपने बच्चों के साथ नियमित रूप से कुछ-न-कुछ समय नहीं बिताते, तो स्वयं भी जीवन के एक बहुत बड़े वरदान से वंचित रह जाते हैं।

इसलिए कुछ समय आप पूरे परिवार के साथ रहने के लिए नियत कर दीजिये—कम-से-कम एक घंटा ! वैसे समय अधिक रखने का उतना महत्व नहीं है, जितना कि रखे हुए समय के नियमित पालन का है। इससे एक खास समय के लिए पूरे परिवार को एकत्र होने की आदत पड़ेगी और वह समय 'परिवार का समय' या सबके एक साथ मिल-बैठने का समय बन जायेगा। आप देखेंगे कि बच्चे इस वक्त के आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगेंगे। और दिन-भर में इस समय को वे सबसे ज्यादा आनंद का समय मानें, तो भी कोई अचरज नहीं।

यह समय पिता के काम पर से आने के बाद शरू हो सकता है, शाम का भोजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए हो सकता है या छुट्टियों का दिन (शनि-रवि) भी हो सकता है।

लेकिन सिर्फ एक-दूसरे के साथ आ बैठना ही काफी नहीं है। बात तब बनती है, जब आपस में अनुभवों, विचारों, काम-काज और योजनाओं का विनिमय हो, एक-दूसरे के साथ हाथ भी बंटाया जाता हो।

जहां ऐसा होता हो, वहां पूर्व-योजना जरूरी है। यदि कार्यक्रम पूर्व-नियोजित है, तो इससे आप बेकार की बातें करने से बचेंगे, चुप्पी मारे नहीं बैठे रहेंगे या 'अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग' नहीं बजायेंगे।

बढ़िया तो यह होगा कि कार्यक्रम सबकी राय लेकर बने, कल्पना से काम लिया जाये, नित नये काम किये जायें और परिवार के समय को एकरस न होने दिया जाये। कोशिश यह रहे कि कार्यक्रमों में सबकी रुचि बराबर बनी रहे।

ऐसे अनेक काम हैं, जो मिलकर किये जा सकते हैं। कुछ भी कर गुजरने की बात नहीं है। असल बात तो यह है कि कोई उपयोगी काम मिल-जुलकर किया जाये। उदाहरणतया, बागवानी को ही ले लीजिये। सारा परिवार मिलकर फूलों के बीज बोये, नयी पौधें लगाये या सब्जी उगाये। गर्मियों में साथ घूमने निकलें, तैरना या ऐसी ही अन्य बातें सीखें। सर्दियों में साथ-साथ व्यायाम करें, मिलकर अलाव जलायें और तापें! कभी-कभी अपनी सुविधा के अनुसार दूर या निकट की यात्रा करने का भी कार्यक्रम बन सकता है।

पारिवारिक आयोजनों की खास बात यह है कि हर व्यक्ति 'कर्ता' बन जाता है, वह महज दर्शक नहीं रहता। उदाहरण के लिए, मान लीजिये आप घर में सिनेमा चलाते हैं। घरेलू सिनेमा देखने के लिए सब मिलकर कुछ-न-कुछ करेंगे। कोई परदा लगा रहा है, कोई कुर्सियां लगा रहा है, कोई सिनेमा की मशीन चला रहा है, वगैरह-वगैरह। इससे सहयोग-सहकार की भावना पनपती है, व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलता है और ज्ञान बढ़ता है।

बच्चों को घर में कई तरह की कारीगरी भी सिखायी जा सकती है। किसी काम को स्वयं करके और अच्छा करके संतुष्ट होने की प्रवृत्ति बच्चों में विकसित की जानी चाहिये। बजाय इसके कि उनके कामों को आप सुधारें, उन्हें ऐसी शिक्षा दें कि वे अपने हर कार्य को चुनौती के रूप में लें और खुद करके दिखायें। जब बच्चा किसी कार्य को स्वयं कर सकने का कौशल हासिल कर लेता है, तो यह बात उसे बड़ा सुख देती है। हुनर आदमी का बहुत बड़ा दोस्त है।

और हुनर सीखने के लिए तरह-तरह की योजनाएं बनायी जा सकती हैं। किसी दिन की शाम आप किसी विशेष कार्य के लिए तय कर लेते हैं। काम बहुत-से हो सकते हैं। जैसे, चाकू से लकड़ी पर खुदाई का काम करना, ब्रश से पेंटिंग करना, पेंसिल से चित्र बनाना, टोकरी बनाना, मिट्टी के खिलौने बनाना, आदि-आदि। किसी काम के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामान लेकर बैठना और औजारों से काम लेना, नयी जानकारी तो देता ही है,व्यक्ति में आत्मविश्वास भी उत्पन्न करता है।

घर के लोगों में संगीत का शौक हो सकता है। तरह-तरह के वाद्ययंत्र बजाने में निपुणता हासिल करना भी काफी आनंद-दायी है। एक व्यक्ति हारमोनियम बजा रहा है, दूसरा तबला, सब लोग मिलकर गा रहे हैं–ऐसे कार्यक्रमों में प्रायः लोगों को इतना मजा आता है कि बहुत-से परिवार इसे नित्यक्रम में शामिल कर लेते हैं। आरती के समय बच्चे दौड़कर उसमें भाग लेने पहुंच जाते हैं, शंख या घंटी बजाते हैं और गाने में भी तन्मय होकर साथ देते हैं।

उपयोगी काम सीखने का महत्व और भी ज्यादा है। लड़के-लड़कियों को सीना-पिरोना आता हो, तो निश्चय ही आगे चलकर वह बहुत काम आ सकता है। लड़कियां कुशल गृहिणियां बनेंगी, अपने घर के कपड़े दुरुस्त रखेंगी और सिलाई पर होने-वाला बहुत-सा खर्चा भी बचा लेंगी। लड़कों को सीना-पिरोना आना कोई लज्जा की बात नहीं है–कभी उन्हें भी पाल या तंबू या अपना पाजामा सीने की जरूरत पड़ सकती है। यूरोप में तो कई लड़के सिलाई के विशेषज्ञ होते हैं।

आपको खाना पकाना आता हो, तो वक्त पड़ने पर वह भी बहुत काम आ सकता है! हमारे देश में प्रायः लड़कियों को ही पाक-विद्या सिखायी जाती है। यद्यपि फैशन की झोंक में पढ़ी-लिखी लड़कियां भी चूल्हे-चौके से मुंह मोड़ रही हैं। इस प्रवृत्ति में सुखी गृहस्थी का स्वप्न ध्वस्त होता दिखाई देता है। भला सोचिये तो, आपकी पत्नी जब स्वयं अपने हाथ से बनाया हुआ व्यंजन खुद परोसकर खिलाती है, तो आपको और उसे कितना आनंद आता है! बच्चे जब कोई व्यंजन बनाते हैं और उसे परिवार के सब लोग स्वाद ले-लेकर खाते हैं, तो उनके आनंद का पार नहीं रहता।

जानकारी बढ़ाने की दृष्टि से कोई कार्य-क्रम ऐसा भी रखा जा सकता है, जब घर की चीजों की मशीनरी खोलकर देखें कि विविध यंत्र किस प्रकार काम करते हैं। घड़ी के पुर्जे कैसे चलते हैं? एक दिन घड़ी को खोलें और बच्चों को दिखायें। रेडियो की मशीनरी देखकर बच्चे खुश होते हैं। किसी दिन अपनी साइकल के पुर्जे खोलें और कसें-बच्चे इसे देखकर बहुत कुछ सीख सकते हैं। ये बातें आनंद देने के साथ-साथ ज्ञान भी देती हैं।

मां-बाप बच्चों को यह भी सिखा सकते हैं कि किताबें कैसे काम में ली जानी चाहिये, लोगों से भेंट किस प्रकार करनी चाहिये। पांच साल के बच्चे से पूछिये–"अगर तुम कहीं खो जाओ, तो क्या करोगे?" बड़े बच्चे से पूछा जा सकता है–"अगर विदेश में तुम्हारा पास-पोर्ट खो जाये, तो तुम क्या करोगे?" उन्हें सिखाइये कि आपत्काल में उन्हें क्या-क्या करना चाहिये। उन्हें बिना बताये, कोई दिक्कत खड़ी कीजिये और देखिये कि इस पर वे क्या करते हैं। वेश-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूषा, भाषा और शिष्टाचार की अच्छाइयां उन्हें समझाइये और बताइयें कि उन्हें अपनाने से व्यक्ति का व्यक्तित्व कितना ऊंचा उठ जाता है।

परिवार के साथ समय बिताने का प्रमुख उद्देश्य यही होना चाहिये कि घर के लोग अच्छे संस्कारों में ढलें। छोटी उम्र में बच्चे रामायण और महाभारत की कथाएं समझ लेते हैं। जातक, हितोपदेश और पंचतंत्र की कहानियां उन्हें बहुत कुछ सीखा सकती हैं और उनके मन पर सद्विचारों और अच्छाइयों की ओर उन्मुख होने के संस्कार जमा सकती हैं। राम ने पिता की आज्ञा मानकर वनवास झेला, लक्ष्मण ने भाई के प्रेम में राजसी सुख छोड़ दिया, भरत ने अयोध्या की राजगद्दी पर स्वयं बैठने के बजाय बड़े भाई की खड़ाऊं प्रतिष्ठित की— इन कहानियों के पीछे जो त्याग और आदर्श हैं, वे बाल-मन में पैठ जायेंगे, तो वे उन्हें बड़े होकर चरितार्थ भी करेंगे। पंचतंत्र आदि की कथाओं से बच्चों में व्यावहारिक बुद्धि का विकास हो सकता है।

परिवार में किसी गुण विशेष के विविध रूपों पर भी विचार-विमर्श हो सकता है। जैसे ईमानदारी को लीजिये। इसके अनेक रूप हैं। जैसे वचन का पालन करना, वादा निभाना, अपने हिस्से का काम पूरा करना, दूसरे के काम का श्रेय स्वयं न लेना, ठगी-धोखा न देना, अपनी भूल स्वीकार लेना, उधार ली हुई वस्तु को लौटाना, दूसरों की वस्तु न लेना, सच बोलना, आदि। बच्चों को इन गुणों से संबद्ध कथाएं सुनाकर समझायेंगे, तो उनके मन में ये गुण घर कर जायेंगे।

बच्चों के साथ समय बिताने से पूरे परिवार की खुशियां बढ़ती हैं। बच्चे मां-बाप के और निकट आ जाते हैं, उनमें आत्म-सम्मान पनपता है, सद्रुचियां विकसित होती हैं। वे आज्ञाकारी और सुसंस्कारी बनते हैं और बाल-जीवन में पड़े ये संस्कार टिकाऊ होते हैं।

★

बस में एक देवीजी अपने छः बच्चों के साथ सवार हुईं और बार-बार कंडक्टर को उनकी हिफाजत का आदेश देती रहीं। कोई बच्चा चिल्ला रहा था और कोई खिड़की से बाहर सिर निकाल रहा था। बस से नीचे उतरने लगीं, तो कंडक्टर ने कहा—"श्रीमतीजी, अगर आप इसे गुस्ताखी न समझें, तो क्या मैं कह सकता हूं कि जब आप बाहर निकलें, तो अपने आवे बच्चों को घर पर ही छोड़ आया करें।"

औरत ने गुस्से से कंडक्टर की तरफ देखते हुए कहा—"मैंने यही तो किया है।"

★

श्रीमती भाटिया बाजार गयीं। उन्होंने दूकानदार से पूछा—"अंडे क्या भाव दिये हैं?" दुकानदार ने जवाब दिया—"साबुत चार आने का एक; और टूटे हुए तीन-तीन आने।" श्रीमती भाटिया बोलीं—"अच्छा तो फिर हमारे लिए दस अंडे तोड़ दो।" —अल्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला कहानी

बीबी करुन

रमापद चौधुरी

अकस्मात यदि कोई आपके कानों के पास वही नाम लेकर पुकार उठे; यदि किसी दिन आप उसे खोज निकालें; किसी दूर सफर की रेलगाड़ी के रात के डिब्बे में, अथवा किसी भीड़-भाड़वाले शहर की अंधी गली में आश्रय पाने के लिए दोपहर या रात को कुंडी खटखटाते हुए, किंवा मान लीजिये, दोपहर की रेल से आप कहीं जा रहे हैं, किसी छोटे-से स्टेशन के प्लैटफार्म पर रेलवे-घेरे के सहारे खड़ा कोई मधुर-म्लान मुंह आपको दिखाई पड़े और आज के वर्णन में और उसमें कुछ सादृश्य दिखाई पड़ जाये—बस, इतनी-सी आशा लेकर ही कह रहा हूं।

हो सकता है आप लोगों को असंभव जान पड़े; पर विश्वास कीजिये, उसे आंखों से देखने के पहले से ही बंशियारे की हवा में अफवाहों की मधु-गुंजन की तरंगें दौड़ने लगी थीं।

मरांगड़ा के पुल के उस पार हरें तथा बहेड़े की जो झाड़ियां हैं, उन्हीं के बीच होते हुए मांग की तरह संकरा सफेद मिट्टी का रास्ता जाता है। दोनों किनारों पर हमारे क्वार्टरों की लाइनों को अपनी कोहनियों से ठोकर मारते हुए वह रास्ता साहबी इलाके में जा पहुंचा है।

खड़ियों, भुंपि, मुंडा और माझियों के झोंपड़े बहुत दूर उस खड्डे के उस किनारे पर हैं। विलासपुरियों के डेरे दो-दस कदम और भी आगे हैं। उन लोगों के साथ हमारी मुलाकात होती थी केवल बाजार में या हाजिरी के वक्त! ठीक वैसे ही जैसे बंगलों में रहनेवाले, लंबी तनख्वाह पानेवालों से हम लोगों की मुलाकात हुआ करती थी।

इसी दुनिया से सटे उत्तर के ढाल पर पानी में डूबे हुए एक नंबर खड्डे को छूकर ही ईंटों की नयी बैरक शुरू हो गयी। तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगीं।

महाराष्ट्रीय मैनेजर साठे साहब की फ्रांसीसी मेम कलकत्ते में रहती थी। टीले के ऊपरवाले जगत में नारीत्व का प्रतिनिधित्व करती थीं बड़े मुंशी की नेपाली आया, ठेकेदार गोपीसिंह की घरनी के दर्शन तो सूरज की किरणों के लिए भी दूभर थे। और फिर थी आरमेनियन जोसेफ साहब की लंगड़ी लाड़ली। हमारे पास घर तो था; पर घरनी नहीं थी। जंगल की जिंदगी की विभीषिका तथा काले कोयले के पाताल-राज्य के बीचवाली हमारी इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे भी एक-दो लाजेंजेस हाथ बढ़ाकर देती और कहती—"देखिये, इन बच्चों की संपदा में से हिस्सा बंटा रही हूं। बात फैल जाने से मेरी नौकरी चली जायेगी।"

इस तरह कुछ देर तक बेकार की बातें करके मैं उठकर चल देता। यद्यपि वहां से उठने का मन नहीं होता था। इच्छा यही होती कि घंटों बैठकर उसकी हंसी निहारता रहूं, उसकी बातें सुनता रहूं। पर अनुपमा ही बीच में याद दिला देती—"ड्यूटी पर देर हो जायेगी।" और फिर चलते समय धीमे-से कहती—"समय मिले, तो कृपया एक बार क्वार्टर की तरफ चले जाइयेगा। बेचारे हिल-डुल तक नहीं सकते!"

इसी वजह से मैं कभी-कभी बेबी-क्रेच में न जाकर अनुपमा के स्वामी के पास चला जाता। पैरेलिसिस-ग्रस्त अवश शरीर शायद जरा-सा हिल पाता। आंखों व चेहरे पर फीकी हंसी खिल उठती।

छुट्टी के दिन अनुपमा पति के नजदीक ही रहा करती और उसकी छोटी-सी बच्ची मुन्नू भी। रसोई बनाते-बनाते दो क्षण के लिए आकर स्वामी के पास बैठ जाती। कभी-कभी अलगनी के कपड़ों को संभालते-संभालते ही वह दुनिया-भर की खबरें सुना जाती—कौन-सा बच्चा कैसी शैतानी करता है, मरियम कितनी बेवकूफ है, अथवा मुन्नू बड़ी होकर क्या पढ़ेगी, विलायत जायेगी कि नहीं, आदि। ये सब व्यर्थ की बातें भी सुनने में बड़ी अच्छी लगतीं। और अच्छी लगती अनुपमा के स्वामी की आंखों की खुशी से झलकती हुई हंसी।

उस कोलियरी के वातावरण में यदि कोई अच्छे नहीं लगते, तो केवल ज्योतिर्मय बाबू इस इलाके में जिनका परिचय था—जे० पी० ओ० साहब। अनुपमा से मिलने के लिए वे क्रेच तथा क्वार्टर में अक्सर आया करते थे। कुली-कामिनों की सुख-सुविधाओं पर ध्यान रखना ही उनका काम था। और इसी बहाने वे अनुपमा के पास आया करते थे। मैं किसी दिन देखता—तिजहरिया ठंडी होते ही अनुपमा नजदीक की पहाड़ी पर टहलने जा रही है; साथ में हैं जे० पी० ओ० साहब। मुन्नू को कभी अनुपमा गोद में लेती है, कभी ज्योतिर्मय बाबू। कभी देखता—वे लोग मरांगड़ा के पानी में पैर डुबोकर बैठे हैं, किंवा मानकीबाबा-मठ के घासवाले बगीचे में हैं वे!

इच्छा होने पर भी मैं उस समय उनके पास नहीं जा सकता था। सच बात तो यह है कि जे० पी० ओ० साहब से हम लोग डरते थे।

अतः जिस दिन मैंने देखा, मुन्नू को साथ लेकर अनुपमा अकेली टहलने जा रही है, उस दिन मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। पर मरियम ने बताया कि इसके पीछे एक इतिहास है। बोली—"जे० पी० ओ० ठो आदमी अच्छा नहीं है रे बाबू। औरतों की इज्जत लूटता है।"

और इसी कारण अनुपमा ने उसकी उपेक्षा कर दी है। जे० पी० ओ० के मुंह पर ही बेबी-क्रेच का दरवाजा बंद कर दिया है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने। यह सुनकर हम लोगों को अनुपमा के प्रति जितनी श्रद्धा हुई, उससे भी कहीं अधिक शंका हुई। हमारे अड्डों पर, दफ्तरों में, तरह-तरह की बातें होने लगीं। अनुपमा जे० पी० ओ० साहब की कोप-दृष्टि से हरगिज नहीं बच सकती। हम लोग बस दिन गिनने लगे कि अनुपमा को नौकरी से बरखास्त होने का नोटिस कब तक मिलता है।

पर एक दिन कुछ और ही देखने को मिला। मैं हाजिरी-घर की जालीदार खिड़की पर बैठकर कुली-कामिनों की चकतियों के नंबर और ठेकेदारों के नाम पूछ रहा था। हठात देखा, मजदूरिनों का दल पहले की तरह ही बच्चों को पीठ पर बांधकर काम पर आया है।

छुट्टी का साइरन बजने के बाद, सब कामिनें दल बनाकर मैनेजर साठे साहब के बंगले में जाकर हाजिर हुईं और शिकायत की कि अब वे बीबी-करज में अपने बच्चों को नहीं रखेंगी। बीबी-करज की गिदरा-आयु अनुपमा अपनी बच्ची की हिफाजत में ही व्यस्त रहती है। उन सबके बच्चे पड़े-पड़े रोया करते हैं, नहीं तो अफीम के नशे में सोये रहते हैं।

हम लोग सुनकर हंस उठे। जिसको तसल्ली से दो पल बातचीत करने की फुरसत नहीं रहती है, वही अफीम देकर बच्चों को सुलाया करती है। यह भी कोई बात है?

हम सबने मिलकर मैनेजर से कहा—"सर, यह सब कुछ झूठ है। आप खुद ही जाकर कभी देख लीजियेगा।"

मैनेजर साहब ने सिर हिलाकर कहा—"जे० पी० ओ० का पहलेवाला रिपोर्ट भी ऐसा ही है।" मगर.....मगर एक दिन काम बंद होने से 'टिपलरें' जम जायेंगे। अठारहों वैगन वापस लौट जायेंगी। कलकत्ते का दफ्तर कैफियत तलब कर बैठेगा। और हो सकता है, साठे साहब की 'कान्फिडेंशियल फाइल' में दो-एक टेढ़े मंतव्य जुड़ जायें।

मैनेजर साहब ने अनुपमा को बुलाकर हुक्म दिया—"तुम्हारी लड़की के वास्ते बेबी-केच नहीं है। उसे क्वार्टर में ही छोड़ कर आया करो।"

हुक्म सुनते ही अनपमा की आंखों से झरझर आंसू बहने लगे। गिड़गिड़ाने लगी—"सर, मेरे स्वामी को पैरेलिसिस की बीमारी है, उठ नहीं सकते। मेरी बच्ची को देखेगा कौन? वह अकेली पड़ी-पड़ी रोती रहेगी। क्या करूं, आप ही बताइये?"

पर अनुपमा के सुख-आराम की तरफ खयाल करना मैनेजर का काम नहीं है। मैनेजर का काम है कोलियरी को चलाना। अतः आंख का पानी ही पोंछकर अनुपमा को लौट आना पड़ा। वह सिर्फ इतना ही बोली—"मुझे मालूम है—कुली-कामिनों को किसने बहकाया है।"

हम सबने सिर नीचा करके कहा—"हम लोगों को भी मालूम है; पर जानने पर भी तो कुछ किया नहीं जा सकता।" हमने अनुभव किया—हमारे पास केवल अनुभूति ही है, शक्ति नहीं है। हमने अनुपमा से कहा—"कोई बात नहीं है, मुन्नू की पूरी जिम्मे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटी-सी दुनिया में विवाहित तथा कुंआरों में किसी प्रकार का भेद नहीं था। इसीलिए यह खबर सुनते ही सबके-सब गुंजन-मुखर हो उठे।

पता चला, पानी से भरा वह जो एक नंबर खड्डु है, जिसको झील समझकर हम भूल भी कर बैठ सकते हैं, उसके बगल में हाल ही में ईंट की जो बैरक तैयार हुई है, वह डाइनामाइट का कोई डिपो नहीं है, जेनरेटर का घर भी नहीं है, एजेंट साहब का डाकबंगला भी नहीं है।

वह है बेबी-क्रेच। और इसी बेबी-क्रेच की नर्स बनकर कोई आ रही है। आ रही है इस पतझड़ के अरण्य में केवल हरियाली लेकर ही नहीं, लाल फागुन की आग भी बिखेरती हुई।

भुंपि और खड़ियों को यह बात मालूम हुई। अरावों की क्रिस्तानी लड़की मरियम ने पूछा—"बीबी करज—ठो क्या है बाबू ?" मैंने कहा—"बीबी करज नहीं रे, बेबी-क्रेच। कुली-कामिनें (मजदूरिनें) जब खड्डे में जायेंगी, तब अपने-अपने बच्चों को वहां रख जायेंगी।" असल में उच्चारण होना चाहिये बेबी-क्रेश, यह किसी को भी नहीं मालूम था। हम बेबी-क्रेच ही कहा करते थे।

मरियम बड़ी खुश हुई। हम लोग भी कम खुश नहीं हुए! हाजिरी का काम खत्म करके मैं रोज खड्डे में चक्कर लगाने जाता और देखता—असहाय आंखों से ताकनेवाले बच्चों को पीठ पर चिपकाये हुए मजदूरिनों का दल सिर पर खंचिया रखे खड़ाई पर चढ़ रहा है। उनका हृष्ट-पुष्ट शरीर बोझ के भार से दोनों तरफ से दबे हुए स्प्रिंग की भांति सिकुड़ गया है। ओवरबर्डन (अधि भार) के बाद भी धूप-तपी रेत में छ चटाई पर पड़े-पड़े बच्चे मारे भूख से रोने लगते। पतली काठियों पर टंगे हुए कपड़ों से नाव के पाल की तरह सूरज को ढंककर छांह बनाने की कोशिश की जाती। कभी-कभी हवा के झोकों से वह आड़ हट जाती, तो भाड़ में तपे-से गरम बालू पर लुढ़क कर बच्चे रो पड़ते। मुंशी की आंखों को धोखा देकर और अपने शरीर की थकावट को भुलावा देकर कामिनी-मां बच्चे को चुप कराती, उसकी भूख मिटाती।

कोलियरी-जगत की इस कालिमा को मिटा देने के लिए ही शायद अनुपमा आ पहुंची। क्षण-भर में ही यह खबर चारों ओर फैल गयी।

सिंडिकेट की बस से बहुत-से लोग उतरे। हो, मुंड़ों का झुंड और बीड़हड़ का दल उतरा। पूरे असबाब के साथ स्टेशनरी-दुकान के मालिक गोपीविलास उतरे। रामगढ़-मीटिंग से वापस मिसिरजी तथा उपधियाजी भी उतरे। दो-चार हटियावाले भी कपड़ों के बंडल तथा मनीहारी सामानों के खांचे लिये उतरे। सबसे पीछे जो उतरी, उसके बायें सीने पर खिली हुई जुही-सी एक नन्ही-सी बच्ची चिपकी हुई थी। हम कई आदमियों ने सावधानी से पकड़कर पैरेलिसिस के शिकार अवश-अंग अनुपमा के स्वामी को उतारा। फुलझड़ी की तरह भरपूर हंसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिखेरकर अनुपमा ने नमस्कार किया। वह अनमोल चित्र अमिट बनकर हम सबके मन में गुंथ-सा गया। हाथों में शंख की बनी सिर्फ एक-एक सफेद चूड़ी, सुंदर हंसी, मुख में मोतियों की दो चमकीली कतारें, ठोड़ी पर घाव का मिटता हुआ दाग और मांग में सिंदूर नहीं, मानो रक्त-पलाश की पंखड़ी।

जंगल-झाड़ियों के बीच होते हुए टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी पकड़कर हम लौट आये। रास्ते-भर मन की हर एक तह में अनुपमा के विषय में तरह-तरह की कसक के उतार-चढ़ाव होते रहे। एक आयी है, हां आयी है, इस पतझड़ के अरण्य में, केवल हरीतिमा की शोभा ही लेकर नहीं, रक्त-पलाश की आग बिखेरती हुई!

उसी आग के आकर्षण से ही तो मैं अक्सर वेवी-क्रेच में जाकर हाजिर होता! दोपहर में साइरन बजने के बाद खड्डे की मुंहा-नीवाले हाजिरी-घर की जालीदार खिड़की पर आकर बैठने में मुझे रोज देर हो जाती।

एक नंबर खड्डे की जल-तरंगों को देखते-देखते अचानक रुक जाता और वेबी-क्रेच में लौट आता। मुंह पर हंसी बिखेरकर अनुपमा स्वागत करती। बैठने के लिए कुर्सी ला देती। पर शांति से बैठ कर बात करने के लिए उस बेचारी को दो-क्षण की भी फुरसत नहीं मिलती।

"बैठिये, इन नटखटों के लिए दूध तैयार हुआ कि नहीं जरा देख आऊं," कहकर वह चली जाती।

बड़े-से हाल में कुछ हिंडोले हैं—दो-चार बेबीकाट भी हैं। वे काले-कजले बच्चे कभी चटाई पर बैठकर भी खेला करते थे। वह जाते समय दो-एक हिंडोलों को हिला दिया करती, टूटी गुड़ियों के झगड़े भी मिटा देती। कभी-कभी किसी का इजार (कच्छा) बदलने के लिए वह एटेंडेंट मरियम को पुकारती। पहली पुकार में अगर वह न आती, तो अनुपमा खुद ही वह काम भी कर लेती।

इसके बाद वह मुंह में लाजेंजेस डालकर चूसती हुई श्वेत-पुष्प की भांति अपनी नन्ही बच्ची को गोद में लिये आती और सामने खड़ी हो जाती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारी हम लोग ले रहे हैं।" वह मारे खुशी के फूल उठी। आंचल से आंखों को पोंछकर बोली—"मैं जानती थी।"

हम लोग बारी-बारी से मुन्नू की खोज-खबर लेने जाया करते थे। मैं, कंपास बाबू तथा डाकघर का अवनी। ड्यूटी पर जाने के पहले या दोपहर में, जिसको जब समय मिलता, वहां जाकर देखभाल कर आता। अनुपमा के स्वामी रुग्ण-असहाय आंखें पसार-कर देखने लगते। बोलने की भी कोशिश करते, जीभ सुन्न हो जाने की वजह से बातें आपस में टकराकर भीतर ही रह जातीं। घुटनों के बल पर मुन्नू करीब आ जाती, हाथ उठाकर गोद में उठना चाहती। हम हंसते और हंसाते। चंदा करके उसके लिए रामगढ़ से गुड़िया, लाजेंजेस, कपड़े आदि भी मंगा दिया करते।

जब दोपहर का साइरन बज जाता, तब उसे छोड़कर चले आना पड़ता। बेबी-क्रेच के सामने से होकर जाते-जाते देखता—अनुपमा अपनी व्याकुल आंखें पसारकर खिड़की के सामने खड़ी है। आंखों से आंखें मिलतीं। मैं मुस्कराकर सिर हिला देता और साथ ही कह देता—"हां, देख आया।"

"किवाड़ अच्छी तरह बंद कर दिये थे न?" वह शंकित स्वर में पूछ उठती। और उत्तर मिलते ही खिड़की से हट जाती।

मैं मन-ही-मन सोचने लगता—काम के झंझट की वजह से क्षण-भर के लिए भी वह रुक नहीं सकती।

नित्य-प्रति के इस क्रम में अचानक एक दिन विघ्न पड़ गया। अनुपमा के क्वार्टर पहुंचकर देखा, फाटक खुला है और नहीं है। अनुपमा के स्वामी कुछ कहना चाहते थे; पर बोल नहीं सके। हाथों को उठाना चाहते थे; पर असफल होकर गिर दिया। उनकी दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। मैंने चिल्लाकर पुकारा—"मुन्नू! मुन्नू!" पर खुशी से मीठी हंसी हंसकर किसी ने जवाब नहीं दिया। सारे मकान को छान डाला। बाहर भी खोजा हमने। लेकिन मैं कंपास बाबू, डाकघर का अवनी तथा और भी बहुत से लोग—सब असफल रहे। खबर पाकर अनुपमा भी दौड़ी हुई आयी।

दो-एक दिन के बाद मुन्नू मिली। संवाद मछुए पानी से भरे एक नंबर खड्डे में मछली पकड़ रहे थे। वहां मुन्नू को पानी में पाकर उठा लाये। सारी कोलियरी की भीड़ उमड़ पड़ी नन्ही-सी मुन्नू के फूले हुए शव को देखने।

अनुपमा ने आंखें उठाकर मेरी तरफ, कंपास बाबू की तरफ तथा अवनी की तरफ केवल एक बार देखा। उन आंखों में मानो मार्मिक शिकायत भरी हुई थी—"आप लोगों ने वचन दिया था।" दुःख और शर्म के मारे हम लोगों ने सिर झुका लिये, सचमुच हम वचन नहीं निभा सके थे।

क्षोभ तथा लज्जा से मुंह दिखाने में भी भय होता था। इसी से मैं बेबी-क्रेच के सामनेवाले नजदीक के रास्ते को छोड़कर रोप-वे के नीचेवाले लंबे रास्ते से ड्यूटी पर आने-जाने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक एक दिन उसी पुराने रास्ते पर लौट आया। बेबी-क्रेच की खिड़की के सामने खड़ा हो गया। पर नहीं, व्याकुलता-भरी दो आंखें नहीं दिखाई दीं। मीठी मुस्कराहट से अभ्यर्थना करनेवाला भी कोई नहीं आया। फिर भी न जाने किस नशे में वहीं इंतजार करता रहा।

अनुपमा नहीं, खिड़की के सामने आकर खड़ी हुई मरियम। बोली—"बीबी-करज की गिदरा-आयु चली गयी है।" सुबह की ड्यूटी पर जब मैं हाजिरी-घर में बैठा हुआ था, शायद उसी समय अनुपमा चली गयी थी। जाने के पहले वह बार-बार मुझे याद करती थी। मरियम ने बताया, अनुपमा मुझे ही खोज रही थी।

मैं चला आया। ठंडी सांस लेकर दिल बोल उठा—चली गयी, अनुपमा चली गयी है। इस पतझड़ के अरण्य से हरियाली की सारी शोभा लेकर, फागुन की तमाम आग लेकर वह चली गयी है!

आज भी जब मैं बेबी-क्रेच के सामने से गुजरता हूं, तब अनुपमा की याद आती है। खिड़की पर खड़ी दो आतुर आंखें याद आती हैं, और याद आती है उसकी फुलझड़ी-सी हंसी! आज भी मन का कोना-कोना पश्चात्ताप-भरी आंखों से अनुपमा को ढूंढ़ता फिरता है।

अकस्मात यदि कोई आपके कानों के पास वही नाम लेकर पुकार उठे; यदि आप किसी दिन उसे खोज निकालें; किसी दूर सफर की रेलगाड़ी के रात के डिब्बे में, अथवा किसी भीड़-भाड़वाले शहर की अंधी गली में आश्रय पाने के लिए दोपहर या रात को कुंडी खट-खटाते हुए अगर आप उसको पहचान सकें; उसके हाथों में शंख की केवल दो सफेद चूड़ियां, व्यर्थ-उदास मुंह में मोतियों की दो कतारों की चमक, ठोड़ी पर घाव का मिटता हुआ दाग और बायीं आंख के नीचे एक छोटा-सा काला तिल है।

अगर आप अनुपमा को खोज पायें, तो उससे कहियेगा—हम लोग उसे भूले नहीं हैं। भूल तो सकते ही नहीं उसको! कहियेगा—हमारे पास केवल अनुभूति है, शक्ति नहीं। और हां, यह भी कह दीजियेगा कि हम इस सत्य को भली भांति सीख गये हैं कि अंधकामना की आग में एक नन्हें-से शिशु के प्राण भी जलकर खाक हो सकते हैं। —रूपांतर : रामबहाल तिवारी

★

उन दिनों श्यामसुंदरदासजी काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सर्वेसर्वा थे। उन्होंने निश्चय किया कि शिवपूजन सहायजी को उनकी हिन्दी सेवा पर डी० लिट्० की उपाधि दी जाये। जब उन्होंने शिवपूजनजी से अपने निश्चय की चर्चा की, शिवपूजनजी ने उत्तर दिया—"मुझे डिग्री देकर क्या करोगे! अरे भाई डिग्री तो किसी ऐसे को दो, जो उसे लेकर घूमे और घूम-घूमकर लोगों को दिखाये कि मैं डी० लिट्० हूं।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे भी एक-दो लाजेंजेस हाथ बढ़ाकर देती और कहती—"देखिये, इन बच्चों की संपदा में से हिस्सा बंटा रही हूं। बात फैल जाने से मेरी नौकरी चली जायेगी।"

इस तरह कुछ देर तक बेकार की बातें करके मैं उठकर चल देता। यद्यपि वहां से उठने का मन नहीं होता था। इच्छा यही होती कि घंटों बैठकर उसकी हंसी निहारता रहूं, उसकी बातें सुनता रहूं। पर अनुपमा ही बीच में याद दिला देती—"ड्यूटी पर देर हो जायेगी।" और फिर चलते समय धीमे-से कहती—"समय मिले, तो कृपया एक बार क्वार्टर की तरफ चले जाइयेगा। बेचारे हिल-डुल तक नहीं सकते!"

इसी वजह से मैं कभी-कभी बेबी-क्रेच में न जाकर अनुपमा के स्वामी के पास चला जाता। पैरेलिसिस-ग्रस्त अवश शरीर शायद जरा-सा हिल पाता। आंखों व चेहरे पर फीकी हंसी खिल उठती।

छुट्टी के दिन अनुपमा पति के नजदीक ही रहा करती और उसकी छोटी-सी बच्ची मुन्नू भी। रसोई बनाते-बनाते दो क्षण के लिए आकर स्वामी के पास बैठ जाती। कभी-कभी अलगनी के कपड़ों को संभालते-संभालते ही वह दुनिया-भर की खबरें सुना जाती—कौन-सा बच्चा कैसी शैतानी करता है, मरियम कितनी बेवकूफ है, अथवा मुन्नू बड़ी होकर क्या पढ़ेगी, विलायत जायेगी कि नहीं, आदि। ये सब व्यर्थ की बातें भी सुनने में बड़ी अच्छी लगतीं। और अच्छी लगती अनुपमा के स्वामी की आंखों की खुशी से झलकती हुई हंसी।

उस कोलियरी के वातावरण में यदि कोई अच्छे नहीं लगते, तो केवल ज्योतिर्मय बाबू। इस इलाके में जिनका परिचय था—जे० पी० ओ० साहब। अनुपमा से मिलने के लिए वे क्रेच तथा क्वार्टर में अक्सर आया करते थे। कुली-कामिनों की सुख-सुविधाओं पर ध्यान रखना ही उनका काम था। और इसी बहाने वे अनुपमा के पास आया करते थे। मैं किसी दिन देखता—तिजहरिया ढलते ही अनुपमा नजदीक की पहाड़ी पर टहलने जा रही है; साथ में हैं जे० पी० ओ० साहब। मुन्नू को कभी अनुपमा गोद में लेती है, कभी ज्योतिर्मय बाबू। कभी देखता—वे लोग मरांगड़ा के पानी में पैर डुबोकर बैठे हैं, किंवा मानकीबाबा-मठ के घासवाले बगीचे में हैं वे!

इच्छा होने पर भी मैं उस समय उनके पास नहीं जा सकता था। सच बात तो यह है कि जे० पी० ओ० साहब से हम लोग डरते थे।

अतः जिस दिन मैंने देखा, मुन्नू को साथ लेकर अनुपमा अकेली टहलने जा रही है, उस दिन मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। पर मरियम ने बताया कि इसके पीछे एक इतिहास है। बोली—"जे० पी० ओ० ठो आदमी अच्छा नहीं है रे बाबू। औरतों की इज्जत लूटता है।"

और इसी कारण अनुपमा ने उसकी उपेक्षा कर दी है। जे० पी० ओ० के मुंह पर ही बेबी-क्रेच का दरवाजा बंद कर दिया है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने। यह सुनकर हम लोगों को अनुपमा के प्रति जितनी श्रद्धा हुई, उससे भी कहीं अधिक शंका हुई। हमारे अड्डों पर, दफ्तरों में, तरह-तरह की बातें होने लगीं। अनुपमा जे० पी० ओ० साहब की कोप-दृष्टि से हरगिज नहीं बच सकती। हम लोग बस दिन गिनने लगे कि अनुपमा को नौकरी से बरखास्त होने का नोटिस कब तक मिलता है।

पर एक दिन कुछ और ही देखने को मिला। मैं हाजिरी-घर की जालीदार खिड़की पर बैठकर कुली-कामिनों की चकतियों के नंबर और ठेकेदारों के नाम पूछ रहा था। हठात देखा, मजदूरिनों का दल पहले की तरह ही बच्चों को पीठ पर बांधकर काम पर आया है।

छुट्टी का साइरन बजने के बाद, सब कामिनें दल बनाकर मैनेजर साठे साहब के बंगले में जाकर हाजिर हुईं और शिकायत की कि अब वे बीबी-करज में अपने बच्चों को नहीं रखेंगी। बीबी-करज की गिदरा-आयु अनुपमा अपनी बच्ची की हिफाजत में ही व्यस्त रहती है। उन सबके बच्चे पड़े-पड़े रोया करते हैं, नहीं तो अफीम के नशे में सोये रहते हैं।

हम लोग सुनकर हंस उठे। जिसको तसल्ली से दो पल बातचीत करने की फुरसत नहीं रहती है, वही अफीम देकर बच्चों को सुलाया करती है। यह भी कोई बात है?

हम सबने मिलकर मैनेजर से कहा—"सर, यह सब कुछ झूठ है। आप खुद ही जाकर कभी देख लीजियेगा।"

मैनेजर साहब ने सिर हिलाकर कहा—"जे० पी० ओ० का पहलेवाला रिपोर्ट भी ऐसा ही है।" मगर.....मगर एक दिन काम बंद होने से 'टिपलरं' जम जाएंगे। अठारहों वैगन वापस लौट जाएंगी। कलकत्ते का दफ्तर कैफियत तलब कर बैठेगा। और हो सकता है, साठे साहब की 'कान्फिडेंशियल फाइल' में दो-एक टेढ़े मंतव्य जुड़ जायें।

मैनेजर साहब ने अनुपमा को बुलाकर हुक्म दिया—"तुम्हारी लड़की के वास्ते बेबी-क्रेच नहीं है। उसे क्वार्टर में ही छोड़ कर आया करो।"

हुक्म सुनते ही अनपमा की आंखों से झरझर आंसू बहने लगे। गिड़गिड़ाने लगी—"सर, मेरे स्वामी को पैरेलिसिस की बीमारी है, उठ नहीं सकते। मेरी बच्ची को देखेगा कौन? वह अकेली पड़ी-पड़ी रोती रहेगी। क्या करूं, आप ही बताइये?"

पर अनुपमा के सुख-आराम की तरफ खयाल करना मैनेजर का काम नहीं है। मैनेजर का काम है कोलियरी को चलाना। अतः आंख का पानी ही पोंछकर अनुपमा को लौट आना पड़ा। वह सिर्फ इतना ही बोली—"मुझे मालूम है—कुली-कामिनों को किसने बहकाया है।"

हम सबने सिर नीचा करके कहा—"हम लोगों को भी मालूम है; पर जानने पर भी तो कुछ किया नहीं जा सकता।" हमने अनुभव किया—हमारे पास केवल अनुभूति ही है, शक्ति नहीं है। हमने अनुपमा से कहा—"कोई बात नहीं है, मुन्नू की पूरी जिम्मे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारी हम लोग ले रहे हैं।" वह मारे खुशी के फूल उठी। आंचल से आंखों को पोंछकर बोली—"मैं जानती थी।"

हम लोग बारी-बारी से मुन्नू की खोज-खबर लेने जाया करते थे। मैं, कंपास बाबू तथा डाकघर का अवनी। ड्यूटी पर जाने के पहले या दोपहर में, जिसको जब समय मिलता, वहां जाकर देखभाल कर आता। अनुपमा के स्वामी रुग्ण-असहाय आंखें पसार-कर देखने लगते। बोलने की भी कोशिश करते, जीभ सुन्न हो जाने की वजह से बातें आपस में टकराकर भीतर ही रह जातीं। घुटनों के बल पर मुन्नू करीब आ जाती, हाथ उठाकर गोद में उठना चाहती। हम हंसते और हंसाते। चंदा करके उसके लिए रामगढ़ से गुड़िया, लाजेंजेस, कपड़े आदि भी मंगा दिया करते।

जब दोपहर का साइरन बज जाता, तब उसे छोड़कर चले आना पड़ता। बेबी-क्रेच के सामने से होकर जाते-जाते देखता—अनुपमा अपनी व्याकुल आंखें पसारकर खिड़की के सामने खड़ी है। आंखों से आंखें मिलतीं। मैं मुस्कराकर सिर हिला देता और साथ ही कह देता—"हां, देख आया।"

"किवाड़ अच्छी तरह बंद कर दिये थे न?" वह शंकित स्वर में पूछ उठती। और उत्तर मिलते ही खिड़की से हट जाती।

मैं मन-ही-मन सोचने लगता—काम के झंझट की वजह से क्षण-भर के लिए भी वह रुक नहीं सकती।

नित्य-प्रति के इस क्रम में अचानक एक दिन विघ्न पड़ गया। अनुपमा के क्वार्टर पहुंचकर देखा, फाटक खुला है और नहीं है। अनुपमा के स्वामी कुछ चाहते थे; पर बोल नहीं सके। हाथों उठाना चाहते थे; पर असफल होकर गि दिया। उनकी दोनों आंखों से आंसू बह लगे। मैंने चिल्लाकर पुकारा—"मुन्नू! मुन्नू!" पर खुशी से मीठी हंसी हंसकर कि ने जवाब नहीं दिया। सारे मकान को ढू डाला। बाहर भी खोजा हमने। लेकिन कंपास बाबू, डाकघर का अवनी तथा और भी बहुत से लोग—सब असफल रहे। खब पाकर अनुपमा भी दौड़ी हुई आयी।

दो-एक दिन के बाद मुन्नू मिली। संवा मछुए पानी से भरे एक नंबर खड्डे में मछली पकड़ रहे थे। वहां मुन्नू को पानी में पा उठा लाये। सारी कोलियरी की भीड़ उम पड़ी नन्ही-सी मुन्नू के फूले हुए शव को देखने।

अनुपमा ने आंखें उठाकर मेरी तरफ कंपास बाबू की तरफ तथा अवनी की तरफ केवल एक बार देखा। उन आंखों में मानो मार्मिक शिकायत भरी हुई थी—"आप लोगों ने वचन दिया था।" दुःख और शर्म के मारे हम लोगों ने सिर झुका लिये, सचमुच हम वचन नहीं निभा सके थे।

क्षोभ तथा लज्जा से मुंह दिखाने में भी भय होता था। इसी से मैं बेबी-क्रेच के सामनेवाले नजदीक के रास्ते को छोड़कर रोप-वे के नीचेवाले लंबे रास्ते से ड्यूटी पर आने-जाने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अचानक एक दिन उसी पुराने रास्ते पर लौट आया। बेवी-क्रेच की खिड़की के सामने खड़ा हो गया। पर नहीं, व्याकुलता-भरी दो आंखें नहीं दिखाई दीं। मीठी मुस्कराहट से अभ्यर्थना करनेवाला भी कोई नहीं आया। फिर भी न जाने किस नशे में वहीं इंतजार करता रहा।

अनुपमा नहीं, खिड़की के सामने आकर खड़ी हुई मरियम। बोली—"बीबी-करज की गिदरा-आयु चली गयी है।" सुबह की ड्यूटी पर जब मैं हाजिरी-घर में बैठा हुआ था, शायद उसी समय अनुपमा चली गयी थी। जाने के पहले वह बार-बार मुझे याद करती थी। मरियम ने बताया, अनुपमा मुझे ही खोज रही थी।

मैं चला आया। ठंडी सांस लेकर दिल बोल उठा—चली गयी, अनुपमा चली गयी है। इस पतझड़ के अरण्य से हरियाली की सारी शोभा लेकर, फागुन की तमाम आग लेकर वह चली गयी है!

आज भी जब मैं बेवी-क्रेच के सामने से गुजरता हूं, तब अनुपमा की याद आती है। खिड़की पर खड़ी दो आतुर आंखें याद आती हैं, और याद आती है उसकी फुलझड़ी-सी हंसी! आज भी मन का कोना-कोना पश्चात्ताप-भरी आंखों से अनुपमा को ढूंढ़ता फिरता है।

अकस्मात यदि कोई आपके कानों के पास वही नाम लेकर पुकार उठे; यदि आप किसी दिन उसे खोज निकालें; किसी दूर सफर की रेलगाड़ी के रात के डिब्बे में, अथवा किसी भीड़-भाड़वाले शहर की अंधी गली में आश्रय पाने के लिए दोपहर या रात को कुंडी खट-खटाते हुए अगर आप उसको पहचान सकें; उसके हाथों में शंख की केवल दो सफेद चूड़ियां, व्यर्थ-उदास मुंह में मोतियों की दो कतारों की चमक, ठोड़ी पर घाव का मिटता हुआ दाग और बायीं आंख के नीचे एक छोटा-सा काला तिल है।

अगर आप अनुपमा को खोज पायें, तो उससे कहियेगा—हम लोग उसे भूले नहीं हैं। भूल तो सकते ही नहीं उसको! कहियेगा—हमारे पास केवल अनुभूति है, शक्ति नहीं। और हां, यह भी कह दीजियेगा कि हम इस सत्य को भली भांति सीख गये हैं कि अंधकामना की आग में एक नन्हें-से शिशु के प्राण भी जलकर खाक हो सकते हैं।

—रूपांतर : रामबहाल तिवारी

★

उन दिनों श्यामसुंदरदासजी काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सर्वेसर्वा थे। उन्होंने निश्चय किया कि शिवपूजन सहायजी को उनकी हिन्दी सेवा पर डी० लिट्० की उपाधि दी जाये। जब उन्होंने शिवपूजनजी से अपने निश्चय की चर्चा की, शिवपूजनजी ने उत्तर दिया—"मुझे डिग्री देकर क्या करोगे! अरे भाई डिग्री तो किसी ऐसे को दो, जो उसे लेकर घूमे और घूम-घूमकर लोगों को दिखाये कि मैं डी० लिट्० हूं।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

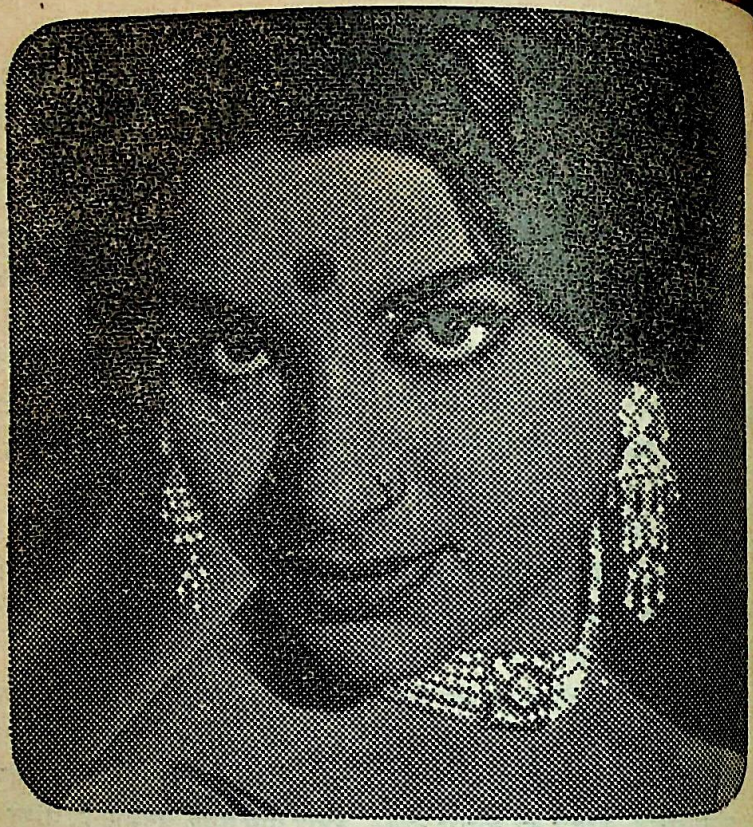

'मेरे रंगरूप की
बहार का आधार
लक्स है'
शर्मिला टैगोर कहती हैं

सुंदर रंगरूप आप के लिए भी उतना ही ज़रूरी है जितना कि शर्मिला टैगोर के लिए
...इस की देखभाल भी वैसी ही होनी चाहिए।

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
शुद्ध मुलायम सौंदर्य साबुन

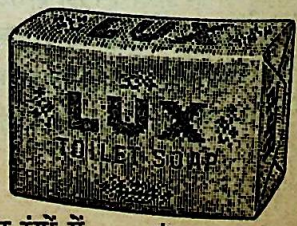

सफेद और इंद्रधनुष के चार रंगों में

लिंटास-LTS. 191-77 Hi

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिड़ियाखाना

रमेश बक्षी

दोपहर है, कलकत्ता की चिलचिलाती दोपहर, और मैं बस में लटका-लटका आगे बढ़ रहा हूं। कंडक्टर जैसे ही घंटी देकर 'चिड़ियाख़ाना' बोलता है, मैं उतर जाता हूं। अलीपुर का यह चिड़ियाघर ही वह जगह है, जहां जब कभी संभव होता है, हम दोनों मिलते हैं। मैंने ही एक दिन कहा था—

"कहीं और मिला करें न हम ?"

"क्यों ?" प्रश्न करते हुए उसकी बंगाली आंखें चारा निगलकर बंसी से निकल भागने-वाली मछलियों की तरह चार बल खा गयी थीं। वह यह भी बोली थी—"यह तो जू है, ताजमहल थोड़े ही है, जो और कहीं मिलने की बात सोचते हो।"

"सुनो तो ! हम जब भी मिलते हैं प्रेम के नशे में पागल, भावना के बारीक से झूले पर पेंग भरते हुए झूमते रहते हैं और वैसे आस-पास होते हैं—ऊंट, घोड़े, जेब्रा, हिप्पो-पोटेमस, ओरांगउटांग, रीछ, बंदर—सब जानवर ही जानवर.....।"

मैं एकाध वाक्य और भी बोलता; लेकिन वह जोर से हंस दी थी, कहा था—"सन्यासी, मवाली, खोमचेवाले, बाबू, बावा और मां व दादा से तो ये जानवर अच्छे हैं—ये हमें देखकर सीटी तो नहीं बजाते, ताने तो नहीं मारते। आज तक किसी हिप्पो-पोटेमस ने मेरे बाबा से यह नहीं कहा कि तुम्हारी बिटिया उसके साथ, उस जगह, उस हालत में देखी गयी थी .....।"

बात आयी-गयी हो गयी थी और हम बंदरों के पिंजरे के सामने खड़े होकर उन्हें चने खिलाते रहे थे। उनके बिराते हुए चेहरे, कूदते हुए शरीर, स्वयं तन्मय अंदाज खूब अच्छे लगे थे।

मैं बाहर दरवाजे पर ही उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। वह आ जाये, तो टिकिट ख़रीदें। आज उसका आना बड़ा महत्वपूर्ण है, बहुत बड़ा फैसला होना है आज। वह आ जाये, तो साफ-साफ बात हो जाये। कोई बात अगर नहीं ही बनती है, तो मैं पंजाब वापस लौट जाऊंगा या अपने आपको खत्म कर लूंगा। कलकत्ता रिसर्च के लिए आया था, सड़कों की खाक छानने नहीं। उससे पहचान बेल्वेडियर में हुई थी। उसके विषय-वाले प्रश्न का मैंने उत्तर दिया था—"पंजाबी और बंगला काव्य-साधना।" मेरा विषय सुन खूब जोर से हंसी थी वह—"बड़ा भावुक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

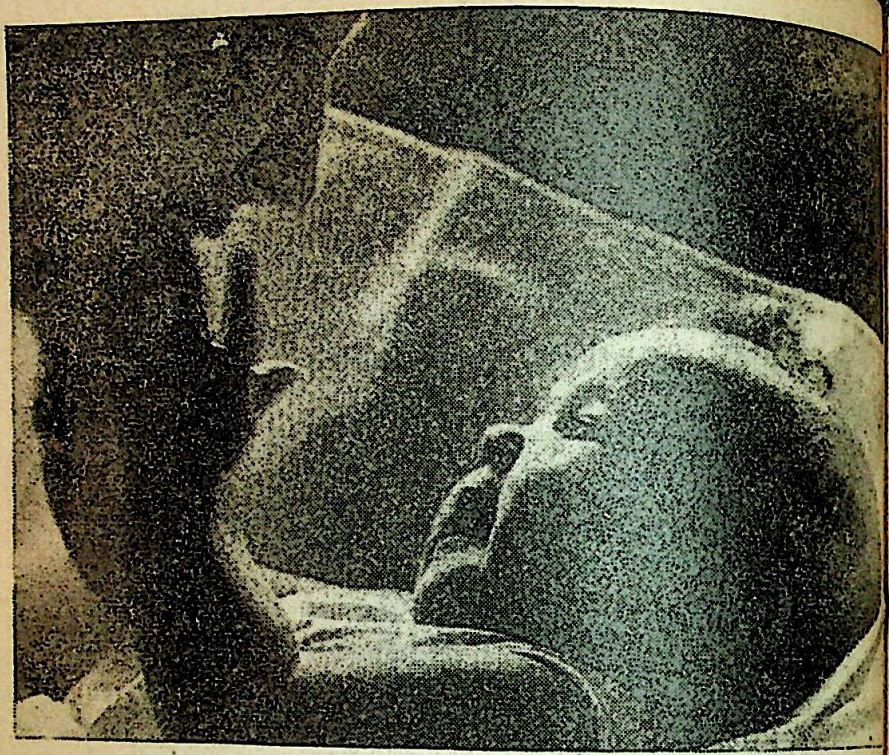

साधारण पाउडरों से काम नहीं चलेगा...

आपके लाड़ले के लिए तो जॉन्सन्स* बेबी पाउडर ही होना चाहिए

कई माताएँ ऐसा समझती हैं कि किसी भी प्रकार के टाल्कम पाउडर से बच्चों का काम चल जायगा, लेकिन डाक्टर से पूछिए तो वह कहेगा कि यह ग़लत है। ज़रा बच्चे की त्वचा का स्पर्श करके देखिए कि वह कितनी सुकोमल होती है! पसीने और चड्डी या कलोट की रगड़ से तो बच्चों को ज़रा-सी देर में जलन और बेचैनी हो जाया करती है।

महीन और मृदुल पदार्थों से तैयार किया गया जॉन्सन्स बेबी पाउडर त्वचा के छोटे-छोटे रंध्रों को मूँदे बिना पसीने को सोख लेता है। यह पाउडर बच्चों को विशेषकर उस जलन से बचाता है जो कि कपड़ों की रगड़ से हो जाया करती है।

बच्चे को नहलाने के बाद, उसके कपड़े बदलते वक़्त, उसे सुलाते समय और जब भी वह बेचैन दिखाई पड़े तब जॉन्सन्स बेबी पाउडर उसके बदन पर छिड़किए ... वह प्रसन्नता के साथ हँसता-खेलता रहेगा। आपके बच्चों के लिए तो जॉन्सन्स बेबी पाउडर ही सर्वोत्तम है।

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६

*ट्रेडमार्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय है।" मुझे बात अखर गयी थी—"भावुकता कहां है इसमें ?" उसने उत्तर दिया था—"पंजाबी और बंगाली का कोई रिश्ता नहीं। तुम बड़े सेंटिमेंटल लगते हो, या फिर मसीहा बनना चाहते हो।"

वह आ गयी है। मेरे चेहरे पर रंग बदल गये हैं; लेकिन अंदर की चिंता मुझे साले जा रही है। मकड़ी खूब खुश भी हो, तो क्या होता है! जाले की उलझन-भरी बुनावट में कोई अंतर थोड़े ही आता है।

टिकिट खरीद लिये गये हैं। टिकिट दिये गये हैं। हम चिड़ियाघर में हैं। दायें-बायें घूमने के बजाय हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारा लक्ष्य यहां कुछ देखना है भी नहीं, हमारे लिए चिड़ियाघर केवल एक 'जगह' है, इससे ज्यादा इसकी कोई इयत्ता नहीं। दो-चार ऐसे कोने हैं यहां, जहां अधिक सूना रहता है। वहां हम एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखे चल सकते हैं और आगे-पीछे टोह लेते में छोटे-छोटे चुंबन हो जाते हैं.....

सामने एक तलावी है, उस पर पुल है, पुल के नीचे बत्तखें तैर रही हैं—आस-पास कमल खिले हैं, पत्ते लंगर डाले हैं। मैंने पूछा है—"बाबा से बात कर ली ?" उसने उत्तर दिया—"हां, बात कर ली। वे सहमत हैं। और सहमत नहीं होने का कोई सवाल भी नहीं उठता। तुम काबिल हो, पढ़े-लिखे हो और वे ऐसे ही आदमी की तलाश में हैं भी .....और मैंने तुम्हारा नाम बताया, यह बात भी तो बड़ी अर्थपूर्ण है।"

मेरा चेहरा खिल आया। मैंने सामने से उसके दोनों कंधे थाम लिये। आवेश में उसें अपने से लगा लिया।

"लुक एट देम डार्लिंग। दे आर एन्ब्रेसिंग ईच-अदर इन ए पब्लिक प्लेस।" आवाज ऐसी थी, जैसे कोई उद्घोषणा कर रहा हो। हम दोनों अलग हो गये और उस आवाज की तरफ घूमे। बायीं तरफ एक पिंजरा और इसके अंदर एक नकली पेड़ बना हुआ था, उस पेड़ पर नकली पत्ते लगे थे, नीचे नकली झड़बेरी थी और उसके पास एक नकली पोखर में पानी भरा था। उस पेड़ पर एक असली तोता बैठा था—खासा बड़ा तोता—एकदम सफेद रंग और पीले रंग की चोंच, सिर पर सुनहरे रंग की बहुत छोटी कलगी। हम जब उस आवाज की तरफ घूमते उसके सामने जा पहुंचे, तो वह हंस दिया। मेरी प्रेमिका की तरफ घूमकर बोला—येस, आइ वाज टार्किंग एबाउट यू.....।"

उस वाक्य के साथ ही नकली पत्तों में से एक मैना बाहर आ गयी। वह फुदककर उसी डाली पर बैठ गयी, जिस पर तोता बैठा था। बेहद मटकते हुए अंदाज में बोली—"ओ, यू बेअर टार्किंग अबाउट दिस हयूमन कपल।" मैना का वाक्य ऐसा घुमावदार था और ऐसे चबा-चबाकर वह यह वाक्य बोली थी, जैसे बेचारी हिन्दुस्तान कल ही आयी हो।

मेरी इच्छा हो रही थी कि इस तोते से कुछ पूछूं; लेकिन जब वे दोनों आपस में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ममता की कसौटी पर खरा-डालडा

ममता भरी माँ अपने लाड़ले को बढ़िया से बढ़िया भोजन खिलाती है। इस भोजन में रस है माँ के अपार स्नेह का और पौष्टिकता है सर्वोत्तम सामग्री की...डालडा वनस्पति की...जो बढ़ते हुए बच्चों के लिए गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं और यह केवल मुहरबन्द डिब्बों में सदा शुद्ध, सदा ताज़ा मिलता है। डालडा में बनी सब चीज़ें परिवार भर को अत्यन्त प्रिय हैं। आप भी आज से अपने लाड़लों को डालडा वनस्पति में पके स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन खिलाइए। डालडा आप की ममता की कसौटी पर खरा उतरेगा।

डालडा वनस्पति...एक विशेष शुद्ध चिकनाई

लिटास—DL. 116-77 HB

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें करने लगे, तो बीच में बोलना मुझे ठीक नहीं लगा। उन दोनों में जो बातें हुईं उस समय, उसका आशय था—"यहां सामने हम दोनों का बैठना ठीक नहीं। इन बेचारों को बड़ी मुश्किल से प्यार करने का समय मिला होगा। चलो अंदर चलें।" और वे दोनों उड़कर पत्तों के पीछे छिप गये।

सामने ही एक बेंच पड़ी थी और हम दोनों उस पर बैठ गये। मैं अपनी चिंता पर लौट जाना चाहता था कि पत्तों के पीछे उन दोनों की आवाजें सुनाई देने लगीं। दोनों ही अंग्रेजी में बातें कर रहे थे। तोते की अंग्रेजी ठेठ इंग्लिस्तानी थी, जैसे उसका जन्म वहीं हुआ हो और मैना की अंग्रेजी बड़ी नखरीली थी, उसने यह बोलचाल तोते की सोहबत से सीखी थी।

तोता—"तो मैडम, तुम कौन-सी सीरियस बात मुझसे कहना चाहती थी?"

मैना—"सीरियस बात वही जो सारे कलकत्ता और सारे हिन्दुस्तान को परेशान किये हुए है।"

तोता—"लेकिन उसका असर हमारी दुनिया पर क्या पड़ता है?"

मैना—"हमारी दुनिया पर मेरे प्रियतम, असर इसलिए पड़ता है कि हम भी जबानदार प्राणी हैं, हम भी बोल सकते हैं। भाषा हमारे लिए भी समस्या है।"

तोता (हंसकर)—"तुम यह क्यों भूलती हो कि समस्याओं में उलझने के लिए ईश्वर ने हमें पैदा नहीं किया है।"

मैना—"लेकिन मेरे प्रिय, ईश्वर ने हमें अंधा भी नहीं बनाया है। आस-पास की समस्याओं से हम इन्कार नहीं कर सकते।"

तोता—"तो बात क्या हुई डार्लिंग?"

मैना—"मैं तो हिन्दुस्तानी हूं। मैं हिन्दी जानती हूं। अगर तुम्हें मुझसे प्यार है, तो तुम्हें हिन्दी में बोलना पड़ेगा।"

तोता—"तुम जब जिद करती हो, तो बड़ी हसीन लगती हो मेरी मैना। मेरी समझ में नहीं आता कि प्यार-मोहब्बत के बीच में जबान का सवाल ही कहां उठता है। मैं तेरी आंख में आंखें डालकर तुझे शरमा दूं, तेरे नाजुक कंधों को अपने पास खींच लूं, तेरी चोंच पर अपनी चोंच रख दूं, अपने इन गोरे पंखों में तुझे बांध लूं और रात को आगोश में बांधकर हम सो जायें—बोल कहां भाषा को टांग अड़ाने की जरूरत है इसमें?"

मैना—"हाय तोते, तुम्हारा एक्सप्रेशन इतना प्यारा है, तुम्हारी दलीलें इतनी तर्कपूर्ण हैं कि मैं तो मर गयी एक तरह से।"

तोता—"लेकिन डार्लिंग, तुम्हें अगर मुझसे प्यार है, तो अंग्रेजी ही बोलनी होगी। हिन्दी में सरकारी और गैरसरकारी सब काम हो सकते हैं; लेकिन गुस्सा और प्यार केवल अंग्रेजी में ही किया जा सकता है।"

मैना—"लेकिन हिन्दी मेरी मातृभाषा है। मुझे अपनी मम्मी से हिन्दी में ही बात करनी पड़ती है।"

तोता—"डू एज यू प्लीज, डार्लिंग। लेकिन मैं इस बात में कतई 'इन्टरेस्टेड' नहीं हूं कि हिन्दी तुम्हारी मां की भाषा है, या तुम्हारे बाप की भाषा है, या तुम्हारी मौसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की भाषा है..."

मैना—"लेकिन तुम्हारे भी मां-बाप हैं और तुम्हारी भी तो अपनी कोई मातृभाषा-पितृभाषा है।"

तोता—"वह तो है ही और उसमें संदेह की कोई जरूरत भी नहीं। लेकिन मैं मातृ-भाषा बोलने के लिए न तो अपनी प्रेमिका से इजाजत मांगूंगा, न इस चिड़ियाघर के शेर-चीते बंदर-भालुओं को इकट्ठा करके सलाह लूंगा। मेरी मातृभाषा जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसे दस-पंद्रह बरस की लीज पर उठाया जा सके। इफ यू लव मी, स्पीक इंग्लिश, इफ यू डोन्ट लव मी गो वैक टु योर मदर्स बूंब...।"

मैना—"क्या तुम्हें शरम नहीं आती मुझे गाली देते?"

तोता—"तुम्हें शरम नहीं आती मुझसे तर्क करते हुए?"

मैना—"तर्क करना और गाली देना एक ही है क्या?"

तोता—"अच्छा, होगा। सारी।"

मैना—"खैर, मेरी बात छोड़ भी दो। तुम्हें पता है कि कल से जितने भी बच्चे तू देखने आते हैं, कहते हैं—बंगाली बोलो। अगर बंगाली नहीं बोले, तो हम तुम्हें मार डालेंगे।"

तोता—"यह तो बंदरघुड़की है। या तो मैं अंग्रेजी बोलूंगा, या चुप रहूंगा। मैं कोई रीछ-बंदर तो हूं नहीं कि मदारी ने जैसा नाच नचाया, वैसा ही नाच दिया..."

मैना—"यह भी ठीक है; लेकिन जो आदमी चुग्गा देने आता है, वह है पंजाबी और उसने कह दिया है कि यदि हम उससे पंजाबी में बात नहीं की, तो वह खाना नहीं देगा।"

तोता—"खाना कैसे नहीं देगा?"

मैना—"कैसे-वैसे कुछ नहीं। यह है रोटी का सवाल। पेट सबसे बड़ा होता है। पेट के सामने किसी की कुछ नहीं चलती।"

तोता—"लेकिन उसी का राज्य है क्या यहां? चाहे जो भाषा मुझ पर नहीं थोपी जा सकती।"

मैना—"चाहे जो भाषा तुम पर थोपी नहीं जा सकती अगर, तो चाहे जो भाषा तुम ओढ़ भी नहीं सकते।"

तोता—"यह सब बक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात है।"

मैना–"बकवास तुम कर रहे हो।"

तोता–"आई से देट यू आर टाकिंग नान्सेन्स ..."

मैना–"यू आर एन ईडियट।"

तोता–"योर फादर इज इडियट।"

मैना–"योर ग्रैंडफादर इज इडियट्स फादर।"

तोता–"योर ग्रैंड-ग्रैंड-ग्रैंड फादर्स फादर्स फादर ...।" पीछे की आवाजें अंग्रेजी से चीख-चिल्लाहट में बदल गयीं।

"धीरे-धीरे यह चिड़िया-घर भी बरबाद होता जाता है। समस्याएं यहां भी वैसा ही पीछा कर रही हैं।" मैं उस झगड़े से त्रस्त होकर उठ खड़ा हुआ।

"लेकिन एक बात ध्यान रखना"– वह मेरे साथ चलती हुई बोली–"बाबा के सामने केवल बंगाली में बोलना। मैंने उनसे यही कहा है कि तुम बंगला-भाषी हो और इसीलिए वे अपनी फर्म में तुम्हें चार सौ की नौकरी देने को तैयार हुए हैं।"

"लेकिन मैं.....।" कहना चाहता था कि नाम-गांव-भाषा किसी से भी मैं तो बंगाली नहीं लगता, सिवा इस बात के टूटी-फूटी बंगाली पढ़-बोल जरूर लेता हूं।

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। यह तो करना ही पड़ता है।" उसका खूबसूरत हाथ मेरा हाथ सहला रहा है। वह आमंत्रक आंखों से मुझे देख रही है। सामने एक अकेली बत्तख तैर रही है और उसकी चोंच के आगे-आगे मूंगफली का एक छिलका बहता जा रहा है।

पृष्ठभूमि में चल रहा तोता-मैना का झगड़ा समाप्त हो गया है। मैंने घूमकर देखा कि तोता बहुत गुस्से में पिंजरे के सींखचों से चोंच मार रहा है और बड़बड़ाता जा रहा है–"नो, इट कांट बी। यह नहीं हो सकता। मैं जो बोलता हूं, वही बोलूंगा। मैं आदमी जाति का तो हूं नहीं कि चाहे जिस बात से समझौता कर लूं।" वह लगभग चीख रहा है और पंख फड़फड़ा रहा है–ऐसा लग रहा है, जैसे पागल हो गया है।

बत्तख अब जमीन पर आ गयी है; लेकिन मूंगफली का वह छिलका वहीं तैर रहा है। मैंने धीरे-से अपना हाथ छुड़ा लिया है और कह रहा हूं–"मैं सोचूंगा।" चलते-चलते एक आत्मसम्मानी विचार भी मन मे उभरता जा रहा है कि बेकार अपने घर लौटने से समाप्त हो जाना बेहतर है।

पीछे के पिंजरे में तोता गुस्से के मारे अपने ही पंख नोचे जा रहा है। उसके सफेद पंख टूट-टूटकर गिरते जा रहे हैं, उसकी चोंच पर खून की एक लकीर बह गयी है, चिल्लाते-चिल्लाते उसका गला भहरा गया है, सामनेवाले बंदर भी उसकी इस चीख-पुकार से डर गये हैं। मेरे मन के अंदर पिंजरे के अंदरवाली कशमकश सिर पीटने लगती है।

तीसरे दिन उसी पिंजरे के सामने मैं फिर खड़ा हूं। अंदर नकली पेड़ बना है, पेड़ पर नकली पत्ते लगे हैं, नीचे नकली झड़-बेरी है, पास ही नकली पोखर में पानी भरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है; लेकिन उस पेड़ पर कोई नहीं बैठा है। सारा पिंजरा झाड़ा-बुहारा साफ है, सफेद पंखों का कचरा समेटकर दूर फेंक दिया गया है।

पता नहीं मैना ने प्यार करना बंद कर दिया इसलिए, या पंजाबी नौकर ने चुग्गा नहीं दिया इसलिए, या बंगाली बच्चों ने उसे पत्थर मारे इसलिए, या अपने ही पागलपन के कारण सीखचों से चोंच मार-मारकर उस तोते ने आत्महत्या कर ली है.....।

उसी बेंच पर मैं अकेला बैठा हूं—सामने की तलाबी में वही उदास बत्तख अब भी तैर रही है। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं कि वह आ जाये, तो उसे नौकरी के लिए हां कह दूं। मुझे उस तोते की कमी नहीं खल रही है; लेकिन यह ठीक-ठीक याद है कि उस पानी पर मूंगफली का एक छिलका उस दिन तैर रहा था और आज वह वहां नहीं है। मैं ही जेब में हाथ डालता हूं, तो बत्तख मेरी तरफ देखने लगती है।

★

कच और महाभारतकार

ओ महाभारतकार !
तुमने मात्र एक परंपरा का निर्वाह किया
यह लिखकर कि गुरुपुत्री होने के कारण
देवयानी मेरी बहन तुल्य थी
और इसीलिए मैंने ठुकरा दिया उसका प्यार;
पर यदि तुम भाई-बहन की इस सीमा से ऊपर उठकर
और अनागत की संभावनाओं के आलोक में
यह लिखते तो स्यात् मेरी और महत्ता होती
कि देवयानी का प्रणय-निवेदन
मैंने इसलिए अस्वीकारा
क्योंकि इस सृष्टि में देवयानी और मैं ही
सह-शिक्षा के प्रथम उदाहरण थे;
यदि मेरे पांव वहां फिसल जाते
तो सह-शिक्षा युग-युगों को कलंकित होती
तथा ज्ञान-विज्ञान, शिल्प-कला—सभी क्षेत्र में
पुरुष-नारी का अनिवार्य साहचर्य
और सम्मिलित क्रियाएं
आतंकित होतीं, कलंकित होतीं।

—रामचंद्र चंद्रभूषण

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूसी कहानी

एक आदमी और मुर्गे

शोलोखोव

ग्रेम्याची लांग के मुर्गों की इतनी विभिन्न प्रकार की आवाजें थीं कि सुनकर आश्चर्य होता था। आधी रात होने पर हमेशा ल्युबिशकिन का मुर्गा सबसे पहले बांग देता। उसकी आवाज में एक खुशी-भरी गूंज होती, जैसे फौज के जवान कमांडर की आवाज होती है। और उसका जवाब किसी कर्नल की-सी ठोस आवाज में दुबत्सोव का मुर्गा देता। तब पांच मिनिट के बाद सारे गांव में से मुर्गों की लगातार बांगें आतीं; और जब हर मुर्गा अपनी-अपनी बारी से बांग दे लेता, तो मैदान्नीकोव का मोटा-ताजा लाल मुर्गा किसी जनरल की-सी हाकिमाना आवाज में बैठे हुए कंठ से, कानों को चीर जानेवाली बांग देता।

सारे गांव में सबसे बाद में सोनेवाला व्यक्ति माकार नागुलनोव था। रात के समय, फुरसत मिलने पर वह पूरा मन लगा कर अंग्रेजी सीखता। अंग्रेजी सीखने में बड़ी कठिनाई पेश आती। अपनी कमीज के बटन खुले ही छोड़कर, पसीने से भीगा हुआ वह पूरी खुली हुई खिड़की के पास मेज के सामने बैठा हुआ होता।

एक रात जब माकार खिड़की में बैठा हुआ था, तो उसने बड़े आश्चर्य से पहली बार मुर्गों का समवेत स्वर में गाया जानेवाला तराना सुना। "यह तो ऐसा लगता है, जैसे परेड हो रही हो। वाह, क्या शान है। ....." उसके मुख से खुशी से निकला।

उसके बाद वह रोज ही मुर्गों की बांगें सुनने लगा और उन्हें सुनकर बहुत खुश होता, तथापि बुलबुल की आवाज सुनकर उसे घृणा होती थी। उसे खास तौर पर मैदान्नीकोव के मुर्गे की जनरल की-सी आवाज बहुत अच्छी लगती, जो कि मुर्गों के कोरस के अंत में गूंजती।

पर एक रात बांगों का यह सिलसिला कुछ इस तरह अचानक बदल गया कि उसकी उसे बिलकुल ही आशा नहीं थी। मैदान्नीकोव के मुर्गे की बांग अभी खत्म ही हुई थी कि उसी समय पास ही से अरकाश्का के शेड से एक दर्दभरी बांग ऊपर उठी, जो किसी छोटी उम्र के मुर्गे की लगती थी और फिर उसमें से अजीब-सी चीखें निकलीं। उसके बाद जो चुप्पी छा गयी, उसमें माकार ने साफ तौर पर उस मुर्गे के पंजों की टक-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टक और पंखों की फड़फड़ाहट सुनी।

यह 'डिसिप्लिन' के विपरीत बात थी और हुक्म-उदूली के नुक्ते से असूलों का ऐसा उल्लंघन था कि माकार को लगा, जैसे सचमुच किसी जनरल का हुक्म मिलने पर किसी नौसिखिये सेक्शन-कमांडर ने उसकी बात टोक दी हो और वह भी इस तरह हकला-हकलाकर। माकार के लिए यह असह्य था। और वह गुस्से से भर गया। "चुप", उसने बाहर के अंधेरे में हुक्म दिया और गाली देकर गुस्से से खिड़की बंद कर ली।

अगली रात फिर वही बात हुई; और उसके अगली रात भी वही कुछ हुआ। माकार को बेचैनी होने लगी। अब वह पढ़ नहीं पाता। उसे लगता कि वह मुर्गा बहुत बदमाश होगा और उसके दिमाग में अपने मालिक की तरह ही भूसा भरा हुआ होगा। पर इसका कोई-न-कोई इलाज तो करना चाहिये, उसने सोचा, और चौथे दिन वह अरकाश्का के घर गया। साधारण-से दुआ-सलाम के बाद उसने कहा—"चलो, जरा मुझे अपना मुर्गा दिखाओ।

"वह क्यों ?"

"देखना चाहता हूं कि वह कैसा है ?"

"पर देखने से तुम्हारा मतलब ?"

"ज्यादा बातें नहीं बनाओ, दिखाओ मुझे।" माकार ने तल्ख होकर कहा।

जब अरकाश्का ने बाड़े में मुर्गियों को एक तरफ हटाया; तो माकार ने देखा, दस-बारह मुर्गियों के बीच में एक छोटा-सा काले रंग का गंदा-सा मुर्गा अकड़कर खड़ा था। उसे देखकर माकार को बड़ी घृणा अनुभव हुई।

"मरोड़ डालो उसे हरामी ठिगू की गर्दन !"

"क्यों ?" अरकाश्का ने पूछा।

"अपने लिए शोरवा बनाने के लिए।"

"पर क्यों ? यह एक ही तो मुर्गा है मेरे पास। मुर्गियों के पीछे खूब दौड़ता है।"

माकार व्यंग्य से मुस्कराया।

"पर इस मुर्गे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?" अरकाश्का ने फिर पूछा—"तुम्हारे किसी काम में इसने टांग अड़ायी है, या कुछ किया है ?"

"यह मूर्ख है। इसे 'डिसिप्लिन' का कोई खयाल नहीं है।"

"कैसा 'डिसिप्लिन' ?"

माकार को 'डिसिप्लिन' के बारे में समझाने में कुछ कठिनाई हुई। एक मिनिट के लिए वह चुप रहा। तभी उसे एक उपाय सूझा—"अच्छा आओ, हम मुर्गे एक दूसरे से बदल लें।"

"लेकिन बदले में देने के लिए तुम्हारे पास मुर्गा कहां है ?" अरकाश्का ने पूछा।

"है एक। पर वह ऐसा गलीज नहीं है।

"अच्छा तो, ले आओ। पर बदलूंगा तभी, जब तुम्हारा मुर्गा इसके बराबर का होगा।"

आधे घंटे के बाद माकार वेसल्लेबनोव के घर गया और उससे एक मुर्गा खरीदा। उस मुर्गे को एक बोरी में बंद करके वह अरकाश्का के घर की ओर चल दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरकाश्का उसे देखकर बोला –"म अभी अपना मुर्गा पकड़कर लाता हूं। अगर चाहो तो इन्हें लड़ाकर देख लें। जिसका मुर्गा हार जायेगा, वह दूसरे को शराब पिलायेगा। अच्छा, तुम्हारा मुर्गा देखने में कैसा है?"

"बमबाज है!" माकार ने कहा और बोरी का मुंह खोलने लगा, जिसे उसने रस्सी से बांधा हुआ था।

जब अरकाश्का अपना मुर्गा लिये लौटा, तो माकार का 'बमबाज' अपने पंख फैलाये लेटा हुआ था और अपनी सिंदूरी आंखों को किसी दर्द से गोल-गोल घुमा रहा था।

"इसे क्या हो गया है?" अरकाश्का ने हैरानी से पूछा।

"बम ठीक तरह चला नहीं।"

"इसकी तो बुरी हालत है।"

"मैंने कहा न, बम ठीक तरह चला नहीं।"

"भला मुर्गा बम कैसे चला सकता है? तुम तो पागलों की-सी बातें कर रहे हो।"

"मुर्गे से नहीं, बेवकूफ! मुझसे बम ठीक तरह नहीं चला। मैं इसे उठाये जा रहा था कि यह बांग देने लगा। मैंने सोचा कि इस तरह यह मुझे लोगों के सामने बेवकूफ बनायेगा। सो मैंने इसकी गर्दन जरा-सी मरोड़ डाली। बस जरा-सी ही। और अब देखो इसकी हालत। लाओ, जल्दी से गंड़ासा लाओ, नहीं तो यह पार हो लेगा और फिर किसी काम नहीं आयेगा।"

माकार ने मुर्गे की गर्दन काट डाली और पंखों के ऊपर से मुर्गे को अपने घर में फेंका

और अपनी घरवाली से कहा –"इसके पंख नोच डालो। कल इसका शोरवा बनायेंगे।"

इसके बाद वह फिर बेसब्लेबनोव के घर गया और उनसे एक और मुर्गा खरीदकर अरकाश्का के पास लौटा। अरकाश्का ने उससे अपना मुर्गा बदल लिया। तभी माकार ने उसके मुर्गे की गर्दन काट डाली और पहले ही की तरह मुर्गे को पंखों के ऊपर से अपने घर में फेंककर अपनी घरवाली से उसने कहा–"लो इसे भी, नोच डालो इस हरामी के पंख, और अभी चढ़ा दो चूल्हे पर।"

उसके चले जाने पर अरकाश्का ने अपनी पत्नी से कहा –"आदमी अच्छा है; पर दिमाग फिर गया है। बेचारा रात-रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भर बैठा जा गता है। यह सब अंग्रेजी की मेहरबानी है।"

अब माकार रात के समय बड़े मजे से मुर्गों की बांगें सुनता, अब उनमें कोई मुर्गा विघ्न डालनेवाला नहीं था।

फिर कुछ दिनों के बाद बूढ़ा शचूकार भी रात के समय उसका साथ देने लगा। उसने माकार से कोई पुस्तक मांगी, ताकि वह भी उसकी तरह रात के समय पढ़ा करे। माकार ने कुछ देर सोचा और फिर रूसी भाषा का एक मोटा शब्दकोश उसे देते हुए कहा—"लो, पर इसे अपने मन में ही पढ़ना। न बोलना, न खांसना, न छींकना ...यानी तुम्हारी कोई आवाज न आये।"

"अच्छा," शचुकार ने कहा और फिर गहरी आह भरकर शब्दकोश खोला।

आधी रात के समय मुर्गों की बांगें शुरू हुईं, तो वे दोनों कंधे-से-कंधा जोड़े खिड़की में झुके हुए बांगें सुनने लगे। शचुकार ने हैरानी-भरी खुशी में कहा—"कमाल है, मैंने पहले कभी इन बांगों की ओर ध्यान नहीं दिया। हद हो गयी। सारी उम्र इन मुर्गों के बीच में रहा हूं और यह कभी सोचा ही नहीं कि इनकी यह कुकडूं-कूं कितनी अच्छी होती है! पर आज मुझे यह बात समझ में आयी है। वह जो मैदान्नीकोव का मुर्गा है न माकार, कैसी आवाज है उसकी! जैसे जनरल ब्रुसीलोव की आवाज हो। है न?"

माकार के चेहरे पर गुस्सा झलका और उसने कहा—"कभी तुमने हमारे जनरलों की आवाज सुनी भी है? पर तुम्हारा यह ब्रुसीलोव क्या था? एक तो वह जार के समय का जनरल था; जहां तक मेरा सवाल है, मैं उस पर भरोसा नहीं कर सकता। दूसरे, वह चश्मा लगाता था। उसकी आवाज तो अरकाश्का के इस मुर्गे-जैसी होगी, जो हमने आज रात खाया है। दरअसल आवाजों के बारे में राजनीतिक नुक्ते से ही सोचना चाहिये। जैसे, एक समय हमारे दस्ते में 'बास' बजानेवाला होता था—पूरी फौज में सबसे बढ़िया 'बास' बजानेवाला। पर वह हरामी निकला—दुश्मनों के साथ जाकर मिल गया। क्या तुम्हारा खयाल है, अब वह मेरी नजर में अच्छा 'बास' बजानेवाला है? बिलकुल नहीं। अब वह 'बास' के बजाय निकम्मा-सा 'फालसेटो' है।"

"पर मुर्गों का राजनीति से क्या संबंध है?" शचुकार ने कुछ डरते हुए पूछा।

"है क्यों नहीं? अगर वह मैदान्नीकोव के मुर्गे के बजाय किसी जागीरदार का मुर्गा होता, तो मैं उसकी बांग कभी न सुनता। तब मैं उसकी बिलकुल परवाह न करता। खैर, बहुत बातें हो गयीं, अब आराम से बैठकर अपनी किताब पढ़ो।"

एक दिन शचुकार ने माकार से कहा कि चलकर मैदान्नीकोव का मुर्गा देखना चाहिये। सो वे दोनों ही मैदान्नीकोव के घर गये। उस समय मैदान्नीकोव किसी काम से बाहर गया हुआ था। माकार उसकी पत्नी से इधर-उधर की बातें करता हुआ आंगन में उस मुर्गे की ओर देखता रहा, जो बड़ी शान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से घूम रहा था। वह बहुत बड़ा मुर्गा था और उसके सिर पर काफी बड़ी कलगी थी। माकार को पूरी तसल्ली हो गयी।

जब वह वहां से उठकर चला, तो फाटक में से बाहर निकलकर उसने शचुकार के कोहनी मारी और पूछा—"क्या खयाल है तुम्हारा?

"जैसी बांग देता है, देखने में भी वैसा ही शानदार है। सचमुच बड़ा पादरी लगता है।"

यह तुलना सुनकर माकार को बहुत बुरा लगा; पर वह आगे कुछ बोला नहीं।

कुछ दूर चलने पर शचुकार अचानक रुक गया और उसने माकार की बांह पकड़कर कहा—"कहीं वे उसे मार न डालें।"

"किसे?"

"उस मुर्गे को। ईश्वर उस पर अपनी मेहर करे। मुझे लगता है, वे उसे जरूर मार डालेंगे।"

"क्यों मार डालेंगे?"

"तुम्हें दिखाई नहीं देता? वह कितना बड़ा हो गया है। अगर ज्यादा नहीं, तो मेरी जितनी उम्र होगी उसकी। जब मैं लड़का था, तभी से उसे देखता आ रहा हूं।"

"क्या पागलों की-सी बात करते हो। मुर्गे सत्तर साल तक नहीं जीते। समझे?"

"कुछ भी हो, वह बूढ़ा हो गया है।"

माकार तेजी से मुड़ा और लंबे-लंबे कदम भरता हुआ मैदान्नीकोव के घर की ओर चल पड़ा। शचुकार उसके साथ-साथ भागता हुआ जा रहा था। उसका मुंह खुला था और वह कुत्ते की तरह हांफ रहा था।

मैदान्नीकोव की पत्नी ने उन्हें देखा, तो उनकी ओर बढ़ी।

"कुछ भूल गये हो?" उसने पूछा।

"मैं तुम्हें एक बात बताना भूल गया था, और वह यह है कि अपने मुर्गे को कहीं मार न डालना।"

"ईश्वर का वास्ता है," शचुकार ने कहा।

माकार को उसका बीच में बोलना बुरा लगा। उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"हम इसे खरीदना या बदले में लेना चाहते हैं, ताकि इसे सहकारी खेत की मुर्गियों के बीच में रख सकें। देखने में बहुत बढ़िया नस्ल का लगता है। शायद इसके बाप-दादा इंग्लैंड या हालैंड के रहनेवाले होंगे और बढ़िया नयी नस्ल पैदा करने के लिए यहां लाये गये होंगे। सो इस मुर्गे को मारना नहीं चाहिये, किसी हालत में भी नहीं मारना चाहिये।"

"पर यह तो अब बूढ़ा हो गया है, इससे नयी नस्ल क्या पैदा होगी? हम तो इसे काटनेवाले थे, इसी इतवार को। और इसकी जगह कोई छोटी उम्र का जवान मुर्गा लायेंगे।"

यह सुनकर शचुकार ने माकार के कोहनी मारी और कहा—"लो देख लो, मैंने तुमसे कहा था न?"

पर माकार ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और मैदान्नीकोव की पत्नी को मुर्गे के बारे में मनाने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बूढ़ा हो गया है, तो क्या हुआ ?" माकार ने कहा—"अभी भी यह हमारे काम का है। हम इसे वोदका में भीगे हुए गेहूं खिलायेंगे और यह फिर बड़े जोश से मुर्गियों के पीछे भागेगा। कहने का मतलब यह कि इसे किसी भी हालत में मारना ठीक नहीं। जहां तक किसी छोटी उम्र के जवान मुर्गे का सवाल है, हम तुम्हें नया मुर्गा ला देंगे।"

उसी दिन माकार ने दयोम्का अशाकोव के घर से एक नया मुर्गा खरीदा और शचुकार के हाथ मैदान्नीकोव के यहां भेज दिया। अब तो ऐसे लगा कि आखिरी अड़चन भी दूर हो गयी। पर तब सारे गांव में यह अफवाह फैल गयी कि पता नहीं क्यों, माकार हर जगह से मुर्गे खरीद रहा है और वह भी काफी ज्यादा कीमत चुकाकर ! भला इस स्थिति का राजम्पोल्नोव फायदा क्यों न उठाता, जो हंसी-मजाक के लिए कोई-न-कोई मौका ढूंढ़ता ही रहता था।

अपने दोस्त के बारे में यह असाधारण किस्म की बात सुनकर, उसने खुद सारी बात का पता लगाना चाहा। और एक दिन वह रात के समय माकार के घर गया।

माकार और बूढ़ा शचुकार उस समय मेज के दोनों ओर बैठे हुए पढ़ने लीन थे। राजम्पोल्नोव ने बिना दस्तक दिये ही दरवाजा खोला और खांसा। पर पढ़ाई में लीन दोनों विद्यार्थियों ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह दहलीज में खड़ा था। यह देखकर वह मुस्कराने से न रह सका और फिर उसने ऊंची आवाज में पूछा—"क्या कामरेड माकार यहां रहता है?"

माकार ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और उसकी सिकुड़ी हुई आंखों में मद्धिम-सी चमक आयी और बोला—"तुम जाकर गांव की लड़कियों में बैठो। मेरे पास बेकार गंवाने के लिए समय नहीं है।"

राजम्पोल्नोव बेंच पर बैठ गया और सिगरेट सुलगाकर उसने गंभीर लहजे में पूछा—"सच-सच बताओ, तुमने इतने मुर्गे क्यों खरीदे हैं ?"

"शोरबा बनाने के लिए, और काहे के लिए ? क्या तुम्हारा खयाल है, मैं उनकी आइस्क्रीम बनाकर गांव की लड़कियों में बांटूंगा ?"

"नहीं, मेरा यह खयाल नहीं है; पर मुझे बड़ी हैरानी हुई है। मैंने सोचा, भला तुम्हें इतने मुर्गों की क्यों जरूरत पड़ गयी ? और वह भी सिर्फ मुर्गों की, मुर्गियों की नहीं।"

माकार मुस्कराया—"मुझे शोरबे में मुर्गों की कलगी अच्छी लगती है, इसलिए।" कुछ देर के बाद राजम्पोल्नोव चला गया।

आधी रात हुई, तो मुर्गों की बांगें फिर शुरू हुईं। माकार और शचुकार अपनी पढ़ाई छोड़कर उन्हें सुनने और अपने-अपने तरीके से उनका आनंद लेने लगे।

"यह तो ऐसा है, जैसे किसी गिरजे में गीत गाया जाये।" शचुकार ने जज्बाती होकर बड़े आदर से कहा।

"नहीं, जैसे घुड़सवारों की रेजिमेंट हो!" माकार ने कुछ खोयी हुई-सी हालत में कहा।

—रूपांतर : सुखबीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

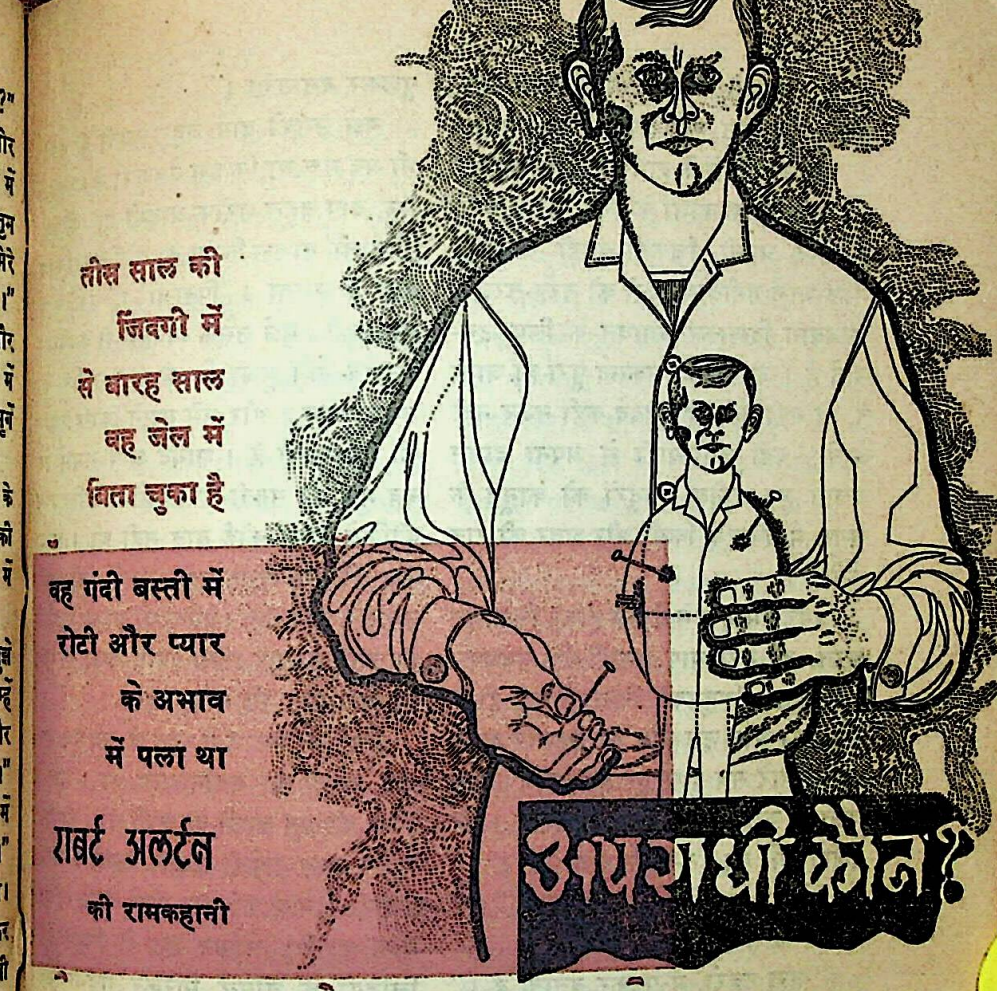

तीस साल की जिंदगी में से बारह साल वह जेल में बिता चुका है

वह गंदी बस्ती में रोटी और प्यार के अभाव में पला था

रार्बर्ट अलर्टन की रामकहानी

अपराधी कौन?

मैं एक गरीब घराने का आदमी हूं। मेरा बाप एक मामूली मजदूर था। वह महीने में दस-बारह दिन बेकार रहता था। हमारे यहां खाना सिर्फ उन दिनों पकता था, जब वह काम पर जा रहा हो। वरना हम नानबाई के यहां से सस्ते दामों में बासी और सूखी डबल रोटी ले आते और उसे नमकीन चाय में भिगोकर पेट भर लेते।

उन दिनों बेकारी का दौर-दौरा था। जगह-जगह मजदूर-संघ जल्से करते थे। इन जल्सों में वक्ता पूंजीपतियों को जी भरके गालियां देते। यह और बात है कि यही लोग जब किसी पैसेवाले के सामने जाते, तो खौफ के मारे उनकी जबान बंद हो जाती थी। मेरा बाप भी उन जल्सों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता था। बेचारा भाषण तो क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता, श्रोताओं को पानी पिलाता और दूसरे छोटे-मोटे काम कर दिया करता।

वह उन लोगों के हाथों का खिलौना था, जो राजनीतिक कामों के लिए सभाएं करते हैं और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से भोले-भाले गरीब मजदूरों को तरह-तरह के सब्जबाग दिखाकर बगावत के लिए उकसाते हैं। जब इनका मकसद पूरा हो जाता है, तो गरीबों के ये हमदर्द कहीं नजर नहीं आते; बड़ी होशियारी से अपना दामन बचाते हुए गरीब मजदूरों को कानून के चंगुल में देकर ये किसी और शहर की राह लेते हैं।

अगर हम भूख से बेहाल होकर शिकायत करते, तो मेरा बाप हमारी पीठ थपथपाकर कहता—"अहमको, चिल्लाते क्यों हो? सब्र करो और उस दिन का इंतजार करो, जब तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे। उस वक्त न कोई अमीर होगा, न गरीब। हम पूंजीपतियों की ईंट-से-ईंट बजा देंगे।"

"लेकिन वह दिन कब आयेगा?" हम सवाल करते।

"जरा ठहरो, मैं पढ़कर बताता हूं।" यह कहकर वह जल्दी से पत्रिका के पन्ने उलटने-पलटने लगता। हम सवाल करते हुए उसकी तरफ देखते रहते। मन में प्रार्थना करते कि या खुदा, वह दिन जल्दी आ जाये, ताकि हमें भूख से हमेशा के लिए मुक्ति मिले। थोड़ी देर बाद वह सिर ऊपर उठाता और खीजकर कहता—"यहां तो कहीं कुछ नहीं लिखा है; खैर, कल किसी से पूछकर बताऊंगा।"

मुझे उसकी बातें जहर लगती थीं। तो भी यह सच था कि इस बेवकूफी के बावजूद मेरा बाप बहुत शरीफ आदमी था। मैं उसे 'पिताजी' या इस किस्म का कोई दूसरा नाम नहीं दे सकता। 'पिताजी' में एक खास मिठास है। मुझे उसके व्यवहार से कभी यह अनुभव नहीं हुआ कि मैं उसका बेटा हूं, उसका खून हूं और उसे मुझसे किसी प्रकार की दिलचस्पी है। शायद आप समझें कि वह मुझ पर सख्ती करता होगा। विश्वास कीजिये, ऐसी कोई बात नहीं थी। मार-पीट तो एक तरफ रही, उसने मुझे कभी उफ तक नहीं कहा। बल्कि यों कहना चाहिये कि उसने मुझ पर इतना ध्यान दिया ही नहीं कि मार-पीट की नौबत आये।

हम जिस मकान में रहते थे, वह एक बड़ी बाद हवेली का मर्दानखाना था। घुएं से कमरे की छत काली हो चुकी थी। दीवारों से हर वक्त सफेदी झड़ती रहती। अम्मा बेचारी दिन में कई बार गीले कपड़े से फर्श साफ करती; लेकिन छत से मिट्टी और चिड़ियों के घोंसले गिरकर गंदगी फैला देते। दरवाजे के किवाड़ गायब थे। रात के वक्त हम लकड़ी के एक तख्ते को, दरवाजे में खड़ा करके ईंटों का सहारा दे देते। हमारे पास एक ही कमरा था, जिसमें चार बिस्तर और एक मेज रखने के बाद चलने फिरने के लिए मुश्किल से चंद फुट जगह बाकी रहती थी। रात को हम आठों बहन भाई दो पलंगों पर इस तरह लेटते थे, कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डिब्बे में जूते रखे जाते हैं।

गरज यह कि हम पालतू जानवरों की तरह इस एक कमरे में जिंदगी के दिन पूरे कर रहे थे। जगह की कमी के कारण हम दिन-भर गलियों में खेलते, जहां इंसान और कुत्ते इकट्ठे वक्त गुजारते हैं। घर सिर्फ उस वक्त आते, जब भूख सताती या नींद परेशान करती। हमारे यहां बातचीत बहुत कम होती थी, होती भी सिर्फ काम-काज के बारे में।

मेरे बाप को कोई काम भी मिलता, तो एक हफ्ते से ज्यादा न चलता था। बेकारी बहुत ज्यादा थी। जब हम भूख से बिल-बिलाते, तो अम्मा घर से बाहर निकाल देती थी। बाहर गली में दीवार से टेक लगाकर मैं चारों तरफ नजर दौड़ाता, तो दूर तक पुराने और जीर्ण-शीर्ण मकान नजर आते।

हमारा मकान एक तंग गली में था, जो थोड़ी दूर जाकर एक चौक से मिल जाती थी। इस चौक में चार-पांच दुकानें थीं। फिर भी हमारी निगाह सिर्फ नानबाई के यहां शीशों के पीछे रखी हुई डबल रोटी, बिस्कुट और केक पर रहती, जो हमें स्वर्ग के वरदान-सी मालूम होती थीं।

× × ×

मैंने अब तक जो कुछ वर्णन किया है, शायद आप उससे यह अंदाज लगायें कि मेरा बचपन खुशियों से खाली गुजरा होगा। ऐसा हर्गिज न था। उस वक्त मैं खासा खुश रहा करता था; क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं, जो साफ-सुथरे मकानों में रहते हैं, बढ़िया कपड़े पहनते हैं और अच्छे-से-अच्छा खाना पेट-भर कर खाते हैं।

मेरे आस-पास सब लोग मेरी तरह भूखे थे, फटे-पुराने कपड़े पहनते और ऐसे टूटे-फूटे मकानों में रहते थे, जिनके दरवाजे हमेशा खुले रहते। एक-एक मकान में कई-कई परिवार रहते थे। खिड़कियों और रोशनदानों के शीशे युगों से टूटे हुए थे। हम सारा दिन छतों पर कूदते और टूटी-फूटी दीवारों पर चढ़कर छलांगें लगाते।

बाजार में मोटर-गाड़ियों के बजाय मरियल घोड़ोंवाले छकड़े दिखाई देते। ज्यादातर हाथगाड़ियां चलती थीं, जिन्हें मैले-कुचैले कपड़े पहने मजदूर धकेल रहे होते। बाजार में सफाई महीने में सिर्फ एक बार हुआ करती; इसलिए सब्जी के छिलके, कपड़ों के चीथड़े, खाली डिब्बे और जाने क्या-क्या जमीन पर पड़ा रहता।

ये गिरी-पड़ी चीजें जमा करना एक दिलचस्प खेल था। शाम को हम सब एक जगह इकट्ठे होते और दिन-भर की 'कमाई' निकालते। जो चीजें जरा भी खाने योग्य होतीं, फौरन चट कर ली जातीं। बटन, जूतों के फीते और बक्सुए, सूइयां, टीन के खाली डिब्बे, लिफाफे और इस तरह की दूसरी चीजें कबाड़ी के यहां एक-दो पेनी में बेच दी जातीं और उस रकम से बर्फ के गोले उड़ाये जाते।

शनिवार की रात को यहां आधी-आधी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे बाप को मजदूरी कभी-कभी ही मिलती थी।

[चित्रकार : ओके]

रात तक जल्सा मनाया जाता था। मुहल्ले-भर के मर्द-औरतें, बूढ़े और बच्चे जमा होते। बूढ़ा कबाड़ी एक बेहूदा ग्रामोफोन निकालकर तीन पायों-वाली मेज पर सजा देता। चौथे पाये की जगह ईंटें रख दी जातीं। शादीशुदा जोड़े बीस-बीस साल पुरानी धुनों पर नाचते। नौजवान लड़के-लड़कियां तितलियों की तरह मंडराते। बूढ़े दुकानों के सामने बने हुए चबूतरों पर बैठकर घटिया शराब ढालते। बच्चे भीड़ में घुसकर इधर-उधर घूमते, ताकि कोई गिरीपड़ी चीज मिल जाये। सोने का कोई वक्त तय नहीं था। जब किसी को नींद आती, वहीं जमीन पर टांगें पसारकर सो रहता।

बचपन में मैंने कभी किसी को साफ-सुथरे कपड़े पहने नहीं देखा। बात यह थी कि हमारे मुहल्ले में कपड़े धोने का रिवाज बहुत कम था। कपड़े को तभी शरीर से अलग किया जाता, जब वह पहनने के योग्य न रहता था। यही कारण था कि जब मैंने पहले-पहल एक साफ-सुथरे कपड़ोंवाले आदमी को घर में दाखिल होते देखा, तो बहुत हैरान हुआ और दबे पांव अंदर आया।

वह अजनबी पलंग पर बैठा था। उसकी उम्र पचास-साठ के बीच होगी। उसने सिर पर बढ़िया टोपी पहन रखी थी, जिसमें मोर के पर लगे हुए थे। टाई पर सोने का चमकता पिन लगा था। जब उसने वक्त देखने के लिए जेब से घड़ी निकाली, तो मेरी आंखें खुली-की-खुली रह गयीं। सुनहरे रंग की इतनी खूबसूरत घड़ी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। मेरी नजर बार-बार उसके हाथों की तरफ उठ जाती, जो मुर्गी के परों से भी ज्यादा सफेद थे। मैंने चुपके-से उसका हाथ छुआ, तो मालूम हुआ कि उसने रबर के सफेद दस्ताने पहन रखे हैं। उसके जूते शरीफ आदमियों के-से और चमकदार थे।

अम्मा ने मुझे देखा, तो पास बुलाया और अजनबी के सामने खड़ा करते हुए कहा—"यह राबर्ट अलर्टन है।"

"हूं।"

"राबी! ये तुम्हारे नाना हैं, इन्हें सलाम करो बेटा।"

मैंने डरते-डरते सलाम किया। उसने सिर हिलाकर उसका जवाब देते हुए जेब से एक चमकता हुआ सिक्का निकाला और मेरी हथेली पर रखकर कहा—"जाओ बेटा, ऐश करो। और देखो, अगर तुम मजे से जिंदगी गुजारना चाहते हो, तो अपने बाप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तरह टके-टके की मजदूरी न करना, मेरे पास चले आना। ऐसा काम सिखाऊंगा कि उम्र-भर दुआएं दोगे।"

"आप क्या काम करते हैं?"

"यह अपनी मां से पूछना।" यह कहकर वह हंसता हुआ उठकर चल दिया। मैंने अम्मा से पूछा कि वह आदमी क्या करता है, तो उसने मुझे गोद में बैठाकर प्यार से कहा—"राबी, तुम्हारा नाना अच्छा काम नहीं करता। मैं नहीं चाहती कि तुम उसके चेले बनो। तुम्हें अपने पिताजी के पीछे चलना चाहिये। देखो न, वे कितने शरीफ आदमी हैं।"

मैं उस जवाब से न उस समय सहमत हुआ था, और न ही अब हूं। "आखिर वह क्या करता है, जो इतना मालदार है?"

"पगले, वह लोगों की जेबें काटता है। क्या तुम भी यह काम करोगे?"

मैं कई दिन तक सोचता रहा कि आखिर जेब काटने में क्या बुराई है? असली ध्येय तो रुपया प्राप्त करना है। लेकिन अभी मैं बहुत छोटा था और मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि अम्मा के सामने जबान खोलूं।

× × ×

मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है, जब मैंने पहली बार चोरी की। उस समय मेरी उम्र बहुत हुई तो छः साल की होगी। दोपहर का वक्त था। मैं घर में दाखिल हुआ, तो अम्मा तंदूर में रोटी लगा रही थी। कमरे के बीचों-बीच मेज पर दो शिलिंग पड़े थे। मैंने इधर-उधर देखा। फिर चुपके-से उन्हें जेब में डालकर बाहर निकल गया। बाजार में पहुंचते ही मैंने अपने तमाम दोस्तों को आइस्क्रीम खाने की दावत दी। शाम होने तक मैं एक-एक पेनी जाया कर चुका था।

घर लौटा, तो अम्मा पलंग की पांयते पर बैठी आंसू बहा रही थी। मैं घबरा-सा गया; डर हुआ कि अब मुझसे पैसों के बारे में पूछा जायेगा। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। जाने क्या जी में आया कि मैं चुपके-से उसके निकट बैठ गया। वह खुद ही बोली—"राबी, घर में सिर्फ दो शिलिंग रह गये थे और मुझे उससे पूरा हफ्ता गुजारना था। वह भी कोई ले उड़ा। खुदा करे, उसके हाथों में कीड़े पड़ जायें, जिसने हमारे मुंह से यह रूखी-सूखी भी छीन ली।"

मेरे दिल पर चोट-सी लगी और मुझे पहली और अंतिम बार यह अनुभव हुआ कि मैंने बहुत बड़ा गुनाह किया है। भारी दिल से मैं बाहर निकल गया। मैं जानता था कि जो रकम मैंने जाया कर दी, उससे घर में एक हफ्ते तक चूल्हा गरम रह सकता था। यह अनुभूति मुझे बुरी तरह परेशान किये जा रही थी कि मेरी इस करतूत के कारण घर में कई दिन तक फाके होंगे।

जी चाहा कि जाकर अम्मा के चरणों पर सिर रख दूं और रो-रोकर अपने अपराध की क्षमा मांगूं। लेकिन हिम्मत न पड़ी। वह क्या सोचेगी कि मैं कितना बुरा हूं! अगर मैं उस समय जरा हिम्मत से काम लेकर उसे सब बता देता, तो आज इस स्थिति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के कपड़ों की धुलाई सर्फ़ से कीजिए और फिर देखिए इस धुलाई की अनोखी शान। सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है ज़िसके कारण आपके कपड़े अत्यंत आसानी से सबसे सफ़ेद और साफ़ धुलते हैं। कमीज़ें, साड़ियाँ, बच्चोंके वस्त्र—सभी कपड़े—सर्फ़ से धोइये।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

SU. 25-X29 HI

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को न पहुंचता। मैं बुजदिल साबित हुआ और बुजदिली हमेशा अपराध को जन्म देती है।

उस रात मैं देर तक गलियों में फिरता रहा। यहां तक कि ग्यारह बज गये। पर घर लौटने को जी नहीं चाहता था। एक खंभे से टेक लगाकर बैठ गया और उस वक्त को कोसने लगा, जब मेरे दिल में चोरी करने का खयाल आया था। धीरे-धीरे मुझ पर ऊंघ हावी होती चली गयी और आखिरकार मैं वहीं बैठे-बैठे सो गया।

सुबह जब आंख खुली, तो धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी। घर पहुंचा, तो किसी ने मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया। मेरा दिल बुझ-सा गया। अजीब मां-बाप हैं! इन्हें तो मेरा जरा भी खयाल नहीं। अम्मा से पूछा, तो वह हैरान होकर बोली—"अच्छा! तो तुम रात-भर घर से गायब रहे हो! खुदा की कसम, मुझे तो पता भी नहीं था।"

वक्त गुजरता चला गया। घर में दुबारा मैंने कोई शरारत नहीं की। मुझे अपने अपराध की तीव्र अनुभूति हो रही थी। एक-एक पाई करके मैं पैसे जोड़ता और जब थोड़ी-सी नकदी जमा हो जाती, तो चुपके-से मां के हवाले कर देता। वह मेरी बलैया लेती और घर-भर में मेरी आज्ञा-पालकता और होशियारी के ढिंढोरे पीटती। मुझे अपनी यह प्रशंसा सुनकर कभी खुशी नहीं हुई। मेरा अंतःकरण मुझे हमेशा कोसता रहा।

× × ×

आठ साल की उम्र में मुझे एक स्कूल में भरती किया गया। मुझे यह जगह पसंद नहीं आयी। इतिहास और भूगोल के अलावा बाकी सारे विषय बेहद खुश्क थे। अलबत्ता स्कूल के खेल-कूद में मैं बड़ी खुशी से भाग लेता था। अनुशासन और नियम-पालन से मानो मुझे जनम-जनम का वैर था। मार-पीट से मैं कतई नहीं घबराता था; सख्त-से-सख्त मार हंस-हंसकर बर्दाश्त कर लेता था। यहां तक कि मास्टरों ने मुझे सजा देना बंद कर दिया। उन्हीं दिनों मैंने दुबारा चोरी की।

हमारे स्कूल में कुछ बच्चे ऐसे भी थे, जो जरा खाते-पीते घरानों के थे। नाश्ते की छुट्टी में वे स्कूल की कैंटीन से चाट, आइस्क्रीम और फल वगैरह लेकर खाया करते। मेरे कुछ दोस्त ऐसे भी थे, जो थे तो मेरी तरह गरीब घरों के, लेकिन खूब ऐश करते थे। एक बार मैंने उनसे पूछा कि वे इतने पैसे कहां से ले आते हैं? पहले तो वे टाल-मटोल करते रहे; लेकिन बार-बार पूछने पर उन्होंने मुझे अपना तरीका बता दिया।

अब तो मैं भी उनके साथ मिल गया। हम किसी मालदार बच्चे के पास जाते और उसे बातों में लगा लेते। धीरे-धीरे बेत-कल्लुफी पैदा करके हममें से दो-तीन उससे दिल्लगी के तौर पर हाथा-पाई करने लगते और बाकी उसकी जेबें टटोलकर पैसे निकाल लेते। उन पैसों से हम खाने-पीने की चीजें खरीदते और मजे ले-लेकर खाते।

एक बार मैं एक लड़के की जेब पर हाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साफ करता हुआ पकड़ा गया। हेडमास्टर ने मुझे और मेरे साथियों को सुबह स्कूल के सारे विद्यार्थियों के सामने चौबीस-चौबीस बेंत लगाये। अब तो हम हर जगह बदनाम हो गये। जहां जाते, लड़के-लड़कियां हमसे कतराते, दूर-दूर से इशारे करते, कुछ तो खुल्लम-खुल्ला मजाक उड़ाते और गालियां भी देते।

मेरा नन्हा-सा दिमाग घृणा से भर गया। मैंने मौका पाकर एक-एक से बदला लेना शुरू कर दिया। किसी को दीवार से गिरा दिया, तो किसी के सिर पर ईंट दे मारी; किसी लड़के के बाल नोचे, तो किसी की किताबें छीन लीं। अगर कोई मास्टर मारना चाहता, तो मैं उसका बेंत पकड़ लेता।

धीरे-धीरे मैं उद्दंड होता चला गया। यहां तक कि मास्टर भी मुझसे निराश हो गये। मैं उनकी साइकलों की हवा निकाल देता, उनके सामने ही लड़कियों को छेड़ता और बेहूदा गालियां बकता। मैं जान-बूझकर ऐसी हरकतें करता कि सजा पा सकूं। और हर बार सजा पाने के बाद मेरा सिर अभिमान से ऊंचा हो जाता।

मैं बड़े घमंड के साथ हमजोलियों को अपने हाथों के जख्म दिखाता और उनसे प्रशंसा के शब्द सुनकर फूला न समाता। सारे स्कूल में मुझे 'राबी शैतान' के नाम से पुकारा जाता था। छोटे बच्चे मेरे नाम से खौफ खाते और बड़े मुझे दोस्त बनाने में गर्व अनुभव करते।

धीरे-धीरे मेरे आस-पास छोटे-छोटे बच्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार्शों का एक टोला जमा हो गया। हमारी शरारतियां तेज होने लगीं। हम बच्चों की किताबें चुरा लेते और बाजार में रद्दी के भाव बेच देते। छोटे बच्चों को डरा धमका-कर उन्हें मिले जेब-खर्च के पैसे छीन लेते। जो बच्चा मास्टरों से हमारी शिकायत करता, उसे छुट्टी के बाद पीट डालते।

आम तौर पर माता-पिता बच्चों का नाम स्कूल के रजिस्टर में दाखिल करवाने के बाद उनके बारे में बिलकुल लापरवाह हो जाते हैं। वे समझते हैं कि स्कूल की पढ़ाई उनके लिए काफी है। मेरे मां-बाप ने कभी यह जरूरत महसूस नहीं की कि स्कूल में आकर मेरे बारे में पूछताछ करें। हो सकता है, उस वक्त मुझ पर ध्यान दिया जाता, तो मैं संभल जाता।

मास्टरों ने मुझे ढीठ, शैतान और विद्रोही समझकर मेरे प्रति उपेक्षा बरती और मां-बाप को दूसरी व्यस्तताओं के कारण मेरे विषय में ध्यान देने की फुरसत ही नहीं मिली। यह सही है कि गरीबी का इलाज उनके पास नहीं था। लेकिन सभी गरीब अपराधी नहीं बन जाते। मेरी हालत यह थी कि मैं अपने आपको गुनहगार समझने के बजाय, 'हीरो' मानने लगा था।

स्कूल में पांचो नाम का एक लड़का मेरा लंगोटिया यार था। वह सही माने में मासूम सूरत और शैतान सिफ्त लड़का था। पकड़े जाने पर बेहद मासूमियत से आंखों में आंसू लाते हुए कहता—"सच कहता हूं मास्टरजी, मुझ पर झूठा दोष लगाया गया है। कसम खाता हूं। मुझे जोसेफ की किताबों का कुछ भी पता नहीं।" वाक्य ऐसे भोलेपन से कहे जाते कि कठोर-से-कठोर मास्टर या मास्टरनी भी प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकते थे।

× × ×

एक दिन स्कूल से लौटते हुए एक घोड़ा-गाड़ी मुझसे टकरा गयी। मेरा सिर फट गया और खून के फव्वारे छूटने लगे। कुछ आदमियों ने मुझे उठाकर उसी घोड़ागाड़ी पर लिटा दिया। उसके बाद क्या हुआ, यह मुझे याद नहीं। जब आंख खुली, तो मैं एक मुलायम बिस्तर पर लेटा हुआ था। बिस्तर की चादर इतनी सफेद थी कि चूमने को जी चाहता था। सफेद कपड़े पहने नर्सें इधर-उधर फिर रही थीं। मैंने उठना चाहा; लेकिन सिर में बड़े जोर की टीस थी। लाचार होकर लेट गया।

यह जगह मुझे बेहद पसंद आयी। सफेद बिस्तर, सिरहाने की तरफ पड़ी मेज पर खूबसूरत गुलदस्ते, शीशे के नाजुक गिलास और जाने क्या-क्या था! मेरे लिए यह एक नया अनुभव था। सुबह जब दो नर्सें बिस्तर की चादर बदलने के लिए आयीं, तो मैंने रोकते हुए कहा—"रहने दीजिये, अभी तो यह चादर बहुत साफ-सुथरी है।" वे खिल-खिलाकर हंस पड़ीं।

शाम को अम्मा आयी। वह बेहद चिंतित थी। बार-बार नर्स से पूछती कि मुझे कब यहां से छुट्टी मिलेगी? मुझे उसकी यह बेचैनी बिलकुल अच्छी नहीं लगी। भला घर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा

पीना और पिलाना
उम्दा बात है!

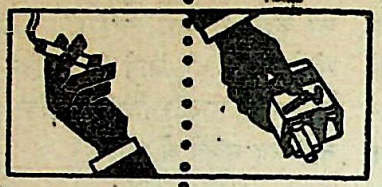

पनामा

ये आखिरी८ कश तक मज़ा देती हैं

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबैको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई -५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी सुविधाएं कहां थीं ? ऐसा खाना, ऐसा पीना तो उम्र-भर हमें नसीब नहीं हुआ ! मैंने उसे समझाते हुए कहा—"अम्मा, मैं कोशिश कर रहा हूं कि ज्यादा-से-ज्यादा देर तक यहां रह सकूं।" सुनकर वह अपना सिर पीटने लगी।

दस दिन गुजर गये। इस बीच मेरे सिर का जख्म भर चुका था। मुझे अस्पताल से हटाकर उन मरीजों के वार्ड में भेज दिया गया, जो अब घर जाने लायक हो गये थे। यह जगह अस्पताल जितनी न सही, तो भी घर से सौ गुना बेहतर थी। यहां पंद्रह दिन रहने के बाद मुझे छुट्टी दे दी गयी।

यह जगह हमारे घर से कोई साठ मील दूर होगी। मेरे बाप के नाम पत्र लिख दिया गया कि आकर मुझे ले जाये। दिन गुजरते चले गये; लेकिन न तो कोई जवाब आया, न मेरे मां-बाप आये। एक हफ्ते के बाद मुझे स्थानीय अनाथालय भेज दिया गया।

मैंने अपनी जिंदगी में सख्त-से-सख्त कैद झेली है; लेकिन जो तकलीफ मुझे इस अनाथालय में हुई, उसकी कसक मैं आज भी महसूस करता हूं। रोज सवेरे तमाम बच्चों को बेंत की नोक से जगाया जाता। ठंडे पानी से नहलाकर उन्हें मार-मारकर नाश्ता करवाया जाता। यह खाओ, यह मत खाओ ! चमचा ठीक से पकड़ो ! बद-तमीज कहीं के, बस अब जाने भी दो, पेट फट जायेगा ! उठो भी, वरना एक झापड़ पड़ेगा। यह शोरबा तुमने गिराया है ? उल्लू के पट्ठे, तुम्हारा बाप इसे साफ करेगा ? चलो इसे कमीज से साफ करो ! स्कूल जाओ और खूब अच्छी तरह सबक याद करो, वरना टांगें तोड़ दूंगा !.... इस किस्म की आवाजें हर वक्त सुनाई देतीं।

दो ही दिन में मेरे सब्र का प्याला भर गया और मैंने एक वार्डन के सिर पर ईंट दे मारी। वह जब लड़खड़ाता हुआ उठा, तो तीन-चार लड़कों ने उसे धक्के देकर हौज में गिरा दिया। मेरे जाने से पहले वहां के बच्चे गुलामी की जिंदगी बसर कर रहे थे। मैंने जाते ही उनमें बगावत की आग फैला दी। यहां तक कि जब अनाथालय का मैनेजर हालत देखने के लिए दरवाजे में दाखिल हुआ, तो ईंट-पत्थरों से उसका स्वागत किया गया।

जब यह स्वतंत्रता-संग्राम लड़ा जा रहा था, अम्मा मुझे लेने के लिए आ पहुंची। मैंने जाने से इन्कार करना चाहा; लेकिन उसके साथ पुलिस के दो सिपाही थे। उन्होंने मुझे कंधे से पकड़कर दो-एक जोरदार झटके दिये और मैं आंसू बहाता हुआ उनके साथ चल दिया। मुझे नहीं मालूम कि अनाथालय के इस संग्राम का क्या नतीजा निकला; क्योंकि मैं दुबारा वहां नहीं गया।

घर पहुंचकर मैंने फिर अपना पुराना धंधा शुरू कर दिया। गली से गिरी-पड़ी चीजें उठाने के बजाय, अब हम दुकानों से चोरी किया करते। दोपहर के वक्त आम तौर पर दुकानदार ऊंघने लगते। यह हमारे लिए सुनहरा मौका होता। हम दबे पांव अंदर दाखिल होते और जो कुछ हाथ लगता,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठा लाते । कितनी ही बार हम पकड़े जाते और चौक में हमें सजा दी जाती । शाम को घर पहुंचते, तो मां-बाप भी एक-आध थप्पड़ जड़ देते । बहुत-से बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों की इस आदत को प्रोत्साहन देते थे । मगर मेरे मां-बाप पुराने विचारों के थे !

मैं पहले ही बता चुका हूं कि मार-पीट से मैं कभी नहीं घबराया । हर बार पिटने पर मैं और ज्यादा पक्का हो जाता । यही हमारा सिद्धांत था—अगर पकड़े जाओ, तो बहादुरी से सजा झेलो और आगे के लिए सावधान हो जाओ । चोरी बंद करने का खयाल हमारे दिमाग में कभी नहीं आया—इसलिए कि इसके सिवा कोई चारा न था, और इसलिए भी कि परिस्थिति का तकाजा यही था । सभी बच्चे चोरी करते थे । अगर कोई चीज हम न चुराते, तो कोई और चुरा लेता । फिर क्यों न हम इस नेक काम में पहल करें ?

× × ×

मेरे स्वभाव में कठोरता आती चली जा रही थी । मुझे हर आदमी से नफरत थी । गरीबों से इसलिए कि वे गरीब थे और दो वक्त के खाने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार थे । मैं सोचता कि आखिर इन्हें दुनिया में जिंदा रहने का क्या अधिकार है ? अमीरों से इसलिए कि वे अमीर थे, और उनके पास लंबी-लंबी कारें थीं, जबकि मुझे साइकल तक मयस्सर न थी ।

महीने में एक बार हमारे मुहल्ले में एक महिला लंबी-सी चमचमाती लाल कार में बैठकर आया करती थी । उसके आते ही मर्द, औरतें, बच्चे और बूढ़े घरों से निकल आते और कार के चारों तरफ इस तरह जमा हो जाते, जैसे चींटियां गुड़ की डली पर जुट जाती हैं । वह अपने कीमती कपड़ों को संभालती हुई उतरती और ड्राइवर को कार में से पुराने कपड़े निकालने के लिए कहती ।

ज्यों ही कपड़े दिखाई देते, भीड़ में जोश फैल जाता । नौजवान दूसरों को धक्के देते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते । बूढ़े पीछे से चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें गालियां देते और महिला को अपने अस्तित्व का भान कराते । औरतें दूध पीते बच्चों को जमीन पर फेंककर लड़ती-झगड़ती कार तक पहुंचने की कोशिश करतीं । महिला यह देखे बिना ही कि कपड़ा किसी की जरूरत का है या नहीं, एक-एक सबको बांटती और फिर कार में बैठकर चल देती ।

उसके चले जाने के बाद भी देर तक चौक में हंगामा मचा रहता । बच्चे छीना-झपटी के दौरान जमीन पर गिरे हुए बटन तलाश करते, ताकि उन्हें कबाड़ी के यहां बेच सकें । जिन लोगों के हाथ कोई कपड़ा लग जाता, वे जल्दी से अपने-अपने घरों की राह लेते कि कहीं उनसे छीन न लिया जाये । दान से वंचित औरतें व बूढ़े ऊंची आवाज में दूसरों को गालियां देते और अंत में मुंह लटकाकर चौक से चल देते ।

मैं समझता था, यह महिला अपनी जेब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से दान-पुण्य करती है। लेकिन एक दिन मेरा यह भ्रम भी दूर हो गया। स्कूल के दरवाजे पर मुझे उसका ड्राइवर मिला। हम दोनों कुछ देर एक दूसरे से बातें करते रहे। फिर मैंने उससे कपड़ों के बारे में पूछा।

"अजी जाने दो, ये कपड़े तो समाज-कल्याण समिति बांटती है।"

"और यह बुढ़िया कौन है?"

"यह समिति के लिए स्वयंसेविका के रूप में काम करती है।"

"तब तो यह बड़ी भली है! बेचारी खामख्वाह इतना सिरदर्द मोल लेती है।"

"तुम क्या जानो भैया, यह मोटर-कार इसने पुराने कपड़ों के हेरफेर से खरीदी है।"

"क्या मतलब?"

"यह समिति से नये कपड़ों के लिए पैसा वसूल करती है। फिर कब्रिस्तान के जमादार से कौड़ियों के मोल लावारिस मुर्दों के कपड़े खरीद लेती है। इस हेरफेर से उसे काफी पया मिल जाता है।"

मेरा दिल नफरत से भर गया। तो हम सब मुर्दों के तन से उतरे कपड़े पहनते हैं! देखने में ये लोग कैसे फरिश्ते मालूम होते हैं; लेकिन अंदर से कितने कमीने हैं!

अगले हफ्ते जब वह नालायक बुढ़िया कपड़े बांटने आयी, तो मैंने तीन-चार दोस्तों के साथ मिलकर उसकी कार के तमाम शीशे पत्थरों से तोड़ दिये। उस रोज मुझे मन-ही-मन बड़ी राहत महसूस हुई। शाम को मैंने दोस्तों के लिए नानबाई की दुकान से बिस्कुट चुराये और शानदार पार्टी दी।

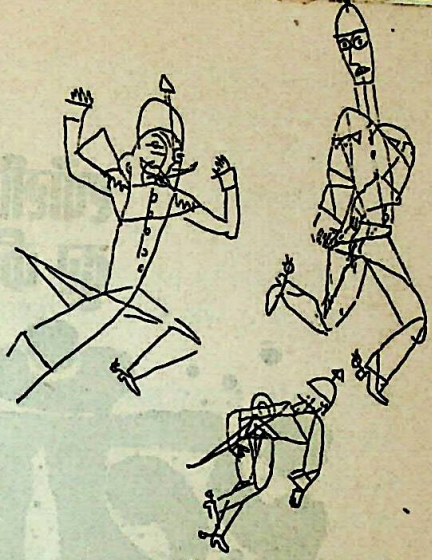

पुलिस

चित्रकार: पाल क्ली

मेरी उम्र बारह साल की थी, जब मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया। दो-एक रोज अम्मा ने मुझे समझाया-बुझाया भी; लेकिन मैंने उसकी एक न सुनी! जहां तक बाप का ताल्लुक है, उसे शायद यह मालूम भी न था कि मैंने कभी स्कूल जाना शुरू किया था।

× × ×

इन्हीं दिनों लड़ाई शुरू हो गयी। हमारे शहर पर बमबारी होने लगी, तो तमाम बच्चों को सुरक्षित जगहों पर भेज दिया गया। हमें उत्तरी सीमा के एक गांव में ले जाया गया, जहां स्थानीय अधिकारी की प्रार्थना पर सभी परिवार एक-एक बच्चा अपनाने को तैयार हो गये। हम सबको एक कतार में खड़ा कर दिया गया।

बाजार गरम था। खरीदार आते और देख-भालकर माल पसंद करते। मैं और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

टर्प वसाका

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा छोटा भाई चुपचाप एक तरफ खड़े थे। बीसियों लोग आये और बहुत-से बच्चों को पसंद करके ले गये। मगर हमें किसी ने सहानुभूति-योग्य नहीं समझा। हमारे सिवा बाकी तमाम बच्चे चले गये। तब एक बूढ़ी धूसट अंदर आयी और हमें बाजू से पकड़कर बाहर ले गयी।

"चलो छोकरो, सुना है तुम्हें किसी ने पसंद नहीं किया। मैं स्कूल के सामने बच्चों के लिए मिठाइयां बेचती हूं। तुम दोनों मेरी मदद करना, करोगे ना?"

हम चुपचाप उसके साथ चल दिये। दूसरे रोज उसने हमें दुकानदारी के उसूल सिखाने शुरू कर दिये—"बच्चा छोटा हो, तो चीज कम दो और जहां तक हो सके, गली-सड़ी और बासी चीजें निकालने की कोशिश करो।"

यह काम मुझे पसंद नहीं आया। सारा दिन बेकारों की तरह बैठे रहो। सिर्फ छुट्टी के वक्त ग्राहक आते थे। छोटे-छोटे बच्चे खूबसूरत कपड़े पहने बड़ी शान से अकड़ते हुए आते और एक-आध टके की चीज लेकर खुशी से कहकहे लगाते हुए आगे बढ़ जाते। बुढ़िया खुद सारा दिन हमारे पास बैठी रहती, ताकि हम पैसे गबन न कर लें।

तीन-चार रोज इसी तरह गुजर गये। पांचवें रोज सुबह-सुबह डाकिये ने हमारे घर का दरवाजा खटखटाया।

"बच्चो! तुम्हारे घर से खत आया है।" यह कहकर उसने एक लिफाफा हमारे हाथ में दिया। हमने हंसते-हंसते खत खोला और रोते-रोते बंद किया। जिंदगी में पहली बार अनुभव हुआ कि दुःख क्या चीज है। हमारी दुनिया अंधेरी हो गयी थी। यों लगा, जैसे पांव के नीचे से जमीन खिसक गयी हो और हम अंतरिक्ष में निराधार लटक रहे हों। वह हस्ती, जो हमें दुनिया-भर से ज्यादा चाहती थी, हमसे हमेशा के लिए रूठ गयी थी।

अम्मा की मौत से पहले मुझे कभी उसके महत्व का अनुभव नहीं हुआ था। यह ठीक है कि जब कभी मुझे चोट लग जाती, तो वही उस पर पट्टी बांधती थी। बीमारी की हालत में रात-रात-भर सिरहाने बैठना भी उसी का काम था। बात-बेबात पर मुंह वही चूमती थी। लेकिन फिर भी यह कभी न सोचा था कि उसकी मौत से दुनिया यों वीरान हो जायेगी। आंखों में आंसुओं की वर्षा लिये हम घर लौटे। सारा घर सुनसान दिखाई देता था। कभी यहां अम्मा की मीठी आवाज़ गूंजा करती थी।

मेरे छोटे भाई ने अंदर दाखिल होते ही पूछा—"अब्बा कहां हैं?"

"काम पर गये हुए हैं।"

छोटे बहन-भाई रोनी सूरतें बनाये कोनों में दुबके बैठे थे। मैं भी चारपाई पर खामोशी से बैठ गया। अगले दिन मेरे बाप ने हमें रिश्तेदारों में बांट दिया।

× × ×

मेरे हिस्से में चाची रोजालिंड आयी। जब मैं अपनी छोटी-सी गठरी उठाये उसके यहां पहुंचा, तो वह रसोईघर में खाना पका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रही थी। मुझे देखते ही उसने नाक सिकोड़ी—"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"राबी।"

"क्या कहा ? भला 'राबी' भी कोई नाम है ! बेवकूफ छोकरे, पूरा नाम बताओ। मैं तुम्हारी मां नहीं हूं कि तुम्हें प्यार के नाम से बुलाती फिरूं, समझे ? हां तो बताओ, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"जी, राबर्ट अलर्टन !"

"तो सुन लो राबर्ट, मैंने कोई तुम्हारा ठेका नहीं लिया कि पास रखूं और खाना भी खिलाऊं। न बाबा, दो-दो काम मुझसे नहीं होंगे। अगर खाना चाहते हो, तो रहने का बंदोबस्त और कहीं करो; और अगर रहने का बंदोबस्त नहीं कर सकते, तो खाने का इंतजाम कर लो।"

मैं खामोश रहा। कुछ देर वह सोचती रही, फिर बोलीं—"एक सूरत समझ में आती है। तुम नौकरी कर लो, खुद भी ऐश करना और अपनी बूढ़ी चाची को भी आराम पहुंचाना।"

अगले रोज उसने किताबों की एक दुकान पर मुझे नौकर रखवा दिया।

मुझे हर हफ्ते बाईस शिलिंग मिलते थे, जिसमें से बीस शिलिंग चाची वसूल कर लेती। दिन-भर मैं भूखा-प्यासा दुकान पर काम करता। एक रोज मालिक ने मुझसे भूखा रहने की वजह पूछी। मेरे सारा हाल बताने पर उसने तनख्वाह में पांच शिलिंग की वृद्धि कर दी। मैं बहुत खुश हुआ। लेकिन बुरा हो मेरे एक दोस्त का, जिसने बातों-बातों में चाची के सामने तनख्वाह बढ़ने का जिक्र कर दिया।

शाम को जब मैं घर पहुंचा, तो वह मुंह फुलाये बिस्तर पर पड़ी थी। मुझे देखते ही फूट पड़ी—"राबर्ट के बच्चे, तूने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तेरी तनख्वाह बढ़ा दी गयी है ? यहां मैं सोच-सोचकर पागल हुई जा रही हूं कि मेरा क्या बनेगा ?"

"क्यों क्या हुआ चाची ?" मैंने घबराकर पूछा।

"होना क्या था, जिस दिन से तू आया है, घर का खर्च दुगुना हो गया है। अब यही देख, पहले पानी और बिजली का बिल छः शिलिंग महीना से ज्यादा नहीं आता था, और अब ....."

"अब कितना आता है ?"

"साढ़े सात शिलिंग। खैर कुछ भी हो, मैं बीस शिलिंग में तेरा जहन्नुम-जैसा पेट नहीं भर सकती। अगले हफ्ते जब तनख्वाह मिले, तो सीधे मेरे पास चले आना और पच्चीस शिलिंग मेरे हवाले कर देना। वरना मैं बिस्तर-बोरिया उठाकर बाहर फेंक दूंगी।"

क्रिस्मस से एक रोज पहले चाची किसी से मिलने लंदन चली गयी। अब मैं अकेला था। रसोईघर की एक खिड़की बाहर गली में खुलती थी। मैं उसके करीब कुर्सी डालकर बैठ गया। अचानक सामने से पांचो आता दिखाई दिया।

"हेलो राबी !" वह मुझे देखते ही चिल्लाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हैलो डियर, यहां कैसे आये ?"

"यह मत पूछो प्यारे, बस यों समझ लो, आजकल पांचों घी में और सिर कड़ाही में।"

"वह कैसे ?"

"धंधा कर रहे हैं।" उसने दायीं आंख बंद करते हुए कहा।

"कैसा धंधा ?"

"चलो मेरे साथ, सब पता चल जायेगा।"

"पहले तुम अंदर तो आओ।"

हमने वह रात कट्ठे गुजारी। सुबह सोकर उठे, तो पांचो बोला—"चलो प्यारे, दोनों जने लंदन चलें।"

"क्यों ?"

"अरे, मेरे सब साथी वहीं हैं। कुछ पैसे होंगे तुम्हारे पास ?"

"नहीं।"

"ढूंढ़ो यार, आखिर लंदन पहुंचेंगे कैसे ? और जब तक कोई दाव न चला, खायेंगे-पियेंगे क्या ?"

शैतान

मैं खुद अपनी मौजूदा हालत से संतुष्ट नहीं था। फिर पांचो ने मुझे ऐसे-ऐसे सब्जबाग दिखाये कि मैंने हार मान ली। हमने घर का एक-एक कोना छान मारा; लेकिन एक पेनी न मिली। निराश होकर बैठने लगे, तो मेरा ध्यान अचानक ही टेबल-लैंप की तरफ गया। एक बार मैंने चाची को उसके अंदर पैसे रखते हुए देखा था। हमने आन-की-आन में उसे तोड़ डाला। पेंदे की तह में दस पौंड के नोट पड़े थे।

"वह मारा !" पांचो बोला।

हमने जल्दी से सामान बांधा और लंदन जानेवाली गाड़ी पर सवार हो गये। मालूम नहीं, पांचोने जान-बूझकर टिकिट नहीं खरीदे थे, या उसे याद न रहा था; बहरहाल हम तीसरे-चौथे स्टेशन पर पकड़े गये। पहले तो सिपाहियों ने हमें डरा-धमकाकर पूछने की कोशिश की कि हम कौन हैं और कहां से आये हैं; लेकिन हमारी खामोशी पर वे बेहद खफा हुए। रात हमने हवालात में गुजारी। सुबह दो सिपाही हमें साथ लेकर ओल्डहम की तरफ चल दिये। पुलिस की गाड़ी हमारे घर के सामने जाकर रुकी। चाची अंदर से शोर मचाती हुई निकली और हमें कानों से पकड़कर घसीटती हुई घर के अंदर ले गयी।

पांचो ने चालाकी यह की कि पैसे अपने जूते में छिपा लिये। चाची ने सिपाहियों से मिलकर हम दोनों की तलाशी ली। लेकिन हमारी जेबों से एक पेनी तक न निकली। तंग आकर चाची ने हमें अदालत में पेश करने का हुक्म दे दिया। जब हम दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, उसने मुझे एक थप्पड़ रसीद करते हुए कहा—"शैतान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'टेबिलाइज्ड' और मैफिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलतें है ।।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • ससून बम्बई • ससून
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Alyars MGSP 1838 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बच्चे, अगर किसी तरह कानून के हाथों से बच गया, तो अपनी मनहूस शक्ल लेकर यहां कभी न आना। वरना मार-मारकर भुस्स निकाल दूंगी।"

हमें अदालत के सामने पेश किया गया, तो मैं काफी डरा हुआ था। लोग उचक-उचककर हमारी तरफ देख रहे थे। बूढ़े जज बासिल हेनरी ने ऐनक के शीशों में से मुझे घूरा और फिर नरम लहजे में सवाल शुरू किये। मैं समझता हूं कि जिंदगी-भर मैं इन सज्जन को नहीं भूल सकता। उनका लहजा बड़ा ही आत्मीयतापूर्ण था। हमसे पहले उन्होंने मेरी चाची के लगाये इलजाम सुने, फिर मेरी तरफ देखकर कहा—"बच्चे, अब तुम बताओ क्या बात है?"

मैंने शुरू से आखिर तक अपनी सारी कहानी कह डाली। मैंने चाची की कठोरता और स्वार्थीपन की शिकायत की, अपने सारा-सारा दिन भूखे रहने का उल्लेख किया और अंत में क्रिस्मस की घटना का जिक्र करते हुए साफ शब्दों में कह दिया कि मैं दुबारा इस मनहूस बुढ़िया की शक्ल देखने को तैयार नहीं। मैंने स्वीकार किया कि मैंने अपराध किया है; लेकिन यह भी कह दिया कि मुझे अपने किये पर बिलकुल पछतावा नहीं है।

कुछ देर अदालत में खामोशी रही, फिर मिस्टर बासिल ने अपनी रौबदार आवाज में चाची को मेरी तमाम गलतियों का जिम्मेदार करार दिया। उन्होंने कहा कि चाची मुझे अपराध के रास्ते पर ढकेल रही है; इसलिए दुबारा मुझे उसके हवाले करना घोर अन्याय होगा।

"मैं भी इस शैतान को अपने साथ नहीं ले जाना चाहती।" मेरी चाची ने चिल्लाते हुए कहा।

"आप खामोश रहिये और कृपया बाहर तशरीफ ले जाइये। अब यहां आपकी कोई जरूरत नहीं।"

"और इस शैतान का क्या होगा?"

"इसे हम सुधार-गृह भिजवा देंगे, जहां से यह एक जिम्मेदार नागरिक बनकर बाहर निकलेगा।"

इस तरह मुझे जिला-बोर्ड के सुधार-गृह में भेज दिया गया। मैं जज बासिल का आज भी कृतज्ञ हूं। उन्होंने अपनी समझ से बिलकुल सही फैसला किया था। मगर उन बेचारों को क्या मालूम कि यहां आंवे-का-आंवा बिगड़ा हुआ है।

× × ×

सुधार-गृह में हम तीस के करीब बच्चे रहते थे। उनमें से कुछ आश्रयहीन अनाथ थे; शेष विभिन्न अपराधों में पकड़े गये लड़के थे, जिनकी उम्र पंद्रह साल से कम थी। इसका मैनेजर एक रिटायर्ड फौजी था, जो दिन-भर अपने कमरे में चैन की नींद सोता और रात को शहर के जुआ-खानों के चक्कर लगाया करता। दो मोटे-ताजे लड़कों को उसने मानीटर बना रखा था, जो खूब मनमानी किया करते थे। उन्हें और मैनेजर को लेकर तरह-तरह की बातें मशहूर थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/GM/K-10J HIN

वाह... कोलिनॉस

Kolynos

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, जायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

पांचवी स्त्री के लिए एक मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिए और मुस्कराइए। रोज़ रात को कोलिनॉस डेन्टल क्रीम से दांत ब्रश करना चाहिए...और रोज़ सुबह तो ऐसा करना ज़रूरी है।
सहेलियों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा...
अधिक आनन्द आएगा।

मधुर मुस्कान... कोलिनॉस मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी: जॅफ्री मॅनर्स ॲन्ड कम्पनी लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन सुबह मैं नाश्ते की मेज पर बैठा ही था कि उनमें से एक लड़का एक डंडा पकड़े मेरी तरफ आया और आदेश के स्वर में बोला—"बच्चो, आज रात तुम पहरा दोगे।"

"क्यों? आज तो जोसेफ की बारी है।" मेरे एक नये-नये दोस्त ने कहा।

"बकवास मत करो।"

"मैं नहीं देता पहरा-वहरा। जाओ, जो जी में आये, कर लो।"

मैं गुस्से से पागल होते हुए बोला। उसने मेरे सिर पर एक डंडा रसीद किया। मैंने उसे धक्का देकर जमीन पर दे मारा और एक ईंट उठाकर उसके सिर पर दो-तीन बार चोट की। करने को मैं यह सब कुछ कर गुजरा; लेकिन आगे क्या होगा, इस भय से कांप उठा।

ऐन उसी वक्त पांचो अंदर आया। उसे बच्चों की जेल में भेजा गया था; क्योंकि वह पहले भी एक बार पकड़ा जा चुका था।

"तुम यहां कैसे आ गये?" मैंने हैरान होकर पूछा।

"जेल से भागकर। बड़ी मनहूस जगह है। कहो, सुधार-गृह पसंद आया?"

"ऊं हूं, बकवास है।"

"तो चलो भाग चलें।"

"लेकिन भागें कैसे?"

"मेरे साथ आओ! जैसे मैं अंदर आया था, वैसे ही बाहर निकल चलेंगे।"

हम सुधार-गृह की मोरी में घुस गये और पेट के बल रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। चारों तरफ घुप अंधेरा था। थोड़ी दूर चलकर सतह ऊंची हो गयी। अब हम खड़े हो सकते थे। मैं डर गया था; लेकिन पांचो ने मुझे तसल्ली दी।

घुटनों-घुटनों तक गंदे पानी में से गुजरते हुए हम एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां सूरज की किरणें हम पर पड़ रही थीं। पांचो ने दोनों हाथ उठाकर जोर लगाया, और बिल्लियों की तरह ऊपर चढ़ने लगा। अगले ही क्षण उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे भी ऊपर खींच लिया।

"क्यों पांचो, वे दस पौंड तो होंगे तुम्हारे पास?"

"नहीं भैया, वे तो कहीं खो गये।" वह मुंह लटकाकर बोला।

मैं जानता था कि वह झूठ बोल रहा है। लेकिन उस पर यकीन कर लेने के सिवा कोई चारा न था। पांचो का घर यहीं था। सो वह तो मजे से घर में रहेगा, और मैं? यह सोचकर मैं घबरा-सा उठा।

"परेशान क्यों होते हो, चलो मैं तुम्हें मकान ले दूंगा।"

"लेकिन मेरे पास किराये का पैसा कहां है पांचो?"

"तुम चलो तो सही, बिलकुल मुफ्त में मकान दिलवा दूंगा।"

वह मुझे एक जले हुए कारखाने में ले गया, जिसमें से अभी तक धुआं उठ रहा था। राख के ढेर पर से गुजरते हुए हम अधजले कमरे तक पहुंचे। पांचो ने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा—"लो देखो, क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

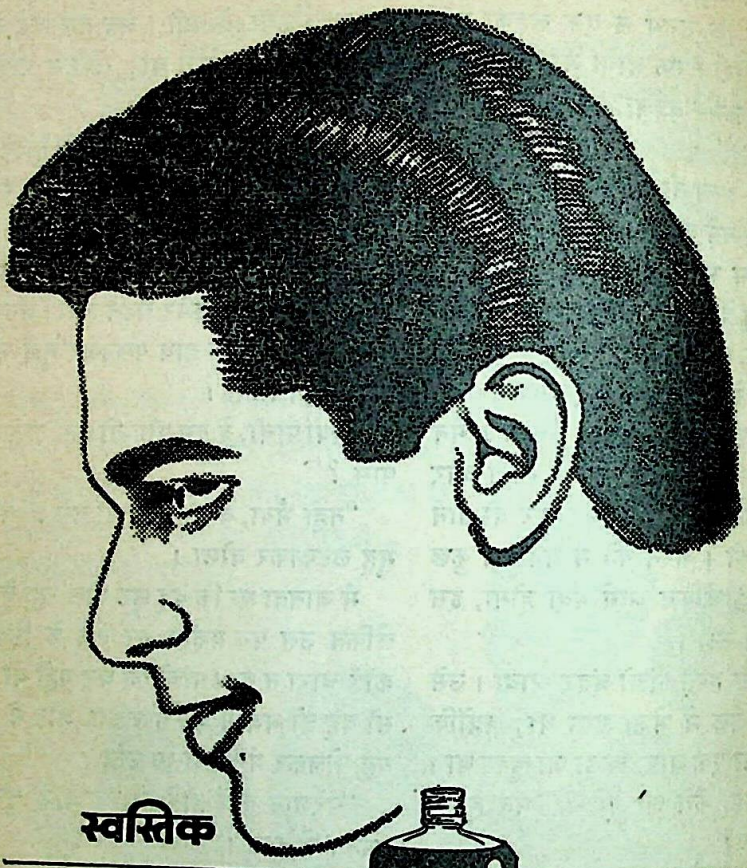

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

बिल्कुल उलझे बालों को भी
व्यवस्थित कर देता है;
उन्हें दिन भर सँवरे रखता है।

स्वच्छ, सुन्दर बाल...
काले, घने बाल...
साफ़, स्वस्थ बाल...
दिन भर सँवरे बाल
यह है स्वस्तिक परफ़्यूम्ड
केस्टर ऑइल का कमाल!

Shilpi SOH 24A Hin

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजे की जगह है! कसम से ऐसा मकान तो बादशाह सलामत को भी नसीब नहीं। मैं तुम्हें खाना पहुंचा दिया करूंगा। जरा दम ले लो। फिर हम पुराना धंधा शुरू करेंगे और मजे उड़ायेंगे।"

× × ×

इस तरह मैं तेरह बरस की उम्र में एक अधजले वीरान मकान में रहने लगा। यहां सर्दी गजब की थी; इसलिए रात के ग्यारह-बारह बजे तक मैं गलियों में आवारा फिरता। जब नींद के मारे आंखें खुद-बखुद बंद होने लगतीं, तो 'घर' पहुंचता और फर्श पर गिरते ही सो जाता। मेरे पास एक पुराना-सा कंबल था, जो मुझे पांचो ने घर से लाकर दिया था। उसे तह करके मैं थैला-सा बना लेता, फिर उसमें सो जाता। कभी-कभी जर्मनों के बम आकर गिरते और मेरी नींद उचट जाती।

एक रात धमाकों से मेरी आंख खुल गयी। बाहर निकलकर देखा, तो चारों तरफ प्रलय मची हुई थी। जर्मन हवाई जहाज लगातार बमबारी कर रहे थे। एक बम मुझसे कोई पांच फुट के फासले पर गिरा। मैंने भय से एक चीख मारी और अंधाधुंध कस्बे की तरफ भागने लगा। पांचो के घर पहुंचा, तो चारों तरफ सन्नाटा था। बमबारी खत्म हो चुकी थी। दरवाजे पर दस्तक दे-देकर थक गया; लेकिन कोई बाहर न निकला। लाचार रात वहीं सड़क पर गुजारी।

सुबह पांचो को साथ लेकर 'घर' लौटा तो वहां मलबे के सिवा कुछ बाकी न रहा था। दिन-भर हम इसी सोच में परेशान रहे कि रहने के लिए ठिकाना कहां मिलेगा? फिरते-फिरते एक वीरान सड़क पर निकल गये। किसी जमाने में यह जगह आबाद रही होगी; क्योंकि जगह-जगह बस-स्टाप बने हुए थे। एक जगह मुसाफिरों के लिए टीन की आरामगाह नजर आयी, तो हम दोनों खुशी से उछल पड़े। यह तय हुआ कि हर रात मुझे इसमें बंद करके पांचो बाहर से ताला लगा दिया करेगा, ताकि गश्ती पुलिस मुझे न पकड़ ले। सुबह वह आकर ताला खोल देगा।

मगर हमें पकड़े जाने का डर हरदम लगा रहता था। इसलिए दिन के वक्त भी हम सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचते थे। पांचो के पास कुछ पैसे थे। हम दोनों ने एक जुआखाने में जाना शुरू कर दिया। कभी दो-एक पौंड जीत लेते, तो कभी आठ-दस शिलिंग हार जाते। अक्सर पांचो कुछ-न-कुछ जीत लेता था; क्योंकि उसे जुआ खेलने का ढंग आता था।

एक रोज वहीं हमारी पांच-छः बदमाशों से लड़ाई हो गयी। उन्होंने हमें खूब मारा। रात को हम देर तक बिस्तर पर पड़े कराहते रहे। सवेरे सबसे पहले हम जले हुए कारखाने की तरफ गये और वहां से लोहे की दो मोटी-मोटी सलाखें लीं और उन्हें अपने कपड़ों में छिपाकर जुआखाने के दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये। ज्यों ही बदमाशों का सरदार बाहर निकला, मैंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगह की बचत
पैसे की बचत

स्टील ट्यब का बना
फोल्डिंग फर्नीचर

निर्माता : क्रोमेलाइट (इण्डिया) प्रा० लि०
पी–३५, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

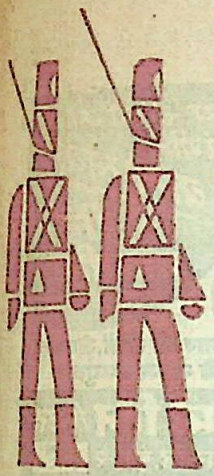

पहरेदार

उसके सिर पर सलाख से चोट लगायी । अभी वह संभलने भी न पाया था कि पांचो ने भी वार किया। वह लहू-लुहान होकर जमीन पर गिर पड़ा । मैंने उसकी नब्ज पर हाथ रखा, तो वह बेजान-सा महसूस हुआ । हमने छलांग लगाकर फाटक पार किया और अंधाधुंध भागने लगे ।

शाम को जब मैं आरामगाह की तरफ जा रहा था, दो मजबूत हाथ मेरे कंधे पर पड़े। मुड़कर देखा, तो सुधार-गृह का मोटा बावर्ची था । मैंने उसकी पकड़ से निकलने की बहुत कोशिश की; लेकिन उसकी ताकत का मुकाबला करना मेरे बस का रोग न था । उसने मेरी कनपटियों पर घूंसा दिया । मुझे अपना सिर घूमता हुआ महसूस हुआ और जब मुझे होश आया, तो मैं हवालात में था । सुबह मुझे दुबारा अदालत में पेश किया गया । जज बासिल ने मेरी तरफ उदास निगाहों से देखा और गंभीर आवाज में पूछा—"तुम सुधार-गृह से क्यों भाग निकले ?"

"मुझे वह जगह पसंद नहीं आयी थी ।"

"तो तुम्हें चाहिये था कि तुम अफसर से शिकायत करते, ताकि तुम्हें किसी दूसरी जगह भेज देते ।"

बात ठीक थी; लेकिन यह सब-कुछ इस तेजी से हुआ था कि मुझे कुछ सोचने का मौका न मिल सका ।

"देखो राबर्ट, तुम पर दो आरोप हैं—पहला यह कि तुम सुधार-गृह से फरार हो ग ं । दूसरा यह कि तुमने वहां एक लड़के का सिर ईंट मारकर फोड़ दिया, जो अब तक अस्पताल में है । तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है ?"

उनका लहजा स्नेहपूर्ण था; लेकिन मेरा खून खौल रहा था ।"भला उस पाजी को ईंट न मारता, तो क्या झुककर सलाम करता ?" मैंने तल्खी से कहा—"भागा मैं इसलिए कि वह जगह पसंद नहीं थी, और उस मोटे को इसलिए मारा कि वह इसी के काबिल था । मुझे और कुछ नहीं कहना ।"

कुछ देर खामोशी रही । फिर मिस्टर बासिल ने मुझे दो महीने की कैद का हुक्म सुनाया । साथ ही उन्होंने वादा किया कि वे निजी तौर पर मेरी देख-भाल करेंगे । मुझे बोरस्टल जेल में रखा गया, जहां मेरे अलावा बाकी सब कैदी जवान थे । यहां उन्हें अलग-अलग पेशे सिखाये जाते । पहले ही दिन एक वार्डर से मेरी झड़प हो ग ी । चंद लोगों ने बीच-बचाव करा दिया; वरना मैं उसे पीट डालता । उसने बदला लेने के लिए मुझे भट्ठी पर डबल रोटी पकाने के लिए नियुक्त करवा दिया ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए !

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहां मिलता है।

B3 DOL. 2A HIN

आपकी प्रिय चीजों को रंगीन कलात्मक मेडिमेड टीन बाक्सीस में पेक कीजिये

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, जेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले- बॉम्बे टिन मिल्स
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२

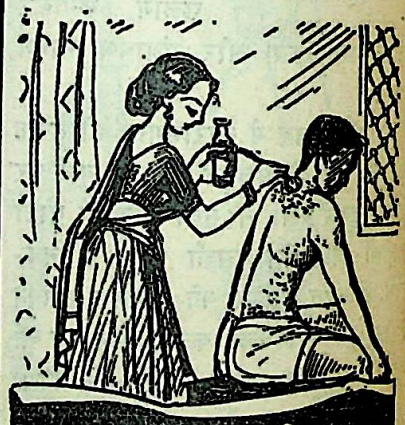

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटन्ट दवा

ओरिएन्टल केमिकल वर्क्स इन्डिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने यह काम पहले कभी नहीं किया था, सो दो ही दिन में मेरा तो बुरा हाल हो गया। मैंने जेल के अफसर से अपील की कि मुझे किसी और काम पर लगाया जाये। लेकिन वार्डर ने मेरी यह अपील मंजूर न होने दीं। एक हफ्ते के अंदर गर्मी से मेरे सारे शरीर पर दाने निकल आये। इतना ही नहीं, वार्डर ने मेरे साथ काम करने-वाले को एक हफ्ते की छुट्टी दे दी। अब मैं सुबह से शाम तक अकेला ही काम करता। तीन दिन तो गुजर गये। चौथे दिन सुबह के वक्त मैं आग जला रहा था कि वार्डर अंदर आया। उसके हाथ में एक जली हुई उबल रोटी थी। "यह रोटी क्यों जल गयी?" उसने अकड़कर पूछा।

"आग तेज थी। मुझे रोटी बनानी भी पड़ती है और पकानी भी। मेरे साथी को तो आपने छुट्टी दे दी है। अकेला आदमी दो-दो काम कैसे कर सकता है?"

"बको मत।" यह कहकर उसने मेरे सिर पर एक धौल जमायी। मैं गुस्से से लाल-पीला हो गया। मेरे हाथ में लोहे का एक कड़छुल था। मैंने उससे वार्डर की खूब मरम्मत की और उसे धक्का देकर जमीन पर गिराते हुए बाहर की तरफ दौड़ा। उस वक्त मेरे सिर पर यही धुन सवार थी कि किसी तरह जेल की चहारदीवारी से बाहर निकल जाऊं।

दीवार के पास एक ऊंचा-सा दरख्त था। मैं बंदरों की तरह उस पर चढ़ गया और पहरेदार मुझे देख सकें, इसके पहले ही शाखाओं से लटककर दूसरी तरफ उतर गया। मुझे अपने पीछे सीटियों की आवाजें सुनाई दीं। मैं पूरी ताकत से बड़ी सड़क की तरफ भागा। अभी मैं सड़क पार नहीं कर पाया था कि तेज रफ्तार से आती हुई ट्रक की चपेट में आ गया। होश आया, तो मैं जेल के अस्पताल में था। मुझे चोटें बहुत कम आयी थीं, तो भी एक माह तक मैं बिस्तर से न उठ सका।

डाक्टर ने मुझे छुट्टी दी, तो पुलिस के दो सिपाहियों की निगरानी में मुझे दुबारा उसी अदालत में ले जाया गया। इस बार मैं मिस्टर वासिल से आंखें मिलाते हुए शरमा रहा था। वे क्या सोचेंगे कि मैं इस कदर बुरा हूं। उन्होंने मुझसे बार-बार पूछा कि मैं क्या चाहता हूं; लेकिन मुझसे कोई जवाब न बन पड़ा। आखिर वे बोले—"तुम जेल में रहना पसंद नहीं करते हो ना?"

मैं खामोश रहा।

"देखो राबर्ट, मैं तुम्हें आखिरी मौका दे रहा हूं। मैं तुम्हारी यही मदद कर सकता हूं कि तुम्हें फौज में भरती करा दूं। लड़ाई की वजह से सरकार ने हमें आज्ञा दी है कि हम विश्वसनीय कैदियों और छोटे-मोटे अपराधियों को अनिवार्य भरती के लिए भेज दें। ऐसे लोगों को मोर्चे पर खासी आजादी होती है। वे अपनी मर्जी से जो चाहें करें; सिर्फ यह पाबंदी है कि वहां से भाग न जायें। मेरा अनुभव है कि तुम एक बहादुर नौजवान हो। अपनी ताकत को मामूली चीजों में बरबाद करने के बजाय,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश के लिए इस्तेमाल करो। आज हमारे देश को बहादुर नौजवानों की सख्त जरूरत है। जाओ, तुम भी उस ऊंचे ध्येय के लिए अपने आपको पेश कर दो।"

× × ×

फौज में मुझ पर क्या बीती, यह एक लंबी दास्तान है। इतना कह देना काफी है कि जो कुछ मैंने लड़ाई में देखा, उसने मुझे और उद्दंड बना दिया। ब्रिटिश सिपाही निहत्थे विदेशी नागरिकों पर खूब जुल्म करते। लूटमार का बाजार गरम रहता। जिसके हाथ जो आता, ले उड़ता। रुपये-पैसे का तो जिक्र ही क्या, औरतों की अस्मत सरे बाजार नीलाम की गयी। जो नागरिक अपनी बहू-बेटियां देने से इन्कार करते, उन्हें गोलियों से भून दिया जाता।

मेरे दिलो-दिमाग पर इन चीजों ने बहुत असर डाला। मैंने सोचा कि अगर हम यही हरकतें ब्रिटेन में करें, तो हमें अपराधी कहा जाता है, सिर्फ इसलिए कि हमने जिसके यहां चोरी की, वह ब्रिटेन का निवासी है। मगर वही काम यहां खुले आम किया जाता है; लेकिन कोई पूछनेवाला नहीं।

हमारे अफसर खूब अच्छी तरह जानते थे कि हम क्या कर रहे हैं; लेकिन खामोश रहते थे। बल्कि कुछ अफसर तो खुद लूट-मार में शामिल होते और सबसे सुंदर लड़कियों को अपने लिए रख लेते।

चार्ल्स डिकन्स

जिनका 'आलिवर ट्विस्ट' गंदी बस्तियों और अनाथालयों की अमर गाथा है।

मैं अपने आपको फरिश्ता नहीं कहता। मैंने भी ये सब काम किये हैं। लेकिन एक रोज दस-ग्यारह साल की एक मासूम जर्मन बच्ची को देखकर मेरी अंतरात्मा जाग उठी। दो सिपाही उसे छावनी के बड़े अफसर की खिदमत में नजराने के तौर पर पेश करने के लिए ले जा रहे थे। बच्ची लगातार चीखें मार रही थी और उनकी पकड़ से छूटने की कोशिश कर रही थी। जाने उसे मेरे चेहरे में क्या नजर आया, जो उसने मेरी तरफ बांहें बढ़ाकर एक ऐसी मर्मभेदी चीख मारी कि मेरा हृदय मोम हो गया।

मैं उसे छुड़ाने के लिए आगे बढ़ा ही था कि पीछे से एक ऊंचे अफसर ने मुझे 'हाल्ट'

सितंबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा। उसे देखते ही वह सहम गयी और दोनों हाथों से अपना चेहरा ढंककर विलखने लगी। दोनों फौजी वापस चले गये, तो मुझे भी भाग जाने का हुक्म मिला। मैं अभी कुछ सोच ही रहा था कि बच्ची भागकर मेरी टांगों से लिपट गयी। वह जर्मन भाषा में कुछ कह रही थी। उसे मैं नहीं समझ सका; फिर भी यह जरूर मालूम होता था कि वह मुझसे मदद की प्रार्थना कर रही है। मैंने उसके चेहरे की तरफ देखा। उसकी आंखों में अनुनय का भाव था। उसका शरीर थरथर कांप रहा था और वह इस तरह मेरी टांगों में दुबकी हुई थी, जैसे बच्चा मां के आंचल में छिपा हो।

मैं इसी उधेड़बुन में था कि एक जोर का दोहत्थड़ मेरी गर्दन पर पड़ा। मुड़कर देखा, तो अफसर साहब जोर आजमाइश कर रहे थे। मैंने उन्हें एक ही दांव में जमीन पर दे मारा और अपनी बंदूक की संगीन से उनका जिस्म छेद डाला। और इससे पहले कि कोई उनकी चीख-पुकार सुने, मैंने बच्ची को पीठ पर लादा और छावनी से भाग निकला। शहर पहुंचकर मैंने उसे उसके घर छोड़ा और ब्रिटेन जानेवाले एक समुद्री जहाज पर सवार हो गया।

मुझे आज तक उस बच्ची के वे शब्द अपने कानों में गूंजते हुए प्रतीत होते हैं, जो उसने अपने घर में दाखिल होते समय मुझसे कहे थे। उसकी जबान मेरी समझ से परे थी; लेकिन उसकी आंखों से छलकती हुई निश्छलता मुझे आज तक याद है। सच है, मुहब्बत के जबान नहीं होती। विदा होते वक्त मैंने उसके आंसू पोंछे। वह आंसू मेरे देश के राक्षसों के हाथों छलके थे, वे मोती दुनिया-भर की दौलत से ज्यादा कीमती थे।

× × ×

मैं लंदन पहुंचा, तो लड़ाई खत्म हो चुकी थी। ब्लैक मार्केट का धंधा जोरों पर था। मैंने दो-तीन साथियों के साथ मिलकर यह कारोबार शुरू कर दिया। लेकिन मुझे यह काम पसंद नहीं आया। अगले महीने मुझे अपनी पसंद के दो-तीन साथी मिल गये। हम सरकारी दफ्तरों के बाहर खड़े रहते। ज्यों ही कोई कर्मचारी तनख्वाह लेकर निकलता, उसके पीछे हो लेते और जहां मौका मिलता, उससे पैसे छीनकर नौ-दो-ग्यारह हो जाते।

मैंने एक मकान ले लिया और मजे से जिंदगी बसर करने लगा। मगर आहिस्ते-आहिस्ते मेरा दिल उस काम से उचाट होता चला गया। यहां तक कि एक रोज मैंने अपने साथियों के साथ धंधे पर जाने से इन्कार कर दिया। मेरे दिमाग में बड़ी-बड़ी योजनाएं परवरिश पा रही थीं। उन्हीं दिनों मुझे अपना पुराना पांचो मिल गया। वह दो साल की कैद काटकर अभी-अभी जेल से निकला था।

उसके साथ मिलकर मैंने रात को चोरी करना शुरू कर दिया।

काम बहुत फायदेमंद था; चंद दिनों में हम बेहद मालदार हो गये। हमने एक कार खरीद ली और पिकैडिली के एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी से छुटकारा पाने के लिए

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

ब्राउन लेबल

लीजिए

हठीली खाँसी से कमज़ोरी आजाती है और शरीर की रोग-निरोधक शक्ति घट जाती है। वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड तीन तरह से असर करता है—आराम पहुँचाता है, शक्ति पैदा करता है और बीमारियों का मुक़ाबला करता है। इसके सक्रिय तत्त्व 'क्रिओसोट' और 'गायकॉल' खाँसी में आराम पहुँचाते हैं, लोहा तथा दूसरे पौष्टिक तत्त्व, जो तथा प्लीहा के सत्त्व मूल बढ़ाते हैं, जिससे शक्ति पैदा करते हैं तथा शरीर की रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं जिससे बीमारी के पलटने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं।

बारहों महीने रोग-निरोधक शक्ति क़ायम रखने के लिए लाल लेबलवाला वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड नियमित रूप से पीजिए।

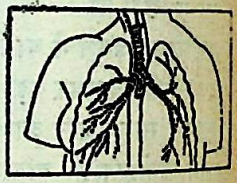

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड में क्रिओसोट और 'गायकॉल' खाँसी को रोगाणुओं से दूर रखते हैं और बलगम निकालते हैं, फेफड़ों को साफ़ रखते हैं, खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम, साँस की तकलीफ़ व दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने में मदद करते हैं और रोगाणुओं को वृद्धि फैलने से रोकते हैं।

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

खाँसी, सर्दी-ज़ुकाम,
साँस की तकलीफ़ और
दमा-जैसी स्थिति का मुक़ाबला करने की शक्ति देता है

वॉर्नर-हिन्दुस्तान लिमिटेड, बम्बई

JWT./WH/2394 (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूबसूरत फ्लैट में रहने लगे। मगर एक रात मैं पकड़ा गया। मुकद्दमा चला और चार साल की सजा मिली। कैद भुगतकर बाहर निकला, तो दरवाजे पर पांचो मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। दो-तीन रोज आराम करने के बाद मैंने फिर धंधा शुरू कर दिया।

इस बार हमने सेफ तोड़ने का प्रोग्राम बनाया। हम दुकानों के इर्द-गिर्द मंडराते रहते। जब सड़क जरा खाली होती, वेल्डिंग टार्च से दरवाजा खोलकर अंदर घुस जाते। आधे से लेकर पौन घंटे के भीतर हम मजबूत-से-मजबूत सेफ तोड़ने में कामयाब हो जाते। काम बड़ा ही फायदेमंद साबित हुआ। हमारे पास बेहद रुपया आता था। लेकिन हराम की कमाई में बरकत नहीं होती। हम खूब शराब पीते, जुआ खेलते, वेश्या-गृहों के चक्कर लगाते। मैं दूसरी बार पकड़ा गया और छः साल की सजा झेली।

इस बार जेल में एक अत्यंत दयालु शिक्षक से मेरा संपर्क हुआ। वह हमें पढ़ाने के लिए हर रोज पैदल आया करता। एक रोज यह जानकर मैं हैरान हो गया कि वह जेल से इसके लिए कोई वेतन नहीं लेता। उसकी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। उसने मुझे कभी बुरा-भला नहीं कहा और न ही कभी मुझे चोरी-चकारी छोड़ने का उपदेश किया। उसके आचार-व्यवहार से मैं इतना प्रभावित हुआ कि उसके जैसा बनने की प्रार्थना करने लगा।

छः साल की मुद्दत पूरी होने पर मैं बाहर निकला, तो जी में आया कि हमेशा के लिए चोरी छोड़ दूं। लेकिन करूंगा क्या? दो-एक जगह नौकरी की कोशिश की; मगर निराश होना पड़ा। पुराने कैदियों की हित-साधना का दावा करनेवाली कई संस्थाओं के द्वार खटखटाये; लेकिन वहां से सिवा झिड़कियों के और कुछ न मिला। आखिर दुबारा लूट-मार में लग गया। पकड़ा गया और दो साल की सजा पायी। आजाद हुआ तो फिर पुराना धंधा करने लगा। चौथी बार पकड़ा गया और पांच साल की कैद झेल रहा हूं।

शायद आप हैरान हों कि मैंने अपने अपराधों का वर्णन इतने विस्तार से क्यों किया? इसका जवाब मेरे पास सिर्फ एक है; वह यह कि मेरी दृष्टि में मुझे अपराधी बनानेवाली घटनाओं का वर्णन लूट-मार के किस्सों से ज्यादा जरूरी है।

× × ×

अब मैं बारी-बारी से उन लोगों का वर्णन करूंगा, जिनका मुझ पर प्रभाव पड़ा, जिन्होंने मुझे सुधारने की कोशिश की, जो मुझे सुधार सकते थे।

मां:

जब तक मेरी अम्मा जिंदा रही, मैं अच्छा बनने की कोशिशें करता रहा। दुनिया में वही एकमात्र हस्ती थी, जो मुझसे मुहब्बत करती थी। मेरी शरारतों से उसका दिल दुखता था; सो जहां तक मुझसे हो सकता था, मैं बुराई से बचता—इसलिए नहीं कि मैं बुराई को बुरा समझता था; बल्कि इसलिए कि उससे अम्मा को तकलीफ होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह प्यार सब पापों से बचाता है

चित्रकार : रूआ

थी और मैं उसके आंसू बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

यह सच है कि मैंने अम्मा के जीवनकाल में भी चोरियां कीं; लेकिन मैं लाचार था, वातावरण का प्रभाव मुझ पर अम्मा से ज्यादा हावी था। अम्मा बहुत व्यस्त रहती थी। दिन में एक-आध बार मुझसे बात करती। अगर बच्चे इतने अधिक, मकान इतना तंग और आर्थिक स्थिति इतनी खराब न होती, तो वह जरूर मुझ पर ध्यान देती। और सिर्फ उसका ध्यान मुझे सन्मार्ग दिखा सकता था। मैंने कभी उसका प्यार नहीं देखा। उसे इतनी फुरसत ही न मिलती थी कि वह मुझे प्यार कर सके। उसे तो हर वक्त यही फिक्र लगी रहती थी कि शाम को खाना कैसे पकेगा। इन सब बातों के बावजूद अगर वह जिंदा रहती, तो मैं इतना ज्यादा न बिगड़ता।

बाप :

जैसा कि मैं पहले निवेदन कर चुका हूं, मेरे बाप को मुझसे रत्ती बराबर भी मुहब्बत नहीं थी। मालूम नहीं कि किन मजबूरियों में घर चला रहा था! अम्मा का स्वर्गवास होते ही उसने हमें भेड़-बकरियों की तरह रिश्तेदारों में बांट दिया और फिर कभी भूलकर भी हमारी कुशल-क्षेम नहीं पूछी। अगर वह अपना कर्तव्य पहचानता, तो शायद हम सब शरीफ आदमियों की तरह जिंदगी गुजारने के योग्य हो जाते। दुनिया में बहुत-से लोग गरीबी के बावजूद अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में दिलचस्पी लेते हैं और उन्हें अपराध के रास्ते पर चलने से सुरक्षित रखते हैं।

वातावरण :

मैं शुरू में अपने चारों ओर के वातावरण का विस्तार से उल्लेख कर चुका हूं। फिर भी दो-एक बातें संक्षेप में और निवेदन करना चाहता हूं। गलियों में खेलनेवाले बच्चे कभी सफल नागरिक नहीं बन सकते। उनके कानों में हरदम गालियां पड़ती हैं और उनकी आंखों के सामने हमेशा बाजारू और आवारा लोग रहते हैं।

शायद आप समझते हैं कि आपका बच्चा तो गलियों में खेलने के बावजूद शिष्ट और सुशील है। आज ही उसकी परीक्षा कर लीजिये। उसे गली में खेलने के लिए कुछ दीजिये और आप छिपकर उसकी बातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनिये। आपको बहुत-सी ऐसी बातें मालूम होंगी, जो आप खुद ही नहीं जानते।

मुझे जिन लोगों की सोहबत मिली, सबके सब क्षुद्र और नीच थे। अगर वे अपराधी नहीं थे, तो सिर्फ इसलिए कि उनमें अपराध करने की हिम्मत नहीं थी। मेरे दोस्तों में से अक्सर चोर थे। जो खुद चोरी करने की हिम्मत न रखते, वे दूसरों के सामने बढ़िया योजनाएं मुफ्त पेश करते और चोरी के माल में हिस्सेदार बन बैठते।

मास्टरनी :

स्कूल में एक मास्टरनी के अलावा बाकी सबने मुझसे जो सलूक किया, उसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूं। उन मास्टरनी का नाम अब मुझे याद नहीं रहा। हां, सूरत अब तक आंखों के सामने है। वे अधेड़ उम्र की एक दयालु महिला थीं। हर एक से बड़ी नरमी से पेश आतीं। मैं जब उनकी कक्षा में पहुंचा, तो स्कूल-भर में बदनाम हो चुका था। यह वह जमाना था, जब मैं जान-बूझकर ऐसी हरकतें किया करता था कि सजा पा सकूं। मैंने उन पर फब्तियां कसीं, उनकी आज्ञाओं का उल्लंघन किया, जान-बूझकर फलों के छिलके उन पर फेंके। लेकिन उन्होंने मुझे कभी नहीं मारा। मैं तंग आ गया। आखिर वे सब कुछ कैसे बर्दाश्त कर लेती हैं? मैंने एक रोज क्लास में सब लड़कों के सामने उन्हें गालियां दीं। मुझे विश्वास था कि अब वे जरूर सजा देंगी। लेकिन यह देखकर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, वे चुपचाप बैठी सुनती रहीं। पीरियड खत्म होने पर सब बच्चे चले गये, तो वे अपनी जगह से उठकर मेरे पास आयीं और मुझसे धीरे-धीरे बातें करने लगीं। आखिर उन्होंने मुझसे सब कुछ उगलवा लिया कि मैं जान-बूझकर ये हरकतें करता हूं। उनकी आंखों में आंसू आ गये और मेरे बालों में हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा :

"लेकिन बेटे, इससे किसी का क्या जायेगा? बरबाद तुम खुद होगे। यह ठीक है कि लोग तुमसे नफरत करते हैं। लेकिन ऐसे लोग भी तो दुनिया में हैं, जिन्हें सब प्यार की नजरों से देखते हैं। तुम कोई गिरी-पड़ी चीज तो हो नहीं, जो तुम्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाये। दूसरे बच्चों की तरह तुम भी सबकी नजरों में अच्छे हो सकते हो। पहले तो तुम यह सोचना छोड़ दो कि लोग तुमसे नफरत करते हैं। मेरी तरफ देखो। तुमने मुझे कितना सताया है; लेकिन मेरे दिल में तुम्हारे लिए नफरत का भाव जरा भी नहीं है। तुम जो सिर्फ इसलिए दूसरों को तंग करते हो कि वे तुमसे प्यार नहीं करते, वह भी ठीक नहीं। तुम दूसरों से मुहब्बत करना सीखो, लोग खुद-बखुद तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे।"

उन्होंने मुझे और बहुत-सी नसीहतें दीं। उनका बोलने का ढंग इतना मीठा था कि मैंने उनकी बातों पर अमल करने का पक्का इरादा कर लिया। अगले दिन मैंने लोगों से मुहब्बत करना शुरू कर दिया। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। मेरे चारों ओर नफरत की जो दीवारें लोगों ने खड़ी कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

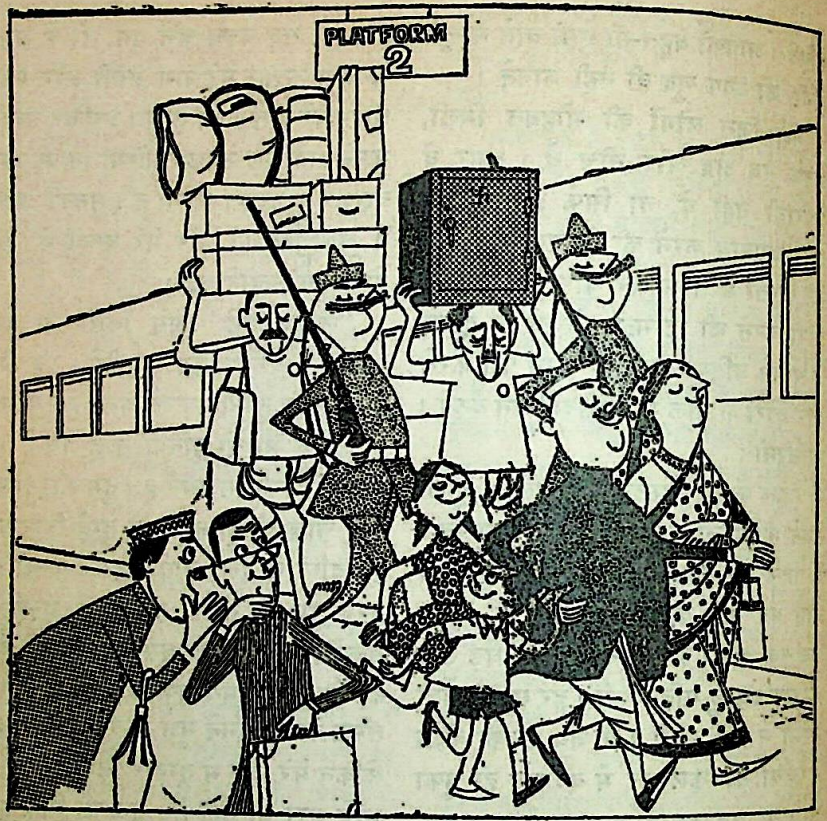

"कोई इन्हें स्टेट बैंक के ट्रैवलर्स चेक के बारे में सलाह दे!"

सशस्त्र रक्षकों पर काफी रुपया खर्च होता है। जितना आप रुपया चाहें उतना आप ट्रवलर्स चेक की शक्ल में ले जा सकते हैं। ये अत्यन्त सुरक्षित एवं काफी सुविधाजनक होते हैं। स्टेट बैंक आफ इन्डिया के रुपयों का अपना ट्रैवेलर्स चेक है जो ५० रुपयेऔर १०० रुपये की शक्ल में होता है। इनका भुगतान आप स्टेट बैंक आफ इन्डिया और उसके सहायक संस्थानों के १८०० से भी ज्यादा दफ्तरों के किसी एक दफ्तर में कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त हवाई अड्डों पर भुगतान करनेवाले एजेन्टों, होटलों और दूकानों पर भी भारत या विदेशों में इनका भुगतान किया जा सकता है। ये कहीं भी किसी समय लाभदायक होते हैं तथा बैंक के समय के बाद भी भुगतान किया जाता है। कोई तकलीफ़देह औपचारिकता नहीं-कोई खतरा नहीं। अगर ये खो जायं तो इनके बदले दूसरा चेक आसानी से मिल जाता है।

आप खतरा मोल नहीं लीजिए। स्टेट बैंक का ट्रैवलर्स चेक लीजिये

बेहतरीन सेवाके लिए स्टेट बैंक

LPE-Alyars S 41 HC

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी थीं, उन्हें गिराना मेरे बस का रोग न था।

मैंने मास्टरनी से शिकायत की, तो उन्होंने मेरी हिम्मत बढ़ायी और स्वयं भी कक्षा में मेरी खूब प्रशंसा की। अपने व्यवहार से उन्होंने लोगों के सामने यह सिद्ध करना चाहा कि मैं विश्वास करने योग्य हूं। लेकिन जिनकी जेबें मैं साफ कर चुका था, वे इस पर कैसे ईमान लाते ? शायद हम दोनों मिलकर इस प्रश्न का कोई हल निकाल लेते। लेकिन मेरी बदकिस्मती से उनकी तब्दीली हो गयी, और वे किसी दूसरी जगह चली गयीं। मैं उन्हें गाड़ी पर सवार कराने गया, तो उन्होंने मुझे आखिरी उपदेश दिये, जिन पर मैं एक हफ्ते से ज्यादा अमल न कर सका।

मिस्टर बासिल :

मिस्टर बासिल के संबंध में कुछ कहने से पहले मैं स्पष्ट कर देना जरूरी समझता हूं कि मैं कानून का सख्त विरोधी हूं, जैसाकि हर एक अपराधी होता है। लेकिन मिस्टर बासिल का उन्नत व्यक्तित्व मुझे मजबूर करता है कि मैं उन्हें अच्छे शब्दों में याद करूं। (हम अपराधी पुलिस और न्यायाधीशों को हमेशा बुरे शब्दों में याद किया करते हैं।) उन्होंने जो कुछ मेरे लिए किया, एकदम ठीक था। इसमें उनका कुछ भी कसूर नहीं था कि उन्होंने मुझे जहां भेजा, वे जगहें खराबी का शिकार थीं। जो भी हो, मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूं और यह समझता हूं कि मेरे अलावा उन्होंने असंख्य अपराधियों को सफल नागरिक बनाने की पूरी कोशिश की होगी; और कौन जाने कि उनमें से कई सुधर भी गये हों।

परोपकारी संस्थाएं :

जेल से छूटे कैदियों के लिए परोपकारी संस्थाएं जगह-जगह मौजूद हैं। मैं सिर्फ एक उदाहरण दूंगा। एक बार मुझमें सभ्य नागरिक की तरह जीने की इच्छा पैदा हुई और मैं जेल से निकलते ही सीधा एक संस्था के दफ्तर में गया, फार्म भर करके दिया और नौकरी करने की इच्छा प्रकट की।

"एक हफ्ते बाद आना।" मुझसे कहा गया। एक हफ्ते बाद पहुंचा, तो हुक्म मिला कि पंद्रह दिन बाद पता करना। तीसरी बार पहुंचा, तो क्लर्क लाल-पीला होकर कहने लगा—"भाग जाओ यहां से। चोर-उचक्के कहीं के ! तुम्हारे बाबा के नौकर हैं, जो तुम्हारे लिए काम का बंदोबस्त करते फिरें। साले पहले चोरियां करते हैं, फिर मुंह उठाकर यहां चले आते हैं।"

दुबारा जिंदगी में न तो कभी किसी संस्था के दफ्तर गया और न ही यह पेशा छोड़ने का विचार मन में आया। कौन टके-टके के क्लर्कों से बेइज्जती करवाता फिरे !

× × ×

मेरी कहानी खत्म हो चुकी। मैं जानता हूं कि वह भी समय आनेवाला है, जब मेरे शरीर में ताकत नहीं रहेगी कि मैं डाके डाल सकूं। लेकिन इसके सिवा चारा भी क्या है ? जेल से बाहर निकलूं, तो फिर वही काम करूंगा—उस वक्त तक, जब तक समाज मुझे अपना लेने के लिए तैयार नहीं होता।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े की मस्त चाल जैसा मस्त

अरविंद

इन बढ़िया कपड़ों की शान बढ़ती ही जा रही है

विभिन्न किस्मों में है

सन्फोराइज्ड पॉपलिन:
कमीज के कपड़े: धारीदार, डॉबी, चेक, पायजामा
धोतियां मर्सराइज्ड, लान: ५५३१
सूट का कपड़ा: गैबरडीन
छपे कपड़े: छपे लॉन वायल, पॉपलिन।
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल वायल
लेनो में और बूटीदार

SANFORIZED

टेबिलाइज्ड और टेबिलाइज्ड
बोहरी जांच

रजिस्टर्ड यूजर

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

अब हमारे रिटेल दुकानों में प्राप्त:— प्रीमियर फर्निशिंग एंड डेकोरेटिंग प्रा० लि०
७, ब्रेबोर्न स्टेडियम, वीर नरीमन रोड, बंबई—१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्ता विलास

* प्रेसिडेंट की ग्रंथियं
* आक्सिजन मंगानी होगी
* उर्वशी का स्वर्गारोहण
* शार्क की खुराक इंसान
* जापान बाजी ले गया
* बौना बनने के लिए
* मनुष्य की प्रयोगशाला में पशु

अमरीका के प्रेसिडेंट जान्सन के बारह विश्वस्त व्यक्तियों में से सर्वाधिक विश्वासपात्र जैक वेलेंटी ने कुछ दिन पहले प्रेसिडेंट की प्रशस्ति में कहा था—"जान्सन के शरीर में कुछ अतिरिक्त ग्रंथियां हैं, जो उन्हें असाधारण काम करने की क्षमता देती हैं। वे प्रतिदिन देर से सोते और बहुत जल्दी जागते हैं। फिर भी उन्हें कभी यह कहते नहीं सुना गया कि वे थक गये हैं। उनके मस्तिष्क में ऐसी अलार्म घड़ी है, जो जब भी वियतनाम में हवाई हमला होता है, उन्हें सुबह ४ बजे ही जगा देती है। कौन कह सकता है कि भारत के प्रधान मंत्री – स्वर्गवासी या भूमिवासी—में अतिरिक्त ग्रंथियां नहीं हैं।

× × ×

वियतनाम ने जान्सन की परेशानी बहुत बढ़ा दी है। दक्षिणी वियतनाम में अमरीका के ७२ हजार सैनिक पहुंच चुके हैं; मगर अभी तक वे वियतकांग के छापामारों को काबू में नहीं ला सके। इन्हें काबू में लाने के लिए कितने अमरीकी सैनिकों की आवश्यकता होगी ?—यह प्रश्न जब एक जापानी संवाददाता ने छापामारों के नेता फाट से अभी हाल में पूछा था, तो फाट ने उत्तर दिया—"अगर अमरीका हमसे बराबर संख्या के आधार पर लड़ना चाहता है, तो उसे ४० लाख सैनिक वियतनाम में भेजने होंगे।"

अतिरिक्त ग्रंथियोंवाले प्रेसिडेंट जान्सन

आज भी अमरीकी सैनिकों के कारण दक्षिण वियतनाम के नागरिकों का जीवन-व्यय चार गुना अधिक हो गया है। प्रत्येक वस्तु का मूल्य चार गुना बढ़ गया है। विदेशों को चावल भेजनेवाला यह देश आज ५० हजार टन चावल अमरीका से मंगा रहा है। जब ४० लाख सैनिक वहां पहुंचेंगे, तो सांस लेने के लिए शायद आक्सिजन गैस भी अमरीका से मंगानी होगी।

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उर्वशी एक पुरूरवा अनेक

सामान्य मनुष्यों को किसी का सच्चा प्रेम न मिले, तो नितांत एकाकी जीना दूभर हो जाता है। इसका एक प्रमाण मेरिलिन मनरो की आत्महत्या थी। अब दूसरा प्रमाण फ्रांस की ३५ वर्षीया सुंदरी नीना डायर की आत्महत्या ने दिया है। कुछ दिन उसके सौंदर्य का भोग वर्तमान आगा खां के चाचा करोड़पति सदरुद्दीन ने किया और कुछ दिन वह यूरोप के करोड़पति व्यापारी बैरन वानथिसेन की शैया-शायिनी रही। दोनों से तलाक मिलने के बाद, उसने अपना अकेलापन दूर करने के लिए दो काले चीते, ग्यारह कुत्ते, तीन तोते और कितने ही पशु पाले। किंतु पालतू पशुओं का प्रेम मनुष्य के प्रेम का स्थान तो नहीं ले सकता! आखिर लाखों पौंड की मालकिन नीना डायर ने एकाकीपन से तंग आकर आत्महत्या कर ली। धन और सौंदर्य से प्रेम खरीदा जा सकता, तो नीना जरूर खरीद लेती। कठिनाई यह है कि प्रेम केवल प्रेम से खरीदा जाता है; प्रेम लेने से पहले प्रेम देना पड़ता है। और अधिकांश धनी या सुंदर व्यक्ति केवल लेना जानते हैं, देना नहीं।

× × ×

अरब-संसार की अनेक विचित्रताएं हैं। उनमें से एक यह भी है कि अभी तक बहरीन के शेख ने अपनी रक्षा के लिए ८०० ब्रिटिश सैनिकों का पहरा रखा हुआ है और इस गोरी सेना के बल पर वह अपनी १ लाख ८२ हजार की आबादी के राज्य पर मनमाना शासन करता है। पिछले दिनों जब तेल-कूपों के मजदूरों ने नासिर के उकसाने से प्रेरित नौजवान व विद्यार्थियों की सहायता से हड़ताल की थी, तो इन सैनिकों ने उसे कुछ घंटों में कुचल दिया था। उस समय सैकड़ों हड़ताली बंदी बना लिये गये थे। उनमें से एक ने कैद से भागकर बगदाद रेडियो से जो बयान दिया है, उसमें कहा है—"बहरीन के जेलखानों में हजारों हथकड़ियां-बंधे कैदी सड़-गल रहे हैं, जो ज्यादा कमजोर होने पर 'शार्क' की खुराक बना दिये जाते हैं।" अरब देशों की राजनीति ब्रह्मा भी नहीं समझ सकता।

× × ×

अमरीका के करोड़पतियों ने आयकर से बचने का यह उपाय निकाला है कि वे दूसरे देश में जाकर अमरीकी नागरिकता का त्याग कर देते हैं। अभी हाल में हालीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता युल ब्राइनर ने स्विट्जरलैंड जाकर अमरीका की नागरिकता से मुक्ति पाने के साथ, आयकर से भी मुक्ति पा ली। इससे पूर्व चार्ली चैपलिन तथा कितने ही अमरीकी करोड़पति आयकर की चपेट से बचने को देशांतर वासी हो चुके हैं। भारतीय करोड़पतियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को देशांतर-गमन की आवश्यकता नहीं होती; वे केवल अपना धन दूसरे देशों में भेज देते हैं और स्वयं इस तपोभूमि में रहते हुए भगवती लक्ष्मी का वरदान प्राप्त करते रहते हैं। वे अन्य देशों के लक्षाधिपतियों की तरह कायर नहीं, जो मैदान छोड़ दें।

× × ×

अफ्रीका में जापान के उद्योगपति सबसे बाजी ले गये। पिछले पांच वर्षों में जापान ने अफ्रीकी देशों के साथ अपना व्यापार दुगुना कर लिया है। उन्होंने घाना को टेलिविजिन सेट, नाइजीरिया को मिल-मशीनें, इथियोपिया को गाल्वनाइज्ड लोहा, केन्या को नाइलान-मिलें बेचने के इकरार किये हैं। मोटरें बनाने में जापान का नंबर दुनिया में चौथा है। इस साल जापान में २० लाख मोटरें बनेंगी। जापान ने अफ्रीका को भी कम कीमतवाली मोटर-गाड़ियां देने का वादा किया है। जापान से व्यापारिक संबंध जोड़ने का एक बड़ा लाभ यह है कि व्यापारी कम्युनिस्ट तथा पूंजीवादी पश्चिमी देशों के बीच चल रही प्रतिस्पर्धा में किसी का पक्ष लेने के आरोप से बच जाता है। सर्वथा तटस्थ रहकर औद्योगिक उन्नति करनेवाले देशों के लिए जापान ने नया मार्ग खोल दिया है।

× × ×

ब्रिटेन में बीटल्स को राजकीय सम्मान मिलने के बाद यह विवाद बहुत उग्र हो गया है कि क्या ऐसे मनचले नौजवान गायक भी, जो तरुण लड़के-लड़कियों की भीड़ में कामुक गाने गाकर पैसा कमाते हैं, राजकीय सम्मान के अधिकारी हो सकते हैं? इंग्लैंड में इस कामोद्दीपक संगीत-शैली का कितना प्रभाव है, यह इस बात से मालूम हो जाता है कि अकेले लिवरपूल शहर में बीटल्स की १५ सौ गायक मंडलियां हैं। इनमें ६ हजार से अधिक लड़के-लड़कियां भाग लेती हैं।

एक बीटल

बीटल्स की अपनी ही संस्कृति बन गयी है। इनके केशविन्यास, वेश तथा उठने-बैठने का ढंग निराला है। इनका एक साप्ताहिक पत्र निकलता है, जिसकी बिक्री प्रति सप्ताह ४० हजार है।

इंडोनेशिया सरकार ने बीटल्स पद्धति के गाने पर कानूनी पाबंदी लगायी है। मगर भारतीय फिल्मों ने इस पद्धति को खूब अपनाया है। शायद एशिया में भारतीय जनता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबसे ज्यादा प्रगतिशील है।

× × ×

हजारों लोग लंबे होने के लिए औषध खाते हैं; मगर इंग्लैंड की एक लड़की एन रास्टन की पिच्यूटरी ग्रंथि ने उसके शरीर में इतने ज्यादा हारमोन पैदा कर दिये कि वह लंबी होते-होते ६ फुट ७ इंच तक पहुंच गयी और अपनी सहेलियों में उपहास का पात्र बन गयी। आखिर उसने अपनी टांगें कटवाकर छोटी करवाने का निश्चय किया। इस आपरेशन में जान का खतरा था। मगर रास्टन ने यह खतरा भी उठाया। कुछ लोग सामान्य से असामान्य बनने के लिए जान की बाजी लगाते हैं और कुछ असामान्य से सामान्य बनने के लिए प्राणों का मोह छोड़ते हैं। यही मनुष्य-स्वभाव की विचित्रता है।

× × ×

अमरीका के डा० साद्रुस्क ने खोज की है कि अमरीका में कम-से-कम ८ अरब एंफेटेमीन गोलियां बनती हैं। इनमें से आधी तो विधिवत् औषध के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं; शेष गैरकानूनी तरीके से इस्तेमाल के लिए चोर-बाजार में चली जाती हैं। इसके सौदागर लगभग ५ रुपये में १,००० गोलियां खरीदकर उन्हें १५० रुपये में बेचते हैं। फुटकर बेचनेवाले २५० से ५०० रुपये हजार के हिसाब से दाम वसूल करते हैं। सामान्य मूल्य से १०० गुना अधिक कीमत पर बिकनेवाली ये गोलियां इंसान को कुछ देर नशे की खुमारी देने के काम आती हैं। जो आदमी कभी लंबे अरसे तक चैतन्यपूर्ण रहते हुए अधिक-से-अधिक काम करने के लिए दवाइयां खाते हैं, वही एक दिन मदहोशी में डूबे रहने के लिए दवाइयों का सेवन करते हैं।

× × ×

सैकड़ों वर्ष पुराने स्वर्गवासी कलाकारों की कृतियां दिन-प्रतिदिन महंगी होती जा रही हैं। एक इटालियन कला-इतिहासज्ञ ने अनुमान लगाया है कि यदि आज फ्लारेंस की आर्ट गैलरी के चित्रों की नीलामी की जाये, तो वहां की मुख्य कलाकृतियां निम्न मूल्यों में बिकेंगीं :

बाटिचेली का चित्र 'स्प्रिंग'—
२० करोड़ रुपये;
गियोत्तो का चित्र 'मेडोना'—
१२।। करोड़ रुपये;
द विंची का चित्र 'एनंसियेशन'—
१२।। करोड़ रुपये।

× × ×

भारत और पाकिस्तान की विदेश-नीतियों की तुलना करते हुए एक चीनी पत्र ने लिखा है—"भारत उस औरत की तरह है, जिसका दावा है कि वह अभी तक कुमारी है; लेकिन वास्तव में उसका विवाह पश्चिम से हो चुका है। पाकिस्तान पश्चिम की विधिवत् विवाहिता पत्नी है। पत्नियां दोनों हैं— पाकिस्तान वैध है, भारत अवैध। पाकिस्तान को पत्नी के अधिकार भी प्राप्त हैं, भारत उनसे वंचित है।"

× × ×

इंसान ने चिकित्सा और औषध विषयक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों से निवेदन

'नवनीत' को और अधिक उपादेय बनाने में आपकी सम्मति की हमें आवश्यकता है। कृपया नीचे लिखे फार्म को भरकर आज ही पोस्ट कर दें। टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

सितंबर १९६५ के अंक में मुझे निम्नलिखित चार लेख सबसे अधिक पसंद आये :

१ अंधकार का दीपक

२ .....

३ .....

४ .....

सितंबर १९६५ अंक के निम्नलिखित चार लेख मुझे पसंद नहीं आये :

१ .....

२ .....

३ .....

४ .....

सितंबर १९६५ के अंक में मुझे निम्नलिखित विषयों पर लेखों की कमी लगी :

१ .....

२ .....

३ .....

४ .....

प्रेषक का नाम.....

पता.....

.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पृष्ठ को निकालकर बताये मुताबिक लिफाफे की शक्ल में मोड़ दें

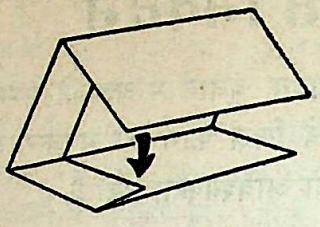

२. यहां मोड़िये

Postage will be paid by Addressee

BUSINESS REPLY ENVELOPE

No Postage Stamp necessary if posted in India

BOMBAY, GRANT ROAD.
P. O. PERMIT No. 2067

NAVANEET PRAKASHAN LIMITED
341, Tardeo,
BOMBAY—34

३. मोड़कर भीतर फंसा दें

इस फार्म को चित्र के अनुसार मोड़कर पोस्ट कर दें
टिकट की आवश्यकता नहीं

१. इस फार्म को चित्र के अनुसार मोड़िये और पोस्ट कर दीजिये—टिकट की आवश्यकता नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोध के लिए पशु-पक्षियों का उपयोग करने और उन पर मनमानी क्रूरता करने में कभी संकोच नहीं किया। ब्रिटेन के जीवदया संघ (कमेटी फार प्रिवेन्शन आफ क्रुअल्टी टु ऐनिमल्स) के दबाव के कारण ब्रिटिश सरकार ने लिटलवुड कमेटी को यह काम सौंपा था कि वह इस उपयोग की मात्रा का पता लगाये।

कमेटी ने जो आंकड़े पेश किये हैं, वे यहां दिये जा रहे हैं। उनसे पता चलता है कि ब्रिटेन में १९६३ में कितने और किन पशु-पक्षियों का उपयोग प्रयोगात्मक अनुसंधानों में किया।

पशु	संख्या
गिनी पिग	३२,४००
छोटे चूहे	२९,१६,०००
खरगोश	६५,०००
बड़े चूहे	५,५८,०००
बिल्लियां	१३,०००
कुत्ते	११,०००
सूअर	१०,०००
बंदर	३,०००
मुर्गियां व चूजे	१,६५,०००
कुल	३७,७३,४००

पर इंसान नहीं जानता कि प्रकृति की विशाल प्रयोगशाला में मनुष्य पर भी प्रयोग चल रहा है।

× × ×

कुछ समय पूर्व न्यूयार्क की वेर्स्टिंग हाउस प्रयोगशाला में एक विचित्र प्रयोग किया गया था। आधा टन वजन के एक ८ फुट लंबे लोहे के शहतीर को जंजीर से बांधकर छत से लटकाया गया और पास ही उसके समानांतर, मामूली बोतल के कार्क का आधा औंस वजन का एक टुकड़ा धागे से बांधकर लटका दिया गया। व्यवस्था यह की गयी कि कार्क का टुकड़ा लगातार लौहखंड से टकराता रहे। कुछ देर तक तो कार्क के प्रहार का कोई भी प्रभाव लोहे पर न पड़ा। किंतु १० मिनिट बाद ही कार्क के टकराने पर लोहे में वैसी कंपकंपी-सी पैदा होने लगी, जैसी सर्दी लगने से शरीर में होती है। दो मिनिट बाद उस कंपकंपी ने थोड़ा उग्र रूप ग्रहण किया और आखिर २५ मिनिट बाद लोहे का वह ८ फुट लंबा आधा टन वजनी शहतीर आधे औंस कार्क की चोट पर घड़ी के पेंडुलम की तरह डोलने लगा। नियमित और निरंतर प्रयास से, चाहे वह कितना ही अल्प हो, बड़े-से-बड़ा कार्य सिद्ध हो सकता है।

✱

एक फर्म के मैनेजर ने तनख्वाहों के रजिस्टर पर यह इबारत लिखी– "तनख्वाह आपका निजी मामला है, किसी से उसका जिक्र मत कीजिये।" एक नये नौकर ने जब पहली बार तनख्वाह ली और रजिस्टर पर हस्ताक्षर किये, तो यह वाक्य पढ़कर उसके नीचे लिख दिया– "निश्चित रहिये, मैं अपनी तनख्वाह का जिक्र किसी से नहीं करूंगा, अपनी मौजूदा तनख्वाह किसी को बताते हुए मुझे भी उतनी ही शर्म आती है, जितनी आपको।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका

एक्सप्रेस डिलीवरी पत्र

तेजी से पहुँचेगा यदि ?

यदि, आप उसे विशेष रूप से बनाए गए गुलाबी लिफाफे में भेजते हैं। यह लिफाफा किसी भी डाकघर से २८ पैसे में मिल सकता है ...

इसका विशिष्ट रंग

शीघ्र

छंटाई

रवानगी

वितरण

में सहायता पहुँचाता

भारतीय डाक-तार विभाग

डीए ६५/१७१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकटकाल के लिये—
अपने पास एक
'एवरेडी' टॉर्च रखिये

एवरेडी बैटरी ७५वाँ वर्ष

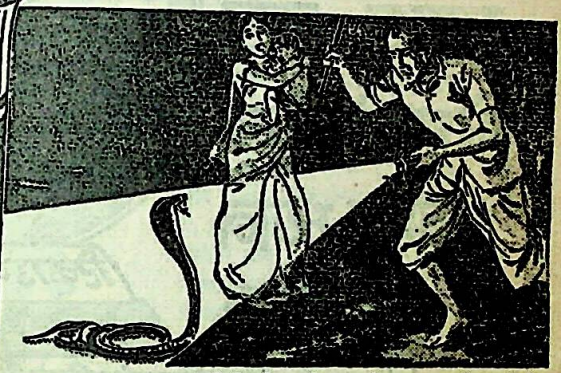

◄एवरेडी
टाइप नं० ४५४१
(नीचे से भरने की जगह)
सिर्फ रु० ३.७५
१५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक।
कर अलग से।

'एवरेडी' डीलर की दुकान के तरह तरह के 'एवरेडी' टॉर्चों में से जो भी 'एवरेडी' टॉर्च क्यों न चुनें, बराबर आप पूरा भरोसा रख सकते हैं कि 'एवरेडी' टॉर्च आपको कभी धोखा नहीं देगा।

★ सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।

★ और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।

★ इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।

★ 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।

★ विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे जगमग रोशनी देती हैं और सब से अधिक टिकती हैं।

★ आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

UNION CARBIDE यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

दर्द को फौरन दूर करता है

स्थानीय दर्द को दूर करने के लिये दवा खाने की क्या जरूरत? दर्द की जगह पर अमृतांजन मलिये—दर्द जाता रहेगा. आप राहत महसूस करेंगे। अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रण वाली १० दवाइयों की एक दवा है—मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द, मोच और जोड़ के लिये बिल्कुल अचूक है. निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन का इस्तेमाल सीने में जमा कफ, सर्दी और जुकाम में भी जल्द से जल्द आराम पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। आप भी अमृतांजन की एक शीशी बराबर ही पास में रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा
—दर्द और जुकाम में अचूक।

मोच का दर्द
जितना भी भयंकर हो
स्थानीय है

अमृतांजन लिमिटेड
मद्रास – बम्बई – कलकत्ता – दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

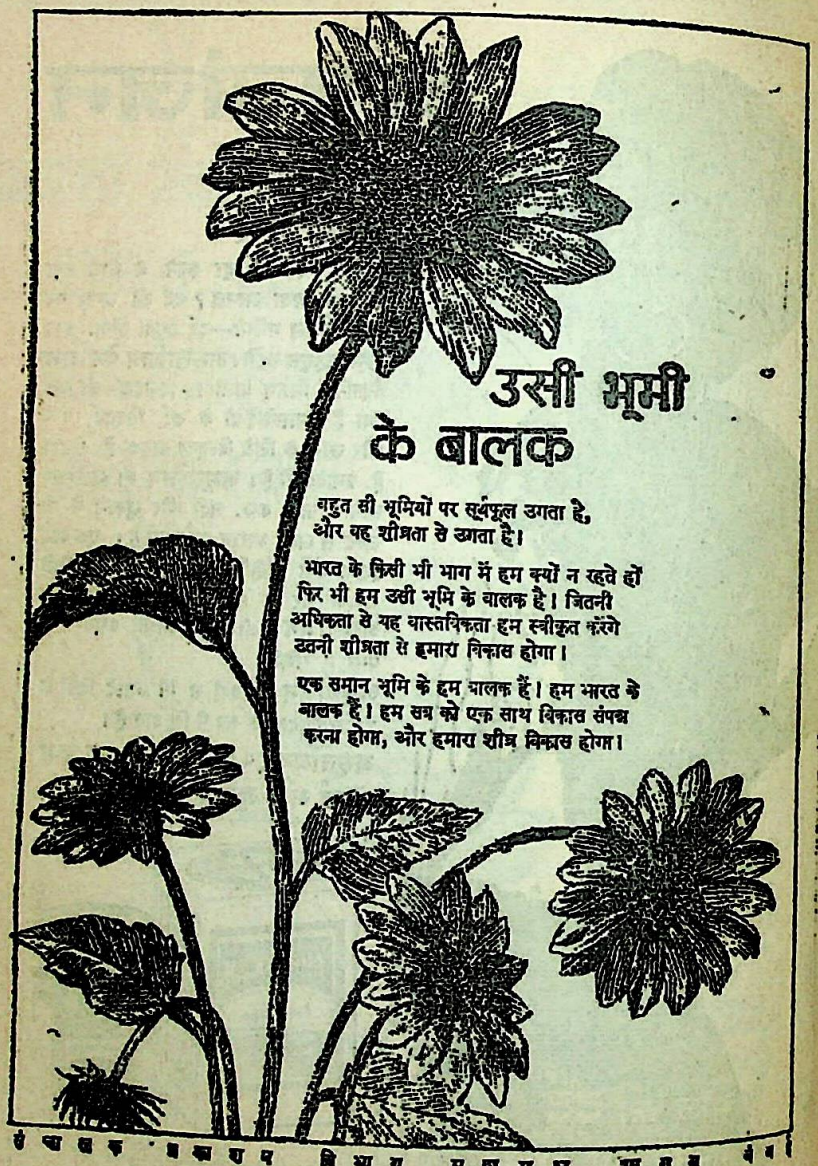

उसी भूमी के बालक

बहुत सी भूमियों पर सूर्यफूल उगता है, और वह शीघ्रता से उगता है।

भारत के किसी भी भाग में हम क्यों न रहते हों फिर भी हम उसी भूमि के बालक है। जितनी अधिकता से यह वास्तविकता हम स्वीकृत करेंगे उतनी शीघ्रता से हमारा विकास होगा।

एक समान भूमि के हम बालक हैं। हम भारत के बालक हैं। हम सब को एक साथ विकास संपन्न करना होगा, और हमारा शीघ्र विकास होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फायरस्टोन

का एक और सौग़ात

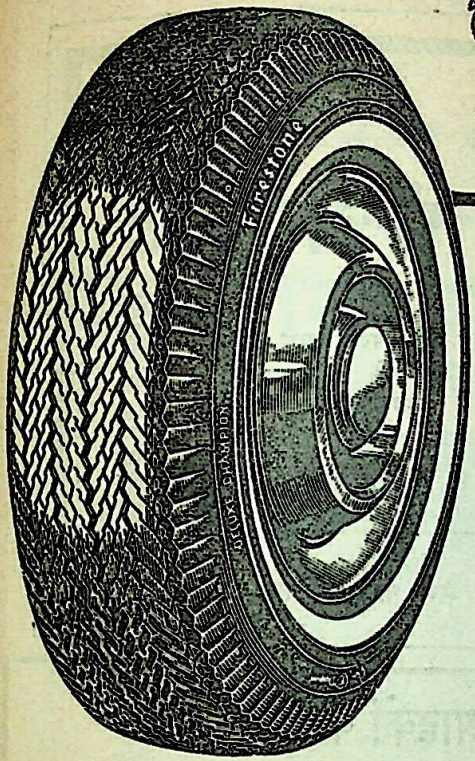

मशहूर

'रैप-अराउंड'

ट्रैड

और यह रहा वह, मोटर-कार टायर में महान विकास के रूप में विश्वभर में नामचीन-'रैप अराउंड' ट्रैड से अब फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन टायर सुशोभित है। इस लाजवाब टायर का राज है क्रांतिकारी ट्रैड। पांच बड़ी और टायर के किनारों पर दो-ऐसी सात रिब्स वाला यह टायर स्थिरता, सुरक्षा व किफायत की नयी कहानी है। नये 'रैप-अराउंड' ट्रैड के कारण सड़क पर रबड़ का हिस्सा ज्यादा बना रहता है, वह सड़क से ही लगा रहता है ताकि टायर जनीन को ज्यादा मजबूती से पकड़े, अच्छा चले, सुरक्षापूर्वक मुड़े और ज्यादा अर्से तक चले। फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन परिपूर्ण टायर है, अधिक सुरक्षा के लिए गोल किनारे और सुरक्षा में नया प्रतीक-अन्य सभी टायरों का सिरताज।

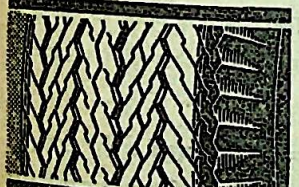

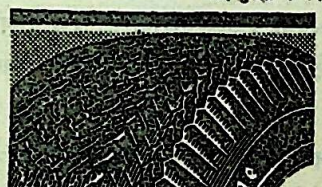

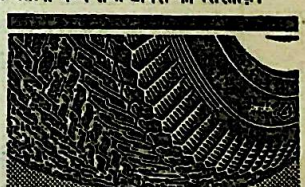

१ ज्यादा काम करनेवाले सेफ्टी ट्रैड

डिलक्स चैम्पियन ट्रैड पेटर्न वैज्ञानिक विधि से बना है ताकि सवारी सुरक्षित रहे किसी भी मौसम में, किसी भी सड़कपर फिसलने का भी खतरा कम, क्योंकि इस टायरमें मूरण विधि से हजारों सुरक्षात्मक कोण हैं।

२ ज्यादा चौड़ा 'रैप-अराउंड' ट्रैड डिजाइन

मजबूत टायर वाली पर नये चौड़े 'रैप-अराउंड' ट्रैड से सड़कपर ज्यादा रबड़ बनी रहती है, जिससे गाड़ी ज्यादा स्थिर चलती है, खास करके मोड़ों व कोनोंपर अतिरिक्त संचालन सुविधा, पहले से ज्यादा सुरक्षा रहती है।

३ 'सुपर-टफ'-आश्चर्यजनक रबड़

निःसंदेह, फायरस्टोन की नयी चार्जर जनक रबड़ सुपर टफ से बने डिलक्स चैम्पियन से अतिरिक्त खर्च के बिना आप हजारों मील ज्यादा तय कर सकते हैं। डिलक्स चैम्पियन आप के पैसेका अच्छा सौदा है, इसकी एक वजह यह भी है।

आधुनिक डिजाइन-लाजवाब काम

जहां पहियोंका चलन-वहां

फायरस्टोन बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आप का प्रिय प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झन्डू

बालामृत

बढ़ते हुए
बच्चों के लिए अत्यन्त स्वादिष्ट
टॉनिक

झन्डू

सतावरेक्स

गर्भावस्था तथा दूध आते समय
स्त्रियों के लिए एक खास टॉनिक

पाचक तथा स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक
जो भूख बढ़ाती है तथा
मानसिक अशान्ति को
दूर करती है

पंचारिष्ट

भोजनोपरान्त इसको
खाने की
आदत डालिए।

ZANDU

झन्डू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि. बम्बई-२८

नवनीत के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र ध्यान दे सकेंगे।

३) 'नवनीत' की प्रतियां पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। अतः डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भेजते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कच्चे फोड़े और गिल्टियाँ?
पुट्ठों में जकड़न? सूजन?
दर्द में जल्द आराम पाने के लिए

जॉन्सन्स*
बेलाडोना प्लास्टर

इस्तेमाल कीजिए!

जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर को आप आसानी से ज्यों का त्यों इस्तेमाल कर सकते हैं—न इसे गरम करने की झंझट और न पट्टी तैयार करने वगैरह की उलझन। और फिर, इसे लगाने के लिए कोई ख़ास चतुराई या योग्यता की भी ज़रूरत नहीं। बस, प्लास्टर के ऊपर से प्लास्टिक की परत हटाइए और दर्दवाले हिस्से पर प्लास्टर लगा दीजिए। प्लास्टर में बने छेदों के कारण चमड़ी को काफ़ी हवा मिलती है जिससे दर्दवाले हिस्से में ज़्यादा आराम महसूस होता है।

घर में जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर हमेशा रखिए!

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़ॉर्ब्स स्ट्रीट, बम्बई-२६

* ट्रेडमार्क

JWT-JJ-3747

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ गुना मज़बूत !!!

मेसर्स केटिन फ्रब्रिकेन, ओस्लो, नार्वे के टेक्निकल कोलैबोरेशन में बनायी हुई केलिब्रेटेड सांकलें २½ टन तक वजन उठाने के लिए, बनायी जाती हैं। परीक्षण से सिद्ध होता है कि ये सांकलें १६ टन वजन तक उठाने पर भी नहीं टूटतीं – वजन उठाने की निर्दिष्ट क्षमता से ६ गुना। निश्चित रूप से मजबूती की यह गारंटी है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें :

द इंडियन लिंक चेन मन्युफेक्चरर्स लिमिटेड

बम्बई-आग्रा रोड, भांडुप
बम्बई–७८

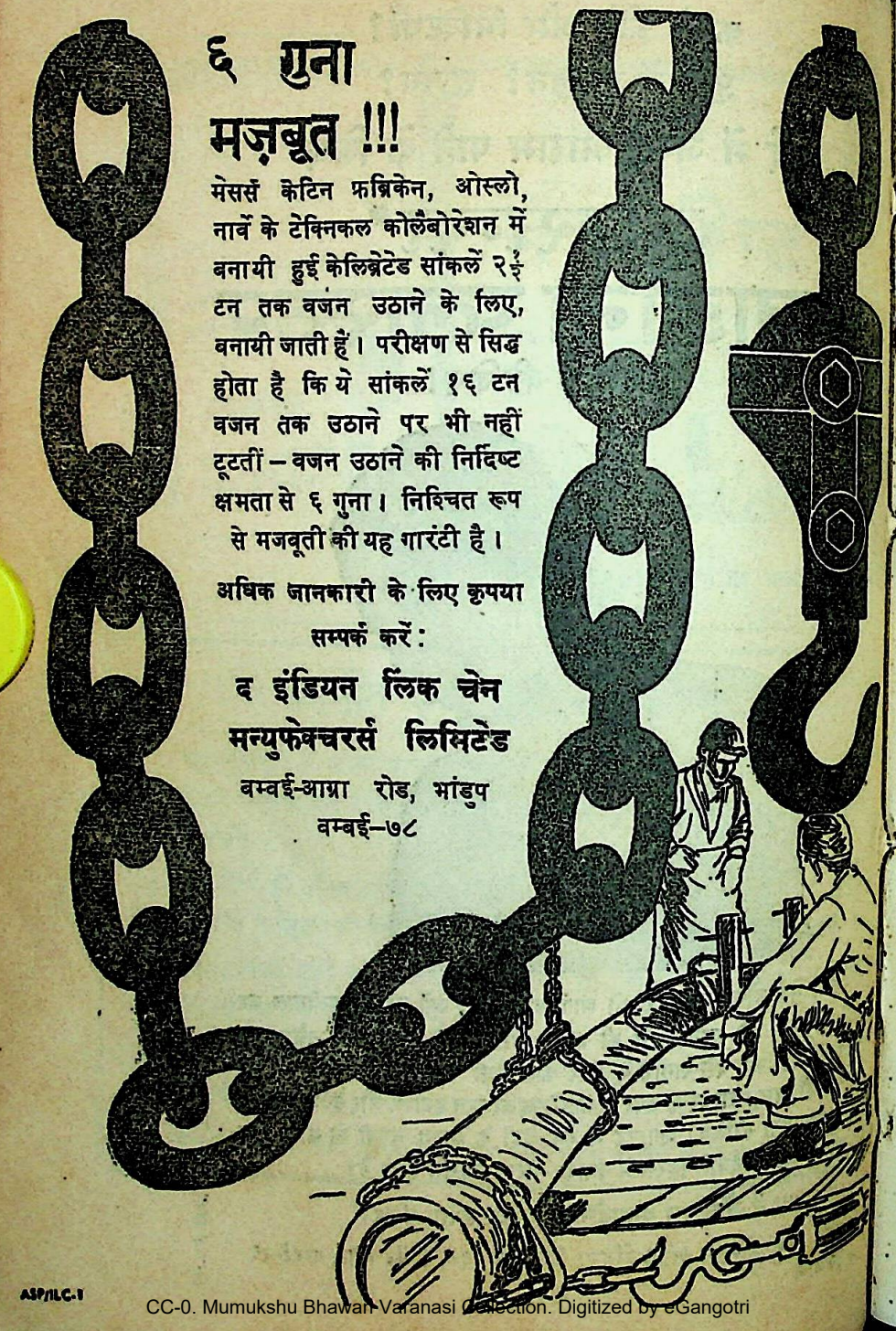

ASP/ILC-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिन्नी का डी ३१८ स्कूल की पोशाक के लिये बना

बिन्नी का डी ३१८ एक बेहद टिकाऊ कपड़ा है जो स्कूल की पोशाक के लिये बिलकुल ठीक है। विभिन्न स्कूल की पोशाकों के लिये तरह तरह के चित्ताकर्षक रंगों में मिलता है। आपके बच्चे इस कपड़े की बनी पोशाक में गर्व का अनुभव करेंगे और आप खुद इसकी टिकाऊपन को देखकर प्रभावित हो जायेंगे।

BINNY'S FABRICS

BINNY & CO. LIMITED, MADRAS

अपनी जरूरत के बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकार प्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनकी दुकान में यह साइनबोर्ड लगा है।

दि बर्किंघम ऐण्ड कर्णाटक कंपनी लिमिटेड, बिन्नी ऐण्ड कं० लिमिटेड, मद्रास की सहायता प्राप्त

वार्षिक मूल्य १०) (मूल्य १.००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B. 624

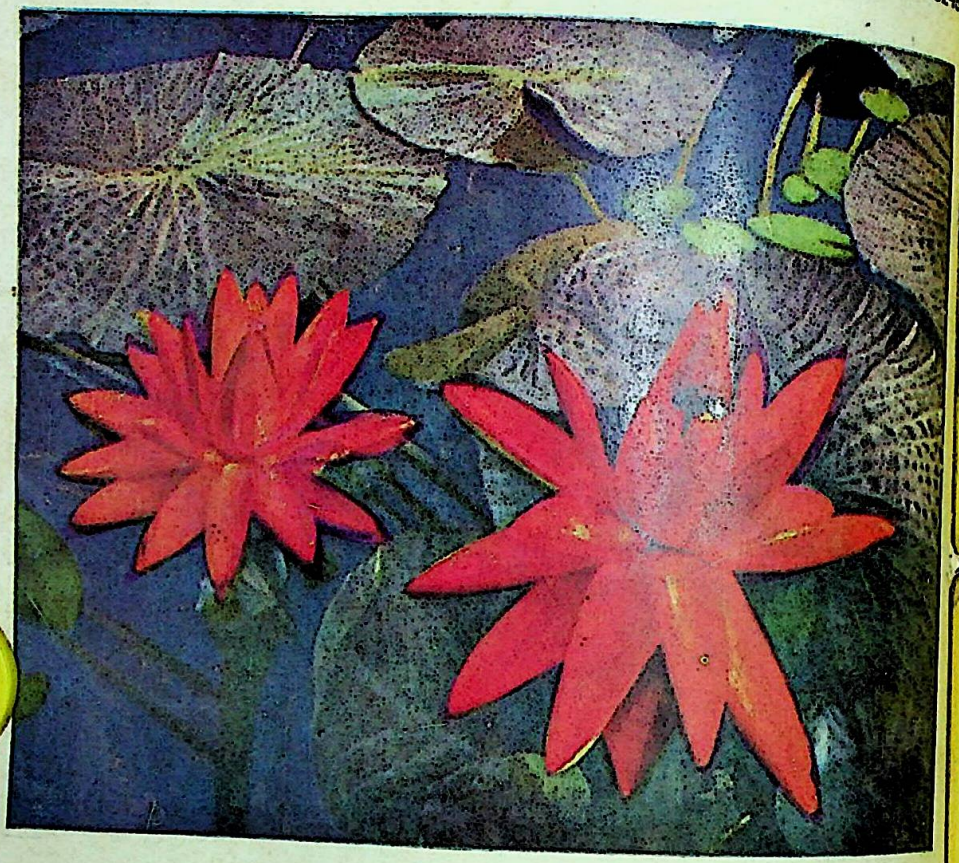

आप भी फूल जैसी खिलें

रेमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

अक्तूबर
१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया ! धारीदार टूथपेस्ट !

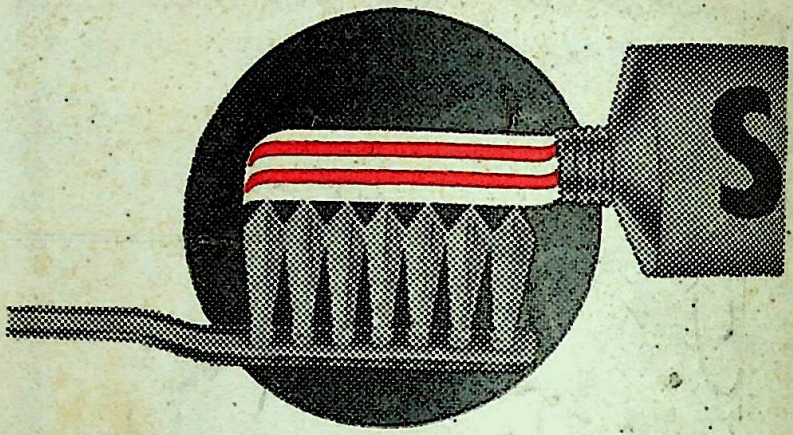

कीटाणु-रोधक लाल धारियों वाला*

सिग्नल

आप के सारे मुँह को साफ़ रखता है!

१ दाँत साफ़ करता है २ सांस को ताज़ा रखता है,

* लाल धारियों में हैक्साक्लोरोफ़ीन है।

दांतों की सफ़ाई में एक नई सूझ! कीटाणु-रोधक लाल धारियोंवाला सिग्नल टूथपेस्ट आप के सारे मुंह को साफ़ रखता है। इधर सिग्नल आप के दांत साफ़ करता है, उधर लाल धारियों में मिला हैक्साक्लोरोफ़ीन आप के सांस में ताज़गी ले आता है...क्योंकि हैक्साक्लोरोफ़ीन एक ऐसा संरक्षक तत्व है, जो दुर्गंधकारक कीटाणुओं को फ़ौरन नष्ट कर देता है। और यूं सिग्नल से आप का सारा मुंह साफ़ रहता है। लाल धारियों, बुलबुलों भरे झाग, स्पिअरमिंट के ताज़ा स्वाद और सारे मुंह में सफ़ाई के अनोखे अनुभव के कारण सिग्नल आप के सारे परिवार के मन भा जाएगा। आज ही सिग्नल ख़रीदिये।

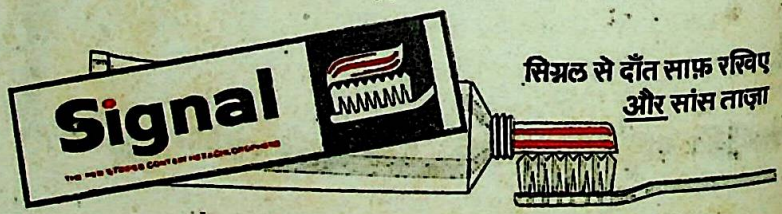

सिग्नल से दाँत साफ़ रखिए
और सांस ताज़ा

लिटास–SG. 3A-77 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पादन

मुखपृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लिमिटेड' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भविष्य के लिए बचत देना बैंक को आपकी मदद करने दीजिये

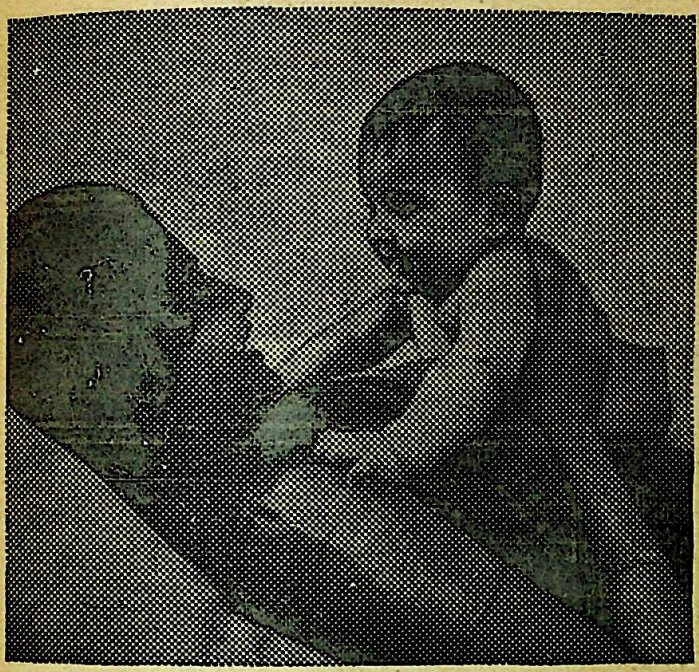

सेविंग्ज एकाऊण्ट – ब्याज ४%
अल्पवयस्क बचत योजना – ब्याज ४%
फ़िक्स्ड डिपॉज़िट – ब्याज ६% से ७½%

देना बैंक

देवकरण नानजी बैंकिंग कंपनी लिमिटेड
रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज़, १७, हॉर्निमेन सर्कल बम्बई-१.
१४५ से अधिक ऑफ़िस तथा ४५ सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट
प्रवीणचंद्र व. गांधी मॅनेजिंग डाइरेक्टर

DB/H/168 – A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

दर्द को फौरन दूर करता है

स्थानीय दर्द को दूर करने के लिये दवा खाने की क्या जरूरत है? दर्द की जगह पर अमृतांजन मलिये—दर्द जाता रहेगा, आप राहत महसूस करेंगे। अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रण वाली १० दवाइयों की एक दवा है—मांस पेशियों के दर्द, मोच और जोड़ के दर्द के लिये बिलकुल अचूक है, निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन का इस्तेमाल सीने में जमा कफ, सर्दी और जुकाम में भी जल्द से जल्द आराम पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलती है। आप भी अमृतांजन की एक शीशी बराबर ही पास रखिये।

७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से अमृतांजन एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

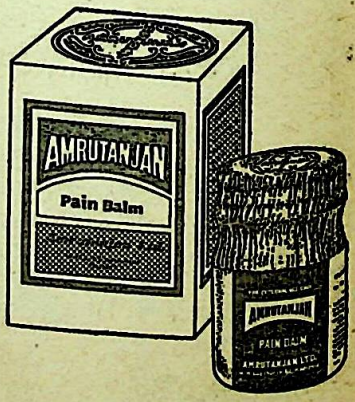

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2815A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

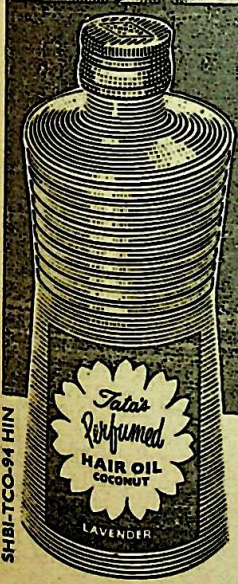

टाटा का *सुगन्धित* कोकोनट हेअर ऑइल

जिसमें शुद्ध नारियल का तेल होता है

सभी समझदार माताएँ जानती हैं कि टाटा के कोकोनट हेअर ऑइल में केवल शुद्ध नारियल का तेल होता है। इससे बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं और बाल स्वस्थ और घने उगते हैं। टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल—गुलाब, लॅवेण्डर, चमेली और पुष्पा—इन चार मनभावन सुगन्धों में मिलता है।

बालों को सदा सुन्दर रखने के लिये टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल

SHBI-TCO-94 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Tom & Bay/KOEL/JH-13/65

किर्लोस्कर

किर्लोस्कर ऑईल एंजिन्स लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफिस : एलफिंस्टन रोड, पूना - ३

फिक्स्ड डिपोजिट्स स्वीकार्य

विवरण एवं आवेदन पत्रों (फारम) के लिए लिखें

निकटतम स्टॉक एक्सचेंज के अधिकृत स्टॉक ब्रोकर्स या कम्पनीके रजिस्टर्ड आफिस, किर्की, पूना-३

अवधिके लिए	अगस्त १, १९६५ से प्रतिवर्ष ब्याज की दर
१ वर्ष	७ प्रतिशत
२ वर्ष	७½ प्रतिशत
३ वर्ष	८ प्रतिशत
५ वर्ष	८½ प्रतिशत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन मॉस्को क्यों? इसलिए कि यह एक अनूठा, सुन्दर और रोमांचक शहर है! और मज़े की बात तो यह कि मॉस्को में रुकने के लिए आपको ज़्यादा किराया भी नहीं देना पड़ता!

हफ़्ते में दो बार

बम्बई – दिल्ली
मॉस्को – लन्दन

एयर-इंडिया

सहयोगी : बी.ओ.ए.सी. और कैण्टस

मॉस्को होते हुए

IWT-AI-377I

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत

डेट

साफ़ धुलाई के साथ साथ
सफ़ेदी भी लाता है

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है।
केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से...और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना...कर सकता है

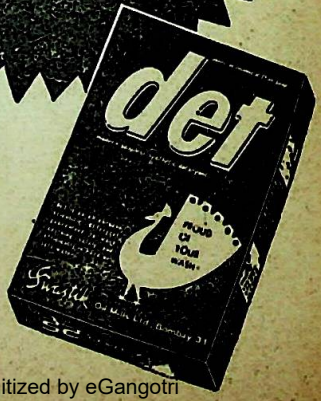

इण्डस्ट्रिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फायरस्टोन

का एक और सेहरा

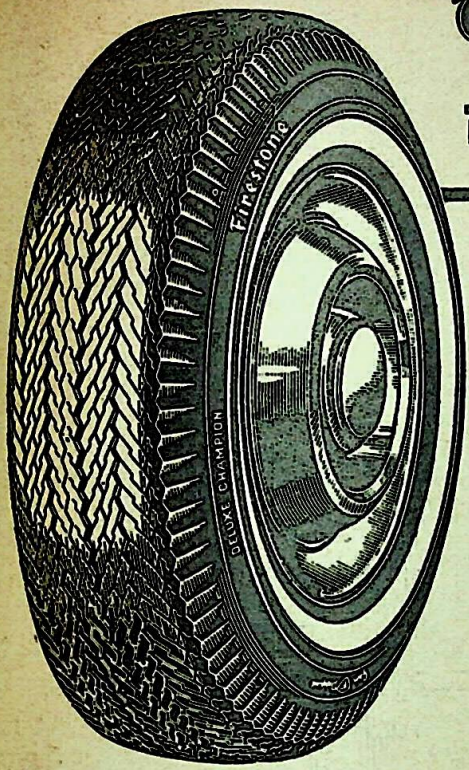

मशहूर

'रैप-अराउंड'

ट्रैड

और वह रहा वह, मोटर-कार टायर में महान विकास के रूप में विश्वभर में नामचीन-'रैप अराउंड' ट्रैड से अब फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन टायर सुशोभित है। इस लाजवाब टायर का राज है क्रांतिकारी ट्रैड। पांच बड़ी और टायर के किनारों पर दो-ऐसी सात रिब्स वाला यह टायर स्थिरता, सुरक्षा व किफायत की नयी कहानी है। नये 'रैप-अराउंड' ट्रैड के कारण सड़क पर रबड़ का हिस्सा ज्यादा बना रहता है, वह सड़क से ही लगा रहता है ताकि टायर जमीन को ज्यादा मजबूती से पकड़े, अच्छा चले, सुरक्षापूर्वक मुड़े और ज्यादा अर्से तक चले। फायरस्टोन डिलक्स चैम्पियन परिपूर्ण टायर है, अधिक सुरक्षा के लिए गोल किनारे और सुरक्षा में नया प्रतीक-अन्य सभी टायरों का सिरताज़।

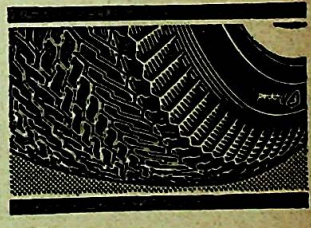

१ ज्यादा काम करनेवाले सेफ्टी ट्रैड

डिलक्स चैम्पियन ट्रैड पेटेन्ट वैज्ञानिक विधि से बना है ताकि सवारी सुखद रहे किसी भी मौसम में, किसी भी सड़कपर फिसलने का भी खतरा कम, क्योंकि इस टायरमें सूक्ष्म विधि से हजारों सुरक्षात्मक कोण हैं।

२ ज्यादा चौड़ा 'रैप-अराउंड' ट्रैड डिजाइन

मजबूत टायर बाडी पर नये चौड़े 'रैप-अराउंड' ट्रैड से सड़कपर ज्यादा रबड़ बनी रहती है, जिससे गाड़ी ज्यादा स्थिर चलती है, खास करके मोड़ों व कोनोंपर अतिरिक्त संचालन सुविधा, पहले से ज्यादा सुरक्षा रहती है।

३ 'सुपर-टफ'-आश्चर्यजनक रबड़

निःसंदेह, फायरस्टोन की नयी आश्चर्यजनक रबड़ सुपर टफ से बने डिलक्स चैम्पियन से अतिरिक्त खर्च के बिना आप हजारों मील ज्यादा तय कर सकते हैं। डिलक्स चैम्पियन आप के पैसेका अच्छा सौदा है, इसकी एक वजह यह भी है।

आधुनिक डिजाइन-लाजवाब काम

जहां पहियोंका चलन-वहां

फायरस्टोन बढ़िया किस्म और सेवा के लिए आप का प्रिय प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झन्डू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि. बम्बई-२८

'नवनीत' के पुराने अंक चाहते हैं?

नवनीत के पाठक–खासकर वाचनालय और शिक्षण संस्थाएं–नवनीत के पुराने अंकों की फाइल रखना चाहते ह। इसी विचार से हमने नवनीत के पुराने अंकों की फाइल सस्ते मूल्य में देने की योजना बनायी है। जनवरी-जून और जुलाई-दिसंबर के ६-६ अंकों की विषयानुसार सूची के साथ जिल्दें बना दी गयी हैं।

हमारे पास निम्नलिखित फाइलें हैं–१९५४ से १९५७ तथा १९६०, १९६१-६२ की पूरे वर्ष की फाइलें।

प्रत्येक छमाही जिल्द का मूल्य २.५० रुपये और पोस्टेज (रजिस्ट्री) १.५० रुपये इसकेअलावा। ६ जिल्देभंगवानेपर रेलवे पार्सलद्वारा भेजने का व्यय कार्यालय उठायेगा।

– नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ तारदेव, बंबई ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुन्दर वस्तु सदैव आनन्दमयी होती है"

किसी नये स्थान पर जाने का आकर्षण तो सदा ही बना रहता है और फिर अगर आप हकोबा एम्ब्रॉइडर्ड वस्त्रों से सुसज्जित हैं तो बस कहना ही क्या! आपके व्यक्तित्व का आकर्षण और भी बढ़ जाता है — सुन्दरताका एक सुन्दर वातावर्ण में होना ही उसकी सबसे बड़ी प्रशंसा है।

हकोबा
एम्ब्रॉइडर्ड कपड़े

फैन्सी कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(हकोबा चिकन व एम्ब्रॉइडर्ड कपड़ों के निर्माता) १६, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई – १.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

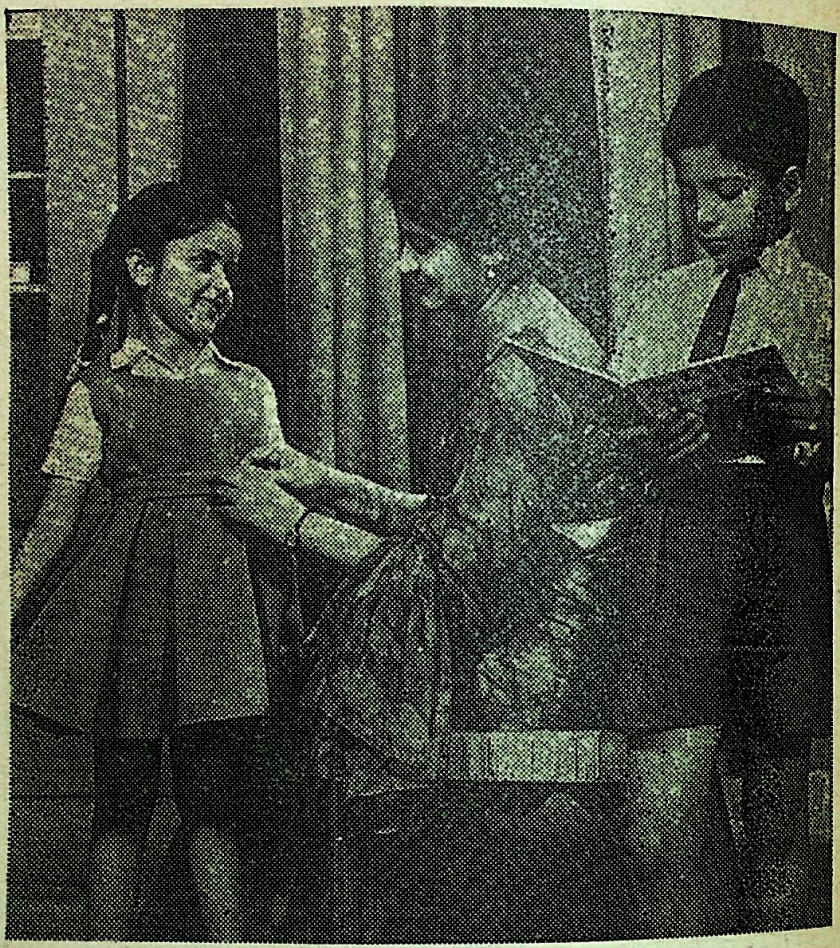

बिन्नी का डी ३१८ कपड़े की कहानी, माँ और बच्चों की ज़बानी

माँ की ज़बानी :
डी ३१८ बहुत टिकनेवाला बड़े काम का कपड़ा है —स्कूल की वर्दी के लिये इससे अच्छा कोई नहीं— लड़कों की धींगा-मस्ती का इस पर असर नहीं पड़ता।

बच्चों की ज़बानी :
वर्दी पहने हुए भी जब हम-खेल-कूद मचाते हैं तो माँ बुरा नहीं मानतीं—वे जानती हैं कि यह बराबर टिकी रहेगी।

याद रखिये कि डी ३१८ सारे देश के स्कूलों की जरूरतों को पूरा करने के लिये खासकर चुने तरह तरह के रंगों में मिलता है।

अपनी जरूरत के बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्यों में अधिकार प्राप्त बिन्नी स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनकी दुकान पर यह साइन बोर्ड है।

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कंपनी लिमिटेड, बिन्नी ऐण्ड कंपनी लिमिटेड, मद्रास की सहायता प्राप्त

[WT/BY 3127A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी की अनुपम शोभा, रेशम जैसे मुलायम केश...

स्वस्तिक शिकाकाई सोप

मीनी मीनी सुगन्धवाले शिकाकाई सोप में शुद्ध शिकाकाई मिलाया जाता है। यह शम्पू आपके केशों को रेशम जैसी मोहकता प्रदान करता है... उन्हें स्वच्छ और स्वस्थ बनाता है।

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह-तरह के
क्लिअरटोन घरेलू साधन

Clearton

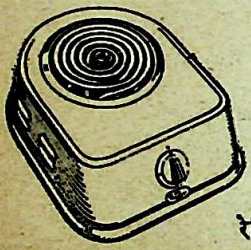

रेडियंट हॉट प्लेट

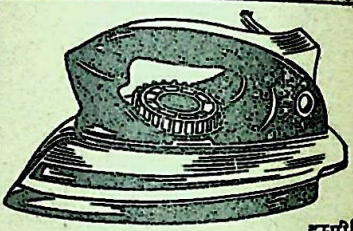

इम्पीरियल इस्त्री

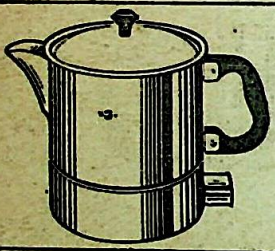

केतली

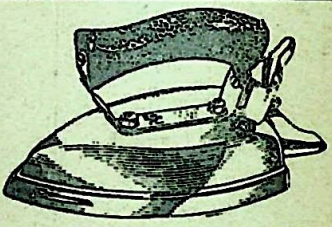

घरेलू इस्त्री

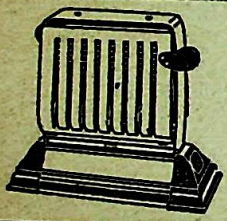

टोस्टर

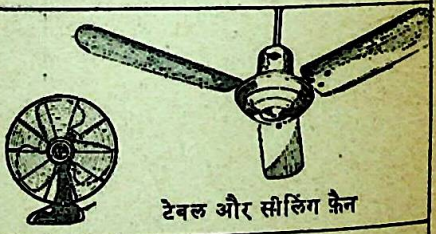

टेबल और सीलिंग फ़ैन

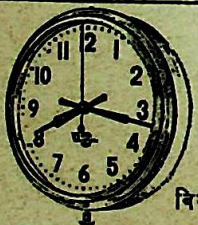

बिजली की घड़ी

फ़ोल्डिंग स्टील फ़र्नीचर

सभी क्लिअरटोन डीलरों व नेशनल-एक्को रेडियो डीलरों के यहाँ तथा इस पते पर मिलते हैं।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

GRA

बम्बई कलकत्ता मद्रास दिल्ली बंगलोर सिकन्दराबाद बड़ौदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

JWT/GRA 2804

नियमित रूप से की हुई छोटी-सी बचत भी आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ती है!

बचत की रक़म चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो, अगर उसे बैंक में नियमित रूप से जमा किया जाय तो वह निरन्तर बढ़ती रहती है। और यह बिल्कुल स्वाभाविक ही है।

जो पैसा घर में रहता है वह किसी न किसी तरह खर्च हो ही जाता है, या फिर वह खो जा सकता है या चुराया जा सकता है।

लेकिन बैंक ऑफ़ बरोडा में जमा किया हुआ पैसा सुरक्षित तो रहता ही है, साथ ही उसमें ४% ब्याज जुड़ कर वह बढ़ता भी जाता है।

और ज्यों-ज्यों पास बुक में दर्ज रक़म बढ़ती जाती है पैसा बचाने का चाव भी बढ़ता है!

क्या आप जानते हैं कि बैंक ऑफ़ बरोडा में खाता खोलने के लिए कितनी रक़म चाहिए? सिर्फ एक रुपया! और फिर बिना नोटिस दिये आप अपने खाते से हफ़्ते में दो बार कितनी भी रक़म निकाल सकते हैं।

नियमित रूप से बचत कीजिए

दि
बैंक ऑफ़ बरोडा लिमिटेड
(संस्थापित : सन् १९०८)
प्रधान कार्यालय : बड़ौदा

हमारी सभी सेवाओं की पूरी जानकारी देनेवाली पुस्तिका "आइए, हम आपकी मदद करें..." मुफ़्त मिलती है। आज ही मँगवाइए।

IWT-BB-3691

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे...एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

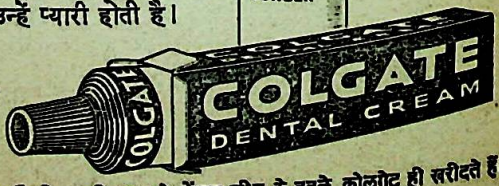

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिय ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCC. 35 H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्टूबर
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
आलोक शीशोदिया
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

धान्यलक्ष्मियां
चित्रकार : गौरांगचरण

इस अंक में

१७ आत्मबोध
जावालि
१८ जीवन के उपासक
काका कालेलकर
१९ हमारा लक्ष्य
डा० राधाकृष्णन्
२० भारत-पाक युद्ध : मोर्चे और हथियार
सत्यकाम विद्यालंकार
२४ जब दवाएं जानलेवा बन गयीं
आशालता शर्मा
२८ डोरोथी हाज्किन
स० वा० शर्मा
३२ सिद्ध करो फिर से (कविता)
केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'
३४ सेवा के लिए सदा सजग
... ...
३७ ये विज्ञापन सचमुच छपे थे
हरिमोहन शर्मा
४० ओकापी : एक दुर्लभ स्तनपायी
हंस
४२ करामाती काठ बाल्सा
हरपाल अरोड़ा
४६ इस व्यक्ति की साधारणता असाधारण थी
डा० मारिस मार्टिन
४९ मेरी कल्पना का सुख
... ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५१	पगडंडियां और परांठे	श्रीनिधि सिद्धांतालंकार
५७	आपकी आवाज	भगीरथ
६१	कोरी भावुकता छोड़िये	सनामि
६४	भीतर जागा दाता (कविता)	अज्ञेय
६६	क्या कहने हैं स्पेन की ट्रेन के !	लीसा मांटिसिनोस
७२	प्रतिमा का पत्थर	अश्विनी कुमार व्यास
७५	अनेक शादियों की जगह	पीटर लारसन
७७	परछाइयां (कविता)	वारिंग कने
८०	आतंक-मुक्ति	शैलेश मटियानी
८३	जिंदगी (कविता)	सुरेंद्र शर्मा
८७	चांद मेरा दोस्त (मराठी कहानी)	शांताराम
९३	अहिल्या (हिन्दी कहानी)	गोविंद रत्नाकर
१०१	अक्षम्य अपराध (हंगेरियन लघुकथा)	इस्तवान आरकेनी
१०६	जिक्र मेरा बेहतर है ...	डा० गंगानारायण त्रिपाठी
११०	एक मामूली किंतु महिमाशाली मस्जिद	सी० के० सत्यराज
११३	सत्तर हजार के घेरे में (पुस्तक-संक्षेप)	कामंडन रोनाल्ड्स
११७	गीत	शिवशंकर वशिष्ठ
१३२	एक रात के लिए (कविता)	प्रमोद त्रिवेदी
१४४	समर्पिता किरण (कविता)	अमरेश
१५९	अपने को इन बाटों से तोलें	... ...

★

चित्रसज्जा :

रवींद्रनाथ ठाकुर, ओके, शणै, चोराडेया,
गौरांगचरण, श्रीकृष्ण उडिपि

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक १०

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

अक्टूबर १९६५

जीवन के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

आत्मबोध

मेरा यह पक्षी
अपने पंखों की गहरी छांह में
सिमटकर
हृदय की रहस्यमयी
परतों के अंधकार में पैठकर
न जाने कितनी मोहिनी आंखों का
नशा पी लेता है
कि बेचैन होकर
अंबर के ओर-छोर
छूने को छटपटाते रहते हैं
इसके पर
और दिशा-दिशा में
पुकार-पुकारकर
किसकी खोज में बिखर जाते हैं
इसके स्वर ?
मेरा यह पक्षी...

—जाबालि

चित्र : रवींद्रनाथ ठाकुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन के उपासक

काका कालेलकर

भारतीय मानस और यूनानी मानस की यह खूबी है कि तत्वचिंतक होने के कारण वे अपने अनुभव को—और कल्पना को भी—किसी दार्शनिक व्यवस्था के सांचे में ढाल देते हैं और फिर उसी ढांचे में फंस जाते हैं। कोई एक दर्शन, एक तत्व-व्यवस्था या मनो-व्यापार का ढांचा बनते ही जीवन के सब अनुभवों को उसी ढांचे में, या सांचे में वे ढाल देते हैं और फिर सृष्टि के व्यापार को, अपने मन के व्यापार को, उसी का रूप देकर देखने लगते हैं।

ऐसे लोग जीवननिष्ठ होने के बजाय, सांचे या ढांचे के निष्ठ बनकर अपने को विचारनिष्ठ बताते हैं। दुनिया में जितने भी दर्शन हैं और फिलसुफी के प्रकार हैं, ऐसे ही ढांचा-परायण हो गये हैं। आज-कल के मनीषी सारे जीवन को अर्थ-विचार या संपत्ति-विचार के ढांचे में ढालकर देखते हैं और उनकी सारी सलाह-सूचना उसी में से निकल आती है। यह एक तरह का विचार-दास्य ही है।

गांधीजी ने सत्य को अपना परमात्मा माना और अहिंसा को उस सत्य-भगवान तक पहुंचने की एकमात्र अपरिहार्य साधना माना। इन दो बातों को दृढ़ता से पकड़ कर उन्होंने अपने आपको अपनी जीवन-निष्ठा के हाथ में सौंप दिया। तर्कनिष्ठा और युक्तियुक्तता (कन्सिस्टेन्सी) का भूत उन्होंने अपने पर सवार नहीं होने दिया।

निर्दोष शुद्ध बुद्धि से सोचते हुए उनकी जीवन-दृष्टि उन्हें जो भी सूझाती थी, उसी को मानकर वे चलते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अंतःप्रेरणा से पायी हुई चीज को दूसरों को समझाने के लिए वे बाद में मिसाल, दलील आदि भी देते थे।

गांधीजी की जीवन-सफलता उन्हें उनकी इस जीवन-निष्ठा से ही प्राप्त हुई। भूलें करने से वे डरते नहीं थे। उनकी स्वराज्य की व्याख्या भी इसी ढंग की है। वे कहते थे-"स्वराज्य के माने हैं भूलें करने का अधिकार और भूलें सुधारने का मौका।"

इसीलिए गांधीजी ने दूसरे देशों के फिलसुफों की तरह अपनी फिलसुफी बनाने की कोशिश नहीं की। वे कहते थे, जब तक मैं जिंदा हूं, नये-नये प्रयोग करता ही रहूंगा, और तब तक मेरा जीवन-दर्शन, मेरी 'फिलासफी आफ लाइफ' पूरी नहीं होगी। जैसे अनुभव बढ़ेगा, मेरा जीवन-दर्शन सूक्ष्म और गहरा बनेगा।

एक वाक्य में कहें, तो गांधीजी तत्वपूर्ण जीवन के प्रति निष्ठा रखते थे, किसी पूर्वनिर्मित विचार-सृष्टि के प्रति उनकी निष्ठा नहीं थी। तत्व-परायण जीवन-निष्ठा ही गांधीजी को मान्य थी—विचार निष्ठा नहीं। वे जीवन के उपासक और जीवन-मार्गदर्शक थे। किसी योजना के—सिस्टम के—निर्माता और दास नहीं थे। गांधीजी की यह विशेषता जानकर ही उनके सत्य के प्रयोगों का सार हम पहचान सकेंगे।

['मंगल प्रभात' से]

हमारा लक्ष्य

हम आज जमीन के किसी टुकड़े के लिए नहीं लड़ रहे हैं। हमारा संघर्ष बुनियादी सिद्धांतों के लिए है। स्वतंत्र परंपराओं और व्यवस्थाओं की रक्षा के लिए यह महत्वपूर्ण है कि भारत की आजादी और भारतीय संघ की अखंडता के लिए हम जो संघर्ष कर रहे हैं, उसमें हमारी विजय हो। भारत में जनता द्वारा स्वेच्छा से चुनी हुई सरकार है। यहां के समाचार-पत्र स्वतंत्र हैं। कानून पर यहां की जनता का विश्वास है। यहां का राजकीय तंत्र असांप्रदायिक है और उसमें सभी धर्मों को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। हम जिसका प्रतिरोध कर रहे हैं, वह सैनिक तानाशाही है। वहां के समाचार-पत्रों पर बंधन हैं। वहां का राजकीय तंत्र सांप्रदायिक है। हमारा विश्वास है कि उन्हें भी स्वतंत्रता मिलनी चाहिये, जिनके विचार हमसे नहीं मिलते। लोकतंत्र के हितों का तकाजा है कि विजयश्री हमारा वरण करे। अन्यथा एशिया में स्वाधीनता का दीपक बुझ जायेगा।

— राष्ट्रपति राधाकृष्णन्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत - पाक युद्ध

मोर्चे और हथियार

सत्यकाम विद्यालंकार

भारत और पाकिस्तान बिना युद्ध-घोषणा किये हुए युद्धरत हैं। दोनों देशों की सेनाओं का युद्ध इस समय निम्न छः क्षेत्रों में हो रहा है :

१. बाड़मेर (राजस्थान) की सीमा से आगे हैदराबाद (सिंध) क्षेत्र में;
२. पंजाब में फीरोजपुर-कसूर, वागाह-लाहौर, जस्सौर-नारोवाल के क्षेत्र में;
३. जम्मू-कश्मीर के दक्षिणी भाग के आगे स्यालकोट-जम्मू क्षेत्र में;
४. पाकिस्तान द्वारा आक्रांत जम्मू प्रदेश के छम्ब क्षेत्र में,
५. कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में उड़ी-पुंछ क्षेत्र में;
६. कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में टिटवाल-कारगिल क्षेत्र में।

इसके अतिरिक्त कूचविहार (पश्चिम बंगाल) की सीमा पर पाकिस्तान अपनी सेनाएं जमा कर चुका है और भारत को युद्ध में खींचने के लिए आक्रामक कार्रवाइयां कर रहा है। इसी प्रकार सौराष्ट्र (गुजरात) में द्वारका और ओखा पर उसने जलसेना द्वारा हमला करने की कोशिश की है।

युद्धक्षेत्र की चालें शतरंज की चालों के समान होती हैं। कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्रों में भारत का ध्यान पलटने को पाकिस्तान ने छम्ब में हमला किया, तो भारत ने वहां से पाकिस्तान की केंद्रित सैन्यशक्ति का रुख पलटने को जम्मू, लाहौर और सिंध के मोर्चे खोले। पाकिस्तान ने इन मोर्चों से भारतीय फौज का ध्यान दूसरी ओर पलटने के लिए फाजिल्का-गंगानगर क्षेत्र का मोर्चा खोल दिया है। युद्ध में जीत-हार के अनेक कारण होते हैं। किंतु दोनों पक्षों की सैनिक शक्ति ही मुख्यतः निर्णायक बनती है।

भारत पाकिस्तान की अपेक्षा बहुत बड़ा देश है। उसका क्षेत्रफल १२,६१,५९७ वर्गमील और आबादी ४४ करोड़ (सन ६१ की जनगणना के अनुसार) है; जबकि पाकिस्तान का क्षेत्रफल ३,६४,७३७ वर्गमील और आबादी ९ करोड़ ३० लाख से कुछ ऊपर है। लेकिन दोनों की आपेक्षिक सैनिक शक्ति जनसंख्या की समानुपाती नहीं है।

सैनिकों की संख्या में बहुत आनुपातिक विषमता होते हुए भी पाकिस्तान को अमरीका द्वारा बिना मूल्य दिये गये ७-८ अरब रुपये के आधुनिकतम शक्तिशाली हथियारों के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों देशों की शस्त्रसज्जता में विषमता हो गयी है। इसीलिए भारतीय सेना को पाकिस्तान की सेना से उसी प्रकार युद्ध करना पड़ रहा है, जैसे कि वह अपने ही समान विशाल देश से लड़ रहा हो। इन हथियारों की वजह से ही दोनों की जीत-हार के पलड़े भी अभी लगभग तुले हुए नजर आ रहे हैं। सच तो यह है कि पाकिस्तान ने दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश द्वारा दिये गये हथियारों से सज्जित होने के कारण ही भारत को युद्ध की चुनौती दी है।

दोनों देशों की सैन्य-शक्ति और शस्त्रास्त्र-सज्जा का बिलकुल सही-सही चित्र पेश करना शांतिकाल में भी कठिन था और युद्धकाल में तो लगभग असंभव है। फिर भी निम्न आंकड़े दोनों के सैन्य-बल को मापने में बहुत हद तक सहायक हो सकते हैं।

सैन्य-शक्ति

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, भारतीय सैनिकों की कुल संख्या ८,६७,००० और पाकिस्तान के कुल सैनिकों की संख्या २,५३,००० है।

वायु-शक्ति—विमानों की श्रेष्ठता से वायु-शक्ति का अनुमान लगाया जाये, तो पाकिस्तान कश्मीर युद्ध से पूर्व भारत से बहुत आगे था। अमरीका ने पाकिस्तान को लगभग २०० शक्तिशाली विमान दिये थे, जिनका विवरण इस प्रकार है:—४८ कैनबरा (बी—५७); ९६ सेबरजेट (एफ—८६); ४८ सुपरसानिक (एफ—१०४); २० हर्क्युलिस (सी—१३०) तथा अन्य।

भारत के पास रूस द्वारा दिये गये थोड़े-से मिग-२१ विमानों (जिनका उपयोग अभी तक नहीं किया गया है) के अतिरिक्त केवल वही विमान हैं, जोकि उसने हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड, बेंगलूर में खुद बनाये हैं। इन विमानों के रोल्सराय्स इंजन मुख्यतः ब्रिटेन की ब्रिस्टल-सिडले तथा हाकर-सिडले कंपनी से खरीदे गये हैं।

नैट - विमान

भारत के स्वनिर्मित विमानों में नैट फाइटर सबसे अधिक शक्तिशाली है। इसके चालकों ने कई बार अमरीकी एफ—८६ (सेबरजेट) विमानों को ध्वस्त किया है। यह एक सीटवाला, ब्रिस्टल-सिडले इंजन से सज्जित विमान है, जो अधिक-से-अधिक ७०० मील प्रति घंटा के वेग से उड़ सकता है। इसमें ३३ मिलीमीटर की दो तोपें दायें-बायें लगी होती हैं। इसका भार ३,४०० किलोग्राम है और इसकी दो टंकियों में १,५९१ लिटर पेट्रोल भरा जा सकता है। यह एक साथ २ घंटा ४० मिनिट तक आकाश में रह सकता है और ९६४ किलोमीटर दूरी तय कर सकता है। भारत ने १९५६ में ब्रिटेन की फालैंड एयरक्राफ्ट कंपनी से इन विमानों के बनाने में सहयोग का करार किया था। तभी से बेंगलूर में इनका निर्माण हो रहा है। किंतु अभी तक बहुत कम नैट विमान बन पाये हैं।

इसके अतिरिक्त हमारे पास वैम्पायर फाइटर, मिस्टीयर और किरण नाम के विमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, जो युद्ध में काम आ रहे हैं। मिस्टीयर का अधिकतम वेग ५५० मील प्रतिघंटा हो सकता है। उड़ान शुरू करने के लिए इसे ४,५०० फुट लंबी पट्टी चाहिये। मिस्टीयर ने भी इस युद्ध में कई सेबरजेट विमानों को गिराया है। छम्ब के क्षेत्र में अमरीका के एक दर्जन पैटन टैंकों को नष्ट करने में नैट विमानों ने आशातीत क्षमता दिखलायी है।

नैट और मिस्टीयर के अलावा भारत के पास अपने बनाये विमान हैं—किरण, पुष्पक, मरुत और कृषक, जिन्हें क्रमशः एच. एफ—२४, एच. जे. टी—१६ और एच. टी—२ भी कहा जाता है। एच. एफ—२४ भारत का अतिस्वन (सुपरसानिक) विमान है। यह अभी तक उपयोग में नहीं लाया गया है। अन्य विमानों का निर्माण वस्तुतः युद्धकाल के लिए नहीं हुआ था। नये चालकों को प्रशिक्षण देना ही इनका मुख्य उद्देश्य है। किंतु देश की रक्षा करने के लिए अब इनका सैनिक उपयोग करना पड़ रहा है।

वायुसेना ने अपना काम अभी तक बड़ी दक्षता से किया है। छम्ब क्षेत्र की लड़ाई की प्रथम मुठभेड़ में ही उसने पाकिस्तानी वायुसेना के ३६ विमानों को मार गिराया था।

इन नभयुद्धों में पाकिस्तान अपने विशाल हर्क्युलिस (सी—१३०) हवाई जहाजों में से दो को, ४८ कैनबरा (बी—५७) जहाजों में से ४ को, और ९६ सेबरजेट (एफ—८६) में से २० को गंवा चुका है। इसके अतिरिक्त उसके ४ अतिस्वन (एफ—१०४) भी भारतीय वायुसेना के शिकार बन चुके हैं। जानकार लोगों का अनुमान है कि पाकिस्तानी विमान-बेड़े के पांचवें हिस्से को भारत ने नष्ट कर दिया है। पर भारत की क्षति भी कम नहीं हुई है।

वैजयंत

स्थल-सेना की शक्ति—आज की स्थल-सेना अपनी टैंक-शक्ति से ही आक्रमण कर सकती है और प्रतिरक्षा में सफल हो सकती है।

अमरीका द्वारा पाकिस्तान को दिये गये पैटन टैंकों (इनकी संख्या के बारे में तरह-तरह के अंदाज हैं) के कारण भारतीय सेना का यह पक्ष निर्बल था। भारत के पास इन दुर्भेद्य टैंकों के मुकाबले, पिछले महायुद्ध के माडल के अमरीकी शर्मन टैंक, ब्रिटेन में बने सेंचूरियन और फ्रांसीसी ए. एम. एक्स टैंक हैं। इनकी संख्या अभी तक हमें ज्ञात नहीं; किंतु संख्या में ये पाकिस्तान के टैंकों से कम नहीं हैं। और अब तो भारत अपना ही टैंक विकसित कर रहा है। इसका नाम है—वैजयंत। आवडी, मद्रास का टैंक कारखाना इस साल के अंत तक हमारी सेना को वैजयंत टैंक मुहैया करने लगेगा।

पैटन टैंक

कश्मीर के मोर्चे पर पाकिस्तान जो पैटन टैंक उपयोग में ला रहा है, वह १९४९ के बाद विकसित मध्यम आकार के अमरीकी टैंकों में से है। अब तक इसके एम-४७, एम-६० और एम-११३ आदि पांच माडल बन चुके हैं। इन माडलों के वजन, शस्त्रास्त्र, कर्मचारी-संख्या,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंजिन, तोप-मीनार (टरेट) और कार्यशक्ति आदि में अंतर है। एम-४७ को अमरीकी टैंकों में आधुनिकतम और सर्वोत्तम तो नहीं कहा जा सकता; मगर सबसे अधिक इसकी परख हो चुकी है। पश्चिम यूरोप के अधिकांश देशों तथा एशिया में तुर्की, जापान और पाकिस्तान के पास यह टैंक है। कोरिया के मोर्चे पर इसका काफी उपयोग हुआ। इसका वजन ४८ टन है। इसमें ९० मिलीमीटर की एक तोप, ७.६२ मि० मी० की दो मशीन-गनें और १२.७ मि० मी० की एक विमान-ध्वंसक तोप होती है। कर्मचारियों की संख्या है पांच। ९० मि० मी० की तोप इसका शक्तिशाली शस्त्र है। यह तोप १२ मील तक मार कर सकती है। इससे छूटे गोले ३,००० फुट प्रति सेकंड की रफ्तार से उड़ते हैं और मजबूत-से-मजबूत कवचों को तोड़ सकते हैं। कोरिया युद्ध में बख्तरबंद गाड़ियों के जमाव और किलाबंदी को तोड़ने के लिए यह टैंक काम में लाया गया था।

भारत की वायुसेना ने पैटन टैंकों को नष्ट करने में अपूर्व दक्षता का परिचय दिया है। स्वयं अमरीकी सैन्य-विशेषज्ञों को भारत की इस प्रहार-शक्ति पर आश्चर्य हो रहा है। यदि यह सच है कि भारत ने पाकिस्तान के २८४ टैंकों को विनष्ट या हस्तगत कर लिया है, तो सचमुच यह हमारी सेना का चमत्कारी कार्य है।

नौशक्ति—द्वारका और ओखा पर गोलाबारी करके पाकिस्तान ने अपनी नौशक्ति का उपयोग भी अरब सागर में किया है। उसकी नौशक्ति में अमरीका द्वारा बिना मूल्य दी गयी एक पनडुब्बी भी शामिल है। इसका नाम पहले 'डायबल' था और अब यह 'गाजी' नाम से विध्वंस कार्य करेगी। पाकिस्तान के पास एक क्रूजर, दो फ्रिगेट, पांच डिस्ट्रायर, आठ बारूदी सुरंग उड़ानेवाले जहाज (माइन स्वीपर) भी हैं।

सैनिक उपकरणों में श्रेष्ठ होते हुए भी पाकिस्तानी सेना को किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं मिल रही है। इसके दो कारण प्रतीत होते हैं। प्रथम यह कि उन उपकरणों का ठीक उपयोग करने की योग्यता न तो पाकिस्तानी आर्टिलरी में है, न विमान-चालकों में। अमरीका के सैनिक शिक्षकों ने पाकिस्तानी सेना के प्रशिक्षण में शायद वैसी दिलचस्पी नहीं ली, जैसी वे अपने देश के सैनिकों की शिक्षा में लेते हैं। दूसरा यह कि पाकिस्तानी सरकार के सेनापति मुफ्त में मिले उन हथियारों का उपयोग लापरवाही से कर रहे हैं,।

हमारे जवान अपने ही देश में बड़ी मेहनत से तैयार किये गये अथवा भारी कीमत चुकाकर विदेशों से खरीदे गये उपकरणों का जैसा पूर्णतम उपयोग कर रहे हैं और अपने छोटे, कमखर्च हथियारों की जो आश्चर्यजनक प्रहार-शक्ति सिद्ध कर रहे हैं, वह सैनिक इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा। हमें तो अपने पूर्वजों के इस अमर वाक्य पर विश्वास है—सतां सिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे, अर्थात् महान व्यक्तियों की शक्ति उपकरणों में ही नहीं, अपितु उनके सत्व में, आंतरिक सामर्थ्य में होती है। (१५-९-६५)

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब दवाएं जानलेवा बन जायें

आशालता शर्मा

आप बहुत बेचैन हैं। इधर-से-उधर करवट बदलती हैं। घड़ी की सुई रात के बारह बजाकर आगे खिसक रही है। मगर आंखों में नींद का नाम नहीं। भयानक सिर-दर्द। अब नहीं सहा जाता। तकिये के नीचे से आप एक पैकेट निकालती हैं और दो गोलियां गले के नीचे उतार लेती हैं। आंखें झपकने लगती हैं। थोड़ी ही देर में आप सो जाती हैं। ..... और आपकी आंखें तब खुलती हैं, जब आप देखती हैं कि आपके नवजात शिशु की तो दोनों बांहें ही गायब हैं।

बेल्जियम के लीज नगर का एक जनाना अस्पताल। सैंजा वांदेपुत-काइपेल नामक एक खूबसूरत टाइपिस्ट ने एक लड़की को जन्म दिया। बड़ी-बड़ी आंखोंवाली उस लड़की ने पैर तो पटके; मगर हाथ?...हाथ तो गायब थे। "मैं इसे जीने नहीं दूंगी... नहीं जीने दूंगी।" अभागी मां बिलकुल पागलों की तरह चीखने लगी। डाक्टर-नर्सों ने बहुत समझाया; मगर वह एक ही रट लगाये थी—"मैं इसे जीने नहीं दूंगी।"

यह उसकी पहली संतान थी और वह भी ऐसी कि गलबहियां डालकर झूल न सके, नन्हे-नन्हे हाथ बढ़ाकर गोदी में आने के लिए मचल न सके। बड़ी हो, तो कोई शादी के लिए तैयार न हो। युवती सोच रही थी—"बिना बांहवाली को कौन बांह देगा? जब उसकी उम्र की अन्य लड़कियां अपने साथियों के साथ नाचती-कूदती होंगी, तरह-तरह के खेलों में व्यस्त होंगी, वह दूर किसी कोने में बैठी टकुर-टुकुर आसमान की ओर ताक रही होगी।..... शायद कोई शरारती उसे धक्का मार दे और वह कटे पेड़-सी नीचे गिर पड़े। बिना हाथों के वह मेरी तरह टाइपिस्ट भी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बन सकती !".....और जिस दिन अस्पताल से छुट्टी मिली, उसी दिन बेटी की दूध की बोतल में एक दस्तावर दवा की प्राणघातक खुराक डालकर, मां ने हमेशा के लिए उसकी छुट्टी कर दी।

असाध्य और असह्य यंत्रणा से छुटकारा दिलाने के लिए किसी की जान ले लेना (यूथेनेसिया) अपराध है या नहीं, यह अभी विवादास्पद है। मगर उस टाइपिस्ट मां, उसके पति, उसकी मां और बहन को भी हत्या के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया।

बाद में पुलिस ने एक डाक्टर को भी गिरफ्तार किया। क्यों ? क्योंकि जब वह टाइपिस्ट गर्भिणी थी, तो डाक्टर साहब ने बेचैनी और अनिद्रा की शिकायत दूर करने के लिए 'थैलिडोमाइड' की गोलियां तजवीज की थीं।

यही गोलियां एरिजोना (अमरीका) की श्रीमती फिंकबाइन का भी हृदय भेद गयीं। जब इस मां को पता चला कि वह जिस पांचवीं संतान के शुभागमन की प्रतीक्षा कर रही है, वह लंगड़ी-लूली हो सकती है, क्योंकि वह लगभग प्रतिदिन ही थैलिडोमाइड का सेवन करती रही है, तो उसने फैसला कर लिया कि वह इस बच्चे की मां नहीं बनेगी। लेकिन एरिजोना में गर्भपात करना जुर्म है। अतः श्रीमती फिंकबाइन ने स्वीडन जाने का निर्णय किया।

मगर न जाने कहां-कहां से उसके पास तार-पर-तार और पत्र-पर-पत्र पहुंचने लगे कि इस पांचवें बच्चे का पालन हम करेंगे; बच्चा लूला ही क्यों न पैदा हो, वह जियेगा.....कृपया भ्रूणहत्या न करें। चालीस गोलियां खा चुकने के बाद अचानक श्रीमती फिंकबाइन की नजर एक वैज्ञानिक लेख पर पड़ गयी, जिसमें बताया गया था कि थैलिडोमाइड का सेवन करनेवाली गर्भिणियां बिना हाथ और कभी-कभी बिना पांव की संतानें जन रही हैं। नहीं तो उन्हें भी तभी पता चलता, जब लूलों की तालिका में एक और अभागा नाम जुड़ गया होता।

यह सिलसिला सन १९५७ से शुरू हुआ, जब एक जर्मन कंपनी ने 'सुख की नींद सुलानेवाली दवा' का सेहरा बांधकर थैलिडोमाइड को बाजार में पेश किया। और भी कई गुण इस दवा के गिनाये गये—मसलन गलती से इसकी ज्यादा खुराक ले लेने पर भी कोई घातक प्रभाव नहीं होता और इसकी लत भी नहीं पड़ती, यानी यह बात नहीं कि आपको फिर बिना थैलिडोमाइड के नींद ही न आये। बड़ा प्रचार हुआ। महीने-भर के भीतर अकेले जर्मनी में ही १।। करोड़ गोलियां खप गयीं। देखते-ही-देखते कोई उनचास नामों के बिल्ले लगाकर यह दवा दुनिया के सभी देशों में फैल गयी।

साथ ही लंगड़ी-लूली संतानों के जन्म की वारदातें भी दिनों-दिन बढ़ती गयीं। जहां-तहां विकलांग बच्चे पैदा होने लगे। ये सब 'फोकोमेलिया' के शिकार थे। फोकोमेलिया एक जन्मजात रोग है। इसमें ऐसा लगता है, जैसे नवजात शिशु की बांहें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

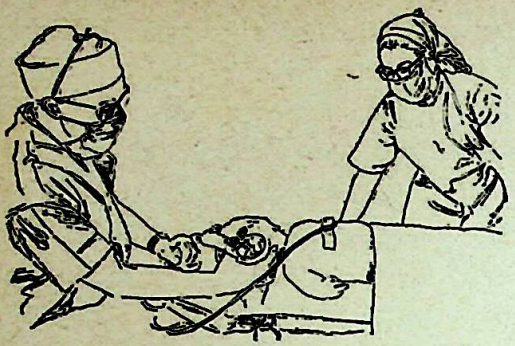

हजारों में एक

सत्रह महीने के एक अभागे शिशु स्टीफन काल को आपरेशन के लिए तैयार किया जा रहा है। इसकी मां ने भी गर्भिणी अवस्था में थैलिडोमाइड का सहारा लिया था। फलस्वरूप यह शिशु पूर्ण विकसित बांहों से वंचित रह गया। उसकी कलाइयां जैसे सीधे कंधे से जोड़ दी गयी थीं। यह उन पांच हजार बच्चों में से एक था, जो थैलिडोमाइड के शिकार हुए। फिनलैंड के डा० मैटी सुलामा ने शल्यक्रिया द्वारा इस बच्चे के हाथ और कंधे के बीच की हड्डी को लंबी करके उसे लूलेपन की जीवन-भर की यंत्रणा से मुक्त कर दिया। किंतु सभी बच्चे स्टीफन काल जितने भाग्यवान नहीं थे।

काटकर उसके हाथ सीधे कंधों से ही चिपका दिये गये हों—सील मछली की तरह। कुछ की टांगें 'अष्टावक्र' की तरह मुड़ी हुई थीं। ऐसी एक-दो नहीं, सैकड़ों-हजारों घटनाएं हुईं और हर घटना के साथ जुड़ा हुआ था थैलिडोमाइड का नाम।

गर्भस्थ शिशु के हाथ-पांव का निर्माण दूसरे महीने से आरंभ होता है। जो गर्भिणियां उन दिनों थैलिडोमाइड का सेवन कर रही होती हैं, उनके शरीर में प्रवेश करते ही इस नींद की दवा की कुटिल दृष्टि शिशु के हाथ-पांव पर पड़ जाती है। बाद में विश्लेषण से पता चला कि भ्रूण की हाथ-पांव बनानेवाली कोशिकाएं थैलिडोमाइड को ग्लूटेनिक एसिड या विटामिन-बी समझ बैठती हैं और उसे आत्मसात् करके उपयोग में लाने लगती हैं। वास्तव में असर उसका बिलकुल उलटा होता है और उन कोशिकाओं की वृद्धि रुक जाती है। इससे कुछ वैज्ञानिकों ने कल्पना की कि शायद कैंसर-ग्रस्त कोशिकाओं का बढ़ना भी थैलिडोमाइड से रोका जा सके; लेकिन यह धारणा निराधार निकली।

जर्मनी ने नवंबर १९६१ में, इंग्लैंड ने दिसंबर १९६१ में और कनाडा ने मार्च १९६२ में थैलिडोमाइड की बिक्री को जुर्म करार दे दिया। अमरीकी विशेषज्ञों के अनुसार अकेली थैलिडोमाइड के कारण ५,००० से भी अधिक विकलांग बच्चे जन्म ले चुके हैं। मगर संयुक्त राज्य अमरीका में मामला इतनी आसानी से नहीं निबटा। वहां की एक नामी कंपनी ने 'केवाडोन' नाम से थैलिडोमाइड दवा बेचने के लाइसेंस के लिए केंद्रीय खाद्य एवं औषध प्रशासन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को अर्जी दी। जब अर्जी प्रशासन की एक उच्च पदाधिकारी श्रीमती केल्से के पास पहुंची, तो वे चौदह महीने तक स्वीकृति देने में टालमटोल करती रहीं। इस अर्से में उन्होंने थैलिडोमाइड पर उठाये गये आक्षेपों और उसके विषय में विदेशों में की गयी सरकारी कार्रवाइयों का पूरा ब्योरा एकत्र कर लिया।

इसी बीच उधर जर्मनी में 'कोंटरगेन' के नाम से थैलिडोमाइड 'फोकोमेलिया' को महामारी का रूप दे चुकी थी। आस्ट्रेलिया, स्काटलैंड, स्वीडन, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड, लेबनान, इजरायल और पेरू से दर्दनाक खबरें मिल रही थीं। फिर कंपनी ने खुद ही अर्जी वापस ले ली। स्व० केनेडी ने श्रीमती केल्से को उनकी दृढ़ता और कर्तव्य-परायणता के लिए 'राष्ट्रपति-पदक' प्रदान किया था। दो बच्चों की इस मां ने न जाने कितनी माताओं को मानसिक क्लेश से बचा लिया।

सन १९३८ में अमरीका में 'डाइएथिलीन ग्लाइकोज' नामक दवा ने १०० आदमियों की जान ले ली थी, तब कानून ने करवट ली और 'फेडरल फूड, ड्रग एंड कास्मेटिक एक्ट' बना। १९५७ के आखिरी दिनों में फ्रांस में 'स्टालिनोन' नामक औषध ने हत्याकांड मचाया। इसमें मौजूद 'डाइ-आयडोएथिल' नाम के यौगिक ने १०२ जानें लीं और १०० मनुष्यों को हमेशा के लिए निकम्मा बना दिया। १९५९ में वहां भी एक कानून बनाया गया। अमरीका में १९५१ में कैंसर के लिए प्रचलित 'कैवि-ओजेन' दवा को पिछले दिनों वहां के नेशनल कैंसर इंस्टिट्यूट ने परीक्षणों के बाद जब व्यर्थ घोषित किया, तो उसका निर्माण करनेवाली फर्म का लाइसेंस तुरंत रद्द कर दिया गया।

मगर हमारे देश में अभी यह स्थिति है कि डा० राममनोहर लोहिया बच्चों के दांत निकलने में सुविधा करने और उन्हें पुष्ट बनाने का दावा करनेवाली एक दवा के विरुद्ध संसद् में आंकड़े और ठोस प्रमाण पेश करते हैं और यह भी बताते हैं कि एक राज्य सरकार ने उस दवा पर प्रतिबंध लगा दिया है, तो भी कुछ नहीं होता। न खलबली मचती है, न किसी का लाइसेंस रद्द होता है और दूसरी खबरों की तरह इस खबर को भी हम खामोशी से सह लेते हैं।

★

पिछले वर्ष जनवरी में हम अपने एक ट्रेनिंग कोर्स के सिलसिले में पटियाला गये थे। एक दिन हम सब अध्यापक राष्ट्रीय क्रीड़ा संस्थान देखने गये। वहां संचालक महोदय ने हमारा स्वागत किया और एक-एक करके सभी कार्यक्रम दिखलाये। इसी बीच वे हमें हाकी के मैदान में ले गये, जहां श्री ध्यानचंद खिलाड़ियों को हाकी सिखा रहे थे। उनसे हमारा परिचय कराया गया। परिचय के बाद, ध्यानचंद की हाकी की ओर इंगित करके मैंने पूछा—"क्या अभी भी इसमें चुंबक है ?" वे कुछ मौन रहकर मुस्कराये और बोले—"अब तो शरीर का चुंबक भी चला गया है"

—फकीरचंद त्यागी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आणविक विश्लेषण और संश्लेषण की जादूगर

डोरोथी हाजकिन

स० बा० शर्मा

समय, द्वितीय महायुद्ध के दिन। पेनिसिलिन का आविष्कार हो चुका था। वह दवा कितने ही रोगों के इलाज के लिए वरदान सिद्ध हो रही थी। उसके प्रयोग से रोगियों को थोड़े समय में स्थायी आराम मिलने लगा था। चिकित्सा-व्यवसाय में उसकी मांग दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी। और फिर मोर्चे पर बड़ी तादाद में भीषण रूप से घायल होनेवाले सैनिकों की प्राणरक्षा के लिए तो उसकी बहुत आवश्यकता थी।

परंतु १९४२ में पेनिसिलन का उत्पादन बहुत ही कम था और यह महसूस होने लगा था कि जिस तरीके से उसका निर्माण किया जाता है, उससे तो बढ़ती हुई मांग को पूरा नहीं किया जा सकेगा। दवा का उत्पादन बढ़ाने और उसे सस्ता बनाने के लिए तरह-तरह की युक्तियां आजमायी जाने लगीं। एक युक्ति यह थी कि पेनिसिलिन का उत्पादन कृत्रिम विधि से अर्थात् रासायनिक संश्लेषण द्वारा किया जाये।

परंतु जब तक पेनिसिलिन की आणविक (मालिक्युलर) रचना ठीक-ठीक मालूम न हो जाये—अर्थात् जब तक यह ज्ञात न हो जाये कि पेनिसिलिन के एक अणु में कौन-कौन-से तत्वों (एलिमेंट) के परमाणु हैं, कौन-कौन से परमाणु कितनी संख्या में हैं, और वे दायें-बायें, ऊपर-नीचे व आगे-पीछे किस तरह व्यवस्थित हैं, तब तक संश्लेषण द्वारा पेनिसिलिन के कृत्रिम-निर्माण की विधि हाथ नहीं लग सकती थी।

यही नहीं, आणविक रचना यानी रासायनिक रचना के ठीक-ठीक ज्ञान के बिना, न तो पेनिसिलिन के असर से शरीर के भीतरी पदार्थों में होनेवाले परिवर्तनों-प्रभावों को ठीक-ठीक जाना जा सकता था और न ही पेनिसिलिन-परिवार की दूसरी दवाओं का उत्पादन हो सकता था।

इसलिए पेनिसिलिन की आणविक रचना का पता लगाने के लिए अमरीका और ब्रिटेन में विज्ञानियों की अनेक टोलियां जी-जान से जुटी हुई थीं। इन टोलियों में से एक की अगुआ थीं—श्रीमती डोरोथी क्रोफुट हाज्किन, जो आक्सफर्ड विश्वविद्यालय की 'रासायनिक स्फटिक-चित्रण प्रयोगशाला' (केमिकल क्रिस्टलोग्राफी लैबोरेटरी) में प्राध्यापिका थीं।

विभिन्न टोलियां पेनिसिलिन की आणविक रचना के संबंध में जो प्रमाण-सामग्री और अनुमान प्रस्तुत कर रही थीं, वे परस्पर मेल नहीं खाती थीं और इस प्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ भी निश्चय नहीं हो पा रहा था।

जब विज्ञान के दूसरे सभी हथियार इस गुत्थी को सुलझाने में नाकामयाब साबित हो रहे थे, तब डा० डोरोथी हाज्किन और उनके सहयोगियों ने दिखा दिया कि क्ष-किरणों की मदद से यह गुत्थी सुलझायी जा सकती है। पेनिसिलिन के स्फटिक में से क्ष-किरणें गुजारने पर स्फटिक में स्थित परमाणुओं से टकरा-कर क्ष-किरणों का जो बिखराव-फैलाव (डिफ्रैक्शन) होता है, उसके फोटोग्राफों का अध्ययन करने से यह निश्चित रूप से मालूम हो जाता है कि पेनिसिलिन के अणु में दायें-बायें, ऊपर-नीचे और आगे-पीछे की दिशाओं में परमाणु किस तरह व्यवस्थित हैं।

पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके

ऐसे अध्ययन को 'क्ष-किरण स्फटिक-चित्रणशास्त्र' कहते हैं; और इसके द्वारा हाज्किन ने १९४८ में पेनिसिलिन की आणविक रचना का पूर्ण और सही चित्र विज्ञान जगत् के सामने प्रस्तुत कर दिया।

किंतु यही श्रीमती हाज्किन की पहली सिद्धि नहीं थी। इसके पूर्व क्ष-किरण-स्फटिक विश्लेषण के द्वारा ही वे शरीर के भीतर पाये जानेवाले स्टिरोलों, प्रोटीनों और दूसरे जैविक अणुओं की भी 'त्रिविस्तरीय रासायनिक रचना' की जानकारी दुनिया को दे चुकी थीं। सन १९४५ में उन्होंने कोलेस्टेरोल की आणविक रचना का पता लगाया था। इससे १२ साल पहले, जब वे कैंब्रिज विश्वविद्यालय की नयी 'एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी प्रयोगशाला' में काम करती थीं, उन्होंने प्रोटीन के बारे में नयी बातों का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पता चलाकर विज्ञान का भंडार भरा था।

कोलेस्टेरोल और पेनिसिलिन पर प्रोफेसर हाज्किन के कार्य का मूल्यांकन करते हुए प्रख्यात विज्ञानी प्रो० डब्ल्यू० एल० ब्रेग ने कहा है—"श्रीमती हाज्किन का कार्य बहुत कुछ वैसा ही है, जैसाकि विमानों की गति को निरंतर तीव्रतर बनाने के क्रम में आनेवाली ध्वनिबाधा (साउंड बैरियर) को पार करने का काम था।"

प्रो० हाज्किन ने अपने विस्तृत ज्ञान, विशाल अनुभव, अद्भुत दाक्षिण्य, ज्वलंत साहस, अथक प्रयत्न, यथार्थोन्मुख कल्पना, ऋषियों-जैसी विलक्षण प्रतिभा, कठिन-से-कठिन चुनौतियों को स्वीकार करनेवाली तथा सप्ताह-मास-वर्षों तक को पी जानेवाली गणना-क्षमता से 'एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी' को नया विस्तार दिया और 'जीवन-रसायनशास्त्र में नये अध्याय का श्रीगणेश किया।

उनके खोज-कार्य से अनेक शरीर-गत जैविक पदार्थों की रासायनिक रचना को जानना, शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओं में उनके योगदान को समझना और रासायनिक संश्लेषण द्वारा उनका निर्माण करना आसान हो गया।

पेनिसिलिन की रचना का उन्होंने पता लगाया ही था कि चिकित्सा-जगत् में विटामिन बी-१२ की धूम मच गयी। इसकी मांग पेनिसिलिन से भी ज्यादा थी; क्योंकि यह 'पर्निशस एनीमिया' का कारगर इलाज है। 'पर्निशिस एनीमिया' रक्तहीनता रोग का एक प्रकार है, जो खान-पान में विटामिन बी-१२ की कमी के कारण होता है। दुनिया में काफी लोग इस रोग से पीड़ित हैं।

सन १९४८ में प्रो० हाज्किन ने विटामिन बी-१२ की आणविक रचना पता लगाने का काम हाथ में लिया। उसी वर्ष उन्होंने इसके स्फटिक का प्रथम 'क्ष-किरण बिखराव फोटो' तैयार किया और खोज शुरू कर दी। बाद में उन्होंने इस समास के सैकड़ों-हजारों 'एक्स-रे' फोटो खींचे और उनकी मदद से परमाणु-व्यवस्था के हजारों 'कंटूर-नक्शे' अनुमान और कल्पना के आधार पर तैयार किये। वर्षों तक उन्होंने अनगिनत गणनाएं कीं; परंतु १९५४ तक कुछ भी परिणाम हाथ न लगा।

वास्तव में विटामिन बी-१२ के अणु की रचना बड़ी जटिल है। उनमें १८३ परमाणु होते हैं। ये १८३ परमाणु स्थान-ग्रहण के भेद से हजारों प्रकार से व्यवस्थित हो सकते हैं। विटामिन बी-१२ के अणु में वे किस प्रकार और कहां-कहां व्यवस्थित हैं, यह पता लगाने के लिए इंग्लैंड, अमरीका और हालैंड के विज्ञानी जी-तोड़ श्रम कर रहे थे।

श्रीमती हाज्किन ने जब १९५४ में अपने प्रयोगों के प्रथम परिणाम प्राप्त किये, तब तक इस विटामिन की आणविक रचना में उपस्थित कई परमाणु-समूहों को पहचाना जा चुका था। परंतु अणु के बीच में कोबाल्ट धातु-युक्त जो जटिल और अनजानी रचना थी, वह पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर सात वर्ष के अथक और सूझपूर्ण परिश्रम के फलस्वरूप १९५५ में श्रीमती हाज्किन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विटामिन बी–१२ की संपूर्ण रचना का स्पष्ट चित्र पेश करने में सफल हो गयीं।

आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी के जिन विज्ञानियों ने 'सेपोरिन' नामक चमत्कारी एंटीबायोटिक दवा का विकास किया, उनमें डोरोथी हाजकिन भी एक थीं। हाल के वर्षों में, उन्होंने विटामिन डी-२ और ग्रामेसिडिन एवं सेफालोस्पोरिक नामक एंटीबायोटिक दवाओं की रचना तथा इन्सुलीन पर काम किया है।

मुख्यतया पेनिसिलिन तथा विटामिन बी-१२ की, एवं सामान्यतया अन्य जैविक अणुओं की रासायनिक रचना मालूम करने के लिए ही ५४ वर्षीय श्रीमती हाज्किन को १९६४ का रसायनशास्त्र का नोबेल-पुरस्कार प्रदान किया गया है। रसायनशास्त्र में यह प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाली आप तीसरी महिला हैं। पहली थीं मदाम क्यूरी, जिन्हें १९११ में रेडियम की उपलब्धि के लिए यह पुरस्कार मिला। दूसरी थीं मदाम क्यूरी की बेटी आइरीन जोलियो-क्यूरी, जिन्हें उनके पति जां फ्रेडरिक जोलियो के साथ १९३५ में यह सम्मिलित रूप से मिला।

आपको रानी एलिजाबेथ द्वितीय ने इसी साल 'आर्डर आफ मेरिट' पदक से विभूषित किया है, जो ब्रिटेन के शासकों द्वारा दिये जानेवाले सर्वोच्च सम्मानों में से है। १९४७ में आप रायल सोसायटी की फेलो चुनी गयी। कई विश्वविद्यालयों ने आपको डाक्टरेट की पदवी से सम्मानित किया है।

डोरोथी क्रोफुट का जन्म काहिरा में हुआ था। उन दिनों आपके पिता मिस्र के शिक्षा-मंत्रालय में काम करते थे। पुरातत्व-शास्त्र में दिलचस्पी डोरोथी क्रोफुट को अपने पिता से विरासत में मिली। गर्मी की छुट्टियों का काफी हिस्सा उन्होंने निकट पूर्व में खुदाई-कार्यों में व्यतीत किया है। १९-३५ में उनका विवाह इतिहासज्ञ टामस हाज्किन से हुआ।

आप १९३५ से सामर्वेल कालेज, आक्सफर्ड में प्रोफेसर हैं। विद्यार्थी-जीवन भी आपने यहीं बिताया था। बंधुभाव आपके जीवन का विशेष गुण है, और बड़े-छोटे सभी आपको 'डोरोथी' कहकर पुकारते हैं, जो यूरोप में प्रोफेसरों के लिए एक असाधारण बात है। इतनी ही असाधारण है उनकी एकाग्रता–घर में पोते-दोहते कितनी ही उछल-कूद मचा रहे हों, वे तल्लीन होकर वैज्ञानिक कार्य करती रह सकती हैं। आपकी तीन संतानें हैं, जिनमें से एक भारत में सामाजिक कार्य करती हैं।

नोबेल-पुरस्कार की घोषणा के समय आप घाना में अपने पति टामस हाज्किन से मिलने गयी हुई थीं। टामस घाना यूनिवर्सिटी के इंस्टिट्यूट आफ आफ्रिकन स्टडीज के डायरेक्टर हैं। ढाई लाख रुपये के नोबेल पुरस्कार की प्राप्ति का समाचार सुनते ही डोरोथी ने कहा–"इस धन का उपयोग मैं आक्सफर्ड में एक नयी छात्रवृत्ति चलाने के लिए करना चाहती हूं; और इससे मैं शांति-की स्थापना तथा अकाल-पीड़ितों के कष्ट-मोचन के कार्यों में भी सहायता दूंगी।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिद्ध करो फिर से कि.....

हिंसा-अहिंसा के दर्शन को सोने दो फूलों की गोद में
ऐसे अनेक तर्क-पुंगव मिलेंगे जो, अपने सरकने की राह ढूंढ़ लेते हैं
सात्विक विनोद में।
किंतु यह सत्य है, होते यदि गांधी आज
आंधी प्रचंड एक दौड़ती बिठाकर, समस्त राष्ट्र-शौर्य को
अपने अजेय वेगवत्तम झकोर पर,
तैरते तटस्थ वृक्ष हुंकृत हिलोर पर,
उड़ते पहाड़ तम-तोम को पछाड़
व्याघट्टित हिरण्यबाहु, ब्रह्मपुत्र
उठते, उमड़ते, पुकारते, पुकारती हर-हर हरशेखरा।
एक-एक कण से अनेक युद्ध-विक्रांत
अर्जुन, प्रताप नर-नाहर अवतार लेते,
कलियां कराल-विकराल जयघोष से
उद्धत दिशाओं के चंड-मुख फोड़तीं
तरुण प्रसून खड्ग, वज्र शतधार लेते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा फिर से प्रवृत्त करो,
सिद्ध करो फिर से कि भारत-वसुंधरा वीर-सू प्रसिद्ध है
अपरापरण नहीं ।
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा
फिर से चलाओ, जलाओ अखंड-दीप त्याग, उत्सर्ग का ।
मूर्तियां अनेक, किंतु आंखों के सामने आज मूर्ति एक ही,
मूर्ति वह स्वदेश की ।
हमने सदैव इस मूर्ति में निहारा है
अमित अनंत सौंदर्य-ऐश्वर्यमयी
अर्चनीय अमला समर्चनीय कमला को
ताल-ताल हर्षोच्छल उत्पल-दल सजला को
परमा पयस्विनी यशस्विनी ज्वलंती को
गरिमा-गिरा को जयंती-वैजयंती को ।
किंतु, आज हिम-शुभ्र अंचल इस मूर्ति का रोहित है, लोहित है,
और सौम्य रूप में रूप हम विलोकते
जन-मन-मानस की झंझाकुल-वेगिनी हुताशिनी-हिलोर का
जिस पर मंजीर-चरण पन्नग-नग-वलया-सी
उतर रही कोई अपरिचित भवानी ।
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा करती उद्घोषणा—
सावधान, उतरी है शंकर की शक्ति नयी इस पवित्र भूमि पर;
विष्णु से पुकार कहो, असुर-शिरोहर सहस्रार चक्र दें,
कह दो विभावसु से, शक्ति दें शतघ्नी,
मारुत शर-चाप दिव्य, यम काल-दंड दें,
रश्मि दें दिवाकर, महेंद्र पवि प्रचंड दें
मंगलमय घोर-रव शंख दें वरुण और
धनपति सुवर्ण दें, परशु विश्वकर्मा ।
प्राणमय प्रवर्तन की परिभू-परंपरा करती उद्घोषणा—
कटने दो लपटों को, बढ़ने दो लपटों को,
चढ़ने दो लपटों को, ऊपर हिमालय के ।

—केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवा के लिए सदा सजग

कर्मनिरत अनासक्ति, करुणासिक्त शक्ति से देदीप्यमान एक पौरुषमय नारीमूर्ति ।

लाहौर में रावी के तट पर पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुई १९२९ की ऐतिहासिक कांग्रेस में जालंधर कन्या महाविद्यालय की स्वयंसेविकाओं का एक दल गया था । एक दिन दुर्घटनावश इनमें से एक स्वयंसेविका रावी में डूबने लगी । तुरंत एक दूसरी स्वयंसेविका अपने प्राणों को संकट में डालकर नदी में कूद पड़ी और अपनी सहेली को मृत्यु मुख से उबार लायी ।

०००

चमारों और भंगियों को गांव के कुंओं से पानी भरने की मनाही थी, यद्यपि उन्हीं कुओं से मुसलमान पानी भर सकते थे ! बेचारे हरिजनों की यह दुर्दशा और सवर्ण हिंदुओं का यह क्रूर अत्याचार उस विधवा युवती से सहा नहीं गया । उसने गांव के लोगों को एकत्र कर उनसे अपील कि हरिजनों को पानी भरने दें । मगर सनातनी पुरोहित के बहकाने से गांव के वृद्ध-जन विरोध में उठ खड़े हुए । जब समझाने-बुझाने का कोई असर नहीं पड़ा, तो वह युवती गांव के चंद सुधार-प्रेमी तरुणों के साथ हाथ में लाठी लेकर खड़ी हो गयी और ललकारकर बोली—"मैं देखती हूं, कौन मेरे हरिजन भाइयों को कुएं पर पानी भरने से रोकता है ?" यह भवानी-रूप देखकर विरोध के सांप ने अपना फन समेट लिया ।

०००

सेवा और आत्मबल

अगस्त सन १९४२। देश में स्वातंत्र्य-संग्राम जोरों पर था । कोटा शहर में उथल - पुथल मची हुई थी । जगह-जगह गोलियां चल रही थीं । कोई आदमी गलियों में न दिखाई देता था । किसी मोहल्ले की एक स्त्री को ऐसे समय प्रसव-पीड़ा होने लगी। शहर में सारा यातायात ठप था । घर से बाहर कदम रखने का अर्थ था, आफत मोल लेना । ऐसे में अस्पताल जाना और डाक्टर को बुला लाना मर्दों के भी बस का काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं था। किंतु उस महिला को छटपटाते देख एक पड़ोसिन से नहीं रहा गया। वह घर से निकली और प्रसिद्ध समाज-सेवी डा० मोहनलालजी को दूसरे मोहल्ले से बुला लायी। दो प्राण संकट में पड़ने से बच गये।

०००

नारी के शिवमय रूप की ये तीन भव्य झांकियां कोटा की स्वर्गीय शिवदेवी शास्त्री की जीवन-पोथी में से हैं।

श्रीमती शिवदेवी उन व्यक्तियों में से थीं, जिन्होंने जीवन को एक व्रत समझा और उस व्रत को घंटे-घड़ियाल, धूप-दीप के आडंबर के साथ नहीं, अपितु मौन उपासना के रूप में निभाया। महिला-पत्रिकाओं के मुखपृष्ठों पर उनके चित्र नहीं छपे; न उन्होंने महिला-सम्मेलनों में धुंआधार भाषण दिये। उनकी लगन ठोस काम करने में थी। वे निष्काम समाज-सेविका और आदर्श शिक्षिका थीं।

शिवदेवीजी का जन्म जिला मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) के सदरपुर ग्राम के एक सामान्य जमींदार चौधरी रूपचंदजी के घर १९०० में हुआ। चौधरीजी पढ़े-लिखे न होते हुए भी ऋषि दयानंद और आर्य समाज के प्रभाव के कारण अन्य ग्रामवासियों से अधिक पुरोगामी थे। उन्होंने उस जमाने में भी, जब कन्याओं को पढ़ाना-लिखाना महापातक समझा जाता था, शिवदेवी को गांव के लड़कों के स्कूल में भरती करा दिया।

इस स्कूल में चौथी तक ही पढ़ाई होती थी; मिडिल के लिए बाहर जाना पड़ता था। सामाजिक मान-मर्यादा और पारिवारिक कारणों से चौधरीजी ने बेटी को पढ़ाई के लिए बाहर भेजने का विचार छोड़ दिया। कुछ समय बाद शिवदेवी विवाह करके पतिगृह चली गयीं।

किंतु उनके पति बहुत छोटा आयुष्य लेकर आये थे; और प्रथम महायुद्ध के बाद उनके माता-पिता भी गुजर गये। उनके छोटे-छोटे भाई अनाथ हो गये। उनकी देख भाल एवं पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठाने के लिए वे पीहर चली आयीं। भाइयों के लिए उन्होंने पति की जायदाद का मोह भी छोड़ दिया।

लेकिन भाइयों का पालन-पोषण ही उनकी दृष्टि में सब कुछ नहीं था। वे अनुभव करती थीं कि जीवन इससे कहीं बड़ी और ऊंची चीज है। आगे पढ़ने की उनमें तीव्र अभिलाषा थी। इसलिए ज्यों ही एक भाई घर-बार संभालने योग्य हो गया, वे सब उत्तरदायित्व उसे संभलाकर लाला देवराजजी द्वारा स्थापित विख्यात आर्य-समाजी शिक्षा-संस्था कन्या महाविद्यालय, जालंधर में छात्रा के रूप में भरती हो गयीं और १९३१ में वहां से स्नातिका हुईं।

परिवार के प्रति तो वे अपना कर्तव्य पूरा कर ही चुकी थीं; इसलिए उन्होंने आर्य-समाज के कार्यों और उसमें भी विशेषतः नारी-शिक्षा के लिए जीवन अर्पित करने का निश्चय कर लिया था। तभी उनके पास कोटा से कन्या महाविद्यालय की एक और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्नातिका डा० रामप्यारीजी (वर्तमान आचार्या, कन्या महाविद्यालय, जालंधर) का बुलावा आ पहुंचा। सेवा के लिए इतनी अच्छी जमीन मिलना मुश्किल था।

शिवदेवीजी कोटा पहुंचीं और कोटा की ही हो गयीं। अगले तीस वर्षों में मातृसेवा-सदन, नारी सेवाश्रम, अनाथाश्रम, शरणार्थी कलामंदिर आदि कितनी ही संस्थाएं उनकी आदर्श-निष्ठा और प्रबंध-कुशलता के बल पर पनपीं। परंतु जैसे इन संस्थाओं का कार्यभार ही काफी न हो, वे आर्यसमाज के उत्सव और नेत्रदान-यज्ञों के प्रबंध-कार्य तथा अस्पतालों के सेवाकार्य आदि के लिए भी फुरसत निकाल लेतीं। दरअसल जहां भी सेवा का मौका आता, शिवदेवीजी अपने आपको सबसे पहले हाजिर कर देती थीं। अगर कोई पूछता कि "बहनजी, क्या आप थकती नहीं ?" तो मुस्कराकर कहती थीं– "मुझे तो इसमें सुख ही दिखता है।"

ऐसी कर्मनिष्ठा किसे नहीं जीत लेगी? श्रीमती शिवदेवीजी शहर के सभी सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए बड़ी बहन के समान थीं। स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में उन्होंने काफी राजनीतिक काम किया, कितनी ही बार क्रांतिकारियों और भूगत राजनीतिक कार्यकर्ताओं को आश्रय भी दिया। किंतु कभी उन्होंने अपनी इन सेवाओं की फेहरिस्त तैयार नहीं की; न कभी प्रतिदान पाने का विचार किया।

शिक्षिका के रूप में वे छात्राओं की प्रिय भी थीं, श्रद्धाभाजन भी। शिष्याओं से वे मां की तरह स्नेह भी करती थीं, आवश्यकता पड़ने पर पिता की तरह दंड भी देती थीं और उनकी रक्षा भी करती थीं। आर्यसमाज, कोटा द्वारा संचालित मातृसेवा-सदन की छात्राओं को कुछ आवारा किस्म के लोग परेशान करने लगे। आर्यसमाज की गली में वे आ खड़े होते और जब लड़कियां निकलतीं, कुरुचिपूर्ण फब्तियां कसते थे। छात्राओं के लिए गली में से गुजरना दूभर हो गया। आखिर शिकायत शिवदेवीजी के पास पहुंची। फिर क्या था ! आदमकद लाठी हाथ में लिये वे गली में निकल आयीं और सारे मोहल्ले को सुनाई दे जाये, ऐसी बुलंद आवाज में कड़ककर बोलीं–"यहां चंडियां बसती हैं। आ जाओ, हिम्मत है तो ...अगर एक-एक का सिर न तोड़ दिया !" फिर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि किसी छात्रा से छेड़-छाड़ करे।

सेवा-भाव और आत्मबल की ऐसी जीवंत प्रतिमाएं ही भारतीय नारी को सच्चा नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं।

तड़पा कोई इन्साँ तू पुरसाँ न हुआ।
रोने पै किसी के कभी गिरियाँ न हुआ।
आलिम हुआ, फाजिल हुआ, एम० एम० भी पास हुआ।
सब कुछ हुआ ऐ दोस्त तू इन्साँ न हुआ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सचमुच ये विज्ञापन छपे थे

हरिमोहन शर्मा

क्या आप समाचार-पत्रों के संक्षिप्त विज्ञापनों के पृष्ठ पर 'व्यक्तिगत' शीर्षक के नीचे छपनेवाले विज्ञापन पढ़ते हैं? शायद नहीं। यदि आप नियमित रूप से इन विज्ञापनों को पढ़ें, तो बहुत-से ऐसे भी विज्ञापन मिल जायेंगे कि आप सोचने लगेंगे कि ऐसे अजीबो-गरीब विज्ञापन भी क्या पत्रों में सचमुच छप सकते हैं? पर यकीन मानिये कि रोज विश्व के किसी-न-किसी समाचार-पत्र में ऐसे संक्षिप्त व्यक्तिगत विज्ञापन प्रकाशित होते रहते हैं, जिन्हें पढ़-कर यह धारणा पक्की हो जाती है कि सच कल्पना से अधिक विचित्र है। ऐसे ही कुछ विज्ञापन यहां संग्रह किये गये हैं।

—लिंकन अमरीका का सबसे महान प्रेसिडेंट था, मैं ऐसा मानता हूं। जो साहब या साहिबा ऐसा न मानते हों, और बहस के लिए तैयार हों, वे मेहरबानी करके इस पते पर पत्र-व्यवहार करें। पता.....

—गाली-गलौज, मार-पीट, अपमान-अवहेलना सब कुछ चेहरे पर बिना शिकन लाये सहने का आदी, चालीस साल का सुसंस्कृत, सुशिक्षित व्यक्ति किसी धनी व्यक्ति का प्राइवेट सेक्रेटरी बनने और एक बार उनके साथ दुनिया की सैर करने के लिए प्रस्तुत है। पता.....

—मेरी जीवन-कहानी बड़ी दिलचस्प और असाधारण है। मैंने अपने निजी जहाज पर सारी दुनिया की यात्रा की है, दुनिया के सातों आश्चर्यों को देखा है और कई भीषण दुर्घटनाओं में से होकर गुजरा हूं। कोई भी नामी लेखक मेरी जीवन-कहानी लिखकर खूब पैसा कमा सकता है। मैं सिर्फ एक हजार रुपये में उसे अपनी कहानी सुनाने को तैयार हूं। आपकी रुचि हो, तो इस पते पर लिखिये.....

—'ना' ऐसे ढंग से कहना सीखिये कि सुननेवाले को कतई बुरा न लगे। युवतियां खास तौर पर मेरे कोर्स से बहुत लाभ उठा सकती हैं। कोर्स का शुल्क बहुत कम है। अधिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानकारी के लिए लिखिये.....

—दुर्भाग्य के नुकीले तीरों से मेरी रक्षा करने के लिए मुझे पत्नी के रूप में एक कर्मठ युवती की जरूरत है, जो जीवन के ऊंच-नीच से परिचित हो। पता.....

—मैं योग का विशेषज्ञ हूं। सिर नीचे, पांव ऊपर करके 'शावर-बाथ' लेना मुझसे सीखिये। पता.....

—खौफनाक फिल्में सपरिवार देखिये। आपकी सास को मुफ्त देखने दिया जायेगा। .....सिनेमा में तशरीफ लाइये।

—शोर-गुल का स्नायुओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानने के लिए हम कुछ प्रयोग कर रहे हैं, जिसके लिए हमें ऐसे लोगों की जरूरत है, जो तेज आवाज को घंटों तक सुनने-सहने के अभ्यासी हों। काम बड़ा दिलचस्प है; मगर हम कोई पारिश्रमिक नहीं दे सकेंगे। हम खुद पैसों के मोहताज हैं। बाक्स नं०.....

—तेज कार चलाने के शौकीन हैं; मगर इस बात से डरते हैं कि कार का पुर्जा गिर गया, तो उसे कौन संभालेगा? तो परेशान होने की जरूरत नहीं। हम आपकी सेवा के लिए प्रस्तुत हैं। हमारी कंपनी की गाड़ी आपकी कार के पीछे-पीछे चलती रहेगी और आपकी गिरी चीजें और पुर्जे उठाती रहेगी। बाक्स नं०.....

—दिवालिये हैं? आपके पुराने साथी आपसे कतराते हैं? आपकी शक्ल देखना भी पसंद नहीं करते? हमसे मिलिं। हमारे पास आपकी समस्या का इलाज है।

—बातचीत करना पहले एक कला थी। क्या उस कला के शौकीन अभी भी मौजूद हैं? यदि आप भी बातचीत करने के शौकीन हैं, तो आइये मुझसे कभी भी, किसी भी विषय पर, जब तक जी चाहे बातें कीजिये। मैं एक रिटायर्ड स्कूल-मास्टर हूं, और बात-चीत का शौकीन हूं। लिखिये...

—हम उस आदमी को पांच हजार देने को तैयार हैं, जो आंखें बंद करके पांच किस्म की सिगरेटों, काफियों और पेट्रोलों के सही नाम सिर्फ उन्हें चखकर बता सके। हमने विज्ञापन-जगत में ज्यादा ईमानदारी लाने के लिए जो अभियान चलाया है, यह प्रयोग उसका एक अंग है। बाक्स नं०.....

—घर छोड़ रहा हूं और छोड़ने से पहले अपने बगीचे के सब पौधे बेचना चाहता हूं। उस कमबख्त मकान-मालिक को तो मैं ये पौधे मुफ्त में देने से रहा। जल्दी कीजिये।

—"पांच साल पहले मैंने घुड़दौड़ का एक घोड़ा खरीदा था। उसका रेकार्ड है कि उसने आज तक कोई रेस नहीं जीती। कोई साहब उसे खरीदने को तैयार हो जायें, तो उसको बड़ा लाभ उठा सकते हैं; क्योंकि घोड़े में संभावनाएं बहुत हैं।

—अपने ड्राइंग रूप में बैठे-बैठे ही प्रकृति की गोद में पहुंच जाइये। 'वापस प्रकृति की ओर' अभियान में दिलचस्पी लेनेवाले हमारी पुस्तक मंगायें।

—लगभग ४० साल के पतले-दुबले टैक्सी-ड्राइवर से क्या आपने पिछले गुरुवार की रात को अपनी टैक्सी में एक दाढ़ीवाले से

अक्टूबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख-दुःख पर बातें की थीं ? यदि हां, तो नोट कर लीजिये, वह दाढ़ीवाला मैं ही हूं, और अपनी किताबों के बंडल के बिना परेशान हूं। मेरी परेशानी दूर करेंगे ? फोन..

—मुझे चिट्ठियां पाना और पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे किसी भी विषय पर चाहे जितनी लंबी-छोटी चिठ्ठियां लिखिये। आपकी चिट्ठियों का पता किसी तीसरे व्यक्ति को न लगेगा। मैं ५० साल की विधवा हूं और लोगों के कहने के अनुसार काफी सुंदर और बुद्धिमती भी हूं।

—हमें वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए ऐसे व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करना है, जिनका जन्म टेस्टट्यूबों में हुआ है। ऐसे व्यक्तियों से प्राप्त सभी सूचनाओं को एकदम गुप्त रखा जाएगा तथा उनके लिए समुचित पारिश्रमिक भी दिया जाएगा।

—क्या आपको कोई खास धुन सुने बिना नींद नहीं आती ? हम सोने से पहले फोन पर वह धुन आपको सुनवाकर सुला देंगे। बहुत कम फीस।

—विश्व में कितने उपन्यास-लेखक हो चुके हैं और हैं? मेरी सूची में वे उपन्यास-लेखक भी शामिल होंगे, जिनके उपन्यास किसी कारण से प्रकाशित नहीं हुए। यह सूची तैयार करने में मुझे आपके सहयोग की जरूरत है। पैसा तो नहीं दे सकूंगा; पर जन्म-भर आपका ऋणी अवश्य रहूंगा।"

★

दस्तानों का आविष्कार कब हुआ, यह कहना कठिन है। यूनानी इतिहासकार जेनोफेन (मृत्यु ३५९ ई० पू०) ने लिखा है कि ईरानी लोग दस्ताने पहनते थे। शायद ईरानियों से ही रोमनों ने दस्ताने पहनना सीखा होगा। ईसा की ७वीं सदी तक दस्ताने इंग्लैंड पहुंच चुके थे। तब हथेली के बाद उसकी दो शाखाएं होती थीं— एक अंगूठे के लिए, दूसरी शेष उंगलियों के लिए। यूरोप के राजा किसी को बड़ा ओहदा देते समय प्रतीक के रूप में दस्ताने भी दिया करते थे। ये दस्ताने वापस मंगवा लेने का अर्थ था पदच्युति। जब नये न्यायाधीश पहली बार अदालत में आते, राजा की ओर से उन्हें दस्ताने भेंट किये जाते थे। न्याय करते समय न्यायाधीश इन्हें अपने सामने मेज पर रखे रहते थे।

सामंत-युग में वीर योद्धा अपनी प्रेयसी का दस्ताना अपने शिरस्त्राण पर खोंसे रहते थे। इसका मतलब था कि वे उस महिला की मानरक्षा के लिए मर मिटेंगे। किसी के सामने अपना दस्ताना फेंकने का अर्थ था लड़ाई की चुनौती। आज भी अंग्रेजी के मुहावरे "टु थ्रो दि गांटलेट" में इस प्रथा की स्मृति शेष है।

इंग्लैंड में एक जमाना वह भी था, जब राज्य के कर्मचारी यह दिखाने के लिए कि वे रिश्वत नहीं लेते, सफेद दस्ताने पहना करते थे। श्रीमती क्रोकर नाम की महिला, जब एक बहुत पुराने मुकद्दमे में जीत गयी, उसने एक दस्ताने में ४० सोने की मोहरें भरकर प्रधान न्यायाधीश सर टामस मोर के पास भेजीं। मोर ने दस्ताना रख लिया, मोहरें वापस कर दीं।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस सदी के आरंभ तक दुनिया जिसके अस्तित्व से बेखबर थी.....

ओकापी
एक दुर्लभ स्तनपायी

* हंस *

कांगो के घने और गुप्त वनों में एक विचित्र पशु पाया जाता है, जिसे वैज्ञानिक आज का दुर्लभतम स्तनपायी प्राणी मानते हैं। यह जिराफ का दूर का रिश्तेदार है और वैज्ञानिकों का मत है कि यह उस पशुजाति का एकमात्र वंशधर है, जो प्रागैतिहासिक काल में मिस्र से लेकर मध्य यूरोप तक फैली थी। प्राचीन मिस्र में इस पशु की देवता के समान पूजा भी होती थी।

वयस्क ओकापी की ऊंचाई ५ फुट तक होती है। अधिकांश वनजीवी पशुओं की भांति ओकापी भी अपनी गर्दन को तो फैलाकर चलता है; पर सिर को काफी नीचे झुका कर। उसके शरीर का रंग हल्का जामनी होता है। पृष्ठभाग, पांव तथा गर्दन में काली-सफेद धारियां होती हैं। सिर महुए के रंग का तथा शेष शरीर भूरा, जिससे वह जंगल में आसानी से छिप सकता है।

नर ओकापी जब जवान हो जाता है उसके छोटे-छोटे सींग उग आते हैं। यह विशेषता मादा जिराफ में नहीं मिलती। नर तथा मादा ओकापी के कान काफी लंबे होते हैं और आंखें बहुत छोटी। शायद घने जंगलों में अधिक समय व्यतीत करने के कारण ऐसा हो गया हो।

मादा ओकापी वर्ष में एक ही बच्चे को जन्म देती है। प्रसव प्रायः मई में होता है। शिशु ओकापी देखने में बड़ा भद्दा लगता है, पर मृगछौने के समान ही सरल-चपल होता है। मादा ओकापी, जिसकी ऊंचाई नर से कई इंच अधिक होती है, बच्चे को हमेशा झाड़ियों में ही छिपाये रहती है। केवल

अक्टूबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन के समय बच्चे को बाहर निकलने की छुट्टी मिलती है।

शिशु ओकापी का आहार होता है हरी पत्तियां तथा गाजर। वह दिन-भर सोता है और खाना रात में और सुबह को ही खाता है, जैसे रोजा रखा हुआ हो। घने जंगल के घटाटोप अंधकार में ओकापी अपने साथियों को उनके पृष्ठभाग की सफेद धारियों से ही पहचान पाते हैं।

घने जंगल में ओकापी को बहुत सुरक्षा अनुभव होती है; क्योंकि शेर खुले हुए जंगल में शिकार खेलना ज्यादा पसंद करता है, और चीता ओकापी की दुलत्ती से बहुत घबराता है। कांगो में जब अभी यूरोपियनों का आगमन नहीं हुआ था, वहां के आदिवासी गहरे गड्ढे खोदकर, उन पर पत्तियां बिछाकर, ओकापियों को पकड़ते थे। उन्हें ओकापियों का गोश्त बड़ा स्वादिष्ट लगता था और उनके सरदार ओकापी की जेब्रानुमा खाल पहनकर घूमते थे।

पिछले तीस वर्षों से ओकापी-जाति को पूर्णतया नष्ट होने से बचाने के प्रयत्न चल रहे हैं। एयुल (कांगो) में सरकार ने एक विशेष केंद्र खोला है, जिसका काम ओकापियों की रक्षा करना है। सिर्फ इसी केंद्र के अधिकारियों को जीवित ओकापी पकड़ने की इजाजत है। कांगो के आदिवासी ओकापियों के बारे में इस केंद्र को सूचनाएं देते रहते हैं।

पकड़े गये ओकापियों में से कुछ को तो चिड़ियाघरों में भेज दिया जाता है, शेष को ओकापी-जाति को कायम रखने और उसकी आबादी बढ़ाने के लिए पाला जाता है। चिड़ियाघरों को भेजने से पूर्व, इस बात का निश्चय कर लिया जाता है कि क्या वहां इन दुर्लभ पशुओं की देखभाल अच्छे तरीके से हो सकेगी ?

ओकापियों का पता अफ्रीका के बाहर के लोगों को इस शताब्दी के आरंभ में चला था। तब से पशु-विशेषज्ञ अफ्रीका के वनों में अन्य दुर्लभ पशु-पक्षियों की खोज में भी लगे हैं।

कौन-सा प्राणी कितने समय गर्भ में रहता है ?

ऊंट	११-१२ महीने	बिल्ली	८ सप्ताह
कुत्ता	९ सप्ताह	भेड़	५ महीने
खरगोश	३० दिन	भेड़िया	६२ दिन
गधा	१२ महीने	रीछ	६ महीने
गाय	९ महीने	शेर	१०८ दिन
घोड़ा	११ महीने	सूअर	१६ सप्ताह
जिराफ	१४ महीने	स्यार	६२ दिन
बंदर	७ महीने	हाथी	२१ महीने
बकरी	५ महीने	हिरन	८ महीने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करामाती काठ बाल्सा

हरपाल अरोड़ा

हालीवुड में मार-धाड़ की एक फिल्म का कोई दृश्य फिल्माया जा रहा था। शेरदिल नौजवान और पुलिस कोतवाल में गुत्थम-गुत्था हो रही थी। जरा दूरी पर उनके सहायक आपस में झगड़ रहे थे। नौजवान ने एक कुर्सी उठाकर कोतवाल के सिर पर दे मारी। इसी बीच एक छोटी-सी दीवार गिर पड़ी। दोनों दल फर्श पर गिरी हुई ईंटें उठाकर एक दूसरे पर फेंकने लगे। देखते-ही-देखते सजा-सजाया कमरा कबाड़ी की दुकान नजर आने लगा। अचानक कमरे की छत फर्श पर आ गिरी और सारे योद्धा मलबे के नीचे दब गये।

शूटिंग खत्म हुई, तो सारे अभिनेता कपड़े झाड़ते हुए उठ खड़े हुए। एक अजनबी, जो शूटिंग देखने के लिए समीप ही खड़ा था, यह देखकर चकित रह गया। मलबे में से आदमियों का जिंदा बच निकलना सचमुच आश्चर्यजनक था। अभी वह दर्शक इसी दुविधा में था कि एक नयी घटना घटी, जिसने थोड़ी देर के लिए उसे एकदम विमूढ़ बना दिया। आठ-नौ साल का एक लड़का मलबे में घुस गया और ईंटों में दबा हुआ पचीस-तीस फुट लंबा एक शहतीर, जो थोड़ी देर पहले दूसरे कमरे का बोझ संभाले हुए था, उठाकर कंधे पर रख लिया।

आश्चर्य से अजनबी का मुंह खुला-का-खुला रह गया। उस शहतीर का वजन कम-से-कम २५ मन प्रतीत होता था। अजनबी ने पास खड़े हुए एक नवयुवक से उसके बारे में स्पष्टीकरण चाहा, तो वह खिलखिला कर हंस दिया और बोला—"यह सब तो बाल्सा का बना हुआ है।"

बाल्सा एक विलक्षण जाति की इमारती लकड़ी है! यह बेहद हल्की होती है। आम तौर पर कार्क को सबसे हल्की लकड़ी समझा जाता है। वैज्ञानिक नाप के अनुसार बाल्सा कार्क से दुगनी हल्की लकड़ी है। एक घनफुट कार्क का वजन दो घनफुट बाल्सा के बराबर होता है।

अगर आप किसी बोतल में लगा हुआ कार्क उतारकर देखें, तो आपको उसमें छोटे-छोटे छेद नजर आयेंगे। इन छेदों के कारण कार्क ज्यादा मजबूत नहीं होता और इससे बनी चीजें भी सुंदर नहीं दिखाई देतीं। परंतु बाल्सा न केवल कार्क से दुगनी हल्की है, अपितु वह सर्वत्र एक-सी ठोस और हल्की सार होती है, जिसके कारण उसकी बनी हुई चीजें देखने में अच्छी लगती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मार-धाड़ से भरपूर फिल्मों में बाल्सा का खूब प्रयोग किया जाता है। कुर्सियां, मेजें, दीवारें और छतें सब बाल्सा की बनी होती हैं। यद्यपि ये कुर्सियां बड़े जोर से एक दूसरे के सिर पर मारी जाती हैं, दीवारें गिरती हैं, छतें धम्म-से फर्श पर आ पड़ती हैं, तथापि किसी अभिनेता का बाल बांका नहीं होता। यही फिल्म जब सिनेमा हाल में लोग देखते हैं, तो चकित रह जाते हैं।

बाल्सा ज्यादातर उत्तरी अमरीका के कई स्थानों में मिलती है। मगर दुनिया में इसकी सबसे ज्यादा पैदाइश इक्वेडोर में होती है, जहां इसकी पूर्ण रूप से काश्त की जाती है। बाल्सा एक ही जमीन में सदियों तक पैदा हो सकती है। इसके लिए जमीन बदलनी जरूरी नहीं।

पहले छः महीनोंमें इ सका पौधा बारह फुट तक बढ़ता है और दस साल के अंदर ६० फुट तक जा पहुंचता है। बड़े प्रौढ़ वृक्ष का अर्द्धव्यास डेढ़ फुट के लगभग होता है। इसमें नीले रंग के फूल लगते हैं। हर शाखा के आखिर में फूलों का एक गुच्छा होता है। पकने पर फूल लंबे-लंबे बीजों की सूरत धारण कर लेते हैं। हर बीज के साथ सफेद रेशम-सा लगा होता है। जब तेज हवा चलती है, रेशम के कारण बीज उड़ते हैं और दूर-दूर तक फैल जाते हैं।

बीज के लिए ज्यादा बारिश और आंधियां हानिकारक हैं। मगर अनुकूल मिट्टी में यह बीज जल्दी अंकुरित होता है और खूब बढ़ता है। शीघ्र ही पौधा दूसरे वृक्षों से ऊपर निकल जाता है। फसल बोने के समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि हर पौधा एक दूसरे से काफी दूरी पर हो, ताकि उसे अच्छी तरह फैलने का अवसर मिल सके। झाड़ियां और छोटे पौधे उखाड़ दिये जाते हैं, ताकि बाल्सा को जमीन से ज्यादा-से-ज्यादा मात्रा में आहार प्राप्त हो।

आम तौर पर एक एकड़ जमीन में बाल्सा के ५० पौधे उगाये जाते हैं। चौदहवीं सदी में स्पेनी विजेता फ्रांकोपनेरो ने पहले-पहल इसके हल्केपन को पहचाना और इसकी नौका बनाकर कई नदियां पार कीं।

ताजी बाल्सा अच्छी वजनदार होती है। उसमें ७० से लेकर ८० प्रतिशत तक पानी होता है। एक घनफुट ताजी लकड़ी का वजन १३ सेर के लगभग होता है; मगर सूख जाने पर केवल अढ़ाई सेर रह जाता है।

फसल तैयार होने पर स्थानीय लोग उन्हें काटकर नदी तक ले जाते हैं और पानी में फेंक देते हैं। कभी-कभी बहुत-सी लकड़ियां रस्सों से बांध दी जाती हैं और उन पर एक छोटा-सा झोंपड़ा बना लिया जाता है। उस झोंपड़े में लकड़ियों का मालिक बीवी-बच्चों सहित सवार हो जाता है। कई लोग बेड़े पर थोड़ी-सी मिट्टी बिछा लेते और अपनी मुर्गियां, भेड़-बकरियां व कुत्ते भी साथ ले लेते हैं।

इस प्रकार के बेड़ों की चौड़ाई अक्सर बीस फुट से ज्यादा नहीं रखी जाती; क्योंकि कई स्थानों पर नदी की चौड़ाई बहुत कम होती है। तीन-चार आदमी लंबे-लंबे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बांस लेकर बेड़े पर सवार हो जाते हैं, ताकि जहां-कहीं बेड़ा किनारे लगना चाहे या रेत में धंस जाये, तो उसे वापस पानी में पहुंचा दिया जाये।

जंगल से मंडी तक पहुंचने में छः से लेकर आठ हफ्ते तक लग जाते हैं। ये लोग मंडी पहुंचने पर सारी बाल्सा बेच देते हैं और नदी के साथ-साथ चलनेवाली रेलगाड़ी से वापस घर पहुंच जाते हैं।

बाल्सा की एक और विशेषता यह है कि वह बहुत बड़ी मात्रा में पानी चूस लेती है। इसीलिए जब उसे नदी से निकाला जाता है, तो काफी वजनी होती है। उसे एक बार फिर सुखाना पड़ता है। सूखी बाल्सा का तख्ता जोरदार बारिश में रख दीजिये और बाद में वजन करके देखिये, पता चलेगा कि उसने अपने वजन से दुगना पानी चूस लिया है। इसीलिए मंडियों में बाल्सा को तिरपाल से ढंक दिया जाता है, ताकि बारिश में पानी न पी ले। जिन इलाकों में हवा में बहुत नमी पायी जाती है, वहां बाल्सा को मोमजामे में लपेटकर रखा जाता है। अगर गीली बाल्सा को आरे से चीरा जाये, तो उसमें से पानी की बूंदें टपकने लगती हैं।

बाल्सा का अधिक उपयोग डोंगियों और किश्तियों में होता है। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में जब कार्क लकड़ी दुर्लभ हो गयी, तो उसके स्थान पर बाल्सा का प्रयोग किया जाने लगा। १९४२ में अटलांटिक महासागर में सफर करनेवाले हजारों जहाजों में अनगिनत छोटी-छोटी किश्तियां रखी गयीं थीं, ताकि खतरे के समय उनका उपयोग किया जा सके। ये बाल्सा की ही बनी हुई थीं।

आजकल बाल्सा हवाई जहाजों और हेलिकाप्टरों में अधिक उपयोग होती है। एल्युमिनियम की दो चादरों के बीच बाल्सा की एक तह जमा दी जाती है, जो बाहरी नमी, ताप और ठंड को अंदर तक पहुंचने नहीं देती। इससे तख्ते, खिलौने और बनावटी वस्तुएं भी तैयार होती हैं।

मिठाई

एक बड़ी मुर्गी कूड़े के ढेर पर से कीड़े-मकोड़े चुन रही थी और उन्हें उठाकर अपने बच्चों को खिला रही थी। बीच-बीच में एक-आध बार खुद भी खा लेती थी। कौने यह देखा, तो चट उसे उपदेश देने की सूझी।

उसने अपने बड़े बच्चे को वह दृश्य दिखाते हुए कहा—"बेटा तू भी सब खाने की चीजें खुद न खा जाया कर; पहले अपने छोटे भाइयों को खिला दिया कर। फिरतब थोड़ा बहुत खा लिया कर!"

बेटे ने कहा—"मां, कीड़े-मकोड़े मिलेंगे, तो मैं भी बांट दूंगा। मुर्गी भी मिठाई थोड़े ही औरों को खिलाती है।"

—एन० मी० शाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

दीपावली विशेषांक

कतिपय आकर्षण

★ जीवन-सौरभ:

गांधी-गगन के हंसोड़ सितारे
धरती की चोटी पर दो बार
मुस्लिम-जगत् के वाल्मीकि

★ राजनीति:

कश्मीर और हम
चीन-पाक सांठ-गांठ

★ कहानी:

पापी का परिवर्तन (बंगला)
राजी (पंजाबी)
जरा इधर तो देखो (उर्दू)

★ विविध:

स्विट्जरलैंड के बैंक; भारतीय कलाकारों से दो शब्द; बुढ़ापा कयामत नहीं; कल्पना के पंख; गोबर गैस।

★ प्रमुख लेखक व कवि

जाकिर हुसैन, क० मा० मुंशी, फ्रैंक मोराइस, सुब्रह्मण्य भारती, शंकर कुरुप, बेंद्रे, इंद्र विद्यावाचस्पति, अल्बर्ट श्वाइत्जर, विनोबा, माखनलाल चतुर्वेदी, साधु वास्वानी, श्रीप्रकाश, निर्मल कुमार बोस।

★ पुस्तक-संक्षेप:

१. *क्रांतिपथ का पथिक*: बाबा पृथ्वीसिंह आजाद की आत्मकथा के कुछ अंश;

२. *हाथों का नैवेद्य*: स्वयं पंगु होते हुए दूसरों को अपंगपन से मुक्त करनेवाली सर्जन की जीवनी।

★ संस्मरण:

केनेडी स्वयं अपनी दृष्टि में;
सब कहीं हमें मनुष्य ही मिला;

★ 'कैसे-कैसे लोग' व उनके लेखक:

पं० सातवळेकर, बनारसीदास चतुर्वेदी, गोविंददास, सूर्यनारायण व्यास, नानकसिंह, स्नेहरश्मि, विष्णु प्रभाकर, मोहनसिंह सेंगर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस व्यक्ति की साधारणता असाधारण थी

नैतिक पुनरस्त्रीकरण आंदोलन के नायक स्वर्गीय पीटर हावर्ड के प्रति श्रद्धांजलि।

डा० मारिस मार्टिन

पेरू की राजधानी लीमा के भव्य ओल्ड सिटी हाल में पहली बार किसी विदेशी का शव लोगों के दर्शन के लिए रखा गया था। यह अभूतपूर्व सम्मान मिला था पीटर हावर्ड को, जो अपने को एक सामान्य व्यक्ति मानते थे।

मृत्यु से कुछ सप्ताह पूर्व उन्होंने कहा था—"मैं एक साधारण व्यक्ति हूं; पर मैं केवल अपने लिए नहीं जीता। जीवन के अंतिम क्षण तक मैं इस बात के लिए संघर्ष करता रहूंगा कि मेरा देश, आपका देश, बल्कि सारी दुनिया ही भगवान के नियंत्रण के अंतर्गत आ जाये।"

कोई भी साधारण व्यक्ति, जो केवल अपने लिए नहीं जीता, अत्यंत असाधारण व्यक्ति है। हां, वे इस अर्थ में अवश्य साधारण थे कि जीवन की सभी साधारण वस्तुओं से उन्हें लगाव था। अपनी जन्मभूमि इंग्लैंड के गांवों के प्राकृतिक दृश्यों के वे बड़े प्रेमी थे। ऐसे ही एक गांव में बहुत ही सामान्य किस्म की कुछ जमीन लेकर उन्होंने उसे उम्दा कृषिभूमि में बदल डाला था।

उनके साथ खेतों पर काम करनेवाले प्रायः कहा करते थे कि प्रकृति की प्रत्येक गंध, उसका प्रत्येक स्वर उन्हें प्रमुदित कर देता था। अपने खेत के पालतू सूअरों के बारे में उन्होंने एक बार कहा था—"मैंने इनसे भी काफी सीखा है। इनमें बहुत-से गुण तो आदमियों जैसे ही हैं।"

वे खेल-कूद के भी प्रेमी थे। दरअसल उनसे मेरी पहली मुलाकात ३७ साल पहले, रग्बी फुटबाल के मैदान में ही हुई थी। वे 'बैक-रो-फारवर्ड' के रूप में खेल रहे थे। मैं और विपक्षी दल का 'सेंटर-थ्री-क्वार्टर' था। इसके बाद भी मैं कई बार उनके विरुद्ध खेला; पर ऐसे अवसरों पर मैंने कभी राहत नहीं महसूस की। बाद में आक्सफर्ड में हम दोनों को एक ही दल में खेलने का अवसर भी मिला।

मुझे याद है कि किस प्रकार वे हमें "बढ़े चलो, बढ़े चलो" कहकर आगे बढ़ने के लिए ललकारते रहते थे। उनकी अदम्य विजयाकांक्षा एवं शक्ति हमें निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती थी। खेल की समाप्ति की सीटी बजने तक हम आक्रामक खेल खेलते रहते। उसी नीति के कारण आगे चल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर वे रग्बी में इंग्लैंड के कप्तान बने और स्कीइंग (बर्फ पर फिसने की दौड़) में उन्होंने कई रेकार्ड तोड़े।

सार्वजनिक मंच के अभिनेताओं के स्वभाव का अध्ययन उनका प्रिय विषय था। बेशक पहले-पहले इस अध्ययन में दोषान्वेषण की ओर अधिक रुझान था। किंतु बाद में बहुत अंतर आ गया। वे व्यक्ति का संतुलित अध्ययन करते थे। मनुष्य दुनिया के सामने अपना जो कृत्रिम रूप पेश करना चाहता है, वे उससे उसे नहीं आंकते थे; बल्कि भगवान की शरण में आकर वह जो मंगलमय रूप धारण कर सकता है, उससे उसे परखते थे।

फुटबाल के मैदान और नैतिक नवनिर्माण दोनों में एक-सी अजेय विजयाकांक्षा

सुविख्यात अखबार-मालिक लार्ड बीवरब्रुक के अधीन समाचार-पत्रों में पाये अनुभव से उनमें समाचारों और राजनीति के विषय में अचूक निर्णय करने की क्षमता आ गयी थी। अपने गुरु बीवरब्रुक की तरह वे जीवन-भर एक कुशल विद्यार्थी रहे। "वे हमेशा सबसे आगे रहते थे और उनके साथ बने रहने के लिए बिना भागे काम नहीं चलता था," यह था बीवरब्रुक के प्रति उनका उद्‌गार।

किंतु जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पाठ पीटर हावर्ड ने नैतिक पुनरस्त्रीकरण (एम० आर० ए०) के जन्मदाता फ्रैंक बुकमैन से सीखा। यह पाठ था कि ईसा के बलिदान-जैसा क्रांतिकारी अनुभव ही नये विश्व को जन्म दे सकता है। योग्यता, प्रशिक्षण और प्रारंभिक जीवन की दृष्टि से हावर्ड और बुकमैन में जमीन-आसमान का अंतर था; परंतु इस एक मूलभूत सचाई में दोनों की आस्था एक समान थी।

बच्चे उन्हें बहुत प्रिय थे और बच्चों को कहानी सुनाने में उन्हें बड़ा आनंद आता था। उनकी निराली उछल-कूद और उनके जादू के खेल बच्चों को हैरत में डाल देते थे। उनके जीवन के अंतिम दिन अत्यंत व्यस्तता में बीते; किंतु उन दिनों भी वे अपने पोते-पोतियों के लिए 'बोलती चिट्ठियां' टेप पर रेकार्ड करने का वक्त निकाल ही लेते थे। इन टेपों में वे दिन-भर का हाल सुनाने के अलावा, ब्राजील के जानवरों के बारे में बताते थे, उनकी आवाजों की नकल करके दिखाते थे। साथ में एक-आध गाना भी रहता था।

अपने परिवार के सदस्यों के प्रति उनका प्रेम बड़ा गहरा था। उनका अधिकांश समय लंबी-लंबी यात्राओं में व्यतीत होता था;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर भी वे हर रोज कम-से-कम एक पत्र अवश्य घर लिखते थे। परंतु वे जानते थे कि वे न तो अपने बच्चों के बोझों को वहन कर सकते हैं और न जीवन में आनेवाले दारुण कष्टों से उनकी रक्षा कर सकते हैं।

वे मानते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को सही निश्चय करने की स्वतंत्रता है। इस अधिकार की रक्षा के लिए वे सदा संघर्ष करने को तत्पर रहते थे, और व्यक्ति की इस स्वतंत्रता में स्वयं कभी दखलंदाजी नहीं करते थे। वे हमराही और हमदम बनने को प्रस्तुत रहते थे; पर किसी के जीवन पर किसी भी तरह का नियंत्रण उन्होंने कभी नहीं लादा।

उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का अर्थ यह था कि व्यक्ति तन-मन की पूरी शक्ति के साथ उस मंजिल की ओर चलता जाये, जो ईश्वर ने उसके लिए निर्धारित की है। एक बार उनकी पत्नी ने उनसे कहा था—"पीटर, तुम जैसे हो, उसी रूप में मैं तुम्हें प्यार करती हूं। पर तुम्हें जैसा होना चाहिये, वैसा बनाने के लिए मैं निरंतर संघर्ष भी करती रहूंगी।"

पत्नी के इन शब्दों को वे अपने घर व राष्ट्र पर भी लागू करते रहते थे। एक बार उन्होंने कहा था—"वास्तविक क्रांति का मूल स्रोत क्या है? मेरे विचार से वह है—अपने घर, अपने देश और समूची मानवता के लिए प्रेम। मामूली प्रेम नहीं, ऐसा जबर्दस्त प्रेम, जो इन सबको नया सुभग रूप देने के लिए सब कुछ झेलने को तैयार हो।"

तो यह है उस साधारण व्यक्ति की एक झांकी, जो एक कुशल वक्ता था, प्रभावशाली नेता था, महाद्वीपों के लिए योजनाएं बनाता था, प्रतिदिन सुबह चार बजे उठता था और बीस घंटे तक लगातार कार्य करता था; जो पुस्तकें, नाटक, कविताएं, लेख, कहानियां आदि लिखता था; और जो हर काम अपने आस-पास के लोगों से कहीं बेहतर तरीके से करता था, फिर भी अपनी कार्यशक्ति और योग्यता पर गर्व नहीं करता था।

लीमा में जब उन्हें अस्पताल ले जाया गया, तब वे असह्य कष्ट में थे; फिर भी उन्होंने रोगशैया पर से अपने अंतिम नाटक के अंतिम अंश बोलकर लिखाये थे। नाटक का नाम उन्होंने 'सुखी मृत्यु-दिवस' रखा था। क्या उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था?

स्वतंत्रता में उनका उत्कट विश्वास था और तानाशाही से उन्हें तीव्र घृणा थी। भगवान ने आदमी को जिस उच्च प्रयोजन के लिए जन्म दिया है, उससे निम्नतर प्रयोजन के लिए आदमी का उपयोग हो, इसे भी वे तानाशाही ही मानते थे। इसी प्रकार जाति, रंग और धर्म के आधार पर उत्कृष्टता या उच्चता के सब दावे भी उनके लेखे तानाशाही के लक्षण थे।

वे उन लोगों की आलोचना करते नहीं थकते थे, जो अपनी बुद्धिशक्ति का उपयोग अपनी आत्माओं के हनन में और अपना ईश्वरहीन जीवन-दर्शन दूसरों पर थोपने में करते हैं। ['हिम्मत' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी कल्पना का सुख

जीवन में व्यस्त रहने की मेरी तीव्र इच्छा है। यदि कोई एक आत्मीय साथी भी मुझे मिल जाये, तो वह व्यस्तता भार बनकर उबा देने के बजाय जीवन में सतत आनंद का स्रोत बन सकती है। मैं चाहती हूं कि हम दोनों ही किसी एक कार्य में एक-सी लगन और निष्ठा से व्यस्त रहें और उसी में परिष्कृत आनंद की अनुभूति प्राप्त करें। — शशिप्रभा मिश्रा

०००

मेरी कल्पना का सुख कुछ भी नहीं; बल्कि मुझे इस यथार्थ पर गहरा दुःख है कि कि यहां 'मैं' और 'तू' के बीच इतनी गहरी खाई है, जिसे पाटने की तनिक भी संभावना का सूत्र किसी के पास नजर नहीं आता। —सुरेंद्र प्रबुद्ध

०००

जब विवाह की पावन वेदी की आग में दिलों के अरमान नहीं जलेंगे और प्रेमियों का मिलन केवल एक आह बनकर नहीं रह जायेगा। ो दिलों को मिलते व हंसते देख दुनिया नहीं जलेगी और 'प्रेम' शब्द कलंकित नहीं होगा।—बालमुकुंद गर्ग 'मुकुंद'

०००

जहां भी रहूं, शिक्षा ुक्त और प्रकृतिमय वातावरण में रहूं। संसार में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए निरंतर कर्मशील रहते हुए लिखता भी रहूं। इसके साथ ही यह न भूलने पाऊं कि मैं कहां हूं, क ों हूं और किसके लिए हूं? अंत तक मर्यादित बना रहूं। —चतुर कोठारी

मैं ऋण-मुक्त होकर निजी व्यय के लिए पचास रुप मासिक की स्थिर आय अर्जन कर लूं, जिससे मैं देश के कोने-कोने में जाकर लोगों की समस्याएं सुलझाने में सहायता देते और सेवा करते हुए अपना शेष जीवन बिता सकूं।"—रूपनारायण अग्रवाल

०००

पहले तो कल्पना का सुख कुछ और था; लेकिन अब मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं सैनिक के रूप में अपने देश की सीमा पर पहुंचूं और अपने साथि ों में देशप्रेम की ऐसी आग भर दूं कि हमारी टुकड़ी के पास कभी 'हार' फटक भी न सके और मैं अपनी आंखों देख सकूं कि अपने देश की एक-एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च भूमि आक्रांताओं से छीन ली गयी है। इस काम में यदि मेरे गोली भी लग जाये, तो वह भी मेरे लिए सुख की बात होगी। —बी० एल० गौड़

०००

मैं दैनिक काम को बड़े उत्साह, परिश्रम और पूरी ईमानदारी से संपन्न कर रात को सुखद सपनों की कल्पना के लिए एकदम निश्चितता से सो सकूं। —शुभदा बख्शी

०००

पाकिस्तान और भारत के बीच जो विवाद चला आ रहा है, उससे न केवल ये दोनों देश ही अपितु अन्य देश भी चिंतित हैं। मेरा खयाल है, जब तक पाकिस्तान में भारत के प्रति घृणा एवं वैमनस्य का प्रचार होता रहेगा और वहां का राष्ट्रपति या शासनाधिकारी भारत-विरोधी व्यक्ति रहेगा, तब तक यह समस्या गंभीर ही बनी रहेगी। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि मैं निकट भविष्य में पाकिस्तान का राष्ट्रपति चुन लिया जाऊं और भारत में पाकिस्तान के विलीनीकरण का सतत प्रयत्न करूं, ताकि दोनों में एकता व सौमनस्य स्थापित हो और ये सभी विवाद हमेशा के लिए समाप्त हो जायें। —राजकुमार जैन

०००

अभी मैं जीवन की जिस पगडंडी पर रेंग रहा हूं, उसमें मेरी कल्पना का पूर्ण सुख उस स्थिति में सन्निहित है, जब मेरी पत्नी पूर्ण शिक्षिता होकर व जीवन में प्रसन्नतापूर्वक अपने पैरों पर खड़ी होकर मेरे साथ अत्यंत सहज व स्वाभाविक मुद्रा में उपस्थित होगी। —महेंद्र नारायण

०००

कल्पना बावरी है और सुख मृग-मरीचिका। सुख उस क्षितिज की तरह है, जो दीखता तो है; पर पकड़ में नहीं आता। फिर भी कल्पना सुख के पीछे दौड़ती रहती है और थकने का नाम नहीं लेती। शायद यही जिंदगी की निशानी भी है—जिंदगी, व्यक्ति और समाज दोनों की! लिहाजा सुख की तलाश में कल्पना की दौड़ कभी भी बंद न हो, भले ही निष्फल रह जाये। मेरे लिए यही स्थिति सर्वाधिक सुखप्रद है। —राधेश्याम 'शोषित'

०००

शिक्षा वर्ग-विशेष के लिए न हो। समान वेतन हो। पद की महत्ता और विशेषता न हो। व्यक्ति-पूजा न हो। सम्मान, धन, नेतृत्व का केंद्रीकरण न हो। साहित्य बुद्धिवादियों का मनोरंजन मात्र न होकर सर्व साधारण का सहकारी हो। ऐसा शांति-प्रिय, न्याय-प्रिय और स्वतंत्रता-प्रिय समाज ही मेरी कल्पना का सुख है। —हरिदत्त शर्मा

★

ग्राहक—इस मिठाई को बने कितने दिन हुए?

होटल का बैरा—मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता! क्योंकि मैं अभी नया-नया आया हूं, मुझे यहां पर काम पर लगे सिर्फ दो ही दिन हुए हैं! जानना चाहें, तो किसी लंबी सर्विस वाले से पूछिये! —रा० वीलिनाथ

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पगडंडियां भैंस और परांठे

श्रीनिधि सिद्धांतालंकार

गंगा पार के जंगलों में वन्य पशु तो चिर-दिनों से रहते ही हैं; पिछली दो शताब्दियों से जम्मू की ओर के कुछ गुज्जर-परिवार भी वहां आ बसे हैं, जो भैंस पालने का पेशा करते हैं। इन जंगलों में आकर वे घाटे में रहे या लाभ में, यह तो वे ही जानें; मगर मुझे इतना अवश्य पता है कि अक्टूबर से अप्रैल तक—जब तक कि वे वहां ठहरते हैं—शेर-हाथियों का भय उन पर सदा ही छाया रहता है। न उनके डेरे सुरक्षित रह पाते हैं, न भैंसें।

उस दिन ऐसा ही हुआ। शायद तीसरे पहर का समय रहा होगा, एक अपरिचित गुज्जर ने, जो जंगल से शायद सीधा ही चला आ रहा था, आकर बताया कि अभी दो ही घंटे पहले कालागढ़-स्रोत में शेर ने उसकी एक भैंस मार डाली है।

"केवल मार ही डाली या उसका कुछ भाग खाया भी?" मैंने पूछा।

"खाया कुछ भी नहीं। बस मारकर चला गया।"

"और उसकी लाश को किसी सड़क के पास भी पटक गया, क्यों?"

विस्मय से मेरी तरफ देखता हुआ वह बोला—"यह आपने कैसे जाना? उसने सचमुच ऐसा ही किया है। मारने के बाद उसकी लाश को घसीटकर एक पगडंडी के पास पटक गया है।"

"तब तो यह वही शेर है। वह सदा ऐसा ही करता है। भैंस की गरदन तोड़कर उसकी लाश को किसी प्रचलित सड़क के पास पटक जाना उसका एक शौक-सा बन गया है। ऐसा लगता है, जैसे लोगों पर अपनी धाक जमाने के लिए वह जान-बूझकर ऐसा करता है। अभी दो महीने पहले उसने सिद्ध में दो भैंसें इसी प्रकार मारी थीं और उसके भी एक मास पूर्व वटदादा के नाले में एक भैंस और एक कटरे को इसी तरह मारा था। खाया उसने उनका कुछ भी हिस्सा नहीं था। ऐसी व्यर्थ की हत्याओं से भला क्या लाभ!"

"कुछ भी नहीं। इसे शिकार नहीं, हत्या कहना चाहिये। ऐसे शैतान को तो पूरी सजा मिलनी चाहिये।" गुज्जर ने आवेश में भरकर कहा।

"तुम ठीक कहते हो, मियां। मगर इस समय तो तुम जाओ। देखो दिन ढलने की तैयारी कर रहा है। कल कालागढ़ पहुंचकर जो बन सकेगा, करने का यत्न करूंगा।"

सुनकर वह प्रसन्न हो उठा। बोला—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कब तक पहुंचेंगे ?"

"सांझ तक।"

"देखिय, वचन दे रहे हैं। आइयेगा अवश्य।"

"निश्चित रहो।"

"मचान तो बंधेगी न ?"

"हां। तुम्हारी भैंसें रात में जहां बैठती हैं, उसके पास के ही किसी वृक्ष पर बंधवा देना।"

गुज्जर चला गया।

अगले दिन अपने भारवाहक शंभु को साथ लेकर मैं ठीक दस बजे कालागढ़ की तरफ चल पड़ा। उधर जाने के लिए केवल एक ही प्रचलित मार्ग है। यद्यपि यह कुछ लंबा है, मगर दिन के समय उसमें भय अधिक नहीं रहता। इसलिए उधर जाने-वाले गुज्जर और लकड़हारे उसी रास्ते से आते-जाते हैं। उचित यही था कि मैं भी उसी रास्ते से जाता। मगर मेरी भाग्य-पुस्तक में उस दिन न जाने क्या लिखा था कि मैं उसे छोड़कर एक ऐसा नया मार्ग पकड़ बैठा, जो दुर्गम तो था ही, एकदम अपरिचित भी था। उसे मार्ग कहना भी भूल थी। वह असल में एक संकीर्ण-सी, धुंधली-सी पगडंडी थी, जो नैनागढ़ के जंगल में से निकलकर इधर-उधर भटकती हुई दक्षिण की तरफ चली गयी थी। ऐसे मार्ग का भरोसा ही क्या ?

कुछ दूर तक तो वह सच्चे मित्र की तरह साथ देती रही। मगर बाद में उसने अपना असली रूप प्रकट करना शुरू किया। कभी एकदम धुंधली पड़ जाती, कभी बीहड़ झुरमुटों में जा घुसती और कभी एकाएक लुप्त हो जाती। मगर मैं था कि उसे ढूंढ़ ही निकालता था और उसके साथ चल पड़ता था। मगर अंत में एक सूखे नाले के पास पहुंचकर वह इस तरह चुपचाप गायब हो गयी कि फिर बहुत ढूंढ़ने पर भी नहीं मिली। कोई प्रेत उसे उड़ा ले गया, या वह स्वयं भाप बनकर उड़ गयी—पता न चला।

अब आगे क्या हो ? यों इधर-उधर घूमकर आगे का मार्ग सोचने की कोशिश तो की; मगर छोटी-मोटी पगडंडियों के अतिरिक्त कोई मंजा हुआ मार्ग नहीं दिखाई पड़ा। और थोड़ी बहुत छानबीन की, तो उन पगडंडियों पर हिरन, नीलगायों के अतिरिक्त मनुष्य का कोई चिह्न नहीं मिला। हां, कहीं-कहीं शेर-बघेरों के पद-चिह्न अवश्य मिले।

बड़े विचित्र ढंग से इस समस्या का समाधान हुआ। सामने ही एक टीला खड़ा था। जब और कुछ नहीं सूझा, शंभु के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी पर चढ़ गया और बाइनाकल आंखों पर लगा, चारों तरफ देखने लगा। अरे वाह, धुआं! उस पहाड़ के पीछे.....मन आश्वस्त हो उठा। जैसे वह उस घाटी के किसी प्राचीन वनदेवता की अनश्वर श्यामल-ध्वजा है, जो चिरयुगों से भटके हुए पांथों को इसी तरह आश्वासन देती आ रही है। अनेक धन्यवाद। तुरंत टीले से उतर पहाड़ पर धीरे-धीरे चढ़ने लगे। चढ़ाई सचमुच विकट थी। घास-पौधों का सहारा लेकर चढ़ना पड़ता था। मगर अंत में उतराई पर जा ही पहुंचे। सामने ही घाटी में कुछ झोंपड़ियां दिखाई पड़ीं। बाइनाकल से देखने लगा। खूब स्पष्ट दिख रहा है। झोंपड़ियां हैं। एक के आगे दो-तीन गुज्जर स्त्रियां बैठी हैं। पास ही दो-तीन बच्चे खेल रहे हैं। कुछ दूर, पांच-छः भैंसें एक वृक्ष की छाया में बैठी जुगाली कर रही हैं। संदेह नहीं रहा, कोई पड़ाव है। पास पहुंचने पर उसका नाम भी पता चल गया – लस्तरवाला।

झोंपड़ियों से थोड़ा ही आगे एक सूखे-नाले में बड़े-बड़े पत्थरों से घिरा एक स्थान दिखाई पड़ा, जो पता चला जलाशय है। वहीं जा पहुंचे। अधिक प्यास शंभु को ही लगी थी। वही सबसे पहले पानी के पास पहुंचा और प्लास्टिक के दो-तीन गिलास चढ़ा लेने के बाद हंसता हुआ बोला—"अभी क्या है, बाबूजी। अभी तीन-तीन कप चाय और भी पीनी है। तभी तो उस विकट चढ़ाई का बदला चुकेगा।"

मैंने याद दिलाया—"अभी ढाई बजे हैं। सांझ तक कालागढ़ अवश्य पहुंच जाना है। वचन दिया है।"

शंभु ने उत्तर नहीं दिया और देखते-ही-देखते तीन पत्थरों का चूल्हा बना, आग जला, उस पर चाय चढ़ा दी।

दस ही मिनिट बाद जब चाय बन गयी, देखा भैंसें हांकती एक गुज्जरी चली आ रही है। वह दूर से ही कह उठी —"शायद चाय बन रही है!"

शंभु दिलचस्प आदमी है। तुरंत कह उठा—"हां, बन रही है, पियोगी?"

मुस्कराती हुई पास आ गयी और गिलास लेकर खड़े-खड़े ही पीने लगी। उसकी सरलता से उत्साहित होकर पूछ बैठा—"तुम्हारे इस जंगल में हाथी तो कभी-कभी आ ही निकलते होंगे?"

सुनकर उसका मुख एक साथ कठोर हो गया। बोली—"उधर जंगल में कहीं आते होंगे। यहां तो नहीं आते।"

"तो यह क्या जंगल नहीं है?"

"जंगल कहां है, बस्ती है।"

हंसी आ गयी। मैं उसे वनवासी समझ रहा हूं, यह बात शायद उसे अपमानजनक लगी। और यह सोचकर खेद हुए बिना न रहा। जो वन अपने बांसों और कांसों की भेंट देकर इनकी झोंपड़ियां बनवाता है, हरी घास और पत्तों का स्वरस देकर इनकी भैंसों के स्तन-कुंडों में क्षीर भरता है, अपने स्रोतों का मधुर जल देकर इनकी जीवन-यात्रा चलाता है, उसमें चिर वर्षों से रहकर भी ये उसे अपना नहीं सके। और जिन नगरों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनका कुछ भी संबंध नहीं, उनके लिए इनका मन निरंतर लालायित रहता है। विचित्र है, मनुष्य का मन !

इस एक बात के अतिरिक्त उसका व्यवहार अत्यंत शिष्ट और भद्र रहा। उसे जब पता चला हम कालागढ़-सोत जा रहे हैं, तो उसने यह आश्वासन दिया कि वहां पहुंचने में एक-डेढ़ घंटे से अधिक न लगेगा। हमारे साथ जाकर उसने वह पग-डंडी भी हमें दिखा दी, जो कालागढ़ जाती थी। हम आधे घंटे की उस सखी को धन्यवाद देकर आगे चल पड़े।

तीन बज चुके थे। चौबीस दिसंबर का दिन समय से पूर्व ही ढलने की तैयारी कर रहा था। जंगल की निस्तब्धता भयजनक होती जा रही थी। कंपिल्ल के लाल फल, कचनार के जामुनी फूल और हरे मुक्ता-फलों से लदे आंवले के वृक्ष दिन-भर घाटियों में सौंदर्य बिखेरकर सोने की तैयारी कर रहे थे। यद्यपि किसी-किसी घाटी में प्रवास से लौटे पंछियों की वार्ता-ध्वनियां सुन तो जाती थीं; मगर उनमें भी उल्लास की अपेक्षा विदा होते दिन की वेदना ही अधिक भरी प्रतीत होती थी।

मील-भर बाद एक चढ़ाई मिली। याद आया, गुजरी ने भी कहा था—एक चढ़ाई मिलेगी; मगर अधिक कठिन न होगी। चढ़ने लगे। फर्लांग-भर बाद एक ऐसी जगह मिली, जहां तीन पगडंडियों का तिराहा-सा बन गया था। किसे पकड़ें, समझ न आ रहा था। अंत में नाले में उतरनेवाली पग-डंडी ही पकड़ ली। आध घंटे बाद नाले में उतर गये। और उसी में आगे बढ़ते गये। एक ओर पहाड़, दूसरी ओर घना जंगल, बीच में रेत-पत्थरों से भरा चौड़ा नाला। उसी में चले जा रहे हैं। जब मील-भर चलकर भी कालागढ़ का पता नहीं चला, समझ लिया—सचमुच भटक गये हैं। कम-से-कम आज तो कालागढ़ पहुंचना न हो सकेगा।

क्रमशः सांझ उतर आयी। घने जंगलों और अंधेरी गुफाओं में से निकलकर संध्या की धूमिल छाया घाटी में फैलने लगी। और कोई उपाय न देख, नाले में ही रात बिताने का निश्चय करना पड़ा।

[२]

थोड़ा ही आगे बरगद का एक वृक्ष खड़ा था। उसी के नीचे की रेत में ठहर गये। समय कम था, काम अधिक। सबसे पहले वृक्ष की ऊंची डालियों पर दोहरे तिरपाल की दो मचानें, जो हमारे साथ थीं, बांध डालीं और सब सामान उन पर पहुंचा दिया। वृक्ष पर चढ़ने के लिए उसके तने में लंबी कीलें गाड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी; क्योंकि तना इस तरह नाले पर झुका था कि उस पर चढ़ने में कोई कठिनाई न हो रही थी।

दो काम अभी और शेष थे। एक तो सर्दी का उपाय, दूसरा जल। बरगद से लगभग बीस हाथ दूर एक पहाड़ी चट्टान के नीचे गीली धरती दिखाई पड़ रही थी। लग रहा था, खोदने से उसमें जल मिल अवश्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकेगा। छुरा देकर शंभु को उधर भेज दिया और इधर मैंने बरगद के नीचे की रेत में हवन-कुंड के आकार का दो फुट चौड़ा, दो फुट गहरा एक कुंड खोद डाला। बाद में, पास की कांस की झाड़ियों में से सूखा और गीला दोनों प्रकार का फूंस काटकर कुंड में भर दिया। नीचे गीला, ऊपर सूखा।

जब तक यह काम समाप्त हुआ, शंभु भी पानी की छागल भरकर आ पहुंचा। पानी गंदला था, यह तो ठीक है; मगर हमें पता था कि पंद्रह मिनिट बाद वह निथरकर स्वच्छ हो जायेगा। बरगद के तने में कील गाड़कर छागल उसमें लटका दी और कुंड के पास आ बैठे। अब निश्चिंत थे।

संध्या रात में बदल गयी। जंगल जागने लगा। दिन-भर एकांत स्थानों में सोकर जंगल के भयंकर शासक जाग उठे। उनके अभिनंदन में झिल्लियों की एकरस तूर्य-ध्वनियां सुन पड़ने लगीं। सामने का नाला भय से भर उठा। न जाने किस आनेवाली विपत्ति की पूर्वसूचना देने के लिए पीछे के जंगल में सांभर पुकार उठा और दक्षिण की झाड़ियों में छिपकर चीतल उसका समर्थन करने लगा।

क्या जाने क्या मामला हो! कुंड में तुरंत अग्नि प्रज्वलित कर दी। खूब दबाकर भरा हुआ फूंस सूखी लड़कियों की तरह चमककर जलने लगा। भोजन साथ में था ही—पराठे और आलू-मटर। गरम किया और खाने लगे। मगर सांभर अब भी वैसे ही पुकार रहा है। संभव है, सचमुच ही कोई बड़ी विपत्ति उसे दिखाई पड़ रही हो। मगर आग इतनी अच्छी लग रही थी कि उठने का मन नहीं हो रहा था। अतएव भोजन कर लेने के बाद भी वहीं बैठे रहे।

धीरे-धीरे नौ बज गये, फिर दस, फिर ग्यारह, आंखों में नींद भरने लगी। लगातार चार घंटे जलकर आग भी धीमी पड़ने लगी। इसी के बल पर तो नीचे बैठे थे। जब वही विदाई का नोटिस देने लगी, नीचे बैठना विपत्तिजनक प्रतीत हुआ। चुपचाप उठकर वृक्ष पर चढ़ गये और कंबल ओढ़ मचानों पर लेट गये। कुछ देर तक तो जागते रहे; मगर बाद में कब नींद आ गयी, पता न चला।

तब शायद चार बजे थे कि पीछे के जंगल में शाखा टूटने के शब्द से नींद टूट गयी। संदेह नहीं रहा—कोई इक्कड़ हाथी उधर के जंगल में आ पहुंचा है और हरी छाल के लोभ में डालियां तोड़ रहा है। किंतु दो-तीन बार के बाद जब आध घंटे तक शब्द फिर नहीं आया, यह मानकर कि हाथी कहीं दूसरी तरफ निकल गया है, मैं फिर लेट गया। मगर नींद नहीं आयी।

सोचा, नीचे उतरकर क्यों न आग चेतन कर ली जाये। सर्दी तो मिटेगी ही, चाय बनाकर शरीर को गरम भी किया जा सकेगा। शंभु अब भी सो रहा है। सोने दो। कल दिन-भर बेचारे ने बहुत श्रम किया है। इसलिए उसे वैसे ही सोता छोड़ नीचे उतर आया। अंधेरा अब भी वैसा ही छाया है।

सोचा, पहले चाय का सामान कुंड के पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाकर रख लिया जाये, फिर आग जलायी जाये। पांच-सात मिनिट में ही तैयारी पूर्ण हो गयी और कंबल ओढ़ मैं कुंड के पास आ बैठा। मगर अभी राख हटाने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि जंगल में से किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। कान लगाकर सुनने लगा। सचमुच कोई नाले की तरफ चला आ रहा है। मगर इस तरह दबे पांव क्यों ? उसका क्या इरादा है ? सतर्क हो गया। शब्द और भी पास आ पहुंचा, और भी पास। समझना शेष न रहा—उस हाथी के अतिरिक्त वह कोई नहीं, जो अभी थोड़ी ही देर पहले डालियां तोड़ रहा था।

तभी ऊपर से शंभु की उत्तेजित पुकार सुनाई पड़ी – "बाबूजी, हाथी !" और उछलकर मैं वृक्ष की तरफ दौड़ पड़ा। इसके बाद घटना-चक्र तेजी से घूम गया। मैं अभी वृक्ष पर आधी दूर ही चढ़ पाया था कि जैसा बाद में शंभु ने बताया—हाथी वृक्ष के नीचे आ पहुंचा और सूंड़ उठाकर मेरी तरफ घूम पड़ा। मगर लगता है, मैं तब तक काफी ऊपर पहुंच चुका था और उसकी सूंड़ मुझ तक नहीं पहुंच सकी। लेकिन इस असफलता ने उसे और उत्तेजित कर दिया।

दूसरा कोई उपाय न देख, वह कुंड के पास रखे सामान पर ही अपना क्रोध उतारने लगा। ठोकर मारकर कप तोड़ डाले। चाय और मिल्क-पाउडर के डब्बे पीस दिये। फिर कटोरदान की तरफ झुका, जिसमें रात के परांठे रखे थे। कुचल तो शायद वह उसे भी देता; मगर लगता है, परांठों की प्रलोभक गंध ने उसे वैसा नहीं करने दिया।

दोनों के टार्च जल रहे हैं। उनके तीव्र प्रकाश में उसकी एक-एक हरकत दिखाई पड़ रही है। वह कटोरदान को खोलने का यत्न कर रहा है; मगर ढक्कन नहीं खुलता। अंत में कई बार उलट-पलट करने से वह खुल गया और उसने देखते-ही-देखते उसमें रखे सब परांठे खा डाले।

अब वह कुंड की तरफ झुका। उसने उसे भी कटोरदान सरीखी कोई चीज समझा शायद। मगर उसने जैसे ही सूंड़ उस पर झुकायी, उसकी तेज फूंक से उसमें पड़ी हुई काली राख इस तरह एक साथ उड़ी कि उसके आस-पास काला धुआं-सा छा गया।

उसके बाद जो अद्‌भुत चमत्कार देखने को मिला, जीवन में वह फिर नहीं देखा। किसे पता था, उस बुझी हुई राख के नीचे आग अब भी छिपी पड़ी होगी, जो हाथी की फूंक से अचानक ही जल उठेगी। यही तो हुआ। राख का बादल अभी कुंड के मुंह पर उड़ ही रहा था कि उसके साथ ही आग भी भभक उठी और चौंककर हाथी कई गज पीछे हट गया। घबराहट में पैर फिसल जाने से वह शायद थोड़ा बहुत गिर भी पड़ा। या संभव है, यह मेरा भ्रम ही हो। मगर इतना तो निश्चित है कि उस आग ने उसे बहुत ही डरा दिया था। क्योंकि उसके बाद वह क्षण भर भी वहां नहीं ठहरा और घूमकर एक ही साथ जंगल में लुप्त हो गया। हमें काफी देर तक हंसी आती रही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी आवाज

कुछ तथ्य : कुछ सुझाव

भगीरथ

आपने रामू की कहानी अवश्य सुनी होगी, जो बचपन में किसी मादा भेड़िये द्वारा अपनी मांद में ले जाया गया था। जब उसे मानव-समाज में वापस लाया गया, तो रामू चतुराई एवं समझ का अभाव न होने के बावजूद आवाज तो पैदा कर सकता था (भेड़िये-जैसी); लेकिन उन आवाजों को शब्दों में बदलना उसके लिए असंभव था। स्पष्ट है कि शब्द हमें जन्मजात नहीं मिलते—उन्हें सीखना पड़ता है।

विश्व के न मालूम कितने प्राणियों के पास आवाज है; लेकिन शब्द है सिर्फ मानव के पास। अन्य प्राणी अपनी प्रसन्नता या दुःख को आवाजों के फेर-बदल से ही व्यक्त करते हैं। खुश होने पर कुत्ता कूं-कूं करता है और दुःख के समय रिरियाता है। गाय के रंभाने में भी तरह-तरह के फेर-बदल से उसकी विभिन्न भावनाएं व्यक्त होती हैं।

हम न केवल जागते हुए, बल्कि कभी-कभी नींद में भी बोलते हैं। किंतु हम कैसे बोलते हैं, यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा। पहला आश्चर्य तो यह है कि प्रकृति ने हमें बोलने के लिए कोई विशेष सुविधा नहीं दी है। यह बात अनेक लोगों को अविश्वसनीय लगेगी; लेकिन आदिकाल में जब मानव ने आवाजों को पहली बार शब्दों में बांधा होगा, तो उसने अपने शरीर के उन अंगों का प्रयोग किया होगा, जो मौलिक रूप से खाने, पीने, स्वाद का अनुभव करने, सुनने और सांस लेने के लिए दिये गये हैं। इन्हीं अंगों में क्रमशः क्रांतिकारी विकास होता गया। आज हम महसूस ही नहीं करते कि हमारे पास जो स्वर-संस्थान है, वह प्रकृतिदत्त नहीं, बल्कि आत्मविकसित है।

बोलते समय लगभग सौ मांसपेशियां आंदोलित होती हैं। यह आंदोलन अपनी लयात्मकता की दृष्टि से आश्चर्यजनक ही है। वैज्ञानिकों ने कहा है कि पियानो बजाते समय जितने आंदोलन किये जाते हैं, उतने ही बोलते समय भी होते हैं। आंदोलनों की इतनी अधिकता के बावजूद बोलने में शक्ति का बहुत कम व्यय होता है। बीस लाख लोग एक साथ बोल रहे हों, तो मिला-जुला शक्ति-व्यय मात्र उतना होता है, जितना २५ वाट का बल्ब जलने में।

सांस लेते रहने के लिए हमें जितनी वायु आवश्यक होती है, उससे कुछ ही अधिक वायु बोलने के लिए चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक सांस शरीर से बाहर निकलते समय हलक से गुजरती है, जहां स्वर-पेटिका है। हलक किसी सुरंग की तरह है, जिसमें एक छोटी-सी गुफा-नुमा जगह में जीभ के ठीक नीचे स्वर-पेटिका स्थित है। अनेक कोमल अस्थियों (कार्टिलेज) के ऊपर मांस-पेशियों के छः जोड़े हैं। उन्हें परस्पर संबंधित करने के लिए कई कोश हैं। इन सबको 'चिकना' (लुब्रिकेटेड) रखने के लिए लगभग ७० श्लेष्मा-ग्रंथियां हैं। स्वर-पेटिका के परदे संख्या में दो हैं। वे लचीले कोश हैं, जो गले की दिशा में अंग्रेजी के 'वी' अक्षर-जैसा आकार बनाते हुए स्थित हैं। दोनों परदों के बीच का अंतर एक इंच के दसवें हिस्से जितना होता है। ये परदे 'उपजिह्वा' कहलाते हैं। 'उपजिह्वा' शब्द दोनों परदों के बीच के रिक्त स्थान के लिए भी प्रयुक्त होता है।

आवाज पैदा करने के लिए सबसे पहले शक्ति चाहिये। वह फेफड़ों से उच्छ्वासित हवा से प्राप्त होती है। एक प्रकंपक चाहिये। यह काम हलक और स्वर-पेटिका के परदे करते हैं। ध्वनि-गुंजक के बिना भी काम नहीं चल सकता। यह कर्तव्य गले और मुंह के द्वारा निभता है। अंत में चाहिये स्पष्टता-संस्थान। जीभ, होंठ, तालु और उपजिह्वा यह काम संभालते हैं।

स्वर-पेटिका न केवल स्वर-उत्पादन के साधन के रूप में, बल्कि एक कपाट के रूप में भी काम करती है। इसी कपाट के कारण सिवा वायु के और कोई चीज फेफड़े में नहीं जा सकती। जब भी कोई चीज निगली जाती है, स्वर-पेटिका के परदे आपस में जुड़कर मार्ग बंद कर देते हैं। पास ही स्थित एक कोमल अस्थि, जिसका आकार एक पत्ते-जैसा है, इन परदों की सहायता करती है। निगलने के बजाय यदि सांस ली जाये, तो परदे अपना तनाव समाप्त करके हट जाते हैं, जिससे अंग्रेजी के 'वी' अक्षर का मार्ग खुल जाता है। बोलते समय भी यह कपाट निरंतर कार्यरत रहता है।

पैदा होने के बाद आवाज गले, मुंह, तालु इत्यादि में गूंजती हुई होंठों तक पहुंचती है, जहां प, फ, ब, भ और म का प्रभाव पैदा करने के लिए होंठ विशेष रूप से बंद होते हैं। बातचीत में आम तौर पर हम प्रति मिनिट १५० शब्द बोलते हैं।

कई बार बच्चे काफी उम्र के हो जाने के बावजूद बोलना शुरू नहीं करते, तो मां-बाप घबरा जाते हैं। यदि उन्हें समझाया जा सके कि देर से बोलना, हकलाना, तुतलाना इत्यादि बीमारियां नहीं हैं, बल्कि विशेष तरह की मानसिक अथवा शारीरिक अव्यवस्था है, तो उनकी चिंता अवश्य दूर हो जाये। आधुनिक विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि बोलने से संबंधित लगभग सभी तरह की अव्यवस्थाएं व्यवस्थित की जा सकती हैं।

बच्चे का न बोलना कभी-कभी उसके बहरेपन का सूचक होता है। वह मानसिक खामी भी प्रदर्शित कर सकता है। बोलते होते समय दिमाग के विशेष हिस्सों के आह

अधूरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाने से बच्चे की बोलने की क्षमता पूर्ण अथवा आंशिक रूप से घट सकती है। कोई मानसिक ग्रंथि भी बच्चे को सही समय पर सही ढंग से बोलने से रोकती है। एक लड़का अपनी अस्पष्ट बुदबुदाहटों को भी उस वक्त भूल गया, जब घर में नयी बच्ची का जन्म हुआ और घर के सदस्यों का सारा प्यार उसी पर उमड़ पड़ा।

एक व्यक्ति अपने अधिकारी से सख्त नाराज था। एक बार वह बीमार पड़ा। ठीक होने पर उसकी बोलने की क्षमता आश्चर्यजनक रूप से लुप्त हो गयी। डाक्टरों ने बहुत समझाने की कोशिश की; लेकिन प्रकट रूप से कोई कारण सामने न आया। तब मनोवैज्ञानिकों की सहायता ली गयी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अगर इस व्यक्ति का अपने अधिकारी के प्रति नाप-संदगी का भाव समाप्त किया जा सके, तो शायद कुछ बात बन जाये। प्रयास करके उस व्यक्ति को पूरा आश्वासन दिया गया कि जल्दी-से-जल्दी उसकी नौकरी कहीं और लगवा दी जायेगी। परिणामस्वरूप एक-दो दिन में ही उसकी बोलने की क्षमता लौट आयी।

गले या दांतों की बनावट इत्यादि की खराबी के कारण भी बोलने की अव्यवस्थाएं पैदा हो सकती हैं। हकलाना ऐसी ही एक बहुत सामान्य अव्यवस्था है, जो स्त्रियों की तुलना में पुरुषों को चार गुना शिकार बनाती है। हकलाना कभी-कभी तो प्रत्येक शब्द की शुरूआत में होता है और कभी किन्हीं खास शब्दों अथवा अक्षरों पर।

बोलने की दूसरी अव्यवस्था है तुतलाना। ट को त, द को ध इत्यादि भूलें। ये भूलें तब तक नहीं सुधर सकतीं, जब तक डाक्टर की मदद से 'अव्यवस्था' दूर न कर ली जाये। कई बार तुतलाने का कारण दांतों की बनावट होता है। इसी तरह जीभ अविकसित होने अथवा उसमें किसी और तरह की गड़बड़ी के कारण भी लोग तुतलाते हैं। हकलाने की तुलना में तुतलाना कहीं आसानी से ठीक किया जा सकता है, क्योंकि हकलाने की जड़ें तो दिमाग में बैठी होती हैं, जबकि तुतलाना सिर्फ शारीरिक बनावट में खामी का परिणाम है।

बोलने में एक गड़बड़ी है 'क्लटरिंग' की। इसका शिकार व्यक्ति नहीं जानता कि जब वह बोलता है, तो सुननेवाले की सांस ऊपर चढ़ने लगती है। ऐसा इसलिए कि सुननेवाला बेचारा समझ ही नहीं पाता कि आखिर कहा क्या जा रहा है। कई बार ऐसा व्यक्ति बोलते-बोलते अपने शब्दों को इस तरह 'उडेलता' है, मानो बिस्कुट का डिब्बा खोलकर तश्तरी में उलट दिया हो। कभी-कभी 'शब्दार्थ की भिन्नता' भी दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए—'पकड़ो मत जाने दो'। इस वाक्य में 'पकड़ो' के बाद विराम लगाने पर जो अर्थ निकलता है, वह 'मत' के बाद विराम रखने पर बिलकुल विपरीत हो जाता है। विराम कहां दिया जाये, इसका ज्ञान होने के बावजूद क्लटरिंग का शिकार व्यक्ति इस पर अपना ध्यान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केंद्रित नहीं रख पाता। यह खामी आधुनिक विज्ञान में बहुत गंभीर नहीं मानी जाती।

अपने व्यवसाय के कारण जिन्हें बहुत बोलना पड़ता है (शिक्षक, प्रवक्ता, विक्रेता आदि) वे प्रायः गले में खराश की शिकायत करते हैं। आवाज में पैदा होनेवाली यह रूक्षता स्वर-पेटिका के अतिशय प्रयोग की सूचक है। ज्यादा चलने पर पैर थकते हैं। पैरों की देखभाल न रखने पर गोखरू पड़ते हैं। इसी तरह स्वर-संस्थान का गैर-जिम्मेदारी से उपयोग करने पर हलक में गिल्टियां बन जाती हैं, जो आपरेशन से दूर की जा सकती हैं।

आवाज की रक्षा के लिए सामान्य स्वास्थ्य की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। शारीरिक श्रम से अपने को चुस्त रखिये, पर्याप्त नींद लीजिये, आराम करिये और अच्छा खाना खाइये। छूत से बचिये। काम के अतिरिक्त बोझ से भी! यदि आपको चीखने की आदत है, तो छोड़ दीजिये। फुटबाल मैच में खिलाड़ियों को उत्साह दिलाने के लिए चीखनेवाले दर्शक सच पूछा जाये, तो अपनी स्वर-पेटिका के साथ सूइयां चुभोने-जैसा ही अत्याचार करते हैं।

यदि आपको बहुत ज्यादा धूम्रपान की आदत हो, तो इसमें भी कटौती करनी पड़ेगी। धूम्रपान का गरम धुआं अन्य दृष्टियों से हानिकर ही है, उसके कारण स्वर-संस्थान भी कम आहत नहीं होता। शराबियों की भी आवाज खराब हो जाती है।

इसके लिए सुबह-शाम गहरी सांसें लेने का व्यायाम अवश्य करिये। गहरी सांस लेकर उसे धीमे-धीमे छोड़िये। फेफड़ों में आप कब तक सांस रोक सकते हैं, इसकी भी सेकेंड के कांटे से गणना करिये। कागज का नन्हा-सा टुकड़ा दीवार पर रखकर उस पर फूंकिये। टुकड़े को छोड़ दीजिये। देखिये कि आप अपनी फूंक से उसे कितनी देर तक दीवार के साथ चिपकाये रख सकते हैं। सांस के ये व्यायाम कुछ ही दिनों में आपके स्वर-संस्थान को मजबूत बना देंगे।

यह भांपने की भी कोशिश करिये कि आप 'कहें खेत की, बतायें खलिहान की' समस्या के तो शिकार नहीं हैं? दूसरे की बातें ध्यान से सुनिये, तब जवाब दीजिये। झटपट बोलने की आदत भी ठीक नहीं। इसके अलावा कोशिश करिये, जो बात तीन शब्दों में कही जा सकती हो, उसे पंद्रह शब्दों में न कहें। यह गुर ऐसा है, जिससे बोलनेवाले की गरिमा स्वतः कई गुना हो जाती है।

* * *

१८५७ के संग्राम के बाद जब अंग्रेजों ने गालिब का वजीफा बंद कर दिया और वे परेशान होकर नवाब रामपुर से मिलने रामपुर पहुंचे, तो उस वक्त नवाब कहीं बाहर जा रहे थे। गालिब को दिलासा देते हुए उन्होंने सिर्फ इतना कहा—"मैं आपको खुदा के सुपुर्द करता हूं।" यह सुनकर गालिब उदास होकर कहने लगे—"खुदा ने तो मुझे आपके सुपुर्द किया था, और बंदापरवर, आप फिर मुझे खुदा के सुपुर्द कर रहे हैं?" —हुस्न जमाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[इस स्तंभ के लिए आप भी अपनी कोई पारिवारिक, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक समस्या संक्षेप में लिखकर भेज सकते हैं। शारीरिक रोगों के संबंध में कृपया हमें न लिखें। सम्पादक]

कोरी भावुकता छोड़िये

"जब मैं इंटरमीडिएट में प्रविष्ट हुआ, तभी अपने एक सहपाठी से मेरा परिचय घनिष्ठता में बदल गया। वह मेरे पड़ोस में ही रहता है। हमारे दिलों में एक दूसरे के लिए प्यार का अथाह सागर उमड़ने लगा और हम दोनों ने एक दूसरे को अपना भाई मान लिया। मेरे इस भाई का हाल ही में प्रेम-विवाह हुआ है। मेरी भाभी भी (जो हम दोनों को विवाह के पहले से खूब जानती है) हम दोनों में भाई का रिश्ता मानती है तथा मेरे साथ उसका व्यवहार सगी भाभी से भी बढ़कर है। आफिस के अतिरिक्त मेरा सारा समय भाई और भाभी के बीच ही व्यतीत होता है। मेरे माता-पिता ने मेरी इस घनिष्ठता पर कभी कुछ नहीं कहा है और वे भाई को चाहते भी बहुत हैं।

अब दो या तीन वर्ष में, जब मैं उचित आर्थिक स्थिति प्राप्त कर लूंगा, मेरा विवाह होगा। लेकिन विवाह का यह प्रश्न मेरे लिए बड़ा जटिल सिद्ध हो रहा है। मैं चाहता हूं कि विवाह के पश्चात् मैं भाई और भाभी के पास रहूं। वे भी यही चाहते हैं। लेकिन मेरे माता-पिता, मुझे अपने साथ ही रखना चाहेंगे, जबकि विवाहित होकर उनके साथ रहना मेरे लिए बड़ा कठिन हो जायेगा। क्योंकि तब मैं अपना सारा समय भाई-भाभी के घर न बिता सकूंगा। ऐसी हालत में यदि मैं माता-पिता के साथ रहने से इन्कार करता हूं, तो वे दुःखी होंगे। इसके विपरीत मेरे भाई को उसके माता-पिता ने स्वेच्छा से अलग घर बसाने को कह दिया था, जो उसने सिर्फ मेरी सहायता के बल पर बसाया है और मेरे बिना वह चल नहीं सकता।

मैं घर में सबसे बड़ा हूं और मुझसे छोटे तीन भाई और हैं, जिनका मुझसे ताल-मेल नहीं बैठता; अतः भाई-भाभी को मैं अपने माता-पिता के पास भी नहीं रख सकता। मैं बड़ी उलझन में पड़ गया हूं और कोई मार्ग नहीं सूझता। —एक पाठक"

आज का जीवन इतना जटिल व तनाव-पूर्ण हो गया है कि उसे सहज आत्मीयता का स्पर्श कभी-कदाक ही मिल पाता है। ऐसी स्थिति में उस स्पर्श के प्रति आपकी तरह गहरा लगाव अनुभव करना बिलकुल स्वाभाविक है। आपको सहपाठी के रूप में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मित्र और आगे चलकर उससे भाई-भाभी का स्नेह भी मिला, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। यह मधुर संबंध भविष्य में और भी मधुर बना रहे, इसके लिए कोरी भावुकता से काम नहीं चलेगा—कई व्यावहारिक बातों पर विचार करना होगा।

सबसे पहली बात तो यह है कि संबंधों की कड़ी हमेशा एक-सी नहीं रहती, वह अपवाद-स्वरूप ही जुड़ी रह पाती है। परिस्थितियों में और व्यक्ति के मनोभावों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। आप अपना ही उदाहरण लें— आपको भाई-भाभी से आज जो स्नेह मिल रहा है, वह उनके संतान होने के बाद भी उसी रूप में मिलता रहे, यह आवश्यक नहीं। इसी प्रकार आज आप तीनों में गहरी आत्मीयता है; लेकिन विवाह के उपरांत आपकी पत्नी और भाभी में ऐसी आत्मीयता विकसित न हो पायी, तो भी आपके सामने समस्या खड़ी हो सकती है। लेकिन इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं कि अच्छे व गहरे संबंध कभी जुड़ते ही नहीं, या आप लोग इन संबंधों को कुशलतापूर्वक नहीं निभा पायेंगे। मेरा आशय तो यहां केवल इतना ही है कि इन सब पहलुओं पर विचार अवश्य कर लेना चाहिये।

आपके भाई ने सिर्फ आपकी सहायता से घर बसाया है, यह एक स्थिति हो सकती है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से अपंग नहीं है और उसकी एक निश्चित आय भी है, तो उसके लिए घर चलाना कोई असंभव बात नहीं है। आपके पत्र से ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि आपका भाई किसी भी रूप में परावलंबी है। यदि ऐसी कोई बात नहीं है, तो यह आपका भ्रम ही है कि वह आपके बिना घर नहीं चला सकता।

अब आप अपने माता-पिता और पारिवारिक स्थिति पर भी थोड़ा विचार कर लीजिये। आपको उनसे कोई शिकायत नहीं है और उनसे भरपूर प्यार भी आपको मिलता रहा है। ऐसी हालत में अब उनकी उपेक्षा का प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। आखिर हर माता-पिता की अपनी संतान से कुछ अपेक्षाएं होती हैं। अतः उनकी भावनाओं का खयाल रखना भी आपका सहज कर्तव्य हो जाता है। और फिर, आप परिवार में सबसे बड़े और कमाऊ पूत हैं तब तो आपकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

इन सब स्थितियों पर विचार करते हुए मैं तो आपको यही राय दे सकता हूं कि दो-तीन या चार वर्षों में, जब आपकी आर्थिक स्थिति अनुकूल हो जाये, आप निश्चिंत होकर विवाह करें। अव्वल तो इन दो-चार वर्षों में ही आपके सामने नई स्थितियां स्पष्ट हो जायेंगी। फिर भी आप जो परिस्थिति आपके सम्मुख है, उसी पर विचार करें।

जब तक आपका विवाह नहीं होता, तब तक तो आपके लिए कोई विशेष उलझन जैसी बात है ही नहीं। आपके भाई-भाभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से इसी प्रकार मधुर संबंध बने रह सकते हैं। यहां तक आपके माता-पिता को भी कोई आपत्ति नहीं है। विवाह के बाद आप माता-पिता की इच्छानुसार एक बार साथ ही रहने का प्रयत्न करें। निभाव की संभावना न दीख पड़े, तो आप विवाह के एकदम बाद भी उसी मोहल्ले में अलग घर बसा सकते हैं; और इसमें आपके माता-पिता को भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

विवाह होते ही आप दोनों का भाई-भाभी के साथ रहना कई दृष्टियों से व्यावहारिक नहीं लगता। एक तो इससे आपके माता-पिता को स्वाभाविक रूप से चिढ़ होगी कि भाई-भाभी ने आपको उनसे अलग कर दिया। दूसरी बात आपकी पत्नी व भाभी के स्वभाव के सामंजस्य की भी है। इसलिए माता-पिता के साथ या अलग रहना ही ज्यादा अच्छा है। चूंकि आपके भाई-भाभी आपके पड़ोस में ही रहते हैं, इसलिए मिलने-जुलने या संबंधों को पूर्ववत् मधुर बना रखने में भी कोई अड़चन पैदा नहीं होगी। मैं तो समझता हूं कि तब आत्मीयता बढ़ने की संभावना और ज्यादा रहेगी। हां, अलग रहते हुए जब आपको पूरा विश्वास हो जाये कि आपकी पत्नी व भाभी का निभाव हो सकता है, तो आप साथ भी रह सकते हैं। किंतु अभी कोरी भावुकता में न बह जायें।

—सनामि

★

जीवन के छः सूत्र

इंग्लैंड के राजाओं के प्रासाद—बकिंघम पैलेस और सैंड्रिघम में छः उद्धरण हमेशा रहे हैं, जिन पर उन्होंने बराबर अमल करने की कोशिश की। ये अब भी हैं—

मुझे सिखा दो कि मैं एक खिलाड़ी की भांति ही विजय और पराजय दोनों को समान रूप से स्वीकार लिया करूं।

मुझे सिखा दो कि भावना और भावुकता में अंतर कर सकूं, भावना को सराहूं और भावुकता से बच सकूं।

मुझे सिखा दो कि न मैं किसी की थोथी प्रशंसा करूं और न किसी से थोथी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होऊं।

मुझे सिखा दो कि संकट और आपदाओं को वैसी ही खामोशी से झेलूं, जिस तरह एक सधा हुआ पशु सब सह लेता है।

मुझे सिखा दो कि जीत सकूं, तो जीत ही लूं; किंतु यदि मुझे हारना पड़े, तो उस हार से भी मुझमें अच्छाई ही बढ़े।

मुझे सिखा दो कि न मैं चांद पाने के लिए मचलूं और न बीती हुई बातों पर चीखूं-चिल्लाऊं।

—श्रीहरि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीतर जागा दाता

'अज्ञेय'

मतियाया
सागर लहराया।
तरंग की पंखयुक्त वीणा पर
पवन ने भर उमंग से गाया।
फेन-झालर-दार मखमली चादर पर मचलती
किरण-अप्सराएं भारहीन पैरों से थिरकीं-
जल पर आलते की छाप छोड़ पल-पल बदलती।
दूर धुंधला किनारा
झूम-झूम आया, डगमगाया किया।
मेरे भीतर जागा
दाता:
बोला:
लो, यह सागर मैंने तुम्हें दिया।
हरियाली बिछ गयी तराई पर
घाटी की पगडंडी
लजायी और ओट हुई-
पर चंचला रह न सकी, फिर उझकी और झांक गयी।
छरहरे पेड़ की नयी रंगीली फुनगी
आकाश के भाल पर जय-तिलक आंक गयी।
गेहूं की ही बालियों में
कभी राई की उजली, कभी सरसों की पीली फूल-ज्योत्स्ना दिप गयी
कभी लाली पोस्ते की सहसा चौंका गयी-
कभी लघु-नीलिमा तीसी की चमकी और छिप गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे भीतर फिर जागा
दाता :
और मैंने फिर नीरव संकल्प किया :
लो, यह हरी-हरी धरती—यह सवत्सा कामधेनु—मैंने तुम्हें दी :
आकाश भी तुम्हें दिया :
यह बौर, यह अंकुर, ये रंग, ये फूल, ये कोंपलें,
ये बूंदिया कनी से भरी बालियां,
ये मैंने तुम्हें दीं
आंकी-बांकी रेखा यह,
मेंड़ों पर छाग-छौने ये किलोलते,
यह तलैया, गलियारा यह,
सारसों के जोड़े, मौन खड़े पर तौलते—
यह रूप जो केवल मैंने देखा,
यह अनुभव अद्वितीय, जो केवल मैंने जिया,
सब तुम्हें दिया।
एक स्मृति से मन पूत हो आया।
एक श्रद्धा से आहुत प्राणों ने गाया।
एक प्यार का ज्वार दुर्निवार बढ़ आया।
मैं डूबा नहीं, उमड़ा-उतराया,
फिर भीतर
दाता खिल आया।
हंसा, हंसकर तुम्हें बुलाया।
लो, यह स्मृति, यह श्रद्धा, यह हंसी,
यह आहुत, स्पर्श-पूत भाव
यह मैं, यह तुम, यह खिलना,
यह ज्वार, यह प्लावन,
यह प्यार, यह अडूब उमड़ना—
सब तुम्हें दिया।
सब
तुम्हें
दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या कहने हैं स्पेन की ट्रेन के

लीसा मांटेसिनोस

जब मुझे नवयुवा पर्यटन-एजेंट ने कहा था कि मैं स्पेन की रेलगाड़ियों में दूसरे दर्जे में ही सफर करूं, तो मैं समझी थी कि दूसरा दर्जा तीसरे दर्जे से ज्यादा आराम-दायी होगा। पर उसने कहा, नहीं; और समझाया कि इसके सिवा और कोई चारा ही नहीं है। अगर आप तीसरे से गयीं, तो मंजिल तक कभी पहुंचेंगी ही नहीं, और पहल से जायेंगी, तो इसकी कोई गारंटी नहीं है कि ट्रेन स्टेशन से रवाना होगी ही।

मैं एक महीना स्पेन में इधर से उधर घूमी, इस बीच मुझे उस एजेंट की नेक सलाह समय-समय पर याद आती रही।

शुरूआत हुई ग्रैनेडा से। उससे पहले मैंने स्पेन की दूसरे दर्जे की 'आरामदायक गाड़ी'—टी० ए० एफ०—का आनंद नहीं लिया था। होटल से स्टेशन तक के सफर में कोई घटना नहीं हुई, सिवा इसके कि ड्राइवर को पुलिस के सिपाही ने रोका, टोपी न पहने होने के अपराध में। दोनों में कुछ देर धाराप्रवाह वाक्द्वंद्व चला। अंत में ड्राइवर ने २५ पेसेटा (एकपेसेटा=५० पैसे) देकर जान छुड़ायी। पर जब वह वापस गाड़ी में बैठा, तो बराबर बड़बड़ करता रहा। रास्ते का शायद कोई ऐसा पैदल-यात्री बचा होगा, जिस पर उसने गालियों की बौछार न की हो।

थोड़ी देर में स्टेशन आ गया। पुलिस द्वारा ड्राइवर को तंग किये जाने का मुझे भी दुःख था; पर वह तब खत्म हो गया, जब ड्राइवर ने मुझसे ४० पेसेटा वसूल किये। दूसरे शहरों में इतनी-सी यात्रा के लिए मुझे १० या १५ से ज्यादा नहीं देने पड़े थे। यहां ड्राइवर ने किराये में अपना जुर्माना भी जोड़ लिया था।

जल्दी से मैं उस डिब्बे की ओर बढ़ी, जिसमें मैंने अपने लिए जगह सुरक्षित करायी थी। यहां का राष्ट्रीय नियम है कि तब तक टिकिट न खरीदा जाये, जब तक कि सीट सुरक्षित न करवा ली जाये। लेकिन जब मैं डिब्बे के प्रवेश-द्वार पर पहुंची, तो वहां अजब तमाशा था। लोग पागलों की तरह धक्कामुक्की कर रहे थे, ताकि औरों से पहले वे अंदर दाखिल हों—हालांकि ट्रेन के छूटने में अभी २० मिनिट बाकी थे।

बच्चे धक्के खा रहे थे और अपने माता-पिता को रो-रोकर पुकार रहे थे। परिवार बिछुड़ गये थे और अपनों-अपनों को चीख-चीखकर बुला रहे थे। स्टेशन पर आहों और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi.Collection. Digitized by eGangotri

कराहों का साम्राज्य था। इस सबके बावजूद रेलवे कर्मचारी संतों की भांति शांत थे। जाहिर था कि यह कोई नयी बात न थी।

एक बेहद मोटे सज्जन टिकिट चेक कर रहे थे। उनकी विशाल तोंद डिब्बे के द्वार और प्रवेशार्थियों के बीच में पड़ती थी। अचानक एक सुंदर वस्त्रधारिणी मध्यम-वर्गीय महिला आयीं और उन्होंने ऐसा शौर्य दिखाया कि सुनकर सहसा विश्वास न होता। उन्होंने तोंद दबाकर भीतर जाने में सहज ही सफलता हासिल कर ली और भीतर अपनी सीट तलाश करने लगीं। लेकिन बेकार, क्योंकि जिस सीट को अपना समझकर उन्होंने उस पर चढ़ा लिनन का खोल खींचा, तो वह तो चिथड़े-चिथड़े हो गया; पर सीट पर उनका नंबर नहीं मिला। अपना नंबर ढूंढ़ने की कोशिश में उन्होंने कई एक और सीटों की भी वही गत बना डाली; पर उनका नंबर नदारद ही रहा।

जब मैंने अपना टिकिट तोंदधारी सज्जन को दिया, तो उनके गुलगुले गालों में मुस्कान के गड्ढे पड़ गये। बोले—"यह तो गलत गाड़ी है, सिनोरिटा (कुमारीजी।)" और उनकी हंसी फूटी—"इससे आप कोर्डोबा कभी नहीं पहुंच सकतीं। आप ये रेल-लाइन पार करें, दूसरी तरफ जायें। अच्छा, मैं खुद आपको ले चलूंगा।"

और वह मेरा हाथ पकड़कर ले चला।

मगर जब मेरी नजर उस गाड़ी पर पड़ी तो मेरा दिल धक्-से रह गया। उसमें सिर्फ दो डिब्बे थे और वे भी ठसाठस भरे हुए थे। कंडक्टर ने साफ बता दिया कि इसमें भोजन के लिए कोई डिब्बा नहीं है।

"बात यह है कि रेल-पथ पुराना और जंग लगा हुआ है। वह दो से ज्यादा डिब्बे नहीं झेल सकता। डीजल इंजिन भी दो से ज्यादा डिब्बे नहीं खींच सकता; क्योंकि इससे करारे धक्के लगते हैं और आखिरी डिब्बा पटरी से उतर जाता है।"

कोच में ७० सीटें थीं, सबकी सब भरी हुईं। कुछ लोग तंग रास्तों में अपने बोरिया-बिस्तर रखे हुए उन्हीं के ऊपर विराजमान थे। दोनों ओर लकड़ी की तीन-तीन सीटें थीं और उन पर गद्दियां नाममात्र को थीं।

वहीं एक पादरी था, जो सुंघनी लेने का घोर अभ्यस्त था। वह लगातार थोड़ी-थोड़ी तंबाकू अपने नथुनों में भरता, उसके असर की प्रतीक्षा करता और फिर जोरों से छींकता। नाक का सारा मलबा वह अपने काले चोगे से पोंछकर मेरे घुटनों पर गिराता जाता। बेंचें इस कदर सटी हुई थीं कि आमने-सामनेवालों के पांव आपस में लड़-लड़ जाते थे।

स्नानघर में हर वक्त भीड़ लगी रहती थी। वह एक था और उसे काम में लेनेवाले हम सारे यात्री! इसलिए स्नानघर की गंध का वर्णन करने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। एक छोटा-सा सुखद स्थान भी था, कम-से-कम उससे ऐसी आशा की जाती थी; और उसका नाम था 'बार।' जब मुझे लगा कि मुसाफिरों में बैठे-बैठे मुझे उलटी हो जायेगी, तो आखिर मैं यहां आयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रास्ते में मैंने देखा, एक महिला रास्ते में बैठी, एक तौलिये पर शांतिपूर्वक उलटियां करने में लगी हुई है। जाहिर था कि तौलिया वह इसी काम के लिए खरीदकर लायी थी। कोई उसकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था, उसका पति तो बिलकुल ही नहीं।

जब मैं बार में पहुंची, तो वहां रेलवे कर्मचारियों ने मुझे घेर लिया। मेरे पास कैमरा देखकर बार-चालक अचानक वाचाल हो उठा। वह जानना चाहता था कि मैंने कैसे-कैसे फोटो लिये हैं। उसने आस-पास के सब लोगों से मेरा परिचय कराया—"ये कुमारी संवाददाता हैं।"

पता चला कि छोटी-सी गाड़ी में भी कर्मचारियों की खासी संख्या रहती है। हमेशा एक अतिरिक्त इंजीनियर, एक मेकैनिक और एक कंडक्टर गाड़ी के साथ चलते हैं, उनके साथ उनके रिश्तेदार भी रहते हैं और उन्हें भी रेलवे पास मिलते हैं।

एक स्टेशन पर हमारी गाड़ी ने आपत्-कालीन विराम लिया। बात यह थी कि ब्रेकों में आग लग गयी थी। कई रेलवे कर्मचारी दौड़े और भाप छोड़कर फुफकारती हुई गाड़ी को पानी से सींचने लगे। कुछ मिनिट बाद गाड़ी आगे बढ़ी।

और अब 'अलमुएर्जो' का समय हो गया। इसे लंच तो नहीं, शानदार नाश्ता कहा जा सकता है। मुसाफिर मोटे-तगड़े सैंडविचों के लिए खींचातानी करने लगे। यहां यह रिवाज है कि जब आप भोजन शुरू करें, तो उसके लिए पड़ोसी को भी आमंत्रित करें। पड़ोसी का कायदा यह होना चाहिये कि वह विनम्रतापूर्वक मना करे। मैं तो देखती ही रह गयी कि वे लोग कितनी-कितनी रोटियां खा जाते हैं। सुगठित शरीरवाली एक लड़की को जब मैंने भारी-भरकम सैंडविच साफ करते देखा, तो लगा, कुछ ही दिन में वह भी अपनी मां की तरह मुटल्ली हो जायेगी। तमाम स्पेनी महिलाएं मोटी होती हैं और इसे बुरा भी नहीं समझा जाता। २० और ४० के बीच की मुश्किल से ही ऐसी कोई महिला मिलेगी, जो गर्भवती न हो—मर्द उनसे यही तो चाहते हैं!

लंच के बाद ऊपर से खूब सारा पानी पिया जाता है, ताकि आहार-नलिका धुल जाये। यही नहीं, लोग बार-बार सिंचाई करने में आस्था रखते हैं, अतः जब भी गाड़ी रुकती, लोग पास के झरने या नदी की तरफ अपने बर्तन लेकर पानी के लिए दौड़ते।

बार-चालक मुझे सुंदर दृश्य दिखाने में व्यस्त हो गया। उसके ग्राहक चीखते-चिल्लाते रहे; पर उसने कान नहीं दिये और मुझे बंजर भूमि के हरे पेड़ों के कटाव की छटा समझाता रहा।

दोपहर में १२ बजे के बाद हम बोबादिला पहुंचे। गाड़ी ने हमें तवे-से जलते प्लैटफार्म पर उतार दिया। एजेंट ने मुझे बताया था कि कोर्डोबा जाने के लिए बोबादिला में गाड़ी बदलनी पड़ती है। यहां से वह गाड़ी दो बजकर ४१ मिनिट पर जायेगी। मैं लंच के लिए स्टेशन के रेस्तरां में आयी।

रेस्तरां बड़ा पाक-साफ था और सुन्

अक्टूबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सान भी। भोजन-कक्ष और भी बढ़िया था। मेजों पर चमकदार मेजपोश, लिनन के नैपकिन और सुंदर गिलास रखे थे। बीच में शराब की बोतलों का अंबार लगा था। इस रेगिस्तान में इतनी शराब कहां से आती है? क्या मैं गलत बोबादिला में आ गयी हूं? नहीं, मुझे बताया गया, यहां पास में ही अंगूर भी उगते हैं। लंच के लिए पूछने पर बताया गया कि बस जरा-सी देर में परोसा जायेगा।

मैंने कुछ मदिरापान किया और जब एक बज गया, तो फिर पूछा—"लंच में कितनी देर है?"

रेस्तरां-चालिका महिला ने जवाब दिया—"बस, वेटर के आने की देर है। तब तक आप ये खाइये।" और वह मछली, पनीर और सौस से बना 'तापा' परोस गयी।

जब मैंने मदिरा का दूसरा दौर समाप्त किया, तो भूख बड़े जोर की लग रही थी। मैंने अधीर होकर पूछा—"लंच तैयार है, या नहीं?"

उच्च रक्तचाप की करामात

"नहीं जी, नहीं," महिला ने मुस्करा-कर कहा—"उसकी अभी क्या जल्दी है।"

"लेकिन गाड़ी का वक्त तो होने को है?"

"वह तब तक एक इंच आगे नहीं सर-केगी, जब तक सिनोरिटा भोजन नहीं कर लेंगी। आप जरा भी चिंता न करें।"

"मगर ट्रेन तो २.४१ पर जाती है।" मैं लगभग चीख उठी।

"नहीं, कभी नहीं।" उसका जवाब साफ था और उसके रौबीले व्यक्तित्व से लोहा लेने का ताव मुझ में न था, पर मैंने टाइम-टेबल में उसे दिखाते हुए कहा—"देखो, बड़े-बड़े अक्षरों में साफ लिखा है—१४.४१।"

"अच्छा यह?" वह मुस्करायी—"इसकी जरा भी फिक्र न करो जी, गाड़ी साढ़े तीन बजे से पहले नहीं आयेगी, यह आप खुद देख लेंगी।"

और जब मैं खा-पीकर मुंह पोंछ रही थी, तो कोर्डोबा की गाड़ी ने स्टेशन पर पहुंचकर भाप छोड़ना शुरू किया। मैंने देखा, उस वक्त ३-३० हुए थे।

जब मैं अंधेरे रेस्तरां से बाहर रेगिस्तान की चिलचिलाती धूप में आयी और मैंने जो नजारा देखा, तो हक्की-बक्की रह गयी। गाड़ी लकड़ी की बनी हुई थी और उसका हुलिया पुरातत्व का अलौकिक नमूना था। मन हुआ कि बैठकर थोड़ी देर खुलकर हंस लूं। लोग खुली खिड़कियों के बाहर लटक रहे थे और चूंकि यहां से उस गाड़ी में बैठनेवाली मैं अकेली मुसाफिर थी, गाड़ी के यात्रियों के मन में फौरन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे प्रति भाईचारे और सहानुभूति की भावना पैदा हो गयी थी। वे मुझे हाथ हिला-हिलाकर बुला रहे थे कि मैं अंदर आ जाऊं, ताकि गाड़ी आगे बढ़े।

यह गाड़ी पहलीवाली गाड़ी से काफी लंबी थी, इसलिए अपने कदम फूंक-फूंककर बढ़ा रही थी। मुझे किसी तरह जगह मिली ही थी कि ट्रेन चरमराकर रुक गयी। लोग 'उतरो-उतरो' चिल्ला रहे थे। अपना कैमेरा पकड़े मैं भी डिब्बे से बाहर भागी।

किसी की जलती सिगरेट खिड़की और लकड़ी की दीवार की दरार में गिर गयी थी। एक आदमी अपना पीने का पानी उस पर उंडेल रहा था। जैसे ही मैं वहां पहुंची, एक हथियारबंद सिपाही ने मेरा रास्ता रोका—"नहीं सिनोरिटा, फोटो मत उतारिये। यह बड़ा संगीन मामला है।"

फिर भी जब एक बेहद मोटी महिला स्नानघर से चुल्लू-भर पानी लाकर डालने लगी, तो मुझसे रहा न गया और मैंने चुपके से उसका एक शाट ले ही लिया।

पर धुआं उमड़ता ही रहा। अंत में एक साहब ने खिड़की को तोड़ डाला और जलते हिस्से को अलग कर दिया।

अगले स्टेशन पर सशस्त्र पुलिस का अपना संम्मेलन हुआ, जिसका उद्देश्य यह तय करना था कि दुर्घटना के बारे में क्या विवरण दिया जाये। हमने उन्हें प्लैटफार्म पर खड़े-खड़े विचारों में खोये हुए छोड़ा, गाड़ी आगे बढ़ी। जिन लोगों के ताश आदि के खेल या गप्पों का सिलसिला टूट गया था, वह वापस जुड़ा। मैंने कुछ अन्य लोगों की भांति आराम करना ही ठीक समझा। मेरी आंख लग गयी। जब आंख खुली, तो मामला कुछ अजब नजर आ रहा था। पड़ोसियों ने रहस्य खोला।

बड़ी शांति के साथ उन्होंने बताया कि हमारी गाड़ी खड़ी है और खड़ी ही रहेगी, क्योंकि इंजिन अकेला आगे चला गया है। हमें वह ग्रैनेडा और कोर्डोबा के अधरस्ते पर इस जलते पठार पर छोड़ गया है। मैं उछलकर खड़ी हो गयी।

"घबराओ मत, सिनोरिटा," एक आवाज आयी—"दूसरा इंजिन आयेगा; और हो सकता है, जल्दी ही आये।"

हम लोग एक पुल के एक छोर पर खड़े थे। मुझे बताया गया कि दुर्भाग्य से पुल इतना ताकतवर नहीं है कि उस पर से गाड़ी गुजर सके। कर्मचारियों के बीच लंबी बहस हुई और उसमें महत्वपूर्ण निर्णय हुआ, कि यह कि इंजिन अपना यह बहुमूल्य अंश बाब (दोनों डिब्बे) यहीं छोड़ जाये और एव. हल्के इंजिन की तलाश करे। लोगों ने बड़े प्यार और गर्मजोशी के साथ इंजी नियर को विदा किया। इंजिन में उसके लि ढेर सारा खाने-पीने का सामान लाद दि गया, ताकि वह संकटकाल का मुकाब कर सके। जब उसने इंजिन चालू किय और जब वह टेढ़े-बांके पुल पर से गुजर तो लोग 'शाबाश-शाबाश' कहकर उस उत्साह बढ़ा रहे थे।

सूरज डूबने लगा और उसके साथ मे अफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह आशा भी डूबने लगी कि हम कभी कोर्डोबा पहुंच सकेंगे।

और तब मैं मन-ही-मन लज्जित हुई, जब मुझे अचानक यह महसूस हुआ कि मैं ही अकेली मुसाफिर थी, जो ऐसी घोर अनास्था प्रकट कर रही थी। हर कोई इस अनपेक्षित आराम का आनंद लेता हुआ मालूम पड़ा।

एक फ्रांसीसी मुसाफिर ने भाषण देकर भीड़ का मजमा जमा लिया और बताने लगा कि साझा बाजार में ग्रेट ब्रिटेन को शामिल करने में क्या-क्या हानियां होंगी। उदार श्रोता बीच-बीच में उसे स्फूर्तिदायक पेय भी देते जाते थे। अंत में जब उसने भाषण समाप्त किया और अपने मंच (जो और कुछ नहीं नारंगियों की छाबड़ी थी) पर से उतरा, तो रेत में सिर के बल गिरा। पर लोग तब भी उसे शाबाशियां दे रहे थे।

इतने में दूर से आती सीटी की आवाज सुन पड़ी। यह नया इंजिन हूबहू डिस्नीलैंड की बच्चा-गाड़ियों का इंजिन था। फिर भी वह बड़ा बली मालूम हो रहा था और हमारी तरफ भाप छोड़ते हुए बड़ा गर्वीला लग रहा था। आगे डगमगाता हुआ पुल था; पर उस बहादुर को इसकी तनिक भी चिंता न थी।

तीन घंटे की सहनशीलता का पुरस्कार आखिर हमें मिला। हमारे डिब्बे समारोह-पूर्वक उस नन्हे इंजिन से जोड़े गये और बड़ी सावधानी के साथ रेंग-रेंगकर उसने हमें पुल पार करा दिया।

जैसे ही मैं चैन की सांस लेने की स्थिति में हुई, मेरी जिज्ञासा बढ़ी कि अपने पड़ोसी से इस मामले में कुछ और जानकारी हासिल की जाये। वह औरों से ज्यादा जानकार भी मालूम होता था और सौभाग्य से वह रेलवे कर्मचारी निकला।

"ऐसा हर रोज नहीं होता," उसने बताना शुरू किया—"पुल पिछले सप्ताह तक तो बिलकुल ठीक था; पर अब समय के साथ वह कमजोर होता जा रहा है।"

"अच्छा तो यह पुल पुराना है।"

"नहीं," वह मेरे अज्ञान पर मुस्कराया—"यही तो दिक्कत है कि यह पुराना नहीं है। रोमन लोग बढ़िया पुल बनाते थे, उनमें से कुछ तो आज भी काम में आते हैं। उस फ्रांसीसी ने भी बढ़िया पुल बनाया था, वैसा जैसा पुर्तगाल में दौरो के ऊपर है।"

"आपका मतलब ईफिल से है?"

"हां, यही तो नाम है उसका। तुम्हें मालूम है, उसने पेरिस में एक किस्म की मीनार भी बनायी थी। पर उसके पुलों के क्या कहने?"

मैं ताड़ गयी कि उसकी देशभक्ति भभकने लगी है। अतः मैं कूटनीतिक ढंग से काम लेने लगी! कहा—"मेरे खयाल से हम अभी जिससे गुजरे हैं, उस पुल में भी कोई खराबी नहीं है। हो सकता है, उसमें जरा-सी मरम्मत की ही जरूरत हो।"

"मरम्मत?" वह मेरी ओर अविश्वास से देखने लगा—"लेकिन यह तो पिछले महीने ही बनकर तैयार हुआ है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा का पत्थर

अश्विनी कुमार व्यास

कोणार्क के सूर्य-मंदिर की भांति मैसूर राज्य स्थित बेलूर का चेन्नकेशव मंदिर भी ललित कला के सूक्ष्म सौंदर्य का ज्वलंत उदाहरण है। और जैसे कोणार्क के साथ एक करुण कहानी है, उसी प्रकार इस मंदिर के निर्माता जक्कणाचार्य की भी करुण गाथा इस मंदिर से जुड़ी हुई है।

जक्कणाचार्य का जन्म मैसूर में कैदाल नामक गांव में हुआ था। उन्होंने अध्ययन तथा साधना द्वारा ज्योतिष एवं शिल्पकला में पांडित्य प्राप्त किया। जब उनके घर पुत्र का जन्म हुआ, तब उन्होंने ज्योतिष द्वारा देखा कि यह लड़का उनके किये पर पानी फेर देगा।

कलाकार का हृदय टूट गया। उन्हें तो अपने पुत्र से यही आशा थी कि वह उनसे भी श्रेष्ठ कलाकार बने; परंतु ज्योतिष से प्राप्त भविष्य की झांकी ने उनकी आशाओं पर तुषारपात कर दिया और वे एक दिन पुत्र-पत्नी का परित्याग कर चल पड़े। उनके चरण जिस भी दिशा में चले, वहीं स्थापत्य की अपूर्व कलाकृतियां निर्माण होती चली गईं। उनकी हथौड़ी और छेनी का अमृत स्पर्श पाकर पत्थर पुलकित हो उठे, मंदिरों से मंडित होकर तीर्थस्थान पुण्य के ही नहीं, सौंदर्य के धाम बन गये।

कला की उपासना करते हुए वे सारे कर्नाटक में घूमते रहे। और अंत में होय्सल साम्राज्य की राजधानी द्वारसमुद्र पहुंचे। उस समय द्वारसमुद्र में विष्णुवर्धन राज करते थे। यों होय्सल राजवंश जैन मत का अनुयायी था; किंतु कुछ ही समय पूर्व श्री रामानुजाचार्य के प्रभाव में आकर उसने वैष्णव धर्म स्वीकार कर लिया था। जक्क णाचार्य जैसे प्रतिभावान शिल्पी को रा धानी में उपस्थित देख, राजा के मत

अपूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह इच्छा अंकुरित हुई कि भगवान विष्णु का एक भव्य एवं अपूर्व मंदिर बेलूर में निर्माण किया जाये।

शिल्पी को राजा की योजना जंच गयी और उन्होंने राजाश्रय में काम करना स्वीकार कर लिया। शिल्प-निर्माण के लिए उपयुक्त पत्थर दूर-दूर से आने लगे। दूर-दूर से स्थापत्य की परंपरा में निष्णात कुशल कलाकार-श्रमिकों को बुलवाया गया और मंदिर-निर्माण का कार्य जोर-शोर से आरंभ हो गया।

मंदिर के नक्शे के निर्माता और प्रधान स्थपति के नाते नींव से लेकर गोपुर की चोटी तक एक-एक अंगुल निर्माण का जक्कणाचार्य तत्परता से निरीक्षण करते रहे। फिर एक सुंदर शिलाखंड लेकर भगवान विष्णु की परम लावण्यमयी प्रतिमा बनाने में संलग्न हो गये। धीरे-धीरे पत्थर से परमेश्वर प्रकट होने लगा और जब प्रतिमा बनकर तैयार हो गयी, तो इतनी कलामय थी कि यह विश्वास करना कठिन था कि अल्पज्ञ, अल्प-शक्ति मानव ने उसे पत्थर-जैसे निर्जीव उपादान से रचा होगा!

यथासमय मंदिर बनकर तैयार हो गया। देव-विग्रह की प्रतिष्ठापना के लिए दूर-दूर से आगम-शास्त्रों में पारंगत विद्वान ब्राह्मण और भक्तजन एकत्रित होने लगे।

एक दिन एक विशाल सभा का आयोजन किया गया, जिसमें राजा विष्णुवर्धन ने राजकर्मचारियों और प्रजाजनों के समक्ष शिल्पाचार्य जक्कणाचार्य को 'शिल्पशास्त्र-प्रवीण' तथा 'कलामार्तंड' की पदवियां प्रदान कीं। जनता कलाकार की प्रशंसा करती नहीं थकती थी।

सहसा श्रोताओं के बीच से एक नवयुवक उठ खड़ा हुआ और बोला—"राजन्, शिल्पी द्वारा निर्मित इस प्रतिमा में मुझे त्रुटि दिखाई पड़ती है। वस्तुतः यह पत्थर देव-प्रतिमा के लिए अनुपयुक्त है।"

नवयुवक की इस ढिठाई पर जनता बौखला उठी; राजा और राजकर्मचारियों की भौंहें तन गयीं। परंतु 'कलामार्तंड' जक्कणाचार्य के मुख पर अनुद्विग्नता का भाव खेल रहा था। उन्होंने कहा—"नवयुवक, तुम्हें पूरा अधिकार है इस प्रतिमा की त्रुटि सिद्ध करने का।"

नवयुवक आगे बढ़ा, तो शिल्पी ने उसके हाथ में हथौड़ा देते हुए कहा—"और त्रुटि सिद्ध करने के लिए प्रतिमा को भग्न करने का भी।"

बेलूर की शिला-बालिका

युवक ने महीनों के श्रम और अपूर्व प्रतिभा के मेल से बनी देवप्रतिमा की ओर एक बार देखा और दूसरी बार अपने हाथ के हथौड़े की ओर।

तभी राजा ने कहा—"युवक! यदि तुम्हारा कथन झूठा निकला तो?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युवक ने निर्भीक उत्तर दिया—"मुझे मृत्युदंड दिया जाये राजन् ।"

तभी जक्कणाचार्य ने घोषणा की—"यदि इस प्रतिमा में तनिक भी त्रुटि होगी, तो मैं अपना दायां हाथ काट दूंगा और समझूंगा कि मेरी साधना अपूर्ण ही रही ।"

भय और आश्चर्य से विमूढ़ जनता इस अप्रत्याशित नाटक को देख रही थी । नवयुवक ने हथौड़ा उठाया और दो पग आगे बढ़ा। फिर उसके पैर डगमगा गये। जक्कणाचार्य ने कहा—"युवक, डरो मत । "

उत्तर मिला—"नहीं डरा नहीं हूं शिल्पिराज ! .....परंतु न जाने क्यों, मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है, जैसे मैं अपने पिता पर प्रहार करने जा रहा हूं ।"

भीड़ में से किसी ने ताना दिया—"बेटा, फिर बढ़-बढ़कर बातें क्यों बना रहे थे?"

नवयुवक ने भर्राये कंठ से कहा—"मैं अपनी बात पर अब भी दृढ़ हूं । इस पत्थर में दोष है अवश्य । परंतु इसे सिद्ध करने के लिए मैं प्रतिमा को तोड़ूंगा नहीं, दूसरा ही उपाय काम में लाऊंगा । सारी प्रतिमा पर चंदन का लेप किया जाये ।"

चंदन के लेप से संपूर्ण प्रतिमा ढंक गयी । युवक ने शिल्पाचार्य से कहा— "थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिये ।" कुछ क्षण बीते और हवा के झोंकों ने चंदन की आर्द्रता हर ली । नख से शिखपर्यंत सब भागों का चंदन सूख गया; परंतु नाभि-प्रदेश का चंदन उसी तरह गीला रहा ।

नवयुवक के मुंह पर विजय की मुस्कान उभरने लगी । उसने झुककर कहा—"देखिये आचार्य ! इस प्रतिमा के पत्थर में नाभि के पास जल है । तभी यहां का चंदन-लेप सूखा नहीं है । ऐसा पत्थर देव-मूर्ति की रचना के लिए वर्जित है ।" मूर्ति को टकोरा गया, तो खोखली ध्वनि निकली ।

जक्कणाचार्य ने दृढ़ स्वर में कहा—"युवक, तुम जीत गये ।" और लपककर पास खड़े एक सामंत की कमर में लटकी हुई तलवार निकालकर अपना हाथ काट डाला । लोग चिल्ला उठे—"यह क्या कर दिया आपने?"

महाशिल्पी ने मंद-मंद मुस्कराते हुए कहा—"मेरी साधना अपूर्ण थी; यह उसका प्रायश्चित्त है । और राजन्, आपने अभी मुझे जो दो महान पदवियां दीं, उनका अधिकारी मैं नहीं, अपितु यह युवक है । आपकी अनुमति से ये पदक एवं प्रशस्ति इस युवक को भेंट करता हूं ।" और युवक के मना करते हुए भी जक्कणाचार्य ने राजा की दी हुई प्रशस्ति और खिलअत बलात् युवक के हाथ में पकड़ा दी और कहा—"मेरे अपूर्ण हाथों के बजाय, अब इस युवक के कलापूर्ण हाथ राज्य की सेवा करेंगे ।"

बाद में जक्कणाचार्य को जब ज्ञात हुआ कि यह युवक उन्हीं का पुत्र है, तब तो उनके हर्ष का ठिकाना न रहा ।

अंत में जक्कणाचार्य अपने पुत्र के साथ अपनी जन्मस्थली कैदाल लौट आये । वहां पिता-पुत्र ने मिलकर एक विष्णु-मंदिर बनवाना आरंभ किया । कहा जाता है कि जब मंदिर बनकर तैयार हो गया, तब कारीगर का कटा हाथ पुनः प्राप्त हो गया ।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक शादियों की जगह अफ्रीका

पीटर लारसन

अफ्रीका में घूमने पर इस बात का पता आसानी से चल जाता है कि वहां के अधिकांश लोग गांव में ही निवास करते हैं। यही नहीं, वे पुराने रीति-रिवाजों का पालन भी करते हैं। हांलाकि शहरों में पाश्चात्य रंग काफी तेजी से फैल रहा है, फिर भी शहरों में रहनेवाले अफ्रीकियों में भी कुछ ही लोगों को मैंने ऐसा देखा, जो अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल चुके हैं। वहां के भी अधिकांश लोग गांव के रीति-रिवाजों के अनुसार अपने बच्चों को पलने-पुसने के लिए गांव में ही भेज देते हैं।

प्राचीन प्रथानुसार वे लोग अनेक शादियां करते हैं। दो-तीन शादियां तो वहां आम बात है। मुखिया इससे बहुत अधिक पत्नियां रखते हैं। मैंने एक क्षेत्र के मुखिया की तो सौ पत्नियां देखीं। ऐसे परिवार के कई लड़के वहां की राजनीति में काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। टंगानिका के प्रथम राष्ट्रपति जूलियस न्यरेरी ऐसे ही परिवार के लड़के थे और अपने पिता की बीसवीं पत्नी के पुत्र थे।

अफ्रीका में जहां अनेक शादियों की प्रथा है, वहीं कुछ लोग कुंवारे भी रहते हैं; इसकी शुरुआत जीवन को संतुलित बनाये रखने के लिए की गयी थी; लेकिन आजकल वैसे युवक जो पत्नी रखने की स्थिति में नहीं रहते हैं, शहरों में आकर वैसी लड़कियों के फंदे में फंस जाते हैं, जो परिवार की रजामंदी के बगैर ही शादी करती हैं या जो काफी दिनों तक शादी न होने के कारण, शादी होने तक वेश्याओं-सी जिंदगी बिताती हैं। कुछ युवक उस समय तक शादी नहीं करते हैं, जब तक प्रथानुसार पत्नी खरीदने लायक रकम इकट्ठी नहीं कर लेते।

बहु-विवाह की प्रथा किसी हद तक स्वाभाविक 'परिवार-नियोजन' का रूप ले सकती है। वहां के नियमानुसार औरत को हर दो-तीन साल बाद ही बच्चा पैदा करना चाहिये। ऐसी हालत में पति को पत्नी से कम संपर्क रखना पड़ता है और बच्चे को मां का स्वाभाविक स्नेह मिलता है। इस कारण ग्रामीण मर्द और औरत दोनों ही बहु-विवाह के पक्ष में रहते हैं।

इधर जब से ईसाई धर्म का प्रचार हुआ है, लोगों की समझ में नहीं आ रहा है कि वे एक पत्नी रखें या अपनी पुरानी बहु-विवाह प्रथा को मान्यता दें। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो इस तरह के मानसिक संघर्ष का सामना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर रहे हैं। ऐसे ही संघर्ष में मेरा एक नाइजीरियन मित्र पड़ा है। उसकी एक ही पत्नी है। वह आसानी से दो-तीन पत्नियां रख सकता है; पर क्रिश्चियन होने के नाते एक ही पत्नी रखे हुए है। वह अपनी पत्नी पर दोषारोपण भी करता है कि वह उसकी मुसीबतों की जड़ है। उसे एक ही बच्चा हुआ और ऐसी स्थिति में उसे दूसरी शादी कर लेनी चाहिये थी; पर वह कर नहीं पा रहा है और इस मानसिक द्वंद्व में फंसकर रह गया है।

यह मानसिक संघर्ष मुसलमानों के बीच में नहीं होता है। चूंकि धर्म के अनुसार वे चार-पांच पत्नियां रखने के अधिकारी हैं, इसीलिए सहारा की तरफ यह धर्म काफी तेजी से फैल रहा है और यही कारण है कि कुछ ईसाई क्षेत्रों में भी बहु - विवाह की प्रथा है।

अफ्रीका में जैसे-जैसे औद्योगीकरण हो रहा है, वैसे-वैसे शहरों में आर्थिक कठिनाइयों के कारण बहु-विवाह की प्रथा पर असर पड़ रहा है और लगता है कि आगे चलकर इसमें काफ़ी कमी हो जायेगी। लेकिन गांवों में जमीन पर निर्भर रहने के कारण इसका प्रचलन जोरों पर है। इसके विपरीत, शहरों में इसकी कमी के कारण बहु-विवाह की जगह खुले रूप में काम की तृप्ति ले रही है और ऐसे संबंध से उत्पन्न हुए बच्चे उनके संबंधियों या मां द्वारा पाले जाते हैं। बच्चे वहां 'ईश्वर की देन' समझे जाते हैं और कुंआरियों के बच्चे होने पर उनकी नतिकता पर कोई असर नहीं पड़ता है। मैंने स्वयं देखा है कि एक घानाई युवक का विवाह ऐसी युवती से हुआ, जो दो हफ्ते के अंदर मां बनने की स्थिति में थी। उस युवक ने मुझसे यह भी कहा कि वह एक और शादी ग्रामीण तरीके से भी करेगा।

मेरे एक दूसरे घानाई मित्र ने भी बहु-विवाह प्रथा का काफी पक्ष लिया था। दो पत्नियों के बावजूद वह दूसरी लड़कियों के पास जाता था। प्रथानुसार उसकी दूसरी पत्नी उसकी संपत्ति की अधिकारिणी नहीं हो सकती थी; लेकिन उसके लड़के को समान अधिकार प्राप्त थे।

इससे एक बात तो तय है कि बहु-विवाह की प्रथा ने यहां काम-वासना की तृप्ति का खुला अधिकार दे रखा है; लेकिन इससे पुरुष और औरत समान रूप से सुखी हैं यह कहना मुश्किल है। वहां के लोगों में भी काफी मतभेद है। कहीं-कहीं तो दूसरी और तीसरी पत्नियां इस तरह से बड़े परिवार में रहने के कारण काफी खुश रहती हैं और कहीं-कहीं पहली पत्नी के प्रति काफी ईर्ष्यालु रहती हैं।

सन १९६३ में घाना-सरकार ने एक शादी रजिस्टर करने का कानून पास कर अब एक-विवाह और बहु-विवाह की प्रथा को एक समस्या बना दिया है। इस कानून के अनुसार बहु-विवाह गैरकानूनी है; साथ ही मुसलमानों के लिए इसमें छूट है। देश के उत्तरी भाग में मुसलमानों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुतायत होने के कारण ही शायद यह विद्रोहात्मक कानून पास किया गया है। इसके अनुसार पिता की मृत्यु के पश्चात संतान अपनी मां की संपति के दो-तिहाई भाग की हकदार होगी। इस कानून के अनुसार कोई भी बालिग १८ वर्ष का हो जाने पर अपने परिवार की रजा-मंदी के बगैर शादी कर सकता है और किसी भी हाईकोर्ट के जज द्वारा जांच-तहताल के बाद आवश्यक होने पर तलाक भी प्राप्त कर सकता है।

अफ्रीका में शादी दो व्यक्तियों के लिए ही नहीं, बल्कि पुरानी प्रथा के अनुसार दो परिवारों को मिलाने और आपसी संगठन को बढ़ाने के लिए की जाती थी। यहां बच्चे मां-बाप की व्यक्तिगत संपति होने की जगह, पूरी बिरादरी की संपति होते हैं। कहीं-कहीं तो, खासकर युगांडा में मां से अधिक बच्चे पर उनकी चाची-मामी-मौसी का अधिकार होता है और मां के द्वारा उसे उनके हाथ देने से इंकार किये जाने पर उसे दंडित भी होना पड़ता है।

परछाइयां

वह अपनी सुंदरता से
अनजान है
उसका खयाल है
कि उसका भूरा शरीर सुंदर नहीं है।
अगर वह कहीं निर्वसना होकर
नाच सके
ताड़ के पेड़ों तले,
और नदी में अपनी परछाईं देखे,
तो उसे पता लग जायेगा।
पर सड़क पर
ताड़ के पेड़ नहीं हैं
और प्लेट के मैले पानी में
परछाइयां दिखाई नहीं देतीं।

— वारिंग कने
नीग्रो कविता
रूपांतर : सुखबीर

युगांडा की प्रथानुसार दूसरे बच्चे का जन्म होते ही पहले को अपने संबंधियों के यहां भेज दिया जाता है और वे वहीं पलते-पुसते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपनी मां से अधिक चाची-मामी-मौसी को जानते हैं। मिजी हेल्थ सेंटर की खोज के अनुसार २५ बच्चों में ४ ही अपनी मां के साथ रह रहे थे। डाक्टरों के अनुसार यह रिवाज बच्चों के लिए शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से हानिकारक है।

यहां अधिकतर शादियां पहले से तय करके की जाती हैं। बहुत कम लड़के-लड़कियों को ही अपने मन के हिसाब से पति-पत्नी चुनने दिया जाता है। कुछ जातियों में तो लड़केवाले छोटी लड़की को अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहां ले आते हैं और उसे पालते-पोसते हैं। साथ ही उसे उसी तरह से शिक्षित करते हैं, जिस तरह की बहू से वे आशा रखते हैं। लड़के को भी उसके प्रति वफादार रहने की शिक्षा दी जाती है। बड़े होने पर दोनों किसी समय शादी कर सकते हैं या किसी और से शादी करने के लिए स्वतंत्र रहते हैं। पर ऐसा शायद ही कभी होता है।

कभी-कभी तो ऐसी शादियां ठीक रहती हैं; पर कभी-कभी काफी दुःखदायी होती हैं। ऐसे बहुत-से उदाहरण भरे पड़े हैं कि मन नहीं मिलने के कारण पति-पत्नी दोनों ही घर से बाहर अपने आनंद का इंतजाम करते हैं। हालांकि अफ्रीकी लोग अपनी जाति में ही शादी करने में विश्वास रखते हैं; फिर भी वहां 'मिश्रित शादी' का भी प्रचलन कम नहीं है। 'मिश्रित शादी' भी कई तरह की होती है। केन्या के कुछ इलकों में अभी हाल में ही ऐसा हुआ है कि विजयी लोग जानवर वगैरह के साथ-साथ कुछ स्त्रियां व लड़कियां भी ले गये।

एक दूसरा तरीका है कि देश के उपेक्षित भागों के लोग उन लड़कियों से शादी करते हैं, जो गुलामी के बंधन से मुक्त होकर स्वदेश लौट आती हैं। यह तरीका पश्चिमी अफ्रीका के समुद्र के किनारे बसे शहरों—फ्री टाउन, मोनरोविया, बाइर्स्ट आदि में अधिक प्रचलित है। वैसे शहरों में शादी के मामले में जाति का बंधन बाधक नहीं बनता है। उदाहरण के लिए गैंबिया के प्रथम प्रधान मंत्री डेविड कैराबा ज्वारा का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने मेंडिंग जाति के होने के बावजूद क्रियोल लड़की से शादी की।

'मिश्रित शादी' में सबसे ज्यादा प्रचलित है अफ्रीकी और यूरोपीय की शादी। स्वतंत्रता के बाद से इसमें काफी वृद्धि हो गयी है। सेनेगाल के प्रथम राष्ट्रपति और उनकी सरकार के कई उच्च पदाधिकारियों की पत्नियां फ्रांसीसी थीं। यही नहीं यूरोपीय मर्द और अफ्रीकी औरतों के संबंध भी वहां अक्सर पाये जाते रहे हैं। मैंने देखा है कि ऐसे संबंधों से घृणा नहीं होती है। मेरे एक घानाई मित्र के कथनानुसार यह 'मिश्रित शादी' नहीं होती है, मर्द अगर घोड़े से शादी करे और औरत हाथी से तभी 'मिश्रित शादी' का नाम दिया जा सकता है। उसका कहना था कि ऐसे बहुत-से जोड़े हैं जिनमें मर्द अफ्रीकी और पत्नी यूरोपीय है; लेकिन कुछ समय बाद जब पत्नी अपने देश की याद में विकल होती है, तो यह संबंध टूट जाता है। फ्रेंच, बेल्जियम और पुर्तगाली इलाकों में 'मिश्रित शादियां' काफी होती हैं और उन्हें मान्यता भी प्राप्त रहती है। ऐसी शादियों को ब्रिटिश इलाकों में काफी दिनों बाद मान्यता दी जाती है।

बुगान्डनों में एक विचित्र रिवाज है कि सास अपने दामाद का मुंह नहीं देखती और उससे परदा करती है। अगर कभी एक ही रास्ते से दोनों जाते होते हैं, तो पता चलने पर वे रास्ता बदल देते हैं। परदा उस समय खत्म हो जाता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दामाद जुड़वां बच्चे का बाप बन जाता है ।

अफ्रीका के कई भागों में अभी भी वधू खरीदने की प्रथा है और यह रकम लड़की के पिता को दी जाती है। सेनेगाल में वधू की कीमत ८० से १०० पौंड, पूर्वी नाइजेरिया में कानूनन ३५ पौंड, गौरकानूनी तौर पर बहुत अधिक, कांगों में ६५०० फ्रैंक्स से १० हजार फ्रैंक्स और पशु-बाहुल्य-क्षेत्र केन्या में १० से २० गाय होती है । कभी-कभी तो वहां इससे भी अधिक कीमत होती है । केन्या की कुछ जातियों में तो युवकों को 'प्रणय-निवेदन' के लिए भी २० पौंड देने पड़ते हैं और कभी-कभी वधू को उपहार भी । इसके अलावा कीमत अलग होती है, जो लड़की के पिता को दी जाती है ।

अगर लड़का कभी वधू की कीमत नहीं दे पाता है, तो वह अपने हैट को लेकर अपने संबंधियों में घूमता है । संबंधी उसकी इस तरह से मदद करते हैं, मानो वे किसी लाभ-दायक कार्य में पैसे लगा रहे हों । कुछ गरीब परिवारों में लड़की की मर्जी के बगैर भी उन्हें बेचा जाता है । कुछ शहरों में वधू खरीदने की प्रथा दम तोड़ रही है । आज-कल नवयुवक शहर में नौकरी और बीवी की खोज में आते हैं, जहां उनकी पत्नी उनके साथ रह सकती है और यही कारण है कि लड़कियां बिना 'वधू-कीमत' पर जोर दिये और बिना परिवार की इजाजत के शादी कर लेती हैं । शहरों में वेश्यावृत्ति में भी काफी वृद्धि हुई है । कुछ शिक्षित परिवार जो पश्चिमी तरीके से सोचते हैं, लड़की बेचने पर जोर नहीं भी देते हैं ।

अफ्रीका में बच्चों का बहुत अधिक महत्व है और बच्चों की भलाई के लिए तो कभी-कभी मां सबकी राय लेकर अपना पति बदल देती है । जैनहिंज जान ने अपनी पुस्तक ' थ्रू अफ्रीकन डोर्स' में इसी तरह की एक घटना का वर्णन किया है । नाइ-जीरिया में एक आदमी की पहली पत्नी ने उससे काफी अच्छा संबंध रहने के बाव-जूद, अपने बच्चे की भलाई के लिए दूसरे आदमी से शादी कर ली। दूसरे आदमी की आठ पत्नियां थीं; लेकिन घर में शांति रहती थी, जबकि पहलेवाले घर में दूसरी और तीसरी पत्नी हमेशा लड़ती रहती थीं । उस औरत के पहले पति को जब दूसरी पत्नी स्थानीय राजा को उपहार में दे देनी पड़ी, तो वह फिर अपने पहले पति के घर चली आयी । जान के अनुसार यहां की औरतें अपने पति के प्रति एकदम वफा-दार रहती हैं और जब उन्हें उससे बच्चा नहीं होता है या वे किसी और कारण से नहीं रहना चाहती हैं, तो स्पष्ट कहकर दूसरी शादी कर लेती हैं ।

मैंने भी दांपत्य-जीवन में अविश्वास का बहुत कम स्थान देखा है । ग्रामीण क्षेत्र में आपस में स्नेह-भाव अभी भी उसी तरह बना रहता है । जबकि शहर में अन्य काम-संबंधों का वातावरण कुछ अंशों में पाया जाता है । इन सबके बावजूद मुझे बहुत कम ऐसे मामलों की जानकारी मिली, जिसमें उनके बच्चे कोई दुष्परिणाम भुगतते हों ।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंद-भुक्ति

शैलेश मटियानी

ओम् नमः शिवाय, ओम् नमः शिवाय..., ओम्... । अनायास ही प्रणाम की मुद्रा में जुड़ आये हाथों की उंगलियों को धीरे-धीरे, पोरों पर समेटते हुए स्वामी शिवानंद ने नीचे फैली हुई घाटी की ओर देखा—चारों दिशाओं में पहाड़ों के गगनचुंबी शिखर और बीच में तपोलीन महर्षियों को आलिंगनबद्ध करती उर्वशी-सी सौंदर्यवती घाटी ।

अपने इस सौंदर्य-बोध की अनुभूति से, एक मद्धिम-सी मुस्कराहट स्वामी शिवानंद के अधरों पर फैल गयी । उन्हें लगा कि नीचे घाटी में प्रवाहित स्फटिक-स्वच्छ अलकनंदा उनके यात्रावसन्न ओठों पर प्रतिबिंबित हो गयी है । पैदल चलने की गहरी थकान से ढहने-ढहने को हो आयी देह अनायास ही स्फूर्त हो उठी । स्वामी शिवानंद को लगा कि पिछले पंद्रह वर्षों के मानसिक संत्रास और हाहाकार से आक्रांत उनकी आत्मा कुछ क्षणों को एकदम स्थिर और शांत हो उठी है । प्रश्नाहत आस्था और अनिर्णीत अनास्था के दोहरे दबावों से टूटा हुआ मनुष्यत्व अपने सारे दुर्दांत तनाव से मुक्त हो गया है । अपने ही आत्मबोध की समर्थता से कांपते हुए पौरुष के कमजोर कंधों पर टिकी हुई आत्मयंत्रणा की दुर्निवार सिफसिसी गोल चट्टान का बोझ उतर गया है । पूरे पंद्रह वर्षों के हाहाकार के बाद का यह सौंदर्य-बोध का क्षण—मृत्यु के अदृश्य आवाहन से कांपते-थरथराते जीवन में तपोलीन महर्षियों को आलिंगन-बद्ध करती उद्दाम-यौवना उर्वशी की कल्पना की मनःस्थिति ।

स्वामी शिवानंद का मन अट्टहास करने को हो आया । तो क्या पूरे पंद्रह वर्षों से सिर्फ मृत्यु से संबद्ध प्रश्नों से गौतम बुद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह लिपटे रहने के बाद भी ठीक वही मनःस्थिति शेष बची हुई है, जो अपने सारे परिवार की आकस्मिक और सामूहिक मृत्यु की कालरात्रि को झेलने से पहले शेष थी ? तो क्या आत्मचिंतन के यज्ञ-कुंड में निरंतर समिधाओं की तरह भस्मीभूत करते-करते भी जीवन में वह सौंद -बोध ज्यों-का-त्यों शेष है, जो मृत्यु के आतंक को और अधिक विकराल आकृतियों में देखने की स्थितियां भोगने को बाध्य करता है ?

दिव्या अस्थाना को आलिंगन-बद्ध करके लौटने के अगले ही क्षण सर्वथा आकस्मिक रूप से ढहे हुए मकान के मलबे में दबी उन विकृत लाशों की कतार देखने को बाध्य करता है, जिनमें कोई पिता रह चुका है, कोई मां, कोई भाई और कोई बहन।

स्वामी शिवानंद की आंखों में एकाएक फिर यह बोध कौंध उठा कि जिनमें मनुष्य जीवित रहते अपनी आसक्ति और ममता को-अपने सौंदर्य-बोध को-प्रतिष्ठित करके देखता है, उन्हीं की मृत्यु को वह झेल नहीं पाता है। अपनी ही दृष्टि से सौंदर्य-बोध से मनुष्य अंततः स्वयं आक्रांत होता है। सिर्फ जिंदगी को देखने के लिए खुली हुई आंखों से मृत्यु को उसके संदर्भ में देख नहीं पा रहा है। जिसमें से जीवन का अस्तित्व हट चुका है, उसे अपने अस्तित्व-बोध से जोड़-जोड़कर, आक्रांत होता है।

कालिज में अपने मौजी स्वभाव और उल्लासपूर्ण जीवन के लिए चर्चित निर्द्वंद्व युवक सोमेंद्र श्रीवास्तव अपने परिवार की सामूहिक मृत्यु के विकराल दृश्य को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। जीवन के सौंदर्य-पक्ष को देखने के लिए उघड़ी हुई आंखें उसके समानांतर पक्ष को झेल नहीं पाती हैं। जीवन के रागात्मक पक्ष के पूर्वार्द्ध को जीने की अभ्यस्त आत्मा उसके उत्तरार्द्ध की आकस्मिकता से आक्रांत हो उठती है और दिव्या अस्थाना के साथ सिनेमा देखने की बात तय करके लौटा हुआ सोमेंद्र श्रीवास्तव हरिद्वार में सिर घुटाता हुआ अनुभव करता है कि जीवन के समानांतर सत्य को झेलने में समर्थ होने के लिए मात्र सिर का मुंडन ही पर्याप्त नहीं होगा—अपनी ही आंखों से बटोर-बटोरकर जो सारी आसक्तियां अपने ही अंदर रोप ली हैं, उन तमाम अमरबेलों का मुंडन करके आत्मा को भी ठीक मुंडे हुए मस्तक की स्थिति में लाना होगा।

मगर लगातार पंद्रह वर्षों तक आसक्तियों और प्रश्नाहत प्रवृत्तियों की अमरबेलों को मूंडते-मूंडते भी आत्मा निवृत्त और संन्यस्त हो नहीं पायी है। मृत्यु के आरंभ से मुक्ति की खोज में आसेतुहिमालय भटकने के बावजूद, जीवन में यह सौंदर्य-बोध शेष ही रह गया है, जो मृत्यु की सहजता को विकराल आतंक बना देता है।

अपने गैरिक उत्तरीय से स्वामी शिवानंद ने अपने ललाट और आंखों के पपोटों पर हो आये पसीने को पोंछ लिया। अट्टहास करने को कसमसाते हुए अपने जबड़ों को उन्होंने एकदम निस्पंद होता हुआ-सा अनुभव किया। जिज्ञासा और भ्रांति में को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पन्न करने की अपनी सामर्थ्य के समानांतर अपने आत्मबोध की, अपने चिंतन की असमर्थता की इस प्रत्यक्ष अनुभूति से स्वामी शिवानंद एकदम हताश हो गये। उन्हें लगा, चारों ओर खड़े वृक्ष उनके चिंतन और ज्ञानार्जन की इस व्यर्थता को देख रहे हैं। अचकचाकर उन्होंने अपने मस्तक पर दोनों हथेलियां रख लीं। पिछले ही सप्ताह मुंडन करने के बाद भी, हथेलियों में बाल चुभते चले जा रहे थे। स्वामी शिवानंद की आंखें अपनी व्यर्थता के बोध से एकदम छलछला आयीं और उनके अंदर उद्दाम आवेश उमड़ पड़ा कि अलकनंदा में समाधिस्थ शिलाओं पर सिर पटक-पटककर चिल्लायें और कब तक.....आखिर और कब तक मस्तक और आत्मा का मुंडन करते चले जाने की व्यर्थता को ढोना होगा ?

पिछले वर्षों के संन्यस्त जीवन में शिवानंद ने अपने संत्रस्त और शंकाहत मन को ईश्वर के कल्पित रूप के प्रति एकाग्र करने की चेष्टाएं बार-बार की हैं; मगर सदैव ही उनकी यंत्रणाक्रांत अस्थिर आंखों में सिर्फ मृत्यु के विकट हाहाकार से सनसनाते खंडहर ही उभरकर रह गये हैं। ईश्वरत्व का कोई आभास नहीं उतरा है। हर बार लगा है कि अपने चिंतन, अपने जीवन और अपने अहं की व्यर्थता के बोध से निरंतर थरथराती आंखों में भ्रांतियों और हीनताओं का गंदला जल सिमट-सिमट आता है। मगर उस गंदले जल में आर-पार तक कहीं आत्मबोध का वह पुंडरीक नहीं दिखाई देता, जिससे यह आश्वास आचरण में ढाला जा सके कि नहीं, संभव है। सांसारिकता की सारी आक्रांतियों और विकृतियों के बीच भी अपनी आत्मा का कीचड़ के सरोवर में खिले पुंडरीक की तरह अनाहत और निर्लिप्त रह सकना संभव है।

संभव है, अपनी ही जिज्ञासाओं, भ्रांतियों और शंकाक्रांत प्रश्नों की आंधियों के बीच भी अपने मनुष्यत्व के बोधिवृक्ष का सदैव अपराजित रह सकना संभव है।

स्वामी शिवानंद ने निरीह भाव से आंखें खोल दीं, जैसे उनके आत्मबोध की कोई सीमा-रेखा ही उनके लिए सर्वाधिक अलंघ्य हो। अपने ही आत्मबोध के अपने आचरण में न ढल पाने की स्थिति ही अपनी बौद्धिक क्षमता की तुलना में अपने ही व्यक्तित्व में असमर्थ पड़ जाने की स्थिति होती है, ऐसा स्वामी शिवानंद को लगता रहा है। स्वामी शिवानंद अपने व्यक्तित्व की असमर्थता की अनुभूति के इस नैरंतर्य से ही मुक्ति चाहते हैं।

स्वामी शिवानंद अपने ही मनुष्यत्व के प्रति वह आस्था आचरण में पाना चाहते हैं, जिसके बल पर मनुष्य औरों के प्रति ईश्वर के प्रति अनास्था के दुर्दांत क्षणों में भी अनाहत कर्मरत रह सके।

खुली हुई आंखों के सामने एक मार्ग निर्देशिका पट्टिका दिखाई पड़ती है—यह मार्ग योगिराज पूज्यपाद अध्यात्म-मार्तंड १०८ स्वामी श्रीनागेश्वरानंदजी महाराज के आश्रम को जाता है।

परिचय की औपचारिकता और अ

अवधू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतीत की कथा सुनाने से निपटते ही, स्वामी शिवानंद ने शांत स्वर में कहना शुरू किया—"मैं अन्यत्र कहीं भी आज तक अपने मानसिक हाहाकार से मुक्ति नहीं पा सका। अस्तु, पुनः महात्मा हिमालय की शरण में आया हूं। अपने आत्मचिंतन की असमर्थता का बोध ही मुझे औरों के ज्ञान की शरण में जाने को विवश करता है। जैसे देह से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य की आत्मा उसके मस्तिष्क की ओर ऊर्ध्वगामिनी होती चली जाती है, ठीक वैसे ही अपने आतंक से मुक्ति पाने के लिए मैं महात्मा हिमालय की शरण में आया हूं।"

स्वामी नागेश्वरानंद गंभीर स्वर में बोले—"महात्मा हिमालय की शरण में तुमको मुक्ति अवश्य मिलेगी, भाई। मैं भी अपने जीवन के समस्त हाहाकारों से यहीं आकर मुक्त हुआ हूं। वास्तव में, अपने अहंकार से मुक्ति ही अपने अंदर के समस्त हाहाकारों से मुक्ति का मार्ग है। तुम सबसे पहले अपने अहंकार को ही जीतने की चेष्टा करो। अपने आतंक का जो कारण है, उसकी व्याख्या उसे दूसरे के आतंक के रूप में देखते हुए करो।"

"मगर, स्वामीजी! मेरी स्थिति तो बिलकुल दूसरी है।" स्वामी शिवानंद हौले से मुस्करा पड़े—"मैं तो अहंकार-शून्य होने को प्रश्न-शून्य, यंत्रणा-शून्य हो जाने की स्थिति मानता हूं और अपने अस्तित्व-बोध को एकदम नकार करके देखने के बाद, अपने को अपने ही द्वारा उपार्जित सारे प्रश्नों से मुक्त करके देखने के बाद की मुक्ति में और एक जड़ वृक्ष की यंत्रणा-मुक्ति में मुझे कोई अंतर नहीं लगता। यानी एक अहं-शून्य व्यक्ति की यंत्रणा-मुक्ति में और एक उखड़े हुए वृक्ष की यंत्रणा-मुक्ति में मुझे कोई अंतर नहीं लगता है। मैं अपने आतंक को दूसरे के आतंक के रूप में कल्पित करते हुए उसकी व्याख्या करने की स्थिति को आत्म-बोध की नहीं, आत्म-पलायन की स्थिति समझता हूं। मैं निरंतर दूसरों के आतंक को भी अपने आतंक के रूप में आत्मसात करके उससे मुक्ति का रहस्य खोजने के लिए भटकता आया हूं। मैं अपने परिवार की सामूहिक मृत्यु की आकस्मिकता से आक्रांत होकर, घर से भागकर संन्यासी हो गया था। मैंने बाद में औरों की मृत्यु को बहुत निकट से देखा है। मुझे मृत्यु की सामूहिकता और वैयक्तिकता में कोई फर्क नहीं

जिंदगी

दर्द किसी का भी हो, दर्द है
दर्द में साथ देने का
हर आदमी पर
हर आदमी का कर्ज है,
सिर्फ,
घाव पर मलहम और
आंसू पोंछने को आंचल
देना ही नहीं;
सांसें बांटकर खाना भी
आदमी होने का अर्थ है।

— सुरेंद्र शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखा है। मैं अपनी देखी हुई तमाम मृत्युओं को अनुभूतियों और चिंतन के स्तर पर आत्मसात करके स्वयं आतंकित होता फिरता रहा हूं।.....मगर मुझे अपने इस आतंक से मुक्ति प्रश्न-शून्यता के स्तर पर चाहिये, मृत्यु को नकारने के स्तर पर नहीं; मुझे अपने सारे आतंक से मुक्ति अपने आत्म-बोध और आचरण के स्तर पर चाहिये। मैंने वेद, उपनिषद और गीतादि धर्म-ग्रंथों के माध्यम से भी आतंक-मुक्ति का प्रयत्न छोड़ दिया है। मैं धर्म-ग्रंथ में निहित ज्ञान के माध्यम से अपने आतंक से मुक्ति नहीं चाहता; बल्कि अपने सारे आतंक को ही माध्यम बनाकर, उस मनःस्थिति तक पहुंचना चाहता हूं, जिस मनःस्थिति में अपने से इतर किसी भी व्यक्ति, मानवेतर अस्तित्व या धर्म-ग्रंथों की शरण में जाने का प्रश्न ही शेष नहीं रहे।"

"अभी-अभी तो तुमने मेरी शरण में आने की बात कही थी, भाई।" स्वामी नागेश्वरानंद लगभग व्यंग्य के स्वर में बोले।

"मैंने सिर्फ महात्मा हिमालय की शरण में आने की बात कहीं थी; स्वामीजी। मेरी धृष्टता क्षमा करेंगे। मेरे लिए आप भी चिंतन-मनन के ठीक वैसे ही माध्यम हैं, जैसे मैं खुद अपने लिए हूं।"

"तुम अपने ही ज्ञान के अहंकार से आतंकित दिखते हो, स्वामी।"

"नहीं, महाराज! ज्ञान के अहंकार से नहीं, ज्ञान की सीमा के बोध से। जब तक मेरा आत्मज्ञान मेरे लिए आतंकों से ऊपर उठकर जी सकने में समर्थता का प्रतीक नहीं बनता, तब तक अपने ज्ञान के प्रति अहंकार का कोई प्रश्न ही मेरे सामने नहीं है।" स्वामी शिवानंद पूर्ववत् शांत स्वर में ही बोले—"मुझे उद्धत न समझें, आहत अवश्य हूं। मैं न अपने लिए कोई एक दिशा खोज पा रहा हूं, और न खोज पाने की संभावना के मिथ्याभास से मुक्ति ही पा रहा हूं। मैं न ईश्वर-तत्व को खोज पा रहा हूं और न अपने मनुष्यत्व के बोध के बल पर ईश्वरत्व की सर्वथा अस्तित्वहीनता के बीच भी अनाहत जी सकने की संभावना से विमुख हो पा रहा हूं। मैं अपने ही द्वारा उपजाए हुए प्रश्नों के बोझ से आतंकित हूं; मगर मैं इस बोझ को परे फेंकने की आतंक-मुक्ति नहीं चाहता, मैं इस बोध को अनायास ढो सकने के सामर्थ्य को पाना चाहता हूं।

"मगर, स्वामी! बोझ चाहे अपने बौद्धिक अहंकार का हो, अथवा सांसारिक विपत्तियों का—इससे मुक्ति का मार्ग सिर्फ एक ही है—'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' और 'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।'.....अपने परिवार के सामूहिक विनाश और बाद में औरों की सामूहिक दुर्गतियों को देखने से उत्पन्न अपने मानसिक त्रास के बोझ को ईश्वर को समर्पित कर देने के बाद, पुनः मुक्तभाव से ज्ञान और चिंतन के पथ पर आगे बढ़ो, स्वामी—तुम्हें मुक्ति जरूर मिलेगी।" महात्मा नागेश्वरानंद ने अभयदान की मुद्रा में हाथ उठाते हुए कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"स्वामीजी, मैं अन्य सारी भ्रांतियों से मुक्त ही हूं; मगर सिर्फ एक असमर्थता का बोध शेष है—मृत्यु की आकस्मिकता, जो मेरे परिवार के सामूहिक विनाश में थी, वही मेरी जिज्ञासाओं के सामूहिक विनाश में भी रही है। अपने आज तक के जीवन में जो कुछ देखा है, उसके प्रति हजारों बार प्रश्नाहत हुआ हूं और उत्तर खोजे हैं और फिर मेरे तमाम उत्तरों की भी ठीक वैसे ही सामूहिक मृत्यु हुई है, जैसे मैंने अपने प्रश्नों से मुक्ति पायी थी। इसलिए मुझे लगता है कि मैं सांसारिकता के बोझ से नहीं, सिर्फ अपनी मानसिकता के बोझ से आतंकित हूं। अपने बौद्धिक अहंकार के बोध से नहीं, अपनी असमर्थता के बोध से आक्रांत हूं।" शिवानंद बोले—"तो भी अब मैं अपने इस सारे आतंक के बोझ को ईश्वर को समर्पित करके, फिर मुक्त होकर चिंतन करना चाहूंगा।.....अब आप बतायें कि वह ईश्वर मुझे कहां मिलेगा, जिसके प्रति मैं निमित्त बन सकूं—जिसे अपना बोझ सौंप सकूं ?"

इस बार नागेश्वरानंदजी एकदम शांत हो गये। उन्होंने स्वामी शिवानंद के कंधे पर हाथ रख दिये—"भाई मेरे, वह सच्चिदानंद ईश्वर तो तुम्हारे ही हृदयकमल में आत्मस्थ है, उसे अन्यत्र ढूंढ़ने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है।"

"स्वामीजी, मान लीजिये, मैं अपना बोझ लेकर एक यात्रा पर जा रहा हूं और उसे आगे तक ढोने में असमर्थ हो गया हूं और फेंकना चाहता नहीं। ऐसे में एक और परम शक्तिशाली यात्री मेरे साथ-साथ चल रहा होता है, जो मुझसे लाखों गुना बोझ को भी आसानी से ले जा सकता है, तो क्या मुझे अपना बोझ उसे सौंप देना चाहिये ?"

"अवश्य !" नागेश्वरानंद ने कंधे फिर थपथपा दिये।

"मगर क्या उस व्यक्ति को मय अपने बोझ के अपने ही कंधों पर फिर उठा लेना चाहिये ? क्या ऐसा करने पर फिर मेरा यात्रा कर सकना संभव होगा ?"

स्वामी नागेश्वरानंद प्रश्नाहत आंखें फैलाये, घूरते ही रह गये।

स्वामी शिवानंद धीमे से मुस्कराये—"आप ही बतायें कि जो मनुष्य स्वयं अपने ही मनुष्यत्व के बोझ को ढो पाने में असमर्थ हो, वह ईश्वर को कैसे अपने अंदर संभाल सकता है ? और अगर ईश्वर मुझमें ही आत्मस्थ है, और मैं उसके ब्रह्मांड-विपुल ईश्वरत्व को संभाल पाने में समर्थ हूं, तो फिर मैं सिर्फ अपने ही मनुष्यत्व के बोझ को ढोने, सिर्फ अपने ही संत्रास को झेलने में असमर्थ कैसे हो सकता हूं ?"

"तुम नास्तिक और अहंकारी हो, तुमसे तर्क करना व्यर्थ है।" स्वामी नागेश्वरानंदजी ने अपनी आंखों को समेट लिया।

शिवानंद बोले—"स्वामीजी, आप रुष्ट हो गये हैं। सत्य से तिलमिलाना या उसे नकारना मनुष्य की आंतरिक निषेधात्मकता का प्रतीक होता है। अगर आपने ईश्वर को कहीं मुझसे बाहर बताया होता, तब आपकी बात ठीक हो सकती थी और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने बोझ से मुक्त होने के लिए, ईश्वर की शोध में जाने का प्रश्न मेरे सामने हो सकता था । मगर आपने ईश्वर को मुझमें ही आत्मस्थ बताया । मेरी धारणा तो यह है कि जो व्यक्ति अपने मनुष्यत्व को ही पूरा नहीं पा सका हो, उसके लिए ईश्वरत्व के बोध या अस्तित्व की बात निरर्थक है । ईश्वरत्व का कहीं अस्तित्व हो भी, तो भी उसे सिर्फ वही व्यक्ति पा सकता है, जो मनुष्यत्व को पूरा पा चुका हो । आप ठीक मेरी ही तरह—अभी अपने मनुष्यत्व के ही पूर्ण—बोध से वंचित हैं, इसलिए अपनी मनस्थिति में आप भी मुझसे अलग नहीं हो सकते । नमस्कार । अब मैं चलूंगा ।"

घाटी से पुनः शिखर की ओर लौटते हुए, स्वामी शिवानंद फिर व्याकुल हो गये आखिर और कब तक—और कब तक उन्हें अपनी व्यर्थता—अपनी अनिर्णीत आस्तिकता और नास्तिकता का त्रास झेलना होगा ।

धांय ! धांय !! धांय !!!

शिवानंद चौंककर मुड़े । नीचे घाटी में किसी ने आखेट किया था, संभवतः । वन-कपोतों का एक भयाक्रांत झुंड आकाश में क्रीं-क्रीं -क्रीं चीखता अलग-अलग दिशाओं में बिखर गया था । स्वामी शिवानंद ने अपने आर्द्र नेत्रों से देखा—सिर्फ एक कपोत अभी भी वृक्ष के ऊपर चक्कर काट रहा था। जैसे बंदूक की आवाज उसके सीने में धंस गयी थी और मृत्यु के भय से आक्रांत होकर सिर्फ चक्कर ही काटने-भर की क्षमता उसके पंखों में रह गयी थी ।

स्वामी शिवानंद सोचने लगे, इतना भय क्रांत होकर चक्कर काटता हुआ यह क कपोत, यह निरीह पक्षी क्या किसी वृक्ष शरण नहीं ले सकता ? आखिर जिस वृक्ष यह घोंसला डाल सकता है, उसी पर में यह इतना असमर्थ क्यों है ?

उन्हें लगा कि गोली के धंस जाने यह वन-कपोत इतना यंत्रणाक्रांत क न होता, जितना उसकी आवाज के में धंस जाने से हो गया है ।

स्वयं अपनी मृत्यु को झेलने पर शिवानंद कभी इतने प्रश्नाहत नहीं हो थे कि आसेतुहिमालय भटकते-भटकते निरंतर व्यर्थता ही अनुभव हो । शिवानंद सामूहिक मृत्यु के त्रास से अपनी असमर्थ अंतर्दृष्टि के कारण झेला जा सका—अपने उस आत्मरूप रूप पर नहीं बैठ पा रहे हैं, जो प्रत्येक णाक्रांत मनुष्य का शरण-स्थल है ।

स्वामी शिवानंद ने भयाक्रांत वन-क के पंखों की तरह कंधों के आर-पार हुआ अपना उत्तरीय समेटकर कंठ में लिया । उनको लगा कि —"मैं मनुष्य इसलिए मेरे लिए जन्म और मृत्यु की में कहीं कोई अंतर नहीं है—जन्म और की अन्योन्याश्रयी अनिवार्यता में कहीं नहीं है" मात्र अपने मनुष्यत्व-बोध के बोधि-वृक्ष में ही उनके आक्रांत आत्म वास्तविक आतंक-मुक्ति मिल सकती

उन्हें लगा—मुक्ति मृत्यु से नहीं, मृ आतंक से मिलनी चाहिये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मराठी कहानी:

चांद मेरा दोस्त

शांताराम

जब मैं उठी, तब आधी रात की खामोशी थी। अजीब सन्नाटा-सा था। पर उसे खामोशी भी आखिर क्यों कर कहें? मुझे घर के सब लोगों की सांस सुनाई दे रही थी। किसी दूसरे की सांस या खुर्राटे तो क्या, मेरी सांस तक मुझे साफ सुनाई दे रही थी। सारा मकान सांस की आवाज से भर-सा गया था! ज्यादा क्या कहें, बाहर की सृष्टि की सांस भी मुझे साफ-साफ सुनायी दे रही थी।

तो जब मैं उठी, तब सन्नाटा था। पर मैं सोयी ही कब थी? यदि आंखें बंद करने का ही नाम सोना हो, तो कह सकती हूं कि सो रही थी। वैसे मैं सो न रही थी। उन दिनों पता नहीं मेरी नींद कहां उड़ गयी थी! रात के अंधेरे में बाहर अजीब खामोशी होती थी। आवाज भी आती थी, तो मात्र झींगुरों की। घर के सारे लोग सोते रहते थे। मैं अपने पलंग पर पड़ी-पड़ी करवटें बदलती रहती थी। बंद आंखों के सामने कभी अंधेरा, तो कभी कोई पुराना प्रसंग नाच उठता था। कभी अजीब-सा दृश्य आंखों के सामने घूमने लगता। फूलों के पर लग गये हैं और वे आकाश में उड़ने लगे हैं या मैं कशीदाकारी कर रही हूं और मेरा एक पांव लगातार चिंता में फंसा हुआ है, ऐसे-ऐसे अगम्य दृश्य दिखाई देते थे। कभी लगता कि सब कुछ सपना है, कभी लगता सत्य है। माथे पर पसीना आ जाता, पसीने से गंध आने लगती। कभी-कभी अजीब-सी थकान होने लगती। कभी बेचैन होकर आंखें खुलतीं और बंद हो जातीं। कभी लगता कि कमरे की घड़ी की टिक-टिक आवाज के साथ काल बिखर रहा है। कभी लगता, इधर-उधर की आवाज बंद हो गयी है और काल एकाएक रुक-सा गया है—और इसी तरह रात बीत जाती और पौ फटने लगती—यदि इसी का नाम नींद हो, तो कहा जा सकता है कि मुझे नींद आती है। मेरे कहने का क्या मतलब है, आप नहीं समझ सकते, कारण कि मैं बहुत कुछ कहना चाहती हूं; पर कैसे कहूं समझ नहीं पाती। शब्दों की घनी जाली से मेरी भावनाएं राह निकालने के लिए छटपटा रही हैं, इसे मैं ही जानती हूं। पर आखिर मैं कहूं भी क्या?

आपने पूछा—"तुम्हें क्या हुआ था?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसे हुआ था? क्या और कैसे ?" मुझे इन प्रश्नों से डर लगता है। जिंदगी जैसी ढलनी चाहिये, वैसी ढलती गयी—ढलती जायेगी—उसमें क्या और कैसे ? मिट्टी में पड़े बीज का कोंपल में रूपांतर हो जाता है—कोंपल का पेड़ बन जाता है, फूल खिलते हैं, फल आते हैं, पीले पत्ते हो गये, झड़ भी गये और पेड़ मिट्टी में मिल गया। जो होना था, सो हो गया। ऐसा क्यों और कैसे हो गया—हम कैसे बता सकते हैं ? जीवन का अर्थ समझाने और कारण खोजने की शक्ति जिनमें होगी, उनमें होगी; पर मुझ में इतनी शक्ति कहां ?

मैं इसी तरह क्यों कर चली, उस तरह क्यों न चली, यह बतानेवाली कौन होती हूं। उतना सामर्थ्य मुझ में कहां और सामर्थ्य का जिक्र भी कैसे करूं ? मैं बहुत कमजोर हूं। किसी बात को करने न करने की शक्ति मुझ-जैसी कमजोर में कैसे हो सकती है। जिसने जन्म दिया, उसी की इच्छानुसार मैं चलती जाऊंगी। बड़े आदमी की उंगली पकड़कर छोटा बच्चा चलता है, उसी तरह अभी तक मैं भी चल रही हूं। आखिर वह "बड़ा" कौन है ? छुटपन में मां-बाप और अब आप। कभी-कभी आपकी मूर्ति भी आंखों से ओझल हो जाती है। पर हमारा हाथ पकड़कर कोई हमें चला रहा है, ले जा रहा है, ऐसी भावना मन से निकलती ही नहीं।

हां तो, जब मैं जागी तब, या सच पूछा जाये तो अर्ध-निद्रा से जब मैं पूर्ण रूप से जागी, तब आसपास की सांसों से मेरा [illegible] घबरा गया। अभी तक मैं सहमी-सी [illegible] जी रही थी; पर अब तो गजब ही हो [illegible] इससे अब छुटकारा नहीं। मैं अंधेरे में [illegible] इधर-उधर देखने लगी। जो उजाले [illegible] दिखाई नहीं दिया, वह अंधेरे में कैसे दिख [illegible] दे सकता है! पर अंधेरे में मुझे दिखाई दि [illegible] प्रकाश दिखाई दिया। कमरे की ऊप [illegible] वाली खिड़की की दरार से चांद की कि [illegible] फूट रही थीं। इस किरण को देखते ही मे [illegible] अस्वस्थता कम होने लगी, मुझे सुखा [illegible] महसूस होने लगा—मुझे लगा जैसे मेरा शरी [illegible] हल्का-सा हो गया हो। चांद की वह कोम [illegible] सी किरण देखते ही मैं खो गयी। लगा कि [illegible] उस किरण पर चढ़कर सीधे खिड़की [illegible] दरार से बाहर निकल जाऊं। ऐसा क्यों [illegible] और कैसे लगा, यह मत पूछिये। इंसान [illegible] इच्छाएं कभी एक प्रकार की थोड़े ही होती [illegible] हैं। मुझे लगा, छोटी-सी और चांद [illegible] किरणों से राह पूछते-पूछते उसके [illegible] में निकल जाऊं। पर कैसे होगा ? [illegible] सोचते बहुत हैं; पर कितना हो पाता [illegible] है ? इतना समझ लेने पर भी मन में [illegible] विचार क्यों कर आते हैं ? पर सोचने [illegible] कोई प्रतिबंध लगा सका है ? लगता है कि [illegible] मैं भी उस किरण—जैसी बन जाऊं और [illegible] में मिल जाऊं। फर्क केवल इतना ही [illegible] कि वह खुले आकाश से मेरे बंद कमरे [illegible] आयी थी और मैं बंद कमरे से बाहर नि [illegible] कर आकाश से एकरूप होने के लिए उ [illegible] थी। लेकिन उस किरण पर मैं चढ़ न पा [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं तितली बन सकती थी; किरण का रूप नहीं ले सकती थी। पर मैं बाहर जा सकती थी—मुझे बाहर जाना था।

मैं बिस्तर से धीरे-धीरे उठी। उठने की कोशिश मुझे तनिक भी न करनी पड़ी। पंखों-नुमा एकदम उठ बैठी, बिलकुल सहज मेरे पावों में, शरीर में—अजीब हल्कापन आ गया था। इसीलिए दरवाजा खोलकर मैं कब बाहर आयी, मैं खुद न समझ सकी, फिर आप एकदम कैसे समझ सकेंगे?

मैं बाहर आयी और दालान में बाहरी बगीचे में आ पहुंची। वहां मैं अलसा गयी—कितनी देर, कौन जाने! पर बगीचे में मैं काफी देर ठहरी हूंगी। बगीचे की लताओं में आर-पार जानेवाली चंद्र किरणों ने जमीन पर जो छाया-प्रकाश का जाल बुन रखा था, उसमें मैं उलझ गयी। एक बेल की छांव तले चली गयी। मैं खड़ी रही और आश्चर्य की बात—जमीन की छाया-प्रकाश का जाला मेरे शरीर पर आ गया। मेरे शरीर पर उलझा हुआ जाला! मैं पांव निकालने की जितनी कोशिश करती थी, उतनी ही उलझ जाती थी। उस जाल से खेलना भी चाहती थी और छूटना भी। इसीलिए शायद उस जाल से निकलने में देर लग रही थी। पर मैं बाहर निकल आयी और चमकती चांदनी में आ गयी। मुझे खयाल तक न था कि मैं घर से कितनी दूर चली आयी हूं। खयाल होता, तो क्या मैं इतनी दूर आ सकती थी। खयाल होता, तो मैं घर से बाहर ही न निकल पाती।

क्या मैं बेहोश हो चुकी थी? कौन जाने मैं केवल इतना ही समझ पायी कि मैं एक शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल चांदनी की दुनिया मे आ पहुंची हूं। उस जगह पहुंचते ही मेरे व्यक्तित्व का अंग-प्रत्यंग एक अजीब खुशबू से भर गया। चांदनी की उस सुगंध से मैं मग्न हो गयी, चांदनी की खुशबू? आप कहेंगे—वह सुगंध तो रात-रानी की होगी। जैसा आप कहते हैं, वैसे हो भी सकता है। पर आखिर रात-रानी की सुगंध मैं कैसे नहीं जानती। उस रात जिस सौरभ का मैंने अनुभव किया था, वह वास्तव में चंद्रप्रकाश का ही सौरभ था। मेरे अनुभव का स्पष्टीकरण आप कहां तक दे सकेंगे। जो कुछ मुझ पर बीता है, उसे मैं ही जानती हूं, इसीलिए बार-बार कह रही हूं कि वह खुशबू ज्योस्त्ना की ही थी। मेरे शरीर को गुद-

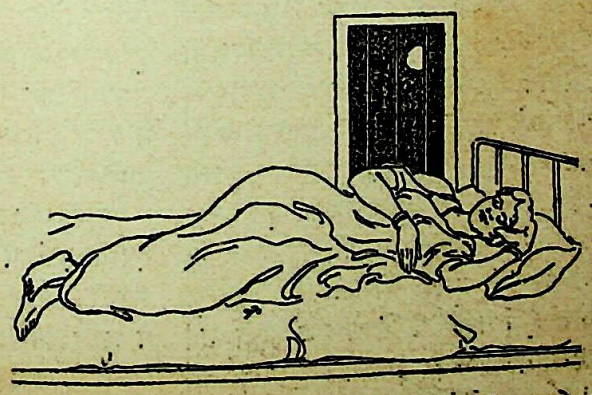

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुदानेवाला, सुखदायक, रेशम से भी कोमल स्पर्श चांदनी का ही होता है।

वह स्वच्छ, मुलायम, सुगंधित प्रकाश, मैं जी-भर कर भोगती खड़ी थी। अब अस्वस्थता बची ही नहीं, बेकरारी दूर हो गयी। दूभरता जाती रही। अंधियारा उड़ गया। अब तो प्रकाश, केवल आनंद रह गया। मात्र प्रसन्नता! मैं आनंदमय हो चुकी थी। मेरे व्यक्तित्व का बोझ हल्का हो चुका था। अब केवल इतना ही महसूस होता था कि मैं आनंदमय हो गयी हूं। प्रकाशमय हो गयी हूं। लगता था कि वस्त्रों का बोझा, शरीर का बोझा खत्म हो गया है। इंद्रियों की संवेदना थी; पर उन संवेदनाओं का बंधन न था। जिस चांद ने ऐसा जादू कर रखा था, उसकी ओर मैं देख रही थी और मोरपंखनुमा, मेरे सारे शरीर को आंखें आ गयी थीं। उन अनंत आंखों से मैं चांद की ओर देख रही थी। लग रहा था कितना उसे देखूं, कितना न देखूं।

मैं चांद की ओर कैसे देख रही थी, बताऊं आपको? आप हंसेंगे। सच आप हंसिये। उस दिन से आपके चेहरे की हंसी डूब गयी है। आपका उदास, अस्वस्थ, तप्त चेहरा देखकर मुझे कितना दुःख होता है, क्या आप जान सकते हैं, इसीलिए कहती हूं, आप हंसिये। चांद पर आप हंसेंगे ही। की ओर मैं कैसे देख रही थी, यह जान लेने हां, आपको हंसना ही चाहिये। हमारा मुन्ना होने पर, जब मैं होश में आयी, तब पहली बार उसकी ओर देख रही थी न— बिलकुल वैसे ही, उसी कौतुक से! हमारे प्रथम मिलन की तृप्ति पर आप जब सो रहे थे, तब जिस समाधान से मैं आपके चेहरे की ओर देख रही थी—उसी समाधान से!

मैंने चांद की ओर क्यों कर देखा, जानते हो? चांद का चेहरा मेरी जान-पहचान का था, पसंदगी का था इसीलिए। इसीलिए उस चेहरे की छोटी-मोटी बातें मेरे खयाल में ही न आती थीं। शायद चांद के खुद के प्रकाश के कारण हो सकता है। मुझे उसके चेहरे के सारे दाग नजर नहीं आ रहे थे। उसके साफ, तेज प्रकाश के कारण उसका चेहरा साफ-साफ दिखाई न दे रहा था। हो सकता है कि मैं लगातार टकटकी लगाये उसकी ओर देख रही थी, इसीलिए उसका चेहरा मुझे साफ-साफ न दिखाई दिया हो। आपको बात कुछ अजीब-सी लग रही होगी। लेकिन वह साधारण हो या अजीब, मैं इसकी परवाह नहीं करती। मेरा जो कुछ अनुभव था, वह मैंने व्यक्त कर दिया। मुझे चांद का चेहरा जितना दिखाई दिया, वह कैसा था, बताऊं? बिलकुल आप-जैसा। इसीलिए तो मेरी आंखें उधर अटकी थीं। चांद का मुखड़ा देखकर मैं फूली न समायी—लिपट जाने के लिए बांहें पसारीं।

आपसे मिलने के लिए अधीर हो उठी इसीलिए तो मैं झुकी और इतने में ही रूपहरे अनुभव पर घनी परछाईं पड़ी। मैं सहम गयी। निराशा हुई। वह काली काली परछाईं किसकी थी, देखने के लि

अपूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं एक ओर हटी। साक्षात आप खड़े थे। आपने मेरा हाथ कसकर पकड़ रखा था। मैंने क्या कहा था, याद नहीं आता। आपने क्या कहा था, वह भी पूरी तरह याद नहीं आता। "कहां जा रही हो? किधर जा रही हो? क्यों जा रही हो? किसके पास जा रही हो.....?" ऐसा ही कुछ आप कहे जा रहे थे। आपने लोहे की जंजीर की तरह मेरा हाथ पकड़ रखा था। आप मुझे घर की ओर खींचे लिये जा रहे थे। आपका ललाट उस रात पसीने से तर हो गया था। आपका स्पर्श मुझे जलन-सा लग रहा था। आपकी आंखें लाल हो गयी थीं।

घर आकर आपने मुझसे कुछ न कहकर, मुझे सीधे पलंग पर लिटा दिया था। खामोशी से सुलाने लगे, जैसे छोटे बच्चे को सुला रहे हों। आपके समाधान के लिए मैंने आंखें मूंद लीं। पर सच बताऊं? मुझे काफी देर तक नींद न आयी। आपको सोती हुई लगी होऊं; पर मैं आपकी गतिविधियों की ओर, हाव-भाव की ओर देख रही थी। आपने कमरे की बत्ती वैसी ही जलती हुई छोड़ दी। यह जानते हुए भी कि उजाले में बच्चों को नींद नहीं आती, मुझे नींद नहीं आती, आपने जानबूझकर बत्ती खुली छोड़ दी। सचमुच बत्ती के चौकीदार की कोई आवश्यकता न थी। आपको अंधियारे का एकाएक इतना डर लगने लगा? हमारे दोनों के सुख का, सुख-सपनों का – हमेशा का अंधियारा आपको डराने लगा? पर मैं आपको दोष न दूंगी। अच्छा हुआ आपने बत्ती जलती रखी। इसीलिए तो मैं आपके हाव-भाव साफ-साफ देख सकी।

आपने बच्चों की ओर देखा, मेरी ओर देखा और लंबी उसांस ली। कितनी लंबी और डरावनी उसांस थी वह! रात के अंधियारे की, खामोशी की, सन्नाटे की, चीर-फाड़ करनेवाली उसांस! मेरा कलेजा चीरनेवाली उसांस!

दीवार पर लगे हमारे फोटो की ओर आप बारी-बारी से देखने लगे। हम दोनों के फोटो, बच्चों के फोटो, बच्चों सहित हमारे फोटो उन फोटो की ओर देखनेवाली आंखें शायद गीली हो गयी हों। पर आपने आंसुओं को रोकने के लिए आंखों पर हाथ रख लिया। मैंने करवट ली। मेरे आंसुओं से भी तकिया गीला हो गया था, जानते हैं आप?"

आपने अलमारी खोली और हम दोनों के एक दूसरे को लिखे खत एकदम बाहर निकाल लिये। फिर आपने उन्हें बिना पढ़े ही अंदर डाल दिया और सफेद दीवार की ओर शून्य दृष्टि से देखते बैठे रहे।

आप चहलकदमी करने लगे। चहलकदमी करते हुए आप कुछ बड़बड़ा भी रहे थे। मुझे सुनाई न दे रहा था। आपके चेहरे पर बदलते भाव कुछ-कुछ दिखाई दे रहे थे। आपके चेहरे पर बीच में ही विषण्णता आती थी, बीच में ही क्रोध, बीच में ही उदासी, बीच में ही क्रोध। सच, मैं कुछ भी न समझ पा रही थी। लगा आपसे लिपट जाऊं–आपको खामोश करूं। पर मैं डर गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी क्रोधित नजरों को देखकर मैं न डरी थी। मैं डरी थी आपकी आंखों के संशय से – बहम से ! आपने मुझे पीटा भी होता, तो मुझे कुछ न लगा होता; पर संशय से भरी आपकी दृष्टि। कितनी टीस थी उन आंखों में ! आखिर क्या हुआ था इतना ? सच कुछ न हुआ था। जो कुछ हुआ था, उसे बता ही चुकी हूं। क्या आपको कभी भी ऐसा नहीं लगता ? यदि आपको इसका अनुभव होता, तो आप मुझे अधिक समझ सके होते। पर आपको भी क्यों कर दोष दूं ? कमजोर, पागल को समझ सकने की बारी आप-जैसे समझदार पर मैं क्योंकर लाऊं ?

पर मैंने जानबूझकर ऐसा कुछ न किया। चांदनी क्या मैंने पहले देखी न थी ? चांद क्या पहले मैंने कभी देखा न था ? आप कहेंगे क्या है आखिर उस चांदनी में ? क्या है उसमें सच कुछ नहीं होता।

आप स्वस्थ होने पर सोने के लिए आये आपने पहले टटोल लिया कि मैं सोयी हूं नहीं और आपने बत्ती बंद कर दी। शायद आपको गर्मी लग रही थी। सच पूछा जाय तो उस समय हवा में ठंडक आ गयी थी पर आपको शायद गर्मी महसूस हो रही होगी, इसीलिए आपने खिड़की खोल दी हवा का झोंका अपने शरीर पर लेते हुए आप सो गये। मैं जगती ही रही। आपने जो खिड़की खोली थी, उससे मुझे चांद साफ साफ दिखाई दे रहा था। उसके खुरदरे चेहरे की ओर देखना मुझे रुचता न था पर आपको खिड़की खुली चाहिये थी। चांद के उस मोटे-भद्दे चेहरे की ओर देखना मुझे ठीक न लग रहा था। पर आपकी सोयी खिड़की बंद कर देने की हिम्मत मुझमें न थी–साहस ही न होता था। मैं कमजोर हूं यही बात सच है। –रूपांतर : विजयबाला

★

आपके हिस्से में...

संसार के सुप्रसिद्ध धन-कुबेर लार्ड राथचाइल्ड के घर एक कम्यूनिस्ट सज्जन आये और उनसे कहने लगे–"मिस्टर राथचाइल्ड, आपका यह सरासर अन्याय है कि आपने इतनी सारी रकम एक स्थान पर एकत्र कर रखी है। आपकी इस धन-राशि पर संसार के सभी लोगों का समान हक है !"

यह तर्क सुनकर राथचाइल्ड कागज के पर्चे पर कुछ लिखने में तल्लीन हो गये और थोड़ी ही देर में उन्होंने अपनी जेब से दो पेंस निकालकर उक्त सज्जन के हाथ पर रख दिये।

"यह क्या ?" उन महाशय ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा।

तब राथचाइल्ड ने तुरंत उत्तर दिया–"श्रीमान्, संसार की जनसंख्या के हिसाब से आपके हिस्से में इतनी ही रकम आती है। आप अपना हिस्सा ले जाइये। यदि और लोग भी मुझसे मांगने आये, तो उन्हें भी इसी हिसाब से रकम दे दूंगा। – अनुराग

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोविंद रत्नाकर

अपने 'देश' में काम का अभाव और 'परदेश' में पाव-भर आटा मिल सकने की संभावना कितने लोगों को अपने परिजन-पुरजनों से उठाकर बिल्कुल नये-अनोखे वातावरण में पहुंचा देती है! 'परदेश' जाकर कमाने की यह प्रवृत्ति आदिकाल से विद्यमान रही है। शिवदेन भी अपनी बलिष्ठ काया को शारदा के कछार से उठाकर धरनीपुर की तराई में इसीलिए ले गया था कि अपने 'देश' में अपनी विशाल और बलिष्ठ बाहुओं से डांड चलाकर शारदा पार करनेवाले दस-पांच यात्रियों से वह दस-पांच आने ही दिन-भर में कमा पाता था और वे भी रोज नहीं। किंतु सत्रह आने की टिकिट कटाकर वह 'परदेश' चला जाये, तो सुना वहां सवा दो रुपये रोज मिल जाते हैं। अपने गांव में उसका अपना भी तो कोई नहीं, जिसे छोड़ने में जी टूटे। सो एक दिन उसने अपनी उस नाव से, अपने उस गांव से विदा ले ही ली।

धरनीपुर पहुंचते ही उसे काम मिल गया। वही क्यों, कतार में जितने खड़े थे, सबको काम मिल गया। नाम-धाम लिखा गया, अंगूठा टिकवाया गया, 'टिकिट' दी गयी और दिया गया उसको अपने 'क्वार्टर' का नंबर। गरजकर एक डढ़ियल ने काम पर हजिर होने का वक्त व दूसरी हिदायतें भी दे दीं।

वहां चीनी की एक मिल लग रही थी, हजारों एकड़ में उस मिलका आहार—गन्ना बोया जा रहा था। सैंकड़ों-हजारों के लिए वहां काम था। रेल की लाइन बिछ रही थी, सड़क बन रही थी, सिंचाई की नालियां खोदी जा रही थीं। भीमाकार मशीनें लग रही थीं, तो जगह-जगह छोटे पंप भी चल रहे थे। बड़े-बड़े ट्रैक्टर जमीन समतल कर खोद रहे थे, तो पचासों लोग-लुगाई गन्ना बोने में लगे थे। शिवदेन के लिए यह सब नया—बिल्कुल नया—नजारा था। कहां दिन-भर में दिखनेवाले वे दस-पांच चेहरे; और कहां ये सैकड़ों एक से एक नये और अनोखे व्यक्ति!

मीलों तक के रेतीले कछार में से बहती जलधारा को सदा से देखते रहनेवाले शिवदेन ने नजर दौड़े वहां तक लहलहाती हरियाली के बीच में सिर उठाये खड़ी मील

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को जब देखा, तो उसे लगा वह अद्‌भुत लोक में पहुंच गया है। नियम से आठ घंटे काम करके वह सवा दो रुपया पायेगा, आगे जाकर ज्यादा भी। राशन की दुकान भी है, अपनी कुठरिया भी। और क्या चाहिये ?

वह मन लगाकर—तन खपाकर—काम करने लगा। पर आदमी की भूख सिर्फ एक ही तो नहीं होती है! काम से थककर पेट भर लेने के बाद दूसरी भूख भी सताती है, खासकर जबकि उस भूख की उत्तेजना चारों ओर मंडराती हो।

शिवदेन को काम मिला था खेत में। नीचे दक्खिन और ऊपर उत्तर से आये हुए सैकड़ों मजदूर-मजदूरिनों के लिए खेतों के बीच-बीच में अच्छी ईंटों पर ईख की सूखी पत्तियां डालकर 'क्वार्टर' बनाये हुए थे, उन्हीं में से एक-एक हरेक मजदूर को रहने के लिए दिया जाता था। शिवदेन को भी वैसा ही एक 'घर' मिला। पर उसने उसी को स्वर्ग समझा, आंगन को उसने लीपा-पोता, मील में से बचे-खुचे खराब चूने से उसने दीवारों को पोता, सामने की जमीन को थोहर से घेर कर अपना आंगन बनाया। मील से मिली खटिया, बालटी, लालटेन और अपने लाये-खरीदे लोहे व मिट्टी के बरतनों से उसने अपना 'घर' बसा लिया। पर यही तो सब कुछ नहीं था। बिना घरवाली के घर कैसा और यह भूख पेट की भूख से कम नहीं सताती—खासकर जब वह अपने चारों ओर होनेवाले करतब देखता!

पहाड़ से नीचे उतरकर आयी हुई मुंदरी भी उन्हीं सबमें से एक थी। उसका भी वही काम, वही रहवास। भाग्य किसको कहां पहुंचा देता है। एकाकी मुंदरी भी उसी अज्ञात विधान से वहां पहुंच गयी, एक वही नहीं और भी बहुत-सी! खायी-खंदकों का पानी जैसे सिमिट कर तालाब बन जाता है, उसी प्रकार मील की कोलोनी का यह जमाव था। जिस दिन से मुंदरी आयी, उसने अपनी जगह बना ली, खेतों में-कोलोनी में। उसके काम से किसी को शिकायत नहीं; उसके बर्ताव से किसी को शिकवा नहीं। अपने रास्ते आती, अपने रास्ते जाती। लोग उसके रास्ते पर आंखें बिछाते; पर वह कदम बढ़ाती चली जाती।

पर कितने दिन ? भूख तो सभी को लगती है। पर वह थी चौकन्नी। कई सोहदों ने उस पर डोरे फेंके, पैसे उछाले; पर उनकी चाल-ढाल को वह परख गयी। एक दिन खेतों के छोर पर एक छोटी-सी मेंड़ बांधने की जरूरत हुई, शिवदेन को जमीन खोदने और मुंदरी को मिट्टी की टोकरियां ढोने का काम मिला। मुंदरी खाली टोकरी शिवदेन के सामने पटकती, चार फावड़े मारकर वह उसे भरता, दोनों हाथों से टोकरी उठाकर मुंदरी के सिर तक पहुंचाता, मुंदरी हाथ उठाकर टोकरी थामती, फुट-भर के फासले से शिवदेन मुंदरी के मुखड़े को देखता और देखता उसके उन्नत उरोजों को और मुंदरी देखती, शिवदेन की उन लाल-चायी आंखों को। दिन ढला, काम समाप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ, गन्ने के खड़े खेतों के बीच की पगडंडी से सीधे अपने घरों की ओर पहुंचने के लिए दोनों कदम में कदम मिलाकर चले।

जिनमें हाथी भी खो जाये, ऐसे ऊंचे-ऊंचे गन्ने! सांझ की वह बयार, गन्ने झूम रहे थे, सुनसान और एकांत तो था ही। कुछ आगे बढ़कर शिवदेन बोला—"मुंदरी ?"

मुंदरी बोली—"शिवदेन ?"

धनी-संपन्न व्यक्तियों को भोजन चाहिये टेबिल या पाटे पर, प्लेट या थाली में परोसा। पर गरीब बेचारा भूमि पर बैठ-कर अपना आंचल पसारकर उसी से ग्रास लेकर अपनी क्षुधा की तृप्ति कर लेता है। शिवदेन और मुंदरी के लिए ऊंचे गन्नों की बीच की थोड़ी-सी समतल भूमि ही पर्यंक के समान सिद्ध हुई।

शिवदेन के जीवन के एक नये अध्याय का यह प्रारंभ था, शायद मुंदरी का भी। इस अध्याय में आगे क्या-क्या लिखा जायेगा, इसका उन्हें धूमिल आभास ही था पर; दोनों ही उस धूमिल आवरण में से प्रकाश की एक ज्योति देखने का प्रयत्न कर रहे थे। वे दोनों ब्याह कर लेंगे, पति-पत्नी बनकर सुख से नि:संकोच रहेंगे।

सभी मनचाही बातें तत्काल नहीं हो जातीं। और उन दोनों का बूता भी कितना था! जो थोड़ा सुख मिल जाता, जो थोड़ी तृप्ति मिल जाती, वही दोनों को आनंद-विभोर रखती। दिन के दिन बीत जाते, दोनों एक दूसरे का मुंह भी नहीं देख पाते, एक को काम करना पड़ता पूरब, तो दूसरे को करना पड़ता पश्चिम। फिर भी संग-संगात हो ही जाता। दोनों अपनी भूख मिटाते, भविष्य के सपने देखते। दोनों निमग्न थे आमोद-प्रमोद में, सुखद हृदय की मधुमय हिलोर में। वे तत्काल ब्याह कर सकते थे, कोई अंगुली भी नहीं उठाता। ऐसे परदेश और ऐसे वातावरण में जात-पांत, उचित-अनुचित की कोई पूछ-परख नहीं। पर जिस विधि-विधान ने उन दोनों को मिलाया था, वही उन्हें ब्याह-कर एक होने से दूर कर रहा था।

× × ×

कई दिन गुजर गये। शिवदेन मुंदरी की देखा-देखी होती भी और नहीं भी। एक बार लंबे अरसे तक दोनों एक दूसरे से विलग रहे। शिवदेन जी-तोड़कर काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता, सवा दो से पौने तीन रुपये रोज कमाने लगा, पैसा-पैसा जोड़ता, इसी आशा में कि मुंदरी से ब्याह करेगा, घर बसायेगा, उसे सुखी रखेगा, खुद सुखी होगा।

काम खत्म करके एक दिन सांझ के झुटपुटे में वह उसी प्रकार गन्ने के बीच का गलियारा पार कर रहा था, जिस तरह किसी दिन उसने एक बार मुंदरी के साथ उसे पार किया था। चला जा रहा था वह, अपने ध्यान में निमग्न। अचानक गन्नों में खड़खड़ाहट सुनाई दी। वही समतल भूमि-भाग तो था, कौन भाग गया उधर, कौन भाग गयी उधर ? वही आकार-प्रकार तो है ! ऊंचे गन्नों और फैलती रात में दोनों गायब हो गये। सांझ की ठंडी बयार बह रही थी, बड़ा सुहावना समय था; पर शिवदेन का माथा भन्नाने लगा, उसके रोम-रोम में कांटे चुभने लगे।

शिवदेन सीधा गया मुंदरी की कोठरी पर। दौड़ती-हांफती मुंदरी पहले ही पहुंच चुकी थी और द्वार की चौखट का सहारा लिये कटी डाल की तरह खड़ी थी। शिवदेन ने उसे घूरकर देखते हुए प्रश्नवाचक शब्द से कहा—"मुंदरी ?"

मुंदरी ने कोई उत्तर नहीं दिया, उसकी आंखें बरस पड़ीं, मुंह ढांककर, भीतर घुसकर उसने दरवाजा बंद कर लिया। शिवदेन अर्ध-चेतन अवस्था में कदम उठाकर अपनी कोठरी की ओर चला गया।

बिना हाथ-मुंह धोये, बिना खाये-पिये वह अपनी कोठरी के आंगन में पसरकर पड़ रहा। अनोखे-अनोखे विचारों के घटाटोप में वह खोया-सा पड़ा रहा। वह तो मुंदरी ही थी; पर वह दूसरा कौन था ? क्या कहीं सब होना था ? अपना बचपन उसे कुछ याद नहीं, याद है तो केवल शारदा का वह पार और उस पर उसका डांड चलाना और बदले में दो रूखी-सूखी रोटी खाकर कहीं नाव में या और कहीं पड़ रहना। किसी की आपसी हेत-प्रेम उसके ज्ञान से परे था। उसका कुछ ज्ञान हुआ, कुछ आभास हुआ तो वह यों तिरोहित हो गया ? अपने विचारों में खोया वह टुकुर-टुकुर देख रहा था। सामने दीवार पर गन्ना काटने का उसका हंसिया टंगा था।

तभी एक मनोभाव ने उसे आ घेरा। झटका देकर वह उठा और हंसिये की मूठ दृढ़तापूर्वक पकड़कर बाहर निकला। दो पहर रात बीत चुकी थी, अर्ध-चंद्र का मंद प्रकाश फैला हुआ था, चारों ओर से झिंगुरों और छोटे जंतुओं की आवाजें उस सुनसान को भर रही थीं। चांद के प्रकाश में उसने अपने हंसिये की धार देखी, वह जोर-जोर से सांस लेने लगा। क्या करे—कोई निश्चित मार्ग सम्मुख नहीं था। अपने इरादों को दृढ़ और हंसिये की धार को पैनी करने के लिए वह आंगन में बैठकर वहीं पड़े पत्थर पर हंसिये की धार पर सान चढ़ाने लगा। बड़े मनोयोग से वह इस काम में संलग्न हो गया। पत्थर पर लोहे के घिसने की आवाज जंतुओं की आवाज से मेल खा रही थी।

रोशनसिंह कब चुपचाप आकर उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास बैठ गया, उसे पता ही नहीं चला। रोशन ने ही उसका ध्यान आकर्षित किया—"शिवदेन, ऐसा क्यों कर रहे हो ? तुम्हारी विधा को मैं जानता हूं। मेरे इलाके के किसी आदमी की भीतर-बाहर की बात मुझसे छिपी नहीं है। जमादार जो हूं। भैया, मुंदरी पतुरिया ने बड़ा कुकर्म किया। पर उसका यह इलाज तो नहीं, जो तुम सोच रहे हो ?"

शिवदेन का हाथ सहसा रुक गया और उसने पहली बार नजर उठाकर रोशनसिंह को देखा। उस मद्धिम प्रकाश में भी रोशन की चतुराई उसके चेहरे पर स्पष्ट लिखी दिखाई दी। रोशन था भी बड़ा दबंग, सब उसकी चतुराई, उसकी कारगुजारी का लोहा मानते थे। शिवदेन बोला नहीं, देखता-भर रहा। रोशनसिंह ने ही आगे कहा—"सुनो शिवदेन, तुम्हें तो मालूम भी नहीं कि वह बदमाश कौन था, किस पर चला-ओगे अपना हाथ ? साल-छः महीने में पता लगाओगे, तो भी क्या इस आग में जलते रहना अच्छा होगा। और अपनी मनचाही कर भी पाये, तो जरा सोचो क्या नतीजा होगा ? जिसे मारना चाहते हो, उसे मार लोगे; पर तुम भी फांसी के तख्ते पर चढ़ जाओगे और जिसके लिए यह सब करोगे—भोगोगे, वह किसी तीसरे के गलबहियां डाल लेगी और तुम्हारा भूत उसके चारों ओर मंडराकर पछताता रहेगा।"

ऐसी चतुराई की बात तो शिवदेन की मति से कोसों दूर थी। वह ठगा-सा विमूढ़ हो गया, बोला—"पर और उपाय क्या है ?"

"उपाय क्यों नहीं। है और बहुत ही मौजूं। न लाठी टूटे और सांप मर जाये। उस पतुरिया को दुतकार दो, कह दो तुम्हारा उसका कोई लेना-देना नहीं, पड़ने दो उसे खड्ड में, भोगने दो उसे अपना पाप। कर दो उसका गरबगरूर चूर। और उस बदमाश को भी जान लेने दो कि वह जूठन है जूठन, जिसमें कोई स्वाद नहीं। चखने दो उस मूरख को वह कड़वी खुराक ?"

शिवदेन ने कमर सीधी करके हाथ का हंसिया जमीन पर रख दिया। घुटने समेट-कर बाहों से उन्हें घेरकर, वह बिना बोले आकाश की ओर देखता रहा। रोशन समझ गया, उसकी चतुराई चल गयी, मन-ही-मन खुश था कि यह मूरख समझ भी नहीं पाया कि उसी का प्रतिद्वंदी उसे बनाकर अपना काम साध रहा है।

उठकर जाते हुए रोशन को शिवदेन ने इतना ही कहा—"हां जमादार, तुमने सम-झाया वही करूंगा।"

खुशी से छाती फुलाये, बिना धरती पर कदम रखे रोशनसिंह मधरात मुंदरी की कोठरी पर पहुंचा। रात इतनी बीत गयी थी; पर मुंदरी चौखट के सहारे निर्जीव-सी बैठी थी, भीतर लालटेन टिमटिमा रही थी; पर और कहीं कोई प्रकाश नहीं था, मुंदरी के मन में भी नहीं ! विजेता के समान रोशनसिंह ने प्रवेश किया, पराजिता-सी मुंदरी की कलाई पकड़कर उसने उसे ऊपर उठाया; पर वह वहीं फिर ढेर हो गयी। रोशनसिंह भी वहीं बैठ गया, मुंदरी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये बढ़िया
सनलाइट से हर बार

आप के कपड़े ज़्यादा चमकदार धुलते हैं

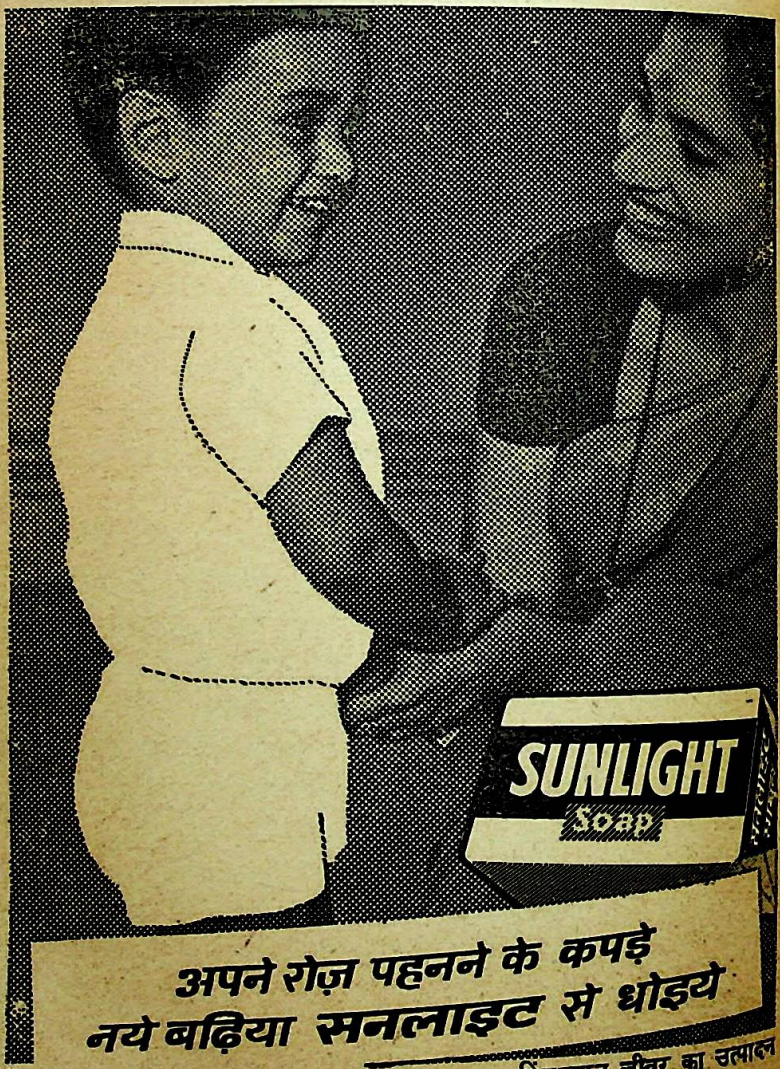

अपने रोज़ पहनने के कपड़े
नये बढ़िया **सनलाइट** से धोइये

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

लिंटास-S. 69-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोद में समेटकर सहलाते हुए, उसे स्नेह से सींचते हुए।

उसने बड़े गर्व से अपनी चतुराई का बखान किया, किस प्रकार उसने उस अक्ल के अंधे को परास्त किया, उसका बयान उसने खूब बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया। मुंदरी रोती रही-रोती रही, उसके आंसू थमते ही नहीं थे। रोशन लाख कोशिश करता; पर मुंदरी मुरझायी ही रही, जरा भी हरी नहीं हुई। रस का लोभी भौंरा मुरझायी कली पर कब तक मंडराता? आखिर बहाना बनाकर वह चलता बना।

पल-पल कर रात बीतती गयी, टप-टपकर मुंदरी के आंसू झरते गये। कहां की जन्मी, कहां की पली, साधन-सहारों से सर्वथा विहीन वह किन अरमानों को संजोये जीती रही है-जीवन में आगे बढ़ती रही है और प्रवाह में बहती-बहती एक तट पर पहुंचकर भी कैसी फिसली है? मुंदरी सामने के शून्य को भेद-भेद कर देखने का प्रयत्न करती वहीं बैठ रही। तीन घड़ी रात बीत गयी। उसके जीवन की यह रात भी बीतेगी क्या?

सहसा वह उठी। उसने आंचल सभाला डग भरती चली शिवदेन की कोठरी की ओर। पूरब क्षितिज में उतना अंधियारा नहीं था, जितना और सब ओर। पूरब की ओर पीठ किये, कोठरी के आंगन में एक ढूह पर बैठा शिवदेन मगन होकर अलगोजा बजा रहा था, जिसका स्वर सर्वत्र व्याप्त हो रहा था। पूरब के पार्श्व में शिवदेन और उसके अलगोजे के छाया-चित्र के मुंदरी ने दूर से दर्शन किये और अलगोजे के स्वर से अपने कर्ण-कुहरों को आपूरित कर लिया।

शिवदेन ने देखा एक स्त्री-मूर्ति समीप आकर दो कदम दूर बैठ गयी है, घूंघट से उसका मुंह ढका है—मुंदरी ही है वह? शिवदेन और भी मनोयोग से अलगोजा बजाता रहा, उसका स्वर तेज होता गया। अहिल्या-सी मुंदरी लिपटी-सिमटी वहीं प्रस्तर प्रतिमा के समान बैठी रही, बैठी रही।

कथाकार इससे परिचित नहीं है कि विवेकरूप भगवान राम अहिल्योद्धार के निमित्त प्रकट हुए या अपवाद-भीरु राजा राम?

★

गुलाब की राय

एक बार सम्मेलन के अधिवेशन में गंभीर एवं समस्यापरक विषयों पर बहस चल रही थी और सभी अपना-अपना मंतव्य प्रस्तुत कर रहे थे कि स्व० डा० गुलाबरायजी को भी कुछ याद आया और जैसे ही वे कहने को उठे कि पं० रामचंद्र शुक्ल बड़े स्वाभाविक ढंग से बोल पड़े— "लीजिये, मनुष्यों की राय जानने के बाद अब सुनिये गुलाब (फूल) की राय।" उनका यह कहना था कि सभी हंस पड़े और गुलाबरायजी सहम कर रह गये।

— मदन मोहन 'उपेंद्र'

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोया
स्पर्शित मनमोहक
सुन्दरता आप
पा सकती हैं

गोया के विशेषज्ञों द्वारा सुगन्धित किया हुआ मोहक रेशम जैसा मुलायम गोया टेल्क पेरिस, लंदन और न्यू यार्क की रूपरानियों को बहुत पसन्द हैं। ये उत्तम सुगन्धियाँ—मनभावन ब्लैक रोज़, ताज़े फूलों सी सुवासित गार्डेनिया और मोहक पासपोर्ट—बनायी गई हैं जिनकी सुगन्ध बहुत देर तक बनी रहती है। आप इनमें से कोई भी पसन्द कर सकती हैं। ये सुगन्धियाँ दुर्गन्ध को दूर करतीं और आपको तरोताज़ा तथा अधिक खुशबूदार बनाये रखती हैं।

अब भारत में बनने लगी

टेल्क सुगन्धियों से युक्त

गोया

पेरिस लंदन न्यू यार्क

एटलांटिस (ईस्ट) लि०
(इंगलैण्ड में समितिबद्ध)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हंगेरियन लघुकथा:

अक्षम्य अपराध

इस्तवान आरकेनी

मैंने उन दोनों पुरुष-नर्सों को, जिन्होंने उन्हें 'स्ट्रेचर' पर लेकर नीचे 'एम्बुलेंस' में रखा था, बीस-बीस फोरिंट्स (हंगेरियन सिक्के) दिये। यही नहीं, अस्पताल में भी क्रमशः दिन और रात काम करनेवाली नर्सों को मैंने बीस फोरिंट्स दिये, जिसके एवज में मैंने उन्हें मरीज की देखभाल करने को कहा। उन्होंने मुझे जाकर आराम करने को कहा और यह भी कहा कि वे लोग हर आध घंटे पर मरीज को देख लेंगी, हालांकि वे अपने होशोहवास में थे।

दूसरा दिन रविवार था। अतः मैं उन्हें देखने खुद पहुंच गया था। वे अभी भी होश-हवास में थे; फिर भी उन्होंने बहुत कम बात की। मुझे उनके बगलवाले मरीज ने बताया कि उन दोनों नर्सों में कोई भी उन्हें एकदफा भी देखने नहीं आयी। सोचा उन्हें एक सौ पचहत्तर मरीजों को भी तो देखना पड़ता है, इसलिए बहुत अधिक आश्चर्य नहीं हुआ। उसी बगलवाले मरीज के साथवाले आदमी ने बताया कि डाक्टर ने भी उन्हें अभी तक नहीं देखा है। डाक्टर का कहना था कि वे सोमवार को उनकी पूरी तरह जांच करेंगे और यही वहां का तरीका भी था।

मैं बाहर बरामदे में उन नर्सों की तलाश में निकल गया। लेकिन पिछले दिनवाली कोई नर्स नहीं मिली। काफी देर तलाश करने के बाद रविवार यानी उस दिन जो नर्स थी, उसे खोज पाने में सफलता मिली। मैंने उसे भी बीस फोरिंट्स दिये और कहा कि वह मेरे पिता को समय-समय पर देख-भाल लिया करे। मैंने डाक्टर से मुलाकात करनी चाही। डाक्टर के लिए भी मैं घर से ही एक लिफाफे में सौ फोरिंट्स के नोट बंद कर लाया था। लेकिन उस नर्स ने बताया कि डाक्टर अभी महिला-विभाग की तरफ गये हैं, कारण कि वहां किसी को रक्त देने की बात थी। नर्स ने मुझे चिंता करने से मना किया और कहा कि वह स्वयं डाक्टर से सब बातकर लेगी।

मैं पुनः अस्पताल के मरीजों के उसी कमरे में चला आया। मेरे पिता के पड़ोसी मरीज ने मुझे फिर से यह कहकर आश्वस्त किया कि जब से डाक्टर आया है, उसे मरीजों की जांच करने का समय ही नहीं मिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माँ की ममता
सर्वोत्तम की
कसौटी है...

ममता की कसौटी पर खरा-डालडा

ममता भरी माँ अपने लाड़ले को बढ़िया से बढ़िया भोजन खिलाती है। इस भोजन में रस है माँ के अपार स्नेह का और पौष्टिकता है सर्वोत्तम सामग्री की...डालडा वनस्पति की...जो बढ़ते हुए बच्चों के लिए गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं और यह केवल मुहरबन्द डिब्बों में सदा शुद्ध, सदा ताज़ा मिलता है। डालडा में बनी सब चीज़ें परिवार भर को अत्यन्त प्रिय हैं। आप भी आज से अपने लाड़लों को डालडा वनस्पति में पके स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन खिलाइए। डालडा आप की ममता की कसौटी पर खरा उतरेगा।

डालडा वनस्पति...एक विशेष शुद्ध चिकनाई

लिटास—DL 116-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और वे सोमवार यानी कल ही मेरे पिता को 'चार्ड डाक्टर' के आने पर देख पायेंगे। इस बार भी मुझे डाक्टर को फोरिंट्स का लिफाफा देने का अवसर नहीं मिल पाया।

"आपको कुछ चाहिये ?" मैंने अपने पिता से पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं।"

"मैं आपके लिए कुछ सेव ले आया हूं।"

"धन्यवाद ! मुझे भूख नहीं है।"

और मैं उनकी बगल में करीब एक घंटा बैठा रहा। मैं उनसे बातें करना चाहता था; पर कोई ऐसा विषय ही नहीं था, जिस पर हम बात कर पाते। कुछ देर बाद मैंने उनसे पूछा भी कि उन्हें कोई तकलीफ तो नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि कोई तकलीफ नहीं हो रही है। फिर मैं कोई और प्रश्न नहीं कर पाया और हम लोग चुप हो गये। हम लोगों का संबंध बहुत ही संकुचित और सीमित रहा था। हम लोगों ने कभी सच्चाई को छोड़कर और कोई भी बात नहीं की। लेकिन कोई भी सच्चाई जो अतीत के गर्त में खो गयी हो, उसका वर्तमान से क्या वास्ता ! हम लोगों ने कभी अनुभूति की बातें नहीं की।

"अच्छा, तो मैं चलता हूं !" मैंने कुछ देर बाद कहा।

"ठीक है।"

"मैं कल सुबह आकर डाक्टर से मिलूंगा"

"लेकिन यह काम कोई एकदम जरूरी नहीं है।" उन्होंने कहा और उनकी निगाहें दरवाजे तक मेरा पीछा करती रहीं।

दूसरे दिन सुबह सात बजे उन लोगों ने मुझे फोन किया कि पिछली रात मेरे पिता का देहांत हो गया। जब मैंने कमरा नं० २१७ में प्रवेश किया, तो देखा मेरे पिताजीवाली खाट पर कोई दूसरा मरीज था। बगलवाले आदमी ने मुझे कहा कि मेरे पिता को कोई तकलीफ नहीं हुई थी। उन्होंने एक लंबी सांस छोड़ी और उनका देहांत हो गया। अगर मैं उस आदमी की जगह होता, तो शायद मैं भी यह बात ठीक इसी तरह से कहता। फिर भी मुझे शंका हुई कि वह मुझसे सच बात नहीं कह रहा है। लेकिन मैंने अपने आपको विश्वास दिलाने की कोशिश की कि मेरे पिताजी को सचमुच तकलीफ नहीं हुई थी और उनके पड़ोसी ने मुझसे झूठ नहीं कहा।

प्रथानुसार बहुत सारी चीजों को निबटाना था। अस्पताल के स्वागत-कक्ष में मुझे एक नर्स मिली—यह न तो उन नर्सों में थी, जो शनिवार को मिली थीं और न रविवार वाली ही, यह एक दूसरी ही नर्स थी—मेरे लिए एकदम नयी ! उसने मुझे पिता की सोने की घड़ी, चश्मा, चमड़े का बैग, सिगरेट लाइटर और सेवों से भरा कागज का थैला दिया। मैंने उसे बीस फोरिंट्स दिये और उसे पिता के बारे में जो भी जानकारी चाहिये थी, लिखने लगा। इसके बाद चमड़े की टोपी पहने एक आदमी आया और मुझे अपने पिता को नहलाने, हजामत करने और कपड़े पहनाने को कहा। उसकी बात से मुझे ऐसा लगा कि मानो जिसके बारे में वह यह सब कह रहा है, उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काफी दिनों से न नहलाया गया है और न कपड़े पहनाये गये हैं और वह एक लाश नहीं है। हालांकि वे मर चुके थे।

मेरे पास अभी एक सौ फोरिंट्सवाला लिफाफा मौजूद था। मैंने वह लिफाफा इस आदमी को दे दिया। उसने लिफाफे को फाड़कर देखा, फिर उसने अपनी चमड़े की टोपी उतार ली और फिर मेरे सामने नहीं पहनी। उसने कहा कि वह मेरे पिता का अंतिम संस्कार बहुत सुंदर ढंग से कर देगा, मुझे सिर्फ साफ लीनेन भेज देना पड़ेगा। उसने मुझे यह भी आश्वासन दिया कि मैं उसके कार्य से पूर्णतया संतुष्ट हो जाऊंगा। मैंने उसे बताया कि दोपहर के बाद मैं उनके लिए लीनेन और एक रंगीन सूट लेता आऊंगा ; लेकिन पिता को देखना चाहूंगा।

"अच्छा, आप लाश देखना चाहते हैं ?" उसने जरा पीछे हटते हुए पूछा।

"हां, " मैंने कहा।

"मेरा खयाल है, आप इसे बाद में देखें।" उसने सलाह दी।

"मैं उन्हें अभी देखना चाहता हूं !" मैंने कहा—"जिस समय उनका देहांत हुआ, उस समय भी मैं उनके पास नहीं था।"

वह मुझे अनिच्छापूर्वक लाश-घर में ले गया। यह एक दूसरा मकान था, जो अस्पताल के बगीचे के बीच में बना था। लाश-घर में एक काफी तेज बल्ब जल रहा था, जिस पर कोई ढक्कन नहीं था। हम लोग कुछ सीढ़ियां नीचे उतरे और देखा सीमेंट के फर्श पर सीढ़ियों के ठीक नीचे मेरे पिता पीठ के बल पड़े थे। वह एक उड़ते हुए बाज की स्थिति में थे, ठीक उसी तरह जैसे युद्ध क्षेत्र में मरे हुए सिपाही को चित्रों में दिखाया जाता है। फर्क सिर्फ इतना था कि उन्होंने कोई कपड़ा नहीं पहन रखा था, एक सूती कपड़े से उन्हें नाक से जांघ तक उस हिस्से तक ढंक लिया गया था, जहां डॉ. ने खिरी दफा उन्हें इंजेक्शन लगाया था।

"अभी आप और कुछ नहीं देख सकते हैं," उस आदमी ने भ्रमता पूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा। उस बर्फ से शीतल गृह में भी वह नंगे सिर ही मेरी बगल में खड़ा था– "लेकिन, जब मैं उनको कपड़े पहना दूंगा, तब आप देखेंगे कि कैसे लगते हैं !"

मैं कुछ नहीं बोला।

"क्या वे काफी दिनों से बीमार थे ?" उस आदमी ने फिर पूछा।

"हां, काफी दिनों से," मैंने कहा।

"अच्छी बात है," उसने कहा–"मैं उनके बालों को इस तरह संवार दूंगा, जिससे उन्हें देखने में काफी फर्क पड़ जाये।" "आप यह सब कैसे सोचते हैं ?" मैंने पूछा।

"क्या वे अपने बालों को बगल से काढा करते थे ?"

"हां, इसी तरह।"

उसने फिर कुछ नहीं पूछा और न मैंने ही कुछ कहा। अब ऐसा कुछ भी नहीं था, जो मैं अपने पिता के लिए कह अथवा कर सकता और अब कोई नहीं था, जिसे मैं धन देता। अब कोई भी ऐसा रास्ता नहीं था, जिससे मैं अपने किये को सुधार सकता– भले ही मैं खुद भी उनके साथ क्यों न दफना दिया जाता ! सचमुच वह एक अक्षम्य अपराध ही था। –रूपांतर : शरद राकेश

★

प्रोत्साहन के दो शब्द

चार्ल्स डिकन्स के जीवन की एक घटना है। चार्ल्स को छोटेपन से निबंध लिखने का बड़ा शौक था। परंतु उसका घरेलू जीवन बड़ा कष्टप्रद था। अभी चार्ल्स केवल चार साल ही पढ़-लिख सका था कि उसके पिता को किसी का कर्ज न चुका सकने के कारण लंबी जेल हो गयी। घर में दुर्भाग्य आ धमका। खाने-पीने के भी लाले पड़ गये। बड़ी कठिनाई से चार्ल्स को एक गोदाम में लेबल चिपकाने का काम मिला। यह गोदाम लंदन की एक अंधेरी कोठरी में था, जिसमें चूहों का साम्राज्य था।

चार्ल्स को अपनी योग्यता पर जरा भी भरोसा न था। वह जो कुछ लिखता, उसे अक्सर फाड़ डालता या कहीं छुपाकर रख देता, ताकि उसे पढ़कर कोई उसका मजाक न बना। लंदन की जिस कोठरी में चार्ल्स रहता था, उसी में दो लड़के और भी रहते थे। चार्ल्स रात को उन दोनों के सो जाने पर उठता और अपने लिखे निबंध तहखाने में छिपा देता। आज तक उसका कोई निबंध स्वीकार ही न हो सका था।

एक दिन चार्ल्स क्या देखता है कि उसका एक निबंध एक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हो गया है। संपादक ने केवल निबंध ही प्रकाशित नहीं किया, बल्कि चार्ल्स की प्रशंसा भी की और उसके प्रोत्साहन में शब्द भी लिखे। उस रात चार्ल्स खुशी के मारे सो नहीं सका। प्रोत्साहन के इन दो शब्दों (तुम्हारा मस्तिष्क निबंध लिखने के लिए बहुत ही उपयुक्त है) ने चार्ल्स के जीवन को ही पलट दिया। चार्ल्स डिकन्स अपने समय का सर्वश्रेष्ठ निबंध-लेखक बन गया। – मेवाराम गुप्त

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ज़िक्र मेरा बेहतर है कि उस महफ़िल में है'

डा० गंगानारायण त्रिपाठी

प्रभात का हास और संध्या की करुणा एक दिन एक ही बिंदु पर मिली थीं; और बिंदु था—लोक-साहित्य के पारदर्शी अध्येता पं० रामनरेश त्रिपाठी का व्यक्तित्व।

नवंबर १९५६ की २१, २२ और २३—ये तीन दिन मैं भूल न पाऊंगा। इन तिथियों में उन्होंने मेरा आतिथ्य स्वीकार किया था। बात-बात पर हंसाना, चुटकुलों की बारिश, परिहास के अनेक इंद्र-धनुषी रंग, आनंद की बहती हुई मीठी बयार, उनके इस तीन दिन के सान्निध्य की अमिट छाप मन में अंकित हो गयी है।

उस वृद्धावस्था में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पन्ना के निमंत्रण को स्वीकार करके उन्होंने अपने जीवट का परिचय दिया। पन्ना आने के संबंध में उन्होंने कोइरीपुर से मुझे जो पत्र लिखा था, उसकी निम्न पंक्तियां उनकी जिंदादिली का सबूत देती हैं:

"आपका २५-८ का ममत्वपूर्ण पत्र मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई.....पर लालसा का बोझ उठाने की शक्ति शरीर में नहीं है.....वृद्धावस्था स्वयं एक रोग है और अतिथि-प्रेमी भी है। प्रतिदिन खांसी, जुकाम अजीर्ण, आलस्य आदि कोई-न-कोई मेहमान आता ही रहता है और जबर्दस्ती कर निकाले बिना जाता भी नहीं। स्वर्गीय प्रतापनारायण मिश्र की बुढ़ापे पर कविता पढ़कर आप कुछ कल्पना कर सकेंगे। निश्चय अनुभव के लिए तो अभी आपको बहुत वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। आपने मुझे स्मरण किया, इसके लिए धन्यवाद। जिक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि उस महफिल में है।"

वृद्धावस्था तथा अस्वस्थता के कारण इलाहाबाद से पन्ना तक की यात्रा उन्हें काफी कष्टप्रद रही। एक आयोजन में उन्होंने अपनी विनोदमयी शैली में कहा भी—"प्रयाग से चलते समय जब बाबूजी (राजर्षि टंडन) से मिलने गया, तो उन्होंने रोका। मैंने निवेदन किया—बाबूजी, मैं यह सोचकर जा रहा हूं कि यदि वहां शरीरांत भी हो जाये, तो प्रसन्नता होगी। पर अब यहां आने पर कुछ भी नहीं हुआ। यदि ऐसा होता, तो अखबारों में मोटे अक्षरों में छपता कि वे बड़े संत थे, दिव्य पुरुष थे, अपनी मृत्यु की बात जानते थे। किंतु मुझे यह सौभाग्य ही नहीं बदा था।"

अनेक संस्मरणों, घटनाओं, लोकोक्तियों तथा लघु-कथाओं को जीवित करती हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिहास की ऐसी ही रस-भरी वर्षा, उन तीन दिनों में होती रही ।

उनके व्यक्तित्व का यह एक पक्ष था, दूसरा पक्ष इससे अधिक प्रभावशाली तथा प्रेरक था । इसका प्रथम परिचय मिला, मनहर गर्ल्स हायर स्कूल, पन्ना के समारोह में । त्रिपाठीजी के स्वागत में छात्राओं ने एक लोकगीत प्रस्तुत किया । प्रेमचंद की कहानी पर आधारित हीरा-मोती का फिल्मी गीत था वह—"कौन रंग हिरवा त कौने रंग मोतिया।"

गीत की एक-एक पंक्ति और लय पर त्रिपाठीजी मंत्रमुग्ध हो रहे थे । आंखें मुंदी हुई, भाव-विभोर, ध्यान-मग्न जैसे अर्चना में डूबा हुआ कोई पुजारी हो । घटा घिर रही थी, वर्षा होनेवाली थी । धीरे धीरे भावों की हल्की बयार तेज हुई और उनके कपोलों पर ढुलकने लगीं मोती जैसी आंसू की लड़ियां । उन लड़कियों में मैं पढ़ रहा था, भारतीय नारी का सहस्र वर्षों का दलित पर तेजस्वी, विवश पर बलिदानी स्वरूप ! क्षण बीता, गीत समाप्त हुआ, मुद्रा भंग हुई । उनके हाथ आंसू पोंछने के लिए उठे और उपस्थित जनों की आंखें गीली हो गयीं । मैं सोचता रहा और आज भी सोचता हूं—पंडितजी के उन आंसुओं के पीछे क्या-क्या रहा होगा ?

पं० रामनरेश त्रिपाठी

सांझ की ढलती वेला में महिला भवन में उनका नागरिक अभिनंदन था । नगर-वासी उमड़ पड़े थे लोक-साहित्य के उस रत्न-अन्वेषक का भाषण सुनने । सभा-भवन में क्षमता से अधिक भीड़ थी । बड़ा जनरव था; लाउड स्पीकर की पुकार भी अनसुनी हो रही थी । इसी बीच त्रिपाठीजी ने बोलना आरंभ किया । दस मिनिट मुश्किल से बीते होंगे । यह कैसा जादू था ! जनता शांत; चुपचाप, नीरव, निस्पंद । उधर लोकगीतों की व्याख्या त्रिपाठीजी के द्वारा भावमयी शैली में हो रही थी । देश के लोक-गीतों की रचना किसने की ? कब की ? कहां हैं वे नाम ? कहां हैं वे हृदय ? कितने ही अदृश्य तुलसी, सूर, मीरा और महा-देवियों ने उन्हें अपने आंसुओं से सींचा, हृदय-रक्त देकर पालन-पोषण किया । उनमें भारतीय संस्कृति और इतिहास की कितनी ही तस्वीरें हैं ।

उनका स्वर गूंज रहा था, चारों ओर खामोशी थी और उसी खामोशी में लोक-गीत की एक तस्वीर उन्होंने खुद पेश की । "एक अशिक्षिता गंवार हरिजन स्त्री के रूप पर उसका जेठ मुग्ध होकर पत्नी बनाने की याचना करता है । वह अपने छोटे भाई (उस स्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पति) को अपनी राह की बाधा पाकर, दूर जंगल में कत्ल कर देता है। विवश नारी अपने पति के शव-दर्शन तथा दाह-क्रिया के बाद पत्नी बन जाने का वचन देती है। दूर वन में चिता बनी और जेठ गांव में आग लेने गया। इसी बीच रूपसी ने आंखों में आंसू भरकर अपने सतीत्व को दांव पर लगा दिया :

जो हम होई सतवंती हो ना
मोर अंचरा भभकि उठे अगिया हो ना

यदि मैं पतिव्रता होऊं, तो मेरे अंचल से आग प्रज्वलित हो उठे। आग जल गयी। शव के साथ जेठ के आने के पूर्व ही वह सौंदर्य राशि राख में मिल गयी।

गीत की मार्मिकता, भावों की गहराई में सभी तन्मय ! तभी त्रिपाठीजी की एक मधुर स्मृति जाग पड़ी इन शब्दों में—"यही गीत जब कश्मीर में मैंने लाला लाजपतराय को सुनाया, तो वे रो पड़े। आंखों में आंसू भरकर बोले—अरे इस गुलाम देश के शोषित निम्न वर्ग की नारी का यह रूप ! अगर यह कल्पना ही है, तो भी कितनी विराट, ऊंची और दिव्य ! नहीं, नहीं, यह देश गुलाम नहीं रह सकता, जहां ऐसे गीत हों, वहां गुलामी नहीं रह सकती।"

त्रिपाठीजी ने नारी के आदर्श और करुणा का एक और दिव्य चित्र प्रस्तुत किया। चित्र क्या था, करुणा और आदर्श की वेगवती धारा थी। राम ने सीता को वनवास दिया—वह भी उस समय जब वे गर्भवती थीं। वन में शुभ घड़ी शुभ दिन, उन्होंने दो पुत्रों को जन्म दिया। खुशी की बहार में पुराने घाव ताजे हो गये। उनके मन में गत और आगत मानो साकार होने लगे। फिर भी परंपरा-पालन के लिए सीता ने इस समाचार को अयोध्या भिजवा दिया। पौरुष-पुंज राम को ज्यों ही संदेश मिला उनकी करुणा जाग उठी :

हाथ कगडुवा हाथ रह, मुख की दतुअन मुखे रही
ढुरे लागि मुतियन आंसु पटुक का पोंछे।

संवाद सुनते ही राम के हाथ का कंगन हाथ में रह गया, दतौन मुख में और आंखों से आंसू की धारा बह चली। धोती के छोर से वे उसे पोंछने लगे। उनके हृदय ने पुकारा बिना सीता के अयोध्या सूनी है और अनंत काल तक सूनी रहेगी। उन्होंने सीता को लाने के लिए लक्ष्मण को भेजा, गुरु वशिष्ठ तक को भेजा। परंतु नारी का स्वाभिमान जाग पड़ा था। उसने ना कर दी। अंततः राम स्वयं आये। वन में उन्होंने दो सुंदर बालकों को देखा। उनका कुल-गोत्र-गुरु ओह यह परिचय कितना कठोर और दाहक था ! बालकों ने उत्तर दिया—हम राजा दशरथ के प्रपोत्र, लक्ष्मण के भतीजे और सीता के पुत्र हैं; परंतु पिता का नाम मां ने नहीं बताया। इस उत्तर से राम का तेजस्वी पौरुष पिघल गया। वह आंसू पोंछ कर वह चला :

इतना वचन राम सुनलेन, सुनहू पछलेनि हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामा तरर-तरर चुवै आंसू पटुक बन पोछइ हो ।।

आंसू-भरी आंखों तथा कंपित हृदय के साथ राम सीता के पीछे आकर खड़े हो गये—पिछवां उलटि जब चितवां राम जी ठाड़े। सीता स्तब्ध चित्रवत् अपलक राम को देखती रहीं; पर बोली नहीं।

त्रिपाठीजी ने फिर व्याख्या की—"सीता ने कुछ तो कहा होता? न निंदा, न रोष, न ताड़ना, न क्षोभ। कुछ भी नहीं मात्र रिक्तता और शून्यता। सीता के उस मौन में कितना हाहाकार था! अयोध्या के महाराजा मर्यादा तोड़कर रो पड़े और केवल इतना कह सके, सीता वापस चलो, तुम्हारे बिना अयोध्या सूनी है :

रानी छोड़ देहु जिअरा विरोग अजोधिया बसावहू ।
सीता तोरे बिन जग अंधियार तजिवन अकारथ ।।"

मैंने सभा-स्थल की ओर देखा। करुणा का एक सागर फैल गया था। सामने बैठीं महिलाएं आंसुओं से भीग गयी थीं। कुछ सिसक-सिसककर रो रही थीं। यौवन का उद्दाम वेग लिये छात्र, तूफान लिये तरुण—सभी मौन थे, उनकी सारी चंचलता लुप्त हो गयी थी।

त्रिपाठीजी ने प्रसंग को आगे बढ़ाया और राम के आंसू भी सीता को न बुलवा सके। उन्होंने एकटक एक दृष्टि राम की ओर डाली। उस सूनी दृष्टि में आया होगा जनकपुरी का विवाह, अयोध्या का रनिवास, वनवास, लंका का अशोक-वन और अंत में निर्वासन। वह कितनी मर्मभेदी स्वाभिमान-भरी दृष्टि थी? सीता ने मौन रहते हुए पल-भर में निर्णय कर लिया धरती में समा जाने का :

सीता अंखियन में भर ली विरोग एक टक देखिन।
सीता धरती में गई समाइ कुछौ नहिं बोलिन ।।

इन पंक्तियों के साथ ही त्रिपाठीजी स्वयं भी रो पड़े और रो पड़ा वह दो हजार का जन-समुदाय।

किंतु त्रिपाठीजी बोलते गये—"यहीं अंत होता, तो अच्छा था; पर नारी का यही अंत नहीं है। उसका अंत है सेवा और समर्पण, त्याग और एकनिष्ठा। कवि की कल्पना आगे भी गयी है। सीता ज्यों ही धरती में समाने लगीं, राम ने उन्हें बढ़कर पकड़ना चाहा; पर उनके हाथों में आ सीता के कुछ केशमात्र, अंतिम स्मृति-चिह्न। सीता के अधरों पर अंकित स्वर मुखर हुआ यदि मेरी निष्ठा आजीवन केवल राम के प्रति ही हो, तो मेरे केश हरी दूब बनकर सारे वन में फैल जायें। मेरे प्रियतम के चरणों को इनसे सुख मिले। राम की आंखों में आंसू थे; पर हृदय में क्या था इसे कौन कह सकता है?"

त्रिपाठीजी का भाषण समाप्त हुआ, तो लोग सोते से जग पड़े। जब वे मंच पर से उतरने लगे, तो दर्जनों लोग आंखों में आंसू भरे उनके चरणों की धूल लेने लगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मामूली किंतु महिमाशाली मस्जि

मुहम्मद बिन काक्षिम के सिंध आक्रमण (७वीं सदी) के बहुत पूर्व भारत की पहली मस्जिद जुम्मे की नमाज पढ़ी जाने लगी थी। सी० के० सत्यराज का एक खोजपूर्ण लेख।

केरल राज्य के एर्नाकुलम नगर से ३२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है क्रेंगनूर। प्राचीन काल में यह मौजिरिसि कहलाता था और जब भारत और प्राचीन रोम के बीच में व्यापार चला करता था, यह एक बड़ा बंदरगाह था।

पश्चिम-तट के इस बंदरगाह पर यहूदी, फिनीशियन, रोमन और अरब व्यापारी आया करते थे, सोने से लदे इनके जहाज सदियों तक क्रेंगनूर की समृद्धि के प्रतीक रहे। युगों तक अरब सागर के तट पर स्थित यह नगर व्यापार-विनिमय के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा। फिर १३४१ ईसवी में भयंकर बाढ़ आयी। पेरियार नदी अपना रास्ता बदलकर कोचीन के पास अरब सागर में जा मिली, जिससे कोचीन उत्तम श्रेणी का प्राकृतिक बंदरगाह बन गया। इससे क्रेंगनूर की महिमा फीकी पड़ गयी।

क्रमेण जहाजों के बहाव-मार्ग में रेत-मिट्टी भर गयी और १६ वीं सदी में यूरोपीय राष्ट्रों ने कोचीन में अपनी बस्तियां बसायी और क्रेंगनूर का भाग्य नक्षत्र निष्प्रभ होना शुरू हो गया।

कभी यहां यूनानियों की खासी बड़ी बस्ती थी। रोम लोगों ने यहां आपस मंदिर बनवाया था। बौद्ध धर्म का तो दक्षिण में मुख्य केंद्र था; यहां एक विश्वविद्यालय भी चलता था। कहा है कि ईसा की पहली सदी में ईसाई धर्म भारत लानेवाले संत टामस भी क्रेंगनूर पास ही उतरे थे।

पराक्रमी चेर-नरेशों के शासन-काल कुडुंगल्लूर केरल की राजधानी था। तब 'वांची' कहलाता था। मंदिरों की भरमार थी, जिनमें पेरुमाल लोगों का वाया हुआ तिरुवंचिकुलम का मंदिर मुख्य था।

आज भी पेरुमालों का महल, तिरुवं कुलम मंदिर, भगवती मंदिर और पुर्तगाली किले के अवशेष—ये सब आधे के दायरे में फैले हुए हैं और कुडुंगल्लूर विगत वैभव की गाथा कह रहे हैं।

किंतु कुडुंगल्लूर की सबसे बड़ी विशे है, वहां की जुम्मा मस्जिद। कहते हैं भारत की सबसे पुरानी और संसार दूसरी प्राचीनतम मस्जिद है, जिसमें की नमाज होती है। इसकी एक और वि षता यह है कि इसका मुंह भारत की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्जिदों की तरह मक्का की ओर नहीं, बल्कि पूर्व की ओर है। इसका कारण यह बताया जाता है कि मूलतः यहां एक मंदिर था। कुडुंगल्लूर के राजा ने इसे मस्जिद का रूप दिया, ताकि उसकी मुसलमान प्रजा वहां इबादत कर सके।

भारत की इस सर्वप्रथम मस्जिद की स्थापना में चेरमन पेरुमाल का बहुत बड़ा हाथ था, ऐसा माना जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि उसने अरब जाकर जेद्दा में पैगंबर मुहम्मद का दीदार करके इस्लाम अंगीकार किया था। किंतु ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात विवादग्रस्त है।

कहा जाता है कि सन ६२८ ईसवी में जब पैगंबर साहब ५७ वर्ष के थे, उन्होंने पूर्व के अनेक राजाओं के पास संदेश भेजकर उन्हें अरब आने और इस्लाम को अपनाने का निमंत्रण दिया था। उन दिनों केरल के साथ अरबों का व्यापार पूरे जोर पर था। अरबों के संपर्क में आने से पेरुमाल के हृदय में उनके नवीन धर्म के प्रति उत्सुकता जागृत हो चुकी थी; सो जब पैगंबर का निमंत्रण मिला, तो वह उसे स्वीकारे बिना न रह सका और अरबों के एक दल के साथ मक्का जा पहुंचा।

वहां उसने पैगंबर से इस्लाम की दीक्षा ली। मुहम्मद साहब ने उसका नाम ताजुद्दीन रखा। वहीं उसने मलिक-इब्न-दीनार की बहन से विवाह किया। जब वह मक्का से लौट रहा था, तो रास्ते में बहुत बीमार हो गया और मोखल्ला में उसकी मृत्यु हो गयी।

मृत्यु-शैया पर से चेरमन पेरुमाल ने केरल के शासकों के नाम संदेश लिखवाये और उन्हें मलिक-इब्न-दीनार को सौंपकर अपने हाथों केरल के राजाओं के पास पहुंचाने तथा केरल में इस्लाम का प्रचार करने की प्रार्थना की। दीनार ने यही किया। पहला पत्र उसने क्रेंगनूर के राजा को दिया।

राजा की पेरुमाल पर बड़ी श्रद्धा थी। उसने दीनार को सब प्रकार की सहायता दी। दीनार अपने साथ अनेक कीमती चीजों के अलावा संगमरमर की १३ सिलें भी लाया था। उसने केरल में जो तेरह मस्जिदें बनवायीं, उनमें इन्हें आधारशिला के रूप में काम में लाया गया।

दीनार और उनके साथियों की आवभगत शाही मेहमानों के रूप में की गयी थी। राजा ने इन्हें अराकुलम के पूर्व में स्थित 'अरताली' मंदिर में ठहराया था। ये लोग यहीं रहते और इबादत करते थे। उधर

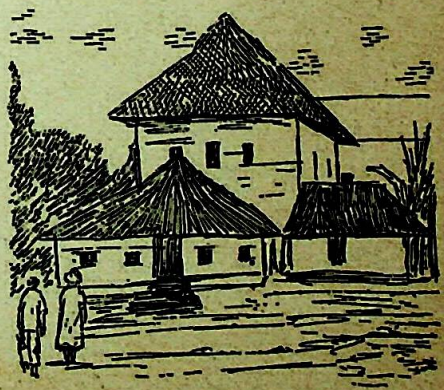

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इनके प्रचार-कार्य का जनता उत्साह से स्वागत कर रही थी। अतः एक जुम्मा मस्जिद की जरूरत महसूस हुई। जब उन्होंने राजा को यह बात बतायी, तो उसने उदारतापूर्वक वह मंदिर उन्हें ही दे दिया। मंदिर की इमारत में आवश्यक सुधार किये गये। इसीलिए मस्जिद की ड्योढ़ी और छत की रचना आज भी केरलीय मंदिरों जैसी है। एक दिलचस्प बात यह है कि आज भी जब तिरुवंचिकुलम के मंदिर की वार्षिक 'आरती-यात्रा' निकलती है, वह मस्जिद की भी परिक्रमा करती है।

कहा जाता है, मलिक-इब्न-दीनार ने अपना सारा शेष जीवन क्रेंगनूर में ही रहते हुए पैगंबर का संदेश भारतीय जनता तक पहुंचाने में व्यतीत किया। दीनार तथा पैगंबर साहब के दो अन्य मित्रों के पार्थिव अवशेष मस्जिद के अहाते में ही दफनाये गये थे, और वे आज भी सुरक्षित हैं।

टमाटर और स्वास्थ्य

टमाटर एक ऐसा फल है, जिसका कोई भी अंश बेकार नहीं जाता। शरीर के लिए आवश्यक प्रायः सभी तत्त्व टमाटर में मौजूद हैं। इसमें लोहे की मात्रा अन्य फलों तथा सब्जियों से प्रायः दुगुनी है। चूने तथा कैलशियम की भी अधिकता है, जो शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाती है। विभिन्न रोगों पर इसके कुछ उपयोग इस प्रकार हैं:

१. बच्चे के सूखे रोग में लाल टमाटर का रस पिलायें, इससे रोग धीरे-धीरे ठीक जायेगा और बच्चे का मुख निखर आयेगा।

२. लाल टमाटर का रस दिन में तीन बार दो-दो तोला पीने से दुर्बलता दूर होगी और शरीर पुष्ट होगा। इसके सेवन से थकावट दूर होती है, भूख बढ़ती है तथा अंगों में स्फूर्ति आती है। पांडुरोग (पीलिया रोग) में इसका सेवन विशेष लाभकारी होता है।

३. कई नेत्र रोग जैसे रतौंधी, कम दिखाई देना, धुंधलापन आदि विटामिन 'ए' की कमी के कारण होते हैं। टमाटर का सेवन करने से ये रोग दूर हो जाते हैं और आंखों की ज्योति बढ़ती है।

४. रक्त दूषित हो जाने के कारण शरीर पर कभी-कभी बाल-चट्टे होने लगते हैं। ऐसी अवस्था में टमाटर का रस दो-दो तोला दिन में तीन बार पीजिये। धीरे-धीरे बाल-चट्टे समाप्त हो जायेंगे और आपकी त्वचा निखर आयेगी।

५. यदि दांतों में से खून निकलता हो या स्कंवी रोग (एक चर्म-रोग विशेष) हो तो टमाटर के रस का सेवन लाभदायक होता है।

६. ज्वर के कारण रोगी के रक्त में कई प्रकार के हानिकारक पदार्थों की वृद्धि हो जाती है। टमाटर का गाढ़ा रस पिलाने से ये पदार्थ नष्ट होते हैं और रोगी शांति अनुभव करता है।

— भीखमचंद जैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

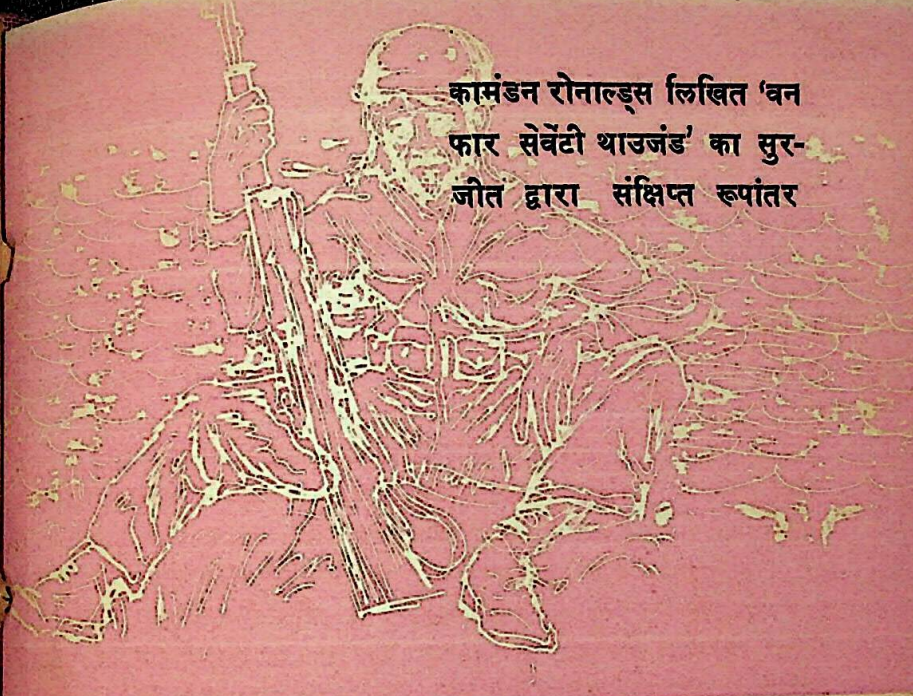

कामंडन रोनाल्ड्स लिखित 'वन फार सेवेंटी थाउजंड' का सुरजीत द्वारा संक्षिप्त रूपांतर

सत्तर हजार के घेरे में

उस दिन हम सवेरे से बमबारी कर रहे थे। हमारे ग्रुप में दस वायुयान थे, जिनमें से पांच हर समय तटवर्ती इलाकों पर बमबारी करने के लिए तैयार रहते थे। जब किसी यान के पास बमों का स्टाक समाप्त होने लगता, तो वह छावनी की ओर उड़ जाता। अपराह्न के समय हमने समुद्र-तट के निकट खड़े हुए एक छोटे-से समुद्री जहाज पर खूब बम बरसाये। मैंने तीन बार उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाया और अंततः तेल की टंकी ढूंढ़ ली। अब बस उस टंकी के ठीक ऊपर बम गिराने की आवश्यकता थी। चिमनी में से हल्का-हल्का धुआं उठ रहा था। जहाज में केवल एक हवाई तोप दिखाई दे रही थी, किंतु उसका मुख तट की ओर था। इस प्रकार खुले समुद्र की ओर से हमें टंकी तक पहुंचने में अधिक कठिनाई पेश न आयी।

चिमनी के अंदर बम गिराते ही हम ऊपर की ओर उड़ने लगे और शीघ्र ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाश में पर्याप्त ऊंचाई पर पहुंच ग ं । एक हल्का-सा धमाका सुनाई दिया । नीचे देखा, तो जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे । समुद्र में कुछ दूर तक तेल की लपटें दिखाई दे रही थीं । हम एक चक्कर काटकर पुनः टूटे जहाज के निकट पहुंच गये । डूबनेवालों की चीखें आकाश तक पहुंच रही थीं । पानी की सतह पर तेल जल रहा था । आश्वस्त होकर हम छावनी की ओर उड़ने लगे ।

अभी हमें समुद्र-तट से चले केवल दस मिनिट हुए थे कि दुश्मन के वायुयान हमारे पीछे लग गये । ये सब फाइटर यान थे, जो पूरी तरह शस्त्रसज्ज थे । हमने संभलने का बहुत प्रयत्न किया । किंतु हमारे बमों का जखीरा समाप्त हो चुका था; और दुश्मन से बचने का और कोई तरीका नहीं था । अंततः वही हुआ, जिसकी आशंका थी । उन्होंने इतनी बमबारी की कि हमारे वायु-यान की दुम में आग लग गयी । उस समय हम नौ व्यक्ति यान में थे, जिनमें से दो तो तुरंत चल बसे । एक की बांह जख्मी हो गयी और वह खिड़की के मलवे के नीचे दबा हुआ सहायता के लिए पुकार रहा था ।

यों लड़ाकू विमानों के चालक के नाते मैंने असंख्य संकटों का मुकाबला किया है । किंतु जो स्थिति उस दिन सामने आयी, उससे मुक्त होना असंभव था । दुम टूट चुका था । बारूद का भंडार समाप्त हो चुका था। नौ में से केवल छः व्यक्ति जीवित थे । पर तीनों लड़ाकू यान अब भी हमारे इर्द-गिर्द मंडरा रहे थे । हमारा यान वैसे भी बहुत छोटा था । सहसा एक बम तेल की टंकी पर आ गिरा और आग की लपटें भड़क उठीं । मैंने चिल्लाकर अपने साथियों को आगाह दी कि वे यान से कूदने के लिए तैयार हो जा ं । किंतु उनमें से कोई संभले, इससे पहले ही धमाके से इंजन फट गया और मेरी बा ीं टांग इंजन ं बुरी तरह जकड़ी गयी ।

मेरी आंखों ने जो अंतिम दृश्य देखा, वह था यान का तेजी से नीचे की ओर गिरना । मैंने आंखें बंद कर लीं और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा । मुझे अच्छी तरह याद नहीं कि जब यान समुद्र के पानी से टकराया, तो मैंने क्या महसूस किया । बस इतना स्मरण है कि जब मैं होश में आया, तो पानी में डू रहा था । मैंने हाथ-पांव मारे और शीघ्र ही सतह पर उभर आया ।

मुझसे कोई पचास गज की दूरी पर हमारा यान डूब रहा था, या कहना चाहिए कि डूब चुका था; क्योंकि केवल उसका एक कोना दिखाई दे रहा था । समुद्र में से धुआं उठ रहा था । मैंने आंखें बंद कर लीं । निर्मा त्रण करने का भरसक प्रयत्न किया; किंतु आंसुओं की दो बूंदें आंखों से छलक ही पड़ीं ।

मैं अच्छा तैराक नहीं हूं; फिर भी जी त्यों हाथ-पैर मारता रहा । आकाश में चांद चमक रहा था—शायद चौदहवीं का था । और उसकी किरणें समुद्र की तरंगों से अठखेलियां कर रही थीं । धीमी-धीमी हवा चल रही थी । मौसम खासा सुखद था और यदि मेरी टांग में इतना तेज दर्द न होता तो संभवतः मैं इससे आनंदित भी होता ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक टांग में दर्द होने के कारण मुझे केवल एक टांग से तैरना पड़ रहा था। सहसा मुझे अनुभव हुआ कि मेरे मुंह से खून निकल रहा है। मैंने हाथ लगाकर देखा, तो एक दांत अपनी जगह से उखड़ चुका था—केवल उसका एक कोना मसूड़े से अटका हुआ था। मैंने उसे निकालने का प्रयास किया; किंतु मारे दर्द के मेरी चीख निकल गयी। एक घंटा बीत गया। मैं थकावट से चूर हो चुका था। जी चाहता था कि पानी पर चित लेट जाऊं और अपने शरीर को पानी में डूब जाने दूं। प्राण जायें तो जायें, शरीर को तो आराम मिल जायेगा।

मैं इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि कोई चीज मुझसे आकर टकरायी। मैंने जरा गौर से देखा—यह एक लाइफ-बेल्ट था। उस समय मैं उस स्थान से लगभग एक मील दूर निकल चुका था, जहां यान डूबा था। ऐसे में लाइफ-बेल्ट का मिल जाना चमत्कार के अतिरिक्त और क्या हो सकता था! शायद प्रकृति नहीं चाहती थी कि मैं उस खुले समुद्र में असहाय अवस्था में डूब जाऊं। मैंने उसे कमर के गिर्द बांध लिया और थोड़ी देर के लिए हाथ-पांव ढीले छोड़-कर आराम करने लगा। अब मेरी आंखों के सामने मां-बाप और भाई-बहनों के चेहरे लहराने लगे। वे मेरा उत्साह बढ़ा रहे थे। मेरे मुंह से बरबस प्रार्थना निकलने लगी।

चांद बादलों की ओट में छिप चुका था और समुद्र अंधकार में डूब गया था। बिना यह जाने ही कि मैं किस दिशा में जा रहा हूं, मैं तैरता रहा। मेरा संपूर्ण शरीर पानी में था। फिर भी मेरे माथे पर पसीने की बूंदें छलक आयी थीं। समय बीतता चला गया और उसके साथ-साथ मेरी शक्ति भी क्षीण होती चली गयी। अंत में मैंने अपने शरीर को ढीला छोड़ दिया। अब मैं लहरों की दया पर अज्ञात दिशा में जा रहा था। घड़ी देखी, ग्यारह बज रहे थे। यान को नष्ट हुए पांच घंटे बीत चुके थे। मैं ऊंघने लगा।

× × ×

एक घंटे तक मैं नींद से लड़ने का प्रयत्न करता रहा। सवा बारह बजे चांद बादलों से निकला और एक बार फिर दूर-दूर तक उसका दूधिया प्रकाश फैल गया। मैंने चारों ओर गौर से देखा और अचानक मेरी दृष्टि एक स्याह धब्बे पर जाकर रुक गयी। मैंने अपनी बची-खुची शक्ति को एकत्र किया और पानी को चीरता हुआ उस दिशा में बढ़ता चला गया। कभी-कभार जब मैं बायीं टांग पर जरा-सा दबाव डालता, तो मुंह से एक हल्की-सी चीख निकलती।

निकट पहुंचकर देखा, तो यह दो फुट चौड़ी और कोई पचास फुट लंबी एक चट्टान थी। समुद्र-तल से उसकी ऊंचाई बीस फुट के लगभग थी। उसके समीप जाते हुए भी मुझे भय लग रहा था; क्योंकि मैंने समुद्री जहाज के सिपाहियों से सुन रखा था कि इस प्रकार की चट्टानों के गिर्द शार्क मछलियां इकट्ठी रहती हैं। कुछ देर मैं इसी सोच में रहा कि आगे बढ़ूं या नहीं। चारों ओर समुद्र फैला हुआ था। बचने के सभी मार्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवरुद्ध हो चुके थे। बस यही एक मार्ग था कि किसी प्रकार उस चट्टान पर चढ़ जाऊं।

अंततः मुझे एक युक्ति सूझी। मैंने कमर से लाइफ-बेल्ट उतारी और जेब से चाकू निकालकर उसे लंबा-सा काट लिया और टुकड़ों को मिलाकर रस्सी तैयार की। फिर उस रस्सी के अंतिम सिरे पर एक गांठ देकर मैंने उसे चट्टान की ओर फेंका। भाग्य अच्छा था, जो पहली बारी में यह रस्सी चट्टान की किसी दरार में फंस गयी। मुझे उसके सहारे ऊपर चढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई। ऊपर जाकर मैंने रस्सी खींच ली और औंधे मुंह धरती पर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद मैं प्रगाढ़ निद्रा में सो रहा था।

× × ×

जब तक मैं जागा, धूप चारों ओर फैल चुकी थी। मैंने लेटे-लेटे अपने सारे शरीर पर हाथ फेरा और फिर उठकर बैठ गया। मुझे बहुत भूख महसूस हो रही थी। प्यास भी लगी हुई थी। मैं उस चट्टान का निरीक्षण करने लगा। अचानक मेरे मुंह से एक चीख निकली। मुझसे कोई दस कदम की दूरी पर एक जापानी सिपाही मुंह के बल पड़ा हुआ था। वह बिलकुल निश्चेष्ट था। यों प्रतीत होता था, जैसे आराम की नींद सो रहा हो। मैं भयभीत हो गया। उसके पास बंदूक थी, जबकि मेरे पास एक छोटे-से चाकू के सिवा कुछ न था।

दबे पांव चलता हुआ मैं उसके समीप गया और उस पर झुक गया। दुर्गंध के भभके मेरी नाक में घुसने लगे। मैंने उसके शरीर को सीधा किया। उफ् मेरे भगवान! वह मर चुका था! उसका सारा शरीर नीला हो रहा था। उसे मरे हुए तीन-चार दिन से अधिक नहीं हुए होंगे; क्योंकि अभी उसका शरीर गलना आरंभ नहीं हुआ था। आखिर वह इस चट्टान पर कैसे पहुंचा? मैंने उसके शरीर को खूब अच्छी तरह देखा, किंतु कोई जख्म नजर न आया। मैंने उसकी जेब में हाथ डाला, तो मुझे पहली बार पता लगा कि मेरे दायें हाथ की पुश्त बुरी तरह जख्मी हो चुकी है। शायद उसमें लोहे के कण घुस गये थे।

जापानी सिपाही की जेब से जो चीजें निकलीं, उनमें एक माचिस थी। पास ही एक बंदूक थी, जिसमें केवल छः गोलियां थीं। मेरे पास एक चाकू था और चंद डालर थे। मेरी कमीज तार-तार हो चुकी थी। एक बार तो जी में आया कि जापानी के कपड़े उतारकर पहन लूं; मगर मेरा जी न माना।

मैंने चारों ओर नजर दौड़ायी। दक्षिण की ओर कोई डेढ़ मील की दूरी पर धरती दिखाई दे रही थी। मैंने अनुमान लगाया कि वे न्यूबर्टन के द्वीप हैं। उन्हें देखकर मेरे हृदय में जीवित रहने की उमंग पैदा हुई। मैंने बंदूक कंधे से लटकायी और भगवान का नाम लेकर पानी में कूद पड़ा। द्वीप की ओर तैरते हुए मैं बहुत प्रसन्न था और इस सत्य से नितांत अनभिज्ञ था कि द्वीप पर सत्तर हजार जापानी मेरे स्वागत के लिए मौजूद हैं।

अक्टूबर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारो, मुख से कुछ मत कहना !
अंबर को स्मित देना, चाहे खुद घुट-घुटके रहना
इस अनंत में अंतहीन छबि भरकर चुपचुप दहना
तारो, मुख से कुछ मत कहना !
प्राणों का कोलाहल वाणी आंक नहीं पाती है
वाणी के मुखरित होते ही साख चली जाती है
कह देने से व्यथा हृदय की कम तो हो जाती है,
किंतु व्यथा की कमी प्रीत को रीता कर जाती है
गौरववान न हल्के होना, झिलमिल हंसते सहना !
तारो, मुख से कुछ मत कहना !
नभ का रंग बदलना उसके मन का कालापन है
समरसता में पली भक्ति ही सच्चा आराधन है,
तुम जलकर भी अमिट तुम्हारा त्याग हृदय का धन है
दीप्ति नहीं, यह तो नयनों में पीड़ा का अंजन है,
तम में रहकर भी तम हरना, पंथ ज्योति का गहना !
तारो, मुख से कुछ मत कहना !

—शिवशंकर वाशिष्ठ

जब मैं तट पर पहुंचा, दोपहर के एक बज रहे थे। तट की रेत समाप्त होते ही नारियल के वृक्षों के झुंड थे। मेरे लिए चलना कठिन हो रहा था। जख्मी टांग मुझे बुरी तरह परेशान कर रही थी। मैंने बंदूक का सहारा लेकर चलने का प्रयास किया। मगर मुझमें इतनी शक्ति नहीं थी। आखिर मुझे एक सूखी मगर मजबूत टहनी धरती पर पड़ी हुई मिल गयी। मैंने उसे एक हाथ में पकड़ा और सारे शरीर का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मेरे रंगरूप की बहार का आधार लक्स है'

शर्मिला टैगोर कहती हैं

सुंदर रंगरूप आप के लिए भी उतना ही ज़रूरी है जितना कि शर्मिला टैगोर के लिए ... इस की देखभाल भी वैसी ही होनी चाहिए।

लक्स टॉयलेट साबुन

चित्र-तारिकाओं का

शुद्ध मुलायम सौंदर्य साबुन

सफ़ेद और इंद्रधनुष के चार रंगों में

लिटास-LTS. 191-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भार उस पर डालता हुआ आगे बढ़ने लगा। लगभग एक मील चलने के बाद मैं एक नदी के किनारे पहुंचा, जहां मैंने ठंडा और मीठा पानी छककर पिया।

किनारे पर बैठकर मैंने अपनी बंदूक साफ की; क्योंकि समुद्र के नमकीन पानी से उसके बेकार हो जाने की आशंका थी। मेरे शरीर पर जहां-जहां खरोंचें आयी थीं, वहां समुद्र के नमकीन पानी ने जलन पैदा कर दी थी। मैंने नदी में उतरकर दोनों हाथों से शरीर को खूब मला। स्नान के बाद मैं बाहर निकला, तो शरीर बहुत हल्का महसूस हो रहा था। अब मुझे तेज भूख लग रही थी।

वृक्षों के नीचे जो घनी झाड़ियां उगी हुई थीं, उनमें गूलर की तरह के लाल और गुलाबी फल लगे हुए थे। मैंने एक फल तोड़ा और उसे नाक तक ले गया। उसमें से दुर्गंध आ रही थी। फिर भी मैंने उसे खाने का प्रयास किया; किंतु वह एकदम कड़वा निकला। नारियल के वृक्षों से हरे खोपे लटक रहे थे; किंतु उन तक पहुंचना मेरे बस का रोग नहीं था। यों मैं किसी वृक्ष पर चढ़ने की चेष्टा करता; किंतु उस समय मेरी टांग में टीस उठ रही थी।

छड़ी का सहारा लेकर मैं धीरे-धीरे किनारे के साथ-साथ पूर्व की ओर बढ़ता चला गया। एक जगह नारियल के वृक्षों का झुंड नजर आया। ऐन उसी समय आकाश में गड़गड़ाहट सुनाई दी और शत्रु के कुछ लड़ाकू जहाज दिखाई दिये। मैं फुर्ती से धरती पर लेट गया और बंदूक का मुंह आकाश की ओर कर दिया। सौभाग्यवश किसी ने मुझे नहीं देखा। मैं धरती पर घुटनों के बल चलता हुआ झुंड में जा घुसा। यहां से समुद्र नजर आ रहा था। यह स्थान वैसे भी जरा ऊंचा था। इसलिए दूर-दूर तक नजर जा सकती थी।

यह स्थान मुझे पसंद आ गया। मैंने कुछ टहनियों की सहायता से थोड़ी-सी जगह साफ की और सूखी घास इकट्ठी करके एक बिस्तर तैयार कर लिया। आकाश में पुनः गड़गड़ाहट सुनाई दी। मैंने नजर उठाकर देखा, तो घनघोर घटाएं छा रही थीं। देखते-ही-देखते वर्षा होने लगी। मैंने जमीन पर पड़ी हुई लकड़ियां इकट्ठी कीं और एक वृक्ष की निचली शाखाओं में फंसा दीं। सूखे पत्ते और घास इकट्ठी करके इन शाखाओं पर डाल दीं। तीन ओर झाड़ियां थीं, केवल एक ओर खुला था। इस प्रकार एक छोटी झोंपड़ी-सी बन गयी।

मेरे सारे कपड़े गीले हो चुके थे। किंतु उन्हें उतारकर सुखाना संभव न था; क्योंकि मुझे यह भय था कि यदि मैं उन्हें सूखने के लिए बिछाऊंगा, तो दुश्मन के हवाबाजों की नजर उन पर पड़ जाएगी।

शाम हो चुकी थी। वर्षा रुक गयी थी। भूख से मेरी आंतें पीड़ाकुल थीं। लड़खड़ाते कदमों से मैं भोजन की तलाश में निकला। एक जगह मुझे एक नारियल दिखाई दिया। मैंने उसे उठा लिया और बंदूक का कुंदा मारकर उसे तोड़ा। बासी होने के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी दुर्गंधपूर्ण था। फिर भी गिरी अभी तक नरम थी। मैंने खुशी से उसे मुंह में डाला; किंतु टूटे हुए दांत के कारण उसे चबा न सका। मेरी आंखों में आंसू आ गये। समझ में नहीं आ रहा था कि उस बढ़ती हुई भूख को कैसे शांत करूं।

सूर्य अस्त हो चुका था और चारों ओर शाम का झुटपुटा फैल रहा था। मैं शीघ्र ही वापस आ गया और घास के बिस्तर पर लेटकर सोने की चेष्टा करने लगा। मच्छर बहुत अधिक थे। वे बार-बार मुझ पर हमला करते। मेरे पास कोई कपड़ा तक नहीं था, जिसे मैं ओढ़ सकता। अंत में मुझे एक तदबीर सूझी। मैंने बिस्तर के निकट कुछ लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलायी और उसे कुछ हरी झाड़ियों से ढंक दिया। इस प्रकार आग के फैलने की आशंका न रही और मेरा उद्देश्य भी पूरा हो गया। धुएं से मच्छर कुछ कम हो गये।

दिन जितना गरम था, रात उतनी ही ठंडी थी; किंतु मैं मजे की नींद सोया। प्रातः आंख खुली, तो तबीयत प्रफुल्लित थी। भूख रह-रहकर सता रही थी। उस समय तक मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका था कि द्वीप पर जापानी सिपाहियों का कोई अड्डा है। अतः बाहर घूमना संकटकारी हो सकता था। द्वीप के स्थानीय निवासियों को ढूंढ़ने में भी कुछ लाभ नहीं था; क्योंकि मैं जानता था कि जनवरी १९४२ में जापान ने न्यूबर्टन पर अधिकार कर लिया था और वहां के निवासी पूरी तरह उनके अधीन थे। उनसे यह आशा रखना व्यर्थ था कि वे मुझे आश्रय देंगे।

धूप तेज होती गयी। मैंने झोंपड़ी से बाहर निकलकर चारों ओर देखा। दूर दूर तक कोई प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था। गिरता-पड़ता मैं समुद्र-तट की ओर चल दिया। मेरी टांग बुरी तरह जख्मी थी और मैं जख्म को बढ़ने नहीं देना चाहता था। मेरे पास केवल एक दवा थी—समुद्र का पानी। मैं जानता था कि नमकीन पानी जख्म को भर देता है और उसमें पीब नहीं पड़ने देता। तट पर लेटकर जख्मी टांग पानी में रख दी। खारा पानी मेरे जख्म में प्रवेश करने लगा। यों महसूस हो रहा था, जैसे जख्म पर नमक छिड़का जा रहा हो। मैंने कमीज का छोर दांतों में दबा लिया और दृढ़ता से पीड़ा सहन करता रहा।

वापसी पर मुझे कुछ घोंघे मिल गये। मैंने उनसे झोली भर ली। झोंपड़ी में पहुंचकर उन्हें आग पर भूना और फिर चाकू से चीरकर खा गया।

उस समय से मैंने यह नियम बना लिया कि रोज सुबह-शाम तट पर जाकर टांग को पानी में रख देता। वापसी पर घोंघे लाता, भूनता और उन्हें चट कर जाता। कभी-कभार कोई ताजा गिरा नारियल मिल जाता, तो वारे-न्यारे हो जाते। मेरे पास अब दियासलाई की कुछ ही तीलियां बची थीं। इसलिए अब मैं दिन-रात आग जलती रखता था। धुएं से बचने के लिए आग को मिट्टी से ढंक देता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सप्ताह इसी प्रकार बीत गया। मेरी टांग की पीड़ा भी कुछ कम थी और अब तो मैं खोपे की गिरी चबा सकता था। मगर हाथ का जख्म दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। लोहे के कुछ कण अंदर घुस गये थे और अब हथेली की पुश्त सूजकर कुप्पा हो रही थी। दिनों-दिन यह सूजन बढ़ती ही गयी।

आखिर मुझे एक उपाय सूझा। मैं उसे आग पर सेकने लगा। इसमें दर्द तो बहुत होता था; मगर इससे लोहे के कण ऊपर आते गये—यहां तक कि त्वचा में से नजर आने लगे। आखिर मैंने आपरेशन करने का निश्चय कर लिया।

मेरे पास एक छोटा-सा चाकू था। मैंने उसे बंदूक के कुंदे पर खूब रगड़ा और गिरता-पड़ता एक खाली नारियल के खोल में समुद्र का पानी भर लाया और कमीज के छोर से एक पट्टी फाड़ ली। फिर मैंने जी कड़ा करके हाथ की पुश्त पर चीरा दिया और लोहे के तीनों टुकड़े बाहर निकाल दिये। पीड़ा की तीव्रता से मैं पागल हो रहा था। अंततः तड़पकर धरती पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। जब होश आया, तो शाम के पांच बज रहे थे। आपरेशन किये तीन घंटे हो चुके थे। मैंने कपड़े की धज्जी को समुद्र के नमकीन पानी में डुबोया और कस-कर जख्म पर बांध दिया।

तीसरे दिन मेरी तबीयत सुधर गयी। हाथ की पीड़ा जाती रही थी। मैं बंदूक लेकर बाहर निकला और नदी-किनारे जा खड़ा हुआ। एक जंगली बत्तख के उड़ने की आवाज सुनाई दी। मैंने फायर करना चाहा, किंतु यह सोचकर रुक गया कि कहीं कोई फायर की आवाज न सुन ले। नदी के साथ-साथ मैं पश्चिम की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर चलकर एक रास्ता दिखाई दिया, जिस पर लकड़ी के पहियों के निशान थे। कहीं-कहीं आदमी के पदचिह्न भी नजर आये। ये निशान नंगे पांवों के थे। मैंने अनुमान किया कि यहां से न्यूबर्टन के स्थानीय निवासी गुजरे हैं।

सहसा मुझे यों महसूस हुआ, जैसे कोई मेरी निगरानी कर रहा है। मैंने चारों ओर गौर से देखा। एक झाड़ी की ओट में दो स्थानीय बाशिंदे छिपे हुए थे। उनके हाथों में लंबी चमकदार कटारें थीं। भागना व्यर्थ था। मैं धीरे-धीरे उनके निकट चला गया और मैंने उनसे बातचीत करने की कोशिश की। किंतु वे अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ थे। मैंने इशारों से उन्हें समझाया कि मुझे खाने के लिए कुछ चाहिये। उनमें से एक तुरंत बंदरों की तरह नारियल के एक पेड़ पर चढ़ गया और तीन-चार खोपे उतार लाया। तेज कटार से उसने बड़ी फुर्ती से उन्हें तोड़ा और मेरे हाथ में दे दिया। मैंने एक-एक करके उनका दूध पी लिया।

मैंने उन्हें बताया कि मैं अमरीकी हूं और मेरा यान समुद्र में गिरकर नष्ट हो गया है। मैंने उनसे निवेदन किया कि वे मुझे अपने साथ ले जायें। संभवतः वे मेरा अभिप्राय समझ गये थे। उनमें से एक ने मुझे प्रतीक्षा करने का संकेत किया और चटपट घनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी प्रिय पनामा संबंधी कुछ तथ्य

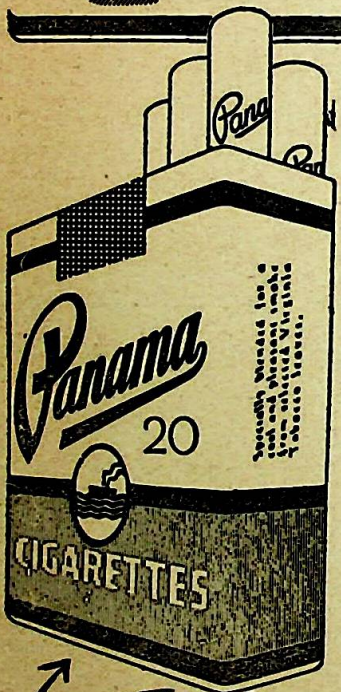

पनामा
पीना और पिलाना
एक उम्दा बात है!

१ शीतल और सौम्य धूम्रपान के लिए आपकी पनामा चुनी हुई वर्जीनिया तम्बाकुओं को मिश्रित करके बनायी जाती है।

२ भारत के कोने-कोने में लोकप्रिय पनामा की बिक्री अपने दर्जे की सबसे ज्यादा बिकनेवाली सिगरेटों में है।

३ देश के कई भागों में पनामा बिक्री में अव्वल भी है।

४ बरसों पहले पनामा द्वारा अपनाया गया २० सिगरेटों-वाला 'पाउच' पैकिंग आज भी लोकप्रिय है।

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD. बम्बई-५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT. (P) 635A Greens Advtg. MIN.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झाड़ियों में गायब हो गया। मुझे अपने पर क्रोध आने लगा। यदि उसने जाकर जापानियों को बता दिया, तो मेरी दशा क्या होगी? मैं इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि पहला व्यक्ति वापस आ गया। उसकी सांस फूली हुई थी। ऐसा लगता था— जैसे बहुत लंबा फासला चलकर आया हो।

"सरदार ने अनुमति दे दी है। चलिये।" उसने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा।

कंधे से बंदूक लटकाये मैं उनके साथ चल दिया। शीघ्र ही हम गांव में पहुंच गये। घास-फूस और बांस की बनी हुई झोंपड़ियों का वह एक छोटा-सा गांव था। एक ओर जानवरों का वाड़ा था, जिसमें गांव-भर के पशु बंधे हुए थे। झोंपड़ियों के बाहर मिनी-काली स्त्रियां काम-काज में व्यस्त थीं। उनके बच्चे धूल और कीचड़ में खेल रहे थे। हमें अपनी ओर आते देखकर स्त्रियां उठ खड़ी हुईं और आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगीं। मुझे कुछ बड़ी कोठरी में ले जाया गया। उनका सरदार (इसे वे 'कपाई' कहते थे) खाल के बिछौने पर बैठा जापानी सिगरेट पी रहा था। मुझे देखते ही वह अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और स्थानीय बोली में मेरा स्वागत किया। मेरे लिए एक बिस्तर तैयार कर दिया गया। गरम दूध का प्याला पीकर मैं सुख की निद्रा सो गया।

प्रातः उठा, तो सरदार मेरी बंदूक का निरीक्षण कर रहा था। मुझे देखते ही उसने बंदूक रख दी और मेरे लिए खाना लाने का आदेश दिया। तांबे की एक खुली थाली में भुनी हुई बत्तखें देखकर मेरी भूख धधक उठी। मैंने डटकर खाना खाया और पुनः मीठी नींद सो गया। शाम के छः बजे मेरी आंख खुली, तो वह ठिगना युवक, जो मुझे गांव तक लेकर आया था, अंदर आया। संयोगवश उस समय झोंपड़ी में और कोई व्यक्ति उपस्थित न था। वह मेरे निकट आ गया और भेद-भरे स्वर में बोला—"सरदार.....जापानी.....आप..... जायें ....."

वह बड़ी कठिनाई से ये शब्द बोल रहा था। किंतु मुझे उसका अभिप्राय समझने में अधिक देर नहीं लगी। जब मैंने सरदार को जापानी सिगरेट पीते देखा था, तभी मैं समझ गया था कि जापानियों से उसका संबंध है। मैंने अपनी बंदूक उठा ली और भागने के लिए तैयार हो गया। युवक ने मेरी ओर देखते हुए कहा—"कपीता...मैं...लाली दोस्त....."

मैं उसका अभिप्राय समझ गया। वह मेरी सहायता करना चाहता था। मैंने स्नेह से उसका हाथ दबाया और हम दबे पांव झोंपड़ी से बाहर निकल गये।

शाम का झुटपुटा चारों ओर फैल रहा था। बस्ती की स्त्रियां झोंपड़ों के सामने खाना पकाने में व्यस्त थीं। लोगों की नजरों से बचते-बचाते हम बस्ती से बाहर निकल गये। लाली मेरा पथ-प्रदर्शन कर रहा था। हम रास्ते के बजाय सघन वृक्षों व झाड़ियों में से होकर चल रहे थे, ताकि लोगों की नजरों से सुरक्षित रह सकें। मेरी टांग का जख्म अभी पूरी तरह भरा नहीं था। इस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए हमारी गति खासी सुस्त थी। मेरी इस धीमी गति से तंग आकर लाली मुझे कंधों पर उठाकर तेजी से भागने लगा।

बस्ती से एक मील की दूरी पर हम रुक गये। आकाश पर बादल घिर आये थे और वर्षा होने की पूरी संभावना थी। लाली ने अपने तेज चाकू से एक पेड़ की टहनियां काटीं और मिनिटों में एक झोंपड़ी तैयार कर दी। अंदर घुसकर हम धरती पर लेट गये। सहसा बाहर कुछ शोर सुनाई दिया। लाली ने बाहर निकलकर देखा, तो असंख्य मशालें हमारी ओर बढ़ रही थीं। वह जल्दी से अंदर आया और इशारे से मुझे बिस्तर में दुबक जाने को कहा। सांस रोके उसी प्रकार लेटे रहे। बस्ती के लोग हमें वन में ढूंढ़ रहे थे।

युद्ध आतंककारी तो है, पर इसके जरिये मनुष्य की आध्यात्मिक महानता का पता चलता है कि वह कितने अदम्य साहस के साथ अपने सबसे बड़े शोकचिह्न—मृत्यु का मुकाबला करता है। —हाइनरिश हाइने

झोंपड़ी के बाहर पदचाप सुनाई दी। मैंने बंदूक को जमीन पर लिटाकर उसका मुंह दरवाजे की ओर कर दिया। अगले ही क्षण झोंपड़ी की छत दूर जा गिरी। आंख उठाकर देखा, तो हमारे चारों ओर पचीस-तीस आदमी हाथों में बरछे ताने खड़े थे। बंदूक चलाना बेकार था। जितनी देर में मैं उनका एक आदमी मारता, वे मुझे आसानी से समाप्त कर सकते थे। मैंने बंदूक हाथ से गिरा दी और मौनपूर्वक उठ खड़ा हुआ। सरदार ने लपककर उसे उठा लिया। हम बरछों की छाया में बस्ती की ओर चल दिये। मुझे अपनी कमर में बरछे की अनी महसूस हो रही थी।

झोंपड़ी में पहुंचकर उन्होंने मुझे बंद ढकेल दिया और लाली को घसीटते हुए एक खुले मैदान में ले गये, जहां उसकी बुरी तरह मार-पीट की गयी। दरवाजा बंद था। इसलिए मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। देर तक लाली की हृदयविदारक चीखें सुनाई देती रहीं। फिर वे सिसकियों में डूब गयीं। अगले ही क्षण दरवाजा खुला और बेहोश लाली को बंद ढकेल दिया गया। दरवाजा खट से बंद हो गया। झोंपड़ी के एक कोने में सुराही रखी थी। मैंने उसमें से पानी लेकर लाली के मुख पर छिड़का। थोड़ी देर बाद उस बेचारे को होश आया।

रात के ग्यारह बजे के लगभग दरवाजा एक बार पुनः खुला और सरदार की पत्नी दो प्यालों में बत्तख का मांस लेकर अंदर आयी। प्याले जमीन पर रखकर वह बाहर निकल गयी और दरवाजा बंद हो गया। लाली ने मांस के टुकड़े अपनी जेब में ठूंस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिये और जब से चाकू निकालकर झोंपड़ी की पिछली दीवार की ओर बढ़ा । यह दीवार ठोस सरकंडे की बनी हुई थी और लाली ने सुराही से पानी लेकर उस पर छिड़का, ताकि सरकंडे जरा नरम हो जायें, और फिर धीरे-धीरे उन्हें काटने लगा । जब वह थक जाता, तो मैं उसकी जगह संभाल लेता । रात के तीन बजे हम दीवार में अपने निकलने लायक सेंध काटने में सफल हो गये।

पहले लाली स्वयं बाहर निकला । इधर-उधर देखकर उसने मुझे भी बाहर आने का इशारा किया । मैंने बंदूक उसे पकड़ा दी और स्वयं धरती पर घिसटता हुआ बाहर निकल आया । हम दबे पांव चलते हुए बस्ती से बाहर निकल आये । रास्ते में जहां-तहां कोई कुत्ता नजर आता, लाली मांस का एक टुकड़ा उसके सामने फेंक देता । उस समय रात के चार बज रहे थे । प्रातः पांच बजे हम काफी दूर निकल चुके थे । फिर भी पकड़े जाने का भय था । एक जगह नारियल का एक पेड़ अपनी जगह से उखड़कर जमीन पर झुका हुआ नजर आया । हम उसकी पत्तियों में छिप गये और दिन-भर हम वहीं रहे । शाम के पांच बजे पचास-साठ जापानी कई स्थानीय लोगों के साथ हमें ढूंढते हुए उस स्थान पर आ निकले; किंतु हम पत्तों में अच्छी तरह छिपे हुए थे और उनकी नजर हम पर नहीं पड़ी ।

रात की कालिमा अभी धुली नहीं थी कि हम बाहर निकले और दक्षिण की ओर चल पड़े । प्रातः सात बजे के लगभग हम एक गांव में पहुंचे, जहां लाली का एक मित्र रहता था । मुझे गांव के बाहर ठहराकर लाली अंदर गया और थोड़ी देर में अपने मित्र और गांव के सरदार को साथ लेकर लौटा । सरदार धाराप्रवाह अंग्रेजी बोल सकता था । बाद में पता लगा कि वह एक ईसाई मिशनरी अस्पताल में काम करता था, जिसे जापानियों ने द्वीप पर अधिपत्य करते ही तबाह कर दिया था । वह बड़े स्नेह से पेश आया और हमें अपने साथ गांव में ले गया । गांव के एक बूढ़े हकीम ने हमारे जख्म धोकर मरहम-पट्टी की । खाना खाने के बाद हम मीठी नींद सो गये ।

दूसरी सुबह मैंने हजामत बनायी और स्नान किया । मेरे कपड़ों से पसीने की बू आ रही थी । सरदार के कहने पर मैंने उन्हें उतारकर उसके हवाले कर दिया और उसकी दी हुई एक साफ चादर शरीर पर लपेटकर बैठ गया । दोपहर को सरदार घबराया हुआ कमरे में आया और भयभीत स्वर में बोला—" प्रतीत होता है, लाली के कबीलेवालों ने आपके भाग जाने की सूचना दी है । जापानी सैनिकों का एक दस्ता आपकी तलाश में यहां पहुंच गया है । वे सारे गांव की तलाशी ले रहे हैं । आप जल्दी से कहीं छिप जाइये, बंदूक को भी छिपा दीजिये ।"

मैं तुरंत लकड़ी के एक तख्तपोश के नीचे घुस गया । अगले ही क्षण कुछ जापानी सिपाही कमरे में आये । कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के बाद उन्होंने सर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो बेचैनी का नामोनिशान भी नहीं रहा!

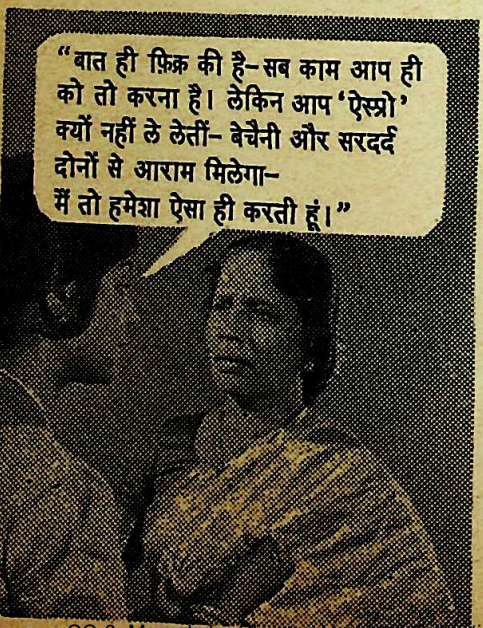

AG. 15.65 H. CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द हमारी समस्या है...और हम आपकी सहायता इस प्रकार कर सकते हैं!

अनुसंधान: 'ऐस्प्रो' अनुसंधान इन्स्टीट्यूट के अनुसंधान दलों में से मैं एक दलका प्रमुख हूं। और दर्द को दूर करने के उत्तम उपायों की खोज निकालना हमारा कर्तव्य है। हम संसार के प्रमुख इन्स्टीट्यूटों मे से एक हैं,जो इस समस्या पर पूरा ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। और अब यह प्रमाणित हो चुका है कि दर्द का सर्वोत्तम आधुनिक उपाय 'ऐस्प्रो' फ़ार्मूला है। यही कारण है कि सारी दुनिया के डॉक्टर और अस्पताल इसका ही प्रयोग करते हैं।

दर्द क्या है?: जब 'मेटाबोलिक' तत्व तन्तुओं में इतनी तेज़ी से एकत्र होते हैं,जितनी तेज़ी से शरीर उन्हें बाहर नहीं निकाल सकता जिसके कारण प्रच्छन्न सूजन होती है जो स्नायुओं पर दबाव डालती है तब दर्द पैदा होता है।

'ऐस्प्रो' अपना कार्य किस तरह करता है: 'ऐस्प्रो' तुरन्त घुल जाता है–सूजन को दूर करता है–स्नायुओं पर पड़े दबाव को कम करता है और दर्द को खींच निकालता है।

'ऐस्प्रो' इन शिकायतों के लिए लीजिये. दर्द • सिरदर्द • शरीर के दर्द • दांत का दर्द • जोड़ों के दर्द • ज्वरयुक्त सर्दी ज़ुकाम • फ्लू • डेन्गू (बदन तोड़ बुखार)।

खूराक:

प्रौढ़: दो 'ऐस्प्रो'–ज़रूरत पड़े तो दो और लीजिये

बच्चे: एक गोली या अपने डाक्टर की सलाह के अनुसार।

'ऐस्प्रो'

दर्द को खींच निकालता है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दार से कहा–"हमें सूचना मिली है कि एक अमरीकी विमान-चालक इस ओर आ निकला है। अगर वह यहां आये, तो तुरंत गिरफ्तार कर लो और हमारे पास पेश करो। अगर तुमने उसे शरण दी, तो यह बस्ती जला दी जायेगी और तुम सबको मार दिया जायेगा।"

और वे बाहर निकल गये।

कुछ देर बाद मैं तख्तपोश के नीचे से निकला। दरवाजे की ओर देखा, तो भय से मेरी चीख निकल गयी। कुछ जापानी बंदूकें ताने मेरी ही ओर आ रहे थे। बोले–"तुम बहुत चालाक बनने का प्रयत्न कर रहे थे। मगर यह भूल गये कि तुम्हारे कपड़े अभी तक बाहर रस्सी पर लटक रहे हैं।"

हथियार डालने के सिवा और कोई उपाय न था। मेरे अतिरिक्त उन्होंने लाली और सरदार केतूप को भी गिरफ्तार कर लिया और हमें एक खुली जीप में बैठाकर छावनी की ओर चल पड़े।

× × ×

छावनी दस वर्गमील के क्षेत्र में फैली हुई थी और उसमें सत्तर हजार जापानी सैनिक थे। एक ओर हवाई जहाजों के उतरने का लंबा-चौड़ा अड्डा था। हमें एक कोठरी में बंद कर दिया गया। यह कोठरी शायद रसोईघर के रूप में प्रयोग की जाती रही थी; क्योंकि उसकी छत और दीवारें धुएं से काली हो रही थीं।

तीन दिन तक हम भूखे-प्यासे वहां कैद रहे। चौथे दिन प्रातः हमें एक उच्च सैनिक अधिकारी के सामने पेश किया गया। मुझे देखते ही उसकी आंखों में चमक आ गयी और वह गुर्राते हुए बोला–"हूं, तो तुम्हीं स्थानीय लोगों को हमारे विरुद्ध भड़का रहे थे?"

"यह गलत है। मैंने ऐसी कोई हरकत नहीं की।"

"तो फिर तुम इस निर्जन द्वीप में टपक कहां से पड़े?"

मैंने अपने वायुयान के नष्ट होने से लेकर अब तक की अपनी कहानी सुनायी। किंतु उसके तेवर नहीं बदले। बोला–"बंद करो यह बकवास। यह मनगढंत कहानी तुम्हें निर्दोष नहीं साबित कर सकती। हम जानते हैं, तुम योजना बनाकर यहां आये हो। सो उन सब आदमियों के नाम और पते सच-सच बता दो, जो इस षड्यंत्र में शामिल हैं।"

"मैं समझा नहीं, आप किस षड्यंत्र की बात कर रहे हैं?"

वह अपनी कुर्सी से उठा और मेरे निकट आकर दांत पीसते हुए बोला–"जब से तुम यहां आये हो, स्थानीय लोगों ने जगह-जगह हमारे विरुद्ध प्रदर्शन आरंभ कर दिये हैं। वे हमारे इक्के-दुक्के सिपाहियों को मार डालते हैं और हमारी सब्जियां चुरा ले जाते हैं। उनके पास अमरीकी बंदूकें हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि तुम लोग इन्हें हमारे विरुद्ध विद्रोह के लिए तैयार कर रहे हो।"

"यह आरोप बिलकुल गलत है। मैं यहां....."

एक जोरदार थप्पड़ मेरे मुंह पर पड़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्दी में संभलने भी न पाया था कि उसने मेरे पेट में कसकर एक लात मारी। दोनों हाथों से पेट को पकड़े हुए मैं धरती पर गिर पड़ा। सहसा लाली अपनी जगह से उछला और जापानी अफसर को दबोच लिया। कमरे में उस समय केवल तीन सिपाही थे। सरदार ने एक छलांग लगायी और दो सिपाहियों को जमीन पर गिराकर उन पर चढ़ बैठा। इस बीच मैं भी संभल चुका था। मैंने लपककर फर्श पर गिरी हुई एक बंदूक उठायी और सबको हाथ ऊपर उठाने का आदेश दिया। लाली बंदूक चलाना नहीं जानता था। फिर भी उसने एक बंदूक उठा ली और जापानियों की ओर तान दी।

हमने चारों जापानियों को एक कोने में सिमटने को विवश कर दिया और स्वयं उल्टे पांव चलते हुए दरवाजे तक पहुंच गये। फिर एक छलांग में बाहर निकलकर हमने दरवाजा मजबूती से बंद कर दिया और सांकल चढ़ाकर अंधाधुंध एक ओर को भाग पड़े। कमरे में से जापानियों की चीख सुनाई दे रही थीं। वे अंदर से दरवाजे को बुरी तरह पीट रहे थे।

दौड़ते-दौड़ते हम खेतों में जा पहुंचे, जहां सब्जियां बोयी गयी थीं। वहां कुछ जापानी काम कर रहे थे। हमें देखकर वे रास्ते में आ खड़े हुए। हम क्षण-भर भी नष्ट करना नहीं चाहते थे। एक के सिर पर बंदूक का कुंदा मारकर मैं साफ निकल गया। पीछे मुड़कर देखा, तो लाली और सरदार चार-पांच जापानियों से गुत्थम-गुत्था हो रहे थे। मैंने बंदूक सीधी की और जापानियों को हाथ उठाने का हुक्म दिया। इस प्रकार मेरे दोनों साथी निकल भागने में सफल हो गये। एक-डेढ़ मील तक हम उसी तरह दौड़ते चले गये। एक स्थान पर छोटी-सी नदी दिखाई दी। हमने यहां थोड़ी देर आराम किया।

लाली ने दो-तीन कच्चे नारियल तोड़े। उनका दूध पीकर जान में जान आयी। रात हमने यहीं बितायी।

प्रातः नदी पार करके दूसरे किनारे पहुंचे ही थे कि पीछे से शोर सुनाई दिया। मुड़कर देखा, तो दूर से असंख्य जापानी इस ओर आते हुए दिखाई दिये। मुझमें और दौड़ने की शक्ति नहीं थी। हम एक झाड़ी में घुस गये और घने पत्तों में छिपकर बैठ गये। थोड़ी देर में जापानी नदी के किनारे आ पहुंचे। मैंने टहनियां एक ओर हटाकर देखा, तो दहशत की लहर मेरे सारे शरीर में दौड़ गयी। जापानी एक-एक झुरमुट को अच्छी तरह देख-भाल रहे थे। बचने की कोई आशा नहीं थी। क्षण-भर में वे हमारे सिरों पर आ पहुंचे। मैंने भी अपनी बंदूक संभाल ली।

"हाथ ऊपर उठा लो और चुपचाप बाहर निकल आओ। वरना गोली मार देंगे।"

मैंने आवाज की दिशा का निश्चय करते हुए बंदूक सीधी कर दी और घोड़ा दबा दिया। फायर की आवाज सुनाई दी और अगले ही क्षण किसी ने मेरी बंदूक खींच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

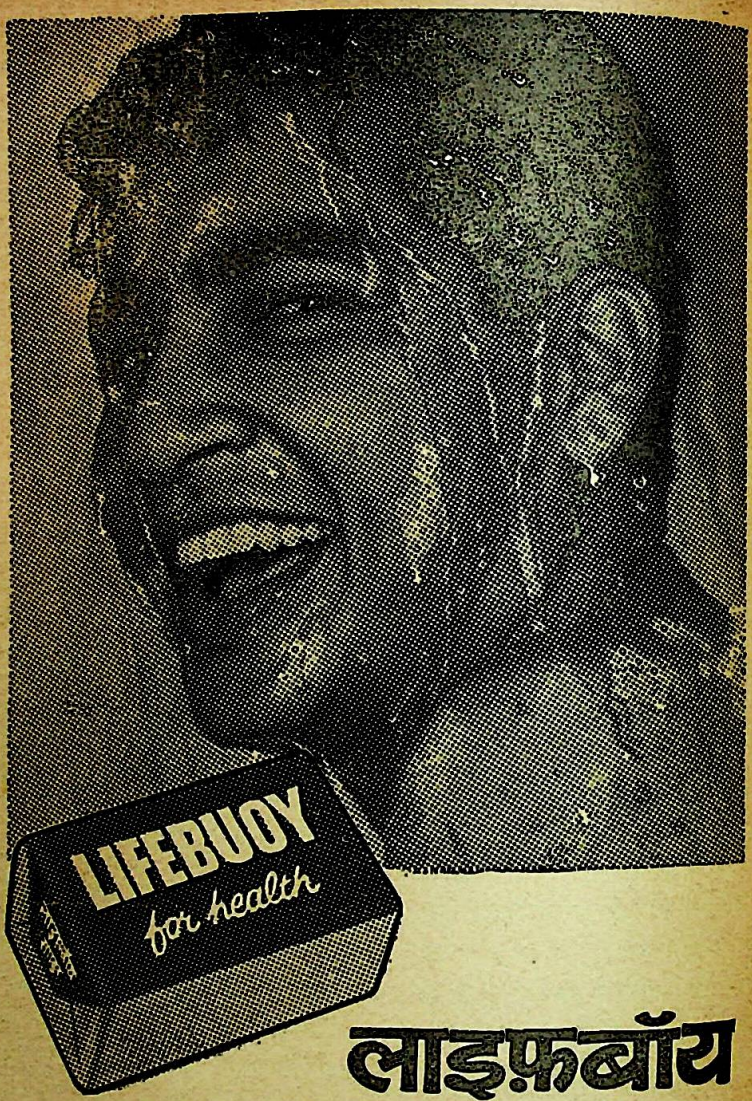

लाइफ़बॉय

है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ

ताज़गी की तरंग, तंदुरुस्ती की उमंग — यह है लाइफ़बॉय के प्रत्येक स्नान का स्फूर्ति-दायक आनंद! ... क्योंकि इस में एक श्रेष्ठ साबुन की श्रेष्ठता भी है और अपनी अद्भुत विशेषता भी!

लाइफ़बॉय मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

लिंटास–L49-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की। मैंने लपककर दूसरी बंदूक उठानी चाही; किंतु जोर का एक दोहत्थड़ मेरे सिर पर पड़ा और मैं जमीन पर लुढ़क गया। थोड़ी देर बाद हमें एक सशस्त्र दस्ते की निगरानी में पुनः छावनी की ओर ले जाया जा रहा था।

× × ×

इस बार हमें सीलन और बदबू से भरे एक तहखाने में बंद कर दिया गया। चार दिन बीत गये। भूख और प्यास से हमारे प्राण निकले जा रहे थे। उठकर खड़े होने की शक्ति नहीं थी। पांचवीं सुबह दरवाजा खुला और हमें बीस सिपाहियों की निगरानी में पुनः उसी अफसर के पास ले जाया गया, जो संभवतः उस छावनी का संचालक था। हमें देखते ही वह क्रोध से दांत पीसते हुए बोला—"तुम्हें एक और अवसर दिया जाता है। साफ-साफ बता दो कि तुमने अब तक कितने लोगों को अपने साथ मिलाया है, वरना....."

मैंने उसे एक बार फिर विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि हम निर्दोष हैं और स्थानीय विद्रोह में हमारा कोई हाथ नहीं है। किंतु उसने एक न सुनी। कुछ सिपाहियों को बुलाकर उसने धीरे-से कुछ कहा। हमें एक खुले कमरे में ले जाया गया, जहां पानी के नल लगे हुए थे। हाथ-पांव बांधकर हमें तीन कुर्सियों पर बैठा दिया गया। फिर रबर की तीन बारीक नलियां प्रत्येक व्यक्ति के मुंह में गले तक ठूंस दी गयीं। एक जापानी ने, जो पोशाक से लेफ्टिनेंट प्रतीत होता था, कोने में लगी हुई एक मशीन का बटन दबाया। पानी की तेज धार नलियों में से होती हुई हमारे गले में उतरने लगी।

पानी की धार बहुत बारीक थी; किंतु बहुत तेज थी। शीघ्र ही हमारे पेट भर गये। अब मुझे तीव्र पीड़ा हो रही थी। पेट शनैः-शनैः फूलता जा रहा था और ऐसा महसूस होता था, जैसे पानी की यह खूनी धार बंद न हुई, तो पेट फट जायेगा। बड़ी व्यग्रता से मैं सिर इधर-उधर पटकने लगा। एक सेकेंड बीत गया। मेरा सिर तेजी से घूम रहा था और आंखों के सामने अंधेरा छा रहा था।

सारा कमरा मुझे घूमता हुआ दिखाई दे रहा था। पेट में पानी की लहरें उठ रही थीं। सारा शरीर टूट रहा था। मेरे मुंह से दबी-दबी चीखें निकल रही थीं। मेरे सारे शरीर में पीड़ा की एक तीव्र तरंग उठी और मेरी रही-सही हिम्मत जवाब दे गयी। जिबह होते हुए बकरे की तरह अंतिम चीख मेरे गले से निकली और मेरा सिर एक ओर को ढुलक गया।

जब होश आया, उसी तरह कुर्सी पर बंधा हुआ था। मेरा पेट फूलकर कुप्पा हो रहा था। मैंने इधर-उधर देखा। लाली होश में था। एक जापानी सिपाही उसके पेट पर लोहे की एक सलाख से लगातार वार कर रहा था। हर बार जब वह चोट लगाता, लाली के पेट से ढोल की तरह आवाज निकलती। किंतु गजब का था लाली का धैर्य! उसने इतने कष्ट के बावजूद मुंह से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक रात के लिए

मैं एक काली कुरूप चिड़िया हूं,
जो अपनी राह भूलकर
घोंसला छोड़कर
तुम्हारे अनजाने अपरिचित देश के
एक शाखाहीन सूखे ठूंठ पर
आ बैठी हूं,
ओ अपरिचित देश के निवासियो !
मेरे छोटे-छोटे अबोध बच्चे
जिनकी आंखों में
शायद जीवन के पहले आंसू होंगे,
दाने की तलाश में
मेरी राह में भीगी पलकों से
रात की नीरवता तोड़ रहे होंगे ।
ओ अपरिचित देश के निवासियो !
मैं अवश्य ही तुम्हारी
बिन बुलायी मेहमान हूं,
मुझे वक्रदृष्टि से मत देखो
मुझे उड़ाओ मत
मैं और भटक जाऊंगी;
मैं तुम्हारे हरे पेड़ों पर नहीं
सूखे ठूंठ पर, सूखी नदी के किनारे
खामोशी के सांय-सांय में
अकेले यह रात काट लूंगी,
सवेरे अपनी बाट लूंगी ।

—प्रमोद त्रिवेदी

एक शब्द न निकाला ।

अगले ही क्षण दोनों जापानी मेरे सिर पर थे । मजबूत सलाख की पहली चोट ने मुझे अधमरा कर दिया । यों महसूस होता था, जैसे कोई मेरे दिल और जिगर को अपनी मुट्ठी में लेकर दबा रहा हो । पीड़ा की तीव्रता से मेरी आंखों में आंसू आ गये। मेरे मुंह से नली निकाली जा चुकी थी। इसलिए मैं पूरी शक्ति से चीख रहा था। उन्होंने मेरे मुंह में रबर की एक गेंद देकर ऊपर से पट्टी बांध दी । अब मैं विवशता से सिर इधर-उधर पटक रहा था । दरवाजा खुला और जापानी उच्चाधिकारी कमरे में आया । निकट पहुंचकर उसने व्यंग्य से कहा—"कहो, तबीयत ठीक हुई या नहीं ?"

मेरा मुंह खोल दिया गया । मैं निढाल हो चुका था । मुझमें बोलने की शक्ति नहीं रही थी । फिर भी मैंने जी कड़ा करके कहा—"मैंने अब तक जो कुछ कहा है, उससे अधिक मैं कुछ नहीं बता सकता ।"

"अच्छा, ऐसा ही सही । तुम यह बता दो कि इस इलाके में तुम्हारे गुप्त हवाई अड्डे कहां-कहां हैं, जहां से तुम्हारे बमबार यान उड़ते हैं ?"

मुझे इन अड्डों का पता था; किंतु ये बातें मैं बताने के लिए तैयार नहीं था । मैंने आंखों को कठोरतापूर्वक बंद करते हुए 'नहीं' में सिर हिला दिया । अधिकारी के संकेत पर एक सिपाही ने अचेत सरदार के फूले हुए पेट पर इस जोर से सलाख मारी कि बेचारे का पेट फट गया और गंदा पानी बाहर

अधूरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकलने लगा। भय से मेरा सारा शरीर जम गया।

"तुम अब भी बताने के लिए तैयार हो या नहीं?"

थोड़ी देर बाद हम उसी कोठरी के फर्श पर लगभग निर्जीव पड़े थे। कच्चे फर्श पर अपना शरीर घसीटते हुए मैं लाली के पास गया। वह अभी तक अचेत पड़ा था। मैंने उसे झंझोड़ा, तो उसने कराहते हुए आंखें खोल दीं। कोठरी के कोने में कुछ ईंटें पड़ी थीं, जो शायद चूल्हा बनाने के लिए वहां लायी गयी थीं। मैंने उन्हें एक के ऊपर एक रखा और औंधे मुंह उन पर लेटकर पेट को जोर से दबाया। भैंसे की तरह की जोरदार डकार निकली और बहुत-सा पानी फव्वारगी बाहर निकल गया। दो-तीन बार यही क्रिया दोहरायी, तो सारा पानी पेट से निकल गया, मेरी हालत कुछ अच्छी हो गयी।

लाली के पेट से पानी निकालना आवश्यक था। मैंने उस पर भी यही तरीका आजमाया। उसे भी इससे लाभ हुआ। हम दोनों स्वस्थ हो गये और नींद ने हमें आ घेरा।

प्रातः हमें नाश्ते में एक प्याला दूध और काले आटे की दो डबल रोटियां दी गयीं। खाने के बाद हमें पुनः उसी कमरे में ले जाया गया। सरदार का शव अभी तक फर्श पर पड़ा था। उसका मुंह खुला था और मुख पर मक्खियां भंडरा रही थीं। हमारी आंखें सजल हो गयीं। हमें दो अलग-अलग कुर्सियों पर बैठाकर पत्तों से बंटी हुई रस्सी से बांध दिया गया। एक सिपाही उस रस्सी पर पानी डालने लगा। ज्यों-ज्यों यह रस्सी भीगती जा रही थी, उसकी जकड़ मेरे शरीर पर सख्त हो रही थी। रस्सी चाकू की तरह शरीर को काट रही थी—कई स्थानों पर तो चमड़ी को चीरकर मांस में घुस गयी थी। लेफ्टिनेंट कमरे में आया और पूछने लगा कि हम सब रहस्य बताने के लिए तैयार हैं या नहीं? मेरे इन्कार करने पर वह वापस चला गया।

थोड़ी देर बाद हमें खोल दिया गया और हम कमजोरी के कारण फर्श पर गिर पड़े। तीन सिपाहियों ने हमें घसीटकर बाहर ला खड़ा किया। आंगन में कुछ ठूंठ पेड़ खड़े थे, जिनकी सूखी शाखों पर नरभक्षी पक्षी बैठे थे। दो सिपाही सीढ़ी लगाकर ऊपर चढ़ गये और हमारे कंधों से रस्से बांधकर हमें एक पेड़ की सबसे ऊंची शाखा पर बांध दिया गया। अब हमारे शरीर हवा में लटक रहे थे। दोनों कंधों पर सारा भार था और बगलें जख्मी हो रही थीं।

लेफ्टिनेंट ने निकट आकर ऊंची आवाज में कहा—"अच्छा बेटो, अलविदा! कल मिलेंगे, जब तुम्हारे शरीर से सारा मांस गायब हो चुका होगा। इस बीच यदि सब कुछ बकने को तैयार हो जाओ, तो गेट पर खड़े सिपाही को कह देना। हम तुम्हें उतार देंगे।" मैंने घृणा से उस पर थूका और वह अश्लील गालियां बकता हुआ आंगन से बाहर निकल गया।

× × ×

आधा घंटा बीत गया। हमारे कंधे दर्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

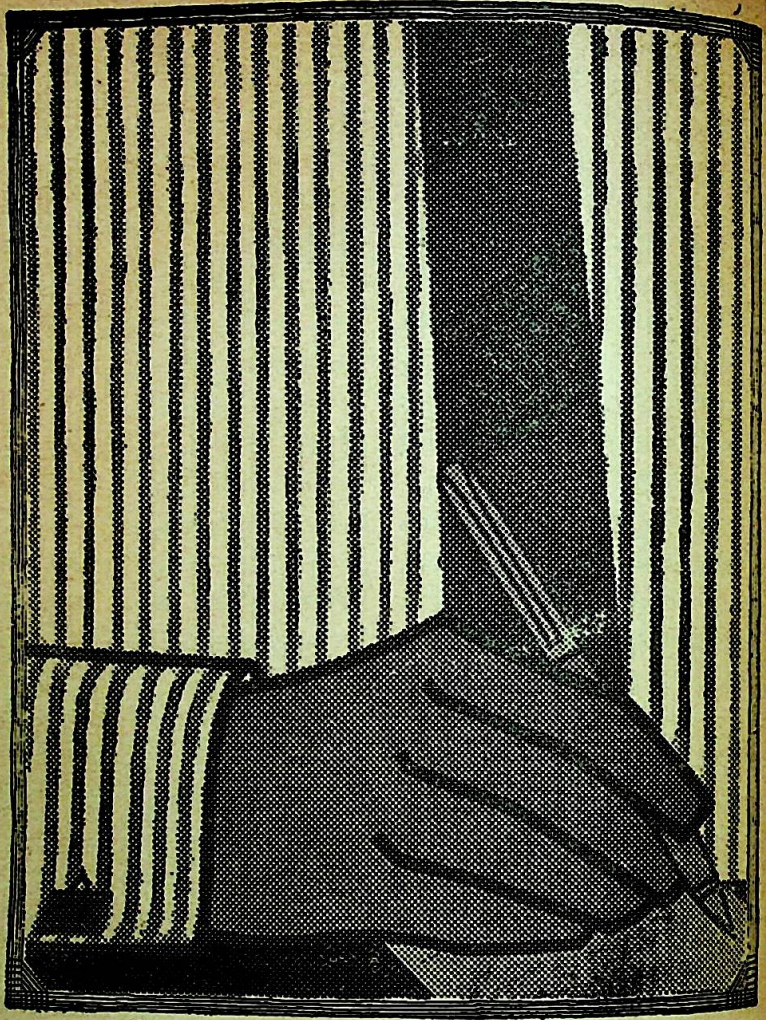

प्रतिष्ठित व्यक्तियों की पसन्द

मफतलाल ग्रुप

पापलिन्स और शर्टिंग्स

'टेबिलाइज्ड' और मैफिनाइज्ड क्वालिटी में भी मिलतें है ।।

न्यू शॉरॉक (शॉरॉक), अहमदाबाद • न्यू शॉरॉक, नडियाद • स्टैण्डर्ड, बम्बई
स्टैण्डर्ड (न्यू चाइना), बम्बई • स्टैण्डर्ड, देवास • ससून बम्बई • ससून
(न्यू युनियन), बम्बई • सुरत कॉटन, सुरत • मफतलाल फाइन, नवसारी.

Alyars MGSP 1838 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से टूटने लगे। मैंने लाली की ओर विवशता से देखा। उसके मुंह से दबी-दबी सिसकियां निकल रही थीं। बेचारा लड़का मेरे कारण यह सारी यातना सहन कर रहा था। मेरा दिल भर आया।

सहसा एक नयी मुसीबत ने मुझे आ पकड़ा। पेड़ पर बैठे हुए नरभक्षी पक्षी धीरे-धीरे हमारी ओर बढ़ रहे थे। हम असहाय थे और वे स्वतंत्र। उनकी शक्ल देखकर भय लगता था। उनके लंबे-लंबे मलिन पंजों पर खून के धब्बे साफ दिखाई दे रहे थे। उनकी आंखें मैली और खूंख्वार थीं। एक पक्षी मेरे कंधे पर आकर बैठ गया। मैंने कंधे झटककर उसे उड़ाने का प्रयत्न किया; किंतु सफल न हो सका। अगले ही क्षण वह मेरी गर्दन पर चोंच मारने लगा। मैंने गर्दन हिलायी और सारे शरीर को झटके दि । किंतु वह टस-से-मस न हुआ।

मैंने लाली की ओर देखा। उसका धड़ तेजी से हरकत कर रहा था। दो पक्षी उसके मुख पर बार-बार आक्रमण कर रहे थे। मुझसे उसकी यह दुर्दशा देखी न गयी। मैंने जोर-जोर से आवाज दी। मेरा इरादा था कि लेफ्टिनेंट से साफ-साफ कह दूं कि लाली निर्दोष है। वह मुझे चाहे जितनी सजा दे, किंतु लाली को छोड़ दे। मैं देर तक सहायता के लिए पुकारता रहा; किंतु किसी ने उत्तर न दिया। शाम का झुटपुटा तेजी से फैल रहा था। रात के अंधकार में तो ये पक्षी और शेर हो जायेंगे, यह सोचकर मैंने दृढ़ संकल्प किया कि किसी तरह इस मुसीबत से मुक्ति प्राप्त की जाये।

अंततः बचपन के सीखे हुए व्यायाम मेरे काम आये। मैंने अपने सारे शरीर को झूले की तरह दो-तीन हिचकोले दिये और फिर एक झटके से टांगें उस शाखा में फंसा दीं, जिससे मैं रस्से से बंधा हुआ था। अब मैंने अपनी जेबें टटोलीं। गिरफ्तारी के समय हमारी तलाशी ली गयी थी। किंतु मुझे अच्छी तरह याद था कि चाकू अभी तक मेरे पास था। आखिर पैंट की पिछली जेब में वह मिल गया। यह एक छोटा-सा चाकू था, जिसका फल लगभग डेढ़ इंच था।

मैंने चाकू को दांतों में पकड़ लिया और रस्से को काटने लगा। लगभग बीस मिनिट में मैं अपना रस्सा काटने में सफल हो गया और धड़ाम-से तीस फुट नीचे जमीन पर गिर पड़ा। सौभाग्यवश मुझे अधिक चोट नहीं आयी।

कपड़े झाड़ता हुआ मैं उठ बैठा और इधर-उधर देखने लगा। दूर-दूर तक कोई जापानी नहीं दिखाई दे रहा था। टांग के जख्म के बावजूद जैसे-तैसे पेड़ पर चढ़कर उस शाखा तक पहुंच गया, जिस पर लाली लटक रहा था। मैंने उसे ऊपर खींचने की बहुत चेष्टा की; किंतु उसका शरीर जम चुका था और पीड़ा से वह अधमरा हो रहा था। मैंने जी कड़ा करते हुए उसकी रस्सियां काट दीं और वह धड़ाम-से जमीन पर गिर पड़ा।

मैं हांफता हुआ नीचे उतरा। वह निश्चल पड़ा था। उसे होश में लाने के लिए पानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

हर्बी बरसाला

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

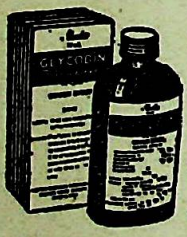

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आवश्यकता थी, जो इस समय मिलना असंभव था। मैं उसके हाथ-पांव की मालिश करने लगा। उसकी नब्ज बहुत धीमी चल रही थी। घंटे-भर की मालिश ने उसके शरीर में तनिक गर्मी उत्पन्न कर दी और उसने आंखें खोलीं।

रात-भर वहां बैठे रहे। प्रातः आंगन का दरवाजा खुला और लेफ्टिनेंट कुछ सिपाहियों के साथ अंदर आया और हमें जमीन पर पड़े देखकर वह आवेश में आ गया और बोला—"शैतानो, तुम तो जमीन पर पांव पसारे इस तरह बैठे हो, जैसे यह तुम्हारी दादी का घर हो।"

संगीनों की छाया में हमें पुनः उच्चाधिकारी के पास ले जाया गया।

"देखो कैप्टन, हम नहीं चाहते कि तुम अपने प्राण दे बैठो। फिर इस काले-कलूटे छोकरे का क्या अपराध है, जो तुम अपने साथ इसे भी मौत के मुंह में ढकेल रहे हो? अच्छा यही है कि तुम सब कुछ हमें बता दो। हम तुम्हें सुरक्षित तुम्हारे इलाके तक पहुंचा देंगे। अगर तुम चाहोगे, तो हम तुम्हें जापान भेज देंगे, जहां से युद्ध समाप्त होने पर तुम अपने घर जा सकोगे। तुम अभी नवयुवक हो। हो सकता है, तुम्हारे बाल-बच्चे भी हों। क्या तुम चाहते हो कि वे अनाथ हो जायें और तुम्हारी पत्नी सारा जीवन वैधव्य में व्यतीत करे। आखिर तुम अपने साथ इन मासूमों के शत्रु क्यों हो? मैं तुम्हें अंतिम अवसर देता हूं। इस समय तुम भाव-तरंग में बह रहे हो। इसलिए गंभीरता से विचार नहीं करोगे।"

मैंने उत्तर देने का प्रयास किया; किंतु दुर्बलता के कारण ओं न हिल सके और मेरा सिर एक ओर ढुलक गया।

× × ×

पुनः आंख खुली, तो नरम और सुखमय बिस्तर पर लेटा हुआ था। निकट ही लाली भी एक बिस्तर पर आराम कर रहा था। एक बूढ़ा जापानी दरवाजे पर बैठा था। मुझे उठते देखकर वह तुरंत मेरे पास आया और अलमारी से गरम भुने हुए मांस की एक प्लेट निकालकर मेरे सामने रख दी। बिना एक शब्द कहे, मैं खाने पर टूट पड़ा। पानी का गिलास पीकर मेरी जान-में-जान आयी। मैंने लाली को उठाया, उसे भी मांस की एक प्लेट मिल गयी। थोड़ी देर बाद हमें गरम पानी से स्नान कराया गया।

नहाते समय मैंने शरीर पर असंख्य जख्म देखे। सौभाग्य से मुझे एक ताक में रखा हुआ मरहम मिल गया। मैंने तौलिये से शरीर पोंछा और सारे जख्मों पर मरहम मल दिया। बगलों से खून रिसने लगा था। इसलिए तौलिए को फाड़कर मैंने एक पट्टी बनायी और उसे जख्मों पर बांध दिया। लाली भी स्नान से निपट गया, तो हमें पुनः उच्चाधिकारी के पास ले जाया गया। वह बेचैनी से हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। हमें देखते ही उसने वही पुराना प्रश्न दुहराया और मेरे साफ इन्कार कर देने पर वह फिर लाल-पीला हो गया।

"तो यह घी सीधी उंगलियों से नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारे परिवार के कपड़ों की धुलाई सर्फ़ से कीजिए और फिर देखिए इस धुलाई की अनोखी शान। सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है जिसके कारण आपके कपड़े अत्यंत आसानी से सबसे सफ़ेद और साफ़ धुलते हैं। कमीज़ें, साड़ियाँ, बच्चोंके वस्त्र—सभी कपड़े—सर्फ़ से धोइये।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकलेगा ?"

मैं मौन रहा। उसने लेफ्टिनेंट को बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। बीस सिपाहियों की निगरानी में हम छावनी से बाहर निकल आये। छोटी-छोटी झाड़ियों में से होते हुए हम एक ढलवान जगह पर पहुंचे, जहां चारों ओर इंसानों की खोपड़ियां दिखाई दे रही थीं। सहसा लाली फूट-फूटकर रोने लगा। मैंने उससे कारण पूछने की चेष्टा की; किंतु वह रोता रहा। एक खोह के पास पहुंचकर हम रुक गये। दो सिपाहियों ने कच्चे मांस के कुछ टुकड़े खोह में फेंक दिये। लेफ्टिनेंट ने निकट आकर मुझे सारे कपड़े उतारने का हुक्म दिया। मैंने चुपचाप उसका पालन किया। लाली ने प्रतिरोध किया; किंतु पांच-छः जापानियों ने जबर्दस्ती उसके कपड़े उतरवा लिये। अब हम बिलकुल निरावरण थे।

सहसा दो सिपाहियों ने मुझे उठा लिया और खोह में फेंक दिया। अभी मैं संभलने न पाया था कि लाली का शरीर मुझ पर आ गिरा। यहां बाहर की अपेक्षा अंधेरा था। इसलिए शुरू में हमें कुछ नजर नहीं आ रहा था। धीरे-धीरे हमारी आंखें काम करने लगीं। यह खोह नीचे दूर तक चली गयी थी। कुछ दूर तक नजर काम करती थी और फिर अथाह अंधकार में डूब जाती थी। जिस स्थान पर हम अधलेटे थे, वहां से गुफा का मुख लगभग पचास फुट की दूरी पर था। हमें जापानी सिपाहियों के सिर नजर आ रहे थे, जो गुफा के गिर्द पहरा दे रहे थे।

"मौत हमारी राह देख रही है।" लाली ने हिचकियां लेते हुए बताया।

"क्या मतलब ?"

"मैं इस गुफा से भली भांति परिचित हूं। इसमें चींटियां रहती हैं—करोड़ों की संख्या में। ये चींटियां इस इलाके की सबसे बेरहम जीव हैं। जापानियों के आने से पहले हम लोग अपराधियों को यहां फेंक दिया करते थे और ये चींटियां क्षण-भर में उन्हें चट कर जाती थीं।"

"क्या यहां से बचकर निकलने का कोई रास्ता नहीं है ?" मैंने अधीरता से पूछा।

"एक ही रास्ता है, जिस पर जापानी पहरा दे रहे हैं।"

"कहां हैं वे चींटियां ?"

"नीचे गुफा में हैं। अभी यहां पहुंच जायेंगी। उन्हें मांस की खुशबू तुरंत आ जाती है। क्या आपने नहीं देखा? जब हम बाहर खड़े थे, तो जापानियों ने कच्चे मांस के कुछ टुकड़े अंदर फेंके थे।"

एक विचार बिजली की भांति मेरे मस्तिष्क में कौंधा। उस मंद प्रकाश में हमें मांस के टुकड़े तलाश करने में अधिक समय नहीं लगा। मैंने जल्दी-जल्दी उन्हें रेत में दबा दिया। किंतु टुकड़े अपना काम कर चुके थे। हम लाल चींटियों की एक सेना को अपनी ओर बढ़ते देख रहे थे। वे करोड़ों की संख्या में थीं और गुफा की तह से हमारी ओर आ रही थीं। मेरा मस्तिष्क फटने लगा। मैंने लाली की ओर देखा। उसकी आंखों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मेरी मम्मी से ज़रा कहिए कि साधारण पाउडर से काम नहीं चलेगा!"

(बच्चों की त्वचा बहुत ही कोमल होती है)

बहुत-सी माताएँ समझती हैं कि किसी भी टाल्कम पाउडर से काम चल जायगा लेकिन बात ऐसी नहीं है। आपके बच्चों के लिए तो ख़ास पाउडर यानी जॉन्सन्स* बेबी पाउडर की ज़रूरत है। जॉन्सन्स बेबी पाउडर महीन और मृदुल पदार्थों से तैयार किया जाता है और त्वचा के छोटे-छोटे रन्ध्रों को मूँदे बिना पसीने को सोख लेता है। इसके अलावा गीली चड्डी या कलोट की रगड़ से होनेवाली जलन और चिनमिनाहट आदि से बचाने के लिए यह पाउडर विशेष रूप से सौम्य बनाया जाता है। अपने बच्चों को नहलाने के बाद, उनके कपड़े बदलते समय और जब भी वे बेचैन दिखाई दें तब मृदुल जॉन्सन्स बेबी पाउडर उनके बदन पर ज़रूर छिड़किए ... वे प्रसन्नता के साथ हँसते-खेलते रहेंगे।

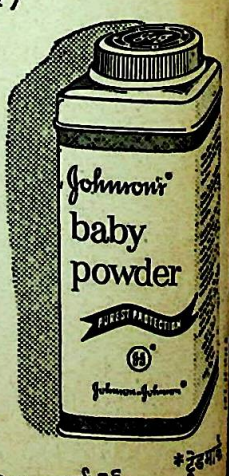

*ट्रेडमार्क

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीठ की कालिमा थी।

"ये चींटियां अत्यंत विषैली होती हैं।"

फटी-फटी आंखों से हम लाल सेना की ओर देख रहे थे। एक मिनिट बीत गया..... फिर दूसरा.....और फिर अचानक ही लाली के मुंह से एक घुटी-घुटी चीख निकली। वह मुझसे जरा आगे था और चींटियों की सेना के अग्रिम दल ने उस पर जोरदार हमला कर दिया था। दर्द से बिलबिलाता हुआ वह दोनों हाथों से चींटियों को अपने शरीर पर चढ़ने से रोक रहा था। मैंने उसका हाथ पकड़ा और तेजी से गुफा के मुंह की ओर भागा। निकट पहुंचकर उसे जमीन पर औंधे मुंह लेटने को कहा।

धीरे-धीरे रेंगते हुए हम ऊपर पहुंच गये। मैंने बाहर नजर दौड़ायी। केवल तीन सिपाही बंदूकों का सहारा लिये बाहर खड़े थे। वे आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे। लेफ्टिनेंट उनसे कुछ दूर रूमाल बिछाये जमीन पर बैठा था। उसने एक मुड़ा हुआ समाचार-पत्र घुटनों पर रखा हुआ था। मैं अच्छी तरह से सारी स्थिति का अनुमान लगाने के बाद लाली के कान में अंतिम योजना कह दिया।

अगले ही क्षण हम दोनों हाथों से सिपाहियों की आंखों में रेत फेंकने लगे। हमारा यह हमला इतना अप्रत्याशित था कि वे संभल न सके और आंखें मलने लगे। उनमें से एक ने बंदूक हमारी ओर सीधी कर दी और घोड़ा दबानेवाला ही था कि मैंने झुककर नली का मुंह आकाश की ओर फेर दिया। इस बीच लाली एक बंदूक छीन चुका था। मैंने उसके हाथ से बंदूक झपटकर लेफ्टिनेंट पर दो फायर कर दिये, जो अपने स्थान से उठकर जेब से रिवाल्वर निकाल रहा था।

गुफा के मुंह पर अभी तक धूल के बादल छाये हुए थे और लाली दोनों हाथों से मिट्टी उड़ा रहा था। मैंने धूल में घुसकर एक सिपाही के सिर पर बंदूक का कुंदा मारा। अब केवल दो सिपाही मैदान में शेष रह गये। लाली इनमें से एक से गुंथ गया। तीसरा सिपाही अभी आंखें मल रहा था। मैंने उस पर क्रमशः तीन फायर किये। अब मैदान साफ था। लाली अपने प्रतिद्वंद्वी की मरम्मत कर चुका था। मैंने उसका हाथ पकड़ा और छावनी की विपरीत दिशा में दौड़ने लगे। फायर की आवाज सुनकर छावनी की ओर से कुछ सिपाही आ रहे थे। हम एक पेड़ की आड़ में छिप गये। सिपाही गुजर गये, तो हम बाहर निकल और अंधाधुंध समुद्र-तट की ओर दौड़े।

ऐन उसी समय आकाश पर अमरीकी बमवर्षक यान दिखाई दिये। छावनी पर पहुंचकर उन्होंने बमबारी की। जापानियों में भगदड़ मच गयी और किसी को हमारे फरार हो जाने का पता नहीं लगा। समुद्र-तट पर पहुंचकर हम रुक गये। समुद्र को पार करना हमारे बस की बात न थी। रेत पर खड़े होकर हम जोर-जोर से चिल्लाने लगे। विमान काफी नीचे उड़ रहे थे; किंतु किसी ने हमारी ओर ध्यान न दिया।

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजाब नेशनल बैंक

से कारोबार करनेके छः कारण हैं:

आपका धन ऐसी संस्थाकी देखभाल में है जो

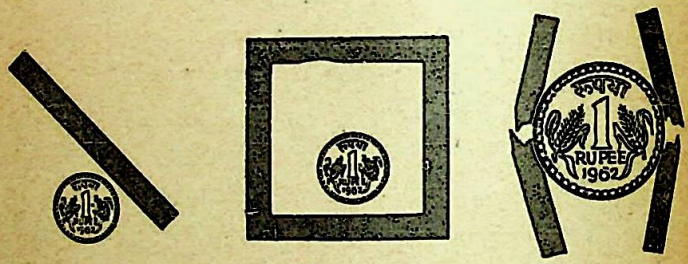

सुरक्षित, सुव्यवस्थित, सुदृढ़,

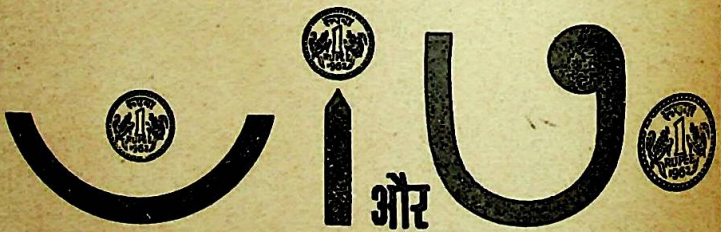

और

सेवाशील, सुप्रवीण साल पुरानी है।

PR 6532/Hin/Ad/5

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तभी मुझे एक काला झंडा दिखाई दिया। लाली ने बताया कि यह न्यूवर्टन के निवासियों का झंडा है। भागे-भागे हम दोनों वहां पहुंचे और बांस-सहित वह झंडा उखाड़ लाये।

छावनी पर हमबारी करने के बाद वायुयान तुरंत आकाश में ऊंचे हो जाते थे। सौभाग्यवश एक वायुयान ने हमें देख लिया। हम जोर-जोर से झंडा हिला रहे थे और पूरी शक्ति से चिल्ला रहे थे। यान ने आकाश में एक चक्कर काटा और हमारे सिरों पर से गुजर गया। इस बार खिड़की में से एक सिर बाहर निकला हुआ था। मैंने उसे पहचान लिया। यह फ्लाइट लेफ्टिनेंट डगलस था।

दूसरी बार जब यान हमारे निकट से गुजरा, तो मैंने पूरी शक्ति से उसे आवाज दी। सौभाग्यवश उसने मुझे पहचान लिया। तीसरी बार उसने खिड़की खोलकर सीढ़ी बाहर फेंकी। हमने तेजी से भागते हुए सीढ़ी पकड़ ली। थोड़ी देर बाद हम दोनों रस्से की एक सीढ़ी से चिपटे हुए समुद्र पार कर रहे थे। उस शाम हम अपनी सेना में पहुंच गये, जहां तीन मास अस्पताल में रहने के बाद हम इस योग्य हुए कि देश को वापस जा सकें।

युद्ध की समाप्ति पर मेरा दोस्त लाली अपने देश चला गया।

वीरवर नेपोलियन की कई आदतें बड़ी मजेदार थीं। वह सोने के लिए शयनागार में प्रवेश करने के पहले अपने कर्मचारियों को यह हुक्म देना नहीं भूलता था—"सारी खिड़कियां बंद रखो; स्वच्छ हवा ईश्वर की देन है; मैं उसका स्वागत करना चाहता हूं।"

नेपोलियन बहुत जल्दी-जल्दी खाना खा लेने का आदी था; ढंग से और शुचिता के साथ भोजन करना तो उसे आता ही न था। इस पर वह शर्मिंदा नहीं होता हो, सो बात नहीं। इसीलिए वह अपने साथ बैठकर भोजन करने के लिए किसी को न्योता भेजता नहीं था।

नेपोलियन की लिखावट इतनी खराब थी कि एक-दो अनुभवी दक्ष कर्मचारी पढ़ पाते थे और वह भी काफी मुश्किल से। कोई अजनबी नेपोलियन की लिखावट को देखता, तो यही समझता कि शायद किसी मुर्गी के पैर दावात में पड़ गये और उन्हें सुखाने के लिए मुर्गी कागज पर चल पड़ी।

नेपोलियन को सदा कुछ-न-कुछ काम करते रहने की आदत थी। जब करने को कोई काम नहीं रहता, तो वह छुरी से किसी काठ को छीलता-छेदता रहता। उसका मानना था कि बकर्मण्यता वीरता पर जंग चढ़ाती है।

नेपोलियन ने अपने अंगरक्षकों को यह आज्ञा दे रखी थी कि यदि अच्छा समाचार आया, तो मुझे नींद से जगाने की जरूरत नहीं है; किंतु बुरी खबर मिलने पर मुझे तुरंत जगाने में हर्गिज न चूको।

प्रेषक—एस० राजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समर्पिता किरण

है समर्पित
रूप की पहली किरण,
युग की धरा को !
दर्पिता-सी, बांसुरी पर चूर होती,
हिमशिला-सी, घाटियों से दूर होती,
कामना के सिंधु में यह जल-परी-सी,
भावना की शृंखला में निर्झरी-सी,
श्वेत शिखरों की अरुणिमा,
पा गयी श्वेतांबरा को !
मसृण, मलयज-भूषिता पाटल-कली-सी,
कुंज-वन में डूबती नंदन-गली सी,
पार्श्व में रजताद्रि के लोहित-बरन-सी,
अरुणिमा उतरी हिमानी आभरण-सी,
आ रहा ज्यों यक्ष कोई
गोद में ले अप्सरा को !
सत्य की यह आज शाश्वत संगिनी-सी,
या कि तन्वंगी, अनंगी, अंगिनी-सी,
नील घाटी में विभा की चमक जैसी।
नीलमणि पर कोहनूरी दमक जैसी !
भर रही है बाहुओं में
आज ज्यों अपरा, परा को !

—अमरेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों से निवेदन

'नवनीत' को और अधिक उपादेय बनाने में आपकी सम्मति की हमें आवश्यकता है। कृपया नीचे लिखे फार्म को भरकर आज ही पोस्ट कर दें। टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है।

अक्टूबर १९६५ के अंक में मुझे निम्नलिखित चार लेख सबसे अधिक पसंद आये :

१ .....

२ .....

३ .....

४ .....

अक्टूबर १९६५ अंक के निम्नलिखित चार लेख मुझे पसंद नहीं आये :

१ .....

२ .....

३ .....

४ .....

अक्टूबर १९६५ के अंक में मुझे निम्नलिखित विषयों पर लेखों की कमी लगी :

१ .....

२ .....

३ .....

४ .....

प्रेषक का नाम.....

पता.....

.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पृष्ठ को निकालकर बताये मुताबिक लिफाफे की शक्ल में मोड़ दें

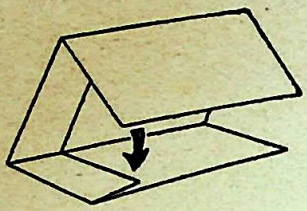

२. यहां मोड़िये

Postage will be paid by Addressee	**BUSINESS REPLY ENVELOPE**	No Postage Stamp necessary if posted in India

BOMBAY, GRANT ROAD,
P. O. PERMIT No. 2067

NAVANEET PRAKASHAN LIMITED
341, Tardeo,
BOMBAY—34.

३. मोड़कर भीतर फंसा दें

इस फार्म को चित्र के अनुसार मोड़कर पोस्ट कर दें
टिकट की आवश्यकता नहीं

१. इस फार्म को चित्र के अनुसार मोड़िये और पोस्ट कर दीजिये—टिकट की आवश्यकता नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बात से अपने को तोलें

'साइकोलाजी मैगजीन' में प्रकाशित एक लेख के आधार पर

दूसरों के साथ निभा सकने का बहुत कुछ दारोमदार इस पर है कि लोगों से हम संबंध जोड़ पाते हैं या नहीं। 'संबंध' से मेरा मतलब केवल व्यापारिक या सतही व्यावहारिक नाता नहीं है, जो स्वार्थ-भावना या शिष्टाचार के बंधन पर आधारित होता है। इससे भी अधिक गहरा व व्यापक संबंध होता है—मानवीय संबंध। उसकी बुनियाद यह है कि हम दूसरों की स्थिति को, दूसरों की समस्याओं को, उनकी दृष्टि से भी सोच और समझ सकें। और इसके लिए कोई आवश्यक नहीं है कि जिन्हें हम समझना चाहते हैं, वे विचार, व्यवहार और अभिरुचियों में बिलकुल हमारे जैसे हों। इस प्रकार की समानता के बिना भी किसी मनुष्य को समझा जा सकता है—बशर्ते हमारी बुद्धि परिपक्व हो।

लेकिन बहुत-से व्यक्ति बुद्धि से इतने परिपक्व नहीं होते कि लोगों से ऐसा संबंध स्थापित कर सकें, जो केवल सुख और व्यावहारिक लेन-देन में ही नहीं, बल्कि दुःख और मानसिक उथल-पुथल के समय भी काम दे सके। यानी वे किसी से सच्ची मित्रता नहीं जोड़ पाते।

ऐसे व्यक्तियों से आपका भी पाला पड़ा होगा। ये शुरू में आपसे बड़े तपाक से मिलते थे, बड़ी बेतकल्लुफी से बात करते थे और इनके व्यवहार से आपको उम्मीद होती थी कि यह मित्रता शाश्वत न सही, चिरस्थायी अवश्य होगी। किंतु थोड़े दिनों बाद ही आपने देखा कि अब आपको देखकर उनकी आंखों में पहले जैसी चमक नहीं आती, उनकी आवाज में आत्मीयता की वैसी झंकार नहीं रह गयी है। यह जरूरी नहीं कि ये व्यक्ति आपसे कोई मतलब साधना चाहते थे और उसमें कामयाबी न मिलने से आपसे विमुख होने लगे। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो किसी के साथ गहरा लगाव और स्थायी वफादारी का नाता जोड़ ही नहीं पाते। ये अपने व्यक्तित्व की कुछ वक्रताओं के कारण, कुछ समस्याओं के कारण, ज्यादा दिनों तक किसी के साथ मधुर संबंध रख ही नहीं सकते।

उदाहरण चाहते हैं, तो ऐसे किसी परिवार को लीजिये, जिसमें मियां-बीवी में नहीं बनती, माता-पिता बच्चों की परवाह नहीं करते और बच्चे मां-बाप को हौवा समझते हैं। या ऐसे किसी परिचित व्यक्ति के स्वभाव का अध्ययन कीजिये, जो चार-छः महीने से ज्यादा किसी भी नौकरी में टिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शाही ठाठबाट की रीत...

अरविंद

ये बढ़िया कपड़े सजधज में अनोखे हैं

विभिन्न किस्मों में हैं

सन्फोराइज्ड पॉपलिन:
कमीज के कपड़े: धारीदार, डॉबी, चेक, पायजामा
धोतियां मर्सराइज्ड, लान: ५५३१
सूट का कपड़ा: गैबरडीन
छपे कपड़े: छपे लॉन वायल, पॉपलिन
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल वॉयल
लेनो में और बूटीदार

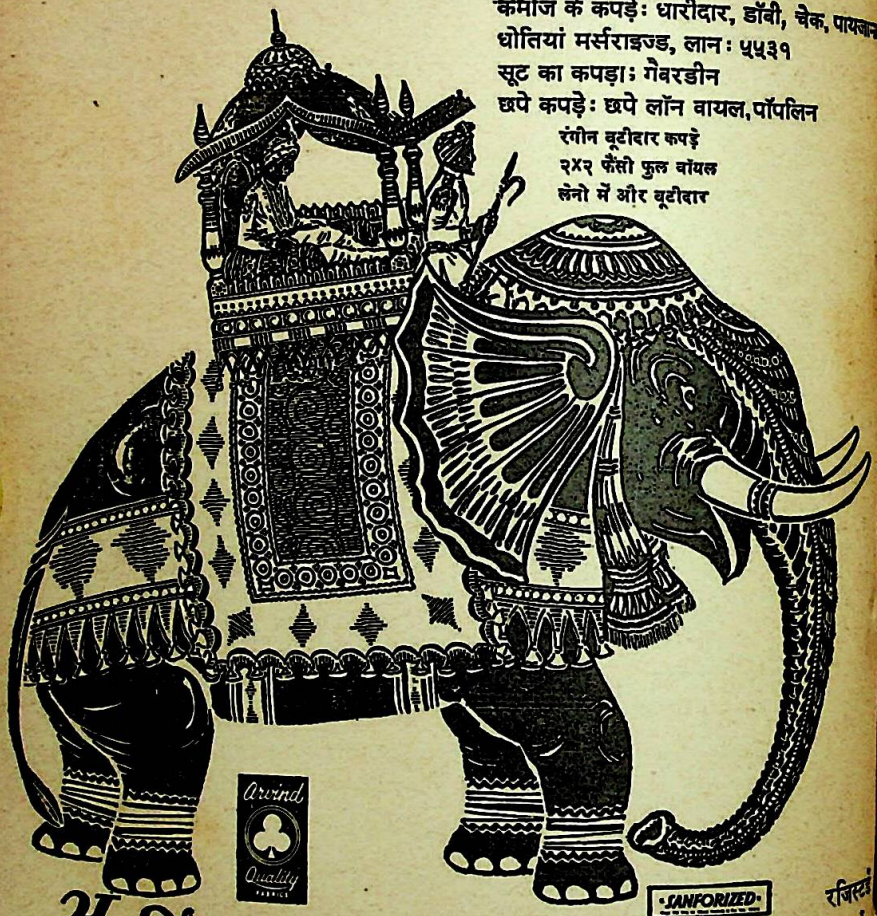

·SANFORIZED·
टेबिलाइज्ड और टेबिलाइज्ड दोहरी जांच

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

रजिस्टर्ड गुजरात

अब हमारे रिटेल दुकानों में प्राप्त:- प्रीमियर फर्निशिंग एंड डेकोरेटिंग प्रा० लि०
७, ब्रेबोर्न स्टेडियम, वीर नरीमन रोड, बंबई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं पाता। श्रमिक-मनोविज्ञान के विद्वानों ने ऐसे व्यक्तियों का काफी गहरा अध्ययन किया है। वे इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि जो लोग बार-बार नौकरियां बदलते रहते हैं, या बर्खास्त किये जाते हैं, उनमें से ७५ प्रतिशत में कार्य-कौशल की कमी नहीं होती; बल्कि उनका दोष यह होता है कि वे अपने सहकर्मियों के साथ निभा नहीं पाते।

परिवार, दफ्तर, दुकान और बाजार में लोगों के व्यवहार को जरा ध्यान से देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे लोग दुनिया में बहुत हैं, जो शरीर से प्रौढ़ हो जाने पर भी भावनाओं में अप्रौढ़ ही बने रहते हैं।

प्रौढ़ता के कुछ खास लक्षण हैं और वे व्यक्तित्व के कुछ ऐसे तत्वों के सूचक हैं, जिनके अभाव में मनुष्य दूसरों के साथ स्थायी एवं सुनिश्चित संबंध नहीं जोड़ सकता। ये तत्व हम बचपन में अपने माता-पिता से, अपने परिवार के बुजुर्गों से, प्रायः अनजाने में ही सीख लेते हैं। (हां, मैं यहां यह मानकर चल रहा हूं कि हम सबके माता-पिता मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से प्रौढ़-परिपक्व मनुष्य हैं; हालांकि अनुभव बताता है कि वस्तु-स्थिति ऐसी नहीं है।) ये गुण हम दूसरे व्यक्तियों में भी खोजते हैं और यदि उनमें ये गुण नहीं होते, तो हमें तुरंत उसकी अनुभूति हो जाती है।

प्रौढ़ता के सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण लक्षण हैं—सच्चाई, उत्तरदायित्व की भावना, विश्वसनीयता और खरापन। जब हम ऐसे व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं, तो हमें अनुभव हो जाता है कि हम उन पर आस्था रख सकते हैं और वे ईमानदार हैं और उनके व्यवहार में खोट नहीं है।

परिपक्व व्यक्ति दूसरों से पाने की उतनी कोशिश नहीं करता, जितना कि दूसरों को देने की। वह दूसरों से कभी इतने ज्यादा नैतिक समर्थन, प्यार और तवज्जोह का तकाजा नहीं करता कि मित्र और स्वजन उसकी पूर्ति करते-करते थक जायें। लेकिन ऐसे लोग दुनिया में काफी हैं, जो प्रेम और मित्रता के नाम पर हरदम दूसरों की कसरत कराते रहते हैं और इससे उन बेचारों पर क्या बीतती है, इसकी तनिक भी चिंता नहीं करते।

प्रौढ़ता यानी दूसरों के साथ निभा सकने का एक और पहलू है व्यक्तित्व का विकास। किशोरावस्था में प्रायः लड़कियां लड़कियों के साथ और लड़के लड़कों के साथ झुंड बांधकर घूमते और उठते-बैठते हैं और उसी में परम संतोष का अनुभव करते हैं। किंतु यौवन के विकास के साथ पुरुष का स्त्री के प्रति एवं स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है। मनुष्य अनुभव करने लगता है कि दूसरे 'सेक्स' के व्यक्तियों को जानना-समझना बड़ी उल्लासदायक चीज है। और इस आकर्षण तथा जिज्ञासा का पर्यवसान प्रायः जीवन-साथी के चयन और विवाह में होता है।

हमारे समाज की भांति जिन समाजों में विवाह माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों के द्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की ज़रूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

83 DOL. 2A HIN

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

न व नी त प्र का श न लि०

बम्बई– ३४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तय किये जाते हैं, वहां भी यही प्रक्रिया होती है। अंतर इतना ही होता है कि लड़का-लड़की दूसरे 'सेक्स' के बहुत-से व्यक्तियों का मूल्यांकन करके किसी एक में अपने मन को स्थिर करने के बजाय, आरंभ में ही एक व्यक्ति पर अपनी भावनाओं को केंद्रित कर लेते हैं और उसे समझने-पहचानने में जुट पड़ते हैं। इस तरह एक परिवार की नींव पड़ती है, एक नये संसार की सृष्टि होती है, जीवन के लिए मानो एक नया मिशन मिल जाता है।

प्रौढ़ता की एक अनिवार्य सीढ़ी
चित्र : एल० एच० चोरडिया

किंतु ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो यह परिपक्वता कभी हासिल नहीं कर पाते। इनमें से कई तो उसी सीढ़ी पर रह जाते हैं, जहां मनुष्य का ध्यान अपने 'सेक्स' के व्यक्तियों पर ही केंद्रित रहता है। मेरा यह मतलब नहीं कि शादी के बाद परिपक्व पुरुष अपने समस्त पुरुष मित्रों को धता बताकर स्त्रियों में डूब जाता है; या परिपक्व स्त्री अपनी सखी-सहेलियों से मुंह फेर लेती है। किशोरावस्था की कुछ मित्रताएं ताजीवन चलती हैं और आत्मा को अमृत से सींचती रहती हैं। यही नहीं, परिपक्व मनुष्य अपने पेशे, पड़ौस और परिचित वर्ग में से नये मित्र प्राप्त करता रहता है।

किंतु किसी बालिग व्यक्ति के अंतरंगतम संबंध अपने 'सेक्स' के व्यक्तियों तक ही सीमित रहें, तो यह अपरिपक्वता का लक्षण है। यदि कोई बालिग व्यक्ति उस सोपान पर चढ़ ही नहीं पाता, जहां दूसरे 'सेक्स' के व्यक्ति के साथ का स्थायी अंतरंग संबंध जीवन में चांदनी छिटकानेवाले संतोष और तृप्ति का स्रोत बन जाता है, तो समझना चाहिये कि उसके विकास की गाड़ी किसी मोड़ पर रुक गयी है।

लोगों के साथ अच्छी तरह निभा पाना, अपने से उन्हें लाभ और हर्ष पहुंचाना और उनके जीवन में रचनात्मक योगदान देना जीवन की सफलता और सार्थकता की कुंजी है। आप इसमें कहां तक सफल हो पाये हैं, यही आपकी प्रौढ़ता का सही पैमाना है। प्रौढ़ता लिफाफा देखकर खत का मजमून भांप लेने, या हरदम सयानेपन से भरी उक्तियां मुखारविंद से निकालते रहने का ही नाम नहीं है। यह सब निरी चतुरता है, जो विवेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से बहुत दर्जे नीचे की चीज है। परिपक्व मनुष्य विवेकी होता है।

यह तरीका बड़ा ही लाभप्रद है कि जब-तब हम थोड़ी देर के लिए मन की कोठरी का द्वार बंद कर लें और इस बात का हिसाब लगा लिया करें कि हमने किसी के साथ बेरुखी का व्यवहार तो नहीं किया, किसी को महज स्वार्थ-सिद्धि के लिए तो इस्तेमाल नहीं किया ?

मगर यह जानकारी पाने के लिए हम अपने अंतःकरण से पूछ लें, इतना ही काफी नहीं है। हमें दूसरों की आंखों और दिलों की भी थाह लेनी होगी। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि हम बिना इरादे के ही किसी का दिल दुखा बैठते हैं, किसी की अवज्ञा कर गुजरते हैं।

एक और प्रकार का हिसाब भी लगाना जरूरी है। क्या हम किसी को लेशमात्र भी लाभ पहुंचा सके ? क्या किसी को मैत्री और सद्भावना की सुखद अनुभूति दे सके ? क्या अपनी शक्तियों का सद्विनियोग किसी दूसरे के लाभ लिए कर सके ?

जब इस प्रकार के विचार मन में बिना यत्न के ही उठने लगेंगे और हमारे दैनिक व्यवहार स्वयं ही इन विचारों से प्रेरित होंगे, तब हम प्रौढ़ता की उस दशा को प्राप्त कर लेंगे, जो नैतिक उन्नति और आध्यात्मिक विकास का आधार होती है।

★

कत्ल का मुकद्मा बिलकुल बिगड़ चुका था। अंत में वकील ने सोचा कि ज्यूरी के किसी सदस्य को रिश्वत देकर अपनी तरफ मिला लिया जाये। उसने एक सदस्य को फांस लिया और कहा कि अगर आप फांसी की जगह उम्र-कैद करवा दें, तो आपको दस हजार रुपये दिलवाऊंगा। सदस्य महोदय राजी हो गये। जब जज ने अपना फैसला सुनाया, तो मुल्जिम को उम्र-कैद हुई थी। वकील ने सदस्य को दस हजार रुपये देते हुए पूछा—"आखिर फैसले में इतनी देर कैसे लग गयी।" वे बोले—"भाई, दूसरों से अपनी बात मनवा लेना कोई आसान काम है ? बाकी सब सदस्य उसे बरी करने पर अड़े हुए थे। मैंने बड़ी मुश्किल से लड़-झगड़कर उन लोगों को उम्र-कैद के लिए राजी किया।"

★

एक साहब के पड़ौसी रोज कुछ-न-कुछ मांगने आ जाया करते थे और उनसे इन्कार नहीं होता था। एक दिन तंग आकर उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब उन्हें कोई चीज नहीं दूंगा और साफ इन्कार कर दूंगा। अचानक पड़ौसी साहब आ धमके और बोले—"क्या आप अपना टेबल-फैन आज दोपहर तक के लिए मुझे दे सकते हैं ?"

"जी नहीं, आज मैं दिन पर घर पर रहूंगा।"

"माफ कीजियेगा, मुझे दरअसल आपकी साइकिल की जरूरत थी, भूल से मुंह से गलत निकल गया।"

—मुगनी अब्बास

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

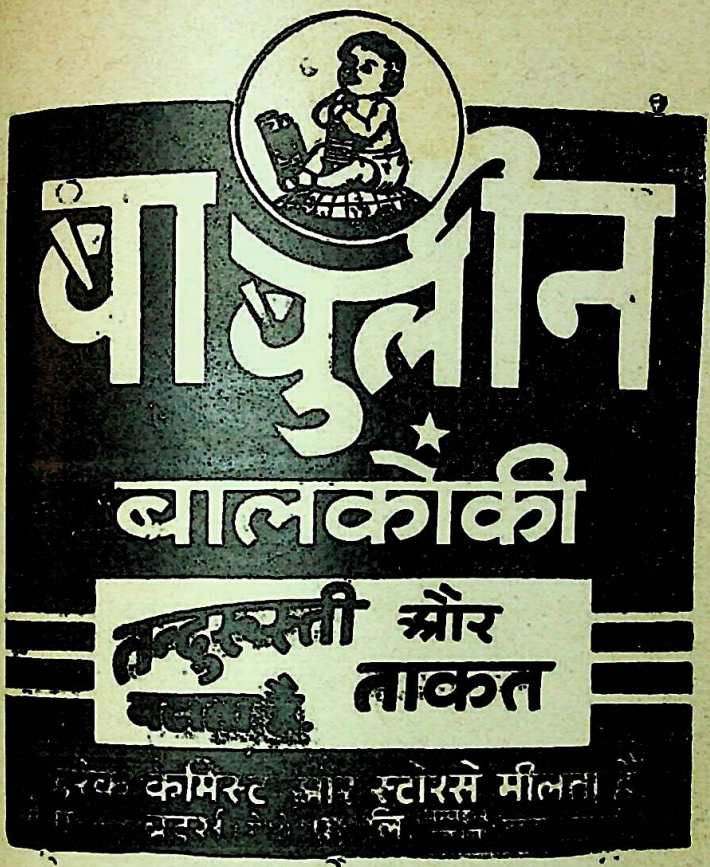

बी० ए० एंड ब्रदर्स (बम्बई) प्रा० लि०

कलकत्ता, पटना और गोहाटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका

नया

थर्मामीटर

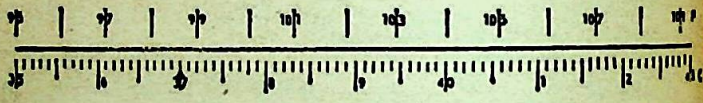

- अप्रैल १९६६ से डाक्टरी थर्मामीटर केवल सेण्टीग्रेडों में अंकित किये जाएंगे।
- थर्मामीटरों का विस्तार अब ३५° सें० से ४३° सें० तक होगा।
- प्रत्येक ०.१° सें० पर अंकन किया जाएगा।
- सामान्य मनुष्य का ताप ३७° सें० होता है।

मेट्रिक नाप व तोल निदेशालय, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार

डीए ६४/११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेशनल एक्को

का नये से नया ट्रान्सिस्टर

आप जहाँ भी जाएँ, जहाँ भी हों, आपका मनोरंजन आपके हाथ में! नेशनल-एक्को का नया पोर्टेबल ट्रान्सिस्टर इधर-उधर ले जाने के लिए ही ख़ास तौर से बनाया गया है। सैर-सपाटे या यात्रा के समय या फिर फ़ुरसत के वक़्त यह हल्का-फुल्का और मज़बूत ट्रान्सिस्टर आपके लिए बड़ा ही अच्छा साथी साबित होगा। आज ही अपने पासवाले नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ इसे मुफ़्त बजवाकर सुनिए!

मॉडल पी टी-७७५: ७ ट्रान्सिस्टर २ डायोड; ३ बैण्ड; ख़ास डिज़ाइन का लाउडस्पीकर; सेट के अन्दर ही फेराइट रॉड और फ़्रेम एरियल। सफ़ेद और रॉयल ब्ल्यू रंग की प्लास्टिक की कैबिनेट, जिसमें बाहरी एरियल लगाने का सॉकेट भी है।

क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है; टैक्स अलग।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज लि.

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • सिकन्दराबाद • पटना

नेशनल एक्को मॉन्सूनाइज़्ड रेडियो

भारत की सबसे बड़ी रेडियो फ़ैक्टरी में बनते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

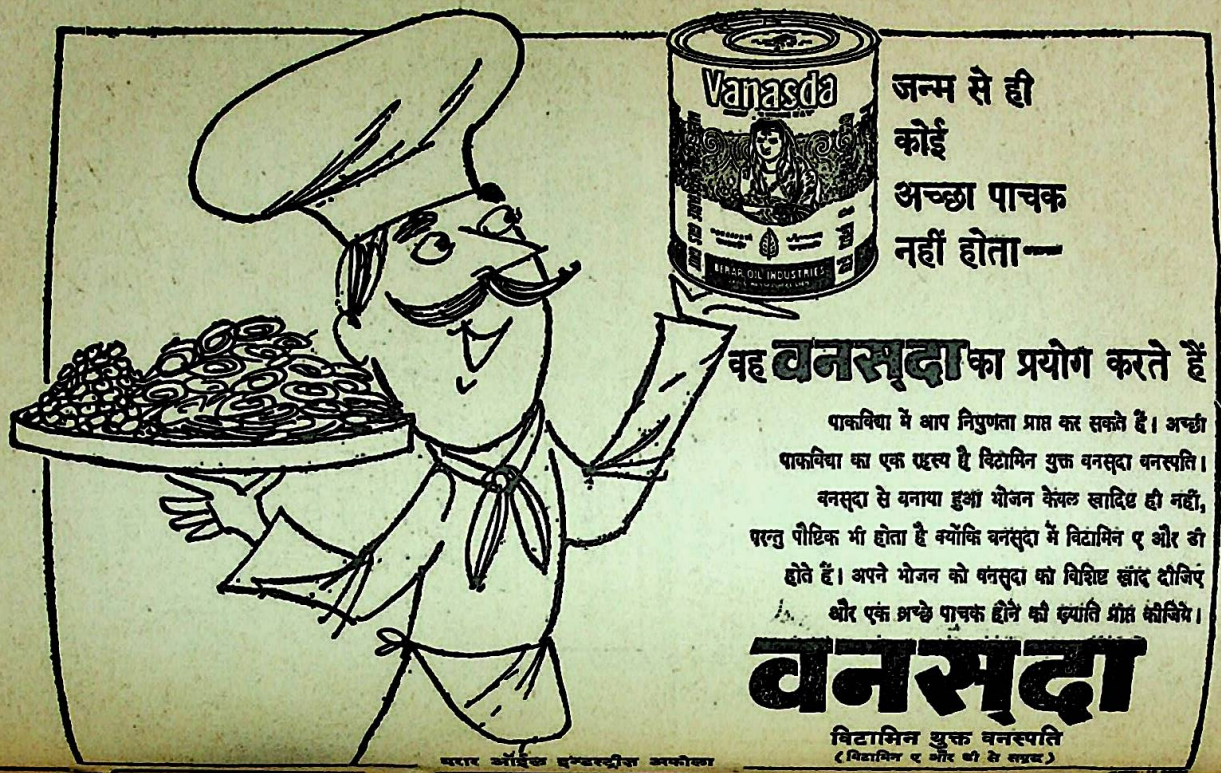

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविधा में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविधा का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

बिहार ऑईल इन्डस्ट्रीज अपीलका

वाह... कोलिनॉस

Kolynos

कितने ताज़े, कितने स्वच्छ...

कोलिनॉस का स्वाद!
जीभ को भला लगने वाला, जायकेदार
कोलिनॉस की झाग!
आसानी से ब्रश करने और पूर्ण स्वच्छता के लिए
सांस में कोलिनॉस की मीठी सुगन्ध!
(आपको और सबको पसन्द आएगी)

पंचवी लड़की के लिए एक मित्रवत् संकेत: औरों की तरह आप भी कोलिनॉस का प्रयोग कीजिये और मुस्कराइये। ताज़गी और स्वच्छता के लिये सुबह और रात को कोलिनॉस। सहेलियों के बीच अपने पर भरोसा रहेगा... अधिक आनन्द आएगा!

मधुर मुस्कान.. कोलिनॉस की मुस्कान

रजिस्टर्ड प्रयोगाधिकारी...जेफ़री मॅनर्स अॅन्ड कम्पनी लिमिटेड

ASP/GM/K-1J HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

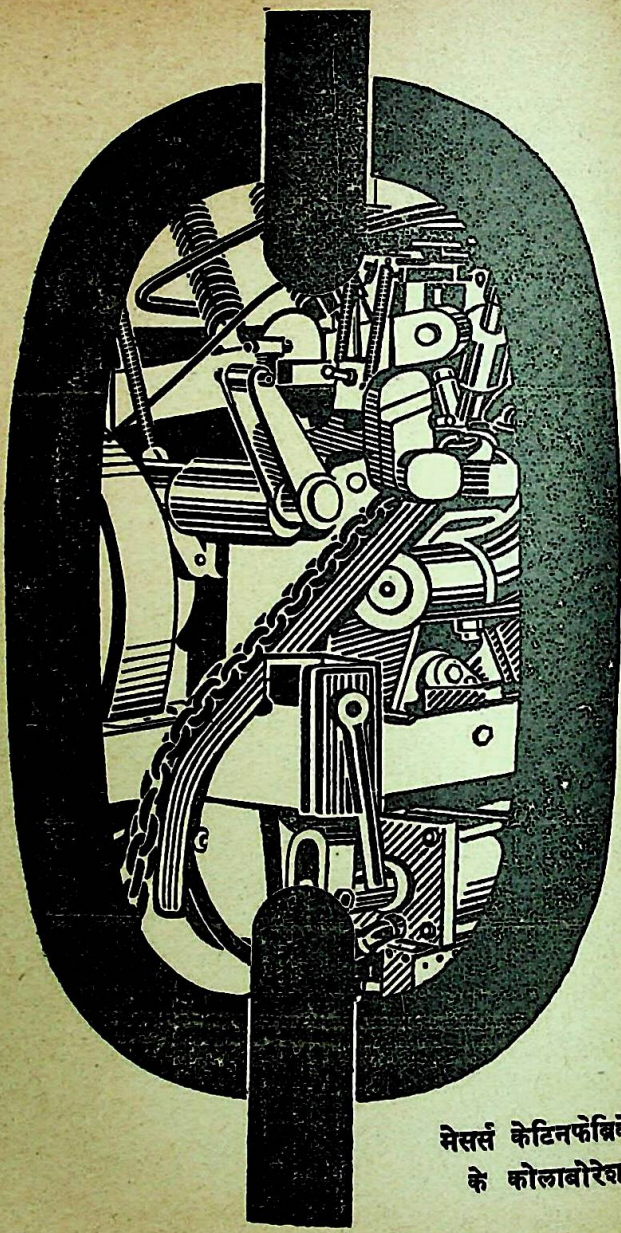

तीव्र परीक्षण के बावजूद ये कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की बेल्लि
पूर्ण निरीक्षण में
जाती है।
प्रत्येक कड़ी एक
क्वालिटी की बन
है। इन कड़ियों
बनी सांकल की मज
बूती व क्वालिटी
गारंटी है। कैलिब्रेट
हुई सांकल की
तौल एकदम ठीक
विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अस्लो नार्वे
के कोलाबोरेशन में निर्मित

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स, लि०

बंबई आगरा रोड, भांडुप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५०१ स्पेशल

५०१ स्पेशल से *हर* धुलाई, स्पेशल धुलाई - *बिना अधिक ख़र्च किए!*

टाटा-उत्पादन

५०१ स्पेशल साबुन के स्पेशल फ़ार्मूला से भरपूर झाग... जिससे सभी कपड़े साफ़, उजले और आसानी से धुलते हैं।

SHBI-501 S-86 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालयः १० ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता –१

अधिकृत पूंजी	रु. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,८०,००,०००
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें	रु. ३,३७,००,०००

डाइरेक्टर

आई० पी० गोयनका

चेयरमैन

एम० पी० बिड़ला वाइस चेयरमैन	मदनमोहन आर० रुइया वाइस चेयरमैन
अनंत चरण ला	मोतीलाल तापड़िया
जी० डी० कोठारी	टी० एस० राजम
रंगनाथ बांगड़	श्रेणिक कस्तूरभाई
मोहनलाल नोपानी	एस० टी० सदाशिवन
योगींद्र एन० मफतलाल	डा० आर० आर० हतंगडी

कार्य और सेवा

करेंट खाते खोले जाते हैं; लंबे और छोटे अरसे के लिए फिक्स्ड धरोहर स्वीकार की जाती है। सेविंग बैंक खाते। एक्युमुलेटेड पूंजी के लिए सुविधाजनक मासिक किस्तों में आवर्ती धरोहर। विदेशी मुद्रा और रुपया के ट्रैवलर्स चेक की खरीदी और भुगतान। अन्य प्रकार के देशी और विदेशी मुद्रा विनिमय का व्यापार।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बचाव के लिये अपने पास एक 'एवरेडी' टॉर्च रखिये

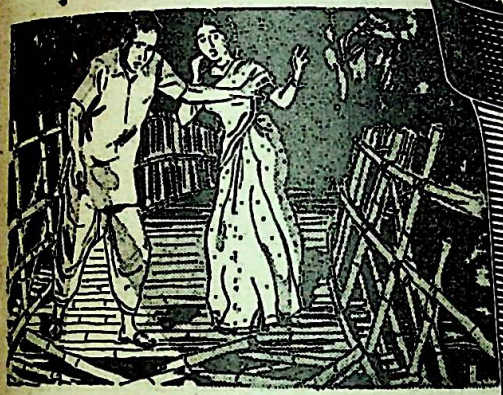

'एवरेडी' डीलर के यहाँ तरह तरह के टॉर्च प्राप्य हैं। इनमें से एक अपने लिये भी चुनिये। जब आप अंधेरे में बाहर जाते हैं तो न जाने आपको टॉर्च की कब जरूरत पड़ जाय, इसलिये अपने पास एक 'एवरेडी' टॉर्च जरूर रखिये।

- सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही लीजिये।
- और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकता है।
- इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
- 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' लिचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज़ रोशनी मिल सके।
- विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे सबसे रोशनी देती हैं और सबसे अधिक टिकती हैं।
- आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी ▶
टाइप नं० ३५४५
सिर्फ रु० ३.५० पैसे
५५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक।
डर अलग से

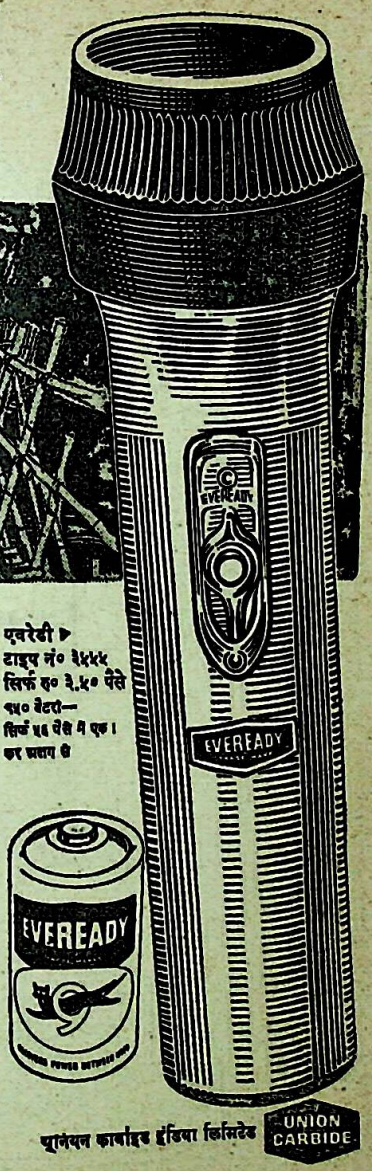

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

UNION CARBIDE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें

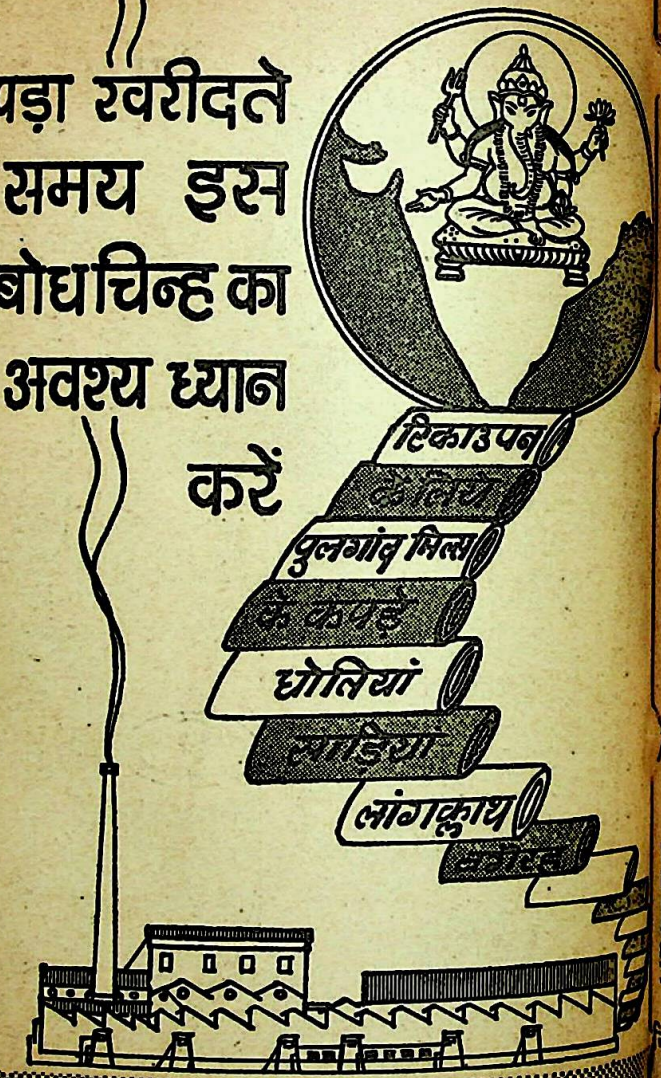

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगह की बचत
पैसे की बचत

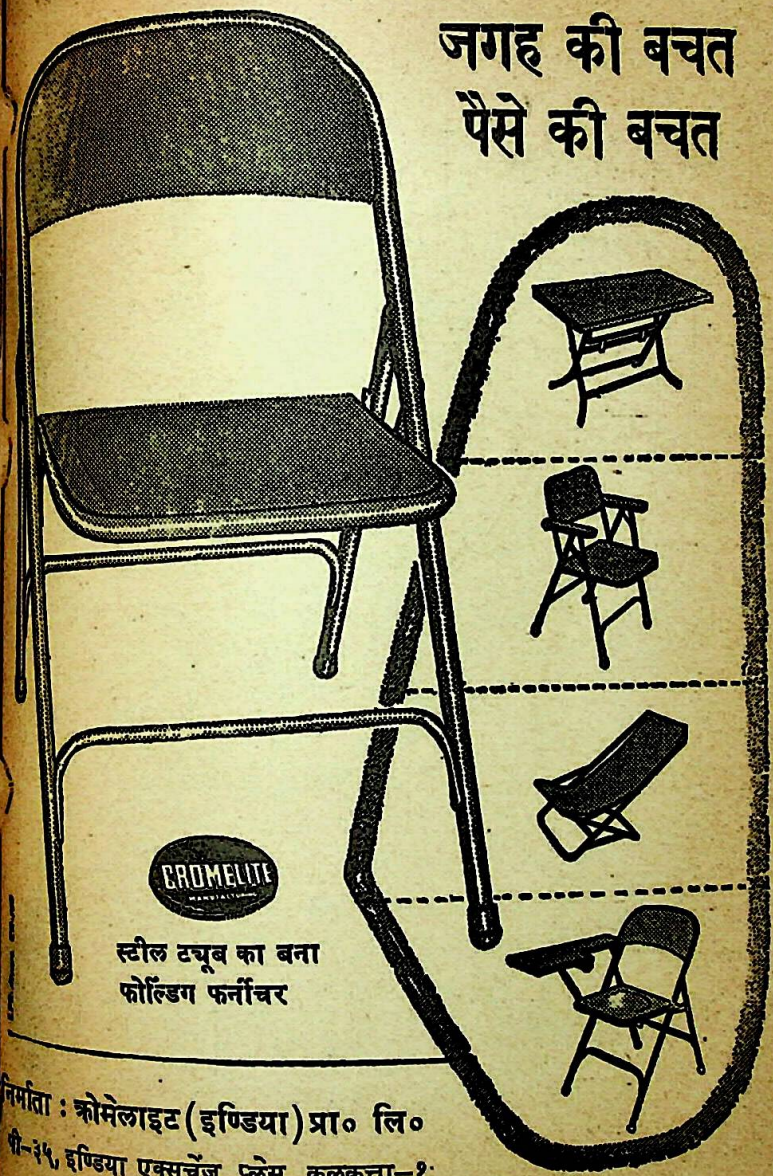

स्टील ट्यूब का बना
फोल्डिंग फर्नीचर

निर्माता : क्रोमेलाइट (इण्डिया) प्रा० लि०
पी-३५, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है
यह तो जीवन-साथी है।

आज शादी के दसवें वर्षगांठ का आमोद भरा दिन—अतीत की स्मृति का यह कितना गौरवपूर्ण क्षण है, हर्क्युलिस और उसके मालिक—दोनों के लिये।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, यह आपके जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद वर्ष बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन होंगे..... आपकी तरक्की होगी... आपके बच्चे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया बसा लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके साथ रहेगा, सर्वदा अच्छी हालत में रहेगा।

टी. आई. साइकिल्स आफ इण्डिया, अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

प्रोप्राइटर्स टचूब इन्वेस्टमेंट आफ इंडिया लिमिटेड मद्रास,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या कुछ ऐसी भी खाद्य वस्तु है जो आपके पेट को सहन नहीं होती है ?

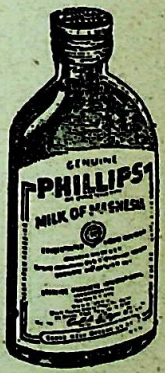

अधिकांश लोगों को कुछ खाद्य वस्तु सहन नहीं होती है। उसको खाने से बदहजमी और कब्जियत होती है। ऐसी अवस्था में आपको फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया लेना चाहिये। न सहन होनेवाले भोजन से जो बदहजमी, सीने की जलन, खट्टी डकार, जी मिचलाना आदि होता है उसको फिलिप्स तुरन्त दूर करता है। कब्ज़ियत को फिलिप्स आसानी के साथ पूरी तौर पर दूर करके पेट को स्वाभाविक अवस्था में ले आता है। अतएव अब यदि आप कभी अधिक भोजन कर लें तो तुरन्त फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया लें और निश्चिन्त हो जायँ।

फिलिप्स

मिल्क ऑफ मेगनेसिया

प्रस्तुतकारक : रजिस्टर्ड यूजर : दे'ज मेडिकल स्टोर्स (मैनुफैक्चरिंग) प्रा० लि०
६२, बुन्देल रोड, कलकत्ता-१९

PXDW—H/7

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आर्थिक पहलू और परिवार नियोजन

जी हां, हमारे जीवन में आर्थिक पहलू का प्रमुख हाथ रहता है। हममें से अधिकांश की आमदनी सीमित होती है और इस आमदनी में परिवार के सदस्यों के लिए भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा, मनोरंजन और बचत होनी ही चाहिए। लेकिन चूंकि परिवार के सदस्य बढ़ते जाते हैं, इसलिए इस आमदनी के भी उतने ही हिस्से हो जाते हैं और प्रत्येक के लिए बहुत छोटा हिस्सा बच पाता है।

इसलिए, समझदार माता-पिता उतने ही बच्चे पैदा करने का फैसला कर लेते हैं, जितनों की वे ठीक से परिवरिश कर सकते हैं। बच्चों को शिक्षा, अच्छी मात्रा में पौष्टिक खुराक और एक स्वस्थ जीवन मिलना चाहिए।

अपने परिवार को सीमित रखने के संबंध में निःशुल्क सलाह और जानकारी के लिए निकटतम परिवार कल्याण योजना केन्द्र में जाइये।

याद रखिये

छोटा परिवार एक सुखी परिवार होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल
नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानगृह
- हरेक कमरे में टैलीफ़ोन व रेफ़रिजरेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

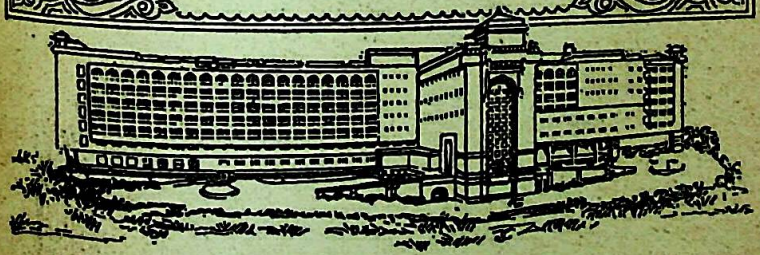

भारत का एकमात्र ★★★★★ डी लक्स होटल

टेलीफोन-७०३११ (४० लाईन) तार का पता-अशोका होटल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सही नेतृत्व

... यह महाशय
ग्वालियर सूटिंग पहनने के कारण
हर जगह सदैव अगुआ दिखाई देते हैं।
फैशन के क्षेत्र में आग्रणी, ग्वालियर सूटिंग
के आधार पर अन्य सूटिंग
भी परखे जाते हैं।

ग्वालियर सूटिंग

भारत के सर्वोत्तम,
सुखप्रद और
आकर्षक वस्त्र

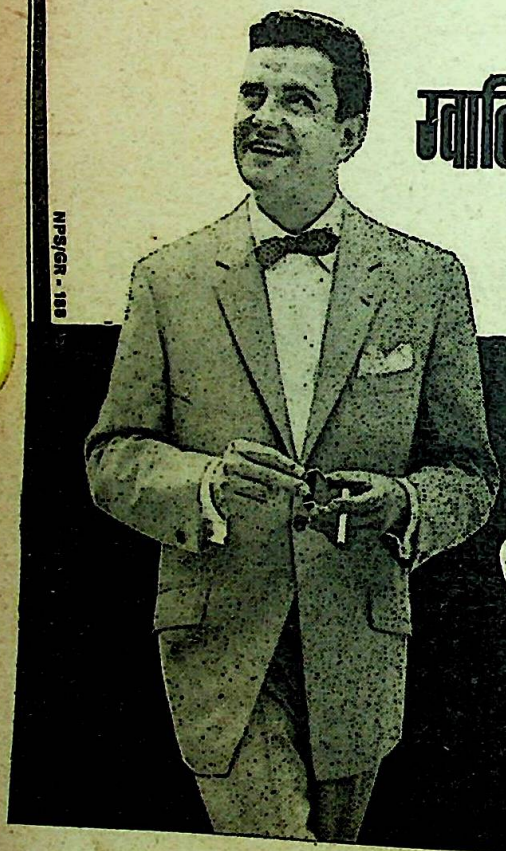

निर्माता :
ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यु० (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर - ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

देश के सभी स्टोरों में मिलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

NAS b-32b

यह रेडियो लेकर आपका परिवार गौरव का अनुभव करेगा

मरफी माडेल टी ए/टी यू ०७७५

४ वेव्-बैंड • ६ वाल्व (९ फंक्शन) • एज्-ड्रिवन टोन कंट्रोल • वेव-बैंड और ग्रामोफोन के लिए पियानो किज़ • ६"×४" इलिप्टिकल स्थायी मैगनेट • एरियल, अर्थ और विस्तार लाउडस्पीकर के लिए पीछे की ओर साकेट • चमकदार वालनट वेनियर कैबिनेट।

कीमत: रु. ४१५/- केवल आबकारी कर सहित।
बिक्रीकर और अन्य स्थानीय कर अलावा।
अखिल भारतीय कीमत (महाराष्ट्र को छोड़कर)

murphy radio

मरफी रेडियो घर को आनन्दमय बनाता है

Murphy sets the standard

वार्षिक मूल्य १०)

(मूल्य १.००

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No. B 62

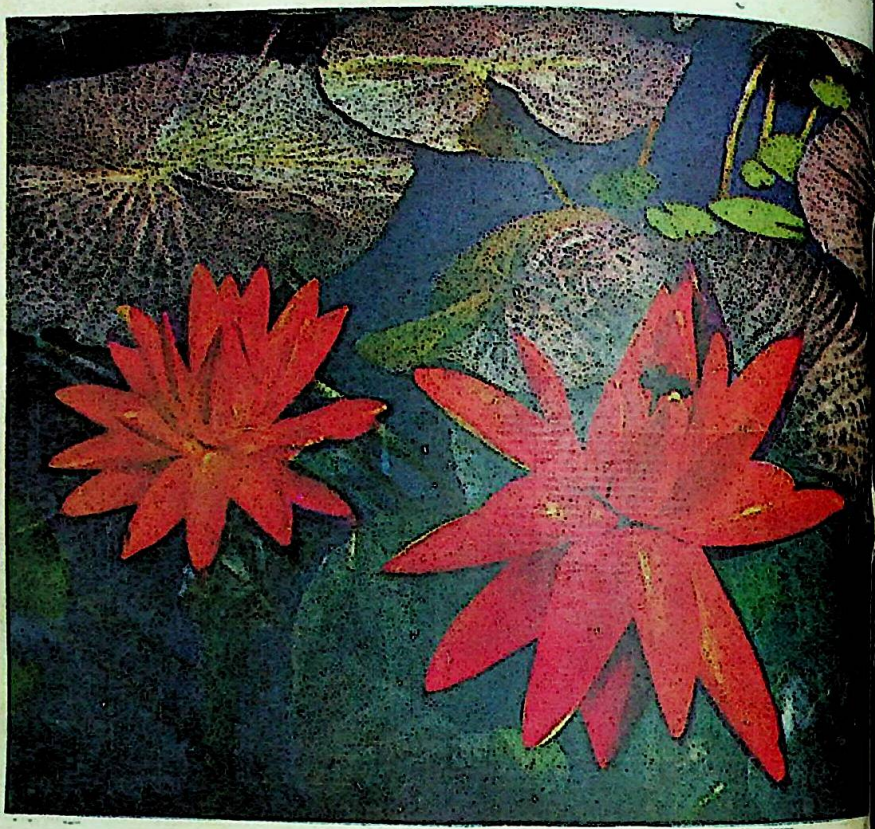

आप भी फूल जैसी खिलें

रेमी

सौंदर्य प्रसाधन अपना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

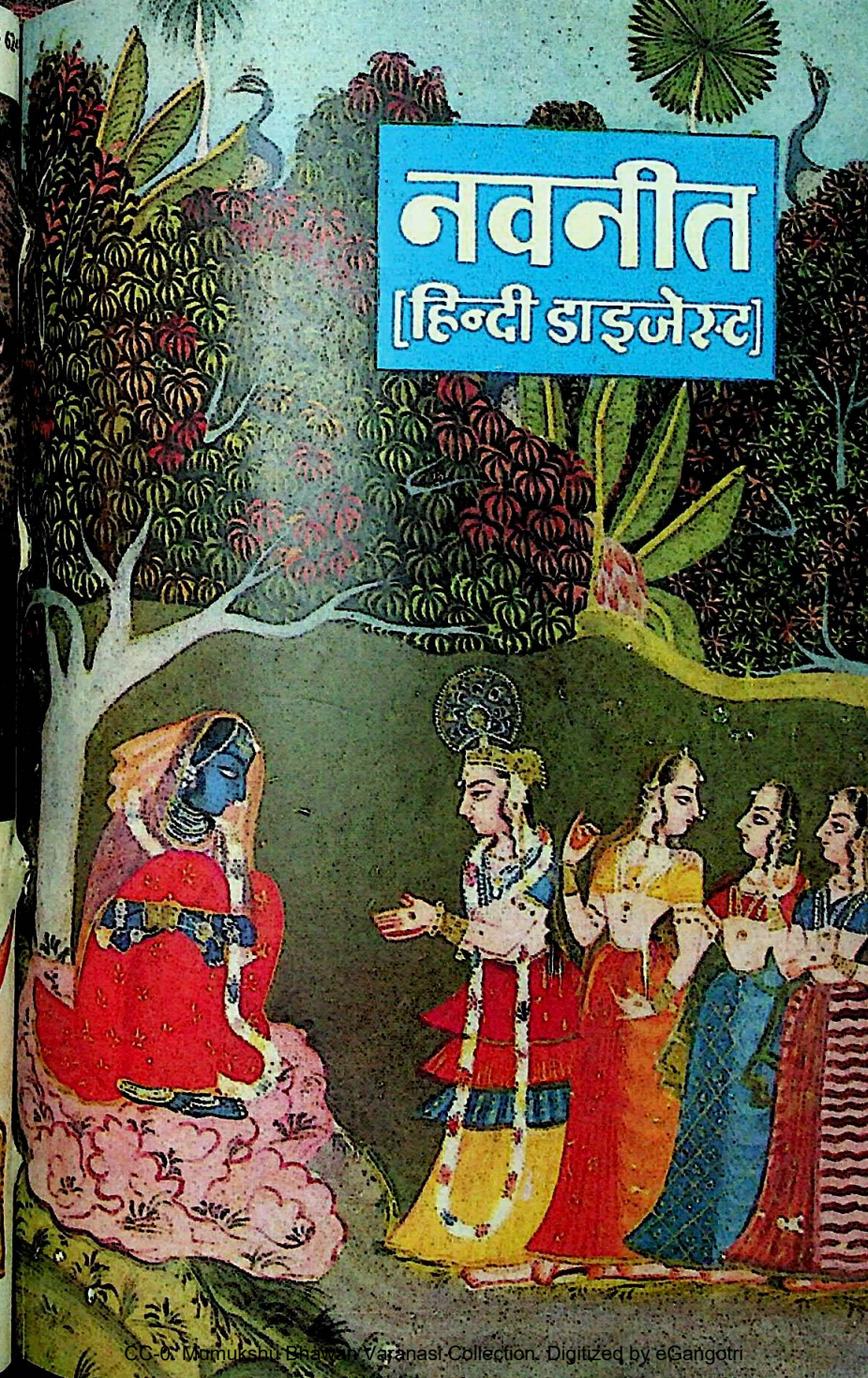

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर
साड़ी
के लिए...

हेमली

३९०, शंकर मैन्शन,
सरदार पटेल रोड, बम्बई-४.

शुभेच्छुक:
भुपेन्द्र डाईंग अँड प्रिंटिंग वर्क्स
बम्बई-४.

मुखपृष्ठ–'नवनीत प्रकाशन लि.' मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)
पश्चिम रेलवे.

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म से ही
कोई
अच्छा पाचक
नहीं होता—

वह **वनस्पदा** का प्रयोग करते हैं

पाकविधा में आप निपुणता प्राप्त कर सकते हैं। अच्छी पाकविधा का एक रहस्य है विटामिन युक्त वनस्पदा वनस्पति। वनस्पदा से बनाया हुआ भोजन केवल स्वादिष्ट ही नहीं, परन्तु पौष्टिक भी होता है क्योंकि वनस्पदा में विटामिन ए और डी होते हैं। अपने भोजन को वनस्पदा का विशिष्ट स्वाद दीजिए और एक अच्छे पाचक होने की ख्याति प्राप्त कीजिये।

वनस्पदा

विटामिन युक्त वनस्पति
(विटामिन ए और डी से समृद्ध)

बरार ऑईल इन्डस्ट्रीज़ अकोला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेडेकर

के
उत्पादन

बेडेकर मसाले, अचार, पापड़ व अन्य उत्पादन उत्तम साफ किये हुए कच्चे पदार्थ व इस विषय के ५५ वर्षों के दैनिक अनुभव के कारण ही सभी को पसंद। आप भी अनुभव लीजिये।

आपकी पसंद

वी० पी० बेडेकर एंड संस प्रा० लि०
मुगभाट, बम्बई–४

B.VASANT 365

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

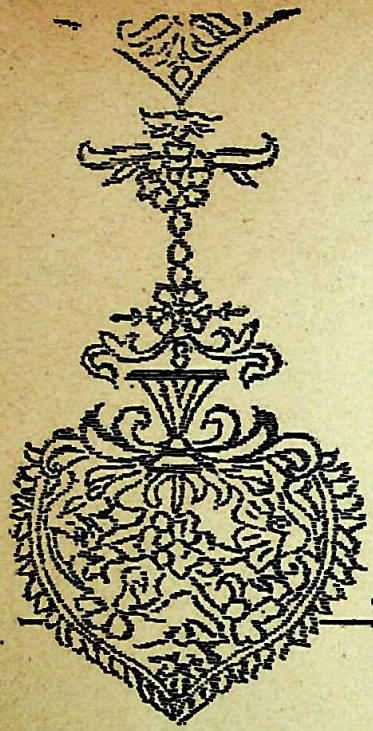

तंतुं तन्वन्, रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः
पथो रक्ष धिया कृतान्
अनुल्बणं वयत,...

ऋग्वेद

भारत में कपड़े की बुनाई का काम सुन्दरता और कला का एक नमूना रहा है। दुनिया के और किसी भी देश में हथकरघे ने इतने बड़े पैमाने पर कामयाबी हासिल नहीं की है।

सदियों से चली आती इस बेमिसाल परम्परा को हमारे देश के लाखों बुनकरों ने विरासत के रूप में पाया और आज की सजावट भरी दुनिया को देखते हुए इस कला में जो नये नये डिजायनों और तकनीकों का इस्तेमाल हो रहा है, उसने और चार चांद लगा दिये हैं। भारत के हथकरघे के कपड़े आज पहले से ज्यादा खूबसूरत हैं; डिजायनों, रंगों और बुनाई में लाजवाब हैं। दिन पर दिन इनके नये नये इस्तेमाल... हर जगह हर देश में आज इनकी मांग है। पिछले साल भारत ने विदेशों को १४ करोड़ रुपये के हथकरघों पर बुने कपड़ों का निर्यात किया।

अखिल भारतीय हथकरघा बोर्ड

डीए ६५/३४५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

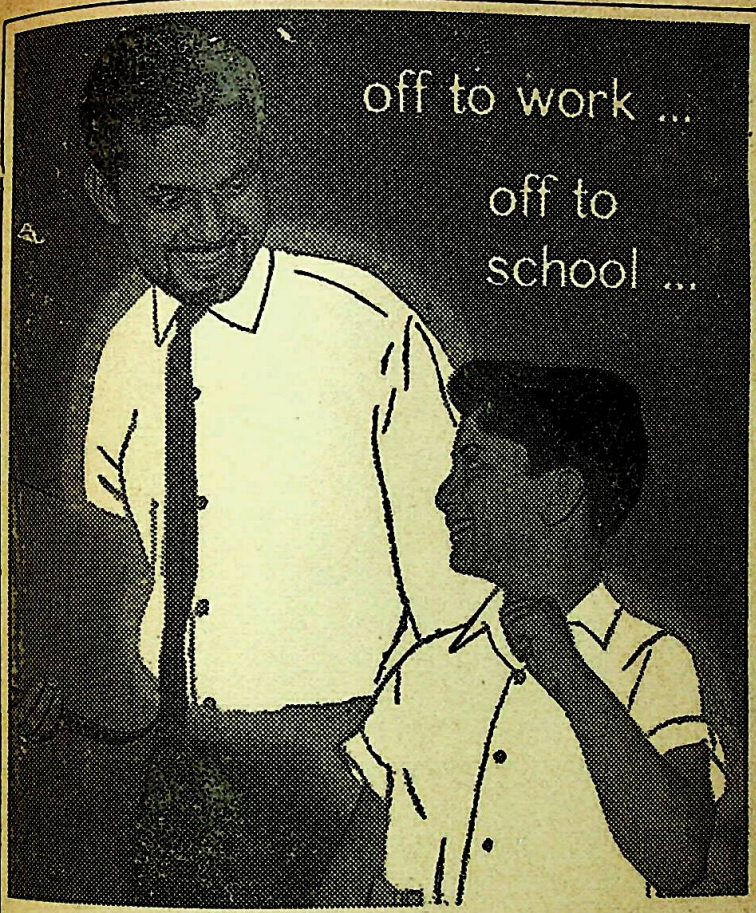

smart as
can be
thanks to
Glowhite

Trade enquiries to
sole selling agents in India
Akbarallys
Akbarally Ebrahimji,
38-C, Cawasji Patel St. Bombay-1.

Glowhite is the latest and the best in whiteners. Glowhite is the product of years of research to develop the perfect whitener. Use it for your family's white clothes, and see the results for yourself.

It's
not white
till it's
Glowhite

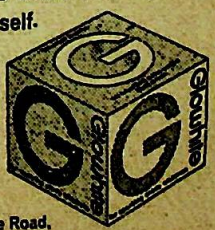

Amar Dye-Chem. Ltd.,
'Rang Udyan,' Sitladevi Temple Road,
Mahim, Bombay-16.

SISTA'S-ADC-29 A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो बेचैनी का नामोनिशान भी नहीं रहा!

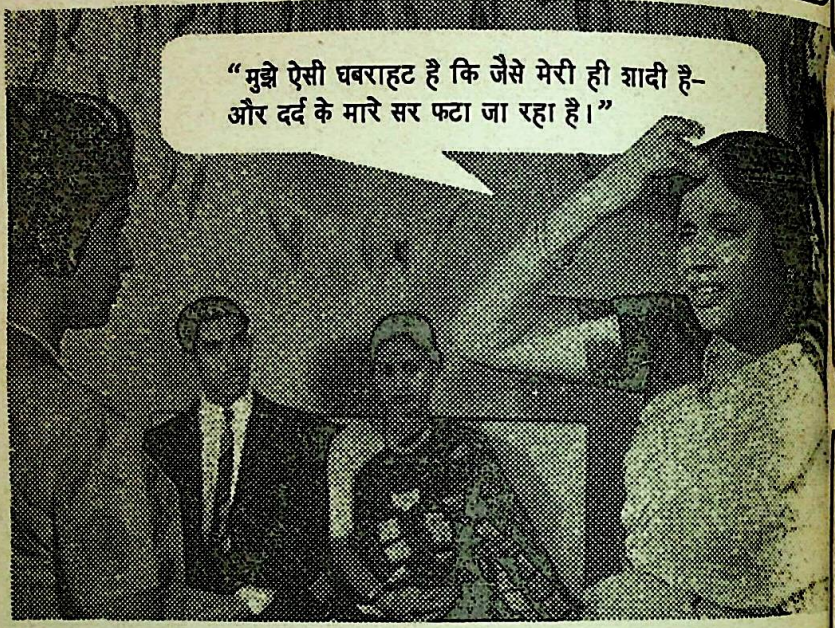

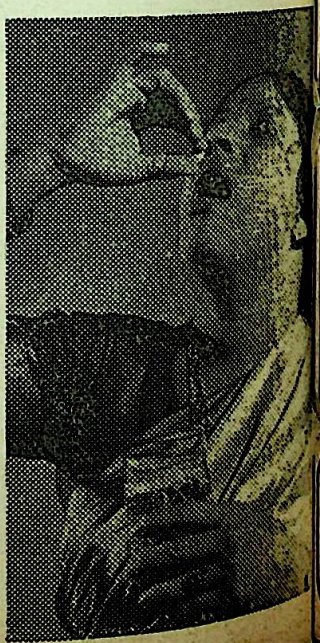

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्द हमारी समस्या है...और हम आपकी सहायता इस प्रकार कर सकते हैं!

अनुसंधान: 'ऐस्प्रो' अनुसंधान इन्स्टीट्यूट के अनुसंधान दलों में से मैं एक दलका प्रमुख हूं। और दर्द को दूर करने के उत्तम उपायों की खोज निकालना हमारा कर्तव्य है। हम संसार के प्रमुख इन्स्टीट्यूटों में से एक हैं,जो इस समस्या पर पूरा ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। और अब यह प्रमाणित हो चुका है कि दर्द का सर्वोत्तम आधुनिक उपाय 'ऐस्प्रो' फ़ार्मूला है। यही कारण है कि सारी दुनिया के डॉक्टर और अस्पताल इसका ही प्रयोग करते हैं।

दर्द क्या है?: जब 'मेटाबोलिक' तत्व तन्तुओं में इतनी तेज़ी से एकत्र होते हैं,जितनी तेज़ी से शरीर उन्हें बाहर नहीं निकाल सकता जिसके कारण प्रच्छन्न सूजन होती है जो स्नायुओं पर दबाव डालती है तब दर्द पैदा होता है।

'ऐस्प्रो' अपना कार्य किस तरह करता है: 'ऐस्प्रो' तुरन्त घुल जाता है–सूजन को दूर करता है–स्नायुओं पर पड़े दबाव को कम करता है और दर्द को खींच निकालता है।

'ऐस्प्रो' इन शिकायतों के लिए लीजिये. दर्द • सिरदर्द • शरीर के दर्द • दांत का दर्द • जोड़ों के दर्द • ज्वरयुक्त सर्दी ज़ुकाम • फ्लू • डेन्गू (बदन तोड़ बुखार)।

खूराक:

प्रौढ़: दो 'ऐस्प्रो'–ज़रूरत पड़े तो दो और लीजिये

बच्चे: एक गोली या अपने डाक्टर की सलाह के अनुसार।

'ऐस्प्रो'

दर्द को खींच निकालता है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६ गुना मज़बूत !!!

मेसर्स केटिन फ़ैब्रिकेन, ओस्लो, नार्वे के टेक्निकल कोलैबोरेशन में बनायी हुई केलिब्रेटेड सांकलें २½ टन तक वजन उठाने के लिए, बनायी जाती हैं। परीक्षण से सिद्ध होता है कि ये सांकलें १६ टन वजन तक उठाने पर भी नहीं टूटतीं – वजन उठाने की निर्दिष्ट क्षमता से ६ गुना। निश्चित रूप से मजबूती की यह गारंटी है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें:

द इंडियन लिंक चेन मैन्युफेक्चरर्स लिमिटेड

बम्बई-आग्रा रोड, भांडुप
बम्बई–७८

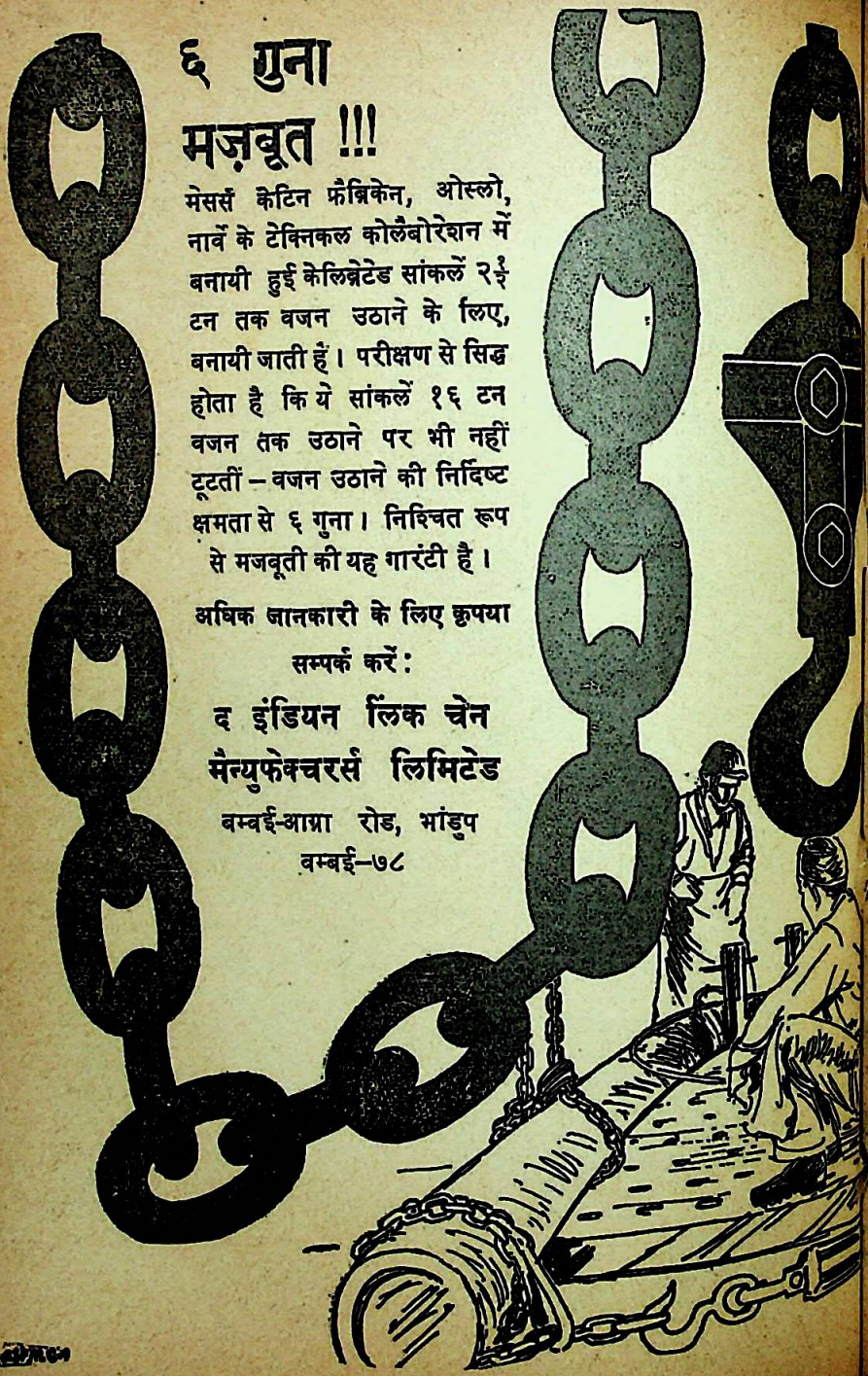

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ हा, फिर आ गयीं दिवाली! इस मंगल अवसर पर दीपों से आंगन जगमगा उठता है। पटाकों से वातावरण गूँजता रहता है। मानो चारों ओर आनंद का साम्राज्य-सा छा जाता है। "ऐसी सुखमय दिवाली आपके जीवन में बार बार आये।" इस इच्छा को व्यक्त करते हुए आपके उल्लास और आनंद में साथ दे रहा है...

....सुरक्षा का यह प्रतीक!

लाइफ़ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ़ इन्डिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

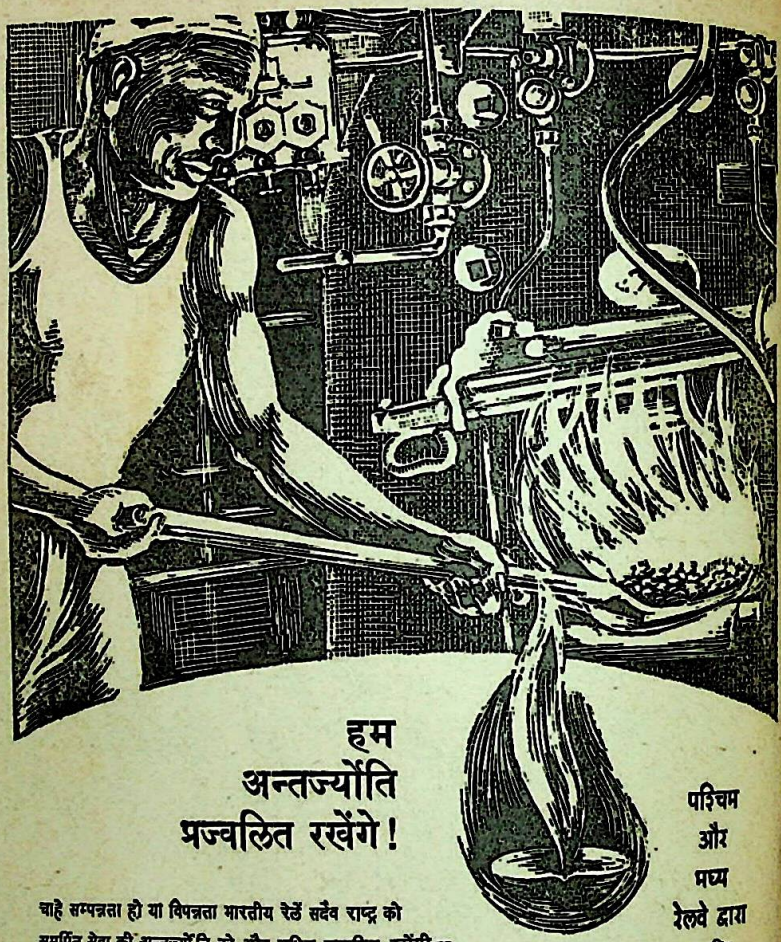

हम
अन्तर्ज्योति
प्रज्वलित रखेंगे!

पश्चिम
और
मध्य
रेलवे द्वारा
प्रसारित

चाहे सम्पन्नता हो या विपन्नता भारतीय रेलें सदैव राष्ट्र को
समर्पित सेवा की अन्तर्ज्योति को और अधिक प्रज्वलित रखेंगी—
देश के जीवन प्रदायक यातायात को बनाये रखने के लिए—प्रवासी, सामग्री
और आवश्यक वस्तुओं को ढोती रहेंगी जो देश की स्वतंत्रता और समृद्धि
के लिए परमावश्यक हैं।

इस वर्ष दीपावली के अवसर पर हम निष्ठापूर्वक पुनः प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने ग्राहकों के
सहयोग से हम आगे आने वाले सभी कठिन कार्यों को पूरा करेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

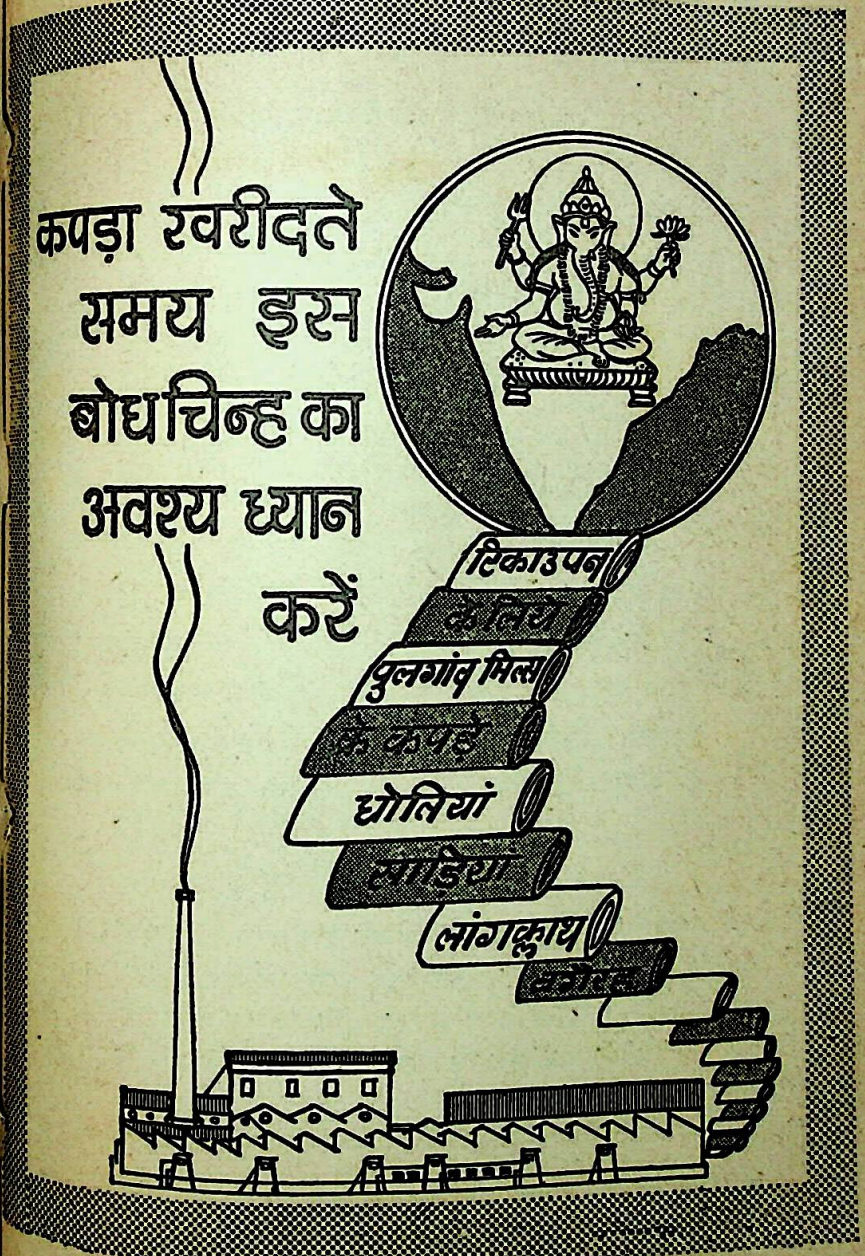

पुलगांव काटन मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : १० क्रेबोर्न रोड, कलकत्ता –१

अधिकृत पूंजी	रु. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,८०,००,०००
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें	रु. ३,३७,००,०००

डाइरेक्टर

आई० पी० गोयनका

चेयरमैन

एम० पी० बिड़ला	मदनमोहन आर० रुइया
वाइस चेयरमैन	वाइस चेयरमैन
अनंत चरण ला	मोतीलाल तापड़िया
जी० डी० कोठारी	टी० एस० राजम
रंगनाथ बांगड़	श्रेणिक कस्तूरभाई
मोहनलाल नोपानी	एस० टी० सदाशिवन
योगींद्र एन० मफतलाल	डा० आर० आर० हतंगडी

कार्य और सेवा

करेंट खाते खोले जाते हैं; लंबे और छोटे अरसे के लिए फिक्स्ड धरोहर स्वीकार की जाती है। सेविंग बैंक खाते। एक्युमुलेटेड पूंजी के लिए सुविधाजनक मासिक किस्तों में आवर्ती धरोहर। विदेशी मुद्रा और रुपये के ट्रैवलर्स चेक की खरीदी और भुगतान। अन्य प्रकार के देशी और विदेशी मुद्रा विनिमय का व्यापार।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM

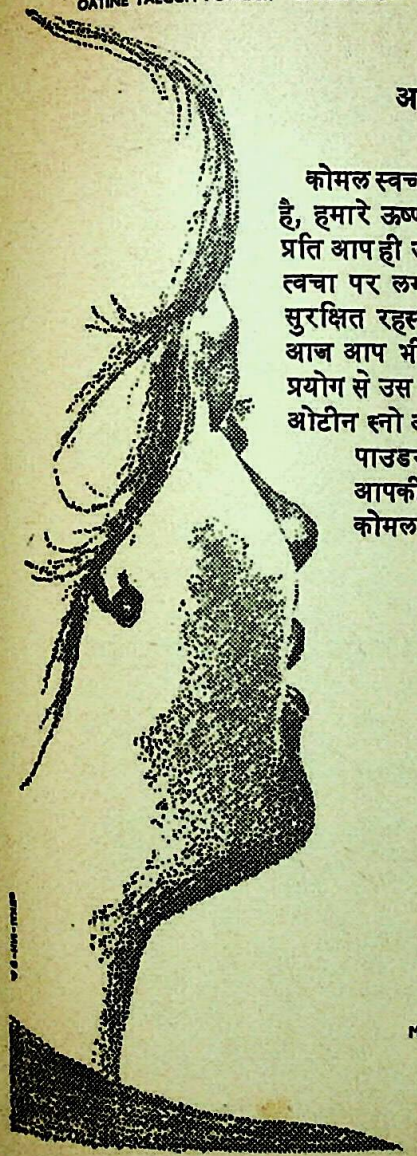

आपका कर्तव्य
अपने प्रति

कोमल स्वच्छ त्वचा ईर्ष्याजनक ही होती है, हमारे ऊष्ण जलवायु में अपनी त्वचा के प्रति आप ही उत्तरदायी हैं। प्राचीनकाल में त्वचा पर लगाने के प्रसाधन विशेषज्ञों के सुरक्षित रहस्य हुआ करते थे, लेकिन अब आज आप भी ओटीन स्नो और क्रीम के प्रयोग से उस रहस्य की ज्ञाता हो सकती हैं, ओटीन स्नो अत्यंत मनमोहक और फेनिल पाउडर-आधार है, और ओटीन क्रीम आपकी त्वचा को स्वस्थ एवं कोपल-कोमल बनाती है।

Oatine
SNOW & CREAM

M&H

MARTIN & HARRIS PRIVATE LTD
MERCANTILE BUILDINGS, LALL BAZAR, CALCUTTA-1

OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM

OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी पोदार मिल्स लिमिटेड

बंबई – १

ग्रे ड्रिल्स्, शीटिंगस्, धोतियां
लांगक्लाथ, ल्योपार्डस् आदि - आदि
के निर्माता

★

क्वालिटी और टिकाऊपन के लिए विख्यात

★

मैनेजिंग एजेंटस्

पोदार संस प्रा० लि०

पोदार चेम्बर्स, बंबई – १

टेलिग्राम
"PODARGINI"

टेलिफोन
कार्यालय : २५९२६१ (७ लाइन)
मिल्स् ४०१४९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया टॅबलेट् से

बदहजमी को तुरन्त

रोकिये

२० पैसे की
४ टिकियाँ

क्रिमेंट की सुगन्धयुक्त फिलिप्स की प्रत्येक टिकिया अपने वजन की १८६ गुना अम्लता को तुरन्त दूर करती है···जो अन्य किसी भी अम्ल-नाशक टिकिया से अधिक है। बच्चे इसकी क्रिमेंट की सुगन्ध को पसन्द करते हैं और बिना परेशानी के मिठाई की गोली की तरह खा लेते हैं। पारिवारिक आवश्यकता के लिये ७५ एवं १५० टिकियाओं की शीशियाँ भी मिलती हैं। इन पैकिंगों में कीमत भी कम पड़ती है। आज ही व्यवहार करें—सभी दवाखानों में मिलती हैं।

फिलिप्स

मिल्क ऑफ मेगनेसिया टॅबलेट्

प्रस्तुतकारक: रजिस्टर्ड यूजर

दे'ज मेडिकल स्टोर्स (मैनुफैक्चरिंग) प्रा० लि० ६२, बुन्देल रोड, कलकत्ता १६

PXDY-113

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SISTA'S-CCI-8 A

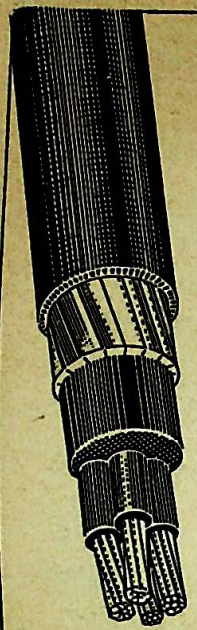

CABLE CORPORATION OF INDIA LTD.

Registered Office:
Laxmi Building Ballard Road, Bombay-1 (BR)
Factory:
Borivli (East), Bombay-66 (NB)

MANUFACTURERS OF 'TROPODUR' WIRES AND CABLES AND PAPER INSULATED CABLES

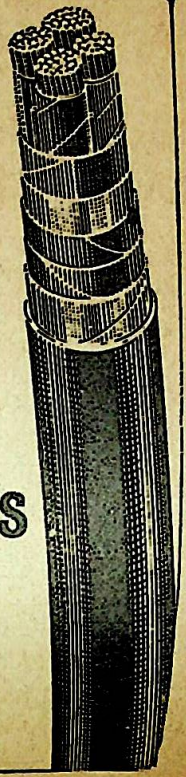

Distributors:- SIEMENS ENG. & MFG. CO., OF INDIA LTD.,
Raj Mahal, Veer Nariman Road, BOMBAY 1 (BR)
TRINITY ELECTRIC SYNDICATE,
154, Princess Street, BOMBAY-2 (BR)
EASUN ENGINEERING CO. LTD.,
5-7, Second Line Beach, MADRAS 1.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झन्डू

बालामृत

बढ़ते हुए
बच्चों के लिए अत्यन्त स्वादिष्ट
टॉनिक

झन्डू

सतावरेक्स

गर्भावस्था तथा दूध आते समय
स्त्रियों के लिए एक खास टॉनिक

पाचक तथा स्वास्थ्यवर्धक टॉनिक
जो भूख बढ़ाती है तथा
मानसिक अशान्ति को
दूर करती है

पंचारिष्ट

भोजनोपरान्त इसको
खाने की
आदत डालिए।

ZANDU PRODUCTS

झन्डू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि. बम्बई-२८

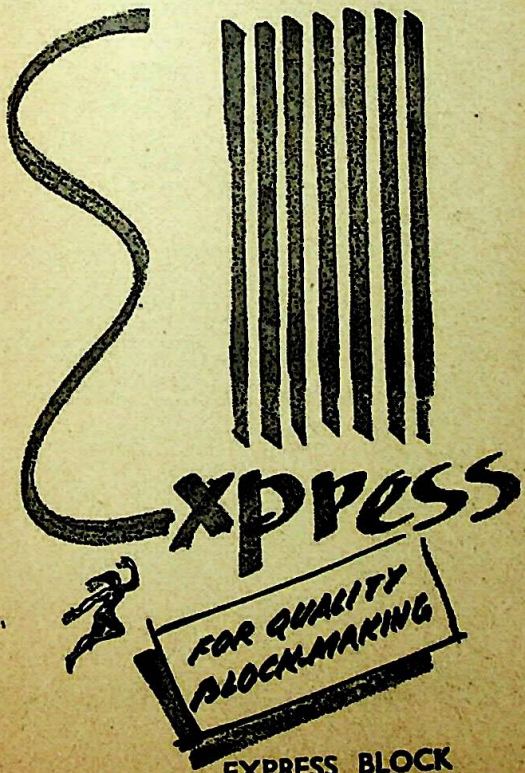

EXPRESS BLOCK
& ENGRAVING STUDIOS PRIVATE LTD.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ASP/ZSPS_HIND

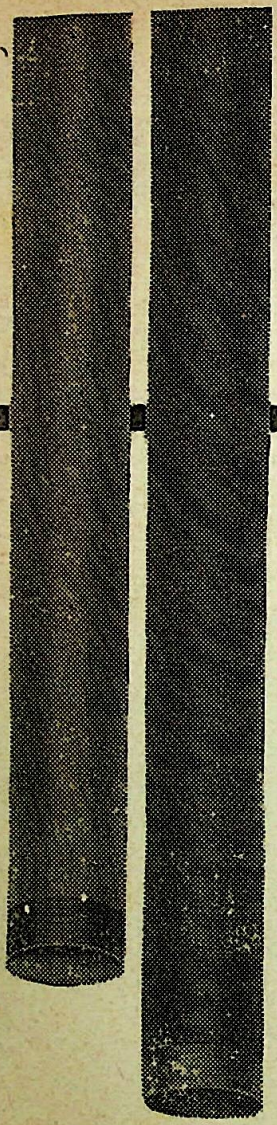

इलॅक्ट्रिकली
रेज़िस्टेन्स वॅल्डेड
(इ.आर.डब्ल्यु.)

ज़ेनिथ

स्टील पाइप मज़बूत होते हैं

ज़ेनिथ स्टील पाइप को ज़ंग से बचाने के लिए अच्छी तरह गॅल्वेनाइज़ किया जाता है। मान्यसमान मिअर ए. जी., वॅस्ट जर्मनी के तकनीकी सहयोग से, ज़ेनिथ ब्लेक और गॅल्वेनाइज़्ड पाइप बनाते हैं।

ज़ेनिथ स्टील पाइप्स लि.

मोती महल, १९५, चर्चगेट रॅक्लेमेशन, बम्बई १.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छत्रपती

शिवाजी विडी

ANSO 64

साबले वाघीरे एंड कं० कुर्ला, बम्बई, पूना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सदा प्रतिभाशाली दिखीये...

सेन्चुरी के फैशनेबल वस्त्रों मे

प्रचलित आधुनिक
कलात्मक फैशनों के अनुरुप उत्पादित

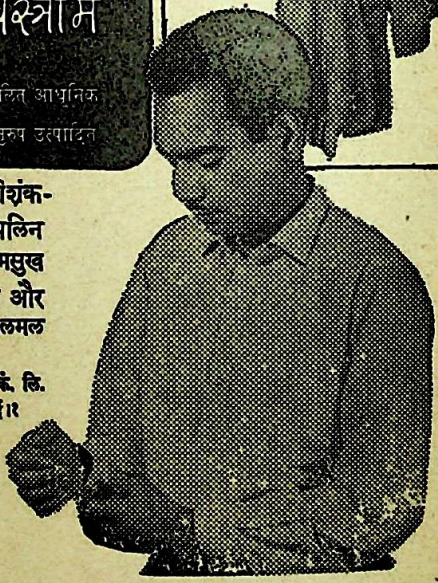

सेन्चुराईज्ड-प्रीशंक-
शर्टिंग तथा पॉपलिन
अतिमुलायम परमसुख
धोतियां और
छपी मलमल

दी सेन्चुरी स्पिनिंग एंड वैन्यु. कं. लि.
इण्डस्ट्री हाउस, बम्बई।२

NPS/CS-119

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

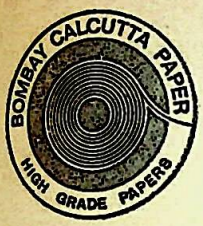

The Trade Mark
Of
High Grade Service

We regularly stock papers ranging from standard varieties to high grades. Whites and coloured ranging from thin grades to the highest substances.

Distributors :

THE BENGAL PAPER MILL CO. LTD.

Stocksits :

THE WEST COAST PAPER MILLS. LTD.

THE BOMBAY CALCUTTA PAPER AND GENERAL CO. PVT. LTD.

Regd. Office

Macmillan Building, 276, Dr. D. N. Road.

Bombay— 1BR.

Telegram :
Paperhouse

Telephone No. :
262041-42

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गले की तकलीफ़?

पॅप्स

लीजिये!

पॅप्स की टिकियाँ धीरे धीरे चूसिये, आप शीघ्र ही महसूस करने लगेंगे कि इनकी आवश्यकता आप अपना प्रभाव दिखाने लगी है...ये गले की तकलीफ़ और सीने की जकड़न में आराम पहुंचाती है...खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले बैक्टीरियाओं का नाश करने में सहायता देती हैं। आपको शीघ्र आराम मिलता है!

- ★ सर्दी और ब्रॉन्काइटिस में लाभदायक
- ★ बच्चों को बखूबी दी जा सकती है
- ★ सभी जनरल स्टोर्स में और केमिस्टों के यहाँ बिकती है

पॅप्स

शीघ्र आराम पहुँचाती है

SHBI-FP-2 HIN

डिस्ट्रीब्यूटर : केम्प एंड कम्पनी लि०, पो० बा० नं० ७०३३, बम्बई-२८ (डी०डी०)

आपके लिए जरूरी है
बंगाल
केमिकल का

कैंथराइडिन

हेअर आयल
आपके लम्बे, काले
मुलायम और
घुंघराले बालों की
रक्षा के लिए

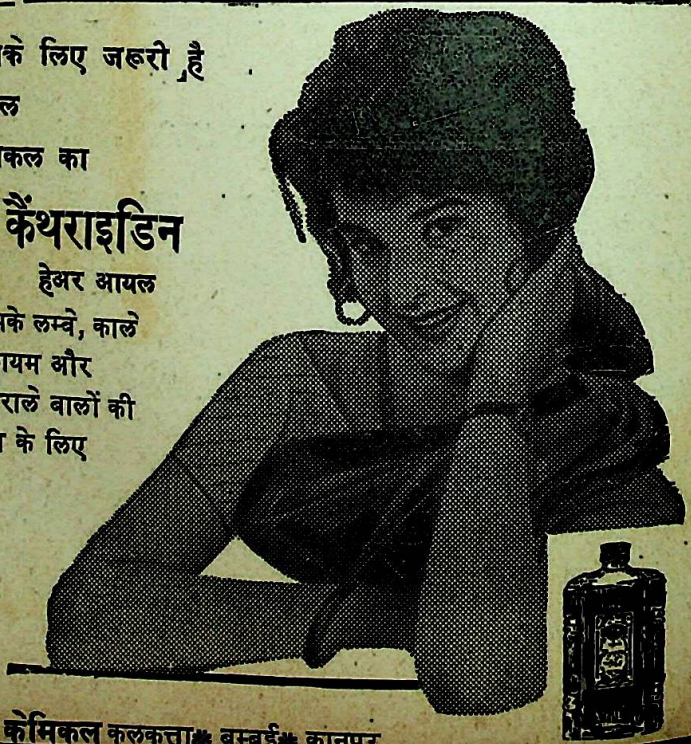

बेंगाल केमिकल कलकत्ता* बम्बई* कानपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

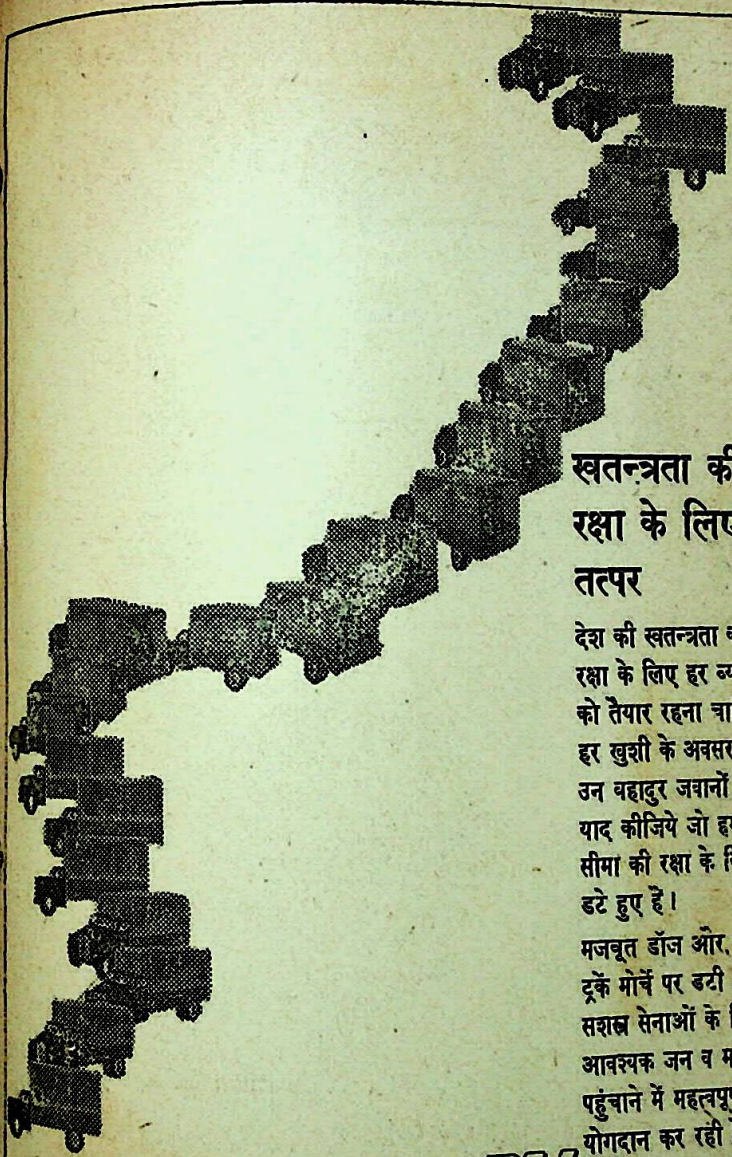

स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए तत्पर

देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए हर व्यक्ति को तैयार रहना चाहिए। हर खुशी के अवसर पर उन बहादुर जवानों को याद कीजिये जो हमारी सीमा की रक्षा के लिए डटे हुए हैं।

मजबूत डॉज और फार्गो ट्रकें मोर्चे पर डटी हुई सशस्त्र सेनाओं के लिए आवश्यक जन व माल पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान कर रही हैं।

PAL लि प्रीमियर आटोमोबाइल्स लिमिटेड, बम्बई

SIGTAS-PAL.-195

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

With Best Compliments Of :

GATTU

of ASIAN PAINTS,

25, Dalal Street,

BOMBAY-1

Phone : 255671 **Grams : REDLEAD**

Any surface that needs painting needs ASIAN PAINTS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

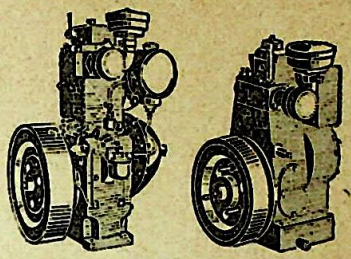

किर्लोस्कर

दीपावली की शुभकामनाएं

यह दीपावली-पर्व और नया वर्ष हमारे ग्राहकों तथा शुभचिंतकों के लिए सुख-समृद्धि और आनंदमय हो

किर्लोस्कर आयल एंजिन लिमिटेड

एल्फिस्टन रोड, पूना ३, (भारत)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली की शुभकामनाएं

दि पूना इलेक्ट्रिकल एंड इंडस्ट्रियल
कंपनी लि०

दि नासिक-देवलाली इलेक्ट्रिक सप्लाई
कंपनी लि०

दि भड़ोच इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड डेवलपमेंट
कारपोरेशन लि०

★

एस्प्लेनेड मैंशन्स,
१४४-१४६, महात्मा गांधी रोड,
फोर्ट, बंबई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

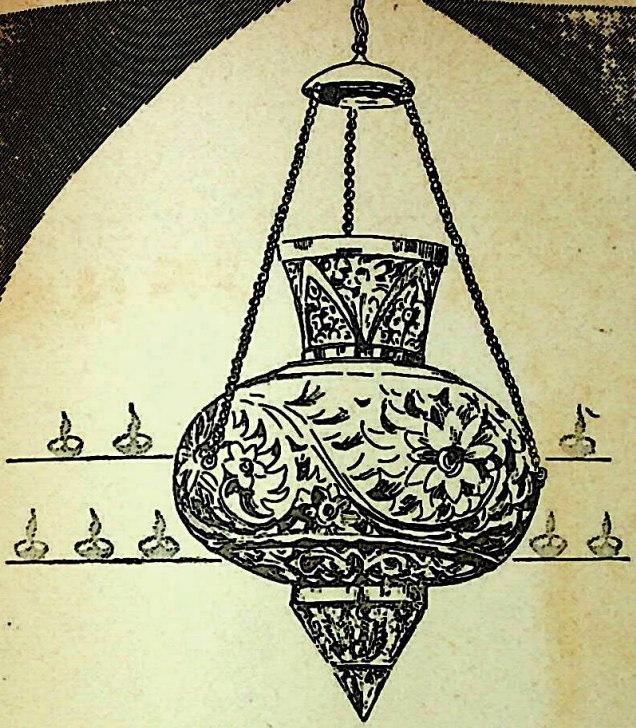

खुशियों का त्यौहार
फिर आ पहुंचा है।

दीवाली आ गयी
हर घर दीपों और बल्बों से जगमगा उठा है
नाते-रिश्तेदारों से मिलने का यही समय है
भेंट-उपहार देने का यही समय है

मन भावने चटक रंगों में
खूबसूरत साड़ियां
चांदी की बेहतरीन नक्काशियां
पीतल, ताम्बे और हाथी-दांत के
नायाब खिलौने

चन्दन की लकड़ी की वस्तुएं...उनकी भीनी-भीनी महक...
सुन्दर और उपयोगी मिट्टी के बर्तन...रंग-बिरंगे खिलौने...
ये हैं भारतीय दस्तकारियां...छूने में नाजुक; देखने में सुन्दर...

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड

DH 65/227

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यापारिक निपुणता का प्रतीक

कोरेस

कार्बन

कोरेस के कार्बन इस्तेमाल करने से हाथ, प्रतिलिपियाँ तथा डेस्क साफ रहते हैं। प्रतिलिपियाँ तीव्र, साफ तथा बिना लीपा पोती के छपती हैं। कोरेस के कार्बन अपने टिकाऊपन के कारण बहुत ही मितव्ययी हैं।

टाइपराइटर रिबन

कोरेस रिबन से टाइप करने में सुगमता रहती है। पहले दिन से ही अंकन स्वच्छ और स्पष्ट छपता है। कोरेस रिबन से नया होने पर भी दाग नहीं लगता और प्रत्येक रिबन से २० लाख अंकन छप सकते हैं।

ड्राई टाइप स्टेंसिल

कोरेस के ड्राइ टाइप स्टेंसिल से टाइपराइटर के टाइप भरते नहीं और साफ रहते हैं। गोल अक्षर बाहर नहीं गिरते और टाइपराइटरों के रोलरों पर किसी तरह का असर नहीं पड़ता। ड्राइंग और हाथ से लिखने के लिए भी कोरेस के ड्राइ टाइप स्टेंसिल सर्वोत्तम हैं।

कोरेस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड कार्बन पेपर, टाइपराइटर रिबन, ड्राइटाइप डूप्लिकेटिंग स्टेंसिल, डूप्लिकेटिंग स्याही तथा अन्य सामग्री, स्याही की टिकियाँ, स्टाम्प पेड तथा स्टाम्प पेड स्याही निर्माण करता है।

कोरेस के उत्पादन सब स्टेशनरों से प्राप्य हैं।

कोरेस इंडिया प्राईवेट लि.—बम्बई-कलकत्ता-दिल्ली-मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी जिन चीजों पर इन्हें नाज है...

...उनमें से एक है उषा सिलाई मशीन

शुक्र है उषा का, कि इनके बच्चे अपनी नयी पोशाकों में इतना खुश हैं। और मां को भी इस बात पर नाज है कि उन्होंने यह कपड़े खुद सिये हैं। उषा खरीदने पर जो खर्च किया था वह समझदारी की बात साबित हुई है। अब और ज्यादा पोशाकें कम खर्च में तैयार हो जाती है। इसके अलावा फुर्सत की घड़ियों में उषा से बढ़कर अच्छा साथी और कौन हो सकता है? उषा से सिलाई का मतलब है बिना झंझट की सिलाई। इसीलिए तो ५० से अधिक देशों की महिलाएं अपने पास उषा मशीन होने से गर्व का अनुभव करती हैं। आपको भी आधुनिक ढंग से सिलाई सीख लेनी चाहिये। इसके लिये देश भर में उषा के १२०० से ऊपर कसीदाकारी व सिलाई स्कूल चल रहे हैं आपकी मशीन की देख-भाल के लिए २४०० से ऊपर बिक्री व सर्विस केन्द्र खुले हुए हैं।

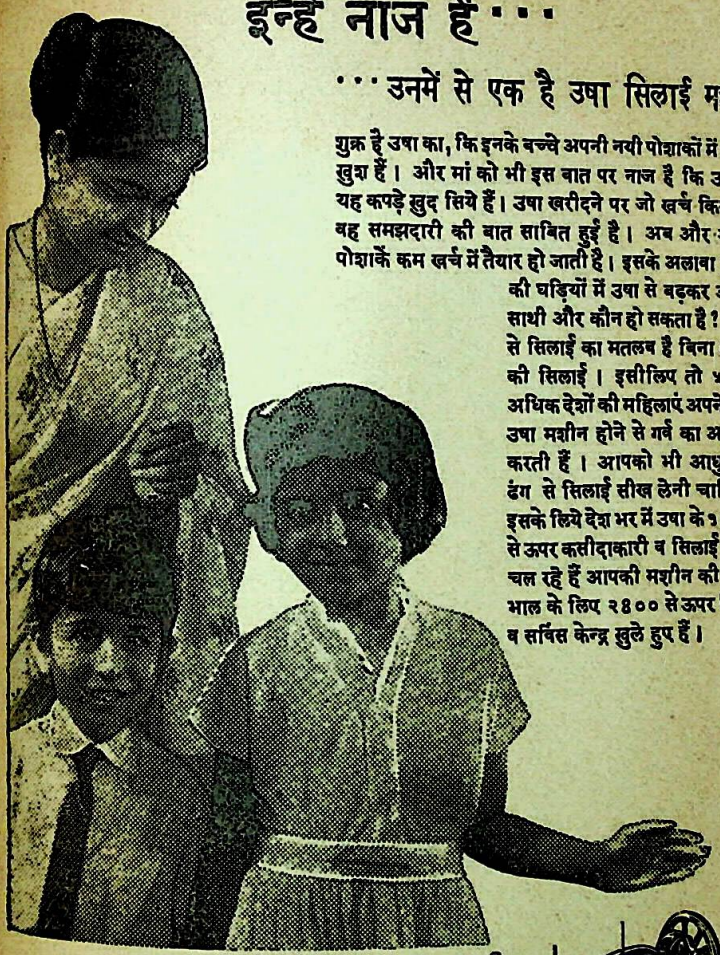

आराम से सिलाई कीजिये

उषा

से सिलाई कीजिये

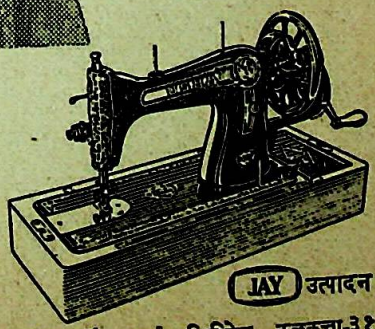

JAY उत्पादन

जय इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजाज के घरेलू साधनों से समय और श्रम की बचत होती है और आपकी कार्यकुशलता बढ़ती है। ये बजाज- साधन सुंदर और टिकाऊ हैं—साथ ही सबकी पहुंच के अन्दर भी □ □ □ □ □ □ □ □ □

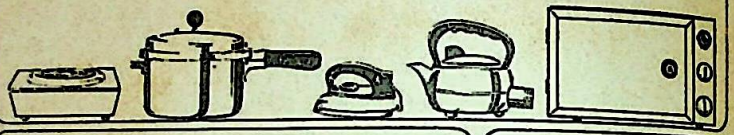

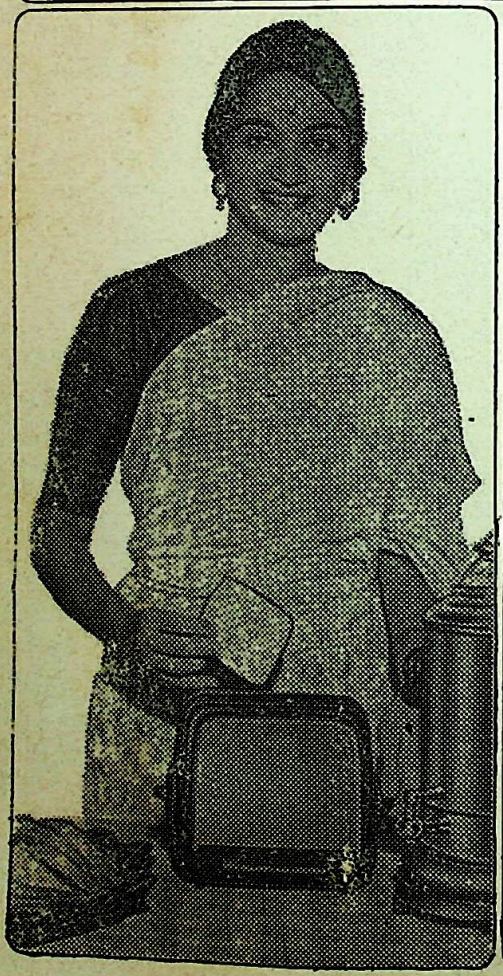

सुख और सुविधा के लिए बजाज-साधन

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१
भारतभर में शाखाएं

बजाज

heros-BE-231 F HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवनीत
हिन्दी डाइजेस्ट

दीपावली विशेषांक
नवंबर १९६५

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया

संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार

सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र

शिल्पी
गोपाल कृष्ण भोबे

प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

चित्र : प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम, बंबई के सौजन्य से

इस अंक में

उद्‌बोधन :

जीवन-हवि – यजुर्वेद ३४; आत्मा का अवगुंठन – अल्बर्ट श्वाइत्जर ३६; मेरे नौजवान दोस्तो ! – डा० जाकिर हुसैन ४८।

कैसे-कैसे लोग :

वह प्रकाश-पुंज – मोहनसिंह सेंगर ४९; उस्ताद रंगा सिंह – नानक सिंह ५१; भाई हजारीमल जैन – बनारसीदास चतुर्वेदी ५३; गजब की निर्भयता – श्री० दा० सातवळेकर ५४; बेजोड़ स्वतंत्र मिजाजी – डा० गोविंददास ५५; सहज आत्मीयता के प्रतीक – विष्णु प्रभाकर ५६; विचित्रताओं के धनी – स्नेहरश्मि ५७; ईमानदार राष्ट्रकर्मी – सूर्यनारायण व्यास ५९।

जीवन-संस्मरण :

भारत के दो प्रतिनिधि – निर्मल कुमार बोस ४२; मुझे मृत्यु से मिलने जाना है – आर्थर श्लेसिंजर ४५; डायरी के पृष्ठ – इंद्र विद्यावाचस्पति ६९; गांधी-गगन के हंसोड़ सितारे – जी० एन० आचार्य ७७; भगुवा की अम्मा – शीला शर्मा ८९।

राजनीति :

तेरा हर धूलि-कण – क० मा० मुंशी १७७; दो टूक बात – फ्रैंक मोराइस १८७।

प्रेरणा-पुष्प : हमारे रक्तदीप – स० का० वि० ३८।

कहानी :

राजी (पंजाबी) – करतार सिंह दुग्गल १००; जरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी वे सभी लाभ मिलेंगे...एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

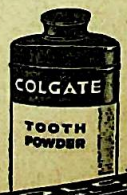

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिए ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताज़ा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG 35 H.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इधर तो देखो (उर्दू) – आवदा जफर १०४; पापी का परिवर्तन (बंगला)–नारायण गंगोपाध्याय १२७ ।

यात्रा-अनुभव

सब जगह हमें मनुष्य ही मिला – सतीश कुमार १०९; एक तीर्थः दो मंदिर–९७; फारमोसा में भारत–लल्लनप्रसाद व्यास २२१।

पथ-संकेतः

कल्पना के पंख लगाइये–रिषभदास रांका ८५; दांपत्य का झगरा – शरद राकेश ९३; बुढ़ापा कयामत नहीं – डा० रायडन १२० ।

जीवन-परिचयः

धरती की चोटी पर –भानु वनर्जी ८२; मुस्लिम जगत् के वाल्मीकि –असद अली १२३ ।

चिंतन :

हनुमानजी की कृपा— विनोवा ८१; धर्म : तारक, मारक –सर जूलियन हक्स्ले १७५ ।

विज्ञान :

अणु-शस्त्रों से को धरती खतरा नहीं –फ्रेड हाय्ल १८४ ।

पुस्तक-संक्षेप :

हृदयों का नैवेद्य–डोरोथी क्लार्क विल्सन १४५; क्रांतिपथ का पथिक–पृथ्वीसिंह आजाद १८९।

कविता :

बालनलाल चतुर्वेदी ३५; रवींद्रनाथ ठाकुर ४७; कुमारिल पंत ७६; निरंकार देव सेवक ८६; त्रिलोचन ९२; भारतभूषण अग्रवाल १२१; सरदार जाफरी १३९; लोर्का १५६; एस० कुमार मेहता १८६; सुरेश प्रभाकर २१३ ।

विविध :

गोबर-गैस प्लांट – जगत गुप्त ६१; लाल किला–ब्रजकृष्ण चांदीवाला १८०; स्विट्जरलैंड के बैंक – वणिक् ७३; दो शब्द भारतीय कलाकारों से – सत्यकाम विद्यालंकार ६४; लोकसभाई सरकस में एक दिन – जाबालि २१६ ।

चित्रसज्जा : असित हलदार, हब्बार, बेंद्रे, जान हाफमान, माइकलेंजेलो, धनराज भगत, लियोंचूस, शंकर पिल्ल, सुधीर खास्तगीर, प्रद्युम्न तन्ना, अलमेलकर, पी. टी. रेड्डी, ओके, झवेरी, रंगनाथ, सजल राय, सामुएल, सुनील कुमार पाल, कालीकिंकर दंतिदार।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन-हवि

अग्ने वेहोत्रं वेदूर्त्यमवतां त्वां
द्यावापृथिवी अवत्वं द्यावापृथिवी
स्विष्टकृद्देवेभ्य इन्द्र आज्येन हविषा
भूत्स्वाहा संज्योतिषा ज्योतिः ॥

—राष्ट्र-रक्षा के होत्र (यज्ञ) में जीवन-हवि देनेवाले नागरिको ! तुम इस राष्ट्र-रक्षा की ज्योतिर्मय भावना के दूत बनकर इसका संदेश घर-घर में फैला दो । पृथ्वी और आकाश की सब दिव्य शक्तियां तुम्हारी रक्षा करेंगी।

पराक्रमी इंद्र अर्थात् सर्वोच्च प्रभुसत्ता अपना संपूर्ण राजकोष इस पावन राष्ट्र-रक्षा कार्य में समर्पित कर देगी । जन-जन की स्वाहुति से जागृत और प्रबुद्ध आत्मज्योति जब समग्र राष्ट्र की तेजस्विनी ज्योति से संयुक्त हो जायेगी, तब हमारी राष्ट्र-शक्ति अपराजेय हो जायेगी । तभी यह यज्ञ पूर्ण होगा ।

—यजुर्वेद २-९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली विशेषांक

आओ पहचान करें

जिस घर को छूने सागर की लहरें दौड़ रही हैं,
आओ, उस घर के मालिक से कुछ पहचान करें।
जहां हिमांचल के आगन में धुआं उठा हुआ है,
वहां ज्योति की तरह चमककर मानव कुछ बलिदान करें।

प्रेयसियों का प्यार ललक पुरुषार्थ ढूंढ़ता है,
बनते-बुझते दिवसों के इतिहास पड़े हैं,
तेरी नजरों के मैले हाथों से मत छू,
ये मंदिर हैं, सरस्वती ने स्वयं गढ़े हैं।

पत्ती-पत्ती हिल रही हवा के झोंकों में,
हम पत्थर हिल पायेंगे सुविधाओं से ?
जब-जब दिया निमंत्रण बलि की प्रतिमाओं ने
तब-तब गया समर्पण कुचला पांवों से।

बहुत शेष है, बहुत शेष है, बहुत शेष है,
हम मत भूलें, हम मत अपना गुणगान करें।
जिस घर को छूने सागर की लहरें दौड़ रही हैं,
आओ, उस घर के मालिक से कुछ पहचान करें।

—माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

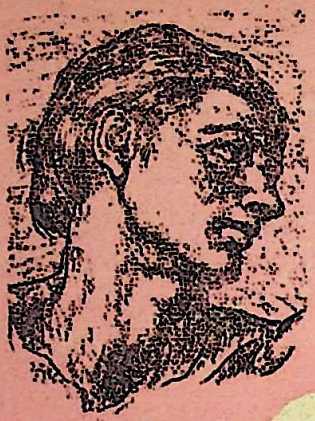

आजीवन आलोक का अनुसंधान
करनेवाले महान संत-साधक श्वाइत्जर के
अनुभव-मथित चिंतन-स्फुलिंग

डा० अल्बर्ट श्वाइत्जर

आत्मा का अवगुंठन

क्या मनुष्य-मनुष्य का संबंध, जितना हम मानने को तैयार हैं, उससे कहीं अधिक रहस्यमय नहीं है? हममें से कोई भी सच्चाई के साथ दावा नहीं कर सकता कि वह किसी को सचमुच जानता है—भले ही उसके साथ वह बरसों तक क्यों न रह चुका हो। जिनकी हमारे साथ बहुत घनिष्ठता है, उन्हें भी हम अपने आंतरिक जीवन का एक अंश ही दे सकते हैं—सारा-का-सारा हम दे नहीं सकते; और न वे ही ग्रहण कर सकते हैं।

जीवन में हम साथ-साथ धुंधलके में भटकते रहते हैं, जिसमें कोई अपने हमराही का नाक-नक्श पूरा-पूरा पहचान नहीं पाता। हां, बीच में कभी-कभी अपने साथी के संबंध में हमारा कोई अनुभव, या उसकी कोई उक्ति उसे एकदम हमारे पास ला देती है—जैसे अचानक बिजली कौंध उठे और उसे चमका दे। उस क्षण उसका असली रूप हमें दिख जाता है। उसके बाद हम फिर अंधेरे में साथ चलने लगते हैं और अपने हमराही का नाक-नक्श पहचानने की व्यर्थ कोशिश करते रहते हैं।

यह तथ्य तो हमें स्वीकार कर ही लेना चाहिये कि हम सब एक दूसरे के लिए रहस्य हैं। एक दूसरे को जानने का अर्थ एक दूसरे का सब कुछ जानना नहीं है। एक दूसरे को जानने का अर्थ है—परस्पर प्यार और एक बार होना, एक दूसरे पर विश्वास करना। मनुष्य को किसी दूसरे के व्यक्तित्व में बलात् पैठने की कोशिश नहीं करनी चाहिये।

आत्मिक अथवा बौद्धिक उलझन में प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए आदमी को स्वस्थ मनःस्थिति प्राप्त करने में सहायता देने के लिए उसका विश्लेषण करना और बात है, अन्यथा दूसरों का विश्लेषण करना अभद्रता है। क्योंकि आत्मा की भी लाज होती है, और शरीर की लाज की तरह उसकी भी हमें कद्र करनी चाहिये। आत्मा के भी कपड़े होते हैं, जिन्हें हमें उघाड़ना नहीं चाहिये।

और किसी को दूसरे से यह कहने का अधिकार नहीं कि "चूंकि हम दोनों एक दूसरे के हो चुके, इसलिए मुझे तुम्हारा सब कुछ जानने का अधिकार है।" किसी मां को भी अपने बच्चे के साथ ऐसा कहने का अधिकार नहीं है। इस ढंग की सब मांगें मूर्खतापूर्ण और अहितकारी हैं। इस मामले में तो देना ही एकमात्र सही विधि है; देना ही दूसरों को प्रेरित कर सकता है। जितनी भी दे सकें, अपनी आत्मा दे डालिये अपने हमराहियों को; और प्रतिदान में उनसे जो कुछ मिले, उसे बहुमूल्य मानकर संजोकर रखिये।

अपनी जितनी आत्मा दूसरों को दिखाना स्वाभाविक प्रतीत हो, दिखायें; उससे अधिक दिखाने के लिए अपने आपको विवश न करें। हम तो बस यही कर सकते हैं कि हम भीतर से और वस्तुतः क्या हैं, इसका निर्णय दूसरों को स्वयं करने दें; और दूसरों के साथ हम भी यही करें। जरूरी चीज एक ही है—वह यह कि हम भीतर से प्रकाशमय बनने का यत्न करें। हमारे यत्न को दूसरे भी समझेंगे। और जब लोगों के भीतर प्रकाश होगा, तो वह स्वयं चमक उठेगा। तब अंधेरे में चलते हुए भी हम एक-दूसरे को पहचान लेंगे और हमें हाथों से एक दूसरे का चेहरा टटोलने और बलात् एक दूसरे के हृदय में घुस-पैठ करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि देश का औसत नागरिक उच्च कोटि का आदमी हो, ताकि वह अपने कर्तव्यों को सही ढंग से अंजाम दे सके। कहते हैं, जब लार्ड सैलिसबरी ब्रिटेन के प्रधान मंत्री थे, किसी ने उनसे पूछा कि क्या आपको यह सोचकर चिंता नहीं होती कि जब आप-जैसा महान आदमी दुनिया में नहीं रहेगा, तो देश का क्या होगा? लार्ड सैलिसबरी ने उत्तर दिया—"नहीं। जब मैं अपने मकान की खिड़की पर खड़ा होकर लंदन के नर-नारियों को उधर से गुजरते देखता हूं, तो मैं यही अनुभव करता हूं कि उनमें से हर कोई इस लायक है कि उसे प्रधान मंत्री की कुर्सी पर बैठाया जा सके।"

क्या अपने देश की सड़कों पर गुजरते लोगों को देखकर हममें से कोई ऐसी बात कहने का साहस कर सकता है? और क्या यह भी सच नहीं है कि हमारे यहां ऊंचे पदों के उम्मीदवार प्रायः इस फिराक में रहते हैं कि उनकी महानता में कभी कमी न आये और छोटे लोगों का छोटापन शाश्वत बना रहे, ताकि उन चंद महान व्यक्तियों के यश और सामर्थ्य की महिमा हमेशा बनी रहे?

—श्रीप्रकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे रक्षकदीप

फौलाद बनने के लिए लोहे को अंगारों में तपना पड़ता है। सबल राष्ट्र बनने के लिए देश को युद्ध की ज्वालाओं म जलना पड़ता है।

शत्रु ने हमारी शांति को कायरता मानकर जब युद्ध के लिए ललकारा, तो उसे यह कल्पना भी नहीं थी कि भारत का हिमाच्छादित ज्वालामुखी अपनी रक्षा के लिए आग भी उगल सकता है।

कश्मीर पर हमला करके शत्रु ने भारतमाता के मस्तक पर प्रहार किया था। शत्रु का विश्वास था कि इस अचानक किये गये एक ही आघात से भारत के पैर लड़खड़ा जायेंगे; जुदा-जुदा जातियों और मजहबों में बंटा हुआ भारत बहुत जल्दी कश्मीर से ही नहीं, पंजाब से भी भागकर विंध्याचल की घाटियों में आत्मरक्षार्थ छिपता फिरेगा।

लेकिन हुआ इसके सर्वथा विपरीत। मजहब की ओट में शिकार करनेवाले पाकिस्तानी लुटेरों की आहट पर ही भारत के सीमा-प्रहरी जाग गये। उनकी हुंकार ने शत्रु को हतप्रभ कर दिया। पाकिस्तान के इस हमले से सारा राष्ट्र जाग उठा; राष्ट्र में सदियों से सोयी क्षात्रशक्ति जाग उठी।

धर्म और जाति के भेद-भाव भूलकर हमारे जवान रणांगन में उतर पड़े। एक ओर मजहब की दुहाई देकर मानव-रक्त पीनेवाले लुटेरों का दल था। दूसरी ओर मानव-मात्र से प्यार का दावा करनेवाले भारत के प्रहरी थे। पाकिस्तान कश्मीर को लूटने के लिए पागल होकर टूट पड़ा, उसके हर स्वर में क्रूरता, क्रोध और प्रतिशोध की चिनगारियां थीं; मगर भारत की सशक्त शक्ति संयम के साथ आत्मरक्षा करते हुए ऊंचे आदर्शों के लिए जझ रही थी। भारत के प्रहरी जवानों ने इस युद्ध में अटूट देश-भक्ति, शौर्य, साहस और कर्तव्यनिष्ठा के नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उनका उल्लेख भारत के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में किया जायेगा।

जिन अमर सैनिकों ने मातृभूमि के लिए प्राणों की बाजी लगा दी, उनमें हवलदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब्दुल हमीद का नाम बड़े गौरव से लिया जायेगा। उत्तर प्रदेश के धामपुर (जिला गाजीपुर) का यह जवान लाहौर क्षेत्र में दुश्मनों के चार पैटन टैंकों को तोड़कर देश की सम्मान-रक्षा के लिए स्वयं शहीद हो गया। देश ने उसे 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया है। इस वीर ने अपनी कुर्बानी से सारी दुनिया को दिखा दिया कि भारत सच्चे अर्थों में एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।

सबसे बड़ी कुर्बानी की उस विमान-चालक ने, जिसने सरगोधा विमान-अड्डे के राडार यंत्रों को नष्ट करने के लिए अपना विमान राडार-इमारत से टकराकर अपनी आहुति दे दी। जो देश ऐसे पुत्रों को जन्म दे सकता है, कभी पराजित नहीं हो सकता।

यह प्रसंग है जम्मू-कश्मीर क्षेत्र का। यहां कैप्टन चंद्रनारायण सिंह को पाकिस्तानी हमलावरों के एक गिरोह का मुकाबला करने को भेजा गया था। उसके साथ मुट्ठी-भर सैनिक थे। लेकिन वह डरा नहीं। उन्हीं सैनिकों की सहायता से उसने सशस्त्र सैनिकों पर आक्रमण कर दिया और अपने से कहीं अधिक हमलावरों से युद्ध करते हुए प्राण दे दिये। स्वर्गीय कैप्टन चंद्रनारायण सिंह को 'महावीर चक्र' प्रदान किया गया।

आकाशी युद्ध में अपराजेय समझे जाने-वाले अमरीकी सेवर-जेटों को धराशायी बनाने में भारतीय वायुसेना के साहसी विमान-चालकों ने जो रण-कौशल दिखाया, वह दुनिया की चर्चा का विषय बन चुका है। ३ सितंबर को छम्ब क्षेत्र पर जब पाकिस्तान की फौज ने हमला किया, तो भारतीय वायु-सेना के नैट विमानों ने पाकिस्तानी टैंकों की रक्षा के लिए उड़नेवाले कई सेवर-जेट विमानों से संघर्ष किया। इस संघर्ष में ३० वर्ष के जवान स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर ने एक पाकिस्तानी सेबर-जेट को हवा में ही गोली मारकर तोड़ दिया। ४ सितंबर को २७ वर्ष के फ्लाइट-लेफ्टिनेंट वीरेंद्रसिंह पठानिया ने भी अखनर की चौकी पर मंडराते सेबर-जेट को ६०० गज की दूरी से निशाना मारकर गिराया।

हाजीपीर दर्रे के मोर्चे पर भारतीय जवानों की विजय का रोमांचकारी प्रसंग कौन भूल सकता है? हाजीपीर की पाकिस्तानी किलेबंदी को तोड़ना मौत को गले लगाना था। कितनी ही दुर्गम गहरी घाटियों और ८-१० हजार फुट ऊंची चोटियों को पैदल पार करके ही वहां पहुंचा जा सकता था, और वहां पहुंचकर दुश्मन की मशीनगनों से बचते हुए हमला करके ही दर्रे पर अधिकार किया जा सकता था। भारत के एक नौजवान अफसर सेकेंड लेफ्टिनेंट ने इस साहसपूर्ण कार्य को पूरा करने का जिम्मा लिया। दर्रे के निकट पहुंचकर वह २० गज तक रेंगते-रेंगते वहां गया और एक चट्टान की ओट से उस अकेले बहादुर ने मशीनगन की चौकी हथगोले से उड़ा दी। हाजीपीर के दर्रे पर कब्जा करने से पहले उड़ी क्षेत्र की ११ हजार फुट ऊंची एक पहाड़ी पर कब्जा करना आवश्यक था। मेजर रणजीतसिंह दयाल की निर्भयता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीरता ने ही यह काम पूरा किया। उस क्षेत्र की पाकिस्तानी सेना मेजर दयाल के नाम से कांपती थी। पाकिस्तानियों ने मेजर को पकड़ने के लिए ५० हजार रुपये के पुरस्कार की घोषणा की थी। मेजर दयाल गले में हथगोलों की माला पहनकर युद्ध के मैदान में उतरते थे। उड़ी का कोई बच्चा, जवान, नहीं, जिसकी जबान पर मेजर के परा-क्रम की कहानियां न हों।

यह प्रसंग है राजस्थान की भुट्टनवाला चौकी का। यहां जब पाकिस्तानी फौजियों ने हमला किया, तो भारतीय चौकी में स्थित थोड़े से जवान पहले तो अपने सीमित हथियारों से चौकी के अंदर से मुकाबला करते रहे; मगर जब उनके पास छर्रे नहीं रहे तो कांस्टेबल पूनमसिंह बाहर आ गया। वहां गोलियों की बौछार हो रही थी; मगर पूनमसिंह ने परवाह न की। वह उस बौछार के बीच मरे हुए पाकिस्तानियों की पेटी से गोलियां निकालने लगा। उसी समय शत्रु के एक हथगोले ने उसे घायल कर दिया। घायल शेर की तरह शत्रु दल पर टूटकर उसने तीन को धराशायी कर दिया और स्वयं भी प्राण दे दिये।

डेरा बाबा नानक क्षेत्र में नायक महेंद्र सिंह ने जब शत्रु के एक टैंक को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा, टैंक अपनी तोपों से गोले उगल रहा था। महेंद्र सिंह टैंक की आड़ में होकर उसके पिछली तरफ चला गया और फिर कूदकर टैंक पर चढ़ गया। ऊपर पहुंच-कर उसने एक हथगोला टैंक पर दे मारा। टैंक नष्ट हो गया। मगर ऐसा करते हुए उसका हाथ भी विस्फोट से उड़ गया।

वीरता की ऐसी सहस्रों घटनाएं हैं, जिन्हें भारतीय दादियां भारतीय बच्चों को सुनाया करेंगी। फौजी जवानों ने ही नहीं, फौजी इंजीनियरों और डाक्टरों ने भी हथेली पर जान रखकर जिस निष्ठा से अपने कार्य किये, उसकी मिसाल नहीं मिलती। शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच इंजीनियरों ने युद्धक्षेत्र की सड़कों की मरम्मत की। सिग्नल-दल ने तारें बिछाकर नये मोर्चे खोलने की सुविधा दी और शत्रु के क्रूर प्रहार से घायल जवानों की मरहम-पट्टी के लिए मोर्चे के अग्रिम भाग तक जाने में डाक्टरों ने शत्रु की बमवर्षा की परवाह नहीं की। मोर्चे तक रसद पहुंचाने का काम आर्मी सप्लाई कोर ने मृत्यु की चिंता छोड़कर किया।

हमारी सीमा के प्रहरियों ने माता के मस्तक को अपने पवित्र रक्त से रंगा है। हर सुबह का उगता हुआ लाल सूरज हमें उस रक्त की याद दिलायेगा। और हम सच्चाई की फौलादी तलवार लेकर यह प्रण करेंगे कि जो भी शत्रु माता का सिंदूर पोंछने को हाथ बढ़ायेगा, उसके हाथ काट दिये जायेंगे।

दीपावली के दिन हमें स्मरण रहे कि हमारी झोंपड़ियों व अट्टालिकाओं का शृंगार करनेवाले इन दीपों में हमारी सीमा के प्रह-रियों द्वारा समर्पित रक्त ही जल रहा है; और युद्धक्षेत्र की आंधियों में बुझे हुए दीपों की दिवंगत अमर ज्योति से ही हमारी धरती के दीपकों को उल्लास मिल रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखता हूं, तुम नववर्ष में क्या निश्चय करते हो। जो न बोले, उसे बुलाओ। जो न आये, उसके घर जाओ। जो रूठा हो, उसे रिझाओ। और यह सब उसके भले के लिए नहीं, अपने भले के लिए करो। दुनिया लेनदार है। हम उसके देनदार हैं। —बापू

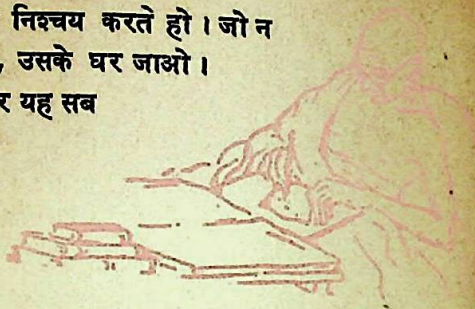

भारत के दो प्रतिनिधि

प्रो० निर्मल कुमार बोस

कवि रवींद्रनाथ ठाकुर का गांधीजी और जवाहरलालजी दोनों से निजी और निकट का परिचय था; साथ ही उनका मानस भावुकता के संकुचित बंधनों से अपेक्षाकृत मुक्त भी था। यद्यपि वे भारत को स्वाधीन राष्ट्र बनते नहीं देख पाये और न यही कि प्रधान मंत्री के रूप में जवाहरलालजी ने किस प्रकार भारत का भाग्य-निरूपण करने का प्रयत्न किया; तो भी अपने जीवन-काल में देश की राजनीतिक हलचल को रूप और रुख देने में हाथ बंटानेवाले इन दो व्यक्तियों को परस्पर तोलकर देखना उनके लिए संभव था।

एक बार खानगी बातचीत के दौरान उन्होंने इन दोनों की भिन्नताओं का चित्र खींचा था; और मेरा विश्वास है कि उनका मूल्यांकन तत्वतः सही था— हालांकि कवि के जीवन-काल में जवाहरलालजी अभी अपने पूरे कद पर नहीं पहुंचे थे।

कवि ने कहा था कि कुछ बातों में जवाहरलालजी नवीन भारत की स्पिरिट का गांधीजी से अधिक सही प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत की वफादारी अपने ऐतिहासिक अतीत तथा आधुनिक जीवन की मांग दोनों के बीच बंटी हुई है। अपनी विराट् समस्याओं से परेशान, अपने ही प्रति संकुचित कुल तथा 'आधुनिक विज्ञान की स्पिरिट' को आत्मसात् किये बिना निस्तार नहीं है। इस तथ्य से अवगत नवीन भारत का गांधीजी से अधिक सच्चा प्रतिनिधित्व जवाहरलालजी करते हैं।

कवि बोले—गांधीजी निःसंदेह भारत की मूर्तिमंत आत्मा हैं; किंतु यह आत्मा सनातन भी है, अर्थात् भारत की अतीत या वर्तमान परिस्थितियों से बंधी हुई नहीं है। गांधीजी ने अतीत और वर्तमान की परि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थिति को मन से स्वीकार तो किया है; किंतु अपनी तपोमय सत्यनिष्ठा और दलित मानवता के प्रति उतनी ही तीव्र हितचिंता के द्वारा वे उससे ऊपर उठने में भी सफल हो गये हैं।

जब कवि ने थोड़े-से लोगों के बीच ये बातें कही थीं, तब लेखक भी वहां उपस्थित था; और उसने कवि के देहावसान के पांच साल बाद, बातचीत के सिलसिले में यह बात स्वयं गांधीजी को सुनायी। आधी हंसी और आधी गंभीरता में गांधीजी ने उत्तर दिया—"गुरुदेव सरासर गलती पर थे।" गांधीजी ने आगे जो कुछ कहा, उसका सार यों है:

"बेशक हृदय से जवाहरलाल हिन्दुस्तानी हैं; लेकिन वे कहीं ज्यादा 'अंग्रेज' हैं; जबकि मैं खरा हिन्दुस्तानी हूं। अगर मुझे अपना बाकी जीवन हिन्दुस्तान में कहीं भी एक छोटे-से गांव में बिताना पड़े, तो मैं वहां के लोगों के साथ उनके छोटे-छोटे सुखों व दुःखों में डूबकर जीऊंगा। और ऐसा करते हुए मुझे क्षणिक भी अफसोस न होगा; बल्कि तृप्ति होगी। अपने आस-पास सफाई कैसे रखी जाये, परिवार और पड़ोस के विवाद बिना लड़ाई-झगड़े के कैसे निपटाये जायें, मुख्यतः गांव के ही साधनों और शक्ति के द्वारा गांव को कैसे सब प्रकार से समृद्ध बनाया जाये—यह सब मैं उन्हें सिखाऊंगा। फिर भी मुझे कभी ऐसा नहीं लगेगा कि मेरी योग्यताओं का उपयोग नहीं हो रहा है। मगर जवाहरलाल की बात और है। उन्हें काम करने के लिए अधिक व्यापक क्षेत्र चाहिये। मौजूदा छोटे काम में उलझ जाना पड़े, तो उन्हें अच्छा नहीं लगता।"

हम नहीं जानते कि दोनों में से कौन सही थे—गांधीजी या कवींद्र। मगर इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि आधी हंसी और आधी गंभीरता में गांधीजी ने जो कुछ कहा, उसमें काफी ठोस सत्यांश था। क्योंकि सचमुच जवाहरलालजी का दृष्टिकोण मूलतः बुद्धिजीवी का दृष्टिकोण था। अपने तात्कालिक व्यवहारों व कार्यों को सही परिप्रेक्ष्य में देखने के लिए उन्हें हमेशा विशाल और विश्वव्यापी नजारे की आवश्यकता थी। लेकिन हर बुद्धिजीवी की तरह वे उपस्थित व्यावहारिक काम-काज के तकाजों से खीज उठते थे। प्रधानमंत्री के भाषणों और लेखनों में अपने देशवासियों में छायी जड़ता—युगों पुरानी दासता और योजनाबद्ध उत्साह-मर्दन से उत्पन्न हुई जड़ता के प्रति बेसब्री के स्वर सुनाई देते थे।

अंधेरा क्या है? किसी बात को खुले दिलो-दिमाग से न सोचना।
—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर गांधीजी को भी उसी पीढ़ी के लोगों से काम लेना पड़ा। और वे उनसे वीरता के महान काम करवा सके। जैसा कि एक बार गोखले ने उनके बारे में कहा था, गांधीजी मिट्टी से वीर गढ़ सकते थे। और यह इसलिए संभव हुआ कि लोगों के प्रति उनका प्यार कभी टूटता नहीं था, वे उनकी कमजोरी और शक्ति दोनों को जानते थे। इस मामले में वे हाल के सभी भारतीय नेताओं से बढ़कर थे।

जवाहरलालजी ऐसे आदमी थे, जो खास भारत के बजाय सारे विश्व के नागरिक थे। वर्तमान युग के अन्य अनेक बुद्धिजीवियों की तरह वे भी विचारों की दुनिया में जीते थे। हालांकि भीतर से वे उन लोगों से तादात्म्य अनुभव करते थे, जो मर-खटकर श्रम करते हैं, मगर उसके फल से वंचित कर दिये जाते हैं। लेकिन यह तादात्म्य मानसिक स्तर पर ही था, दैनिक जीवन के स्तर पर बहुत ही कम।

आज हमारे शहरों में ऐसे बुद्धिजीवी इने-गिने ही हैं, जिन्हें मानवीय क्षुद्रता के गहरे कीचड़ में से चलना पड़े और उसके बाद भी जिनमें ऐसा तादात्म्य शेष रह जाये। और यह बात भारत सरीखे कष्ट-क्लेश निर्धनताग्रस्त देश में और भी अधिक सच है, जहां लोगों के पास अपना सिर ऊंचा रखने के लिए मौखिक परंपरा द्वारा युगों से जीवित रखी हुई सब्र व धीरज की कथाओं के सिवा कुछ भी नहीं है। और निस्संदेह हमारे प्रधान मंत्री उन थोड़े-से बुद्धिजीवियों में से एक थे।

यह सब जवाहरलालजी को छोटा बनाने का प्रयास नहीं है। इसका आशय यह दिखाना है कि वे आधुनिक शहरी भारत की चेतना का उससे कहीं अधिक सही प्रतिनिधित्व करते थे, जैसा गांधीजी कभी कर पाते। गांधीजी उन लोगों के बीच अपने को खोया-खोया-सा महसूस करते थे, जिन्हें वे 'शहराती' कहा करते थे। निस्संदेह वे भारत की माटी के अधिक निकट थे और जिसे हम 'आधुनिक मनुष्य' कहते हैं। उससे ज्यादा वे संत थे। इसके विपरीत, जवाहरलालजी अपने देशवासियों के इस वर्ग में प्रेरणा और स्फूर्ति भरने में समर्थ थे—जहां तक गांधीजी इसमें असफल रहे थे।

और हम भारतवासी अपने को भाग्यशाली मानते हैं कि पुण्य से हमें ऐसा नेतृत्व उपलब्ध हुआ, जिसमें ऐसे दो महापुरुषों ने साथ मिलकर काम किया, जिससे अंत में भारत स्वतंत्र हुआ और आधुनिकता एवं प्रगति के पथ पर मजबूत कदमों से चल पड़ा। 'इकनामिक वीकली' से साभार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे मृत्यु से मिलने जाना है

केनेडी के जीवन की एक मार्मिक झांकी आर्थर श्लेसिंजर द्वारा प्रस्तुत

और तब एक दिन वाशिंग्टन में किसी के यहां केनेडी का परिचय जैकलीन बूविर से कराया गया। विदा होने से पहले, अलावरी के गमले पर झुकते हुए केनेडी ने जैकलीन से पूछा—"अच्छा तो अब फिर किस रोज मिलेंगी?"

जैकलीन निहायत खूबसूरत युवती थीं—बड़ी कुतूहली, तेजस्वी व बुद्धिमान और हर चीज में बहुत ऊंचे स्तर की अपेक्षा करनेवाली। १९५१ में वे 'वोग' पत्रिका में एक लेख लिखकर 'प्री दे पारी' पुरस्कार जीत चुकी थीं। अंतर्राष्ट्रीय समाज में उनका बहुत उठना-बैठना होता था; अंतर्राष्ट्रीय कला की वे चर्चा किया करतीं। तभी तो जर्नार्डि वेरेन्सन ने उन्हें चेतावनी दी थी—"बमरीकी लड़कियों को बमरीकी लड़कों से ही विवाह करना चाहिये; वे ज्यादा टिकते हैं।"

किंतु केनेडी जैकलीन के लिए एक नया ही अनुभव सिद्ध हुए। उन्होंने खोद-खोदकर ऐसे सवाल पूछे, जैसे जैकलीन ने आज तक किसी के मुंह से नहीं सुने थे। अपना बचाव करने के लिए वे भी सवाल पूछने लगीं। एक दिन केनेडी से उन्होंने पूछा—"आप अपनी परिभाषा क्या कीजियेगा?" केनेडी बोले—"एक भ्रममुक्त आदर्शवादी।"

और फिर १९५३ में अपने विवाह से एक दिन पहले जैकलीन पूछ बैठीं—"तुम्हारी अपनी नजर में, तुम्हारी सबसे बड़ी खूबी और सबसे बड़ी खराबी क्या है?" केनेडी ने उत्तर दिया कि उनके खयाल में जिज्ञासा उनकी सबसे बड़ी खूबी है और चिड़चिड़ापन सबसे बड़ी खराबी।

चिड़चिड़ापन से उनका मतलब था कि जी को उबानेवाली, अतिसाधारण और वैशिष्ट्यहीन चीजों से खीज उठना। और जिज्ञासा से उनका अभिप्राय केवल बौद्धिक सजगता ही नहीं था; उनका तात्पर्य उस तीव्र भूख से था, जिसकी यह मांग थी कि जीवन सांद्र हो, विशद हो परिपूर्ण हो।

ये सब बातें उनके नाजुक

१९६५

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वास्थ्य से जुड़ी हुई थीं, जिसे विश्वयुद्ध की दुर्घटनाओं ने तबाह कर दिया था। शायद उसी के कारण उनके जीवन में एक प्रकार की तीक्ष्णता आ गयी थी, हर चीज का रसानुभव करने की तत्परता के साथ यह भावना भी पैदा हो गयी थी कि वक्त बहुत थोड़ा है।

डाक्टरों ने केनेडी को बताया था कि उन्हें 'एडिसन रोग' यानी एड्रेनल ग्रंथि का क्षय है। १९४६ से १९४९ तक उन्हें कार्टिसोन का सेवन कराया जाता रहा। एक रोज जो आल्सोप ने उनसे पूछा कि कभी-कभी उनकी त्वचा एकदम हरी-हरी क्यों दिखाई देती है? केनेडी ने इसका जवाब ऐसे लहजे में दिया, जैसे कोई सामान्य काम-काजी बात कह रहे हों। बोले—"डाक्टरों का कहना है, मुझे 'ल्यूकेमिया' है। परंतु वे यह भी कहते हैं कि मैं पैंतालीस की उम्र तक जीवित

रहूंगा। सो इंजेक्शन लगवाने के समय को छोड़कर मैं कभी इस बारे में नहीं सोचता।"

बाद में पता चला कि उन्हें असली बीमारी 'एडिसन रोग' यानी एड्रेनल ग्रंथि की तो दिक नहीं थी—दरअसल उन्हें कभी किस्म की तपेदिक नहीं हुई। यह भी चला कि एड्रेनल की तकलीफ उन्हें युद्ध काल में सहे शारीरिक कष्टों और मलेरिया के कारण हुई थी, और आधुनिक चिकित्सा विधियों के रहते वह कोई बहुत खतरनाक शिकायत नहीं थी।

जैकलीन को अच्छी तरह याद है, उनका प्रेम-प्रकरण चल रहा था, तब केनेडी प्रायः बैसाखी के सहारे चला करते थे। उनकी पीठ के दो आपरेशन भी हुए; मगर विशेष लाभ नहीं हुआ। इन्होंने उन्हें और भी कमजोर बना दिया। बाद में केनेडी इस नतीजे पर पहुंचे कि ये आपरेशन अनावश्यक थे। मगर इसका उन्हें कोई मलाल नहीं था।

सन १९५५ में केनेडी ने न्यूयार्क के विशेषज्ञ डा० जेनर ट्रैवल का इलाज शुरू किया। इन्हींने जांचकर पहले-पहल बताया कि केनेडी की बायीं टांग दायीं टांग से पौन इंच छोटी थी। इस यांत्रिक खराबी ने उनकी रीढ़ की कमजोरी को बहुत उग्र बना दिया था; किंतु अब तक चिकित्सकों का ध्यान इस ओर नहीं गया था। यानी अब तक केनेडी जब भी कदम उठाते-धरते, उनकी रीढ़ हिचकोला-सा खा जाती थी और रीढ़ की मांसपेशियों पर निरंतर भयंकर जोर पड़ता आ रहा था।

उनके लिए खास प्रकार के जूते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बने, जिसमें बायीं एड़ी जरा ऊंची और
जरा घिसी हुई थी। अब वे एक छोटा-
छड़ी भी बांधते थे। भोजन में वे खास
परहेज रखने लगे, जिसका उद्देश्य खून में लोहे
मात्रा बढ़ाना था। डा० ट्रैवल की चिकि-
से उनका जीवन ही बदल गया। इतने
समय में उनकी पुरानी शक्ति और
लौट आयी कि आश्चर्य होता था।
इस अग्नि-परीक्षा में से केनेडी पहले से
लक्ष्यवान, ध्येयनिष्ठ और सशक्त
निकले और अब उन्हें देखने पर बढ़ती
शक्ति और गुरुता का प्रभाव पड़ता था।
किंतु इससे वे अपने विषय में ज्यादा
सवादी भी हो चले। अक्टूबर १९५३
विवाह-यात्रा से लौटने पर केप काड
उन्होंने अपनी तरुण पत्नी को अपनी
से प्रिय कविता पढ़कर सुनायी थी।
जैन ने इसे कंठस्थ कर डाला और इसे
के मुख से सुनना केनेडी को बहुत ही
था। कविता एलेन सीगर की है.
क है-'मुझे मृत्यु से मिलने जाना है।'
मृत्यु मेरा हाथ पकड़ ले
मुझे अपने अंधकारमय राज्य में
जाने
मेरी आंखें मूंद दे, सांस रोक दे ;
मुझे मृत्यु से मिलनेज ाना है।
रात को लपटों से घिरे जलते
में
इस वर्ष फिर वसंत उत्तर में उतरेगा—
में वचन का पक्का हूं
मिलन से नहीं चूकूंगा। * * *

अंतिम निवेदन

तुम्हारे समक्ष यह मेरा अंतिम निवेदन है—
अंतर की गहराई में बसी मेरी सारी क्षीणता को
दृढ़ बल से काट डालो मेरे प्रभु!
सुख के साथ मुझे ऐसा बल दो कि
सुख को मैं कठोर बना लूं।
दुःख में मुझे ऐसा बल दो कि
दुःख अपने मुख पर शांत स्मित फैलाकर
स्वयं अपनी उपेक्षा कर सके।
मेरी भक्ति को ऐसा बल दो, जिससे
वह कर्म में फलित हो,
और उसका स्नेह पुण्य-रूप में खिले।
मुझे ऐसा बल दो जिससे
मैं क्षुद्र-जनों को हीन न समझूं,
बल के चरणों में सिर न झुकाऊं।
मुझे ऐसा बल दो जिससे
मैं अपने चित्त को दैनंदिन तुच्छता से
विलग रख सकूं।
मुझे ऐसा बल दो जिससे मैं तुम्हारे
चरणों पर सिर रखकर—
अहर्निश अपने को स्थिर रख सकूं।

—रवींद्रनाथ ठाकुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे नौजवान दोस्तो!

सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हें अ
इच्छा को मजबूत बनाना होगा और
सिखाना होगा कि वह जब-तब अंधी
रूप में फूट निकलने के बजाय, मुसलसिल मेहनत की अटूट धार के रूप में प्रकट हो,
वह उन मकसदों को हासिल कर सके, जो आनन-फानन में हासिल नहीं हो जाते। तुम्हें
विवेक को ट्रेनिंग देनी होगी, ताकि जिन मामलों में अपनी राय खुद बनाना लाजिमी
उनमें तुम अपनी स्वतंत्र राय बना सको। तुम्हें अपनी दृष्टि विशाल बनानी होगी,
तुम दूसरे के नुक्ते-निगाह को देख सको और उसे अपनाने या छोड़ने के पहले, ठीक
समझ सको। तुम्हें अपने प्रति सच्चा रहना, अपना असली स्वरूप कायम रखने
कोशिश करना—यानी नकल के बजाय असल बने रहना—सीखना होगा।

तुम्हें खुद निर्णय करने और मुसलसिल काम करने का माद्दा, आजादी और
ष्णुता से लगाव, तथा ताकत के बजाय रजामंदी को तरजीह देने की आदत विकसित
होगी। तुम्हें व्यापक हमदर्दी और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना और सबकी
भलाई के लिए अपने स्वार्थ या अपने तबके के हित को भुला देने की तैयारी अपने में
होगी। तुम्हें अपने चारों ओर के जीवन में सच्ची दिलचस्पी और उसे अधिक अच्छा
में अपना योगदान देने की दिली ख्वाहिश पैदा करनी होगी।

थोड़े में कहें, तो तुम्हें अपने आपको गढ़ना होगा और अपने साथ तुम जो निजी
यतें लेकर आये हो, उनकी नींव पर तुम्हें सामंजस्यपूर्ण, अडिग और संवेदनशील चरि
निर्माण करना होगा। और इस चरित्र को तुम जिंदगी के किन्हीं ऊंचे मकसदों को
करने में लगा दोगे। इस तरह तुम्हारे जीवन का एक मतलब व मकसद होगा, उसकी
सार्थकता होगी, जो सिर्फ क्षणिक नहीं होगी। और इससे तुम एक नैतिक व्यक्ति
जाओगे। व्यक्ति से चरित्र और चरित्र से व्यक्तित्व—यह अच्छे इंसानी जीवन की तकदीर

यही वक्त है कि तुम इस साहस-यात्रा पर निकल पड़ो—अगर अभी तक तुम
नहीं चुके हो तो। यों अभी तुम जवान हो और सारी जिंदगी तुम्हारे सामने खुली पड़ी
तुम उसे अपने कामों और कामयाबियों से भरो।

फिर भी वक्त बहुत तेज भागता है, और जो लम्हा
गुजर गया, वह फिर हाथ नहीं आता। इस मौके
को हाथ से न जाने दो।

तुम्हारा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैसे-कैसे लोग !

महान प्रकाश-पुंज

—मोहनसिंह सेंगर

कोई २५ वर्ष पहले कलकत्ता पहुंचने पर मैंने पहले-पहल डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी को देखा था। उनकी योग्यता, निष्ठा और कर्मठता का तो मैं पहले से ही कायल था; पर चूंकि वे हिन्दू-महासभावादी थे और कांग्रेस के खिलाफ—जबकि मैं राष्ट्रीयता और धर्म-निरपेक्ष राजनीति का समर्थक था—उनके प्रति मेरा विशेष झुकाव नहीं हुआ। पर यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य जरूर हुआ कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति-पद से हट जाने पर भी विश्वविद्यालय के संचालन में उन्हीं का प्रमुख हाथ रहता था। इसी प्रकार मंत्रि-मंडल से हटाये जाने पर भी बंगाल के सार्वजनिक जीवन में वे सर्वोपरि थे। बंगाल की जनता पर उनका प्रभाव जादू का-सा था।

जब श्यामा बाबू हिन्दू-महासभा के बिलासपुर-अधिवेशन के अध्यक्ष हुए, तो उन्होंने अपना भाषण तैयार तो अंग्रेजी में ही किया; पर उसे देना वे हिन्दी में चाहते थे। (अखंड भारत और हिन्दू-एकता के समर्थक होने के कारण वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे।) उन्होंने 'मार्डन रिव्यू' और 'प्रवासी' के संपादक श्री रामानंद चट्टोपाध्याय से कहा कि वे किसी से उसका हिन्दी-अनुवाद करा दें। मैं उन दिनों 'विशाल भारत' में काम करता था, जिसके संचालक रामानंद बाबू थे। जब उन्होंने श्यामा बाबू का अनुरोध मुझे बताया और कहा कि अनुवाद के लिए वे पर्याप्त पारिश्रमिक भी देंगे, तो मैंने उनसे निवेदन किया कि मैं कांग्रेस का समर्थक और धर्म-निरपेक्षतावादी हूं, अतएव एक सांप्रदायिक संस्था के प्रधान का भाषण—जिसमें अवश्य ही कांग्रेस की आलोचना होगी—तैयार करने-कराने में किसी भी मूल्य पर कोई सक्रिय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहयोग नहीं दे सकता। रामानंद बाबू स्वयं बड़े उदारचेता और वैयक्तिक स्वतंत्रता के हामी थे, अतः उन्होंने इसे बुरा न माना और यह बात श्यामा बाबू तक पहुंचा दी। उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई, यह मुझे नहीं मालूम।

इसके कुछ ही दिनों बाद एक अंधे प्रोफेसर सुबोध राय के प्रयत्न से कलकत्ते में वयस्क अंधों के प्रशिक्षण के लिए 'अंध-आलोक-निकेतन' (लाइट हाउस फार दि ब्लाइंड) नाम संस्था की स्थापना हुई। मेरी भी इस दिशा में कुछ रुचि थी; अतः पहले मैं उसकी कार्य समिति का सदस्य और फिर अवैतनिक मंत्री बना। उसके अध्यक्ष थे लार्ड सिंह और उपाध्यक्ष श्यामा बाबू। चूंकि लार्ड सिंह का अधिक समय विलायत में ही बीतता था, समिति की बैठकों की अध्यक्षता प्रायः श्यामा बाबू ही करते थे। उनकी प्रखर बुद्धि, असाधारण प्रतिभा साहस, असाधारण कार्य-क्षमता आदि का कुछ प्रत्यक्ष परिचय इन्हीं बैठकों में मिला। किसी काम में समिति को अन्य अवसरों पर घंटों लगते थे, श्यामा बाबू की उपस्थिति में उसका निर्णय मिनिटों में हो जाता था। निर्णयों को अविलंब कार्य रूप में परिणत करना और हरएक पर उनकी प्रगति की खोज-खबर रखना कोई उनसे सीखता।

जब मैं अंध-आलोक-निकेतन का मंत्री हुआ, तो बैठकों के अतिरिक्त भी मुझे श्याम बाबू के घर पर उनसे प्रायः मिलना पड़ता था। उनका घर एक तरह से एक सार्वजनिक संस्था ही बन गया था। जब कभी भी मैं वहां गया, उनका दरबार भरा ही पाया। मुझे यह देखकर प्रायः आश्चर्य होता था कि मंत्रि-पद पर न रहने पर भी उनकी कार्य-क्षमता और अधिकार पूर्वक सरकारी अधिकारियों को आदेश देने की प्रवृत्ति में कभी कोई अंतर नहीं आता था। सभी जैसे उनके आदेश को सिर-आंखों पर लेने को सदा तत्पर रहते थे।

एक बार की घटना तो मुझे कभी भी नहीं भूलेगी। शाम के कोई ६-७ बजे जब निश्चित समय पर मैं उनसे मिलने पहुंचा और अपनी बात शुरू ही की थी कि किसी का फोन आया। फोन पर किसने क्या कहा, यह तो मैं नहीं सुन पाया; पर क्षण-क्षण तमतमाते श्यामा बाबू के चेहरे को देखकर मुझे लगा कि जरूर कोई गंभीर बात होगी। टेलिफोन चोंगा रखकर वे एक मिनिट कुछ सोचते रहे, फिर उठते हुए बोले—"टालीगंज में पुलिस पूर्वी पाकिस्तान से आनेवाले शरणार्थियों को हटाने के लिए उनके झोंपड़ों में आग लगा रही है और शायद उन पर लाठी-चार्ज भी किया है। आप चाहें, तो गाड़ी में मेरे साथ चलें। रास्ते में बातें कर लेंगे।" मुझे सब कुछ देखने-जानने का ऐसा सुअवसर भला कब मिल सकता था। मैं उनके साथ हो लिया। वहां जाकर उन्होंने पहले तो जहां-जहां आग सुलग रही थी, उसे बुझवाने का काम करवाया और फिर लोगों से सारा हाल मालूम किया। उस समय वहां कोई बड़ा पुलिस-अधिकारी नहीं था। जो था, उसे बुलवाकर उन्होंने ऐसा झाड़ा कि जैसे शायद कोई गृह-मंत्री भी न झाड़ता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर घर लौटकर उन्होंने पुलिस-कमिश्नर को फोन किया और उसे तत्काल हाजिर होने की ताकीद दी। थोड़ी देर बाद उसके आने पर उन्होंने उसे बुरी तरह आड़े हाथों लिया। कहा–"ये बेचारे घर-बार खोकर गली-रास्तों पर पड़े हैं। तुम्हें शर्म नहीं आयी इनके झोंपड़े जलाते और इन पर लाठियां चलाते? क्या तुम्हारे मां-भाई-बहन नहीं हैं?" उसके यह कहने पर कि शरणार्थियों ने न सिर्फ गैरकानूनी रूप से दबायी हुई जमीन पर से हटने से ही इन्कार किया, बल्कि पुलिस का प्रतिरोध किया और उस पर पत्थर भी फेंके, श्यामा बाबू ने कुछ आवेशपूर्वक कहा –"जिस मानसिक स्थिति में ये सर्वहारा हैं, क्या तुमने कभी अपने आपको उसमें रखकर सोचा है?" कमिश्नर ने निरुत्तर होकर माफी मांगी और भविष्य में इस दिशा में और अधिक सावधानी बरतने का आश्वासन दिया।

इस तरह की बातें श्यामा बाबू के जीवन का दैनंदिन काम बन गयी थीं। पहले पश्चिम बंगाल में और फिर केंद्रीय सरकार में मंत्री होने के दौरान तो उनके इस काम में और भी तेजी आ गयी थी। न जाने कितने दीन, दुःखी और असहायों की उन्होंने बिना किसी परिचय, वसीले या सिफारिश के मदद की है, इसे कम ही लोग जानते होंगे। ढाका में जब एक बार कुछ हिन्दू मुसलमानों के आतंक से अत्यधिक संत्रस्त थे, तो बंगाल के मुस्लिम-लीगी मुख्यमंत्री द्वारा स्पष्ट रूप से यह कह दिये जाने पर भी कि उनकी जान की रक्षा के लिए सरकार जिम्मेदार नहीं है, वे बिना अपने प्राणों का मोह किये नर-नाहर की तरह अकेले ही वहां पहुंचे गये। यही दुर्दम साहस उन्हें कश्मीर भी ले गया, जो उनका प्राणलेवा साबित हुआ।

उस्ताद रंगा सिंह

—नानक सिंह

काफी पुरानी बात है–पहले विश्वयुद्ध के समय की। तब मैं पेशावर में रहता था। संगीत के शौक को आगे बढ़ाने के लिए मुझे उस्ताद रंगा सिंह की शागिर्दी करनी पड़ी थी।

उस्ताद रंगा सिंह एक हारमोनियम फैक्टरी के मालिक थे। काम-काज जोरों पर था। दस-बारह कारीगर उनके यहां काम करते थे। साथ ही वे खुद भी एक मंजे हुए संगीतज्ञ थे। दूर-दूर तक उनकी धाक जमी हुई थी। वे हास्य के भंडार और हाजिरजवाबी में अद्वितीय थे।

समय पाकर दोनों का उस्तादी-शागिर्दी का रिश्ता मित्रता में बदल गया। उनके घर मेरा काफी आना-जाना था। पत्नी थी और दो लड़के थे उनके। बड़ा ही भाग्यशाली परिवार था। आमदनी सात-आठ सौ प्रतिमास से कम नहीं थी। उनके सौभाग्य पर ईर्ष्या होती थी।

तभी उस्ताद रंगा सिंह के जीवन ने ऐसा पलटा खाया कि उनका सौभाग्य दुर्भाग्य में बदल गया और इतनी द्रुत गति से कि विश्वास कर पाना कठिन। अनायास ही उन्हें शराब की बुरी लत पड़ गयी और देखते-ही-देखते सारी शान-शौकत मिट्टी में मिल गयी।

एक मित्र के नाते मैंने उन्हें बहुत समझाया। उनकी पत्नी ने रो-रोकर सिर के बाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोंच डाले, दूसरे मित्रों ने भी कुछ कम यत्न नहीं किया; परंतु मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। तभी एक दिन पता चला कि उस्ताद रंगा सिंह रूपोश हो गये हैं। कहां गये? कोई नहीं जानता था। बेचारी पत्नी अपने दोनों लड़कों को लेकर मैके चली गयी। फैक्टरी को पावनेदारों ने कुर्क करवा दिया और सब मामला साफ! उसके बाद एक लंबे समय तक उस्ताद रंगा सिंह के बारे में किसी को कोई सूचना नहीं मिली। सब लोग उन्हें भूल गये।

पेशावर छोड़कर मैं अमृतसर आ बसा और इसी बीच एक दिन क्या देखता हूं कि उस्ताद रंगा सिंह सामने से चले आ रहे हैं। हुलिया एकदम बिगड़ा हुआ, मुंह से लार टपक रही, आंखें सूजी और गढ़ों में घुसी हुईं। चिथड़ों में लिपटा हुआ कंकाल-सा शरीर देखकर मेरे कलेजे में हूक-सी उठने लगी। आगे बढ़कर मैंने उन्हें पहचान लिया—"अरे उस्तादजी आप! इतनी मुद्दत कहां गुजारी?"

"कारपेंटरों में भर्ती होकर बसरा चला गया था।" और उस्ताद रंगा सिंह विगत बारह वर्ष की अपनी जीवन-गाथा सुनाने लगे। दुःख या पश्चाताप कहीं नाम को नहीं था, वही हंसोड़पन का लहजा, वही बात-बात में चुटकियां लेने की शैली! इस फटेहाल में भी उस्ताद रंगा सिंह ने पीने की लत नहीं छोड़ी थी!

"अच्छा नानक सिंह," वे साग्रह बोले—"मुझे एकाध रुपया तो देना। स्पिरिट की आधी बोतल लानी है मुझे।"

"क्या पालिश का काम करने लगे उस्तादजी?"

"अरे भाई, कौन काफिर पालिश-वालिश का खटराग करता है, पीने के लिए चाहिए पीने के लिए।"

"पीने के लिए! तो क्या स्पिरिट पीने लगे हैं आप?"

"तुम जानते ही हो कि घावों को स्पिरिट से साफ किया जाता है। करने से सड़ने लगते हैं। और मेरे दिल पर भी तो ऐसा ही एक घाव है। पूछो तो इसी घाव की बदौलत मैं वहां से यहां तक आ पहुंचा हूं।"

बात मेरी समझ में कुछ आयी थी और कुछ नहीं भी आयी। मेरे पूछने पर बोले—"पूछते हो किसने लगाया घाव? अरे वही तो मेरी चहेती शागिर्द सुनीता, जिसने मुझे मुहब्बत की छत पर चढ़ाकर पैरों तले से सीढ़ी खींच ली। ...अच्छा, अब कुरेदो मत इस घाव को और ढीला करो रुपया। तीन दिन से नहीं पी है—खुमार के मारे शरीर फटा जा रहा है।"

मेरा दिल धक्क-से रह गया अपनी गुरु-बहन—पेशावर के करोड़पति की उस इकलौती 'सुनीता' का नाम सुनकर। सोचने लगा, तो उसी नटखट छोकरी ने संगीत सीखते-सीखते अपने गुरु का सर्वनाश कर डाला!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम की मौजूदगी में कालेज के एक कमरे में विद्यार्थियों की आपस में तकरार हो गयी। कालेज के प्रेसिडेंट के पास मुकद्दमा गया। प्रेसिडेंट ने उस कमरे में सारा काम बंद करा दिया और पियानो बजाना शुरू कर दिया। पंद्रह मिनिट में मुकद्दमे का फैसला हो गया। यानी खुद-ब-खुद सुलह हो गयी। वाह! जिनके अंदर शांति-रस भरा है, बाहर की मूसीकी (संगीत) उनके अंदर की सुलह और अमन को उकसाने के लिए काफी बहाना हो जाती है। और कैसा इंतजाम है, हवा में सतोगुण भर दिया; दिल की खटपटाहट आप ही रफा हो गयी।

—स्वामी रामतीर्थ

तभी मझे अपनी गुरुआइन की याद हो आयी। मैंने पूछा—"अच्छा, यह तो बताइये उस्ताद्जी, आपकी धर्मपत्नी आजकल कहां हैं!"

"वह तो हमेशा मेरे संग रहती है। दिखाऊं?" और चिथड़े-से कोट की जेब में से एक चौकोर खाली बोतल निकालकर मुझे दिखाते हुए वे 'ही-ही' हंसने लगे।

कह नहीं सकता कि मुझे उन पर क्रोध अधिक हो रहा था या दया। पर मेरी आंखों से आंसू न रुक सके। जेब से एक नोट निकालकर उनकी ओर बढ़ा दिया।

नोट पकड़ते हुए वे अपनी उस चौकोर बोतल के साथ इस शेर द्वारा मानो बातें करते हुए दो दो ग्यारह हो गये :

मैं तुझे बाकी न छोड़ूं, तू मुझे बाकी न छोड़।
मैं तेरी हस्ती मिटा दूं, तू मेरी हस्ती न छोड़।

भाई हजारीलाल जैन

— बनारसीदास चतुर्वेदी

दीन क्या है, किसी कामिल की इबादत करना—चकवस्त। सुयोग्यों की पूजा ही मेरा धर्म रहा है। और देश-विदेश के पचासों ही महापुरुषों के रेखाचित्र मैंने प्रस्तुत किये हैं। उनकी गुणगाथा गाते-गाते मेरा मन नहीं अघाता; पर अब मेरा ध्यान जनपदीय कार्यकर्ताओं की ओर गया है और तथाकथित 'क्षुद्रों' में महत्व के दर्शन करके ही मेरे चित्त को आनंद मिलता है। ऐसे व्यक्तियों को हम ग्राम-देवता या नगर-पुरुष कह सकते हैं। भाई हजारीलालजी जैन ऐसे ही पुरुषों में थे। पिछली १० जुलाई को ५५ वर्ष की अवस्था में उनका स्वर्गवास हुआ है। एक बार भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू (तत्कालीन गवर्नर, उत्तर प्रदेश) ने उनसे कहा था—"इस संसार में भला किसके सपने पूरे हुए हैं? हजारीलाल, तुम्हारा स्वप्न पूरा हो गया।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निःसंदेह हजारीलालजी स्वप्नदर्शी थे। अपने नगर में एक सर्वश्रेष्ठ अस्पताल बनवा देने की उनकी आकांक्षा थी और वह उनके जीवन-काल में विधिवत् पूर्ण भी हो गयी। अठारह लाख की लागत से बना हुआ यह सरोजिनीदेवी-स्मारक औषधालय केवल सवा लाख की आबादी के फीरोजाबाद नगर की ही नहीं, आसपास के सहस्रों व्यक्तियों की भी सेवा करता है। उत्तरप्रदेश के बहुत-से जिलों में भी ऐसे अस्पताल न होंगे।

बी० ए०, एल० एल० बी० पास करने के बाद भी हजारीलालजी ने वकालत नहीं की। उन्होंने व्यापार किया, उसमें काफी सफलता उन्हें मिल सकती थी; पर उसे भी उन्होंने छोड़ दिया और तन-मन-धन से नगर की सर्वांगीण सेवा में जुट गये। राजनीति तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया; पर उनकी सर्वोत्तम कृति वह विशाल अस्पताल ही है। हजारीलालजी बड़े सच्चरित्र व्यक्ति थे। वे कबीर की इस उक्ति के अनुयायी थे:

कबिरा आप ठगाइये और न ठगिये कोइ। आप ठगें सुख ऊपजे, और ठगें दुख होइ।

वे अजातशत्रु थे। सभी संप्रदाय के व्यक्तियों में उनके प्रति श्रद्धा थी। वे उच्च कोटि के साहित्यप्रेमी थे और उनकी उपस्थिति से किसी भी कवि-सम्मेलन या मुशायरे का गौरव बढ़ सकता था। सैकड़ों हिन्दी-उर्दू कविताएं उन्हें कंठस्थ थीं। पत्र लिखने में भी उन्हें असाधारण कुशलता प्राप्त थी। पं० गोविंदवल्लभ पंत ने एक बार मजाक में उनसे कहा था- "हजारीलाल, तुमने तो पत्र लिख-लिखकर ही विशाल अस्पताल बनवा लिया।"

सचमुच वे अपनी धुन के पक्के थे। उनमें केवल एक भयंकर त्रुटि थी—अपने स्वास्थ्य के प्रति सर्वथा उदासीन थे। उन्हें भांग पीने की आदत पड़ गयी थी और उसके बिना उनका काम नहीं चलता था। बदपरहेज भी वे अव्वल नंबर के थे। मधुमेह की बीमारी में भी वे मिठाई खाने से बाज न आते। हास्य-रस की मात्रा भी उनमें पर्याप्त थी और एक बार तो उन्होंने एक सार्वजनिक सभा में यह प्रस्ताव रख दिया था कि भांग को भारत का राष्ट्रीय पेय-पदार्थ घोषित कर दिया जाये।

यद्यपि हमारे नगर में अनेक लखपति हैं और एकाध करोड़पति भी; पर हजारीलालजी के गौरव को कोई नहीं पा सकता। वे तो दरिद्रनारायण के उपासक थे, लक्ष्मी के नहीं। हजारों माताएं उन्हें आशीर्वाद देती हैं और सहस्रों रोगी उनके नाम को स्मरण करते हैं।

गजब की निर्भयता

— श्रीपाद दा० सातवलेकर

जब मैं हैदराबाद से चलकर गुरुकुल कांगड़ी पहुंचा, स्वामी श्रद्धानंदजी ने मेरा बड़ा भारी स्वागत किया और मुझे वहीं चित्रकला एवं वेद के प्राध्यापक-पद पर नियुक्त कर दिया। वहीं मुझे स्वामी श्रद्धानंदजी के जीवन का सूक्ष्म अध्ययन करने का अवसर मिला। मैंने उनमें एक विलक्षण दृढ़ता, निर्भयता, परदुःखकातरता और देशभक्ति पायी। उन दिनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी यह संस्था बहुत लोकप्रिय थी और कई बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर स्वामीजी के निमंत्रण के लिए तरसते थे; पर स्वामीजी ने कभी भी उन फिरंगियों को गुरुकुल में पधारने का निमंत्रण नहीं दिया। तब कुछ अफसर स्वयं आये और स्वामीजी के कार्य की बड़ी प्रशंसा की। इस पर भी स्वामीजी ने फिरंगी सरकार से आर्थिक अनुदान के लिए भी प्रार्थना नहीं की।

उनके अंदर निर्भयता भी बड़े गजब की थी। इस विषय में एक घटना मेरे लिए अविस्मरणीय बन चुकी है। चूंकि गुरुकुल एक घने जंगल में था, अतः आये दिन हिंसक प्राणियों का भय बना रहता था। एक दिन अचानक गुरुकुल में शोर मच गया कि "शेर आया, शेर आया"। जिसने भी सुना, लदड़-पदड़ भागा। इधर शेर भी सीधा जाकर स्वामीजी के कार्यालय में उनकी मेज पर शान से विराजमान हो गया। जंगली हुआ तो क्या हुआ, आखिर था तो मृगराज ही! यह समाचार उड़ते-उड़ते स्वामीजी के कान तक भी पहुंचा। वे गरजे—"कहां है शेर?" लोगों ने बताया कि उनके ही कार्यालय में है। बस, वे चल पड़े खड़ाऊं चट-पट-चटपट करते। वे आगे-आगे सीना ताने, विद्यार्थी उनके पीछे दबे-दुबके। कार्यालय में पहुंचकर देखा, उधर शान से मृगराज बैठे थे, तो इधर से यतिराज भी बड़ी शान से पधारे। दोनों राजों की आंखें मिलीं; दो क्षण आंखों-ही-आंखों में कुछ बातें हुईं। मृगराज परास्त हो गये और बिलकुल चुपचाप मेज से उतरकर जंगल में विलीन हो गये।

बेजोड़ स्वतंत्र-मिजाजी

—डा० गोविंददास

नागपुर के बैरिस्टर अभ्यंकर को अनेक लोग भयंकर कहा करते थे। वे अपने डील-डौल के कारण भयंकर नहीं कहे जाते थे। वे भयंकर कहे जाते थे प्रधानतया अपनी वाणी के कारण। उनकी वाणी सचमुच भयंकर थी; केवल भाषणों में ही नहीं, वार्तालाप में भी।

श्री अभ्यंकर का गला लाउड स्पीकर से कम नहीं था। बिना लाउड स्पीकर के ही उनका भाषण हजारों लोग सुन सकते थे। उनके भाषण में कितनी गर्वोक्तियां, कितना निर्भय शब्द-प्रहार रहता था! और इसकी पूर्ण परिणति होती थी इस बात में कि वे स्वयं कितने बड़े हैं और उनके प्रतिस्पर्धी कितने छोटे! इन प्रतिस्पर्धियों का वे अत्यधिक घृणास्पद चित्र खींचा करते थे और उस चित्र को गालियों के भूषणों से सजाते थे।

श्री अभ्यंकर का और मेरा जेल के बाहर और जेल के भीतर, दोनों जगह बहुत साथ रहा है। सन १९२६ में वे नागपुर से तत्कालीन केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा के लिए स्वराज्य पार्टी की ओर से खड़े हुए। उनके विरुद्ध खड़े हुए रेस्पान्सिव या कोपरेशन पार्टी के डा० मुंजे। दोनों के बीच वाणी के माध्यम से कैसा घोर संग्राम हुआ! श्री अभ्यंकर ने डा० मुंजे पर गालियों की बूंदोंवाली वर्षा ही नहीं की, बल्कि बड़े से गाली रूपी ओलों की भी। जनता इसे सहन नहीं कर सकी और इन ओलों की वृष्टि ने डा० मुंजे के बजाय स्वयं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री अभ्यंकर की चुनाव रूपी फसल को नष्ट कर दिया।

लेकिन उनके सन ३० के सत्याग्रह-आंदोलन के भाषणों से बहुत स्फूर्ति मिली। उनका जेल-जीवन तीन बातों तक परिमित था—खूब खाना, खूब सोना और जेलवालों से खूब लड़ना। वे केवल वर्तमान में निवास करते थे, वर्तमान के बाहर उनके लिए कोई वस्तु नहीं थी, न कोई आदर्श और न उस तक पहुंचने के साधनों के संबंध में कोई विचार-सरणी! हां, एक आदर्श उन्होंने अवश्य निश्चित कर लिया था, वह था देश को स्वतंत्र कराने का। यह कोई छोटा आदर्श नहीं था। परंतु इससे भी वर्तमान का ही संबंध था। स्वराज्य-प्राप्ति के लिए गांधीजी जिन साधनों पर सबसे अधिक ध्यान देते थे, उनसे उनका कोई सरोकार न था।

वे महान साहसी थे। उनके सदृश साहसी व्यक्ति उस समय विरले ही थे और शायद वे उतने सुखी और संतुष्ट कभी न रहते थे, जितने युद्ध अथवा लड़ाई-झगड़ों में। मैं समझता हूं, अपने समय में उन्होंने जितना शोर मचाया, उतना किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं।

स्वराज्य की लड़ाई और उसमें काम करनेवाले साथियों की जब याद आती है, तो श्री अभ्यंकर का अनूठापन, उनकी बेजोड़ स्वतंत्र-मिजाजी भुलाये नहीं भूलती। परतंत्रता और दासता के दिनों में भी वे स्वभाव से—और स्वभाव से ही क्यों—मानो जन्मजात स्वतंत्र थे।

सहज आत्मीयता के प्रतीक

—विष्णु प्रभाकर

वे मोटे-से-मोटा खद्दर पहनते थे। रामनाम के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी। प्रतिदिन मोहल्ले के लड़कों को इकट्ठा करके वे 'रघुपति राघव राजाराम' गाते और गवाते थे। फिर उनको प्रसाद बांटते थे। हरिजनों के प्रति भी उनका वैसा ही प्रेम था। निरंतर उनको साफ रहने के लिए प्रेरित करते रहते थे। उन्होंने गांधीजी के आह्वान पर १९२०-२१ में नौकरी को लात मार दी थी। युवावस्था में ही पत्नी के देहांत हो जाने पर फिर शादी नहीं की और अपने दोनों छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल स्वयं ही की।

फिर भी वे स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरू के कट्टर विरोधी थे। उनका विश्वास था कि आर्य समाजी अछूतोद्धार की बात करते हैं; लेकिन वे किसी भी दृष्टि से अछूतों को अपने समकक्ष नहीं मानते। स्वामीजी ने तुलसीदास रामायण का विरोध भी किया था। यह उनको बहुत ही बुरा लगता था। 'चौराचौरी' कांड के बाद गांधीजी ने जिस प्रकार सत्याग्रह वापस ले लिया था, उससे उन्हें धक्का लगा था, और उनका गांधीजी से विश्वास उठ गया था। जवाहरलालजी भी गांधीजी के साथ थे, इसलिए वे उनके प्रति भी आशंकित हो उठे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ममता

वस्तुतः वे उग्रतावादी थे। एक बार जिस बात में विश्वास कर लेते थे, उसको लेकर किसी भी तरह का समझौता करने के लिए तैयार नहीं होते थे। ढोंग से उन्हें घृणा थी। इसी प्रकार अंग्रेजों को जब उन्होंने देश का शत्रु स्वीकार कर लिया। तो कैसे भी हो, हिंसा से या अहिंसा से, उन्हें देश से बाहर निकालना है। इसीलिए जब सुभाषचंद्र बोस ने फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की, तो वे तुरंत उसमें शामिल हो गये और आर्थिक दृष्टि से भी उसकी पूरी सहायता की। लेकिन 'रघुपति राघव राजा राम' और मोटा खद्दर उनसे कभी नहीं छूटे। सवेरे उठकर वे तुलसीकृत रामायण का निरंतर पाठ करते रहे। स्वर उनका मोटा था, जोर-जोर से बोलते थे। मैं उनका एक दीवार का पड़ौसी था। मेरे एक मित्र परीक्षा देने के लिए आये हुए थे। उनके पाठ से पढ़ने में असुविधा होती थी। उनसे प्रार्थना की कि वे कुछ दिन धीरे-धीरे पाठ किया करें। सुनते ही वे उत्तेजित हो उठे—"तुमको रामायण के पाठ से कष्ट होता है? रामायण का पाठ सुनकर तो लोग परीक्षाओं में वैसे ही पास हो जाते हैं। तुम्हारा पतन हो गया है। तुम आचरणहीन हो। देश की दुर्दशा तुम्हारे जैसे व्यक्तियों के कारण है।".....

यह झगड़े के लिए स्पष्ट चुनौती थी। घमासान वाक्युद्ध के बाद जब वे लौटे, तो मैंने निश्चय किया कि कल ही यह मकान छोड़ दूंगा। लेकिन सवेरे क्या देखता हूं कि वे बहुत ही शांत स्वर में रामायण का पाठ कर रहे हैं। दूसरे दिन उन्होंने पाठ किया ही नहीं। मेरे पास आकर बोले—"अब तो ठीक है भाई? तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं? पाठ ही तो करना है, मन-ही-मन कर लेता हूं। राम तो उससे भी प्रसन्न होंगे। वे तो भाव के भूखे हैं।" मैं उनकी ओर देखता रह गया। कहने को कुछ था ही नहीं। दूसरे के प्रति उनके मन में जो सहज आत्मीयता रहती थी, वह भयंकर-से-भयंकर वाक्युद्धों के बाद भी कभी कम नहीं हुई। उनके भीतर सदा अग्नि प्रज्वलित होती रहती थी। वे सदा कुछ करने को आतुर रहते थे।

विचित्रताओं के धनी

—'स्नेहरश्मि'

कराची के कांग्रेस अधिवेशन से खचाखच भरी ट्रेनें लौट रही थीं। एक ट्रेन में गांधीजी, डा० अंसारी, राजाजी, कृपलानीजी वगैरह थे। गांधीजी थर्ड क्लास में बैठे थे, डा० अंसारी फर्स्ट क्लास में। थर्ड क्लास में अत्यधिक भीड़ होने के कारण कुछ नेता अंसारी के साथ फर्स्ट क्लास में भी जा बैठे थे। गांधीजी को जब इसका पता चला, तो उन्होंने देवदास के साथ संदेशा भेजा कि सब लोग गार्ड को तुरंत इसकी सूचना कर दें। देवदास के मुंह से गांधीजी का यह संदेशा सुनकर अपने माथे पर लटके बालों के गुच्छे को हिलाकर कृपलानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने पूछा–"क्या है रे देवदास ? बापू क्या संदेशा कहलाते हैं ?" देवदास ने बापू का वह संदेशा दोबारा कह सुनाया। इस पर कृपलानी ने कहा–"टेल योर फादर, आई डू नाट वारो माई मोरैलिटी फ्राम हिम।" देवदास गुस्से से लाल होकर गांधीजी के पास पहुंचे। कृपलानी के ये शब्द सुनकर बापू खिलखिला उठे और बोले–"मुझे क्या पता था कि वह बंदर भी वहां है।"

कृपलानीजी के व्यक्तित्व को आकार देनेवाले दूसरे अनेक प्रसंगों में से एक प्रसंग आज भी मेरे मन में ताजा है। कृपलानी गुजरात विद्यापीठ में आचार्य के रूप में नये-नये आये थे। दीवाली की छुट्टियां निकट आ रही थीं। एक दिन आचार्य कृपलानी के हस्ताक्षर से बोर्डिंग पर एक नोटिस लगा, जिसे विद्यार्थियों की टोलियां पढ़तीं, खिलखिलाकर हंसतीं और बार-बार पढ़कर विनोद करने लगतीं। उस नोटिस के शब्द इस प्रकार थे :

"स्टुडैंट्स आर आस्क्ड टु वार्न देयर ओल्ड ग्रांड मदर्स, दादीज, नानीज, चाचीज, मौसीज एंड व्हाट नाट एट होम, दैट दे शुड पोस्टपोन देयर डाइंग बिजनेस फार सम टाइम एट लीस्ट। दे मे फरदर बी टोल्ड देट इफ इन्स्पाइट आफ दिस वार्निंग दे पर्सिस्ट इन देअर नेफेरियस प्रोफेशन आफ देयर्स, दे शेल डू इट एट देयर ओन रिस्क एंड कास्ट।"

ऐसे आचार्य के शिष्य भी औंधी खोपड़ी के बन जायें, तो इसमें आश्चर्य क्या ? दीवाली पर तीन सप्ताह की छुट्टी के बदले केवल तीन ही दिन की छुट्टी मिलेगी, ऐसी बात जब कृपलानीजी ने कही, तो इसके खिलाफ जो तूफान विद्यार्थियों में उठा, वह बड़ा मजेदार था। उसमें एक दिन दोपहर के बारह बजे एक विद्यार्थी कृपलानीजी के आफिस के सामने हाथ में जलती लालटेन लेकर चक्कर काटने लगा। कृपलानीजी ने संयोगवश आफिस से बाहर आते हुए वह विचित्र दृश्य देखा। हंसकर उन्होंने विद्यार्थी से पूछा–"क्यों ? तेरा दिमाग तो ठीक है न ?" इस पर उस विद्यार्थी ने अपने सिर की ओर अंगुली दिखाकर कहा–"यहां तो सब ठीक है। चाहें तो परीक्षा कर लें।" "तो फिर क्या बात है ?" आचार्य ने पूछा। तब उसने जवाब दिया–"मैं लालटेन लेकर यह खोज रहा हूं कि हमारी वे कमबख्त छुट्टियां आपके इस कमरे के किस कोने में छिप गयी हैं।" कृपलानीजी जोर से हंस पड़े और तुरंत दीवाली की पूरी तीन सप्ताह की छुट्टियों का नोटिस लग गया।

कृपलानीजी के व्यवहार से यह बात हमेशा स्पष्ट होती रही है कि जिस प्रकार उनका अपना व्यक्तित्व अकुंठित रहना चाहिये, उसी प्रकार दूसरों का व्यक्तित्व भी उतना ही आदर का पात्र माना जाना चाहिये। यही कारण है कि आज कृपलानीजी के अनेक शिष्य उनकी तरह जिन-जिन क्षेत्रों में कार्य करते हैं, वहां निर्भयता से तथा प्रतिपक्षियों के प्रति आदर का भाव रखकर अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं।

कृपलानीजी के जीवन पर अनेक लोगों का प्रभाव पड़ा होगा। परंतु उन सबमें गांधीजी का प्रभाव शायद सबसे अधिक था। इस संबंध में एक प्रसंग याद आता है। कृपलानीजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमें राजनीति-शास्त्र पढ़ाते थे और तत्कालीन घटनाओं से उदाहरण देकर हमें समझाते थे। उस समय अपरिवर्तनवादियों तथा स्वराज्य पार्टी के बीच जोरदार संघर्ष चलता था। उसके संदर्भ में गांधीजी ने स्वराज्य पार्टी का मार्ग-दर्शन करनेवाली जो सूचना थी, उसका उल्लेख करके कृपलानीजी ने राजनीति-शास्त्र के कुछ स्वीकृत सिद्धांतों की दृष्टि से उस सूचना में निहित असंगतता का अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण किया। उस विश्लेषण के फलस्वरूप उन्होंने घड़ी-भर के लिए हमारे मन पर यह बात जमा दी कि गांधीजी यह सूचना देने में भूल कर गये हैं। उस सूचना का लगभग एक घंटे से भी अधिक समय तक विश्लेषण करके कृपलानीजी ने कहा—"वट् आफ्टर आल, हिज डार्कनेस इज ब्राइटर देन माइ लाइट।" और गांधीजी की उस सूचना का प्रबल समर्थन करते-करते उन्होंने हम सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। आज भी कृपलानीजी का वह वाक्य एक ऋषिमंत्र के समान हमारे मन में गूंजता रहता है।

जब मैं यह सब याद करता हूं और आज कृपलानीजी की जीवन-संध्या के अंतिम दिनों पर नजर डालता हूं, तब काल भगवान हमारे द्वारा कैसी अनोखी लीला खेल रहा है, इसकी एक वेदनापूर्ण, परंतु प्रेरक झांकी उपस्थित हुए बिना नहीं रहती। [रूपा० : सोमेश पुरोहित]

ईमानदार राष्ट्र-कर्मी

—सूर्यनारायण व्यास

मेरे मित्र श्री भानुदास शाह अब इस लोक में नहीं हैं। वे एम० एस-सी० और एल-एल० बी० थे। कुछ समय आगरा कालेज में केमेस्ट्री के प्राध्यापक भी रहे और फिर इंदौर में वकालत करने लगे थे। उन्होंने होल्कर राज्य में राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भाग लिया और स्टेट से निकाल दिये जाने पर निर्वासित जीवन व्यतीत किया; पर न तो वे ठीक तरह कपड़े पहन सकते थे, न कोई यह जान पाता था कि यह व्यक्ति इतना बड़ा त्यागी राष्ट्र-कर्मी है। उनकी वेश-भूषा, रहन-सहन, व्यवहार आदि देखकर शायद ही कोई उन्हें पढ़ा-लिखा समझ पाता। उनके जीवन में ऊलजुलूलपन ही अधिक था, वे एक प्रकार से आत्मविस्मृत व्यक्ति थे।

निर्वासित जीवन में १० वर्ष तक वे उज्जैन में रहे। वकालत भी करते थे; पर एक छोटे-से कमरे में रहा करते थे। उन्हें इस जीवन में काफी तकलीफें उठानी पड़ीं; पर उनके चेहरे पर इसकी कोई शिकन नहीं पड़ी। लोग यह तक न जान पाये कि यह व्यक्ति उज्जैन में क्यों है। परंतु उस फाकामस्ती में भी कोई उनसे काम लेने पहुंचता, तो वे उसकी कष्ट-कथा सुन दुःखित हो जाते, बिना कुछ लिये-दिये उसका वकालतनामा ले लेते, अपनी जेब से कोर्ट-फीस दे देते, या किसी से कहकर दिलवा देते। यही नहीं, एक-दो साल भी लड़ना पड़े, तो वे उतनी ही तत्परता से उसका केस लड़ते रहते। लोग उनके सरल स्वभाव और भलमनसी का पूरा लाभ उठाते रहते; किंतु शाह साहब को उनसे कभी कोई शिकायत नहीं रहती।

शाह साहब को कुछ जरूरत होती, तो वे निःसंकोच मित्रों से ले लेते। मित्रों को जरू-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रत हो, तो शाह साहब की जेब में जो भी हो, वे बिना एक क्षण सोचे तुरंत दे देते; और दिये हुए को भुला भी देते। मांगने-कहने का वे विचार भी नहीं करते थे। उन जैसा उदार मित्र और सच्चा आदमी मैंने नहीं देखा।

दस वर्ष के निर्वासन के बाद उन्हें इंदौर जाने का अवसर मिला। वहां उनका घर-बार था ही, फिर वकालत शुरू कर दी; पर इंदौर-जैसे नगर में काफी सभा-संस्थाएं, सार्वजनिक प्रवृत्तियां रहती थीं, और शाह साहब को न खाने-पीने की चिंता, न वकालत की। वे दिन-भर उन प्रवृत्तियों में लगे रहते। उन्होंने कभी किसी पद की कामना नहीं की और शाह साहब के श्रम, प्रयत्न पर यार लोग पदासीन हो लीडरी करते रहते; पर उन्हें इसका कोई गम-गुमान नहीं होता। फिर भी शाह साहब को कोई काम कहे, वे उसके लिए हमेशा तैयार रहते।

जिन्हें वे अपना समझते उनके लिए वे बिना कुछ आगा-पीछा सोचे सब कुछ उत्सर्ग करने को तैयार रहते थे। इंदौर के एक कलक्टर ठा० बलवंतसिंह, उनके पुराने मित्रों में से। एक बार कलक्टर के परिवार को एक वर्ग-विशेष के लोगों ने घेर लिया। परिवार के लोग भी बड़े दिलेर थे, उन्होंने बड़े भारी समूह पर साहसपूर्वक गोलियां चलायीं और उसका मुकाबला किया। बाद में हजारों का मजमा जुड़ गया, प्रधान मंत्री व पुलिस फोर्स भी पहुंच गये। प्रधान मंत्री चाहते थे कि उस भीड़ को चीरकर कोई अंदर जाये और ठाकुर बलवंतसिंह के हाथों से बंदूक ले ले। पर कौन साहस करे? तब शाह साहब को कहा गया, और वे बिद्रोही भीड़ में से कलक्टर के बंगले तक पहुंच गये और ठा० बलवंतसिंह के हाथ से चलती हुई बंदूक ले ली। यह शाह साहब का ही साहस हो सकता था। बाद में ठा० बलवंतसिंह को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। अब केस चलनेवाला था, शाह साहब ने अपने मित्र के लिए कोई त्याग बाकी नहीं रखा। अपना बड़ा मकान तक रेहन रखकर रुपया जुटाया और केस का सारा खर्च उठाया। शायद केस खत्म होने पर ही ठा० बलवंतसिंह को यह पता चला कि केस कैसे लड़ा गया था। पर शाह साहब ने इस बात की कभी किसी से कोई चर्चा नहीं की।

वे जीवन-भर राष्ट्र-कर्मी रहे, ईमानदार कार्यकर्त्ता रहे, हरएक के काम में आगे बढ़कर सहयोग देते रहे; पर लोग उन्हें अव्यवस्थित और ऊलजलूल समझकर उपेक्षित कर देते। उन्हें उसका भी कभी कोई दुःख नहीं हुआ। आज कहां हैं ऐसे जीवनोत्सर्गी मानव! भला इस स्वार्थी दुनिया में भानुदासजी का स्मरण क्यों होने लगा?

जीवन में कई व्यक्ति असाधारण प्रतिभाशाली, अन्यतम परिश्रमी और अतिशय दृढ़-संकल्पी होते हैं। आपके संपर्क में यदि कोई ऐसा व्यक्ति आया हो, तो आप भी उसकी स्वानुभवपूर्ण कथा (५०० शब्दों तक) 'कैसे-कैसे लोग' स्तंभ के लिए भेज सकते हैं। —संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोबर गैस-प्लांट
आम के आम, गुठलियों के दाम

जगत गुप्त

उस दिन जब मैं कई वर्ष बाद अपने गांव पहुंचा, तो वहां का नक्शा ही बदला पाया। गांव में बिजली तो खैर पहले ही पहुंच चुकी थी; परंतु इस बार तो मैंने गैस का चूल्हा भी जलते देखा। साफ-सफाई भी बहुत अधिक थी।

गांव में गैस का चूल्हा! यह प्रश्न बार-बार मेरे मन में उठता। परंतु लोगों से उनके कुशल-क्षेम के बारे में पहले न पूछकर चूल्हे के बारे में पूछूं, भले ही वह गैस-चूल्हा क्यों न हो, कुछ अच्छा नहीं लगा। अतः राम-राम, दुआ-सलाम का पहला दौर खत्म होने पर मैंने पूछ ही तो लिया कि लकड़ी छोड़ घर में गैस का चूल्हा कब से जलने लगा है?

इतनी देर तक जान-बूझकर उन्होंने मुझे उस ओर से विमुख रखा था, अतः कुछ देर और झुलाते रखना बुरा नहीं समझा। जवाब मिला—"भई, यह कोई शहरवालों की ही बपौती तो है नहीं। अगर हम ग्रामीणों में दम है, तो हम भी गस-चूल्हा जला सकते हैं?" बात तो ठीक थी उनकी; परंतु मैं समझ नहीं पा रहा था कि शहर से गैस मंगवाकर चूल्हा जलाने में क्या मजा और क्या शान है। और उस पर से यह बपौती की बात!

मुझे कुछ विचार-मग्न देख उन्होंने अपनी बुद्धिमानी का सबूत देने के लिए घर के पिछले भाग में ला खड़ा किया, जहां बना था एक गोबर गैस-प्लांट—गांव में गैस का साधन।

गोबर गैस-प्लांट एक बहुत ही साधारण किस्म का संयंत्र होता है। उसके मुख्य तीन भाग हैं—एक तो नीचे का वह हिस्सा, जिसे डाइजेस्टर कहते हैं; दूसरा ऊपर का वह भाग जिसे गैस-होल्डर अर्थात् गैस-घर कहते हैं और तीसरा गैस-घर से रसोई-घर में गैस ढोनेवाली नली। डाइजेस्टर और गैसघर दोनों का ही आकार इस पर निर्भर करता है कि प्लांट लगानेवाले को कितनी गैस की आवश्यकता है। गैस की आवश्यकता के अनुसार प्लांट इतना छोटा हो सकता है कि रोजाना १०० घनफुट गैस दे सके और इतना बड़ा भी कि २४ घंटे में ३,००० घनफुट गैस मिल जाये। पहले की कीमत कुल ९०० रुपये पड़ती है, तो ३००० घनफुट वाले प्लांट की १५,००० रुपये।

डाइजेस्टर जमीन के अंदर बना एक हौज होता है, जिसमें एक नली के जरिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास में ही बने दूसरे छोटे-से गढ़े में से गोबर का घोल आता है और जमा होता जाता है। इसी डाइजेस्टर के ऊपर लोहे या अल्युमिनियम का बना हौज के मुंह के आकार से कुछ छोटे घेरे का आवश्यक माप का गैस-घर होता है, जिसमें नीचे डाइजेस्टर में तैयार हुई गैस आकर जमा होती जाती है और जब इसमें गैस भर जाती है, तो वह तैरती-सी नजर आती है। इस गैस-घर में एक नली होती है, जिसके जरिये गैस को रसोई-घर तक ले जाते हैं और वहां उससे चूल्हा जलाते हैं।

आम तौर पर पांच व्यक्ति के एक परिवार की रसोई बनाने के लिए दैनिक १०० घन फुट गैस उत्पादन की क्षमतावाला प्लांट उपयुक्त होता है। गांवों में इस गोबर गैस-प्लांट के उपयोग का आग्रह मुख्यतः इसलिए किया जाता है कि हमारे ग्रामीण भाई जलावन के रूप में अधिकतर उपले का ही इस्तेमाल करते हैं, जिसके बनाने का मुख्य कच्चा माल है गोबर। उसके बाद जलावन की कमी लोग लकड़ी से पूरी करते हैं। कोयला या स्टोव का इस्तेमाल तो इक्के-दुक्के लोग ही करते हैं। उपले जलाने से घर में धुआं तो होता ही है, साथ ही खाद का एक बड़ा साधन भी नष्ट हो जाता है। गोबर गैस-प्लांट में उसी गोबर से गैस तैयार करने पर जलावन की कमी भी पूरी हो जाती है और खेत के लिए बड़ी ही उपयुक्त खाद भी मिल जाती है।

असल में होता यह है कि डाइजेस्टर में गोबर और पानी मिलाकर तैयार किया गया घोल ही पहुंचाया जाता है (यों घर का कूड़ा-कचरा भी उसमें डालते हैं।) कुछ समय बाद उस घोल से गैस पैदा होने लगती है। इसका सिद्धांत यह है कि जब कोई प्राणिक पदार्थ निर्वात अवस्था में सड़ने दिया जाता है, तो 'सिवेज' गैस पैदा होती है जिसमें ६० प्रतिशत मिथेन गैस, ३० प्रतिशत कार्बन डाइआक्साइड और १० प्रतिशत हाइड्रोजन होता है। इस गोबर गैस के जलने पर प्रति घनफुट ५५० ब्रिटिश थर्मल यूनिट ऊष्मा मिलती है और जलते वक्त नीले अज्योतिष्मान ज्योति निकलती है, जिसका तापमान १०,००० फार्नहाइट से भी अधिक होता है। यदि २५० घनफुट गोबर गैस का इस्तेमाल किया जाये, तो वह एक मन अर्थात् ८२ पौंड या ३७.२ किलोग्राम ईंधन के बराबर होगा। एक हजार घनफुट गैस तैयार करने में तीन रुपये खर्च पड़ता है। इस हिसाब से चार मन लकड़ी तो तीन रुपये में कहीं भी नहीं मिलेगी। एक मन लकड़ी खरीदने में दो रुपये लग ही जाते हैं, अर्थात् चार मन में आठ रुपये लग जायेंगे। फर्क इतना ही है कि गोबर गैस-प्लांट लगाने में एक बार एकमुश्त रुपया खर्च होता है। परंतु उसके बाद कम-से-कम तीन साल तक उस पर कोई खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ती।

इस गोबर गैस-प्लांट ने हमारे सामने ईंधन की समस्या का हल करने के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया है। अगर हम ठीक से हिसाब लगायें, तो देखेंगे कि आज भारत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में करीब ४० करोड़ टन गोबर हर साल उपले के रूप में जला डाला जाता है; उससे गैस तैयार करने पर जलावन के लिए गैस तो मिलती ही है, साथ ही सारा-का-सारा गोबर एक अच्छी खाद बनकर बच भी रहता है। इस खाद में नाइट्रोजन की मात्रा खलिहानी खाद के मुकाबले, कहीं अधिक होती है। फिर खलिहानी खाद तैयार करने के लिए गोबर को जिस ढंग से खुले गढ़ों में सड़ने देते हैं, उससे गैस हवा में फैलती है और जनता के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

वर्धा (महाराष्ट्र) के निकट दत्तापुर झोंपड़ी बस्ती में खादी और ग्रामोद्योग कमीशन ने एक गोबर गैस-प्लांट लगाकर प्रयोग किया, तो पाया गया कि २३८ व्यक्तियों का भोजन बनाने में उससे साल में ८०९ रुपये की बचत हुई। इससे यह सिद्ध होता है कि सामूहिक भोजन बनाने के लिए यह प्लांट और भी अधिक उपयुक्त है।

इस गोबर गैस से कई जगह गैस-बत्तियां भी जलायी जाती हैं। परंतु अभी इसे अपनाना गांववालों के लिए मुश्किल है; क्योंकि एक तो इसमें खर्च अधिक पड़ता है और दूसरे रोशनी भी बहुत कम होती है। हां, इस बात की संभावना अधिक है कि गोबर-गैस इंधन और जेनरेटर की मदद से बिजली पैदा की जाये। एक किलोवाट बिजली २२ से २५ घनफुट गैस के बराबर होती है। इसके लिए प्रयोग जारी हैं। गोबर गैस से कम अश्वशक्ति का डीजल इंजन चलाने में थोड़ी-बहुत सफलता भी मिली है। यदि इस दिशा में पूरी सफलता मिल गयी, तो फिर गांवों में इस गैस का उपयोग लघु एवं कुटीर उद्योगों में भी किया जा सकेगा।

चित्र : असित कुमार हल्दार

अभी खादी और ग्रामोद्योग कमीशन का गोबर-गैस योजना विभाग ही भारत में विशेष रूप से ये प्लांट लगाने का कार्यक्रम चला रहा है। वह प्लांट की कीमत की आधी रकम प्लांट लगाने के इच्छुक व्यक्ति को अनुदान के रूप में देता है और आधी ऋण के रूप में। ऋण की अदायगी दस साल के अंदर ९ वार्षिक किस्तों में करनी पड़ती है। परंतु अनुदान देने के पूर्व वह इस बात की अच्छी तरह जांच कर लेता है कि प्लांट लगानेवाले की क्षमता कितनी है, अर्थात् जितना बड़ा गैस-प्लांट वह लगा रहा है, उसके लिए जितने गोबर की रोज ज़रूरत है, उसकी पूर्ति वह कर भी सकेगा या नहीं। अतः इच्छुक ग्रामीण भाई इस सिलसिले में निर्देशक, गोबर-गैस योजना विभाग, खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, ग्रामोदय, इर्ला रोड, विले-पार्ले (पश्चिम), बम्बई-५६ से संपर्क कर सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो शब्द

भारतीय कलाकारों से

सत्यकाम विद्यालंकार

यह बात निर्विवाद है कि आज के भारतीय चित्रकारों में से अधिकांश चित्रकला की नवीनतम शलियों का खूब प्रयोग कर रहे हैं। नवीन शैलियां भारत के लिए उतनी नवीन हैं भी नहीं। ये शैलियां स्वयं भारतीय शैलीसे प्रभावित हैं। पश्चिम की यथार्थवादी कला भारतीय कला से बहुत भिन्न रही है। भारत की चित्रकला तथा मूर्तिकला कभी पूरी तरह यथार्थवादी नहीं रही। उसमें भावना-प्रधान लयात्मक मानवाकृतियां बनाने की प्रवृत्ति आरंभ से ही है। अतः सच तो यह है कि भारतीय चित्रकारों ने कल्पना-प्रधान प्रयोगात्मक आधुनिक चित्रकला को अपनाकर अपने ही विस्मृत तथ्य को पहचाना है। जिस शैली को वे दूसरों की समझकर ग्रहण करने में संकोच करते थे, उसे अपना बना लिया है।

तीन सहेलियां
चित्र : प्रद्युम्न तन्ना

अपने नवजागरण-काल में कलाकारों की यह स्वीकारात्मक प्रवृत्ति सराहनीय है। नवीन शैली के सफल प्रयोगों ने अनेक भारतीय कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का बना दिया है।

कला-क्षेत्र में इस विश्वव्यापी यश के लिए उनका अभिनंदन करते हुए भी लेखक भारतीय कलाकारों से दो बात कहने की धृष्टता करना चाहता है। पहली यह कि भारतीय कलाकारों ने अपनी शैली तो आधुनिक बना ली है; किंतु चित्र के विषय को आधुनिक नहीं बनाया। हमारे नवीन कलाकार अपनी नयी शैली में भारत के नये जीवन और उसके मान भारत के जीवन की नवोदित भावनाओं का कलात्मक चित्रण नहीं कर रहे हैं। उनके प्रतिमान अभी पुराने ही हैं। इनमें कुछ कलाकार भारत के लोक-जीवन के कुछ चित्र अवश्य स्वीकृत करते हैं किंतु वह केवल चित्रों के विविध रंगों उनकी आकृति को आकर्षक बनाने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से करते हैं; भारतीय लोक-जीवन के आंतरिक सौंदर्य की, आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए नहीं।

हमें खेद है कि आज के नवीन भारतीय कलाकार शायद लोक-जीवन के अत्यंत निकट रहकर उसका स्पंदन अनुभव करने का यत्न भी नहीं करते। इतना धैर्य उनमें नहीं है या उस जीवन के प्रति सच्ची ममता का स्पर्श इन आधुनिक शैली के कलाकारों के हृदय ने नहीं किया। कलात्मक चित्र हृदय की प्रेरणा से ही बनता है। आधुनिक कलाकारों के हृदय ने न तो भारत के विगत गौरवान्वित जीवन से प्रेरणा पायी है और न उसने भारत के भावी स्वप्नों का उल्लास अनुभव किया है। अपने देश के सच्चे स्वरूप को देखने के लिए जो दृष्टि या विश्वास चाहिये, वह शायद उनके पास पर्याप्त मात्रा में नहीं है। उस विश्वास के अभाव में हमारे कलाकार पश्चिम की शैली का ही नहीं, अपितु कलाभिव्यक्ति के प्रतिमानों का भी अंधानुकरण शुरू कर देते हैं।

किंतु दूसरे के विश्वासों का अनुकरण किसी शिल्पी को कलाकार नहीं बना सकता। जब तक चित्रकार अपने ही हृदय की प्रेरणा को कला का आधार नहीं मानेंगे, तब तक उनकी सृजन-प्रतिभा को कोई निश्चित दिशा नहीं मिलेगी, और तब तक वे सच्चे कलाकार भी नहीं बन सकेंगे।

कलाकार की अंतःप्रेरणा के स्वर उसकी कला से स्वभावतः ध्वनित होते हैं। आज के भारतीय चित्रों से कोई ध्वनि नहीं निकलती। वे चित्र निर्जीव, निःस्पंद और निःस्वर हैं। जो स्वयं निष्प्राण है, वह भला दूसरे को अनुप्राणित कैसे करेगा? जिसके प्रेरणा-स्रोत स्वयं सूखे हुए हैं, वह अपनी कला में रसात्मक अनुभूति कैसे भर सकेगा?

इस सहज-स्वाभाविक अंतःप्रेरणा के अभाव से ही आधुनिक भारतीय कलाकारों के अधिकांश चित्रों की रेखाएं वसी अभि-

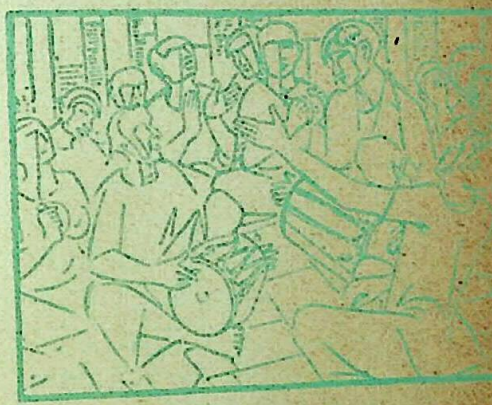

कीर्तन—हेब्बार के एक चित्र की अनुकृति

व्यक्तिशील और मुखर नहीं होतीं, जैसी सफल कवि की भाषा होती है। काव्य की रसात्मकता मुख्यतः केवल भाषा के कारण नहीं, अपितु भावों की प्रखरता और गहराई के कारण बनती है। अंतर के अनुभव जितने गहन होंगे, अभिव्यक्ति में उतनी ही मुखरता आयेगी।

भारत के आधुनिक चित्रकारों के किसी-किसी चित्र में असाधारण प्रतिभा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौशल का प्रमाण मिलता भी है; किंतु वे उस स्तर को स्थायी नहीं बना पाते। इसी-लिए उनकी कला में वैसी व्यापक लयात्मक एकरूपता नहीं आ पाती, जो अंतःप्रेरणा से प्रभावित सच्चे कलाकारों की कृति में आती है।

आज के भारतीय कलाक्षेत्र में अधिक संख्या ऐसे चित्रकारों की है: (१) जो विवेक की आंख खुलने से पहले ही रेखाओं और रंगों से खिलवाड़ शुरू कर देते हैं; (२) जो अपनी पुरातन परंपराओं का अर्थ जानने से पहले ही प्रत्येक पुरानी वस्तु के प्रति विद्रोह करने का प्रण कर बैठते हैं; (३) और जो शिल्प में प्रवीण बनने से पूर्व उच्छृंखल प्रयोग प्रारंभ कर देते हैं।

पनिहारिन
धनराज भगत की एक मूर्ति की ओंके द्वारा अनुकृति

उनका यह दुराग्रह अपने अंतर से कला की प्रेरणा पाने में सदा बाधक बना रहता है। इसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का परिणाम यह है कि आज के कलाकारों में से कुछ तो ऐसे हैं, जो परंपरा-वादी कला-गुरुओं के उपा-सक बनकर केवल मृदु-मधुर अर्धोन्मीलित आंखों की तंद्रा-शील मुद्रा के चित्र बनाने में सारा जन्म खो देते हैं; और कुछ हैं, जो शैली संबंधी प्रयोग करते हुए केवल भावनाशून्य साजसज्जा की चित्रकारी में ही अपनी कला को कृतार्थ मानते रहते हैं।

भारतीय कलाक्षेत्र में आज ऐसे दर्जनों कलाकार अपने-अपने प्रयोग कर रहे हैं जो अपनी-अपनी शैली में सभी मूर्धन्य हैं। उन सबकी विशेषताओं का उल्लेख इस छोटे से लेख में नहीं हो सकता। किंतु कुछ की चर्चा अप्रासंगिक न होगी।

जार्ज कीट प्रभृति कलाकारों की रेखाएं बड़ी स्पष्ट और प्रवाहमयी हैं। किंतु उनसे वे नारी के मांसल सौष्ठव को ही उभारने में समर्थ हो पाते हैं। शैलज मुखर्जी आदि अनेक भावुक कलाकार हैं, जिनके स्वरों में भावनात्मक गहराई है; किंतु वे स्वर ऐसे बिखरे रहते हैं कि उनसे पूरा संगीत नहीं बन पाता। उनमें सूत्रबद्धता नहीं है। हुसैन की कला में सादगी है, प्रखरता है; मगर वे अपनी कला पर किसी ऐसी चिंतन-धारा की छाप न डाल सके, जिससे उनकी रेखाओं को, उनके अंगों को स्थायी स्वर मिल पाता। श्री बेंद्रे के चित्रों में भारतीय चेतना और पर्शियन शैली की अभिव्यंजना का अच्छा मिश्रण है; किंतु उनकी कला का विकास भी शैलीगत ही अधिक हुआ है। ऐसे वाह्य विकास की सीमा बहुत व्यापक नहीं होती।

श्री के० के० हेब्बार बहुत कुशल चित्र-कार हैं; किंतु अंतःप्रेरणामूलक विशेष दर्शन के अभाव में उनकी कला भी साज-सज्जा-लक्षी होकर ही रह गयी। श्री श्यामराव चावडा नृत्य की भावमुद्राओं के सजीव चित्रण में अद्भुत प्रवीणता दिखलाते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु उनकी कलात्मक जादूगरी विशेष दायरे में कैद होकर संतुष्ट हो चुकी है।

अन्य प्रयोगवादी या अमूर्त कलाशैली के भारतीय कलाकारों ने भी पिछले दस वर्षों में अपूर्व हस्त-कौशल दिखाया है। इस शैली के भारतीय कलाकारों में गायतोंडे, कृष्ण खन्ना, ज्योति भट्टाचार्य, शांति दवे और लक्ष्मण पई का नाम उल्लेखनीय है। इस रहस्य चित्रशैली का आकर्षण इसकी रहस्यमयता में ही छिपा है।

रहस्य-वस्तु स्वभावतः आकर्षक होती है। किंतु यह आकर्षण तभी तक रहता है, जब तक देखनेवालों को परदे के पीछे विद्यमान, किंतु अलक्षित प्राणवान तत्व की झलक अवश्य मिलती रहे। चित्र में प्राणवान तत्व तभी तक रहेंगे, जब तक चित्रकार प्राणवान रहेगा। यह तभी होगा, जब कलाकार चित्र बनाने की प्रेरणा अपने भीतर से पावेगा। प्राण-प्रेरित कला-प्रयत्न ही उसके अर्थ में प्राणों के स्वर भर सकते हैं।

दुर्भाग्य यही है कि आज के अधिकांश भारतीय चित्रकारों का प्रेरणा-स्रोत उनका चिंतन या आंतरिक भावना नहीं है। वे उन व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की प्रेरणा से चित्र बनाते हैं, जो प्रतिवर्ष अपने कैलेंडरों और डायरियों के लिए चित्र खरीदते हैं। चित्रकार भी पूर्णतः व्यवसायी बन गया है। वह अपनी इच्छा से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए चित्र नहीं बनाता, अपितु उद्योगपतियों की कला-रुचि के संतोष के लिए चित्र बनाता है। यही कारण है कि

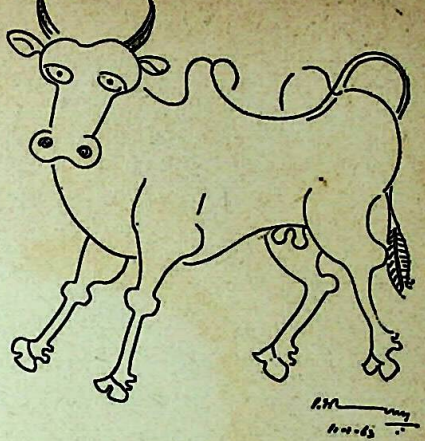

बछड़े के लिए बेचैन

पी० टी० रेड्डी

आज का कलाकार केवल साज-सज्जा को प्रमुख मानकर रंगसाजी में कौशल दिखाता है। कला-प्रदर्शनियों का आयोजन भी प्रायः कुछ बड़ी-बड़ी विज्ञापन-एजेंसियों को चनाव की सुविधा देने के लिए ही किया जाता है। आज का भारतीय कलाकार इन एजेंसियों का ही गुलाम-सा होकर परवशता में जी रहा है। उसकी कला चांदी के टुकड़ों पर नीलाम हो रही है।

ऐसे परतंत्र कलाकारों को चित्रों के विषय का चुनाव भी विशुद्ध व्यापारिक दृष्टि से करना पड़ता है। अतः उन चित्रों को 'कला' या 'भारतीय कला' का प्रतिनिधि मानकर उनका मूल्यांकन करना भारी भूल होगी। उन चित्रों में भारतीय आत्मा के दर्शन करने की आशा वैसी ही निराधार है, जैसे भारतीय फिल्मी गीतों में भारतीय संगीत की आशा करना।

इन अंतःप्रेरणाहीन और पश्चिम का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंध अनुकरण करनेवाले कलाकारों में एक विशेषता पायी जाती है। ये आधुनिकता-भिमानी चित्रकार मानव-हृदय की व्यथा, वासना और विकृति के चित्रण में ही कला की कृतार्थता मानते हैं। यह मान्यता भारतीय कला-परंपरा के विरुद्ध है। भारतीय कलाकार इन मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठकर आत्मा के उन्मुक्त आनंद से कला-सृजन करता है। भारतीय कला का यह मूलतत्व है।

यह ठीक है कि किसी भी कलाकार से किसी देश-विशेष की परंपराएं निभाने का आग्रह नहीं किया जा सकता; किंतु उससे यह निवेदन तो किया ही जा सकता है कि जब वह अपने देश के स्वाभाविक संस्कारों

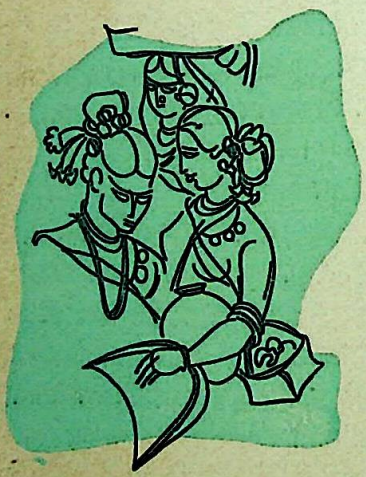

हाट में – चित्र : अलमेलकर

से विद्रोह करके दूसरे देशों का अनुकरण करता है, तो वह कलाकार बनने की दिशा में यत्न नहीं करता। कला-सृजन अंतःप्रेरणा से ही होता है और इस प्रेरणा में उस देश की परंपराओं का प्रभाव बहुत स्वाभाविक है।

अमूर्त चित्रकला के साधकों से हमारा निवेदन है कि जो कला किसी भी भाव की अभिव्यक्ति नहीं करती, वह अपने लक्ष्य में असफल हो जाती है। अभिव्यक्ति का माध्यम बोधगम्य तो होना ही चाहिये। आज के अमूर्त शैली के चित्रकारों का उद्देश्य भी प्रायः साज-सज्जा तक सीमित रह गया है। कला में साज-सज्जा का भी बहुत बड़ा स्थान है। और यह सच है आज के व्यावहारिक जगत में साज-सज्जा की कला में प्रवीण हुए बिना कलाकार की गृहस्थी नहीं चल सकती। किंतु अपनी आजीविका चलाने की परवश होकर जो चित्रकार सृजन करता है उसे व्यावसायिक कृतियों के आधार पर कलाकार बनने का दंभ नहीं करना चाहिये।

हम हर भारतीय कलाकार का यह भी कर्तव्य समझते हैं कि वह कुछ समय सर्वथा स्वाधीन होकर 'स्वांतः सुखाय' भी करे। हमें निश्चय है कि अंतःप्रेरणा से भारतीय कला-चित्रों में मानव-जीवन प्रेरणादायी तत्वों की प्रधानता अवश्य होगी उनमें मानव-हृदय में प्रेम, आशा, उल्लास कल्याणमूलक भावनाओं का उदय होगा कला का लक्ष्य जीवन को सुंदर, शांत, समृद्ध बनाना है; हताश, विकृत या क्षिप्त बनाना नहीं। भारतीय कला के यही तत्व हैं। उन्हें निभाना हमारे भारतीय कलाकारों का भी कर्तव्य है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डायरी के पृष्ठ

स्वर्गीय प्रो० इंद्रजी विश्ववंद्य व्यक्तियों में गिने जानेवाले स्वामी श्रद्धानंदजी के पुत्र होने से ही यशस्वी नहीं बने। स्वतःअर्जित गुणों और कार्यों से भी उन्हें कीर्तिवंत बनाया था। विरली प्रखर प्रतिभा से उन्होंने अपना लक्ष्य निर्धारित किया और फिर कैसी योजनाबद्ध साधना और तपश्चर्या से उन्होंने लक्ष्यसिद्धि में जीवन अर्पित कर दिया—इसका कुछ अनुमान उनकी ५० वर्ष पूर्व की तरुणावस्था की अपने हाथों लिखी डायरियों से लग सकता है। इन पृष्ठों में हम उनकी विक्रमी संवत् १९६५ से ७५ अथवा सन् १९१० से १९१९ तक की उन डायरियों के कुछ अंश दे रहे हैं, जो उन्होंने अपनी २० वर्ष से ३० वर्ष की आयु के अध्ययन एवं कार्यकाल में लिखी थीं।

इंद्र विद्यावाचस्पति

विक्रम संवत् १९६५

मार्गशीर्ष-१३ : चित्त आज भी भ्रमित रहा। यह मेरे चित्त की कमजोरी का फल है। मैं बहुत ही प्रबल भावों का हूं, अर्थात् मेरे क्रोध, प्रेम तथा घृणा बहुत प्रबल होते हैं—या तो मैं बड़ा होकर वृथा ही मर जाऊंगा या अपने शरीर तथा आत्मा से मनुष्य-जाति की कोई-न-कोई बड़ी सेवा कर जाऊंगा।

पौष-८ : दिल में विचार उठा कि क्या यह धर्म-विरुद्ध नहीं कि मैं अपने धर्म-प्रिय पिता के १५ रुपये हर महीने खाये जाता हूं—मैं अब २० बरस का होनेवाला हूं, क्या अपने महान, परंतु निर्धन पिता का सहाय्य नहीं कर सकता ? इसका उत्तर तीन दिन के अंदर अवश्य सोच लूंगा।

वैशाख-१० : रात के समय सोये-सोये एकदम जाग खुली—खयाल आया कि संसार में मेरा क्या कोई मित्र है ? अपने आप क्षण-भर में (ईश्वर की ओर से) उत्तर मिला कि "परमात्मा ही मेरा सच्चा मित्र है।" सायंकाल संध्या के वक्त भी इसी ज्ञान का भान हुआ।

बैशाख-२४ : आज प्रातःकाल निम्न-लिखित विचार पैदा हुए—(१) ईश्वर की सत्ता है। (२) मनुष्य-जीवन का उद्देश्य समाज को आदर्श की ओर पहुंचाना है अर्थात् मनुष्य समाज का स्थिर अंग है (३) बिना समाज की उन्नति में सहायता किये व्यक्ति-गत उन्नति नहीं हो सकती। (४) जो देश असमानता को बढ़ाता है, वह गिरता है। (५) कोई दिन आयेगा, जब कि गवर्नमेंट की भी जरूरत न रहेगी।

वि० संवत् १९६६

मार्गशीर्ष-१ : आज प्रातःकाल पिताजी के साथ बाहर घूमने गया, बहुत कुछ बातें होती रहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिताजी ने कहा—"मैं गुरुकुल के विषय में अपना कर्तव्य पालन कर चुका, शरीर का ईश्वरीय आज्ञा से अधिक उपयोग किया; किंतु अब मेरे लिए वानप्रस्थाश्रम जरूरी है। और फिर स्थिर रूप से संन्यास भी लेना चाहिये।

"मेरा ईश्वर में तथा वर्णाश्रम-व्यवस्था में अटल विश्वास है, वह कभी नहीं हट सकता।

"मुझे रोज प्रातः ३ बजे ईश्वर की ओर से कोई ज्ञान होता है। उसे मैं पत्र पर लिख-कर घोटकर फाड़ देता हूं। लोगों से इसलिए नहीं कहता कि 'इंस्पिरेशन' या इलहाम न कहने लगें।"

मार्गशीर्ष– १२ : आज 'ओटोबयाग्राफी आफ जान स्टुवर्ट मिल' शीर्षक पुस्तक पढ़ी। उससे मैंने सीखा कि जो कुछ पढ़ना चाहिये, उसे ऐन ठीक जान लेना चाहिये—थोड़ा-थोड़ा बहुत पढ़ जाना उपयोगी नहीं।

ज्येष्ठ–१४ : आज शनिवार का दिन था। 'प्रचारक' के लिए 'संसार की गति' लिखने का दिन आज ही है। आज तीन घंटे तक बराबर लिखा।

यद्यपि चारों ओर से मेरे लेखों की प्रशंसा हो रही है, तथापि अभी तक एक बात की उनमें कमी है। मैंने अभी संसार की वास्त-विक दशा का बहुत थोड़ा ज्ञान प्राप्त किया है। उसके लिए यत्न करना चाहिये।

श्रावण–२९ : बहुत मास व्यतीत हो गये; किंतु मैंने अपनी नोट-बुक में कुछ भी नहीं लिखा। किंतु इसका कारण आलस्य न था। कई बार लिखने का विचार किया किंतु यह समझकर जाने दिया कि मेरे जीवन में ऐसी कौन-सी विचित्र बात है, जिसे लिखे बिना किसी प्रलोभन के सीधा-सीदा जीवन व्यतीत होते हुए लिखते रहने में क्या लाभ है? फिर विचार हुआ कि लिखना चाहिये नहीं, अच्छा है। पीछे से अपने मानसिक विचारों की उन्नति समझ करके मैं अधिक योग्य हो सकूंगा। संभव है और कोई भी इससे लाभ उठा सके। मैं नहीं कह सकता कि मैं अवश्य बड़ा आदमी बनूंगा; किंतु अपनी शक्तियों को देखते हुए मैं इतना कह सकता हूं कि मैं देश की या संसार की सेवा करने के लिए अवश्य शक्त हो सकूं।

फाल्गुन–६ : आजकल बहनजी यहां हैं। ऐसे अच्छे स्वभाववाली देवी भी शायद कोई होगी।

वि० संवत् १९६९

वैशाख–२ : मैंने खूब सोच-विचार लिया है कि मातृभूमि कई पुत्रों का बलिदान चाहती है। बलिदान का यह अर्थ नहीं कि मृत्यु किंतु ऐसा कि अपना दीर्घ जीवन केवल भूमि के अर्पण कर दें। मैं स्मरण रखूंगा (१) मैं पिताजी के सामने जन्म-भर चारी रहने का संकल्प कर चुका हूं; (२) वंश के रक्षार्थ भ्राता हरिश्चंद्रजी ने कर ही लिया है; (३) पहले से ही हृदय में यह भाव उठता रहा है कि अपना बंधन-रहित जीवन मानव-सेवा लगाना चाहिये।

पौष–२: सृष्टि पलट गयी। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने गुरुकुल चला आया और हरिश्चंद्रजी दिल्ली चले गये।

यहां आने से पिताजी की सेवा में अधिक रह सकता हूं। इसमें उन्हें भी आराम मिलता है, और मैं भी अपना कर्तव्य पालन कर सकता हूं। मेरी यह अनुभूति और भी प्रबल हो गयी है कि :

(१) परम पिता की मेरे ऊपर सदा से कृपा थी और अब भी है—इसका मुझे विश्वास हो गया है। इससे चित्त विचलित नहीं होता।

(२) मैं उत्पन्न ही मातृ-सेवा के लिए हुआ हूं, यह निश्चय भी मुझे हो गया है—परमात्मा इस विचार को स्थिर रखे।

(३) मेरे कार्य के शेष भाग शायद मुझे नामों के पीछे ज्ञात होंगे; परंतु अभी इतना ज्ञात है कि मेरा कार्य आर्य जाति के पुराने-गौरव को जागृत करना है।

(४) मैंने भगवान को साक्षी करके अपने जीवन पर विचारा, तो वह दोषों का पुंज नजर आया। सब दोष एक दूसरे से बढ़-चढ़कर जंचने लगे, तब सबसे पूर्व सत्य का व्रत लिया। अभी तक उसमें पूरी तरह से कृत-कार्य नहीं हुआ; लेकिन प्रभु की कृपा रही, तो हो जाऊंगा।

इंद्र विद्यावाचस्पति

वि० संवत् १९७०

कार्तिक—२७ : मैंने आर्यसमाज के साथ कार्य करना विचारा तो है; किंतु समाज की दशा तो बड़ी संकीर्ण हो रही है। इसका पुराना प्रोग्राम अपना खेल दिखा चुका, अब तो इसमें नये भावों के साथ नया रुधिर चाहिये।

मार्गशीर्ष—६ : कल दक्षिण अफ्रीका से मिस्टर गौडफ्रे आये थे। उन्होंने वहां के वृत्तांत सुनाये। मि० गांधी का भी वृत्तांत सुना। आः, मेरे जो भाव थे, वे एक भारत-वासी की डायरी में नहीं रह सकते—वे उसके हृदय में ही रह सकते हैं; बस इतना ही। आज से बिना किसी विशेष अपवाद के रात्रि का भोजन छोड़ता हूं। यह प्रण तब तक जारी रहेगा, जब तक दक्षिण अफ्रीका के निवासी अपने उचित अधिकारों को न पा जायेंगे।

वि० संवत् १९७१

कार्तिक २६:—एक नया विचार किया है कि मैं उस महाभारत में भाग लूं, जो यूरोप में हो रहा है। इसके कई उद्देश्य हैं। जाऊंगा एंबुलेंस विभाग में। उद्देश्य होगा—आत्मशिक्षण—(क) सेवाव्रत का धारण करना और सेवा करना, (ख) अपने आपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा बनाना कि मृत्यु का भय शीघ्र डरा न सके, (ग) युद्ध का इतिहास लिखने के लिए तैयार होना। वास्तविक युद्ध देखे बिना वास्तविक वर्णन असंभव है।

आश्विन–२५: मेरे विवाह का विषय बारबार सामने आता है। परिव्राजक दशा में रहते हुए विवाह न करने के तो कुछ अभिप्राय हैं। किंतु १८ वर्ष तक एक ही स्थान में रहते हुए गृहस्थी न बनने के पक्ष में कोई युक्ति नहीं। हां, केवल आत्म-सुख, या स्वार्थ की युक्ति हो सकती है। मेरा अविवाहित रहने का संकल्प यह मानकर बना था कि मुझे भ्रमणादि से निरंतर समाजसेवा करनी पड़ेगी। यदि अवस्थाओं ने शीघ्र ही मुझे फिर मेरे असली सोचे हुए कार्यपथ पर न डाल दिया, तो मैं अगले वर्ष आर्थिक अवस्था के सुधर जाने पर गृहस्थ में प्रवेश करने की सोचूंगा। किंतु यदि मैं इस बंधन से छूटने की कुछ भी आशा कर सका, तो गृहस्थ का नाम न लूंगा।

वि० संवत् १९७२

माघ–१२ : मैं एक किश्ती से दूसरी किश्ती में आ गया। मेरी सहधर्मिणी वह हुई, जिसके लिए मैं डेढ़ साल से निरंतर सपने देख रहा था। मेरी प्रसन्नता की सीमा नहीं। हृदय आनंद से भरा हुआ है, परमात्मा ने मेरी सुन ली। इस समय मुझे परमात्मा पर और भी अटल विश्वास हो गया है।

वि० संवत् १९७३

कार्तिक–१: विशेष समाचार हैं: (१) ईश्वर की कृपा से, और पिताजी के पुण्य प्रताप से ऋण का वह भार, जो असह्य होता था, उतर-सा गया। अब आगे प्रतिज्ञा है कि कभी ऋण न चढ़ाऊंगा (२) भारत के वायसराय लार्ड चेम्स गुरुकुल देखने आनेवाले हैं।

पौष–२६ : लक्ष्मी प्रसूता होनेवाली इसलिए उसे जाना पड़ा। मेरे जीवन में एक फूल लगनेवाला है और लक्ष्मी उस साधन हुई है। हमने जैसी संतान की नाएं की हैं, भगवान वैसी ही संतान दे।

यह पहली बार है कि मैं घर में दिनों के लिए अकेला रहा हूं। जी सा हो गया है। प्रेम क्या वस्तु है–उ गहराई देख चुका हूं। अब उसे और विस्तृत और पवित्र रूप में देख रहा हूं।

वि० संवत् १९७४

वैशाख–१३ : आज पिताजी ने लिया। अपना कर्तव्य उन्होंने पालन आज हमारा कर्तव्य कई गुना बढ़

ज्येष्ठ–१३ : आज सत्याग्रह की पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। प्रतिज्ञा भार परंतु यदि मेरे सब विचारों का कुछ भी णाम होना था, तो यही। सोचता तो कुछ था–अब परीक्षा देने का समय आ है। परमात्मा, मुझे शक्ति दीजिये इस भारी बोझ को भली प्रकार उठा मैं बिलकुल संतुष्ट और स्थिर सत्याग्रह में प्रविष्ट होता हूं।

पिताजी भी सत्याग्रह में सम्मिलि हैं। मुझे प्रसन्नता है कि उन्हें प्रेरित थोड़ा-सा मेरा भी भाग है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्विट्जरलैंड के बैंक

वणिक्

स्विट्जरलैंड की महिमा उसके प्राकृतिक सौंदर्य और घड़ियों की बनी घड़ियों के कारण जितनी है, उतनी ही वहां के बैंकों के कारण है। यदि देश-देशांतर के पर्यटक हिमाच्छित पर्वतों, नीलाभ-निर्मल जलाशयों और आमोद-प्रमोद व सुख-सुविधाओं से आकृष्ट होकर वहां जाते हैं, तो धनपति—चाहे अमरीका के हों या फ्रांस के या कुवैत के—स्विट्जरलैंड के बैंकों का दरवाजा खटखटाते हैं अपने वैध अवैध धन को वहां सुरक्षित कराने।

धन और संपत्ति को स्विट्जरलैंड में जिस आदर की दृष्टि से देखा जाता है, कैसे संभाला जाता है, यह वहीं के एक प्रसिद्ध बैंकर के शब्दों में सुनिये—"मनुष्य के धन को हम उतना ही महत्वपूर्ण, आदरणीय व पवित्र मानते हैं, जितना कि उसके शरीर और आत्मा को।" जिस प्रकार मनुष्य के तन और मन के पापों को आत्म निवेदन (कन्फेशन) के द्वारा सुनकर पादरी उसे सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार स्विट्जरलैंड की बैंक-पद्धति धनपति के वैध-अवैध धन की रक्षा करती है।

वहां की बैंक-पद्धति बुनियादी तौर पर संसार की सारी बैंक-पद्धति से भिन्न है। सदियों से वहां के लोग दूसरे देशों के निष्कासित नागरिकों को पनाह देते आये हैं। जैसे उस देश ने उनके शरीरों की रक्षा की, वैसे ही उनके धन की भी। जिसका धन है, उसके सिवा किसी दूसरे को उस पर नजर डालने का भी वहां हक नहीं, सरकार को भी नहीं। जैसे पादरी आत्मनिवेदक (कन्फेसर) की बात का एक शब्द भी किसी अन्य के सामने प्रकट नहीं करता, उसी प्रकार स्विट्जरलैंड का बैंकर अपने असामी की अर्थ-संबंधी बात का एक शब्द भी दूसरे को नहीं बताता। विदेशी सरकार की तो बात ही क्या, अपनी सरकार को भी ये बातें बताने के लिए वह बाध्य नहीं। इस संबंध में वहां के कानून बड़े कड़े हैं। और बैंकिंग-पद्धति द्वारा स्वयं स्वीकृत बंधन भी इतने कठोर हैं कि यदि यह कहा जाये, तो अत्युक्ति नहीं होगी कि बैंकर के दायें हाथ में थमाये हुए धन का पता बैंकर के बायें हाथ को भी नहीं रहता।

सारे संसार में बैंकिंग के संबंध में जो मान्यताएं हैं, वे स्विट्जरलैंड में नहीं लागू होतीं। एक प्रकार से उनके विपरीत बरतकर ही स्विट्जरलैंड ने पिछले तीन-चार सौ वर्षों में आर्थिक संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। अवश्य ही इस विशिष्टता का कारण स्विट्जरलैंड की आर्थिक समृद्धि है। जितने स्विस फ्रैंक इस समय चलन में हैं, उनके पीछे १३५ प्रतिशत सोना उस देश के खजानों में सुरक्षित है।

आज से पचास वर्ष पूर्व दूसरे देशों में

हिन्दी डाइजेस्ट

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंक जिस स्वतंत्रता से, जिस बंधन-विहीनता से अपना काम-काज करते थे, आज भी स्विट्जरलैंड के बैंक उसी प्रकार काम करते हैं। किसी देश में बैंकों को, आर्थिक चलन को वह स्वतंत्रता नहीं, जो स्विट्जरलैंड में है। भारत-जैसे देशों में, जहां पचीस रुपये की एक विदेशी पुस्तक मंगाने के लिए भी कई अर्जी-दरख्वास्तों के पुल और बैंकों की घाटियां पार करनी पड़ती हैं, वहां यह विश्वास ही नहीं किया जा सकता कि स्विट्जरलैंड में आप कुवैत का दीनार चुकाकर आस्ट्रिया के एक पुराने राजमहल को खरीद सकते हैं।

यह होता कैसे है? आस्ट्रिया का किसी जमाने का काउंट (आज का भिखारी) चाहता है कि उसके राजप्रसाद को कोई अमरीकी या शेख खरीद ले—खरीद ही न ले, कीमत ऐसी मुद्रा में दे, जिस पर वह ज्यादा विश्वास कर सके। उसका ध्यान झट स्विट्जरलैंड पर जाता है और वह वहीं की मुद्रा में बिक्री करना भी पसंद करता है। कोई अमरीकी अथवा शेख इतना धनाढ्य है कि वह नहीं जानता कि अपने धन का क्या करे। वह यह भी सतर्कता बरतता है कि उसका सारा धन एक देश में न रहे, अपने धन का कुछ-न-कुछ हिस्सा वह स्विट्जरलैंड भेज देता है। इस जमा-पूंजी से चाहे जहां की खरीदी स्विट्जरलैंड के बैंकों की कृपा से संभव है।

बेचनेवाला अपनी प्राप्त रकम को स्विट्जरलैंड में ही रखना चाहे तो भी, उस देश की मुद्रा (एक्सचेंज) स्विट्जरलैंड के [illegible] इतनी जमा रहती है कि उसे चुकाना [illegible] लिए उतना ही आसान है, जितना [illegible] देश की मुद्रा (करेंसी) में।

देश-विदेश की ये रकमें स्विट्जरलैंड [illegible] जमा क्यों हुईं और क्यों होती जा रही हैं [illegible] इसका मूल कारण प्रारंभ में लिखा वह [illegible] है, जिसके मुताबिक हर तरह का [illegible] धन वहां अनमोल थाती है और उसी [illegible] आदरणीय है, जिस प्रकार मनुष्य का [illegible] और उसकी आत्मा। समाजवादी व [illegible] वादी लोग धन की इस गरिमा का [illegible] कर सकते हैं; पर स्विट्जरलैंड की [illegible] नीति ने उस देश को तो बहुत ही [illegible] और ऐश्वर्यशाली बना दिया है।

वहां अपवित्र है तो सिर्फ वही धन, [illegible] किसी बैंक को लूटकर लाया गया [illegible] अन्यथा नाजी हुक्कामों ने छिपे-छिपे [illegible] धन स्विट्जरलैंड भेजा, तो वहां के [illegible] ने उसकी भी वही रक्षा की, जो [illegible] के धनपतियों के धन की। इसीलिए [illegible] देश की स्थिति खराब होने को होती [illegible] उसका धन छिपे-छिपे स्विट्जरलैंड की [illegible] भागने लगता है; जिस शासक का [illegible] डगमगाया, वह स्विट्जरलैंड की ओर [illegible] तिब हो जाता है। यह सदियों से होता [illegible] है और स्विट्जरलैंड में विदेशियों की [illegible] रकमों का आज हिसाब ही नहीं। [illegible] हिसाब लगाकर किसी को—वहां की [illegible] को भी—बताना नाजायज है।

वहां संगृहीत संपत्ति के संबंध [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बात जानने योग्य है। बहुत-से दूसरे समृद्ध देश गरीब देशों को मदद व उधार देने की नीति का व्यवहार करते हैं। पर स्विट्जरलैंडवाले इस नीति के कायल नहीं। परस्परिक सद्भावना व समानता के उच्च आदर्शों का जिक्र आने पर वे कहा करते हैं कि इस दुनिया में किसी को दान में कुछ मिलना न चाहिये, न मिलता है; जो जितना कुछ कमा सके, वही उसका प्राप्य है। स्वयं अपना उदाहरण देकर वे बताते हैं कि खेती के साधनों के अभाव में, बिना किसी प्रकार के स्थानीय कच्चे माल के भी वे कितने औद्योगिक हो गये हैं और उससे उन्होंने कितनी समृद्धि की है। वास्तव में समृद्धि का कल्पवृक्ष अपने पसीने से सींचा जाना चाहिये, दूसरे के धन के जल से नहीं।

परंतु परदेश से पलायन करके आये हुए धन से स्विट्जरलैंड का भंडार कितना बढ़ा है, उसे वे नहीं बताते; उसे वे अपनी आर्थिक नीति का सुफल मानते हैं। अनेक आपद्-ग्रस्त व पदच्युत शासकों ने अपना धन समय-समय पर स्विट्जरलैंड भेजा, उसे वसूल किये बिना ही वे मर गये या मारे गये; और वह धन स्विट्जरलैंड के बैंकों के उदर में समा गया।

यों वहां के बैंक बड़े ईमानदार, बड़े कार्यपटु व विश्वस्त हैं। अपने ग्राहक की हर तरह की पूरी सेवा करना, उसका हितसाधन करना वे अपना परम कर्तव्य समझते हैं। उनकी जिम्मेदारी केवल अपने ग्राहक के प्रति है, सरकार के प्रति उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं; और न वहां ऐसे कानून ही हैं, जो बैंकों पर बंधन लगाते हों। भारत-जैसे देश में, जहां बैंकों पर पद-पद पर सरकार का, रिजर्व बैंक का नियंत्रण है, वहां स्विट्जरलैंड की यह स्वतंत्रता स्वप्न समान ही है।

परंतु इस प्रकार वैध-अवैध परदेशी संपत्ति का स्विट्जरलैंड में संचय होना वहां की सरकार को चिंतित अवश्य किये है और उसका यही प्रयास है कि बाहर का यह धन उनके देश में न आये। उस पर रोक-थाम लगा दी गयी है, जमा रकमों पर ब्याज देने

अब बोलो, अगर मैं परिवार-नियोजन करता, तो इतने जवान कहां से आते?

—'नवभारत टाइम्स' के सौजन्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मनाही हो गयी है। फिर भी अंदाज किया जाता है कि करीब तीन खरब रुपये की लागत के शेयर, सेक्यूरिटी, सोना व मुद्रा विदेशियों के खातों में है। एक छोटे-से देश स्विट्जरलैंड में विदेशियों की इतनी बड़ी रकम, उस देश के प्रति आस्था के कारण, उस देश के बैंकों के अधीन पड़ी है तथा सुरक्षित है; और हमारा इतना बड़ा देश भोजन, निवास, शिक्षा, स्वास्थ्य में मामूली तरक्की करने के लिए पांच वर्ष में जो खर्च करना चाहता है उसके लिए उसे अपने देश के तनिक भी व्यक्तियों का दोहन करना पड़ता है, कई बार मित्र-देशों के द्वार खटखटाने पड़ते हैं।

स्विट्जरलैंड में नाम के बजाय कूट संख्या बनकर छिपे तौर पर बैंकों में सुरक्षित करने की सुविधा का होना ही विदेशी संपत्ति के संग्रह का कारण नहीं। वहां आयकर का बोझ इतना कम है उसकी संग्रह-विधि इतनी सरल है कि विदेशी वहां अपना घर करने का 'बहाना' कर टैक्स की बड़ी बचत कर सकते हैं। स्विट्जरलैंड में केंद्रीय सरकार की ओर आयकर नहीं लगाया जाता; अलग-अलग प्रदेश (कैंटन) आयकर लगाते हैं। व्यवसायियों-उद्योगपतियों को अपने आकर्षित करने के लिए आयकर में करने में आपस में होड़ भी करते हैं। धनाढ्य उद्योगपति, सिने-स्टार, पदच्युत शासक वहां आकर बस गये हैं।

वहां की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित कर वहां के निवासियों को आमदनी कराती है, तो वहां की बैंक नीति ने धनाढ्यों और उनके धन को यहां आकर्षित कर उसे संपन्न-समृद्ध का सिरमौर बना दिया है।

ज्योति के चार मुक्तक

किरन देख विश्वास उभरता मन का
दूर सारा ही अंधियार करता मन का
रात की बांह में थक चूर, सो जाता हूं, मगर
सुबह आयेगी ये विश्वास न मरता मन का!

ज्योति के रुख के विपरीत जो है काला है,
या जो दब गया धरती में वो अंधियाला है
जिसको सूरज का या दीप का संपर्क सुलभ
उसके जीवन में उजियाला ही उजियाला है!

रात औ प्रात् का संघर्ष बहुत गहरा है
अब तक की दौड़ में कोई न अभी ठहरा है
रात सिरफ प्रात् तलक बांध सकी सूरज को
इसलिए जल्दी ही पूरब में वो फिर लहरा है!

तल में सागर के उठी लहर कौन रोक सका
उगते विश्वास के कदमों को कौन टोक सका
किसमें साहस है कि वो थाम ले वलगा गति की
उभरती भोर की बांहों को जो हो रोक सका!

—कुमारिल पंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांधी-गगन के हंसोड़ सितारे

जी० एन० आचार्य

महात्मा गांधी थे सूरज, और अनेक व्यक्ति ग्रहों व सितारों की तरह उनके गिर्द घूमते थे–कुछ चमकते थे और कुछ जगमगाते थे। इन्हीं में एक थे विट्ठलभाई पटेल, यद्यपि वे गांधीजी के बहुत करीब नहीं थे। हंसोड़ सितारे थे वे। गांधीजी ने खुद हंसोड़ तबीयत पायी थी। नेहरू बाप-बेटे और सरोजिनी नायडू आदि भी खूब दिल खोलकर हंसनेवाले लोग थे; हालांकि उन्होंने अपना सब-कुछ अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए उत्सर्ग कर दिया था।

विट्ठलभाई पटेल सबसे निराले थे–रूढ़ि-विरोधी और व्यक्तिवादी। हास-परिहास उनकी घुट्टी में पड़ा था। उनकी वाणी चुटीली मार करती थी। व्यंग्य करने में वे बेजोड़ थे। अंग्रेज अधिकारियों से उनकी हमेशा लाग-डांट रहती थी। वे अधिकारी कभी उस 'दाढ़ीवाले शरारती' को टक्कर नहीं दे पाये। विट्ठलभाई अंधभक्त गांधीजी के भी नहीं थे।

अपने मत-मतांतर छिपाना उनके लिए संभव न था। नडियाद की एक सार्वजनिक सभा में असहयोग आंदोलन के बारे में उन्होंने कहा था–"प्रेम से विजय प्राप्त करना मुझे नहीं आता, मैं महात्मा भी नहीं हूं। मैं तो इंसान हूं, जो अपने विरोधियों को परेशान करता है, घेरता है और छकाता है। मैं जब तक यह न करूं, मुझे चैन नहीं पड़ता; और सरकार को सुख की नींद न सोने देना–इसी धर्म का अनुयायी हूं मैं।"

केंद्रीय विधान-सभा के लिए चुनाव में खड़े होने पर अपने घोषणापत्र के पहले वाक्य में ही उन्होंने अपना यह इरादा प्रकट किया था कि "मैं कानूनी तरीकों से तब तक अंग्रेजी सत्ता को भरसक परेशान करूंगा, उसके काम में रोड़े अटकाऊंगा, जब तक कि राष्ट्रीय मांगें भारतीय कांग्रेस के अनुसार संतोषप्रद रूप से स्वीकार नहीं कर ली जातीं।" १९२४ में बजट के विषय में विट्ठलभाई ने अपनी यह बात दोहरायी, तो एक और राष्ट्रवादी सदस्य श्री जमनादास मेहता ने उसमें यह मुहावरा जोड़ दिया–"हर दौर और हर कदम पर।" विट्ठलभाई ने इसे तुरंत स्वीकार कर लिया।

खिल्ली उड़ाना उन्हें खूब आता था। धर्मप्राण हिन्दू बातचीत के बीच-बीच में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'राम-राम' या 'नारायण-नारायण' कहा करते हैं। इन शब्दों से वे कई प्रकार की भावनाएं प्रकट कर देते हैं। अक्सर इनसे किसी बात के प्रति अविश्वास प्रकट होता है। विट्ठलभाई राजनीति में इनका प्रभावशाली उपयोग करते थे। वाइसराय के पद से अवकाश लेने के समय लार्ड रीडिंग की विदाई के लिए एक समारोह किया गया। अपने भाषण में लार्ड रीडिंग ने भारत के प्रति बहुत प्रेम जताया, तब विट्ठलभाई बोल उठे—"नारायण-नारायण।" यह सुनते ही हर हिन्दू तुरंत हंस पड़ा। वाइसराय ने जानना चाहा कि विधान-सभा के माननीय अध्यक्ष ने क्या कहा था। विट्ठलभाई ने निर्विकार भाव से कहा कि हिन्दू लोग समय-समय पर भगवान का नाम लेते ही हैं। इसमें हंसी की क्या बात हो सकती है! अंग्रेज बेचारा हिन्दुओं के मन की क्या समझता!

अंग्रेजों के भी अपने तौर-तरीके थे, जो विट्ठलभाई ने किसी तरह सीखे; परंतु सीखने के बाद उनका प्रयोग भी उन्होंने बहुत प्रभावशाली ढंग से किया। १९२७ में वे संसदीय प्रणाली का अध्ययन करने इंग्लैंड गये। लार्ड बर्कनहेड तब भारत-सचिव थे। औपचारिकता के अनुसार पहले विट्ठलभाई को उनसे मिलने जाना चाहिये था। परंतु अंग्रेज बादशाह के संबंध में औपचारिक विधि दूसरी थी और खद्दर-धारी विट्ठलभाई ने २५ मई को बकिंघम राजप्रसाद में बादशाह से भेंट की। उनके खद्दर के कपड़े एक राजनीतिक चुनौती के समान थे। जार्ज पंचम सहृदय व्यक्ति थे। यह औपचारिक भेंट दस मिनिट के बजाय बहुत लंबी चली। दोनों के बीच खद्दर और गांधीजी के विषय में विचार-विनिमय चल पड़ा। जार्ज पंचम ने कहा कि ये विचार तो उनके मंत्रियों को समझाये जाने चाहिये और तब लार्ड बर्कनहेड के साथ विट्ठलभाई की मुलाकात की व्यवस्था की गयी।

विट्ठलभाई ने बर्कनहेड को बहुत प्रभावित किया। परंतु विट्ठलभाई यह औपचारिकता कभी नहीं भूले कि बर्कनहेड ने पहले उनकी खबर तक नहीं ली थी, क्योंकि वे स्वयं उनसे मिलने नहीं गये थे; भेंट हुई तो बादशाह के कहने पर। अतः जब १९२८ में साइमन कमिशन भारत आया, तो सब बड़े-बड़े आदमी उसके नेता सर जान साइमन से मिलने गये; परंतु विधान-सभा के अध्यक्ष विट्ठलभाई नहीं गये। किसी ने अगर इसका कारण पूछा, तो उन्होंने कह दिया कि बर्कनहेड इंग्लैंड में कब उनसे मिलने आये थे। अंग्रेज सरकार ने उनके इस आचरण पर, औपचारिकता में कमियों के नेता और सदस्यों को विधान-सभा के अध्यक्ष से ऊपर स्थान दिया और यह बात विट्ठलभाई को खास तौर से बतायी। उन्होंने जवाब दिया—"मुझे इससे क्या मतलब?" और यह भी कहा कि इससे हमारी यह राष्ट्रीय दलील ही सच्ची सिद्ध होती है कि शाही कमिशन भारत सरकार का अंग है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर जान और कमिशन के सदस्यों को विधान-सभा के कक्ष में लाने के सब प्रयत्नों को भी वे निष्फल करते रहे। किसी को भी प्रवेश-पास देने पर उन्होंने रोक लगा दी। तब लार्ड इर्विन बीच में पड़े और उन्होंने सर जान को विट्ठलभाई से मिलने भेजा। जब वे अध्यक्ष के घर आये, तो अध्यक्ष महोदय स्नान कर रहे थे। घर पर चपरासी के सिवा कोई नहीं था और उसे अंग्रेजी नाम को भी नहीं आती थी।

फिर विट्ठलभाई ने सर जान को चाय पीने बुलाया और उन्हें विधान-सभा में आमंत्रित किया। कमिशन के हर सदस्य को स्वयं विट्ठलभाई के पास जाकर अपने-अपने आमंत्रण प्राप्त करने पड़े।

१९२४-२५ में विट्ठलभाई विधान-सभा के अध्यक्ष थे। यह वर्ष देश के लिए बहुत महत्व का था। इससे पहले कांग्रेस विधान-सभा का बायकाट करती थी; परंतु स्वायत्त-संस्थाओं में सम्मिलित होती थी। उस साल सरदार पटेल अहमदाबाद में, श्री जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद में और डा० राजेंद्रप्रसाद पटना में म्युनिसिपल अध्यक्ष हुए। सभी ने महत्वपूर्ण कार्य किये; परंतु विट्ठलभाई ने बंबई के कार्पोरेशन के अध्यक्ष के रूप में अनुपम कार्य किये थे।

३ अप्रैल १९२४ को वे कार्पोरेशन के अध्यक्ष चुने गये। लार्ड रीडिंग बंबई आनेवाले थे। कार्पोरेशन में बहुमत कांग्रेस का नहीं था। कार्पोरेशन ने लार्ड रीडिंग के स्वागत के लिए एक समारोह का आयोजन किया और यह मत व्यक्त किया कि अध्यक्ष को उसमें उपस्थित होना पड़ेगा; परंतु विट्ठलभाई इसके लिए राजी न थे; अतः उन्होंने ५ दिसंबर १९२४ को अध्यक्ष-पद से त्याग-पत्र दे दिया। ५ जनवरी १९२५ को ही वे फिर से चुने गये; परंतु इस एक महीने में भी कार्पोरेशन की चार बैठकों की अध्यक्षता उन्होंने ही की। हर बैठक के लिए अस्थायी तौर पर उनका चुनाव होता था। जनवरी में दो-बार वे सर्व-सम्मति से चुने गये थे। अंग्रेज आई० सी० एस० म्युनिसिपल कमिश्नर को भी यह मानना पड़ा था।

भंगी आप दोनों !

वह हरिजनोद्धार का समय था। गांधीजी के पीछे बड़े-बड़े नेता भी झाड़ू-टोकरी लेकर निकलने लगे थे। एक बार केंद्रीय धारासभा की लाबी में मोतीलालजी ने भूलाभाई देसाई से कहा—"भूला, तुम बड़े 'भंगी' हो!"

भूलाभाई ने इन्कार करते हुए कहा—"नहीं, आप 'बड़े भंगी' हैं।"

मोतीलालजी ने कहा—"नहीं तुम।"

"नहीं आप..." भूलाभाई ने कहा।

बात बढ़कर 'तू-तू मैं-मैं' में पलट गयी। शोर सुनकर विट्ठलभाई पटेल बाहर आये और प्रेसिडेंशियल अदा से फैसला करते हुए कहा—"अच्छा, बड़ा मैं, भंगी आप दोनों।" —अनुराग शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वे 'आदर्श अध्यक्ष' साबित हुए थे, और यह इन बातों के बावजूद कि उन्होंने वाइसराय का बायकाट किया था तथा सरकार-विरोधी व्यक्ति महात्मा गांधी के सम्मान में कार्पोरेशन से समारोह करवा लिया था।

उनकी कार्पोरेशन में भी खूब नोक-झोंक चलती रहती थी। अंग्रेजों के अलावा कई भारतीय सदस्य भी सूट पहना करते थे। उनकी खिल्ली उड़ाने के ही लिए उन्होंने प्रस्ताव किया कि बैठने की व्यवस्था सुधारने के विचार से मेज-कुर्सियां हटा दी जायें और फर्श पर खद्दर की दरियां बिछायी जायें और सदस्य दरियों पर बैठा करें। यह प्रस्ताव तो स्वीकार नहीं किया गया; परंतु इस बारे में जो बहसें हुई, उनसे लोगों को मजा आ गया।

कार्पोरेशन का अध्यक्ष प्रति वर्ष गवर्नर को दावत दिया करता था। यह रिवाज उन्होंने ऐसा मिटाया कि आज तक फिर से शुरू नहीं हो पाया है। दावत में बहुत खर्च होता था और शराब पानी की तरह बहती थी। विट्ठलभाई तो ट्राम में सफर करनेवाले अध्यक्ष थे। वे कहां से यह खर्च उठाते! उन्होंने यह प्रस्ताव मंजूर करवा ही दिया कि दावत में शराब नहीं रहेगी। नतीजा यह हुआ कि "शराब नहीं, तो दावत नहीं।" और फिर कभी दावत नहीं हुई।

केंद्रीय विधान-सभा के अध्यक्ष की हैसियत से भी उन्होंने बड़े राष्ट्रीय महत्व के निर्णय करवाये। सभा और अध्यक्ष के अधिकारों के लिए वे बराबर लड़ते रहे। और शरारत करना तो उनका शौक था। सरकार के एक पिट्ठू सदस्य के साथ उन्होंने एक बार करारी चोट की थी। विट्ठलभाई के जीवनी-लेखक श्री गोरधनभाई पटेल ने इस व्यक्ति का नाम तो प्रकट नहीं किया; किंतु बात यों हुई कि यह व्यक्ति हर विषय पर सरकार के समर्थन में भाषण करने को खड़ा हो जाता था। विट्ठलभाई उसे बढ़ावा देते गये और यह व्यवस्था की कि जब उस सेक्रेटरी मौजूद नहीं था, तो एक तैयार भाषण उसे पढ़ने के लिए ऐन मौके पर दिया गया। सरकार-विरोधी भावनाएं उसमें भर दी गयीं थीं। वह उन्हें पढ़ता चला गया रहा था और राष्ट्रवादी सदस्य बार-बार तालियां बजाकर उन विचारों का समर्थन कर रहे थे। परंतु वक्ता की समझ में कुछ नहीं आया। अंत में एक अंग्रेज सदस्य ने अलेग्जेंडर मूडीमैन ने मतदान में उससे सरकार के पक्ष में मत डलवाया।

विट्ठलभाई ने आजादी की लड़ाई की कीमत भी भरपूर चुकायी; परंतु उनके पर शिकायत का भाव कभी नहीं आया ओंठों पर हमेशा शरारत-भरी मुस्कराहट ही खेलती रही। [योजना' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

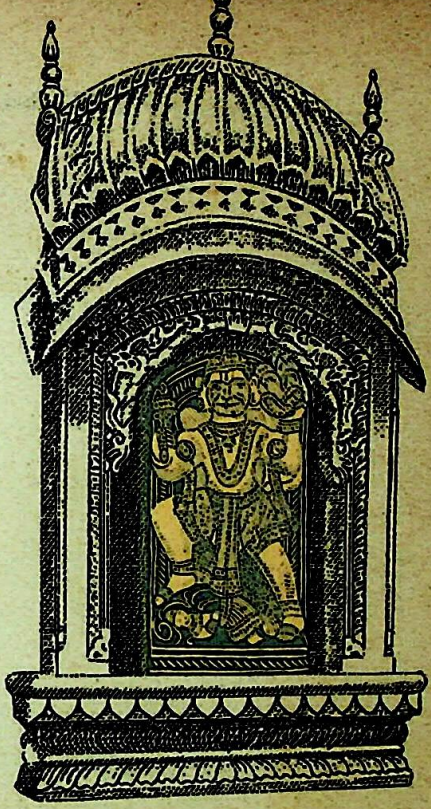

हनुमानजी की कृपा?

विनोबा

एक आदमी था। रोज वह हनुमानजी के मंदिर में पूजा करने आता था। चाहे ठंड हो, धूप हो, या बारिश हो, वह प्रतिदिन नियमित आता था। एक दिन मैंने उससे पूछा—"भाई, तुम तो बड़े आस्थावान हो। ऐसी नियमितता के पीछे क्या कारण है?" इस पर उसने कहा—"मेरा एक केस कोर्ट में चल रहा था। तब मैंने मनौती मानी कि केस का निपटारा अगर मेरे हक में हुआ, तो मैं रोज मंदिर जाकर दिया-बत्ती कर जाऊंगा। हनुमानजी की कृपा हुई और मैं जीत गया। तब से मैं रोज दिया जला जाता हूं।"

मैंने पूछा—"केस किस चीज का था?"

बोला—"जमीन के बारे में तकरार थी।"

"तुम्हारी जमीन किसी ने हड़प ली होगी शायद," मैंने पूछा। "नहीं जी, जमीन तो दूसरे की थी; पर संयोग से आ गयी थी मेरे हाथ। पुराना मालिक उसे वापस पाने के लिए कोर्ट जा पहुंचा। कोर्ट में तो सब कागजात की माया है! वह भला पक्के सबूत कहां से लाता? सच पूछिये, तो जमीन मेरी नहीं थी, उसी की थी। पर भगवान की कृपा से मैं केस जीत गया। सो अब से मंदिर में दिया जलाता हूं।"

मैं बोला—"भले आदमी, यह तुझ पर कृपा हुई या अकृपा?" परंतु यह अभागा तो उसी को कृपा समझ बैठा था। बारह वर्ष तक मंदिर में दीपक जलाया, तो भी उसके दिल के भीतर का दीपक नहीं जला। उसका हृदय तो अंधकारमय ही बना रहा। अपनी बुरी वासना पूर्ण हो जाये, तो मानना चाहिये कि भगवान की कृपा नहीं, अकृपा हुई। विशुद्ध वासना पूर्ण हो तो समझना चाहिये कि भगवान की कृपा हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरती की चोटी पर दो बार

पराक्रम का एक नया कीर्तिमान उसने स्थापित किया है; किंतु कीर्ति ने उसकी अंतर मुस्कान में कृत्रिमता नहीं घोली है।

भानु बनर्जी

"आ जाओ मेरे साथ," नवांग गोंबू ने कहा – "मैं तुम्हें चोटी पर ले चलता हूं। १९५६ में अमरीकियों के साथ एवरेस्ट पर चढ़ लेने के बाद से तो यह बच्चों का खेल लगता है।"

गोंबू और मैं, दोनों एक ही रस्सी के सहारे पश्चिमी सिक्किम के राथोंग शिखर पर चढ़ रहे थे। यह चढ़ाई हमारा इम्तहान थी। क्योंकि यह १९६५ के एवरेस्ट अभियान-दल के सदस्य चुनने के लिए सन ६४ में आयोजित चढ़ाइयों में से एक थी।

"अगर मुझे चुन लिया गया और अवसर मिला, तो मैं फिर एवरेस्ट पर चढ़ना चाहता हूं। वैसे मुझे सफलता की पूरी उम्मीद है।" गोंबू ने कहा। उसके चेहरे पर उत्साह की चमक थी।

मुझे याद है, गोंबू से मेरी मुलाकात नाम्चे बाजार में १९६३ में हुई थी। उन दिनों वह अमरीकी एवरेस्ट अभियान-दल के साथ था। इस दल में वह जिम ह्विटेकर के साथ विश्व के सर्वोच्च शिखर पर हो आया था और अब वह टोली काठमांडू लौट रही थी। सर एडमंड हिलेरी, जिन्होंने तकरीबन दस वर्ष पहले एवरेस्ट-विजय की थी, उस समय पास के गांव खुमजुंग में रुके हुए थे, और अमरीकी दल को बधाई देने नाम्चे आये थे।

मैंने जिम ह्विटेकर से कहा–"मैं हिलेरी के साथ आपकी फोटो लेना चाहता हूं, क्या एक पोज दे दें।"

"बेशक-बेशक", जिम ह्विटेकर ने कहा– "लेकिन हम दोनों के बीच में गोंबू को होना चाहिये।"

सच तो यह है कि मैंने पहले ही गोंबू से कहा था कि वह फोटो के लिए खड़ा हो, मगर वह तैयार नहीं हुआ। बोला–"मैं उन दो लंबे आदमियों के बीच में खड़ा नहीं खिंचवाऊंगा। सोचो तो, वे हैं छः फुट से भी ऊंचे हैं और मैं हूं पांच फुट चार इंच! भला, मैं उनके बीच अच्छा लगूंगा? थोड़ा दिमाग से काम लो।"

कुछ महीने बाद हिमालय माउंटेनियरिंग इंस्टिटचूट, दार्जिलिंग में गोंबू से फिर भेंट हुई। मैं वहां पर्वतारोहण का कोर्स करनेवाला था, जिसमें गोंबू प्रशिक्षक था। मैं बहुत खुश था कि इस हमें छः सप्ताह साथ रहनेका अवसर मिलेगा।

सहसा मुझे इस बात पर विश्वास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ। पर जब मैंने देखा कि वह मुझे चट्टान से नीचे जाने का आदेश दे रहा है, तो विश्वास हुआ कि वह सचमुच मेरा प्रशिक्षक है। मुझे ३०० फुट की एक सीधी खड़ी चट्टान से नीचे आना था। गोंबू ऊपर से मेरी गति पर नियंत्रण रख रहा था। मुझे रेंग-रेंगकर नीचे जाते देख, वह बोला—"वाह! अरे भानु भाई, तुम तो घबरा रहे हो। जब तुम्हें एक आदमी अपने ऊपर बैठाकर ले जाना पड़ेगा, तब तुम क्या करोगे?" और यह कहने के साथ ही उसने एक व्यक्ति को अपने कंधों पर चढ़ा लिया और देखते-देखते आराम से नीचे उतर गया। उसे तो इसमें कुछ ही सेकेंड लगे; पर मुझे कई मिनिट लगे।

गोंबू ने शिविर में एक दिन कहा—"जानते हो, मुझे कभी अपने प्राणों की चिंता नहीं हुई। १९६० में मेरी शादी हुई; उसके पहले मैं हर तरह का जोखिम उठा लेता था। अब मुझे ऐसा कुछ करते हुए दो बार सोच लेना पड़ता है। मेरी पत्नी सीता नहीं चाहती कि मैं फिर एवरेस्ट पर जाऊं। और तो और, मेरे दोस्त जिम ब्रिटेकर ने भी लिखा है कि दुबारा एवरेस्ट पर चढ़ना कुछ दुःसाहस ही होगा। मगर उसमें मुझसे रश्क भी है।"

नवांग गोंबू

फिर गोंबू अपनी पारिवारिक बातें बताने लगा—"जीवन में मेरी एकमात्र महत्वाकांक्षा यह है कि अपने दोनों बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाऊं। इतना तो निश्चित है कि अपने लड़के जिम को मैं पर्वतारोहण के पेशे में नहीं पड़ने दूंगा। दोनों बच्चे किसी अच्छे स्कूल में जगह पा सकें और उन्हें छात्रवृत्ति मिल जाये, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। मेरी एक बहन है—दोमा। उसे क्षय हो गया था और इलाज के लिए वह एक साल कर्स्योंग के सेनेटोरियम में रही। उसे पौष्टिक भोजन चाहिये।"

एवरेस्ट-विजयी होना मेहनत और साहस का काम तो है ही, खर्चीला भी है। गोंबू ने बताया कि दुनिया के कोने-कोने से उसके पास ढेरों पत्र आते हैं, जिनका उसे उत्तर देना पड़ता है। मेहमान भी लगातार आते रहते हैं; उनकी खातिरदारी करनी पड़ती है और घर में खासी प्रदर्शिनी-सी लगी रहती है। वह बोला—"मैं घर पर नहीं होता, तो सीता को यह सब संभालना पड़ता है। कुछ भी हो, यह बड़ा ही खर्चीला काम है।"

गोंबू के अल्प वेतन को देखते हुए सचमुच यह काफी बड़ा आर्थिक बोझ है। हाल ही में, डिप्टी डायरेक्टर के रूप में उसकी पदोन्नति हुई है, जिससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद उसे कुछ राहत मिलेगी।

"इस रास्ते का चप्पा-चप्पा मेरा जाना-पहचाना है। सारे पेड़-पौधे, पहाड़-चट्टानें—यहां तक कि पदचिह्न तक मेरे सुपरिचित हैं। इस रास्ते से मैं पिछले दस साल से छात्रों को उस पहाड़ पर लाता ले जाता रहा हूं। और मुझे यह अच्छा भी लगता है।" पश्चिमी सिक्किम के उस प्रशिक्षण-क्षेत्र में, जहां हिमालयन मांउंटेनीयरिंग इंस्टीटचूट के कोर्स लगा करते हैं, एक दिन राह चलते-चलते उसने कहा।

गोंबू को पहाड़ों से प्यार है। उसके चाचा तेनजिंग नोर्गे, जो प्रथम भारतीय एवरेस्ट-विजेता हैं, १९५३ में उसे अपने साथ एवरेस्ट ले गये थे। तब वह निरा १७ वर्ष का किशोर था। इसीलिए एडमंड हिलेरी आज भी उसे १९५३ के अभियान का 'बच्चा' कहा करते हैं। एवरेस्ट के छब्बीस हजार फुट ऊंचे दक्षिणी स्कंध पर सामान पहुंचानेवाला सबसे कमउम्र शेरपा वही था।

अगले ही साल वह मकालू पर्वत पर चढ़ाई करनेवाली अमरीकी टोली में शामिल हुआ और अमरीकी पर्वतारोही जितनी ऊंचाई तक चढ़े, वह भी वहां तक चढ़ा। १९५५ में वह दार्जिलिंग के हिमालयन माउंटेनीयरिंग इंस्टिटचूट में प्रशिक्षक हो गया। १९५६ में वह इंस्टिटचूट के आचार्य स्वर्गीय मेजर नंदू जयाल के साथ सासर कांगड़ी पर चढ़ा और उसी साल साकांग की चढ़ाई पूरी की। १९५७ में नंदादेवी-अभियान में भाग लिया और १९५८ में तेनजिंग के साथ फ्रे शिखर सर किया।

मदाम कोगन के चो ओयू-अभियान (१९५९) में भी गोंबू उनके साथ गया जिसमें वह मरते-मरते बचा। गोंबू की बहन दोमा भी दल की सदस्य थी। इसके कुछ ही महीने बाद प्रथम भारतीय एवरेस्ट अभियान-दल के सदस्य के रूप में वह शिखर के ७०० फुट करीब जा पहुंचा। अगले साल वह पश्चिमी सिक्किम के कोकथांग पर्वत पर था। १९६३ में वह अमरीकियों के साथ संसार के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुंचा और उसके एक साल बाद उसने भारत की सबसे ऊंची चोटी नंदादेवी को सर किया।

गोंबू का जन्म एवरेस्ट की छाया में स्थित खुमजंग में सन १९३५ में हुआ। उसके पिता, जिनका गत वर्ष देहांत हुआ, मूलतः तिब्बत के बाशिंदे थे; पर शेरपा भूमि खोंबू घाटी में आ बसे थे। गोंबू नौ वर्ष की उम्र में अपने चाचा तेनजिंग के पास दार्जिलिंग आ गया और तब से वहीं।

१९६३ में, जिस दिन वह एवरेस्ट चढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी कर काठ लौटा, उसे पत्नी का तार प्राप्त हुआ। उसके बेटा हुआ है। लेकिन वह अपने जात पुत्र से तुरंत नहीं मिल सका; उसे उसे नयी दिल्ली होते हुए अमरीका जा था। वाशिंग्टन में स्वर्गीय प्रेसिडेंट ने उसे मुलाकात दी और तिब्बती ने के अनुसार उसने प्रेसिडेंट के गले में दुपट्टा डालकर उन्हें हर्ष-चकित दिया।

['मिरर' से साभ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पना के पंख लगाइये

रिषभदास रांका

मुझे सौराष्ट्र के एक भाई की बात मालूम है, जो क्षय की बीमारी के कारण मिरज (महाराष्ट्र) रहने गये। उनके लिए वहां की जलवायु अनुकूल रही और उन्होंने तय किया कि वे वहीं रहेंगे। आसपास के वातावरण तथा जीवन-व्यवहार का निरीक्षण करने में और साथ ही कौन-सा व्यवसाय वहां लाभदायक हो सकता है, इसकी कल्पना में उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग किया। उन्होंने वहां छप्पर के कौलों (खपरैलों) का व्यापार शुरू किया और कुछ वर्षों में ही वे वहां के प्रमुख व्यापारी बन गये। इस तरह उन्होंने लाखों की कमाई भी की।

मनुष्य में यदि जीवित कल्पना हो, तो वह आपत्ति का भी अपने विकास में उपयोग कर लेता है। इसके विपरीत यदि कल्पना का अभाव हो, तो वह पास में साधन और अवसर होते हुए भी पिछड़ जाता है। जो लोग कल्पनाशील होते हैं, वे अपनी कल्पनाओं का रचनात्मक उपयोग करते हैं और उनके आधार पर बड़े-बड़े कामों की नींव रखते हैं।

सुप्रसिद्ध टाटा प्रतिष्ठान के संस्थापक जमशेदजी टाटा एक बार पूना से बंबई जा रहे थे। पहाड़ियों पर बरसनेवाले पानी को देखकर उनके मन में कल्पना जागी कि क्या उसे रोककर कोई उपयोग नहीं किया जा सकता? परिणामस्वरूप टाटा कं० ने लोनावला में पानी रोककर खोपोली में इलेक्ट्रिक निर्माण का काम शुरू किया। इसमें टाटा ने सिर्फ धन ही नहीं कमाया, बल्कि देश की सेवा भी की।

अमरीका के एक बीमा-एजेंट ने अपने जीवन के लिए ऐसी योजना बनायी कि अमुक रकम कमाने पर वह धंधे से निवृत्त हो जायेगा और उसका अनुमान था कि उसकी योजना ५५ साल की उम्र में पूरी हो जायेगी। लेकिन उसने अपनी कल्पना-शक्ति के द्वारा ४० वर्ष की उम्र में ही इतना धन कमा लिया कि वह उस धंधे से निवृत्त हो सके। उसने अपनी सफलता के अनुभवों में लिखा है– "मैं प्रारंभ में परिस्थिति का अध्ययन करता; और जब मैं ग्राहक के पास जाता, तो शुरू में उसके रहन-सहन तथा विचारों की जानकारी प्राप्त कर लेता। उसे किस बात में आकर्षण है या हो सकता है, यह जान लेने पर मैं उसकी दिलचस्पी की बात को लेकर उसके सामने बीमे का प्रस्ताव रखता। इसका नतीजा यह हुआ कि मुझे अपेक्षाकृत ज्यादा काम मिलने लगा। इस प्रकार मुझे अनुभव ने सिखाया कि योजनापूर्वक और सूझबूझ से काम करने से सफलता शीघ्र और अधिक मिलती है। इस पद्धति से मैंने जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता पायी, वह आशातीत थी और जो अर्थ-संग्रह मैं ५५ साल की उम्र तक करना चाहता था, वह ४० साल में ही पूरा हो गया।"

तो जिनमें सूझबूझ है और जो अपनी सूझबूझ का व्यवस्थित उपयोग करते हैं, वे निश्चय ही सफल होते हैं। रोजी और अर्थ कमाने में कल्पना का दारिद्र्य बाधक होता है। जो निराश होते हैं और जिनमें कल्पना का अभाव होता है, वे निःसंदेह दरिद्री बनते हैं। जो व्यक्ति सदा आंखें खोलकर अवसरों का अपने हित में उपयोग करने का प्रयत्न करता है, वही सफल होता है।

कल्पना-शक्ति को बढ़ाने और उसे योजनापूर्वक अपनी सफलता में लगाने का यदि सतत प्रयत्न किया जाये, तो यह अभ्यास बड़ा उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सबसे पहले अपने कार्य का विश्लेषण करके पता लगाइये कि आपका ध्यान किस चीज की ओर अब तक नहीं गया है। क्या आपके काम में कोई ऐसा नया विचार छूट गया है, जो अब तक कहीं आया ? इसके लिए आपको दिन में कुछ समय अलग से निकालना चाहिये, ताकि दिन-भर के कामों का विश्लेषण कर सकें। यह भी देखें कि किस काम में सफलता मिली है और किसमें नहीं। यदि सफलता नहीं मिल सकी, तो उसके लिए क्या करना चाहिये। इस तरह सुबह शाम कुछ समय अपने काम के संबंध में विचार करने तथा नयी-नयी कल्पनाएं खोजने में लगाइये। कार्य की गति बढ़ाने में कल्पना का बड़ा हाथ है।

अपने काम की सफलता के लिए प्रति-स्पर्धी की निकाल करने की अपेक्षा उससे ज्यादा अच्छा काम करने और सेवा देने में अपनी कल्पना खर्च करनी चाहिये। कल्पना को किसी खास दायरे में सीमित न कर स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करने देना चाहिये। इन कल्पनाओं या सूझों में सभी काम की होंगी, यह नहीं कहा जा सकता; पर एक सूझ ऐसी हो सकती है, जो आपके कार्य का सारा स्वरूप ही बदल दे।

अतः सूझों को बिना रोक-टोक आने और उन्हें कुछ दिन अपने मन में रहने दें। यदि आपकी कोई सूझ इतनी शक्तिशाली है कि महीने-दो महीने मन में रहकर भी आपका पीछा नहीं छोड़ती, तो आप ही उसके होकर, अर्थात उसे दूसरे व्यक्ति को

यथार्थ

कल्पना मेरी कपोती है कि जो उड़
जाय इतनी दूर इतनी
सोच भी पाये न कोई
देखना तो दूर....
लेकिन,
लौट आयेगी वहीं पर
एक दिन फिर
वह जहां से उड़ गयी थी।

— निरंकार देव सेवक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझकर उसकी स्पष्ट आलोचना कीजिये और सख्ती से जांचिये कि क्या वह कल्पना इतनी सख्ती बरतने के बावजूद आपको उपयोगी लगती है। उत्तर 'हां' में हो, तो उसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए जी-जान से जुट जाइये। सफलता निश्चित है। आज जो बड़े-बड़े काम दिखाई देते हैं, वे ऐसी ही कल्पनाओं को संकल्प बनाकर दृढ़तापूर्वक लगने के परिणाम हैं।

कई धनवानों और रईसों की संतानें कल्पना के अभाव में पुराने तरीके और परंपरा से चले आये धंधे से चिपके रहकर जहां-की-तहां रह जाती हैं, बल्कि कभी-कभी तो पिछड़ भी जाती हैं। लेकिन कई व्यक्तियों ने बारामतलबी के धंधों का भविष्य उज्वल न देख, नये-नये क्षेत्रों में प्रवेश किया और वे प्रसिद्ध उद्योगपति बन गये और उन्होंने बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों की स्थापना की। यह सब सूझबूझ का ही परिणाम है।

जिनके पास ये कल्पनाएं नहीं होतीं, उनका व्यवसाय गिरने लगता है, वे दरिद्रता की ओर बढ़ने लगते हैं। क्योंकि वे अंत तक नहीं जान पाते कि उनके व्यापार को उन्नत बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता है। इसलिए अपने व्यापार की ठीक आवश्यकता जानने पर, उसे पूरी करनेवाले उपायों की सूची बनाइये। उन्हें लिखते समय आप अपनी दृष्टि से जो भी क्रम देना ठीक समझें, दीजिये और उन कल्पनाओं को कार्य में परिणत कीजिये। फिर देखिये, आप सफल होते हैं या नहीं।

कल्पनाएं अच्छी-बुरी, व्यावहारिक-अव्यावहारिक, उपयोगी-अनुपयोगी सभी तरह की आती हैं; पर जब आप उन्हें लिखेंगे तो आपको पता लग जायेगा और आप उनमें-से चुन सकेंगे कि कौन-सी कल्पना आपकी उन्नति के लिए उपयोगी है। इन सूझों को लिखने का दूसरा लाभ यह है कि आप उन्हें कुछ समय के बाद भी पढ़ सकते हैं और पढ़-कर उनके विषय में विचार कर सकते हैं। बाद में भी जब वे कल्पनाएं उपयोगी लगें, तो उन्हें काम में ला सकते हैं।

व्यापार में पूंजी और अनुभव की तरह सूझ का भी बड़ा महत्व है। वह आपकी बहुत बड़ी शक्ति है, जिसके आधार पर आप सफल व समृद्ध बन सकते हैं। कल्पना और सूझबूझ केवल व्यापार या व्यवसाय में ही सहायक होती हो, सो बात नहीं, वह नौकरी और काम पाने में भी मददगार बनती है। बिना सूझवाले 'नौकरी' मांगने जाते हैं; जबकि सूझबूझवाले व्यक्ति 'काम' मांगने जाते हैं और इस तरह काम करते हैं कि मालिक के लिए वे अनिवार्य बन जाते हैं। काम पाकर भी आप यदि अपने मालिक के लिए उपयोगी नहीं बने, तो आपकी उन्नति असंभव है। मालिक को उसके कार्य में सहायक बनकर ऐसी सूझें दीजिये, जिससे उसका व्यवसाय बढ़े। हमने ऐसे कई लोग देखे हैं, जो सामान्य चपरासी के रूप में काम में लगकर अपनी योग्यता व कल्पना-शक्ति के आधार पर उसी प्रतिष्ठान में अफसर बने। दूसरी बात यह भी है कि सबको

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने मन का काम मिले ही, यह संभव नहीं है। इसलिए जो काम मिले, उसे अच्छे-से-अच्छा करके अपना विकास करना चाहिये।

जीवन के हर क्षेत्र में, और खासकर व्यापारी क्षेत्र में सूझबूझवाले व्यक्तियों की बेहद मांग है और वह सदा रहेगी। जो निराशावादी होते हैं, उनमें कल्पना का अभाव रहता है और उनके पास अपनी सूझ को साकार करने का साहस भी नहीं होता। वे नयी बात सोच ही नहीं पाते। और फिर बिना सूझबूझवाले कोई काम संभाल भी लें और जैसा-तैसा चला भी लें, तो भी इससे आगे नहीं बढ़ सकते। लेकिन जिनमें आगे बढ़ने की आकांक्षा होती है, वे अपनी कल्पनाओं को साकार बनाने के लिए सतत और कठिन परिश्रम करते हैं। अपनी इच्छा को दूसरों की इच्छा के अनुकूल बनाकर वे ऐसी सेवा देते हैं, जो ग्राहक को संतुष्ट करती है और उसका उन्हें उचित पारिश्रमिक भी मिलता है।

चाहे व्यवसाय हो या सामान्य दैनिक व्यवहार, आप हमेशा देखिये कि दूसरे को क्या प्रिय है? उसकी किस वस्तु में दिलचस्पी है। फिर आप ऐसा व्यवहार कीजिये कि वह आपका बन जाये। गांधीजी इस कला में बड़े सिद्धहस्त थे। वे अपने विरोधियों को भी अपना बना लेते थे। उनके सुख-दुःख में दिलचस्पी लेते थे। इसलिए आपको सफल होना है, तो कल्पना कीजिये कि दूसरे क्या चाहते हैं?

कई बार ऐसा देखा जाता है कि कई लोगों में सूझ तो होती है; पर वे उसे साकार नहीं कर पाते। जैसे सूझों का होना आवश्यक है, वैसे ही उनको काम में लाना भी जरूरी है। सूझों को काम में लाये बिना वे उन पौधों की तरह हैं, जो धान पैदा होने के पहले ही सूख जाते हैं। नयी सूझ प्राप्त करने की तुलना में उसे काम में लाने के लिए अधिक प्रयास व परिश्रम की आवश्यकता होती है और उसमें धीरज, सावधानी व कार्य-दक्षता की भी जरूरत पड़ती है।

एक बार मैंने एक साथी की कार्यपद्धति में कई कमियां पायीं। बाद में जब मैंने उनसे उसकी चर्चा की, तो वे क्रोधित होकर बोले—"आपसे यह सब किसने कहा? लोग मेरी तरक्की से चिढ़ है। इसलिए बेकार की बातें करते हैं।" वे अपना ढंग सुधारने के बजाय बराबर इधर-उधर की दलीलें देते रहे। लेकिन थोड़े ही दिनों में उनका व्यवसाय ठप्प हो गया। जिनमें दूसरों से अपने हित की बात सुनने का भी धीरज नहीं होता और जो अपनी जानकारी बढ़ाने के दरवाजे बंद कर लेते हैं, वे कभी सफल नहीं होते।

इसलिए कल्पना, सूझबूझ व सीखने की वृत्ति ही आगे बढ़ने में सहायक होती है। अतः जिनके मन में विकास की आकांक्षा है, वे सदा सीखने को तैयार रहें। नयी उपयोगी कल्पनाओं और सूझबूझों को अपनाकर उन्हें साकार करने का प्रयत्न करें। यही विकास का मार्ग है। [लेखक की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'धन कमाने की कला' से]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंजुआ की अम्मा

शीला शर्मा

मुझे उपन्यास पढ़ना अच्छा लगता है—इतना अच्छा कि तन-मन सबकी सुध बिसर जाती है। दिसंबर की नरम-नरम धूप में लान में आरामकुर्सी पर लेटी एक बढ़िया उपन्यास में डूबी हुई थी। नायिका संसार के लांछनों से क्षुब्ध हो बारंबार डूब मरने के संकल्प-विकल्प के ऊहापोह में पड़ी थी। उसका एक बच्चा था। दूध-सा गोरा, मक्खन-सा कोमल। बस वही था, जो उसे मरने नहीं दे रहा था। इसी बीच मेरी बेबी साड़ी खींच-खींचकर चिल्लाने लगी—"ममी देखो, कौन आया है। अरे मम्मी देखो तो।" मैंने झुंझलाकर आंख उठायीं, तो देखा सामने कमर से दोहरी, पोपली, काफी हद तक बहरी, सन-जैसे सफेद बालों के नीचे झुर्रीदार मुंह लिये लाठी टेकती भगुवा की अम्मा चली आ रही है। यह मेरी आया थी। शैशव की न जाने कितनी अबोध रातें इसकी लोरियों के गाने के साथ मेरी आंखों में नींद लायी थीं। मैंने पुस्तक बंद करके कहा—"राम-राम बुढ़िया।"

"राम-राम बिटिया, जीयत रहौ, सोहाग बना रहै, फूल-पौतिन से घर भरा रहै।" सदैव वह यही आशीर्वाद देती और मुझे लगता मेरे चारों ओर गुलाब व मोंगरे की भीनी-सी सुगंध छा गयी है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर बैठ बुढ़िया चली गयी; पर मेरे अंतर में हलचल मचा गयी। बेचारी के जीवन की सारी करुणा मूर्त होकर मेरी आंखों में तैर गयी। उसने बड़ा कष्ट उठाया—आजीवन दुःख ही दुःख पाया।

जाने कितने बच्चों की मृत्यु के पश्चात उसे भगुवा का मुख देखने को मिला था। पहले दिन जब वह उसे लेकर आयी, तो नन्ही-सी मैं मां के पीछे से छिप उसे देखने लगी। पीले-पीले मैले-से कपड़े में काले-कलूटे भगुवा को लपेटे वह मां के समीप ही बैठ गयी।

"इसका क्या नाम रखा महरी ?" मां ने उत्सुकता से पूछा।

"भगुवा, बहूजी"—सकुचायी-सी वह बोली। मैं अपनी हंसी न रोक सकी। खिल-खिलाकर हंस पड़ी। भगुवा ? भला यह भी कोई नाम है ?

"जब सब छोड़-छोड़ चलि गये, तब हम एह कर भगुवा नाम रख दिया। अब ई कैसे जाई बहूजी ?" उसने मानो अपनी सफाई देते हुए कहा।

"नहीं नहीं, यह कहीं नहीं जायेगा।" मां जल्दी से बोल उठी—"ऐसी बात भी नहीं करते।"

उसके सीप-जैसे नेत्रों में वेदना के मोती झलक आये। भगुवा को मां के पैरों पर रख भरे गले से उसने कहा—"हमरे भाग के तो सब छोड़ गएन, अब ई आपै के भाग से जी जाए। ई हमार नहीं आपै का है।"

मां ने भगुवा को उठा लिया—"मन छोटा न करो, परमात्मा चाहेगा, तो यह वरस का बुड्ढा होगा, भगुवा की अम्मा।

अनेक जंतर-मंतर, गंडे-तावीज झाड़-फूंक के बीच भगुवा बड़ा होता गया वह अभी आठ ही वर्ष का था कि उसका चल बसा। भगुवा की अम्मा बहुत रोई फूट-फूटकर रोयी। हर समय रोती, बात में रोती रहती। उसे रोते देख कभी कभी में भी रोने लगती और भगुवा रोने लगता।

जैसे-तैसे वह स्वस्थ हुई। भगुवा जाने लगा था। समझदार हो चला लेकिन वह उसे अबोध बालक ही समझ उसका लोक-परलोक, उसका सर्वस्व, संसार सब भगुवा ही था। भगुवा की छींक अथवा खांसी सुनते ही उसका मन कांप जाता। आंचल की ओट कर तुरंत ही किसी देवी की मानता लग जाती।

हाई स्कूल पास करने के बाद भगुवा उसी दफ्तर में नौकरी मिल गयी, उसका बाप काम करता था। उसकी मां खुशी का कोई ठिकाना न था। अब उसके विवाह की कल्पना में खोयी-खोयी रहती। संबंध तय कर चुकी थी। तिथि भी निकट आ पहुंची थी। भगुवा अम्मा आठों पहर आनंद के नशे में सी रहती। कभी बहू के लिए गहने वाती, कभी कपड़े खरीदती। कैसे जायेगी, कौन-कौन न्योते में आयेगा, समय उसकी चर्चा के विषय रहते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहां तो यह सब हो रहा था और कहां एक दूसरा ही दृश्य उपस्थित हो गया। एक रात भगुवा के पेट में असह्य दर्द उठा। उसी समय मां उसे लेकर अस्पताल पहुंची। शीघ्र ही उसका एपेंडिक्स का आपरेशन किया गया।

भगुवा धीरे-धीरे स्वास्थ्य-लाभ कर रहा था। अनुमान था कि एक सप्ताह में ही वह घर आ जायेगा; परंतु उसकी अम्मा को मानो होश ही न था। न खाने की सुध, न पहनने की चिंता। चौबीसों घंटे अस्पताल के बरामदे में पड़ी रहती। जब तक भगुवा को होश न आया, वह निरंतर रोती रही। बांहों में अश्रु का अर्घ्य लिये ओंठों से अनवरत 'रामजी-रामजी' का जप करती रही। मां ने समझाया, डाक्टर ने समझाया; पर वह अपने स्थान से हिली तक नहीं। भगुवा के 'अम्मा' कहते ही वह नाच उठी। उसके नेत्र और भी वेग से बरसने लगे। भागी, दौड़ी, गिरती-पड़ती वह डाक्टर साहब के चरणों से जाकर लिपट गयी – "डाक्टर बाबू, आप हमारे भगुवा को जियाए लियो, रामजी आपकी बहुत बड़ी उमर करें।" और फिर क्या नर्स, क्या चपरासी, क्या जमादार, उन दिनों कोई भी ऐसा न बचा, जिसके हाथ पर वह प्रसाद का बताशा रखना भूल गयी हो।

घर आने के एक दिन पूर्व भगुवा को ज्वर हो आया। घर के नौकर रामू को ले मेरी मां बड़े सवेरे ही उसे देखने चली गयीं। मैं घर में अकेली थी। बेचैन-सी टहल रही थी। शाम होने को आ गयी; पर अभी तक मां नहीं लौटीं, मैं अजीब उलझन में थी। भगुवा को देख आयी थी, वह स्वस्थ था, फिर अचानक ऐसा क्या हो गया कि सवेरे की गयी मां अभी तक न आयीं। झुंझलाती, उलटा-सीधा सोचती मैं व्यथित-सी आंगन में टहल रही थी। तनिक भी आहट होती, तो झट द्वार पर आ खड़ी होती। पर कहीं कोई नहीं। न जाने मां कहां हैं? न जाने रामू क्या कर रहा है? और तो और, पता नहीं भगुवा की तबीयत कैसी है?

आकाश वर्षा के रंग-बिरंगे बादलों से आच्छादित था। इंद्रधनुष का एक छोटा-सा टुकड़ा दूर क्षितिज के पास दिखाई दे रहा था। सहसा आहट हुई। भगुवा की अम्मा को पकड़े रामू आंगन में खड़ा था।

बुढ़िया को देख मैं प्रसन्न हो उठी। अवश्य भगुवा को लेकर यह वापस आयी होगी। आनंदातिरेक से मैंने पूछा–"तुम आ गयी? भगुवा कहां है?"

भगुवा की अम्मा मौन चुप खड़ी थी। न हिली न डुली, न उसने कोई संकेत किया। मूक, जड़वत वह एकटक शून्य में देखती रही। उसके मुख पर अपार वेदना छायी थी, उसके ओंठ हिल रहे थे; पर उनमें से कोई शब्द न निकल रहा था। उसके नेत्रों में पीड़ा का अथाह समुद्र लहरा रहा था। उसके रोम-रोम से अकिंचन के सर्वस्व लुट जाने की करुण गाथा फूटी पड़ रही थी। उसने न कुछ कहा, न कुछ बताया; पर मुझे ऐसा लगा, जैसे मैं वह सब जान गयी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहस्रदल कमल

जब तक यह पृथ्वी रसवती है
और
जब तक सूर्य की प्रदक्षिणा में लग्न है,
तब तक आकाश में
उमड़ते रहेंगे बादल मंडल बांधकर;
जीवन ही जीवन
बरसा करेगा देशों में, दिशाओं में;
दौड़ेगा प्रवाह
इस ओर, उस ओर, चारों ओर;
नयन देखेंगे
जीवन के अंकुरों को
उठकर अभिवादन करते प्रभात काल का !
बाढ़ में
आंखों के आंसू बहा करेंगे,
किंतु जल थिराने पर,
कमल भी खिलेंगे
सहस्रदल ।

—त्रिलोचन

जिसे मैं कभी भी न जानना चाहती थी।

फिर भी मन न माना। सहमती-सी आशा की टूटी कड़ी को पुनः संजोती मैं हिम्मत बांध फिर पूछा—"भगुवा कहां है?"

मुझे लगा मेरा प्रश्न मानो खुद मुझे खाये जा रहा है। मेरा मानस दुःख की भीषण ज्वाला से धू-धू कर जल उठा। उससे लिपटकर फूट-फूटकर रो उठी। हाय परमात्मा, यह तुमने क्या किया। मेरे आंसू थमते ही न थे; पर वह बिलकुल चुप शांत, निर्विकार-सी खड़ी रही।

भगुवा का शव आंगन में रख दिया गया पूरा पड़ोस उमड़ पड़ा। स्त्रियां रो रही पुरुषों के नेत्र गीले थे। ऐसा कोई न जिसका हृदय वेदना से त्राहि-त्राहि न रहा हो; किंतु भगुवा की अम्मा जड़ चुप बैठी एकटक भगुवा को देखती रही न उसकी आंखों से आंसू की बूंद निकली, कंठ से चीत्कार की एक भी ध्वनि।

सब शून्य हो गया। सब समाप्त हो गया झोली पुनः खाली हो गयी। पात्र रीता-का रीता ही रह गया।

बुढ़िया गांव में रहने लगी। कभी आटा तो मिल जाती। उसको देख दो शतक पूर्व वह दारुण संध्या याद हो आयी। उपन्यास खुला-का-खुला रह गया। कैसे पढ़ती जीवन-संग्राम की हारी-थकी जो नायिका अभी मेरे समीप बैठी थी, वह स्वयं में एक उपन्यास थी। एक ऐसा उपन्यास जिसकी जीती-जागती करुणा से मेरा हृदय चीत्कार कर उठा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection: Digitized by eGangotri

शरद राकेश

जीवन को नयी निगाह से देखने की प्रवृत्ति का एक लाभ अवश्य हुआ है । अब निःसंकोच यह स्वीकार किया जाने लगा है कि विवाह सुख और संतोष के लिए किया जाता है । इसका सीधा असर यह हुआ है कि अब दिन-प्रतिदिन प्रेम-विवाहों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है । यों हमारे देश में—और भी बहुत-से देशों में—अब भी ज्यादातर विवाह माता-पिता के द्वारा तय किये जाते हैं । मगर वहां भी दृष्टिकोण में सूक्ष्म अंतर आ गया है । बड़े-बूढ़े भी अब यही कहते मिलते हैं कि माता-पिता द्वारा निर्धारित विवाह भी प्रेम-विवाह ही हैं; अंतर इतना ही है कि इनमें विवाह के अनंतर प्रेम आरंभ होता है ।

किंतु क्या प्रेममंत्र की इस व्यापक उपासना से सुखी दंपतियों की संख्या में सचमुच वृद्धि हुई है ? पश्चिम के आंकड़े बताते हैं कि वहां विवाह-विच्छेद सामाजिक बुराई की सीमा तक पहुंच गया है । हमारे यहां तलाक अभी एक विरल अपवाद है । फिर भी सुखी दंपतियों की संख्या उतनी बड़ी नहीं है जितना कि हमारे धार्मिक नेता सार्वजनिक भाषणों में बताया करते हैं ।

विश्लेषण आवश्यक

असलियत यह है कि बहुत-से दांपत्य महज जैसे-तैसे निभाये जाते हैं; वे पति-पत्नी के लिए आत्मिक सुख-समाधान का स्रोत नहीं बन पाते । संभव है, सदा ही यही स्थिति रही हो ।

सवाल यह है कि सच्चा सुख पाने में सभी दंपति सफल क्यों नहीं होते ? इसका उत्तर पाने के लिए हमें दांपत्य यानी पति-पत्नी के संबंध को समझना होगा । सफल दांपत्य का आधार क्या है ? सुखी दांपत्य का स्वरूप क्या है ? उसका साधन क्या है ?

हमारे यहां अभी तक ये सब बातें धर्म और नैतिकता के क्षेत्र में आती हैं । कोरे शास्त्र-प्रमाण और दलीलों से इनका सुलझाव पाने का यत्न किया जाता है । दांपत्य-संबंधी आंकड़ों के संकलन और विश्लेषण की प्रवृत्ति अभी हमारे यहां पनपी नहीं है । सामाजिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रश्न को समझने में हमें पश्चिम से कुछ सहायता मिल सकती है ।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पांच सूत्र

अंग्रेज विशेषज्ञ डा० ल्यूविस टर्मन ने इस विषय में काफी शोध किया है। वे कहते हैं कि सफल दंपति वे हैं, जो यह दावा कर सकें :

क–हम अच्छे साथी हैं और हममें खींच-तान बहुत कम होती है।

ख–जब कभी मतभेद या रुचिभेद उपस्थित होता है, हम एक-दूसरे की सुविधा के अनुसार अपने को ढालने की चेष्टा करते हैं।

ग–हमें अपने दांपत्य से कोई खास शिकायत नहीं है।

घ–हमें इसका तनिक भी अफसोस नहीं कि हम पति-पत्नी बने; अगर दुबारा शादी करनी पड़े, तो हम एक दूसरे से ही शादी करेंगे।

ङ–हमारा विश्वास है कि औसत दंपतियों की तुलना में हमारा दांपत्य कहीं अधिक सुखमय है।

दांपत्य-संबंधी समस्याओं में सलाह देनेवाले डाक्टरों और समाज-सेवकों का यह भी अनुभव है कि उनके पास मार्गदर्शन के लिए आनेवाले ज्यादातर दंपतियों की कठिनाइयां कुछ इनी-गिनी होती हैं और जिनके सामने ये कठिनाइयां न आती हों, उन्हें सामान्यतया सुखी दंपति कहा जा सकता है।

असीम आशाएं

अनेक अनुभवी समाज-सेवकों और डाक्टरों का मत है कि बहुत-से विवाह इसी लिए असफल रहते हैं कि पति-पत्नी बिना खास प्रयत्न किये ही विवाह से अनंत आनंद की प्राप्ति की आशा करते हैं। इसी को एक विनोदी विशेषज्ञ ने गणित का जामा पहनाकर इस तरह पेश किया है: आशा-असलियत=असंतुष्ट दांपत्य। यानी कि जितनी ही ज्यादा आशा करेंगे, आपको संतुष्ट करना उतना ही कठिन होगा।

मुझे एक मित्र की याद आती है। जब वे कश्मीर की यात्रा से लौटे, मुझे लगा कि वे उतने खुश नहीं हैं। मैंने कारण पूछा, तो वोले–"अजी, हमने तो वहां के सौंदर्य की बड़ी-बड़ी प्रशस्तियां सुन रखी थीं और सो रंगीन चित्र मन में बना रखे थे। मगर वहां तो पहाड़, झील, जंगल और झरनों के सिवा हमें कोई खास चीज नजर नहीं आयी। सच नहीं, कवियों ने 'कश्मीरसुषमा' जैसी किताएं क्यों लिख डाली हैं?"

कोरी भावुकता घातक

बहुत-से नव-विवाहितों की भी यही भूमिका कुछ-कुछ ऐसी ही होती है। वे वैवाहिक आनंद की बहुत ही रूमानी तस्वीर कल्पना की कूंची और भावुकता के रंग से बना लेते हैं और समझते हैं कि दांपत्य का वृक्ष पर फलनेवाला स्वर्गिक सुख है, मांगने-भर से दामन में टपक पड़ता है। वे यह भूल जाते हैं कि वैवाहिक जीवन रिक्ष में नहीं, धरती पर जिया जाता है; पति-पत्नी अशरीरी आत्माएं ही नहीं, हाड़-मांस के पुतले भी हैं; और धरती जीव केवल मलय-पवन और शरत्-पर नहीं पल सकते।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांपत्य मनुष्य के बहुत-से उपक्रमों में से एक है; और दूसरे उपक्रमों में सफलता के जो नियम हैं, लगभग वे ही दांपत्य में भी लागू होते हैं। दांपत्य में प्रायः वे ही लोग सफल होते हैं, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी अच्छे मानवीय संबंध बनाने में सफल होते हैं। अच्छा मित्र, अच्छा सहकर्मी, अच्छा खिलाड़ी व अच्छा पड़ोसी प्रायः अच्छा पति भी होता है।

अर्धनारीश्वर

अखंड दीपक

इसका यह मतलब नहीं कि दांपत्य में रूमानियत के लिए कोई स्थान नहीं। बच्चे दंपति परस्पर बहुत प्यार करते हैं—बंदमन से प्यार करते हैं। किंतु वह प्यार उबाल या ज्वार नहीं होता। वह हवा से सुरक्षित आले में रखे दीप की लौ की तरह अचंचल और उज्वल होता है। कवि भवभूति का कहना है कि समय बीतने के साथ-साथ संति के हृदयों पर से एक-एक करके आवरण उतरते चले जाते हैं और अंत में उनका प्रेम स्फटिक की तरह स्वच्छ और घनीभूत हो जाता है।

मगर सवाल यह है कि प्रेम क्या है? बहुत-से लोग 'सेक्स-अपील' को ही प्रेम समझ बैठते हैं। बेशक प्रेम को जगाने में 'सेक्स-अपील' का भी अपना स्थान है। मगर वह आरंभ-बिंदु है, पर्यवसान-स्थल नहीं। प्रेम में और भी बहुत कुछ आता है। वह एक प्रकार का सख्य-भाव है, साहचर्य है, उसमें मैत्री का भी पुट होता है, हमराहीपन का भाव भी आ जाता है। और भी आगे बढ़ने पर तो उसमें एक प्रकार की सहजातता की अनुभूति भी आ जाती है। पति-पत्नी "एक प्रकार के भाई-बहन" बन जाते हैं; एक दूसरे को अपनी अमूल्य निधि समझते हैं; एक दूसरे की सहायता करने को तत्पर रहते हैं; बच्चे की भांति एक दूसरे की रक्षा करना चाहते हैं। दांपत्य-प्रेम उत्सर्ग करने के लिए तैयार रहता है; किंतु उत्सर्ग के अवसर पैदा करने में नहीं जुटा रहता, परीक्षा के लिए नहीं ललकारता। वास्तव में

अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया।... यावज्जायां न विन्दते ... असर्वो हि तावद् भवति।

—स्त्री पुरुष का आधा भाग होती है। जब तक पुरुष स्त्री को नहीं पाता, तब तक वह अपूर्ण रहता है।

—शतपथ ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह आग्रहहीन आत्मनिवदन है ।

काम और प्रेम

तो फिर दांपत्य-सुख में 'काम' का स्थान क्या है ? इसका उत्तर देना आसान नहीं है। 'नयी रोशनी' के कुछ विचारकों ने ऐसा दिखाना शुरू किया है, जैसे काम ही विवाह की नींव है । इसी तरह पुराने विचारक सोचते थे कि संतानोत्पादन ही विवाह का एकमात्र औचित्य है ।

डाक्टरों और समाज-सेवकों का अनुभव कुछ और ही है। उन्होंने देखा है कि सेक्स की दृष्टि से बहुत सफल न होते हुए भी कई दांपत्य सफल होते हैं, और सेक्स की दृष्टि से सफल होते हुए भी कई दांपत्य दुःखमय रहते हैं ।

किंतु वैवाहिक जीवन की सफलता में 'सेक्स' का भी महत्व है। क्योंकि वह बहुतों के लिए दांपत्य-प्रेम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है । कामविज्ञान का ज्ञान और सदुपयोग विवाह-सूत्र को सुदृढ़ बनाने में, प्रेम को घनीभूत बनाने में सहायक हो सकता है । इसके विपरीत, काम-संबंधों में असफल दंपति को एक दूसरे के प्रति प्रेमल और स्निग्ध बनने में कठिनाई होती है ।

व्यापक साझेदारी

किंतु दांपत्य केवल दो व्यक्तियों का प्यार ही तो नहीं है । वह तो एक व्यापक साझेदारी है । और यह साझेदारी अच्छी तरह चले, तभी दांपत्य सफल होता है ।

विवाह में प्रेम के साथ ही कर्तव्य की भावना भी बहुत बड़ा स्थान रखती है। पति-पत्नी एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं और गृहस्थी का भार समान रूप से दोनों को उठाना चाहिये । कोरी भावुकता सुखी दांपत्य की आधारशिला नहीं बन सकती। अगर पत्नी यह सोचे कि उसका पति हर-दम उसके पास बैठकर चांद-तारों की बातें किया करे और लच्छेदार शब्दों में उसके प्यार की अभिव्यक्ति तथा उसकी सुंदरता की प्रशंसा करता रहे, तो यह कोई बात नहीं हुई । ये सारी बातों समझने की होती है।

पति-पत्नी दोनों को जीवन की समस्याओं को पूर्णतया समझकर अपने-अपने कर्तव्य बांट लेने होंगे । पति अगर घर पत्नी और बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थोपार्जन में जुटता है, तो पत्नी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह उसकी कमाई का उपयोग सही ढंग से करे और पति यह न समझ बैठे कि पैसा लाकर घर में डाल देने से उसका कर्तव्य समाप्त हो जाता है। पति को अच्छा गृहस्वामी और पत्नी को अच्छी गृहस्वामिनी होना चाहिये वे दंपति निश्चय ही गृहपति और गृहिणी नहीं हैं, जो घर को बाहरी आमोद-प्रमोद व काम-काज से बचा समय गुजारने स्थान-भर समझते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक तीर्थ : दो मंदिर

जहां साहित्यकार सरस्वती की आराधना करते हैं, वह स्थान साहित्य-प्रेमियों के लिए तीर्थ के समान पावन और दर्शनीय बन जाता है। जर्मनी का वाइमार नगर भी इसी कारण देश-विदेश के सैलानियों का आकर्षण-केंद्र बना हुआ है। वह जर्मन कविता के दो अमर स्रष्टाओं की साधना-भूमि है।

गेटे और शिलर ने १८ वीं-१९ वीं सदी में अपने राष्ट्र को जो साहित्यिक और दार्शनिक संपदा प्रदान की, कालांतर में वह विश्व-संस्कृति की अमूल्य निधि बन गयी।

इन दोनों महान कवियों का सच्चा स्मारक तो इनका साहित्य ही है; किंतु जहां इन्होंने उस अमर साहित्य की रचना की और अपनी इहलीला समाप्त की, वे मकान भी वाइमार में इनकी स्मृतियों को ताजा करते हैं।

वाइमार में कवि-द्वय की संयुक्त मूर्ति

वाइमार पूर्व जर्मनी के दक्षिणी भाग में एक छोटा सा नगर है। न तो यहां गगन-चुंबी अट्टालिकाएं हैं, न शिल्पकला का कोई विशेष आकर्षण। गेटे और शिलर के मकान भी सीधे-सादे हैं। साफ-साफ कहा जाये, तो नगर के अन्य बहुत-से मकानों की तुलना में काफी मामूली-से हैं; किंतु राष्ट्रीय-स्मारकों के रूप में इनकी देखभाल बड़ी सावधानी से की जाती है। राज्य इनके लिए खर्च में कोताही नहीं करता।

गेटे के निवास-स्थान का नाम है 'एम फ्रायनप्लान'। साहित्यकार बहुधा आर्थिक दृष्टि से संपन्न नहीं होते, अतः गेटे का यह मकान भी देखने में साधारण है और आस-पास के मकानों के मुकाबले इसका अपना रौब भी नहीं। मगर गेटे ने अपने जीवन के ५० वर्ष इसी में बिताये थे।

यह मकान गेटे को उनके मित्र ड्यूक कार्ल आगस्ट ने उपहार-स्वरूप दिया था। कवि और वैज्ञानिक गेटे ने इसी घर में अपने महान ग्रंथों की रचना की। यहां वे सपरिवार रहते थे। राजनेता के रूप में यहीं पर वे अतिथियों और प्रशंसकों से मिला करते थे। आज यह मकान, उसके सब कक्ष, उसकी चीजें और उसका हरा-भरा बगीचा, सब राष्ट्रीय संग्रहालय के रूप में सुरक्षित हैं।

घर में प्रवेश करने के लिए कुछ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इनका डिजाइन गेटे ने स्वयं बनाया था। सीढ़ियां पार कर हम उस कमरे में आते हैं, जो सामाजिक समारोहों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए सुरक्षित था। दीवानखाने से घर के तमाम कमरों की कतार दिखाई देती है, जिस पर रंगों की बड़ी सुंदर सजावट है। हर कमरे में कला के चुनिंदा नमूने हैं, जिन्हें कवि ने अपने लंबे जीवन के दौरान एकत्र किया था। हर वस्तु से बड़प्पन टपकता है।

दीवानखाने के तंग द्वार से निकलकर हम कवि के अध्ययन-कक्ष में आ जाते हैं। सब ओर ऐसी सादगी है कि गरीबी का आभास मिलता है। यहीं अमर गेटे की मेधा ने उन विचारों को जन्म दिया, जो आज देश-देशांतरों के सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। सादी-सी तोशक से ढंका हुआ, तंग और छोटा-सा वह पलंग हमारी आंखों के सामने है, जिस पर २२ मार्च १८३२ के दिन उस महान कवि ने अंतिम सांस ली थी।

हमारी निगाह उस छोटे-से और लुभावने बाग पर जाती है, जिसमें छोटी-छोटी सीधी क्यारियां हैं, पगडंडियां हैं, मेहराबदार कुंज और लंबे-लंबे वृक्ष हैं। कवि अपने अवकाश के क्षण यहां बिताया करते थे। आजकल कवि के जन्मदिन पर यहां एक समारोह होता है। उस रोज दूर-दूर से लोग यहां आते हैं और शाम को इस कक्ष में बैठकर संगीत सुनते हैं। गेटे स्वयं भी अपना जन्मदिन इसी प्रकार मनाया करते थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अंतिम सप्ताहों में अमरीकी बमबारी से इस घर को भारी क्षति पहुंची थी। काफी पैसा खर्च करके और बड़ी सावधानी से मरम्मत का काम किया गया। युद्ध के चार वर्ष बाद गेटे का घर अभ्यागतों के लिए पुनः खुल गया। उस अवसर पर संसार-भर से लोग बाइमार आये और उन्होंने कवि की २०० वीं वर्ष-गांठ मनायी।

मुख्य संग्रहालय की दो मंजिलों में कवि के घरेलू उपयोग की वस्तुओं का संग्रह है। इन वस्तुओं को हूबहू वैसा ही रखा गया है, जैसी वे कवि के जीवन-काल में थीं। चार वर्ष पहले इन्हें नये ढंग से व्यवस्थित किया गया था, ताकि दर्शक कवि के जीवन की सारी संपत्ति नजर-भर देख सकें। रोशनी की व्यवस्था इतनी बढ़िया है कि कवि के जीवन का भाव-वैभव एकदम दर्शक को अभिभूत कर लेता है। ऐसे विशेष उपकरण लगाये गये हैं, जो विदेशी अतिथियों को उनकी मातृभाषा में गेटे-संबंधी विवरण सुनाते हैं।

फ्रायनप्लान से कुछ ही कदम पर फ्रेड्रिक शिलर का घर है। आज की शिलर स्ट्रीट के किनारे ऊंचे किंतु कुरुचिपूर्ण मकानों के बीच डूबा हुआ और लजीला-सा यह मकान गेटे के मकान से भी मामूली है और अपने स्वामी की कमजोर आर्थिक स्थिति

गेटे का घर

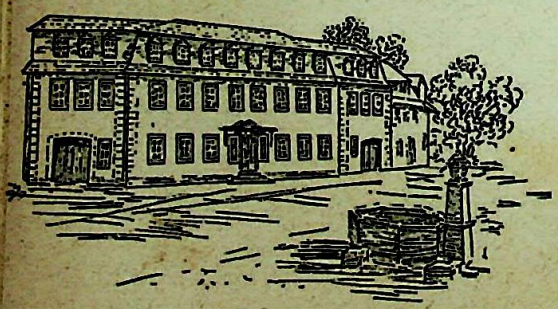

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का परिचय देता है। गेटे राज्य कर्मचारी थे, अपने देश के मंत्री थे; जबकि विद्वान फ्रेडरिक शिलर पास के जेना विश्वविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक थे।

फिर भी इस मामूली से घर ने जर्मनी और यूरोप के समूचे सांस्कृतिक जगत को प्रबल प्रेरणा दी है। आखिर जर्मनी का महानतम नाटककार यहां रहा था न। वैसे शिलर ने अपनी मृत्यु से पूर्व के तीन वर्ष ही यहां बिताये।

शिलर स्ट्रीट में दर्शक को एक अलग तरह का वातावरण मिलता है। वह उस महान प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस साहित्यिक संग्रहालय में शिलर की ऐसी बहुत-सी चीजें हैं, जो दर्शक को अभिभूत कर लेती हैं।

तंग सीढ़ियों पर से होकर दर्शक कवि के सीधे-सादे निवास-कक्ष में पहुंचता है। घर के कमरों की सजावट तत्कालीन साम्राज्य-युगीन शैली में है।

एक द्वार से होकर हम कवि के अध्ययन कक्ष में पहुंचते हैं। इसी कमरे में शिलर का देहांत हुआ था। भावुक दर्शक को याद आ जाता है किस तरह सुख-सुविधाओं के अभाव में असाध्य क्षयरोग ने शिलर को जकड़ लिया था और वे बहुत कम अवस्था में ही

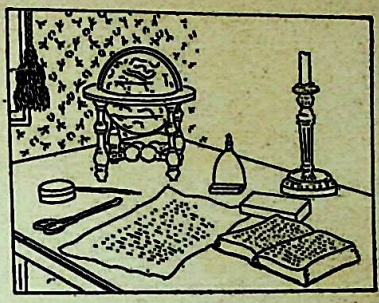

शिलर के अध्ययन-कक्ष में

चल बसे थे। किंतु यहीं पर कवि ने अपनी लोकोत्तर प्रतिभा और अजेय आत्मबल द्वारा सृजन के वे चमत्कार दिखाये थे।

एक नाजुक, पुरानी डेस्क पर शिलर के दैनिक उपयोग की वस्तुएं रखी हुई हैं—एक दवात है, शमादान है, सुंघनी की डिबिया है और इनके पास ही रखे हैं वे पन्ने, जिन पर 'डिमिट्रियस' नामक पुस्तक के कुछ पद्य हैं। असामयिक मृत्यु ने कवि को इसे पूरा करने से रोक दिया, अन्यथा संभवतः यह भी एक महान रचना होती।

अमरीकी बमबारी से यह मकान भी बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया था। युद्ध के बाद इसका भी पुनरुद्धार किया गया। १० नवंबर १९४६ को शिलर के जन्मदिन पर इसे पुनः खोला गया। तब से यहां दर्शकों का तांता लगा रहता है।

★

एक साहित्य-गोष्ठी में निरालाजी के निकट कवयित्री तोरणादेवी शुक्ल 'लली' बैठी थीं और उनके पास उनके पति। निरालाजी ने परिचय दिया—"आप ललीजी हैं।" तभी एक साहित्यिक ने ललीजी के पति की ओर संकेत कर जिज्ञासा प्रकट की।

"आप लली के लाल हैं।" निरालाजी ने शांतभाव से उत्तर दिया। —केदार उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजी

करतार सिंह दुग्गल

"तुमने फिर दिन में मुझे कहानी सुना दी?" राजी की मां ने उसे बताया था, यदि दिन में कोई कहानी कहे, तो मुसाफिर रास्ता भूल जाता है।

मुझे कहानियां सुनाना अच्छा लगता था। राजी को कहानियां सुनना अच्छा लगता था। जब मैं कोई कहानी छेड़ता, वह एक-दम फाख्ता-जैसा मुंह आगे बढ़ाकर सुनने लग जाती। और फिर जब कहानी खत्म होती, अपनी मां की बात याद करके उसे डर लगने लगता। "अब कोई मुसाफिर जरूर रास्ता भूल जायेगा।" राजी के अंदर की औरत की पलकें अश्रुओं से परोयी जातीं।

"अब जरूर कोई मुसाफिर रास्ता भूल जायेगा।" राजी कहती और मेरी आंखों के सामने मटमैले जाल के पीछे घात लगा-कर बैठी मकड़ियों, कंटीली पगडंडियों, बिच्छुओं के डंक और सांप की केंचुलों के चित्र घमने लगते।

उस रात मैं अपने मन से बार-बार इक-रार करता, अब मैं दिन के समय किसी को कहानी नहीं सुनाऊंगा। किंतु फिर जब अकेले होकर हम इकट्ठे बैठते, उसकी अलसायी-अलसायी पलकों को देखकर, मैं कहानी कहना शुरू कर देता। हर बार नयी कहानी। कैसा खुमार राजी की आंखों में होता था! मैं कहानी सुनाता, तो जैसे वह सब कुछ भूल जाती। और फिर जब कहानी खत्म होती, अपनी मां की कही बात याद करके उसका खून सूखने लगता।

तब राजी की आयु कुल चार वर्ष की होगी। मैं और राजी हमउम्र थे। अभी मैंने स्कूल जाना नहीं शुरू किया था।

राजी का पिता हमारे गांव का पटवारी था। हमारे घर के बाहर गली में एक कोठा था, जिसमें वे रहते थे। राजी, राजी के बहन-भाई, राजी के माता-पिता और राजी के दादा-दादी। राजी का पटवारी पिता बार-बार गांववालों को ताने देता—शहर में हम रहते थे, तो भी एक कमरा, अब गांव में आये हैं, यहां भी एक कमरा हमारे भाग्य में लिखा हुआ है। किंतु गांववाले भी बेचारे क्या करें; गांव में केवल उतने ही घर थे, जितने गांव में कुनबे थे। जैसे-जैसे किसी का खानदान बढ़ता, लोग और-और कमरे बनवाते जाते।

यह कोठा जो पटवारी को मिला था, उनके आने से कुछ दिन पहले ही खाली हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। कई वर्षों से एक विधवा इसमें अकेली रह रही थी। फिर एक दिन जब मुहल्ले-वाले सुबह सोकर उठे, विधवा वहां नहीं थी। अपना चूल्हा-चौका संभालकर किसी के साथ निकल गयी थी। उसका कोठा मस्जिद की तरह खाली पड़ा था।

और फिर पटवारी आकर इस घर में रहने लगा। पटवारी की पत्नी बड़ी सुघड़ औरत थी। एक अकेले कमरे को लीप-पोत कर रखती। हर वस्तु सलीके से अपनी-अपनी जगह पर रखी होती। पटवारी के एक-के-बाद-एक तीन बच्चे हुए, जो हमेशा साफ-सुथरे रहते, हंसते-खेलते। पटवारिन का सारा दिन घर व बच्चों को संभालने में निकल जाता।

सास-ससुर या तो बाहर आंगन में बैठे रहते या फिर ड्योढ़ी में अपना-अपना खटोला जा रखते। दिन में वे ड्योढ़ी में बैठते, रात को ड्योढ़ी में गाय बांधी जाती।

राजी सबसे बड़ी बेटी थी। मुझे राजी बड़ी अच्छी लगती। हू-बहू अपनी मां की शक्ल। मां-जैसी सुघड़, मां-जैसी भोली, फाख्ता की तरह मासूम।

और राजी भी जैसे मुझ पर जान देती थी। सुबह जब मैं सो रहा होता, तो कितनी बार आकर झांक-झांक जाती। कोई नया कपड़ा पहनती, मुझे दिखाने के लिए उत्सुक रहती। उनके घर कोई सौगात आती, अपना हिस्सा मेरे साथ बांटकर खाती। और उसके बाप पटवारी के घर तो कुछ-न-कुछ आता ही रहता। कभी भुट्टे, कभी बालें, कभी चने, कभी गाजरें, कभी बेर। बेरों के मौसम में तो उनके घर बेरों के ढेर लगे रहते। खट्टे बेर, खटमिट्ठे बेर, बेरियां। और मुझे बेर कितने अच्छे लगते थे। राजी झोली भर-भरकर बेर मुझे देती। एक बार उसके घरवाले घर में नहीं थे, लाड़ में उसने बेरों की एक टोकरी मेरे ऊपर उलट दी। सारे कमरे में बेर-ही-बेर हो गये। और फिर कितनी देर तक हम उन्हें बीनते रहे।

राजी हमारे घर आती, तो प्रायः हमारे कमरों को गिनती रहती। यह कमरा हमारी बैठक थी। इसमें मिलनेवालों को बैठाया जाता था। जब मिलनेवाला कोई न होता, तो यह कमरा बंद पड़ा रहता। प्रतिदिन सुबह इसे साफ करके सजा दिया जाता; घरवाले इसे कभी नहीं बरतते थे। इसके साथ एक कमरा था, जिसमें हमारे मेहमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठहरते थे। जब मेहमान न होते, यह कमरा भी बंद पड़ा रहता।

आंख-मिचौनी खेलते-खेलते राजी प्रायः इन कमरों में जा छिपती, और जब मैं ढूंढ़ता-ढूंढ़ता उसे पाता, वह किसी कालीन या किसी पलंग पर चित पड़ी होती। लंबे-लंबे सांस ले रही होती, किसी अलौकिक आनंद में उसकी पलकें मुंदी होतीं।

हमारे माता-पिता के सोने का कमरा अलग था। हम बच्चे अलग कमरे में सोते थे। इन दो कमरों में दरवाजा था, जिस पर हमेशा एक परदा लटका रहता।

खेलते-खेलते जब हम इन कमरों की ओर आते, कभी राजी परदे के इस ओर खड़ी होकर दूसरे कमरे में देखने की कोशिश करती, कभी परदे के उस ओर खड़ी होकर इधर हमारे कमरे में झांकने की कोशिश करती। मेरी कुछ समझ में न आता। और अक्सर मैं राजी को पकड़कर वैसे-का-वैसा घुमाने लगता। दरवाजे पर लटक रहे परदे में वह लिपट जाती। कितनी-कितनी देर तक बुत-का-बुत बनी दरवाजे के बीच खड़ी रहती। मैं उसे देखकर हंसे जाता, जैसे मक्की का भुट्टा हो।

और फिर जब मैं उसे उलटा-फिराकर परदे में से निकालता, उसका मुंह लाल सुर्ख हो गया होता। जैसे पका हुआ बेर हो। उसके गालों से लाली जैसे फूट-फूट पड़ती। राजी को सीधा घुमाकर यूं परदे में लपेट देना, राजी को उलटा फिराकर यों परदे में से निकाल लेना, मुझे अच्छा लगता था। और हम बार-बार यह खेल खेलने लगते।

हमारे आंगन में नीम का एक पेड़ था। उसकी टहनियों को पकड़कर हम जोर-जोर से झकझोरते। नीचे धरती निमौरियों से पट जाती। और फिर हम एक-दूसरे पर निमौरियां फेंकने का खेल खेलने लगते। हर बार मेरा निशाना चूक जाता, हर बार राजी की निमौरी मेरे मुंह पर आ लगती; कभी माथे पर, कभी कानों पर, कभी ठोड़ी पर, कभी नाक पर, कभी गालों पर, कभी बोंठों पर। और राजी खिलखिला कर हंसती। मोतियों जैसे दांत; हंसे जाती, हंसे जाती।

यों खेलते-खेलते कई बार मैं राजी को पकड़ने के लिए भागता, वह दौड़ती हुई हमारे मवेशियों के कोठों की ओर चली जाती। गाय का कोठा, भैंस का कोठा, घोड़ी का कोठा, और फिर चारे का बड़ा-सा कोठा, जिसमें कंचन की तरह झिलमिल कर रहा भूसा छत-छत तक भरा होता। देखते-देखते राजी अपने आपको भूसे के ढेर में छिपा लेती। सारा धड़ तिनकों में, केवल मुंह और नाक बाहर। और फिर खिल-खिलाकर हंसती तिनकों में से निकल आती। राजी के सुनहले बालों में भूसे के तिनके उलझ जाते और घंटों उस कोठे में बैठे हम एक-एक तिनके को निकालते रहते। "पुनू, ये तिनके चुभते नहीं?" मैं उससे पूछता। और राजी भूसे की एक मुट्ठी भरकर मेरे गिरहबान में डाल देती। और फिर मुझे परेशान होता देखकर हंसे जाती-हंसे जाती।

राजी चाहे कुछ भी करे, मुझे बुरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छी लगती थी। अक्सर हम अकेले खेलते। यदि और बच्चे होते, तो हमेशा मेरा और राजी का साथ रहता। सारे दिन वह हमारे घर रहती। मैं उसकी बड़ी खातिर करता। हम नाटक रचाते; कभी मैं राजकुमार बनता, राजी राजकुमारी बनती। अगर मैं राजा बनता, तो वह हमेशा रानी बनती। राजी के साथ मेरी दोस्ती देखकर मेरी बहनें उसे हथेलियों पर उठाये रखतीं। हमारे आंगन में उसके आते ही राजी-राजी होने लगता। राजी भी हमारे घर को अपना घर समझती थी। वक्त-बेवक्त आती-जाती, खेलती-खाती। गर्मियों की लंबी दोपहरी में, मेरी मां उसे बाकी बच्चों के साथ, अंधेरा करके ठंडे किये कमरे में सुला देती। मुझसे अधिक राजी को खबर होती, कौन-सी वस्तु कहां पड़ी है। कई बार कोई चीज मेरी मां को न मिलती, राजी ढूंढ़कर ला देती। सारा-सारा दिन उसे अपने घर से आवाजें दी जातीं; बड़ी मुश्किल से रात गये वह कहीं अपने घर लौटती।

इस तरह या तो राजी हमारे यहां होती या मैं राजी के घर होता। प्रायः हम उनके आंगन में खेलते। चौड़ा कम था, लंबा ज्यादा था। राजी की अम्मी आज-कल फिर मां बननेवाली थी। इधर-उधर घूमते हम अक्सर उसके बढ़े हुए पेट को देखते रहते। कैसे हौले-हौले चलती थी। राजी की अम्मी का बढ़ा हुआ पेट देखकर न मालूम मुझे क्या हो जाता, जैसे कोमल-कोमल कांटे मेरे अंग-अंग में चुभने लगते। कुछ इसी तरह का राजी को भी महसूस होता। उसकी पलकों में मुझे अपनी आंखों की झलक दिखाई देती। राजी की मां के बढ़े हुए पेट को देखकर मेरा जी चाहता, राजी का कुरता उठाकर देखूं, औरत का पेट यों कैसे बढ़ जाता है।

और जैसे सचमुच राजी को मेरे मन की बात पता लग गयी हो। एक बार यों ही जब उसकी अम्मी हमारे पास से गुजर कर गयी, मैंने राजी की ओर इस तरह देखा, जिस तरह हमेशा मैं देखा करता था, एक अटूट मुहब्बत अपनी पलकों में भरकर। और राजी मुझे बांह से पकड़कर अपनी ड्योढ़ी में ले गयी। ड्योढ़ी के दरवाजे को मोड़कर उसने अपना कुरता उठा लिया। और एक नशे में आंखें मूंदे मैं अपना हाथ राजी के पेट पर फेरने लगा। मेरा हाथ राजी के पेट की ओर बढ़ा ही था कि ड्योढ़ी का दरवाजा खुल गया; हमारा नौकर मुझे ढूंढ़ रहा था।

उस दिन के बाद हमारा वह नौकर हमेशा मेरी ओर इस तरह देखता, जैसे किसी को किसी की चोरी का पता हो। और हमेशा मुझे अजीब-अजीब-सा लगता।

ढेर से वर्ष बीत गये और मुझे पता चला, हमारा वह नौकर क्यों इस तरह मेरी ओर देखा करता था। क्यों राजी का हमारे घर आना बंद करवा दिया गया था। क्यों राजी के घर मेरा जाना वर्जित हो गया था।

वह दिन और आज का दिन, जब मैं दिन में किसी को कहानी सुनाता हूं, मुझे डर लगा रहता है, कहीं मुसाफिर राह न भूल जाये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जरा इधर तो देखो

आबदा जफर

एक वर्ष पहले की बात है। मैं जमाने के हाथों बिलकुल ही हिम्मत हार बैठा था। उन्हीं दिनों किसी एक नौजवान ने मुझे एक लंबा-सा पत्र लिखा, जिसमें एक अद्‌भुत सच्ची कहानी लिखी थी। इस पत्र को पढ़कर मुझे शांति महसूस हुई, जैसे किसी ने मेरे जख्मों पर मरहम रख दिया हो। इस कहानी ने मुझे इस बात का भरपूर शऊर दिया कि जिंदगी में एक और सहारा और एक और साथी भी है, जो अदृश्य है, और हर पग पर सदैव हमारे साथ होता है।

उस दिन सलीम की पचीसवीं वर्षगांठ थी। वह सुबह उठा, उसके चेहरे पर एक अज्ञात संकल्प उभर रहा था। वह जिंदगी को खत्म कर देना चाहता था। उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था। यह मई का गरम दिन था। धूप की रुपहली किरणें खिड़की से छन-छनकर उसके कमरे में प्रवेश कर रही थीं। वह अनजाने ही धूप को देखने लगा। फिर वह आंखें बंद करके बिस्तर पर लेट गया।

उसके मां-बाप मर चुके थे और उसका कोई निकटवर्ती रिश्तेदार भी न था। जिंदगी शुरू से ही फीकी और नीरस रही। उसमें रंगीनी नाम को न थी। उसका दोस्त भी तो कोई नहीं था।

सोचते-सोचते उसे अपने खिंचे हुए नर्वों में सहसा शांति-सी महसूस हुई। उसने दिन-भर का प्रोग्राम बनाया था। यह उसकी जिंदगी का अंतिम दिन था। बैंक में उसके दो सौ रुपये जमा थे। वह उन सबको निकाल लेगा। रात के सात बजे तक शहर के बेहतरीन होटल में रहेगा। जो चाहेगा, खायेगा। आज वह उस होटल में नहीं जायेगा, जहां उसे हर रोज सड़ा हुआ खाना और बदमजा चाय मिलती थी। आज का दिन वह पूरी निश्चितता से गुजारेगा।

अचानक उसके मस्तिष्क में एक विचार उभरा—वह क्यों न अभी उठ बैठे और सीधा होटल की ओर चले। बेहतरीन कमरे का आर्डर दे और उसके सुंदर बरामदे में ठाठ से टहले। वह वहां बैठेगा। पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने उलटेगा। निश्चितता से इधर-उधर घूमे-फिरेगा.....हां आज ही के दिन.... जो उसकी जिंदगी का अंतिम; किंतु सबसे अच्छा दिन होगा।

उसने अपने सबसे बढ़िया कपड़े निकाले। बड़ी अच्छी तरह नहाया और तैयार होने में बड़ी तन्मयता से काम लिया। बैंक में अपने दो सौ रुपये निकाले और सीधा शहर के सबसे बड़े होटल में पहुंचा। इतनी शानदार जगह उसने स्वप्न में भी न देखी थी। उसे एकदम आरामदायक और बढ़िया कमरा दिया गया। स्लेटी रंग के मोटे कालीन पर टहलते हुए वह स्वयं ही जोर से हंस पड़ा। बारी-बारी सभी नरम कुर्सियों पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठा—गुसलखाने में गया और मोटे - मोटे नरम तौलियों को सहलाने लगा। उसके दिल-दिमाग में अजीब-सी खुशी फूटती हुई महसूस हुई। उसने बैरे को उम्दा खाने का आर्डर दिया। ऐसा स्वादिष्ट खाना उसने पहले कभी नहीं खाया था। खाना खाकर वह नीचे उतर आया। एक पत्रिका खरीदी और एक आराम-कुर्सी पर बैठकर बड़ी शान से कीमती सिगार पीने लगा। वह इर्द-गिर्द बैठे लोगों को बड़ी दिलचस्पी से देखता रहा। इससे पहले उसने किसी को नजर भरकर नहीं देखा था। बेहद शर्मीले और जल्दी घबरा जानेवाले सलीम में आज यह इच्छा उभर रही थी कि इन लोगों के निकट आये और इनसे बातें करे।

वह वहां से उठा और होटल के लान में देर तक टहलता रहा। शाम के चार बज रहे थे। उसने सोचा— वह एक-दो घंटे और सो ले। जब वह जागे, तो बहुत ही स्वादिष्ट खाना खाये और फिर सदा की नींद सो जाये।

जब वह उठा, तो सात बज रहे थे। अब मरने का समय बिलकुल निकट था। वह यों ही हंस दिया और जेब से सारी पूंजी निकालकर मेज पर रख दी। इसमें होटल के किराये के अलावा अंतिम संस्कार के लिए पर्याप्त रकम थी। वह मरने के बाद किसी पर बोझ नहीं बनना चाहता था। उसने मैनेजर के नाम एक संक्षिप्त-सा पत्र लिखा, जिसमें उसने क्षमा मांगी थी कि मरने के लिए उसने उनके होटल का उपयोग किया है। अंतिम बार आईना देखा। उसके चेहरे पर उल्लास की एक चित्ताकर्षक चमक थी; किंतु उसे तो मरना था। इसी उद्देश्य के लिए तो वह यहां आया था। वह खिड़की तक गया और नीचे झांककर देखा, होटल की सातवीं मंजिल से सड़क का दृश्य बड़ा मन-मोहक था। वह खिड़की से बाहर पांव लटकाकर बैठ गया और सिगरेट पीने लगा।

शाम की शीतल हवा के झोंके उसके चेहरे से अठखेलियां करने लगे; किंतु शीघ्र ही उसे अतीत की कटु स्मृतियों ने आ घेरा। वह एकबारगी उदास हो गया। जिंदगी का बोझ उसके शरीर और आत्मा को श्रांत कर रहा था। उसे यों लगा, जैसे वह निराशा के कब्रिस्तान में दफन होने लगा है।

"इसलाम लैक्स....." किसी की प्यार-भरी आवाज आयी। सलीम उस आवाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर चौंक पड़ा। बायीं ओर की खिड़की में एक सांवले रंग का खूबसूरत नौजवान बिलकुल उसी की तरह टांगें लटकाये बैठा था। उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी।

"अच्छा, आप नीचे तशरीफ ले जा रहे हैं..." नवागंतुक ने गहरी निचाई की ओर इशारा करते हुए कहा..."बहुत अच्छा है, मैं भी वहीं जा रहा हूं। अच्छा समय गुजरेगा हम दोनों का..." और वह हंस पड़ा।

सलीम ने भरपूर दृष्टि डाली। नवागंतुक का चेहरा खुशियों से दमक रहा था। उसकी आंखों से मुस्कराहटों की किरणें फूट रही थीं। सलीम ने सोचा, भला ऐसे व्यक्ति को आत्महत्या करने की क्या जरूरत है। आत्महत्या तो मुझ-जैसे बदनसीब व्यक्ति को करनी चाहिये। उसने सहसा नवागंतुक से पूछा—"आत्महत्या क्यों करना चाहते हो?"

"क्यों?" नवागंतुक ने सलीम के शब्द को दोहराया—"आप कारण क्या पूछते हैं? यह प्रश्न तो मैं आपसे भी पूछ सकता हूं।"

सलीम ने नवागंतुक को अपनी निराशाओं की कहानी सुनायी। नौजवान चुपचाप सुनता रहा। जब सलीम अपनी कहानी समाप्त कर चुका, तो वह सहानुभूति से कहने लगा—"मुझे तुम्हारी बातें सुनकर बहुत दुःख हुआ है। मुझे इस बात का भी दुःख है कि तुम पचीस साल अंधे बने रहे। तुम्हें अपने आस-पास कुछ नजर नहीं आया और तुमने कभी रमणीय प्रकृति को देखने की कोशिश नहीं की। जरा नीचे की तरफ तो देखो, जिंदगी फूट रही है। उधर आसमान पर निगाह डालो—यह आकाशगंगा, ये सितारे, ये बादलों के सफेद-सफेद टुकड़े, यह चांद की सुखद चांदनी—क्या यह आंखों में मादकता नहीं भर रही? क्या तुम कभी खेतों, जंगलों और मैदानों की तरफ यहां घूमने की खातिर निकले हो? किसी लाइब्रेरी में जाकर कोई अच्छी-सी किताब पढ़ी है? या कभी किसी टीले पर बैठकर डूबते सूरज की रोशनी को अपने अंदर समाने की कोशिश की है? ओह, तुम तो नाराज होने लगे हो मेरी बातों से। मैं अधिक विस्तार में नहीं जाता। मुझे सिर्फ इतना बता दो, तुमने खुदा के बारे में कभी सोचा है?"

सलीम गहरे सोच में डूब गया और फिर धीमे स्वर में बोला—"नहीं, मैंने एक बार भी खुदा के बारे में नहीं सोचा। मैंने कभी उससे दुआ भी नहीं मांगी और इन बातों की हकीकत ही क्या है—कुछ भी तो नहीं।"

नवागंतुक ने जरा तेज स्वर में कहा—"शायद तुम्हें किसी चीज में कभी कोई हकीकत नजर नहीं आयेगी; क्योंकि तुम्हारे अंदर हकीकत नहीं है। अपने निजत्व के खोल से बाहर निकलकर देखो कि प्रकृति तुम्हें इस संसार की व्यापकता, मनमोहकता और आकर्षण का अहसास है। प्रकृति की एक-एक चीज आमंत्रण देती है और जो इसे देखते हैं, उनकी दृष्टि को सौंदर्यानंद से भर देती है।"

सलीम ने यों महसूस किया, जैसे उसके दिल की दुनिया में एक हंगामा उठ खड़ा हुआ है। नौजवान की आवाज एक बार फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूंदी–"तुम जिंदा रहने से भयभीत थे–तुम बुजदिल थे और अब भी बुजदिल हो।"

सलीम इस जबर्दस्त चोट को सह न सका और कटुता से बोला –"तुम स्वयं भी तो मरना चाहते हो! आखिर क्यों?"

नौजवान का चेहरा गंभीर हो गया। कुछ देर सड़क की ओर देखता रहा और फिर बोला–"तुम मेरे मामले को बिलकुल नजर-अंदाज कर दो। मुझे यह बताओ कि क्या तुम्हें इस उकता देनेवाली नौकरी के सिवा और कोई काम नहीं मिलता? तुम निराश हो जाने के बजाय आगे बढ़ने के लिए जद्दो-जहद क्यों नहीं करते? किसी कला का प्रशिक्षण प्राप्त कर लो और एक नये संकल्प से आगे बढ़ो। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि तुम ऐसा करने से क्यों कतरा रहे हो।"

नवागंतुक के शब्दों से जज्बात उमड़ रहे थे। इन शब्दों से सलीम के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा। आंखों में आंसू तैरने लगे और बरबस उसके अंदर से एक आवाज आयी–"ऐ खुदा! तू मुझे माफ कर दे। मैं अंधेरे में भटक रहा था।" उसकी नजर आसमान की ओर से हटती ही नहीं थी।

नवागंतुक उसे बड़े गौर से देख रहा था। शायद उसके अंदर की दुनिया को टटोल रहा था। उसने मुहब्बत-भरे स्वर में कहा–"मेरी बहन इसी होटल में निचली मंजिल में किताबों के स्टाल पर काम करती है–बड़ी अच्छी लड़की है वह! तुम उसके पास जाओ और कहो कि उसके अरशद भाई ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और सलाम कहा है। मगर तुम तो आत्महत्या करने लगे हो। तुम्हें किसी से मिलने की फुर्सत कहां?

सलीम आश्चर्य में खो गया। वह निरंतर नवागंतुक की ओर देखता रहा। फिर एकबारगी बोला–"मगर तुम स्वयं भी तो आत्महत्या करने लगे हो। जब दुनिया में तुम्हारी एक बहन है, तो फिर तुम किसलिए आत्महत्या का विचार मस्तिष्क में लाते हो?"

"अच्छा! चलो मैं भी आत्महत्या नहीं करता और अपने कमरे में चला जाता हूं।"

सलीम भी कमरे में चला गया। उसे अपने दिल में जिंदगी की एक नयी उमंग उभरती हुई महसूस हो रही थी। कमरा हसीन मालूम हो रहा था। हां...ठीक तो है। उसके सामने भविष्य...उज्ज्वल भविष्य नजर आ रहा था। वह कल ही से नयी जिंदगी शुरू कर देगा। स्कूल की शिक्षा के दौरान वह बड़े अच्छे नक्शे बनाया करता था। क्यों न वह नक्शानवीसी सीख ले या भवन-निर्माण की कला में कुशलता प्राप्त करे।

वह तेजी से नीचे उतरा। बुक-स्टाल पर एक लड़की बैठी थी। चेहरा गमगीन और आंखें उदास-उदास-सी थीं। वह बार-बार अपने बालों में उंगलियां फेर रही थी। सलीम स्टाल के अंदर गया। लड़की की आंखें चमक उठीं। वह बहुत मासूम लग रही थी। सलीम की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू की जाये।

"मैं.....मैं ऊपर कमरे में था। खिड़की के पास बैठा था–यों ही सड़क पर आने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानेवालों को देख रहा था। इतने में मेरी नजर तुम्हारे भाई पर पड़ी। वह भी साथ वाले कमरे की खिड़की से नीचे झांक रहा था.....फिर हम बातें करने लगे... .उसका नाम अरशद है।" सलीम कहते-कहते रुक गया। लड़की एकदम खड़ी हो गयी। उसका मुख पीला पड़ गया और सलीम को फटी-फटी नजरों से देखने लगी।

"मेरा भाई ! तुम मेरे भाई से मिले हो। उसे जानते हो ? मैं कुछ नहीं समझ सकी कि तुम क्या कह रहे हो ?"

सलीम ने तनिक घबराते हुए कहा—"हां, हां। मेरा मतलब है कि.....मैं अभी-अभी उसे मिला हूं। हम काफी देर तक बातें करते रहे हैं। उसी ने तुम्हारा नाम बताया था.....तुम्हारा नाम राशदा है न.....उसने तुम्हें सलाम कहा है।"

लड़की पुनः स्टूल पर बैठ गयी। वह सलीम की ओर देखे चली जा रही थी और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

"उसने मुझे तुम्हारा नाम बताया था। क्या तुम्हारा नाम राशदा नहीं है ? क्या वह तुम्हारा भाई नहीं है ?" सलीम ने व्याकुल होकर पूछा।

"हां.....वह मेरा भाई है.....अरशद .....मेरा प्यारा भाई....." राशदा ने सिसकियां लेते हुए कहा—" मेरा भाई..... मेरी जिंदगी का एकमात्र सहारा.....मगर उसका तो दो-चार दिन पहले ट्रैफिक के हादसे में देहांत हो गया था। पुलिस उसकी लाश घर ले आयी थी। कुछ दिन पहले मेरे पास जीता-जागता भाई था और उसके बाद .....अब कुछ भी नहीं रहा.....वही तो मेरा सहारा था।"

सलीम आश्चर्यचकित रह गया—"कहीं गलतफहमी मालूम होती है। मेरे कमरे के साथवाले कमरे का नंबर ३३२ है। मैं मैनेजर के कमरे में जाकर मालूम करता हूं कि इस कमरे में कौन रहता है।"

सलीम की बात सुनकर मैनेजर उसकी ओर यों देखने लगा, जैसे वह पागल हो।

"कमरा नंबर ३३२? वह तो खाली है।"

सलीम धीमे-धीमे कदमों से लड़की के पास दोबारा गया। उस समय उसका दिल भय, आश्चर्य और सम्मान के मिले-जुले जज्बात से पूर्ण था। लड़की ने कुछ प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखा। सलीम ने सारी कहानी उसे सुना दी।

लड़की का चेहरा भावातिरेक से तमतमा उठा—"ओह ! मेरा भाई.....उसे मरने के भी मेरा कितना खयाल है! आह! मेरा भाई।" लड़की ने उल्लासपूर्ण स्वर में कहा।

सलीम अब कालेज के अंतिम वर्ष में है। शीघ्र ही वह एक अच्छा इंजीनियर बन जायेगा। राशदा से उसने शादी कर ली है। उनके छोटे-से मकान के एक कमरे में अरशद की तस्वीर सुनहरे फ्रेम में रखी हुई है। तस्वीर में अरशद के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट खेल रही है। मानो दो दिलों की खुशियां उसके ओंठों पर बिखर कर अमर और अविनश्वर बन गयी हैं।.....।

—रूपांतर : गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब जगह हमें मनुष्य ही मिला

सतीश कुमार

लेखक की सद्य: प्रकाशित 'बिना पैसे दुनिया का पैदल सफर' पुस्तक से संकलित कुछ बहुरंगी झांकियां

"कितने पैसे साथ लेकर जा रहे हो ?" विनोबा ने पूछा।

"हम तो जनता के भरोसे जा रहे हैं। जनता के साथ काम करना है। लोग हमें खिलायेंगे, खिलायेंगे, हर तरह की मदद करेंगे। फिर भी डाक, वस्त्र और अनिवार्य जरूरतें पूरी करने के लिए थोड़ा-सा पैसा हम साथ लेंगे।"

"नहीं !" विनोबा ने हमारी इस बात पर कहा—"या तो तुम पूरे खर्च का प्रबंध साथ रखो या बिलकुल पैसा न ले जाओ।" थोड़ी देर चुप रहकर फिर बोले—"यदि तुम्हारे साथ पैसा नहीं रहेगा, तो जनता स्वयं तुम्हारी मदद करेगी।"

वे हमें सीख दे रहे थे। वे स्वयं सवालों को उठाते थे और स्वयं ही उनका समाधान भी करते थे। एकाएक उन्होंने हमारे कंधे पर हाथ रखा। दो मिनिट मौन रहे। फिर प्यार से हमारी तरफ देखा। हम कुछ समझे नहीं। इतना जरूर लगा कि हमारी बातचीत करीब-करीब समाप्त हो गयी है; लेकिन कोई अंतिम सीख विनोबा हमें देना चाहते हैं।

"सारी जनता शांति चाहती है और तुम लोग शांति का 'मिशन' लेकर जा रहे हो, तो जनता पर विश्वास रखकर जाओ, वह तुम्हें कष्ट में नहीं पड़ने देगी। देशों की सीमाएं धरती और जमीन के बीच भले हों, आदमियों के दिलों में कहीं कोई सीमा या भेद नहीं।" एक क्षण रुककर विनोबा ने अपना विचार स्पष्ट किया—"जनता के साथ सीधा संपर्क होने में पैसा बाधक होता है।..... मुझे जनता पर पूर्ण विश्वास है। तुम लोग एक प्रयोग के तौर पर इसे आजमाओ। जाओ, तुम्हारी यात्रा के लिए मेरा पूरा आशीर्वाद है। लेकिन केवल आशीर्वाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से काम नहीं चलेगा 'शाकाहार' और 'पैसा-मुक्ति' गदा और चक्र की भांति यात्रा में तुम्हारे सहायक होंगे।"

इस आशीर्वाद ने हमारे मन-मस्तिष्क को साहस से भर दिया और मैं व मेरे साथी प्रभाकर मेनन दोनों १ जून १९६२ की शाम को विश्व-यात्रा के लिए निकल पड़े।

पड़ोसी देश पाकिस्तान में

जब हम पाक-सीमा में पहुंचे, तो अचानक ही हमारा इंतजार करते हुए एक भाई हमें मिले। उन्हें लुधियाना से किसी भाई ने पत्र लिखा था कि हम लोग तीन जुलाई को पैदल पाक-सीमा में आ रहे हैं। वे हमारा स्वागत करने आये। उन्होंने हमें अपनी बांहों में भर लिया और बोले—"मैं यह कार लेकर आया हूं। भयंकर गर्मी और तेज धूप है। मेरे साथ इस कार में चलें और मेरे मेहमान बनें।" हमने कहा कि आपका स्नेह तथा आतिथ्य तो हमें स्वीकार है; परंतु चलेंगे हम पैदल ही। आप अपना पता हमें दे दीजिये। शाम को हम आपके पास पहुंच जायेंगे। गुलाम यसीन को इस बात से निराशा हुई; पर पैदल चलने की बात पर हम कोई समझौता कर नहीं सकते थे। वे बोले—"अच्छा, आप अपना सामान तो कार में ले चलें दीजिये? ताकि मुझे यह भरोसा रहे कि आप भी इस सामान के पीछे-पीछे मेरे घर आ जायेंगे वरना हो सकता है कि रास्ते में कोई दूसरा व्यक्ति आपको अपने घर ले जाये।" हमें उनकी भावना पर बहुत अचरज हुआ। हमने उनका यह आग्रह मान लिया। शाम को जब हम लाहौर पहुंचे, तो शालीमार गार्डन में श्री गुलाम यसीन ने हमारे स्वागत का आयोजन किया।

एक पठान के खेमे में

उस दिन हम चलते-चलते अफगानिस्तान में एक नदी किनारे पहुंचे। सुनसान और सूखी पहाड़ियों में बहनेवाली यह नदी यात्रियों के लिए बहुत बड़ा सहारा है। कुछ कदम आगे बढ़कर हम अपनी पानी की कुप्पी भरने के लिए नदी में उतरे। वहां एक अफगानकोचीवाला पठान बैठा था। बिना रेजर के, खाली ब्लेड हाथ से पकड़कर दाढ़ी बना रहा था। न शीशा, न ब्रुश, न आईना, न क्रीम!

"क्यों भाई, अगले गांव तक पहुंचने में कितना वक्त लगेगा?" यहां दूरी जानने का यही तरीका है। "डेढ़-दो घंटे का रास्ता है," पठान ने कहा। "कहां से आये हो यात्रियों का हमारा रंगढंग और गले में लटकता हुआ इश्तहार देखकर जवान ने पूछा।

"दिल्ली से आये हैं।" हमने अपनी यात्रा के उद्देश्यों की उसे जानकारी दी।

"गजब की हिम्मत की है तुमने।" पठान बहुत खुश हुआ—"थोड़ी दूर पर मेरा खेमा है। चलो, वहां चाय बनायेंगे। फिर आगे बढ़ना।" हम खेमें की तरफ बढ़े।

उसके कंधे पर बंदूक टंगी थी; पर उसके व्यवहार पर बंदूक का प्रभाव नहीं था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर बाद उस पठान ने एक दार्शनिक की भांति कहा—"पता नहीं किसने इस बंदूक को बनाया। अगर यह बंदूक बनायी ही नहीं जाती, तो हमारे मनों में डर क्यों पैदा होता? आदमी, आदमी की जान लेने को क्यों लपकता? आज बंदूक के बल पर आदमी, आदमी पर हुक्म चलाता है। जैसे बाप का बेटे पर चलता है, भाई का भाई पर चलता है, मित्र का मित्र पर चलता है, पति का पत्नी पर चलता है।"

मैं ताज्जुब में डूबा जा रहा था। पहाड़ों में सामान बेचनेवाला पठान इतनी बारीक बात करेगा, इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। इस एक बंदूक रखनेवाले को प्यार के हक की ऐसी व्याख्या करते देखकर तो मैंने दांतों तले उंगली दबा ली। जब हम उसके खेमें में गये, तो उसने झोली भरकर बादाम, किसमिस और पिस्ते हमारे सामने रख दिये।

"गांधी कैसे हैं?" पठान ने बीच में ऐसे पूछा, जैसे वह नींद से जागा हो।—"बहुत बड़े आदमी है गांधी।" पठान ने आवाज धीमी करके कहा—"क्या आप मेरे सलाम गांधी के पास पहुंचायेंगे?" उसे यह मालूम नहीं था कि गांधी अब जीवित नहीं हैं। हमारे लिए यह बताना बड़ा कठिन हो रहा था कि गांधी ने जीवन-भर प्रेम और अहिंसा की उपासना की; पर आखिर में स्वयं ढाल बनकर, स्वयं बलिदान होकर किस तरह धर्म और जाति के नाम फैली हुई हिंसा को बंद किया।

"गांधी तो अब जीवित नहीं हैं।" मैंने धीरे से कहा।

"सच?" पठान चौंका। उसका चेहरा उदास हो गया। फिर हम लोग कुछ देर तक गांधी के बारे में ही बातें करते रहे। गांधी की अहिंसा ने इन पहाड़ों तक अपनी छाया डाली है।

"हमारे बीच भी एक गांधी है।" पठान ने कहा।

"कौन?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"खान अब्दुल गफ्फार खान।" पठान तुरंत बोला—"वह हम पख्तूनों की आजादी का पैगंबर है। वह भी अमन और प्यार का पुजारी है। पर यह तो बताओ कि अमन और प्यार की, इंसानियत और आजादी की बात कहनेवालों को ये हुकूमतवाले जेलों में क्यों बंद कर देते हैं बाबू?" सरल हृदय पठान की बातें भोली-भाली थीं; पर उनमें तत्व गहरा था।

क्या हिन्दू मुसलमान के घर खायेगा?

तायाबात! ईरान का पहला पड़ाव। अनजान देश और अनजान भाषा। चारों ओर रेगिस्तान और सायं-सायं करती हुई भयंकर आंधी। हम ढूंढ़ रहे थे कोई मेजबान। इतने में एक युवक ने पूछा—"आप क्या चाहते हैं?" हमने बताया—"हम रात-भर ठहरने की जगह चाहते हैं।" बड़ा अजीब उत्तर था। अनेक होटल सामने हैं, फिर भी ठहरने की जगह चाहिये। वह बोला—"मैं कुछ समझा नहीं। मेरे साथ चलिये, हम चाय पियेंगे और आपकी पूरी कहानी सुनेंगे।" चाय की मेज पर उसे मालूम हुआ कि हम केवल यात्री नहीं हैं, शांति के प्रचारक हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदल चलते हैं आदि। उसने शहर के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के बगीचे में हमें ठहराया।

ईरान कला, कविता और संस्कृति का देश हैं, यह पहले ही दिन लोगों के जीवन तथा रहन-सहन से मालूम हुआ। हम ठहर गये। शाम हुई। धीरे-धीरे रात हुई। दुकानें बंद हो गयीं। हम सबेरे के भूखे बैठे थे। ठहरने की जगह बहुत सुंदर। खूबसूरत गलीचे। बिछाने के लिए बेहतरीन बिस्तर। ओढ़ने के लिए रेशमी लिहाफ। पर खाने के लिए हवा? किसी ने कुछ न पूछा। हम बड़े परेशान। बहुत रात गये मैं बाहर निकला। बाग़ के मालिक दूकान बंद करने जा रहे थे। मिलते ही बोले–"आपको कोई कष्ट तो नहीं? मैं हर सेवा के लिए हाजिर हूं।" मैं सोच रहा था कि इसके बाद भोजन को भी पूछेंगे। पर वह सवाल तो उनके मस्तिष्क से कोसों दूर था। फिर मैंने ही संकोच मिटाया। मैंने पूछा–"हमें भोजन करने आपके घर चलना होगा या यहीं पर .....?"

उनका चेहरा उतर गया–"क्या आपने भोजन नहीं किया?" इस एक प्रश्न में उन्होंने अपने अंतर की सारी दुविधा उड़ेल दी। बहुत शरमाये। बार-बार क्षमा मांगी और हमारे लिए शाकाहारी भोजन का प्रबंध कर दिया। असल में वे यह समझ रहे थे कि हम हिन्दू धर्मवाले होंगे। शायद उनके हाथ का और उनके घर का भोजन न करें।

जूतों की भेंट और पुत्री की मांग

एक ओर मध्य एशिया का सबसे ऊंचा देमांवद शिखर १८ हजार फुट की ऊंचाई पर आसमान से बात कर रहा है, दूसरी ओर समुद्री सतह से भी ५० फुट नीचे संसार की सबसे विशाल झील 'कास्पियन सी' हिलोरें ले रही है। इन दोनों के बीच बसे हुए रूस के सरहदी नगर बेहशहर में लगभग दो घंटे के लिए हम अब्बास खियानी के अतिथि थे। बैठे-बैठे उनकी नजर गयी हमारे घिसे जूतों की तरफ। न जाने उनके मन में क्या आया कि अचानक उठे और हमारे बार-बार मना करने पर भी पास की दुकान से हमारे लिए दो जोड़ी नये जूते ले आये।

अब्बास खियानी के एक मित्र भी वहीं बैठे हुए साथ बातें कर रहे थे। हमारी बातचीत पहुंची व्यक्तिगत जीवन तक और उन्होंने पूछ डाला–"क्या आपने शादी की है?" प्रभाकर तो अविवाहित थे; पर मैंने कहा "मैं अपनी पुत्री को घर छोड़कर आया हूं, जो अब करीब छह महीने की होगी।" इस पर ये भाई बोले–"मेरी पहली संतान एक पुत्र है, जिसका नाम है हमीद। उसकी उम्र भी साल-भर से कम है। अंतर्राष्ट्रीय और आपसी ईरान मित्रता को दृढ़ करने के लिए क्या आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ करेंगे?" गजब

आत्मीयता
मूर्तिकार: लिपचिट्स

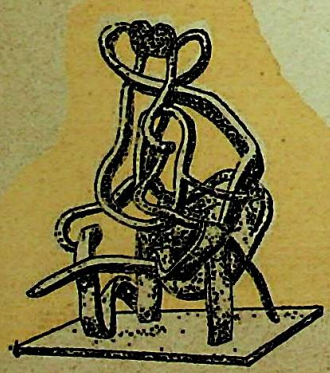

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्ताव था! मैंने कहा, मेरी पुत्री और आपका पुत्र अपने विवाह के बारे में स्वयं ही निर्णय करें, मेरी तरफ से कोई बाधा खड़ी होने का सवाल ही नहीं। "क्या नाम है आपकी पुत्री का?" उस भाई ने पूछा। 'साधना' मैंने बताया। परंतु उस भाई को 'साधना' नाम का उच्चारण कठिन मालूम दे रहा था। अतः उसने कहा कि—"यदि आप एतराज न करें, तो मैं उसके लिए एक नया नाम भी सुझाना चाहता हूं और उसने 'साधना' का नाम 'पाकीजा' रख दिया। कितना भावुक जवान था वह और कितना स्नेह था उसके मन में भारत के प्रति!

कार में चलो न, कौन देखता है?

एक ठंडी सुबह। बादलों से भरा हुआ आकाश और शीत-लहरी से भरी हुई धरती। हम दो यात्री सिर से पैर तक सारे शरीर को गरम कपड़ों से ढंककर सड़क पर चल रहे थे। इतने में एक छोटी जर्मन कार का हार्न हमारे कान में पड़ा। हमने देखा कि एक पुरुष और एक स्त्री हमसे पूछ रहे हैं—"कहां जायेंगे?"

"हम गाजविन जा रहे हैं, वहां से आगे रूस की तरफ जायेंगे।" हमारा यह उत्तर सुन-कर महिला ने बहुत मधुर स्वर में कहा—"हम भी गाजविन जा रहे हैं। बहुत तेज सर्दी है, आप लोग कार में बैठ जाइये।"

हमने बताया—"हम भारत से यहां तक करीब पचीस सौ मील पैदल चलकर आये हैं और मास्को तथा वाशिंग्टन तक पैदल ही जायेंगे, ऐसा हमारा प्रण है।"

"ओह, हमने अखबार में आपके बारे में पढ़ा था। आप अणुशस्त्रों के विरोधी हैं और मास्को तथा वाशिंग्टन जा रहे हैं।" पुरुष यह कहते-कहते कार से बाहर निकले।

ये थे श्री रहीमी रजावी। गाजविन शहर के प्रतिष्ठित नागरिक।

श्री रहीमी ने कहा—"आपकी बात ठीक है; पर कार में चलो न, किसी को पता नहीं चलेगा। यहां कौन देखता है? मैं भारत के लोगों से जाकर यह थोड़े ही कहूंगा कि आपने पद-यात्रा भंग कर दी थी। अभी गाजविन पचीस मील दूर है। घंटे-भर में पहुंच जायेंगे, वरना इस सर्दी में दो दिन चलना पड़ेगा।" उनकी बात पर हमें हंसी आयी।

"दो दिन नहीं, हमें तो दो साल इसी तरह चलना है। फिर किसी देखनेवाले के लिए हम पैदल नहीं चलते। स्वयं हमने यह निर्णय किया है।"

उनसे काफी देर बातें हुई। अंत में श्री रहीमी ने कहा—"मुझे तो सर्दी लग रही है। कल आप हमारे घर आयें, वहीं ठहरें। तब विस्तार से बातें होंगी।"

दूसरे दिन जब हम श्री रहीमी के घर पहुंचे, तो वे सायंकाल की नमाज पढ़ रहे थे। उनका सिर नीचे झुका हुआ था। नमाज में खलल न पड़े, इस खयाल से हम बाहर बरामदे में ही खड़े हो गये। श्री रहीमी ने ज्यों ही सिर ऊपर किया कि खिड़की में से हम उन्हें दिखाई पड़े। न जाने उन्हें ऐसा कैसा भावाद्रेक हुआ कि नमाज को बीच में ही छोड़कर वे बाहर आये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उन्होंने हमें अपनी बाहों में भर लिया। हमने जब उनसे क्षमा मांगी कि आपकी नमाज में हमारे कारण व्यवधान हो गया, तो कहने लगे—"हमारे पैगंबर ने सत्य पर चलनेवालों को खुदा का बंदा कहा है। जब हमने पिछले दिन आपसे कहा था कि कार में हमारे साथ चलिये किसी को पता नहीं चलेगा, फिर भी आप कार में नहीं आये। आप सत्य पर चलनेवाले हैं। अतः आपको अतिथि के रूप में स्वागत देना ही सच्ची नमाज है।"

पति ने ठहराया, पत्नी ने निकाल दि

सोवियत संघ के एक छोटे-से गांव स्लावादा की घटना है। एक किसान के घर पर ठहर गये। किसान की पत्नी घर पर नहीं थी। किसान ने बड़ी तत्परता से स्वयं हमारे लि मेज पर भोजन लगाया। पलंग पर बिस्तर बिछाया। इतने में किसान-पत्नी भी आ गयी परिचय हुआ। किसान ने रसोईघर में जाकर अपनी पत्नी को बताया कि आज रात के लि ये दो भारतीय यात्री हमारे घर पर मेहमान होंगे। यह बात पत्नी को गवारा नहीं हुई और उसने हमें ठहराने से साफ इन्कार किया। पति ने बहुत प्रेम और नम्रता से सब समझाया कि "घर आये अतिथि को बाहर निकालना अच्छा नहीं।" पर पत्नी कुछ भी मानने और सुनने को तैयार नहीं थी। जब हमने देखा समस्या उलझती ही जा रही है, तो मैंने कहा "आप चिंता न करें, हम किसी दूसरे घर जाकर ठहर जायेंगे।" "नहीं, नहीं!" पति हमसे वहीं रुकने का आग्रह किया।

पत्नी को शायद लगा कि यह उसका अपमान है। "नारीणां रोदनं बलम्।" भा की स्त्रियां ही नहीं, रूस की गृहिणियां भी अपने क्रोध, दुःख और असंतोष को प्रकट कर लिए रोने का सहारा लेती है। अब तो हमारा मन विचलित हो उठा। इतने में किसान-प ने जोर से रोते हुए कहा—"या तो इस घर में मैं रहूंगी या तुम्हारे मेहमान।" पत्नी की पु के सामने पति ने घुटने नहीं टेके—"जाओ, तुम्हें जहां भी जाना हो।" पत्नी ने चुनौती स्व कर ली। हमारे देखते-देखते पत्नी ने छोटे शिशु को अपनी गोद में उठाया और घर से नि निकल पड़ी। "हम शांति की बात करने आये और गृह-कलह पैदा कर दिया," मैंने प्र से कहा। प्रभाकर ने किसान को समझाया—"घरवाली को नाराज करके घर में रह अपेक्षा यही अच्छा होगा कि हम किसी दूसरे घर में जाकर ठहरें।" पर किसान ने "आप रात को १० बजे कहां जायेंगे? गलियां कीचड़ से भरी हैं। अंधेरी रात है। कि द्वार जाकर खटखटायेंगे आप?" फिर थोड़ी देर सोचकर किसान बोला—"अच्छा, मैं पड़ोसी मित्र के घर पूछता हूं।" और किसान चला गया। आधे घंटे में किसान ने हमारे के लिए अपने मित्र के घर में प्रबंध कर दिया। सचमुच उस अंधेरी रात में हम बड़ी से गलियां पार कर सके।

हम पहुंचे उसके मित्र के घर पर। पति, पत्नी और दो बच्चे। सब सो चुके थे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पलंगों पर चारों सो रहे थे। किसान के मित्र ने अपने दोनों बच्चों को जगाया और उन्हें एक पलंग पर सुला दिया। मैं और प्रभाकर एक पलंग पर सोये। १० मिनिट में सारी समस्या हल हो गयी। दूसरे दिन सुबह उठे। वहां हमने बेहद प्यार और अपनत्व पाया।

हमने चार महीने का लंबा समय रूस में बिताया; किंतु ऐसी घटना केवल एक ही दिन घटी। वरना, प्रतिदिन उत्कृष्ट आतिथ्य के दर्शन हमें होते थे।

जब हमारे पैर धुले

रूस में अतिथि के साथ होनेवाले व्यवहार ने हमें कभी-कभी चकित भी कर दिया। हम एक छोटे-से गांव में श्री सेमोनियान के घर ठहरे थे। रात को सोने के पहले जब हम कपड़े उतारने लगे, तो श्री सेमोनियान ने अपनी बेटी त्योषा को आवाज दी—"क्यों बेटी, गरम पानी तैयार है क्या?" तत्क्षण एक उत्सुक आंखोंवाली तरुणी ने हाथ में गरम पानी और तौलिया लेकर मुस्कराते हुए कमरे में कदम रखा। "यह मेरी बेटी त्योषा है।" श्री सेमोनियान ने परिचय कराया। मैं उचककर खड़ा हो गया और मिलने की प्रसन्नता व्यक्त की।

"बैठो अतिथि, बहुत थके हो न, गरम पानी तुम्हारी सारी थकान को दूर कर देगा।" श्री सेमोनियान ने कहा और त्योषा को इशारा किया कि वह हमारे पैर धो दे। मैंने कहा—"नहीं, नहीं। मैं स्वयं अपने हाथ से अपने पैर धोऊंगा।" पर यह बात स्वीकार नहीं की गयी। "आप हमारे अतिथि जो हैं। हमारे यहां आतिथ्य की यही रीति है। यदि आप हमारा आतिथ्य स्वीकार नहीं करेंगे, तो इस घर में कोई सोयेगा भी नहीं।" "लेकिन मुझे संकोच होता है। मैं अपने घर पर अपनी मां, बहन या पत्नी से भी पैर नहीं धुलवाता।" इस पर त्योषा बोली—"यह संकोच क्या बला है? क्या आप भारत से उसे गठरी में बांधकर लाये हैं? मैंने सुना था कि भारत की लड़कियां बड़ी शर्मीली होती हैं; पर देख रही हूं कि भारत के युवक भी शरमाते हैं।" मैंने ऐसे प्रहारात्मक उत्तर की अपेक्षा नहीं की थी। आखिर हमें झुकना पड़ा और त्योषा के कोमल हाथों से हमारे पैर धुले।

वात्सल्य

वह टैक्सी ड्राइवर

स्तालिन की जन्मभूमि गोरी नाम के नगर में हम ठहरे थे। रात के बारह बज गये। मैं पलंग पर सो गया था और प्रभाकर कुछ चिट्ठियां लिख रहे थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। "रात को १२ बजे कौन द्वार खटखटा रहा है?" सहज जिज्ञासा हुई। एक अधेड़ उम्र का हट्टा-कट्टा व्यक्ति बाहर खड़ा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्या चाहिये आपको ? क्या हम आपकी कोई मदद कर सकते हैं ?" प्रभाकर ने पूछा। आगंतुक ने कहा—"क्या आप ही हैं भारत से आये हुए शांतियात्री ?" और फिर उसने बताया कि अखबारों से तथा मास्को रेडियो से वह हमारे बारे में जानता था। "आज मैंने आपको रास्ते चलते देखा। बर्फ पड़ रही थी; पर आप दोनों चल रहे थे। आपसे मिलने की इच्छा हुई। मैं एक टैक्सी-ड्राइवर हूं। आपकी शांति-यात्रा के लिए कुछ मदद करना चाहता हूं। आज टैक्सी चलाकर ३० रूबल (१०० रुपये से अधिक) मैंने कमाये हैं। इसमें से २० रूबल मैं इस शांति-यात्रा के लिए देना चाहता हूं।" नोट आगे करते हुए वह बोला—"इसे आप स्वीकार करें।" जब उसे समझाया गया कि हम पैसा साथ नहीं रखते और न किसी से देने पर स्वीकार करते हैं, तो वह बेचारा थोड़ा निराश हुआ। अंत में जाते-जाते टैक्सी ड्राइवर कहता गया—"कोई बात नहीं। भले ही इस रूप में मैं आपकी मदद नहीं कर सका। लेकिन मैं भी अणुशस्त्रों और युद्ध के खिलाफ हूं। मैं अपनी सरकार से और जनता से कहूंगा कि वे आपकी नीति को स्वीकार कर लें।" कैसा शांतिवादी था वह टैक्सी से ड्राइवर!

अध्यापक और छा

वारसा से दो सौ मील पश्चिम में पोजनान के पास एक छोटा-सा गांव है स्वादजिमा। पोलैंड की जनता ने यों ही हमें बहुत प्रभावित किया था; पर उस दिन स्वादजिमा की जनता ने तो हमें गद्‌गद कर दिया। २८ मई का दिन था। दोपहर की गर्मी में हम चल रहे थे। सहसा हमारी नजर एक विद्यालय पर पड़ी। हम थोड़ा विश्राम करना चाहते थे। प्रभाकर ने कहा—"चलो हम बाहर ही पेड़ की छाया में बैठ जायें।" पर रात को वर्षा हुई थी। जमीन भीगी हुई थी। मैंने कहा—"क्यों न स्कूल के अंदर चला जाये ? अध्यापकों और बच्चों से बातें भी होंगी।" ईरान और रूस में हमें स्कूलों में बहुत अच्छा स्वागत, स्नेह और अनुभव प्राप्त हुआ था। मैदान में बच्चे खेल रहे थे। हम अंदर पहुंचे, तो देखा कि एक कक्षा में तीन अध्यापिकाएं बैठी बातचीत कर रही हैं। हम उन्हीं के पास पहुंच गये। ये अध्यापिकाएं रूसी भाषा समझ सकती थीं। इसलिए हमने रूसी में बातचीत शुरू की।

इतने में विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय पहुंचे। पता नहीं उनका 'मूड' क्यों खराब था। साधारण पोलिश लोगों का जैसा व्यवहार हमें मिला, उससे बिलकुल उलटा व्यवहार उन्होंने किया। उन्होंने पोलिश भाषा में गुस्से के साथ कुछ कहा और तर्जनी से बाहर का रास्ता बताते हुए अपना आदेश दोहराया।

हमारे मन में कुछ पछतावा हो रहा था। क्या हमने कोई गलती की ? शायद विद्यालय में प्रवेश करते ही हमें प्रधानाध्यापक से पूछना चाहिये था। खैर, अब क्या हो ? विद्यालय के बाहर एक पेड़ के नीचे अखबार बिछाकर बैठ गये।

यह वृत्तांत कई छात्रों ने भी देखा-सुना। पांचवीं कक्षा के एक विद्यार्थी से यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलन

चित्रकार : शमै

वहीं गया। गले में किताबों का झोला, हाथ में पेन और दावात, खाकी हाफ पैंट पर सफेद कमीज और गले में लाल टाई बांधे हुए वह बालक धीरे-से स्कूल से बाहर निकला और बोला—"क्या आप लोग मेरे घर चलेंगे?" बड़ा भोला-सा प्रश्न था। उसने बड़े साहस और आत्मविश्वास के साथ सवाल पूछा था।

"कहां है तुम्हारा घर?" मैंने पूछा।

"यहां से आधा मील पूर्व दिशा में।" बालक ने कहा।

"पर हम तो पूर्व से आ रहे हैं और पश्चिम की तरफ जा रहे हैं।" प्रभाकर ने कहा।

"आप तो देश-दुनिया की पदयात्रा करते हैं, एक मील का चक्कर ही सही।" बालक ने यों गंभीर होकर उत्तर दिया, मानो वह १२ वर्ष का छोटा बालक नहीं, पूरी उम्र का जवान हो। आखिर हम उसके साथ चल पड़े। बातों ही बातों में हम उसके घर पहुंच गये। "मां! मां!" वह चिल्ला उठा—"देखो मेरे साथ कौन आये हैं!" वह भागकर मां के गले लिपट गया। "अतिथि! बहुत दूर देश के अतिथि! इनके ही देश में है ताजमहल! जल्दी से चाय तैयार करो। नाश्ता बनाओ।" हम मंत्र-मुग्ध होकर बालक को देख रहे थे। मां बहुत खुश हुई। बालक ने हमारा थैला पीठ पर से उतारने में हमारी मदद की।

हम १०-१५ मिनिट के लिए आये थे, दो-तीन घंटे लग गये। चाय हुई, नाश्ता हुआ, भोजन हुआ, बहुत बातचीत हुई। बालक हमें छोड़ना नहीं चाहता था। हमारा भी जी नहीं चाहता था कि हम बालक, उसकी मां और उसके चाचा के प्रेमपूर्ण आतिथ्य को छोड़कर जायें। पर हमारा आगे जाने का कार्यक्रम निश्चित था। किसी तरह सबसे क्षमा मांगकर हम विदा हुए; पर हृदय से उस बालक की याद भुला पाना मेरे लिए असंभव नहीं है।

वह चुंबन!

पोजनान में हम तीन दिन रहे। भारत-पोलैंड मित्रता-संघ के अध्यक्ष ने एक परिवार के साथ ठहरने का हमारा प्रबंध किया था। माता, पिता और २१ वर्षीय पुत्री। इतना ही बड़ा था यह परिवार। परिवार की यह इकलौती बेटी कुमारी रेनाता अत्यंत शांत, सुशील और गंभीर स्वभाववाली लड़की थी। उसने हमारे साथ घूम-घूमकर हमें पोजनान दिखाया। पोजनान में एक बड़ा-सा सुंदर सरोवर है। हम लोगों को रेनाता इस सरोवर पर नहाने भी लिवा ले गयी। यूरोप में गर्मी के दिनों में सरोवर या समुद्र के तट पर नहाने का दृश्य अत्यंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिलचस्प होता है। रेनाता एक छोटा-सा जांघिया और चोली पहनकर बिना किसी संकोच के पानी में हमारे साथ खेल रही थी, किलकारियां मारकर हंस रही थी और भाग-दौड़ रही थी। रेनाता अकेली तो नहीं थी। हजारों युवतियां इसी तरह अधनंगी होकर अपने पति या 'बाय फ्रेंड' या सहेलियों के साथ घूम रही थीं।

तीन दिनों के परदेशी मेहमानों को कुमारी रेनाता और उसकी मां ने खूब खिलाया-पिलाया और सत्कार किया। रेनाता हमारे साथ खूब बातें करती। दो दिन तो रात को दो-दो बजे तक हम विभिन्न विषयों पर बातें करते रहे। रेनाता की मां और पिता अपने कमरे में सोये रहते। २१ वर्ष की जवान और अविवाहित पुत्री दो युवकों के साथ इतनी आजादी से घूम-फिर रही है, और रात-रात-भर बातें करती रहती है, इसकी तनिक भी चिंता उन्हें नहीं थी। उन्हें अपनी बेटी पर पूरा भरोसा था। रेनाता स्वयं अपना हित-अहित सोचेगी!

आखिर हम पोजनान से विदा हुए और कुमारी रेनाता तथा उसके माता-पिता को उनके हार्दिक आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया। ज्यों ही हम आगे बढ़ने को हुए कि श्री होफमेन ने कहा—"यों सूखी विदा कैसे हो सकती है? आपको रेनाता का चुंबन लेना होगा, तब विदा होगी।" मुझे काटो तो खून नहीं। यों सड़क पर खड़े होकर मैं उसका चुंबन लूं, यह मेरे संस्कारों के सर्वथा विपरीत बात थी; लेकिन श्री होफमेन की बात का उत्तर भी क्या हो सकता है? रेनाता को चुंबन न देने का अर्थ है—उसका अपमान। उस देश की यही परंपरा है। मैं तर्क उठाता रहूं और समाधान ढूंढ़ता रहूं, इतना समय कहां था? "जब आप रोम में हों, तो रोमन बनकर ही रहना चाहिये," इस कहावत को याद किया और रेनाता को बांहों में लेकर मैंने उसे मित्रता और कृतज्ञता का चुंबन दे दिया। बाद में घर आकर जब मैंने यह कहानी अपनी पत्नी को सुनायी, तो वह हंसते-हंसते लोट-पोट हो गयी।

वह पादरी और वह सिगरेट

चलते-चलते सांझ हो गयी। धरती पर अंधेरा बिखरने लगा। हम पश्चिमी जर्मनी की एक खासी अच्छी बस्ती में थे। कहां जायें? मेयर का दफ्तर बंद हो चुका था। यूथ होस्टल का भी पता नहीं। इतने में एक गगनचुंबी कैथोलिक चर्च दिखाई पड़ा। चर्च के साथ ही लगी हुई थी एक सेमिनरी (पादरी बनने का प्रशिक्षण विद्यालय)। हमने सोचा कि क्यों न वहीं चलें। जब हमने दरवाजा खटखटाया, तो एक भारी-भरकम पादरी ने दरवाजा खोला। एड़ी तक लटकता हुआ गहरे रंग का चोगा, गले में क्रास, हाथ में बाइबिल। पुस्तक के बीच में अंगुली दबी हुई। उन्होंने हमें बड़े गौर से देखा और पूछा— "क्या चाहिये आपको?"

"हम पदयात्री हैं। रात-भर के लिए ठहरना चाहते हैं।" उन्होंने ध्यान से हमारे यात्रा-संबंधी परचा पढ़ा। फिर हम पर संदेह की नजर फैलाते हुए बोले— "लेकिन हमारे पास आपको ठहरने की जगह है कहां?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आपके घर के दालान में ही हम ठहर जायें। ओढ़ने-बिछाने के कपड़े हमारे पास हैं।"

"नहीं, यह तो संभव नहीं है।" पादरी ने कहा। "तो क्या हम चर्च में ठहर सकते हैं?" उसने फिर सिर हिला दिया—"नहीं, यह भी संभव नहीं।" हमने फिर निवेदन किया—"तो फिर क्या हम सेमिनरी में ठहर सकते हैं?"

"नहीं, मेरे पास आप लोगों को ठहराने के लिए कोई जगह नहीं है।" यों कहते हुए उन्होंने दरवाजे बंद कर दिये। हम वहां से निराश लौट आये। रास्ते में एक पुलिस स्टेशन मिला। वहां के पुलिस अधिकारी ने एक अस्पताल में हमारे ठहरने का प्रबंध किया।

और भी एक दिन हमें मिला पुलिस थाने का एक सिपाही, जिसकी किताब में डंडा और जेल लिखा है, प्यार और अतिथि-सेवा नहीं। दोपहरी में हमने एक पुलिस थाने का दरवाजा खटखटाया। अधिकारी थाने में नहीं था। वह सामने के 'बार' में बीयर पी रहा था। उसने मित्रों की गोष्ठी छोड़ी और दौड़कर हमारे पास आया—"क्या चाहिये आपको?" उसके इस सवाल पर हमने कहा—"हमें कुछ नहीं चाहिये। हम थोड़ी देर आराम करना चाहते हैं।" फिर हमने अपनी यात्रा की कहानी संक्षेप में उसे बतायी। अधिकारी ने कहा—"तो फिर चलिये न मेरे साथ, 'बार' में चलिये। मेरे अतिथि बनिये।"

हम उसके साथ 'बार' में जाकर बैठे। वह बीयर लाने के लिए आदेश देने ही जा रहा था कि हमने कहा—"नहीं। हम बीयर नहीं पियेंगे। हमें आप सिर्फ पानी पिला दीजिये।" पर वह माननेवाला कहां? उसने हमारे लिए केक का आदेश दिया, आइस्क्रीम मंगवायी। हमें प्यास लगी थी, इसलिए उसने कोकाकोला की दो-चार बोतलें खुलवाकर रख दीं। कहने लगा—"अब सुनाइये अपनी यात्रा की कहानी।" हमने सोचा था दस-पंद्रह मिनिट विश्राम करने का; पर लग गये दो घंटे। जब हमने चलने की अनुमति मांगी, तो सिपाही बोला—"ऐसा कैसे हो सकता है? आपको मेरे घर भी चलना होगा। मेरी पत्नी से मिलना होगा और भोजन भी करना होगा।" तुरंत उसने अपनी पत्नी को फोन किया। हमारे 'ना-ना' कहने पर भी वह हमें घर ले ही गया। खाना खाने से जब हमने बिलकुल इन्कार कर दिया, तो सिपाही की पत्नी ने हमारे लिए काफी बनायी और हमें नाश्ता कराया।

फिर सिपाही ने कहा—"सच्चा काम तो आप लोग कर रहे हैं—देश-विदेश का सफर, युद्ध-विरोधी प्रचार। मैं तो जीवन के विचित्र गोरखधंधे में फंसा हूं।" इतने में मेरी नजर दीवार पर टंगे तैल-चित्रों पर गयी। मुझे वे बहुत पसंद आये। मैं पूछ ही बैठा कि ये चित्र किसने बनाये हैं? और यह सुनकर चकित रह गया कि वे चित्र उसी सिपाही के बनाये हुए थे। भले ही पेशे से वह एक सिपाही था; पर हृदय से वह एक कलाकार था। तभी मुझे वह पादरी याद आया। कहां वह पादरी, कहां यह सिपाही? पादरी खड़ा नहीं होने दे रहा था; जबकि यह सिपाही स्नेहवश हमें आगे बढ़ने नहीं दे रहा था।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बूढ़ापा कयामत नहीं

डा० माड रायडन के एक रेडियो-भाषण का सार।

बूढ़ा होना एक काम है, कयामत नहीं। यह बात मैं इसलिए जानती हूं कि मैं स्वयं इकहत्तर साल की हूं। अक्सर मैं लोगों को कहते सुनती हूं – "आखिर इन बूढ़ों का क्या किया जाये?" इसका सीधा और सही उत्तर यही है कि उन्हें मरने न दें, बल्कि अवसर दें कि वे जियें और दूसरों को जीने दें।

मगर 'जीने और जीने देने' के लिए तो काफी कुछ करना पड़ता है। अगर आप चाहती हों कि सत्तर साल की उम्र में लोग आपको 'प्यारी वृद्ध महिला' कहें, 'बूढ़ी खूंसट' नहीं, तो उसके लिए आपको बहुत पहले, शायद सत्रह साल की उम्र में ही, तैयारी शुरू कर देनी होगी। इसलिए इस मामले पर जरा गंभीरता से विचार कर लेना अच्छा है।

मैंने कहा, बूढ़े जियें और दूसरों को जीने दें। 'जीने देने' से मेरा मतलब यह है कि हम बूढ़ों को यह नहीं समझना चाहिये कि हमारे सिवा सबके सब मूर्ख हैं। चूंकि हम औरों से जरा ज्यादा वक्त इस धरती पर गुजार चुके हैं, इसलिए हम यह मान लेते हैं कि हम औरों से ज्यादा सयाने हैं। यह दृष्टिकोण गलत है।

फिर हमें दिन में दस बार यह दोहराये बिना चैन नहीं पड़ता कि जब हम जवान थे, तब एक रुपये में कितना कुछ खरीदा जा सकता था। और यह चीज बड़ी बोरियत पैदा करती है। नौजवान तो यह जानना चाहते हैं कि अभी, अपनी जवानी के दिनों में, वे एक रुपये में क्या कुछ खरीद सकते हैं।

दरअसल जवानों की दिलचस्पी इस बात में होती है कि अभी क्या है; जबकि हम बूढ़ों की दिलचस्पी इसमें होती है कि पहले क्या था; और या फिर इसमें कि बाद यानी परलोक में क्या होनेवाला है। जरा सोचें, तो हम पायेंगे कि इनमें से दूसरी चीज पहली से कहीं ज्यादा दिलचस्प है।

इसलिए जब कोई रहमदिल नौजवान हमसे कहे–"मौसी, मैं जानता हूं, उस उम्र में आपसे आशा नहीं की जा सकती कि आप अपने को बदलें," तो उसे हमारा जवाब यह होना चाहिये–"नहीं बेटे, जो बीत चुका सो बीत चुका; उससे चिपके रहने में कैसी बुद्धिमानी है भला!" मुझे दो बहुत-सी औरतों की याद आती है, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानती थी। एक ९१ वर्ष जीवित रही; दूसरी पूरे १०२ साल। जब उनका देहांत हुआ, सबको बड़ा हुआ–उनके परिवारवालों को तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्यादा। मैंने वैसी खुशमिजाज और मधुर स्वभाव की स्त्रियां नहीं देखी हैं। उन्हें कभी अपने बेटों-पोतों से इस बात की माफी नहीं मांगनी पड़ी कि वे उन पर बोझ हैं। वे जानती थीं कि वे किसी के लिए भारस्वरूप नहीं हैं। दूसरों से वे कम-से-कम अपेक्षा रखती थीं। उन्हें इस बात का बड़ा खयाल रहता था कि वे दूसरों के जीवन का इतना रस न निचोड़ लें कि उनके जीवन ही रसहीन हो जायें। वे 'जीने और जीने देने' में प्रसन्न और तृप्त थीं।

दुनिया का संबंध बूढ़ों से ज्यादा नौजवानों से है-फिर हम बढ़े इस दुनिया पर हावी होने की कोशिश क्यों करें? हम यह न भूलें कि हम एक जिंदगी जी चुके हैं—और दो जिंदगियां हथियाने की कोशिश न करें। किसी बूढ़े आदमी या औरत को अपने बेटे या बेटी की जिंदगी अपने ऊपर खर्च करते देखकर मुझे बड़ी खीझ लगती है।

कई बार लाचारी होती है। मगर इस विषय में हममें से अधिकांश बूढ़े उतने सजग नहीं हैं, जितना कि हमें होना चाहिये। यह सरासर ज्यादती है कि हम एक साथ दो जिंदगियों पर—एक अपनी, एक किसी और की जिंदगी पर—हाथ साफ करें। जब इसके बिना चारा ही न हो, तब भी हम इसका अभ्यास डालें कि दूसरों को कम-से-कम कष्ट हो; अपनी ही पसंद-नापसंद व आदतों से चिपके न रहें और रहमदिल नौजवानों की इस बात पर तो कतई कान न दें कि "मौसी इस उम्र में आपसे आशा नहीं की जा सकती कि आप अपने को बदलें।"

चाहता हूं

चाहता हूं पेड़ बनना
ज्यादा नहीं, बस दो-एक दिन
को—
ताकि मैं जान सकूं
कैसा लगता है :
कैसा लगता है जब
अंतिम प्रस्फुटन के फूल
एक-एक कर
झरने
लगते हैं!

—भारतभूषण अग्रवाल

भला, हम क्यों न बदलें अपने आपको? हर मनुष्य को बदलना चाहिये। दरअसल बदलना ही पड़ता है।

तो हम बूढ़ों के लिए दो बातें संभव हैं। एक तो यह कि हम बढ़ें, बड़े हों, और जिस दुनिया से हम थोड़े ही समय बाद विदा हो जाने-वाले हैं, उसकी चीजों से धीरे-धीरे अपना नाता तोड़ लें। अथवा घटें, छोटे होते जायें, यानी दुनिया की चीजों में इस कदर आसक्ति बढ़ाते चले जायें कि अंत में और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी चीज में हमारी दिलचस्पी ही न रह जाये। मनोवैज्ञानिकों ने इस स्थिति को दूसरा बचपन कहा है।

अधिकांश लोग जीवन को चढ़ाव-उतराव के रूप में देखते हैं। किसी खास उम्र को वे चोटी मान लेते हैं; बुढ़ापा उनकी दृष्टि में इस चोटी के उस पार का उतराव है। ढलती उम्र, जीवन की उतरती कला—आदि मुहावरे भी इसी भाव को सूचित करते हैं।

लेकिन मैं समझती हूं कि जीवन में पहले एकदम सीधा चढ़ाव आता है, जिसे जवानी कहते हैं—यह प्रायः संघर्षमय होती है। इसके बाद आती है प्रौढ़ता की समतल जमीन। यहां पहुंचकर हम जानते हैं कि दुनिया में हम क्या हैं, कहां हैं और क्या कर या बन सकते हैं। और इसके आगे? इसके आगे एक चढ़ाव और है, आध्यात्मिक संघर्ष, पहले से भी बड़ा अभियान है—एक अज्ञात-अपरिचित लोक का आरोहण है।

तो नौजवानों और बूढ़ों में बहुत भाई-चारा होना चाहिये। नौजवान इस जतन में जुटे होते हैं कि इस दुनिया में कुछ बनें; जबकि हम बूढ़ों की कोशिश होती है कि उस दुनिया में कुछ बनें। और दोनों को इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है।

★

एक बार प्रभाकरजी ने प्रेमचंदजी से कहा—"बाबूजी, आपकी मूछें और आंखें एकदम मैक्सिम गोर्की से मिलती है।"

मुस्कराते हुए प्रेमचंदजी ने उत्तर दिया—"तो भाई, यह कौन-सी बड़ी बात है?"

प्रभाकरजी ने कहा—"बड़ी बात तो यह है बाबूजी कि आपकी कलम भी गोर्की से मिलती है।"

"तो इससे क्या हुआ? सूरत मिलती है, कलम भी मिलती है,; लेकिन भाई मेरी किस्मत तो गोर्की से नहीं मिलती!" प्रेमचंदजी ने कहा।

०००

पंतजी ने एक दावत की। किदवई साहब जरा देर से आये। भोजन-गृह के द्वार पर खड़े होकर उन्होंने पूछा—"जनाब, जूते उतारूं क्या?"

"जूते उतारोगे नहीं, तो खाओगे क्या?" जवाब मिला।

०००

महात्मा गांधी के सामने एक अखबारी टीका पढ़ी जा रही थी। उसमें 'गांधी की रचनात्मक गफलतें' ये शब्द आये। महादेव देसाई ने गांधीजी से पूछा—"रचनात्मक गफलत कैसी होती है?"

तुरंत वल्लभभाई बोल उठे—"जैसे, तेरी दाल आज जल गयी थी।"

—अनुवाद

सभी खिलखिलाकर हंस पड़े।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुस्लिम-जगत के वाल्मीकि

असद अली

हिन्दू जगत में ऋषि वाल्मीकि से सब परिचित हैं। वे खूंखार डाकू थे; परंतु सप्तर्षियों से भेंट के बाद उनका हृदय परिवर्तन हुआ; और वे एक ऋषि-श्रेष्ठ के रूप में प्रसिद्ध हुए।

परंतु फजील बिन अयाज डाकू होने के साथ-साथ ईश्वर-भक्त भी थे। डाकू भी साधारण नहीं, बल्कि डाकुओं के सरदार थे। डाके डालते, माल लूटते, लूटा हुआ माल साथियों में बांटकर जो चीज उन्हें पसंद आती, वह खुद के लिए रख लेते। नमाज का वक्त आता, वे नमाज पढ़ते; रोजे रखते और अपने साथियों को नमाज पढ़ने की शिक्षा देते। आज्ञा की अवहेलना का अर्थ था दल से निष्कासन।

फजील लूटते समय किसी स्त्री को न छेड़ते, उसके पास तक न जाते। जिसके पास थोड़ा माल होता, उसे भी छोड़ देते।

इस्लाम में अमानत में खयानत न करने का बड़ा महत्व है। दूसरे, वादे को पूरा करना ईमान की एक सामान्य-सी पहचान है। फजील बिन अयाज इन बातों का बड़ा ध्यान रखते थे।

जहां फजील रहते थे, उस रास्ते से एक बार एक काफिला निकला। लोग बहुत डरे। एक सौदागर के पास नकद माल बहुत था। उसने सोचा कि अगर इस माल को जंगल में छिपा दूं, तो बच जायेगा। यह सोचकर जब वह जंगल में पहुंचा, तो वहां एक व्यक्ति को, जो देखने में संत मालूम होता था, नमाज पढ़ते देखा। जब संत नमाज से निवृत्त हुए, तो सौदागर ने रुपया उनके पास रख दिया और कहा—"यहां डाकुओं का भय है। इसे आप रख लीजिये।" जब वह वापस लौटा, तो काफिला लुट चुका था। फजील डाकुओं में माल बांट रहे थे। वह डरा। परंतु फजील ने उसे अपने पास बुलाकर पूछा—"तुम कौन हो?" उसने कहा—"मैं एक सौदागर हूं।" पूछा—"यहां क्यों आये हो?" उसने उत्तर दिया—"अपनी अमानत लेने।" फजील ने कहा—"जहां रख आये थे, वहां से उठा लो।" सौदागर ने ऐसा ही किया।

डाकू हैरत में थे। एक डाकू ने इसका कारण पूछा, तो फजील ने उत्तर दिया—"इसने मुझ पर विश्वास किया और मैं ईश्वर पर विश्वास रखता हूं। मैंने उसके गुमान को सच्चा किया। खुदा मेरे गुमान को भी सच्चा करे।"

वाल्मीकि की तरह फजील का भी हृदय-परिवर्तन एक आकस्मिक घटना से हुआ।

हिन्दी डाइजेस्ट

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ति का मार्ग

संत अबू हाजम मक्की विद्वानों के मुकुट-मणि और ज्ञान-वैराग्य के ज्वलंत प्रतीक थे। एक दिन गृहस्थ हाशम उनके पास आकर बोला –"हजरत, फानी दुनिया से लगाव नहीं टूटता; लेकिन मैं खुदा को भी नहीं छोड़ना चाहता। क्या कोई ऐसा रास्ता भी है कि मैं अपना दुनियावी धंधा भी करता रहूं और जन्नत भी पा जाऊं।"

संत अबू हाजम मंद-मंद मुस्काये–"हां, ऐसा रास्ता है। तुम जो भी कमाओ, ईमानदारी से कमाओ और जो भी खर्च करो, दूसरों की भलाई के लिए खर्च करो!"

हाशम संदिग्ध हो उठा –"लेकिन इस रास्ते पर कौन चल सकता है?"

"जो भी खुदावंद की नजरे इनायत का तलबगार होगा, जो दोजख की आग से बचना चाहेगा, वही इस रास्ते पर चलेगा। फानी दुनिया में रहते हुए खुदा को पाने का दूसरा कोई रास्ता नहीं।" संत ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया। –नरेश मिश्र

एक बार जब फजील एक काफिले को लूट रहे थे, तो काफिले में से किसी व्यक्ति ने एक आयत (कुरान शरीफ की एक पंक्ति) पढ़ी, जिसका अर्थ था–"क्या ईमानवालों के लिए ऐसा समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह से डरें?" यह सुनकर फजील कांप उठे। उसी समय उन्होंने डाके न डालने और ईश्वर-भक्ति में शेष जीवन व्यतीत करने का प्रण कर लिया। वे सब कुछ छोड़कर मक्का पहुंचे और वहीं रहने लगे। उन्होंने लोगों से मिलना-जुलना बंद कर अपना सारा समय ईश्वर-भक्ति में लगाया।

एक बार खलीफा हारूं अल रशीद उनसे मिलने आये। फजील नमाज पढ़ रहे थे। जब नमाज से फारिग हुए, तो खलीफा ने कहा–"कुछ नसीहत कीजिये।"

फजील बोले – "तुम्हारे पिता रसूल अल्लाह के चाचा थे। उन्होंने हुजूर से अर्ज किया कि मुझे किसी कौम का सरदार बना दीजिये। रसूल ने फरमाया कि तुम्हें नफ्स (इंद्रियों) का सरदार बनाया। (अर्थात् सांसारिक शासन से आत्मशासन कहीं अधिक श्रेष्ठ है।) हुकूमत (शासन) से कयामत में नदामत (शर्मिंदगी) हासिल होगी।"

हारूं ने कहा–"कुछ और फरमाइये।"

कहा–"हजरत उमर ने खलीफा बनने पर कुछ बुजुर्गों से सलाह मांगी, तो एक बुजुर्ग ने कहा–अगर नजात (मुक्ति) दरकार है, तो बूढ़ों को पिता, जवानों को भाई, छोटों को बेटे और औरतों को मां-बहन समझो और उनसे ऐसा ही सुलूक करो।"

खलीफा ने कहा–"कुछ और कहिये।"

बोल–"बुजुर्गों के साथ मेहरबानी और भाइयों और औलाद के साथ नेकी कर।" हारूं ने कहा–"कुछ और कहिये," तो फरमाया "खुदा से डर और उसके जवाब के लिए तैयार रह; क्योंकि तेरी सल्तनत के [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक व्यक्ति के लिए तुझसे सवाल किया जायेगा और हर बंदे की बात सुनकर तेरे और उसके बीच इंसाफ करेगा।"

खलीफा ने कहा—"हजरत, कुछ और कहिये।"

कहा—"याद रख कि सल्तनत के जमाने में अगर कोई बुढ़िया गरीबी के सबब से अपने घर में भूखी सो रही, तो रोजे कयामत वह बुढ़िया तेरा दामन पकड़कर खुदा से इंसाफ चाहेगी।"

खलीफा यह सुनकर इतने रोये कि रोते-रोते बेहोश हो गये। इसके बाद खलीफा ने फजील को कुछ धन देना चाहा; परंतु उन्होंने नहीं लिया और कहा—"तू मुझे दोजख में डालने का इरादा करता है क्या?"

इसके बाद खलीफा उठ आये।

फजील कहते—"ऐसे स्थान में बैठकर इबदत करनी चाहिये, जहां उसे कोई न देखे। अपने ऐमाल (कर्म) का जिक्र न करो, जब तक जरूरत न हो। जो व्यक्ति खुदा से डरता है, उसकी जुबान गूंगी हो जाती है। जिसको खौफे खुदा होता है, वह बेकार बातें नहीं करता और दुनिया की मुहब्बत उसको नहीं होती।"

कहते—"बहुत-से लोग गुसलखाने से पाक होकर निकलते हैं और बहुत-से मन के मले काबा से नापाक होकर आते हैं।

फजील की दो लड़कियां थीं, जिनका विवाह यमन के शहजादों से हुआ था। कहा जाता है कि मरते वक्त फजील ने अपनी पत्नी से कहा था—"इन लड़कियों को पहाड़ पर ले जाकर ईश्वर से कहना कि फजील ने जिंदगी-भर इनकी फरवरिश की, अब ये तेरे हवाले हैं।" पत्नी ने ऐसा ही किया। वह पहाड़ पर गयी और रो-रोकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी। उसी समय यमन का बादशाह अपने पुत्रों के साथ वहां आया और उसने उनका विवाह अपने बेटों के साथ कर दिया।

डाकू से साधु बन जाना और साधु से एक पहुंचे हुए संत बनना ही फजील की जीवनी है।

★

छड़ी व तलवार

मिस्र के भारत-स्थित राजदूत श्री कमाल ने एक बार नेहरूजी से मुलाकात के दौरान बातों-ही-बातों में पूछ लिया—"पुराने जमाने में तलवार से कैसे लड़ा जाता था?"

नेहरूजी ने तुरंत उठकर एक छड़ी कमाल को पकड़ायी और एक खुद लेकर खड़े हो गये और एक माहिर तलवारबाज की तरह पैंतरा बदलकर अपनी छड़ी से भिड़ा दी। कमाल हक्के-बक्के से उन्हें देखते रहे। इतने में नेहरूजी ने एक और पैंतरा बदलकर छड़ी चलायी। कमाल फिर भी न समझ सके कि उनकी इन हरकतों का क्या अर्थ है। तब नेहरूजी हंसते हुए यह कहकर बैठ गये—"आपको छड़ी तक तो चलानी आती नहीं, फिर तलवारों की बातें करने से फायदा?"

—हुस्न जमाल छीपा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मेरे रंगरूप की
बहार का आधार
लक्स है'
शर्मिला टैगोर कहती हैं

सुंदर रंगरूप आप के लिए भी उतना ही ज़रूरी है जितना कि शर्मिला टैगोर के लिए
... इस की देखभाल भी वैसी ही होनी चाहिए।

लक्स टॉयलेट साबुन
चित्र-तारिकाओं का
शुद्ध मुलायम सौंदर्य साबुन
सफ़ेद और इंद्रधनुष के चार रंगों में

हिंदुस्तान लीवर का उत्पाद

LYS 1177 HI
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला कहानी :

पापी का परिवर्तन

नारायण गंगोपाध्याय

कलकत्ते में डलहौजी स्क्वायर - जैसा स्थान। सो भी शाम के छः बजे! वहां के पाकिटमारों को इतने ज्यादा आराम और सुविधा के अवसर और कहां मिलेंगे?

ट्राम के सामने भीड़ इकट्ठी हो रही थी। भीड़ के बीच घिरे एक मशहूर गुंडे की लात, घूंसों, मुक्कों और तमाचों से पूजा हो रही थी। जो हाथ-पैर भी हिलाना नहीं चाहते थे, वे वचन-प्रहार से अपना-अपना कर्तव्य पूरा कर रहे थे।

कोई कह रहा था—"एक पैर कटा हुआ था, इसलिए पकड़ा गया, नहीं तो हाथ आनेवाला नहीं था।"

एक साहब बोले—"हरामजादे की हिम्मत तो देखो।" जिन साहब का बटुआ गया था, वे खड़े-खड़े राम-राम जप रहे थे। एक सज्जन उनसे बोले — "अरे साब, आप तो चुपचाप खड़े हैं, अपने रुपये संभाल कर देखिये ठीक हैं? और चलिये इसे पुलिस के हवाले कीजिये।"

वे सज्जन जल्दी-जल्दी अपने नोटों को गिनकर बोले—"ठीक हैं साब, पूरे पांच सौ ही हैं—मैं बूढ़ा आदमी कहां पुलिस के झमेले में पड़ूंगा। मेरे रुपये मिल गये, उसकी मरम्मत हो गयी, अब जाने भी दीजिये।"

हाथ की सफाई कम न थी। इतना भारी बटुआ, इस तरह रुई के फाहे की तरह चट से उठा लिया गया कि खुद बटुएवाले को भी पता नहीं चलता, यदि उसके कुर्ते पर उसकी अपनी ही सिगरेट न गिर पड़ती। एक स्टाप और निकल जाने पर कुछ भी हाथ न आता, वह एक क्षण में ही विपुल जन-समूह में गायब हो सकता था। फिर लालाजी की शराब की दुकान, तीन-चार बोतलों के पैसे भी उधार हो गये हैं! आज ही सब कर्जा चुकाकर खूब खा-पीकर मौज उड़ाता। इस कलकत्ता महानगरी के अंधकार में किसी गली के किनारे, मुंह के चेचक के निशानों पर महकते हुए पाउडर का प्रलेप कर, जहां मेहरजान खड़ी होगी ग्राहक के इंतजार में, वहां भी पहुंच सकता था। एक रात कट जाती, बस।

लेकिन बुलाकीराम आज रंगे हाथों पकड़ा गया था। डलहौजी स्क्वायर की ट्राम श्याम बाजार की तरफ चल दी। अब भीड़ भी कुछ कम हो गयी थी। किंतु आने-जानेवालों में से लोग रुक-रुककर पूछते—क्या हुआ? कोई बेचारा लंगड़ा गिर पड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशेषरूप से संमिश्रणकर्ता
गोल्डन टोबॅको कम्पनी प्राइवेट लि., बम्बई-५६
भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालूम होता है।

बुलाकी अब ज्यादा देर तक पड़ा नहीं रहा। लकड़ी के पैर से सहारा लेकर उठ खड़ा हुआ। तमाचों की झनझनाहट अब भी हो रही थी। मुंह में कुछ नमकीन स्वाद आ रहा था, शायद दांतों से खून निकल रहा था। नाक से खून गिरने से कुर्ते पर दो-चार दाग पड़ गये थे।

"साला चला गया," खिसियाने मुंह से बुलाकी ने जेब में हाथ डाला, बीड़ी भी गायब। बटुए की तलाशी में बीड़ी भी बिखेर गये बाबू लोग ? किंतु यही उसके सबसे ज्यादा दुःख का कारण नहीं है। उसने मेहरजान के लिए जो एक शीशी इत्र की खरीदी थी, उसका भी चूराचूरा हो गया था। दिगंत में विलीयमान ट्राम की तरफ एक बार जलती हुई आंखों से देखकर वह फिर बोला—"सा-ला"। कुछ अगल-बगल खड़े हुए लोग अब भी उसके बारे में कुछ कहा-सुनी कर रहे थे। फिर पास में ही खड़ा कोई बोल रहा था—"अरे भई, ये लोग बड़े उस्ताद हैं, उस दिन मेरी जेब से शेफर्स पेन देखते-देखते उड़ा दिया। पुलिस के हवाले करना था इस हरामजादे को।"

"हरामजादा.....!" बुलाकी का खून खौल उठा, फणधारी सांप की तरह। हाथ में छुरा होता और अनुकूल अवसर होता, तो इसका उत्तर अभी दे सकता था बुलाकी; किंतु वह समय नहीं है, सुयोग भी नहीं है।

मछुआ बाजार की संकरी गली में अभी तक शाम का अंधेरा नहीं छाया। यहां कलकत्ते की बड़ी-बड़ी सड़कों पर अभी भी दिन की रोशनी झलक रही है, ट्रामें दौड़ रही हैं, रोडवेज की बस, रिक्शा और टैक्सी। बुलाकी ने जेब से एक फूल-कढ़ा शौकीन रूमाल निकालकर नाक-मुंह पोंछ लिया। लंगड़े पैर से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। सिर में चक्कर आ रहा है; किंतु लात-मुक्कों ने कुछ भी दया नहीं की।

"जरा कहीं बैठना चाहिये—थोड़ी चाय मिल जाती, तो अच्छा होता।" शाम हो चली है, कलकत्ता के वक्षस्थल की संध्या ! सिर पर टोपी लगे बिजली के बल्ब एक-के-बाद एक जलते जा रहे हैं। हदुआ तालाब के किनारे पेड़ों पर कौओं का कलरव हो रहा है। पार्क में जनता की चहल-पहल है। वहां बैठना नहीं हो सकता, कोई एकांत जगह चाहिये।

"हरामजादा"—यह गाली अब भी तीर की तरह लग रही थी। बुलाकी का खून खौल उठा। मछुआ बाजार की दुर्गंधपूर्ण गलियों में अगर बुलाकी के पास छुरा होता, और उन लोगों में अगर कोई मिल जाता—सा-ला.....तो... सांप की फुंकार की तरह दबा हुआ क्रोध आ गया मुंह के द्वार से। किंतु अब चला नहीं जाता। लकड़ी का पैर बहुत भारी मालूम पड़ रहा है। दूसरे पैर के जोड़ों में भी ढीलापन आ गया है। और इस दुःख में भी, इत्र की टूटी हुई शीशी की सुगंध सारे बदन पर लिपटकर मानो बलाकी का मजाक उड़ा रही है।

मेहरजान चितपुर रोड की गली के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नौका विहार का मज़ा अनोखा है

अरविंद

ये बढ़िया कपड़े फ़ैशन में
जान फूंकते हैं

विभिन्न किस्मों में है
सन्फोराइज्ड पॉपलिन:
कमीज के कपड़े: धारीदार, डॉबी,
चेक, पायजामा
धोतियां मर्सराइज्ड, लान: ५५३१
सूट का कपड़ा: गेबरडीन
छपे कपड़े: छपे लॉन बायल, पॉपलिन
रंगीन बूटीदार कपड़े
२×२ फैंसी फुल बॉयल
लेनो में और बूटीदार

SANFORIZED

टेबिलाइज्ड और टेबिलाइज्ड
शेहरी बांध

अरविंद मिल्स लिमिटेड
अहमदाबाद

Arvind Quality

रजिस्टर्ड ब्युजर

अब हमारे रिटेल दुकानों में प्राप्त:– प्रीमियर फर्निशिंग एंड डेकोरेटिंग प्रा० लि०
७, ब्रेबोर्न स्टेडियम, वीर नरीमन रोड, बंबई–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाइट पोस्ट के पास केसरिया रंग की साड़ी पहने खड़ी है। किंतु बहुत दिनों से उसे कुछ दिया नहीं, बेचारी को बड़ी तकलीफ होगी। उम्र हो गयी है, सस्ते पाउडर से भी अब चेचक के दाग नहीं छिपते, ग्राहक माचिस जलाकर आगे खिसक जाते हैं। महंगाई का जमाना है, बड़ी तकलीफ से गुजर होती है। फिर भी बुलाकी को कभी निराश नहीं करती मेहरजान। प्यार करती है उसे। पता नहीं डर से या कैसे ? शेर की तरह हिंसक और सांप की तरह भयानक है वह। एक पैर से लंगड़ाता है; किंतु उसके छुरे का वार कभी खाली नहीं जाता; इसीलिए मेहरजान बिना प्रतिवाद के आत्मसमर्पण करती है। प्यार की बातें होती हैं, अपने हाथ से खाना बनाकर खिलाती है; किंतु बुलाकी भी अपना कर्तव्य निभाता है। सच-मुच मेहरजान बड़ी तकलीफ में है, साड़ी भी फट गयी है, खाने को भी नहीं है, उपेक्षित सूरत दिन-पर-दिन बिगड़ती जा रही है। ऐसे मौके पर बुलाकी कुछ मदद कर पाता। कम-से-कम एक साड़ी ही दे सकता ?

फुदकती चिड़िया की तरह कैसे हाथ में आ गया था बटुआ। बड़ा भारी था, पांच सौ रुपये थे। उफ, जरा से में निकल गया—"हरामजादा।" किंतु अब और नहीं चला जाता, अब तो कहीं एकांत में जाना पड़ेगा। "ऐ रिक्शा" टुनटुन करता हुआ रिक्शा आ गया—"कहां जाइयेगा ?"

"रथतल्ला घाट गंगा-किनारे।"

"आठ आने होंगे," रिक्शावाले ने एक बार संशय-भरी नजर से उसे देख लिया।

"चलो भई चलो, सब ठीक हो जायेगा।" और टुन-टुन-टुन रिक्शा चल पड़ा। सेंट्रल एवेन्यू होकर गुजर रहा है, जरा आगे बढ़कर मस्जिद बाड़ी मुहल्ले के नुक्कड़ पर गली में मेहरजान का घर है! फिर बुलाकी को याद आ गये, पांच सौ रुपये! उफ, पकड़नेवाले उस आदमी को कहीं देख लिया, तो साले को छोड़ूंगा नहीं।

सड़क के दोनों किनारों पर गगन-चुंबी मकानों के बीच इस चौड़ी सड़क पर शाम की ठंडी-ठंडी हवा ने बुलाकी को कुछ राहत दी, और ज्यों-ज्यों स्ट्रैंड रोड होकर घाट का किनारा आने लगा, त्यों-त्यों बुलाकी की जान-में-जान आने लगी। रास्ते में बहुत-सी मेहरजान मिली थीं, जो बुलाकी को जानती हैं; किंतु सब तो मेहरजान नहीं हैं। खाली जेब से प्यार नहीं करतीं वे। उनके भी अपने-अपने बुलाकी हैं।

स्ट्रैंड रोड की रेलवे लाइन पार कर रिक्शा रथतल्ला घाट पर आ गया। लाइन पर खड़ा एक इंजन खामख्वाह हुस-हुस कर रहा था।

"उतरो भाई, गंगाजी आ गयी।"

"ठहरो भाई ठहरो, लंगड़ा आदमी, जरा धीरे-धीरे।" वह लकड़ी का पैर जमीन पर टेककर उतरा। जरा गिरने को हुआ था, तभी रिक्शावाले ने संभाल लिया। भले आदमियों ने मार-मारकर कचूमर कर दिया है, शरीर में दम नहीं है। उसने अंटी से ढूंढ़-ढांढ़कर एक अधेली निकालकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप की सारी धुलाई जगमगाती सफ़ेद ! बेदाग़ साफ़ ! इस लिए कि सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति है ! ढेरों झाग ! आप के सभी कपड़े कितनी आसानी से धुलते हैं ! बच्चों के वस्त्र, कमीजें, साड़ियाँ...हर कपड़ा अत्यधिक सफ़ेद, अत्यधिक साफ़। घर में धोइए, सर्फ़ से धोइए।

सर्फ़ से कपड़े सब से सफ़ेद धुलते हैं

लिंटास – SV. 12-77 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

.....उसके बाद बुलाकी सो गया।

निर्जन गंगा के घाट पर अंधेरा बढ़ने लगा। उस पार हावड़ा की रोशनी भी कृष्ण-पक्ष की काली रात में धुंधली पड़ गयी, नींद में स्वप्न देख रहा था बुलाकी।

वह नशे में बेहोश होकर मेहरजान के दरवाजे पर आ गिरा है। उसने कहीं से एक बाल्टी ठंडा पानी लाकर उस पर डाल दिया है, और साथ ही पंखे से जोरों से हवा कर रही है। जाड़े में नशा टूट गया। वह हड़-बड़ा कर उठ बैठा। सचमुच ही वह हड़बड़ा कर बैठ गया। घाट पर अंधकार, पानी में भी समता है, आकाश में कहीं-कहीं बादल छाये हैं, तारे भी छुपने जा रहे हैं, गंगा से तीव्र गति से चली आ रही है गीली बयार।

बुलाकी ने नशा नहीं किया था, मेहर-

रिक्शेवाले को थमायी। और भी दो-ढाई रुपये की रेजगारी बची थी उसके पास।

सामने गंगा है, हेमंत की मृदु-मंद शीतल पवन चल रही है। कुछ जाड़ा-सा लग रहा है। किंतु बुलाकी को अच्छा लग रहा है। इस हवा की शायद उसे जरूरत भी थी। मानो इसी के लिए अब तक इंतजार था। सिर में जो आग-सी जल रही थी, मानो वह अब बुझ गयी है।

चारों तरफ सुनसान, उस पर ठंडी हवा। सिर्फ दो आदमी घाट पर नीचे बैठे थे, सो भी अब ठंडी हवा में उठकर चल दिये। सीढ़ियों से बुलाकी नीचे उतर आया। दोनों हाथों से उठा-उठाकर उसने पानी पिया और सिर-मुंह भी अच्छी तरह धो लिया। अब उसकी आधी ग्लानि कट चुकी थी। गंगा की ठंडी बयार में आश्चर्यजनक नींद लाने की ताकत है। आह, कितना अच्छा लग रहा है, अब कहीं भी दर्द नहीं रहा, मानो सो जायेगा अभी। माचिस तो है; किंतु एक सिगरेट मिल जाती, तो कुछ समय कट जाता। पास में दुकान है; पर जाये कौन? वह दो-चार सीढ़ी ऊपर चढ़-कर किनारे से पैर पसारकर सो गया।

हवा में इत्र उड़ रहा था, सुगंध सिर्फ बुलाकी की नाक में ही नहीं, मुंह में भी घुस गयी थी। अब उसे कुछ ही घंटे पहले की घटना स्वप्न की तरह लग रही थी।

मेहरजान और वह डलहौजी स्क्वायर से श्याम बाजार जानेवाली ट्राम, वही पांच सौ रुपयों से भरा हुआ बटुआ, उसके बाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

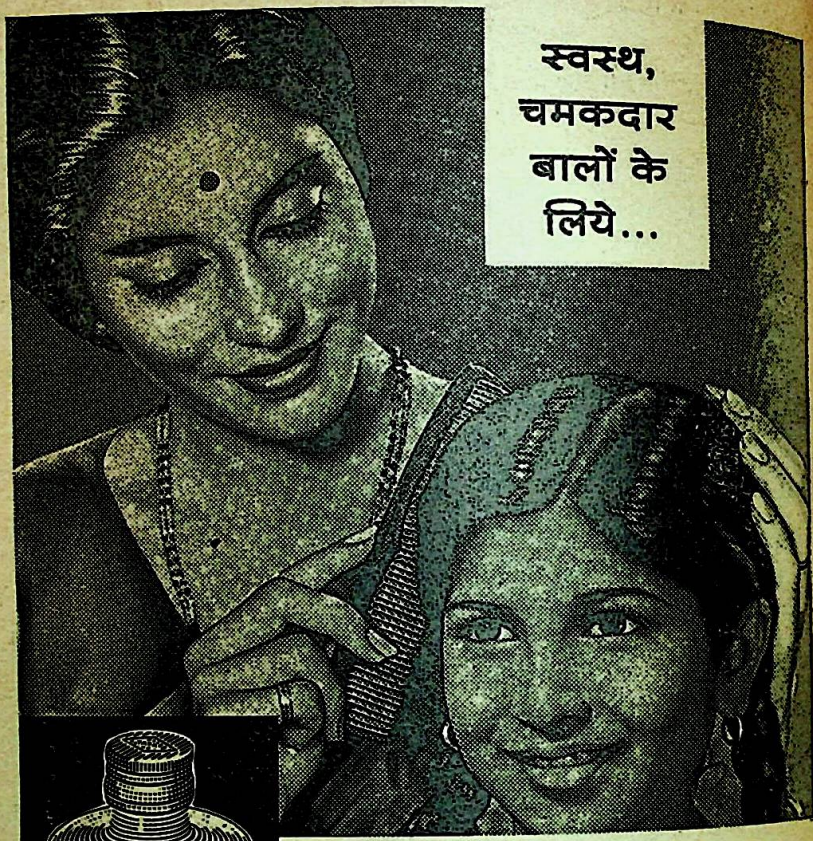

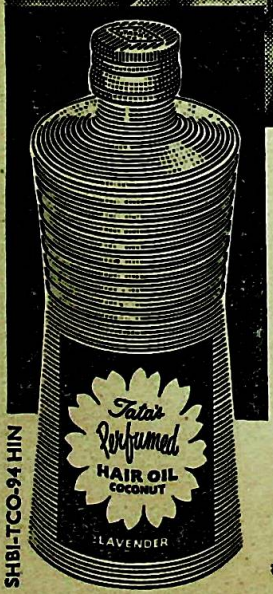

टाटा का *सुगन्धित* कोकोनट हेअर ऑइल

जिसमें शुद्ध नारियल का तेल होता है

सभी समझदार माताएँ जानती हैं कि टाटा के कोकोनट हेअर ऑइल में केवल शुद्ध नारियल का तेल होता है। इससे बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं और बाल स्वस्थ और घने उगते हैं। टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल—गुलाब, लॅवेण्डर, चमेली और पुष्पा—इन चार मनभावन सुगन्धों में मिलता है।

बालों को सदा सुन्दर रखने के लिये टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल

SHBI-TCO-94 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञान भी नहीं थी, केवल मार खाने के दुःख-दर्द को भूलने के लिए वह इस अवसन्न निरुपाय शरीर को लेकर रथतल्ला के घाट पर सो गया था। उठने ही वाला था कि चौंक गया। चारों तरफ घना अंधेरा, फिर भी बुलाकी की अभ्यस्थ आंखों ने देख लिया, कोई सफेद कपड़े में, सीढ़ियों पर से निःशब्द पैरों से गंगा की तरफ उतरा जा रहा है। सीढ़ी के किनारे बुलाकी को इस अंधकार में वह देख नहीं पाया था। बुलाकी ने रोमांचित होकर सुना, वह तो नारी-कंठ से रोने का स्वर है। दबे स्वर से रो रही है एक लड़की। भय से शंकित पैरों से धीरे-धीरे उतरी चली जा रही है गंगा के पानी की तरफ। सर्वनाश !

एक संभावना की बात मन में उठते ही, बुलाकी के रग-रग में बिजली दौड़ गयी। लड़की कहीं डूब मरने तो नहीं जा रही ? इस सुनसान अंधेरी रात में, अकेली गंगा की तरफ क्यों जा रही है ? इसका अर्थ क्या हो सकता है ? चट से लकड़ी का पैर उठाकर बुलाकी खड़ा हो गया। बोला—"कौन ?"

"कौन हो तुम ?" फिर भी कोई जवाब नहीं। मानो एक पत्थर की मूर्ति है। बुलाकी को ऐसा लगा कि लड़की थर-थर कांप रही है। बुलाकी आगे बढ़कर गंगा की तरफ पीठ करके उसके सामने खड़ा हो गया।

"कौन हो तुम, यहां क्या कर रही हो ?"

अचानक उफन-उफन कर रोने की आवाज के साथ विनती सुनाई दी—"छोड़ दो मुझे, दया करो मुझ पर, मुझे पुलिस के हवाले न करो।" बुलाकी सस्नेह हंस पड़ा। अचानक न जाने किस करुणा से आज बुलाकी का मन परिपूर्ण हो गया है। केवल खून नहीं, गुंडागर्दी नहीं और नशेबाजी ही नहीं, आज रात को आश्चर्यजनक भलाई करने का मौका मिला है बुलाकी को। एक महत्तर कार्य, जो कि जीवन में आज तक उसने कभी नहीं किया, और करने का अवकाश भी उसे कभी नहीं मिला। विचित्र, उत्तेजना में उसका खून उथल-पुथल कर उठा, इसी क्षण मानो वह नया आदमी बन गया है।

"ना मां, कोई डर नहीं है। मैं पुलिस नहीं हूं।" और जेब में माचिश पड़ी थी, एक सींक निकालकर जलायी। भयभीत शोकातुर नारीमुख माचिश के उजाले में आभासित हो उठा, बीस-बाईस साल की भद्र घर की एक लड़की एक पोटली-सी सीने से चिपटाये खड़ी है।

गले में सोने का हार। भारी लाकेट में से क्षण-भर के लिए, बुलाकी के आंखों में एक आकर्षण जगाकर माचिस का उजाला समाप्त हो गया। अपने अनजाने में ही बुलाकी का मन बोल उठा—मेहरजान, बहुत रुपये की जरूरत है ? निर्जन गंगा के घाट पर, एक अकेली लड़की का इतना जेवर ! इन दो लोहे के समान हाथों को सिर्फ आगे बढ़ाने की जरूरत है; किंतु नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। आज एक दुर्लभ क्षण पाया है बुलाकी ने; और यह दुर्लभ क्षण उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

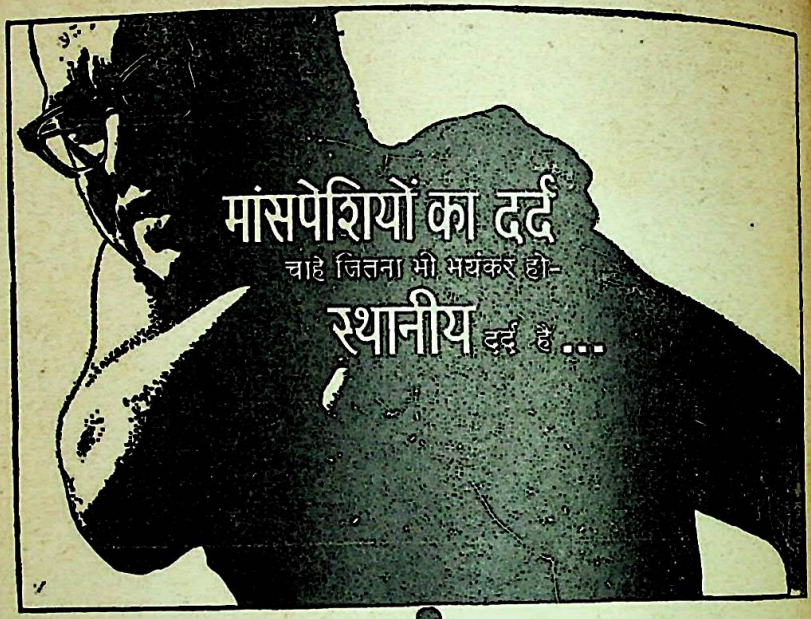

अमृतांजन

दर्द को फौरन दूर करता है

स्थानीय दर्द को दूर करने के लिये दवा खाने की क्या जरूरत है? दर्द की जगह पर अमृतांजन मलिये—दर्द जाता रहेगा, आप राहत महसूस करेंगे। अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रण वाली १० दवाइयों की एक दवा है—मांस पेशियों के दर्द, मोच और जोड़ के दर्द के लिये बिलकुल अचूक है, निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन का इस्तेमाल सीने में जमा कफ, सर्दी और जुकाम में भी जल्द से जल्द आराम पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलती है। आप भी अमृतांजन की एक शीशी बराबर ही पास रखिये।

७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से अमृतांजन एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2816A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भलाई का क्षण है। आज वह लोभ लेकर नहीं आया। इस लड़की को वह बचायेगा। इस अमूल्य जीवन की वह हर तरह से रक्षा करेगा।

बुलाकी ने पूछा– "तुम्हारे पास यह पोटली काहे की है मां ?" बुलाकी के इस व्यवहार से उसे अब बोलने की कुछ हिम्मत हुई। लड़की समझ गयी, यह पुलिस का आदमी तो नहीं है। अब उसे कोई डर नहीं है। लड़की ने धीरे से कांपते हुए स्वर में कहा–"यह मेरा लड़का है।"

एकदम नवजात शिशु! उसे लेकर मरने जा रही थी मां ?

अंधेरे में लड़की सिहर उठी, कोई जवाब नहीं दिया। बुलाकी बोला–"छि : छि:, मां बालहत्या क्यों करोगी ? इससे बढ़कर क्या कोई पाप है, चाहे गंगाजी क्यों न हो? बालहत्या से तो भूत-प्रेत बनकर रहना पड़ता है। भगवान ने जो जान दी है, क्या वह इस तरह नष्ट करने के लिए ?" इस तरह बड़ी बात कह तो गया बुलाकी; किंतु अपने मन में अपनी बात सोचकर उसे कुछ लज्जा-सी हो आयी। वह धर्मोपदेश दे रहा है? बुलाकीराम!...जीवन में ऐसा कोई ऐब बाकी नहीं रहा था, जो उसने न किया हो।

आज गंगा-तट पर इसी मुहूर्त में ही उसका परिवर्तन हो गया है शायद। उसके बापवाले यह बात सुनेंगे, तो क्या कहेंगे ?

बुलाकी ने कहा–"सुनो मां, क्या दुःख है तुम्हारा ? तुम्हारा पति शराबी है, तुम्हें बहुत सताता है, यही बात है न ?"

लड़की ने धीरे-से जवाब दिया–"हूं।"

बुलाकी हंस पड़ा, और हंसा भी परम परितृप्त भाव से। आज उसका परिवर्तन है। केवल अविच्छिन्न भाव से अन्याय ही नहीं, वह भलाई भी कर सकता है। केवल दुःख ही दे सकता है, सो बात नहीं; वह दुःख मिटा भी सकता है।

फिर बोला–"बस, इसी दुःख से तुम मर जाना चाहती हो ? छि: छि:, मेरा नाम याद रखना मां, मैं बुलाकीराम हूं। मैं मुर्गी हट्टा का मशहूर गुंडा हूं। मैं किसी को भी जान से मार सकता हूं।" तभी अंधेरे में लड़की का अस्फुट आर्तनाद सुनाई दिया। मधुर हंसी हंसने की चेष्टा करने पर भी बुलाकी तीव्र और कर्कश स्वर में हंस पड़ा– "नहीं नहीं, तुम्हें कोई डर नहीं, मैंने तुम्हें 'मां' कहा है। अपने पति का नाम मुझे बता दो, उसे ऐसा डांट दूंगा, फिर कभी हिम्मत नहीं करेगा तुम्हें सताने की। मैं तुम्हें वचन देता हूं।"

इतनी गहरी रात में, ठंडी हवा से लड़की थर-थर कांप रही थी। गंगा के जल में तरंगों की कल-कल ध्वनि। पास पेड़ों के पत्तों में से गुजरनेवाली हवा की सरसराहट और वह सन्नाटा मानो कह रहा है –"रहने दो डरती है वह।"

बुलाकी बोला–"अच्छा डर लगता है ? मैं गुंडा हूं, मेरा क्या ठीक! शायद तुम्हारे पति को मार बैठूं ? यही बात है न ?" और बुलाकी सफेद दांतों की पंक्ति निकालकर बोला–"पति के लिए इतना दर्द है, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजाब नेशनल बैंक

से कारोबार करनेके छः कारण हैं:

आपका धन ऐसी संस्थाकी देखभाल में है जो

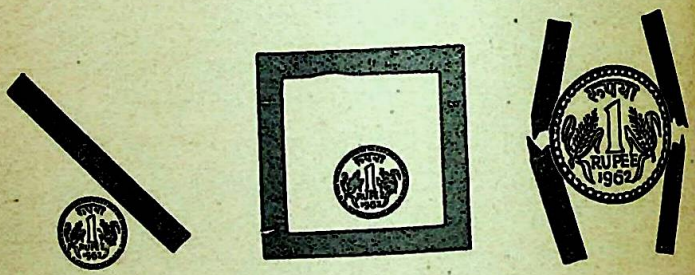

सुरक्षित, सुव्यवस्थित, सुदृढ़,

और

सेवाशील, सुप्रवीण साल पुरानी है।

PR 6532/Hin/Ad/5

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसी की वजह से मरने जा रही थीं मां ? औरतें ऐसी ही अजीब होती हैं।" और फिर वह हंसने लगा।

"अच्छा जाने दो, मां को जब इतना डर है तो बाप को मैं जिंदगी-भर कुछ नहीं कहूंगा; पर मेरा पता याद रखना मां। जब कभी कोई आफत आ पड़े, तो मुझे खबर कर देना। अगर जेल में नहीं रहा, तो जो कुछ बन पड़ेगा–अवश्य करूंगा।" बुलाकी ने पता बता दिया–"याद रहेगी न मां?" आश्चर्यजनक आत्मीयता थी उसके स्वर में। वह अपनी मां को न मालूम कब खो चुका था बचपन में। मन की याद में टटोलकर कभी भी नहीं देख सका था उसका मुख। निशीथ रात्रि के मेघाच्छन्न अंधकार में गंगा के तट पर खड़ी, आज उसी मां को पा गया क्या ? सामने ज्वार से घाटे में परिवर्तित गंगा का स्रोत विपरीत दिशा में कलकल शब्द करता चला जा रहा है। दोनों तट पर निःशब्द हो सो रही है महानगरी। आकाश के इस प्रांत से उस प्रांत तक हवा में उड़ते जा रहे हैं छोटे-छोटे बादल। बुलाकी अंधकार में जैसे अपने शरीर को भी नहीं देख पा रहा था। फिर भी अच्छा लग रहा है उसे। एक अपूर्व आनंद में चैतन्य परिपूर्ण हो रहा है। यह भी अच्छा हुआ कि आज उसने नशा नहीं किया। अपनी शिराओं को उसने जलाया नहीं, देशी शराब की तरल आग से। नहीं तो न जाने क्या होता, कौन जाने ?

माचिश के उजाले में सोने के लाकेट की झलक ने उसे यही कह दिया था। एक निःशब्द-निर्विघ्न हत्या करके चले जाने में उसे कितना समय लगता ? सामने गंगा की तेज धारा थी, सवेरा होते-होते लाश तो समुद्र में जा मिलती।

नहीं, नहीं, उसे अपने ऊपर अब विश्वास नहीं होता। अब माचिस नहीं जलायेगा। अपने अंदर छिपे हुए शैतान को प्रश्रय नहीं देगा। यह रात बुलाकी के जीवन का व्यतिक्रम कर रही है। ऐसा मुहूर्त-काल अब नहीं आयेगा। अनागत रातों को अभ्यस्त नियम से परिपूर्ण कर रखेगा। जुए का अड्डा, शराब का गिलास, बहुत-से कुकर्म, मार-पीट, और नागिन की तरह मेहरजान का आलिंगन। उसी वातावरण में उसी मदमत्त अवकाश में, जब कुछ ही क्षणों के लिए अपने अंतस्थल में लौट आयेगा बुलाकी, तब शायद उसे याद आयेगी यह रात। याद आयेगी अचानक मिली हुई उसकी यह मां।

बुलाकी मानो झूम उठा। नशा नहीं किया था, फिर भी मानो यह एक नया नशा हो गया था उसे। अच्छा होने का नशा ! एक विचित्र व्यतिक्रम की रात को चेतना में

दर्द और गम

दर्द इक चांद है
होता है जो सीने में तुलू
गम है इक नश्तेर-नूर
जो दिलोजां के अंधेरे में
उतर जाता है।

– सरदार जाफरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

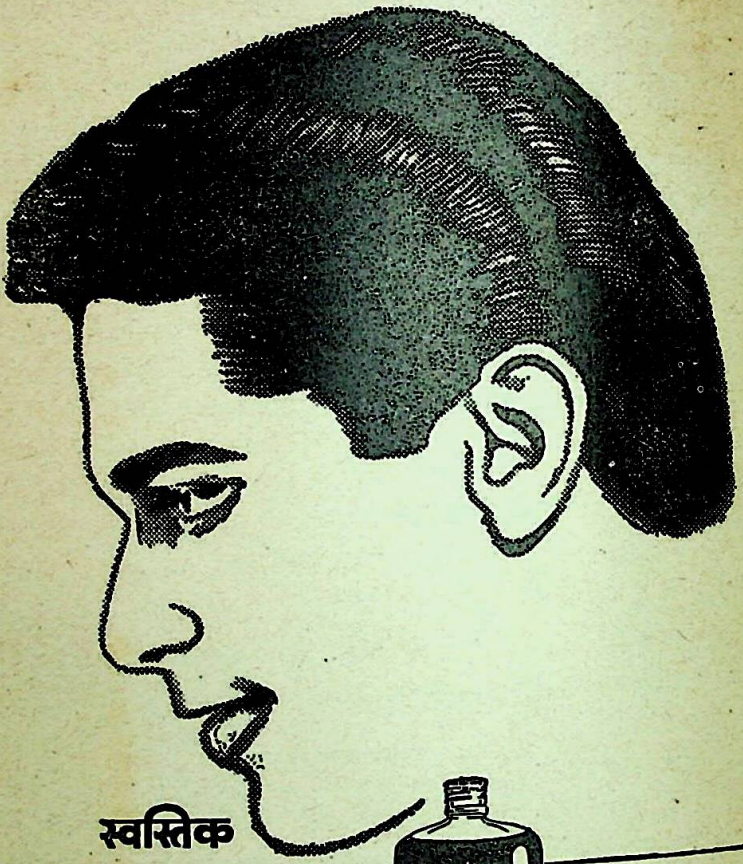

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

बिल्कुल उलझे बालों को भी
व्यवस्थित कर देता है;
उन्हें दिन भर सँवरे रखता है।

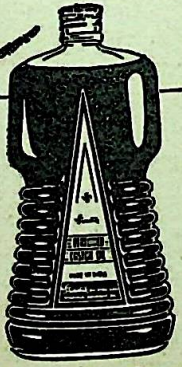

स्वच्छ, सुन्दर बाल...
काले, घने बाल...
साफ़, स्वस्थ बाल...
दिन भर सँवरे बाल
यह है स्वस्तिक परफ़्यूम्ड
केस्टर ऑइल का कमाल!

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उच्चारित करने का नशा, स्नेह-सिक्त कोमल स्वर में उसने फिर कहा—"याद रहेगी मां, याद रहेगी न ?"

लड़की ने सिर हिलाया। वह ठंड से कांप रही थी, मानो अब खड़ा नहीं रहा जाता।

"तो फिर लौट चलो, घर चलो।"

लड़की फिर भी स्तब्ध खड़ी थी।

"डर लगता है ? अच्छी बात है, मैं तुम्हें पहुंचा देता हूं। मैं बुलाकीराम हूं। जब तक मैं साथ हूं, तुम्हें कोई छू नहीं सकता। तुम्हें मां कहा है, फिर लड़के के रहते तुम्हें किसका डर है ?"

लड़की दुविधा में पड़ गयी है। कैसी विचलित हो उठी है। लौटने के लिए मानो उसके पैर नहीं उठ रहे ! इस बार बुलाकी को कुछ निराशा हुई। इतनी देर से समझा रहा है; हिम्मत बंधा रहा है; फिर भी उसकी मां अच्छी तरह जवाब नहीं दे रही। पत्थर की मूर्ति की तरह स्तब्ध खड़ी है। अचानक बुलाकी के मन में कड़ुआहट छा गयी, उसे कहने की इच्छा हो रही थी—"तो फिर मरो, जाओ।" किंतु अपने को संभाल लिया उसने। आज की रात वह खोयेगा नहीं, किसी भी तरह इस अपूर्व मुहूर्त का स्वर नहीं टूटने देगा। बुलाकी ने फिर कहा—"चलो, चलो।"

एक लिपटा हुआ-सा स्वर निकला—"किंतु....."

बुलाकी बोला—"अब किंतु-विंतु कुछ नहीं, लौटना ही पड़ेगा तुम्हें।" न मालूम कैसी जिद पकड़ बैठा है बुलाकी।

"चलो मां चलो, तुम्हारा घर कैसा है देखूंगा। तुम खुद कुछ न भी कहो; पर मैं उसका प्रतिकार जरूर करूंगा। और अब मुर्दे की तरह सुन्न पैरों से निरुपाय होकर उस लड़की ने चलना शुरू किया। अंधकार में स्ट्रैंड रोड होकर चले जा रहे हैं दोनों, कोई भी कुछ बोल नहीं रहा। लड़की क्या सोच रही है, यह कहना कठिन है। किंतु लड़की की बात गुंडा बुलाकी कुछ-न-कुछ सोच रहा है। वह अपने आप में तल्लीन है।

कैसा आश्चर्य है ? एक विपुल अनुभूति है, मानो दूसरा जन्म ले लिया है बुलाकी ने। रेलवे लाइन पार कर लड़की एक गली के मोड़ पर अचानक खड़ी हो गयी।

"क्यों मां, क्या चला नहीं जाता ? तकलीफ हो रही है ? अच्छा, बच्चे को मेरी गोद में दे दो।"

दूर की एक बत्ती की फीकी रोशनी दिखाई पड़ रही थी। वह निरुपाय लड़की कुछ सिहर उठी।

"डरो मत, डरो मत, गुंडे का हाथ हुआ तो क्या ? बच्चे को गोद में ले सकूंगा।" उसी लिपटी हुई आवाज में लड़की ने कहा—"लेकिन यह सो रहा है।"

"सोने दो, जगाऊंगा नहीं।" बुलाकी ने दोनों हाथ बढ़ाकर सावधानी से पोटली छाती से लगा ली। कपड़े के भीतर एक नरम शिशु का आभास मिला। फिर वही अस्पष्ट आवाज—"मुझे आगे-आगे चलने में डर लगता है।"

"अच्छी बात है, मैं आगे-आगे चलता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर एक के घर में एक 'एवरेडी' टॉर्च चाहिये

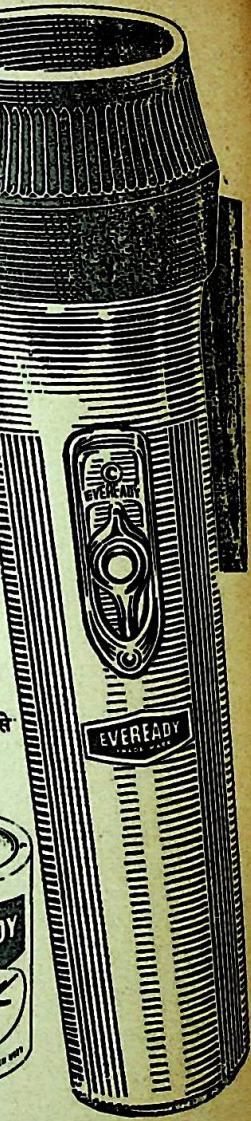

सैकड़ों ऐसे अवसर आते हैं जब आपको 'एवरेडी टॉर्च की जरूरत होती है। इसे करीब ही, सुरक्षित जगह पर रखिये, महज इसलिये, कि आपको पता नहीं कब इसकी जरूरत पड़ जाय।

- सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।
- और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकता है।
- इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
- 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचे और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।
- विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे जगमग रोशनी देती हैं और सब से अधिक टिकती हैं।
- आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी ▶
टाइप न० ३५५५
सिर्फ रु० ३.५० पैसे
२५० बैटरी—
सिर्फ ५६ पैसे में एक
कर अलग से

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

UNION CARBIDE यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं।" बुलाकी आगे-आगे चल रहा है। अंधेरी गली के बाद फिर अंधेरी गली, परम स्नेह से बुलाकी ने शिशु को छाती से चिपटा रखा है, जरा भी धचका न लगे, नींद न उचट जाये बच्चे की। वह अपने मन में एक कौतुक अनुभव कर रहा है। नामी गुंडा बुलाकीराम आज बच्चे की रखवाली करते हुए चला है—बड़े यत्न से, बड़ी सावधानी से। उसके साथी जब सुनेंगे ..... नहीं-नहीं कोई नहीं सुनेगा, आज रात तो वह बुलाकी नहीं है। आज उसका व्यक्तित्व का मुहूर्त है। वह अपने अकेले मन में ही छिपा रहेगा। अंधेरी गली में इसी तरह न मालूम क्या-क्या सोचता ही चला जा रहा था, अचानक मुख पर टार्च की तेज रोशनी आ पड़ी। साथ ही कड़कती हुई आवाज भी आयी—"कौन है ?"

सामने आ गये—एक सार्जेंट, दो सिपाही।

"क्या है तुम्हारे पास ?"

"मां का लड़का।"

"मां ! कहां है मां ?"

बुलाकी चौंककर पीछे मुड़ा। वह नहीं थी। गंगा के तट पर मिली हुई मां का उसे चिह्न भी नहीं मिला वहां। टार्च के उजाले में झलक उठी है यह अंधियारी गली। बुलाकी को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"उतारो कैसा लड़का है, तुम्हारे पास?"

बुलाकी को कुछ करना नहीं पड़ा। टार्च के उजाले में सिपाहियों के द्वारा कपड़ा हटाते ही दिख गया खून से लिपटा हुआ

असहाय—चित्र : सजल राय

नवजात शिशु। सिर्फ नवजात ही नहीं, उसकी गर्दन दबाकर हत्या भी कर दी गयी है, जिससे वह अपने रोने की आवाज से इस असंख्य मनुष्यों की धरती को जगा न सके।

टार्च के उजाले में यह भयावह दृश्य मानो पातालपुरी का दुःस्वप्न है।

"साला खूनी," कहकर सार्जेंट ने बुलाकी के सिर पर एक जोर का हाथ मारा। बुलाकी चकराकर जमीन पर गिर पड़ा, डलहौजी से लौटती ट्राम के बानुओं के प्रहार से जिस तरह वह जर्जरित होकर गिर गया था।

आंखों के सामने अंधेरी गली अनेक टार्चों से जगमगा उठी और गंगा-तट पर पाया हुआ बुलाकी का यह स्वर्ण अवसर चूर-चूर होकर तल्लीन हो गया सीमाहीन अथाह समुद्र में।

—रूपांतर : अर्जुनकुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Tom & Bay/KOEL/H-13/65

किर्लोस्कर

किर्लोस्कर ऑईल एंजिन्स लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफिस : एलफिंस्टन रोड, पूना-३

फिक्स्ड डिपोजिट्स स्वीकार्य

वितरण एवं आवेदन पत्रों (फारम) के लिए लिखें

निकटतम स्टॉक एक्सचेंज के अधिकृत स्टॉक ब्रोकर्स
या कम्पनीके रजिस्टर्ड आफिस, किर्की, पूना-३

अवधिके लिए	अगस्त १, १९६५ से प्रतिवर्ष ब्याज की दर
१ वर्ष	७ प्रतिशत
२ वर्ष	७½ प्रतिशत
३ वर्ष	८ प्रतिशत
५ वर्ष	८½ प्रतिशत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

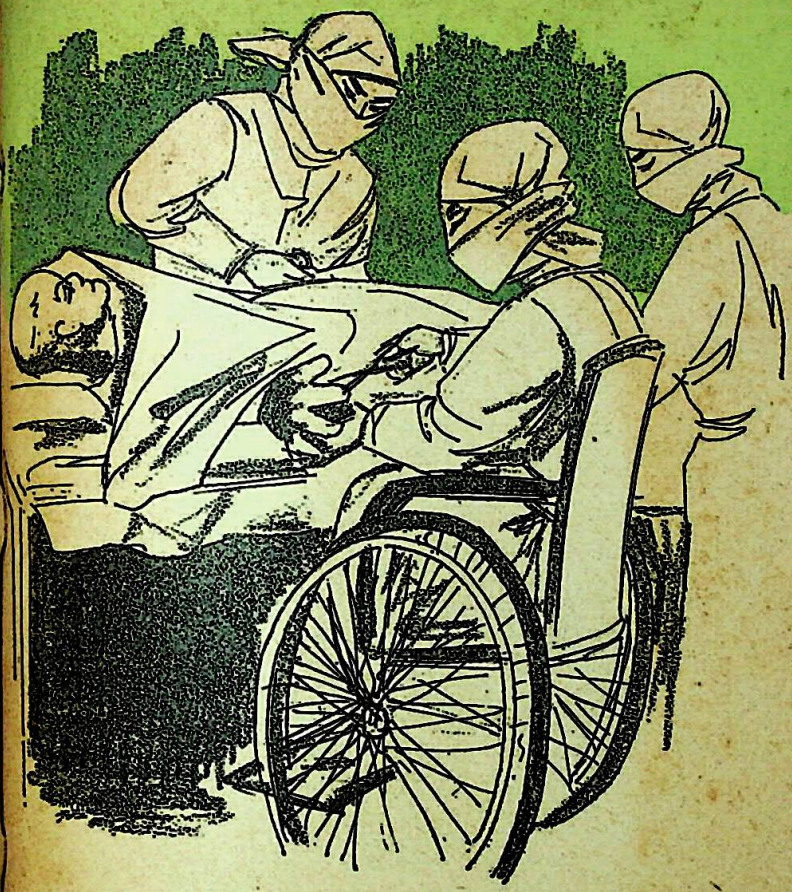

हाथों का नैवेद्य

दुर्घटना के बाद से उनके दोनों पैर पक्षाघात से निश्चेष्ट हो गये हैं; किंतु वे पहियेदार कुर्सी पर बैठकर कोढ़ियों का आपरेशन करती हैं और उनके मुर्दा हाथों में प्राण संचारित करती हैं।.... वेल्लोर क्रिश्चियन मिशन अस्पताल की विलक्षण सर्जन डा० मेरी वर्गीस की प्रेरक जीवन-कथा 'टेक माइ हैंड्स' का संक्षेप।

मूल : डोरोथी क्लार्क विल्सन – रूपांतर : सुखबीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमरीका के मशहूर प्लास्टिक सर्जन डा० ह्यू जान्सन जब दक्षिण भारत का विख्यात वेल्लोर क्रिश्चियन मेडिकल कालेज देखने आये, तो उनसे किसी ने कहा—"डा० मेरी वर्गीस को आपरेशन करते हुए एक बार जरूर देखें। वे अच्छी सर्जन ही नहीं हैं, वे एक कलाकार हैं।"

डा० जान्सन को दिलचस्पी हुई। आपरेशन-कक्ष में उन्हें डा० मेरी वर्गीस से मिलाया गया। परिचय औपचारिक था। फिर आपरेशन शुरू हुआ। डा० जान्सन बड़ी दिलचस्पी से देखते रहे। आखिर जब आपरेशन खत्म हुआ, तो एक कर्मचारी उस पहियोंवाली कुर्सी को, जिस पर डा० मेरी बैठी हुई थीं, धकेलकर कक्ष से बाहर ले जाने लगा। डा० जान्सन को बड़ी हैरानी हुई। अब तक उनका ध्यान इस ओर गया ही नहीं था कि डा० मेरी कुर्सी पर बैठे-बैठे आपरेशन कर रही थीं।

फिर वे दूसरे कमरे में गये, तो

मेरी ने आपरेशन करते समय पहनी जानेवाली नकाब अपने चेहरे पर से उतारी। डा० जान्सन ने उनके गाल पर एक बहुत गहरे जख्म का निशान देखा।

"इसे भरवाया क्यों नहीं गया?" डा० जान्सन ने एकटक जख्म के निशान की ओर देखते हुए पूछा—"यहां तो इतने अच्छे-अच्छे सर्जन हैं!"

"बस, समय ही नहीं मिला," डा० मेरी ने सहज भाव से उत्तर दिया—"मैं बहुत व्यस्त रहती हूं।"

जब डा० मेरी वर्गीस अगले आपरेशन के लिए वापस आपरेशन कक्ष में चली गयीं, तो डा० जान्सन पास खड़े एक कर्मचारी से बोले—"मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"किस बारे में?" कर्मचारी ने पूछा।

"यही कि डा० मेरी की यह हालत..... आखिर यह सब कैसे हुआ?"

"मोटर-बस की दुर्घटना हो गयी थी। डा० मेरी को सबसे ज्यादा चोट लगी। कमर से नीचे का उनका सारा शरीर लकवे का शिकार है।"

डा० जान्सन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उनके मुंह से निकला—"अजीब बात है! किसी ने भी तो मुझे इस विषय में नहीं बताया।"

कर्मचारी को कुछ उलझन महसूस हुई। "दरअसल किसी ने जरूरत नहीं समझी होगी; क्योंकि डा० मेरी बहुत ही खुश मिजाज किस्म की डाक्टर हैं।"

डा० जान्सन सोचने लगे—ये भी कैसी गजब की औरत होंगी कि इनके चेहरे के ज़ख्म तथा लकवे से बेकार हुए शरीर पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता!

डा० मेरी की जीवन-कहानी शायद उनकी जिज्ञासा को तृप्त कर सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...नु मेरी वर्गीस की जीवन-कहानी की ...त कब हुई? क्या २७ मई १९२५ को, ...रल के कोचीन इलाके में नारियल ...ों से आवृत एक छोटे-से टापू पर ...का जन्म हुआ? या जिस दिन उन्होंने ...र बनने का निर्णय किया? या.....? ...र मेरी से पूछा जाये, तो शायद वे ...कि उनकी जीवन - कहानी कोई ...सौ साल (या शायद दो हजार साल) ...शुरू हुई, जब उनके ...ने ईसाई धर्म ...किया था। केरल ...र्तन ईसाइयों का ...विश्वास है कि ईसा ...ह प्रधान शिष्यों में ..., संत थामस ने ...आकर इनके ...को ईसाइयत की ...दी थी।

डा० मेरी वर्गीस

...च्छे खाते-पीते परि-...की लड़की होते हुए ...लिका मेरी ने चारों ...फैली हुई बीमारियां देखी थीं – मले-..., चेचक, कोढ़, हाथीपांव। और उन ...ह जोसेफ नाम के एक भिखारी को भी ...करती थी, जो उनके यहां भीख मांगने ...करता था। उसका सारा शरीर कोढ़ ...कदर सड़-गल गया था कि उसकी ...खना भी दुश्वार था। कोढ़ ने उसके ...को भी वीभत्स बना दिया था। जब ...आता, तो घर की नौकरानी बच्चों को ...आगाह करती–"उसे छूना मत।"

बचपन में ही नहीं, बाद में भी वर्षों तक जोसेफ की वह झांकी, मेरी की आंखों के सामने घूम जाया करती थी; उसकी भीख मांगने की दयनीय आवाज उसके कानों में गूंज उठती थी।

कुछ बड़ी होने पर मेरी को स्कूल में दाखिल कराया गया। पढ़ाई में वह बहुत होशियार थी। अन्य लड़कियों की तरह वह साधारण जीवन नहीं बिताना चाहती थी– कुछ बनना चाहती थी, कुछ करना चाहती थी। परंतु वह 'कुछ' क्या था? इसका उसे उस समय भान नहीं था।

स्कूल के दिनों में उसने एक पुरस्कार जीता – पं० जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा। इस महान पुस्तक का उसके मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

जब वह मैट्रिक में पहुंची, तो साल-भर पढ़ने के बाद भी परीक्षा न दे पायी; क्योंकि वह साढ़े चौदह साल से कम थी, जो कि मैट्रिक की परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम आवश्यक उम्र थी। बेचारी का एक साल यों ही खराब हुआ। अगले साल वह ससम्मान परीक्षा पास कर, एर्नाकुलम में कालेज में दाखिल हुई।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मेरी पहले जैसी दुबली-पतली लड़की नहीं रह गयी थी। उसका शरीर भर गया था। अब वह फ्राक के बजाय साड़ी पहनती थी। बचपन बहुत पीछे छूट गया था।

कालेज के दूसरे वर्ष में मेरी ने निर्णय किया कि वह वैज्ञानिक क्षेत्र में काम करेगी। वह डाक्टर बनना चाहती थी।

और डाक्टरी शिक्षा के लिए उसने एर्नाकुलम के गवर्नमेंट मेडिकल कालेज के बजाय वेल्लोर के विख्यात मिशन कालेज को पसंद किया, जिसे डा० इडा स्कडर ने खोला था। मेरी ने वेल्लोर का कालेज इसलिए भी पसंद किया था कि वह ईसाई मिशन द्वारा चलाया जाता था। शुरू से ही मेरी धार्मिक विचारों की लड़की थी।

डाक्टर बनने का निर्णय करते ही मानो मेरी की आंखें बदल गयीं। चारों ओर की दुनिया को वह अधिक सचेत होकर देखने लगी। उसके चारों ओर दुबले-पतले बच्चे थे—धूल-भरे, अधनंगे और गरीब। चेचक, मलेरिया और क्षय के अनगिनत रोगी थे; कोढ़ से विकृत चेहरे, हाथ और पांव थे। विचित्र बात यह थी कि इन दृश्यों से अब उसके मन में घिन के नहीं, करुणा के भाव जाग उठते थे।

मेरी ने फार्म भरकर भेज दिया। इंटरव्यू के लिए बुलावा आया और वह वेल्लोर पहुंची। कुल ७५ उम्मीदवार थे, जिनमें से २५ लिये जानेवाले थे। मेरी यह सोचकर डर रही थी कि अगर उन २५ में उसे नहीं लिया गया, तो क्या होगा? और सचमुच इंटरव्यू में वह छब्बीसवें स्थान पर आयी। किंतु जो लड़की २५ वें नंबर पर आयी थी, वह चली गयी। इस तरह दैवयोग से मेरी को सीट मिल पायी।

०००

वेल्लोर में हर किसी की जबान पर डा० इडा स्कडर का नाम था। तरुणाई में अपने पादरी पिता के साथ वेल्लोर में रहते हुए इडा ने एक ही रात तीन भारतीय औरतों को लेडी डाक्टर के अभाव में प्राण गंवाते देखा था और महिलाओं के लिए एक अस्पताल खोलने का निश्चय किया था। उन्होंने यह भी सोचा था कि नर्सों को प्रशिक्षित करने के लिए एक स्कूल भी खोलेंगी। सो वे अपने देश अमरीका गयीं, वहां डाक्टरी की परीक्षा पास की और अमरीकी स्त्रियों से चंदा जुटाकर वेल्लोर में अस्पताल की नींव रखी। देखते-देखते वह बहुत बड़ा अस्पताल बन गया। फिर उसमें मेडिकल स्कूल भी खुला, जो आगे चलकर मेडिकल कालेज में परिणत हुआ।

नीली आंखों और श्वेत केशोंवाली, फल की भांति परिपक्व, किंतु लाठी की तरह सीधी डा० इडा को देखकर मेरी का मन श्रद्धा से भर गया। उसे अनुभव हुआ, वह एक आदर्श नारी और आदर्श चिकित्सक का दर्शन कर रही थी। *

जब कभी मेरी कालेज के छात्रावास में

* डा० इडा स्कडर पर 'नवनीत' में दो लेख प्रकाशित हो चुके हैं—जून १९५५ तथा मई १९६१ अंकों में।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती, तो हर तरफ उसे कोढ़ी नजर
थे। उसे पता चला कि संसार में सबसे
कोढ़ की बीमारी वेल्लोर और आस-
के क्षेत्रों में है। उसे यह भी पता चला
डाक्टरी की शिक्षा लेते हुए उसे कोढ़ियों
बीच काम करना पड़ेगा, उनके वार्ड में
ना पड़ेगा, उनका इलाज करना पड़ेगा।
शरीर को छूने की कल्पना से ही मेरी
न में झुनझुनी-सी दौड़ जाती। रह-रह-
उसे जोसेफ की झांकी दिखाई देती और
र में ठंडी सिरहन दौड़ जाती।

एक दिन मेरी ने कालेज के प्रिंसिपल
कोढ़-चिकित्सा के विश्वविख्यात विशे-
डा० रावर्ट काक्रेन का भाषण सुना :
कोढ़ संसार की सबसे पुरानी बीमा-
में से एक है। बहुत-से अंधविश्वास
बीमारी के साथ जुड़े हुए हैं। इसे बीमा-
में सबसे ज्यादा घृणित और भयानक
ा जाता है। पाप और गुनाह की भाव-
इसके साथ जोड़ दी गयी हैं। हिन्दुस्तान
प्राचीन काल से इसे 'महारोग' कहा
है; और जिसे यह बीमारी हो जाती
माना जाता है कि उसे देवताओं का
है।

"परंतु कोढ़ देवताओं का शाप नहीं है," काक्रेन बड़ी तल्खी से कह रहे थे—"कोढ़ भी पाप की निशानी नहीं है। अन्य बीमा-यों जैसी ही यह भी एक बीमारी है। सन १८७३ में नार्वे के डा० हेन्सन ने इसके कारणों का पता लगाया था। तब से यह चिकित्सा-जगत में 'हैन्सन बीमारी' के नाम से मश-

बहनें

चित्रकार : कमलाक्ष शर्मा

हूर है। और यह कोई असाध्य रोग नहीं है; इसका इलाज हो सकता है। परंतु अभी इस क्षेत्र में बहुत-सा काम करने की जरूरत है।"

मेरी पर इस भाषण का बहुत गहरा असर पड़ा।

डाक्टरी के कोर्स में मेरी को सबसे अच्छा विषय लगता था — सर्जरी। और सर्जरी के प्रति उसका शौक शायद डा० पाल ब्रैंड के भाषणों से पैदा हुआ था। डा० पाल ब्रैंड बहुत दक्ष सर्जन थे और कालेज में पढ़ाया करते थे। सर्जरी इस युवा अंग्रेज के हाथों में कला बन गयी थी। कोढ़ के इलाज में उन्होंने आश्चर्यजनक प्रयोग किये थे, जिनकी बाद में सारे संसार में सराहना हुई।

कोढ़-चिकित्सा के क्षेत्र में डा० ब्रैंड की देन बहुत बड़ी थी। उन्होंने दवाइयों की अपेक्षा सर्जरी पर अधिक जोर दिया था। उनका कहना था कि कोढ़ग्रस्त हाथों और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलात्मक श्रेष्ठ छपाई एवं भारतीय सांस्कृतिक साहित्य-
प्रकाशन के लिये लगभग एक शताब्दी से सुप्रसिद्ध

श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस

हमारे यहाँ से प्रकाशित वैदिक, वेदान्त, योग, सांख्य, पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र, काव्य, नाटक, नीति, कबीरपंथी, आदि विविध विषयों के लगभग तीन सहस्र ग्रन्थों की विस्तृत जानकारी के लिये कृपया बृहत्सूचीपत्र मंगा देखिये, जो मुफ्त भेजा जाता है।

★

'श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार'

राष्ट्रभाषा हिन्दी का यह प्राचीनतम सांस्कृतिक साप्ताहिक पत्र श्रीवेंकटेश्वर प्रेस का ही प्रकाशन है। वार्षिक शुल्क ५ रुपये मात्र। विशेषांक मुफ्त। इस वर्ष दीपावली पर निकलनेवाला विशेषांक भारतीय संस्कृति अंक के रूप में दिवाली के दिन के बजाय ५ नवम्बर को प्रकाशित होगा। केवल विशेषांक का मूल्य १ रुपया, डाक व्यय पृथक्।

अध्यक्ष

खेमराज श्रीकृष्णदास

७ वीं खेतवाड़ी, बम्बई ४.

टेलीग्राम:–VENKTESWAR फोन:–41098

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ों को सर्जरी द्वारा नया रूप दिया जा
ता है; और उन्होंने ऐसा करके दिखाया
ी। अनगिनत टूटी हुई उंगलियां नयी बन
ीं। अनगिनत मुर्दा हाथों में नया जीवन
ा।*

एक दिन डा० इडा के साथ मेरी तथा
न छात्राएं सुबह की प्रार्थना कर रही थीं।
ना में एक गीत गाया जा रहा था,
की कुछ पंक्तियां यों थीं :

न मुझे धन-दौलत की जरूरत है
न खोखली प्रशंसा की.....

जब ये शब्द ओंठों पर थे, मेरी के मन से
ाज आयी—"नहीं, यह झूठ है। मैं धन-
ल चाहती हूं, मैं लोगों की प्रशंसा चाहती
और चाहूं क्यों न? आखिर इतनी मेह-
त मैं किसलिए कर रही हूं?"

रंतु १९५० में जब मेरी कालेज में
ी वर्ष में थी, तो उसे अनुभव होने लगा
जीवन का आदर्श धन-दौलत कमाना
र प्रशंसा हासिल करना नहीं है। जीवन
ा आदर्श है—कुर्बान होना, ताकि दूसरे जिंदा
रह सकें। हां, डा० इडा और डा० ब्रैंड के
जीवन का भी तो यही आदर्श था और इसी-
लिए तो वे इतने बड़े थे .....प्रभु यीशु के
जीवन का भी यही आदर्श था। मेरी को एक
नयी अंतर्दृष्टि मिली थी।

अब तो जब भी उसे अस्पताल के चलते-फिरते दवाखाने के साथ दिन-भर के दौरे पर जाना पड़ता, वह बिना झिझक और भय के कोढ़ियों को छूती, उन्हें इंजेक्शन देती, उनके हाथों की मालिश करती, उन पर पट्टियां बांधती।

आखिरकार मेरी ने डाक्टरी-शिक्षा के साढ़े पांच साल पूरे कर लिये। परीक्षा हुई। कक्षा के सत्ताईस विद्यार्थियों में से जो चार विद्यार्थी सबके सब विषयों में पास हुए थे, मेरी भी उनमें से एक थी। इसी तरह वह उन सात विद्यार्थियों में से भी थी, जो हर साल पास होते रहे थे।

किंतु आत्मविकास की दृष्टि से शायद वह सबसे आगे थी।

०००

अब मेरी डा० मेरी के रूप में अस्पताल में काम करने लगी थीं। उनकी सबसे ज्यादा दिलचस्पी आपरेशनों में थी। पहले वे सहायक के रूप में काम करती रहीं। फिर चार महीने के बाद उन्हें स्वतंत्र रूप से आपरेशन करने का अधिकार मिल गया। इसके बाद तो वे इस गर्मजोशी से काम करने लगीं कि अकेली ही दो-दो, तीन-तीन डाक्टरों जितना काम कर लेती थीं। सूर्य के उगने के पहले ही उनका दिन शुरू हो जाता था और सूर्य के डूबने के चार-पांच घंटे बाद तक चलता रहता था। बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी; परंतु मेरी का मन थकावट महसूस नहीं करता था।

इस प्रकार दिन बीतते रहे। फिर ३० जनवरी १९५४ का दिन आया।

* डा० पाल ब्रैंड और उनके कार्यों के विषय में परिचय के लिए 'नवनीत' फरवरी १९५१ में छपा 'दर्द लौटाने का महायज्ञ' शीर्षक लेख पढ़िये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दिन कुछ डाक्टरों और विद्यार्थियों ने 'पिकनिक' का प्रोग्राम बनाया। डा० मेरी भी जाने के लिए तैयार हो गयीं। एक स्टेशन-वैगन में बारह व्यक्ति सवार होकर चल दिये—कुछ डाक्टर थे, कुछ नर्सें थीं, कुछ विद्यार्थी थे।

इतने दिनों के लगातार काम के बाद मेरी को यह यात्रा बहुत अच्छी लग रही थीं। रास्ते में गपशप चल रही थी, मजाक हो रहे थे, खुशियां मनायी जा रही थीं। स्टेशन-वैगन शहर से काफी दूर निकल गया था। पहले तो अस्पताल का ड्राइवर उसे चला रहा था। फिर एक विद्यार्थी तंबिदुरै आग्रह करने लगा कि उसे 'ड्राइव' करने दिया जाये। सबको उसका आग्रह मानना पड़ा।

प्रेरणा की गंगोत्री
डा० इडा स्कडर

रास्ते में आगे एक बस जा रही थी। तंबि वैगन को आगे निकाल ले जाना चाहता था; मगर बस का ड्राइवर रास्ता रोके हुए था। जब तंबि वैगन की रफ्तार तेज करके आगे बढ़ता, तो बस-ड्राइवर भी बस की गति बढ़ा देता।

आखिर तंबि को गुस्सा आ गया। वह बड़बड़ाया—"या तो बस का ड्राइवर मुझे रास्ता देगा, या फिर.....!"

उसने स्टेशन-वैगन को बड़ी तेजी से आगे बढ़ाया। एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि बस से टक्कर हो जायेगी। वह सफाई से बगल से निकलने लगा। मगर तभी उसने देखा कि सामने कुछ ही फुट के फासले पर एक तंग पुलिया है, जो अब तक बस की ओट में छिपी हुई थी। उसकी मुंडेर से बचने के लिए तंबि ने तेजी से स्टीयरिंग घुमायी। स्टेशन-वैगन उसके हाथ से बेकाबू हो गया। फिर एक धमाका-सा हुआ और मेरी एवं अन्य व्यक्तियों को कुछ पता न लगा कि क्या हुआ।

काफी देर के बाद उनमें से कुछ को होश आया, तो पता चला कि स्टेशन-वैगन पुलिया की मुंडेर से टकराकर लुढ़क गया था और बहुत भयानक दुर्घटना हो गयी थी। सभी को सख्त चोट आयी थी।

परंतु सबसे सख्त घाव डा० मेरी को लगे थे। जो लोग सबसे पहले उनके पास पहुंचे, उन्होंने तो यही समझा कि वे मर चुकी हैं।

इसके बाद वे सब उसी बस-ड्राइवर की मदद से, वापस वेल्लोर पहुंचे। ड्राइवर पहले तो मेरी को बस में ले जाने के लिए तैयार ही नहीं था। मेरी उसकी नजर में लाश थीं। पर बाद में सबके समझाने और धमकाने पर उसे बाध्य होकर उस 'लाश' को ले जाना पड़ा। उसे क्या पता था कि मेरी में अभी तक कोई प्राण कहीं अटका हुआ था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्पताल में डा० मेरी की हालत बहुत ...क थी। उनके मुंह पर सख्त चोट लगी ...। कंधा भी घायल हुआ था। डाक्टरों को ...के बचने की उम्मीद कम ही थी।

मगर वे बच गयीं।

अगले दिन वे कुछ होश में थीं। नर्स ने ...के शरीर में हलचल देखी, तो डाक्टरों ...जाकर बताया—"डा० मेरी हिलडुल रही ...। बड़ी बेचैन हैं। कभी सिर हिलाती हैं, ...ी बांहें। पर नीचे का सारा हिस्सा एक-...निश्चल पड़ा है। कहीं .....?"

"हां," एक डाक्टर ने कहा—"उनकी ...की हड्डी को सख्त चोट लगी है।"

बीच-बीच में आधी चेतना और आधी ...र्छा की हालत में मेरी आंखें खोलती थीं, ...उन्हें एक धुंधला-सा चेहरा दिखाई दे ...ता था—माता का प्रेमल चेहरा। दुर्घटना ...समाचार सुनकर मां, भाई-बहन वेल्लोर ...आये थे। पिताजी नहीं आ सके। वे ...हृदय-रोग से पीड़ित थे; मगर मां को ...होंने आग्रह करके वेल्लोर भेजा था।

आखिर जब डा० मेरी को पूरी तरह ...आया, तो सारी स्थिति का ज्ञान हुआ। ...पता चला कि उनके शरीर का अधो-...लकवे का शिकार हो चुका है। गहरे ...के कारण चेहरा भी विकृत हो गया ...। मगर आंखें सही-सलामत हैं।

उन्होंने अपना बायां हाथ ऊंचा किया। ...हिलाया-डुलाया। उंगलियों को खोला, ...किया। वह एक सर्जन का हाथ था—...बूत और चपल। दायें हाथ पर पट्टी बंधी हुई थी। वे उसे नहीं देख सकती थीं। परंतु उन्होंने उसकी एक-एक उंगली को हिलाकर महसूस किया और राहत की सांस ली। आंखें और हाथ ही तो सर्जन के असली हथियार होते हैं, और वे बिलकुल दुरुस्त थे।

"ईश्वर की कृपा है!" मेरी ने ओंठों में कहा और फिर बेहोश हो गयीं। उनके सारे शरीर में दर्द की एक तीव्र सिहरन दौड़ गयी थी।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, डाक्टरों को मेरी के शरीर के निचले भाग की जड़ता परेशान करने लगी। एक दिन वेदना और बेचैनी के बीच के चंद राहत के क्षणों में मेरी ने डाक्टरों को कहते सुना—"तो कल 'लैमिनेक्टमी' कर ही डालें।"

"यानी सुषुम्ना नाड़ी को चोट पहुंची है; मगर शायद स्थायी नुक्सान नहीं हुआ है।" मेरी सोचने लगीं। उनका डाक्टरी दिमाग काम कर रहा था।

'लैमिनेक्टमी' (रीढ़ का एक खास आपरेशन) हुई, और उसके परिणाम की प्रतीक्षा की जाने लगी। डाक्टर उन्हें आंख बंद करने को कहते, फिर उनके पैरों से रुई का फाहा छुआकर पूछते—"कुछ महसूस हुआ डा० मेरी?"

वे कहतीं—"नहीं।"

फिर डाक्टर लकड़ी के हत्थे से टकोर-कर पूछते—"और अब?" इस बार भी वही उत्तर मिलता—"नहीं।"

डाक्टर आशा दिलाते—"शायद कल कुछ सुधार हो, कोई उम्मीद नजर आये।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को
दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

और बलगम

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन
खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ांच ही आखिरी फैसला नहीं है। हो ...ा है, कल....."

...ल.....

...िन और रात में कोई फर्क नहीं रह ...या। रोशनी और अंधेरे का कोई अर्थ ...ु रह गया था। समय अब दिन-रात ...ैमाने से नहीं, ...क चेहरे के जख्म ...खी जानेवाली ...ओं के बीच की ...धि द्वारा नापा ...या, या बिस्तर ...चादर से, जो ...में दो बार बदली ...ी थी। अब रात ...मतलब प्रशांत ...ेश और मीठी ...र नहीं था। रात ...शून्यता थी, ...में डा० मेरी ...ुप्त अवस्था में ...बल पड़ी रहती ...काठ की तरह ...हीन।

इतने सारे डाक्टर ...म इलाज कर रहे थे कि कभी-कभी ...ाक में कहतीं—"मेरा असली डाक्टर ...है? कई बार मुझे पता ही नहीं चलता ...किसे अपनी तकलीफ बताऊं!"

...ोज वही प्रश्न—"कुछ महसूस हुआ ...मेरी?" और वही उत्तर—"नहीं!"

एक दिन वे नर्स से पूछ बैठीं—"कितने दिन हो गये?"

नर्स ने मन की चिंता को छिपाने की कोशिश करते हुए कहा—"हिसाब लगाना पड़ेगा। ठहरिये, 'लैमिनेक्टमी' ९ फरवरी को हुई थी। आज २३ फरवरी है।"

यानी पंद्रह दिन हो चुके थे।

डा० मेरी को मालूम था कि अगर 'लैमिनेक्टमी' के पंद्रह दिन बाद भी शरीर के निचले भाग में चेतना न लौटे, तो इसका अर्थ है कि अब कोई उम्मीद बाकी नहीं है।

"तो इसका मतलब है, अब मैं सारी उम्र इसी तरह पड़ी रहूंगी! कभी चल-फिर नहीं सकूंगी! कभी अपनी टांगों पर खड़ी नहीं हो सकूंगी!"

उस रात वे सो नहीं सकीं। उनके मन में बार-बार एक प्रश्न उठता था। यह प्रश्न नहीं कि उन्हीं के साथ ऐसा क्यों हुआ? या ईश्वर उन्हीं को क्यों सजा दे रहा है? नहीं, उनका प्रश्न था—"जब मैं मौत के इतने करीब पहुंच गयी थी, तो फिर मर क्यों

सौंदर्य : एक परिभाषा

उत्साह-मूर्ति विल ड्युरांट को अलमस्त बनाने के लिए किसी मादक द्रव्य की आवश्यकता नहीं थी, जीवन ही काफी था। एक बार उन्होंने मुझसे पूछा था—"सौंदर्य की आपकी कल्पना क्या है?" मैंने कहा—"मेरे विचार में सौंदर्य मृत्यु और रम्यता की सर्वव्यापकता है; सौंदर्य मुस्कराती हुई उदासी है, जो हमें प्रकृति में और सब पदार्थों में गोचर होती है; सौंदर्य एक रहस्यमय तादात्म्य है, जिसे कवि अनुभव करते हैं। कूड़ेदान पर पड़ी किरण-धारा, चहबच्चे में पड़ा गुलाब—कुछ भी उसकी अभिव्यक्ति हो सकती हैं। चित्रकार एल ग्रीको ने सूली पर लटके हुए प्रभु ईसा में उसका दर्शन किया था।"

—चार्ली चैपलिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूखे नारंगी वृक्ष का गीत

लकड़हारे, काट दे मेरी परछाईं
मुक्त कर दे मुझे
अपने को निष्फल देखने की यातना से।
क्यों मैं जन्मा दर्पणों के घेरे में ?
दिन करता है मेरी परिक्रमा
और रात्रि मुझे
प्रतिबिंबित करती है प्रत्येक तारे में।
मैं अपने आपको बिना देखे
चाहता हूं जीना
मैं सपना देखूंगा कि चींटियां या चीलें
मेरे पत्ते व पंछी हैं।
लकड़हारे, काट दे मेरी परछाइ
मुक्त कर दे मुझे
अपने को निष्फल देखने की यातना से।

[चित्र : शमै] —लोर्का

नहीं सकी ?"

और कोई होता, तो शायद उस रात आत्महत्या कर लेता। परंतु मेरी यह काम नहीं कर सकती थीं। वे डाक्टर थीं। उन्होंने तो जीवन बचाने का व्रत लिया था और जिंदगी उनकी दृष्टि में पवित्र चीज थी। "तुम किसी का प्राण नहीं लोगे"— यह धर्म का ही नहीं, चिकित्साशास्त्र का भी तो परमादेश है।

०००

डा० ब्रैंड ने निश्चय किया कि 'फिजियोथेरैपी' द्वारा डा० मेरी का इलाज शुरू किया जाये। मगर मेरी नहीं चाहती थीं कि उनके इलाज पर व्यर्थ में समय गंवाया जाये। परंतु अंत में उन्हें मानना पड़ा। उन्होंने सोचा—"उठने-बैठने लायक हो जाऊंगी, तो परावलंबी नहीं रहना पड़ेगा। और क्या पता, शायद मैं कोई छोटा-मोटा काम भी कर सकूं।"

एक महिला डाक्टर रोज उनके पास आती और आधे घंटे तक अलग-अलग अंगों के विशेष प्रकार के व्यायाम करवाती। यह बहुत जरूरी था; वरना जिस निश्चल अवस्था में डा० मेरी लेटी हुई थीं, उससे उनके शरीर के निचले हिस्से के बिलकुल नकारा हो जाने का डर था। परंतु ये छोटी छोटी वरजिशें बहुत कठिन थीं। उनसे मेरी बेहद थक जाती थीं।

एक दिन बिना किसी भूमिका के ही डा० ब्रैंड बोले—"मिस मेरी, अब तुम्हें अपने भविष्य के बारे में सोचना चाहिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी मुस्करायीं। उस मुस्कराहट ...था। कहा—"उसी के बारे में हरदम सोचती रहती हूं।"

"मेरा मतलब है कि तुम्हें डाक्टर ...रूप में अपने भविष्य के बारे में ...ना चाहिये।"

मेरी फटी-फटी आंखों से उन्हें ...ी रह गयीं। बोली—"आप भी खूब ...क करते हैं!"

"नहीं, यह मजाक नहीं है। तुम ऐसा ...सोचती हो कि तुम्हारा डाक्टरी जीवन ...न हो चुका? क्या सिर्फ इसीलिए कि ...फिर कभी चल-फिर नहीं सकोगी?"

"पर भला मैं फिर से डाक्टरी कैसे कर ...ती हूं?" मेरी का दिल धड़क रहा था।

पाल ब्रैंड समझाने लगे—"कुछ सप्ताह ...तुम पहियोंवाली कुर्सी पर बैठने लायक ...जाओगी। तुम्हारी बांहों में अभी शक्ति ...। तुम्हारे हाथ सर्जन के हाथ हैं; और ...हारा दिमाग....." उनकी आंखें विनोद ...चमकीं—"वह जैसा भी है....."

"मगर मेरी समझ में नहीं आता"—...ने बीच में टोका।

ब्रैंड की आंखें गंभीर हो गयीं—"काश ...री! मैं तुम्हें भारत के बाहर कुछ देशों में ...जा सकता! तुम वहां देखतीं कि पहिये-...ली कुर्सी पर बैठे-बैठे लोग क्या-क्या काम ...रते हैं!"

"क्या प्रसूति की चिकित्सा भी!"

"वह तो शायद कुर्सी पर बैठे संभव नहीं। ...र चिकित्साशास्त्र के और भी तो अंग

श्रद्धा करना बहुत कठिन है; क्योंकि दुःख सहना बहुत कठिन है।

—पास्कल

हैं!" फिर डा० ब्रैंड उठ खड़े हुए। उन्होंने मेरी का हाथ अपने हाथों में ले लिया और बड़े सहज भाव से कहा—"मैं तो मानता हूं, तुम अब पहले की अपेक्षा ईश्वर के अधिक निकट हो।"

उस दिन से मेरी को डाक्टर के रूप में अपना भविष्य दिखाई देने लगा और वे मन में आशा की ज्योति लिये दिन-प्रतिदिन उसकी ओर बढ़ने लगीं।

आखिर कई हफ्तों की कड़ी मेहनत के बाद वह दिन भी आया, जब वे नर्स की सहायता से बिस्तर से उठकर पहियोंवाली कुर्सी पर बैठीं। उनके जीवन का बहुत बड़ा दिन था वह। पर उस दिन वे कुर्सी पर ज्यादा देर बैठी न रह सकीं; कुछ ही देर में बेहोश हो गयीं। खैर, अगली बार कुछ अधिक देर तक बैठ सकीं। उससे अगली बार कुछ और देर तक। हां, वे धीरे-धीरे अपने भविष्य की ओर बढ़ रही थीं।

०००

इस सारे अरसे में जो लोग डा० मेरी से नियमित रूप से मिलने आते रहे, उनमें तंबिदुरै भी एक था। उसके मन में डर और पश्चात्ताप भरा था। उसी के कारण तो मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत

डेट

साफ़ धुलाई के साथ साथ
सफ़ेदी भी लाता है

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है।
केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से...और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना...कर सकता है

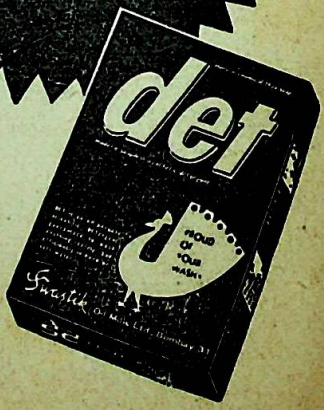

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हालत हुई थी । पर मेरी सोचती
आखिर जो हो गया, सो हो गया; अब
या दोष देने से क्या फायदा ?
तु मेरी के भाई और वहनोई ऐसा
चते थे । तंबि था अमीर घराने का
; मुकद्दमा चलाकर उससे काफी
र्जाना वसूल किया जा सकता था ।
मेरी को मनाने की बहुत कोशिश
, जो सफल नहीं हुई ।
तु पुलिस ने तंबि पर लापरवाही से
चलाने का अभियोग लगाकर काननी
ाई शुरू कर दी । तंबि ने अदालत के
ने पेश करने के लिए एक प्रार्थना-पत्र
र किया । दुर्घटना के समय जो लोग
-बैगन में बैठे थे, उन्होंने इसमें कहा
कि उन्होंने तंबि को क्षमा कर दिया है
वे उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं
ना चाहते ।
की सबसे हस्ताक्षर करा लेने के बाद
मेरी के पास आया । मेरी ने एक नजर
ना-पत्र पर डाली, फिर दो क्षण रुकीं ।
बोला—" आप पर मैं किसी प्रकार का
नहीं डालना चाहता । अपनी प्रस-
ने जैसा करना ठीक समझें, कीजिये ।"
मेरी ने हस्ताक्षर कर दिये ।
में प्रार्थना-पत्र मजिस्ट्रेट के पास
। उसकी प्रामाणिकता की जांच करने
ए मजिस्ट्रेट अस्पताल आया । उसने
—"ये हस्ताक्षर आपने किये हैं ?"
बेशक," मेरी ने कहा; और इस तरह
ना से अपंग होने की जो क्षतिपूर्ति
मिल सकती थी, उसका द्वार अपने हाथों
बंद कर दिया ।

०००

डा० मेरी वर्गीस अपने भविष्य के बारे
में सोच रही थीं । वे किस प्रकार डाक्टरी
कर सकेंगी ? किस प्रकार डाक्टरी करने के
योग्य हो सकेंगी ?

एक दिन वे कोई पुराना भक्ति-गीत गुन-
गुना रही थीं :

प्रभु, मेरा जीवन स्वीकार करो
और उसे अपना प्रसाद बना दो;
जीवन का क्षण-क्षण, दिन-दिन
स्वीकार करो
उसे अखंड प्रार्थना-प्रवाह में बहा दो;
प्रभु, मेरे हाथों को स्वीकार करो,
और उन्हें सदा
अपने प्रेम की धड़कन से संचालित करो।

मेरे हाथ ले लो ।.....अचानक मेरी के
मन में आशा की किरण फूट पड़ी ।

इसके कुछ ही दिनों के बाद डा०
जाम्सन ने उन्हें अस्पताल के स्त्रीरोग-विभाग
में कुछ विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करने का
काम सौंपा । मेरी को खुशी हुई । मगर वे
जानती थीं कि उनका मानसिक उपचार
करने के लिए ही यह काम उन्हें सौंपा
गया है ।

कुछ ही अरसे में मेरी स्वयं बिस्तर से
उठकर पहियोंवाली कुर्सी पर बैठने लायक
हो गयीं । अब वे एकदम पराश्रित नहीं थीं ।
उन्हें इसकी बहुत खुशी थी ।

मां के लौट जाने के बाद से मेरी की खाट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन चरणों में पलक पाँवड़े...

पोशाक अच्छी तो जूते भी जरूर अच्छे हों—ठीक बने, ठीक फैशन, ठीक फिट। आप जो कुछ पहनें, उसको निखारते हैं जूते ही ; इसलिये आप को चाहिये सबसे अच्छी चीज। हर मौके के लिये अच्छे जूते बाटा के जानकार हाथों से खरीदिये। तभी आपका जहाँ भी जाना हो, आपके आत्म-विश्वास और सन्तोष बने रहेंगे क्योंकि अच्छी कारीगरी के आराम और आनन्द आपके साथ रहेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे कमरे में लगा दी गयी थी। कमरे खिड़की के सामने एक बरगद का पेड़ था, नीचे बैठकर कोढ़ी मरीज अपनी मरहम-पट्टी की बारी आने की प्रतीक्षा किया करते थे। मेरी देर तक उन्हें देखा करतीं। उनमें से कितनों के चेहरे भी पहचानने लगी थीं। कोढ़ उन्हें बहुत दिलचस्प विषय लगता था। वे कहती थीं कि कुष्ठ-चिकित्सालय में डाक्टरों की कमी है।

एक दिन चिकित्सालय के प्रधान ने उनसे वहां आकर काम करने का प्रस्ताव रखा। मेरी सहकर्मी, बोलीं—"कोढ़ के बारे में मेरा ज्ञान बहुत ही सीमित है।" उत्तर मिला—"बड़े-बड़े विशेषज्ञ भी कोढ़ के बारे में बहुत ज्यादा नहीं जानते।"

मांगते रहो तो तुम्हें मिलेगा,
खोजते रहो तो तुम पाओगे,
खटखटाते रहो तो
तुम्हारे लिए (द्वार) खोला जायेगा;
क्योंकि मां गनेवाले को मिलता है,
खोजनेवाला पाता है,
जो खटखटाता है,
उसके लिए (द्वार) खोला जाता है।
—बाइबिल, लूकस ११,९-१०

मेरी सुबह चिकित्सालय पहुंच जातीं और रोगियों की जांच करने में डाक्टरों की मदद करतीं। उनके अपंगपन पर इन मरीजों का भी ध्यान जाता था; लेकिन उनकी आंखों में दयाभाव नहीं, बल्कि श्रद्धा होती थी। यह महिला उनसे भी ज्यादा विकलांग थी; लेकिन उनकी सेवा में तत्पर थी। शीघ्र ही रोगियों में वे बहुत लोकप्रिय हो गयीं। चाहे रोगियों की कतार कितनी ही लंबी हो, उन सबको निबटाकर ही वे उस दिन का काम बंद करती थीं।

परंतु मेरी थोड़े से संतोष करनेवाली नहीं थीं। दिन-भर चिकित्सालय में काम करने के बाद अपने कमरे में लेटे-लेटे वे कोढ़ के बारे में ढेरों पुस्तकें पढ़ने लगीं। उन्हें पता चला कि इस बीमारी के विषय में दुनिया को अभी बहुत-कुछ खोजने और ज्ञान प्राप्त करने की जरूरत है। उन्हें इस बात पर अभिमान अनुभव हुआ कि इस रोग के संबंध में अधिकांश महत्वपूर्ण पुस्तकें वे ल्लो र क्रिश्चियन मिशन कालेज के प्रिंसिपल डा० काक्रेन की लिखी हुई थीं और सर्जरी के द्वारा कोढ़ियों के गलित अंगों का पुनर्निर्माण करने की विधियां चिकित्साशास्त्र को डा० पाल ब्रैंड की मौलिक देन थीं। वे सोचा करतीं—"क्या मुझे भी इस प्रकार की सर्जरी करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ममता की कसौटी पर खरा– डालडा

डालडा बढ़ते हुए बच्चों के लिए गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं और यह केवल मुहरबन्द डिब्बों में सदा शुद्ध, सदा ताज़ा मिलता है। डालडा में बनी सब चीज़ें परिवार भर को अत्यन्त प्रिय हैं। आप भी आज से अपने लाड़लों को डालडा वनस्पति में पके स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन खिलाइए।

डालडा वनस्पति...एक विशेष शुद्ध चिकनाई

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

लिंटास – DL. 117-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...र मिलेगा?"

...ष्ठ-चिकित्सालय में काम करते हुए ...महीना हो चुका था। एक दिन डा० ...ब्रैंड मेरी से पूछ बैठे—"सर्जरी तुम्हारा ...विषय रहा है न?"

मेरी बोलीं—"हां था; मगर अब तो मेरे ...र का अधोभाग पक्षाघात-ग्रस्त है।"

...जवाब मिला—"सर्जरी पैरों से तो की ...जाती! वैसे भी हाथ के आपरेशन बैठ-...ही किये जाते ...कल मैं एक कुष्ठ ...ी के हाथ का ...रेशन कर रहा ...। डा० फ्रित्स्ची ...सहायक सर्जन ...। क्या तुम ...री सहायक ...गी?"

मेरी की आंखें ...क उठीं। और ...ले दिन वे आपरे-...-कक्ष में सर्जनों ...मदद कर रही थीं।

इसके बाद वे कभी डा० ब्रैंड और ...भी डा० फ्रित्स्ची के साथ सहायक-सर्जन ...रूप में आपरेशन करने लगीं। विजय के ...ठिन पथ पर वे एक-एक कदम बढ़ती जा ...ही थीं। कोढ़ग्रस्त हाथों के आपरेशनों की ...हें अब पूरी जानकारी हो चुकी थी। ...रंतु क्या कभी मैं स्वतंत्र रूप से भी ...रेशन कर सकूंगी?" वे अक्सर सोचा करती थीं।

और फिर एक दिन आया, जब डा० फ्रित्स्ची ने स्वयं प्रस्ताव रखा कि उस दिन डा० मेरी आपरेशन करें, वे स्वयं उनके सहायक के रूप में काम करेंगे।

सुनकर मेरी अवाक् रह गयीं। जिस अवसर की प्रतीक्षा वे आतुरता से कर रही थीं, वह आज आ पहुंचा। परंतु अब उन्हें विश्वास नहीं होता था कि वे इस काम को अंजाम दे सकेंगी।

डा० फ्रित्स्ची ने आश्वासन दिया कि वे बड़ी आसानी से यह काम कर सकेंगी; और अगर कोई मुश्किल पेश आयी, तो वे तो पास खड़े होंगे ही।

डा० मेरी ने आपरेशन आरंभ किया। अभी आधा आपरेशन ही हो पाया था कि उन्हें बेहद थकान अनुभव होने लगी। इतनी देर तक लगातार काम करने लायक शक्ति अभी उनके शरीर में नहीं आयी थी। उनके मुंह पर से पसीने की बूंदें चूने लगीं।

"लाओ, बाकी आपरेशन मैं कर देता हूं," डा० फ्रित्स्ची ने उनकी हालत देखकर कहा—"फिर भी यह आपरेशन तुम्हारा किया हुआ ही गिना जायेगा।"

अस्तित्व

हममें से अधिकांश लोग अस्तित्व को परोक्ष दृष्टि से देखते हैं और यही कारण है कि अस्तित्व हमें अनबूझ पहेली दिखाई देता है। और हम गर्क हो जाते हैं।....

किंतु अस्तित्व-तरंगों को क्या परवाह कि कोई नाव डूबी या तर गयी? क्या सामने का तट इस तट से रवाना हुई हर नाव की प्रतीक्षा करता है? और यदि कोई नाव बीच में खो जाती है, तो क्या सामने का तट उसके न पहुंचने का मातम मनाता है?

—हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी मुस्करायीं और उनके मुंह से निकला—"जी नहीं।" क्योंकि आपरेशन अधूरा छोड़ने का अर्थ था, हार स्वीकार कर लेना।

"ईश्वर, मेरी मदद करो।" मेरी ने मन में कहा और आपरेशन में जुटी रहीं। अब उनमें नयी शक्ति आ गयी थी, जो मन की दृढ़ता से पैदा हुई थी।

जब आपरेशन खत्म हुआ, डा० फ्रित्स्ची ने बधाई दी।

"धन्यवाद" मेरी ने उनकी ओर अपनी कृतज्ञ आंखें उठाकर कहा—"आपकी सहायता से आज मेरे लिए नया द्वार खुल गया।"

इसके कुछ दिन बाद मेरी ने खबर सुनी कि डा० फ्रित्स्ची वेल्लोर से करिगिरि जा रहे हैं, जहां वे नवस्थापित कुष्ठ आरोग्य-धाम के अध्यक्ष होंगे; और वेल्लोर में उनके जाने से रिक्त हुए पद को भरने के लिए आवेदन-पत्र लिये जा रहे हैं। डा० ब्रैंड की इच्छा के बिना मेरी आवेदन-पत्र भेजना नहीं चाहती थीं। साथ ही वे यह भी चाहती थीं, उन्हें केवल योग्यता के आधार पर चुना जाये। जब उन्हें विश्वास हो गया कि डा० ब्रैंड ऐसा चाहते हैं, तब आखिरी तारीख से केवल एक दिन पहले आवेदन भेजा।

निर्णय की सूचना मिलने में कई हफ्ते लग गये, जो संशय और ऊहापोह में बीते। फिर एक दिन सवेरे श्रीमती ब्रैंड (ये वेल्लोर अस्पताल में आंखों की सर्जन हैं, पूछ बैठीं—"तो मेरी, तुम मेरे पति की सहायक सर्जन के रूप में कब काम शुरू कर रही हो?"

तो आखिरकार मेरी चुन ली गयी थीं। उन्होंने काम शुरू कर दिया।

०००

पहियेदार कुर्सी पर ज्यादा देर बैठने में मेरी को बड़ी तकलीफ होती थी। एक खास किस्म की जैकट पहनकर ही वे बैठ सकती थीं। और लगातार यह जैकट पहनने से उनके शरीर पर जख्म हो गये थे।

डा० ब्रैंड ने प्रस्ताव रखा कि उनकी रीढ़ की हड्डी का एक खास आपरेशन किया जाये, जिससे जैकट की आवश्यकता नहीं रह जायेगी और वे शरीर को अधिक आसानी से हिला-डुला सकेंगी। आपरेशन खतरनाक था; पर मेरी सारी उम्र जैकट पहनकर नहीं गुजारना चाहती थीं।

लेकिन आपरेशन कराने का मतलब था फिर कई हफ्ते बिस्तर पर पड़े रहना। मेरी के लिए यह असह्य था। परंतु दूसरा चारा भी तो नहीं था।

१४ मार्च १९५५ को आपरेशन हुआ। कूल्हे में से कुछ हड्डी काटकर उनकी रीढ़ में जोड़ी गयी, ताकि वह सख्त बन सके और सीधे तनकर बैठने में आसानी हो। आपरेशन के दौरान बहुत रक्त बह जाने से उनकी हालत बिगड़ने लगी। डाक्टरों को पहले इसका उपचार करना पड़ा। अंत में आपरेशन पूरा हुआ; और मेरी को पलस्तर के दो ढक्कनों में बंद कर दिया गया।

शल्यक्रिया सफल हुई थी; लेकिन एक हद तक ही। अभी एक और आपरेशन की जरूरत थी। तीन महीने बाद यह दूसरा आप-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ। एक बार फिर मेरी पलस्तर में
र्दी। बिस्तर पर अचल पड़ी हुई वे घंटे
दिन गिना करतीं। प्रतीक्षा का कोई अंत
था। बहुत मुश्किल के दिन थे।
फिर जब वे उठकर कुर्सी पर बैठने और
छोटे काम करने लायक हुईं, तो रीढ़
ख्तार टीस उठने लगी, जो कई बार
असहनीय हो जाती थी। शामक दवा-
भी उस दर्द को रोक नहीं पाती थीं।
इस बार सुषुम्ना नाड़ी का आपरेशन
ने की योजना बनायी गयी। मेरी इस
न से अपरिचित नहीं थीं
इस आपरेशन में जान का
ा है। लेकिन चौबीसों
ं की इस वेदना से छुट-
ा पाना आवश्यक था।
आपरेशन हुआ। दर्द
तम बंद तो नहीं हुआ;
र कई दिनों में कभी एक-
बार उठता था। यह
ी बहुत बड़ी राहत थी।
जब वे कुर्सी पर बैठने
क्षम हो गयीं, तो फिर सर्जन
रूप में काम-काज में व्यस्त
गयीं। काम में वे इस कदर
जाती थीं कि डा० इडा
८५ वें जन्मदिन के समा-
में भी वे देर से पहुंचीं।
ों को अपनी पहियेवाली
र्सी पर बैठकर आते देख,
इडा मंच पर से उतर

आयीं और अपने गले की माला उन्हें पहनाते हुए बोलीं—"यह मैंने तुम्हारे लिए रख छोड़ी थी।"

जनवरी १९५६ में मेरी फिर से आपरेशन करने लगीं। अब तक वे सिर्फ हाथों के ही आपरेशन किया करती थीं। अब उन्होंने सोचा कि जिन रोगियों के पांव खराब हैं, उनका क्या बनेगा? बात यह थी कि उन दिनों डाक्टर ब्रैंड विदेश गये हुए थे। आखिर मेरी ने पैरों के आपरेशन भी प्रारंभ कर दिये।

शूलावरोहण
माइकलेंजेलो की एक
मूर्ति की अनुकृति

कोढ़ का एक भयंकर अभिशाप यह है कि वह रोगी की भौंहें गायब कर देता है। सर्जरी से रोगी के नाक, हाथ और पांव भले ही ठीक कर दिये गये हों; परंतु भौंह के अभाव में कोढ़ के रोगी को तुरंत पहचाना जा सकता है। डा० ब्रैंड ने एक जटिल आपरेशन ईजाद किया था, जिससे भौंहें नयी पैदा हो जाती थीं। डा० मेरी अब यह आपरेशन भी करने लगीं। यही नहीं, उन्होंने हाथ के आपरेशन की विधि में ऐसा सुधार किया, जिससे आपरेशन का गहरा निशान न रह जाये।

उन्हीं दिनों उनकी सहकर्मी डा० ग्वेंडा आस्ट्रेलिया से लौटीं। कुछ महीने पहले ये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

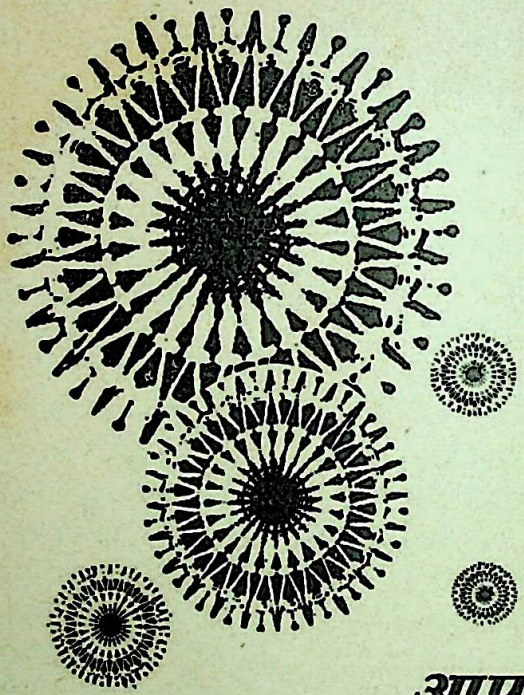

आपकी
और जवानोंकी

यह दिवाली और
नव वर्ष सुखद एवं समृद्धिशाली हों

साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना

heros'SBC-252 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...यों की शिकार हुई थीं। आस्ट्रेलिया ...र्थ नगर में एक अस्पताल है, जहां पक्षा-...त के मरीजों को विविध व्यायामों तथा ...बटी अंगों की सहायता से चलना-...ना तथा काम करना सिखाया जाता है। ...खंडा इलाज के लिए वहां गयी थीं और ...हुत फायदा हुआ था। उन्होंने मेरी ...भी वहां जाने की सलाह दी और आशा ...यी कि शायद ...वे बनावटी ...ों द्वारा चलना ...सीख जायें।

अपनी टांगों पर ...होने और चलने ...लिए मेरी कम ...ायित नहीं थीं। ...ु आस्ट्रेलिया ...ने के लिए काफी ...ड़ी रकम की जरू-...थी। वह कहां से ...मे ? वे अनुभव ...ती थीं कि अपने ...रिवार पर पहले ...ी वे काफी आर्थिक भार लाद चुकी हैं। सो ...इस प्रलोभन को उन्होंने मन से निकाल देना ...ी अच्छा समझा।

किंतु मन में यह विचार भी उठता था ...कि चलने-फिरने में आत्मनिर्भर बन सकी, ...ी रोगियों की अधिक अच्छी सेवा कर ...सकेंगी। निदान जब वे छुट्टी पर घर गयीं, ...ने स्वजनों से इसकी चर्चा की। उनके तीनों भाई तुरंत आर्थिक प्रबंध करने को तैयार हो गये। मगर पिता ने बेटी को बुलाकर कहा—"मेरी, तुम मेरे खर्च से जाओगी। जब तक मैं मौजूद हूं, तुम्हें किसी और का एहसान-मंद नहीं होने दूंगा—चाहे वे तुम्हारे भाई ही क्यों न हों।"

०००

आखिरकार डा० मेरी अपने साथ एक नर्स को लेकर मद्रास और कलकत्ता के रास्ते आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हो गयीं।

पर्थ के हवाई-अड्डे पर उस आरोग्य-केंद्र के कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। केंद्र पहुंचकर मेरी ने देखा कि वहां तो हर कोई पहियों-वाली कुर्सियों पर बैठा था। मेरी को इस बात की खुशी हुई कि वहां सभी उन्हीं के जैसे थे। हर किसी का कोई-न-कोई अंग खराब था। मगर एक बड़ा फर्क था। ये लोग विकलांग होने के बावजूद कई किस्म के काम कर सकते थे। बनावटी अंगों ने उनकी बहुत-सी कमियों को पूरा कर दिया था। और तो और, वे कुर्सी पर बैठे-बैठे टेबल टेनिस तक खेलते थे।

प्रार्थना

हे परमपिता ! संपदा के बीच मुझे एक ही कामना करने की लगन दो; बाधाओं के बीच एक ही कामना करने की स्थिरता दो; दर्द के बीच एक ही कामना करने का धीरज दो। हे आदि और अंत के नियंता ! दिन के आरंभ में, प्रभात में, युवा मनुष्य को एक ही कामना करने का संकल्प दो और दिन बीतने के साथ वृद्ध मनुष्य को उस संकल्प की युवा स्मृति दो—ताकि एक ही कामना करनेवाले उस जीवन का आरंभ अंत जैसा हो और अंत आरंभ जैसा !

—सोरेन कीएर्कगार्ड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मफतलाल ग्रुप

की ओर से
दिवाली अभिनंदन

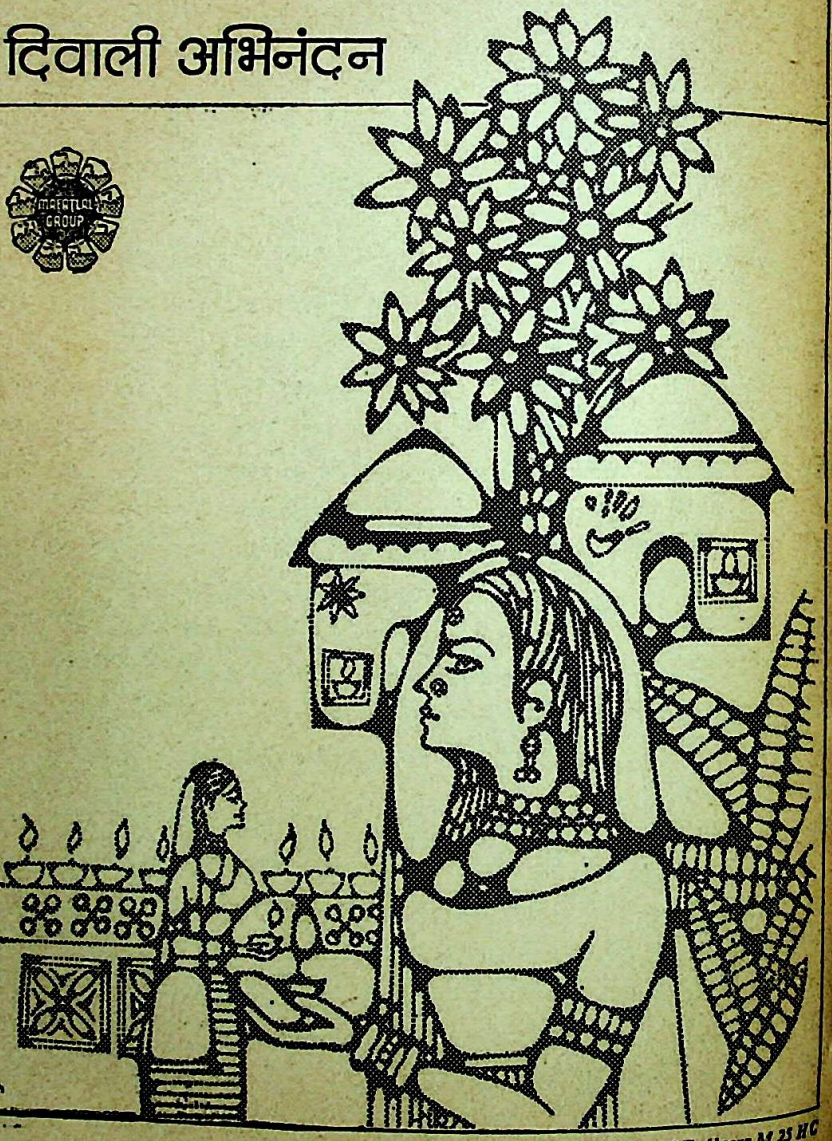

LPE-Aiyars M 25 HC

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ज होने लगा। उन्हें कई प्रकार की ...कराई जाती थीं, ताकि उनके हाथ, ...आदि मजबूत हों। फिर उन्हें चलने की ...दी जाने लगी। पहले एक-एक इंच ...बढ़ना सीखकर छः इंच चलने का ...करना था। बहुत मुश्किल काम ...कई हफ्ते कोशिश की। एक बार ...की कोशिश में वे गिर भी पड़ीं और ...काफी चोट आयी।

...में उन्होंने अनुभव किया कि इसमें ...शक्ति लगाना व्यर्थ है। आखिर वे ...बिस्तर पर से उठकर कुर्सी पर बैठना ...बिना किसी की सहायता के करवट ...तो सीख ही चुकी थीं। उन्होंने ...लांगों के उपचार की विधियां सीखने ...ध्यान देना शुरू किया। इसीलिए जब ...वीसा की मियाद समाप्त हुई, तो ...तीन महीने और आस्ट्रेलिया में रहने ...अनुमति प्राप्त कर ली।

उन्हीं दिनों घर से पिताजी के देहांत ...खबर आयी। यह बहुत बड़ा आघात ...मेरी उदास रहने लगीं। उनका उत्साह ...गया था। वे जल्दी-से-जल्दी हिन्दुस्तान ...चाहती थीं।

०००

हिन्दुस्तान लौटने पर मेरी ने सोचा ...लांगों के पुनः स्थापन का जैसा केंद्र वे ...(आस्ट्रेलिया) में देखकर आयीं थीं, ...न वैसा ही एक केंद्र हिन्दुस्तान में भी ...जाये। मगर यह काम बहुत धन और ...के बिना होनेवाला नहीं था। पर छोटे पैमाने पर ही सही, काम शुरू होना जरूरी था। और भला वेल्लोर से बढ़िया जगह कौन-सी हो सकती थी!

इस तरह उनके हृदय में एक नया स्वप्न अंकुरित हुआ। वे चाहती थीं कि किसी प्रकार न्यूयार्क विश्वविद्यालय जायें और वहां के विश्वविख्यात विशेषज्ञ डा० रस्क से अपाहिजों के पुनःस्थापन की विधियों का अध्ययन करें।

उन्हीं दिनों उनकी सहेली और सहकर्मी डा० अम्मिनी थामस ड्यूक विश्वविद्यालय, अमरीका, से एक विशेष कोर्स पूरा करके लौटीं। मेरी को देखते ही बोल उठीं—"मेरी, ड्यूक में मैं एक गजब के आदमी से मिली। वे 'फिजिकल मेडिसिन' विभाग के अध्यक्ष हैं। वे लकवे से पीड़ित हैं; पर बनावटी टांगें लगाकर चलते हैं और गजब की मुस्तैदी से काम करते हैं। मैंने उन्हें तुम्हारा किस्सा सुनाया, तो बोले—अपनी सहेली को न्यूयार्क बुला लो। न्यूयार्क विश्वविद्यालय के डा० रस्क ने उन्हें ट्रेनिंग दी है। वे चाहते थे कि तुम सीधे उन्हें पत्र लिखो, ताकि वे तुम्हारे बारे में डा० रस्क को बता सकें। लेकिन मैं तुम्हें लिखना भूल गयी।"

फिर क्या था! मेरी और अम्मिनी ने उन सज्जन को पत्र लिखा और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगीं। प्रतीक्षा के साथ अस्पताल का काम भी चलता रहा। प्रायः रोज ही उन्हें आपरेशन करने पड़ते। और ऐसे ही एक आपरेशन के समय विख्यात अमरीकी प्लास्टिक सर्जन डा० जान्सन से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगह की बचत
पैसे की बचत

स्टील ट्यूब का बना
फोल्डिंग फर्नीचर

निर्माता : क्रोमेलाइट (इण्डिया) प्रा० लि०
पी–३५, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुलाकात हुई थी, जिसका जिक्र किया जा चुका है।

डा० जान्सन ने सुझाया कि प्लास्टिक सर्जरी करके डा० मेरी के गाल पर से घाव का बुरा निशान क्यों न दूर किया जाये। मेरी को अब रूप की खास परवाह नहीं थी। पर वे जानती थीं कि इस घाव के कारण बच्चे पहली बार उन्हें देखने पर डर जाते थे। आपरेशन सफल हुआ और गाल पर बहुत हल्का-सा निशान बाकी रह गया। कुछ समय में डयूक विश्वविद्यालय से वह चिट्ठी भी आ गयी। उसमें लिखा था: "आपका पत्र मैंने डा० हावर्ड रस्क को दिया था। वे आपके विषय में गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं। आपको छात्रवृत्ति के लिए कैसे जा सके, इसके पूर्व आपकी बीमारी का इतिहास और आपकी डाक्टरी योग्यता का अनुभव के बारे में विस्तृत जानकारी चाहते हैं। आप सीधे उन्हें लिखें।"

मेरी ने सीधे डा० रस्क को लिखा और शीघ्र ही उत्तर आ गया। मेरी को छात्रवृत्ति मिल गयी। यात्रा की तैयारी होने लगी। मगर एक विचार रह-रहकर उन्हें परेशान कर रहा था। वे अपने इलाज के लिए नहीं, दूसरों का उपचार करना सीखने के लिए न्यूयार्क जा रही थीं। और इतना श्रम करके ट्रेनिंग लेने का लाभ ही क्या, अगर वेल्लोर में उसका कोई उपयोग न होनेवाला हो?

यह चिंता भी वेल्लोर मिशन कालेज और अस्पताल के अध्यक्ष डा० जान कारमन तथा पाल ब्रैंड ने दूर कर दी। मेरी को आश्वासन दिया गया कि जब वे लौटेंगी, तो वेल्लोर में पक्षाघात पीड़ितों के पुनःस्थापन का केंद्र खोल दिया जायेगा।

०००

मेरी न्यूयार्क पहुंचीं। और इस बार बंबई से न्यूयार्क तक की हवाई यात्रा उन्होंने अकेले ही की थी।

मेरी को न्यूयार्क बहुत शानदार शहर लगा। परंतु वे जानती थीं कि वहां भी लोग बीमारी, गरीबी और दर्द के शिकार हैं। ऐसे हजारों लोग रोज उस अस्प-ताल में आया करते थे, जहां वे काम सीख रही थीं।

फिर भी मेरी को अमरीका और हिन्दुस्तान में बहुत बड़ा फर्क महसूस हुआ। हिन्दुस्तान में हर ५,००० मरीजों के लिए एक डाक्टर है और १६,००० मरीजों के लिए एक नर्स, जबकि अमरीका में हर ७०० मरीजों के लिए एक डाक्टर और हर ३५० मरीजों के लिए एक नर्स उपलब्ध है। अमरीकी यह सुनकर चौंक उठते हैं कि उनके देश में हर चालीस मिनिट के बाद एक रोगी क्षय से मर जाता है; मगर हिन्दुस्तान में हर मिनिट क्षय का एक मरीज मरता है और यह सामान्य बात मानी जाती है।

जिस अमरीकी लेखिका ने डा० इडा की जीवनी लिखी थी, वह मेरी की जीवनी भी लिखना चाहती थी। जब उसने इस सिलसिले में मेरी से बात की, तो शुरू में उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। मगर मित्रों के यह समझाने पर कि उनकी कथा पढ़कर दूसरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपंगों में आत्मविश्वास और उत्साह जाग सकता है, वे तैयार हो गयीं। लेखिका के प्रश्नों के उत्तर उन्होंने फुरसत के क्षणों में टेप पर रेकार्ड कराये ।

मेरी बड़े मनोयोग से अध्ययन कर रही थीं। उनका कोर्स तीन साल का था। मगर पिछले चिकित्साशास्त्रीय ज्ञान और अनुभव के आधार पर उन्होंने उससे बहुत कम समय में तैयारी पूरी कर ली और परीक्षा में अच्छे नंबर से पास हुई ।

डा० रस्क की अधीनता में उन्होंने नयी विधियों का अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि इस पर भी गहराई से विचार किया कि भारत—जैसे निर्धन देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन विधियों और उपकरणों में क्या परिवर्तन किये जा सकते हैं ? उधर वेल्लोर से उत्साहवर्धक खबरें आ रही थीं। अपाहिजों के पुनःस्थापन केंद्र की इमारत तेजी से बन रही थी।

न्यूयार्क में रहते हुए मेरी ने आत्मनिर्भरता के कई नये पाठ पढ़े। बिना किसी की मदद के अपनी कुर्सी से सीधे कार और टैक्सी में चढ़ना उन्होंने सीख लिया। फिर स्वयं कार चलाना सीखा। यह एक विशेष प्रकार की कार थी, जिसे चलाने में पैरों को कोई काम नहीं करना पड़ता था और 'कंट्रोल' हाथों द्वारा चालित थे ।

जब मेरी हिन्दुस्तान लौटने के लिए तैयार हुईं, तो उन्होंने वैसी ही एक कार खरीद ली। उन्हें आशा थी कि इस कार की बदौलत स्वदेश में वे ज्यादा काम कर सकेंगी ।

न्यूयार्क का एक प्रसंग उन्हें सदा याद रहेगा । एक दिन प्रेसिडेंट केनेडी अपने पक्षाघात-पीड़ित पिता से मिलने के लिए अस्पताल में आये। अंगरक्षक आकर गलियारों में खड़े हो गये । मेरी पहियेवाली कुर्सी पर कहीं जा रही थीं, एक कोने में रुक गयीं। प्रेसिडेंट आये, गलियारे में खड़े लोगों से हाथ मिलाकर चलने लगे। तभी उनकी नजर दूर कोने पर पड़ी । मेरी के भारतीय चेहरे, साड़ी, और इन सबसे बढ़कर, पहियेदार कुर्सी ने उनका ध्यान आकर्षित किया। क्षण-भर वे देखते रहे, फिर बीस कदम चलकर मेरी के पास आये, और उनसे हाथ मिलाया।

०००

मेरी हवाई जहाज में सवार हुई। इतने महीनों के बाद अपने देश लौटने का उन्हें बड़ा उत्साह था । स्वदेश में वे बहुत कुछ करना चाहती थीं ।

हवाई जहाज उड़ा । मेरी के दिल में विजय व उपलब्धि की तृप्ति थी। खिड़की से उन्होंने नीचे देखा। वह विशाल महानगर सिमटकर बहुत छोटा बन गया था। विराट सागर के वक्ष पर खिलौनानुमा जहाज तैर रहे थे। फिर उन्होंने सामने देखा अंतहीन आकाश नीले आलोक में जगमगा रहा था और उसमें कहीं-कहीं रुई के फाहे जैसे बादल उड़ रहे थे । कृतज्ञता से मेरी की आंखें क्षण-भर के लिए मुंद गयीं और वे मन-ही-मन विनीत स्वर में बोलीं—"मैंने पांव मांगे थे; पर मुझे पंख मिल गये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

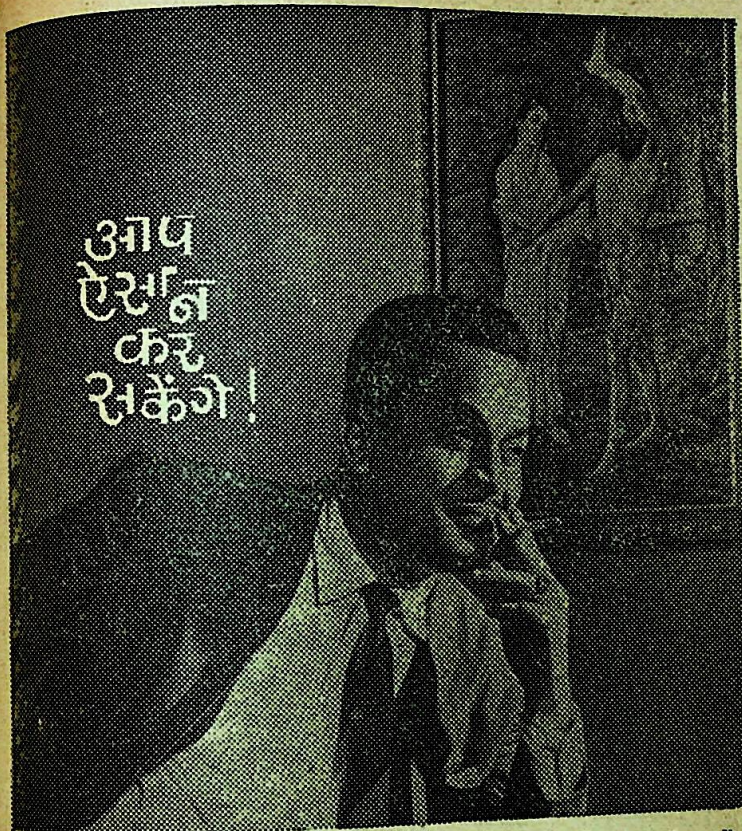

उत्तरदायित्व से कभी-कभी जी चुराने की इच्छा तो होती है, लेकिन उससे भी ज्यादा शानदार बात यह है कि जीवनसंघर्ष में धैर्य रखते हुए उत्तरदायित्व निभाया जाय। ■ क्या आप अपने परिवार की भावी आवश्यकताओं के लिए समुचित और नियमित रूप से पैसा बचा रहे हैं?

पैसे की बचत के लिए बैंक औफ़ इन्डिया में विशेष सुविधाएँ हैं:—
■ सेविंग्ज बैंक एकाउण्ट:- ■ ४% प्रतिवर्ष ब्याज ■ साल में १४० चेक ■ पैसा निकालने के लिए कोई नोटिस की ज़रूरत नही ■ मियादी डिपॉज़िट:- ■ ७½% प्रतिवर्ष तक ब्याज

दी बैंक औफ़ इन्डिया लि.

टी. डी. कन्नारा, जनरल मैनेजर

RAAS/B/56 A HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

तरह-तरह के

क्लिअरटोन घरेलू साधन

Clearlone

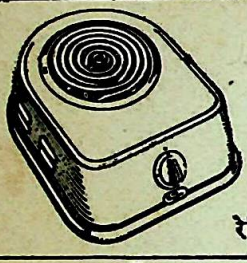

रेडियंट हॉट प्लेट

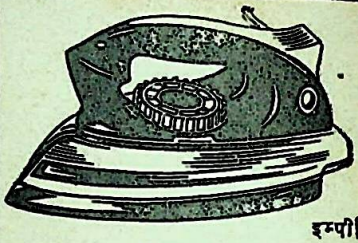

इम्पीरियल इस्त्री

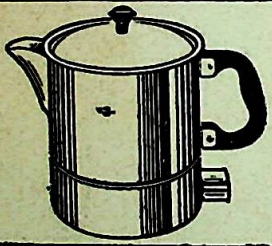

केतली

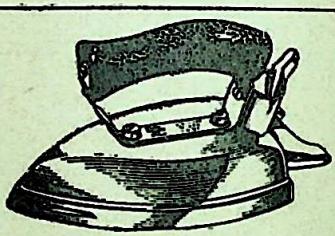

घरेलू इस्त्री

टोस्टर

टेबल और सीलिंग फ़ैन

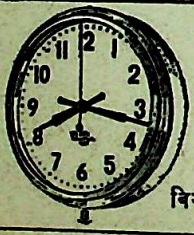

बिजली की घड़ी

फ़ोल्डिंग स्टील फ़र्नीचर

सभी क्लिअरटोन डीलरों व नेशनल-एक्को रेडियो डीलरों के यहाँ तथा इस पते पर मिलते हैं:

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • बंगलोर • सिकन्दराबाद • पटना

GRA

JWT/GRA 2804

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म
तारक मंत्र, मारक शस्त्र

सर जूलियन हक्सले

जो भी विरोध-विसंवाद व्यक्तित्व को पूर्णता पाने से रोकता है, वह एक बाधा है; वे सब निषेध जो हमें ब्रह्मांड के किसी अंश को मानव और उसके भवितव्य से जुड़ा हुआ मानने से मना करते हैं, विघ्न हैं; इसी तरह बुद्धि का स्वतंत्र उपयोग और अंतःकरण से जगी अपील करने से हमें रोकनेवाले सारे प्रतिबंध विघ्न हैं।

दूसरे शब्दों में, कोई भी धर्म, जो सत्य तथा ज्ञान, सौंदर्य एवं उसकी अभिव्यक्ति, अच्छाई और सत्कर्म इनके चरम मूल्यों का समर्थक नहीं है, उतने अंश में झूठा, नीचा और बुरा धर्म है।

अतः सालोमन रीनाइक की यह परिभाषा कि धर्म "मनुष्य की शक्तियों के स्वतंत्र उपयोग को कुंठित करनेवाले सारे बंधनों का पुंज है" न केवल सत्य से परे है, बल्कि विकसित धर्मों के मामले में सत्य के एकदम विपरीत भी है। दुर्भाग्य से यह सच है कि बहुत-से आदिम एवं अल्पविकसित धर्मों पर यह परिभाषा लागू हो जाती है; परंतु किसी धर्म पर यह परिभाषा किस हद तक लागू होती है, इससे यह भी परखा जा सकता है कि वह धर्म कितना विकसित है।

धार्मिक विचार एवं आचार-अनुष्ठान समाज के सामान्य जीवन से पूरी तरह मेल खा जायें, यह संभव है। कई आदिम जातियों में ऐसा होता भी है। किंतु तेजी से बदलते हुए समाज में प्रायः ये समकालीन चिंतन से या तो आगे रहते हैं, या पीछे। उदाहरणार्थ, ईसा और बुद्ध की नैतिक व आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि अपने जमाने से आगे थी; इसी तरह कई यहूदी पैगंबरों का नैतिक उत्साह, या अंधकार-युग एवं आरंभिक मध्ययुग के अच्छे ईसाई साधुओं का विद्यानुराग—ये भी अपने जमाने से आगे बढ़े हुए थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु दुर्भाग्यवश, पवित्रता में यह प्रवृत्ति है कि वह अस्पृश्य बन बैठती है, जिससे धर्म अनावश्यक रूप से रूढ़ि-परायण बन जाते हैं। इस कारण बहुधा धार्मिक विचार और आचार-अनुष्ठान अपने जमाने के सामान्य स्तर से नीचे रह जाते हैं। सौ साल पहले ब्रिटेन में और इसी सदी में अमरीका में चला विकासवाद-विरोधी आंदोलन बौद्धिक क्षेत्र में इसका उदाहरण था; रोमन कैथोलिक एवं अन्य संप्रदायों का तलाक तथा संतति-निग्रह जैसे विषयों पर विवेकपूर्ण स्पिरिट में सोचने से इन्कार करना नैतिक क्षेत्र में इसका निदर्शन है।

और कभी न भुलाने की बात तो यह है कि धर्म के समस्त पहलुओं पर विचार होना चाहिये। नर्स कैवेल के ये शब्द सभी को याद होंगे, जो उसने मरने से पहले कहे थे—"देश-भक्ति ही काफी नहीं है।" इसी विचार को धर्म पर, और मानव-जीवन में धर्म के स्थान-मान पर भी, लागू किया जा सकता है। आस्था ही काफी नहीं है; सच्ची-से-सच्ची धर्म-भावना ही काफी नहीं है। झूठी या अधकचरी बौद्धिक धारणाएं, सुविचारित मूल्यों के बजाय कोरे शास्त्र वचनों पर आधारित नीति-नियम अथवा असहिष्णुता—ये साथ में जुड़ जायें, तो निष्ठाभरी धर्म-भावना भी हित के बजाय अहित ही अधिक कर गुजरती है। असत्य और जड़ता, भीरुता, अपूर्णता और सुस्ती—ये धर्म के किसी भी क्षेत्र में हों, अंततः हानि पहुंचाकर ही रहते हैं।

चूंकि धर्म इतना सशक्त और सार्वभौम होता है, चूंकि वह मानव की सब शक्तियों व क्रियाओं को और हमारी दुनिया के समस्त पहलुओं को व्याप सकता है; इसलिए वह शुभ और अशुभ दोनों का सशक्त और तीव्र साधन बन सकता है।

धर्म के दुधारी रूप की पहचान हो जाये—यानी धर्मप्रेमी उसकी हानिकारी क्षमताओं को देख लें और बुद्धिवादी उसकी कल्याणकारी क्षमताओं को स्वीकार कर लें, तो इसका अधिक अवसर मिलेगा कि निम्नतर, गतिहीन, अविकसित और अल्पविकसित धर्म, जो कि प्रगति के पहिये में रोड़े अटकाया करता है, उन्नति करके उच्चतर, पुरोगामी, विकसित एवं विकासशील धर्म बन जाये, जो आगे बढ़ने में सहायक होता है। अविकसित धर्म वह है, जो मानव की शक्तियों को कुंठित करता है। विकसित धर्म वह है, जिसका स्वरूप ऐसा है कि उससे मानव की विभिन्न शक्तियों को सामंजस्य पान में, और प्रत्येक शक्ति को साझे कार्य में पूर्णतम योग देने में सहायता मिलती है। ['रिलिजन विदाअट रेविलेशन' से]

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः॥

—सृष्टिकर्ता ने सत्य और असत्य के रूपों को देखकर उन्हें अलग-अलग कर दिया है और श्रद्धा को सत्य में और अश्रद्धा को असत्य में स्थापित किया है। —यजुर्वेद १९-७७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरा हर धूलि-कण मेरे लिए पावन है

क० मा० मुंशी

भक्ति का अर्थ है अपनी मातृभूमि से प्यार। सच्ची देशभक्ति किसी वर्ग के हित में निहित नहीं होती और वह देश के कष्ट उठाने को तत्पर रहती है। अत्यंत उग्र व प्रगाढ़ देशभक्ति की झलक हम शिवाजी सिंह जैसे वीरों में देख चुके हैं, जिन्होंने अपने को विदेशी दासता से मुक्त करने के लिए प्राण न्योछावर कर दिये।

आयरलैंड के तेईस वर्षीय युवा क्रांतिकारी राबर्ट इमेट को जब फांसी की सजा सुनायी गयी, वे न्यायालय में इतना ओजस्वी थे कि उनका वह वक्तव्य 'देशभक्ति का गीत' बन गया।

अपने बयान में उन्होंने कहा था—"इन मेरे संकटों और अपने सारे कार्य-कलाप में मेरे आचरण के मूल में एक ही विश्वास और प्रेरणा रहा है; और वह है—मातृभूमि को इस अत्यंत अमानवीय अत्याचार से मुक्ति दिलाना, जिसे वह लंबे अरसे से असीम धैर्य के साथ सहती व बर्दाश्त करती आयी है।"

आधुनिक युग में देशभक्ति का अर्थ जन्मभूमि का प्रेम ही नहीं है; उसमें एक तीव्र आवेश है, जो व्यक्ति को उसकी मातृभूमि, उसकी नदियों व पहाड़ों, उसकी भाषा और रीति-रिवाजों, उसकी संस्कृति और धर्म के साथ अटूट नैतिक और आध्यात्मिक भाव-बंधन में बांध देता है।

अंग्रेजी राज के समय पश्चिम से भारत का जो संपर्क हुआ, उसने देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने की हमारी देशभक्ति की भावना को मेजिनी के-से राष्ट्रवाद का रूप दे दिया। जो देशभक्त ऐसी भावना और भावुकता से बिहीन थे, वे कोरी बौद्धिकता की ऊंची अटारी पर बैठे रहे और राष्ट्र के जीवन में कोई सक्रिय भाग नहीं ले सके।

राष्ट्रवाद की दिशा में पहला कदम था बंकिमचंद्र द्वारा दुर्गामाता और भारतमाता के एकत्व का प्रतिपादन। भारत अब देश नहीं रहा, वह माता बन गयी।

इस आदर्श को और विकसित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने उपदेश दिया—"हे वीर, साहसी बन, इस बात पर गर्व कर कि तू भारतीय है और गर्व के साथ यह घोषणा कर कि मैं भारतीय हूं और हर भारतीय मेरा भाई है।"

स्वामीजी से उनके देशप्रेम के संबंध में विदेश में किसी ने प्रश्न किया, तो उन्होंने उत्तर दिया था—"भारत से प्रस्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज का स्मारक

करने के पहले मैं उससे प्रेम करता था। किंतु अब तो भारत का हर धूलि-कण, उसकी वायु का प्रत्येक झोंका मेरे लिए पावन-पवित्र बन गया है; वह मेरे लिए पुण्य-भूमि है, तीर्थस्थल है।"

फिर आये उग्र राष्ट्रवाद के उद्गायक अरविंद। उन्होंने कहा—"राष्ट्र क्या है? हमारी मातृभूमि क्या है? वह मात्र जमीन का टुकड़ा नहीं है, शाब्दिक अलंकार नहीं है, कोरी कल्पना नहीं है। वह एक महा-शक्ति है, जो उन लाखों-करोड़ों शक्ति-इकाइयों के एकीकरण से बनी है, जिनसे मिलकर 'राष्ट्र' बनता है।"

अरविंद ने 'राष्ट्र' कल्पना को धार्मिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। उन्होंने कहा—"राष्ट्रवाद कोई राजनीतिक कार्यक्रम मात्र नहीं है। राष्ट्रवाद ईश्वर-प्रदत्त धर्म है। राष्ट्रवाद एक पंथ है, जिसका आपको जीवन म अनुसरण करना होगा।"

साधारण देशभक्ति को एक आध्यात्मिक लक्ष्य में रूपांतरित कर देने की इस कीमियागरी ने राष्ट्रवाद को एक जीता-जागता पंथ बना दिया।

रवींद्रनाथ ठाकुर ने इसी परिवर्तन की प्रक्रिया को और आगे बढ़ाते हुए कहा :

हे मोर चित्त! पुण्यतीर्थे जागो रे धीरे!
एइ भारतेर महामानवेर सागर-तीरे
हेथाय दांडाये दू बाहु बाड़ाये नमि देवतारे
उदार छंदे परमानंदे वंदन करितारे
ध्यानगंभीर एइ ये भूधर नदी जपमाला
व्रुत-प्रांतर हेथाय नित्य हेरो पवित्र धरित्रीरे
एइ भारतेर महामानवेर सागर-तीरे॥

इस रासायनिक परिवर्तन ने एक नयी देशभक्ति को जन्म दिया, जिसमें जमीन के बजाय, मानव केंद्र-बिंदु बन गया।

सुबद्ध भौगोलिक सीमाएं, नस्ल और भाषा की एकता, एक ही सरकार द्वारा प्रशासित होना आदि तत्व राष्ट्र के निर्माण में सहायक हो सकते हैं; परंतु इनमें से किसी एक या सारे तत्वों की उपस्थिति मात्र से राष्ट्र बन ही जाये, यह आवश्यक नहीं।

जनता में जन्मभूमि के प्रति न केवल भक्ति का भाव होना चाहिये, बल्कि उसे सांझी पैतृक संपदा के रूप में मिली अपनी परंपराओं का भान और अभिमान होना चाहिये; अपनी सामूहिक सिद्धियों की स्मृति से उसे प्रेरणा मिलनी चाहिये। इतना ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन चीजों में यह क्षमता भी विकसित होनी चाहिये कि वे जनता को सामूहिक क्रियता की प्रेरणा दे सकें। संकट की उप-स्थिति में, करने और मरने की सामूहिक इच्छा ही राष्ट्रीयता का मूल है।

और यह राष्ट्रीयता देशभक्ति की सर्वथा स्वाभाविक उपज है, जो संसार में विकसित इसी अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि के बावजूद सर्वा-धिक शक्तिशाली राजनीतिक तथ्य है।

हम देख चुके हैं कि 'भारत छोड़ो' आंदो-लन में और हाल में चीनी व पाकिस्तानी हमलों के समय हमारी जनता ने क्या किया। इस जोश का उबाल आ गया और भार-तीय राष्ट्रवाद चरमावस्था पर पहुंच गया। और यह स्पिरिट आती है, जनता द्वारा इच्छा से स्वीकृत अनुशासन से, जो वैय-क्तिक सुख-परायणता का दमन करता है और देशरक्षा के लिए जीने एवं आवश्य-कता पड़ने पर प्राण भी उत्सर्ग कर देने की तत्परता पैदा करता है।

राष्ट्रवाद-रहित देशभक्ति एक निःसत्व विचार है; वह ऐसा ईंधन है, जिसे सामू-हिक कर्म की सृजनात्मक प्रेरणा-रूपी अग्नि-स्फुलिंग का स्पर्श नहीं मिला है।

साथ ही यह भी मानना ही पड़ेगा कि उग्र उत्साह से भरी देशभक्ति संकुचित राष्ट्रीयता का रूप धारण करके प्रायः अनर्थ-कारी भी बन जाती है।

संकुचित राष्ट्रीयता समझती है कि उसका देश अपनी सीमाओं का विस्तार करे एवं अन्य राष्ट्रों तथा जातियों पर अपना प्रभुत्व जमाये, यह ईश्वर का आदेश है।

आज हम देखते हैं कि ऐसी संकुचित राष्ट्रीयता से पीड़ित कई छोटे-बड़े राष्ट्र अन्य राष्ट्रों को कुचलकर अपना स्थान ऊंचा करने की कोशिश में लगे हैं।

अक्सर यह भुला दिया जाता है कि भले ही राष्ट्रवाद लोगों को एक बनाने का जब-र्दस्त साधन हो, मगर आज उसे जिस दुनिया में काम करना है, उसे विज्ञान और टेक्ना-लाजी ने एक बना दिया है।

आध्यात्मिकता का पुट पाकर राष्ट्रवाद एक व्यापक विश्वदृष्टि का सप्राण अंग बन जाता है। विशालता पाकर वह अंतर्राष्ट्री-यता में परिणत हो जाता है, जो संपूर्ण मान-वता के ऐक्य का पथ प्रशस्त करता है।

अखबार-मालिक बीमार पड़ा था। डाक्टर उसे देखने आया। काफी देरतक जांच-पड़ताल करके डाक्टर ने कहा—"आपका सर्क्युलेशन ठीक नहीं है।" इस पर अखबार-मालिक तुनककर बोला—"डाक्टर साहब, मेरे किसी भी प्रतिस्पर्धी के अखबार से मेरे अखबार का सर्क्युलेशन अच्छा है।"

—प्रवीण बी० पटेल

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढलते-उगते सूरज की रोशनी में लाल किला

लेखक की नवप्रकाशित पुस्तक 'दिल्ली की खोज' का एक दिलचस्प प्रसंग।

ब्रजकृष्ण चांदीवाला

मौजूदा दिल्ली शाहजहां ने आबाद की थी और लाल किला तथा उसके अंदर के महल उसने १६४८ ई० में बनवाये थे। दिल्ली शहर की चहारदीवारी १६४९ तक पत्थर और गारे की चुनी गयी थी, जो बरसात में टिक न सकी। फिर वह पुख्ता बना दी गयी।

शाहजहां १६३४ में कश्मीर जाते वक्त दिल्ली होकर गुजरा था और उधर से ही अगले वर्ष वापस लौटा। दिल्ली-आगरा के दरम्यान दाराशिकोह के लड़का पैदा हुआ। पोते के पैदा होने की खुशी में बादशाह ने तख्ते ताऊस पर, जो सात बरस में तैयार हुआ था, पहले-पहल दरबार किया। उसने सिक्का भी चलाया और एक खास किस्म की सोने की मोहर चलायी थी, जो सिर्फ अमीरों और मनसबदारों को दी जाती थी।

शहर और किले की बिस्मलार करने के लिए बादशाह कई बार दीनपनाह (पुराना किला) देखने यहां आया। आखिर नजूमियों और ज्योतिषियों की सलाह से यह जगह, जहां अब लाल किला है, किले की तामीर के लिए चुनी गयी और किले के चारों ओर फिर शहर शाहजहांबाद की बुनियाद डाली गयी, जिसे आम तौर पर दिल्ली कहा जाता है। किला ऐसा बनवाना शुरू किया गया, जो आगरे के किले से दुगना और लाहौर के किले से कई चंद बड़ा था।

१६३६ में किले की बुनियाद का पत्थर इज्जतखां की देखभाल में डाला गया। कारीगरों में सबसे बड़े उस्ताद अहमद बहामी चुने गये। इज्जतखां की देखरेख में यह काम पांच महीने दो दिन रहा। इस अर्से में उसने बुनियादें भरवायीं और माल-मसाला जमा किया। इज्जतखां को सिंध जाने का हुक्म मिला और काम अलीवर्दी खां के सुपुर्द किया गया, जिसने दो वर्ष एक मास चौदह दिन में किले के गिर्द फसील बारह-बारह गज ऊंची उठवायी। इसके बाद अलीवर्दी खां बंगाल का सूबेदार बन गया और उसकी जगह यह काम मुकर्रमतखां के सुपुर्द हुआ, जिसने नौ साल की लगातार मेहनत से किले की तामीर का काम पूरा करवाया।

बादशाह काबुल में था। मुकर्रमतखां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

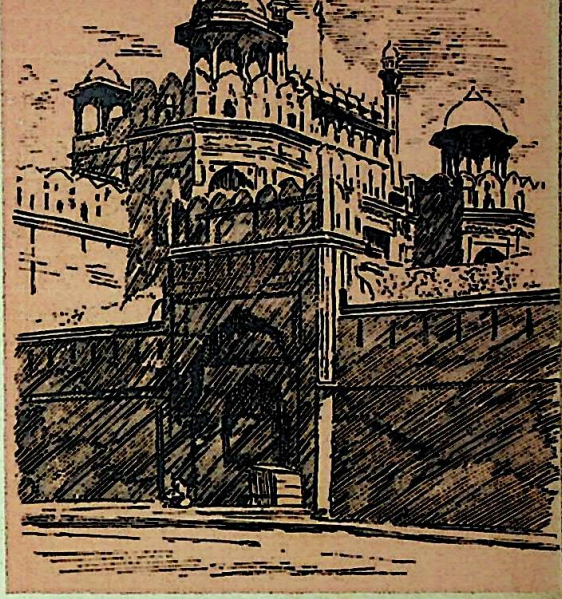

इस मौके पर बादशाह नें बहुत से अतिये अता फरमाये । बेगम साहिबा को एक लाख रुपये नजर किये गये । दाराशिकोह को खास खिलअत और जवाहरातजड़े हथियार और 'बीस हजारी' का मनसब, एक हाथी और दो लाख रुपय अता किये गये । इसी प्रकार दूसरे शाहजादों, वजीरे आजम और दीगर मनसबदारों को अतिये अता किये गये । मुकर्रमतखां को, जिसकी निगरानी में किला तामीर हुआ था, पंचहजारी मनसब अता किया गया । दरबार बड़ी धूम-धाम के साथ समाप्त हुआ ।

किला अष्टकोण है । बड़े दो कोण पूर्व और पश्चिम में हैं और छः छोटे कोण उत्तर और दक्षिण में हैं । किले का रकबा करीब डेढ़ मील है । यह करीब तीन हजार फुट लंबा और करीब १,८०० फुट चौड़ा है ।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरिया की ओर की दीवारें ६० फुट ऊंची हैं। खुश्की की तरफ की दीवार ११० फुट ऊंची है, जिसमें ७५ फुट खंदक की सतह से ऊपर और बाकी खंदक की सतह तक है।

किले के पूर्व में यमुना थी, जो किले के साथ बहती थी; और तीन तरफ खंदक थी, जिसमें रंग-बिरंगी मछलियां पड़ी हुई थीं। खंदक के साथ-साथ बाग-बगीचे थे, जिनमें तरह-तरह के हर मौसम के फूल और झाड़ियां लगी हुई थीं। ये बाग १८५७ ई० के गदर तक मौजूद थे, जो अब गायब हो गये हैं। पूर्व में यमुना और किले के बीच की नशेब की जमीन हाथियों की लड़ाई तथा फौज की कवायद करने के काम आती थी।

किले की तामीर की लागत का अंदाजा डेढ़ करोड़ रुपया है। लाल पत्थर और संगमरमर जिस राजा के इलाके में होता था, उसने भेज दिया था। बहुत-सा सामान किश्तियों द्वारा फतहपुर सीकरी से लाया गया था।

शाहजहां
एक समकालीन चित्र की ओके द्वारा अनुकृति

१७१९ के भूचाल से किले और शहर को बहुत नुक्सान पहुंचा था। १७५६ में मराठों और मोहम्मदशाह दुर्रानी की लड़ाई में भी यहां इमारतों को बहुत नुक्सान पहुंचा था। उस वक्त गोलाबारी के कारण दीवाने-खास, रंग महल, मोती महल और शाह बुर्ज को काफी नुक्सान पहुंचा। किंतु किले की मजबूती के कारण उसको कोई नुक्सान न पहुंच सका।

गदर के बाद अंदर की इमारतों का बहुत-सा हिस्सा मिसमार करके हटा दिया गया। रंग महल, मुमताज महल और खुर्द-जहां के पश्चिम में स्थित जनाने महल और बाग तथा चांदी महल, ये सब खत्म कर दिये गये। इसी प्रकार तोशेखाने, बावर्चीखाने, जो दीवाने-आम के उत्तर में थे तथा महताब बाग तथा हयात बाग का बहुत बड़ा हिस्सा हटाकर वहां फौजों के लिए बैरकें और परेड का मैदान बना दिया गया। हयात बाग के उत्तर में और उसके तथा किले की उत्तरी दीवार के बीच में जो शाहजादों के महल थे, वे भी गिरा दिये गये।

किले के पांच दरवाजे थे। लाहौरी दरवाजा और दिल्ली दरवाजा शहर की तरफ और एक दरवाजा दरिया की तरफ सलीमगढ़ में जाने के लिए था। उस तरफ जाने के लिए दरिया पर पुल बना हुआ था। चौथी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'खिड़की' या दरियाई दरवाजा, जो मुसम्मन बुर्ज के नीचे है। और पांचवां असद बुर्ज के नीचे था। यह दरिया पर जाता था। इस रास्ते से किश्ती में सवार होकर आगरा जाते थे। किले की चारदीवारी में बीच-बीच में बुर्ज बने हुए हैं।

लाहौरी दरवाजा सदर दरवाजा था। यह किले की पश्चिमी दीवार के मध्य में चांदनी चौक के ऐन सामने पड़ता है। शाहजहां के वक्त में यह दरवाजा सीधा चांदनी-चौक के सामने पड़ता था। खाई पर से गुजरने के लिए काठ का पुल था। दरवाजे के सामने एक खूबसूरत बाग लगा हुआ था और उसके आगे चौक था, जिसमें एक बड़ा हौज था, जो चांदनी चौक की नहर से मिला हुआ था।

फिर औरंगजेब ने इस दरवाजे और दिल्ली दरवाजे के सामने हिफाजत के लिए घोघस (घूंघट) बनवा दिया, जिससे बाग खत्म हो गया। शाहजहां ने आगरा से अपनी कैद के दिनों में इस बारे में औरंगजेब को लिखा था कि तुमने घोघस बनवाकर मानो किले की दुल्हन के चेहरे पर नकाब डाल दी। दीवारें खड़ी रहने से किले का रास्ता उत्तर की ओर घूमकर आने का हो गया।

इसी आगे के हिस्से पर नब्बे वर्ष तक यूनियन जैक लहराता रहा था। नब्बे वर्ष बाद घोघस के ऊपर खड़े होकर प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र भारत का तिरंगा झंडा फहराया था और देश की आजादी का ऐलान किया था। [सौजन्य : भारत सरकार]

★

गुरु नानक एक बार बगदाद गये। वहां पर खलीफा का शासन था, जो बड़ा अत्याचारी था और जनता को लूट-खसोटकर अपना खजाना बढ़ाता था। एक दिन खलीफा उनसे मिलने आया। नानक साहब ने अपने चारों ओर से एक सौ कंकड़ चुनकर जमा कर लिये थे। यह देखकर खलीफा आश्चर्य में पड़ गया और पूछा—"आपने ये कंकड़ क्यों जमा किये हैं?" नानक बोले—"अमानत के रूप में आपके पास रखने के लिए।"

"पर इन्हें वापस कब ले जायेंगे?" खलीफा ने पूछा। उत्तर मिला—"कोई जल्दी नहीं है। कयामत के दिन खुदा के दरबार में मैं भी होऊंगा। उसी समय आप इन्हें साथ लेते आयें।"

खलीफा अचंभे में पड़ गया—"अरे नानक साहब! यह आप क्या फरमा रहे हैं? कयामत के पाक दिन यह तुच्छ चीज कहीं साथ लायी जाती है?"

गुरु नानक गंभीर हो गये—"खलीफा साहब, यह तो मैं भी जानता हूं कि कयामत के दिन यहां की कोई चीज साथ नहीं ले जा सकते। वहां तो खुदा के सामने खाली हाथ खड़े होकर अपनी-अपनी करनी का हिसाब देना पड़ता है। मगर आपने प्रजा को भूखों मारकर, जो यह असीम धन जमा किया है, क्या इसे यहीं छोड़ जायेंगे? अपनी तमाम धन-दौलत के साथ मेरे इतने कंकड़ भी लेते आना।"

—गि० शं० त्रिवेदी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अणु-शस्त्रों से धरती को खतरा नहीं

क्या यह संभव नहीं कि हाइड्रोजन बमों के विस्फोट से पृथ्वी-स्थित हाइड्रोजन में अणु-प्रतिक्रिया आरंभ हो जाये और धरती पटाखे की तरह फट पड़े ? वैज्ञानिकों का उत्तर है—नहीं ।

प्रो० फ्रेड हाय्ल

सूर्य में शक्ति या उर्जा किस प्रकार उत्पन्न होती है ?

रसायनशास्त्र में मूलतत्वों का वर्गीकरण उनके परमाणुओं की नाभि में स्थित कणों की संख्या के आधार पर किया जाता है। वर्गीकरण की इस तालिका में सबसे नीचे का स्थान मिला है साधारण हाइड्रोजन को, जिसकी नाभि में केवल एक ही कण—एक प्रोटान—होता है। और सबसे ऊपर नाम आता यूरेनियम का, जिसकी जटिल नाभि में ९२ प्रोटान और १४६ न्यूट्रान होते हैं ।

इस सदी के तीसरे दशक में कैंब्रिज के विज्ञानी एस्टन ने गणना करके यह दिखाया कि जो मूलतत्व इस तालिका के ऊपरी भाग में आते हैं, उनसे ऊर्जा प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि उन्हें दो टुकड़ों में—यदि हो सके तो दो समान भागों में—बांटा जाये । आप शायद जानते हैं कि प्राकृतिक रूप से मिलनेवाले केवल दो मूलतत्वों को अब-तक इस प्रकार विभाजित किया जा सका है । वे हैं—युरेनियम और थोरियम ।

जिन परमाणुओं की नाभि में कणों की संख्या ५० से कम हो, उन पर इससे उलटा ही क्रम लागू होता है । उनसे ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उनमें और कण जोड़ने पड़ते हैं । कण जोड़ने की कई विधियां संभव हैं। मगर सूर्य की दृष्टि से उनमें से एक ही विधि महत्व की है ।

मूलतत्वों की तालिका में हाइड्रोजन से सीधे ऊपर नाम है हीलियम का, जिसकी नाभि में चार कण होते हैं । अगर चार परमाणु-कण इस प्रकार जोड़े जा सकें कि उनसे मिलकर एक आल्फा-कण (हीलियम की नाभि) बनाया जा सके, तो बहुत-सी ऊर्जा निकलेगी ।

सूर्य तथा उसके जैसे प्रत्येक सामान्य तारे के मध्यभाग में इसी प्रक्रिया से हाइड्रोजन निरंतर हीलियम में परिणत हो रहा है और उसी से सूर्य तथा तारे ऊर्जा पाते हैं।

अब सवाल उठ सकता है कि क्या मनुष्य ऐसा परमाणु-विस्फोट कर सकता है, जिससे पृथ्वी में आणविक अभिक्रिया (चेन री-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...न) शुरू हो जाये ? क्या यह संभव है ...कोई मानव-निर्मित अभिक्रिया (री-...न) पानी में—खासकर महासागरों के ...नी में—स्थित हाइड्रोजन में यह सिलसिला ...कर दे ?

...गर महासागरों के पानी में का सारा ...ड्रोजन एकबारगी हीलियम में बदल ...ें, तो हमारी पृथ्वी तत्क्षण भाप बन ...ेगी। इससे विकिरण की ऐसी जबर्दस्त ...ट उठेगी, जिसकी ऊर्जा सूर्य से साल-भर ...बाहर निकलनेवाली तमाम ऊर्जा के योग-...के बराबर होगी। अगर मंगल पर कोई ...-जंतु हैं, तो वे सब इस लपट की चपेट ...आकर राख हो जायेंगे।

मगर हाइड्रोजन में परमाणु-अभिक्रिया ...हो सके, इसके लिए बहुत ऊंचे ताप-...की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर ...ी तक जो उच्चतम तापमान पैदा किया ...सकता है, वह युरेनियम-बम अथवा ...टोनियम-बम के विस्फोट के दौरान चंद ...टिमीटर व्यास के क्षेत्र में, एक सेकेंड के ...करोड़वें हिस्से जितने समय के लिए ...न्न होता है। यह तापमान १५,००,००, ...० अंश शतांश के लगभग होता है, जो ...के मध्यभाग के तापमान से करीबन ...गुना अधिक है।

...अब पूछा जा सकता है कि यदि ऐसा ...पानी में फोड़ दिया जाये, तो क्या वह ...नी में स्थित हाइड्रोजन में प्रस्फोट पैदा ...देगा ? मुझे याद आता है, १९४५ में ...बड़ी व्यग्रता से इसका हिसाब लगाया

ब्रिटेन के मूर्धन्य खगोलज्ञ प्रो० हाय्ल

था। उस गणना से मुझे मालूम हुआ (और राहत भी मिली) कि बम से उत्पन्न गर्मी इतने कम समय टिक पाती है कि उससे प्रस्फोट नहीं हो सकता। अन्यथा, अब तक शायद प्रस्फोट हो भी चुकता।

मगर युरेनियम-बम से अधिक शक्तिशाली बम भी तो पानी में फोड़े जा सकते हैं! और हाइड्रोजन बम उससे अधिक शक्तिशाली है भी। हाइड्रोजन-बम के मूल में यह गुर है कि हाइड्रोजन को अत्यंत तेजी से हीलियम में बदल दिया जाये—यानी जो काम सूर्य अपने भीतर करता है, वही काम कहीं अधिक तीव्र गति से धरती पर किया जाये।

इसके लिए दो बातें जरूरी हैं। एक है, बहुत ऊंचा तापमान। प्रस्फोटक (डिटोनेटर) के रूप में अणु-बम का प्रयोग करके यह ऊंचा तापमान पैदा किया जाता है। दूसरी आवश्यकता है, सूर्य और तारों में चलने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्यमनस्कता

मैं एक मिट्टी का ढेर–
प्रतिमाओं की आकृतियां
निहित हैं मुझमें ।
सोचता हूं,
किसी आकृति में ढल जाऊं ।
तभी आशंकित हो उठता हूं
कि बंध न जाऊं,
अपने अन्य रूपों से
वंचित न हो जाऊं ।

–एस० कुमार मेहता

वाली प्राकृतिक अभिक्रिया (रीएक्शन) से अधिक तेज अभिक्रिया खोज निकालना ।

पहली नजर में यह चीज असंभव लगती है; क्योंकि पृथ्वी पर जो 'रीएक्शन' काम में लाया जा सकता है, वह सूर्य में भी प्रकट हो ही सकता है । लेकिन एक बड़ी महत्वपूर्ण बात आप भूल रहे हैं । वह यह है कि जिन पदार्थों में सबसे अधिक तेजी से अभिक्रिया (रीएक्शन) होती है, वे सूर्य में एकदम दुर्लभ हैं । कभी ये पदार्थ सूर्य में थे अवश्य; लेकिन सूर्य उन्हें खर्च कर चुका है । किंतु धरती पर ये पदार्थ मनुष्य को उपलब्ध हैं ।

सब पदार्थों में सबसे अधिक तेजी से परमाणु-अभिक्रिया (एटामिक रीएक्शन) एक प्रकार के हाइड्रोजन में होती है, जिसे ट्रीशियम कहा जाता है । साधारण हाइड्रोजन और ट्रीशियम इन दोनों की नाभि में कुछ अंतर होता है । साधारण हाइड्रोजन की नाभि में एक ही कण–एक प्रोटान–होता है, जबकि ट्रीशियम की नाभि में तीन कण होते हैं–एक प्रोटान और दो न्यूट्रान ।

सबसे अधिक तेज अभिक्रिया ट्रीशियम को ड्यूटेरियम नामक विशेष हाइड्रोजन से मिलाने से होती है, जिसकी नाभि में दो कण–एक प्रोटान व एक न्यूट्रान–होते हैं ।

और अब अपने असली प्रश्न पर लौटें । क्या हाइड्रोजन बम महासागरों में विस्फोट शुरू कर सकता है ? उत्तर है–नहीं ।

हाइड्रोजन बम का सैनिक महत्व इस कारण है कि उसे चाहे जितना बड़ा बनाया जा सकता है । अगर कोई बंधन है तो व्यावहारिक साध्यता का है । मगर अणु-बम का आकार बहुत सीमित होता है । सो अगर हम किसी प्रकार पर्याप्त ट्रीशियम तैयार कर लें, तो अत्यधिक प्रचंड विस्फोट-शक्ति-वाला हाइड्रोजन-बम बनाया जा सकता है ।

मगर उससे भी महासागरों में विस्फोट नहीं होगा । क्योंकि महासागरों में विस्फोट का होना इस बात पर निर्भर नहीं होता कि हाइड्रोजन-बम से कितनी ऊर्जा निकली । वह निर्भर होता है, बम से उत्पन्न होनेवाले तापमान पर । और बड़ी ही विचित्र बात है कि हाइड्रोजन-बम से भी लगभग उतना ही तापमान उत्पन्न होता है, जितना कि अणु-बम से ।

इसलिए हम कह सकते हैं कि अणुशस्त्रों द्वारा मनुष्य अपना सर्वनाश भले कर ले; मगर धरती तो सुरक्षित ही रहेगी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो टूक बात

कश्मीर के संबंध में अब हमें राष्ट्रसंघ से दो टूक बात कह देनी चाहिये।

फ्रैंक मोराइस

राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् कश्मीर के तथ्यों से अच्छी तरह परिचित है; फिर अपने दुराग्रह के कारण उन्हें स्वीकार नहीं करती है। (दरअसल सुकर्ण और चेयर-माओ जैसे चंद पेशेवर कलाबाजों के सिवा सारी दुनिया इन तथ्यों को जानती व मानती है।) यही राष्ट्रसंघ का असली पाप है जो कि पिछले सत्रह साल से गतिरोध बनाये रहने और इस समस्या का कोई संक्षिप्त, तर्कसंगत और उचित समाधान न निकलने का मुख्य कारण है।

जब तक राष्ट्रसंघ आक्रांता और आक्रांत को एक ही कोटि में रखकर देखने का गंदा खेल नहीं छोड़ेगा, तब तक तथाकथित 'कश्मीर-गतिरोध' के सुलझने की कोई संभावना नहीं है। सारा सभ्य संसार न्याय की इस बुनियादी उसूल को जानता है कि अपराधी और उसके शिकार दोनों को एक कोटि में रखने का अर्थ है—न्याय के तराजू में अपराधी का पलड़ा पहले से भारी कर देना और फिर न्याय, औचित्य एवं दलील को धता बता देना।

अठारह साल पहले भी और आज भी, कश्मीर के मामले में निर्भ्रांत-निरपेक्ष तथ्य एक ही है और वह है—पाकिस्तानी आक्रमण। और एकमात्र साक्षेप तथ्य है—भारत द्वारा जनमत-संग्रह का प्रस्ताव।

फिर भी सुरक्षा-परिषद् केवल दूसरी बात को पकड़कर बैठ गयी है और पहली चीज को हाथ भी नहीं लगाना चाहती। परिषद् की आंखें किस प्रकार पूर्वग्रह और पीलिया से ग्रस्त हैं, यह एक और बात से भी स्पष्ट हो जाता है। सुरक्षा-परिषद् १९४७ से ही हमसे कहती आ रही है कि आक्रमण को भूल जाओ; क्योंकि वह बात बहुत पुरानी पड़ चुकी है। मगर यही सुरक्षा-परिषद् कोरिया के मामले में ऐसा करने को तैयार नहीं हुई; क्योंकि उसमें पश्चिमी देशों का स्वार्थ आड़े आता था।

बड़े अचरज और चक्कर में डालनेवाली चीज है कि भारत के मामले में उसने एक नहीं, दो-दो बार—यानी पहले अक्टूबर १९४७ में और अठारह साल पश्चात् अब दूसरे आकमण के बाद—यही बात कही है। क्या आंखों पर परदा डालकर बैठ जाने व दुराग्रह की इससे आगे भी कोई हद है?

सुरक्षा-परिषद् एक ओर तो आक्रमण के स्वयंसिद्ध तथ्य को भुला एवं नजरअंदाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर रही है,दूसरी ओर जनमत-संग्रह के सशर्त प्रस्ताव की निरंतर रट लगाये हुए है। अगर आक्रमण-रूपी निर्भ्रांत-निरपेक्ष तथ्य भुला देने योग्य है, तो जनमत-संग्रह के सशर्त प्रस्ताव को ही क्यों याद रखा जाता है? स्पष्ट ही इसलिए कि उससे कुछ कुछ राष्ट्रों का स्वार्थ सधता है।

भारत का प्रस्ताव सुझाव मात्र था, वचन नहीं। वह 'वचन' तभी बनता, जब पाकिस्तान वे सब शर्तें पूरी कर देता, जो भारत ने उस प्रस्ताव के साथ जोड़ी थीं। पाकिस्तान ने वे शर्तें (तथाकथित आजाद कश्मीर से अपनी सेनाएं हटाना आदि) तो पूरी की ही नहीं; बल्कि जिसे वह स्वयं भी विवाद-ग्रस्त इलाका मानता है, ऐसे प्रदेश का काफी हिस्सा चीन को भेंट कर दिया। चीन का समर्थन खरीदने के लिए पाकिस्तान ने उसे ऐसा भूमिभाग दे डाला है, जो कि अगर कल चीन का मन पलट जाये और वह हिन्दुस्तान व पाकिस्तान पर हमला कर दे, तो दोनों देशों के लिए प्रतिरक्षा की दृष्टि से बड़े महत्व का हो सकता है।

किसी व्यक्ति या देश ने कोई सशर्त प्रस्ताव रखा हो, तो उससे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अनिश्चित काल तक दूसरे पक्ष की मर्जी की प्रतीक्षा में बैठा रहे। क्योंकि इस तरह तो दूसरा पक्ष उसे अनिश्चित काल तक अधर में लटकाये रख सकता है। मगर अपने मित्र राष्ट्रों की मदद और सांठ-गांठ से पाकिस्तान ठीक यही करने को इच्छुक और प्रयत्नशील है।

बात को स्पष्ट करने के लिए मैं एक मोटी मिसाल देता हूं, जिसे हम सब समझ सकते हैं। मान लीजिये, मुझे अपना मकान बेचना है और ७० हजार रुपये में सौदा निपटाने को मैं तैयार हूं। एक आदमी १० हजार रुपये देने को तैयार हो जाता है। तो क्या अब मुझे इस आदमी की खातिर अनिश्चित अवधि तक हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहना होगा?

यह तो न्याय और नैतिकता का सरासर उल्लंघन है कि किसी पक्ष को उसके ऐसे किसी प्रस्ताव से बंधा हुआ माना जाये, जिसकी शर्तों को दूसरे पक्ष ने न केवल पूरा नहीं किया है, बल्कि सीने पर तमंचा तानकर दो-दो बार तोड़ा है।

आज भारत जो इस स्थिति में आ पड़ा है, उसके लिए राष्ट्रसंघ के सामने भक्तिपूर्वक माथा टेकते रहने की हमारी जड़तापूर्ण नीति भी जिम्मेदार है। मगर इस बार हम किसी के आगे माथा नहीं टेकेंगे।

भारत, मुख्यतः एशिया में और यों समूचे विश्व में, कुछ निश्चित आदर्शों को लेकर खड़ा है। हमारा देश तीन चीजों से दिलोजान से प्यार करता है: १. शांति—क्योंकि उसके बिना हमारी आर्थिक उन्नति और समृद्धि संभव नहीं; २. लोकतंत्र—क्योंकि उसमें हमारी आस्था है; और ३. धर्मनिरपेक्षता—जिसके अभाव में हमारा अस्तित्व सांप्रदायिक राजतंत्र एवं धार्मिक विरोध-वैमनस्य से विच्छिन्न इस उपमहाद्वीप में एवं उसके बाहर निरर्थक और गौरवहीन रह जाता है। ['इंडियन एक्स्प्रेस' से साभार]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

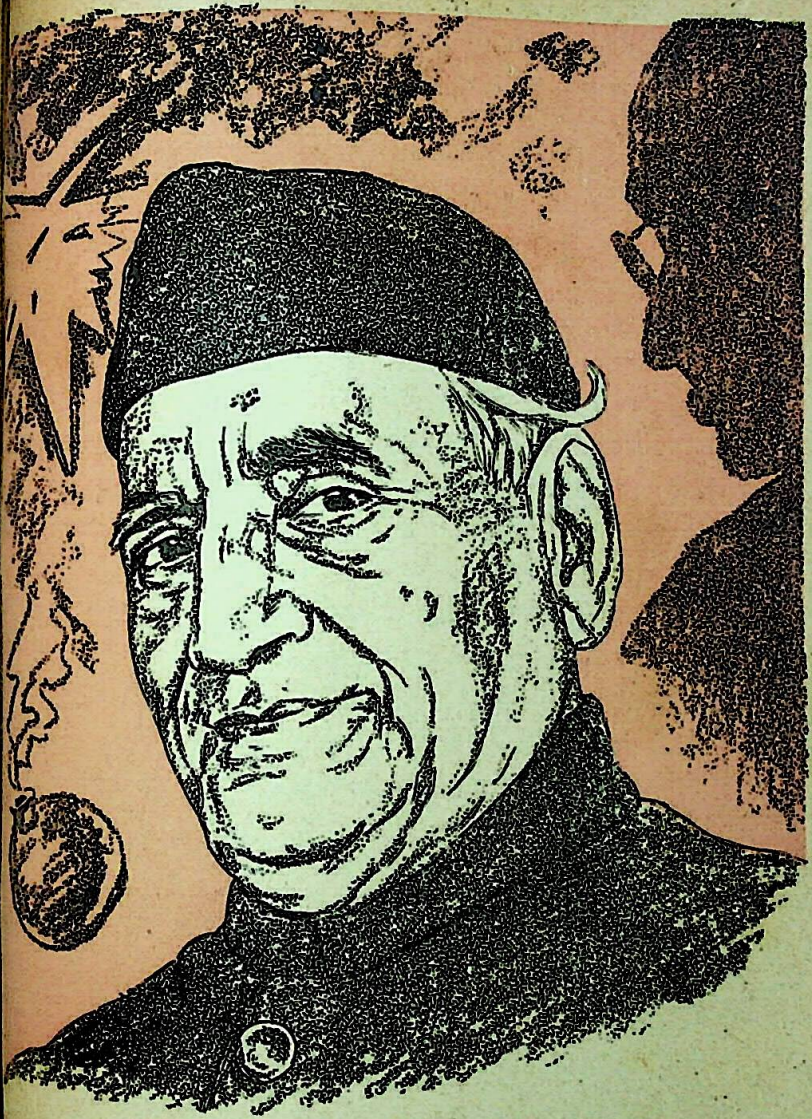

क्रांतिपथ का पथिक

— पृथ्वीसिंह 'आजाद'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का सारा ही जीवन क्रांतिशील देशसेवा में बीता है और आज पचहत्तर वर्ष की अवस्था में भी वे शांतिप्रिय नहीं, क्रांतिप्रिय ही हैं। "पिंजरा पुराना होने मात्र से शेर बूढ़ा नहीं हो जाता।"

'क्रांतिपथ का पथिक' बाबाजी की प्राणरस-सिक्त आत्मकथा है, जिसकी भूमिका में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने ठीक ही कहा है--"यह तूफानों के बीच नाव खेते रहने की कहानी है।"

आज जब देश की नाव तूफान में है, इस प्रेरणा-प्रद पुस्तक का संक्षेप प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करने के लिए हम प्रज्ञा प्रकाशन, चंडीगढ़ के आभारी हैं।

हम पंजाब में अंबाला-कालका सड़क पर चल रहे हैं। अंबाला शहर से सात मील आगे एक छोटे-से गांव में आ पहुंचे हैं। यह है लालडू। यहां चौधरियों की पट्टी विशेष प्रसिद्ध है, जिसमें 'फाड़िया' नाम का एक घराना है। इसी घराने के एक पुत्र थे चौधरी शादीराम। ये थे मेरे पिता।

मेरे दादा अर्जुनसिंह चार भाई थे। उनकी आर्थिक स्थिति तो संतोषजनक न थी; परंतु शारीरिक बल, स्वास्थ्य और साहस में वे अद्वितीय थे। योजना-शक्ति, बल और वीरता उन्हें विरासत में मिली थी। गांव के अपराधियों को दंड देने का अधिकार गांववालों ने उनके सुपुर्द कर रखा था। गोरी चमड़ीवालों से उन्हें शुरू से ही घृणा थी।

मेरी माता चौहान वंश की थीं। डांगरी नदी के किनारे सर्कपुर टाबर नामक गांव में उनका जन्म हुआ था। मेरी माता के चार भाई थे। सभी को शिकार करने में बेहद दिलचस्पी थी। अपनी वीरता और शक्ति के कारण उस इलाके में वे प्रसिद्ध थे।

खांडे की घुट्टी

मेरा जन्म १५ सितंबर १८९२ को ननिहाल में ही हुआ। भट्टि-कुल में यह रिवाज है कि पुत्रजन्म पर बच्चे को खांडे की घुट्टी पिलायी जाती है। आशय यह है कि वह लड़का अपने जीवन में हर मूल्यवान् वस्तु की रक्षा तलवार के सहारे कर सके। पुत्री को जलता दीपक दिखाया जाता है। दीपक प्रकाश और सतीत्व का द्योतक है।

कहते हैं, लगभग तीन सौ साल पहले मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्षों को दुर्भिक्ष से पीड़ित होकर अपनी
भूमि जैसलमेर को छोड़ना पड़ा था।
उसी प्रकार की विपत्तियों के कारण,
पिता शादीराम को भी अपना जन्म-
लालडू छोड़ना पड़ा। वर्मा में उनके
भाई चौधरी नारायणसिंह फौजी पुलिस
अधिकारी थे। पिताजी उनके पास जा
हे। उस समय मैं निरा अबोध बालक
। इस पर भी पिताजी के जाने के बाद,
श्रम के कारण जो शारीरिक और मान-
क कष्ट उठाने पड़े थे, वे आज तक भुलाये
हीं जा सके हैं।

चूल्हे पर कारतूस

अपने बचपन के कुछ ही वर्ष मैंने लालडू
व में बिताये। उन दिनों जो एक खतरनाक
ना घटी, आज भी वह एक ढंग से मेरे
वन में ओतप्रोत है। शिमला जानेवाली
ारी फौजों का पड़ाव लालडू गांव में पड़ा
करता था। पड़ाव के उठ जाने के बाद गांव
के बालक वहां जाकर बिखरी पड़ी वस्तुओं
को बटोरने में जुट जाते। पैसे, चाकू, बटन,
बूटों के तस्मे, कागज, पेंसिल आदि कई वस्तुएं
बालकों के हाथ लगतीं। मैं भी अपने साथियों
के साथ फौजी पड़ाव पर चला जाता।

एक दिन कूड़ा-करकट
टोरते समय एक कारतूस
मेरे हाथ लगा। उसे लेकर
मैं घर चला आया। मेरे
पास कारतूस है, यह भेद
मैंने किसी को भी नहीं
बताया। मैंने सुन रखा था
कि कारतूस में बारूद होती है, जिसमें आग
लगाने से गोली निकलती है। मैंने इसका
साक्षात् प्रयोग देखने की दिल में ठान ली।
घर पर चूल्हे में आग जल रही थी। चूल्हे के
सामने मेरी दादी बैठी थीं। मैंने चुपके-से
जाकर आग पर कारतूस रख दिया। तुरंत
भयानक विस्फोट हुआ और गोली दादी
की टांग में जा लगी। खून का स्रोत फूट
निकला।

धमाके की आवाज आस-पास के घरों
में पहुंची। कुछ ही क्षणों में हमारे रसोईघर
में स्त्रियों की बाढ़-सी आ गयी और मैं डर
के मारे बाहर भाग गया। रात तक मैं इधर-
उधर घूमता रहा; लेकिन जब पेट में चूहे
कूदने लगे, घर लौट आया। मुझे आश्चर्य
हुआ कि मेरे दादा और दादी ने मुझे एक
शब्द तक न कहा। उनकी सहन-शक्ति और
बच्चों के प्रति ममता का एक अनोखा दृश्य
मेरे दिल पर सदा के लिए अंकित हो गया।

दुर्भिक्ष के दिनों में मेरे दादा-दादी ने हमें
सहारा दिया। उनके स्वर्गवास के बाद मेरे
मामा मुझे और मेरे छोटे भाई को ननिहाल
ले गये। वहां मैंने दस वर्ष बिताये। मामा-
जी को शिकार का शौक था। मुझे भी वे

ग्रामजीवन की एक झांकी—चित्र : मालवणकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ ले जाते। मेरे जीवन में से हर प्रकार का डर उठ चुका था। जंगली जानवरों को पकड़ लेना मेरे लिए सहज हो गया था। इसी वातावरण की देन थी कि हृदय में साहस-पूर्ण आत्मविश्वास जाग गया था।

बर्मा में समाधि

उन्हीं दिनों एक रोज एक किसान ने मुझे बतलाया कि तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारे लिए एक सौ रुपये का मनीआर्डर भेजा है। मनी-आर्डर बर्मा से आया था। बर्मा में पिताजी अपने बड़े भाई चौधरी नारायणसिंह के पास रहते थे, जो वहां अंग्रेज सेना के एक कर्मचारी थे। वहां उन्होंने दूध का काम किया था।

कुछ दिन बाद चौधरी नारायणसिंहजी अपना विवाह करने भारत आये तथा मुझे और मेरे भाई—दोनों को बर्मा ले गये। रेल और जहाज में बैठने का यह मेरा पहला ही मौका था।

वहां पहुंचकर पिताजी से मिला। पिता-जी के पास ६० गायें व ३०० भेड़-बकरियां थीं। उन्होंने हमें स्कूल में दाखिल करा दिया। कुछ ही दिनों में मैं उर्दू की किताबें और समाचार-पत्र पढ़ने लगा। उन दिनों पत्रों में जापान-रूस के युद्ध, बंग-भंग आंदोलन, लाला लाजपतराय और तिलक के देश-निर्वासन की खबरें छपती थीं। उन्हें पढ़कर मुझ पर भी देशप्रेम का रंग चढ़ने लगा।

साथ ही एक और चित्र भी मेरी आंखों के आगे उभरा। पिताजी की साधु-सेवा में बड़ी रुचि थी। अनेक बौद्ध भिक्षु प्रतिदिन हमारे मकान पर भिक्षा लेने आते थे। पिता-जी से मैं राम-नाम की चर्चा भी सुना करता था। मैं स्कूल से आता और अवसर निकट जंगल में एक सरोवर के किनारे जप-तप के लिए जा बैठता।

बौद्ध भिक्षुओं से मैंने सुना था कि बुद्ध भगवान वन में जाकर तप किया करते थे। मेरे दिल पर इसका अजीब प्रभाव पड़ा। एक बार इसी भावावेश में मैंने जंगल की राह ली और एक ऐसे पर्वत पर चढ़ा, जो वृक्षों से ढंका हुआ था। मैं वहां एक बड़ी चट्टान पर समाधि लगाकर बैठ गया। शाम होने लगी थी। मुझे भूख-प्यास सताने लगी।

तभी जंगल में लकड़ी काटनेवाला एक लकड़हारा उधर आ निकला। उसने मुझे निर्जन स्थान में समाधि लगाये देखकर हैरानी से पूछा—"तू यहां कैसे पहुंचा?" उसे मैं कैसे समझाता कि मैं भजन में लगा हुआ हूं! मैंने उसे समझाने की भरसक कोशिश की, पर वह न समझा। आखिर उसने मेरे पिताजी का नाम पूछा। नाम सुनते ही उसकी दिलचस्पी बढ़ी; क्योंकि पिताजी के नाम से वह भली भांति परिचित था। उसने मुझे बताया —"तुम्हारे ताऊजी को मैंने अभी देखा है। वे एक सैनिक टुकड़ी के साथ इसी जंगल में घूम रहे हैं और कुछ तलाश कर रहे हैं।"

यह सुनकर मैं बेचैन हो उठा। भूखा-प्यासा तो था ही, वहां से उठकर मैंने गांव की राह ली। सामने से आनेवाले लड़कों और लड़कियों की टोली ने मुझे देखा, तो वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए मेरे पास आ पहुंचे और मुझे लिया। सभी प्यार के आंसू बहा रहे थे और सवाल-पर-सवाल पूछ रहे थे।

देशप्रेम की अलख

उस समय मैं पंद्रह वर्ष का था। अपने आस-पास मैं भारतीय युवकों तथा बर्मी युवतियों के प्रेम-प्रसंग देखता था; मगर मेरे मन में तो देशप्रेम का दीपक जल चुका था और मेरा मन सांसारिक प्रेम से बिलकुल उचाट हो गया था।

मेरा मन अपने देश लौट आने को व्याकुल हो उठा। एक सैनिक टुकड़ी के साथ मैं अपने वतन आ गया। यहां पर मैं आर्य-समाज के प्रभाव में आया। देशप्रेम के जोशीले गाने सुने। दो वर्ष तक मैं इसी रंग में रंगा रहा और सारी वायु देश को समर्पित कर देने के स्वप्न लेने लगा।

देशभक्ति की अलमस्ती
तरुण पृथ्वीसिंह

मगर इतने में बर्मा से पिताजी के बीमार होने की खबर पहुंची। मुझे बर्मा वापस जाना पड़ा। मगर मेरा मन स्थिर न हुआ। मैं भागने की तदबीरें सोचता रहा। घर का हिसाब-किताब मेरे पास ही रहता था। सौ रुपये कब्जे में किये और पिताजी से यह कहकर कि किसी मित्र से मिलने जा रहा हूं, मैंने वहां के वायुमंडल से छुटकारा पाया।

उसी समय पीनांग की ओर एक जहाज जानेवाला था, उस पर सवार हो गया। पीनांग के गुरुद्वारे में कई हिन्दी मुसाफिरों से भेंट हुई। उनके साथ सिंगापुर पहुंचा। मगर वहां भी दिल न लगा। एक सफरी जहाज हांगकांग जा रहा था। उस पर सवार हो गया। तूफान आने से जहाज तेरह दिन मौत से लड़ता रहा। हांगकांग पहुंचकर गुरुद्वारे में एक सज्जन श्री बसंतसिंह से भेंट हो गयी। उनसे मिलकर मेरे मन में अमरीका जाकर ज्ञान प्राप्त करने और वहां से देश को स्वतंत्र कराने का आंदोलन करने की उत्कट इच्छा जागृत हो गयी।

अमरीका जाने के लिए मनीला (फिलिपीन) के अलावा कोई रास्ता न था। मैं साथी बसंतसिंह की सहायता से मनीला पहुंच गया। वहां मुझे तीन महीने तक फेरी का धंधा करना पड़ा।

गदर-पार्टी में

मनीला में मेरे कई अच्छे दोस्त बन गये। उनकी सहायता से मैं एक दिन 'मिनेसोटा' नाम के ३५ हजार टन के जहाज में सवार होकर अमरीका के लिए रवाना हो गया। एक महीने बाद अमरीका पहुंचा। यह १९१२ की बात है। बंदरगाह पर मुझसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्योहारों के
समय उषा
उपहार में
दीजिये

सुन्दर उपहार के लिये यही सबसे बढ़िया अवसर हैं। क्यों न उषा सिलाई मशीन ही दीजिये! अपने बजट के अनुसार पाँच विभिन्न मॉडिल मे से एक छाँट लीजिये। हर एक उषा सिलाई मशीन उच्च कारिगरी और क्वालिटी में सर्वोत्तम है तथा सिलाई की सुविधा के लिये उनमें विभिन्न व्यवस्थाएँ की गई हैं। उषा से सिलाई उनके खाली समयों को और भी आनन्दपूर्ण बना देगी।

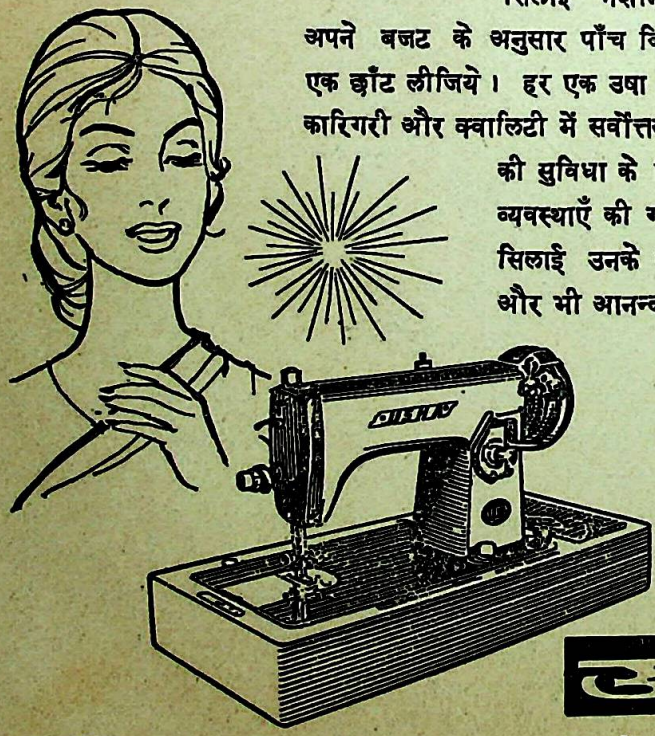

आराम से
सिलाई कीजिये

उषा

से सिलाई कीजिये

जय इंजिनियरिंग वर्क्स लिमिटेड
कलकत्ता-३१

JESM/G/478

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया—"तुम्हारे अमरीका आने का क्या
देश है ?"

"मैं अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों की
ामी से छुड़ाने की तरकीब सीखने यहां
ा हूं।" मेरा उत्तर था।

अगले दिन रेलगाड़ी से मैं कैलिफोर्निया
ा। वहां मेरे साथी सभी पंजाब के मेह-
नकश बलवान किसान थे। उनसे मेरा
रिचय हुआ। मगर जिनसे मिलकर मेरे
देश के स्वप्न पूरे होने की आशा जागृत
ई वे थे—बाबा केसरसिंह, श्री ऊधमसिंह
और श्री बलवंतसिंह।

उन्हीं दिनों लाला हरदयालजी की प्रेरणा
से अमरीकावासी भारतीयों ने सशस्त्र
क्रांति करने का संकल्प किया। देशभक्तों
की गुप्त गोष्ठियां होने लगीं। 'गदर' और
'युगांतर' अखबार निकाले गये। अखबार
की छपाई का सारा काम मैंने और मेरे साथी
बलवंतसिंहजी ने अपने ऊपर ले लिया।

परंतु अंग्रेजों के दबाव पर अमरीकी
सरकार ने लाला हरदयाल को गिरफ्तार
कर लिया। स्वातंत्र्य-वीर सावरकर भी
इंग्लैंड में ऐसे ही गिरफ्तार किये गये थे।
वह इतिहास बड़ा रोमांचकारी है।

सावरकर का साहस

शायद ही ऐसा कोई देशप्रेमी होगा, जो
वीर विनायक दामोदर सावरकर के ज्वलंत
जीवन से परिचित न हो। उन्होंने बहुत-सी
पुस्तकें लिखी हैं। 'स्वातंत्र्य-संग्राम' तो
उनका जगद्विख्यात ग्रंथ है।

इंग्लैंड में जब श्री मदनलाल धींगड़ा ने
कर्जन विली को गोली का निशाना बनाया,
उसी सिलसिले में सावरकरजी को भी पकड़
लिया गया। उन पर राजद्रोह का अपराध
लगाकर मुकद्दमा चलाने के लिए जब उन्हें
जहाज के एक कमरे में बंद कर फौजी पहरे
में हिन्दुस्तान ले जाया जा रहा था, तो वीर
सावरकर ने उन्हें अपनी शक्ति का परिचय
कराना चाहा।

उन्होंने लंगोट कसकर, बदन पर तेल
चुपड़ा और उस पर थोड़ा-सा साबुन लगाया,
इस प्रकार बदन को काफी चिकना बना
लिया। जहाज के छोटे-छोटे कमरों में बाहर
से हवा आने के लिए सुराख (पोर्ट होल)
रखा जाता है। उसी सुराख में से अपने
सिकुड़े हुए बदन को सावरकर ने बाहर
निकाल लिया और समुद्र में कूद पड़े। समुद्री
लहरों को चीरकर तैरते हुए वे फ्रांस के
किनारे पर जा लगे।

फौजी पहरेदार ने गोली चलायी और
शोर मचाया। जहाज पर से किश्तियां
उतारी गयीं और सावरकर का पीछा
किया गया। सावरकर ने किनारे पर खड़े
हुए फ्रांसीसी पुलिस-सिपाही का आसरा
लिया। अंग्रेजों की पुलिस भी वहां आ पहुंची
और ताकत से सावरकरजी को पकड़कर
फिर जहाज पर लाद लिया। फ्रांस की भूमि
पर से एक इन्कलाब-पसंद को पकड़कर
अंग्रेजों ने फिर बंदी बना लिया; पर फ्रांस की
हुकूमत ने इसका कोई विरोध नहीं किया।

महायुद्ध से पहले समूचे संसार में अंग्रेजों
के बल की धाक जमी हुई थी। किसी की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिम्मत नहीं थी कि उन्हें ललकार सके। सावरकर की घटना पर सोचते हुए हमें अमरीका पर भी विश्वास न रहा। यदि अमरीकी सरकार ने अंग्रेजों के इशारे पर लाला हरदयाल को अंग्रेजों के हवाले कर दिया, तो उन्हें भी काले पानी में सावरकर के साथ ही सड़ना पड़ेगा।

इसी डर से एक तरकीब सोची गयी। लालाजी को एक हजार डालर की जमानत पर गिरफ्तारी से छुड़ा लिया गया। फिर यह फैसला हुआ कि एक हजार डालर और इकट्ठा करके उन्हें बचा लिया जाये। इस तरह अमरीकी इन्कलाब-पसंदों के सहकार से लालाजी को न्यूयार्क के रास्ते जहाज में बैठाकर स्विट्जरलैंड पहुंचा दिया गया।

युद्ध-भूमि की ओर

उन दिनों महायुद्ध के बादल सब ओर मंडरा रहे थे। हम भी महायुद्ध के शुरू होते ही भारत में सशस्त्र क्रांति करने की तैयारी करने लगे। हम सैनिक शिक्षा भी लेने लगे और विस्फोटक बम बनाना सीखने लगे।

आखिर महायुद्ध शुरू हो गया। तभी अमरीका की एक विशाल नगरी सेक्रेमेंटो में हिन्द की आजादी से प्रेम करनेवालों की एक बड़ी सभा हुई। गदर-पार्टी के नेताओं के जोशीले भाषण इसमें हुए।

हमें निश्चय हो गया था कि अब जर्मन फौजें बहुत जल्दी अंग्रेजी सेनाओं को हरा देंगी। उसी समय भारत में सशस्त्र क्रांति करने के इरादे से हम १५० आजादी के मतवाले 'प्रिंसेस कोरिया' जहाज पर चढ़कर भारत के लिए चल पड़े। कुछ दिन बाद यह जहाज हवाई द्वीप पहुंचा। हवाई से चलकर हम जापान के विशाल नगर योकोहामा पहुंचे और वहां से मनीला।

मनीला के बाद हम ब्रिटिश साम्राज्य के एक बड़े नगर हांगकांग में पहुंचे। वहां कुछ लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करके उस द्वीप पर अधिकार करने की बात कही। मगर हम तो दिल्ली के लालकिले पर अपना झंडा गाड़ने की धुन में थे। आखिर हम सिंगापुर पहुंचे और वहां से हम पीनांग आये। यहां बंदरगाह पर ही कुछ दिन रुके रहे। बाद में रंगून की तरफ रवाना हुए। हमने देखा, रंगून के बंदरगाह से हजारों भारतीय फौजियों को जहाज से लादकर जर्मनी के विरुद्ध लड़ने को भेजा जा रहा था। हमने उन्हें ललकार कर कहा—"लड़ने के लिए मत जाओ।"

क्रांतिकारियों की धरपकड़

वहां से हम आगे बढ़े। और जब हम कलकत्ता बंदरगाह के नजदीक पहुंचे, तो जहाज को सिग्नल द्वारा रोका गया और बंदरगाह के कुछ अधिकारी ऊपर चढ़ आये। सारे मुसाफिरों को जहाज की छत पर खड़ा कर दिया गया। जो अधिकारी जहाज पर चढ़े थे, वे ऐसा दिखावा कर रहे थे कि वे सब डाक्टर हैं और जहाज पर इसलिए आये हैं कि वे भली प्रकार जांच-पड़ताल कर सकें कि इनमें कोई खतरनाक बीमारी तो नहीं।

हम सब कतार में खड़े थे और वे अफसर हमारे बदन के हर अंग को कपड़ों के नीचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डालकर टटोल रहे थे। उन्हें इस बात की तलाशी करनी थी कि इन मुसाफिरों ने अपने बदन में कोई हथियार तो छिपा नहीं रखे हैं।

जो पिस्तौलें हमारे साथियों ने हांगकांग में खरीदी थीं, वे सब कलकत्ता बंदरगाह पर उतरने से पहले ही पंडित जगतराम के हवाले कर दी गयी थीं। उन्होंने सारे हथियारों को एक पेटी में बंद कर छिपे रूप से उस बंगाली डाक्टर के कमरे में ले जाकर रख दिया, जो 'तोसामारू' जहाज का चिकित्सा-अधिकारी था।

जब जहाज जेटी पर जा लगा, तो हमने छत पर जाकर देखा कि जहाज के दोनों तरफ अंग्रेज और गोरखे फौजी सिपाही बंदूक लिये खड़े हैं। दोनों तरफ मशीन-गनें लगी हुई थीं। यह दृश्य देखते ही हम सब जान गये कि वही स्थिति आ पहुंची है, जिसकी आशंका हमारे दिलों में उठ रही थी।

शिकार बच निकला

जहाज पर दूसरे भी सैकड़ों हिन्दी मुसाफिर थे, जो शक्ल, कद और लिबास से हमारे जैसे नजर आते थे। हममें से ज्यादातर तो ऐसे पले हुए थे, जैसे देवी के मंदिर में चढ़ाये जाने के लिए बकरे। आंखों में सुरूर था और चेहरों पर जीवन का तेज। अमरीकी लिबास भी सभी के बदन पर था। अंग्रेज पुलिस-अधिकारियों ने चुन-चुनकर हमें जहाज से उतारना शुरू किया। हममें से एक ही ऐसा था, जिसे कुछ दूर की सूझी। उसने अपना कीमती लिबास उतारकर किसी गरीब मुसाफिर के हवाले कर दिया और उसके पुराने कपड़े पहनकर दूसरे मुसाफिरों में मिल गया। वह था हमारा पुराना मनचला नौजवान – पंडित जगतराम भारद्वाज।

मां के अपमान का प्रतिशोध
मदनलाल धींगड़ा

पंडित जगतराम उतरने के लिए तो सुरक्षित हो गये; लेकिन उनके मन में यह बात आयी कि पिस्तौलों से भरी पेटी को डाक्टर की कैबिन में ही कैसे छोड़ दिया जाये? ऐसे नाजुक समय पर डाक्टर के कमरे में जाकर पेटी को उठा लाना। सचमुच ही जान पर खेलने के समान था। पर पंडित जगतराम ने इसे कर डालने का निर्णय किया। और वे डाक्टर के कमरे में दाखिल हो गये। पेटी उठाकर बाहर तो आ गये; मगर उन्हें वह बाहर ही फेंक देनी पड़ी। स्वयं वे बड़ी ही होशियारी से मुसाफिरों में घुसकर जहाज पर से उतर गये।

हम सबको गिरफ्तार करके कलकत्ता से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मॉस्को में रुकिए!

लन्दन जाते हुए ज़्यादा किराया दिये
बिना ही मॉस्को में रुकिए! जादूभरे संगीत
तथा कला और नृत्य के लिए
प्रसिद्ध नगरी 'मॉस्को' देखिए...
इस अनोखी राजधानी में
शानदार रूसी शिल्पकला के दर्शन कीजिए
...क्रेमलिन और रेड स्क्वेयर भी देखिए।
दिल्ली से लन्दन जल्द से जल्द
पहुँचने का रास्ता
मॉस्को होते हुए है!

हफ़्ते में दो बार
बम्बई • दिल्ली • मॉस्को • लन्दन

IWT-AI-4022

एअर - इंडिया
सहयोगी : बी.ओ.ए.सी. तथा कैण्टस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...हौर ले जाया गया। गाड़ी जब रायविंड ...र रुकी, तो एक फौजी अफसर हाथ में ...ज लेकर उतरा और उसने उस पर लिखे ...म पढ़ने शुरू किये। किसी और के नाम ...र मैं फुर्ती से उठा और भीड़ में खो गया।

रिवाल्वर की छीना-झपटी

वहां से भागकर पहले मैं अपने गांव ...लड़ू गया और बाद में मैंने इन्कलाबी पार्टी ...नायी। लाहौर में भाई परमानंद की ...र्मेसी हमारा सबसे बड़ा अड्डा थी। उधर ...ंग्रेजों ने मुझे पकड़ने के लिए जाल बिछा ...खे थे। ७ दिसंबर १९१४ की रात को जब ...मैं अंबाला के राजपूत छात्रावास में ठहरा, ...तो एक खुफिया सिपाही से मेरी मुठभेड़ भी ...हो गयी।

मैं शांत मन से समाचार पढ़ रहा था कि अचानक मेरे सामने एक अलमस्त सिक्ख नौजवान सादे लिबास में आकर खड़ा हुआ और मुझे संबोधन करके कहने लगा—"क्या यह खालसा छात्रावास है?" मैंने कहा—"नहीं।" उत्तर सुनकर फिर भी वह वहीं खड़ा रहा। मैंने अखबार पर से फिर नजर उठाकर जब उसे देखा, तो यह साफ जंच गया कि यह तो मेरा गहरा दोस्त लगता है और मेरे लिए ही आया है। मैंने उसे हंसकर पूछा—"क्यों भाई, और कुछ पूछना है?"

मेरी बात सुनकर उसने समझ लिया कि अब शिकार हाथ लग गया। बड़े नम्रभाव से वह कहने लगा—"मैं लाचारी की हालत में आपके पास आया हूं। मेरा छोटा भाई बगावत करनेवालों के पंजे में फंस गया है। मैंने सुना है कि वह खालसा छात्रावास में छिपकर रहता है। आप मेरे साथ चलें और मेरी सहायता करें।" सो मैंने जो अनुमान किया था, वह ठीक निकला। मैंने उसे कहा—"आइये, कमरे में बैठकर बातें करें। मुझे पूरी बात समझाइये, फिर मैं आपके साथ चलता हूं।"

मैं उसे मित्रभाव के साथ कमरे में ले गया और उसे चारपाई पर बैठाकर पास बैठ गया। इतने में ही मेरे एक पुराने सहपाठी श्री काहनसिंह सजादपुरवाले कहीं से आ टपके। उसे देखते ही वे बोल पड़े—"भाई, यह तो पुलिस का सिपाही है।" और इतना कहकर कमरे से बाहर भाग गये। हमला मुझे करना था; लेकिन उस मित्र के बीच में आने के कारण पुलिसवाले को हमला करने का अवसर मिल गया।

वह सिपाही तो हर तरह से तैयार होकर आया था। उसने फौरन जेब से रिवाल्वर निकाला और मुझ पर चलाना चाहा। हम दोनों के बीच जरा भी फासला नहीं था। अगर फासला होता, तो वह घोड़ा दबाने में कामयाब हो जाता। ज्यों ही उसने रिवाल्वर निकाला, मैंने झपटकर उसकी नली पर कब्जा जमा लिया और उसके हाथ को नीचे दबा दिया।

छुरे के घाव

चित्रपट पर नौजवानों ने कई बार अमरीकी लुटेरों के खेल देखे होंगे। कुछ क्षण तक हमारा भी वैसा ही खेल चला। वह अपनी ताकत के बल से मुझे सामने लाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिवाल्वर चलाना चाहता था; और मैं उसकी पीठ पर जाकर उसे नीचे दबाकर रिवाल्वर छीन लेना चाहता था। आखिर जोर का एक झटका देकर मैंने रिवाल्वर छीन लिया और हम दोनों एक दूसरे से दूर जा पड़े।

हमारा यह खेल कमरे के बाहर हो रहा था। फिर लपककर मैं उसकी तरफ बढ़ा और उसके केश पकड़ लिये। रिवाल्वर मैंने फेंक दिया; क्योंकि मैं उस पर रिवाल्वर चलाना न चाहता था। किसी भी हिन्दी की जान लेना हमारी पार्टी के नियमों के प्रतिकूल था। मैं उसके केश पकड़कर, उसे फिर कमरे में ले जाकर बंद करना चाहता था। उसके दोनों हाथ खाली थे। उसने बड़ी चालाकी के साथ मुझ पर चाकू से वार किया। अगर मैं उसके केश न छोड़ता, तो वह मेरा पेट चीर देता।

गदर-पार्टी के दिमाग
लाला हरदयाल

सरदार अमरसिंह शक्तिशाली जवान था। केशों के छूटते ही वह चाकू लेकर मुझ पर टूट पड़ा। मेरी गर्दन के दोनों तरफ वार लगे। एक घाव तो इतना गहरा था कि अगर एक सूत और गहरा चला जाता, तो उसी क्षण मेरा खात्मा हो जाता। अमरसिंह के वे घाव आज भी मेरी गर्दन पर मौजूद हैं। उसके तीसरे वार को मैंने अपने हाथ पर रोक लिया। छुरे के वार को वही रोक सकते हैं, जिन्होंने छुरे का खेल सीखा हो। मेरी गर्दन की दोनों रगों से फव्वारे की तरह खून बह रहा था।

सर्जन की उपेक्षा

होश से काम करने का मुझे खयाल ही नहीं था। मैंने उसका चाकू भी छीनकर फेंक दिया; और फिर जैसे जख्मी शेर अपने शिकारी पर टूट पड़ता है, मैं भी उछलकर उसकी छाती पर जा गिरा। मन में आया कि गला दबाकर उसे खत्म कर दूं। उसके गले पर हाथ तो डाला; लेकिन खून बहने से मैं इतना विकल हो गया था कि मेरे हाथों में दबाने की ताकत ही नहीं रह गयी थी।

यहां तक तो मैं होश में था; पर इसके बाद मेरे होश उड़ गये। पुलिस कब आयी और हम दोनों को उठाकर अस्पताल में ले गयी, मुझे यह मालूम ही नहीं हुआ। बाद में पुलिस के बयानों से जाहिर हुआ कि हम दोनों बेहोश थे। मुझे अमरसिंह की छाती पर से उठाया गया था। सरदार अमरसिंह के चेहरे का एक हिस्सा ऐसे उखड़ गया था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेड़ पर से छाल उतर जाती है, और ही एक कान भी साफ उड़ गया था। हम दोनों को उठाकर अस्पताल में आप-स्टेबल पर ले जाया गया। मेरी रगों से बहुत बह रहा था, उस पर एक पट्टी रख गयी और सिविल सर्जन सरदार अमर-की देख-भाल में लग गया। एक बागी जान बचाने की निस्वत, हुकूमत के एक चाकर की जान बचाना उसका पहला था। सिविल सर्जन था भी अंग्रेज। उसने आपरेशन कर दिया। बाद में मुझे २० पुलिसवालों के पहरे में उठाकर जेल की तन्हा-कोठरी में बंद कर दिया गया।

जज से छेड़छाड़

इस बीच गदर-पार्टी के साथियों ने भारत में इन्कलाब का आंदोलन शुरू कर दिया था। मगर वे सब २३ फरवरी १९१५ को गिरफ्तार हो गये। उन पर जो मुकद्दमा चला, वह 'लाहौर साजिश केस' नाम से मशहूर है।

लाहौर साजिश केस में मैंने अपना बयान देते हुए यह साबित करने की कोशिश की कि अंग्रेज पुलिस, जो अपनी चतुराई के लिए दुनिया में मशहूर है, वास्तव में मूर्ख है। मैंने अंग्रेज जज को संबोधन करके कहा—"एक रोज लाहौर के अनारकली बाजार में चलते-चलते मैंने पंडित जगतराम से कहा—अरे यार, सुनते थे कि अंग्रेजों की पुलिस बड़ी चतुर है। कोई भी देशभक्त उसकी नजर से नहीं बच सकता। हम दोनों ने अमरीका में रहकर गदर-पार्टी को मजबूत बनाने की हर तरह से कोशिश की, अमरीका से कलकत्ते तक गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते आये कि हम अंग्रेजों के दुश्मन हैं तथा हिन्द में पहुंच-कर उन्हें बरबाद करना हमारा धर्म है। हमें तो यह अंग्रेजों की चालाक पुलिस पकड़ न सकी और बेचारे सीधे-सादे गांववालों को जहाज पर से पकड़कर जेलों में भर दिया।"

जिन शब्दों में मैं आज उस बयान को लिख रहा हूं, उस समय मेरा बयान इनमें न था। मैं तो सीधे-सादे पंजाबी शब्दों में और जवानी के भोलेपन में कह रहा था—"इनां जट्टां-बूटां नूं फड़के जेल बिच बन्द कर दित्ता।" ये शब्द मैंने इसी उद्देश्य से कहे थे कि अपने बयान से मैं उन्हें सीधे-सादे ग्राम-वासी बताकर निर्दोष साबित कर सकूं।

ज्यों ही मेरे साथियों ने मेरा बयान सुना, तो मस्ती में आ गये और बड़े जोर के साथ ठहाका मारकर हंसने लगे। अंग्रेज जज मेरी बातों को सुनकर और इस दृश्य को देखकर बड़ा क्रोधित हुआ। उसे इसमें अंग्रेजी हुकू-मत का बड़ा भारी अपमान प्रतीत हुआ। उसने खामोशी के लिए जोर से घंटी बजायी। मगर घंटी की आवाज साथियों के हंसने की आवाज में गुम हो गयी। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है!

फांसी की कोठरी

१४-९-१९१५ के दिन हमें कोठरियों से निकालकर अलग-अलग टोलियों में अदा-लत में पेश किया गया। जज ने हमारा एक-एक का नाम पुकारकर फैसला सुनाया। मैं जिस टोली में पेश किया गया था, उसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नही होती। यही नही, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की जरूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

B3 DOL. 2A HIN

आपकी प्रिय चीजों को रंगीन कलात्मक रेडिमेड टीन बॉक्सीस में पेक कीजिये

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले: बॉम्बे टिन प्रिन्टर्स
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन ३०१८७

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

सफेद दाग

अर्थात शरीर पर निकलनेवाले सफेदचट्टे सन् १९३६ से प्रसिद्धि प्राप्त औषध मूल्य ६) रु., विवरण मुफ्त मंगाइये

दमा, श्वास गुणकारी औषध मूल्य ६) रुपये।

खुजली अनुभव सिद्ध औषध कीमत ६) रुपये।

पौष्टिक कमजोरी दूर होकर शक्ति मिलती है। मूल्य ६) रुपये।

वैद्य के० आर० बोरकर रजिस्टर्ड प्रैक्टिशनर नं. ७७०९ आयुर्वेद (नीत) मु. मंगरूलपीर जिला—अकोला (महाराष्ट्र)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृत्युदंड पानेवाला अपराधी मैं एक ही था। दूसरों को उम्र-कैद ही मिली। पुलिसवाले मुझे अलग करके फांसी की कोठरी में ले गये। मैं खुश था। मेरे साथियों के चेहरे कह रहे थे—"क्या ही अच्छा होता कि हमें भी मृत्युदंड मिलता।"

फांसी की कोठरी में पहुंचने के बाद हमारे लिए यह मालूम करना कठिन था कि और कैदियों को फांसी की सजा सुनायी गयी है। पहरेदारों से पूछते, तो वे जवाब ही न देते। इतने आदमियों को एक साथ फांसी देने की बात जेल के सिपाहियों को भी भयंकर नजर आती थी। उनके चेहरों पर भी उदासी छायी थी। वे हमसे बात न करते। हमने एक तरकीब निकाली। हमने तय किया कि अपनी-अपनी कोठरी में से हर एक जोर से अपना नाम पुकारे। इस तरह जान गये कि हमारे अंत तक के साथी कौन-कौन हैं।

जेल के जल्लाद को मासिक वेतन के अलावा, एक अपराधी के गले में फांसी का रस्सा डालने के लिए दस रुपये और मिलते थे। जो जल्लाद लाहौर सेंट्रल जेल में नियुक्त था, वह यह खबर पाकर कि २४ आदमियों को एक ही दिन फांसी पर लटकाना है, फूला न समाया। उसने अपने दोस्तों में जाहिर किया कि जिस दिन उसे यह सौभाग्य प्राप्त होगा, वह अपने मुहल्ले में २५ रुपये की मिठाई बांटेगा।

संभव है, अब कोई इस बात पर विश्वास न करे। मगर जब समाज का एक माना हुआ नेता, जिसके वंशज अब भी माननीय स्थान पाकर बैठे हैं, हुकूमत से यह मांग कर सकता था कि हमें रात-भर भी जिंदा न रहने दिया जाये, तो इसमें बेचारे जल्लाद का क्या दोष!

सजा बदल गयी

भाई परमानंद समाज के एक प्रख्यात नेता थे। वे बड़े तेजस्वी विद्वान और योगी पुरुष माने जाते थे। उनके सदाचार के कारण लोग बड़े पूज्यभाव से उन्हें मान देते थे। हिन्द का इतिहास लिखकर वे काफी प्रसिद्ध हो गये थे। देश से अगाध प्यार करने के कारण उन्हें कुछ सालों के लिए देश भी छोड़ना पड़ा। सरकारी वकील उन पर कोई भी अपराध न लगा सका। किसी भी सरकारी गवाह ने इस प्रकार की गवाही नहीं दी कि भाई परमानंद ने कोई जुर्म किया है। फिर भी जब अंग्रेजी अदालत ने उन्हें भी दूसरों के साथ फांसी पर लटकाना चाहा, तो देश-भर में सनसनी फैल गयी। उनके इष्ट-मित्र, आर्यसमाज के सभी नेता और पंडित मदनमोहन मालवीय तथा डा० ऐनी बेसेंट तक सब व्याकुल हो उठे। प्रश्न था कि ऐसे देवतास्वरूप पुरुष को फांसी के रस्से से कैसे बचाया जाये? इसे लेकर एक आंदोलन-सा खड़ा हो गया।

हम २४ आदमियों में से कई ऐसे भी थे, जो अमरीका से आये और भारत के बंदरगाहों पर पकड़े गये। वे किसी भी साजिश में शामिल न थे। पर उन्हें भी मृत्युदंड मिला था। इसलिए अंग्रेजी हुकूमत को फैसले पर फिर से विचार करना पड़ा। वाइसराय की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

QUALITY IS OUR CREED

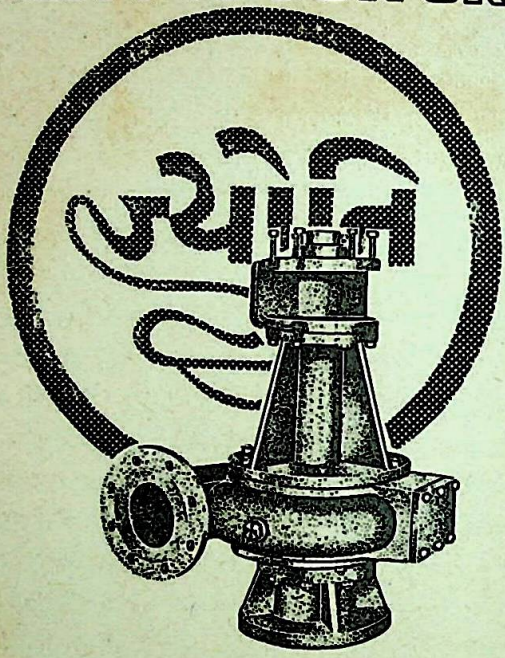

अनोखी रचना

ज्योति वर्टीकल नॉन-क्लॉग पम्प

* सभी लाइन शाफ्टों को एक सीधी रेखामें रखने के लिए बंद प्रकारकी शाफ्ट रचना * कालम पाइप के अपनी जगहपर रहते हुए भी पम्पको अलग करनें की सुविधा * ग्लैण्ड-मुक्त और लीक-प्रूफ रचना * चलाने का कम खर्च।

आकार: १०० मि.मी. X ७५ मि.मी. से ७५० मि.मी. X ६०० मि.मी.
कार्यक्षमता: प्रति मिनट ४५००० लिटर तक
चढ़ाव: ३० मीटर तक

JY-47 HIN. EVEREST

ज्योति लिमिटेड, बड़ौदा ३

शाखाएं—बंबई, नई दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, जयपुर और सिकंदराबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिल में इस पर दो महीने तक विचार
ा। ये हमारी मानसिक यातना के महीने
, अंत में हममें से कुछ को फांसी हो
ी, बाकी अंदमान भेज दिये गये।

× × ×

काले पानी में

मैं अपने ढंग से अपने काम में लगा रहा।
नारियल के छिलकों को कूटकर तार
निकालना कोई आसान काम न था। शाम
चार बजे हमें जेल के
अधिकारी के सामने
नया काम पेश करने
का हुक्म हुआ। मेरे हाथ
में जेल के अधिकारी ने
बुरी रीति से बंधी हुई
रस्सों की गट्ठी देखी।
मिलते ही वह हंस पड़ा।
बोला–"यह इतना काम
तुमने कैसे कर लिया?"
मेरे पास कोई जवाब न
था। मैंने हंसकर कह
दिया–"मैंने किया।"

स्वातंत्र्यवीर
विनायक दामोदर सावरकर

इस बात पर उसे
झगड़ा मोल लेने की जरूरत न थी। वह
मुड़कर चला गया। मेरा कोई भी साथी
अपना निश्चित काम को पूरा न कर सका।
सभी को यह समझाने की कोशिश की
गयी कि आज तो क्षमा किया जाता है,
पर कल इसे पूरा करके लाना होगा। इस
बात को सुनकर किसी ने भी कोई जवाब
न दिया।

जब यही बात फांसीवाले पंडित परमानंद (भाई परमानंद से भिन्न) से कही गयी, तब उन्होंने हंसते हुए जेल-अधिकारी का बड़ा मजाक उड़ाया। जेल-अधिकारी उन्हें पकड़कर खूंख्वार जेलर 'वारी बाबा' के सामने ले गया। बारी ने परमानंद को देखते ही गाली देकर बकवास की। परमानंद ने यही मुनासिब समझा कि अंग्रेजी गाली का अंग्रेजी में जवाब न दिया जाये। अगर अंग्रेजी में गाली दी, तो हिन्दुस्तानी कैदी न समझेंगे। सो उन्होंने बड़े जोर के साथ हिन्दुस्तानी और पंजाबी में गालियों की बौछार लगा दी।

उस 'काले पानी के खुदा' को इस प्रकार की गरम-गरम मसालेदार गालियां सुनने का कभी मौका न मिला होगा। वह क्रोधित होकर पंडित परमानंद को पीटने के लिए आगे बढ़ा। पंडितजी तक हाथ पहुंचने से पहले ही उसका पेट उन तक पहुंच गया। वे चूकनेवाले न थे। उन्होंने सारे जोर से पेट पर लात जड़ दी। 'जेल का खुदा' पलटकर कुर्सी पर जा गिरा। फिर क्या था, सब अफसर पंडितजी पर डंडे लेकर टूट पड़े। उन्हें खूब पीटकर कोठरी में बंद कर दिया गया।

दूसरे रोज उन्हें मेजर मरी के सामने पेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया गया। मरी जेल का मुख्याधिकारी था। उसने नंगे बदन पर बीस बेतों की सजा दी। पंडित परमानंद को लकड़ियों की तिपाई पर बांध दिया गया और जल्लाद को बेंत लगाने के लिए बुलाया गया।

बेंत और घूंसे

बेंत लगाने की विधि भी कोई साधारण न थी। एक उंगली जितनी मोटी पक्की बेत को पानी में भिगोकर रखा गया था। जेल में किसी हट्टे-कट्टे खूनी या डाकू को बेंत लगाने के काम के लिए मुकर्रर किया गया था। जोर से बेंत लगाने की उसकी शक्ति कायम रहे, इसके लिए उसे हर रोज सामान्य कैदी की खुराक के अलावा मांस और दूध दिया जाता था। कैदी को नंगे बदन जकड़कर पहले लकड़ी से उसके हाथ-पैर बांध देते थे। उसके कूल्हों पर एक बारीक भीगा कपड़ा डाल दिया जाता था। जल्लाद जोर से बेंत को दोनों तरफ घुमाकर उसके चूतड़ों पर वार करता था। बेंत के लगते ही चमड़ी उखड़ जाती और खून का फव्वारा छूट पड़ता। एक बेंत लगाने के बाद जल्लाद को एक मिनिट आराम मिलता कि कहीं थक न जाये। पंडित परमानंद को बीस बेंत लगाये गये। फिर उन्हें उठाकर उनकी कोठरी में डाल दिया गया।

कुछ दिन बाद हमारे बुजुर्ग बाबा मानसिंह से बेरी की कहा-सुनी हो गयी। बेरी ने कैदी जमादारों से बाबा मानसिंह को बुरी तरह पिटवाया। मेरे पास भी यह खबर पहुंची कि बाबाजी को इतना पीटा गया है कि वे दो-चार रोज से ज्यादा हर्गिज न जी सकेंगे। मेरे दिल में बाबाजी के लिए बड़ी इज्जत थी।

अनशन के महीने

मैंने बेबसी में भूख-हड़ताल करने का निश्चय किया। इसके अलावा वहां उस अत्याचार के प्रतिकार का कोई उपाय ही न था। मैंने जल-सेवन भी बंद कर दिया।

सात-आठ दिन बाद मुझे चार कैदियों ने उठाकर अस्पताल में पहुंचा दिया। १३ दिन बाद एक रबर की नली मेरी नाक द्वारा पेट तक पहुंचायी गयी और उस नली से आधा सेर दूध मेरे पेट में उतारा गया। फिर तो प्रतिदिन यही होता था। इसी प्रकार तीन महीने बीत गये।

एक रोज कैदी जमादार ने मुझे खबर दी कि साथी रूढ़सिंह बीमार हैं। वे कुछ खा भी नहीं सकते। डाक्टर उनका इलाज भी नहीं करते। उन्हें अपने समय से पहले ही मौत का स्वागत करते देखकर मैं विह्वल हो उठा। मैंने निश्चय किया कि मैं ही पहले मृत्यु की गोद में जाऊंगा। परंतु प्रश्न था– कैसे?

मैं मरने के लिए तैयार हो गया। दरवाजा बंद था। पहरेदार पहरे पर खड़ा था। मैंने अस्पताल के बिछौने को कोठरी से बाहर फेंका और बदन के सारे कपड़े भी उतारकर बाहर फेंक दिये। फिर पहरेदार से कहा कि आज से मेरी जबान भी बंद रहेगी और मैं किसी से भी बात न करूंगा। कपड़े-बिस्तर बाहर फेंककर मैंने साथियों में जाहिर कर दिया कि अब मैं मृत्यु का आलिंगन करना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दिवाली के अवसर पर आपको आनन्दित करने के लिए

३ और नये मरफी माडेल

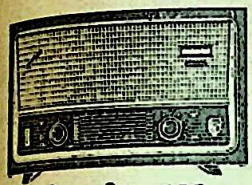

माडेल टीए ०९२६

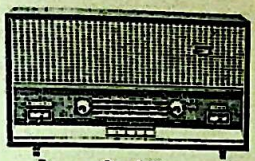

माडेल टीए/टीयू ०७७५

माडेल टीबी ०८१६

आपके मनपसन्द चुनाव के लिए
अन्य अनेक माडेल!

अपने नजदीक के
मरफी विक्रेता से मिलिये।

शर्मिला टागोर, बी.आर फिल्म्स के चित्र 'वक्त' की अभिनेत्री

murphy radio

मरफी रेडियो घर को जगमगाए आता है

Murphy sets the standard

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

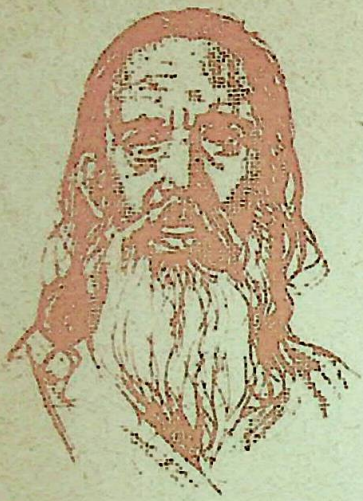

दुर्दमनीय क्रांतिवीर
पंडित परमानंद फांसीवाले

चाहता हूं। पानी का सहारा तो पहले से ही बंद था। अब मैंने समझा कि सर्दी के मौसम में नंगे बदन नंगे फर्श पर जीने की बात कुछ ही दिन की होगी।

मेरे इस पागलपन की हरकत ने सारी जेल में सनसनी फैला दी। साथियों, जेल के अधिकारियों और डाक्टरों सभी को ऐसा लगने लगा कि पृथ्वीसिंह का अपने दिमाग पर काबू नहीं है।

सावरकर का पत्र

वीर विनायक दामोदर सावरकर मुझसे बड़ा प्यार करते थे। उन्हें इस बात का यकीन न आया कि मेरे जैसा युवक कभी पागल हो सकता है। उन्होंने यह बात जानने की कोशिश की। उन्होंने एक बड़ा लंबा-चौड़ा पत्र लिखा और एक हमदर्द कैदी जमादार के साथ मेरे पास पहुंचाया।

मैंने पत्र पढ़ा। वे बड़े प्रभावशाली लेखक हैं। उनके तर्क के सामने तर्क करना आसान नहीं। वे अपने मित्रों को बड़ी आसानी से सहमत कराने की शक्ति रखते हैं। मैंने उनकी एक-एक दलील का जवाब अपनी दलीलों से दिया। मैंने लिखा कि जो कुछ भी मैं कर रहा हूं, अपनी समझ से ठीक ही कर रहा हूं। किसी के लिए भयभीत होने का कारण नहीं। इस खबर ने सबको यकीन दिला दिया कि पृथ्वीसिंह पागल नहीं है, उसकी विचार-शक्ति काम कर रही है।

मच्छर से सीख

जब मैं सावरकर-भाइयों के पत्रों पर विचार कर रहा था, एक मच्छर मुझे सताने लगा। उसने कई बार मुझे काटा। एक बार वह मेरे हाथ में आ गया। हाथ की उंगलियों में उसे खूब दबाया और जब समझा कि मच्छर मर चुका है, मैंने उसे फेंकना चाहा; पर हाथ खोलते ही मच्छर उड़ गया।

मच्छर की तो जान बची और मुझे मेरी जीवन-समस्या का हल मिल गया। दोनों भाइयों के जो पत्र आये थे, उन्हीं पर मैंने मच्छरवाली घटना लिख दी और कहा कि जैसे मच्छर के लिए मेरी हथेली में बचने की जगह रह गयी, इसी प्रकार कुदरत मुझे भी अपनी गोद में सुरक्षित रख सकती है। यदि कोई महान् कार्य मेरे हाथों होना बदा है, तो मैं हर हालत में जीवित रहूंगा। किसी भाई को मेरी चिंता करने की आवश्यकता नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा सारा जीवन एक अगाध श्रद्धा के सहारे लटक रहा था। उस मच्छर की घटना ने मेरी श्रद्धा को मन में और गहरा गाड़ दिया। एक सौ बीस दिन से मैं अकेला उस कोठरी में बैठा अपने विचारों में मग्न रहता था। मैं चार पहरेदारों के बीच था। वे मुझे मित्रभाव से समय-समय पर समझाते भी रहते थे। चारों तरफ से मित्रों की चिट्ठियां आकर देते थे। ऐसी अवस्था में मेरा मन फिर बेचैन रहने लगा।

बीमारी और मौत का नामोनिशान नजर न आता था। अपनी भूख-हड़ताल को जारी रखने का कोई सबल कारण भी मुझे नजर न आता था। एक सौ पच्चीस दिन बीत जाने के बाद, सब साथियों ने मिलकर मेरे पास एक पत्र भेजा। इसमें उन्होंने समझाया था कि भारत के अखबारों में भूख-हड़ताल की काफी चर्चा हुई है। शायद जेल-वाले फिर से कभी हमारे किसी साथी पर अत्याचार करने का साहस न करेंगे। बाबा वारीसिंह के ऊपर जो अत्याचार हुआ, वह अंतिम ही होगा।....जब मेरे साथियों को मेरे भूख-हड़ताल छोड़ने की खबर मिली, तो सभी ने बड़ा संतोष प्रकट किया।

कैदी का पुनरावर्तन

लगभग छः साल अंदमान में कैद रहने के बाद सन् १९२१ के जून या जुलाई महीने में बंदर-मार्टी के सब कैदियों को 'महाराजा' जहाज में भरकर मद्रास बंदरगाह पर उतारा गया। जंजीर की बेड़ियां हमारे पांवों म पहले से ही पड़ी थीं। सिपाही हमें स्टेशन पर ले गये। मुझे कलकत्ता जानेवाली गाड़ी में बैठा दिया गया। मेरे साथ दो और साथी थे।

तीन सिपाही हम पर पहरा दे रहे थे। उन तीनों पुलिस के सिपाहियों पर कब्जा पा लेना हम तीन के लिए कोई मुश्किल न था; क्योंकि हमारे एक-एक हाथ में ही हथकड़ी थी। दायां हाथ खुला था। एक-एक मार देकर हम उनकी बंदूकें छीन सकते थे। और गाड़ी ठहराकर उतरना आसान काम था। मगर मेरे उन दो साथियों ने मेरी बात सुनकर आंखें नीची कर लीं। मैं समझ गया कि इन्हें तो छुटकारे की आशा है, वे मेरे साथी क्यों बनने लगे!

यह देखकर मुझे दुःख हुआ कि कल जो साथी मिलकर मौत का सामना करने के लिए तैयार नजर आते थे, छः साल की जेल ने उनके कलेजों को तोड़ दिया है। मेरे सामने भी जल्दी छुटकारे की आशा होती, तो शायद मेरे मन में भी कोई पागलपन की बात न आती। खैर, मैं निराश होकर लेट गया और नींद ने मुझ पर काबू जमा लिया।

दो घंटे के बाद मैं पेशाब करने के लिए उठा। पुलिसवालों ने मेरी हथकड़ी खोल दी। पेशाब करके जब मैं फिर बाहर आया, तो देखा कि पहरेवाला सिपाही सो गया है। रेलगाड़ी काफी तेज रफ्तार से जा रही थी। जोर की बारिश हो रही थी। गाड़ी के बाहर कुछ नजर न आता था। सिपाहियों को सोते देखकर मेरे मन में उबाल आया और एक क्षण में मैंने इरादा कर लिया कि गाड़ी की खिड़की में से छलांग लगा दूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका जीवनपथ उज्ज्वल हो!

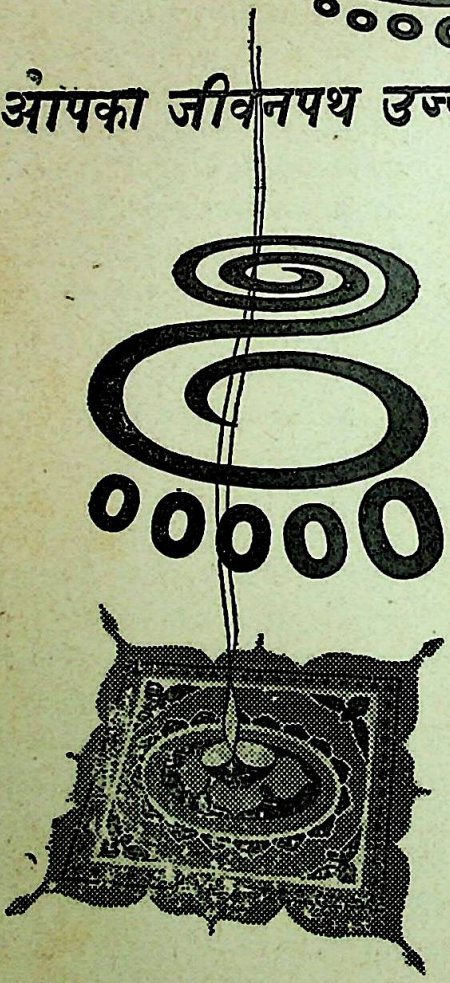

आज के मांगलिक दिन सुख-समृद्धि की अधिष्ठात्री महालक्ष्मी के स्वागत में घर-घर के आँगन-द्वार दीयों से जगमगाते हैं... सर्वत्र उज्ज्वल प्रकाश, परिहास और रंगरलियाँ बिखरे पड़े हैं... सारा वातावरण ही आनन्दविभोर हो उठा है!

यह सारा आनन्द, सारा सुख आपका है—क्योंकि आप सुरक्षित और चिन्तारहित हैं... क्योंकि बैंक ऑफ़ बरोडा ने आपके भविष्य को सुदृढ़ बनाया है!

सुख-समृद्धि के लिए बचत कीजिए!

दि बैंक ऑफ़ बरोडा लि.

(संस्थापित : सन् १९०८) प्रधान कार्यालय: बड़ौदा

JWT-BB-1005

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस, एक छांलग

खिड़की के पास ही मेरा साथी लेटा था। छलांग लगाने के लिए उसके शरीर को हिलना पड़ता था। ज्यों ही मेरी बेड़ी उसके पैर से सटी, उसने घबराकर हाथ मारा। तब तक मैं खिड़की से बाहर निकल चुका था। मुझे उसकी मार का धक्का लगा। उस समय रेलगाड़ी की रफ्तार कम-से-कम ३० मील रही होगी। मेरे साथी की घबराहट ने सबको जगा दिया। सांकल खींची गयी और गाड़ी कोई दो सौ गज के फासले पर जाकर रुक गयी।

मैंने बड़ी सावधानी से छलांग लगायी थी। मैं पैर के बल गिरना चाहता था; परंतु घुटनों के बल गिरा। घुटनों में सख्त चोटें आयीं। उठना कठिन हो गया। मगर शरीर की शक्ति ने साथ दिया। मैं उठकर चला। भागने के सिवा और कोई चारा न था। गाड़ी रुक चुकी थी। तीनों सिपाही मेरे दो साथियों को लेकर नीचे उतर आये। जहां मैं गिरा था, उस तरफ उन्होंने गोलियां चलायीं, ताकि मैं डर के मारे तुरंत वहीं जमीन पर बैठ जाऊं।

ज्यों ही मैं उनसे बचकर आगे बढ़ा, मेरा पैर कांटों की बाड़ से टकराया। सामने लगभग थूहर की बाड़ थी। पीछे मुड़ने का

कालेपानी के एक साथी भाई केसरीसिंह

सवाल न था। मुझे आगे ही बढ़ना था। ऐसे समय पर विचारों को स्थान नहीं मिलता, कार्य करना ही सर्वोपरि होता है। मैंने अपनी आंखों पर हाथ रखे और बाड़ पर से गुलांट खाकर दूसरी तरफ जा गिरा। आंखें तो बच गयीं; परंतु सारे बदन में कांटे चुभ गये।

आगे बारिश के पानी से भरा चावल का खेत था। अगले किनारे पहुंचा, तो ऐसी ही एक बाड़ फिर सामने आयी। अब कांटों का डर दूर हो चुका था। मैं उस बाड़ में से भी गुजर गया। किधर जा रहा हूं और सामने क्या है, ये मेरे लिए अनबूझे प्रश्न थे। कुछ देर के बाद मैं एक दीवार से जा टकराया। हाथों को ऊंचा उठाकर देखा, तो वे सीधे मुंडेर से जा लगे।

जाहिर था कि यह किसी के घर की दीवार थी। सोचा कि छलांग मारकर घर में चला जाऊं। अतः हाथों के बल से दीवार पर चढ़ गया; फिर दीवार पर हाथ रखकर उतरना चाहा। लटककर देखा, तो जमीन पर पांव ही न लगे। हाथ छोड़ने का साहस न हुआ; क्योंकि नीचे की गहराई का पता न था। बदन को खींचकर वापस चढ़ाकर दूसरी ओर उतर आया।

अकिंचन की देशभक्ति

खेतों में पानी भरा था। रास्ते में चलते-

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

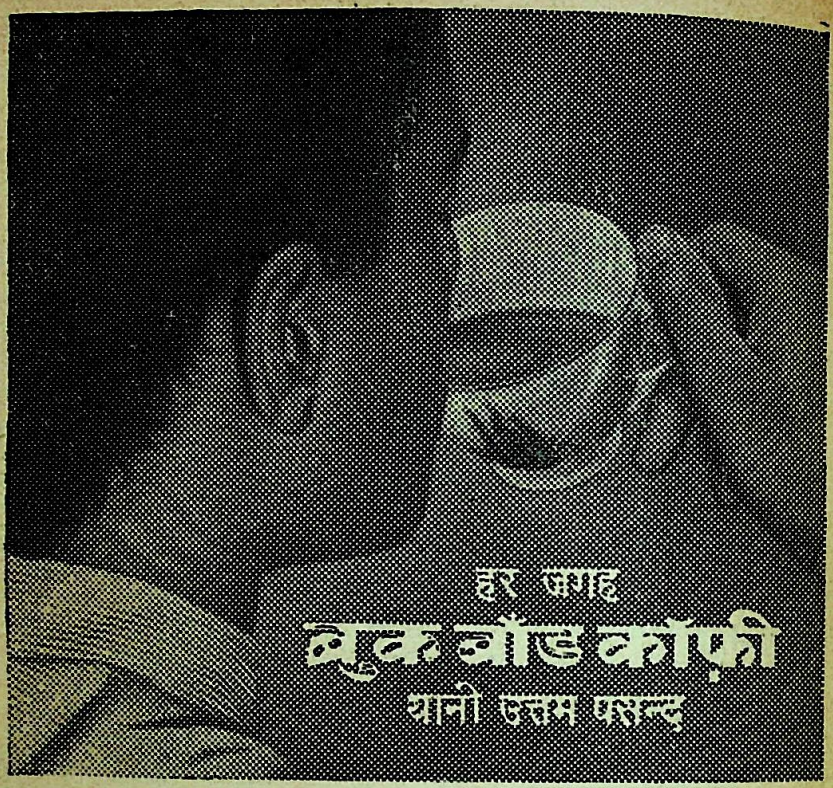

क्योंकि यह बिलकुल तरोताज़ा और बेजोड़ आती है

जब आप अपनी कॉफ़ी के प्याले उठाते हैं तो आप उससे क्या क्या आशा करते हैं ?

ताज़गी ? सुवास ? स्वाद ?

ब्रुक बॉन्ड कॉफ़ी पीकर तो देखिए। इस कॉफ़ी में ये तीनों ही गुण होने के कारण सचमुच उत्तम पसन्द है।

वजह ? क्योंकि ब्रुक बॉन्ड चुने हुए कॉफ़ी के दाने इस्तेमाल करते...सेंकते और खूब महीन कुटते हैं...उसके बाद ताज़े, बेजोड़ स्वाद को हवा बंद मोहर लगे पात्रों में बंद कर देते हैं। सुबह से शाम तक कोई भी समय ब्रुक बॉन्ड कॉफ़ी का समय है।

ब्रुक बॉन्ड कॉफ़ी पीकर दिन का कार्य आरम्भ कीजिए और इसके मज़ेदार स्वाद से तरोताज़ा बने रहिए।

भीतर बंद है— ब्रुक बॉन्ड कॉफ़ी की पूरी ताज़गी स्वाद और सुवास

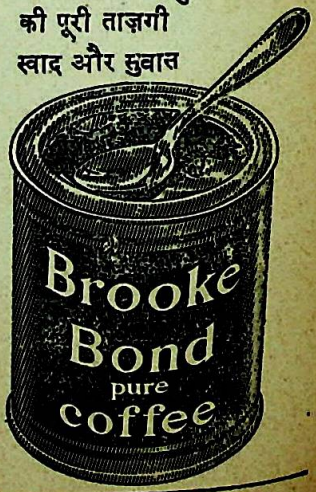

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीं नाला आता, कहीं खेत आते; कहीं चलना पड़ता, तो कहीं तैरना भी पड़ता। इस तरह कोई एक घंटा बीत गया। सामने एक दीपक की लौ नजर आयी। मैं उधर चल पड़ा। यह दीपक गांव के छोर पर एक छोटी-सी झोंपड़ी में जल रहा था। उसकी रोशनी में दो चारपाइयों पर एक स्त्री और एक पुरुष लेटे दिखाई दिये। एक कोने में एक बछड़ा बंधा था।

उजाले में जब मैंने अपनी तरफ झांका, तो क्या देखता हूं कि मेरे हाथ, कुहनी और घुटनों की चमड़ी उधड़ चुकी है, सारे बदन में कांटे भरे पड़े हैं और बदन से खून बह रहा है। कपड़े खून से तर थे। मैंने अपने आपसे कहा कि ये व्यक्ति आंखें खोलकर मुझे देखेंगे, तो क्या समझेंगे ? क्या यही कि सामने एक भूत खड़ा है ! अब प्रश्न यह था कि मैं उन्हें जगाऊं या न जगाऊं ?

मेरी थकावट की कोई हद न थी। बैठकर आराम करना चाहता था। पांव की बेड़ियों को संवारकर मैंने बैठने की कोशिश की। बेड़ी की जंजीरें टकरा गयीं और टकराने की ध्वनि ने औरत को जगा दिया। जब उसने आंखें खोलकर मेरी तरफ देखा, तो बुरी तरह डर गयी। उसके चेहरे और हावभाव से प्रतीत होता था कि वह चिल्लाना चाहती है। मैंने अपने ओंठों पर उंगली रखकर उसे समझाया कि खामोश रहे।

भयभीत होकर वह चिल्लायी तो नहीं, पर दूसरी चारपाई पर लेटे हुए अपने मर्द पर हाथ फेंका। मर्द ने आंखें खोलीं और मुझे

यादगार

सिंदूरी शाम
अमर यादगार है
जननी जन्मभूमि की
आन, मान, शान पर
मर-मिटनेवाले
वीरों की, जवानों की
औ' अमर शहीदों की,
जिनकी नववधुओं की
मांगों का सब सिंदूर
ले उड़ी सिंदूरी शाम।

—सुरेश प्रभाकर

देखा, तो अवाक् रह गया। मैं उनके लिए साक्षात् पहेली था। आखिर मैंने उन्हें बताना चाहा कि मैं भूत नहीं, इंसान हूं। मैंने बेड़ी को हिलाकर बताया और संस्कृत के दो शब्दों का उच्चारण किया—"देशभक्त,स्वराज्य।"

उन दिनों महात्मा गांधी का असहयोग-आंदोलन बड़े जोर से चल रहा था और देश से प्यार करनेवाले हजारों आंध्रवासी जेलों में भरे पड़े थे। जब मेरे मुंह से 'देशभक्त, स्वराज्य' ये शब्द निकले, उनके चेहरे का रंग बदल गया और उनकी आंखों में सहानुभूति दिखाई देने लगी। मैंने इशारे से समझाया, पहले बड़ी तोड़नी है। उन्होंने लोहे का फल निकाला। जिन बेड़ियों को लोहार हथौड़े और लोहे की पकड़ के बल से तोड़ता है, उसे मैंने लोहे के फल से तोड़ा और उनके हवाले कर दिया। मैंने इशारे से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सही नेतृत्व

...यह महाशय
ग्वालियर सूटिंग पहनने के कारण
हर जगह सदैव अगुआ दिखाई देते हैं।
फैशन के क्षेत्र में आग्रणी, ग्वालियर सूटिंग
के आधार पर अन्य सूटिंग
भी परखे जाते हैं।

ग्वालियर सूटिंग

भारत के सर्वोत्तम,
सुखप्रद और
आकर्षक वस्त्र

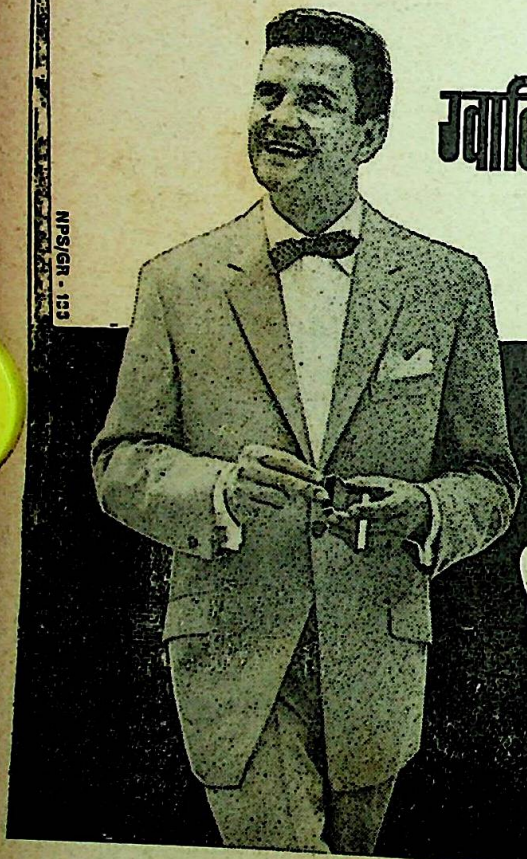

निर्माता :
ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यु० (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर - ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

NPS/GR - 155

देश के सभी स्टोरों में मिलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असिधारी व्रती

चित्र : काली किंकर घोष दंतिदार

समझाया कि इसे जमीन में गाड़ दो।
कैदी के जो कपड़े मैंने पहन रखे थे, वे
बुरी तरह हो गये थे। मैंने उन्हें उतार दिया।
शरीर पर सिर्फ लंगोट रहने दिया। इशारे
से कपड़ा मांगा। इशारे से ही उन्होंने सम-
झाया कि हमारे बदन पर जो कपड़े हैं, उतने
ही कपड़े घर में हैं। खाने के लिए मांग की,
तो कोने में पड़े मिट्टी के बरतनों की ओर
इशारा करके समझाया कि वे खाली पड़े हैं।

मेरे लिए वहां ठहरना बेकार था। मैं झोंपड़ी से बाहर निकला। सामने एक घर में दीपक जल रहा था, मैं उसकी ओर बढ़ा और दरवाजे पर दस्तक देने ही वाला था कि लपककर किसान ने मेरा हाथ पकड़-कर मुझे तेजी से पीछे खींच लिया। अंगुली के इशारे से उसने मुझे चुप रहने को कहा। वह किसी सरकार-भक्त का घर था। वह किसान युवक गांव की सीमा तक छोड़ने मेरे साथ आया।

पुनर्मूषिको भव

मैंने सामने देखा। सूरज निकलने में अभी कुछ देरी थी; परंतु रात्रि का अंधकार छूट चुका था। पानी में चलते-चलते मैं रेल की पटरी पर जा पहुंचा—उसी रेल की पटरी पर, जो मुझे कलकत्ता ले जा रही थी। अब थकावट और भूख मुझे सताने लगी। मैंने अंजली छित्तर थूहर के कुछ फल खाये। फिर थोड़ी देर तक रेल की पटरी पर लेटा रहा।

मेरे शरीर की हालत काफी दयाजनक थी। बदन छिला पड़ा था। कहीं-कहीं खून निकलकर जम गया था। कुछ देर के बाद मैं उठकर आगे चल पड़ा और एक स्टेशन पर जा पहुंचा। स्टेशन पर एक पुलिस की टुकड़ी पड़ी थी। वह डाकुओं की तलाश में यहां आ निकली थी। स्टेशन-मास्टर ने उस टुकड़ी को भी खबर दे दी थी।

मुझे देखते ही पुलिसवाले ताड़ गये कि यही भागा हुआ कैदी है। उन्होंने मुझे पकड़ कर बैठा लिया और सवाल पूछने लगे। उनके किसी भी सवाल का संतोषजनक उत्तर मेरे पास न था। अब उन्हें यह यकीन हो गया कि मैं ही वह भागा हुआ कैदी हूं। उन्होंने मुझे अपने कब्जे में ले लिया और गाड़ी में बैठाकर वहीं पहुंचा दिया, जिस स्टेशन के निकट से मैं भागा था। चोटों और जख्मों ने मुझे चौदह रोज तक अपने पांव पर खड़ा न होने दिया। मैं काफी अशक्त बन गया था।

[शेष अगले अंक में]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्य-चित्र—'शंकर्स वीकली' के सौजन्य से।

कटाक्ष—जाबालि

लोकसभा, सरकस और एक थिअर

१६ अगस्त को पार्लमेंट की सीढ़ियों पर दर्शकों का ऐसा 'क्यू' लगा था, जैसा घासलेट की दूकानों पर लगता है। हाथों में 'विजिटर्स पास' लिये सैकड़ों तमाशबीन लोकसभाई नाट्य-गृह का द्वार खुलने की प्रतीक्षा में थे।

लेकिन मैं अपने एक मित्र एम० पी० के साथ कतार बांधे दर्शनार्थियों का कटाक्ष झेलता हुआ उस 'क्यू' में प्रवेश-द्वार पर पहुंच गया। द्वार के प्रहरी ने मेरे हाथ की नोटबुक जब्त करके मुझे निहत्था कर दिया। मुझे तो लगा कि शायद वह मेरे हाथों में हथ-कड़ी और पैरों में जंजीर भी बांधेगा; मगर वैसा नहीं हुआ। कल के जुर्म में गिरफ्तार हुए कैदी की तरह मैंने गैलरी में कदम रखे।

अंदर सब सहमे-से बैठे थे। प्रवेश-द्वार से, बायीं ओर की प्रायः सब सीटें खाली थीं; मैं उधर मुड़ा, तो दरबान ने रोक दिया। बताया गया कि वे सीटें जनाना हैं। पार्लमेंट में ऐसे लिंगभेद की मुझे कल्पना भी नहीं थी। सदन के सदस्यों ने स्त्री-पुरुष का सह-अस्तित्व स्वीकार करने के बाद दर्शकों को इस मूलभूत मानवीय अधिकार से वंचित रखना अन्याय है।

सीट पर बैठते ही एक संतरी सामने से यह कहता हुआ गुजर गया कि "कोई आगे न झुके, पीछे न देखे, न गाली दे, न ताली बजाये, न हंसे, न रोये।" मतलब यह कि पत्थर की मूर्ति बनकर बैठे रहो। सचमुच सबके चेहरे पथरा गये। आगे-पीछे ही नहीं दायें-बायें देखना भी बंद कर दिया सबने।

कद्दावर तो वामन भगवान भी नहीं थे।

गरदन हिलाये बिना आंखों से जहां तक नीचे देख सकता था, मैंने देखा। नीचे 'सदन' में खूब जश्न हो रहा था। सदस्य आपस में खुलकर हंसी-ठट्ठा कर रहे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोल की रस्म अदा की जा थी। सदस्यों में होड़ लगी कौन सामने बैठे मिनिस्टरों पहले पहुंचकर हाथ मिलाता श्री एस० के० पाटील से चेहरा-सौभाग्य पानेवालों का क्यू' लगा था। सदस्य हुलाएं श्रीमती इंदिरा गांधी इर्द-गिर्द चक्कर काट रही थीं। किसी ने बताया था कि 'परस्पर परिचय-समारोह' का महत्व सदन की बैठक से ज्यादा होता है।

साधुओं के लिए साधु, असाधुओं के लिए....?

उस दिन शास्त्री-सरकार को अविश्वास प्रस्ताव-प्रहार से अपनी रक्षा करनी थी। विरोधी दलों की भीषण भाषण-वर्षा से सरकार को प्रतिरक्षा-मंत्री चव्हाण ने ही बचाया था। प्रश्नोत्तर के समय विदेश-मंत्री सरदार स्वर्णसिंह कई बार प्रश्नों की शब्दबंदी में फंस गये। प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर एक ही सांचे में ढले हुए थे। इस संबंध में सरकार सतर्क है—'अभी पूरी जानकारी नहीं मिली,' 'पत्र-व्यवहार हो रहा है!' आदि ३-४ कटे-छंटे उत्तरों में ही सब प्रश्न डुबो दिये गये।

मेरा खयाल है, अगर तीन-चार प्रकार के उत्तरों का टेप-रिकार्ड बनाकर उसे कोई मशीन से बजाता रहे, तो पार्लमेंट में

प्रतिरक्षा अर्थात् प्रत्याक्रमण द्वारा रक्षा

प्रश्नोत्तरकाल में मंत्रियों की उपस्थिति अनिवार्य न रहे। इस प्रकार मंत्रियों को सदन में ऊंघते रहने की जहमत से भी बचाया जा सकता है।

सदन में भीगी बिल्ली की तरह दुबककर बैठे मंत्रियों की दशा सचमुच दयनीय थी। विरोधी दल शेर की तरह दहाड़ रहे थे। लंचटाइम में मेरे एम० पी० मित्र ने बताया कि सदन के बाहर हालात पलट जायेंगे। उसने कहा, अविश्वास के प्रस्ताव से विरोधी दलों के नेता मौजूदा मंत्रियों को हटाकर खुद मंत्री बनना चाहते हैं। यह विरोध मंत्री बनने तक ही रहता है। मैंने पूछा, क्या इन सब में मंत्री बनने की योग्यता है? "अपनी योग्यता के संबंध में भला कभी किसी को संदेह हुआ है?" उसका उत्तर था।

इस उत्तर से मुझे एक कहानी याद आ गयी। कहानी यों है :

एक राजा का अपने अत्यंत दूरदर्शी मंत्री पर अटूट विश्वास था। एक दिन राजा ने शिकार पर जाने की तैयारी की। चलने से पहले उसने मंत्री से पूछा—"कहीं आज बरसात तो नहीं आयेगी?" मंत्री ने सोचकर जवाब दिया—"नहीं, आज पानी नहीं पड़ेगा।" राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहत स्वरनसिंह सुनो भाई साधो!

सदल-बल शिकार को चल दिया। रास्ते में एक कुम्हार मिला, जो गधे पर चढ़ा हुआ था। उसने राजा से कहा – " महाराज, वापस चलिये। आज भारी बरसात होने-वाली है।" राजा कुम्हार की परवाह न करके आगे चल दिया। थोड़ी ही दूर जाने पर आस-मान से मूसलाधार पानी पड़ने लगा।

वापस आने पर राजा ने मंत्री को फट-कारा और कुम्हार को बुलाकर पूछा– "तुमने बरसात आने की बात कैसे जान ली थी ? किस भविष्यदर्शी ने तुम्हें यह ज्ञान दिया था?" कुम्हार ने अपने लंबकर्ण गधे की ओर संकेत करते हुए बताया –"इस लंबकर्ण ने अपने कान फड़फड़ाकर मुझे आनेवाले भय की सूचना दी थी।" राजा ने उसी समय गधे को दरबार में बुलाया और अपने मंत्री को पदच्युत करके उसके स्थान पर लंबकर्ण को अपना मंत्री बना दिया। उस एक गधे के मंत्री बनने से उस लोक-सत्तात्मक राज्य का सर्वाधिक अहित यह हुआ कि समस्त गधा-जाति के मन में मंत्री बनने की महत्वाकांक्षा जाग गयी। और मुझे तो पक्ष-विपक्ष के सब सदस्य कम-बेश इसी महत्वाकांक्षा में डूबते-तैरते दिखाई दिये।

× × ×

एक-डेढ़ बजे सदन के दो-तिहाई सदस्य उठकर चले आये। अपने मित्र के साथ मैं भी शाकाहारी उपहार-गृह में गया। बीस मिनिट के बाद भी जब कोई सेवक नहीं आया, तो हमारा धैर्य जाता रहा। मगर एम० पी० सदस्य ने कहा –" सब सरकारी दफ्तरों की तरह यहां भी आसानी से सुनवाई नहीं होती।" लंबी प्रतीक्षा के बाद वेटर आया, तो हमने 'वेजिटेबल' सैंडविच की एक प्लेट का आर्डर दिया। पंद्रह मिनिट बाद वह एक प्लेट में दो सैंडविच दे गया।

मुझे उनके 'वेजिटेबल' होने में संदेह हुआ और उसे बुलाकर पूछा। बड़ी अदा से उसने उत्तर दिया–" इनमें से एक मटन सैंडविच है, दूसरी वेजिटेबल।" हमने आपत्ति की, तो उसे आश्चर्य हो रहा था कि धर्म-निरपेक्ष राज्य में मेरे गांधीकैप-धारी मित्र भी भोजन-संबंधी अपेक्षा को प्रधानता क्यों दे रहे थे। उसकी राय में धर्म-निरपेक्षता में मांसामांस-निरपेक्षता भी शामिल थी।

सब कुछ बढ़ाना होगा–कर भी!

उस प्लेट के वापस करने के बाद तो हमें लगभग एक घंटा प्रतीक्षा करनी पड़ी, सौ फीसदी वेजिटेबल सैंडविच की प्लेट के लिए।

× × ×

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निको

कृमिनाशक साबुन

पार्क-डेविस की एक बनावट

जो आपकी त्वचा को साफ और तन्दुरुस्त रख, उसे मुहासा, ददोरा, काले दागों तथा कई अन्य चर्मरोगों से मुक्त रखता है। निको से हमेशा बाल धोने से इसका जन्तुघ्न फेन फूसी का बहुत अच्छा प्रतिकार करता है। मानी हुई उपयोगितावाला निको एक साथ तीन सेवाएं करता है—(सफाई, रक्षण और जन्तुनाश। आपकी त्वचा को जिस सम्हाल की जरूरत है उसे निको के रोजाना व्यवहार से पूरी करें।

असली कृमिनाशक साबुन, रोजाना इस्तेमाल के लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय भी लोकसभा में अविश्वास के प्रस्ताव पर भाषणों का सिलसिला चल रहा था। भाषण देते हुए केवल स्पीकर को संबोधन किया जाता है; इसलिए स्पीकर के अलावा सदन में किसी की भी उपस्थिति अनिवार्य नहीं है। कोरम पूरा करने के लिए जो सदस्य वहीं बैठे रहने का कष्ट उठाते हैं, उन्हें टेबल पर माथा टेककर सोने की छूट उदारतापूर्वक दी जाती है—बशर्ते उनके ऊंचे खर्राटे वक्ता के प्रभाव को कम करने में सफल न हो जायें। ऐसे निद्रालु सदस्यों को बहुत शांतिप्रिय माना जाता है और उनकी निरपेक्षता का मंत्रि-मंडल आदर करता है।

× × ×

यों तो मुझे सदन के सभी सदस्यों की मजबूरी पर तरस आ रहा था; मगर सबसे ज्यादा दिल पसीज रहा था उन पर, जो केंद्रीय सरकार के प्रभावशाली मंत्री या बड़े राज्यों के गवर्नर रह चुके थे। स्पीकर के सामने बेंचों पर बैठकर वे भी बोलने का मौका पाने को वैसे ही हाथ उठाते थे, जैसे

पिताजी की विरासत...

स्कूल-टीचर के प्रश्न पर उत्तर देने के लिए स्कूलों के विद्यार्थी उठाते हैं।

स्पीकर को शतावधानी होना पड़ता है। इतने नटखट सदस्यों की लगाम हाथ में लेकर लोकसभा का रथ सही रास्ते पर आगे बढ़ाना बड़ी चतुराई का काम है।

दर्शकों की गैलरी में निःस्पंद, नीरव बैठकर सदन के युद्धक्षेत्र का अत्यंत निरासक्ति के साथ अवलोकन करना भी असीम धैर्य और कठोर तपस्या का ही परिणाम हो सकता है।

★

चिर-गंवार

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने एक बार डाक्टर हजारी प्रसादजी से पूछा—"पंडितजी, आपका रहना कहां का है?"

डाक्टर साहब ने उत्तर दिया—"बलिया।"

गुप्तजी मुस्कराते हुए बोले—"मैंने सुना है पंडितजी, आपके गांव के लोग गंवार होते हैं।"

तत्काल हजारी प्रसादजी ने उत्तर दिया—"शायद मेरे गांववासी गंवार हों; लेकिन वे 'चिर-गंवार' नहीं होते।"

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फारमोसा में भारत

ललनप्रसाद व्यास

अपनी दक्षिण-पूर्व और सुदूर पूर्व देशों की यात्रा से लौटने पर प्रधानमंत्री श्रीलाल-बहादुर शास्त्री से वार्ता के दौरान स्वाभाविक रूप से फारमोसा (राष्ट्रवादी चीन) का भी जिक्र आया। इस संबंध में जब मैंने उनसे निवेदन किया कि फारमोसा से भारत के कुछ सांस्कृतिक संबंध होने चाहिये, तो उन्होंने आश्चर्य और प्रश्नसूचक मुद्रा में कहा—"सांस्कृतिक संबंध ?"

मुझे आश्चर्य था कि प्रधानमंत्री को इस संबंध में 'सांस्कृतिक संबंध' की बात पर आश्चर्य क्यों हुआ। किंतु उनके आश्चर्य का कारण मुझे तत्काल समझ में आ गया और वह संभवतः यही था कि मुझसे दो दिन पूर्व फारमोसा में गये भारत के अधिकांश संसद-सदस्यों ने वहां से लौटने के बाद फारमोसा से कूटनीतिक संबंधों का ही आग्रह किया था। इसीलिए मेरे मुंह से फारमोसा के लिए सांस्कृतिक संबंधों की बात सुनकर उनका कुछ आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक था। मैंने प्रधानमंत्री से तत्काल अपने कथन के स्पष्टीकरण की दृष्टि से कहा—"सांस्कृतिक संबंध से मेरा तात्पर्य यही है कि समय-समय पर भारत फारमोसा के कुछ बौद्ध भिक्षुओं को यहां बुलाये और यहां के भिक्षुओं और विद्वानों को वहां के निमंत्रण पर भेजे। इस प्रकार के अनेक कार्यक्रम सांस्कृतिक संबंधों के अंतर्गत किये जा सकते हैं।"

बाद में मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सारनाथ के विश्व बौद्ध धर्म सम्मेलन में फारमोसा के प्रतिनिधि मंडल को बुलाया गया, जिसके विरोधस्वरूप चीन ने अपना प्रतिनिधि मंडल सम्मेलन में भेजने से इन्कार कर दिया।

जीवन की ऊर्मि
चित्र : लक्ष्मण वर्मा

वास्तव में सांस्कृतिक संबंधों के इस प्रश्न के पीछे मेरे कुछ अनुभव और संस्मरण हैं, जिनसे प्रेरित होकर मैंने यह सुझाव रखा था। फारमोसा में मेरा कार्यक्रम एक सप्ताह का था, जिसमें चीनी मुख्यभूमि के निकट स्थित सैनिक द्वीप क्वीमाय की यात्रा भी शामिल थी। इसी कार्यक्रम में एक दिन वहां के बौद्धसंघ के प्रमुख भिक्षु से मिलने का कार्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

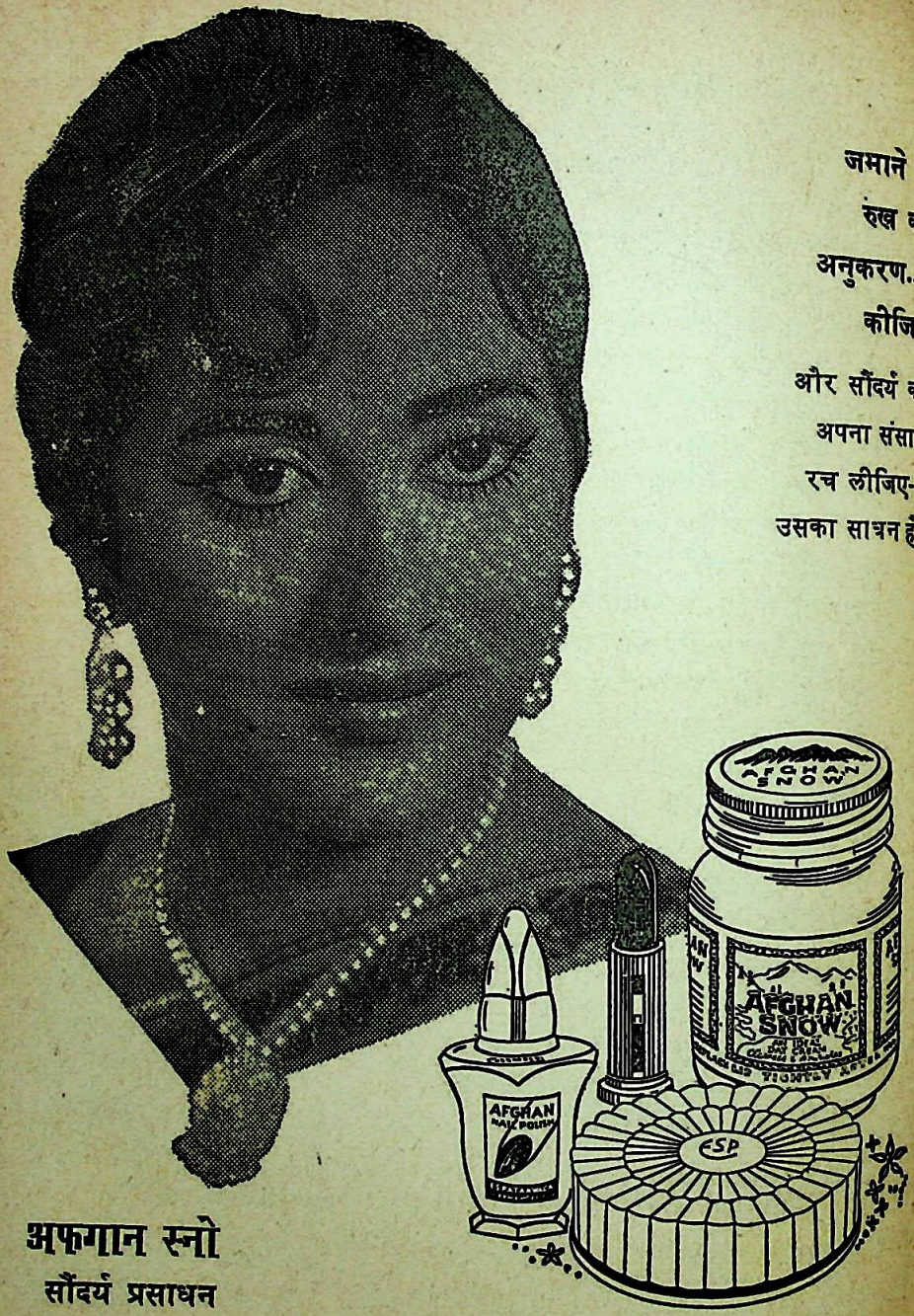

अफगान स्नो
सौंदर्य प्रसाधन

ई० एस० पाटनवाला, बम्बई–७७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। मैं अपने एस्कोर्ट (रक्षक या सूचक) के साथ उन भिक्षु-प्रमुख से मिलने के बौद्ध मंदिर में गया। मंदिर में एक विशालकाय बुद्ध - प्रतिमा है। साथ ही एक छोटी-सी प्रतिमा भी है, जो भारत की बनी है। इस भारतीयताविहीन देश में भारत की इन पवित्र सामग्री देखकर स्वाभाविक ही बड़ा आनंद हुआ और इससे भी अधिक आनंद हुआ, उन भिक्षु-प्रधान तथा अन्य भिक्षु-भिक्षुणियों से मिलकर। उनके चेहरे पर प्रसन्नता की चमक थी—इसलिए कि वे बुद्धदेव के देश भारत से आये हुए एक व्यक्ति से मिल रहे थे। उन्होंने 'एस्कार्ट' के जरिये जो चीनी भाषा और अंग्रेजी भाषा दोनों जानता था, मुझसे भारत के संबंध में काफी बातें कीं। उन्होंने जो आत्मीयता प्रदर्शित की, वह निश्चय ही फारमोसा में अद्वितीय थी। फिर उन्होंने मेरे सामने अनेक फल लाकर रखे, जो भारतीय फलों जैसे थे—लीची, तरबूज, आम, फालसा, सरीफा आदि।

भारत के प्रति सबसे अधिक आत्मीयता का परिचय उन्होंने उस समय दिया, जब वहां के प्रधान भिक्षु ने मेरे समक्ष एक डिब्बा लाकर रखा, जिसमें भारत की गंगा की बालू थी, जो वे अपनी सारनाथ और वाराणसी की यात्रा के दौरान अपने साथ ले गये थे। विदेश में अपने देश की रजकण—वह भी गंगा के जल से स्पर्श हुई बालुका—दर्शनमात्र से मन में श्रद्धा और भक्ति उमड़ पड़ी। मैंने उस बालुका के कुछ कण अपनी हथेली पर रखकर, फिर प्रसाद मानकर अपने मुख में

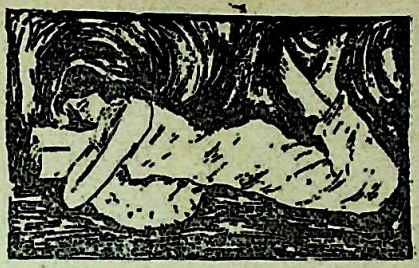

चित्र : सुधीर खास्तगीर

सिकंदर की सेनाओं ने ईरानी सम्राट् दारयवहु को जब पराजित कर दिया, तो शाही खेमे में यूनानी सैनिकों को एक अत्यंत बहुमूल्य रत्नजटित पेटी मिली। सैनिकों ने उसे अपने अफसरों के पास पहुंचाया, अफसरों ने लाकर उसे विश्वविजयी सिकंदर के सामने रख दिया। प्रश्न उठा कि उसमें क्या रखें। किसी ने सुझाया कि राजमुद्रा रखी जाये, किसी ने कहा कि राज्यकोष की चाबी। कोई सुझाव सिकंदर को पसंद नहीं आया, बोला—"रत्नजटित पेटी में सबसे कीमती रत्न ही रखा जा सकता है।" और उसने पास रखा होमर का 'इलियड' महाकाव्य उसमें रख दिया।

—निरंजन

रख लिये। वे भिक्षुगण भी एक-एक करके मेरा अनुकरण करने लगे। निश्चय ही मुझे इसमें दोनों देशों की सांस्कृतिक एकता के एक महत्वपूर्ण तत्व के दर्शन हुए।

ऐसे ही एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व के दर्शन मुझे तापेह में अकस्मात उस समय हो गये, जब एक पार्टी में मेरी भेंट तैवान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लियांग चाओ चा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटेनिया के २ अपूर्व सुंदर उपहार के डिब्बे

यह लीजिये ब्रिटेनिया के दो और रंग-बिरंगे डिब्बे 'रोजेज' और 'पुडे' जो ब्रिटेनिया के चुने हुए तरह-तरह के स्वादिष्ट बिस्कुटों से भरपूर हैं। ये दिलकश डिब्बे किसी भी अवसर पर उपहार देने के लायक हैं और जब खाली हो जायें तो सामान रखने के लिये लाजवाब हैं।

ब्रिटेनिया बिस्कुट

सब परदेश में भी प्रसिद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई। ये वहां के एक ऐसे वयोवृद्ध व्यक्ति हैं, जिनका संबंध राष्ट्रपति च्यांग काई-शेक जैसे फारमोसा के शीर्षस्थ व्यक्तियों से तो है ही, साथ ही वे कम्युनिस्ट चीन के नेता माओत्से-तुंग और चाउ-एन-लाई के साथ खेले या पढ़े हैं। उनसे मिलने पर पता चला कि वे कई वर्ष तक भारत में रहे हैं—गांधीजी के साथ उनके आश्रम पर भी। और एक माने में तो वे मुझसे भी अधिक भारतीय लगे अर्थात् भारत के धार्मिक तीर्थों की यात्रा उन्होंने मुझसे भी अधिक की थी।

'डिनर' के समय प्रो० लियांग चाओ चा मेरे साथ 'वेजिटेरियन' (शाकाहारी) मेज पर ही बैठे। मुझे ऐसे लगा कि, जैसे कोई अपना ही देशवासी मिल गया हो।

फारमोसा में ही मुझे अफ्रीकी छात्रों के एक अंतर्राष्ट्रीय कृषि संस्थान में जाने का संयोग मिला। संस्थान देखने के बाद वहां के संचालक महोदय ने मेरे सामने 'विजिटर्स बुक' लाकर रख दी। मैंने उस पर हिन्दी में ही अपने विचार लिपिवद्ध किये। शायद अधिकारी महोदय ने यह लिपि इसके पूर्व नहीं देखी थी। मैंने उन्हें सब कुछ बताया, तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि आपकी लिपि तो बहुत सुंदर है।

फारमोसा कायदे से चीन का ही भाग है और १९४९ तक था भी; जब चीन में कम्युनिस्ट शासन आने पर वहां के राष्ट्रपति जनरल च्यांग-काई-शेक ने भागकर फारमोसा द्वीप में अपनी समानांतर सरकार स्थापित की। अतएव वहां की जनता भी चीनी जाति की ही है। किंतु भारत-चीन-संघर्ष के बावजूद मुझे फारमोसा की जनता और सरकार में भारत के प्रति पर्याप्त सद्-भावना के दर्शन हुए। मुझे लगा कि वे भारत की मैत्री के लिए बहुत उत्सुक हैं। वहां की सरकार ने हमें फारमोसा से लगभग २०० मील दूर स्थित सैनिक महत्व का क्वीमाय द्वीप भी दिखाया और वहां की सारी सैनिक व्यवस्था भी दिखायी और समझायी, यह कहकर कि आप तो दुश्मन के दुश्मन होने के नाते हमारे मित्र हैं। क्वीमाय द्वीप से चीनी मुख्यभूमि साफ दिखायी पड़ती है। दूर-बीन से तो वहां की सारी सैनिक हल-चल भी देखी जा सकती है।

मैत्री और सद्भावना की इन बदली हुई परिस्थितियों में भारत अपना कर्तव्य स्वयं निश्चित करे।

★

उसने फूल से प्यार की बात कही, तो वह खिला और महक उठा,
उसने पत्थर से प्यार की बात कही, तो वह हीरा बन गया,
उसने जिस्म से प्रेम की बात कही, तो वह जानदार हो गया,
उसने सूरज से प्रेम की बात कही, तो किरणों का झरना फूट पड़ा।
मगर जब उसने भय की नजर से उन्हें देखा, तो सब के चेहरे मुरझा गये
मानो एक सूरज पर हजारों ग्रहण लग गये हों।
—जलालुद्दीन रूमी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

	रु० पै०
सम्पूर्ण गांधी वाङमय	
खण्ड १ व २ प्रत्येक	३.००
खण्ड ३ से १२ प्रत्येक	७.५०
रूसी-हिन्दी शब्दकोष (संकलक—वीर राजेन्द्र ऋषि)	३५.००
भारत में अंग्रेजी राज (ले० सुन्दरलाल) (दो भागों में	
कागज की जिल्द (सैट)	१६.००
भारत के पक्षी (ले० राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह)	१२.५०
महात्मा गांधी (चित्रावली)	१०.००
नवीन भारत का स्वरूप (चित्रावली)	७.५०
तीसरी पंचवर्षीय योजना	७.५०
सरल साज-सामान से वैज्ञानिक प्रयोग	६.००
राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के भाषण (१९५२-५६)	४.५०
समाज विज्ञान (ले० राजाराम शास्त्री)	४.५०
आकाशवाणी विविधा १९६३	४.००
आकाशवाणी विविधा १९६२	३.५०
भारत १९६४ (सन्दर्भ ग्रन्थ)	३.५०
भारत के जंगली जीव (ले० श्री राम शर्मा)	३.५०
पूर्व और पश्चिम की संत महिलाएं	३.२५
भारत : तथ्य और आंकड़े	३.००
उथल-पुथल का युग (ले० गोविन्ददास)	३.००
भारत का इतिहास—बच्चों के लिए	३.००
श्रेष्ठ हिन्दी कहानियां	३.००

डाक-व्यय : मूल्य का १२½ प्रतिशत और रजिस्ट्री : ५५ पैसे। २५ रु० या अधिक के मूल्य की पुस्तकों पर डाक-व्यय माफ। आज ही वी० पी० द्वारा मंगाइये।

प्रकाशन विभाग
भारत सरकार
पोस्ट बाक्स २०११, दिल्ली-६

डीए ६५/२०१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्साही व आनंदी स्त्री-पुरुषो !

आजकल के उलझन-भरे जीवनरूपी आइने में अपना प्रतिबिंब देखने पर आंखों के चारों ओर कालापन दिखता है । उसी तरह अपना चेहरा चिंताग्रस्त, गुस्सैल दिखता है ..... मामूली श्रम से भी हाथ-पांव टूटन लगते हैं... थकावट महसूस होती है... शिथिलता के कारण बेचैनी बढ़ती है ... शरीर में अशक्तता... कमरमें दर्द ... सर में पीड़ा और अपचन, अरुचि, निस्तेजता, खून में रक्तकणों का अभाव, सारे शरीर म खुजलाहट, आंखों में जलन और हाथ-पैर निष्क्रिय हो जाते हैं।

इन सभी परेशानियों से मुक्त होने के लिए नया खून, नई शक्ति, और नव-यौवन प्राप्ति का विचार हो, तो

'चरक'

लतिकामृत

प्रवाही—अवलेह—गोलियों को याद कीजिये ।

यह दीपन-पाचन-रेचक रसायन अत्यंत गुणकारी है। यह सभी दोषों का उन्मूलन कर शरीर को कार्यक्षम बनाता है । बल, बुद्धि, कांति, कर्मेंद्रियों की शक्ति और आयु में वृद्धि होती है।

सभी औषध-विक्रेताओं के यहां प्राप्त । वी. पी. से भी भेजी जाती है ।

चरक फार्मास्युटीकल्स—बम्बई ११.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टेक्समाको

टेक्सटाईल मशीनरी कारपोरेशन लिमिटेड

बेलघरिया, २४-परगना

भारत के मूल उद्योगों की सेवा में रत

निर्माण कर्ता :-

टेक्सटाइल मशीनरी
विभिन्न प्रकार के रोलिंग स्टोक
बायलर्स और वाटर ट्यूब बायलर्स
सुगर मिल मशीनरी
कॅप्स्टन लेथ्स
स्टील कास्टिंग्स और सी. आई. कास्टिंग्स

प्रसिद्ध विदेशी फर्मस् के सहयोग में।

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिरला ब्रदर्स (प्राईवेट) लिमिटेड

१५, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस

कलकत्ता-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवसर पर जान की बाजी लगाकर हमारे जवान जिसके लिए रणक्षेत्र में अपूर्व पराक्रम के साथ लड़ रहे हैं, उस स्वतंत्रता के पावन दीपक को सतत प्रज्वलित रखने के लिए प्रत्येक भारतीय को खपना चाहिये। मुद्रण-सामग्री निर्मित कर हम अपना योगदान कर रहे हैं।

प्रभात प्रोसेस स्टुडिओ

शंकर आणि कंपनी

लाइन, हाफटोन, कलर ब्लाकमेकर्स और स्टीरिओटाइप मैन्युफैक्चरर्स

टे० नं० २९६५७ धोबीवाड़ी, बंबई-२

हमारे सभी ग्राहकों एवं हितचिंतकों के लिए नववर्ष सुख-समृद्धिशाली हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For

"HERCULES" Brand Electrically Welded
M. S. Chains

"SESHASAYEE" Steel Wire Ropes

"ELEPHANT" Brand Chain Pulley Blocks
& Travelling Trolleys

please contact :

EASTERN TRADING & ENGINEERING CO.

Alice Building, 3rd Floor,
339, Dr. Dadabhoy Naoroji Road
Fort, BOMBAY-1.

Phone : 251659

Gram : "HIGSTEL"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सनशाइन इंडस्ट्रीज

उद्योग भवन

२५०, डी, वर्ली, बम्बई १८

प्रसिद्ध निर्माता — Jyoti फैशन ज्वेलरी

पत्थर का जड़ाऊ काम और चमकीले कांतिमय हार, झुमके, साड़ी के कांटे, कंगन, कानों के टाप्स, अंगूठियां, चाबियों की जंजीरें, कफ लिंक

हजारों भेंट योग्य नवीन वस्तुएं

नूतन वर्षाभिनंदन

PURE ALUMINIUM THE CROWN

MYSORE PREMIER METAL FACTORY SUN

क्राउन ब्रान्ड एवं सन ब्रान्ड एल्युमिनियम, पीतल और स्टेनलेस स्टील के बर्तन तथा एनोडाईड एल्युमिनियम की चीज के लिए आग्रह रखिए ।

जीवनलाल (१९२९) लिमिटेड

क्राउन एल्युमिनियम हाऊस,
२३ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता—१.

बम्बई * मद्रास * राजमहेन्द्री * दिल्ली * एडन

विज्ञापन की हुई वस्तुएँ खरीदें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशेष देन
मुरारजी फ़ेब्रिक्स
एक्स-मिल के दामों पर
खरीदिये
दिवाली व दशहरे के
त्यौहार पर

यह विशेष देन केवल ३० अक्टूबर १९६५ तक ही रहेगी

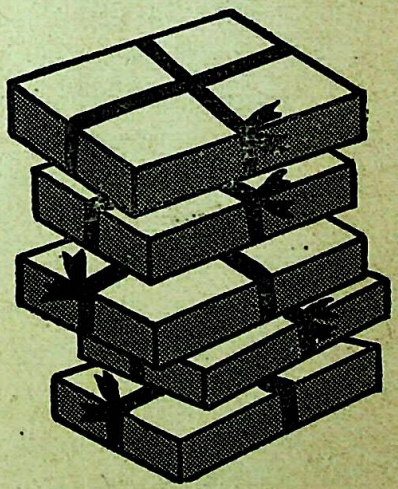

M

रिटेल शाप्स : डा. अम्बेडकर रोड, परेल * लोकमान्य स्वदेशी क्लाथ स्टोर, देना बैंक के सामने, दादर (प० रेलवे) * ग्रामोद्योग वस्त्रालय, ३९१ ए, गिरगांव रोड, चिरा बाजार ।

मुरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एन्ड वीविंग कंपनी लिमिटेड, परेल, बम्बई – १२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

केवल 'ISARC' बम्बई
फोन : २४६२६१–२
२४५००६

रजि. आफिस
'इंडस्ट्री हाउस'
१५९, चर्चगेट रिक्लेमेशन
बंबई–१ (बी. आर.)

ठंडा रोलिंग विभाग –

औद्योगिक क्वालिटी के कोल्ड रोल्ड पीतल के शीटिंग, पट्टे और कॉयल (१० SWG. से ४५ SWG.)–७ MM. से ३५५ MM तक चौड़ाई में।
औद्योगिक क्वालिटी के कोल्ड रोल्ड तांबे के शीटिंग, पट्ट और कॉयल (१० SWG. से ४५ SWG.)–७ MM. से ३५५ MM तक चौड़ाई में

एलाइंग और कास्टिंग विभाग –

एंटीफ्रिक्शन बेयरिंग धातुए
गनमेटल और कांसे
ब्रेजिंग सोल्डर और टिन सोल्डर
फाइन जिंक डाइ कास्टिंग एलाम (ISMAK-3)
अल्युनिमियम बेस डाइ कास्टिंग एलाय
पीतल और कांसे की छड़ें–ठोस व पोली
फिनिशड् कास्टिंग–एक और मशीन किये हुए

गर्म रोलिंग विभाग –

व्यापारिक क्वालिटी के पीतल के शीट और प्लेट्स
व्यापारिक क्वालिटी के तांबे के शीट और प्लेट्स

फेरोस फाउंड्री विभाग –

एस. जी. आयरन सांचे और स्पेशल फैलाद के सांचे
लचीले लोहे के सांचे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारा सर्वोत्तम लोकप्रिय पेन

THE FIRST
PICK-PROOF
PEN

WITH A SPECIAL CLIP TO HOLD FIRMLY

INTRODUCING
CHAMPION
'65'

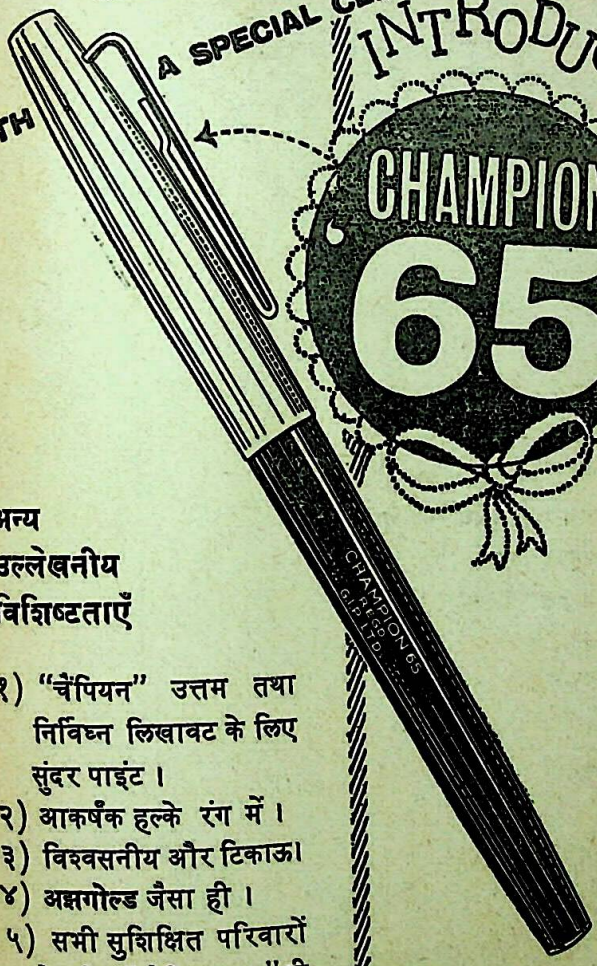

अन्य
उल्लेखनीय
विशिष्टताएँ

१) "चैंपियन" उत्तम तथा निर्विघ्न लिखावट के लिए सुंदर पाइंट।
२) आकर्षक हल्के रंग में।
३) विश्वसनीय और टिकाऊ।
४) अझगोल्ड जैसा ही।
५) सभी सुशिक्षित परिवारों के लोग "चैंपियन ६५" ही पसंद करते हैं।

उत्पादक : गुजरात इंडस्ट्रीज (प्रा०) लिमिटेड, बंबई-२
भारत की सर्वोत्तम लेखन सामग्री फुटकर विक्रयकेंद्र पर मिलती है।
विक्रयकेंद्र – मनोहर बिल्डिंग, लोहार चाल, बंबई-२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

With the compliments of

AUTOMOBILE PRODUCTS OF INDIA LIMITED

APL

AGRA ROAD, BHANDUP, BOMBAY 40.

LAMBRETTA · BORG & BECK · LOCKHEED · FIRESTONE BRAKE LINING

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की हर लहर, हर पहर

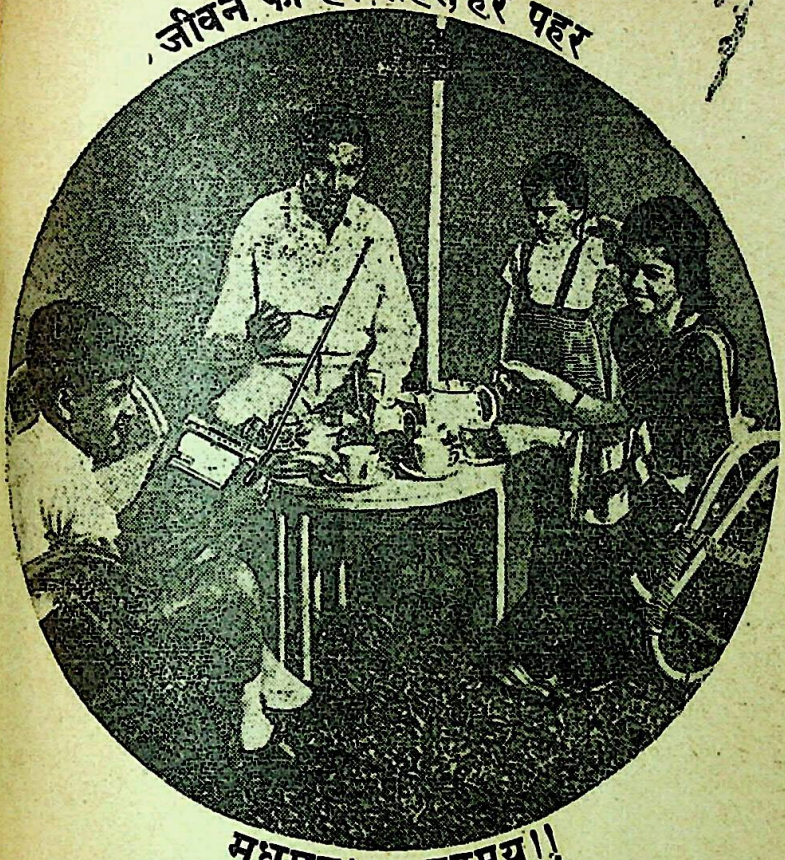

मधुमय! मुदमय!!

मॉडल BXS-338 (पोर्टेबल सेट)
८ ट्रान्ज़िस्टर २-बैंड
टोन कन्ट्रोल
रु. २२५
एक्साइज़ ड्यूटी रु. २० तथा अन्य कर अतिरिक्त

मॉडल 5A-46 ६-ट्यूब ४-बैंड
परिवर्तनशील टोन कन्ट्रोल
रु. ३५०
एक्साइज़ ड्यूटी रु. ४० तथा अन्य कर अतिरिक्त

मॉडल BZ-490 (पोर्टेबल सेट)
६-ट्रान्ज़िस्टर-४ बैंड सुक्ष्म ट्यूनिंग प्रणाली
रु. ३७५
एक्साइज़ ड्यूटी रु. ४० एवं य कर अतिरिक्त

शार्प रेडियो के निर्माता हायाकावा इलेक्ट्रिक कं. लिमिटेड का सदा यही ध्येय रहा है। उनके तकनीकी सहयोग से निर्मित रेडियो—चाहे वह नन्हासा ट्रान्ज़िस्टर हो या हाई-फाइडेलिटी घरेलू सेट—एक मनोरंजक साथी के रूप में बरसों आपकी निधि बन रहेंगे!

अत्यंत आकर्षक १० मॉडल हर कीमत में-हरेक के लिए

शार्प-झंकार

इन्डियन प्लास्टिक्स लि. लोटस हाऊस, बम्बई-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

With the compliments of

» HOECHST «

PHARMACEUTICALS LTD.

The sign of Hoechst
—the famous 'Tower and Bridge'
—symbolises the bonds
which join the company
with its friends
all over the world.

A Century of Chemistry

HOECHST
PHARMACEUTICALS LTD
Backbay Reclamation, Bombay 1

Branches at Bombay, Calcutta, Madras and New Delhi.
Depots at Ahmedabad, Cuttack and Gauhati.
HOECHST generally pronounced HEXT

HP. 71 (RH)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

A HAPPY HOME NEEDS A GOLD MOHAR

The Stove with an established reputation for dependable and trouble-free service for years.

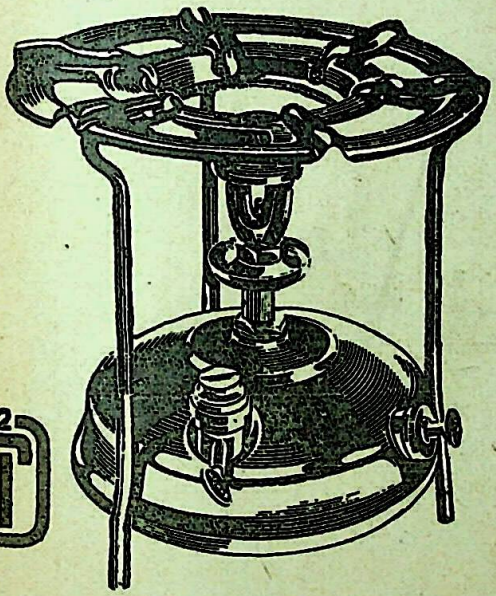

IS:1342

Gold Mohar is made of the finest and tested materials and all parts are checked for precision and longer life performance.

GOLD MOHAR STOVES

MFRS: OPTIMOHAR INDUSTRIES PVT. LTD., BOMBAY 1.

Sole Selling Agents: BOMBAY STOVE & HARDWARE DEPOT.
T.G. Shah Building, Pydhonie, Bombay 9. Phone: 325146
70-72 Lohar Chawl, Bombay-2. Phone: 20372.

SGS-63

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ–दीपावली एवं
समृद्धिपूर्ण नव-वर्ष
के लिए

हार्दिक अभिनन्दन

व शुभकामनाएं

सेंचुरी रेयान

मालिक :
द सेंचुरी स्पि. एंड मेन्यू. कं. लि.
रजिस्टर्ड आफिस
इन्डस्ट्री हाऊस :
१५९ चर्चगेट रेक्लेमेशन
बम्बई–१
फोन : २४६२४६।९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आख़िरी बार खंगालते समय बस ज़रा सा टिनोपाल मिलाइए, फिर देखिए आपके धुले हुए शर्ट्स, साड़ियों, चद्दरों, व तौलियों आदि कपड़ों में कितनी चमकदार सफ़ेदी आजाती है।

और इस पर आपका ख़र्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं! टिनोपाल एक वैज्ञानिक व्हाइटनर है...कपड़ों के लिए बिल्कुल हानिरहित।

टिनोपाल से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है!

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल, स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।

सुहिट गायगी लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स. ९६५, बम्बई १ बी. आर.

Shilpi-SGT-70 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस अंक का मूल्य रु० १.५०

Regd. No. B 6248

सौंदर्यका निखार

रेमी

सौंदर्य प्रसाधन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिसंबर

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५०१ स्पेशल

५०१ स्पेशल से *हर* धुलाई, स्पेशल धुलाई - *बिना अधिक ख़र्च किए!*

टाटा-उत्पादन

५०१ स्पेशल साबुन के स्पेशल फ़ार्मूला से भरपूर झाग... जिससे सभी कपड़े साफ़, उजले और आसानी से धुलते हैं।

SHBI-501S-85 HIN

आवरण-पृष्ठ नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग द्वारा मुद्रित—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंदमय जीवन के लिये बचत. **देना बैंक** को आपकी मदद करने दीजिए।

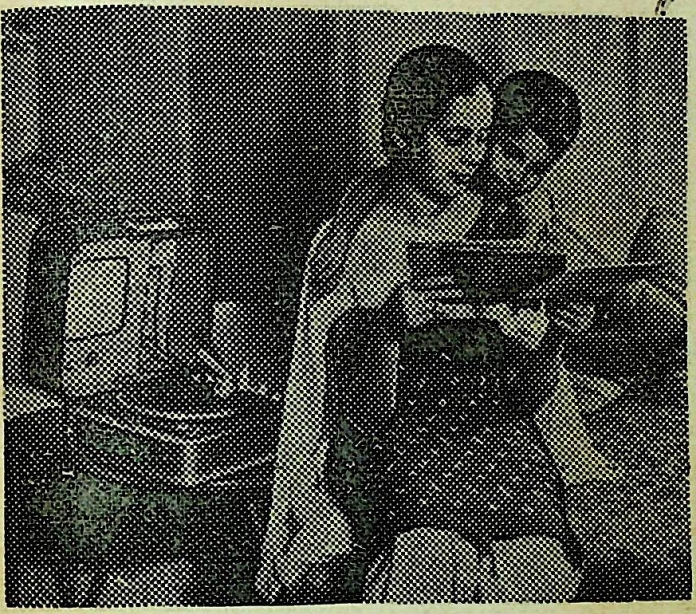

सेविंग्ज एकाऊण्ट – व्याज ४%

अल्पवयस्क बचत योजना – व्याज ४%

फ़िक्स्ड डिपॉज़िट – व्याज ६% से ७½%

देना बैंक

देवकरण नानजी बैंकिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: देवकरण नानजी बिल्डिंग्ज, १७, हॉर्निमेन सर्कल बम्बई-१.

१५० से अधिक ऑफ़िस तथा ४७ सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट

प्रवीणचंद्र व. गांधी मॅनेजिंग डायरेक्टर

DB/H/169 – A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश-रक्षा के इन पुनीत क्षणों में

लौह-पुरुष सरदार पटेल का कर्म-कठोर संकल्पी जीवन

हर भारतवासी के लिए सहज प्रेरणा का स्रोत है

हिन्दी में प्रकाशित

सरदार का एकदम प्रामाणिक और विस्तृत जीवन

सरदार पटेल: राष्ट्र-निर्माता

लेखक: आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

इस पुस्तक के लगभग ३०० पृष्ठों में सरदार पटेल के जीवन की सभी प्रमुख घटनाओं और भाषणों आदि के सार के साथ ही उनके ३० अलभ्य चित्र भी दिये गये हैं।

मूल्य: केवल दस रुपये (डाक-व्यय सहित)

प्रकाशक:

सोसायटी फार पार्लियामेंटरी स्टडीज

१८ डा० राजेन्द्रप्रसाद मार्ग,

नयी दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुन्दर वस्तु
सदैव आनन्दमयी
होती है"

किसी नये स्थान पर जाने का आकर्षण तो सदा ही बना रहता। और फिर अगर आप हकोबा एम्ब्रॉइडर्ड वस्त्रों से सुसज्जित हैं तो बस कहना ही क्या! आपके व्यक्तित्व का आकर्षण और भी बढ़ जाता है सुन्दरताका एक सुन्दर वातावर्ण में होना ही उसकी सबसे बडी प्रशंसा है।

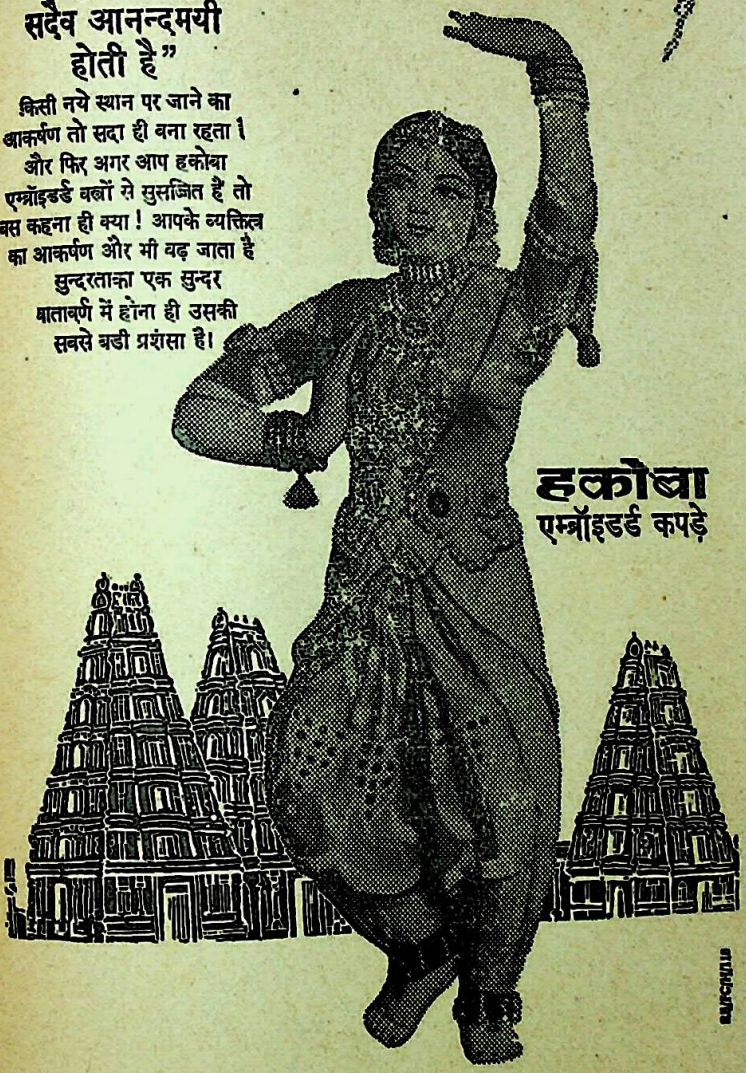

हकोबा
एम्ब्रॉइडर्ड कपड़े

फैन्सी कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(हकोबा चिकन व एम्ब्रॉइडर्ड कपड़ों के निर्माता) १६, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई - १.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

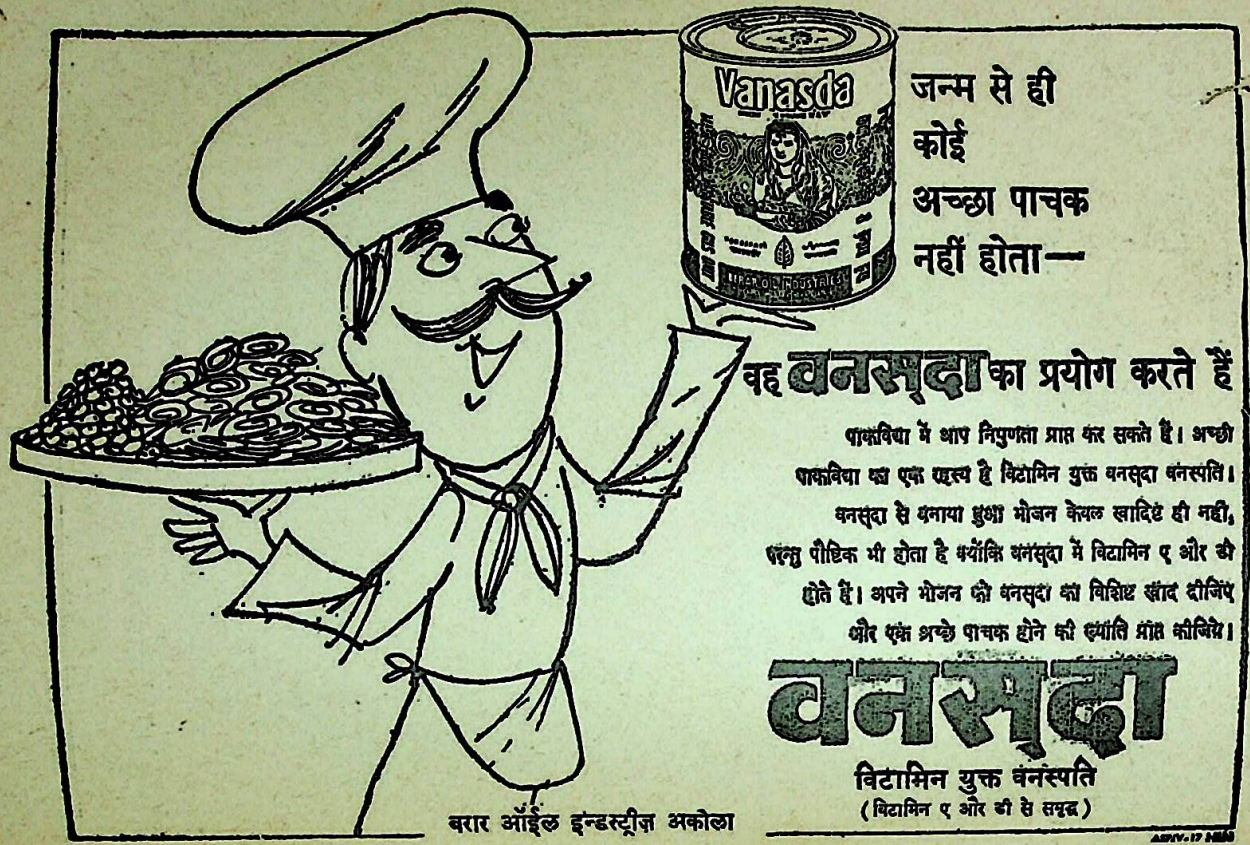

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

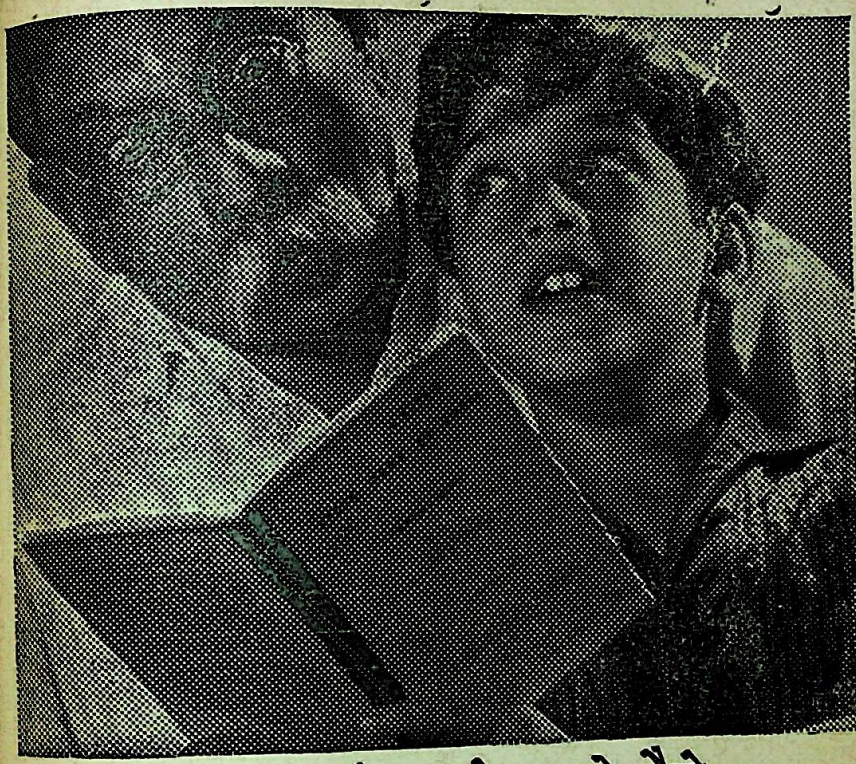

अच्छा ! तो तुमने अपने पैसे यहां छिपा के रखे थे ?

अपने बच्चे के लिए स्टेट बैंक आफ इंडिया में सेविंग बैंक खाता खोलिये और इसे जीवन की निरापद और सुरक्षित शुरूआत करने का शुभ अवसर दीजिये।

नाबालिगों के लिए चेक द्वारा संचालित सेविंग बैंक खाते इस तरह खोले जा सकते हैं :

(क) प्राकृतिक या कोर्ट द्वारा नियुक्त अभिभावक द्वारा जो नाबालिग के खाते का संचालन तब तक करेगा जब तक कि वह बालिग नहीं हो जाता और जबकि वह खुद अपने खाते का संचालन करने लगेगा।

(ख) १४ साल या इससे अधिक उम्र के बच्चों द्वारा जो खुद रुपया जमा कर सकते हैं या निकाल सकते हैं।

बेहतरीन सेवा के लिए

स्टेट बैंक

LPE-Alyars. S.1997 H

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों को विशेष प्रिय

गोला

मिठाइयाँ
और
टाफ़ियाँ

गोला मिठाइयाँ और टाफ़ियाँ जितनी स्वादिष्ट हैं, उतनी ही पौष्टिक भी। प्राकृतिक 'ए' 'बी,' 'बी₂', और 'सी' विटामिनों से परिपूर्ण होने के कारण वे बालकों के स्वाभाविक शरीर-विकास में बड़ी अमूल्य सहायता देती हैं

दी हिन्दुस्तान शूगर मिल्स लि.
५१, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई १

A.S.P.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज को आज शाम एक मैच खेलना है मगर उसकी कमर में दर्द है

लगता है इस कमर के दर्द की वजह से आज शाम के हॉकी मैच में नहीं खेल सकूँगा!

लो, सेरिडोन की एक टिकिया लेलो, ठीक हो जाओगे।

राज सेरिडोन की एक ही टिकिया लेता है।

बाद में...

सेरिडोन का ख्वाब नहीं! कमर का दर्द यकदम गायब हो गया!

सेरिडोन की एक ही टिकिया

'रोश'

दर्द दूर करती है, आराम पहुँचाती है, ताज़गी देती है

दुनियाभर में मशहूर सेरिडोन दर्द में जल्द और निरापद रूप से पूरा आराम पहुँचाती है। सरदर्द, दाँत के दर्द, बदन के दर्द और आम बेचैनी में सेरिडोन ही लीजिए। बड़ों के लिए एक टिकिया; बच्चों के लिए $\frac{1}{2}$ से $\frac{1}{3}$ टिकिया तक काफ़ी है।

सेरिडोन की एक ही टिकिया काफ़ी है

एक टिकिया के १३ पैसे

'रोश' उत्पादन

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स : बोस्ट्रास लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

For

"HERCULES" Brand Electrically Welded
M. S. Chains

"SESHASAYEE" Steel Wire Ropes

"ELEPHANT" Brand Chain Pulley Blocks
& Travelling Trolleys

please contact :

EASTERN TRADING & ENGINEERING CO.

Alice Building, 3rd Floor,
339, Dr. Dadabhoy Naoroji Road
Fort, BOMBAY-1.

Phone : 251659 Gram : "HIGSTEL"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वेत
डेट
साफ़ धुलाई के साथ साथ
सफ़ेदी भी लाता है

केवल श्वेत डेट से धुले आपके सफ़ेद कपड़ों में इतनी रौनकदार सफ़ेदी और आपके रंगीन कपड़ों में इतनी निर्मल सफ़ाई आ सकती है। केवल आधुनिक डेट ही यह काम इतनी आसानी से...और वह भी आपके कपड़ों के टिकाऊपन को नुकसान पहुँचाये बिना...कर सकता है

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि., बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राँकाइटिस ?

पॅप्स

लीजिये !

पॅप्स की टिकियाँ धीरे धीरे चूसिये, आप शीघ्र ही महसूस करने लगेंगे कि इनकी आरोग्यकारी भाप अपना प्रभाव दिखाने लगी है...ये गले की तकलीफ और सीने की जकड़न में आराम पहुँचाती हैं...खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती हैं। आपको शीघ्र आराम मिलता है!

- ★ सर्दी और गले की तकलीफ में लाभदायक
- ★ बच्चों को बेखटके दी जा सकती है
- ★ सभी जनरल स्टोर्स में और केमिस्टों के यहाँ मिलती है

पॅप्स

शीघ्र आराम पहुँचाती है

महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश के लिए वितरक : मैसर्स कैम्प एण्ड कम्पनी लि०
एलफिन हाउस, ८८ सी ओल्ड प्रभादेवी रोड, पो० बाक्स नं० ७०३३, बम्बई–२८

ZANDU PRODUCT

खायें या न खायें ?

अवश्य खाइये और
जी भर कर खाइये
झन्डू की

अभयासन

टॅब्लेट

आपकी रक्षा करेगी

वायु, अपचन, अजीर्ण, अमलत्व तथा पेट के अन्य रोगों के लिए।

अपने घर में
हर समय
एक ट्यूब तैयार रखिये

ओवोयुटोलिन

स्त्रियों के लिए बढ़िया टॉनिक

स्केबिजन

खाज व खुजली के लिए तुरन्त आराम पहुँचा व

झन्डू फार्मास्यूटिकल वर्क्स लि. बम्बई-२८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगह की बचत
पैसे की बचत

स्टील ट्यूब का बना
फोल्डिंग फर्नीचर

निर्माता : क्रोमेलाइट (इण्डिया) प्रा० लि०
पी–३५, इण्डिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता–१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM

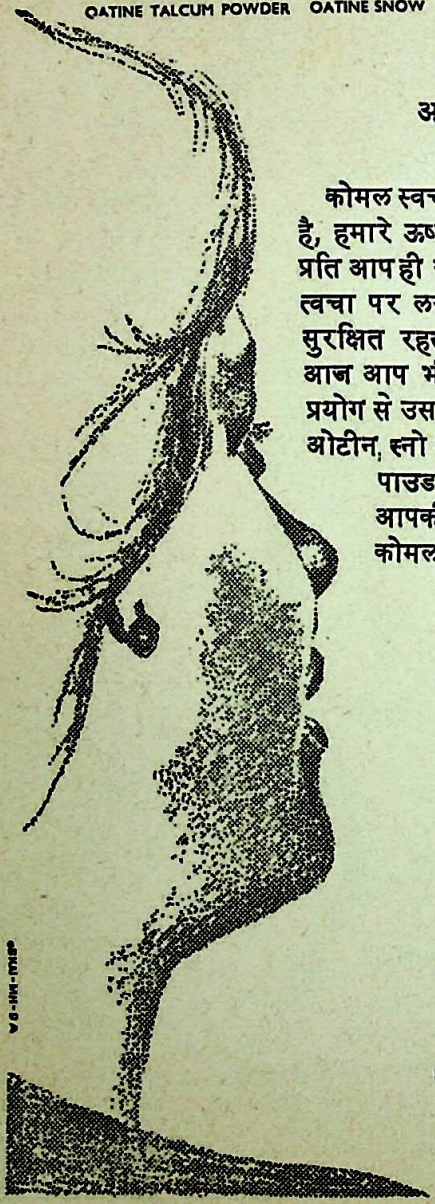

आपका कर्तव्य
अपने प्रति

कोमल स्वच्छ त्वचा ईर्ष्याजनक ही होती है, हमारे ऊष्ण जलवायु में अपनी त्वचा के प्रति आप ही उत्तरदायी हैं। प्राचीनकाल म त्वचा पर लगाने के प्रसाधन विशेषज्ञों के सुरक्षित रहस्य हुआ करते थे, लेकिन अब आज आप भी ओटीन स्नो और क्रीम के प्रयोग से उस रहस्य की ज्ञाता हो सकती हैं, ओटीन, स्नो अत्यंत मनमोहक और फेनिल पाउडर-आधार है, और ओटीन क्रीम आपकी त्वचा को स्वस्थ एवं कोमल-कोमल बनाती है।

Oatine
SNOW &
CREAM

M&H

MARTIN & HARRIS
PRIVATE LTD
MERCANTILE BUILDINGS, LALL BAZAR,
CALCUTTA-1

OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM

OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE TALCUM POWDER OATINE CREAM OATINE TALCUM POWDER OATINE SNOW OATINE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बजाज के घरेलू साधनों से समय और श्रम की बचत होती है और आपकी कार्यकुशलता बढ़ती है। ये बजाज-साधन सुंदर और टिकाऊ हैं—साथ ही सबकी पहुंच के अन्दर भी □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

सुख और सुविधा के लिए बजाज-साधन

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१
भारतभर में शाखाएं

बजाज

heros-BE-231 F HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए!

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओं को दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त-चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।

बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे...एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिए ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

DCG. 35 HD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिसंबर
१९६५

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
संपादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता

नवनीत

चित्र : श्री दिनेश शाह

इस अंक में

१७ आलोक-गंगा
टी० एल० वास्वानी
१८ पाकिस्तान और चीन की सांठ-गांठ
दीवान बेरींद्रनाथ
२१ कब ? (कविता)
श्रीहरि
२३ दांपत्य-महायज्ञ
केदारनाथ महाराज
२४ एक मीठी याद
विष्णु प्रभाकर
२५ मैं इस 'स्वराज्य' के लिए नहीं लड़ा था
श्रीप्रकाश
२८ वीर-गाथा के चितेरे शोलोखोव
राजाराम सिंह
३१ मेरे देशवासियो !
स्वामी रामतीर्थ
३२ सत्य और न्याय
महात्मा गांधी
३३ कैसे-कैसे लोग ?
राजबहादुर सिंह, गोविंद रत्नाकर, विद्याभूषण 'श्रीरश्मि', श्यामबिहारी, ब्रजकिशोर 'नारायण'
३९ मस्तिष्क के चमत्कार
फ्रेंक एडवर्ड्स
४२ 'पथेर पांचाली' के कथाकार
डा० एम० वर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४५	मैं आशावादी हूं	अर्नाल्ड टायन्वी
४८	मन मेरे (मराठी कविता)	वि० म० कुलकर्णी
४९	पवित्र कलगी कहां गयी ?	जान विलियम्स
५०	वसीयत (कविता)	घनश्याम रंजन
५१	तुम क्या कर रहे हो ?	जवाहरलाल नेहरू
५२	मेघदूत का अंतिम पृष्ठ	हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'
५७	चलते रहना है !	नवल
५८	खूनी पीरबख्श	त्रिलोक तुलसी
६४	ख्रुश्चेव के उत्तराधिकारी	हांस क्राल
६९	दुनिया कितनी अनजान है !	खुशवंत सिंह
७४	युकावा का मेसान सिद्धांत	राजकुमार सेठी
७५	सत्य–असत्य (बोधकथा)	नरेश मिश्र
७६	मौत की बगल में सात वर्ष	कोशिमोटो हिदयो
८१	बाबाजी (उर्दू कहानी)	एम० ए० मलिक
९०	विजय–बंधन (कहानी)	अभिमन्यु अनत 'शबनम'
९३	जौहर (कविता)	कन्हैयालाल सेठिया
९६	ललिता (कहानी)	शिवानी
१०१	दो अपाहिज (जापानी कहानी)	एडोगवा रैंपो
११३	क्रांतिपथ का पथिक –२ (पुस्तक-संक्षेप)	पृथ्वीसिंह 'आजाद'
११६	व्यष्टि और समष्टि (तमिल काव्य)	सुब्रह्मण्य भारती
१२५	अभिव्यक्ति-अभिशापित (कविता)	रमेशचंद्र कौशिक
१२९	बूंदों की बात	रा० वीलिनाथन
१३९	ये 'मैनेजर'	पी० एल० टंडन
१४५	मोटरों की पड़दादियां	दामोदर शर्मा

★

चित्र–सज्जा

ओके, कमलाक्ष शर्मा, शैलोज मुखर्जी,
पी० टी० रेड्डी, सुनंदा स्वामीनाथन

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि., ३४१ तारदेव, बंबई–३४ के लिए प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेतवाड़ी बैंक रोड, बंबई - ४ में मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष १४ : अंक १२

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

दिसंबर १९६५

मानव के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

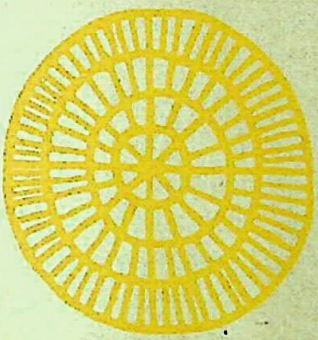

आलोक-गंगा

गीता तो आलोक-गंगा है—चिरंतन से सांत में अवतरित होती हुई ज्योति-सरिता है।

कृष्ण बस एक आदमी को गीता सुनाता है—अर्जुन को। कृष्ण श्रोताओं की भीड़ नहीं चाहता।

कृष्ण की शिक्षा है—बड़ी-बड़ी चीजों के पीछे मत भागो।

"पत्र, पुष्प, फल, जल जो भी मुझे भक्ति से दिया जाये, उसे मैं प्रेम से स्वीकार करता हूँ"—कृष्ण गीता में कहता है।

तुम 'क्या' देते हो, यह 'नहीं'; तुम 'कैसे' देते हो—यह महत्व की चीज है।

कृष्ण का आदेश है, हम भगवदर्पण की भावना के साथ छोटे-छोटे कर्तव्यों में निष्ठा से जुटे रहें।

—टी० एल० वास्वानी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाकिस्तान और चीन की साँठ-गाँठ

दीवान बेरींद्रनाथ

पाकिस्तान और चीन दो ऐसे गुटों के सदस्य हैं, जो एक-दूसरे के विरोधी हैं। फिर भी दोनों देशों के आपसी संबंध बढ़ते जा रहे हैं। प्रतीत होता है कि इन देशों के नेताओं ने प्रारंभ से ही समझ लिया था कि एक दिन उन्हें अपने भौगोलिक क्षेत्र में एक नये गुट में शामिल होना पड़ेगा; वह गुट बहुत शक्तिशाली तो नहीं होगा, तथापि उनके पुराने गुटों के बड़े सदस्यों को परेशान करने का सामर्थ्य उसमें होगा। इसीलिए १९४९ से ही चीन पश्चिम-समर्थक देशों में से पाकिस्तान के साथ और पाकिस्तान कम्युनिस्ट देशों में, खासकर रूस के मुकाबले में, चीन के साथ विशिष्ट प्रकार का आचरण करता आ रहा है। इस नीति के परिणाम अब पंद्रह वर्ष बाद प्रकट होने लगे हैं।

चीन और पाकिस्तान के इन संबंधों के प्रति भारत का ध्यान तभी गया, जब ये संबंध काफी गहरे हो चुके थे। यह एक कारण है कि भारत तथा विश्व की राजनीति में इन संबंधों के प्रभाव को अच्छी तरह समझना कठिन हो रहा है।

इन दोनों देशों के मौजूदा संबंधों की शुरुआत १९५० में तब हुई थी, जब पाकिस्तान ने लाल चीन की सरकार को मान्यता दी थी। यह सही है कि उस समय पाकिस्तान औपचारिक रूप से पश्चिमी गुट का सदस्य नहीं था—वास्तव में उस समय तक इस क्षेत्र में कोई पश्चिमी गुट नहीं बना था। परंतु पाकिस्तान को कश्मीर के मामले में पश्चिम का समर्थन मिल चुका था। फिर भी, अमरीका के बुरा मानने का खतरा उठाकर भी पाकिस्तान ने लाल चीन को मान्यता दी।

उस समय तो इस पर अमरीका में या और कहीं कोई विशिष्ट प्रतिक्रिया नहीं हुई; परंतु डेढ़ वर्ष बाद एक बहुत महत्वपूर्ण बात हुई। वह यह कि कोरियाई युद्ध के समय पौंड और भारतीय रुपये का अवमूल्यन होने के साथ पाकिस्तान ने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन नहीं किया। परिणामस्वरूप भारत और पाकिस्तान का आपसी व्यापार करीब-करीब ठप्प ही हो गया।

उस परिस्थिति में चीन ने पाकिस्तान के साथ एक व्यापारी समझौता करके पाकिस्तान को उसकी कठिनाई से उबारा। एक पत्रकार ने कहा है कि चीन से इस प्रकार की सहायता का आश्वासन पाकर ही पाकिस्तान ने अपने रुपये का अवमूल्यन करने से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंकार किया था। चीन से उस समय भारत के बहुत अच्छे मैत्रीपूर्ण संबंध थे। फिर भी भारत ने चीन के इस रवैये पर टीका नहीं की—शायद यह सोचकर कि चुप रहना हितकर होगा।

कुछ पाकिस्तानी विश्लेषकों का मत है कि इस समझौते के फलस्वरूप चीन और पाकिस्तान में जो मैत्री बढ़ी, उससे चिंतित होकर अमरीका ने पाकिस्तान को अपने एशियाई सैनिक गठबंधनों का महत्वपूर्ण सदस्य बनाया। पश्चिमी देशों में अपने इस कदम से चिंता और ईर्ष्या पैदा करके पाकिस्तान ने उन देशों से जबर्दस्त सैनिक और आर्थिक सहायता प्राप्त की, जो साधारण परिस्थितियों में उसे न मिलती।

इस विषय में एक अद्‌भुत तथ्य यह है कि पाकिस्तान के इन सैनिक गठबंधनों में शामिल होने के बाद भी १९५४-५५ तक चीन ने अपने प्रचार में पाकिस्तान को कभी बुरा-भला नहीं कहा और उनका आपसी व्यापार बढ़ता ही रहा।

राजनीतिक मैत्री के प्रयत्न भी इस अवधि में शुरू हुए और १९५५ में बांडुंग-सम्मेलन के समय चीन और पाकिस्तान के प्रधान मंत्रियों की पहली भेंट हुई। दोनों ने एक-दूसरे को कितना समझा यह चीनी प्रधान मंत्री चाउ एन-लाइ के उस वक्तव्य से प्रगट हो जाता है, जो उन्होंने सम्मेलन की राजनीतिक समिति में दिया था। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान के प्रधान मंत्री श्री मोहम्मदअली ने मुझे आश्वासन दिया है कि एक सैनिक-संधि में शामिल होते हुए भी पाकिस्तान चीन के विरुद्ध नहीं है। पाकिस्तान को यह खतरा नहीं है कि चीन उस पर आक्रमण करेगा। अतः हमने एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लिया है।"

'लंदन टाइम्स' के संपादकीय विभाग के एक सीनियर सदस्य रशब्रुकविलियम्स ने जो पाकिस्तान के बड़े प्रशंसक थे, अपनी 'दि स्टेट आव पाकिस्तान' पुस्तक में बांडुंग-सम्मेलन के बाद की बातों में लिखा है कि "जब एशियाई देश शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का घोषणापत्र तैयार करने लगे, तब—यह मुझे पूर्णतया विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है—चीनी सरकार ने पाकिस्तान सरकार को एक संदेश भेजकर यह आश्वासन दिया कि दोनों देशों के बीच—भारत और चीन के बीच—निकट भविष्य में संघर्ष खड़ा होने की संभावना है।" भारत के प्रति चीन के रुख का पर्दाफाश करने के लिए यही काफी है।

इसके बाद चीन और पाकिस्तान के व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध और बढ़े। उसी अवधि में पाकिस्तान में मोहम्मद-अली की जगह सुहरावर्दी प्रधान मंत्री बने। सुहरावर्दी की नीतियां पश्चिम से प्रभावित थीं। इस प्रभाव के कारण पाकिस्तान में कम्यूनिस्ट पार्टी के लिए कठिनाई थी। तब इस प्रभाव को निरस्त करने के लिए १९५६ के सितंबर महीने में चाउ एन-लाई ने चीन आये हुए पाकिस्तानी संपादकों के सामने कहा कि कश्मीर का मामला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवादास्पद है। उन्होंने उसके हल हो जाने की आशा भी प्रकट की। पाकिस्तानी पत्रों ने इस मत को "यथार्थवादी" और "दूरदर्शितापूर्ण" कहकर सराहा और रूस के इस रुख से उसकी तुलना की कि कश्मीर भारत का अंग है।

उसी साल सुहरावर्दी चीन गये और चाउ एन-लाइ पाकिस्तान आये; परंतु दोनों देशों के संबंधों में बिगाड़ होने लगा। कश्मीर पर चाउ एन-लाइ ने भारत और पाकिस्तान के बीच सीधी बातचीत का सुझाव दिया और वहां संयुक्त राष्ट्र-संघ की सेनाएं भेजने के विचार का विरोध किया। इस प्रकार ये संबंध १९६० तक बिगड़ते चले गये।

पाकिस्तान में प्रेसिडेंट अयूब खां के सत्ता ग्रहण करने के बाद परिस्थिति और बिगड़ी इसके तीन कारण थे। पहला यह कि पाकिस्तान ने अमरीका के साथ एक-दूसरे की सैनिक प्रतिरक्षा की द्वि-पक्षीय संधि की; दूसरा यह कि पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र-संघ के उस प्रस्ताव का समर्थन किया, जिसमें तिब्बत पर कब्जा करने की कार्रवाई की निंदा की गयी थी; और तीसरा यह कि पाकिस्तान ने भारत के साथ आपसी प्रतिरक्षा की द्वि-पक्षीय संधि करने का प्रस्ताव किया था।

अमरीका में 'डेमोक्रेटिक-दल' का प्रशासन कायम होने तक प्रेसिडेंट अयूब की सरकार जोरों से पश्चिम-समर्थक रही। इसी अवधि में चीन के अधिकृत मुखपत्रों ने पाकिस्तान में अमरीकी प्रक्षेपास्त्र और नौसैनिक अड्डे कायम किये जाने के इल्जाम लगाये। चीन भारत के विरुद्ध जो सैनिक तैयारी कर रहा था, उसके बारे में चीनी प्रतिनिधि अफ्रो-एशियाई देशों में यही कहते थे कि वह तैयारी भारत के विरुद्ध नहीं, बल्कि पाकिस्तान-अधिकृत हुंजा और गिल्गिट क्षेत्रों के पश्चिमी सैनिक-अड्डों के विरुद्ध है।

इन क्षेत्रों की कुछ छुट-पुट घटनाओं तथा एक चीनी नक्शे को लेकर चीन का पाकिस्तान ने विरोध किया। चीन उस नक्शे के बारे में जिसमें पाक-अधिकृत कश्मीर का कुछ भाग चीनी सीमाओं के अंदर दिखाया गया था कहा कि वह कम्यूनिस्ट सरकार से पहले की सरकार ने बनाया था।

शायद चीन के दबाव से २३ अक्तूबर १९५९ को प्रेसिडेंट अयूब खां ने पत्रकारों को बताया कि उन्होंने चीन से पाकिस्तान की सीमा अंकित करने को कहा है। १९६१ तक चीन ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की और अपना कड़ा रुख बनाये रखा। फिर भी उसने ऐसा कोई कदम नहीं उठाया, जिससे आगे चलकर भी दोनों के आपसी संबंध सुधारे न जा सकें। उदाहरण के लिए १९६० में रूस पर अमरीकी यू-२ विमान की उड़ान पर चीन ने अमरीका को जी भरकर कोसा; परंतु पाकिस्तान के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा, जबकि ये विमान उड़ते पाकिस्तान से थे। इसी सिलसिले में रूस ने पाकिस्तान पर प्रेक्षपास्त्रों से कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी।

जान केनेडी जब अमरीका के प्रेसिडेंट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए, तो प्रेसिडेंट अयूब ने अमरीका और भारत के प्रति एक-सा अविश्वास प्रकट करना शुरू किया और चीन ने इसका फायदा उठाया। १९६१ में उसने पाकिस्तान से सीमांकन के लिए योजना मांगी। उसी समय पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में लाल चीन को उसका सदस्य बनाने के पक्ष में मतदान किया। १९५६ से, जब सुहरावर्दी प्रधान-मंत्री थे, पाकिस्तान बराबर इसके विपरीत मतदान करता आ रहा था।

सीमांकन की योजना प्राप्त हो जाने के बाद भी एक वर्ष तक चीन ने उस पर विचार करने की घोषणा नहीं की—इस अवधि का उसने शायद पाकिस्तान पर दबाव डालने के लिए उपयोग किया। ३ मई १९६३ को चीन और पाकिस्तान ने सीमांकन के लिए स्वीकृति की घोषणा की; परंतु तब तक इस विषय में जरा भी प्रगति नहीं हुई थी। कारण, पाकिस्तान शायद अमरीका को नाराज नहीं करना चाहता था और चीन भारत पर आक्रमण करके ही कोई कदम उठाना चाहता था।

भारत पर चीन का आक्रमण होने के बाद पश्चिमी देशों ने भारत को सैनिक सहायता देनी शुरू की और उसे बंद करने से इंकार कर दिया, तो पाकिस्तान ने चीन से खुल्लम-खुल्ला घनिष्टता बढ़ानी शुरू की। इसका पहला प्रमाण दिसंबर १९६२ में जब भारत के विदेश मंत्री श्री स्वर्णसिंह पाकिस्तान जानेवाले थे, तब मिला। चीन और पाकिस्तान ने घोषणा की कि दोनों सीमांकन

कब ?

—श्रीहरि

मां, मेरा जलता माथा
तुम्हारे सीने की शीतलता से लग गया है,
तुम्हारे आंचल के अभय ने
मुझे समूचा ढक लिया है,
तुम्हारी कोमल हथेलियों ने
मेरे सपनों की पीठ सहलायी है।

इस अनुभूति के अनेक दीप
मेरे अंधियारे आकाशों में
युग-युगांतर से जल रहे हैं।

मेरे पैरों के नीचे
धरती सुगबुगायी है—
वह पूर्ण प्रकाश कब होगा ?
एक-एक दिया कब एक-एक सूरज बनेगा?
और कब उन सूरजों की माला गूंथकर
तुम्हारे गले में सजा दूंगा ?

और—
और मैं कब तुम्हारी उस माला का
सबसे निचला, सबसे बड़ा सूरज बनकर
तुम्हारी ओर एकटक देखता रहूंगा
और तुम मेरी आंखों में मुस्कराती रहोगी?

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सिद्धांत पर सहमत हो गये हैं। फिर ४ जनवरी १९६३ को दोनों ने एक आपसी व्यापार-समझौते पर हस्ताक्षर किये, जिसमें उन्होंने एक-दूसरे को विशिष्ट सुविधाएं देने की घोषणा की। पश्चिमी गुट से संबंधित देशों में पाकिस्तान ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसको चीन ने ये सुविधाएं दी हैं और कम्यूनिस्ट देशों में केवल चीन को पाकिस्तान ने ये सुविधाएं दी हैं।

२ मार्च १९६३ को सीमांकन का समझौता दोनों देशों में हुआ। फिर अगस्त में हवाई उड़ानों का करार हुआ।

इन तथ्यों से प्रकट हो जाता है कि १९५६ से १९६० की अवधि को छोड़कर चीन और पाकिस्तान के आपसी संबंध काफी निकट के रहे हैं। मुझे याद है कि १९५२ में पहला चीनी सांस्कृतिक मंडल भारत आया था। उसने कश्मीर जाने का अपना कार्यक्रम अचानक रद्द किया था। सार्वजनिक रूप से कारण यह बताया गया कि मंडल के सदस्य बहुत थक गये हैं। सरकारी क्षेत्रों में चीनी प्रतिनिधियों ने इस बात पर विरोध प्रकट किया था कि कश्मीर में सिक्यांग के चीनी शरणार्थियों को स्थान दिया गया है। परंतु असली कारण यह था कि वे पाकिस्तान को नाराज नहीं करना चाहते थे।

चीन की इस नीति के उद्देश्य अब स्पष्ट हो गये हैं: (१) पाकिस्तान में अमरीकी प्रभाव को मिटाना, (२) इसी भौगोलिक क्षेत्र के ऐसे गुट के लिए जमीन तैयार करना, जिसमें चीन का वर्चस्व हो, (३) पाकिस्तान में कदम जमाना, ताकि भविष्य में वह इस सारे प्रायद्वीप पर हावी हो सके, और (४) भारत को परेशान करने के लिए पाकिस्तान को अपना मोहरा बनाना, क्योंकि विश्व-राजनीति में उसे टक्कर देनेवाला देश भारत ही है। इस तरह अपने इन उद्देश्यों में चीन को काफी सफलता मिली है।

जहां तक पाकिस्तान का सवाल है, उसकी सभी कार्रवाइयों की तरह इसमें भी मूल कारण भारत के मुकाबले हीनता अनुभव करने का अपना भाव ही था।

चीन जब तक फिर से भारत के विरुद्ध १९६२-जैसी कार्रवाई नहीं करता, तब तक यह प्रकट नहीं होगा कि पाकिस्तान सैनिक और राजनीतिक रूप से चीन का कहां तक समर्थन करेगा। अपने अमरीकी गठबंधन के कारण पाकिस्तान उस परिस्थिति में भी कोई विशेष फायदा उठा सकेगा, इसकी संभावना बहुत ही क्षीण है। आर्थिक सहायता के नाम पर चीन ने पाकिस्तान को बिना ब्याज ३० करोड़ रुपये उधार देना स्वीकार किया है। परंतु यह राशि कुछ भी नहीं है, क्योंकि प्रेसिडेंट अयूब ने कहा कि अगले छः वर्ष तक पाकिस्तान को हर साल ३०० करोड़ रुपये की मदद चाहिये।

पाकिस्तान की आर्थिक आवश्यकताओं में से लगभग ८० प्रतिशत की पूर्ति अमरीका करता है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तानी शासन मूलभूत रूप से कम्यूनिष्ट-विरोधी है। इन दो तथ्यों के कारण यह भी संभव नहीं लगता कि यदि वियतनाम में अमरीका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और चीन आमने-सामने आ गये, तो पाकिस्तान चीन का साथ दे सकेगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि पाकिस्तान ने जैसे चीन को यह विश्वास दिलाया कि अमरीका और सैनिक-गुटों से उसने संबंध भारत से अपनी रक्षा करने के लिए कायम किये हैं, वैसे ही अमरीका को भी उसने यही यकीन करा दिया है कि चीन से उसकी मैत्री अमरीका-विरोधी नहीं है। शायद इसी कारण अमरीका पाकिस्तान और चीन की बढ़ती हुई मैत्री पर टीका-टिप्पणी नहीं करता। पाकिस्तान ने भारत को सैनिक सहायता देने के बारे में तो अवश्य अमरीका का विरोध किया है। दूसरे किसी विषय पर अमरीका को नाराज करने की कोई कार्रवाई नहीं की है। उदाहरणार्थ, शांति कायम रखने के संयुक्त राष्ट्र-संघ के खर्च का भार रूस और फ्रांस आदि भी उठायें या नहीं, इस विषय पर उसने अमरीका के साथ ही मतदान किया। अतः अमरीका को चीन और पाकिस्तान के संबंधों में वैसे ही कोई खतरनाक तत्व नहीं दिखाई देता, जैसे चीन को पाक और अमरीका के संबंधों में। परंतु अगर दक्षिण-पूर्वी एशिया में अमरीका तथा चीन के बीच या दक्षिणी और मध्य एशिया में रूस और चीन के बीच संघर्ष हो गया, तो पाकिस्तान और चीन के संबंधों की कठिन परीक्षा हो जायेगी।

★

दांपत्य-महायज्ञ

विवाह-संबंध से वर-वधू का जीवन एक होता है। उसके कारण दो जीवों में मानो एक ही चैतन्य वहने लगता है। दो जीवों के इस संबंध से दो कुटुंब एकत्र होते हैं। उनमें एक दूसरे-के प्रति मित्रता, प्रेम, विश्वास आदि सद्भाव बढ़ने लगते हैं। एक दूसरे के सुख-दुःख थोड़ी-बहुत मात्रा में उनमें से हरएक को महसूस होने लगते हैं। इन दो कुटुंबों के अन्य बहुत-से संबंधी कुटुंब तथा उनके सगे-संबंधी, मित्र और परिवार सबमें विवाह के निमित्त से ही विशाल आत्मीयता और एकता प्रतीत होने लगती है। सबको एक दूसरे का सहारा मालूम होने लगता है। सब एक दूसरे की मदद करने लगते हैं और एक दूसरे का दुःख आपस में बांटकर परस्पर सुख की वृद्धि करते हैं। इस प्रकार सबका मिलकर एकजीव समाज बनता है। उस समाज की सेवा उसके आबाल-वृद्ध गृहस्थ और गृहिणी अनेक प्रकार से कर सकते हैं। प्राचीन काल के हमारे दैनिक पंच महायज्ञ गृस्थाश्रम के आधार पर ही चलते थे। उनमें देवता, पितर, ज्ञानी, मनुष्य और जीवमात्र-सबकी सेवा का समावेश किया गया था। इन सबकी नित्य नियमित रूप से सेवा करनेवाले दंपति के बराबर श्रेष्ठता उस समय किसी की भी नहीं मानी जाती थी। इस प्रकार का यह दांपत्य-धर्म गृहस्थाश्रम-जीवन का पवित्र ध्येय सफल करने के लिए है। यह केवल तात्कालिक और क्षुद्र व्यक्तिगत सुख के लिए है, ऐसा मानना उसकी विडंबना करना है।

—केदारनाथ महाराज

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मीठी याद

जनवरी १९४१ की बात है। उन दिनों 'जोन टिकिट' चलते थे। हम लोग टीकमगढ़ गये थे। वहीं से लौटते समय अचानक एक दुर्घटना हो गयी। उतरकर हम लोग ललितपुर म्युनिसिपल कमेटी के चेयरमैन चतुर्वेदीजी के घर पहुंचे। बिस्तर पर दृष्टि गयी, तो देखा कुछ लाल-लाल चमक रहा था। सहसा विचार आया कि कि हमारे बिस्तर में तो लाल कुछ नहीं है। बस उसे खोल डाला। पाया वह बिस्तर सचमुच हमारा नहीं था। उसमें स्टेशनरी की बहुत-सी चीजें थीं। मखमली लिहाफ-बिछौना था। हो सकता है वह हमारे बिस्तर से अधिक मूल्य का हो; पर प्रश्न मूल्य का नहीं उपादेयता का था।

हम तुरंत बस-स्टैंड पर पहुंचे। मालूम हुआ कि उस दिन तीन ही यात्री ऐसे थे, जिनके पास होलडोल थे। एक तो मैं था ही, दूसरी एक पतुरिया थी, तीसरे एक मुस्लिम युवक थे, जो तब तक बम्बई के लिए रवाना हो चुके थे। झिझक तो बहुत हुई; लेकिन पतुरिया के घर जाना ही पड़ा। वहां पता लगा कि हमारा होलडोल बंबई जानेवाले युवक के साथ बदला गया है।

अब क्या हो? चतुर्वेदीजी ने सुझाया कि अभी इटारसी जंक्शन के स्टेशन मास्टर को तार दिया जाये कि अमुक गाड़ी से एक मुस्लिम युवक से बिस्तर बदला गया है। उसे रोक लिया जाये।

हमने यही किया और रात की गाड़ी से इटारसी की ओर चल पड़े। लेकिन आश्चर्य की बात देखिये, सवेरे हमारी गाड़ी धीरे-धीरे प्लेटफार्म में प्रवेश कर रही थी, तो हमने उस भीड़ में देखा कि एक युवक बेंच पर खड़ा है और उसने हमारे बिस्तर को दोनों हाथों पर ऊपर उठाया हुआ है।

उस युवक की सूझ और सहृदयता पर हम चकित रह गये। तार ठीक समय पर आ गया था और हमारे बिस्तर को लेकर युवक स्वयं परेशान था।

लेकिन यह कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। हम बड़े प्रेम से मिले। अपना-अपना बिस्तर संभाल, अपनी-अपनी कहानी सुनायी। सुनाने के लिए दिन-भर पड़ा था, क्योंकि शाम के पहले न बम्बई की ओर गाड़ी जाती थी, न दिल्ली की ओर। वह युवक अपनी बहन की शादी में सम्मिलित होने के लिए बम्बई जा रहा था और वह शादी उसी रात को होनेवाली थी। उस शादी में शामिल होना अब उसके लिए एकदम असंभव था। यह जानकर हमें बहुत दुःख हुआ। युवक ने उत्तर दिया—"दुःख तो मुझे भी है कि मैं अपनी प्यारी बहन की शादी में सम्मिलित नहीं हो सकूंगा। लेकिन मुझे इस बात की खुशी भी है कि हम अपना-अपना बिस्तर पा सके।"

—विष्णु प्रभाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं इस 'स्वराज्य' के लिए नहीं लड़ा था

श्रीप्रकाश

मुझे तो ऐसा लगता है कि भविष्य में हमारे समाज में दो तबके होंगे – एक तबका शक्तिशाली सरकारी अफसरों का होगा और दूसरा बेचारी रिआया का—उन्हें नागरिक कहने का साहस नहीं होता। रिआया अधिकारियों की हर ज्यादती सहती जायेगी और कानूनी कर ही नहीं, गैर-कानूनी पैसा भी देती जायेगी और समझेगी कि यही उचित है, यही कानूनी है।

मैं जानता हूं, लोग यह मानने लगे हैं कि अपना काम करवाना है, तो हाथ गरम करने ही होंगे। अदालतों में मुकद्दमे बरसों चलते रहते हैं और हर पेशी से लोग यही कहते हुए लौटते हैं कि "तारीख पड़ गयी?" क्या बताऊं, जन-साधारण की इस लाचारगी पर मुझे कितना गुस्सा आता है।

हमारे सर्वशक्ति-संपन्न अफसर भी कई श्रेणियों में बंटे हुए होंगे। आज भी प्रथम से चतुर्थ तक चार श्रेणियां हैं। प्राचीन भारत के चार वर्णों की तरह, चारों को अलग-अलग ढंग की सुविधाएं हैं। और इन चारों के भी ऊपर विराजमान हैं राष्ट्रपति, राज्यपाल तथा मंत्री, जो मनचाही कर सकते हैं और जिन पर मानो कोई कानून लागू ही नहीं होता।

अभी किसी ने शिकायत की थी कि विदेशों से लौटने पर लोगों को कस्टम के तौर-तरीकों से बहुत परेशानी होती है। संबंधित मंत्री महोदय शिकायत पर बिगड़ गये। उन्होंने रेडियो पर तुरंत जवाब दिया कि कस्टम का इंतजाम बहुत बढ़िया है।

कुछ समय हुआ, मेरी भानजी अमरीका से लौटी। कस्टमवालों ने उसका सारा सामान खोलकर उथल-पुथलकर डाला और उसे वापस करीने से रखने में किसी ने नाम को भी उसकी मदद नहीं की। बेचारी की रुलाई फूट पड़ी। किसी भी कस्टम-कर्मचारी को सामान की यह दुर्दशा करने का अधिकार नहीं होना चाहिये।

मुझे याद है, जब मैं बंबई का राज्यपाल था, तब भी एक बार मेरी यही भानजी विदेश से आयी थी और मैं उसे लेने हवाई-अड्डे पर गया था। तब उसे जरा भी तो परेशानी नहीं उठानी पड़ी! कस्टमवालों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे देखा और सामान की जो सूची मेरी भानजी ने दी, उसे स्वीकार करके उचित ड्यूटी ले ली।

मगर चूंकि इस बार कोई उच्च पदारूढ़ व्यक्ति उसे लेने नहीं आया था, उसे बड़ी परेशानी झेलनी पड़ी। मंत्री महोदय चाहें, तो इस बात से अपना दिल ठंडा कर सकते हैं।

राज्यपाल रहते हुए, अपने पिता और पुत्र की मृत्यु पर मेरा पाला संपत्ति-कर के अधिकारियों से भी पड़ा था; लेकिन कोई तकलीफ नहीं हुई। मैंने संपत्ति के जो विवरण दिये, वे सब स्वीकार कर लिये गये और कुछ ही सप्ताह में सारा मामला निपट गया।

श्रीप्रकाश

राज्यपाल-पद से हटने के बाद संपत्ति-कर का ही एक और मामला आया। मेरे एक संबंधी की मृत्यु हो गयी। संपत्ति का सारा ब्यौरा वही पहलेवाला ही था; लेकिन परेशानी का अंत ही नहीं था। जज महोदय भी समय से पहले सुनवाई बंद कर देते और महीनों आगे की तारीख डालते जाते थे। हफ्तों में निपट जानेवाला मामला साल-भर से भी ज्यादा चला। हमें मजबूर होकर ऊंचे ब्याज पर एक लाख रुपया उधार लेना पड़ा। संपत्ति-कर के भुगतान के प्रमाण-पत्र के बिना उत्तराधिकारी का प्रमाण-पत्र नहीं मिलता। संपत्ति-कर के अधिकारियों ने बनारस से इलाहाबाद के कई चक्कर लगवाये। आखिर ५० हजार रुपये संपत्ति-कर के भरे। फिर १० हजार रुपये उत्तराधिकार के प्रमाण-पत्र के लिए देने पड़े। दूसरे खर्च रहे अलग! यदि मृत व्यक्ति की संपत्ति हमारे हाथ में होती, तो ये सब खर्च उसी में से हो सकते थे। उत्तराधिकार का प्रमाण-पत्र न मिलने से बैंक रुपया नहीं उठाने देते थे। उस संबंधी ने बीमा करवा रखा था; परंतु 'पालिसी' किसी के नाम 'एसाइन' नहीं की थी। इसलिए जीवन बीमा निगम उत्तराधिकार का प्रमाण-पत्र देखना चाहता था। अंत में जब जीवन-बीमा निगम ने चेक दिया, तो बैंक ने उसका भुगतान नहीं किया; क्योंकि उस पर हस्ताक्षर किसी ऐसे अधिकारी ने कर दिये थे, जिसे चेक पर हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं था। बीमे का काम जब गैर-सरकारी कंपनियां करती थीं, उस समय अगर ऐसी गलती हो जाती, तो उनकी मुसीबत हो जाती; लेकिन अब सरकारी काम है, कौन परवाह करता है?

जीवन बीमा निगम को सालाना ३८ करोड़ रुपये का मुनाफा होता है। प्रधान मंत्री और मंत्री उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते। कभी उन्होंने यह जानने की कोशिश नहीं की कि पालिसियों के भुगतान में कितना विलंब होता है, चैकों का भुगतान समय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर क्यों नहीं होता, और नियमों की पेचीदगी तथा खर्चे के कारण कितनी पालिसियां रद्द हो गयी हैं।

मुझे याद है कि पुराने समय में काशी विद्यापीठ के एक अध्यापक की मृत्यु पर बीमा कंपनी के आदमी खुद बनारस आये थे। उस अध्यापक की विधवा की मुझसे शिनाख्त करवाकर उन्होंने पालिसी के दो हजार रुपये हाथोंहाथ चुका दिये थे। यह अध्यापक अगर जीवन बीमा निगम बनने के बाद मरे होते, तो उनकी विधवा पत्नी उत्तराधिकार का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की कठिनाइयों में उलझी रहती। और प्रमाण-पत्र पाने का खर्च पालिसी की रकम के बराबर ही बैठता। शायद इन कोशिशों में ही पालिसी का रुपया लेने की मियाद निकल जाती और वे बेचारी हाथ मलती ही रह जातीं।

छोटे से लेकर बड़े तक, सब सरकारी अधिकारियों के अधिकार हैं, सुविधाएं हैं, सुरक्षा है; लेकिन कर्तव्य और उत्तरदायित्व कुछ नहीं है। काम करने की आवश्यकता भी नहीं है; क्योंकि उनसे कोई सवाल तो कर नहीं सकता। अगर पूछताछ करे, तो वे हड़ताल कर दें।

बेचारे कर-दाता को नोटिस मिलते ही कर की रकम जमा करनी पड़ती है; मगर कर-अधिकारी उनके मामले बरसों घसीटे जाते हैं। गरीब नागरिक को कहीं चैन नहीं। शिकायत हो, तो कानून की शरण लेने की सलाह दी जाती है, जैसे अदालती कार्रवाई बहुत सीधी-सादी हो।

संसद् में दिये गये एक सरकारी बयान के अनुसार डाकखानों के बचत खातों में बारह करोड़ रुपये की रकम ऐसी है, जिसका कोई दावेदार नहीं। सरकार अपना यह फर्ज नहीं समझती कि वह इस धन के मालिकों का पता लगाकर उनका पैसा उन्हें दे दे।

जो लोग समाजवादी समाज के निर्माण और इंसान-इंसान में समानता स्थापित करने की बातें करते हैं, वे आंखों पर साफ चश्मा लगाकर देखें कि वास्तव में हमारे चारों ओर हो क्या रहा है? पचास वर्ष सार्वजनिक कार्यों में बिताने के बाद जब मैं देखता हूं कि जनसाधारण की हालत क्या हो गयी है और सरकारी कर्मचारियों के हाथ में कितनी शक्ति आ गयी है, तो मुझे असीम कष्ट होता है।

निश्चय ही यह तो वह स्वराज्य नहीं है, जिसके लिए मैंने काम किया था। मुझे दुःख है कि अपने दुखिया देश के ये हाल देखने को आज जिंदा हूं। शासकों से मैं यही कहना चाहता हूं कि ऐसे लोगों पर राज्य करने में कोई गौरव और शान नहीं है, जो आत्म-सम्मान गंवा चुके हैं, जो रिश्वत लेना और देना स्वाभाविक समझते हैं, जिन्होंने यह बात मान ली है कि आदमी के लिए दो ही रास्ते हैं—या तो वह सरकार का पुर्जा बन-कर गैर-जिम्मेदाराना हुकूमत करे या गुलाम बनकर सत्ताधारियों के हाथों अपना शोषण कराये, उनका दुर्व्यवहार सहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शौर्य-गाथा के चितेरे शोलोखोव

राजाराम सिंह

बीमार युवक ने डाक्टर के सामने अपनी बांह बढ़ायी और डाक्टर ने इंजेक्शन लगाना शुरू किया कि सुई टूट गयी। एक-दो नहीं, पूरी तीन सूइयां! डाक्टर ने युवक की फौलादी बांह की ओर देखा, फिर उसे ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा और पूछा—"क्या तुम कज्जाक हो?" युवक ने उत्तर दिया —"हां!"

यह कहानी सोवियत संघ के जन कलाकार श्री सर्गेई बोन्दारचुक को सुनाकर लेखक जोर से हंस पड़ा। श्री सर्गेई कहानी कहनेवाले के लहजे, उसकी भाषा, निश्छल हंसी और कज्जाकी स्वाभिमान से अभिभूत हो गये। यह कहानी कहनेवाले थे रूस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री मिखाइल शोलोखोव, जिन्हें हाल ही में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री शोलोखोव का जन्म सन १९०५ में रूस के फौजी जिले दोन कज्जाक के वेशेन्स-काया गांव में हुआ था। पिता पूर्ण कज्जाक किसान थे और माता अर्द्ध कज्जाक थीं।

बालक मिखाइल शोलोखोव की छः वर्ष की उम्र तक उनके पिता ने मां से शादी ही नहीं की थी और जब बालक सात वर्ष का हुआ, तब पिता ने पुत्र को जायज संतान बनाने के लिए उनकी मां से शादी करने की बात सोची। ऐसे विचित्र बचपन से गुजरनेवाले बालक की शिक्षा भी बड़े विचित्र ढंग से हुई। उसने समीप की कई पाठशालाओं और अनेक प्रांतीय स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की। घर से बालक का संबंध पत्रों द्वारा ही होता था। मां ने तो पुत्र के पत्रों का उत्तर देने के लिए ही थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना सीखा था।

सन १९१७ की बोल्शेविक क्रांति के समय शोलोखोव केवल बारह वर्ष के थे। वह बड़ा ही भयानक जमाना था। सर्वत्र हिंसा, आतंक, खून और युद्ध का वातावरण था। प्रथम महायुद्ध के बाद दोन क्षेत्र में शुरू गृहयुद्ध में युवक शोलोखोव ने लाल सेना के एक खाद्यान्न प्राप्त करनेवाले दस्ते में काम किया। उस समय के अनुभव के बारे में श्री शोलोखोव कहते हैं—"१९२२ में हमने दोन क्षेत्र के लुटेरों पर हमला किया और लुटेरों ने हम पर। सब कुछ अपेक्षित रूप में हुआ और मुझे अनेकानेक संघर्ष-स्थलों पर उपस्थित रहने का अवसर मिला।"

गृह-युद्ध के बाद जब वे मास्को आये, तो उनका वहां कोई साथी, संबंधी या परिचित नहीं था। अजनबी-सा अठारह वर्षीय युवक शिक्षा प्राप्त करने की प्यास में मास्को की सड़कों पर घूमता रहा। उसके मन में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

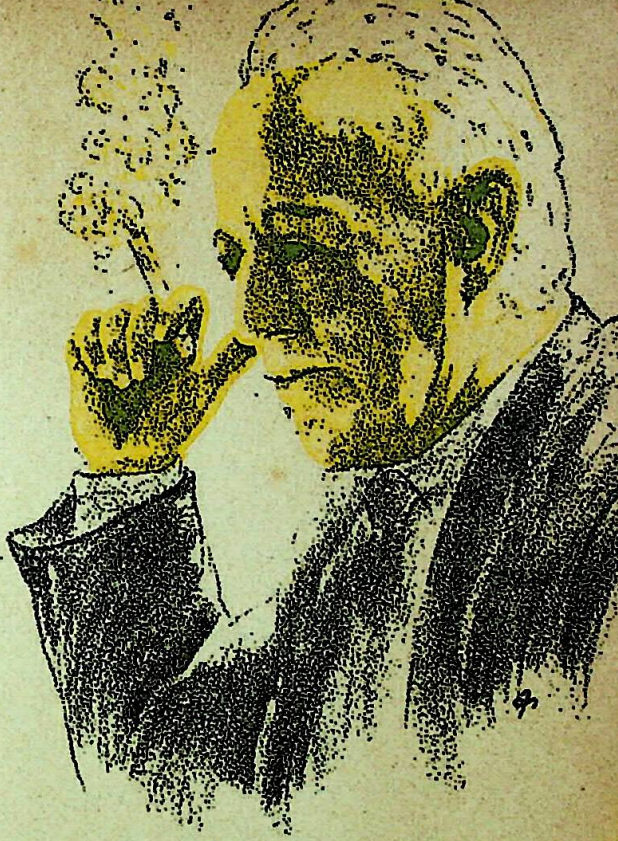

दोन की प्रकृति एवं जीवन के प्रबल खिंचाव और मास्को में केंद्रित शैक्षणिक सुविधाओं के आकर्षण का भीषण संघर्ष चलता रहा। प्रारंभ में मास्को का आकर्षण विजयी हुआ और युवक ने साधारण मजदूर की तरह काम करना शुरू किया और पढ़ाई जारी रखी। युवकों की कम्युनिस्ट पत्र-पत्रिकाओं में हास्य रेखा-चित्र और कहानियां लिखना भी प्रारंभ किया; लेकिन यह क्रम अधिक समय तक नहीं चला। अंत में वह दोन धरती की पुकार पर १९२५ में फिर कज्जाक पहुंच गया। पुरानी स्मृतियां सजीव हो उठीं और कज्जाक धरती अपनी कहानी कहने लगी। युगों-युगों की कज्जाक वीरों की कहानी! युवक लेखक एक किसान लड़की से शादी करके कज्जाक वातावरण में एकदम विलीन हो गया। उसके समक्ष कज्जाकों का इतिहास—युद्ध, प्रेम क्रूरता और स्वच्छंदता का इतिहास मुखरित हो उठा।

श्री शोलोखोव सर्वप्रथम १९२५ में 'दोन कहानियां' शीर्षक संग्रह से सामने आये। आगे चलकर उन सब कहानियों तथा १९२३-२५ के मध्य लिखी गयी अन्य सभी कहानियों को 'नीले आकाश में स्टेपी भूमि' शीर्षक के अंतर्गत संगृहीत किया गया, जो पहली बार १९२५ और दूसरी बार १९३१ में छपीं। इन कहानियों में दोन नदी के किनारे कज्जाक जनों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। उनमें कज्जाक परिवारों में गृह-युद्ध के परिणामस्वरूप व्यापक कलह का सजीव दृश्य मिलता है। लेखक का दृष्टिकोण सत्यं, केवल सत्यं का चित्रण करना रहा है।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी बीच सन् १९२७ में मास्को की वामपक्षी पत्रिका 'अक्तूबर' के संपादकीय कार्यालय को एक बड़ी पांडुलिपि प्राप्त हुई, जिसके शब्द और अक्षर बहुत ही अस्पष्ट थे। पत्रिका के संपादकों ने किसी तरह उसे पढ़कर यह जानकारी प्राप्त कर ली कि वह रचना युद्ध-पूर्व कज्जाकी जीवन का औपन्यासिक चित्रण है। किंतु साम्यवाद के लिए उपयोगी न समझकर उन्होंने उस पांडुलिपि को अस्वीकृत कर दिया। इस प्रकार वह पांडुलिपि 'अक्तूबर' पत्रिका के कार्यालय में ही पड़ी सड़ जाती, यदि सौभाग्यवश वह श्री शोलोखोव के पुराने मित्र, प्रसिद्ध लेखक और संपादक मंडल के सदस्य श्री ए० एस० सेराफिमोविच के हाथ न पड़ती। श्री सेराफिमोविच ने उस अस्पष्ट लिपि को बड़ी मेहनत से साफ-साफ लिखा और उसके प्रकाशन का आदेश दिया। जनवरी १९२८ से वह 'अक्तूबर' के अंकों में प्रकाशित होने लगी। शुरू में उसका शीर्षक रखा गया 'तिखी दोन' या 'मंद गति दोन।' आगे चलकर यही उपन्यास 'ेान मंद गति से बह रही है' कहलाया। उपन्यास के इस भाग में दोन नदी के किनारे १९१२ से प्रथम महायुद्ध के प्रारंभिक काल के जीवन का चित्रण किया गया है। इसे वामपक्षी आलोचकों ने पसंद नहीं किया; परंतु रूसी जनता, विशेषकर कज्जाक क्षेत्र के लोगों ने उक्त रचना का हार्दिक स्वागत किया।

उपन्यास का दूसरा भाग १९२९ में प्रकाशित हुआ, जिसमें दोन नदी के किनारे १९१६–१९१८ के बीच की घटनाओं का सजीव चित्रण किया गया। इसमें कज्जाक वीरत्व उभर कर आया है। किंतु वामपक्षी समीक्षकों ने श्री शोलोखोव की तीखी आलोचना शुरू कर दी। यही नहीं, उन्हें प्रतिक्रियावादी, क्रुद्ध और कुंठित कज्जाक तक कहा गया। मास्को में यह भी अफवाह फैलायी गयी कि उक्त उपन्यास का लेखक कोई 'श्वेत सेना का बड़ा अधिकारी होगा', जो शोलोखोव के जरिये अपनी रचना छपा रहा है। इन सब आलोचनाओं, आरोपों और अफवाहों से शोलोखोव एकबारगी बहुत चिंतित हो गये और उन्होंने रूसी साहित्यकार श्री गोर्की को एक पत्र लिखकर इस बारे में सफाई दी और साफ-साफ लिखा– "१९१९ का कज्जाक-विद्रोह एक ऐतिहासिक विद्रोह था, जिसका चित्रण होना ही चाहिये। मैंने वही किया है। बिना कुछ छिपाये, मैंने विद्रोह के पूर्व की हकीकत और क्रूर यथार्थ का चित्रण किया है।" गोर्की के बीच-बचाव और हस्तक्षेप से इस उपन्यास का तीसरा भाग फिर १९३२ में उक्त पत्रिका में प्रकाशित हुआ, जो पुस्तक के रूप में १९३३ में आया। गोर्की ने तीसरे भाग के बारे में लिखा है–"तीसरा भाग, दूसरे भाग से अधिक महत्वपूर्ण तथा अधिक कुशलता से लिखा गया है।" इस भाग में क्रांतिकारी दौर में दोन के किनारे कज्जाकों के जीवन का संघर्षमय चित्रण है–बोल्शेविक क्रांति और गृह-युद्ध के बीच से गुजरते हुए जीवन का!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यास का चौथा या अंतिम भाग फिर ८ वर्ष बाद प्रकाशित हुआ। चौथे भाग की पहली किश्त १९३८ में और दूसरी किश्त १९४० में प्रकाशित हुई। तीसरे और चौथे भाग के बीच की अवधि में सोवियत संघ में सैद्धांतिक उथल - पुथल, राजनीतिक भूकंप और नैतिक तूफान की स्थिति थी। यही स्टालिन की तानाशाही और व्यक्ति-पूजा के विकास का दौर है। इसलिए शायद उपन्यासकार को ८ वर्ष की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस प्रकार यद्यपि यह उपन्यास १५ साल में तैयार हुआ। तथापि इसके अंतिम संस्करण को तैयार करने और उसके प्रकाशन में १५ साल और लगे। इस तरह यह रचना ३० वर्ष में पूर्ण रूप से तैयार हुई।

जब नाजी जर्मन ने सोवियत भूमि पर आक्रमण किया, तब शोलोखोव युद्ध संवाददाता बन गये और अन्य रूसी लेखकों की तरह युद्ध के मैदान में देश की सेवा के लिए उतरे। उनका कज्जाकी स्वाभिमान पितृभूमि सोवियत रूस के प्रति महान् प्रेम, श्रद्धा और स्वाभिमान में तिरोहित हो गया। यह था आंचलिक लगाव और देश-प्रेम का और सबसे अधिक मानवता के प्रति प्रेम का समन्वय !

उन्होंने ५ मई १९४३ से १५ फरवरी १९४५ के बीच 'प्रवदा' के कालमों में 'घृणा का विज्ञान" नामक रचना प्रकाशित की, जिसमें युद्ध-जन्य अमानवी घृणा का चित्रण किया गया है। 'वे अपने देश के लिए लड़े' का प्रथम भाग १९५६ में पूरा हुआ। इस-

मेरे देशवासियो !

इसमें संदेह नहीं कि जो खूब सोते हैं, वे खूब जागते भी हैं। भारतवर्ष बहुत काल तक सोता रहा है। इसलिए हम निःसंदेह यह कह सकते हैं कि अंधविश्वास या पुराने सड़े-गले रीति-रिवाज अब धीरे-धीरे दूर हो रहे हैं और आलस्य उड़ता जा रहा है।

उन्नति का नियम बाहरी क्रिया में विभिन्नता और भीतरी स्वरूप एवं भाव में पूर्ण एकता चाहता है। ऐसा न होने पर जड़ता पैदा हो जाती है। किसी ने व्याकरण को भाषा का श्मशान कहा है। ज्यों ही आप भाषा को अचल और सुरक्षित बनाने का प्रयत्न करेंगे, वह तत्काल निर्जीव हो जायेगी। ठीक इसी प्रकार नियमों और कर्मकांड की दृढ़ अचलता राष्ट्र का सत्त्व भक्षण कर लेती है।

मेरे देशवासियो, याद रखिये, ये स्मृतियां और शासन-विधान आपके लिए हैं, आप उनके लिए नहीं ! भारतवर्ष में नदियों के मार्ग बदल गये, जंगलों के स्थान पर खेत बन गये, देश का स्वरूप बदल गया, शासन-पद्धति बदल गयी, तिस पर भी इस अस्थिर जगत में आप प्राचीन रीति-रिवाज को स्थिर करने में लगे हुए हैं ! वास्तव में आप इस देश और काल में रहते हैं, इसकी चिंता करें। यदि आप परिवर्तित परिस्थिति में अपने को रहने योग्य नहीं बना लेते, तो इस संसार से आपका नामो-निशान मिट जायेगा।

—स्वामी रामतीर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार शोलोखोव ने अधिकतर वीर गाथाओं की ही रचना की है। यही उनकी रचनाओं का हृदय और आत्मा है। यही उनकी विशेषता और दोष भी है।

शोलोखोव का पुरस्कृत उपन्यास 'दोन मंद गति से बह रही है' में दोन नदी के किनारे कज्जाक जन-समूह में गृह-युद्ध के दौरान एक युवक नायक की वीरता, प्रेम, क्रूरता और मानवीय कमजोरी का चित्रण है; और है कज्जाकों की वीर परंपरा की ज्वलंत तस्वीर, जो उनकी शक्तिशाली कलम से बहुत उभर कर आयी है।

शोलोखोव युद्ध के वर्णन तथा कज्जाकों की वीरता के चित्रण में अद्वितीय रूप में सफल हुए हैं। एक तरह से वे वीरगाथा के साहित्यकार हैं और उनकी रचना पौराणिक वीर-गाथाओं की तरह सर्वदा नवीन मालूम पड़ती है। उनकी 'दोन मंद गति से बह रही है' कृति को कज्जाक वीरता का आधुनिक पुराण कहा जा सकता है।

वे इस समय ६० वर्ष की उम्र पार कर रहे हैं; लेकिन उनका शरीर अब भी स्वस्थ है। जब उन्हें 'नोबेल पुरस्कार' देने की खबर सुनायी गयी, तो वे अपनी पत्नी तथा दो पुत्रों सहित यूराल की स्तेपी में थे। श्री शोलोखोव पतझड़ के मौसम में बत्तखों के शिकार और मछलियां पकड़ने के लिए यूराल की स्तेपी जाया करते हैं। जब उन्हें यह समाचार सुनाया गया, तो उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक उसे स्वीकार किया।

नोबल पुरस्कार समिति के अध्यक्ष डा० एंडर्स इस्टरलिंग ने पुरस्कार के निर्णय के समय कहा कि उपन्यास 'दोन मंद गति से बह रही है' प्रत्येक दृष्टि से शक्तिशाली रचना है तथा पुरस्कार के लिए सर्वथा उपक्त है। पुरस्कार देर से दिया जा रहा है; परंतु ख़ुशी है कि बहुत देर से नहीं। इस तरह हमारे युग के एक सर्वश्रेष्ठ लेखक को साहित्य-संबंधी नोबेल पुरस्कार पाने-वालों की सूची में जोड़ा गया है।"

सत्य और न्याय

सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल लगते हैं। उनका अंत नहीं होता। ज्यों-ज्यों हम गहरे पैठते हैं, त्यों-त्यों उसमें से रत्न निकलते हैं, सेवा के अवसर हाथ आते ही रहते हैं।

अदालतों का चिह्न है तराजू। उसे पकड़ रखनेवाली एक निष्पक्ष, अंधी परंतु समझदार बुढ़िया है। उसे विधाता ने अंधा बनाया है कि जिससे वह मुंह देखकर तिलक न लगाये, बल्कि योग्यता देखकर लगाये।

प्रेषक : आर० स्वामीनाथ

—महात्मा गांधी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे गुरुजी

—ठा० राजबहादुरसिंह

हमारे प्राइमरी स्कूल के एक मुख्याध्यापक थे, जिन्हें हम 'गुरुजी' कहते थे। परोपकार के जितने काम थे, उनमें उनकी इतनी रुचि थी कि अपने ही समान अपने शिष्य-वर्ग को भी वे उसमें लगा देने में समर्थ थे। पढ़ने-पढ़ाने से जो समय बचता, उसका उपयोग वे प्रातः-सायं स्कूल के पार्श्ववर्ती गांवों में जाकर ग्रामीणों की औषधिक सेवा करने, उनके आपसी झगड़े मिटाने, समाज-सुधार और समाज-कल्याण की बातें करने में लगाते थे। यह अंग्रेजी शासन के दिनों की बात है, जब आर्य समाज के कारण समाज-सेवा की भावना जग ही रही थी।

इस काम के सिलसिले में गुरुजी आसपास के चमारों के गांवों में भी जाते और उनके हित की बातें किया करते थे। गुरुजी जन्म के ब्राह्मण थे और उन्होंने अपनी पत्नी के देहांत के पश्चात् दोबारा विवाह नहीं किया था। पास के गांववाले ब्राह्मण-क्षत्रिय और वैश्य कहे जानेवाले लोग गुरुजी के चमरौटी (चमारों के गांव) जाने पर छींटाकशी करते और कहते "गुरुजी को सेवा ही करनी है, तो हम लोगों के गांव क्या कम हैं, जो 'चमरौटी' जाते हैं।"

बात इधर-उधर से छनकर गुरुजी के पास पहुंची, तो वे गांवों की सभाओं में यह

कैसे कैसे लोग !

भाषण करके प्रचार करने लगे—"सच्ची सेवा तो मैं 'चमरौटी' में जाकर ही कर सकता हूं, क्योंकि सेवा की आवश्यकता ही वहीं है—सवर्णों के बीच तो मुझे उनकी सेवा की आवश्यकता के अनुपात से ही जाना चाहिये।"

गुरुजी का नाम राधेगोविंद था। वे एक ऋषिकल्प व्यक्ति थे। उनकी सादगी, (उन दिनों खद्दर पहनना, जब कि खादी आंदोलन आरंभ होने में शायद एक दशाब्द की देर थी) और साफा बांधना, धोती और कभी-कभी पाजामा, और गांव का चमरौधा जूता पहनना, रोटी दाल और साग-सब्जी से भूख मिटाना और रोज कम-से-कम छः मील पैदल चल लेना, उनकी सादगी और सात्विक वृत्ति का प्रतीक था। वे अपने शिष्यों को भी इसी प्रकार के जीवन की शिक्षा देते और प्राइमरी स्कूल के सरकारी होने पर भी उसे गुरुकुल की प्रारंभिक पाठशाला-सी बना देने में समर्थ थे। गुरुजी का जीवन वास्तव में एक आदर्श था और आज ऐसे अध्यापकों की ही इस देश में आवश्यकता है। सचमुच मेंशियन्स के शब्दों में "मानवता यदि किसी चीज से बांधी जा सकती है, तो वह है भीतर और बाहर दोनों का सदाचरण और व्यवहार।" और हमारे गुरुजी उसके साक्षात् स्वरूप ही थे।

हिन्दी डाइजेस्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'धर्म' और 'सुख' के साधक

—गोविंद रत्नाकर

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूं, जो धर्म-पालन में भी तत्पर हैं और जिन्होंने सुख-संपादन में भी सफलता पायी है। उनका नाम-पता बताना, उनके प्रति अनौचित्य होगा, अतएव उन्हें यहां 'सदाशिव' नाम दे देता हूं। वे एक साधारण परिवार में जन्मे, माता-पिता का प्यार-दुलार उन्हें प्राप्त नहीं हुआ, एक निकट संबंधी ने उनको पाला-पोसा। पांच-छः दशक पहले का भारत, ग्रामीण जीवन, अभावों के कारण स्वाभाविक संयम, कठोर अनुशासन, सामने सत्पुरुष का आदर्श—बालक सदाशिव में सद्‌गुणों का बीजारोपण हो गया।

शिक्षा में महत्व था संस्कृत व संगीत का। बालक सदाशिव उसमें पारंगत हो गया। पर जीवन की आवश्यकता भी उपेक्षणीय नहीं थी। उसने अंग्रेजी की पढ़ाई भी मनोयोग से की, समय पाकर वकालत पास की। शिक्षा के साथ शुद्ध आचरण उसकी बड़ी थाती थी। पर जीवन-यापन की समस्या तो सामने थी ही। एक दिन उसने जीवन के पूर्वार्द्ध में जनाकीर्ण, किंतु मित्र-विहीन, आजीविका-सुलभ; किंतु चारित्र्य-दुर्लभ नगरी में पदार्पण किया। वकालत मामूली तौर पर ही चली; पर विधि-विधान कुछ दूसरा था। वकालत को छोड़ उसने व्यवसाय का क्षेत्र अपनाया।

प्रारब्ध कहिये या सद्‌वृत्तियों का पुरस्कार, युवक सदाशिव को कुछ मित्र मिल गये। अपनी योग्यता और उनकी सहायता के बल पर उसकी जीवन-नौका चल पड़ी। अभाव का दुःख नहीं था, बल्कि प्राप्ति का सुख ही उसे लवलीन बनाये रखता। वह जीविकार्जन में तत्पर रहा; पर उसे ही एकमात्र ध्येय नहीं समझा और व्यय में यथोचित संतुलन रख उसने भलीभांति जीवन-यापन किया, यत्किंचित संचय भी किया।

मैंने उन्हें निकट से देखा-समझा है। कोई अनुचित काम करते, असत्य भाषण-व्यवहार करते उन्हें न कभी देखा, न सुना। अपने व्यवसाय में भी नहीं— इन्कमटैक्स में भी नहीं! धनवान और 'प्रगतिशील' समुदाय के बीच रहकर भी उन्होंने अपनी सांसारिक क्रियाशीलता को सीमित रखा। अवश्य ही, उन्हें अभाव नहीं रहा; पर इतनी बहुलता भी नहीं कि जो पथ-भ्रष्ट करने का कारण बने।

उनका धर्म-पालन सत्य और अस्तेय में निहित रहा है। उनसे किसी का अनिष्ट न हो, यह उनका परम साध्य रहा है। गृहस्थी के सुचारु रूप से संचालन, इंद्रियों के यथोचित निग्रह, नियमित आहार - व्यवहार के फलस्वरूप स्वस्थ तन-मन तथा संगीत व स्वाध्याय के द्वारा तुष्टि से वे जीवन का सुख-संपादन करते रहे हैं—वे कभी किसी कारण से पीड़ित नहीं देखे गये।

प्रायः अवगुणों से भरपूर; पर किसी एक-दो गुणों के कारण बहुत से लोग खूब चमकते हैं, दूसरों को चकाचौंध भी करते हैं। पर सदाशिव को कोई नहीं जानता, न उनके चित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं। पर वे अपना जीवन जिस धार्मिकता व सुख से बिताते हैं, वह निश्चय ही श्रद्धास्पद और स्पर्द्धास्पद है। ऐसे सौभाग्य और योग्यतावाले विरले ही होते हैं।

नये ताजमहल का निर्माता

—विद्याभूषण 'श्रीरश्मि'

नाम तो उनका कुछ और था; पर पूरे मौहल्ले और अपने परिचितों में वे 'कंजूसीलाल' के नाम से विख्यात थे। यह नाम उन्हें अकारण ही नहीं मिला था—इसके लिए उन्होंने अपनी पात्रता पूरी तरह सिद्ध की थी। कलकत्ता कारपोरेशन में वे नौकरी करते थे और लगभग चार सौ रुपये उनका वेतन था। पर वस्तुतः उनका मासिक व्यय पचास रुपये से भी कम था। दस रुपये महीने के एक कमरे में वे रहते और दोनों वक्त अपने हाथ से भोजन बनाते तथा बर्तन मांजते थे। दो धोतियों और दो कुर्तों में उनका पूरा साल निकल जाता था। जब धोतियां फट जाती थीं, तब उन्हें ही फाड़कर वे लुंगियां बना लेते थे.....वे लुंगियां ही उनकी घर की पोशाक थीं। एक ब्लेड को पूरे पंद्रह दिन शीशे के गिलास पर घिस-घिस कर वे दाढ़ी बनाते थे और जब उसे फेंकते थे, तब यह सोचकर चकित रह जाना पड़ता था कि इतना पतला ब्लेड उनके सेफ्टीरेजर में लगता कैसे था...टूट क्यों नहीं जाता था। ट्राम या बस भी वे शायद ही कभी लेते थे—घर से कारपोरेशन तक की चार मील की दूरी पैदल ही तय करते थे। दफ्तर में या घर पर किसी मित्र या परिचित को उन्होंने कभी चाय तक नहीं पिलायी।

उनकी वय यही कोई चालीस वर्ष की होगी। 'अपने' के नाम पर उनके केवल एक भाई था, जो अपने परिवार के साथ संभवतः कानपुर में रहता था। वहां से कभी कोई कंजूसीलाल के घर नहीं आया। उनकी पत्नी कोई पंद्रह साल पहले निःसंतान स्वर्ग सिधार गयी थीं और उन्होंने दोबारा शादी नहीं की थी। सो, ये पूरी तरह अकेले थे।

ऐसा व्यक्ति इतनी कंजूसी करे, यह बात किसी की समझ में नहीं आती थी। समझ में आनेवाली बात भी नहीं थी। कभी-कभी कोई शरारती मित्र उनसे व्यंग्यपूर्वक कह भी देता—"कंजूसीलालजी, अंतिम समय से पहले सारा रुपया बैंक से निकलवा लीजियेगा। आपके साथ ही हम उसका भी दाह-संस्कार कर देंगे।" और जवाब में कंजूसीलालजी चिढ़कर कहते—"अरे बेटा, तेरे जैसे भिखमंगों के कफन के लिए ही तो जमा किया है। तू इत्मीनान से मर, मेरी चिंता छोड़।" मतलब उनकी कंजूसी एक लंबे अरसे तक राज ही रही—उन्हें कुरेद कर भी कोई उनके मंतव्य को न जान पाया।

पर एक दिन अचानक लोग आसमान से धरती पर गिरे, जब उन्होंने सुना कि कंजसीलालजी ने पचास हजार रुपये खर्च करके अपने गांव में एक अस्पताल और प्रसूति-केंद्र स्थापित किया है.....और राज्य के स्वास्थ्य-मंत्री उसका उद्घाटन करनेवाले हैं। उसी दिन लोगों पर यह राज खुला कि पर्याप्त उपचार के अभाव में प्रथम बच्चे को जन्म देते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय काल-कवलित उनकी पत्नी इतने वर्षों तक इस तरह उनके मन-प्राण पर छायी रही कि फटेहाली में लगभग पूरा जीवन बिताकर उन्होंने एक उपयोगी आधुनिक 'ताजमहल' का निर्माण कर दिया। फिर कभी किसी को उन्हें 'कंजूसीलाल' कहने का साहस न हुआ।

पड़ोसी चूरनवाला

--श्याम बिहारी

'लक्कड़ हजम, पत्थर हजम' चूरन बेचनेवाले को देखकर बच्चे 'सीताराम-राधेश्याम कहकर चूरन के लिए हाथ पसार देते हैं। पर जो बालक बिना रामनाम लिये चूरन' मांगते, उनसे वह स्वयं 'सीताराम-राधेश्याम' दोहरवाता और फिर चूरन देता। मीठे और नमकीन दोनों चूरनों की चुटकी वह हर एक को बड़े प्रेम से देता है।

लगभग छः फुट ऊंचाई का यह गौरवर्ण व्यक्ति 'चूरनवाले' के नाम से पहचाना जाता है। बच्चे उसे प्रिय हैं और बच्चों को वह प्रिय है। परिवार में दो ही व्यक्ति हैं-- स्वयं और पत्नी, बच्चा कोई नहीं। आज उसने ५-६ हजार की लागत से निजी मकान बनवा लिया है-- चूरन की कमाई की ही बदौलत !

एक बार छुट्टी के दिन मुझे उससे कुछ गपशप करने का अवसर मिल गया। बातचीत के दौरान पता चला कि वह विभाजन के पूर्व पंजाब के लायलपुर जिले का रहनेवाला था। १९४७ में 'शरणार्थी' बनकर जब वह दिल्ली आया, तो उसे कपड़ा मिल में नौकरी मिल गयी। कुछ दिनों नौकरी की और फिर चूरन का धंधा जम जाने पर नौकरी छोड़ दी।

मैंने उससे सीधा सवाल किया कि उसने चूरन का काम किस प्रकार शुरू किया। इस पर वह बोला--"दिल्ली की बात है। मेरे भतीजे के पेट में एक दिन दर्द हुआ। मैंने सात आने की लागत से चूरन तैयार किया। मेरी भाभी नाराज हुई कि मैंने इतने पैसे क्यों खर्च कर दिये। एक आना देकर सोडे की बोतल पीने को कह दिया होता। बात आयी-गयी हो गयी। मैंने फिर उसके दाम उठाने की सोची; चूरन बेचने बाजार में निकल पड़ा। बेचकर चौदह आने लाया। मुनाफे के पांच आने भाभी को दिये और दो आने अपने पास रखे। उसी दिन से चूरन बेचकर जीविका चलाने लगा। धीरे-धीरे काम जुड़ता गया और जब ढ़ायी-तीन का औसत बैठने लगा, तो मैंने नौकरी छोड़ दी।" मैंने कहा -- "नौकरी भी करते रहते और उपजीविका के रूप में इसे भी चलात रहते।" इस पर वह बोला-- "दुकानदारी में ही बरकत है। इसमें किसी

वात्सल्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की अधीनता तो नहीं रहती। मिल की नौकरी में कभी दिन की पाली में जाना पड़ता, कभी रात की पाली में; बड़ी दिक्कत थी। आज भगवान की कृपा से मैंने अपना मकान भी बनवा लिया है। यदि मैं नौकरी में ही रहता, तो यह मकान कभी नहीं बनवा पाता।"

मैंने पूछा—"तुम अपना काम बढ़ाते क्यों नहीं?" उसने बड़े संतुष्ट भाव से कहा—"गुजरलायक तो भगवान दे ही देता है। अधिक कमाकर क्या करना है?"

मिलन

वह चूरन का धंधा बनाने से बेचने तक स्वयं ही चलाता है। मसाले कूटने-पीसने व छानने आदि किसी भी काम में उसे अपनी पत्नी तक का सहयोग लेते हमने कभी नहीं देखा। वह घर पर सिर्फ दो ही कामों सें व्यस्त दीखता है—चूरन बनाना या हरिकीर्तन करना।

उसे ईश्वर-भक्ति के संस्कार अपने पिता से मिले थे। उसके यहां सांझ-सवेरे प्रतिदिन कीर्तन के लिए बालकों का जमाव होता है। मौहल्ले के सभी छोटे-बड़े बालक, फिर वे चाहे किसी भी जाति और धर्म के हों, आते हैं और शांत भाव से कीर्तन करते हैं। वह स्वयं उनके बीच बैठकर कीर्तन कराता है। जिस अनुशासन से पलौथी मारकर वहां छोटे-से-छोटे बालक डेढ़ दो घंटे बैठे रहते हैं, उसे देखकर मुझे आश्चर्य होता है। बच्चों के कीर्तन के लिए चिमटा, मंजीरा और खड़ताल आदि उसने ला रखी है और स्वयं बनस्पति के दो गोल डिब्बों को उलटा रखकर उनसे तबले का काम लेता है।

पड़ोस के एक अधपगले किशोर को वह तोते की तरह रामनाम पढ़ाता रहता है—इस विश्वास में कि प्रभु कभी-न-कभी कृपा कर उसकी व्याधि दूर कर देंगे। भक्ति, निरीहता और बालसेवा की इस त्रिमूर्ति का नाम है—मनोहर लाल बत्रा।

—ब्रजकिशोर 'नारायण'

सूझों के सम्राट

बिहार में बेगूसराय एक जगह है। छपरा के सुहृदजी वहां बस ही नहीं गये हैं बल्कि अपने नाम पर उन्होंने एक पोस्ट आफिस भी खुलवा लिया है, जिसका नाम 'सुहृद नगर' है! उनकी जानपहचान, राजनीतिक और साहित्यिक कर्मठता के कारण डा० राजेंद्रप्रसाद,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेहरूजी और श्री लालबहादुर शास्त्री—जैसे व्यक्तियों से इस अंदाज पर थी और है कि वे जो चाहें करा लें और जहां चाहें उन्हें बुला लें। उन्हें यह सिद्धि उनके निःस्वार्थ, निष्काम और निडर सेवा-भाव ने प्रदान की है। वे धुन के पक्के और लगन के उदाहरणीय उपमान हैं, जिन्हें पाकर मित्रों की बांछें खिल जायें और शत्रु सुबह के सितारे हो जायें।

वे अपनी और अनेक विशेषताओं के साथ-साथ समय पर विलक्षण सूझ लेकर एक अप्रत्याशित करिश्मा भी दिखा देने में अपना सानी नहीं रखते।

एक बार बेगूसराय में कवि-सम्मेलन था। समारोह के बाद हम लोग जरा देर से स्टेशन रवाना हुए। आगे बढ़े, तो रेलवे गुमटी बंद। पूछने पर मालूम हुआ कि स्टेशन पर वही गाड़ी रुकी है, जिससे हमें जाना है। सुहृदजी ने तड़ाक-से कार का द्वार खोला और मेरे सिर पर उजली धपधप गांधी टोपी पहना दी। गुमटीवाले को उन्होंने डांटकर कहा—"देखो, जल्दी फाटक खोलो, मिनिस्टर साहब को यही गाड़ी पकड़नी है। जल्दी खोलो!" बेचारा गुमटी-वाला डरकर आगे बढ़ा और फाटक खोलकर कार को उस पार चले जाने की सहूलियत दे दी। चलते वक्त उसने एक लंबी सलामी भी दागी। जब हम लोग स्टेशन के पुल पर चढ़ ही रहे थे कि इंजिन ने सीटी दे दी। सुहृदजी वहां से दौड़े और सीधे गार्ड के डिब्बे की ओर लपके परिणामस्वरूप चलती गाड़ी रुक गयी और जो बिलकुल अनहोना था, वह हो गया।

मैं जब उन्हें इन दोनों सूझों पर साधुवाद देने लगा, तो बच्चनजी बोले—"नारायण! अरे, तुम सुहृद को नहीं जानते। इसने बेगूसराय में अपना कमाल दिखाया, तो क्या दिखाया। इसका लोहा तो हमने लखनऊ में मान लिया था। अगर यह नहीं होता, तो हमें आई० जी० पुलिस की चलती हुई कार को सड़क पर रोक कर शहर में कौन माई का लाल पहुंचाता। पांच-छः मील तो पैदल चलना ही पड़ जाता।" मैंने चलती गाड़ी से ही जोर से पुकारकर कहा—"दंडौत भाई सुहृदजी, सूझों के सम्राट!"

★

शिक्षक-परिवार

स्काटलैंड का एक परिवार आज शताब्दियों से शिक्षा देने का कार्य करता चला आ रहा है। मानो भगवान ने इस परिवार को शिक्षक बनाकर ही सृष्टि के आदि में भेजा था और वह सृष्टि के अंत तक शिक्षक-कार्य ही करता रहेगा। इस परिवार में सभी लोगों ने सौ वर्ष से ऊपर की उम्र पायी है। इस परिवार के लगभग २०० व्यक्ति एक ही पाठशाला में शिक्षक का कार्य कर चुके हैं। जोवन बेटी के पिता ने उस पाठशाला में १०१ वर्ष तक पढ़ाया तथा उनकी मृत्यु १२३ वर्ष की अवस्था में हुई। जोबन बेटी स्वयं १३० वर्ष की अवस्था में परलोक सिधारे और उन्होंने अपने पिता के ही स्कूल में ११० वर्षों तक शिक्षक का पद ग्रहण किया।

—एम० आर० गुप्त

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मस्तिष्क के चमत्कार

फ्रैंक एडवर्ड्स

मानव मस्तिष्क की अद्भुत और अविश्वसनीय शक्तियां कई प्रकार से सिद्ध हो चुकी हैं। उसमें क्षमता है कि वह मात्र कल्पना शक्ति से समय और अंतरिक्ष पर विजय प्राप्त कर सके और चेतन को अचेतन से पृथक कर सके। यह भी सर्वविदित है कि मानव का मस्तिष्क स्मरणशक्ति का अत्यंत विचित्र भंडार है और अक्सर वह गणना-यंत्र का भी काम कर सकता है।

इन्हीं बातों में कहीं टेलीविजन कलाकारों के 'फोटोग्राफिक' दिमागवाली बातों की महत्वपूर्ण व्याख्या छिपी है। लेकिन अभी कोई वैज्ञानिक इस बात को इससे अधिक समझाने में सफल नहीं हो पाया कि अचेतन मन कोई भी बात भूलता नहीं है या बहुत थोड़ा भूलता है। यह वहीं अपना स्थान बनाये रखती है और अचेतन मन से निकालकर चेतन में लाने की, यानी याददाश्त के आश्चर्यजनक कारनामों को करने की क्षमता के विकास में सहायक होती है।

इस तरह की अद्भुत याददाश्त के लिए विलिना के लिथूयानिया-निवासी रैबी एलिजा की कहानी प्रचलित है; जिसने अपनी विचित्र मानसिक शक्ति को श्राप के रूप में माना। उसने अपने जीवन में दो हजार से अधिक पुस्तकों को एक बार पढ़कर याद कर लिया था। इच्छा करते ही वह उन पुस्तकों में से किसी पुस्तक के किसी भी पृष्ठ को दोहरा सकता था। उसके दृष्टिकोण से यह चीज दुःखदायी थी, चूंकि वह जो भी पढ़ता था, भूल नहीं पाता था। उसके कथनानुसार यह एक ऐसी ही बात थी कि सारे दिन पुस्तकालय में रहने के बाद सोने के समय भी मानो उसे साथ लिये ही सोये।

प्रसिद्ध फ्रेंच राजनीतिज्ञ लिआन गैम्बाटा को भी ऐसी मानसिक देन थी, जिसकी तुलना रैबी एलिजा से की जा सकती है। गैम्बाटा, विक्टर ह्यूगो की रचनाओं के हजारों पृष्ठ शब्दशः दोहरा सकते थे, आगे-पीछे करके दुहरा सकते थे। शुरू के या अंत के—जहां के वे चाहें, दोहरा सकते थे। प्रसिद्ध ग्रीक विद्वान रिचार्ड पोरसन में भी यह खूबी थी कि वे पढ़ी हुई पुस्तकों में से किसी पुस्तक के पृष्ठ-के-पृष्ठ कह सकते थे।

इस तरह की दैवी स्मरण-शक्ति के कारण हैरी नेलसन पिल्सबरी 'अमरीकी शतरंज के जादूगर' की पदवी जीत पाया था। यह उसकी याददाश्त का शानदार नमूना था कि एक साथ ही बीस शतरंज के खिलाड़ियों की चाल को याद रख सकता था और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके साथ ही हजारों चालें याद कर सकता था, जिससे एक साथ बीसों खिलाड़ियों के साथ खेल सका था। कभी-कभी वह शतरंज की थकान से बचने के लिए शतरंज के साथ ही ताश भी खेलता था।

प्रसा (जर्मनी) के राजा के लाइब्रेरियन मैथुरिन वेसिरे की भी आवाज-संबंधी याददाश्त अद्‌भुत थी। किसी भी भाषा में एक बार सुने गये वाक्य को वह हुबहू उसी तरह दोहरा सकता था। उसकी इस अद्‌भुत शक्ति की परीक्षा लेने के लिए एक बार बारह विदेशी दूतों ने, जो विभिन्न बारह भाषा के जानकार थे, बारह वाक्य कहे। वेसिरे ने सबको सुना और उनके चुप हो जाने पर सभी वाक्यों को सही-सही दोहरा दिया।

गणित - संबंधी सवालों को दिमाग में ही हल करने की विलक्षण शक्ति बहुत कम पायी जाती है; लेकिन जिसे यह सुंदर देन प्राप्त होती है, उसे 'मानव गणना मशीन' के नाम से जाना जाता है।

वरमांट के एक बालक जेरा कोलबर्न को यह शक्ति प्राप्त थी। उसने गणित के कठिन सवालों को दिमाग में हल करके लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया था। आठ वर्ष की उम्र में उसे लंदन ले जाया गया। विद्वान पुरुषों ने उस बालक का बहुत नजदीकी निरीक्षण किया। उन लोगों ने उस बालक को काफी कठिन सवाल दिये, जो बड़े-बड़े गणितज्ञ ही हल कर सकते थे। जेरा कोलबर्न जो गणित के साधारण नियम भी नहीं जानता था, जरा भी नहीं हिचकिचाया, और उसने २६८, ३३६, १२५ के 'क्यूब रूट' निकालने जैसे सवालों का बिलकुल सही उत्तर दिया। उस समय वह ८ वीं से १६ वीं शक्ति में पहुंच रहा था।

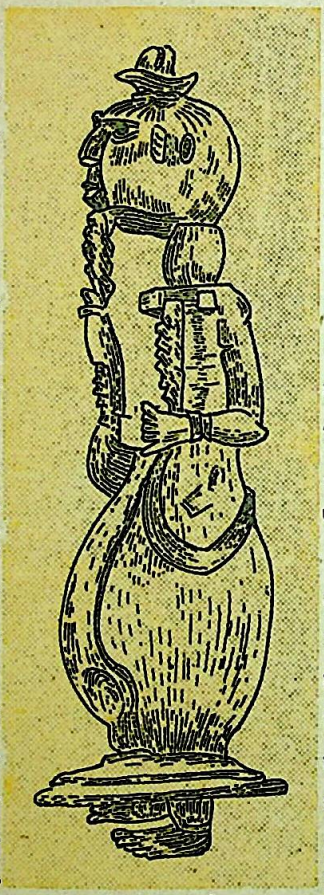

चित्र : शर्ण

लंदन की इस परीक्षा-अवधि में ग्लोसेस्टर के ड्यूक ने बालक से उस तरीके को बताने को कहा, जिससे उसने २१.७३५ को ५४३ से गुणा किया था। बालक ने तुरंत कहा—"मैंने तो सिर्फ ६५.२०५ को १८१ से गुणा किया था।" लड़के ने एकदम सही उत्तर दिया था; लेकिन दार्शनिक प्रोफेसरों की तरह वह तरीका आसानी से नहीं समझा सका।

जेडिडिया बक्सटन ने अपनी समस्याओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर घंटों और महीनों विचार किया था; लेकिन जान मार्टिन डेस ने मिनिटों और सेकेंडों में उसका उत्तर दे दिया। १९२४ में हमबर्ग में जन्मा डेस ऐसा विश्वसनीय समझा जाता था कि उसके जमाने के वैज्ञानिक कभी - कभी उससे ज्योतिष-संबंधी गणना करवाते थे। वह तुरंत १०० की संख्या को उसी नंबर से ९ मिनिट में गुणा कर देता था .....यह समय आधुनिक 'इलेक्ट्रोनिक' दिमाग से लगनेवाले आधे समय के बराबर है।

ये सारे उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि मनुष्य का दिमाग, सचमुच अविश्वसनीय योग्यताओं का आश्चर्यमय संसार है, जिसे समझा कम गया है और उसकी व्याख्या अधिक की गयी है।

एक प्रयोग

एक महात्मा के पास आकर एक जिज्ञासु ने कहा–"मैं पिछले २० वर्षों से प्रतिदिन तपस्या कर रहा हूं। रात्रि-जागरण करके साधना भी कर रहा हूं। किंतु आपके गूढ़ तत्व-ज्ञान के उपदेश का भी कोई प्रभाव मेरे जीवन में अंकित नहीं हो रहा है। इसका क्या कारण है ?"

महात्मा ने बड़े धीरज से उत्तर दिया–"भाई, बीस वर्ष तक क्या, बीस हजार वर्ष तक भी यदि तू इसी तरह जागरण करे, तो तेरी मानसिक अवस्था में परिवर्तन नहीं होनेवाला है।"

जिज्ञासु ने पूछा–"वह क्यों ?"

महात्मा ने समझाया –"भाई, तेरा जीवन अभी तक अनेक प्रकार के सांसारिक आवरणों से ढंका हुआ है।"

जिज्ञासु–"इसका कोई उपाय बताइये ?"

महात्मा–"उपाय तो बताऊंगा; किंतु तुम उसका प्रयोग करोगे न ?"

जिज्ञासु–"मैं वचन देता हूं कि मैं वह प्रयोग करूंगा।"

तब महात्मा ने कहा–"अच्छा तो सुनो। पहले तुम अपने सिर के केश मुंडवा दो। सौंदर्य-वृद्धि के लिए तुम जो-जो वस्त्राभूषण शरीर के ऊपर धारण किये हुए हो, उन्हें उतार डालो। एक कंबल मात्र रख लो; और इस पहनावे में तुम शहर में भ्रमण करके अपने परिचितों से मिलो, बालकों को बुलाओ और यह कहो कि जो बालक मुझे एक कंकड़ मारेगा, उसे एक खिलौना मिलेगा। इस तरह तुम बहुत से खिलौने बांटों। शहर की गली-गली में तुम यह प्रयोग करो। जब शहर में खूब अपमान हो जाये, तो वहीं निवास स्थिर कर लो। यही एक रीति है कि अंतर का अहंकार नष्ट होगा और तुम्हारी रुचि सांसारिक उपचारों से हटकर आत्मिक जिज्ञासा में लगेगी, तभी तुम्हें सच्चा आत्म-ज्ञान अनुभव होगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पथेर पांचाली' के अमर कथाकार

डा० एम० वर्मा

हमारे देश के सामान्य पाठकों में पढ़ने का लगाव इतना कम है कि वे बड़े लेखकों का नाम भी रजतपट के माध्यम से ही जान पाते हैं। कितनी विचित्र बात है कि जब तक सत्यजितराय ने 'पथेर पांचाली' नहीं बनायी, तब तक हम विभूतिभूषण-जैसी प्रतिभा से अपरिचित-से रहे। इससे भी ज्यादा अजीब बात यह है कि चित्र 'पथेर पांचाली' तो प्रदर्शन की पहली रात को ही विख्यात हो गया; किंतु कथाकार की मौलिक कृति, उपन्यास 'पथेर पांचाली' अपेक्षाकृत अजान और बिना-पढ़ा ही रहा।

सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने उनके उपन्यास को क्लासिक (महान ग्रंथ) की संज्ञा दी है। सच तो यह है कि विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लेखक हैं। यदि साहित्य अकादमी उनके समूचे साहित्य का बंगला से अंग्रेजी में अनुवाद करवाये, तो इससे वह स्वयं भी धन्य होगी। मेरे विचार से ऐसा होने पर अंग्रेजी-भाषी विश्व को एक ऐसा लेखक पढ़ने को मिलेगा, जिसकी तुलना नोबल पुरस्कार विजेता साहित्यकारों के साथ की जा सकती है।

रवींद्रनाथ ठाकुर और शरतचंद्र में हमें आत्मचेता उपन्यासकारों के दर्शन होते हैं। दोनों में ही कहानी कहने का अत्यधिक आग्रह है। दोनों की कहानी सामान्यतः सुगठित होती है। दोनों उसे अत्यंत कुशलता से किसी घटना या चरित्र के सहारे खड़ी करते हैं। दोनों अपने कलात्मक सृजन के आलोक में चरित्र या घटना को ही दिखाते हैं। दोनों के पात्र उनके हाथों की कठपुतली होते हैं। लेकिन विभूतिभूषण कहानी कहने के इरादे से लिखना शुरू नहीं करते। फिर भी अचरज यह है कि वे अपनी कला के रसायन से जीवन और जगत की सामान्य परिस्थितियों को भी ऐसे उज्ज्वल और मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करते हैं कि पाठक उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

विभूतिभूषण शरत की तरह अपने पात्रों का चरित्र-विश्लेषण नहीं करते। वे साफ-सीधे और स्वाभाविक शब्दों में कह देते हैं कि क्या हुआ था, मानो कोई व्यक्तिगत अनुभव सुना रहे हों। रवींद्रनाथ हमारे सामने समस्याएं रखते हैं, नैतिक परिस्थितियां खड़ी करते हैं और सामाजिक चुनौतियां देते हैं। शरत में वासनात्मक संघर्ष है। वे परिस्थितियों के दबाव में पात्र के चरित्र को खोलते जाते हैं। रवींद्रनाथ उपदेशात्मक तत्वों से सर्वथा दूर कभी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे। पर विभूतिभूषण नैतिक मूल्यों की स्थापना का उद्देश्य लेकर कभी नहीं चलते। वैसे इन मूल्यों की स्थापना उनके साहित्य में हुई जरूर है; पर हृदय के माध्यम से। उनका हृदय सदा सत्य, शिव और सुंदर में ही रमता है। ठाकुर और शरत ने अपने साहित्यिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमेशा विशिष्ट पात्रों को ही चुना। उनके इस चुनाव के कारण, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण अतिरंजित हो गया है। किंतु विभूतिभूषण ऐसा नहीं करते, वे तो साधारण स्थानों से सामान्य पात्र लेते हैं। अपने रंगहीन और सीधे-सादे उपादानों के सहारे ही वे इतनी करुण साहित्यिक सृष्टि रच देते हैं कि उसके सामने ठाकुर और शरत ठहर नहीं पाते।

ठाकुर और शरत की तरह विभूतिभूषण घटनाओं और चरित्रों को मांजते नहीं हैं। ठाकुर और शरत कहानी कहते हैं, पूरी कुशलता के साथ मात्र कहानी कहते हैं, जबकि विभूतिभूषण जीवन के किसी बिलकुल सामान्य टुकड़े को आपके सामने रखते हैं। अपनी कला के जादुई स्पर्श से वे उसे इस कदर चमका देते हैं कि वह अत्यंत भव्य और प्रतीकात्मक होकर हमारे सामने आता है।

उनके उपन्यास 'पथेर पांचाली' से दुर्गा की मौत का प्रसंग ही लीजिये। उसकी मौत बड़े ही साधारण ढंग से होती है; परंतु उन्होंने उस प्रसंग को ऐसे मार्मिक रूप में उपस्थित किया है कि विश्व-विख्यात उपन्यासकार हार्डी के करुण मृत्यु-चित्रण भी इसका मुकाबला नहीं कर सकते। 'पथेर पांचाली' में अपू और दुर्गा का बाल्यकालीन वर्णन इतना सरस है कि इन पात्रों के सामने डिकंस के 'डेविड कापरफील्ड और 'आलिवर ट्विस्ट' भी फीके पड़ जाते हैं।

विभूतिभूषण की पुस्तकें मुख्यतः उनकी आत्मा का लेखा हैं। अत्यंत साधारण वस्तुओं में, जो सौंदर्य उन्होंने देखा है, उसकी मूल पांडुलिपि उनका हृदय है। रवींद्रनाथ कल्पनाओं का प्रश्रय लेकर सौंदर्य की सृष्टि करते हैं। विभूतिभूषण हमें मामूली और नाचीज चीजों को भी देखना सिखाते हैं कि उनके भीतर छिपी कविता निःसृत-अनावृत होकर हमारे सामने आ जाये। वे अत्यंत सामान्य घटनाओं को ऐसा रूप दे देते हैं कि वे हमारे लिए चिरआनंद की वस्तु बन जाती हैं।

सच तो यह है कि विभूतिभूषण ने अपनी रचनाओं में मानवता के चित्रण को ही प्रमुखता दी है। उन्होंने मानवता की खोज रोमिया, जुलियट, लैला मजनू, देवदास या पारो-जैसे अलभ्य पात्रों में नहीं की, बल्कि उसे सामान्य, गरीब और बुद्धिहीन लोगों के बीच खोजा है। फिर भी आप महसूस करेंगे कि ईश्वर का अस्तित्व इसी दुर्बल बीमार समुदाय के भाग्य पर टिका है।

विभूतिभूषण हमें यही प्रेरणा देते हैं कि हम हर स्थिति में जियें और उसे प्यार करें। उनका उपन्यास 'आरण्यक' आकार में लघु; किंतु कृतित्व की दृष्टि से महान ग्रंथ है। इसमें कलकत्ता के एक नवयुवक का वर्णन है, जिसने जंगल में प्रकृति के बीच छः वर्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिताये थे। यह कृति इतनी सुंदर है कि साहित्य में इसकी कहीं कोई तुलना नहीं।

इस कथाकार को प्रकृति से अथाह प्यार है। 'पथेर पांचाली' और 'आरण्यक' में प्रकृति का निर्दोष, लुभावना स्वरूप यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखरा पड़ा है। क्या फूल, क्या पत्ते, क्या वृक्ष-वल्लरियां—सबका सौंदर्य हमें मुग्ध कर देता है। रवींद्रनाथ की तरह विभूतिभूषण ने प्रकृति को कल्पनाओं के माध्यम से नहीं देखा, उनका हृदय उसके सौंदर्य में डूब गया है। विभूतिभूषण अपने प्रकृति-वर्णन में बड़े ही मितव्ययी, सरल, सीधे और साफ हैं। ये सभी वर्णन हृदय को तुरंत स्पंदित करनेवाले हैं।

विभूतिभूषण ने कलात्मक उपादानों की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया है। उन्होंने कथानक की कभी परवाह नहीं की। वे सदा जीवन के यथार्थ को प्रमुखता देते हैं। यही कारण है कि विभूतिभूषण से हम उनकी रचनाओं में मिल सकते हैं; उनके कृतित्व में, उनके भरपूर दर्शन होते हैं; जब कि अपने महत पात्रों के सृजन के कारण रवींद्रनाथ और शरत तक हम नहीं पहुंच पाते। हम उनके पात्रों की स्वाभाविकता पर भी संदेह करने लगते हैं। पात्र, कथानक, कहानी आदि तो माध्यम हैं, लक्ष्य नहीं। किसी भी साधारण वस्तु को अत्यंत व्यापक रूप में उपस्थित करना ही महान कला है।

खुदा का शुक्र

युद्ध के जमाने में एक गिरफ्तार किये हुए जर्मन जासूस को मौत की सजा दी गयी। गोली मारने के लिए उसे एक दूर-दराज जगह ले जाया जा रहा था। रास्ता बहुत ही खराब था। पहले तो जंगल में से गुजरना पड़ा, जहां झाड़-झंकाड़ और कांटे-पत्थर बड़े कष्टदायक थे। उसके बाद ऐसा मैदान आया, जहां घुटने-घुटने पानी और कीचड़ में से गुजरना पड़ता था। जासूस ने रास्ते की मुसीबतों को देखते हुए कहा—"यार, गोली ही मारनी है, तो इतनी दूर क्यों ले जाते हो। मुझ से रास्ते की यह तकलीफ सहन नहीं होती।"

सिपाहियों ने क्रोधित होकर कहा—"चला चल सीधी तरह, खुदा का शुक्र अदा नहीं करता कि तुझे सिर्फ जाना ही है और हमें तो तुझे गोली मारकर फिर इसी रास्ते से वापस भी आना है।

—अब्बासी

जो कुछ करना है....

एक फर्म के मालिक ने अपने दफ्तर के तमाम कमरों की दीवारों पर एक-एक तख्ती लटका दी, जिस पर लिखा था—"जो कुछ करना है, अभी कर लो।" एक महीने के बाद एक दोस्त ने फर्म के मालिक से पूछा कि कर्मचारियों पर इस नसीहत का क्या असर हुआ?

फर्म के मालिक ने जवाब दिया—"खजांची तीस हजार रुपये लेकर भाग गया। तीन क्लर्कों ने अपनी तनख्वाह में तुरंत वृद्धि की मांग पेश की और एक चपरासी ने तो हद ही कर दी। उसने डाकुओं के एक गिरोह से सांठ-गांठ की और सेफ के सारे राज उन्हें बता दिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं आशावादी हूं

सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता अर्नाल्ड टायन्बी के साथ एक इंटरव्यू

प्रश्नः—स्पेंग्लर ने कहा था कि पश्चिमी सभ्यता पतन की ओर जा रही है। आपका क्या खयाल है ?

टायन्बीः—मैं स्पेंग्लर के इस विचार से सहमत नहीं हूं। इतिहास के बारे में मेरा दृष्टिकोण उनसे बहुत भिन्न है। स्पेंग्लर समाज की तुलना पेड़-पौधे या प्राणी से करते हैं। पौधा या प्राणी बढ़ता है, पनपता है और अंत में एक निश्चित समय पर मर जाता है। परंतु वृद्धि और क्षय का यह सिद्धांत मानव-समाज पर लागू नहीं किया जा सकता। समाज जीवित प्राणी नहीं है। वह जीवित प्राणियों की एक संस्था है; और इसलिए बिलकुल भिन्न है। समाज के किसी प्राणी के मरने से समाज की भी मृत्यु हो, यह जरूरी नहीं है। इतिहास के अध्ययन से मेरा यह विश्वास दृढ़ होता गया है कि कोई भी समाज स्वाभाविक मौत नहीं मरता, उसकी हत्या की जाती है, या वह स्वयं अपनी हत्या कर लेता है। सब पुरानी सभ्यताएं इसी तरह समाप्त हुई हैं।

प्रश्नः—क्या एटमबम इस हत्या या आत्म-हत्या का साधन नहीं है ?

टायन्बीः— सचमुच—एटमबम हमारी सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। ऐसा प्रतीत होता है कि अब कोई उसका प्रयोग नहीं करेगा। बल्कि इन एटमी हथियारों के कारण ही मानव-जाति को अब बाध्य होकर घिसे-पिटे ऐतिहासिक रास्तों को छोड़ना पड़ेगा। अगर एटमबम का अस्तित्व न होता, तो रूस और अमरीका में अब तक तीसरी जंग छिड़ गयी होती।

प्रश्नः—क्या यह परस्पर-विरोधी बात नहीं है कि एटमबम की बदौलत हम तबाही की ओर जाने से बच गये हैं ?

टायन्बीः—हां, एटमबम की ही बदौ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लत दो परस्पर-विरोधी, शक्तिशाली देशों का सह-अस्तित्व संभव हुआ है। रूस और अमरीका न चाहते हुए भी एक दूसरे के निकट आ रहे हैं और उनके बीच लड़ाई की संभावना कम होती जा रही है।

प्रश्नः—जबर्दस्त सैद्धांतिक मतभेदों के रहते हुए ये देश एक दूसरे के निकट कैसे आ सकेंगे ?

टायन्बीः—मेरा खयाल है कि उनके बीच की खाई धीरे-धीरे पटती जायेगी। औद्योगिक समाजों के विकास-क्रम को देखते हुए हम कह सकते हैं कि पश्चिमी देशों को अपने सिद्धांत बदलने होंगे और समाजवादी देशों को भी अपनी कट्टरता छोड़नी पड़ेगी। आज हम इस प्रकार के परिवर्तनों को देख भी रहे हैं।

प्रश्नः—साम्यवाद तो अब धर्म का दर्जा अख्तयार करता जा रहा है। क्या वह संसार को जीतने का अपना स्वप्न छोड़ देगा ?

टायन्बीः—मैं समाजवाद को इस नाटकीय दृष्टिकोण से नहीं देखता। ईसाई धर्म और इस्लाम ने भी संसार को जीतने की कोशिश की थी। किंतु क्या वे सफल हुए ? मेरा खयाल है कि इन धर्मों की तरह साम्यवाद का भी एक नाम रह जायेगा और औद्योगिक समाज के विकास के साथ-साथ उसमें कई परिवर्तन होंगे।

प्रश्नः— इसका तात्पर्य है कि समाज का विकास मशीनों की प्रगति पर निर्भर है ?

टायन्बीः—औद्योगिक क्रांति के बाद हमारे यहां प्रजातंत्र फैला। मशीनों की बदौलत अब मनुष्य को अधिक-से-अधिक फुरसत मिलने लगी है। अब हमारे सामने बहुत बड़ी समस्या है कि फुरसत के इस समय में क्या करें, इसे कैसे बितायें ?

प्रश्नः—आपने लिखा है कि किसी भी सभ्यता का विकास उसी सीमा तक हो सकता है, जहां तक वह अपने सामने आनेवाली चुनौतियों को स्वीकार करके उनका मुकाबला करती जाती है। तो क्या आज चांद पर पहुंचना हमारी सभ्यता के सामने बहुत बड़ी चुनौती है ?

टायन्बीः— नहीं। वैज्ञानिकों का कहना है कि मनुष्य के जीवित रहने के लिए उपयुक्त परिस्थिति केवल हमारी पृथ्वी पर ही है। और यों भी हमारी पृथ्वी अभी लाखों साल तक आबाद रहेगी। इसलिए चांद के बजाय अपनी धरती की ओर हमारा ध्यान पहले जाना चाहिये। आज हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है—भूख की समस्या। एशिया के कुछ देशों में लाखों लोग भौतिक दृष्टि से बहुत निम्न स्तर का जीवन जी रहे रहे हैं, जबकि दूसरी ओर पश्चिमी देशों में किसानों ने पैदावार इतनी बढ़ा ली है कि उस पैदावार का क्या करें, यह उन्हें नहीं सूझता है।

प्रश्नः—लेकिन वे करें भी क्या ? उन देशों को उत्पादन भेजा नहीं जा सकता, जो उसकी कीमत नहीं चुका सकते। तो क्या मुफ्त में ही दे दें ?

टायन्बी—अपने पड़ोसी को बम और हथियार के बजाय अनाज देना कहीं बेहतर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तर है। आखिर बमों और हथियारों की कीमत कौन चुकाता है। अमीर देशों के टैक्स देनेवाले नागरिक ! ये बम के स्थान पर अनाज के लिए भी पैसे दे सकते हैं। यह समस्या हमारी आनेवाली पीढ़ियों के लिए बड़े महत्व की है। पश्चिमी देशों की यांत्रिक और उद्योग-तंत्रीय प्रगति तभी सम्मान का दर्जा प्राप्त कर सकेगी, जब वह एटम बमों को तिलांजलि देकर भूख की समस्या को हल करेगी।

प्रश्नः—दुनिया की तेजी से बढ़ती हुई आबादी को देखते हुए क्या भूख की समस्या हल हो सकेगी ?

टायन्बीः—आबादी की वृद्धि परिवार-नियोजन द्वारा रोकी जा सकती है, जैसा कि उन्नत और प्रगतिशील देशों में हो रहा है। किंतु पिछड़े हुए देशों में पूर्ण रूप से परिवार-नियोजन करने के लिए कम-से-कम तीस-चालीस साल और लगेंगे।

प्रश्नः—क्या परिवार-नियोजन भविष्य के प्रति भय नहीं पैदा करता, जो कि पतनोन्मुख समाज का चिह्न है ? जब रोमवासी पतनोन्मुख हुए, वे सभी परिवार-नियोजन करने लगे थे।

टायन्बीः—रोमवासी परिवार-नियोजन तो जानते थे; पर मृत्यु-नियोजन नहीं जानते थे, जो कि हमारे युग की बहुत बड़ी देन है। आज हम प्रतिदिन मृत्यु की रोक-थाम कर रहे हैं, विशेषतः बच्चों की मृत्यु की। परिणामतः आबादी बढ़ती जा रही है।

प्रश्नः—आप भूख की समस्या को हल करने के पूर्व हथियार कम करना चाहते हैं। इसके लिए जरूरी है कि रूस और अमरीका में आपस में समझौता हो। क्या इस प्रकार के समझौते से संसार के अन्य देशों पर रूस और अमरीका की प्रभुता नहीं स्थापित हो जायेगी ?

टायन्बीः—अवश्य हो जायेगी; और अपने तईं, मैं ऐसी प्रभुता स्वीकार करने को तैयार हूं—अगर उससे मेरे बच्चे और उन बच्चों के बच्चे एटमी तबाही से बच सकें। मैं तो यह भी चाहता हूं कि अमरीका और रूस आपस में मिल जायें और किसी भी देश को फिर ये भयानक एटमी हथियार न बनाने दें।

प्रश्नः—यूरोपीय देशों का आज के संसार में क्या ध्येय होना चाहिये ?

टायन्बीः—दूसरे देशों पर कब्जा जमाना छोड़ दें और, फौजी ताकत के बजाय औद्योगिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति पर जोर दें और पिछड़े देशों को आगे बढ़ने में सहारा दें।

आजकल सब कुछ सरसरी नजर से पढ़ने की प्रथा चल पड़ी है। इससे पाठक कुछ ग्रहण नहीं कर पाता। अतः बहुत पढ़कर भी हम अशिक्षित रह जाते हैं। पढ़ने का सच्चा लाभ तभी है, जब हम थोड़ा पढ़ें; मगर अच्छा पढ़ें। सारे पुस्तकालय को उदरस्थ करने की उपेक्षा दो पुस्तकों को कंठस्थ कर लेना अधिक श्रेयस्कर है।"

— सर विलियम राबर्टसन

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन मेरे !

मन मेरे
जब तक, तेरी छोटी-सी खिड़की से
विराट नभ दीखता है
तब तक
मरण की अंधेरी गुफाओं में भी
ऐसे निष्क्रिय मत होना
जड़ता में मत खोना ।

वह देख
मेघों के आकर्षक शिल्प
सूर्य-किरणों का सतरंगी सौंदर्य
विचारकों-संतों, महान यात्रियों की
गाथाएं याद दिलातीं
उज्वल विष्णु-नगरी !
जब तक दृष्टिपथ में है–
यह सब,
तब तक
यातनाओं के चक्रव्यूह में घिरकर भी;
आंसू मत बहा इस तरह ।

...जब तक-जब तक
बादलों के दल पर दल
सातों समुद्रों का जल पीकर
दग्ध धरती को सींचने के लिए
दौड़ें चले आते हैं नीले नभ से;
तब तक
अपनी मूक व्यथाओं का
व्याकुल क्रंदन सुनने से
कर दे इंकार ।

इसी नीले मंडप के नीचे
अखिल मानवता
"चरैवेति"का करती है उद्घोष
फहराती है अपनी पताका
चढ़ती है प्रगति के सोपान ।
मात्र तू ही रह जाये उपेक्षित
इतना छोटा नहीं आकाश;
उसकी नीलिमा में छिपा
प्रभु की कृपा का खजाना
अभी रीता नहीं;
इसीलिए कहता हूं
मन मेरे
जब तक, तेरी छोटी-सी खिड़की से
दीखता है विराट नभ
तब तक
यों निष्क्रिय मत होना
जड़ता में मत खोना ।

–वि० म० कुलकर्णी

[रूपांतर : दिनकर सोनवलकर]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पवित्र कलगी कहां गयी?

जान विलियम्स

सिक्खों में यह विश्वास प्रचलित है कि उनके दसवें एवं अंतिम गुरु श्री गुरु-गोविंदसिंहजी अपने दसतार (पगड़ी) पर जो कलगी लगाया करते थे, वह लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम या विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम में रखी हुई है।

गुरु साहब की हत्या के लगभग ढाई-सौ साल बाद मैंने समूचे ब्रिटेन में इस कलगी को खोज निकालने का भगीरथ प्रयत्न किया है; और श्रद्धालु सिक्खों को यह जानकर बहुत दुःख होगा कि उनकी यह धारणा निराधार है। इससे उनकी इस आशा पर तुषारपात हो जाता है कि वह पवित्र कलगी कभी वापस भारत लायी जा सकेगी।

मेरी खोज तब आरंभ हुई, जब मैंने सुना कि गुरुगोविंदसिंहजी की तीन सौ साल की बरसी के अवसर पर पटना में एक प्रदर्शिनी आयोजित की जा रही है, जिसमें गुरु साहब द्वारा स्वयं अपने हाथ से लिखी पांडुलिपियां, उनकी शिक्षा तथा धर्म सिद्धांतों के संबंध में विविध भाषाओं की पुस्तकें, और उनके द्वारा धर्मयुद्धों में उपयोग लाये गये विविध शास्त्रास्त्र दिखाये जायेंगे।

मैंने इंडिया हाउस की लायब्रेरी में, जहां पर भारत और पाकिस्तान के इतिहास से संबद्ध पुस्तकें व वस्तुएं रखी हुई हैं, कलगी की खोज की। मैंने ब्रिटिश म्यूजियम के तहखानों और विक्टोरिया और अल्बर्ट म्यूजियम के भारतीय विभाग में भी छानबीन की। इसी खोज के सिलसिले में मैं ब्रिटेन के एक प्रसिद्ध सामंत-परिवार की कोठी देखने स्काटलैंड भी गया। इस काम में मुझे श्री-मनजीतसिंह से भी बहुत मदद मिली। वे इंडिया हाउस, लंदन के राजनीतिक विभाग में प्रथम सेक्रेटरी हैं और खुद भी उस कलगी की खोज में लगे हुए हैं।

कलगी की खोज सबसे पहले सन १७०८ में शुरू हुई थी, जब गुरु साहब शहीद हुए। लोगों का कहना है कि उनकी कलगी हाथों-हाथ लाहौर में महाराणा रणजीतसिंह के तोशाखाने में पहुंची थी और १८४६ तक, यानी जिस साल सिक्खों का राज्य अंग्रेजों के हाथ में आया, वह वहां मौजूद थी।

मैं यहां भारत के गवर्नर जनरल डल-हौजी के एक पत्र की कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहता हूं, जो उसने दिसंबर १९५० में ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों को लिखा था।

"तीसरे संग्रह में भाला, तलवार आदि हथियार हैं, जो सिक्ख-परंपरा के अनुसार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरु गोविंदसिंह के माने जाते हैं। मेरी राय में, किसी सिक्ख संस्था को अपने लड़ाकू धर्म के इन पवित्र युद्ध-संकेतों को उपहार में प्राप्त करने या खरीदने देना राजनीतिक भूल होगी। अगर माननीय संचालक-मंडल अपने संग्रह के लिए ये हथियार चाहे, तो वे भिजवा दिये जायेंगे। किंतु यदि माननीय संचालक - मंडल को उनमें दिलचस्पी नहीं है, तो मैं उन्हें तोशाखाने से अपने लिए खरीदने की अनुमति पाकर कृतज्ञ हूंगा। स्वभावतः मुझे उनमें दिलचस्पी है; वे मेरी और मेरे अनुवर्तियों की दृष्टि में अमूल्य स्मारक होंगे।"

इस पत्र के उत्तर में ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों ने अप्रैल १८५१ में डलहोजी को लिखा था :

"हम मार्क्विस आफ डलहौजी से सहर्ष अनुरोध करते हैं कि वे तलवार को छोड़कर बाकी वस्तुओं को उन महान घटनाओं के, जिनमें उन्होंने बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया है, स्मारक के रूप में अपने पास रखें। चूंकि तलवार सिक्ख कौम के संस्थापक की है; इसलिए उसे हम अपने संग्रहालय में रखना चाहते हैं।"

गवर्नर जनरल के पत्र में 'भाला, तलवार' के बाद जो 'आदि' शब्द प्रयोग किया गया है, उसे देखते हुए शक होता है कि बाकी चीजों में शायद कलगी भी रही हो और उसे कोई विशेष महत्व न दिया गया हो।

इतिहास बताता है कि गुरु गोविंदसिंहजी ने जबर्दस्त लड़ाइयां लड़ी थीं। वे बहुत बड़े योद्धा थे। हो सकता है कि ब्रिटिश शासकों की नजरों में उनका धार्मिक नेता के बजाय, महान योद्धा के रूप में अधिक महत्व रहा हो और इसलिए उन्हें कलगी-जैसी चीजों के बजाय तलवार आदि में ज्यादा दिलचस्पी रही हो।

नवंबर १८५१ में जब तोशाखाने में रखे गुरु साहब के हथियारों की सूची बनायी गयी थी, उसमें कलगी का कहीं जिक्र नहीं था। इस अनुपस्थिति की दो प्रकार से व्याख्या की जा सकती है—१. या तो सूची बनानेवालों ने कलगी को महत्वहीन समझ-

वसीयत

मैं धरती का जर्रा
सूरज की धूप —
चंदा की किरनों में नहाया,
गंगा और कावेरी के पानी में भीगा।
मेरी धमनियों में
इन सबकी सुगंध है
भारत की गंध है!
यह मेरा देश—
चाहता हूं,
तन की माटी का कण-कण
फिर धरती की माटी में मिल जाये
घुल जाये।
ताकि फसल पर
बाली का हर दाना
बंडी के 'होल' में लगे
गुलाब की तरह
मुस्कराये,
खिलखिलाये!

—घनश्याम रंजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उसका उल्लेख नहीं किया; २. या वह तोशाखाने में थी ही नहीं, अर्थात् वह हाथों-हाथ तोशाखाने में नहीं पहुंचायी गयी थी।

मैंने गवर्नर जनरल डलहौजी के वंशजों से भी कलगी के बारे में पता लगाने की कोशिश की; परंतु कोई जानकारी मेरे हाथ नहीं लगी। मार्क्विस आफ डलहौजी के वंशजों में एक महिला हैं लेडी ईडिथ ब्राउन लिंडसे, जो स्काटलैंड में रहती हैं। १९०७ में उनके घर में आग लग गयी थी, जिसके कारण बहुत-सी चीजें राख हो गयीं। अगर मान लिया जाये कि कलगी लार्ड डलहौजी से विरासत में ईडिथ तक पहुंची होगी, तो भी वह उस आग में नष्ट हो गयी होगी।

किंतु अगर यह माना जाये कि तलवार के साथ कलगी भी ईस्ट इंडिया कंपनी को भेज दी गयी थी, तो हमें उसकी खोज एक नयी दिशा में करनी होगी। कंपनी का म्यूजियम १८७४ तक ह्वाइट हाल की इंडिया-आफिस की इमारत में था। जब वह वहां से हटाया गया, तो उसकी चीजें विभिन्न अजायबघरों को दे दी गयीं। कई चीजें विक्टोरिया और अल्बर्ट म्यूजियम को दी गयीं, जहां महाराजा रणजीतसिंह का सिंहासन अभी भी रखा हुआ है।

परंतु इस म्युजियम के एक कर्मचारी ने मुझे बताया—"कलगी हमारे पास नहीं है। मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वह लंदन के किसी भी संग्रहालय में नहीं है। यह धारणा वर्षों से चली आ रही है कि कलगी हमारे पास है, और कई बार धर्म-प्रेमी सिक्ख उसे देखने के लिए यहां आये हैं। जब उन्हें असलियत का पता लगता है, वे बहुत निराश होते हैं।"

मैं भी इतनी खोज और छानबीन के बाद इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि अगर सचमुच गुरु साहब की कलगी कहीं सुरक्षित है, तो वह कभी अकस्मात् ही प्रकाश में आयेगी।

★

"तुम क्या कर रहे हो?"

हाल में मैं एक बार फिर दामोदर-घाटी गया था। वहां मैंने हजारों आदमियों को तरह-तरह के काम करते देखा, मिट्टी ढोते हुए देखा—कुछ सौ मजदूरों को मैंने बुलाया और उनके साथ बैठ गया। उनसे मैंने पूछा—"तुम क्या कर रहे हो?" वे बोले—"यहां से मिट्टी उठाते हैं, वहां डालते हैं।" मैंने पूछा—"क्यों?" वे बोले—"हमें नहीं मालूम।" तब मैंने उन्हें थोड़े से में यह समझाने की कोशिश की कि यह शानदार दामोदर घाटी योजना, जिसकी तामीर वे कर रहे हैं, क्या चीज है। वे महसूस करने लगे कि इसका उनके अपने जीवन से कुछ नाता है, इससे उन्हें भी मुनाफा होनेवाला है। और मुझे उम्मीद है कि उसके बाद उन्होंने अपने काम में पहले से कुछ ज्यादा दिलचस्पी ली होगी। अगर हमारे सब इंजीनियर ये तमाम बातें समय-समय पर उन्हें समझाया करें, तो मुझे पूरा यकीन है कि हमारे मजदूर ज्यादा चाव और सूझबूझ से काम किया करेंगे। —जवाहरलाल नेहरू

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेघदूत का अंतिम पृष्ठ

हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

पार्वती क्या गयी कि कवि पर तो मानो वज्रपात ही हो गया।

वह घंटों मंदिर के उपवन में पड़ा-पड़ा रोता रहा, बिलखता रहा, सिसकता रहा, छटपटाता रहा; किंतु उसके विषाद का बवंडर किसी भी प्रकार शांत न हुआ।

अब उसकी अलका वह अलका न रही। सब कुछ बुझा-बुझा, सूना-सूना और उखड़ा-उखड़ा।

अलका के चारों ओर फैली ऊंची-ऊंची पहाड़ियां बिलकुल उदास-उदास-सी हैं। अलकनंदा चट्टानों से टकरा-टकराकर पागल-सी हो गयी है। झरने उसके स्वरों में स्वर नहीं मिलाते।

उसके सपनों का संसार उजड़-सा गया। उसके गीतों की गंगा में आंसू की बाढ़-सी आ गयी।

उसका रोम-रोम पार्वती-पार्वती पुकार रहा है; पर पार्वती अब कहां? रह-रहकर एक-एक याद हरी हो जाती।

× × ×

शारदोत्सव की वह रात!

हिमालय की गगनचुंबी चोटियों की तलहटियों में लेटी बस्तियों में बहार। गांव-गांव में गीतों और नृत्यों की धूम। हिमालय का कण-कण मुदित और प्रफुल्लित। जन-मन आमोद-प्रमोद में मस्त। मदमस्त।

और अलका की तो बात ही क्या! किन्नरियों और अप्सराओं की जादुई नगरी। सौंदर्य और लावण्य से लबालब भरी। हिमालय की लंबी-चौड़ी, हरी-भरी उपत्यका में बसी, वनों और उपवनों से घिरी, फल-फूलों से सजी, धन-धान्य से लदी—विधाता के सुषमा-सृजन की अद्‌भुत कृति—अलका, अपनी अनोखी शारदी छटा में आकंठ डूबी हुई।

मंदिर के विशाल आंगन में अथाह जन-पारावार उद्‌वेलित। रंगमंच के नीचे अनेक वाद्य-वृन्दों की मधुरिम स्वर-लहरियां। रंगमंच लता-गुल्मों और रंग-बिरंगी साज-सज्जा से सुसज्जित।

जैसे ही पहाड़ी के ऊपर पूनम का चांद निकला कि पूरी घाटी बहक-सी गयी।

किशोर-किशोरियां, युवक-युवतियां वाद्य-वृंदों की मधुर स्वर-लहरियों पर थिरक उठे।

और जब 'अप्सरा-नृत्य' की मुद्रा में छम-छम नाचती-गाती पार्वती रंगमंच पर आयी, तो सबके मन-मयूर उन्मत्त हो नाच उठे। रंगमंच को पंख-से लग गये। चंद्रिका ठिठक-सी गयी। धरती के चांद के सामने, गगन का चांद बिलकुल फीका पड़ गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब आत्मविभोर और मंत्रमुग्ध। पार्वती के साथ ही पूरी अलका झूम उठी।

नृत्य के बाद ही जैसे, उसने एक गीत गाया, तो सब ठगे-ठगे से रह गये।

स्वरों में ऐसा सम्मोहन, वाणी में ऐसी मिठास, आरोह-अवरोह में ऐसा सौष्ठव, और शब्दों में ऐसा चमत्कार कि सभी उसकी स्वर-धारा में बह गये।

कवि तो लोट-पोट ही हो गया। पहली बार उसे अनुभव हुआ कि उसके गीतों में ऐसा जादू है। पहली बार इतने विशाल जन-समूह में पार्वती-जैसी अप्सरा ने उसका गीत गाया। वह धन्य हो गया। उसका रोम-रोम नाच उठा।

और तब से न-जाने कितनी बार, दोनों ने साथ-साथ कभी अलककंदा के किनारे, कभी सीढ़ीनुमा खेतों में, कभी पहाड़ियों पर, कभी देवदार की छांव में, कभी झरनों के पास, घंटों उसके गीत दुहराये।

पार्वती। उसके गीतों का प्राण, उसके भावों की गंगोत्री, उसके जीवन की संजीवनी, उसके सपनों की रानी, उसकी सांस-सांस में, रंध्र-रंध्र में, बस पार्वती समा गयी।

पार्वती क्या—बस, वसंत की बहार, हिमालय की भीनी-भीनी बयार, झरनों की मीठी स्वर-लहरी, अलका की परी। लंबा छरहरा शरीर, खुबानी-जैसे लाल-लाल गाल, अलकनंदा जैसी नटखट, मृणाल-जैसी आंखें, बुरांस की तरह चमकता-दमकता रूप। जिधर भी जाती, रात-रानी की-सी महक छोड़ जाती। जन-जन के मुख में उसके रूप, सौंदर्य और गुणों की चर्चा।

जीवन के पंद्रहवें वसंत में ही उसे हिमालय की सर्वश्रेष्ठ गायिका का गौरव मिल गया। अलका से दूर-दूर, गांवों और जन-पदों में उसकी स्वर-लहरियां फैल गयीं।

राजा के कानों में भी बात गयी, तो राज-पुरुष अलका भेजे गये और पार्वती के पिता को मुंहमांगा पुरस्कार देकर पार्वती को प्रासाद की शोभा बढ़ाने के लिए ले गये। लेकिन कवि का तो जैसे सब कुछ ही समाप्त

उन्नत-मुदित हिमालय
चित्रकार : शमै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गया।

बचपन में ही माता-पिता स्वर्ग सिधार गये थे और अब तो एकमात्र सहारा, प्राण-वल्लभा पार्वती भी छोड़कर चली गयी।

× × ×

"कैसा अभागा हूं मैं ? इतने छोटे-से जीवन में मैंने क्या-क्या देखा ! कितने दुःख झेले ? कितने कष्ट सहे ! बचपन के वे दिन, पहाड़ियों पर गाय-भेड़-बकरियां चुगाने में उड़ गये। जीवन के इन बीस सावनों में कितनी बरसातें आयीं, कितने आंधी-तूफान आये और मैं अभी भी जीवित हूं। छिः आग लगे ऐसे जीवन पर। अब यहां नहीं रहूंगा। अलका की बहारें मुझ से रूठ गयीं। यहां के देवी-देवताओं ने अभिशाप दे दिये। अब एक क्षण भी यहां नहीं रहूंगा।"

× × ×

और फिर कवि चल पड़ा अनंत पथ पर, पहाड़ियों और घाटियों को लांघकर, नदियों और नालों को पार कर, खेतों और जंगलों को चीरकर।

जहां जाता, अपने गीत सुनाता और लोग गद्‌गद हो, घंटों कवि के गीत सुनते। उन गीतों में ऐसी कसक, ऐसी वेदना, ऐसी छटपटाहट होती कि लोगों की आंखें अनायास बरस जातीं।

चलते-चलते, एक दिन कवि 'कालीमठ' पहुंचा।

वहां काली की पूजा और आराधना में तल्लीन भक्तों को देखकर वह भी काली मां के चरणों में लेट गया। घंटों सुध-बुध खोये आंसू बहाता रहा।

पुजारी ने तरुण की करुण दशा देखकर पूछा—"वत्स्, क्या नाम है तुम्हारा ?"

"कालिदास" स्वतः कवि के मुख से निकल पड़ा।

"कालिदास ! ऐसे नाम तो हिमालय में नहीं होते ! अस्तु। इतने निराश और दुःखी क्यों हो ? देखो, जीवन संघर्ष के लिए है और जो संघर्षों से डरते हैं, कतराते हैं, वे कायर होते हैं। वत्स, तुम्हारी आंखों में तो ऐसी चमक है कि तुम जीवन में सब-कुछ कर सकते हो। तुम्हारे ललाट में तो ऐसा तेज और ओज है कि तुम एक-न-एक दिन महान् बनोगे। संसार तुम्हारी पूजा करेगा। जाओ पृथ्वीपुत्र बनो। घूमो, संसार को अपनी आंखों से देखो। शिवास्ते पन्थानः सन्तु।"

× × ×

बस, फिर आज यहां, कल वहां। कालिदास गांव-गांव में, नगर-नगर में। जन-जन को गीतों की गंगा में विभोर करते जीवन-पथ पर निरंतर बढ़ते रहे, लिखते-गाते रहे और तब एक दिन विक्रमादित्य के निमंत्रण पर दरबार में उपस्थित हो गये।

उसी रात राजधानी में विराट् सम्मेलन का आयोजन। दूर-दूर से आये हुए जाने-माने पहुंचे कवि सम्मिलित। कालिदास की बारी आयी, तो श्रोता गद्‌गद हो गये। श्रोताओं के मुख से धन्य-धन्य, जय-जय के उद्‌घोष।

राजा विक्रमादित्य ने प्रसन्न होकर अपने गले का हार उतारा और कालिदास को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने हाथों पहना दिया।

तालियों की गड़गड़ाहट और जय-जयकारों के तुमुल-नाद में मंत्री ने घोषित किया कि आज से महाकवि कालिदास उज्जयिनी के राजकवि नियुक्त किये गये हैं।

× × ×

उज्जयिनी में हर्ष का ज्वार। सर्वत्र कालिदास का नाम फैल गया।

लोग कालिदास के गीत गुनगुनाते रहते। लेकिन कालिदास कभी-कभी बेहद उदास हो जाते। पार्वती रह-रहकर याद आती। पार्वती के साथ बिताये अलका के वे दिन याद आते! और कालिदास फिर खानापीना, सोना-उठना सब कुछ भूल जाते।

"पार्वती को ढूंढ़ने के लिए कहां-कहां गया, जंगल-जंगल छान मारे; किंतु पार्वती न मिली। सुना कि पहले ही कुछ दस्यु राज-पुरुषों को मार-बांधकर पार्वती को उड़ा ले गये थे और तब से वह कहीं न दिखाई दी, न कोई समाचार ही मिला।"

रात-रात जागकर कालिदास ने गीतों में अपने आंसू पिरोये।

मत्स्य कन्या

चित्र : शैलोज मुखर्जी

वैसे, दिन में राजदरबार में उपस्थित होते। हंसते-हंसाते। राज-काज में भाग लेते। शासन-व्यवस्था में सुधार की सोचते। राजनीति से ही प्रेरित होकर उन्होंने एक आदर्श राजा की परिकल्पना की और 'रघुवंश' रचा। इससे पहले 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' से उनकी ख्याति देश-देशांतर में फैल गयी थी। कितने नाटक रचे। कितने महाकाव्य लिखे। किंतु सबके लिए प्रेरणा की स्रोतस्विनी रही—पार्वती। बस, उसी के बिछोह में कभी-कभी वे बिलकुल विक्षिप्त-से हो जाते।

× × ×

उज्जयिनी की राजकुमारी का विवाह। सारी राजधानी दुलहन की तरह सजी-धजी। तोरण-द्वार फल-फूलों, लता-गुल्म और बंदनवारों से सुसज्जित। सर्वत्र संगीत की मधुर स्वर-लहरियां। जन-जन उल्लसित-प्रफुल्लित।

एकाएक दावाग्नि की तरह बात फैली,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालिदास उज्जयिनी छोड़कर जा रहे हैं।

रंग में भंग। सारा उल्लास जाता रहा। सबकी धड़कनें रुक-सी गयीं।

थोड़ी ही देर में हवा में बातें उड़ गयीं। राजा ने अपनी पुत्री के साथ कालिदास को भी दहेज के रूप में साथ भेजना चाहा; पर इस पर महाकवि रुष्ट हो गये।

"यह सरासर अन्याय है, सरासर मेरा अपमान है। मैं एक पल भी यहां नहीं रहना चाहता।" यह कहकर कालिदास चल पड़े।

राजा हक्का-बक्का देखता ही रह गया। राजपुरुष कालिदास के सामने सहम-से गये। किसी की हिम्मत नहीं हुई, जो उन्हें रोके।

उज्जयिनी में जहां-देखो-वहां यही चर्चा। सभी धन्य-धन्य कह रहे थे। महाकवि के साहस और शौर्य के गुण गा रहे थे।

× × ×

फिर वही चक्र! आज यहां, कल वहां। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, सब छान मारे, पर कहीं भी मन को शांति न मिली। बस निरंतर भ्रमण और जन-दर्शन; किंतु पार्वती के बिना सब निष्प्राण-सा लगता। और तब पार्वती के वियोग में मेघदूत के स्वर फूट पड़े। बस जहां जाते, मेघदूत की पंक्तियां गुनगुनाते।

कुछ ही दिनों में मेघदूत जन-जन के कंठ में रम गया। खेतों में हल चलाते किसान, वनों में भेड़-बकरियां चराते चरवाहे, नदियों में नाव खेते नाविक, धान निराती सुंदरियां, घास काटती घसियारिनें, घर-गृहस्थी में उलझी रमणियां, जब-तब मेघदूत गुनगुनाती रहतीं।

कालिदास विरहाग्नि में विह्वल 'पार्वती-पार्वती' पुकारते। वृक्षों, लताओं से पूछते—"कहां है मेरी पार्वती?" और इस प्रकार घंटों विलाप करते रहते।

× × ×

और जब एक दिन कालिदास की पार्वती ने मेघदूत की कुछ पंक्तियां पढ़ीं, तो सुध-बुध खो बैठी।

"कवि मुझे भूला नहीं?"

अलका की सारी बातें। अलकनंदा के किनारे के वे क्षण, सब हरे हो जाते हैं और अनायास उसकी आंखों से अविरल अश्रु-धारा बह जाती है।

"मेरे कवि! मेरे प्राण! तुम्हें क्या बताऊं मैंने भी तुम्हारी याद में एक-एक पल कैसे काटा! यहां से निकल न सकी। बहुत बार निकलने का प्रयत्न किया; लेकिन सदा असफल ही रही और फिर मार-पीट, कोड़े क्या न सहे। अब शरीर में शक्ति नहीं, मन में तरंग नहीं—सब समाप्त हो गया। मैं जीते-जी तुम्हें पा न सकी; किंतु अब तुम्हारे बिना एक क्षण भी नहीं रह सकती ....."

'कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा' से आरंभ कर गाते-गाते अंतिम पृष्ठ पर उसका हाथ टिका-का-टिका रह गया। वह वहीं लुढ़क पड़ी; लेकिन हाथ वहीं अंतिम पंक्तियों पर।

तो क्या पार्वती मूर्छित हो गयी? या पढ़ने से पहले विषपान कर बैठी थी? मेघदूत के अंतिम पृष्ठ पर ही उसकी सांसें रुक गयीं? मेघदूत मौन है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

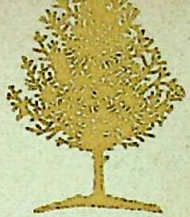

चलते रहना है !

शैतान की अध्यक्षता में नरक के डायरेक्टरों की बैठक हो रही थी। शैतान ने चिंता प्रकट की कि नरक में आनेवाले लोगों की संख्या कम हो रही है। यदि यथाशीघ्र कोई उपाय न सोचा गया, तो नरक खाली हो जायेगा। एक डायरेक्टर ने कहा—"इसमें चिंता की क्या बात है! मैं मृत्यु-लोक में जाकर प्रचार करता हूं कि स्वर्ग का अस्तित्व है ही नहीं।"

शैतान ने मुंह बिचका लिया—"इस फार्मूले को तो हम पहले ही प्रयोग में ला चुके हैं; लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला...आप लोगों में कोई और...?" तब दूसरे ने सुझाव दिया—"हमें प्रचार करना चाहिये कि नरक है ही नहीं।" शैतान ने खीझकर कहा—"क्या बकवास है! लोग इतने उल्लू नहीं है, जितना आप समझते हैं।" और उस कक्ष में सन्नाटा छा गया। नरक खाली हो गया, तो वहां के तमाम पदाधिकारी किस काम लायक रहेंगे?

सहसा एक नवयुवक पदाधिकारी उठा; और विनम्रता, किंतु दृढ़तापूर्वक उसने कहा—"यदि आप सब मुझे आज्ञा दें, तो मैं मृत्यु-लोक जाऊं और प्रचार करूं कि अभी तो भाइयो, आप लोगों को बहुत दिन तक जीना है। जल्दी किस बात की है? काम की तड़-फड़ाहट क्यों है! आराम कीजिये और जिंदगी की मौज-बहार देखिये।" शैतान ने उस युवक की ओर प्रशंसा-भरी दृष्टि से देखा।

× × ×

बोध-कथा का मूल स्वर है— आराम कीजिये और जिंदगी की मौज-बहार देखिये। नरक और स्वर्ग का प्रश्न नहीं है। प्रश्न है जीवन की सार्थकता का। यह सार्थकता प्रत्येक व्यक्ति में किसी भी रूप में हो सकती है। प्रख्यात चित्रकार विन्सेंट वॉन गॉग के जीवन में यह सार्थकता उसके चित्रों के साथ जुड़ी हुई थी। जीवन की विराटता को वह अधिकाधिक कोणों से देखना चाहता था और उस अनुभूति को वह उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति देना चाहता था। डाक्टरों ने उसे आराम करने की सख्त हिदायत दी; किंतु वह गिड़गिड़ाता रहा—"नहीं डाक्टर, मुझे चित्र बनाने से मत रोको, नहीं तो मौत के आने से पहले ही मैं मर जाऊंगा।" वह एक भी क्षण खोना नहीं चाहता था। क्या पता कि मृत्यु कब आ धमके और वह आराम ही करता रहे और जो चित्र उसके मन में है, वह भीतर ही रह जाये। जीवन की सार्थकता तो जीवंत अनुभवों के श्रेष्ठतम प्रस्तुतिकरण में है। वहां न तो समय का महत्व है, न मृत्यु का डर, न जीवन का मोह! केवल चलना है, चलते रहना है और चलते जाना है। —नवल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झबूली पीरबख्श

त्रिलोक तुलसी

महावत ने उसके मस्तक पर अंकुश का एक भर-पूर हाथ जमाया। मस्ती में शैतानी करता हुआ पीरबख्श, इस अप्रत्याशित प्रहार से स्तब्ध होकर ठहर गया। उसने महावत पर एक जलती हुई नजर डाली। उसकी आंखों में खून उतर आया।

अरे, यह तो उसका पुराना और प्रिय महावत फजल नहीं है! फजल उसे कभी इस निर्ममता से नहीं मारता था। जब भी पीरबख्श पर मस्ती का सालाना दौरा पड़ता, तो फजल बड़े प्यार से दिन में दो बार उसकी कनपटियों से स्रवित मद को धोता, उसे खाने के साथ अफीम देता; और पीरबख्श भी मस्ती के दिनों की चंचलता को फजल के प्यार और अफीम के सरूर में संयत कर लेता।

मगर यह नया महावत तो अंकुश ताने फिर तैयार था प्रहार करने के लिए! पीरबख्श का क्रोध उबल पड़ा। उसकी सूंड हवा में लहरायी, महावत की कमर के गिर्द लिपटी और अगले ही क्षण उसने महावत को उठाकर जमीन पर दे मारा? उसके भारी-भरकम पांव ने महावत की एक टांग दबा ली। दूसरी टांग सूंड से पकड़कर उसने महावत के शरीर को टुकड़ों में चीरा और हवा में उछाल दिया।

किंतु इतने से ही क्रोध शांत नहीं हुआ। मदमस्त पीरबख्श उबलते हुए आवेश की प्रतिमा बन गया। जंजीरें तोड़कर चिंघाड़ता हुआ वह अमृतमहल की पशुशाला में जा घुसा। चीखते हुए पशु रस्सियां तुड़वाकर भाग निकले। जो पिछड़ गये और उसके सामने पड़े, कुचले गये। वहां से निकलकर पीरबख्श बूट बनाने के सरकारी कारखाने में जा घुसा। जो भी हिंसा के इस उड़ते हुए पहाड़ के सामने पड़ा, पिस गया। दीवारें ढह गयीं। खंभे गिर गये। छतें बैठ गयीं। क्रोध और उत्तेजना से पागल पीरबख्श वहां से निकलकर जंगल की ओर भाग गया।

बात पिछली शताब्दी के उत्तरार्द्ध की है। पीरबख्श मद्रास राज्य के यातायात-विभाग का सबसे बड़ा हाथी था। उसकी पीठ का उभार जमीन से दस फुट ऊंचा था। ऊपर की ओर मुड़े हुए उसके मोटे-मोटे दांत साढ़े तीन फुट लंबे थे। देखने में वह ऐसा लगता था, जैसे हाथियों के सौंदर्य के माडल का काम देने के लिए उसे विधाता ने बनाया हो।

यातायात-विभाग को उस पर बड़ा गर्व था, जो उचित ही था। पिछले छः वर्षों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह उपयोगी कार्य कर रहा था। यदि कहीं तोपखाना कीचड़ में फंस जाता, तो पीरबख्श को बुलावा आता। वह अपने मस्तक से धकेलकर भारी-से-भारी तोप को बाहर निकाल देता, चाहे वह कितनी ही गहरी धंसी हो। यदि कहीं पत्थरों की जरूरत पड़ती, तो चालीस-पचास मन पत्थर पीठ पर लादे पीरबख्श ऊंचे-से-ऊंची चढ़ाई मजे में चढ़ जाता।

उसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा था। मस्ती की ऋतु में--जो साल में एक महीने की होती है--अवश्य वह चंचल हो जाता था। नहीं तो महावत का नन्हा बच्चा भी उसे चाहे जिधर लिये घूमता था।

वही पीरबख्श अब पिछले दो महीनों से इलाके-भर को आतंकित किये हुए था। कई गांव उसने उजाड़ दिये थे। जो भी झोंपड़ी उसके सामने पड़ती, उसका तिनका-तिनका बिखर जाता। समस्त मनुष्य-जाति से ही जैसे उसे घृणा हो गयी थी। रात को वह ज्वार के खेतों में जा घुसता, मचान तोड़ देता और उन पर बैठे हुए रखवालों को बेदर्दी से कुचल डालता। उसके डर से हुणसूर, कुर्ग, मैसूर और मन्ननतोड़ी के बीच की सड़कें वीरान हो गयीं, यातायात ठप हो गया।

सधाये हुए हाथियों की सहायता से उसे पकड़ने के सारे प्रयत्न निष्फल हो गये। वह दौड़ने में इतना तेज था कि कोई हाथी उसे पा नहीं सकता था। बलवान इतना था कि मैसूर के महाराज का प्रसिद्ध हाथी जंग-बहादुर भी उसके सामने से दुम दबाकर भाग निकला। और एक दिन तो उसने वैनाड के पास कमिश्नर के कैंप पर ही धावा बोल दिया। खेमे उखाड़ फेंके और एक नौकर को धूल में रौंद डाला।

फिर तो पीरबख्श को मारने के लिए पुरस्कार की घोषणा कर दी गयी। शिकारियों के कई दल उसकी खोज में निकल पड़े। किंतु उसकी तो झलक भी दुर्लभ थी। आज वह यहां होता, तो कल बीस मील दूर कहीं धावा बोल देता। वह सड़क के किनारे छिपा रहता और जिस चीज को देखकर उसे तनिक भी संदेह होता, उससे छेड़-छाड़ न करता; लेकिन बैल-गाड़ियों व पैदल यात्रियों पर नजर पड़ने के साथ ही एकाएक चिंघाड़ता हुआ उन पर टूट पड़ता।

चार अंग्रेज शिकारियों का एक दल उसे खोजता हुआ करकनकोटी पहुंचा। इस गांव के सब निवासी पीरबख्श के डर से घर छोड़ कर भाग गये थे। पटेल की आज्ञा से केवल एक कुरंबा परिवार निगरानी के लिए पीछे रह गया था। ये लोग भी मजबूत वृक्षों पर बंधे मचानों पर रात काटते थे। इन्होंने शिकारियों को बताया कि पिछले एक सप्ताह से पीरबख्श इधर दिखाई नहीं दिया है; इसलिए अब वह इधर आने ही वाला होगा। सुबह होते ही हाथी की तलाश में निकल पड़ने का निश्चय करके शिकारी डाक-बंगले में सो गये।

किंतु पीरबख्श ने रात को ही उन्हें दर्शन दे देना अधिक उचित समझा। कमरे में फिलिप का बिस्तर खिड़की के पास ही लगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। खिड़की का एक शीशा टूटा हुआ था। उसी में से हाथी की सूंड़ अंदर घुसी और फिलिप की टांगों के गिर्द लिपटने की चेष्टा करने लगी। फिलिप एक मोटा कंबल ओढ़े सो रहा था; सो उसकी टांगें सूंड़ की पकड़ में ठीक से आ नहीं रही थीं।

फिलिप का भाग्य अच्छा था कि सूंड की हरकत से उसकी नींद टूट गयी। वह उठकर बैठा! हल्के धुंधलके में उसे हाथी की आकृति भी दिख गयी। भरी हुई बंदूक उसके पास ही पड़ी थी। उठकर दाग दी। पीरबख्श को स्वागत का यह तरीका कतई पसंद नहीं आया। भयंकर चिंघाड़ के साथ उसने मूंड़ बाहर को खींची, तो खिड़की का सारा फ्रेम ही उखड़कर गिर गया।

शिकारी भी उसके बाद सो नहीं सके और न ही कमरे से बाहर निकलने का उन्हें साहस हुआ। वे भरी हुई बंदूकें लेकर टूटी हुई खिड़की के पास बैठे रहे। सुबह हुई, तो बाहर निकलकर उन्होंने छान-बीन शुरू की। हाथी के बड़े-बड़े पद-चिह्न तो चारों ओर मौजूद थे; किंतु लहू की एक भी बूंद उन्हें कहीं टपकी हुई दिखाई न दी।

किंतु कुरंबा लोगों का विचार था कि हाथी बुरी तरह घायल हुआ है। नहीं तो वह अवश्य पुनः आक्रमण करता। निकट से गोली लगने के कारण हाथी के चेहरे की त्वचा झुलस गयी होगी, जिससे खून बाहर नहीं निकल पाया। वह घाव पर कीचड़ का लेप कर पास ही किसी घने जंगल में दो-तीन दिन आराम करेगा।

इस जानकारी से उत्साहित होकर शिकारी कुरंबों के निर्देशन में हाथी की तलाश में निकल पड़े।

कोई एक मील तक सड़क के साथ-साथ पदचिह्न मिलते चले गये, फिर कबिनी नदी की ओर मुड़ गये। अब लहू के स्पष्ट धब्बे भी दिखने लगे थे। रास्ता अधिक-से-अधिक बीहड़ होता जा रहा था। बांसों के घने झुरमुट और कंटीली झाड़ियों के झुंड दृष्टि-पथ में बाधा दे रहे थे। कुरंबा पथ-प्रदर्शकों ने कहा कि अब उन्हें बहुत सावधानी से चलना चाहिये। नदी अब पास आ गयी थी और किसी क्षण भी हाथी से मुठभेड़ संभव थी।

पथ-प्रदर्शकों से एक ही दो कदम पीछे स्मिथ और फिलिप चल रहे थे। उनके पास अधिक शक्तिशाली बंदूकें थीं। उनसे पांच कदम पीछे ओक तथा किंग थे, जिनके पास जरा हल्की बंदूकें थीं। उनसे दस कदम पीछे एक स्थानीय शिकारी तथा सुलेमान थे। सुलेमान उनका खानसामा था और खाने का सामान उठाये चल रहा था।

हाथी से भिड़ंत की उनकी योजना इस प्रकार थी। सबसे पहले उस पर स्मिथ और फिलिप अपनी शक्तिशाली बंदूकों से गोलियां चलायेंगे और बगल में हट जायेंगे। यदि हाथी इस मार से बच गया, तो ओक और किंग की गोलियां निश्चय ही उसे धराशायी कर देंगी। कोई जीवित प्राणी इन चार बंदूकों की आठ नालियों से बच सकता है, यह वे सोच ही नहीं सकते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योजना पक्की करके वे चुपचाप, बड़ी सावधानी से आगे बढ़ने लगे। सामने आने-वाली प्रत्येक झाड़ी का वे रुककर सावधानी से निरीक्षण करते। लहू के प्रत्येक धब्बे को गौर से देखते—यह अनुमान लगाने के लिए कि हाथी को वहां से गुजरे कितनी देर हुई है। यदि कहीं पत्ता भी गिरता, तो उनके हृदय जोर से धड़क उठते।

नदी की कलकल ध्वनि भी अब उन्हें सुनाई देने लगी। उनके दोनों ओर बांसों के घने झुरमुट थे। पथ-प्रदर्शक कुरंबा उन्हें दिखा रहा था कि आगे से पदचिह्न दायीं ओर को मुड़ गये हैं। उसी समय उनके पीठ पीछे से एक भयंकर चिंघाड़ गूंज उठी। मुड़-कर देखा, तो उनका खून रगों में जमकर रह गया।

पीरबख्श को शिकारियों की गंध पहले ही मिल चुकी थी। रास्ता छोड़कर पीछे लौटा और रास्ते की बगल में ही बांसों की ओट में छिप गया। शत्रु जब आगे निकल गये, तो चिंघाड़ता हुआ वह पीछे से उन पर एकाएक टूट पड़ा।

पहले उसने सुलेमान को उठाकर जमीन पर पटका। दस कदम के फासले पर किंग बंदूक ताने खड़ा था। उसने जल्दी में दो फायर किये। किंतु पीरबख्श के पांव की एक ठोकर ने उसे गेंद की तरह उछालकर बांसों के झुरमुट पर ऐसा फेंका कि वह वहीं अटका रह गया। अन्य शिकारियों ने अंधा-धुंध फायर किये; लेकिन पीरबख्श बांसों को तोड़ता हुआ भाग निकला।

सुलेमान खत्म हो चुका था! बांस काट-कर जैसे-तैसे किंग को झुरमुट के ऊपर से उतारा गया। उसकी कई पसलियां टूट गयीं थीं और रीढ़ को भी गहरी चोट पहुंची थी।

फिर एक महीना पीरबख्श किसी को दिखाई नहीं दिया। स्मिथ वगैरह समझने लगे कि शायद उनकी गोलियों के घाव हाथी के लिए घातक सिद्ध हुए हैं; और वे पुर-स्कार के लिए दावा पेश करने की सोचने लगे। परंतु पीरबख्श इतनी आसानी से मरने वाला नहीं था। घावों पर कीचड़ का लेप कर, किसी घने जंगल में आराम कर रहा था। महीने-भर में घाव भर गये और फिर आस-पास के इलाके में उसकी प्रलय-लीला आरंभ हो गयी।

शिकारियों के कई दल उसकी तलाश में फिर निकल पड़े। कण्णानूर के दो जवान अंग्रेज अफसर 'दोड्ड केंपा' पर सवार होकर जंगलों में छान-बीन कर रहे थे। दोड्ड केंपा एक प्रसिद्ध और बहुत ही शक्ति-शाली हाथी था। साहसी वह इतना था कि घायल बाघ के हमले की भी परवाह नहीं करता था। जब आस-पास के इलाके में कोई हाथी बिगड़ जाता, तो दोड्ड केंपा को बुल-वाया जाता। वह उसे मिनिटों में दुरुस्त कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता। पीरबख्श जितना ऊंचा तो नहीं था वह; किंतु गठन में उससे अधिक मजबूत था। पीरबख्श से दो-दो हाथ करने के लिए ही उसे विशेष रूप से सिकंदराबाद से लाया गया था। उसका महावत कहता फिर रहा था—"पीरबख्श मेरे केंपा को देखते ही दुम दबाकर भाग जायेगा।"

आखिर पेरियापट्टण के पास एक दिन इन दोनों दैत्यों की मुलाकात हुई। दोड्ड केंपा पर हौदे में दोनों अफसरों के साथ जंगलात-विभाग का एक रेंजर भी बैठा था। दोड्ड केंपा चलते-चलते अचानक रुक गया और जमीन पर सूंड़ पटक-पटककर धप-धप की आवाज करने लगा। यह इस बात का प्रमाण था कि उसे कोई खतरनाक गंध सूंघने को मिली है। फिर वह जरा पीछे हटकर सूंड को हवा में लहराने और सिर को इधर-उधर झुकाने लगा। महावत ने बताया कि यह हमला करने की तैयारी है, जरूर आगे कोई हाथी है।

और तभी कोई पचास गज आगे, उन्हें एक विशालकाय हाथी आता हुआ दिखाई दिया। यह पीरबख्श था। हवा का रुख विपरीत होने के कारण उसे अभी तक दोड्ड केंपा का पता नहीं चला था; इसीलिए वह बड़े आराम से चला आ रहा था।

दोड्ड केंपा इतने जोर से झूल रहा था कि रस्सियों को पकड़कर शिकारी बड़ी मुश्किल से हौदे में जमे हुए थे। महावत अंकुश के भरपूर हाथ जमा रहा था, ताकि हाथी स्थिर हो और शिकारी गोली चला सकें। किंतु दोड्ड केंपा उत्तेजना से उसी प्रकार हिलता रहा।

कोई तीन गज के फासले पर पीरबख्श ने एकाएक उन्हें देखा। वह वहीं रुक गया। कुछ कदम पीछे हटा, फिर सिर नीचा करके जोर से चिंघाड़ता हुआ उन पर टूट पड़ा। और उसी क्षण दोड्ड केंपा पीछे को मुड़ा और तेजी से भाग निकला। झाड़ियों और वृक्षों की टहनियों के बीच से वह बेतहाशा भागा चला जा रहा था। एक डाली हौदे में फंसी और दोनों अफसर धरती पर आ रहे। रेंजर का भाग्य अच्छा था। वही डाली उसके हाथ में आ गयी और उसके सहारे वह वृक्ष पर चढ़ गया। पीरबख्श का क्रोध उन धराशायी अफसरों पर उतरा। पैरों के नीचे रौंद-रौंदकर उसने दोनों का कचूमर निकाल दिया।

दोड्ड केंपा जब भागता हुआ पेरियापट्टण पहुंचा, तो उसका महावत पागल हो चुका था। आतंक से उसकी आंखें फटी हुई थीं। सिर झूल रहा था और दांत निकले हुए थे। रह-रहकर वह पीछे देखता और चीख उठता था।

पीरबख्श के मुतलाशियों में गोर्डन क्युमिंग नामक प्रसिद्ध शिकारी भी था। छः फुट से भी ऊंचा कद, भरा हुआ शरीर। हिम्मती इतना कि खतरनाक-से-खतरनाक जानवर का शिकार भी पैदल और अकेले ही करता। ग्रीष्म की जलती हुई दोपहरी में बीस-बीस मील पैदल घूम आना उसके लिए साधारण-सी बात थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन दिनों वह मैसूर राज्य में डिप्टी कमिश्नर था। पीरबख्श से दो-दो हाथ करने के लिए वह भी उस इलाके में आ पहुंचा। पूरी जानकारी के बाद, केवल अपने नौकर यालू को लेकर वह हाथी की खोज में निकल पड़ा।

पीरबख्श को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उसे दो सप्ताह गुजर चुके थे; किंतु मुलाकात नहीं हो रही थी। कई जगह उसके पदचिह्न मिलते, जो नदी पर जाकर गुम हो जाते थे। कुरंबा लोगों का कहना था कि इधर कुछ समय से हाथी नदी में घुसकर एक-दो मील धारा प्रवाह के साथ बहता है और फिर बाहर निकलकर किसी ओर को चल देता है। सारा दिन वह किसी घने जंगल में गुजारता है और रात को बाहर निकलता है। इसलिए उसे ढूंढ़ निकालना बहुत कठिन है।

किंतु क्युमिंग हतोत्साह होना नहीं जानता था। शिकारी कुत्ते की तरह वह उसके पीछे लगा रहा। कई बार उसकी भेंट अन्य शिकारी-दलों से भी हुई। वे निश्चित स्थानों पर बैठकर हाथी की प्रतीक्षा करते थे। उन्होंने क्युमिंग का मजाक भी उड़ाया और उसे अपने साथ ठहरने के लिए आमंत्रित भी किया। किंतु क्युमिंग उसी प्रकार पैदल ही दो हफ्ते तक भटकता रहा।

खोज का तीसरा सप्ताह भी खत्म होने को था। पीछा करते-करते क्युमिंग और यालू एक ऐसे इलाके में पहुंचे, जो छोटी-छोटी झाड़ियों से भरा था। गर्मियों की दोपहरी थी। एक बरगद के पेड़ के नीचे वे सुस्ताने को बैठ गये। यालू ने मुंह में पान डाला और क्युमिंग बिस्कुट चबाने लगा। तभी एकाएक सन्नाटे को कंपाती चीरती हुई एक भयंकर चिंघाड़ गूंज उठी। उन्होंने देखा कि केवल बीस कदम के फासले पर उड़ते हुए पहाड़ जैसा पीरबख्श चढ़ा आ रहा है! उसका सिर ऊपर को उठा था और सूंड झंडे की तरह लहरा रही थी।

ऐसी हालत में गोली केवल सीने में मारी जा सकती थी। किंतु यदि वह कलेजे अथवा फेफड़ों में नहीं लगी, तो निश्चय ही हाथी अगले ही क्षण उन्हें आ दबोचेगा। बिजली की तेजी से क्युमिंग ने योजना तय कर डाली। बिना किसी उतावली के, बैठे-ही-बैठे, उसने अपना हैट उठाया और जब हाथी कोई दस गज रह गया, तो उसके सामने फेंक दिया।

एक क्षण के लिए पीरबख्श ठिठका। हैट का निरीक्षण करने के लिए उसने सिर झुकाया। उसी क्षण क्युमिंग की शक्तिशाली बंदूक से निकली गोली उसके मस्तक के ठीक बीच में आ लगी। पीरबख्श वहीं ढेर हो गया। बड़ी शांति के साथ क्युमिंग ने बंदूक बगल में रख दी, फिर बिस्कुट चबाने लगा।

—मरविन स्मिथ के संस्मरणों पर आधारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख्रुश्चेव के उत्तराधिकारी

क्या रूस के वर्तमान नेता अपनी गद्दी पर टिके रह सकेंगे ?

हांस क्राल

ख्रुश्चेव के अपदस्थ किये जाने का क्या अर्थ है ? ख्रुश्चेव के पतन के अनेक कारण बताये गये हैं। इनमें से दो को मैं सही कारण मानता हूं।

इनमें से एक का संबंध चीन से है। ख्रुश्चेव के विरोधियों ने इस बात को लेकर उनकी तीव्र आलोचना की थी कि वे खुल्लम-खुल्ला माओ त्से-तुंग के साथ विवाद में पड़ गये, जिसका मतलब था साम्यवादी मठ में फूट। माओ ख्रुश्चेव को अपदस्थ करना चाहता था; और वह इसमें कामयाब भी हो गया। मगर इसका यह अर्थ नहीं कि अंत में विजय उसी की होगी। जिन लोगों ने ख्रुश्चेव का तख्ता उलटा, वे भी ख्रुश्चेव जितने ही चीन-विरोधी हैं।

दूसरे कारण को मैं अधिक महत्वपूर्ण समझता हूं। वह था हाल के वर्षों में ख्रुश्चेव का हुकूमत करने का ढंग। जब मैं मास्को में था, कितनी ही बार विभिन्न समस्याओं की चर्चा करते हुए ख्रुश्चेव कहा करते थे—"मैं तो यह काम करना चाहता हूं; मगर कब करूंगा, यह नहीं कह सकता। मुझे दूसरे नेताओं को सहमत करना होगा। मैं सर्वेसर्वा नहीं हूं।"

सचमुच ख्रुश्चेव को अपनी नीतियों के पक्ष में केंद्रीय समिति की प्रिसीडियम के आगे दलीलें रखनी पड़ती थीं। कई बार पूरी केंद्रीय समिति के सामने भी जाना पड़ता था। मैं खुद जानता हूं कि कई बार ख्रुश्चेव अल्पमत में पड़ गये और उन्होंने बहुमत का निर्णय स्वीकार कर लिया।

मालोतोव-मार्लेकोव गुट को पदच्युत करने के बाद ख्रुश्चेव एक-के-बाद-एक सफलता पाते गये—विशेषतः आर्थिक क्षेत्र में। किंतु इसके बाद क्यूबा-कांड, अनाज की कमी, सप्त-वर्षीय योजनाओं में शिथिलता, चीन से मतभेद आदि समस्याएं उठ खड़ी हुईं। इनमें उलझ-कर ख्रुश्चेव प्रिसीडियम से राय लेने में उपेक्षा बरतते चले गये। और यही उनके पतन का कारण बना।

बहुतों का खयाल है कि ब्रेजनेव-कोसीगिन की जोड़ी टिकनेवाली नहीं; कोई दूसरा शक्तिशाली नेता सत्ता हथिया लेगा। मैं ऐसा नहीं मानता। अव्वल इन दोनों में अच्छी बनती है। दूसरे, पार्टी के सेक्रेटरी और सरकार के अध्यक्ष दोनों पदों पर एक आदमी का रहना रूस में भी अपवाद ही है, नियम नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेनिन की मृत्यु के बाद स्टालिन वर्षों तक सिर्फ पार्टी के सेक्रेटरी थे। द्वितीय युद्ध में कहीं जाकर मोलोतोव सरकार के अध्यक्ष पद से हटे और स्टालिन ने दोनों पद संभाले। स्टालिन के मरने पर मालेंकोव ने दोनों पद हथियाये; मगर कुछ ही महीने वे इन्हें संभाल सके। फिर जब ख्रुश्चेव पार्टी-सेक्रेटरी बने, तो सरकार बुल्गानिन ने संभाली। बुल्गानिन को पदच्युत करने के बाद ख्रुश्चेव ने अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाने के लिए इस प्रकार के दोहरे नेतृत्व को समाप्त किया।

किंतु ख्रुश्चेव को सत्ता का दुरुपयोग करते देख प्रिसीडियम चौंक उठी और मुख्यतः इसी कारण उसने ख्रुश्चेव को हटाया। मेरे खयाल से वह अब किसी को सारी शक्ति अपने हाथ में केंद्रित न करने देगी। इसीलिए मुझे विश्वास है, ब्रेजनेव-कोसीगिन की जोड़ी वर्षों कायम रहेगी।

बेरिया के उन्मूलन के बाद गुप्त पुलिस की बहुत-सी शक्ति छीन ली गयी। जुकोव की पदच्युति के बाद सेना ने भी राजनीति में भाग लेना बंद कर दिया। सो आज देश सचमुच कम्युनिस्ट पार्टी के हाथों में है और पार्टी का संचालन केंद्रीय समिति की प्रिसीडियम करती है। सोवियत रूस का भावी विकास प्रिसीडियम के आंतरिक विकास पर निर्भर होगा।

नीचे जिनका वर्णन है, ये छः व्यक्ति इस समय रूसी राजनीति के मुख्य सितारे कहे जा सकते हैं:

अलेक्सी कोसीगिन : साठ वर्ष। सोवियत रूस के नये प्रधान मंत्री से वैयक्तिक संपर्क के दो विशिष्ट प्रसंग मुझे स्मरण हैं। १९६१ के नववर्ष दिन के पिछली शाम की पार्टी की बात है। ख्रुश्चेव, मिकोयान और कोसीगिन जर्मन-सोवियत संबंधों पर बातचीत करने के लिए मुझे क्रेमलिन के बगीचे में ले गये। जब सुबह के चार बजे के करीब बैठक समाप्त होने को आयी, तो कोसीगिन उठे और बोले –"आइये, श्री क्राल के स्वास्थ्य का प्याला पियें।" फिर वे मेरी ओर मुड़े–"श्रीमन्, यह मैं आपके स्वास्थ्य के लिए पी रहा हूं। हमारे तईं आप तमाम जर्मनों के राजदूत हैं।" पश्चिम जर्मनी के प्रति और पश्चिमी जगत के प्रति सौहार्द्र का यह पहला प्रदर्शन था।

कोसीगिन

दूसरा संस्मरण भारतीय राजदूत द्वारा आयोजित एक सत्कार-समारोह का है। मेरी और कोसीगिन की गुफ्तगू हो रही थी। मैंने कहा–"पूर्वी यूरोप के साम्यवादी राष्ट्र 'साझे बाजार' (कामन मार्केट) में दिलचस्पी लें–और कौन जाने आगे चलकर कभी उसमें शामिल भी हो जायें–तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

उन्होंने उत्तर दिया–"आप अच्छी तरह जानते हैं, मैं तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रेझनेव

आर्थिक सहयोग का समर्थक हूं—विशेष रूप से आपके देश से।" कोसीगिन को पश्चिम के राष्ट्रों से व्यापार-संबंध बढ़ाने में जबर्दस्त दिलचस्पी है; क्योंकि वे इसे सोवियत रूस के आर्थिक-विकास के लिए आवश्यक समझते हैं।

वे कुशल प्रबंधक और संगठनकर्ता हैं, आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ हैं—विशेषत: हल्के उद्योगं और वित्त-व्यवस्था के मर्मज्ञ हैं। स्वभाव से वे बड़े मिलनसार हैं; किंतु उतने ही कर्मठ और दृढ़-निश्चयी भी हैं। और मैं नहीं समझता कि वे ब्रेझनेव को अपने पर हावी होने देंगे। याद रखिये, ख्रुश्चेव ने फ्रांस-यात्रा के दौरान कोसीगिन का परिचय कराते हुए कहा था—"ये कोसीगिन हैं। इन्हें ऐसा-वैसा न समझियेगा। हो सकता है, एक दिन ये ही मेरे उत्तराधिकारी हों।"

लियोनिड ब्रेजनेव : सत्तावन वर्ष। पहली बार मैं उनसे १९६० में मिला, जब वे रूस की सुप्रीम सोवियत की प्रिसीडियम के अध्यक्ष थे। यह पद वैधानिक राष्ट्रपति के बराबर होता है। इस भेंट में मैं उनकी शालीनता से बड़ा प्रभावित हुआ। मास्को में शायद सबसे बढ़िया सिले कपड़े उन्हीं के होते हैं और वे इटालियन स्टाइल के नुकीले जूते पहनते हैं। रूस के अधिकांश बड़े नेता नीरस बोलते हैं; मगर ब्रेझनेव बड़े प्रगल्भ वक्ता हैं।

ब्रेझनेव ने पहले खेती की समस्याओं का अध्ययन किया और फिर इंजीनियरी में डिप्लोमा लिया। १९६३ से वे पार्टी में कार्यकर्ता के रूप में आगे बढ़ते गये। ख्रुश्चेव की तरह वे भी यूक्रेनवासी हैं और युद्ध के पूर्व जब ख्रुश्चेव यूक्रेन में पार्टी के प्रमुख थे, ब्रेझनेव ने उनसे और उनके निकटवर्तियों अर्थात् पोडगोर्नी, पोल्यांस्की और टीटोव से घनिष्ठता बढ़ायी। पिछले वर्ष जुलाई में ख्रुश्चेव ने उन्हें पार्टी के सेक्रेटरियट में शामिल किया, जहां उन्होंने सिद्ध कर दिया कि सत्ता हस्तगत करने के उपायों में वे निपुण हैं।

मिकोयान

निश्चय ही पार्टी में उनके वफादार अनुयायियों का जाल है। मगर पार्टी में जिनके गुटों की चलती है, उनमें से कितनों का समर्थन उन्हें प्राप्त है, यह कहना कठिन है। सेना से उनके संबंध अच्छे हैं। वर्तमान शासन में उनकी स्थिति सुदृढ़ है; लेकिन उनमें तानाशाह बनने की क्षमताएं नहीं हैं।

अनास्तास मिकोयान :— उनसठ वर्ष। पदाधिकारियों में उनका चित्र तीसरे नंबर पर आता है। गत वर्ष जुलाई में वे ब्रेझनेव के स्थान पर राष्ट्रपति बनाये गये। मगर उनका प्रभाव राष्ट्रपति के कार्य-क्षेत्र से कहीं अधिक व्यापक है। मेरी राय में वे उन लोगों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से हैं, जिनके हाथ में असली शक्ति है—इनमें मैं ब्रेझनेव, कोसीगिन, सुस्लोव और पोडगोर्नी को भी सम्मिलित करता हूं।

सुस्लोव

मिकोयान दूसरों को गद्दीनशीन कर सकते हैं; मगर स्वयं गद्दीनशीन नहीं हैं। और न ही मेरे खयाल से वे गद्दीनशीन होना चाहते हैं। मैं नहीं समझता कि उनका आमनियन होना उनकी प्रगति में आड़े आ रहा है, जैसा कुछ लोगों का दावा है। बल्कि सच तो यह है कि स्वभाव से वे महत्वाकांक्षी नहीं हैं। यही नहीं, वे अक्सर बीमार रहते हैं। मैं समझता हूं कि अगर वे पार्टी और सरकार दोनों की लगाम थामना चाहें तो भी, स्वास्थ्य उनका साथ नहीं देगा।

मिखाइल सुस्लोव :— बासठ वर्ष। प्रिसीडियम में वे नंबर—१ आदमी नहीं हैं। मगर मेरा खयाल है, जो लोग ख्रुश्चेव के बाद गद्दी पर बैठे हैं, दरअसल उन्होंने ख्रुश्चेव को गद्दी से नहीं उतारा था। उन्हें पदच्युत करनेवालों के मुखिया निश्चय ही सुस्लोव थे। यों भी राजकीय अवसरों पर मास्को की सड़कों पर तथा लाल चौक में नेताओं के जो चित्र टांगे जाते हैं, उनमें सुस्लोव के चित्र का नंबर अब चौथा, यानी कोसीगिन, ब्रेझनेव और मिकोयान के एकदम बाद है, पहले छठा था।

सुस्लोव केंद्रीय समिति के सेक्रेटरियट के भी सदस्य हैं। किंतु प्रिसीडियम के अन्य नौ सदस्यों से वे एक बात में भिन्न हैं। वे बुद्धिजीवी और सिद्धांतशास्त्री हैं। सच तो यह है कि वे रूसी मार्क्सवाद के सर्वप्रमुख व्याख्याकार हैं। सुस्लोव कभी किसी सरकारी या प्रशासकीय पद पर नहीं रहे हैं। उनका उठना-बैठना आदि प्रायः अपने जैसे ही सिद्धांतशास्त्रियों के तबके में होता है।

विदेशी राजदूतों से मिलना-मिलाना सुस्लोव को नहीं रुचता। मैंने पाया कि उन तक पहुंचना और उनसे बातचीत करना कठिन है। जार्ज कैनान, जो मास्को में अमरीका के राजदूत रह चुके हैं और रूसी मामलात के विशेषज्ञ हैं, मानते हैं कि सुस्लोव आगे चलकर सर्वोच्च नेता बन सकते हैं; किंतु मुझे ऐसा नहीं लगता।

पोडगोर्नी

बेशक वे प्रिसीडियम के सबसे मेधावी सदस्यों में से हैं; मगर उलझे बेतरतीब बालोंवाले ये प्रोफेसर साहब व्यावहारिक शासन-कार्य के अनुभव से इस कदर कोरे हैं कि रूस जैसे विशाल देश का रोजमर्रा का शासन चलाना उनके बस की बात नहीं है। यों भी अस्वास्थ्य ने उनकी महत्वाकांक्षा पर लगाम लगा रखी है। कहते हैं कि या तो उन्हें तपेदिक की शिकायत है, या गुर्दे की बीमारी है।

निकोलाई पोडगोर्नी:—इकसठ वर्ष। पोडगोर्नी का महत्व दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातों से प्रकट होता है। अव्वल, सरकारी चित्रों में उनका स्थान पांचवां है। दूसरे, वे प्रिसीडियम और केंद्रीय समिति के सेक्रेटरियट दोनों के सदस्य हैं। (यह सम्मान उनके अलावा केवल तीन व्यक्तियों को प्राप्त है—ब्रेझनेव, सुस्लोव और शेलेपिन।)

पोडगोर्नी बड़े जिंदादिल आदमी हैं। जूझने में उन्हें आनंद आता है। कुछ-कुछ वे ख्रुश्चेव से मिलते-जुलते हैं और उनकी उन्नति में ख्रुश्चेव का काफी हाथ रहा है। कहा जाता है कि ब्रेझनेव के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए ही ख्रुश्चेव पोडगोर्नी को प्रिसीडियम में लाये। परंतु रूस में कौन किसका प्रभाव कम कर रहा है, यह जानना मुश्किल है।

शेलेपिन

पोडगोर्नी यूक्रेनी गुट के सदस्य हैं, जिसके दूसरे सदस्य हैं ब्रेझनेव, आंद्रेई किरिलेंको, दिमित्री पोल्यांस्की और प्योत्र शेलेस्त।

किरिलेंको का स्थान पार्टी नेताओं के चित्रों में सातवां है; वे औद्योगिक आयोजन के विशेषज्ञ हैं। आठवां स्थान पानेवाले पोल्यांस्की बुद्धिमान, कमउम्र (४७ वर्ष) और घमंडी हैं और उनका सितारा तेजी से बुलंद हो रहा है। शेलेस्त प्रिसीडियम के नये सदस्य हैं। यह असंभव नहीं कि पार्टी में पोडगोर्नी उसी तरह ब्रेझनेव के दायें हाथ हों, जैसे ब्रेझनेव ख्रुश्चेव के दायें हाथ थे।

अलक्सांद्र शेलेपिन :— छियालीस साल। प्योत्र शेलेस्त की तरह हाल में ही प्रिसीडियम के सदस्य बनाये गये हैं। मगर शेलेस्त की तरह उन्हें पहले उप-सदस्य नहीं रहना पड़ा। वे सेक्रेटरियट के भी सदस्य हैं। बेरिया के बाद वे गुप्त पुलिस (के-जी-बी) के प्रधान बने और १९६१ में पार्टी और सरकार की नियंत्रण समिति के अध्यक्ष अर्थात्, देश के नेताओं की गतिविधियों के सुपरवाइजर नियुक्त किये गये। उनको अचानक प्रिसीडियम का सदस्य बनाया जाना इस अफवाह की पुष्टि-सी करता है कि ख्रुश्चेव के उच्चाटन में गुप्त पुलिस का हाथ था।

शेलेपिन रूस के नयी पीढ़ी के नेताओं के नमूने हैं। वे बुद्धिमान हैं और प्रचार-प्रकाशन से बचते हैं। वे उम्र में इतने छोटे हैं कि स्टालिन-युग में उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया होगा, जो अब आड़े आये। और ख्रुश्चेव से भी वे कुछ दूर-दूर ही रहे। सो 'अ-स्तालिनीकरण' और 'अ-ख्रुश्चेवीकरण' से उन्हें लाभ-ही लाभ है। प्रिसीडियम के बुजुर्ग सदस्यों के मुकाबले उम्र का तकाजा शेलेपिन (और पोल्यांस्की) के पक्ष में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत के बारे में— दुनिया कितनी अनजान है!

खुशवंत सिंह

विदेश जानेवाले हर भारतीय की एक स्थायी शिकायत यह होती है—"अरे ये लोग तो भारतके बारे में कुछ भी नहीं जानते।" दुनिया को भारत के बारे में सिखाने-समझाने की उनकी इच्छा लगभग मिशनरी उत्साह का रूप ले लेती है। वे हमारे दूतावासों को, सूचना विभागों को कोसने लगते हैं और वे भारत की हर चीज—जी हां, वेदांत, मंदिर, सालन, साड़ी पहनने की कला, पंचवर्षीय योजना वगैरह हर चीज के बारे में विदेशियों को समझाना अपना मिशन समझ कर उसमें जुट पड़ते हैं। मगर यह तो ऐसा काम है, जिसमें हार निश्चित है। विदेशी बहुत ज्यादा हैं और वे हमारे गजब के देश भारत के बारे में अज्ञान में ही डूबे रहना अधिक पसंद करते हैं।

भारतीय मामलों का विदेशियों को जो 'ज्ञान' है, उससे पहले-पहल मेरा साबका पड़ा १९४८ में, कनाडा में। हमारे हाईकमिश्नर महोदय दौरे पर गये हुए थे, अतः कार्यालय की बागडोर मेरे हाथों में थी। हैदराबाद का मामला चरम सीमा पर जा रहा था और कनाडा के पत्रों तक में भारतीय सेना की टुकड़ियों और रजाकारों के बीच सीमाई झड़प की कहानियां छपा करती थीं। मगर हमारे यहां के नौकरशाहों की तरह ही वहां के सरकारी कर्मचारी भी अखबारों की दिलचस्प सुर्खियां-भर पढ़ा करते हैं। हैदराबाद का मामला ध्यान देने लायक कहां था! एक दिन सवेरे फोन की घंटी बजी। उधर से आवाज आयी—"हम डिफेंस मिनिस्ट्री से बोल रहे हैं।"

"यह भारतीय हाईकमिश्नर का कार्यालय है। फरमाइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"आप तो जानते होंगे कि हम समय-समय पर भारत के देशी नरेशों को हथियार भेजा करते हैं। पहले यह रिवाज था कि हम ब्रिटिश सरकार को इसकी सूचना दे दिया करते थे—महज शिष्टाचार के लिए। चूंकि अब आप स्वतंत्र राष्ट्र हैं, आपके देशी नरेशों को हथियार भेजते हुए शायद हमें आपको बता देना चाहिये।"

"यह आपकी बड़ी मेहरबानी है," मैंने कहा—"हथियार किस नरेश ने मंगाये हैं?"

जवाब मिला—"यह बात बताने को हम बाध्य नहीं हैं, जहां तक मैं समझता हूं, देशी नरेश स्वतंत्र हैं। लेकिन इस बार बहुत ज्यादा हथियारों का 'आर्डर' आया है; सो शायद हम आपको बता दें—महज शिष्टाचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के नाते।"

"बेशक, बेशक," मैंने अपने स्वर में शहद घोलकर उसे आश्वस्त करते हुए कहा—"देशी नरेशों के साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है। वे तो हमारे ही हैं।"

"अच्छा, हम जल्द ही एक लाख राइफलें भेज रहे हैं। ठहरिये, नाम जरा ठीक से मालूम कर लूं.....हां, यह माल हम भेज रहे हैं हैदराबाद के "नाईजाम" को। उनके आदमियों ने दाम नकद चुका दिये हैं; सो, भुगतान की कोई समस्या नहीं है। आशा है, आपको कोई आपत्ति नहीं है, ठीक है न।"

"ठीक है।"

मैंने टेलिफोन का रिसीवर रखा, फिर उठाया और नयी दिल्ली के लिए ट्रंककाल 'बुक' करायी।"

हैदराबाद में 'पुलिस कार्रवाई' गजब की तेजी से हो गयी; पर विदेशियों को वह बहुत नागवार गुजरी। अमरीका और कनाडाई अखबारों ने "हिटलरी हमले" और "दुमुंहे भारतीय शांतिवादी" आदि ओछे आक्षेपों से पन्ने रंग डाले।

हाईकमिश्नर ने बड़ी ही परेशानी के स्वर में कहा—"ये लोग तो सारी चीज उलटे ही रूप में देख रहे हैं। एक प्रेस-कांफ्रेंस बुलाओ, जिससे हम इन्हें सारी बात समझा तो दें।"

कांफ्रेंस बुलायी और पत्रकारिता की पवित्र परंपराओं के अनुसार हमने खूब प्यार से पत्रकारों को बढ़िया स्काच, मार्टिनी और कैवियेर पिलवायी। जब वे सुरा से गले तर करके सुनने के 'मूड' में आये, तो हाईकमिश्नर ने अपना भाषण शुरू किया। उन्होंने बताया कि हैदराबाद भारत के भीतर एक टापू है, यदि वह भारत में शामिल न रहा, तो हमारे देश की स्वतंत्रता सिर्फ मजाक बनकर रह जायेगी। उन्होंने रजाकारों द्वारा किये गये नृशंस अत्याचारों का भी वर्णन किया। ("हाईकमिश्नर महोदय, जरा रजाकार शब्द के हिज्जे बताने की कृपा करेंगे?" एक पत्रकार ने आग्रह किया) उन्होंने बताया कि शांतिमय भारतीय सेना सीमाओं पर जमा हो रही है और पुलिस 'कार्रवाई' की जा रही है।

"अच्छा, अब कोई प्रश्न पूछना हो, तो पूछें?"

एक चुस्त युवती ने हाथ उठाया—"मिस्टर हाईकमिश्नर, यह हैदराबाद कहां है?"

मैं ठहरा अग्रसोची प्रेस-अटैची! भारत का नक्शा साथ लाया था। उसे एक बोर्ड पर लटकाकर, विजेता की-सी मुद्रा में, मैंने अपनी उंगली हैदराबाद की सीमा पर फिरायी, जिसे हाल में हम मिटा चुके थे।

"पर हाईकमिश्नर ने तो अभी बताया कि हैदराबाद एक टापू है।" महिला भौचक्की होकर चीखी।

हमने प्रेस-सम्मेलन समाप्त घोषित कर दिया और पत्रकारों की सेवा में फिर स्काच, मार्टिनी आदि हाजिर की। जो लोग इतनी बढ़िया काकटेल पार्टी देते हैं, वे भला दूसरों की भूमि पर आक्रमण करने-जैसा भयानक काम कैसे कर सकते हैं। जरूर यह काम उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदमाश 'राजियों' का ही होगा—हां, भला, क्या नाम बताया आपने उनका ?

दुनिया को जानकारी देने की इच्छा भारतीयों को ही नहीं, हमारे पाकिस्तानी भाइयों में भी यह लगन पूरे जोश पर है। जब दोनों देशों में झगड़ा चल रहा हो, तब तो यह जोश तेज बुखार की हद तक बढ़ जाता है। दोनों में से कोई यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि दूसरा बाजी ले जाये। हमें पूरा-पूरा विश्वास होता है कि हम तो सच्ची हकीकत बताते हैं; जब कि हमारे विरोधी झूठा प्रचार करते हैं और चूंकि वे ज्यादा धूर्त हैं, हमसे ज्यादा कामयाब रहते हैं। लिहाजा जैसे हम भारतीय मानते हैं कि पाकिस्तानियों की छल-भरी बातों के बहकावे में आकर दुनिया पाकिस्तान-समर्थक हो गयी है, इसी तरह पाकिस्तानियों को उतना ही पक्का विश्वास है कि 'मक्कार हिन्दुओं' के चक्कर में दुनिया भारत-समर्थक और पाकिस्तान-विरोधी होती जा रही है। मगर दोनों में से किसी ने भी इस उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा कि हम दुनिया को असलियत समझा सकते हैं। हर नागरिक इसे अपना फर्ज समझता है कि वह इस मामले में दूसरे देश को आगे न निकलने दे।

इससे मुझे अपने आस्ट्रेलिया-प्रवास की याद आती है। जो मैंने निजी तौर पर किया था। हमारे यात्रा-दल में एक सुंदर पाकिस्तानी दंपति भी शामिल थे। पति बड़े जिंदादिल और सुसंस्कृत थे; पत्नी आकर्षक नवयुवती थीं, वे चित्रकार थीं—हिरनी की सी आंखें, काले बालों में फूल लगाये हुए और निहायत बढ़िया ढंग से साड़ी पहने हुए। लीजिये, पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान को मात दे दी।

मैंने तय किया कि उनसे मित्रता रखी जाये और उन्हें मना लिया कि आस्ट्रेलियाइयों के साथ भारत-पाक समस्याओं की चर्चा नहीं करेंगे। पर आस्ट्रेलियाई हमें चैन लेने दें, तब न। हमसे सवाल किये जाते—यह कश्मीर का मामला क्या है ?.....ये हिन्दू-मुस्लिम दंगे ?.....इत्यादि-इत्यादि। कुछ समय तक तो हम बहस में पड़ने से इंकार करते रहे। मगर फिर मन में शक होने लगा कि दूसरा छिपे-छिपे मैदान साफ कर रहा है। मैं रोटरी की एक बैठक में भाषण दे चुका था, जिसमें मेरे ये पाकिस्तानी मित्र आमंत्रित नहीं किये गये थे। उन्होंने उड़ती हुई अफवाह सुनी थी कि बैठक खूब जमी थी। कहीं मैंने पाकिस्तान की निंदा तो नहीं की उसमें ? उन्हें पक्का पता तो न था। मगर लोगों के सामने पाकिस्तानी नजरिया रखने में क्या हर्ज था।

सो उन साहब ने महिलाओं के एक क्लब में भाषण देने की व्यवस्था कर ली। जोरदार तकरीर करते हुए उन्होंने भारत और पाकिस्तान के मतभेद स्पष्ट किये, कई महत्वपूर्ण मसलों पर भारत की दगाबाजी का जिक्र किया। भाषण के अंत में खूब तालियां बजीं। उनकी हसीन बीवी ने याददाश्त के लिए उपहार बांटे, साड़ी पहनने के तरीके का प्रदर्शन किया और कहा—"साड़ी भारत की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बपौती नहीं है। पाकिस्तानी महिलाएं हिन्दुस्तानियों से हजारों वर्ष पहले से इसे पहनती आ रही हैं।" मियां-बीवी ने मिलकर भारत की धज्जियां उड़ा दीं। इतने में मेजबान महिला की बेटी घर आयी, (अपने कालेज में लेक्चर होने के कारण वह इस समारोह में शामिल नहीं हो सकी थी।) उसके आते ही उसकी मां ने इस पाकिस्तानी महिला से परिचय कराया, –"आओ मेरी, हिन्दुस्तान की इस खूबसूरत पाकिस्तानी महिला से मिलो।"

हम भारतीयों का एक तबका ऐसा भी है, जो यह समझता है कि हमें किसी परिचय की आवश्यकता नहीं, क्योंकि हमारी जाति "जगद्विख्यात" है। यह गलतफहमी तथाकथित सैनिक जातियों में ज्यादा फैली हुई है, कोई सिक्ख, पठान, गोरखा, डोगरा या राजपूत फौरन यही कहेगा–"मैं सिक्ख हूं।" या "मैं पठान हूं।" और यह कहकर चुप होकर बैठ जायेगा, इस अपेक्षा के साथ कि उसके पूर्वजों की वीरता से हर कोई परिचित है। स्वयं सिक्ख होने के कारण मुझे यह खास अनुभव है कि दुनिया को सिक्खों के बारे में कितना 'ज्ञान' है। अधिकांश विदेशी यही कहते हैं–" सिक्ख ?.....वह क्या होता है ?" "एक प्रकार का हिन्दू?" ....."नहीं, –नहीं, वे तो मुस्लिम होते हैं, शेख मुसलमान।"

सबसे ज्यादा निराशाजनक अनुभव हुआ इजरायल में, जहां शिक्षा १०० फी सदी से ज्यादा बतायी जाती है। जिन बीसियों लोगों से मैं मिला, उनमें से किसी ने सिक्खों का कभी नाम भी नहीं सुना था। और तब तो मेरी पगड़ी धूल में मिल जाती, जब कभी मेरा 'पथ-प्रदर्शक' सिक्ख शब्द का हीब्रू बहुवचन बोलता था। सामनेवाले की आंखों में चमक आ जाती और वह सहर्ष कहता– "हां-हां, सिक्किम ! हां, आप लोग तो पहाड़ी आदमी हैं न। आपके राजकुमार ने तो एक सुंदर अमरीकी लड़की से विवाह किया है।"

मेरा रहा-सहा वहम कि सारी दुनिया सिक्ख के रूप में मुझे फौरन पहचान लेगी, एक अमरीकी दंपति ने दूर कर दिया। इनसे मुलाकात हुई थी तेल अवीब में एक होटल के भोजनगृह में। वे लोग आये और पास ही बैठ गये। हम लोगों में मुस्कानों और मूक अभिनंदन का आदान-प्रदान होता रहा। हमने एक-दूसरे को एक दूसरे की तरफ चोरी से देखते हुए पकड़ा। अंततः महिला ने पहल की। वह अपनी जिज्ञासा दबा न सकी– "आप किस देश के हैं ?"

"आप ही अंदाज लगाइये। मैं तीन मौके देता हूं।" मैंने कहा।

"क्या आप अंग्रेज हैं ?" आखिर महिला ने कुछ देर बाद साहस कर पूछा। इस बीच वह अपने पति से पहेली बुझाने में मदद की अपील कर चुकी थी। मगर पति महोदय इस चक्कर में पड़ने को उत्सुक नहीं थे।

"क्या मैं अंग्रेज दिखता हूं ?" मैंने जानना चाहा।

"नहीं, पर आप अंग्रेजी जो बोलते हैं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह जरा लज्जित होकर बोली।

"क्या बेतुकी बात कहती हो?"

पति महोदय दहाड़े–"वे अंग्रेज कैसे हो सकते हैं।" मगर स्वयं अनुमान लगाने का जोखिम नहीं उठाया।

पत्नी ने मेरी दाढ़ी और पगड़ी का बारीकी से मुआयना किया और कहा–"आप यहूदी हो सकते हैं।

"नहीं मैं यहूदी नहीं हूं।" मैंने जवाब दिया।

"वे यहूदी कैसे हो सकते हैं?" पति महोदय फिर गरजे। इस बार खुद उन्होंने चौकड़ी भरी–"जरूर आप भारतीय हैं।"

"हां" मैंने कहा–"मैं भारतीय हूं।"

"मैं तो पहले ही कहता था।" पति महोदय आत्म-संतोष के साथ बोले–"अंग्रेज! यहूदी! तुम भी कैसी मूर्ख हो?"

मैंने तय किया कि खेल जारी रखना चाहिये–"बताइये, आपके खयाल से मेरी जाति या धर्म कौन-सा है? चलिये इसके लिए भी तीन अनुमान लगाइये।"

"जनाब" महिला बोली–"मुझे मालूम है कि आप यहूदी नहीं हैं, तो फिर क्या आप ईसाई हैं?"

"नहीं मैं ईसाई नहीं हूं।"

"फिर वही बेवकूफी! अरे, वे ईसाई कैसे हो सकते हैं?" पति ने कहा; पर स्वयं और कोई तुक्का नहीं लड़ाया।

"क्या सारे भारतीय हिन्दू नहीं होते? क्या आप हिन्दू हैं?"

"नहीं, मैं हिन्दू नहीं हूं।"

इस बार पति महोदय ने कोई जोखिम उठाकर हास्यास्पद बनने की कोशिश नहीं की। वे तेजी से सिगार चबाते और मेरी दाढ़ी को घूरते रहे।

"क्या आप 'मुसलमान' हैं?" औरत ने डरते-डरते हिम्मत की।

"नहीं, मैं मुसलमान भी नहीं हूं; पर अब आप मंजिल के पास आ गयी हैं।"

"अगर आप मुसलमान भी नहीं हैं," पति महोदय इस तरह दहाड़े, मानो आखिरी मैदान वे ही मार ले गये हों–"तो जरूर आप इस्लामिक हैं।"

मैंने उन्हें सताना छोड़कर बड़े ही उदास स्वर में कहा–"नहीं, मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं इस्लामिक भी नहीं हूं। मैं सिक्ख हूं!"

"ओह.....जनाब," महिला बड़ी ही हमदर्दी के साथ बोली–"क्या हम आपकी कुछ मदद कर सकते हैं? मेरे बैग में कुछ एस्पिरिन है, उससे आपको कुछ फायदा हो सकता है।" वे बेचारी मुझे 'सिक्' (बीमार) समझ बैठी थीं।

लाचार मैंने उनकी उदार सहायता स्वीकार कर ली और बिस्तर पर जा लेटा।

★

गदर में गालिब आर्थिक दृष्टि से तबाह होकर घर के कपड़े तक बेचने पर मजबूर हो गये। उन्हीं दिनों गालिब से किसी ने उनका हाल पूछा, तो गालिब ने जवाब दिया–"दूसरे लोग रोटी खाते हैं; लेकिन मैं कपड़ा खाता हूं!" —हुस्न जमाल छीपा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अणु की रचना के 'न्यैष्टिक रूप (न्यूक्लियर माडल) के अनुसार अणु के केंद्र में एक भारी पिंड होता है, जो उसका 'नाभिक' अथवा 'न्यैष्टि' कहलाता है। इसके चारों ओर विद्याणु (इलेक्ट्रान) चक्कर लगाते हैं। किसी अणु के 'न्यैष्टि' में निश्चित संख्या के 'प्रोटान' (धन-आवेशयुक्त कण) एवं 'न्यट्रान' (आवेश-रहित कण) रहते हैं। सन १९३२ में चैडविक ने न्यूट्रान की खोज की। उसके बाद 'न्यैष्टि' की यह रचना सर्वस्वीकृत-सी हो गयी। परंतु इसमें एक कठिनाई थी। प्रोटान धन-आवेशयुक्त होते हैं; अतः उनके बीच प्रतिकर्षण बल होता है। साथ ही प्रोटान और न्यूट्रान दोनों प्रकार के कण वेगमय होते हैं। तो इनका एक अत्यंत लघु आकार के न्यैष्टि में निहित रहना किस प्रकार संभव है? वे बिखर क्यों नहीं जाते? इसके लिए यह मानना आवश्यक हो गया कि इन कणों के बीच किसी प्रकार का आकर्षण-बल विद्यमान होगा। इस बल को 'न्यैष्टिक बल' (न्यूक्लियर फोर्स) कहा गया।

यह 'न्यैष्टिक बल' क्या है और कैसे उत्पन्न होता है? इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास युकावा ने १९३५ में किया। तब वे ओसाका विश्वविद्यालय में व्याख्याता थे। उन्होंने न्यैष्टिक बलों के एक नये सिद्धांत का प्रतिपादन किया। यह 'मेसान थ्योरी आफ न्यूक्लियर फोर्सेस' कहलाता है; क्योंकि इसके साथ ही उन्होंने 'मेसान' नामक एक कण के अस्तित्व की भविष्यवाणी की थी। दो वर्ष बाद ही जब अमरीकी वैज्ञानिकों को ब्रह्मांड-किरणों में एक अन्य प्रकार के 'मेसान' मिल गये, युकावा की साख स्थापित हो गयी और उनके सिद्धांत को भी बल मिला। इस सिद्धांत के अनुसार, दो न्यैष्टिक कणों (न्यूक्लियान) के

युकावा का मेसान सिद्धांत

जनवरी १९६५ के नवनीत में प्रकाशित लेख 'विज्ञानी डा० युकावा' के साथ 'जीवन-बिंदु' शीर्षक से इन विख्यात जापानी विज्ञानवेत्ता का जो परिचय दिया गया था, उसमें भ्रमवश लिखा गया था कि उन्होंने "अणुकी नाभि में इलेक्ट्रानों का अस्तित्व सिद्ध किया, जो 'युकावा सिद्धांत नाम से प्रसिद्ध है।"

श्री राजकुमार सेठी, व्याख्याता—भौतिकी शास्त्र, कोटा, ने इस गलती की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है और डा० युकावा के मुख्य वैज्ञानिक कार्य के संबंध में यह सारपूर्ण टिप्पणी भेजी है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

राजकुमार सेठी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीच आकर्षण-बल 'मेसान' के विनिमय के कारण होता है। एक कण से 'मेसान' निकलता है, दूसरा कण उसे ग्रहण करता है।

कावा ने गणना करके ज्ञात किया कि यदि 'मेसान' का भार लगभग दो सौ विद्याणु के भार के बराबर हो, तो न्यैष्टिक बल की कार्यसीमा (रेंज) लगभग $\frac{१३}{१०}$ १३ से० मी० (अर्थात् एक सेंटिमीटर का सौ खरबवां हिस्सा आयेगी) जो न्यैष्टि के आकार के ही बराबर है। अब हम चार प्रकार के 'मेसानों' से परिचित हैं, जिनका भार दो सौ से तीन सौ विद्याणु-भार के बीच है। इनके अतिरिक्त अधिक भारवाले कई 'मेसान' पाये गये हैं। यद्यपि युकावा के सिद्धांत से न्यैष्टिक बल का पूर्ण गणनात्मक वर्णन संभव नहीं है, तथापि सहज गुणात्मक व्याख्या करने में उनके सिद्धांत की उपयोगिता सर्वस्वीकृत है।

'मेसान सिद्धांत' पर कार्य करने के पश्चात् सन १९४७ से कावा ने 'मूल कणों' (एलिमेंटरी पार्टिकल्स) का एक व्यापक सिद्धांत स्थापित करने की दिशा में कार्य प्रारंभ किया, जिस पर उन्हें १९४९ में नोबेल पुरस्कार मिला।

सत्य—असत्य

बगदाद के संत हजरत इमाम अहमद हंबल। वैराग्य विद्वत्ता और ज्ञान की प्रतिमूर्ति! वे कुरान को मनुष्य-कृत मानते और धर्मांधों एवं काजियों की आलोचना करते थे। धर्मांधों एवं काजियों की प्रतिहिंसा ने उग्र रूप धारण किया। खलीफा के कान भरे गये। उसने कुरान शरीफ का अपमान करने के अपराध में हजरत इमाम हंबल को अदालत में तलब किया।

वृद्ध संत को बंदी करके खलीफा के महल के समक्ष ला खड़ा किया गया। अन्यायी शासन के क्रूर अत्याचार की विभीषिका से उनका मन असमंजस में पड़ा था। तभी महल के द्वार पर पहरा दे रहा एक सिपाही उनके पास आया और फुसफुसाकर बोला—"हजरत, जुल्म से मत डरियेगा। सच्ची बहादुरी दिखाइयेगा। चोरी के जुर्म में मुझ पर एक बार हजार कोड़े पड़े थे। पर मैंने जुर्म कबूल नहीं किया और मुझे छोड़ दिया गया। मैंने झूठ के लिए कलेजे की यह कड़ाई दिखायी, तो आप सच के लिए क्यों दहशत खायें।"

वृद्ध संत के मन पर छाया भय का अंधकार दूर हुआ। वे विह्वल स्वर में बोले—"तू ठीक कहता है अजीजे मन! तू ने ठीक वक्त पर मुझे जगाया है।" और खलीफा के दरबार में संत ने निर्भीकतापूर्वक धर्मांधों के रोष का सामना किया। उन्हें हजार बेंत लगाये जाने का हुक्म हुआ। किंतु सत्य के लिए उन्होंने इस क्रूरता को हंसते-हंसते सहन किया। बेतों की मार से श्लथ होकर मृत्यु-मुख में जाते समय भी उन्हें उस चोर सिपाही के वचन स्मरण रहे।

—नरेश मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मौत मेरे अहाते में आती है

कोशिमोटो हिदयो

मुझे स्वयं कोई शक-सुबह नहीं था; पर १६ सितंबर १९५४ की शाम को डाक्टर ने फोन पर प्रोफेसर की पत्नी को बुलाया और चिंतित स्वर में बातचीत की। मैं उनके घर में दूसरी मंजिल पर रहता था। अमरीका में मैं स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर की हैसियत से गया हुआ था। प्रोफेसर भले आदमी थे; उन्होंने मुझे अपने यहां ठहरा लिया था।

पूरी बात तो मेरी समझ में नहीं आयी, बस यही पल्ले पड़ा कि सर्जन क्रेसमैन का कहना है कि मेरी गर्दन की बायीं ओर अंडे के आकार की गांठ निकल आयी है, गांठ किसी गंभीर रोग की सूचक है और इसे ठीक करने के लिए जो भी जरूरी हो, फौरन किया जाना चाहिये।

इस गांठ को दबाने पर जरा भी दर्द नहीं होता था। उसी साल अप्रैल में, जब मैं स्टैनफोर्ड में ही था, मेरी गर्दन पर यह गांठ निकल आयी थी। मैंने तुरंत डाक्टर को दिखाया और कई दवाएं लीं; पर महीनों बाद भी, वह गायब नहीं हुई। डाक्टरों ने कहा कि इसमें चिंता की कोई बात नहीं, आपरेशन करके गांठ को हटा दिया जायेगा।

आपरेशन कर दिया गया। मैं अस्पताल से घर आ गया। उसके कुछ ही दिन बाद टेलिफोन पर यह बातचीत हुई।

वैसे यह माना जाता है कि कैंसर रसनाली की (लिंफैटिक) ग्रंथियों में पैदा नहीं होता। ये ग्रंथियां देह में कहीं अन्यत्र उत्पन्न कैंसर से रोग के कोषाणु खींच लेती हैं, फिर इनमें सूजन बढ़ने लगती है। मेरी ये ग्रंथियां करीब छः मास से सूजी हुई थीं, अतः डाक्टरों ने निष्कर्ष निकाला कि मूल कैंसर मेरे शरीर में किसी और जगह है और वह काफी आगे बढ़ चुका है।

जापान की भांति अमरीका में भी डाक्टर अपने मरीज को कैंसर होने की बात बताना ठीक नहीं समझते। प्रोफेसर और मेरे अन्य हितैषियों के बीच काफी वाद-विवाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के बाद तय हुआ कि डा० क्रेसमैन मुझे यह बात बता दें, ताकि मेरा ठीक ढंग से उपचार हो सके।

मैं अस्पताल गया था, आपरेशन के टांके खुलवाने। टांके तो बिना तकलीफ के खुल गये; पर बजाय मुझे घर जाने की छुट्टी देने के, डा० क्रेसमैन ने मुझे रोक लिया और तरह-तरह के सवाल मुझसे पूछने लगे।

"तो क्या आपको कैंसर की संभावना दिखती है ?"

और डाक्टर ने सचाई प्रकट कर दी। उसकी बातों से मुझे यह भी पता चल गया कि मैं सिर्फ छः महीने और जी सकूंगा।

मुझ पर जैसे वज्र टूट पड़ा। मेरी हालत बड़ी विचित्र हो गयी। उस दिन मुझे बहुत ही व्यस्त रखा गया। रात को जब मैं अपने कमरे में आया, तब कहीं मुझे एकांत मिला। यह शाम मैंने 'शत्रु' से लोहा लेते हुए गुजारी।

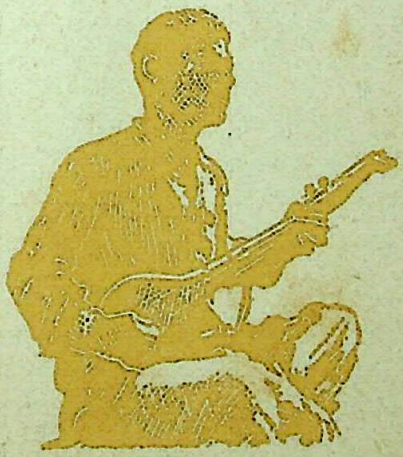

जीवन-संगीत

खिड़की के बाहर का चिर - परिचित अंधेरा आज मुझे बड़ा रहस्य-मय लग रहा था, मानो मुझे जकड़ने आ रहा हो। मन बुरी तरह चीखने को तड़पने लगा। मैंने जैसे-तैसे अपने को संभाला।

फिर भी समस्या यह थी कि नींद कैसे आये ? सारी रात अगर इसी तरह अंधेरे को ताकते गुजर जाये और सवेरा हो जाये, अगली रातें भी इसी तरह गुजरें ....तो ? तब तो मैं कुछ ही रातों में कंकाल हो जाऊंगा। शारीरिक मृत्यु भले ही छः माह दूर हो, मानसिक मृत्यु बहुत पहले ही हो लेगी।

चाहे जो हो, मुझे नींद आनी ही चाहिये। पहले मैं स्नानघर गया। जी-भर कर नहाया, इससे दिमागी तनाव काफी कम हो गया। इसके बाद पलथी मारकर बैठ गया और प्रार्थना करने लगा। बचपन से ही मुझे जैन-बौद्ध मंदिर जाने की आदत थी। मैं वहां काफी देर ध्यान लगाया करता था। आज भी मैं तीस मिनिट ध्यान में डूबा रहा—निर्वाक्-निस्पंद। इसके बाद पलंग पर लेटा। अब दिमाग काफी हल्का हो चुका था। दिन की सारी बातें मन से निकाल दीं और मुझे नींद आने लगी।

आंख खुली, तो कमरे में प्रकाश फैला हुआ था। यानी सुबह हो गयी।.....यानी मैं सो सका। मुझमें एक विजय - भावना जागी, एक आत्मविश्वास उगा—अब मैं शत्रु से जूझते हुए अपने को संभाले रख सकूंगा।

फिर तो मुझे और कैंसर को साथ रहते सात वर्ष गुजर गये। इन सात वर्षों में मौत मेरे जीवन पर सदा छायी रही। परिणाम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरूप मृत्यु के संबंध में मेरे अपने विचार बने हैं, जो धीरे-धीरे इस दौरान विकसित हुए हैं–किसी दूसरे व्यक्ति की मृत्यु के संबंध में नहीं, स्वयं अपनी मृत्यु के संबंध में, जो इस क्षण भी सामने खड़ी मुझे घूर रही है।

अंततः सभी को एक दिन इसका सामना करना है। सवाल यह है कि हमें कैसी मनोभावना से उसका सामना करना चाहिये ?

मृत्यु जितनी अनिवार्य है, उतनी भयावह भी है। गनीमत है कि एक दिन मृत्यु आयेगी ही, इस जानकारी के बावजूद हम दिन-रात इससे भयभीत नहीं रहते। बल्कि अधिकांश लोग तो इसे इस तरह भुलाये रहते हैं कि कभी इसके बारे में सोचते तक नहीं। एक तरह से यह अच्छा भी है और दैनिक जीवन में होना भी यही चाहिये। व्यक्ति यदि स्वस्थ है, तो उसके सामने मृत्यु का प्रश्न ही नहीं होता।

फिर भी मृत्यु हमारे लिए समस्या क्यों ? इसलिए कि यह हमारी जीने की इच्छा को चुनौती देती है। जीने की इच्छा ऐसी ही है, जैसे भोजन की भूख। पेट भरा हो तो स्वादिष्ट-से-स्वादिष्ट पकवान से भी विमुख रहते हैं। पर ज्यों ही पेट खाली हुआ, हमें भूख लगी कि हमारा खयाल खाने की तरफ दौड़ने लगता है। जीने की इच्छा का भी यही हाल है। जब तक हम स्वस्थ हैं, हमारे जीवन पर संकट नहीं है, मृत्यु की समस्या हमें चिंतित नहीं करती। अधिकांश लोगों को तो यह भी स्मरण नहीं होता कि उनमें जीने की इच्छा-जैसी भी कोई चीज मौजूद है।

पर यह इच्छा तब उभरकर सामने आ जाती है, जब जीवन पर किसी तरह का संकट घिर आये। जैसे ही किसी मनुष्य को यह कहा जाता है कि वह केवल छः माह और जियेगा, उसमें जीने की प्रवृत्ति अदम्य रूप से सिर उठाती है। फांसी के किसी कैदी से पूछिये, उसकी क्या हालत रहती है ?

मैंने भी गत सात वर्ष से सिर पर मंडराती हुई मृत्यु का सतत सामना किया है। साथ ही मैं इस समस्या पर बहुत कुछ सोचता भी रहा हूं। कैंसर जानलेवा रोग के रूप में बदनाम है। सौभाग्य से मेरा आपरेशन सफल हुआ और मैं जिंदा बचा रहा, तथापि कैंसर भी बना रहा। गत वर्षों में मेरे छोटे-बड़े २० आपरेशन हो चुके हैं, धीरे-धीरे मैं भी उनका आदी हो चला हूं। इस तरह मृत्यु मेरे लिए खयाली चीज नहीं रही, बल्कि मेरे ताजा तजुर्बों की दुनिया बन चुकी है।

संसार के सभी प्रमुख धर्मों का निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन करना मेरा प्रिय काम रहा है। सभी बड़े धर्म मृत्यु के बाद किसी-न-किसी लोक की बात कहते हैं–चाहे वह स्वर्ग हो या नरक ! मेरा उसमें विश्वास नहीं है। मृत्यु के कगार पर खड़ा हूं, तो भी मुझे स्वर्ग-नरक अविश्वनीय लगते हैं। बहुत चाहकर भी मैं अपने भीतर इनके प्रति आस्था उत्पन्न नहीं कर पाया। प्रमाण के अभाव में आज भी मेरा संदेह ज्यों-का-त्यों बना हुआ है।

मृत्यु के अनंतर भी अस्तित्व रहता है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या आत्मा शरीर से अलग है, इसमें विश्वास न करें, तो मृत्यु का अर्थ हुआ—सर्वथा विनष्ट हो जाना, जीव का सर्वथा लोप। जब यह ख्याल होता कि मृत्यु के बाद मैं सर्वथा विनष्ट हो जाऊंगा, तो मेरे सारे शरीर में भयानक हड़कंप मचने लगता।

सोचते-सोचते मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि पूर्णतया शून्य हो जाने अथवा सर्वथा समाप्त हो जाने का विचार इतना भयावह है कि वह मनुष्य की समझ या पकड़ के बाहर है।

मैंने भी सोचा कि जो बात समझ से बाहर है, उससे अपने को मुक्त ही रखें। पर उससे तो मेरी हालत और भी पतली हो गयी। पुनर्जन्म होता है या नहीं, अब यही शंकाएं मुझे घेरे रहने लगीं। शंका हुई कि जीने की इच्छा ने मनुष्य को यह मानने को बाध्य कर दिया है कि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है। लगा, यह बड़ी ही बेहूदा बात है।

प्रमाण-सिद्ध न होने पर किसी विचार को स्वीकार न करने का स्वभाव होने के कारण मैंने तय किया कि चाहे जो हो, मैं इसी विश्वास के साथ चलूंगा कि मृत्यु के बाद अस्तित्व नहीं रह जाता। जितने भी दिन मुझे जीने को मिलेंगे, मैं बिना स्वर्ग या जन्नत की आस लगाये जीऊंगा। अब मन जमकर काम करने लगा। सौभाग्य से सिवा कैंसर रोग के अन्य सब दृष्टियों से मेरा स्वास्थ्य खासा अच्छा था। जब आपरेशन का मामला न हो, मैं विदेश भी घूम आता था। इस तरह अपने जानलेवा शत्रु का सामना करने का, अपने ढंग का रास्ता मुझे मिल गया; मानो, शारीरिक रोग ने आध्यात्मिक चादर पर कलफ लगा दी हो।

अब जब कभी अवकाश मिलता, तो मैं दूने जोश के साथ मृत्यु के अर्थ के बारे में सोचता। एक दिन नारुसे जिंजो के लेखन को पढ़ते हुए अचानक मुझे इस विषय पर नया प्रकाश मिला।

नारुसे को यकृत का कैंसर हो गया था। मृत्यु जब उनके सन्निकट आ गयी, तो वे खुद चलकर कालेज गये, लेक्चर हाल में अपने साथी प्रोफेसरों और विद्यार्थियों को बुलाया और उनके सामने विदाई-भाषण दिया। उन्होंने लिखा है, मृत्यु को मैं 'विदा की वेला' समझता हूं।

जीवन में कभी आपको वह प्रदेश छोड़ना पड़ता है, जहां आप अरसे से रहते आये हैं। आप पुराने मित्रों, परिचितों, परिजनों सबसे नमस्कार करके विदा लेते हैं। कभी-कभी तो आपको मालूम रहता है कि जो स्थान आप छोड़कर जा रहे हैं, वहां पुनः कभी नहीं आयेंगे। बेशक, वह समय दुःखद होता है, विदाई के क्षणों में आंखें भीग जाती हैं; किंतु सब लोगों से मिल-जुलकर, अच्छी तरह विदा लेने पर मन को राहत भी महसूस होती है। यह 'साधारण विदा' है और हम इसे सहने में समर्थ हैं।

मृत्यु भी इससे बहुत कुछ मिलती-जुलती विदा ही है—एक ऐसी विदा जो बहुत बड़े पैमाने पर होती है। मरनेवाले को सबसे और सब चीजों से विदा लेनी चाहिये, नमस्कार करके रवाना होना चाहिये। इससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई इन्कार नहीं कर सकता कि यह बड़ा ही करुण क्षण होता है, फिर भी यह अवसर 'साधारण विदा' से पूर्णतया भिन्न नहीं है," जिसे हम अक्सर सहते रहते हैं।

यदि मनुष्य इस ढंग से सोचे, तो क्या मृत्यु सह्य नहीं बन सकती ? साधारण विदा के लिए आदमी कई तरह की तैयारियां करता है, अपने मन को जीने के लिए तैयार करता है। इस प्रकार अपने आपको तैयार कर लेने के कारण वह दुःख सहने की बहुत कुछ शक्ति उसमें आ जाती है। यह कैसी विडंबना है कि विदाओं की विदा—महा-विदा—के लिए हम कोई तैयारी नहीं करते। कारण यही है कि हम यह सोचना ही पसंद नहीं करते कि हमारी कभी मृत्यु होगी। जब छोटी विदा में भी तैयारियों की जरूरत होती है, तो क्या महाविदा के लिए पहले से कुछ करना जरूरी नहीं ? क्या बिना तैयारी के हम मृत्यु का सामना करेंगे ? क्या यह अच्छा न होगा कि हम अभी से योजना बना लें कि हमें क्या-क्या करना जरूरी है ?

ऐसा करने के लिए हमें अपने आपसे कह देना चाहिये कि जो भी काम हम हर रोज करते हैं—चाहे सिनेमा देखने जा रहे हों, शतरंज खेल रहे हों, कुछ पढ़-लिख रहे हों—शायद यह आखिरी बार कर रहे हैं। तब मृत्यु अचानक भी आ धमके, तो उस क्षण बिना बहुत अफसोस के हम जीवन से नाता तोड़ सकेंगे। इस विचार का अनुसरण करने से मुझे तो बड़ी ही मानसिक शांति मिली है। मृत्यु से अब मुझे पहले-जैसा भय बिलकुल नहीं रहा, वह अब मुझे बहुत हद तक आसान लगने लगी है।

अब तक मृत्यु मेरे लेखे और कुछ नहीं, बस रिक्तता थी; और इस कारण मुझे भ्रम रहता था कि मेरी चेतना समाप्त हो जाने का अर्थ होगा, दुनिया का भी समाप्त हो जाना। पर यदि मृत्यु जगत से विदा लेना है, तो जगत कायम रहेगा। विदा के बाद जीव, ब्रह्मांड का अंश बनकर, अनंत विश्राम करेगा।

देर-सवेर विदा की वेला तो आयेगी ही। लेकिन यदि हम इस तरह से विदा लेना चाहते हैं कि जो समय हमें मिला है, उसे गंवाने का अफसोस न हो, तो यह जरूरी नहीं कि हम दिन-रात काम में डूबे रहें, जीवन को अधिकाधिक मधुर बनाकर उसका स्वाद ले-लेकर जियें—सच्चा जीवन यही है।

विदा का क्षण कभी भी आ सकता है, इस ख़याल से मुझे प्रेरणा मिलती है कि मुझे जो भी दिन जीने का मिल रहा है, उसे गले लगा लूं। धन्य है यह मेरा स्थायी कैंसर, जिसने मुझे जीने का सही ढंग सिखा दिया।

एक बार अल्बर्ट आइन्स्टाइन एक बढ़िया ऊंचे होटल में भोजनार्थ पहुंचे, मेज पर 'मैनू' पड़ा था; लेकिन वे चश्मा घर भूल आये थे। अब 'मैनू' कैसे पढ़े ? जब बैरा पानी का गिलास लाया, तो उन्होंने उस बैरे से कहा—"भाई, इसे पढ़कर सुनादो !"

बैरा बोला—" भाई अम भी तुमारी माफक पढ़ेला नहीं है।" —अनुराग शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीशाजी

एम० ० मलिक

शाम के साये गहरे हो रहे थे और मेरे आस-पास अंधेरा दबे पांव आगे बढ़ता आ रहा था। मेरी नजरें सामने रखे हुए एक कागज पर जमी हुई थीं, जिस पर एक लड़की के हाथ की लकीरों के चित्र उभरे हुए थे।

इन लकीरों का अध्ययन करते वक्त मेरे दिमाग में शाह साहब की बतायी दास्तान घूम रही थी। इस इंतहाई, अजीब और पुर-इसरार दास्तान को सुनने के बाद सबसे पहला खयाल जो मेरे दिल में आया, वह यह था कि लड़की यकीनन पागल है। 'लफ्ज' (पागल) अभी दिमाग की तख्ती पर उभरा ही था कि सहसा मुझे अपनी पुश्त पर एक शोख निसवानी (औरतों-जैसे) कहकहे की आवाज सुनाई दी और इससे पेश्तर कि मेरे मुंह से कुछ निकलता, उस निसवानी आवाज ने व्यंग्य के अंदाज में कहा—"नजूमी साहब। लड़की पागल नहीं, आपका क्यास (अनुमान) कतअन गलत है।"

ये चंद अल्फाज मामूली नहीं थे, एक वजनी हथौड़ा था, जो मेरे दिमाग पर एकबारगी पूरी कूव्वत से बरस गया। मैंने बदहवास होकर पीछे देखा, तो चकित रह गया। मेरे सामने एक हसीन व जमील नौजवान लड़की सिर से पैर तक सफेद लिबास पहने निहायत वकार व तमकनत (शील व सम्मान) से खड़ी मुस्करा रही थी। उसकी आंखों पर निहायत कीमती स्याह चश्मा चढ़ा हुआ था और उस स्याह चश्मे ने लड़की के व्यक्तित्व और चेहरे का वकार और शान बढ़ाने में बड़ी मदद की थी। मेरा दिमाग उस लड़की को इस पुरइसरार (आकर्षक) अंदाज में वहां खड़े देखकर बिगड़ गया। कुछ समझ में न आता था कि यह लड़की कौन है और एकदम कहां से आ गयी, फिर उसे मेरे दिल की बात कैसे मालूम हुई?

अभी मैं इस उलझन में था कि शाह साहब जो ऊपर मेरे कमरे में किसी काम से गये थे, बाहर निकल आये और लड़की को देखते ही ठिठककर रह गये। लड़की ने शाह साहब से मुखातिब होकर निहायत बेतकल्लुफी से कहा—"असलाम अलैकुम शाह साहब, कहिये मिजाज कैसे हैं? हमें मालूम हुआ था कि आप तशरीफ लाये हैं, इसलिए आपसे मुलाकात को जी चाहा—खैरियत तो है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं हैरान होकर कभी नौजवान लड़की की तरफ देखता और कभी शाह साहब की तरफ। शाह साहब के चेहरे पर एक रंग आता था, एक रंग जाता था, उन्होंने कुछ कहने की कोशिश की; लेकिन शब्द हलक में अटककर रह गये। फिर वे संभलकर कुछ कदम आगे बढ़े और मेरे पास पहुंच गये और धीरे से पंजाबी जबान में बोले– "बाबाजी आ गये हैं.....।"

एक लमहे के लिए खौफ की एक हल्की-सी लहर मेरे बदन में दौड़ गयी और मैं समझ गया कि ये 'बाबाजी कौन हैं, जो आ गये हैं। क्योंकि थोड़ी देर पहले शाह साहब ने मुझे जो दास्तान सुनायी थी, वह उन्हीं पुरइसरार नादीद (अनदेखे) बाबाजी के बारे में थी, जो शाह साहब की साहब-जादी के जिस्म में प्रवेश कर गये थे।

शाह साहब से मेरा परिचय उनके एक मुरीद की मारफत हुआ। यह मुरीद मेरे मकान के निचले हिस्से में मुकीम था। शाह साहब की शख्सियत भी अजीबोगरीब थी, पचास-पचपन का सिन, चेहरा सुर्ख व सफेद; और उस पर जहद व अतका (पवित्रता) के आसार नुमायां, भरी-भरी सफेद बुर्राकदार दाढ़ी, गुफ्तगू निहायत सुलझी हुई।

अपनी परेशानियों की वजाहत (स्पष्टता) करते हुए शाह साहब ने बताया था कि वे किसी काबिल डाक्टर की तलाश में हैं, जिससे वे अपनी जवान बेटी के बारे में मशविरा कर सकें, जो किसी भयंकर बीमारी का शिकार है। शाह साहब ने बताया कि लड़की की उम्र बीस-बाईस के लगभग है, वह बिल्कुल अनपढ़ है, उसकी जबान में हकलापन है; लेकिन इधर कुछ दिन पहले उस पर अचानक दौरा पड़ा और कुछ अर्से तक बेहोश रहने के बाद, जब वह होश में आयी, तो उससे बीसियों करिश्मों का इजहार होने लगा। अपढ़ होने के बावजूद उस पुरइसरार हालत में उसकी गुफ्तगू की कसाहत (उत्तम भाषण करने की शक्ति) व बलागत (अवसर के मुताबिक बातें करना) देखकर बड़े-बड़े अहलेजबान दंग रह जाते हैं।

चंद रोज इसी हालत में रहने के बाद वह अपनी पहली हालत में लौट आयी। लेकिन उसे कुछ पता न था कि वह गुजिश्ता दिनों में कितनी बदल चुकी थी। तब से लड़की पर कभी-कभी दौरे पड़ने लगे।

प्रिंट्स लेने के दौरान मेरी जो गुफ्तगू उस लड़की से हुई, उससे शाह साहब के बयान की तसदीक (सही) होती थी कि लड़की निहायत मामूली सूझबूझ की मालिक है और हकलाकर बोलती है। जब लड़की नीचे चली गयी और शाह साहब भी किसी काम से कमरे में चले गये, तो मैंने उन लकीरों का मतालिया (अध्ययन) शुरू किया और अभी चंद मिनिट ही गुजरे थे कि लड़की नये लिबास के साथ 'बाबाजी' के रूप में सामने आ धमकी। फिर वे बाबाजी निहायत संजीदा लहजे में बोले– "कहिये नजूमी साहब, लड़की के हाथ की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लकीरें देखीं।"

"जी हां।" मैंने जवाब दिया—"अभी-अभी एक मुहतरमा बुर्का ओढ़े मेरे पास आयी थीं और मुझे अपने हाथों के प्रिंट दे गयी हैं, क्या वह खातून (भद्र महिला) आप ही हैं।"

बाबाजी के ओठों पर एक मुस्कराहट फैल गयी और उन्होंने फर्माया—"इससे पहले कि मैं आपसे ज्यादा गुफ्तगू करूं, यह बात स्पष्ट कर देना बेहतर है कि आप किसी जिन्सेलतीफ (सूक्ष्म वस्तु) से मुखातिब नहीं हैं, बिला शुबह जो कुछ आपकी जाहिरी आंखें देख रही हैं, वह एक लड़की ही है; लेकिन यह महज नजर का धोखा है। आप उस शैलतीफ (सूक्ष्म वस्तु) को अपनी इस बशरी-आंखों (मनुष्य की आंखों) से नहीं देख पायेंगे, जो इस लड़की के जिस्म में मौजूद है, मेरा नाम 'जर्रार हैदर' है, और मैं कौम जिन्नात में से हूं और इस लड़की के जिस्म पर काबिज हूं, क्या आपको इस बारे में कुछ शक है?"

बाबाजी ने ये जुम्ले जिस ड्रामाई अंदाज में कहे, उससे मेरा दिल लरज गया। मैंने देखा कि शाह साहब के हाथ भी कांप रहे थे, हमारे करीब ही खड़ा हुआ मुलाजिम जो बाबाजी की बातें सुन रहा था, जिन्नात का लफ्ज सुनते ही ऐसा घबराया कि उल्टे पांव भाग गया।

इधर मेरी कैफियत यह थी कि दिल जोर से धड़क रहा था और पसीने के कतरे मेरी पेशानी पर नमूदार हो चुके थे। जिस्म का एक-एक रोंगटा खड़ा था, मैंने मुंह-ही-मुंह कुरानी आयात का पाठ शुरू कर दिया। बाबाजी कुछक्षण तक मेरी तरफ देखते रहे, शायद वे मेरी हालत का अंदाजा कर रहे थे, एकाएक उन्होंने फरमाया—"आप कुछ तिलावत (कुरान का पाठ) कर रहे हैं।"

यह सुनकर मैं दंग रह गया और मुझे यकीन हो गया कि वाकयी इस लड़की के जिस्म पर कोई फौक (श्रेष्ठ) अलफितरत (स्वभाववाली) कूव्वत (शक्ति) काबिज है, वर्ना दिल की बात इस तरह बूझ लेना इंसान का काम न था। मैंने स्वीकार किया "जी हां, तिलावत कर रहा हूं।"

यह सुनकर बाबाजी हंसे और कहा—"नमूजी साहब, आपको शायद इल्म नहीं कि मैं उन जिन्नत में से नहीं हूं जो शरीर (दुष्ट) होते हैं, मैं अच्छी रूह हूं, मुसलमान हूं, बस आप मुझसे डरें नहीं।"

कुछ क्षण तक हम खामोश रहे, फिर बाबाजी ने कहा—"यह तो बताइये कि इस बारे में आपका फनेदस्त शनासी (हस्त-रेखा-विज्ञान) क्या कहता है?"

"मैं अभी लड़की के हाथ की लकीरों का मुतालिया कर रहा हूं, तफसीली मुतालिये के बाद कुछ अर्ज कर सकूंगा।" मैंने जवाब दिया।

"क्या आपको इससे पहले भी किसी ऐसी ही लड़की के हाथ की लकीरें देखने का इत्तिफाक हुआ है?"

"जी नहीं, मेरे लिए यह एक अनोखा तजुरबा है।" मैंने जवाब दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके बाद बाबाजी ने निहायत सरलता के साथ जिन्नात की तखलीक (निर्माण) व पैदाइश और उनकी असलियत व माहियत (गुण) के बारे में बताया।

गुफ्तगू का यह सिलसिला अभी जारी था कि शूमई किस्मत (अभाग्य) से मुझसे एक गलती हो गयी। बात यों हुई कि जब मैं बाबाजी से महवे तकल्लुम (बातचीत में लीन) था, तो हकीकत ख्वाह कुछ भी थी, मेरे सामने बहरहाल एक हसीन निसवानी चेहरा था। सो कभी-कभी मेरी निगाहें बहककर उसके हुस्न व शबाव का जायजा लेने लगती थीं। तभी एकाएक बाबाजी ने मुझे ताकीद करते हुए कहा—"निगाहों को पहले साफ कीजिये और फिर उनकी तरफ देखिये। अच्छा हम जाते हैं।"

बाबाजी के इस ऐलान के साथ ही लड़की चारों खाने चित्त फर्श पर गिर पड़ी और लोट-पोट हो गयी और शाह साहब घबराकर पानी का गिलास लेने दौड़े। कुछ देर बाद लड़की होश में आयी और शाह साहब उसे सहारा देकर मकान की निचली मंजिल में ले गये, जहां उसके सोने का इंतजाम किया गया था।

यह पुरइसरार तमाशा जब खत्म हुआ, तो रात भीग चुकी थी। गालिबन एक बजे का अमल था। मेरी हालत यह थी कि भूख-प्यास सब उड़ गयी थी। मेरा मुलाजिम डरकर ऐसा भागा कि चूल्हे पर हंडिया पकती हुई छोड़ गया और सालन सब जलकर स्याह हो गया। मैं जब अपने बिस्तर पर लेटा, तो नींद का कोसों पता न था—बार-बार उस लड़की की तस्वीर मेरे सामने आ जाती और फिर कानों में जर्रार हैदर जिन्न की बातें गंजने लगतीं।

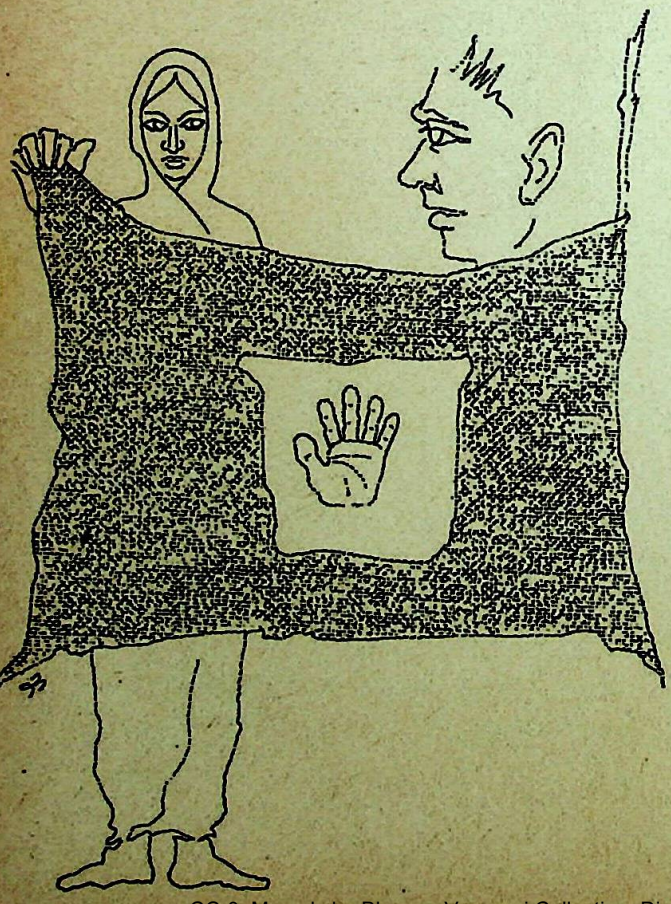

इन्हीं खयालात के भवर न गोते खाते-खाते मैं न जाने कब नींद की आगोश में पहुंच गया। अभी मुझे सोये-सोये बमुश्किल दस-पंद्रह मिनिट ही हुए होंगे कि मुझे यों मह-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महसूस हुआ, जैसे जलजला (भूकंप) आ गया है। हर शै कांप रही है। मैंने अपने आपको जमीन पर पड़े पाया और चारपाई मेरे ऊपर सवार थी। यह हादसा (दुर्घटना) इतनी तेजी से और अचानक पेश आया कि मेरे दिमाग को जैसे लकवा मार गया। चारों तरफ भयानक सन्नाटा तारी था, लैंप मैं पहले ही बुझाकर सोया था, हर तरफ घुप अंधेरा-ही-अंधेरा था। मैंने पूरी कूव्वत से चारपाई को परे फेंका और बेतहाशा दौड़ता हुआ घर से बाहर निकल आया और सीधा अपने एक दोस्त के घर पहुंचा।

उनसे मैंने जब इस घटना का ब्यौरेवार जिक्र किया, तो वे चुपचाप सुनते रहे और टकटकी बांधे मेरी तरफ देखते रहे। बाद में उन्होंने मेरे कंधे पकड़कर झिंझोड़ा और कहने लगे—"मेरे खयाल में तुमने कोई डरावना ख्वाब देखा है, यह उसका असर है, बहरहाल अब यहीं आराम करो, सुबह तुम्हारा किस्सा इत्मीनान से सुनेंगे।"

ज्यों-त्यों करके रात का पिछला पहर खत्म हुआ और सुबह के वक्त आंखें थोड़ी देर के लिए झपकी ही थीं कि मेरे दोस्त ने आकर बेदार कर दिया। नाश्ते के बाद उन्हें दोबारा सारी दास्तान सुनायी। फिर वे मेरे घर तक गये। दस्तक दी, तो शाह साहब ही दरवाजा खोलने आये। मुझे इतने सवेरे गली में पाकर हैरत से पूछने लगे—"आप कहां से आ रहे हैं?"

मैंने चारपाई उलटने की घटना बतायी। वे खामोशी से सुनते रहे, फिर कहने लगे—"ऐसा मेरे साथ भी कई मर्तबा हो चुका है, शायद बाबाजी आपसे नाराज हो गये हैं।"

मैंने शाह साहब से कहा—"आगे जब भी बाबाजी तशरीफ लायें, तो फौरन मुझे बता दीजिये; क्योंकि मेरे दोस्त उनसे मिलने के ख्वाहिशमंद हैं।" शाह साहब ने वादा कर लिया, मैं नहा-धोकर कपड़े पहनकर दफ्तर चला गया; लेकिन वहां भी काम में जी न लगा; बार-बार बाबाजी का खयाल मुझे परेशान करता रहा।

शाम को जब घर पहुंचा, तो देखा कि घर अच्छी-खासी जियारतगाह (दर्शन-गृह) बना हुआ है और मर्द-औरतों का हुजूम बाबाजी को देखने के लिए मकान को घेरे हुए है! शाह साहब ने बताया कि उन्होंने बाबाजी से मेरी ख्वाहिश का जिक्र किया था; लेकिन उन्होंने यह जवाब दिया—"नजूमी का ईमान कमजोर है और वे अपने दोस्तों से मेरी गैबत मुरतकब (अपराधी) हो रहे हैं।"

यह बात सुनकर मैं फिर दांतों में उंगली दाबकर रह गया। बाबाजी की बात एकदम ठीक थी। हकीकत यह है कि रात की आश्चर्यजनक घटना के बावजूद दिन-भर मुझ पर तश्कक (संदेह) और गुमान (गर्व) के दौरे पड़ते रहे थे और इस खदशे (आशंका) का इजहार मैंने अपने दोस्त से भी किया था। मेरे दोस्त अहबाब भी यही कहते थे कि बाबाजी के पसपर्दा (पीछे) कोई राज है; मगर वह राज क्या था? इसकी निशानदही या कोई तसल्लीबख्श वजह मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने में वे बिलकुल असमर्थ थे।

एक रोज मेरे वही दोस्त, जिनके यहां मैंने रात को घर से भागकर पनाह ली थी, तशरीफ लाये और हम दोनों बाबाजी के मसले पर सरजोड़े गौर कर रहे थे। इधर-उधर की बातों के बाद उन्होंने मुझ से पूछा- "क्या तुमने लड़की के हाथ की लकीरों से कुछ परिणाम निकाले हैं?"

उनका यह सवाल सुनकर मैं एकदम चौंक पड़ा और दिमाग के आगे से गोया एक पर्दा-सा उठ गया और मुझे कुछ-कुछ रोशनी दिखाई दी। असलियत यह थी कि म इस हादसे में पड़कर ऐसा बदहवास हुआ कि पामेस्ट्री-वामेस्ट्री सब भूल चुका था, एक-आध मर्तबा खयाल भी आया कि उन लकीरों को देखूं तो; मगर फिर यह सोचा कि जिन्न की मौजूदगी में मेरे इन फनेदस्त शनासी की क्या हकीकत है; और वैसे भी मुझ पर उसका काफी दबदबा बैठ चुका था।

आखिर उनके इसरार पर मैं उठा और मेज की दराज से शाह साहब की लड़की के हाथों के प्रिंट्स निकाल लाया और बड़े गौर से उन्हें देखने लगा :

"लड़की के वाल्दैन वफात पा चुके हैं, वह शादीशुदा है, उसके बतन (गर्भ) से औलाद हुई है, उसे तलाक हुई, वह बेरून (विदेशी) मुल्क जा चुकी है, गैरमामूली जिहानत व फतानत (बुद्धिमत्ता) की मालिक है और बाकायदे तालीमयाफ्ता है, उसे पुरइसरार अलूम (ज्ञान) हासिल करने का शौक है, उसे कुछ खतरे दरपेश हैं—किसी कत्ल व तल (टीले) का मामला भी है, कोई कानूनी उलझन.....गिरफ्तारी वगैरह।"

मैंने लकीरों की ये बातें अब अपने दोस्त को बतायी, तो वे हैरत से उछल पड़े।

बाद में तय हुआ कि लड़की से अलहदगी में बात की जाये। चुनांचे मैं मौके की तलाश में लगा रहा। आखिर एक रोज खुशकिस्मती से यह मौका मिल ही गया। शाह साहब एक जरूरी काम से अपने गांव जा रहे थे। लड़की को वे अपने मुरीद के घर यानी मेरे मकान में रहनेवाले किरायेदार के यहां छोड़कर गये। मैंने जुरअत की, लड़की के हाथ की लकीरोंवाला कागज उठाया और उसके कमरे में दाखिल हो गया। वह एक पलंग पर बैठी कुछ सोच रही थी, मेरे कदमों की आहट पाकर चौंकी और मेरी तरफ हैरत से देखने लगी। मैंने उसकी नजरों में उभरते हुए खौफ की वजह अलामात (स्तष्ट चिह्न) देख ली—"माफ कीजिये, मैं आपका हाथ एक बार फिर देखना चाहता हूं।" और उसकी इजाजत के बगैर ही मैंने आगे बढ़कर उसके दोनों हाथ बारी-बारी देखे। उसके हाथ की एक-एक अलामत और एक-एक लकीर कागज पर उभरे हुए नुकूश और लकीरों से मिलती थी। मैंने उसके हाथ छोड़ दिये, एक कदम पीछे हटा और अपने लहजे में ड्रामाई अंदाज पैदा करते हुए कहा—"काश मैं यह हाथ उसी दिन देख लेता!"

मैंने सिर्फ इतना कहा और कमरे से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाहर आ गया और एक दूसरेमेंकमरे आराम कुर्सी पर बैठ गया। कमरे के किवाड़ मैंने बंद कर दिये थे; लेकिन चटखनी नहीं लगायी। मेरे दिल की धड़कन आहिस्ता-आहिस्ता तेज होती जा रही थी। मैं अपनी इस हरकत का उल्टा प्रभाव देखना चाहता था। मैंने चंद ही मिनिट बाद कमरे के बाहर कदमों की चाप सुनी, फिर दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक हुई। मैं संभलकर बैठ गया और जरा सख्त लहजे में कहा—"अंदर आ जाइये।"

दरवाजा खुला और लड़की दाखिल हुई, खामोश और उदास चेहरा झुका हुआ था और खूबसूरत चेहरा किसी अनजाने खौफ के कारण जर्द पड़ गया था। दबे पांव चलती हुई वह बिल्कुल मेरे करीब आकर खड़ी हो गयी और भर्रायी आवाज में बोली—"मेरे हाथ में क्या है?"

"वही जो आपको अच्छी तरह मालूम है।" मैंने लापरवाही से कहा।

"मुझे कुछ मालूम नहीं .....मैं....." उसने हकलाकर कुछ कहना चाहा। उसकी आवाज कांप रही थी, मेरे लिए बस इतना ही इशारा काफी था। अब सारा खौफ मेरे दिल से निकल चुका था, और पूरा मामला रोजे रोशन की तरह मेरे सामने जाहिर था। मैंने तरकश का आखिरी तीर चलाया और उसकी आंखों में आंखें डालकर कहा—"मुहतरमा, मुझे इस बात से कोई दिलचस्पी नहीं कि माजी (भूतकाल) में तुमने क्या किया है, मेरी निगाह तुम्हारे मुस्तकबिल (भविष्य) पर है।"

वह बगैर इजाजत सामने रखी हुई कुर्सी पर बैठ गयी और फिर एकाएक 'बाबाजी' की आवाज में बोलने लगी, उसका लहजा निहायत साफ और शस्ता (स्पष्ट) था और जबान की लकनत (हकलापन) दूर हो चुकी थी। उसने सरगोशी (कानाफूसी) के से अंदाज में कहा—"आप मुझे कुछ बताना या मुझसे कुछ पूछना चाहते हैं?" मैंने जवाब दिया कि मैं बताना भी चाहता हूं और पूछना भी—बशर्ते कि तुम दियानत (ईमानदारी) और जुरात (साहस) का सुबूत देते हुए बिला कम व कास्त (छिपाये) सब हकीकत बयान कर दो।"

उसने वादा किया, तो मैंने उसके हाथ की लकीरों से जो परिणाम निकाले थे, वे तफसील से बयान किये। वह आंखें फाड़े मेरी तरफ तकती रही। ऐसा मालूम होता था कि उसके बदन में लहू की एक बूंद भी बाकी न रही। जब मैंने उसे बताया कि वह कत्ल के जुर्म का अर्तकाब (कांड) भी कर चुकी है, तो उसका चेहरा धुले हुए कपड़े की मानिंद सफेद पड़ गया और ओठ खुश्क हो गये, उसकी बड़ी-बड़ी सुर्मगीं आंखों में आंसू छलकने लगे, उसने मेरी बयान की हुई बातों का इकरार किया और बोली—"आपका इल्म सच्चा है और आपने जो कुछ मेरे बारे में बताया, उसका एक-एक हर्फ सही है।"

उसने रो-रोकर अपनी जिंदगी के हालात तफसील से बयान किये :

वह देहली के एक मुअज्जिज (प्रति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ष्ठित) घराने में पैदा हुई, उसकी उम्र इस वक्त छब्बीस - सत्ताइस बरस है। उसके वाल्दैन (माता-पिता) बचपन ही में फौत (मृत) हो गये थे और उसकी परवरिश इन्हीं शाह साहब ने की, जो रिश्ते में उसके चचा लगते हैं और अब उसे अपनी बेटी कहते हैं। उसकी तालीम मैट्रिक तक है। सोलह-सत्रह वर्ष की उम्र में उसे एक नौजवान डाक्टर से मुहब्बत हो गयी और उसने डाक्टर साहब से शाह साहब की मर्जी के खिलाफ शादी कर ली। डाक्टर की पहली बीवी मौजूद थी, जो एक अमीर घराने से ताल्लुक रखती थी और उसके पास काफी नकद रुपया और जेवर था। डाक्टर की शह पर उस लड़की ने डाक्टर की बीवी को जहर देकर हलाक कर दिया और फिर डाक्टर के साथ दूर विदेश चली गयी, जहां वे चार-पांच बरस रहे। वतन वापस आये, तो उसके ताल्लुकात डाक्टर से भी खिंचे-खिंचे से हो गये और उसने डाक्टर से तलाक ले ली।

पेट भरने के लिए उसने दो बरस तक एक प्राइवेट इल्मी अदारे में लाइब्रेरियन की हैसियत से काम किया, जहां उसे बहुत-सी इल्मी, अदबी, मजहबी किताबें पढ़ने का मौका मिला और इस तरह इसका इल्म व फजल बढ़ता गया। हाफिजा (मस्तिष्क) खुदादाद (ईश्वरीय देन) था, जो किताब पढ़ती, उसके मतालिब (अर्थ) अजबर (समझ में आ जाना) हो जाते, उसे जिन्नों, भूतों की कहानियों और मस्मरेजम के कमालात से बड़ी दिलचस्पी थी। इत्तिफाक से इल्मी अदारे का मालिक उसको बुरी नीयत से देखने लगा, वह मुलाजिमत छोड़ देने पर मजबूर हो गयी। अब बे यारो मददगार थी। उसने चचा शाह साहब को ढूंढ़ निकाला। उन दिनों वे एक गांव में निहायत इशरत की जिंदगी बसर कर रहे थे। सोचते-सोचते उन्होंने लोगों को बेवकूफ बनाकर रुपया पैदा करने का यह ढोंग रचाया।" बाबाजी का प्लाट शाह साहब की ईजाद है और उन्होंने लड़की को उसकी खूब मश्क करायी।

दरअसल शाह साहब पहले ही से ताबीज-गंडे का मामूली कारोबार करते थे। अब उन्हें एक साथी मिल गया, जो उनकी दुकानदारी को अपने इल्म और जुरात से अवजकमाल (उच्च शिखर) पर पहुंचा सकता था। शुरू-शुरू में बाबाजी के कर-दार (पात्र) की रिहर्सल सीधे-सादे और जाहिल व देहाती आवाम के सामने हुई, जो हस्ब मामूल (नियमानुसार) बहुत जल्द मरओब (अनुरागी) हो गये और शाह साहब के कदमों पर नजरानों के ढेर लगने लगे। देहातियों से उकताकर ये लोग बड़े-बड़े शहरों में पहुंचे और हजारों पढ़े-लिखे और अनपढ़ अफराद (व्यक्तियों) को यह ड्रामा दिखाकर अपना मुरीद बनाया।

हकीकत यह है कि वह एक जहीन तरीन खातून थी। फनेदस्त शनासी के सोलह साला तजुर्बे के दौरान यह पहला मौका था कि ऐसी खूबसूरत और जहीन औरत मेरे देखन में आयी। मेरे दिल में उसकी कहानी सुन लेने के बाद भी एक तकद्दस (पवि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रता) और रौब की कैफियत (दशा) तारी (छायी) रही और ताज्जुब इस बात का था कि वह मेरे दिल की गहराइयों में कैसे उतर गयी और 'माइंड रीडिंग' का जो हैरत-अंगेज मजाहिरा (प्रदर्शन) उसने किया, उसकी वजह क्या थी ? मैंने उससे जब उसका राज पूछा, तो एक फीकी-सी मुस्कराहट उसके लबों पर आयी और उसने कहा—"मैं जब से इस पेशे में दाखिल हुई हूं, हजारहा जहीन और आला तालीमयाफ्ता अफराद को बेवकूफ बना चुकी हूं और इस मामले में मेरा तजुर्बा काफी है। एक पढ़े-लिखे आदमी का जिन्नात जदह खातून को 'पागल' समझना, खौफ की हालत में कुरानी आयात का पाठ करना, औरत के हुस्न व जमाल से बहक जाना, गुमान और शक में मुब्तिला हो जाना, यह सब कामन सेंस में आनेवाली बातें थीं, जिसका जायजा लेना मेरे लिए बड़ा सहल था।

उसकी जिहानत और इलमी प्रकृति की तारीफ करने के बाद एक मशविरा उसे मैंने यह दिया कि वह इस नापसन्दीद रविश (चाल-ढाल) को तर्क करके कोई आबरू-मंदाना तर्ज मआश (जीविका का साधन) अख्तियार करे, तो शायद उन खतरों से महफूज रहे, जिसकी गवाही उसके हाथ की लकीरें दे रही थीं। उसने कहा कि वह खुद इस धंधे से तंग आ चुकी है; लेकिन शाह साहब के बस में है। ज्यों-ही उसे मौका मिला, वह अलग हो जायेगी। मैंने उससे पूछा—"क्या आधी रात को मेरी चारपाई तुमने ही उलटी थी ?" तो वह हंसी और कहने लगी—"वह हरकत शाह साहब की थी।"

इस वाकआ को बीते एक साल से ज्यादा हो गया। अचानक एक रोज अखबार में एक खबर पर नजर पड़ी। वाकआत यों बयान किये गये थे कि फलां मुकाम पर मुकामी पुलिस ने एक शाह साहब और उनकी साहबजादी को कत्ल के इलजाम में गिरफ्तार कर लिया है। वाकआ यह था कि साहबजादी ने अपने ऊपर एक फर्जी जिन्न सवार कर रखा था, जिसके जरिये उसने एक मालदार मुरीद से बहुत बड़ी रकम और जेवरात हथिया लिये, और भेद खुलने के डर से अपने खास दो-तीन मुरीदों की मारफत उसे ठिकाने लगा दिया। मैं समझ गया कि ये वे ही शाह साहब और उनकी साहबजादी 'बाबाजी' हैं। उसके बाद उन मुजरिमों पर क्या बीती, इसका मुझे इल्म न हो सका; क्योंकि थोड़े दिन बाद ही मुझे बाहर चले जाना पड़ा।

अब भी कभी मैं सोचता हूं कि कुदरत ने उसे हुस्न व जमाल के अलावा कितनी फैय्याजी (उदारता) से जिहानत और इल्म का खजाना अता किया था; लेकिन उसे गंदा माहौल और अच्छी तरबियत न मिलने की वजह से वह गलत रास्ते पर चल निकली और कौन कह सकता है कि अब भी हमारे आस-पास ऐसी कितनी ही औरतें और शाह साहबान मौजूद हों, जो दिन-रात ऐसे ही खेल खेलने और खिलाने में मसरूफ (व्यस्त) हैं।

—रूपांतर : गुरुप्रसाद अवस्थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजय-अंधड़

धोखेबाज और बेईमान दुश्मन के क्रूर आक्रमण ने स्वदेशवासियों को ही नहीं, प्रवासी-भारतीयों को भी झकझोर डाला है। मारिशश से भेजी इस कल्पना-कृति में उसी रोष व बलिदान की एक झलक है।

अभिमन्यु अनत 'शबनम'

टिक...टिक...टिक !

मेरे कानों में यह आवाज आ रही थी। लेकिन यह आवाज घड़ी की नहीं थी। तो फिर कैसी आवाज थी ? यह मैं नहीं समझ पा रहा था।

आंखें खुलते ही मैंने सामने चकाचौंध कर देनेवाला प्रकाश देखा। अपने ऊपर किसी को झुकते हुए अनुभव किया और मुझे एक सुरीला स्वर सुनाई पड़ा। यह स्वर मेरे कानों को भेदता हुआ मस्तिष्क से जा टकराया –

...अर्जुन ! अर्जुन !! अर्जुन !!!

सामने की रोशनी इतनी तेज थी कि मुझे विवशता के साथ आंखें बंद कर लेनी पड़ीं। मेरे गालों पर एक मुलायम स्पर्श हुआ। मैंने अपने शक्तिहीन हाथों से उस कोमल हाथ को पकड़ लिया। तभी कमरे की दीवारों से जोरों का चीत्कार हुआ। मैंने सुना, वह मेरा ही चीत्कार था। सामने की तेज रोशनी ने मेरी आंखों को निस्तेज कर दिया था। कमरे में कोई था, यह मैं जानता था; पर कौन था, यह मैं नहीं देख पा रहा था। अपने मस्तिष्क पर अधिक जोर देते हुए मैंने पिछली बातों को सोचने का प्रयत्न किया; पर असफल रहा। मैं सैनिक अस्पताल की एक चारपाई पर था। इससे अधिक जानकारी मुझे नहीं थी।

क्षण बीतते गये.....घंटे.....दिन और फिर सप्ताह ! मेरे सामने का प्रकाश धुंधला हो चला। धीरे-धीरे अंधेरा छा गया। मैं पूरा जोर लगाकर चिल्लाया। मेरे शरीर में अब भी दर्द था; पर यह मेरे चिल्लाने का कारण नहीं था। कुछ और ही था..... क्या था ? बस इसी बात को समझने की कोशिश में मैं अपनी शारीरिक पीड़ा को भूल जाता। कभी लगता कि सारी वेदना एक जगह एकत्रित हो गयी है। कभी लगने लगता कि मेरी नसों में खून नहीं, अंगारे दौड़ रहे हैं।

इस तरह मुझे सारा कमरा अंगारों से जलता नजर आता, जिससे मेरा तन भस्म होने लगता। मुझे जोर की प्यास लगी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने मेज पर पानी का एक बड़ा गिलास भी था। लेकिन मुझमें हिलने-डुलने की शक्ति नहीं थी। मैं सोचने लगा– क्यों न गिलास लुढ़क जाता, ताकि सारा कमरा पानी से भर जाये और मैं उसमें डुबकी लगाता रह जाऊं। मेरी प्यास बढ़ती गयी और मैं जोर से चिल्ला पड़ा। बगल का दरवाजा एकाएक झटके से खुल गया। दो व्यक्ति दौड़कर मेरे पास आ गये थे। एक ने मेरी नाड़ी को हाथों में लेते हुए कहा –"नर्स जल्दी से इन्जेक्शन की तैयारी करो।"

नर्स बाहर चली गयी। उस व्यक्ति ने मेरे शरीर से पसीना पोंछते हुए कहा– 'लेफ्टिनेंट अर्जुन !"

मैंने आंख उठाकर उसे देखा।

"आपको अधिक सोचना नहीं चाहिये। आराम की सख्त जरूरत है आपको।"

"मैं.....मैं.....मैं कौन हूं ?

"आप हमारे देश के एक वीर साहसी सिपाही हैं।"

'सिपाही' शब्द सुनते ही मेरी आंखों के सामने वही चकाचौंध कर देनेवाली ज्योति फैल गयी। मुझे लगा कि मेरे मस्तिष्क से एक गोला निकला और कमरे में एक विस्फोट हो गया। मैं ऐसे चिल्ला उठा, जैसे मेरी चीख दूर कहीं जम्मू या कश्मीर की पहाड़ियों के बीच तक प्रतिध्वनित हो गयी हो।

इसी बीच मैंने अपनी याददाश्त को उस जगह पाया, जहां दो सप्ताह पहले मैं अपने जवानों के साथ आगे बढ़े जा रहा था। हर जवान अपने सिर पर कफन बांधे हुए था। मशीनगनें गोलियां उगलती जा रही थीं।

मैंने अचकचाकर आंखें बंद कर लीं। अपने हाथों को हृदय के पास ले जाना चाहा; पर तभी अपनी छाती पर मैंने मोटी पट्टी अनुभव की। डाक्टर ने उंगली के इशारे से मुझे शांत रहने का आदेश दिया। तब तक नर्स सुई लेकर आ गयी थी। डाक्टर ने उसके हाथ से सुई लेकर ऊपर उठायी और फिर मेरी बांह में घुसेड़ दी। धीरे-धीरे मेरा शरीर शिथिल होता गया। साथ-साथ मेरी आंखों में कमरा भी धुंधला-सा गया। कमरे की गर्मी क्रमशः घटती गयी। मेरी पलकें भारी होती गयीं और.....और मैं सो गया।

दूसरे दिन कमरे की खुली खिड़की का प्रकाश वहां की हर वस्तु को स्पष्ट कर रहा था। मेज पर फूलों का एक गमला था,

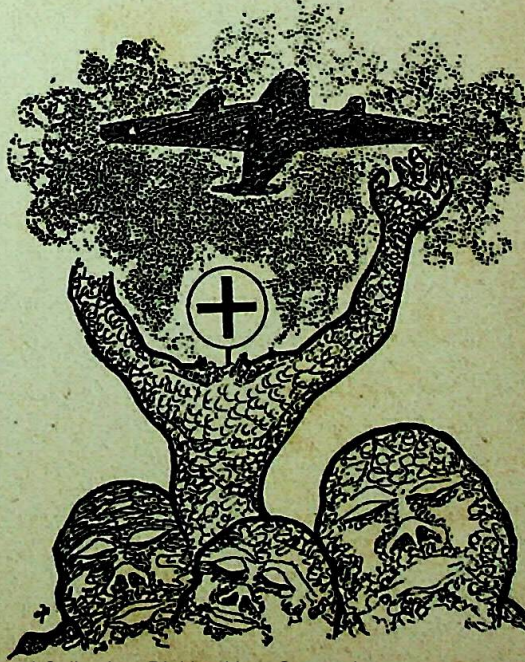

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसमें मेरे जागने के पहले ही किसी ने ताजे फूल डाल रखे थे। फूलों की भीनी-भीनी सुगंध मेरी नाक तक पहुंची। तभी नर्स भी भीतर आ गयी और सुगंध बदल गयी। उसने हंसते हुए मुझसे कहा –

"बधाई लेफ्टिनेंट।"

"कैसी बधाई ?"

"शुक्रवार की शाम आपको 'परम वीर-चक्र' प्रदान किया जायेगा।"

"परम वीर-चक्र ?"

"हां, आपकी अद्‌भुत वीरता के लिए।" और यह कहकर नर्स मुस्कराती हुई चली गयी। मेरी आंखें सामने के स्टैंड पर पड़ीं। बोतल का सारा खून मेरी नसों में उतर चुका था, फिर भी नली मेरे हाथ से हटायी नहीं गयी थी। खिड़की से आती सूर्य की किरणें बोतल पर पड़ रही थीं। उसके चमकते भाग पर नजर पड़ते ही मेरी आंखें चका-चौंध हो गयीं। मेरी याद एक चांदनी रात पर जा रुकी।

दो व्यक्ति जो.....अपने को दो नहीं समझते थे। रात के उस एकाकीपन में चांद के मंद प्रकाश से आकाश चमक रहा था। काली घटाएं कभी-कभी सामने आकर उसकी चमक को मिटा देना चाहती थीं और चांद उन काले मेघों के बीच किसी डूबती-उतराती नाव की तरह कभी अदृश्य हो जाता और कभी दृश्य।

तभी नर्स डाक्टर के साथ फिर आ गयी और मैं उस दृश्य को साक्षात न कर सका, जो एकाएक मेरे दिमाग में उभर आया था। कल-कल करती बहती नदी के सुनसान तट पर वह एक घायल पंछी की तरह अकेली रह गयी थी और मैं देश की पुकार सुनकर मोर्चे पर बढ़ आया था। मैं अकेला नहीं था। मेरी तरह हजारों जवान थे, जिन्हें धरती की कराह सुनाई पड़ती थी और वे अपनी जन्मभूमि की उस वेदना को दूर करने के लिए, बड़े संकल्प और उत्साह के साथ अग्रसर थे।

डाक्टर के कुछ कहने पर नर्स ने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और मुझे वे मासूम हाथ याद आ गये, जिन्हें मैंने अपने हाथों में लेते हुए कहा था –"मेरी राह देखना भवानी। देखोगी न ?" और यह राह देखने के लिए मैंने उसे दो उपाय बताये थे। एक थी पगडंडी और दूसरी थी पास से बहती हुई यमुना की धारा। उसने मेरी भुजा पर बाजूबंद की तरह एक डोर बांधी थी और कहा था – "यह विजय-बंधन तुम्हारी सदैव रक्षा करेगा।"

विदा लेते समय मैंने कहा था–" अगर तुम मुझे सामने की पगडंडी से आते न देख, इस डोर की लाल परछाई नदी की तरंगों में देखो, तो समझ लेना कि मैं देश के काम आ गया।"

और मैंने हड़बड़ाकर अपनी बायीं भुजा की ओर देखा। वहां विजय-बंधन न देख मैं दुखी हो उठा और मेरी आंखों से आंसू छलक पड़े।

डाक्टर ने मेरे मन की बात ताड़ते हुए फिर से मुस्कराकर कहा–"घबराइये नहीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आपकी वह डोर सुरक्षित है।"

"कहां ?"

"नर्स, अब तुम वह डोर लेफ्टिनैंट के हाथ पर बांध सकती हो। शाम तक अन्य सभी बंधन खोले जा सकते हैं।" और फिर मेरी ओर देखते हुए उसने कहा – "लेफ्टिनैंट अर्जुनसिंह, कल शाम आपके रेजिमेंट-कमांडर के साथ अपने रक्षा-मंत्री आपको देखने आ रहे हैं।"

"क्यों डाक्टर ?"

"क्योंकि आप भारत के गौरव हैं। आप सरीखे सभी जवान धन्य हैं।"

इस बीच नर्स ने मेरी बांह में वह बंधन फिर बांध दिया, जिसने तीन बार मेरे प्राण बचाये थे। जिस वक्त वह सांवली-सी नर्स उसे बांध रही थी, उस वक्त उसके चेहरे पर मुझे भवानी का चेहरा दिखाई पड़ रहा था—उसी रूपमें जब उसने मुझे विदाई दी थी।

डाक्टर चला गया। नर्स भी चली गयी। लेकिन मेरे कानों में डाक्टर के अंतिम दो वाक्य गूंजते रहे। मेरे सामने की चीजें झिल-मिलाने लगीं और मैं घटनास्थल पर पहुंच कर खो गया :

.....मुझसे कुछ ही दूर एक मशीनगन दहाड़ रही थी। तीन जवानों की लाशें मेरे पैरों के पास थीं। बगल में सुरजीत सिंह के ओंठ अब भी हिल रहे थे। मेरे पास बिल्कुल पानी नहीं था और खाड़ी से हटना एकदम दुश्वार था, इसलिए मैंने राजेंद्र को आवाज दी। संकेत से पानी मांगा। उसके पास भी पानी नहीं था। कांपते हृदय से मैंने सुरजीत की ओर देखा। उसकी गरदन अब तक टेढ़ी हो गयी थी और उसे भी औरों की तरह वीरगति प्राप्त हो चुकी थी।

जौहर

घुमड़ रहा है धुंआ अभी तो
लपट कहां उठ पायी ?
एक और दो फूंक
हृदय की चिनगारी मुस्कायी।
अंधकार के पहियों पर ही
सूरज का रथ चलता,
मंथन की पीड़ा से आकुल
वारिधि रत्न उगलता।
करो चेतना मुक्त तोड़कर
कुंठाओं की कारा,
दिखलाओ जीवन का जौहर
यम ने है ललकारा।

—कन्हैयालाल सेठिया

एक पल भी न बीता था कि दहाड़ती आवाज के साथ कुछ गोलियां मेरे सिर के ऊपर से गुजर गयीं। उससे मेरा दिल उतना नहीं दहला, जितना सुरजीत के शव से। दस वर्ष से हम सेना में साथ थे और वह मुझे सभी जवानों से प्रिय था। एक दर्द मेरी हड्डियों को तोड़ता हुआ बाहर निकल आना चाहता था। यह मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा डर और दर्द था। मैंने रायफल को मजबूती से पकड़कर उस पर अपनी सभी ताकत लगा दी। गड़गड़ाहट के साथ चीत्कार बढ़ता गया। मुझे न अपना खयाल था, न जवानों का, न ही परिस्थिति का। मैं दनादन गोलियां बरसाता रहा। दुश्मन की कतारों की तरफ मैं मौत को साक्षात् तांडव करते देख रहा था।

कुछ ही फासले पर दुश्मन की चौकी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लपटें उठ रही थीं। बुरी नीयतों की आहुति के साथ लपटें लाल से फिर काली होती गयीं। मेरे कुछ जवान आदेश पाते ही आंधी की तरह खाड़ी से निकलकर आगे की चट्टानों की आड़ में चले गये। रात-भर चलकर हम इस जगह पहुंचे थे। जवानों के उत्साह, साहस और संकल्प को देखते हुए कौन कह सकता था कि वे रात-भर सोये नहीं हैं। थकावट क्या होती है, यह हममें से कोई नहीं जानता था।

अचानक मैंने सार्जेंट हमीद को हथगोले लिये दौड़ते देखा। वह मौत की ओर दौड़ रहा था। मैंने चिल्लाते हुए उसे रुकने को कहा; लेकिन उस आंधी को रोकने की शक्ति दुश्मनों की गोलियों में भी नहीं थी। मेरे देखते-देखते उसने हथगोला चला दिया और दुश्मन की मशीनगन टुकड़े-टुकड़े होकर तितर-बितर हो गयी।

मैंने चिल्लाकर अपने जवानों को आगे बढ़कर सार्जेंट हमीद की सहायता की आज्ञा दी। एकदम दस से अधिक जवान छलांगें मारते हुए आगे बढ़ गये।

दुश्मन की गोलियां सांय-सांय करती हुई खाली चली जा रही थीं।

मेरी बांह का विजय-बंधन कुछ शिथिल पड़ गया था। मैं मुंडेर से टिककर उसे ठीक करने लगा कि दनदनाती गोलियां मेरे ऊपर से निकल गयीं। इस बंधन ने एक बार और मेरी जान बचायी।

मिनिटों की देर थी, जोरों के धमाके के साथ दुश्मन की एक विशाल मशीनगन देखते-देखते उड़ गयी।

तभी पीछे से एक जवान ने आवाज दी। मैंने मुड़कर बगल की ओर देखा। नाले के रास्ते से दुश्मन के टैंक घड़घड़ाते हुए हमारी टुकड़ी की ओर बढ़े आ रहे थे। सार्जेंट हमीद पर असाधारण वीरता सवार थी। वह पेट के सहारे लेटकर उन टैंकों की दिशा की ओर रेंगने लगा। टैंक की तोप का मुंह उसकी ओर घूम गया था; पर इससे पहले कि उससे आग निकलती, सार्जेंट हमीद ने उठते हुए दूसरा हथगोला चला दिया। दुश्मन का शेरमन टंक भभक उठा, उसी के साथ हमीद को एक गोली लगी और वह गिर पड़ा। जगह-जगह आग की लपटें उठ रही थीं। वातावरण धुंआधार हो रहा था। मैं दौड़कर सार्जेंट हमीद के पास पहुंचा और जैसे ही मैंने उसके सिर को अपने हाथों में लिया कि एक अलौकिक मुस्कान के साथ उसके मुख से निकला —"जय हिन्द!"

और देखते-देखते मेरा सार्जेंट, मेरा दाहिना हाथ, भारत मां की वेदी पर चढ़ गया।

इसी बीच दो अन्य जवान मेरी रक्षा के लिए आ गये थे। वे शत्रुओं की गोलियों का जवाब देते रहे और मैं शहीद सार्जेंट के शव को घसीटते हुए खाड़ी के पास ले आया। दो पैटन टैंक हमारी सेना की ओर बढ़ रहे थे।

मैं एक घायल जवान के हाथ से उसका बाजुका लेकर आगे लपका। वातावरण में हद से ज्यादा कोलाहल छा गया था। पहले टैंक की तोप ने स्थिति संभालने की कोशिश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की थी कि मैंने एक बड़े पत्थर के सहारे होकर बाजुके से निशाना साधा। पैटन टैंक में आग लगते देख मेरे जवानों ने सिंह-गर्जन किया। मेरी शक्ति दुगुनी हो गयी।

मैं और आगे बढ़ गया। तभी मेरी जांघ में एक गोली लगी और मैं गिर पड़ा। घिसटते हुए मैं पत्थर की आड़ में हो गया। इसी बीच बिजली की तरह आकर एक जवान ने मुझे थाम लिया। मेरा घाव मामूली था। मैं हाथ से शत्रु की ओर इशारा करते हुए आगे बढ़ा। वह सिपाही घुटनों के बल था और हाथों में रायफल थामे अपनी जगह से ही मेरा कवच बना रहा। दूसरा टैंक अपनी पूरी रफ्तार से हमारी सेना के एक टुकड़े की ओर बढ़ रहा था। मुझे लगा, जैसे कोई बाज कुछ कबूतरों पर झपट रहा हो। अपनी जांघ की पीड़ा को भूलकर मैं पूरी ताकत के साथ दौड़ पड़ा।

टैंक मेरे आगे-आगे था और मैं उसके पीछे-पीछे। एक मोड़ पर पहुंचकर मैं एक पत्थर का सहारा लेकर टैंक पर कूद पड़ा। बिजली की तेजी के साथ उसके ऊपर की भारी ढपनी को उठाकर मैंने एक ही साथ अपने हाथों के दोनों हथगोलों को उसके भीतर फेंक दिया और जल्दी से अपने शरीर को पीछे की ओर ढकेल दिया।

बस फिर एक जोरों का धमाका हुआ और ..... और जब मेरी आंखें खुलीं, तो मैं इस सैनिक अस्पताल में था।

"लेफ्टिनेंट, आपसे कोई मिलने आयी हैं।"

"मुझसे कोई मिलने आयी हैं ? वह भवानी के सिवा और कौन हो सकती है ? धड़कते दिल से मैंने दरवाजे की ओर देखा।

तभी अकस्मात कोलाहल के साथ अस्पताल की सभी बत्तियां बुझ गयीं। नर्स ने मेरी बांह में विजय-बंधन की डोर बांधते हुए शायद अच्छी तरह गांठ नहीं लगायी थी। विजय-बंधन खुलकर गिर पड़ा। डाक्टर के चिल्लाने की आवाज मेरे कानों में पड़ी –" दुश्मनों का हवाई जहाज..... अस्पताल के ऊपर.....यह अमानवीय..... बर्बर..... !"

इसके बाद जोरों का धमाका हुआ, जिसमें डाक्टर की आवाज भी खो गयी और.....

मैं कैसे पी सकता हूं ?

नेहरूजी दोपहर में भोजन के उपरांत लेटने के साथ-साथ एक-आध सिगरेट भी पी लिया करते थे। इसलिए उन्होंने एक बार अपने एक साथी से कहा– "सिगरेट मंगाओ !" उनके साथी ने उत्तर दिया–"यहां तो सिगरेट नहीं मिलेगी, अभी ज्वालापुर से मंगवाता हूं!"

"क्या इतने बड़े बाजार में कोई सिगरेट बेचनेवाला भी नहीं आया ?"

"यहां सिगरेट पीना और बेचना दोनों ही मना है, गुरुकुल में धूम्रपान निषिद्ध है।" तभी उनके अंगरक्षक ने जेब से सिगरेट निकालकर देते हुए कहा–"यह लीजिये।"

"लेकिन जब यहां दूसरों के लिए सिगरेट पीने पर पाबंदी है, तो मैं भी कैसे पी सकता हूं।" और नेहरूजी ने सिगरेट लेने से इन्कार कर दिया। –अनुराग शर्मा

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

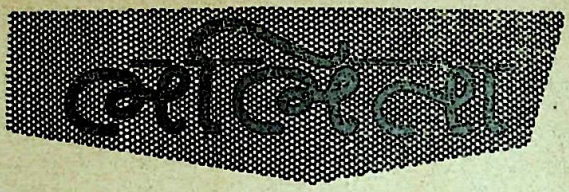

शिवानी

रवींद्रनाथ ने चैत्रपवन में झूमती किसी ललिता का वर्णन किया है। उसी ललिता का साकार जीवंत रूप एक दिन हमारे आंगन में मूर्तिमान हो उठा। ओरछा की तपती जेठ की दुपहरिया थी, हम खस की टट्टियों से घिरे, ठंडे फर्श पर बेचैन करवटें बदल रहे थे कि घर की पुरानी नौकरानी जगरानी अपनी सांवली-सी ललतिया को लेकर आ गयी—"लो बिन्नू, जा वदजात फिर भग आयी सासरे से", वह बोली और ललिता हमसे चिपट गयी। मैले कपड़ों से दुर्गंध की लपट-सी उठी, चीकट रूखे बालों से रीठे और कड़वे तेल की महक से सिर भन्ना गया। "ए जिज्जी" वह बोली—"रामदई अब हम इन्हीं चरनन में डरे रहे" और वह सिसक-सिसककर रोने लगी। उसकी मां जगरानी भी रोती-सिसकती पुत्री के रुदन के साथ 'रनिंग कमेंट्री' करती जा रही थी—"कसाई हत्यारे ने मार-मार कर जान ही ले ली। जा देखो," कहकर उसने ललिता की पीठ का कपड़ा हटा दिया। गरम लोहे से दागकर कल शाम को उसके गड़रिया पति ने उसे बाहर धकेल दिया था। नीले फफोले पड़े दाग ने सीजर के घाव की भांति क्षण-भर में ही हमारी सहानुभूति जीत ली।

नौकरानी से अधिक ललिता हमारी बाल्यसखी थी। हमारे साथ ललिता घुटनों तक साड़ी उठाकर चपेटे खेलने बैठ जाती, कभी उचक-उचक इमलियां तोड़ लाती, कभी बेतवा नदी से गोल पत्थर बीनकर मेंहदी पीसकर हमारी हथेलियां रचाती। गुड़िया का ब्याह होता, तो पकवान पकाने से लेकर बिटिया के ब्याह के करुण गीत गाने का भार भी रहता ललिता ही पर। पुरखिन-सी नन्ही ललिता अपने मधुर कंठ में हृदय का समस्त कारुण्य उंडेलकर गा उठती—"हमरी लड़ैती के अंकन कंकन गढ़ि ले चतुर सुनार मोरला।"

गुड़िया की विदा के तीसरे ही महीने ललिता को भी विदा होना पड़ा। बारह वर्ष की उसकी पल्लवित देहलता को देखकर जगरानी के चिंतित प्राण कन्या-भार से मुक्त होने को व्याकुल हो उठे थे। ललिता बचपन से ही हमारे साथ रही थी, हमने उसके भारी-भारी पैंजने कड़े, अंकना-कंकना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उतरवा दिये थे। वह रोज नहा-धोकर साफ-सुथरी बनी रहती। नैन-नक्श की सुघड़ और इकहरी देह की सलौनी ललिता को दूर से देखने पर उसके अभिशप्त जीवन के सबसे बड़े खोट पर किसी की भी दृष्टि नहीं पड़ती थी। निकट आने पर ही कोई देख सकता था कि उसकी एक आंख माता भवानी को भेंट हो चुकी है। रेशमी पलकों से ढकी होने पर भी उसकी दृष्टिहीन आंख के ग्रहदोष को उसका अधेड़ दुहेजू पति भी क्षमा नहीं कर सका। वह बार-बार मार-पीटकर ससुराल भेजी जाती और तीसरे ही दिन फिर लौट आती। ललिता की आंख छीनकर विधाता ने उसे ऐसा परिहास-रसिक-चित्त दिया था कि वह भाग्य की हर चोट और थपेड़ को हंस-खेलकर झेल लेती। हम उसे अक्सर छेड़ देते –"क्यों री ललतिया, तू तो पहन ओढ़कर इतनी अच्छी लगती है, फिर तेरा गड़रिया तुझे क्यों मारता है?"

वह हंसकर एक अंगुली अपनी कानी आंख पर रखकर गाने लगती –

जा अंखिया मोरी भई रे सौतनिया
जा अंखिया मोरी भई रे विरनिया

बाहर से हंसी की फुलझड़ी-सी बिखेरती ललिता उदास होने पर भी चेहरे पर शिकन नहीं आने देती थी। बुंदेलखंड में एक विचित्र रिवाज है। लड़की मां से बिछुड़कर ससुराल जाती हो, या ससुराल से लौटकर आत्मीय परिजनों से पुनः मिलती हो, उच्च स्वर में रोना उसके लिए अनिवार्य समझा जाता है। वह रुदन भी विचित्र आरोह-अवरोहपूर्ण स्वर में गा-गाकर लहरा उठता है। एक दिन हम छज्जे पर खड़े थे कि किसी बुंदेली-बिटिया का करुण स्वर लहरा गया–"ए मतइया, हमें बुला लियो ए–ए–ए– ।"

हमने ललिता से कहा –"हाय राम, बेचारी कैसे रो रही है!"

ललिता नाक सिकोड़कर बोली–"उंह, जा का रोवत, हम रोवें तो देखो" कहकर उसने अपनी विलक्षण प्रतिभा को क्षण-भर में दोहरा दिया– आंचल आंखों पर रखा और गा-गा कर रोने लगी –

–'ए मतइया हम आज जांय
कल भग आयें ए-ए-ए
एक मतइया आले पै मिठइया धरी
भौजी को जिन दियेरी ए-ए-ए-

हमने बड़े कष्ट से ललिता की रुदन-लहरी बंद करवायी। "देखा" बड़े गर्व से हमारी ओर देखकर वह मुस्करा कर बोली– "ऐसे रोवत हैं–वा भला का रोवत।" इस प्रकार मां से आज जाकर कल पुनः मायके भाग आने का आश्वासन एवं आले पर रखी मिठाई भौजी को न देने का आदेश, सब ललिता की मौलिक सूझ थी। बाद में जगरानी ने बताया कि ललिता की गर्वोक्ति अक्षरशः सत्य थी, उससे रोना सीखने दूर-दूर के गांवों से बहू-बेटियां आती थीं। ग्राम में किसी भी लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु होती, तो ललिता को आग्रहपूर्वक रो-रोकर छाती कूटने के लिए बुलाया जाता और ललिता के कथनानुसार उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हृदय-विदारक विलाप मृत व्यक्ति के कठोर शत्रुओं तक को रुला देने की अद्‌भुत क्षमता रखता था।

ललिता रोने में ही नहीं, गाने में भी अनमोल थी। उसका मधुर कंठ लोकगीतों का अक्षय भंडार था। टोना, लेद, फाग, बिरहा के अनूठे पदों का काव्यात्मक शृंगार प्रायः वह स्वयं ही करती। अनपढ़ और अज्ञान ललिता की कल्पना बड़ी सजीव थी। एक बार जाड़े के दिनों में हमें चेहरे पर कोल्ड क्रीम लगाते देख वह बोली–"हाय दैया, जा का है जिज्जी ?"

"अरे क्रीम है, इससे जाड़ों में चेहरा चिकना बना रहता है, काला नहीं पड़ता" हमने कहा।

"रामदई जिज्जी हमें दे डारो तनक, एक बार काहू ने जाड़े से पूछी–' जाड़े रे जाड़े कहां चले।'

"जाड़े ने कही-गोरे को काला करन चले, अरु काले की गत बिगारन चले'

"सो हमारी तो दईमारे जाड़े ने गत बिगार दई है, हमें तनक 'करीम' दे दो।"

याचना को भी भाषा से शृंगार कर ललतिया ने ऐसे हमारे सम्मुख रख दिया कि 'करीम' देनी ही पड़ी। अपने क्रूर पति की कड़ी चोटें खाकर ललिता संकल्प कर बैठी थी कि अब वह ससुराल नहीं जायेगी। हमारे ही चरणों में सिमटकर अपना तिरस्कृत जीवन काट लेगी। हम अल्मोड़ा लौटने को हुए तो वह भी साथ हो ली। 'बर्फ का मुलुक' देखने का उसका समस्त उत्साह काठगोदाम पहुंचते ही बालू की दीवार-सा सहसा भरभरा कर ढह गया –"हाय राम, ऐसे ऊंचे-ऊंचे पहाड़, दैया, बादल कैसे घुंआ से फूंकत।" पहाड़ की तिरछी-आड़ी गोलाकार सड़कों पर बस दौड़ने लगी, तो ललिता बिगड़ गयी ड्राइवर पर –"ए रे गंवरिया, का ताड़ी पीकर गाड़ी चलावत हो।" समझा-बुझाकर ललिता को चुप करवाया गया। वह चुप होकर बैठ तो गयी; पर जैसे ही मोड़ पर बलखाती बस के साथ वह भी लुढ़कने को होती, तो आग्नेय दृष्टि से ड्राइवर की ओर देखकर फिर बड़बड़ाने और गाली देने लगती –" बदजात हरामी, कैसो मुचक-मुचक कर हंसत जात, तू गाड़ी गिरा के मानेगो आज।"

अल्मोड़ा पहुंचे, तो ललिता की जान में-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जान आयी; पर असंख्य कवियों और पर्यटकों के प्राणों में पुलक भरनेवाले नगाधिराज हिमालय ललिता का म्लान चित्त विकसित नहीं कर सके। "उंह, कैसी बरफ की फुफकार छोड़त हैं।" वह हिमाचल की ओर तिरस्कार की दृष्टि से देखकर कहती। कुछ दिन बाद ललिता ने हठ किया कि वह 'कागद' पढ़ना सीखेगी। बड़े उत्साह से वर्णमाला आरंभ हुई, 'अ' और 'आ' की ऐसी दुर्दशा संभवतः किसी अबोध शिशु ने भी नहीं की होगी। 'अ' को ब्रह्मा की-सी चार बाहुएं प्रदान कर ललिता ने उसे नाना बेल-बूटों से विभूषित कर दिया था। "यह क्या किया ललिता?" हमने डपटा।

"तनिक फूलबेल बनाय दें, तो और अच्छो लगेगो।" उसने वात्सल्यपूर्ण दृष्टि से अपनी कलाकृति को निहार कर कहा। 'अ' और 'आ' के शृंगार में ही ललिता ने दो महीने बिता दिये और अंत में एक दिन ऊबकर बोली—"चूल्हे में डारो जा ससुर 'कागद', इससे तो हम सिलाई सीखें।" फिर क्या था लट्ठा, फ्रेम और रेशम की रंग-बिरंगी लच्छियां मंगवायी गयीं, बड़े परिश्रम से एक तोता 'ट्रेस' कर ललिता को सुई थमा दी गयी। बीच-बीच में सुई कपड़े में न घुसकर न जाने कब उस गरीब के दग्ध हृदय की स्मृतियों के घावों में जा चुभती। सुई की प्रगति रुक जाती और वह गहरी उदासी में डूब जाती। मार खाकर भगाये जाने पर भी उसका चित्त अभी अपने सासरे के गांव में ही डूबा था। सुई को दांतों में दाबकर वह कहती—"काली गाय ब्या गयी होगी," गांव की बहू-बेटिया सुअटा पूज रही होंगी, कैंडा देव को मेला लगो हैगो।" हमने एक दिन झिड़क दिया—"जब इतनी ही याद आती है अपने गड़रिये और गांव की, तो चली क्यों नही जाती?"

झट आंचल की खूंट से आंखें पोंछ वह बरस पड़ती—"ठठरी उठे वा गड़रिया की, माता निकसे वा को, आंखें फूटें ससुर की, हमें कौन वा की ममता है," और पति को विधिपूर्वक पिंडदान देकर वह फिर काम में लग जाती। जाड़ों की छुट्टियों में हमारे ओरछा जाने का समय आया, तो ललिता हवा में उड़ने लगी, भाग-भाग कर चुटकियों में काम करती और घर जाने के दिन गिनती। मार्ग में किसी भी स्टेशन पर ट्रेन रुकती, तो वह अपनी बुंदेलखंड की गालियों की अनमोल अशर्फियां लुटाकर ट्रेन को दोनों हाथों से धकेलने लगती—"कैसी अड़ी जा रही है चोट्टी, नखरे देखो अरी कौन को पड़ी, जो तो कौ मनावे, हाय तेरो खसम मरे रंडी चलत काय नहीं, दईमारी पतुरिया"। अचल ट्रेन चलने लगती और मुसाफिर हंसने लगते। लज्जा से हमारा सिर झुका देख ललिता मुसाफिरों से जा भिड़ती—"जा में हंसने की का बात, हमें अपने मुलुक जाने में देर-अबेर अच्छी नहीं लगत, जब ससुरी को दुई-चार भली-बुरी कही, तब ही फक्क—फक्क कर चल पड़ी।"

हम ओरछा पहुंचे, तो ललिता का पूरा परिवार स्टेशन पर उपस्थित था। मोटर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उतरते ही ललिता ने मारवा ठाठ की नीरसता में अपने रुदन-राग की विचित्र रागिनी छेड़ दी। एक साल पहाड़ पर बिताकर ललिता की देह भर गयी थी, गालों पर स्वास्थ्य की चिकनाई को दूर से देखकर अनुपम लावण्य का भ्रम होता था। अब वह बुंदेलखंडी स्त्रियों की भांति लांगदार धोती नहीं पहनती थी, सलीके से धोती बांधकर जूड़ा बनाना सीख गयी थी। यही नहीं, कानी आंख को पल्लू से यथासाध्य छिपाकर दूसरी आंख के बंकिम कटाक्ष से उसने एक दिन कूंडादेव के मेले में अपने अधेड़ पति के पौरुष को पराजित कर ही दिया। कानी पत्नी के नये रूप पर रीझकर हमारे पास आने में गड़रिये ने देर नहीं की। हाथ जोड़कर हमारे पैरों पर उसने पगड़ी डाल दी—"गंगा की सौ, जो इसे मारूं अन्नदाता, रानी बनकर राज करेगी सरकार।"

ललिता को जीवन में पहली बार मानिनी नायिका बनने का अवसर मिला था, वह भला क्यों चूकती। खैर, बड़ी मान-मनौवल के बाद ललिता विदा हुई। कई वर्ष तक हमें आनंदी ललिता की याद आती और उसे देखने को जी तरस उठता। चौथे साल ओरछा गये, तो खबर पाते ही जगरानी भागती आयी, हमने उसे देखते ही ललिता की कुशल पूछी और वह आंखों पर आंचल धरकर बिलखने लगी—"वा अभागन तो गयी जिज्जी, तीन बरस के तीन बालक भये एको नहीं रहा, तीसरी बार दुश्मन लालतिया को भी ले गये।"

हम स्तब्ध थे। एक दिन ललिता ने हमसे कहा था—"ए जिज्जी, हम जब मरें, तो हमारी अरथी पर लाल 'चारचट' को कफन डारियो....."

"चारचट का री?"

"जाके परदा बासाहब की मोटरिया पर पड़े हैं।" वह बोली।

रानी साहबा ओरछा की मोटर पर लगे लाल ज्यौर्जेट के कफन की आकांक्षा! बेचारी ललतिया! "कहां मिलता 'चारचट' उसी की कंकरेजी मार्किनिया धोती में लपेटकर ले गये जिज्जी!" जगरानी बिलख रही थी—"कसाई ने कफन तक नहीं खरीद कर दिया।"

कभी-कभी उसका हंसमुख चेहरा आंखों के सामने तिरने लगता है, एक हाथ कानी आंख पर धरकर जैसे वह गा रही हो—"जा अंखिया मोरी भई रे बिरनिया।" रवींद्रनाथ की कविता 'ललिता' का-सा अंत भी हुआ अभागिनी का 'अनादरे हबे धूल दलिता ओगो ललिता ओगो ललिता'

अरी ललतिया—अनादर से तू भी धूल-दलिता ही हुई!

★

एक बार एक सज्जन ने निरालाजी से पूछा—"पहले आप लखनऊ में रहते थे और अब इलाहाबाद में क्यों?" निरालाजी ने उत्तर दिया—"लखनऊ में कर्म के लिए रहता था, अब इलाहाबाद में धर्म के लिए रहता हूं!"

—केदार उपाध्याय

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जापानी कहानी :

दो अपाहिज

एडोगवा रैंपो

गर्म पानी से नहाकर वे दोनों शतरंज खेलने आ बैठे। एक बाजी ही हुई थी कि उसे छोड़कर गपशप में मशगूल हो गये। दोनों पलथी मारे एक-दूसरे के सामने रेशमी गद्दों पर बैठे थे और पास ही रखी सुंदर नक्काशीदार सिगड़ी से तापते भी जाते थे। सिगड़ी पर चाय रखी हुई थी।

दोनों व्यक्ति अपने-अपने अतीत की स्मृतियां संजोने लगे। इनमें सैटो मेहमान था और अपने मेजबान इहारा को प्रथम विश्व-युद्ध के समय सिंगताओ की लड़ाई के अपने अनुभव सुना रहा था। उसकी खड़खड़ाती आवाज कीट-पतंगों की भिन-भिनाहट-सी लग रही थी; पर मेजबान उसकी आपबीती बड़े ध्यान से सुन रहा था। सुनाते-सुनाते सैटो का विकृत चेहरा देखने में और भी भयानक लग रहा था। पर जैसे-जैसे वह अपनी बहादुरी की रोमांचक कहानी सुना रहा था, उसके चेहरे का भद्दापन अद्भुत रूप से भावाभिव्यंजना में सहायक हो रहा था।

"यह दुश्मन की गोली का निशान है," अचानक अपने चेहरे के दायीं ओर एक घाव की ओर संकेत करके उसने कहा—"और सिर्फ यही उन दुर्दिनों की यादगार नहीं है, ये देखो, जरा गौर से देखो, इन हड्डियों की ओर....." और यह कहते हुए उसने झट से कमर से वस्त्र हटाकर पुराने दाग दिखाये।

"आह", सैटो आगे बोला—"अपनी जवानी के दिनों में मैं कितना सुंदर युवक था! कितनी रोमांटिक कल्पनाएं थीं मेरी! पर आह, वह सब समाप्त हो गया!"

इहारा कुछ क्षणों तक गुमसुम बैठा रहा कुछ कहने की जगह वह चाय का प्याला बार-बार अपने ओठों से लगाता-हटाता रहा। उसकी सिकुड़ी हुई भोंहों से प्रकट था कि वह सिंगताओ-युद्ध के खयालों में खोया हुआ है। आह, कैसा निर्मम और दुःखद था वह समय.....लोगों को लूला-लंगड़ा और अपाहिज बना देनेवाला।.....पर वह स्वयं भी तो अपाहिज था, सैटो की तरह ही पंगु और ऐसा पंगु कि जिंदगी-भर कभी सीधा होकर नहीं चल सकता था। किसी ने उसे प्यार नहीं किया; किया भी तो दयार्द्र होकर। जब उसने अपने से सैटो की तुलना की, तो उसे ईर्ष्या हुई। कम-से-कम एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीज तो उसके पास थी, उसे जो दाग हासिल थे, वे ससम्मान प्राप्त हुए थे और उसे ? इहारा को तो ऐसे दाग भी हासिल न थे !

"यार, अब तुम्हारी बारी है," इहारा के खयालों में दखल देते हुए सैटो ने कहा– "तुमने कभी अपनी जिंदगी की कहानी नहीं सुनायी।"

इहारा हरी चाय से अपने होठों को भिगोकर और गला खकारते हुए बोला– "भई, मैं इसे कहानी नहीं कह सकता। सच तो यह है कि यह मेरे अपराध की स्वीकारोक्ति है और तुमने जो अपने साहसिक कार्यों की कहानी सुनायी, उसके मुकाबले तो यह बहुत ही फीकी लगेगी।"

"कुछ भी हो, सुनाओ तो सही।" सैटो ने गहरी उत्सुकता प्रकट की। उसकी आंखें उत्साह से चमक उठीं।

इहारा ने उन आंखों में झांका और क्षण-भर के लिए आश्चर्य में पड़ गया। उसे लगा, कुछ समय पहले उसने ऐसा ही चेहरा कहीं देखा था। बिलकुल ऐसी ही चमक थी उस व्यक्ति की निगाहों में भी। मगर कब और कहां मिला था, ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा। हां, उसे यह तो पक्का विश्वास हो रहा था कि वह इस व्यक्ति से पहले कभी मिला जरूर है।

सैटो उसे खयालों में खोये देखकर बोला–"यार, मैं तो तुमसे कहानी सुनने का इंतजार कर रहा हूं और तुम हो कि मौन साधे हो !"

"वही तो !.....वही तो मैं कर रहा हूं," इहारा प्रकृतिस्थ होते हुए बोला– "सुनने से पहले मैं अपनी कहानी के सारे सूत्रों को संजो रहा था। तुम जानते हो, यह पहला ही मौका है कि मैं किसी को अपनी रामकहानी सुना रहा हूं।"

और अब इहारा ने अपनी विचित्र कथा सुनानी शुरू की। सैटो इतनी तल्लीनता से सुनने लगा, मानो वह एक शब्द भी चूकने न देना चाहता हो। इहारा सुनाने लगा :

मैं ओनुकी नामक कस्बे में एक दुकानदार के घर पैदा हुआ। बचपन में मां-बाप का लाड़-प्यार इतना ज्यादा मिला कि मैं बड़े ही कमजोर दिलवाला लड़का बन गया। प्राथमिक शाला में मैं बार-बार फेल होता रहा और अपने सहपाठियों से पिछड़ता रहा। धीरे-धीरे मैं कोशिश करने लगा कि अपना यह फिसड्डीपन दूर करूं।

दिन गुजरते गये। आखिर मैं वासेदा विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए टोकियो आया। यहां अभी एक साल ही आनंद से बीता था कि जिंदगी को तहस-नहस कर देनेवाली वह घटना घटी।

[इस बात पर इहारा के बदन में कंपकंपी-सी हुई; पर यह ठंड के कारण नहीं हुई थी। सैटो उसके चेहरे पर आंखें गड़ाये था, उसकी निगाह इहारा के चेहरे से क्षण-भर को भी अलग नहीं हो रही थी।]

हां, तो एक दिन सुबह, मैं स्कूल जाने की तैयारी में लगा था कि एक मित्र मेरे कमरे में आया। वह भी उसी आवासगृह में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहता था, जिसमें कि मैं। मेरा कंधा थपथपाकर उसने जो कुछ कहा, उसे सुनकर मैं चक्कर में पड़ गया।

उसने कहा—"कल रात तुमने जो बढ़िया भाषण दिया, उसके लिए बधाई!"

"कैसा भाषण?" मैंने बहुत ही हैरानी के साथ पूछा—"क्या कह रहे हो तुम? तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आयी।"

मित्र ने ठहाका लगाते हुए कहा—इतने मत झेंपो यार! क्या तुम्हें कल रात की याद नहीं रही? तुम मेरे कमरे में घुसे, मैं काफी देर से सो रहा था। तुमने मुझे झकझोर कर जगा दिया और मुझसे पेचीदे तर्क-वितर्क करने लगे। अब तुम्हें बराबर याद आ गया होगा। मैं नहीं समझता कि उस समय तुम पिये हुए थे।"

"जरूर, यह तुम्हारा भ्रम है," मैंने फौरन जवाब दिया—"जहां तक मुझे पता है, कल रात मैं तो तुम्हारे कमरे के पास भी नहीं फटका, तुमसे बहस करने की तो बात ही क्या है?"

"क्या बेकार की बातें कर रहे हो," मित्र बोला—"तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि तुम मेरे कमरे में आये थे, यहां तक कि तुमने प्लैटो और अरस्तू के दर्शन से भी उद्धरण-पर-उद्धरण सुनाये। खैर कुछ भी हो, मैं कोई शिकायत करने थोड़े ही आया हूं, मैं तो उल्टे यह कहने आया हूं कि तुम्हारे तर्क मुझे बहुत भाये। तुम्हारे लौट आने पर भी तुम्हारी कही हुई कई बातें मेरे मस्तिष्क में घूमती रहीं, परिणामस्वरूप मैं फिर न सो सका और इस कार्ड पर वे सारी बातें लिख डालीं।"

यह कहकर मेरे मित्र ने वह पोस्टकार्ड मुझे दिखाया और पूछा कि अगर किसी ने मुझे जगाया न होता, तो क्या मैं ऐसा लिख सकता था?

उसके इस वाक्य ने मुझे चकित कर दिया। कारण, बचपन में मुझे सचमुच ऐसी आदत थी। लोग कहा करते थे कि कभी-कभी मैं बिलकुल बच्चे की तरह चिल्लाने लगता था। मां-बाप कहते थे कि मैं सपने में बर्राता हूं। पर यह कोई चिंता की बात नहीं थी। जिस डाक्टर ने मेरी जांच की थी, उसने भी यही कहा था कि खतरे की कोई बात नहीं है, यह निद्रा-भ्रमण की बीमारी का असर था।

स्वभावतः मैं पास-पड़ोस में चर्चा का विषय बन गया, क्योंकि नींद में चलने का स्वभाव सामान्य व्यवहार से कुछ हटकर होता है; पर धीरे-धीरे, जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया, सपने में बातें करने की मेरी आदत कम होती गयी और अंत में मैं उससे बिलकुल मुक्त हो गया।

मेरी बात सुनकर मित्र ने कहा कि संभवतः मुझे वही बीमारी फिर शुरू हो गयी है।

"मुझे याद आता है," उसने कहा—"कल रात तुम परेशान से नजर आ रहे थे। तुम्हारा चेहरा फीका हो रहा था, आंखें कभी पूरी खुल जाती थीं, कभी अधखुली-सी रहती थीं। ऐसा लगता था, मानो तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आस-पास के दृश्य को साफ-साफ देख रहे हो; मगर आंखों से नहीं वह दृश्य तुम्हारे मन को दिखाई दे रहा है। तुमने अभी-अभी जो निद्राभ्रमण की बीमारी की बात कही, हो सकता है, यह वही हो।"

उसके इन शब्दों ने मेरे भीतर और भी अशांति पैदा कर दी। मनुष्य नींद में क्यों विचरण करने लगता है, इसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं—मैं तो कुछ भी नहीं जानता था।

सोचते-सोचते दो दिन में मेरा दिमाग बिलकुल खराब हो गया। न तो भोजन की प्रवृत्ति होती और न सोने की। सदा यही खटका लगा रहता कि इस रहस्यपूर्ण अर्धचेतन अवस्था में कोई भयंकर अपराध न कर बैठूं।

मैंने एक परिचित डाक्टर से जांच करायी। उसकी सांत्वना के बावजूद मैं शांति से कोसों दूर रहा।

किसी तरह दिन गुजरते रहे। दिन की हर घड़ी मुझे ऐसी लगती, जैसे पीड़ा की एक सदी हो। और रात? रात के एक-एक क्षण की पीड़ा तो और भी वर्णनातीत है। नींद में कहीं कुछ कर न बैठूं, इस डर से सोने की हिम्मत ही नहीं होती थी। आखिरकार पूरा एक माह गुजर गया और कोई दुर्घटना न हुई, तो मैं कुछ-कुछ आश्वस्त होने लगा—"शायद डाक्टर की बात ठीक थी।"

अब मुझे विश्वास होने लगा कि मैं व्यर्थ ही राई का पहाड़ बना रहा था। यह सब मेरी मानसिक खींचातानी की उपज है।

लेकिन एक दिन सुबह मेरी आंख खुली, तो क्या देखता हूं कि किसी की अलार्म घड़ी मेरे सिरहाने टिक-टिक कर रही है। उसे देखकर मेरा पिछला सारा भय फिर जाग उठा और डर के मारे हृदय ऐसे धड़कने लगा, मानो मेरे भीतर समुद्र का भीषण ज्वार बवंडर मचाये हुए है। कांपते हाथ से मैंने घड़ी उठायी और याद करने की कोशिश की कि वह किसकी हो सकती है। इतने में बगल के कमरे से घड़ी खोजने की आवाज सुनाई पड़ी।"

मैं बेतहाशा घबराया हुआ, अपने सहपाठी मित्र के कमरे में पहुंचा और इस मुसीबत से छुटकारा पाने में उसकी मदद मांगी। मित्र ने मेरी बीमारी की बात उस क्लर्क को समझाकर घड़ी लौटा दी। क्लर्क समझदार था, उसने सहृदयता से बात मान ली। मामला खत्म हो गया।

पर इस घटना से आसपास के सब लोगों में यह बात फैल गयी कि मुझे निद्रा-भ्रमण का असाध्य रोग है। कक्षा में भी विद्यार्थी ज्यादातर मेरे ही बारे में बातें करते।

मैंने जी-तोड़ कोशिश की कि मैं इस भयानक रोग से छुटकारा पा जाऊं। मैं इसके लिए दृढ़ता से तैयार था। नित्य नयी किताबें लाता, ताकि उनकी सहायता से मेरा स्वास्थ्य सुधरे; कई डाक्टरों को दिखाया; पर सुधार के बजाय हालत दिन-पर-दिन बदतर होती गयी।

एक बार लगभग आधी रात के समय, मैं अपने कमरे से बाहर निकला और निकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के कब्रिस्तान में घूमने लगा। मेरा एक पड़ोसी, जो किसी दावत से इतनी रात को लौट रहा था, उसने मुझे देख लिया। उसनें सब जगह यह खबर फैला दी कि कब्रिस्तान में भूत घूम रहा है। बाद में जब लोगों को पता चला कि वह भूत और कोई नहीं, मैं था, तो सब हंस-हंसकर लोट-पोट होने लगे।

मगर मेरे लिए यह हंसी की बात नहीं थी। एक भयावह दुःख मुझे घेरे था, जिससे जान छुड़ाने में मैं असहाय था। अब तो हालत यह हो गयी कि मुझे 'रात' शब्द से भी डर लगने लगा।

मैं सोच-सोचकर हैरान था कि वह कौन-सी यांत्रिक शक्ति है, जो आदमी को इस प्रकार असामान्य कार्य करने को बाध्य करती है। गनीमत थी कि मैंने अभी तक कोई गंभीर अपराध नहीं किया था। पर अचानक मन में यह प्रश्न उठा—यदि कभी मुझसे कोई घातक अपराध हो ही गया तो?

यह आशंका उठते ही मेरे रहे-सहे होशहवाश भी फाख्ता हो गये अब सबसे अच्छा रास्ता मेरे सामने यही था कि मैं पढ़ाई छोड़कर मां-बाप के पास घर चला जाऊं। तदनुसार मैंने उन्हें पत्र लिखा, जिसमें सारी बातें समझायीं और उनकी राय मांगी। मैं उनके उत्तर की अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था कि तने में जिसका डर था, वही हो गुजरा...।

[सैटो इहारा के चेहरे पर आंखें गड़ाये एक-एक शब्द ध्यान से सुन रहा था, मानो वह 'हिप्नोटाइज' हो गया हो। इहारा ने फिर क्षण-भर को याद करने की कोशिश की कि उसने सैटो-जैसा चेहरा कहां देखा है; पर उसे कुछ याद न आया, तो वह आगे अपनी रामकहानी सुनाने लगा।]

मेरे जीवन पर चरम आघात का क्षण .....वह साल १९०७ का था, बहुत अरसा गुजर चुका है तबसे। फिर भी मुझे हर बात ब्यौरेवार याद है।

एक दिन सुबह मकान में हो रहे शोर-गुल के कारण मेरी नींद टूट गयी। मैं हड़-बड़ाकर उठा और सोचने लगा कि कहीं रात में मुझे दौरा तो नहीं पड़ा। अगर पड़ा हो, तो मैं अनजान में क्या कर बैठा हूंगा? प्रार्थना करने लगा कि कहीं कोई खतरनाक बात न कर गुजरा होऊं।

इतने में मेरी नजर दरवाजे के पास रखी

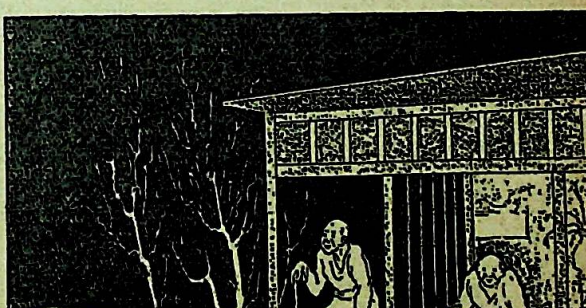

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय सत्कार
व
आधुनिक सुखों
का प्रतीक

अशोक
होटल
नई दिल्ली

- पूर्णतया वायु अनुकूलित
- ३५० से अधिक कलायुक्त सुसज्जित कमरे
- प्रत्येक कमरे के साथ 'शावर' सहित आधुनिक स्नानगृह
- हरेक कमरे में टैलीफोन व रेफरिजरेटर
- विभिन्न प्रकार के भारतीय तथा विदेशी भोजन
- तैरने के लिये सुन्दर ताल

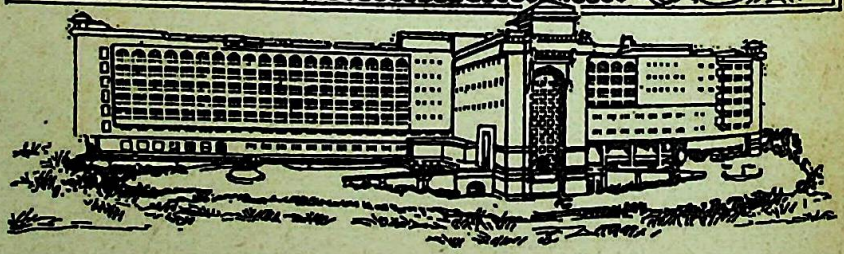

भारत का एकमात्र ★★★★★ डी लक्स होटल

टेलीफोन-७०३११ (४० लाईन) तार का पता-अशोका होटल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े की छोटी-सी पोटली पर गयी। कांपते हुए मैं पास पहुंचा। चोर की तरह कमरे में नजर दौड़ाकर चारों ओर देखा और इस बात की तसल्ली करके कि कोई और मुझे नहीं देख रहा है, मैंने उस पोटली को दरवाजे के पीछे छिपा दिया।

मुश्किल से चैन की सांस ली होगी कि किसी ने दरवाजा खटखटाया। देखा, तो वही सहपाठी मित्र था। उसका चेहरा फक था। उसने कांपते हुए कहा—"इहारा, बड़ी भयंकर घटना हो गयी है। हमारे मकान-मालिक बूढ़े मुराटा का खून हो गया। हर-एक का यही शक है कि यह काम किसी चोर ने किया है। आओ, तुम भी हम सबके साथ आ जाओ। पुलिस को फोन कर दिया गया है, अब वह आने ही वाली है!"

इस दुखांत समाचार को सुनकर मेरी क्या हालत हुई होगी, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। आज बीस साल बाद भी वह मृत बूढ़ा बदहवास-सा मुझे घूर रहा है, मानो मुझ पर आरोप लगा रहा हो।

[इहारा ने रुककर अपने किमोनो की आस्तीन से भौंहों पर झलक आयी पसीने की बूंदें पोंछीं।]

हां, मुझे आज भी हर बात अच्छी तरह याद है। बूढ़ा उस रात अपने कमरे में अकेला ही सो गया था। सुबह काफी धूप निकल आने पर भी वह नहीं उठा, तो नौकरानी कमरे में गयी और उसने देखा कि वह मर पड़ा है।

पुलिस आयी। तलाशी लेने परपता चला कि एक गुच्छा, जिसे बूढ़ा हमेशा अपने बटुए में रखता था, गुम था। और साथ ही उसकी छोटी-सी रुपयोंवाली संदूकची भी गायब है।

मैं जैसे ही मौका लगा, अपने कमरे में आया। अंदर से दरवाजा बंद करके मैंने झटपट वह पोटली उठायी। खोलकर देखा, तो भय के मारे मेरी चीख निकलते-निकलते रह गयी। उसमें बूढ़े की सारी धन-संपत्ति बंधी हुई थी।

शीघ्र ही पुलिस ने मुझे हिरासत में ले लिया। यों तो जो पोटली पुलिस को मेरे यहां से हाथ लगी, वही मेरे अपराधी होने का काफी बड़ा सबूत थी; पर यदि यह न भी मिलती, तो भी पुलिस का काम चल सकता था। कारण अपराध-स्थल पर पाया गया रूमाल मेरा ही था और उसके आधार पर ही मामले का फैसला हो सकता था।

मुझे एक कोठरी में कैद रखा गया। घंटों मुझसे सवाल-पर-सवाल किये जाते थे। अंत में एक मानसोपचारक की सहायता भी ली गयी। पुलिस ने उस आवास-भवन के बहुत-से किरायेदारों को भी गवाही के लिए बुलाया।

मेरे बचाव की कोशिश करनेवालों में मेरे पिता और किमूरा—मेरा वह मित्र, जिसने मुझे सबसे पहले बताया था कि मैं निद्राचर हूं—का बड़ा हाथ रहा। पिता नामी वकील साथ लेकर आये। इनके अतिरिक्त मेरे सहपाठियों ने मेरे पक्ष में बयान देने में कोई कोर-कसर नहीं रखी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाँसी को दूर कीजिये

खाँसी

का शीघ्र, सुरक्षित, निश्चित इलाज

ग्लायकोडिन

दर्द बरसाता

इन ६ विशेषताओं के कारण ग्लायकोडिन खाँसी का बेहतर इलाज है :

१. हर प्रकार की खाँसी के लिये सदैव असरकारक
२. डॉक्टरों द्वारा प्रमाणित, सुयोजित फॉर्मूला
३. बच्चों व बूढ़ों का मनपसंद मधुर स्वाद
४. आदेशानुसार लेने से हानिरहित
५. चार किफायती साइज में प्राप्य
६. एलेम्बिक की विश्वसनीय उत्कृष्टता

Alembic

३० से भी अधिक वर्षों से खाँसी का घरेलू इलाज

GTV 1282A HIN. EVEREST

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मामला जटिल था, बहुत दिन चला। सौभाग्य से मेरे पक्ष में साक्षी इतने जुट गये कि अंततः अदालत को मानना पड़ा कि मैं निरपराध हूं।

पर न्यायालय से निपराध छूट जाने के उपरांत भी मेरे मन को एक क्षण के लिए भी शांति नहीं मिली।

जेल से छूटा, तो पिता के साथ घर चला गया। वहां पहुंचते ही मैं बीमार पड़ गया। बहुत दवा-दारू की; मगर बेकार। शारीरिक रोग होता, तो दूर भी हो जाता; पर इस रहस्यमय दिमागी बीमारी का तो कोई इलाज ही न था। आखिर छः माह चारपाई पकड़े रहने के बाद कुछ संभला। पर सब यह जान गये कि मैं सामान्य जीवन जीने योग्य नहीं रहा—मैं कभी सामान्य नहीं हो सकूंगा। जैसे मेरे भीतर आत्मा ही न हो। मन से पंगु होकर मुझे सारा जीवन दुर्गति और दुःखों में बिताना है।

मेरे छोटे भाई को मेरे पिता के उत्तराधिकारी के रूप में परिवार का मुखिया बना दिया गया और मैं एक अपाहिज और पराश्रयी की जिंदगी बसर करने लगा—सदा दूसरे के परिश्रम, कमाई और कृपा पर जीने वाला! इस प्रकार मेरे बीस वर्ष गुजर गये। आज, यों तो अच्छा-भला तुम्हारे सामने बैठा हूं; पर अपने भीतर की हालत मैं ही जानता हूं। अपने अपाहिज दिमाग के घिनौनेपन के साथ जब मैं तुम्हारी शारीरिक स्थिति की तुलना करता हूं सैटो, तो मैं कह सकता हूं कि तुम तो निश्चय ही सुंदर हो।

"हां, तुम सचमुच सुंदर हो," और यह कहने के साथ वह जोरों से हंस पड़ा। उसका हास विद्रूप-भरा लग रहा था।

सैटो किसी विचार में लीन था। इहारा ने कहा—"क्षमा करना भाई सैटो, मैं तुम पर नहीं, अपने आप पर हंस रहा था। संसार में अकेला मैं ही अपने जीवन की इस व्यंग्य-कथा का आनंद ले सकता हूं।"

सैटो ने अपना गला खकारते हुए कहा—"वास्तव में बड़ी दुखांत है तुम्हारी कहानी। मगर एक बात बताओ। क्या तुम अब भी नींद में विचरण करते हो और वैसे ही..... मेरा मतलब है, पहले की तरह ही अपराध करते हो?"

इहारा ने जवाब दिया—"यह बड़ी विचित्र बात है। तबसे फिर कभी मुझे वैसा दौरा नहीं पड़ा। डाक्टरों का कहना है कि हत्यावाले मामले से मुझे जो मानसिक आघात पहुंचा, उससे दौरा लाने में सहायक नाड़ियों को लकवा मार गया है। आज बीस वर्ष से निरंतर मैं दौरे की आशा करता रहा हूं; पर फिर वैसा कभी नहीं हुआ, न होना ही था। अब तुम मेरी हास्यास्पद और करुण दशा का अनुमान आसानी से कर सकते हो!"

"एक बात और बताओ इहारा, उस व्यक्ति के बारे में कुछ बताओ, जिसे तुम किमूरा कहा करते थे। उसी ने तो पहले-पहल तुम्हें निद्राचर कहा था। उसी ने।"

"हां, उसी ने पहले-पहल पता लगाया था मेरी बीमारी का; पर उसके अलावा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

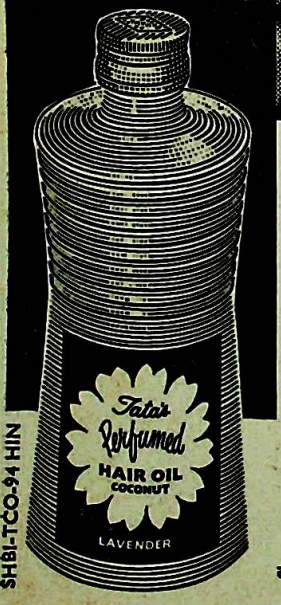

टाटा का *सुगन्धित* कोकोनट हेअर ऑइल

जिसमें शुद्ध नारियल का तेल होता है

सभी समझदार माताएँ जानती हैं कि टाटा के कोकोनट हेअर ऑइल में केवल शुद्ध नारियल का तेल होता है। इससे बालों की जड़ें मज़बूत होती हैं और बाल स्वस्थ और घने उगते हैं। टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल—गुलाब, लॅवेण्डर, चमेली और पुष्पा—इन चार मनभावन सुगन्धों में मिलता है।

बालों को सदा सुन्दर रखने के लिये टाटा का कोकोनट हेअर ऑइल

SHBI-TCO-94 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और लोगों ने भी बताया था। एक वह आदमी, जिसकी मैंने घड़ी चुरायी थी। दूसरा वह, जिसने मुझे कब्रिस्तान में भूत की भांति घूमते देखा था।"

"इनके अतिरिक्त किसी और ने भी कहा था ?"

"हां, बहुतों ने। एक पड़ोसी कहता था कि उसे बड़ी रात गये बरामदे में किसी के चलने की आवाज सुनाई देती है। एक ने मुझे अपने कमरे में घुसने के लिए दोषी ठहराया था। मगर तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो ?"

सैंटो हंसा –"क्षमा करना दोस्त। मैं जिरह नहीं कर रहा। मैं तो यह विश्वास नहीं कर पा रहा हूं कि तुम्हारे-जैसा बुद्धिमान व्यक्ति कैसे इस फंदे में फंस गया। निद्राचर को तो कुछ मालूम ही नहीं हो सकता, जब तक कि दूसरे न कहें। यही हाल डाक्टरों का है। जब तक आप उन्हें न बतायें कि आप नींद में चलते हैं, उनके लिए निद्राभ्रमण के रोग का निदान करना असंभव है। हो सकता है, मैं तुम्हें शक्की मूर्ख लगूं; पर मैं अपने स्वभाव से लाचार हूं। मुझे जब तक प्रमाण न मिले, मैं सहज ही किसी बात पर विश्वास नहीं कर पाता। मैं तुमसे यह जानना चाहता हूं: क्या तुम्हें पूरा यकीन है, एकदम पक्का विश्वास है कि तुम नींद में चला करते थे ?

"आरंभ में तो मैं भी विश्वास नहीं करता था; पर जब दौरे बार-बार पड़ने लगे..."

सैंटो बीच में ही बोल उठा–"देखो, निराधार बातें न करो। सिर्फ यह बताओ तुम्हें पता कैसे लगा कि दौरे ज्यादा पड़ने लगे हैं ?"

"मैंने कहा न कि लोग मुझे कहते थे। इसके अलावा जब दौरा पड़ता था, मैं किसी की कोई चीज उठा लाता था। चीजें आखिर अपने आप तो चलने-फिरने से रहीं ?"

"यही तो बात है। यह तो एक मूर्ख भी जानता है कि चीजें आराम से इधर-उधर की जा सकती हैं, अगर ऐसा करने से किसी का कोई मतलब सधता हो। तुमने जितने साक्षियों के नाम गिनाये हैं, मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए उस आदमी को ही ले लो, जिसने तुम्हें कब्रिस्तान में घूमते हुए पाया था। लगातार यह सुन चुकने के बाद कि तुम्हें नींद में घूमने का मर्ज है, क्या उसे यह मालूम करना चाहिये था कि वह 'भूत' तुम्हीं हो या नहीं? यही बात दूसरे गवाहों पर भी लागू होती है। मैं दावे के साथ कहता हूं कि इसके पीछे जरूर किसी चालाक व्यक्ति का हाथ था और वह व्यक्ति और कोई नहीं, किमूरा था, जो तुम्हारा मित्र बनकर अपना स्वार्थ साध रहा था।"

"किमूरा ?"

"हां, किमूरा।" सैंटो जोर देकर बोला– "मान लो कि किमूरा की मकान मालिक से दुश्मनी हो, यहां तक कि वह उसे मार डालना चाहता हो। जैसा कि हर अपराधी चाहता है, किमूरा भी यही चाहता हो कि ऐसा करने के बाद वह पकड़ा न जाये। ऐसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिस्थिति में कोई जाल रचने के सिवा और रास्ता ही क्या है। भाग्यवश इस काम के लिए उसे तुम्हारा जैसा सीधा-सादा सहज विश्वासी और कमजोर मन का आदमी मिल गया। फिर और क्या चाहिये ? वह बड़ी चतुराई से एक-एक चाल चलता गया। पहले तो उसने यह सूराग लगा लिया कि बचपन में तुम्हें नींद में चलने की बीमारी थी। फिर तुम्हारे मस्तिष्क में यह बात बैठा दी कि तुम्हें वह बीमारी फिर से हो गयी है। इसके बाद उसने घड़ी आदि चुराकर तुम्हारे कमरे में डाल दी और अगले दिन सबके सामने तुम्हें अपराधी प्रमाणित कर दिया। उस रात भी वही तुम्हारे वेष में कब्रिस्तान में घूमा; पर अफवाह तुम्हारी उड़ी। अंत में जब तुम्हारे इस निद्रारोग की बात चारों ओर अच्छी तरह फैल गयी, तो एक दिन अपनी पूर्व-योजनानुसार उसने मकान-मालिक की हत्या कर दी। तुम्हारा रूमाल चुराकर शव के पास डाल दिया, साथ ही रुपये-पैसे पोटली में बांधकर तुम्हारे कमरे में रख गया। तुम शायद यह सब सोच ही नहीं सकते। पर असलियत वास्तव में यही लगती है।"

इहारा ने जब यह अद्‌भुत बात सुनी, तो उसकी सारी देह थर-थर कांपने लगी—"लेकिन किमूरा की आत्मा क्या कहती होगी ? मान लो, मुझे फांसी हो जाती ?"

"हां, तुम्हारी इस बात में वजन है। पर मेरी स्थापना से इसका भी निराकरण हो जाता है। तुम क्या यह नहीं जानते कि निद्राचर को उन अपराधों के लिए सजा नहीं दी जा सकती, जिनके बारे में उसे पता नहीं है कि वे उसने किये हैं ? नहीं, मेरे दोस्त, किमूरा अच्छी तरह जानता था कि तुम छूट जाओगे। इसीलिए उसने तुम्हारी कोई चिंता नहीं की।"

इहारा निरुत्तर हो गया। सैटो बोला—"मुझे इन बातों के लिए माफ करना। मैंने तो इसीलिए यह जिक्र किया कि तुम अपने को अपराधी महसूस कर रहे थे और मैं तुम्हें बिलकुल निर्दोष समझता हूं। लेकिन अगर तुम अब भी अपने को हत्यारा समझते हो, तो मैं तुम्हारे विचार को बदलने के लिए और कुछ भी नहीं कर सकता।"

इहारा ने सांत्वना के शब्द सुने; पर उसका मन दूसरे विचारों में डूबा रहा। धीरे-धीरे उसने अपनी निगाह उठायी और सैटो के चेहरे पर गड़ायी। सैटो सिर झुकाये बैठा था। ठंडी हवा का एक झोंका आया और वह सिहर उठा—"ठंड लग रही है। मैं एक बार और नहा आऊं।"

सैटो यह कहकर कमरे से बाहर हो गया। इहारा नजर गड़ाये उसे देखता रहा। उसकी आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं। हाथ में पकड़ी हुई सिगड़ी की छड़ें उसने राख में झोंक दी। एक लंबे क्षण के बाद उसके चेहरे के कठोर भाव ढीले पड़ गये, मुख पर तीखी मुस्कान फैल गयी—"शैतान कहीं का।.....इतनी देर तक मैं जान ही न पाया कि वह कोई और नहीं, किमूरा ही है।"

—रूपांतर: आलोक शीशोदिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रांतिपथ का पथिक

—पृथ्वीसिंह 'आजाद'

[दूसरा भाग]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस स्टेशन के पास मैं चलती ट्रेन से कूद पड़ा था, उसका नाम 'आंगोल' था। यह आंध्रप्रदेश का सुंदर नगर है।

मजिस्ट्रेट ने मेरी सजा एक साल की और बढ़ा दी। मुझे वहां से राजमहेंद्री जेल ले जाया गया।

एक रोज सुबह जेल खुलने के समय मेरी कोठरी के सामने कुछ जमादार कैदी आकर जमा हुए। जेलर आया और उसने मेरी कोठरी का दरवाजा खुलवाया। ज्यों-ही दरवाजा खुला, मेरे दिमाग में यह खयाल दौड़ गया कि आज मेरे साथ उसी प्रकार का सलूक होगा, जैसा कि मेरे बुजुर्ग साथी बाबा मानसिंह के साथ काले पानी की काली कोठरी में हुआ था। जो जमादार कैदी कोठरी के सामने खड़े थे, उनके हाथों में डंडे थे। जेलर बाहर खड़ा रहा और कैदियों को कोठरी में दाखिल होने का हुक्म दिया। मैं समझ गया कि अब मेरे साथ क्या सलूक होगा। मैं उछलकर उठा और जेलर की गर्दन को जा पकड़ा। फिर क्या था! मुझ पर डंडे बरसने लगे और मुझे जमीन पर लिटा दिया। मार तो बहुत पड़ी; पर कोई हड्डी नहीं टूटी। नतीजा यह हुआ कि जेलर ने, जो हमेशा सुबह के समय जेल खुलते ही मेरी कोठरी के सामने से होकर जाया करता था, वह रास्ता छोड़ दिया। अब पहरा और कड़ा कर दिया। राजमहेंद्री सेंट्रल जेल में मेरे कुछ अन्य साथी भी बंद थे। पंडित जगतराम भी वहीं थे। संत रणधीरसिंह को भी वहीं लाकर बंद किया गया था। जब उन्होंने मेरे साथ किये गये बर्ताव को सुना तो उन्हें दुःख हुआ। पर वे लाचार थे। सभी अपने ढंग से कैद के दिन काट रहे थे। मेरी दिलेरी और शक्ति का जमादार कैदियों और दूसरे सिपाहियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इतने घंटे मुझे ईश्वर की आराधना में बैठा देखकर उनके मन में श्रद्धा के भाव पैदा हो चुके थे।

मैं सात साल तक अकेला ही कोठरी में बंद रहा। नवंबर १९२२ में जेल के अधिकारी ने मुझसे कहा कि हुकूमत तुम्हें दूसरी जेल में भेजना चाहती है। तबादले के लिए हमें गाड़ी में बिठाया गया। गाड़ी सिकंदराबाद पहुंची। वहां गाड़ी बदलनी थी। दूसरे रोज सुबह नागपुर पहुंचकर हमें जेल में बंद होना था।

सूरज छिप रहा था। उसके छिपने के साथ-साथ मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे जीवन का भी सूर्य छिप रहा है। १९५१ तक का आनेवाला अंधकार-भरा जीवन मेरे सामने आ खड़ा हुआ। यह सुंदर शाम और वह काल-कोठरी, इस अंतर ने मन में एक नयी हलचल मचा दी। मैं बदन पर अच्छे साफ-सुथरे वस्त्र पहने बैठा था और सिर पर साफा बांध रखा था। मेरी आंखों से मेरे दिल के भाव टपकने लगे। कोई भी देखकर कह सकता था कि उस समय मैं मौत से भी खेल सकता था। मौत के इस वायुमंडल से घिरा हुआ मैं दिन के उजाले में मातृभूमि के दृश्य को निहार रहा था। उस अंग्रेज इंस्पेक्टर की नजर मुझ पर पड़ी। उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माथा ठनका। वह सोचने लगा कि यह कैदी गाड़ी की खिड़की के पास बैठा है। हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़ा हुआ तो है नहीं, अगर वह कूद पड़ा, तो क्या होगा? पंडित जगतराम ने भी मेरी तरफ देखा। उन्होंने मजाक में मुझसे पूछा—"यह जो खेतों में छित्तर थोर की बाड़ लगी है, क्या उसमें से गुजरने की आज भी हिम्मत है?" उनके ये शब्द सुनकर मैं जैसे गहरी नींद से एकाएक जाग उठा। भाग निकलने के भाव को मैं कभी का मन से दूर कर चुका था। मैंने जगतरामजी की ओर घूरकर देखा। उनके सवाल का जवाब नहीं दिया। अंग्रेज इंस्पेक्टर ने पंडितजी के सवाल को सुना था और मेरी नजर पर भी उसकी निगाह पड़ी थी। डर के मारे वह चौकन्ना हो गया। अनजाने ही उसका हाथ पिस्तौल पर जा गिरा। वह सरक कर जगतराम के पास हो गया और कान में बोला कि पृथ्वीसिंह से कह दो, खिड़की के पास से उठकर मेरे पास आकर बैठ जाये।

पंडितजी ने इंस्पेक्टर के शब्दों को दोहराया। मेरे दिल को ये शब्द तीक्ष्ण तीर की तरह चुभे। यह अंग्रेज मेरी तरफ शंका की नजर से देखे। यह मुझे अपमानजनक लगा। मैं सोचने लगा कि मैं बड़ा ही गोबर-गणेश हूं कि मैंने राजमहेंद्री स्टेशन पर अपने मित्रों की सलाह न मानी और सिकंदराबाद के बाजार में घूमकर भी वापस आ गया। उस अंग्रेज ने पंडित जगतराम के साथ जो कनबतिया की, उसने मेरे अंदर सोये हुए भूत को फिर जगा दिया। जिस भागने के खयाल को मैं अपने मन से बिल्कुल निकाल चुका था, वह फिर मुझ पर सवार हो गया। पर मैं अपनी जगह से न उठा। अंग्रेज ने मेरी आंखों से चिनगारियां बरसती देखीं। उसने दो सिपाहियों को मेरे दोनों तरफ बिठा दिया। अब मैं स्वतंत्र नहीं, बंदी था।

मैंने मन में सोचा—कूद पड़ूं? हां कूद ही पड़ूंगा। भले ही गोली का निशाना बन जाऊं। दूसरी बार गाड़ी से कूदकर भागना मंजूर; लेकिन यह अपमानजनक जीवन की अवस्था मुझे गवारा नहीं। मैंने दिल के इस उबाल को दबाने की कोशिश की। कुछ मिनिटों तक अंतर्द्वंद्व चलता रहा। अंत में मन को शांत किया। सूर्यास्त हो चुका था। बाहर के दृश्य में अब कोई आकर्षण न था। मैं स्वयं उठकर इस इंस्पेक्टर की बगल में बेंच पर बैठ गया और चंद मिनिटों में सो गया। मेरे शरीर और मन की हालत ऐसी थी, जैसे मैंने अभी-अभी किसी जबरदस्त पहलवान से कुश्ती लड़ी हो, और उसने मुझे बुरी तरह पछाड़ा हो। आंखें मूंदी, तो भागने का दृश्य फिर सामने आने लगा।

भागने का भूत अब पूर्णतया जाग चुका था। उसने मेरी आंतरिक भावनाओं पर काबू जमा लिया। मैं गहरी नींद में था। उसने मुझे जगाया। कहीं गैब से यह आवाज आ रही थी कि बहादुर बच्चे, उठ, सोता क्या है। यह अच्छा अवसर है। मैं उठा। चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। रेल के डिब्बे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यष्टि और समष्टि

मानव-जाति है एक !
कर्म से और चेतन मन से
व्यष्टि के द्वारा सृष्टि की
सभी क्लिष्टताएं दूर हटा
नित्य जीवन में स्थिरता एक
कर लेंगे यदि स्थापित
तो हां, वही पुष्टि है
समष्टि-मात्र की बराबर
यों ही, समष्टि की पुष्टि है
व्यष्टि के बल पर निर्भर ।

—सुब्रह्मण्य भारती

रूपां० : एस० विवेकानंदस्वामी

हम चार कैदियों और नौ सिपाहियों के सिवा और कोई न था । इंस्पेक्टर और चार सिपाही सो रहे थे । दूसरे चार सिपाही ताश खेल रहे थे । मेरे अस्तित्व का कण-कण सजग था । अब भला नींद कहां ! मैं पेशाब करने के बहाने उठा । उस क्षण तक भागने का कोई पक्का इरादा नहीं था । मैं संडास में दाखिल हुआ । मन की आवाज बुलंद हुई की पागल, तू क्या देखता है । भागना है, तो समय यही है । गहरी नींद से उठा हुआ व्यक्ति जैसे इर्द-गिर्द देखता है, वैसे मैंने भी चारों तरफ देखा । पाखाने में मुझे ऊंचाई पर एक खिड़की नजर आयी । मैंने खिड़की के शीशे को हटाया । मेरा सिर खिड़की से बाहर निकल गया । फिर मेरे शरीर और मन ने बिजली की-सी तेजी से काम किया । डिब्बे की खिड़की का हैंडल नजर आया । उस हैंडल पर मेरा हाथ पड़ा। उसके सहारे सारा बदन मैंने उस पाखाने की खिड़की से बाहर निकाल दिया । चंद्रमा के प्रकाश में नीचे से सारा दृश्य नजर आता था । गाड़ी की रफ्तार कोई ४० मील की होगी । मेरा मन और शरीर एक साथ उछले मैंने ऐसे गुलाट लगायी, जैसे 'पैरेरल बार' का खिलाड़ी लगाता है । अगले क्षण धरती ने मेरे पांव चूम लिये । मैं तनिक भी न लड़-खड़ाया । घुटनों ने भी जमीन को न छुआ। गाड़ी मुझे वहीं छोड़कर अपनी रफ्तार से निकल गयी ।

सन १९४० में जब पंडित जगतरामजी से मिलने का मुझे अवसर मिला, तब उन्होंने मेरे छलांग मारकर भाग जाने के बाद का सारा हाल बताते हुए कहा कि मेरे पाखाने से कूदकर चले जाने के थोड़ी देर बाद सिपाहियों में मेरी पूछताछ शुरू हुई । जब काफी देर तक मैं पाखाने के बाहर न निकला, तो सिपाहियों ने उठकर दरवाजा खटखटाया। दरवाजा न खुला । तब दरवाजे पर बंदूकों के कुंदों की चोटें लगीं। दरवाजा टूट गया। अंदर देखा, तो पिंजरा खाली था । पंछी उड़ चुका था । उन्होंने फौरन गाड़ी की सांकल खींची । गाड़ी ठहरी । पुलिसवालों ने मेरे कुछ कपड़े और हथकड़ी बाहर फेंक दिये और जाहिर किया कि कैदी पृथ्वीसिंह अभी छलांग मारकर भागा है, और इसीलिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाड़ी ठहरायी गयी है। गाड़ी कुछ देर रुकी। आसपास तलाश हुई। वे जानते थे कि मैं कभी का निकल चुका हूं। सबके-सब फिर गाड़ी में बैठ गये और गाड़ी चल पड़ी।

वह २९ नवंबर १९२२ की रात थी। मैं पूरे जोर से भाग रहा था। भागते-भागते मैं मुख्य सड़क पर पहुंच गया। आगे चला, तो मील का पत्थर नजर आया। उस पर लिखा था—" अमरावती दो मील।" अमरावती से मैं बंबई आया। वहां आकर मैं वीर विनायक दामोदर सावरकर के छोटे भाई नारायण दामोदर सावरकर के पास गया। उनकी सहायता से मैं पूना पहुंचा। वहां काका साहब गाडगिल ने आश्रय दिया। वहां भी मैं देर तक न टिका। पुनः बंबई आने पर सावरकरजी ने मुझे भावनगर भेजा। वहां श्री वैशंपायनजी की सहायता से मुझे एक स्कूल में व्यायाम शिक्षक की नौकरी मिल गयी। भावनगर में मैं १९२३ से १९३७ तक रहा।

मेरे चेहरे पर निरंतर हास्य की झलक रहती थी और आंखों में जवानी का सरूर। मेरे जीवन की शक्ति, शारीरिक चपलता तथा देशवासियों के प्रति प्रेम अनायास ही सब पर प्रकट हो जाता था। भावनगर में रहनेवाले जितने भी मनचले नौजवान थे, सब मेरी ओर खिंचे चले आये। मैं सबका लाड़ला बन गया। चौबीसों घंटे भोले-भाले बच्चों के साथ रहता। उनके सहवास से गुजराती भाषा पर मेरा बहुत जल्दी अधिकार हो गया।

व्यायामशाला में नौजवानों की संख्या बढ़ी। भावनगर की व्यायामशाला में एक विशाल स्थान और व्यायाम उपकरणों का अभाव मुझे खटकने लगा। किसी से कुछ कह नहीं सकता था। भय था कि मेरी बात कौन मानेगा। मेरे सहायक और रक्षक श्री-वैशंपायनजी को दूसरे स्थान पर जाना पड़ा। मैंने तपश्चर्या का मार्ग स्वीकार किया। एक दिन लगभग २०० बच्चों के सामने मैंने प्रतिज्ञा घोषित की कि जब तक मैं भावनगर में एक योग्य स्थान पर अच्छी व्यायामशाला स्थापित कर न लूंगा, तब तक मैं दूध और मिष्ठान का सेवन न करूंगा।

भावनगर के सामाजिक जीवन में भी

साथ

चित्रकार : पी० टी० रेड्डी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पनामा
आपको आख़िरी कश तक मज़ा देती है

ऊँचे दर्जे की वर्जीनिया तम्बाकू
संतुलित मिश्रण
हमेशा ताज़ा

गोल्डन टोबॅको कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–५६

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

GT.(P) 63/HIN Greens' Advtg.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे स्थान मिल चुका था। नगर के युवक मेरे इशारे पर चलते थे। एक बार शहर के कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि यहां हिन्दू-मुस्लिम दंगे की संभावना है, क्या आप उसे रोक सकते हैं? मैंने दंगा रोकने का विश्वास दिलाया।

मंदिर और मस्जिद दोनों पर हमला होने का डर था। मैंने लोगों को यकीन दिलाया कि दोनों धार्मिक स्थानों को कोई खतरा नहीं। जिन नौजवानों को सार्वजनिक कामों के लिए मैंने शिक्षण दिया था, उन सबको बुला भेजा। आने के बाद सबको दो भागों में बाँट दिया। सब जानते थे कि मेरा साथी मुस्लिम है। हम दोनों में बड़ा प्यार था। हम एक थाली में खाना खाते थे, इसलिए हम 'मियां-महादेव की जोड़ी' के नाम से भावनगर में मशहूर थे। शहर में हमने खबर पहुंचा दी कि 'मियां' मंदिर की रक्षा करेगा और 'महादेव' मस्जिद की। हमने मिलकर घोषणा की कि 'महादेव' की मृत्यु के बाद ही कोई हिन्दू मस्जिद में दाखिल हो सकेगा और 'मियां' की मौत से पहले कोई मुस्लिम मंदिर में दाखिल न हो सकेगा। शहर में हवा फैल गयी कि 'मियां-महादेव' अपनी जान लड़ा देंगे और फसाद नहीं होने देंगे। हम दोनों अपने नौजवान साथियों को लेकर घूमते रहे। वातावरण शांत हो गया और हमें कुछ भी न करना पड़ा।

१९२४ के अंत में फिर विचार उठा कि मुझे हिन्दुस्तान से बाहर जाकर अपना काम करना चाहिये। भावनगर में डा० काणे से दो सौ रुपये लेकर चटगांव पहुंचा। और वहां से रंगून की राह ली। बर्मा में पिताजी भी रहते थे। उनसे मिला, तो उन्होंने मुझे समझाया– "बेटा, अब तू किसी सुरक्षित स्थान में बैठकर किसी रोजगार-धंधे में लग जा।"

मगर मैं न माना। सूरज निकलने से पहले ही मैंने जंगल की राह ली। मैंने कह दिया–"जब तक भारत पर अंग्रेजों का राज है, मुझे आपके चरणों में रहकर सेवा का अवसर नहीं मिलेगा।" मैं वहां से फिर रंगून आ गया और योजना बनायी कि मुझे स्याम कैसे पहुंचना है। वहां मैं जहाज पर जा सकता था; पर उसके लिए पासपोर्ट की जरूरत थी। अतः वह रास्ता मेरे लिए बंद था। मेरे सामने सिर्फ जंगलों और पहाड़ों का रास्ता ही था। रास्ते में दो बड़ी नदियों से गुजरना था। यह किस प्रकार हो सकेगा, इसकी कल्पना करना भी कठिन था। परंतु इसके सिवा मेरे पास और कोई रास्ता ही न था।

मैंने तेज धड़ाका करनेवाली एक नकली पिस्तौल खरीदी और एक गुप्ती भी। रंगून के पास ही मौलमीन नाम का एक शहर है। नदी के छोटे जहाज में बैठकर मैं वहां पहुंचा। मैंने गाय खरीदनेवाले का वेष धारण किया और ग्वालों के पास जानकारी हासिल करने की कोशिश की कि अच्छी-अच्छी गायें किन गावों में मिल सकती हैं, और उनकी कीमत क्या होती है। साथ-साथ उन गांवों में रहने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेशनल एक्को का
एक सुन्दर नया मॉडल

रेडियो-निर्माण के क्षेत्र की भारत की अग्रणी कंपनी नेशनल-एक्को बड़े गर्व से आपकी सेवा में अपना नया मॉडल यू-८१९ प्रस्तुत करती है! यह मॉडल नेशनल-एक्को के परम्परागत उच्च नियमों के अनुसार बना हुआ और उत्कृष्टता के लिए बड़ी बारीकी से जाँचा-परखा हुआ है। इस पर सभी कार्यक्रम बिल्कुल साफ़ और हूबहू आवाज़ में सुनाई देते हैं। अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ पधारिए और अपने मनपसन्द स्टेशन के कार्यक्रम ख़ुद ही सुनकर देखिए!

मॉडल यू-८१९:
एसी/डीसी सेट।
३ वेव-बैण्ड,
५ वाल्व,
बेकलाइट कैबिनेट।
रु. २९८.००
क़ीमत में एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है;
टैक्स अलग।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · दिल्ली · बंगलोर
सिकन्दराबाद · पटना

नेशनल एक्को मॉन्सूनाइज़्ड रेडियो

भारत की सबसे बड़ी रेडियो फ़ैक्टरी में बनते हैं

IWT-ORA. 3210

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम भी मैंने लिख लिये। अब गायों का व्यापारी बनकर मैंने स्याम की सीमा की तरफ अपना रुख कर लिया। मेरा काम था गायों का व्यापार। मैं गायों का दूध दुहता और उनका मोल आंकता। इस प्रकार दिन-भर में दो-तीन बार अच्छा दूध पीने को मिल जाता। भोले-भाले किसान भाई मुझे व्यापारी समझकर पैसे भी न लेते। इस तरह गांव-गांव फिरते-फिरते एक सप्ताह निकल गया। रात के समय बर्मी साधुओं की कुटिया में सो जाता और दिन-भर चलता रहता।

वह प्रदेश मलेरिया का घर है। मुझे भी मलेरिया ने घर दबाया। बीमारी की हालत में आगे बढ़ना असंभव था। मैं लगभग दो महीने के बाद मणिपुर की एक सर्कस की पार्टी के साथ फिर कलकत्ता पहुंच गया। वहां मैंने फिर व्यायाम-शिक्षक का कार्य शुरू कर दिया।

कुछ समय बाद पुनः देश में सत्याग्रह-आंदोलन शुरू हो गया। इन्कलाबी पार्टी ने भी जोर पकड़ लिया था। मुझे भी इन्कलाबी धनवंतरि ने खोज निकाला। वह भगतसिंह का पैगाम लाया था। उसके अनुसार मैं चंद्रशेखर आजाद और सुखदेव से इलाहाबाद में मिला। उन्होंने मुझे बताया कि वे हकूमत के दिल में आतंक बैठाना चाहते हैं।

मैंने भी एक ऐसा काम करने का निश्चय किया, जिससे अंग्रेजों के दिल में आतंक की छाया बैठ जाये।

बंबई शहर में एक लैमिंग्टन रोड पुलिस स्टेशन है। वही मेरा कार्यक्षेत्र बना।

रात के ग्यारह बजे होंगे। सिनेमा के शौकीन अपने घरों को लौट रहे थे। चांदनी छिटकी हुई थी। हम किसी को शिकार बनाते हैं, या हमें कोई शिकार बनाता है, यही विचार मन में घुल रहे थे। पुलिस स्टेशन और सड़क पर पूरी रोशनी थी। पुलिस स्टेशन के सामने हमने गाड़ी रोक दी। स्टेशन से चार गोरे सार्जेंट बाहर निकले। वे चारों जमीन पर लेट गये। हम स्टेशन पर गोलियां बरसाने लगे। इतने में एक मोटर आकर रुकी। मोटर में जो बैठे थे वे न जान सके कि यह 'फुलझड़ी' कैसे लग रही है। वे मोटर में से नीचे उतरे। एक अंग्रेज और उसकी मेम गोली के निशाने के सामने आ गये। एक गोली मेम की टांग में लगी और वह गिर पड़ी। अंग्रेज ने उसे उठा लिया। औरत को उठाकर वह चल पड़ा। हमने गोलियां बरसाना बंद कर दिया। जो मोटर सामने खड़ी थी, उस पर भी कुछ गोलियां दाग दीं। हेतु यह था कि उस मोटर के टायर फट जायें और मोटर हमारा पीछा न कर सके। यह सारा खेल चंद मिनिटों में पूरा हो गया। एक औरत को गोली लगी, यह देखकर हमारा मतवालापन उड़ गया था। किसी को जख्मी करने या निशाना बनाने का हमारा इरादा न था। हमने गाड़ी चलायी और भाग निकले। सारी सड़क सूनी पड़ी थी। मोटर बढ़िया थी। ६० मील की रफ्तार से हम भाग रहे थे। हमारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ममता की कसौटी पर खरा– डालडा

डालडा बढ़ते हुए बच्चों के लिए गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं और यह केवल मुद्रबन्द डिब्बों में सदा शुद्ध, सदा ताज़ा मिलता है। डालडा में बनी सब चीज़ें परिवार भर को अत्यन्त प्रिय हैं। आप भी आज से अपने लाड़लों को डालडा वनस्पति में पके स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन खिलाइए।

डालडा वनस्पति...एक विशेष शुद्ध चिकनाई

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

लिंटास – DL-417-77 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछा करनेवाला कोई नहीं था। हम इतनी तेजी के साथ निकले कि हमें सामने से आकर रोकने का किसी को समय ही न मिला। हम मोटरवाले के मकान पर जा पहुंचे। मोटर का मालिक भी हमारा हम-ख्याली ही था। उसे सारा किस्सा सुना दिया।

मोटर-मालिक ने पुलिस को सब हाल बता दिया। उसके बयान पर सारे पकड़े गये। मैं जंगल और पहाड़ियों को पार करता हुआ बंबई से २० मील दूर निकल गया। वहां से गाड़ी में बैठा। गाड़ी सिगनल न मिलने से रास्ते में रुकी। मैं गाड़ी से उतर गया और खेतों से होता हुआ नवसारी जा पहुंचा।

वहां से मैं वड़ौदा पहुंचा। मगर अब पुलिस मेरी तलाश में दिन-रात लगी थी। मैं वेष बदलकर देश से निकलने का तरीका सोचने लगा।

मैंने दाढ़ी-मूंछ और सिर पर उस्तरा फिराकर साधु का वेष बना लिया। चेहरे पर तेज था ही। भाषा और विचारों पर मेरा अधिकार था। मैं साधुओं के हर प्रकार के सवालों के जवाब देने के योग्य बन गया।

आबू पहाड़ के निकट देवी का एक बड़ा भारी स्थान है। गुजरात की भावुक जनता उस स्थान पर पूजा के लिए जाती है। जंगल के बीच पहाड़ों में यह बड़ा रमणीय स्थान है। इसकी ख्याति सुनकर मैं उस तरफ खिंच गया। अंबा माता का यह मंदिर बड़ा विशाल है। मैं मंदिर के महंत से मिला। उसने मुझे देखा और कुछ बातें कीं। वह काफी प्रभावित हुआ। एक आलीशान चबूतरे पर मुझे रहने के लिए स्थान दिया गया। दूसरे रोज एक गुजराती पुलिस अधिकारी उस महंत के पास आया और कहने लगा। कि कल मेरे यहां भोजन करने की कृपा करें। महंत ने जवाब दिया—" साधु को भोजन देकर यश कमाना है और आशीर्वाद लेना है, तो जाओ, उधर एक चबूतरे पर एक साधु है, जो बड़ा तपस्वी है। अगर वह निमंत्रण स्वीकार कर ले, तो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हो जायेगा।"

पुलिस-अधिकारी मेरे पास आया। मैं प्राणायाम कर रहा था। उसने बड़ी श्रद्धा से मुझे प्रणाम किया और आदर सहित बैठ गया। कहने लगा—"मैं आपका आशीर्वाद लेने आया हूं।" मैंने हंसकर जवाब दिया—"दे दिया, जाइये, मैं अपने काम में लगा हूं।" वह बोला—"मैं तो आपको भोजन कराकर ही आशीर्वाद लूंगा। मैं पुलिस में अफसर हूं, इंस्पेक्टर हूं। अंबा माता के दर्शन के लिए परिवार को साथ लाया हूं।" यह सुनकर मैंने कहा—"कौन-सा पाप किया है? भोले-भाले साधु का आशीर्वाद लेकर क्या पापों के फल से बचना चाहते हो?" पुलिस अफसर का नाम सुनते ही खयाल आया कि मुझे गिरफ्तार करने के लिए जो प्रकाशन हुआ है, शायद वह इसकी जेब में ही पड़ा हो। मेरा फोटो भी इसने देखा होगा। मैं हंस-हंस कर बातें कर रहा था। अंत में मैंने उसकी मांग स्वीकार कर ली।

उसकी पत्नी ने बड़े प्रेम-भाव से खाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाकर खिलाया। सवा रुपया और एक कोरी धोती देकर उन्होंने आशीर्वाद की मांग की। मैंने हंसकर कहा—"यह ऐसा साधु नहीं, जो रिश्वत लेकर आशीर्वाद दे। मुझे न कपड़े की जरूरत है, न पैसे की। आप-जैसे दानी कदम-कदम पर मिलते हैं। पैसे का क्या करूंगा? कपड़ा मेरे पास काफी है। वजन बढ़ाने से क्या लाभ?" और मैंने पैसे व धोती के हाथ लगा दिया और कहा—"यह सवा रुपया और धोती संभालकर घर में रखना। सदा सुखी रहोगे। किसी बात की कमी न रहेगी।" पुलिस-अफसर आशीर्वाद पाकर महंत के पास गया और पच्चीस रुपये का चढ़ावा चढ़ाकर कहने लगा—"आपने मुझ पर बड़ी भारी कृपा की, जो एक महान तपस्वी के दर्शन करा दिये। उनका आशीर्वाद पाकर मैं सदा के लिए सुखी हो गया हूं।" यह सुनकर महंतजी बहुत खुश हुए। मेरे लिए उनका मान और प्रेम और भी बढ़ गया।

मेरा लिबास तो साधु का था; पर मैं शस्त्रों का भी सुंदर रीति से उपयोग कर सकता था। गांववालों को यह पता लगा, तो बोले—"साधु महाराज! यहां एक मील के फासले पर एक पहाड़ी पर हमने आपके लिए एक अच्छी कुटिया बना देने का निश्चय किया है।" मेरे लिए इन्कार करना कठिन हो गया।

पास के गांव में एक शेर ने एक बछड़ा मार डाला। गांव के किसान रोते-चिल्लाते जागीरदार के पास आये। जागीरदार ने किसानों से कहा कि वे आस-पास के गांव के किसानों को जमा करें। वे कल रात शेर के शिकार के लिए जायेंगे। गांव के पास ही पहाड़ी पर अच्छा-खासा जंगल था। गांववालों ने कहा कि शेर इस पहाड़ी के जंगल में छिपा है। पहाड़ पर शिकार के लिए एक ईंटों की बुर्ज बनी थी। ठाकुर दौलतसिंह उस बुर्ज पर बंदूक लेकर बैठ गये। किसानों ने तीन तरफ से जंगल को घेर कर शोर मचाया और ढोल बजाना शुरू किया। शेर के लिए बुर्ज के सामने से जाने से सिवा और कोई रास्ता नहीं था। मैं भी तमाशा देखने के लिए शिकार की पार्टी के साथ हो लिया था। ठाकुर साहब ने मुझे बुर्ज पर बैठने के लिए कहा। मैंने कहा कि मैं तो नीचे खड़ा होकर ही तमाशा देखूंगा। कुछ बहादुर सिपाही बंदूकें भरकर बुर्ज के आस-पास नीचे खड़े थे। मुझे काफी समझाया गया कि नीचे खड़े होने में जान का भय है। मैंने हंसकर जवाब दिया कि "संन्यासी मौत से नहीं डरता।" ठाकुर साहब का निशाना खाली नहीं जाता, इसका मुझे ज्ञान था और दूसरे शिकारी भी मेरे पास खड़े थे। भले ही और सबका निशाना चूक जाये; लेकिन मुझे अपने निशाने पर तो पूरा भरोसा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारह गोलियों की भरी पिस्तौल मेरे पास थी, जिसका किसी को पता न था। सब पर प्रभाव डालने के लिए मैंने कहा कि अगर आप सभी चूक जायें, तो भी मैं खाली हाथों शेर का मुकाबला करने की शक्ति रखता हूं। सभी लोग संन्यासी की दिलेरी की कद्र करने लगे।

शेर छलांग लगाता हुआ बुर्ज के सामने से निकला। तीसरी छलांग पर वह पहली ही गोली के निशाने से उछलकर जमीन पर ढेर हो गया। दूरबीन से ठाकुर साहब ने देखा कि शेर तड़प रहा है और उसके शरीर से खून बह रहा है। कुछ देर के बाद शिकारी उसके पास पहुंचे और देख लिया कि अब उसमें जान नहीं रही। ठाकुर साहब बुर्ज पर से उतरे। शेर के पास खड़े हो गये। फोटो लिया गया। मुझे भी पास खड़ा किया गया। फोटो खींचते समय मैंने अपना मुंह फेर लिया। नौजवान ठाकुर साहब को संन्यासी ने आशीर्वाद दिया। ठाकुर साहब बड़े खुश थे। कहने लगे—"इस शेर का शिकार आपके आशीर्वाद से हुआ है। इसलिए इसकी खाल को कमा कर और सजाकर आपको भेंट करूंगा।" वैसा ही किया गया। पच्चीस रुपये, कोरा कपड़ा और शेर की खाल मुझे भेंट की गयी। रुपये और कपड़ा तो मैंने लौटा दिये; पर शेर की खाल स्वीकार कर ली और उन्हें आशीर्वाद दिया।

मैंने साधु का लिबास तो पहन रखा था; लेकिन साधु-संतों से मैं अभी तक दीक्षा नहीं ले पाया था। साधु-संत अपने भक्तों को

अभिव्यक्ति अभिशापित

शब्दों की भूमि हुई बंजर
भावों के बीज नहीं उग पाते
मन की अंधियारी-गहरी घाटी में
इच्छा-शिशु घुट-घुटकर मर जाते।
कल्पना कोमल उड़ने को लालायित
पर, इसके पंखों को गिद्ध, चील,
कौए-नोंच-नोंच खाते।
ओ रे युग-व्यक्ति!
तेरी अभिव्यक्ति अभिशापित है,
गूंगी है,
तेरा संवेदन तुझ तक ही सीमित है।
जीवन का बोझ लाद
सुख-दुःख की गांठ बांध
ऐसे असहाय हाय
कब तक यूं अश्वत्थामा-सा घूमेगा।
आ, ओ, मेरे पास आ,
उंगलियों को नचा
हाथों को उठा, आंखें तरेर
दांत भींच, मुंह बिचका
सांसें खींच और सीना फुला
नयी-नयी चेष्टा, नये-नये रूपों में
नये-नये संकेतों, नये-नये बिंबों में
अपने अंतर के खारे-मीठे सागर को
उन्मुक्त छलकने दे
भीतर की आंधी को बाहर मचलने दे
जो तेरे भावों से
आकाश भर जाये
तेरी अनुभूति धरती को व्याप जाये।

— रमेशचंद्र कौशिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या कुछ ऐसी भी खाद्य वस्तु है जो आपके पेट को सहन नहीं होती है ?

अधिकांश लोगों को कुछ खाद्य वस्तु सहन नहीं होती है। उसको खाने से बदहजमी और कब्जियत होती है। ऐसी अवस्था में आपको फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया लेना चाहिये। न सहन होनेवाले भोजन से जो बदहजमी, सीने की जलन, खट्टी डकार, जी मिचलाना आदि होता है उसको फिलिप्स तुरन्त दूर करता है। कब्जियत को फिलिप्स आसानी के साथ पूरी तौर पर दूर करके पेट को स्वाभाविक अवस्था में ले आता है। अतएव अब यदि आप कभी अधिक भोजन कर लें तो तुरन्त फिलिप्स मिल्क ऑफ मेगनेसिया लें और निश्चिन्त हो जायँ।

फिलिप्स

मिल्क ऑफ मेगनेसिया

प्रस्तुतकारक : रजिस्टर्ड यूजर : देज मेडिकल स्टोर्स (मैनुफैक्चरिंग) प्रा० लि०
६२, बुन्देल रोड, कलकत्ता-१९

PXDW—HD

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किस प्रकार शिक्षण देते रहते हैं इसका सभी को भली-भांति परिचय है। दो रोज के बाद लोगों को पता चल गया कि धर्मशाला में एक खास प्रकार का योगी आया है। कुछ पढ़े-लिखे लोग आने लगे। उनमें दो भावुक वकील भी थे। कुछ चर्चा हुई। शाम के समय एक साध्वी आयी। वह साफ-सफेद कपड़े पहने थी। उसके चेहरे से भक्ति का तेज टपक रहा था। साथ में चार और नौजवान औरतें थीं। एक वकील भी साथ में था। वह मुझसे कहने लगा कि माता भूरीबाई आपको अपने आश्रम पर ले जाने के लिए आयी हैं, अतः कृपा कीजिये। मुझे उनकी मांग को स्वीकार करने में बड़ा भारी संकोच हो रहा था। एक ममता का फंदा काटकर भागा था, दूसरा तैयार पाया। मैं उठा और उनके साथ चल पड़ा।

भरीबाई को नाथद्वारा में बड़ा भारी मान प्राप्त था। उन्होंने बड़ी आवभगत से मुझे अपने आश्रम में आसन पर बैठाया। जब कोई सम्माननीय व्यक्ति विशेष का आदर करता है, तब वह व्यक्ति सबकी नजरों में सम्मान का पात्र बन जाता है। मैं अपने आपको देखता था और ईश्वर-भक्ति में लीन हुए उन भक्तों को देखता था। वे बड़े सम्मान के साथ मेरी सेवा में लगे थे। मेरे मन में अपने इस नाटक के विषय में उस समय अनेक विचार पैदा हो रहे थे। वे सारे ईश्वर भक्ति के जीव थे और मैं अपने खेल में लीन था। मैं पूर्ण रूप से सचेत था। साध्वी भूरीबाई और उनके सब साथी ईश्वर के दरबार में याचक बनकर खड़े भक्ति का दान मांग रहे थे, और मैं खड़ा था एक दानी के रूप में, जो अपने देश के लिए जीवनदान करने के लिए तुला हुआ था। उनकी आंखों में कल्याण-याचना थी, और मेरी आंखों के सामने भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद और धन्वंतरि की त्रिमूर्ति नाच रही थी।

इस तरह मेरे पंद्रह रोज बीत गये। मेरे लिए यह साधना-काल था। फिर से मोह-माया के बंधनों को तोड़ने का इरादा करना पड़ा। समस्या काफी जटिल बन गयी थी। एक तपस्विनी साध्वी मेरी सेवा में लगी थी। मैं राजनैतिक वातावरण से दूर हट-कर खड़ा था। अंत में मैं नाथद्वारा के प्रलोभनों को ठुकराकर उठा और हल्दीघाटी का रुख लिया।

साध्वी भूरीबाई के स्थान पर मैं खड़ा न रह सका। उनके स्नेहपूर्ण, निर्मल और साधुत्व के भावों ने मुझ पर बड़ा भारी असर पैदा किया था। उन्होंने मेरे मन में एक खास स्थान बना लिया था। उनकी याद को मैं कभी नहीं भुला सका। कई साल तक मेरी इच्छा रही कि उनके दर्शन करूं और क्षमा मागूं तथा कहूं कि मैंने साधु के लिबास में आकर आपको ठगा था।

नाथद्वारा से चलकर मैं रास्ते में एक साधु के स्थान पर रुका। हल्दीघाटी के दर्शन किये। फिर उदयपुर पहुंचा। वहां से मैंने कराची का रुख किया। सन १९३१ का कांग्रेस का कराची-अधिवेशन अपनी किस्म का निराला ही था। सरदार भगतसिंह,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजगुरु और सुखदेव की मौत के आदेश ने देश को दहला दिया था।

कराची कांग्रेस में मेरा परिचय खान अब्दुल गफ्फार खां से हुआ और उनकी सहायता से मैंने काबुल जाने का निश्चय किया। पेशावर पहुंचकर मैं १० दिन तक सुर्खपोशों की छावनी में रहा। १० दिन बाद डा० खान आये, तो मुझे उनके उतमंजई नाम के गांव में पहुंचा दिया गया। करीब एक महीना पठानों के बीच रहकर मैं भी पठान ही बन गया था।

वहां से मैं हाजी तुरंगजई के स्थान पर जाने के लिए चल पड़ा। यह काफी लंबा सफर था। सूर्यास्त होने के बाद हम उस गांव में पहुंचे, जहां से सुबह काफिले में चलना था।

सफर की थकावट से मन में अनोखी बेचैनी हो रही थी। जहां काफिले के लोग जमा होकर पड़े थे, वहां मैं भी दूसरों से जरा दूर हटकर लेट गया। मैं तो किसी से बातचीत करना नहीं चाहता था और साथ ही यह भी चाहता था कि मुझसे कोई बात न करे। अगर कोई कुछ पूछता, तो मैं कान पर हाथ रखकर उसकी तरफ देखने लगता। वह थोड़ा मुस्कराकर दूर हट जाता। मैं जमीन पर लेटकर आसमान की तरफ देखता रहा। बार-बार यही खयाल आता कि कल के सूर्य को आजाद आसमान पर चढ़ते देखूंगा या जेल की काली कोठरी में पड़ जाऊंगा। इसी प्रकार विचार करते-करते मैं सो गया। जोर की बूंदें पड़ने लगीं। सब उठकर भागे। मैं भी उनके साथ हो लिया। सब एक मस्जिद में जाकर इकट्ठे हो गये। जिसको जहां जगह मिली, वहीं लेट गया। मैं भी लेटा। किस तरफ सिर और किस तरफ पांव करके सोना होता है, इसका मुझे पता न था। एक मुसाफिर ने उठकर मुझे लात मारी। उसने कहा—"दिखता नहीं, मक्के की तरफ पांव करके सोता है।" बड़ी सख्त गलती थी। तोबा-तोबा करके मैं उठा और पांव की दिशा बदलकर फिर सो गया। नमाज का वक्त आया। सब नमाज में लग गये। मैं भी उसी तरह उनके साथ शामिल हो गया। उनकी नकल करने में कोई कठिनाई नहीं थी। खाने के लिए कुछ था ही नहीं। पेट में पानी भरकर सबके साथ चल पड़ा। आकाश में बादल थे। रास्ता साफ नजर नहीं आता था। जूते पहनकर गोल पत्थरों पर चलना दुश्वार था, लिहाजा जूते हाथ में लेकर चल पड़ा। अनेक बार सख्त ठोकरें खाकर बुरी तरह गिरा। चोटें भी आयीं। न कोई पूछनेवाला था, न देखनेवाला। जो सबका हाल था, वही मेरा था।

कभी-कभी काफिले पर हमला होकर लूटमार भी होती थी। हम भयानक स्थान से गुजर रहे थे। सब सावधान थे कि कब हमला होता है और कब कौन गोली का शिकार होता है। हम आगे बढ़ते जा रहे थे। पौ फट रही थी। सूर्य के प्रकाश में मैंने अपने चारों तरफ देखा। मैं अंग्रेजी हुकूमत की जेलों की कोठरी से दूर आ गया था।

चारों ओर पहाड़ों की चोटियां दिखाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देती थीं। एक शिखर के बाद दूसरा शिखर आता जाता था। पानी नहीं, बस्ती का नामो-निशान नहीं। नंगे पत्थर तप रहे थे, जिन पर पांव भी नहीं रखा जाता था। ठोकरें खा-खा कर पांव की अंगुलियां छिल गयी थीं। जूते पहने नहीं जाते थे। अंग्रेजी हुकूमत के फंदों से कामयाबी के साथ निकलकर मैं अपनी मंजिल की ओर जा रहा था। देशप्रेम के नशे में सब कुछ सहता हुआ मैं चलता जा रहा था। एक पहाड़ी के उच्च शिखर से उतरकर हम नीचे पहुंचे। सामने से अंग्रेजी हुकूमत का एक नौकर आ मिला। वह हिन्दी पठान था। उसने मुझे देखते ही पहचान लिया कि यह जरूर कोई अंग्रेज हुकूमत का दुश्मन छुपकर भाग रहा है। हिन्दुस्तानी में उसने मुझे पूछा। मैंने जवाब न दिया। बाद में वह पश्तो में बोलने लगा। तब भी मैंने जवाब न दिया। वह गालियां बकने लगा और मुझे धमकी दी कि तुझे पकड़कर ले जाऊंगा। मेरा साथी 'मुल्ला' मुझसे कहीं आगे निकल गया था। उस अंग्रेजी हुकूमत के नौकर की गालियां सुनकर मैं मुस्करा दिया और धमकी का भी कोई जवाब न दिया। मेरा हाथ पकड़ने के लिए उसने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे चेहरे की तरफ देखा। मेरी आंखों का रंग बदल चुका था। मुझे अपनी ताकत पर पूरा भरोसा था। हम दोनों को नजदीक से देखनेवाला कोई नहीं था। मुझे देखकर वह शिकार बनाना चाहता था। लेकिन जब उसने मेरी आंखों में अपनी मौत को देखा, तो फिर अपना हाथ खींच लिया। कोई बात उसके मुंह से न निकली। वह दबे पांव वहां से चल पड़ा। मैं खड़ा-खड़ा उसकी तरफ देखता रहा। उस भले आदमी ने फिर पीछे मुड़कर भी न देखा।

हमने काबुल का रास्ता पकड़ा। काबुल का दो रोज का सफर था। जिस लारी में बैठकर मैं काबुल पहुंचा, उसका ड्राइवर हिन्दू था। उसने मुझे हमारे साथियों के अड्डे पर पहुंचा दिया।

वहां से मैं गजनी पहुंचा। रात वहीं ठहर कर हम लारी में बैठकर कन्धार पहुंचे और वहां से हेरात गये। फिर आगे की राह ली।

सुबह के चार का वक्त होगा। सामने

बूंदों की बात

काल के प्रवाह में आंसू की दो बूंदें चू पड़ीं। एक ने ठंडी आह भरकर दूसरी से कहा—"जानती हो, मैं कौन हूं? एक युवती के सुंदर युवा पति को किसी दूसरी स्त्री ने मोह लिया, तो उस दुःख में वह युवती आंसू बहाने लगी थी। मैं उसी के आंसू की बूंद हूं!"

इस पर दूसरी ने टोका—"इसके लिए तुम क्यों रोती हो? जिस स्त्री ने उस परपुरुष को अपने जाल में फंसा लिया था, वह अब पश्चाताप के आंसू बहा रही है कि कैसे क्रूर पुरुष से हमारा पाला पड़ा है। उसी के आंसू की बूंद मैं हूं!

—रा० वीलिनाथन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

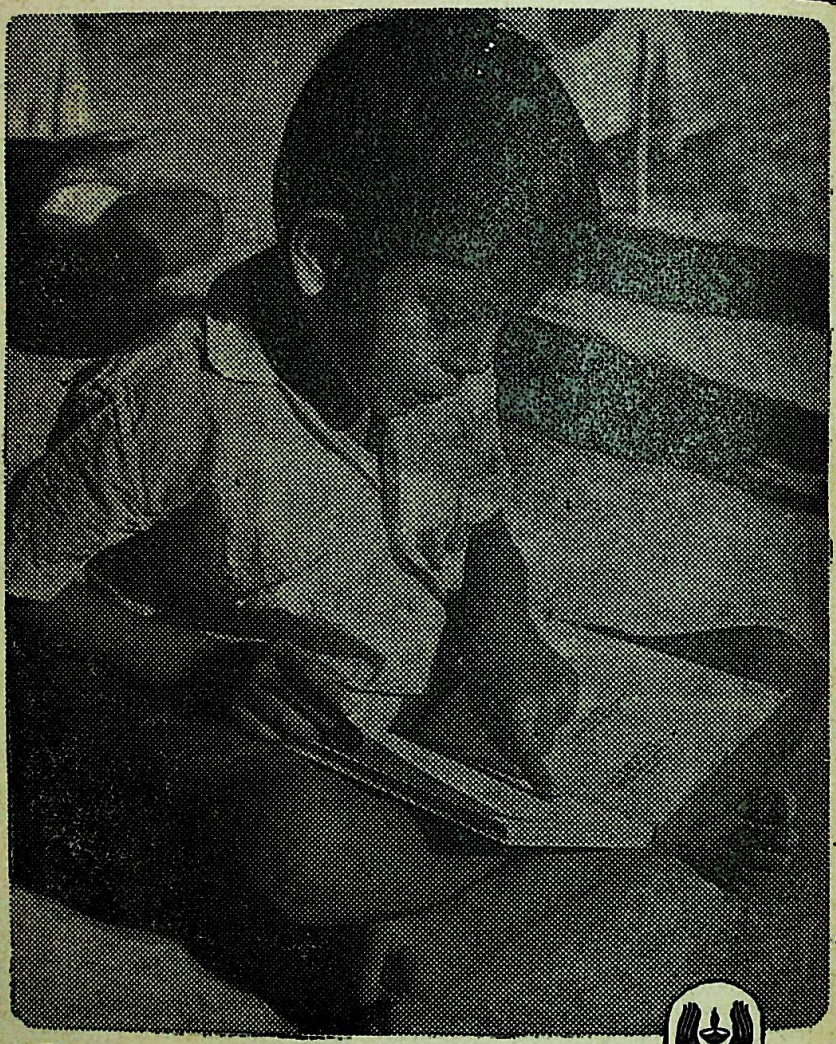

शिक्षा के बल पर बालक भविष्य का सामना करने में समर्थ बन जाता है।

आप भी उसकी पढ़ाई का प्रबन्ध जीवन बीमे के जरिये क्यों नहीं कर लेते?

ASP/LIC/Z-32

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से एक माल से लदा हुआ ऊंट भागता हुआ आ रहा था। पीछे-पीछे उसका मालिक चिल्लाता और दौड़ता हुआ आ रहा था। मैंने समझ लिया कि ऊंट अपनी रस्सी छुड़ाकर भाग छूटा है। मैंने लपककर ऊंट की रस्सी पकड़ ली। इतने में मालिक आ पहुंचा। ऊंट के मालिक ने हजारों रुपयों के माल से लदे हुए अपने ऊंट को पाकर खुशी का इजहार किया और कई बार झुक-झुककर सलाम किया। पूछने पर मैंने बताया कि मुझे 'मर्व-कुश्क' पहुंचना है। उसने ऊंट पर मुझे बिठा लिया। हम दोनों बातें करते-करते रास्ते में चल रहे थे। बातों-बातों में मैं पूछ रहा था कि हम किस स्थान पर हैं। 'मर्व' कहां है और रूस की सरहद से कितनी दूर है? उसने विस्तार से सब कुछ बता दिया कि हम एक ऐसे स्थान पर से गुजर रहे हैं, जहां रूस और अफगान के तस्करों का अड्डा है। नजदीक ही दाहिनी ओर एक नदी बह रही है। यहां अफगान पुलिस चौकन्नी रहती है। बगैर इजाजत इधर-उधर जानेवालों को गोली का निशाना बना देती है।

पौ फटने का समय था। मैंने सोचा कि क्या मुझे ऊंटवाले से जुदा होना चाहिये? मैंने मुखातिब होकर उससे कहा—"नमाज का वक्त हो रहा है। अगर मैं आगे बढ़ा, तो मेरी नमाज कजा हो जायेगी। मेहरबानी करके ऊंट को बिठा दो, ताकि मैं बजू करके नमाज पढ़ लूं।" उसने मुझे ऐसा करने से रोका और कहा कि अगर वजू करने के लिए नदी पर जाओगे, तो जरूर गोली का निशाना बन जाओगे और नमाज धरी-की-धरी रह जायेगी। मैंने कहा—"मुझे खुदा के अलावा किसी का डर नहीं है। खुदावंद करीम अपने बंदों को हर आफत से बचा लेता है। नमाज पढ़ते-पढ़ते अगर मैं गोली का निशाना बनाया गया, तो मुझे जन्नत नसीब होगी।" उस भोले इंसान ने मेरी बातों पर यकीन कर लिया। मुझे खुदापरस्त समझकर ऊंट को बिठाकर मुझे उतार दिया और उसका शुक्रिया अदा कर मैंने नदी की राह ली।

हेरात से भागने के बाद सड़क पर चलते-चलते मुझे २४ घंटे बीत चुके थे। हेरात से मैं जहां अब पहुंच चुका था, उसका फासला ७० मील का था। मेरी टांगें थक चुकी थीं। मेरे पांव छिल चुके थे और जख्मों से खून निकल रहा था। बूट निकालकर पांवों की हालत देखता, तो फिर बूट का पहनना दुश्वार हो जाता। ज्यों-ज्यों मैं नदी के नजदीक पहुंच रहा था, मुझे रह-रहकर ऊंटवाले की बात याद आ रही थी कि न मालूम किस तरफ से सनसनाती गोली आ लगे। आखिर मैं नदी के किनारे पहुंच गया। गर्मी का मौसम था; किंतु पानी घुटनों से ऊपर नहीं था। मैंने पानी पर लेटकर घिसटते-घिसटते नदी पार की। इससे मैं चलता हुआ किसी को नजर न आया।

दूसरे किनारे पहुंचकर एक छोटी-सी पहाड़ी पर मैं खड़ा हुआ। मैं समझ गया कि अब रूस में हूं। पहले तो रूसियों ने मुझे कैद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर लिया; मगर बाद में यह जानकर कि मैं एक इन्कलाबी हूं, मुझे रूसी हुकूमत का मेहमान बना लिया।

दूसरे दिन मुझे मास्को के लिए रवाना होना था। रेल के एक शानदार सैलून में मुझे बिठा दिया गया। मास्को पहुंचने में चार दिन लग गये। मास्को में मुझे ईस्टर्न-यूनिवर्सिटी के मकान में पहुंचाया गया, जहां मेरी सियासी शिक्षा शुरू हुई।

मेरा जीवन बड़ा अनुशासित था। साम्यवादी विचारधारा में अनुशासन को बड़ा महत्व दिया जाता है। केवल यांत्रिक अनुशासन ही नहीं, फौलादी अनुशासन पर बल दिया जाता था। रूसी साम्यवादी पक्ष के नेता मेरे व्यवहार से बड़े प्रसन्न थे और हर तरह मेरे सहायक बने रहते थे। तीन महीने के अनुभव से उन्होंने देख दिया कि विश्वविद्यालय के दूसरे विद्यार्थियों के साथ मेरा मेल नहीं बैठ रहा। उन्हें लगा कि मेरी सूझबूझ और शिक्षा की दृष्टि ऐसी दृढ़ बनी है, जैसी कि काफी अनुभवी साम्यवादियों की होती है। इसलिए मुझे ईस्टर्न यूनिवर्सिटी से हटाकर साम्यवादी दल का सदस्य बनाकर उस संस्था में दाखिल किया गया, जिसमें उन इन्कलाबपसंदों को दाखिल किया जाता था, जिन्होंने सालों तक साम्यवादी दल में रहकर वफादारी के साथ काम किया हो। ऐसे इन्कलाबपसंदों के साथ रहने और काम करने से ज्ञात हुआ कि उन सबको मजदूरों में काम करने का काफी अनुभव है।

मैंने साम्यवादी फिलासफी समझने में सारी शक्ति लगा दी और उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में स्थान देना चाहा। परंतु तब भी मैं अपने जीवन में किसी नयी लहर का अनुभव कर रहा था।

सन १९३१ से लेकर १९३४ तक मैंने जिस प्रकार के आर्थिक संकटों का मुकाबला करते रूसियों को देखा, उसे देखकर मैं कई बार लज्जित होता था। इन्कलाबी के नाते मैं रूसी हुकूमत का एक अतिथि था। देश-भर में आर्थिक संकटों के होने पर भी मुझे सब प्रकार की सुविधाएं प्राप्त थीं; देश की जनता और मुख्य कार्यकर्ताओं को कष्टमय जीवन बिताते देखकर मुझे पता चला कि रूस का बच्चा-बच्चा जीवन-संग्राम में जुटा है।

उन्हें मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग की लालसा न थी। वे इसी जीवन में अपनी मातृभूमि को स्वर्ग बनाने का यत्न कर रहे थे। अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए वे हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिए तैयार होकर खड़े थे। युवक-युवतियां, बूढ़े-बच्चे सबके चेहरे सूखे और मुरझाये हुए नजर आते थे। मैंने बड़े-बड़े नेताओं और अधिकारियों को अपनी आंखों से बड़े मजे के साथ काली डबल रोटी को गरम पानी में डूबो-डुबो कर खाते देखा। स्वाद बदलने के लिए वे अंत में चीनी की छोटी से डली जबान पर रख लेते थे। मैंने रूसी मजदूरों को सोलह-सोलह घंटे तक कारखानों में काम करने के बाद दो छटांक आटे, छः छटांक खली और चुटकी-भर नमक पर गुजारा करते देखा। यह देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं सोचने लगा कि क्या हमारे देश में भी सफल इन्कलाव के वाद ऐसी ही अवस्था का सामना करना होगा ? क्या मेरे देशवासी इस प्रकार के तप की साधना करके अपनी सारी शक्ति देश की नवरचना में लगा सकेंगे। कुछ साल के लिए तो भयंकर कष्टों का मुकावला करने के लिए मनुष्य तैयार हो सकता है; लेकिन निरंतर तपस्वी का जीवन असाध्य-सा लगता है।

साम्यवादी सिद्धांतों पर रची राजनैतिक शिक्षा पाने के बाद मैंने फिर अपने वतन आने की योजना वनायी।

मैंने रूस की सरहद पर बसनेवाले एक हिन्दी भाई की सहायता प्राप्त की। दो रूसी साथियों को लेकर हम आमू नदी के किनारे आ पहुंचे।

वह वर्फीली पहाड़ी नदी अफगानिस्तान और रूस को जुदा करती है। पैसे के वल पर नदी के परले किनारे पर रहनेवाले किसी अफगानिस्तानी तैराक की सहायता प्राप्त की गयी। वह तैराक अपनी मशक द्वारा उस तीव्र गतिवाली वर्फीली नदी में से बड़ी आसानी से आर-पार हो सकता था।

रात का समय था। हम रूसियों के साथ नदी किनारे पहुंचे। शाम के समय ही हमने हालात का पूरा अंदाजा लगा लिया था कि वहां से हम नदी में कूदें, तो कहां निकल सकेंगे। जून का महीना था। पानी की रफ्तार कम-से-कम पंद्रह-बीस मील प्रति घंटा होगी। नदी के पाट में कहीं-कहीं पत्थर की चट्टानें भी नजर आती थीं। पाट कोई चार सौ गज होगा। एक अभ्यासी के लिए 'मशक' के सहारे उस नदी में गुजरना कोई कठिन न था। लेकिन हमारे लिए, जो कभी साधारण नदी में से भी न गुजरे थे, तेज रफ्तार व बर्फ के पानी में से रात के अंधेरे में इतना फासला काटने का खयाल ही दिल को दहला देता था। हमने पर्वतों और जंगलों

चमत्कार

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन जब रूस में भारतीय राजदूत होकर मास्को में रहते थे, तब एक बार उन्होंने स्टालिन से कहा – "भारत के एक महान् सम्राट संग्राम में विजय पाकर भिक्षु बन गये थे। कौन जाने शायद आप भी उसी प्रशस्त मार्ग पर चल पड़ें ?" स्टालिन ने उत्तर दिया–"हां कई बार चमत्कारी घटनाएं भी हो जाती हैं। ऐसा चमत्कार भी संभव तो है ही।"

रूस से विदा लेते हुए डा० राधाकृष्णन जब स्टालिन से मिलने गये और विदा लेते हुए स्टालिन के सिर पर हाथ रखा, तो स्टालिन ने भीगी आंखों से विदा देते हुए कहा –"आप प्रथम व्यक्ति हैं, जो मुझसे मानव-सा व्यवहार करते हैं, शेष सब राजदूत तो मुझे दैत्य मानकर दूर रहते हैं। मुझे अब अधिक दिन नहीं जीना, ईश्वर आपको चिरायु करे।"

...और इसके छः महीने बाद स्टालिन ने सचमुच शरीर छोड़ दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सही नेतृत्व

...यह महाशय
ग्वालियर सूटिंग पहनने के कारण
हर जगह सदैव अगुआ दिखाई देते हैं।
फैशन के क्षेत्र में आग्रणी, ग्वालियर सूटिंग
के आधार पर अन्य सूटिंग
भी परखे जाते हैं।

ग्वालियर सूटिंग

भारत के सर्वोत्तम,
सुखप्रद और
आकर्षक वस्त्र

निर्माता :
ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यु० (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर - ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

NPS/GR - 188

देश के सभी स्टोरों में मिलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का सफर तय करने के लिए एक खच्चर और एक घोड़े का प्रबंध कर लिया था। उस तैराक मशकी ने अपनी मशक को घोड़े की पूंछ से बांधकर मुझे उस मशक पर पेट के बल लेट जाने के लिए कहा। मैं अपने दोनों हाथ और पांव पानी में दबाकर मशक पर लेट गया। मशकी घोड़े की पीठ पर हाथ रखकर साथ-साथ चल पड़ा। नदी की लहरों ने मुझे कई वार उछाला। अगर मैं मशक पर काबू खो बैठता, तो मौत निश्चित थी। न मालूम किस चट्टान से जा टकराता और खत्म हो जाता।

चार सौ गज के फासले में इस तरह तीन बार मैंने मौत के दर्शन किये; लेकिन बच गया, और उस तैराक मशकी ने घोड़े के सहारे मुझे दूसरे किनारे पर पहुंचा दिया। बर्फ के पानी ने मेरे सारे बदन को बर्फ जैसा बना दिया था। कुछ मिनिटों के बाद बदन में गर्मी आ गयी। वह अफगान मशकी बगैर एक मिनिट आराम किये फिर से घोड़े की पीठ पर हाथ रखकर नदी के दूसरे किनारे की ओर चल पड़ा। मैं शक्ति और साहस की उस चल मूर्ति को ताकता रह गया। मुझे विश्वास होने लगा कि बर्फ जैसा सर्द पानी उसके शरीर को छूते ही गर्म हो जाता होगा। मैंने उस घोड़े और मशकी की सहायता से नदी का सारा पाट पंद्रह मिनिट के अंदर ही पार कर लिया था।

अब मशकी को वापस गये एक घंटा बीत गया; परंतु वह मेरे साथी बाबा गुरूमुख सिंह को लेकर न पहुंचा। मेरे मन की बेचैनी की हद न रही। मेरे साथी बाबा गुरूमुख सिंह की जिस्मानी शक्ति कोई खास न थी। मुझे डर लगने लगा कि वे किसी दुर्घटना के शिकार तो नहीं हो गये। हर क्षण के साथ व्याकुलता बढ़ने लगी। खड़े-खड़े आंखें फाड़-फाड़कर किनारे की तरफ देखने के सिवा और कोई चारा न था। अंधेरा ऐसा था कि एक चट्टान बनकर नदी पर तैर रहा था। दो घंटे के बाद मशकी बाबा गुरूमुख सिंह को लेकर पहुंचा। मालूम हुआ कि मझधार में आकर खच्चर की वह पूंछ टूट गयी, जिसके साथ रस्सा बंधा था। बहादुर मशकी ने सिर्फ मशक के सहारे बाबा गुरूमुख सिंह को फिर से वापस नदी के किनारे पहुंचा दिया। खच्चर अपने जोर से ही वापस पहुंच गया था। मशकी बाबा गुरूमुखसिंह को छोड़कर अंधेरे में न मालूम कहां गुम हो गया था।

हम दोनों ने अपने कपड़ों को निचोड़ कर पेड़ों पर डाल दिया। गर्मी की खुश्क हवा ने उन्हें फौरन आधा सुखा दिया। उन अधसूखे कपड़ों को पहनकर हम अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। घोड़े स्वयं रास्ता ढूंढ़ रहे थे। हमें मालूम नहीं था कि हम कहां जा रहे हैं। सूरज निकल आया। हम चलते गये। सुबह के आठ बजे होंगे। सामने से एक अफगान पुलिस-पार्टी हमसे आ टकरायी। हम हर तरह से उस स्थान पर अजनबी प्रतीत होते थे। सीमा पर इधर-उधर फिरने से आदमी काफी डरते हैं कि कहीं उन्हें पुलिस न पकड़ ले। किसी अपरिचित व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन हाथी
चित्र : सुनंदा स्वामीनाथन

का उस स्थान पर होना असंभव-सा था।

यहां की पुलिस ने हमें देखते ही ताड़ लिया कि हम कोई भेदी आदमी हैं। वे मुझे १५ मील दूर फैजाबाद ले गये। वहां से छुटकारा पाकर हम काबुल चले। वहां हमें काबुल की सेंट्रल जेल में रख दिया गया।

बाबा गुरूमुखसिंह बादशाह अमानुल्लाह के बड़े विश्वास-पात्र थे। बादशाह अमानुल्लाह अंग्रेजों का दुश्मन था। परिचय तो बाबाजी का बादशाह नादिरशाह से भी था। लेकिन वे अंग्रेजों के पूरे विश्वासपात्र थे और उन्हीं के सहारे गद्दी पर आये थे। उस वक्त की अफगानिस्तान की हुकूमत अंग्रेजों की दोस्त थी। हम इन्कलाबियों को हुकूमत ने अपना सख्त दुश्मन समझा।

सर्दी के दिन आने लगे। काबुल शहर में सर्दियों के दिनों में शून्य से २४ सेंटीग्रेड नीचे तक ठंड पड़ती है। उस ठंड में जो सूती कपड़े हमने बदन पर पहन रखे थे, उनके सिवा और कोई कपड़ा नहीं था। जब सर्दी आयी, तो हमें रजाइयां लाकर दी गयीं। ये रजाइयां उन कैदियों की थीं, जो सर्दी के मारे पिछली रात मर चुके थे। उनकी लाशों पर से उठाकर ये रजाइयां हमारे सुपुर्द की गयीं। हम आधी रजाई नीचे बिछाते और आधी ओढ़ लेते। टट्टी-पेशाब के लिए हमें सुबह-शाम सख्त पहरे में बाहर निकाला जाता था। वापस आने के समय शाम को हम बाहर से कुछ मिट्टी उठा लाते। उसका गारा बनाकर दरवाजों और खिड़कियों के छेदों में भर देते, ताकि बाहर की सर्द हवा अंदर आकर हमें खत्म न कर दे। हम दोनों का जिस्म काफी वर्जिशी था। हमें प्राणायाम आदि का भी अभ्यास था। उसके आधार पर हम केवल एक रोटी खाकर जीवित रहने का यत्न कर रहे थे। कैदियों की जिंदगी की तरफ हुकूमत कितनी लापरवाह थी, वह निम्नलिखित एक ही मिसाल से स्पष्ट हो जायेगा।

अफगानिस्तान में बहता हुआ जल अति पवित्र माना जाता था, चाहे वह कितनी भी गंदगी से क्यों न आया हो। उसे अपवित्र कहना कुफ्र में शुमार होता था। बहता हुआ पानी, जो गांव की गंदगी को लेता हुआ बह रहा था और जेल की चारदीवारी में से होकर गुजरता था, अफगानिस्तानियों की दृष्टि से पवित्र था। एक गिलास पानी में कम-से-कम ५-६ जूएं होती थीं। उस जल को छानकर पीने के सिवा हमारे पास जीवित रहने का कोई साधन नहीं था।

एक रोज जेलर बीमार पड़ गया। उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमर जकड़ गयी। वह मारे दर्द के चिल्ला रहा था। मैंने तेल मंगाकर मालिश करके उसका दर्द मिटा दिया। उसके बाद वह हमारे साथ हमदर्दी का सलूक करने लगा। उसने हमसे कहा कि किसी के हाथ का दिया हुआ खाना न खाओ और न किसी पर भरोसा करो, क्योंकि हुकूमत के खास अधिकारियों ने मुझसे कहा है कि रात को तेज-उस्तरे के साथ इनकी गर्दन काट डालो और दोनों की दाहिनी तरफ उस्तरे रख दो तथा रिपोर्ट दर्ज करा दो कि दो कैदियों ने खुदकुशी कर ली है। इसके बाद लाशों को बाहर निकाल कर दफन करवा दो।

हमारे छुटकारे के लिए अमरीका की गदर पार्टी ने भी कोशिश की। उनकी कोशिशों का ही नतीजा था कि एक रोज सुबह हमें जेल से छोड़कर अफगान सरकार ने रूस के हवाले कर दिया।

यह १९३३ का जून या जुलाई का महीना था। हम तीन महीने रूस की धरती पर रहे और वहां से एक फ्रांसीसी जहाज पर सवार होकर पांडीचेरी पहुंचे। वहां से मद्रास होकर फिर बंबई-कलकत्ता आदि शहरों में पुलिस की नजरों से छिपकर भूमिगत अवस्था में घूमता रहा। बाद में मैंने महात्मा गांधी की आज्ञा से आत्म-समर्पण कर दिया। मैं देश के नौजवानों के सामने यह मिसाल पेश करना चाहता था कि अब भूमिगत रहने की कोई जरूरत नहीं थी।

१६ साल भूमिगत रहने के बाद मैं थाना जेल की कोठरी में बंद हो गया। वहां से रावलपिंडी जेल भेज दिया गया। द्वितीय महायुद्ध प्रारंभ होने पर २३ जनवरी १९३९ को मुझे जेल से रिहा कर दिया गया। वहां से मैं बापूजी के आश्रम का निवासी बन गया।

[बाबा पृथ्वीसिंह के क्रांतिमय जीवन का उनके आश्रमवासी होने के साथ अंत हो जाता है—अतः हम अगले भाग का संक्षेप नहीं दे रहे हैं।]

★

यू० पी० के एक किसान ने जब को-आपरेटिव बैंक से दो सौ रुपये कर्ज लेने की अर्जी दी, तो मैनेजर ने उसे आफिस में बुलाकर कहा—"आपके पास जमानत के रूप में क्या है?"

"पांच जोड़ी बैल!" किसान ने अपना पंजा मैनेजर के चेहरेके सामने ले जाकर कहा।

"ठीक" मैनेजर ने प्रभावित होकर कहा और उसे दो सौ रुपये कर्ज दे दिये गये।

कोई दस दिन बाद किसान फिर बैंक में आया और नोटों की पोटली खोलकर मैनेजर के सामने बैठ गया। ढाई हजार की रकम में से दो सौ रुपये के नोट छांटकर उसने मैनेजर के सामने रख दिये और फिर अपनी पोटली बांधने लगा। मैनेजर ने कहा—"आप इतनी रकम कहा उठाये फिरेंगे? हमारे पास जमा करा दीजिये।"

"जमा!" किसान ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और फिर पोटली खोलते हुए बोला—"तुम्हारे पास कितनी जोड़ी बैल हैं जमानत के लिए?" — मुगनी अब्बासी

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन

मलिये
और फौरन आराम पाइये

अमृतांजन पेन बाम वैज्ञानिक मिश्रणवाली १० दवाइयों की एक दवा है—सीने के कफ और आमतौर के सर्दी-जुकाम के लिये बिल्कुल निर्दोष है, प्रभावकारी है। अमृतांजन मांसपेशियों के दर्द, सिरदर्द और मोच के दर्द में भी तुरंत फायदा पहुँचाता है। एक बार इतना कम चाहिये कि इसकी एक ही शीशी आपके घर में महीनों चलेगी। अमृतांजन की एक शीशी बराबर अपने पास रखिये।

अमृतांजन ७० वर्षों से भी ज्यादे दिनों से एक घरेलू दवा के रूप में विख्यात है।

अमृतांजन १० दवाइयों की एक दवा—दर्द और जुकाम में अचूक।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास • बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली

JWT/AM 2817A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औद्योगिक विकास के सूत्रधार ये 'मैनेजर'

पी० एल० टंडन

'मैनेजर' शब्द का अगर सीधा अर्थ लिया जाये, तो यह कहा जा सकता कि वह जो 'मैनेज' यानी व्यवस्था करे। लेकिन 'मैनेजर' का अर्थ होता है, वह व्यक्ति जो किसी व्यापारिक अथवा औद्योगिक संस्थान की नीति निर्धारित करे और उस संस्थान के फायदे की बात सोचे, उसके अनुसार चले।

सरकारी मामलों में पहले 'आफीसर' होते थे, जो व्यवस्था किया करते थे। किसी 'प्राइवेट' संस्थान की देखभाल और उसकी नीति मालिक ही निर्धारित करते थे। लेकिन अब देश का औद्योगीकरण हो चुका है। 'प्राइवेट' संस्थान में भी तकनीकी चीजों की देखभाल करने और संस्थान के फायदे के लिए मैनेजर रखे जाते हैं और सरकारी मामलों में भी वे 'आफीसर' जो औद्योगिक या व्यापारिक संस्थाओं के जिम्मेदार होते हैं, 'मैनेजर' कहलाते हैं।

हमारे देश की उन्नति में योजनाओं का बड़ा हाथ है और इन योजनाओं ने देश का औद्योगीकरण कर दिया है। इसके साथ ही 'मैनेजर' की जिम्मेदारियों में भी वृद्धि हुई है और आज के समय को 'मैनेजरों का युग' कहा जाये, तो अत्युक्ति न होगी। देश की तरक्की में प्रशिक्षित 'मैनेजरों' का बहुत बड़ा हाथ रहा है और मैं तो इस बात में भी विश्वास करता हूं कि आगे भी रहेगा। समाज का रूप-रंग समय-समय पर बदलता रहा है। मुगल काल में दानशील समाज था, ब्रिटिश काल में शासित समाज था और अब 'मैनेजरों' का समाज है, जो बहुत हद तक लोगों की सुख-समृद्धि के जिम्मेदार हैं।

हम आदि-युग से व्यापारी मनोवृत्ति के रहे हैं; और आज की औद्योगिक और व्यापारी मनोवृत्ति भी विरासत में मिली है। ईसा के जन्म के पहले से ही हमारे जहाज व्यापारियों को लेकर फारस की खाड़ियों, लाल सागर, अफ्रीका और मलाया जाते रहे हैं और समुद्र पार के देशों के साथ व्यापार चलता रहा है। उस समय चीजों के बदले हमें सोना-चांदी दिया जाता था। ब्रिटिश काल में हमारी इस मनोवृत्ति का और विस्तार हुआ। अंग्रेज अच्छे व्यापारी हैं और उनसे ही हमें आधुनिक उद्योग मिले हैं। इसलिए आजादी के बाद हमने औद्योगिक उन्नति की और उन्हें 'मैनेजरों' के जरिये सुचारु रूप से चलाने की व्यवस्था की।

हमारे पास 'मैनेजरों' का बहुत बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दि युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय : १० ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता –१

अधिकृत पूंजी	रु. ८,००,००,०००
लागत पूंजी	रु. ५,६०,००,०००
चुकती पूंजी	रु. २,८०,००,०००
सुरक्षित कोष व अन्य सुरक्षित रकमें	रु. ३,३७,००,०००

डाइरेक्टर

आई० पी० गोयनका

चेयरमैन

एम० पी० बिड़ला	मदनमोहन आर० खइया
वाइस चेयरमैन	वाइस चेयरमैन
अनंत चरण ला	मोतीलाल तापड़िया
जी० डी० कोठारी	टी० एस० राजम
रंगनाथ बांगड़	श्रेणिक कस्तूरभाई
मोहनलाल नोपानी	एस० टी० सदाशिवन
योगींद्र एन० मफतलाल	डा० आर० आर० हतंगडी

कार्य और सेवा

करेंट खाते खोले जाते हैं; लंबे और छोटे अरसे के लिए फिक्स्ड धरोहर स्वीकार की जाती है। सेविंग बैंक खाते। एक्युमुलेटेड पूंजी के लिए सुविधाजनक मासिक किस्तों में आवर्ती धरोहर। विदेशी मुद्रा और रुपये के ट्रेवलर्स चेक की खरीदी और भुगतान। अन्य प्रकार के देशी और विदेशी मुद्रा-विनिमय का व्यापार।

आर० बी० शाह
जनरल मैनेजर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भंडार क्यों न हो, फिर भी हमें मैनेजरों की बहुत बड़ी संख्या में जरूरत है। हर वर्ष एक करोड़ लोगों को काम दिया जाये, तो इस हिसाब से २० आदमी पर १ यानी ५ प्रतिशत 'मैनेजरों' की जरूरत पड़ेगी। लेकिन उद्योग और व्यापार की आवश्यकताओं को देखते हुए अगर पांचवां हिस्सा भी कर दिया जाये, तब भी हर वर्ष २० हजार 'मैनेजरों' की आवश्यकता पड़ती है।

इसके साथ ही ये प्रश्न भी आते हैं कि उनसे हम आशा क्या रखते हैं। उनको कैसे प्रशिक्षित करते हैं और उनमें किन-किन गुणों की अपेक्षा है। सबसे पहली बात तो यह है कि भारत में जो साधन हैं, वे उसे एक इकाई में बना देते हैं और साधनों के संगठन के बाद ही अधिक औद्योगिक उन्नति संभव है। कुछ चीजें दक्षिण में पायी जाती हैं, तो कोयला, लोहा पूर्व में। जलशक्ति हिमालय और पश्चिमी घाटियों से उत्पन्न होती है, तो तेल आसाम और गुजरात में। हर चीज बिखरी पड़ी है, कोई भी हिस्सा स्वयं में पूर्ण नहीं है। इसलिए देशीय स्तर पर संगठन आवश्यक है।

हमारे मैनेजरों का किसी भी चीज को देखने का दृष्टिकोण अखिल भारतीय स्तर पर होना चाहिये। उनका व्यक्तित्व प्रांतीयता और जातीयता से परे होना चाहिये। इस तरह का संगठनात्मक कार्य, फौज और अखिल भारतीय स्तर पर सरकारी नियुक्तियों में होता है, जहां वे सभी योग्य व्यक्ति बराबर हैं—चाहे किसी भी क्षेत्र के क्यों न हों, जो देश की आवश्यकताओं को सर्वोपरि देखते हैं, प्रांत की नहीं। हमें आज ऐसे ही 'मैनेजरों' की आवश्यकता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक दृष्टिकोण के धनी हों, संकुचित और ओछी विचारधारा के नहीं।

हमारे यहां जिस तरह प्राकृतिक साधनों में एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र का पूरक है, सौभाग्य से मानसिक और शारीरिक दृष्टिकोण से भी सब एक दूसरों के पूरक हैं। कहा जाता है कि दक्षिण भारतीय अधिक बुद्धिमान और संतुलित होते हैं, पंजाबी बहिर्मुखी व्यक्तित्व और प्रतियोगिता की भावना के मालिक होते हैं, बंगाली भावुक और सभ्य होते हैं, गुजराती चालाक और व्यापार बुद्धिवाले होते हैं और महाराष्ट्रीय कर्तव्य-परायण होते हैं। इसलिए हमारे 'मैनेजरों' का दृष्टिकोण व्यापक और राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिये—उन्हें इन सारे गुणों को अपने अंदर समाविष्ट कर लेना चाहिये। लोकसेवा आयोग और फौजी सेवाओं में यही होता है। उनका चुनाव अखिल भारतीय स्तर पर होता है और यही कारण है कि वे देश को एक नजर से देखते हैं। यही 'मैनेजरों' के मामले में भी होना चाहिये।

इस अखिल भारतीय तरीके में लोगों को देश के दूसरे हिस्से में भी जाना पड़ेगा। वे सोच सकते हैं कि अपने आदमियों, अपनी जगह से दूर रहकर वे लोग कुछ खो देंगे। लेकिन वास्तविकता यह है कि वे खोने की जगह पायेंगे। उस जगह की भाषा, सभ्यता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

की पीड़ा से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिये

हडेन्सा

इस्तेमाल कीजिए!

असहनीय पीड़ा है? खुजली होती है? जलन, या खून बहता है? तो देर न कीजिए। बिना ऑपरेशन के बवासीर शीघ्र ही आराम पाने के लिये, विश्वसनीय मरहम हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए। संसार के १०८ देशों के डाक्टर हडेन्सा के इस्तेमाल की ही सलाह देते हैं। यह एक प्रभावशाली जर्मन मरहम है। हडेन्सा शीघ्रता से असर करता है, पीडा-खुजली से आराम दिलाता है और इसके इस्तेमाल से मल-त्याग में भी कठिनाई नहीं होती। यही नहीं, यह फटी हुई चमडी भरने, मस्सो के सिकुड़ने और स्वस्थ 'टिश्यू' बनाने में सहायता देता है। बवासीर से शीघ्र आराम पाने के लिये हडेन्सा इस्तेमाल कीजिए ताकि बाद में ऑपरेशन की ज़रूरत ही न पडे।

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं है। यह मौलिक जर्मन फार्मूले के आधार पर भारत में बनाया जाता है।

निर्माता: दि डॉलर कम्पनी,
३३७, थंबु चेट्टि स्ट्रीट, मद्रास-१
सभी मुख्य केमिस्टो के यहाँ मिलता है।

83 DOL, 2A HIN

विज्ञापन की हुई

वस्तुएँ

खरीदें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को वे अपनायेंगे और इस तरह उनका दृष्टिकोण व्यापक होगा और क्षेत्रीय स्तर से हटकर वे राष्ट्रीय स्तर पर सोचेंगे। इस तरह देश के हर हिस्सों का मिला-जुला रूप एक नयी भावनात्मक चीज पैदा करेगा और संगठन में सहायक सिद्ध होगा।

उपर्युक्त बातों तथा तकनीकी प्रशिक्षण के अलावा एक बात और है, जो बहुत ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है। वह बात है, पेशे के रूप में इस चीज को लेना यानी रुचि पैदा करना। पेशेवर रुचि होने से आदमी स्वभावतः तरक्की और नये-नये आविष्कारों की बात सोचेगा। यही नहीं वस्तु की अच्छाई पर भी उसी तरह ध्यान देगा। अब तो मैनेजरों के प्रशिक्षण की सुविधाएं भी काफी हैं। ये सुविधाएं तीन तरह की हैं। अनेक कालेजों में 'कामर्स' की प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। इसके साथ ही अनेक विश्वविद्यालय भी 'बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन' की शिक्षा देते हैं। खासकर दो संस्थान ऐसे हैं, जो इसी बात की शिक्षा देते हैं। एक कलकत्ते में 'मसाचेस्टस इंस्टिट्यूट आफ टेकनोलाजी' से संबंधित है और दूसरा हारवर्ड यूनिवर्सिटी से संबंधित अहमदाबाद में है।

आधुनिक व्यापार-शिक्षण के संस्थापक-प्रेरक निश्चित रूप से अमरीकी ही रहे हैं। उनके तरीके बहुत देशों में प्रचलित हैं। यहां तक कि ब्रिटेन में भी दो स्कूल अमरीकी पद्धति पर खोले गये हैं। इस तरह के व्यापार प्रशिक्षण का अपना एक दर्शन है और वह अहमदाबाद के संस्थान के उस उद्देश्य से साफ झलकता है :

"भारत की औद्योगिक उन्नति इस बात पर निर्भर होगी कि हमारे 'मैनेजर' कैसे हैं। वे जितने अच्छे ढंग से योजना को समझेंगे और कार्यान्वित करेंगे, हम लोग उतने ही उन्नत होंगे।"

इन संस्थाओं में प्रशिक्षित होने के बाद काम का प्रशिक्षण होता है, जिसमें इससे काफी मदद मिलती है। बहुत बड़ी-बड़ी 'फर्में, तो नये 'मैनेजरों' को वे सभी सुविधाएं दे देती हैं, जो दूसरे 'मैनेजरों' को देती हैं। लेकिन सच तो यह है कि 'मैनेजरों' का प्रशिक्षण भी फौजी अफसर की तरह है, जो कभी रुकता नहीं है, दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जाता है।

'मैनेजरों' की ज्ञान-वृद्धि के लिए उपर्युक्त संस्थानों द्वारा एवं हैदर.बाद के 'एडमिनिस्ट्रेटिव कालेज' द्वारा एक तीन महीने का 'कोर्स' है। इस 'कोर्स' से सबसे बड़ा फायदा यह है कि 'मैनेजर' एक दूसरे से मिलते हैं, किसी भी चीज पर बड़े पैमाने पर विचार होता है और व्यापक दृष्टिकोण के साथ ही साथ क्षेत्र में भी विस्तार होता है।

आज 'मैनेजरों' की संख्या कम है; पर उनका कार्य और प्रभाव बहुत बड़ा है। 'मैनेजरों' के महान कार्य समाज से भी कुछ अपेक्षा करते हैं और वह है विश्वास और स्वतंत्रता, एक प्रगतिशील वातावरण, ताकि वे अपने को एक सफल 'मैनेजर' बना सकें और औद्योगिक उन्नति तेजी से हो।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कच्चे फोड़े और गिल्टियाँ?
पुट्ठों में जकड़न? सूजन?
दर्द में जल्द आराम पाने के लिए

जॉन्सन्स*
बेलाडोना प्लास्टर

इस्तेमाल कीजिए!

जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर को आप आसानी से ज्यों का त्यों इस्तेमाल कर सकते हैं—न इसे गरम करने की झंझट और न पट्टी तैयार करने वग़ैरह की उलझन। और फिर, इसे लगाने के लिए कोई ख़ास चतुराई या योग्यता की भी ज़रूरत नहीं। बस, प्लास्टर के ऊपर से प्लास्टिक की परत हटाइए और दर्दवाले हिस्से पर प्लास्टर लगा दीजिए। प्लास्टर में बने छेदों के कारण चमड़ी को काफ़ी हवा मिलती है जिससे दर्दवाले हिस्से में ज़्यादा आराम महसूस होता है।

घर में जॉन्सन्स बेलाडोना प्लास्टर हमेशा रखिए!

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड, ३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६,
* ट्रेडमार्क

IWT-11-3247

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोटरों की पड़दादियां

दामोदर शर्मा

मोटरों की पड़दादियां थीं घोड़े की बग्घियां और उनकी नातिन और पड़नातिन हैं आज की कारें। कितना बड़ा परिवर्तन है! कहां चमड़े के टप्पर से ढकी पुरानी मोटरें और कहां आज की वायु-अनुकूलित कनवरटेबल कारें। कहां पुरानी होलसमेन, इंटरनेशनल हालवेस्टर तथा सीअररोव्यक के लंबे-चौड़े रबर-चढ़े पहिये और कहां आज की रेसिंग कारों के छोटे और तिरछे पहिये!

मनुष्य के विकास के समान ही कारों का विकास भी धीरे-धीरे हुआ है। इनके विकास का इतिहास भी उतना ही मनोरंजक है, जितना कि मानव सभ्यता का इतिहास। पिछले पचास वर्षों में, कारों के आकार-प्रकार तथा इंजिनों में इतना परिवर्तन हुआ है कि साधारणतया हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि आज की कारें कभी इतने बेढ़ंगे रूपों में भी रही होंगी।

प्रारंभिक कारें बग्घियों के समान ही थीं। उनके पहियों पर टायर चढ़े रहते थे, जो उस समय की धूल-भरी सड़कों के लिए पूर्णतया उपयुक्त थे। इनके कारण पहिया धूल में धंसकर जमीन तक पहुंच जाता था। इन सड़कों में प्रायः बड़े-बड़े गड्ढे भी होते थे। आज की खराब-से-खराब सड़क भी उनसे कई गुना अच्छी होती है।

उस जमाने में मैकेनिकों को अच्छी कार बनाने की धुन सवार रहती थी। इसलिए वे बड़े अजीब-अजीब ढंग की संयोजना करते थे। उन्हें धातुओं तथा अन्य वस्तुओं की मजबूती और लोचका बहुत कम ज्ञान होता था। यद्यपि उनमें से कई लोग लोहार होते थे।

सन १९०९ में एक मैकेनिक ने एक अच्छी कार बनाने की धुन में ४ सिलेंडर-वाले तीन इंजिनों को एक साथ चलाकर बारह सिलेंडर की कार बनानी चाही; लेकिन तीनों इंजिन एक साथ नहीं चल सके। क्योंकि किसी इंजिन की चाल तेज रहती थी, तो किसी की कम। उस समय के सारे इंजिन वायु-अनुकूलित होते थे। इसलिए ड्राइवरों को उन्हें कुछ समय बाद चलाते रहना बड़ा कठिन था। ये इंजिन प्रायः पिछले एक्सल पर कसे जाते थे। जब ये इंजिन उन दिनों की धूल-भरी सड़कों पर चलते थे, तो धूल का अंबार उड़ने लगता था और थोड़ी ही देर में यह धूल कारबोरेटर में जम कर इंजिन बंद कर देती थी। फलस्वरूप कुछ मील चलने के बाद कारबोरेटर को बार-बार साफ करना पड़ता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका 'एवरेडी' टॉर्च कभी आपको धोखा नहीं देता

एवरेडी बैटरी ७५ वाँ वर्ष १८९०—१९६५

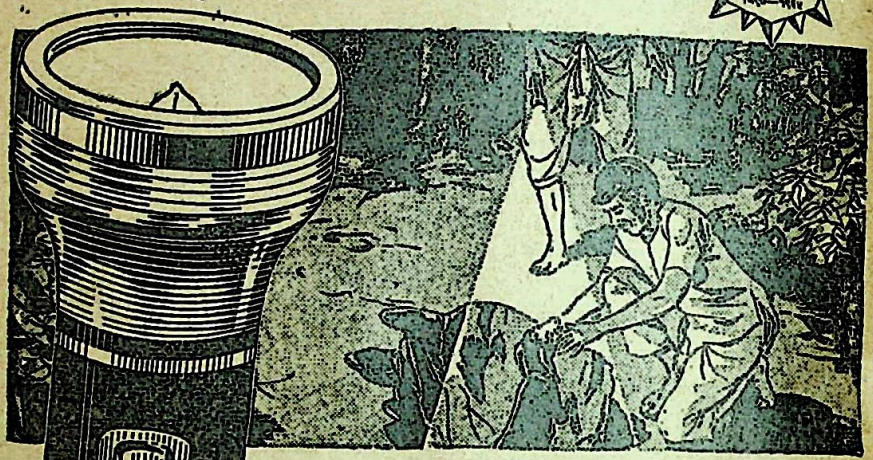

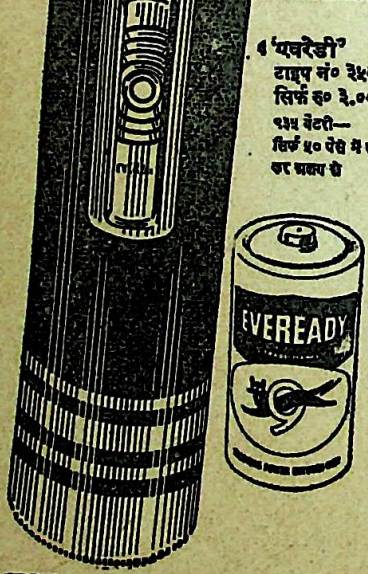

'एवरेडी'
टाइप नं० ३५९२
सिर्फ रु० ३.००
९३५ बैटरी—
सिर्फ ५० पैसे में एक।
कर अलग से

बराबर एक 'एवरेडी' टॉर्च अपने पास रखिये—क्या पता कि कब जरूरत पड़ जाय! और 'एवरेडी' टॉर्च हैं भी तो तरह तरह के, चाहे जो भी चुनिये।

- सबसे बढ़िया टॉर्च खरीदना चाहते हैं तो 'एवरेडी' ही खरीदिये।
- और कोई टॉर्च न तो इतना अच्छा काम करता है और न इतना टिकाऊ है।
- इनके मजबूत बेजोड़ खोल एलूमीनियम के बने हैं—ऐसा धातु जिसमें जंग नहीं लगता।
- 'एवरेडी' टॉर्चों में निर्भरयोग्य 'एवरेडी' स्विचें और विशेष रिफ्लेक्टर लगे हैं जिससे तेज रोशनी मिल सके।
- विश्वविख्यात 'एवरेडी' बैटरियों से काम लीजिये क्योंकि वे जगमग रोशनी देती हैं और सबसे अधिक टिकती हैं।
- आज ही अपनी मनपसन्द 'एवरेडी' टॉर्च चुन लीजिये।

एवरेडी

टॉर्च • बैटरी • बल्ब • मैन्टल

यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड

UNION CARBIDE

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सड़कों की मरम्मत भी बड़े मजेदार ढंग से की जाती थी। आसपास के कचरे को बीच में रखकर यह काम हो जाता था। इसी तरह सड़कों के वे गढ्ढे और छिद्र भी बंद कर दिये जाते थे, जो वर्षा के बाद पहली कार के सड़क से गुजरते ही खुल जाते थे। इसके बाद जानेवाली किसी भी कार का एक्सल या कोई अन्य भाग टूटना तो मामूली-सी बात थी। गर्मी में कार से यात्रा करनेवालों को अपने साथ तौलिया, चश्मा और झाड़न ले जाना परमावश्यक था। आज की कारें तो इन सड़कों पर शायद एक-दो मील में ही धूं-धड़ाम हो जातीं।

उस समय यदि कार के किसी भाग को अधिक मजबूत बनाना होता था, तो उसे ज्यादा मोटा कर दिया जाता था। 'वस्तु को हल्की रखने पर उसकी गति बढ़ जाती है' का सिद्धांत किसी को मालूम न था। इसीलिए जब फोर्ड ने अपनी 'टी' माडल कार में मोलिब्डिनम इस्पात का उपयोग किया, तो उसकी गति अन्य कारों से काफी अच्छी रही।

टायर भी अपने आप में एक बड़ी समस्या थे। आज का कोई भी टायर बड़े आराम से ३० हजार मील या इससे अधिक चलाया जा सकता है। उस समय के टायर बड़ी सावधानी से चलाने पर भी २ हजार मील चल पाते थे। ये टायर केनवास के बने होते थे और इनमें बड़ी नजाकत रहती थी। कुछ मील की यात्रा में ही टायर इतना गरम हो जाता था कि हाथ जल जाये। फिर ये सस्ते भी न थे। एक टायर का मूल्य लगभग ४० डालर होता था। यदि हमें बीस मील भी जाना हो, तो एक टायर का फटना तो आम बात थी। इसलिए हर ड्राइवर को साथ में, एक अच्छा-सा मरम्मत का डिब्बा रखना पड़ता था।

उस समय दो तरह के टायर चलते थे। 'डबल टयूब' और 'सिंगल टयूब'। 'सिंगल टयूब' टायर आजकल के साइकल टयूब-टायरों से मिलते-जुलते थे। ये बोल्टों द्वारा रिम से कसे रहते थे। यदि इन टायरों में कोई पंचर हो जाये, तो बस फिर बेचारे ड्राइवर को उनसे अच्छी-खासी कुश्ती लड़नी पड़ती थी। इसका मुख्य कारण था टायर का बाहर न निकल पाना।

जब टायर कमजोर हो जाता था, तो उसकी ऊंची कीमत के कारण उसे फेंका नहीं जाता था, बल्कि उसका काया-कल्प किया जाता था। इस कायाकल्प की प्रक्रिया बड़ी मजेदार होती थी। टायर को निकालकर उसमें दबे हुए परों और शक्कर के सीरे (शक्कर के उत्पादन से बचा द्रव, जिसे अंग्रेजी में मोलासेस कहते हैं) का मिश्रण भर दिया जाता था। अब उस टायर को तेजी से घुमाया जाता था, जिससे वह मिश्रण सब जगह एक-सा फैल जाये। इससे टायर के छिद्रों में शक्कर का सीरा जम जाता था और परों के साथ उन्हें बंद कर देता था। किंतु कभी-कभी जब टायर का छेद काफी बड़ा हो जाता था, तब यही सीरा ड्राइवर के ऊपर फैलकर उसे अच्छा-खासा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साठे

बिस्कुट

इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोकर बना देता था।

इन कारों की मरम्मत करने से लेकर पेट्रोल भरने तक की सभी बातें बड़ी मजेदार थीं। आज हम किसी डेढ़ इंच के बोल्ट में किसी दूसरी कार का ऐसा ही बोल्ट नहीं कसेंगे; किंतु उस समय एक कार का बोल्ट दूसरी कार में कस देना आम बात थी। उस समय के गेयर आज की रद्दी-से-रद्दी कार के फेंके गये गेयरों से भी खराब थे।

फोर्ड कम्पनी द्वारा रंग करने के लिए 'स्प्रे' का तरीका प्रयोग में लाने के पूर्व कारों पर एक के बाद एक, वारनिश रंगों की ग्यारह या बारह परतें चढ़ायी जाती थीं।

पेट्रोल पम्पों का नामोनिशान न था। साइकल की दुकानों और लोहारों द्वारा पेट्रोल बेचा जाता था। इस पेट्रोल में मिट्टी के साथ-साथ पानी भी मिला रहता था। इसे शुद्ध रूप में लाने के लिए उस समय के ड्राइवर अपना कीप और चामोइज का चमड़ा रखते थे। इस चमड़े की सहायता से वे पानी को पेट्रोल से छान लेते थे। जब कभी पेट्रोल की कमी हो, तो मोटर के लेंपों से तेल निकालकर इंजिन चलाना बुद्धिमान ड्राइवरों के लिए आम बात थी।

१९०८ की धूम-धड़ाका सड़कों की धूल का असर रेडियेटरर्स पर भी पड़ता था। प्रायः उनमें छेद हो जाते थे। यात्रा के समय ड्राइवर उनकी मरम्मत के लिए अपने साथ 'जई के आटे की रोटियां' ले जाते थे। ये रोटियां रेडियेटर द्वारा चूस ली जाती थीं, जिससे छेद बंद हो जाते थे। जई की रोटी साथ न होने पर उसके स्थान पर घोड़े की सूखी लीद उपयोग में लायी जाती थी।

इन कारों में कारबाइड से उत्पन्न ऐसीटीलीन गैस के लेंप लगे रहते थे। इस गैस का उत्पादन एक टैंक में होता था। यह व्यवस्था भी एक अच्छा-खासा तमाशा थी। गैस का उत्पादन प्रारंभ करने के लिए इस यंत्र के सारे पुर्जे अलग-अलग करने पड़ते थे' फिर चाहे गैस पांच मिनिट को चाहिये या पांच घंटों को। इस व्यवस्था में यदि किसी तूफानी रात में गैस-लेंप जलाना पड़े, तो ड्राइवर की नानी याद आ जाती थी। सबसे पहले उसे गैस जलते ही लेंप का दरवाजा बंद करना पड़ता था और फिर भागकर गैस की लौ ठीक करनी पड़ती थी। जरा भी गड़बड़ होने पर फिर सारी रामकहानी दोहरानी पड़ती थी।

इस सबके बाद भी ये कारें केवल अच्छे मौसम में ही उपयोग में लायी जाती थीं। प्रायः शीत ऋतु में इन्हें रख दिया जाता था। पहली कारों में तो सामने का कांच (विन्ड शील्ड) नाम की भी कोई वस्तु नहीं थी।

आज जब हम 'एअरकुशन' और 'एअरस्क्रूटर' के युग में रह रहे हैं, तब इन सब बातों से हमें आश्चर्य तो होता ही है; किंतु साथ-साथ भय और सिहरन की एक लहर भी हमारे शरीर में दौड़ जाती है। आज किसी वायु-अनुकूलित कार में बैठा एक व्यक्ति क्या इस बात की कल्पना कर सकता है कि कभी इंजिन की गर्मी के मारे ड्राइवर को कार चलाना कठिन हो जाता था।

★

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

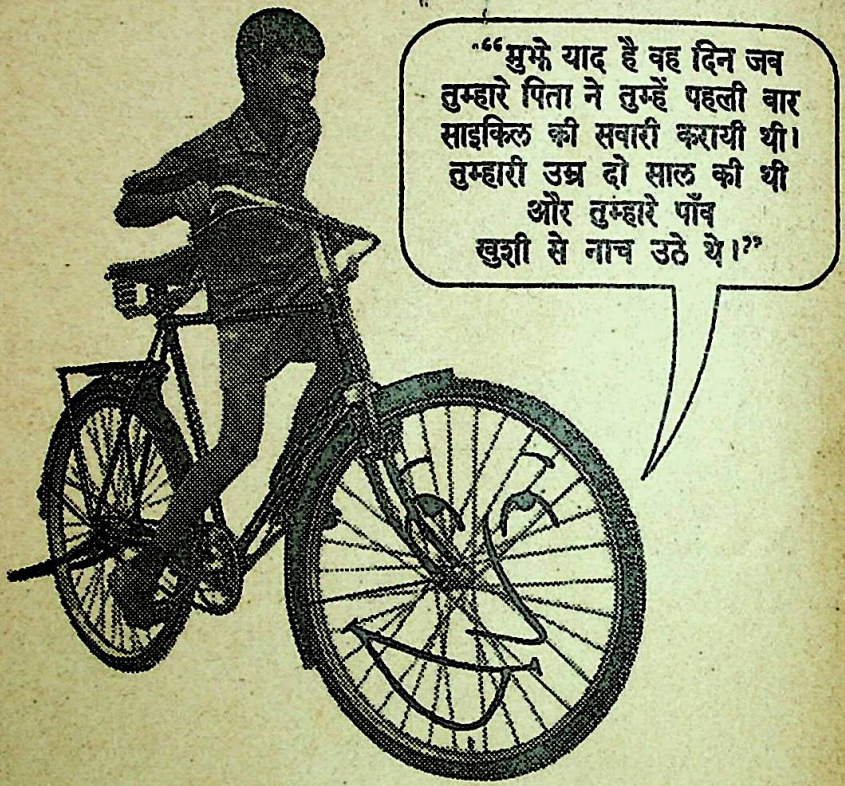

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है—
यह तो जीवन-साथी है।

बारह साल बीत चुके हैं और हर्क्युलिस आज भी पिता और अब पुत्र की सेवा में उसी विश्वसनीयता के साथ तत्पर है।

जब आप हर्क्युलिस साइकिल खरीदते हैं, यह आपके जीवन का एक अंग बन जाता है। वर्ष के बाद वर्ष बीतेंगे, आपके जीवन में चतुर्दिक परिवर्तन होंगे··· आपकी तरक्की होगी··· आपके बच्चे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी और फिर वे कहीं अपनी दुनिया बसा लेंगे। लेकिन आपका हर्क्युलिस सदैव आपके साथ रहेगा।

टी. आई. साइकिल्स आफ इण्डिया अम्बत्तूर, मद्रास-५३.

प्रोप्राइटरर्स : ट्यूब इनवेस्टमेंट्स आफ इंडिया लि० मद्रास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमूल मक्खन से हर चीज पौष्टिक और स्वादिष्ट होती है...

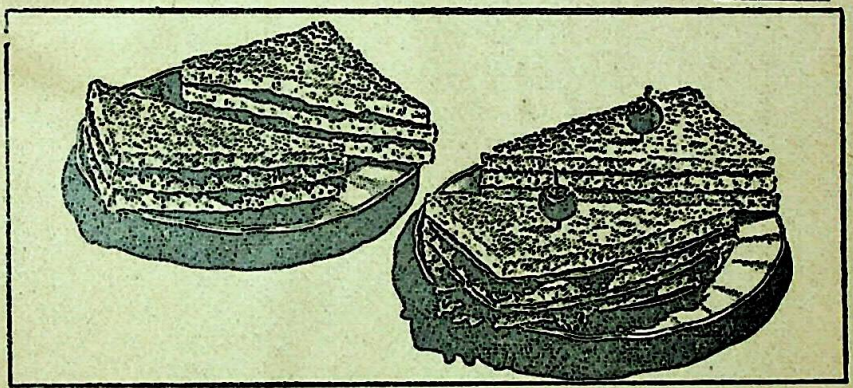

डबल रोटी के साथ अमूल मक्खन और अमूल मक्खन के साथ सैंडविचेज काफी पोष्टिक और स्वादिष्ट होते हैं और अपने परिवार को पौष्टिकता और शक्तिवर्धक विटामिन 'ए' और 'डी' देने के अनोखे तरीके हैं।

शुद्ध ताजी क्रीम अमूल मक्खन डेअरी में पीले सुनहले रंग में बनता है जहां पर सिर्फ पांच घंटे में दूध से पकेटबंद मक्खन ही बनाते हैं—जिसमें हर प्रकार की ताजगी रहती है।

डेअरी जैसी ताज़ी... शुद्ध क्रीम...

अमूल मक्खन

अमूल हर स्वाद-पदार्थ को लाजवाब पौष्टिक बनाता है

एक खेडा सहकारी उत्पादन—लाजवाब

खेडा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लि.- आणंद

CBKMP-34 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

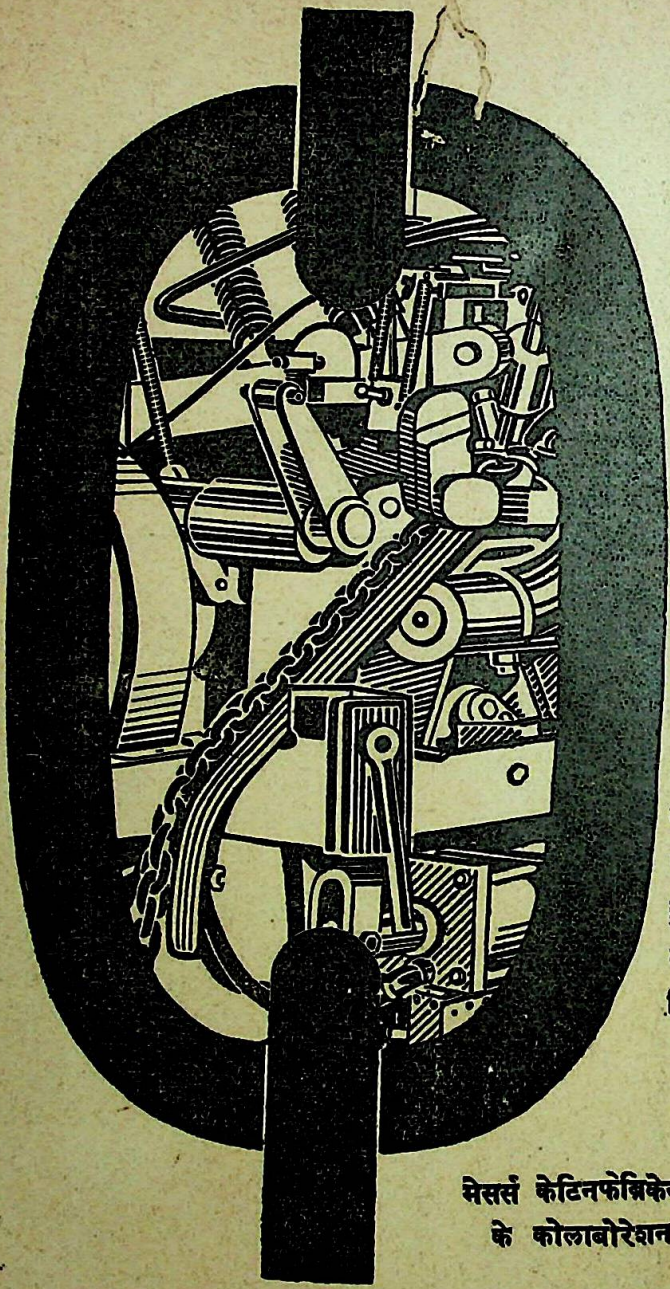

तीव्र परीक्षण के बावजूद ये कड़ियां नहीं टूटतीं

इन कड़ियों की वेल्डिंग पूर्ण निरीक्षण में की जाती है।

प्रत्येक कड़ी एक ही क्वालिटी की बनती है। इन कड़ियों से बनी सांकल की मजबूती व क्वालिटी की गारंटी है। कैलिब्रेट की हुई सांकल की नाप-तौल एकदम ठीक और विश्वसनीय है।

मेसर्स केटिनफेब्रिकेन, अस्लो नार्वे के कोलाबोरेशन में निर्मित

द इंडियन लिंक चेन मैन्यूफेक्चरर्स लि०

बंबई आगरा रोड, भांडुप, बंबई ७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलगांव कॉटन मिल्स लि०, बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Regd. No.

सौंदर्यका निखार

रेमी

सौंदर्य प्रसाधन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri